वीरविनोद

वीरविनोद
मेवाड़ का इतिहास

महाराणाओं का आदि से लेकर सन् १८८४ तक का विस्तृत वृत्तान्त
आनुषंगिक सामग्री सहित

द्वितीय भाग
[खण्ड १]
(प्रकरण १-९)

लेखक
महामहोपाध्याय कविराज
श्यामलदास
[महाराणा सज्जनसिंह के आश्रित राजकवि]

प्राक्कथन
प्रो० थियोडोर रिकार्डी (जूनियर)
कोलम्बिया विश्वविद्यालय (न्यूयार्क)

मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली वाराणसी पटना मद्रास

अनुक्रमणिका,

द्वितीय भाग.

(महाराणा रत्नसिंहसे महाराणा जयसिंहके अखीर तक).

विषय. पृष्ठांक.

महाराणा प्रतापसिंह,

चतुर्थ प्रकरण – १४५ – २१४.

महाराणा अमरसिंह अव्वल,

पञ्चम प्रकरण – २१५ – २६८.

विषय.	पृष्ठांक.

महाराणा कर्णसिंह,
षष्ठ प्रकरण – २६९ – ३१४.

महाराणा जगत्सिंह अव्वल,
सप्तम प्रकरण – ३१५ – ४००.

महाराणा राजसिंह अव्वल,
अष्टम प्रकरण – ४०१ – ६४४.

महाराणा जयसिंह,
नवां प्रकरण – ६४५ – ७२८.

भूमिका.

इस इतिहासके विभाग करनेका इसतरह विचार कियाथा कि जब अकबर बादशाहने, विक्रमी संवत् * १६२४ चैत्र कृष्ण ११ (= हिजरी ९७५ तारीख़ २५ शाबान = ईसवी १५६८ तारीख़ २४ फेब्रुअरी) को, चित्तौड़का क़िला फ़तह किया; उस समयसे वर्तमान समय तकका हाल इस में लिखा जावे; परन्तु देखा गया तो महाराणा उदयसिंहके पिछले चार वर्षका हाल इस भागमें, और पूर्व वृत्तान्त अन्यमें रहने लगा; इससे पढ़ने-वालोंके मनको पूरा संतोष न होगा यह सोचकर, महाराणा (संग्रामसिंह) सांगाके अंत समय विक्रमी १५८४ (हिजरी ९३४ = ईसवी १५२७) तक का हाल पूर्व भागमें, और महाराणा रत्नसिंहके राज्याभिषेकसे लेकर वर्तमान समय तक का इसमें हो, ऐसा निश्चय कियागया; क्योंकि, रत्नसिंह, विक्रमादित्य और उदयसिंहका इतिहास मिलाहुआ है–

यह मेरी राय श्रीमन्महाराणा श्री फ़तहसिंहजी की सेवामें प्रगट कीगई तो श्री महाराणाजी ने भी अपनी आज्ञासे मेरी संमतिको सहायता दी––और कर्नेल सी. के. एम. वॉल्टरसाहब बहादुर रेज़िडेन्ट मेवाड़की भी संमति मेरे अनुकूल हुई––तब मैंने अपनी कचहरीके आलिम, मेरे मित्र मौलवी अब्दुलग़नीख़ां, व मौलवी उबैदुल्लाफ़रहती और बाबू रामप्रसाद, तथा अहलकार लोग, लाला सोहनलाल, दसोरा दुर्लभराम आदि से सलाह ली; उन लोगोंने भी महाराणा सांगाके पीछेका इतिहास इस जिल्द में होनाही ठीक कहा; इसलिये यह भाग महाराणा रत्नसिंहके राज्याभिषेकसे प्रारंभ किया है––

ग्रंथकर्ता.

---

* कितने स्थलों में हिजरी सन् परसे ईसवी व विक्रमी गणित क्रमागत मिलायेहैं, और कितने उसके उलटे विक्रमी वा ईसवी परसे परस्पर मिला लियेहैं. इस विषयमें जो परिश्रम कियाहै तदनुसार परस्पर तिथि तारीख़ों में अंतर बहुत न्यून होगा, परंतु इतना ध्यान रक्खा है कि इनमें विशेष समता ही रहै––राजपूतानेमें संवत् का आरंभ श्रावण, भाद्रपद, कार्तिक आदि से भी होता है––पर इस ग्रंथ में चैत्र माससे ही लियाहै–

वीर विनोद,—मेवाड़का इतिहास.

महाराणा रत्नसिंह.

महाराणा सांगा (संग्रामसिंह) के सात पुत्र हुए– १ पूर्णमल्ल, २ भोजराज, ३ पर्वतसिंह, ४ रत्नसिंह, ५ विक्रमादित्य, ६ कृष्णसिंह और ७ उदयसिंह. १ पूर्णमल्ल २ भोजराज ३ पर्वतसिंह और ६ कृष्णसिंह–चार तो महाराणा सांगाके सामने ही परलोक सिधारे. इनमेंसे २ भोजराज, जो सोलंखी रायमल्लकी बेटीके गर्भसे जन्मेथे, उनका विवाह, मेड़तेके (१) रावदूदा जोधावतके पांचवेंबेटे, रत्नसिंहकी बेटी, मीरांबाईके (२) साथ हुआथा. मीरांबाई बड़ी धार्मिक और साधुसंतोंका सन्मान करनेवाली थी. यह विरागके गीत बनाती और गाती, इससे उसका नाम अबतक बहुत प्रसिद्ध है.

---

(१) मेड़ता– जोधपुरके राज्यमें एक कसबा है जिसके नामसे एक परगना "मेड़ताकी पट्टी" कहाताहै.

(२) कर्नेल टॉड साहब, मीरांबाईको महाराणा कुंभाकी राणी लिखतेहैं; परंतु यह बात ठीक नहींहै. क्यौंकि रावजोधाने विक्रमी १५१५ [= हि० ८६२ = ई० १४५८] में जोधपुर बसाया. विक्रमी १५२५ [= हि० ८७२ = ई० १४६८] में महाराणा कुंभाका देहांत हुआ. विक्रमी १५४२ [= हिजरी ८९० = ई० १४८५] में रावदूदा जोधावत को मेड़ता (झामा देवके वरदानसे) मिला. विक्रमी १५८४ [= हि० ९३३ = ई० १५२७] में महाराणा सांगा और बाबर बादशाहकी लड़ाई में, दूदाके दो बेटे वीरमदेव और रत्नसिंह (मीरांबाईका पिता) मारेगये, और वीरमदेवका बेटा जयमल्ल विक्रमी १६२४ [= हि० ९७५ = ई० १५६८] में चित्तौड़पर अकबरकी लड़ाईमें मारागया.

१—सोचना चाहिये कि महाराणा कुंभाके वक्त दूदाको मेड़ता ही नहीं मिला था; फिर दूदाकी पोती मीरांबाई मेड़तणी कुम्भाकी राणी किस तरह होसक्ती है ? —

२—महाराणा कुंभाके देहांतसे ५९ वर्ष पीछे बाबर और महाराणा सांगा की लड़ाईमें मीरांबाईका बाप रत्नसिंह मारागया; तो महाराणा कुंभाके वक्तमें (टॉड साहबका लिखना ठीक समझा जाय तो) रत्नसिंह की अवस्था चालीस वर्षसे कम नहोगी; इस हिसाबसे मारे जानेके वक्त सौवर्षके आसरे होनी चाहिये; और इतनी उमरके आदमीका बहादुरीके साथ लड़ाईमें माराजाना असंभव है—

महाराणा सांगाके देहांतके समय सात मेंसे तीनपुत्र—रत्नसिंह, विक्रमादित्य और उदयसिंह— बाकीरहे. इनमेंसे बड़े रत्नसिंह गादी विराजे, और छोटे विक्रमादित्य और उदयसिंह रणथंभोरके * मालिक बने.

इनको रणथंभोरकी मालिकी मिलनेका कारण यहहै, कि बूंदीके राव भांडाके दूसरे बेटे नरबदकी बेटी कर्मवती बाई, महाराणा सांगाको व्याही गईथी. उसके गर्भ से विक्रमादित्य और उदयसिंह हुए. महाराणा सांगा महाराणी हाड़ी कर्मवती से अधिक प्रसन्नथे.

एकदिन महाराणी हाड़ीने महाराणासे प्रार्थनाकी कि मेरे दोनोंबेटोंके लिये आप केहाथसे जागीर न मिलेगी तो पीछे रत्नसिंह इनको दुखदेंगे. तब महाराणा सांगा ने कहाकि जो जागीर तुम मांगो वही तुम्हारे बेटोंकेलिये दीजावे. इसपर राणीने रणथंभोरके वास्ते अर्ज़ की और वह महाराणाको मंजूर हुई. फिर दुबारा महाराणी हाड़ीने कहा कि यदि आपने मेरी विनती स्वीकार की, तो विक्रमादित्य, मेरेभाई सूर्यमल्ल को सोंपा जाय कि वह इनकी सम्हाल रक्खे. महाराणाने राणीकी प्रार्थनाके अनुसार आज्ञादी; परन्तु सूर्यमल्लने कहा कि मुझे इस आज्ञाके पूरा करनेमें कदाचित् आपके अनन्तर रत्नसिंहसे सामना करना न पड़े, इसलिये रत्नसिंहकी भी इसमें सलाह लेनी ज़रूर है. तब महाराणा सांगाने महाराजकुमार रत्नसिंहको बुलाकर इस विषयमें पूछा; रत्नसिंहने ऊपरी दिलसे सूर्यमल्लको अनुमति दी. इस तरह पक्का बंदोबस्त होनेपर सूर्यमल्लने भी महाराणाकी आज्ञा का पालन करना स्वीकार किया.

३—महाराणा कुंभासे १०० वर्ष पीछे मीरांबाईके चचेरे भाई जयमल्लका मारा जाना लिखाहै; इस हालतमें जयमल्ल की बहन मीरांबाई कुंभाकी राणी किसतरह समझी जावे ?

४—मीरांबाई महाराणा विक्रमादित्य व उदयसिंह के समयतक जीती रही, और महाराणाने उसको जो जो दुखदिया वह उसकी कवितामें स्पष्ट है—

कर्नेल टॉड साहबने धोखा खायाहै. इसका सबब यह होगा कि महाराणा कुंभाने चित्तौड़गढ़ पर कुंभश्यामजीके नामसे एक मंदिर बनायाथा और उसके पास ही एक दूसरा मंदिर बनाहुआ है, जो मीरांबाई के नामसे मशहूरहै, पर नमालूम कि वह मंदिर मीरांबाई का ही बनायाहुआहै या किसी औरका. शायद इन दोनों मंदिरों के पास पास होने से मीरांबाई महाराणा कुंभाकी स्त्री मानी गई. परंतु हमारे यहां, व मेड़तिया राठौड़ोंकी, व जोधपुर की तवारीखोंमें मीरांबाई को भोजराज की राणी लिखाहै.

* रणथंभोर—यह मशहूर क़िला इस समय जयपुर के राज्यमें है—

महाराणा रत्नसिंह, जो जोधपुरके राव बाघा सूजावतकी बेटीके गर्भसे उत्पन्न हुएथे, विक्रमी १५८४ कार्तिक शुक्ल ५ (१) [हिजरी ९३४ (*) तारीख़ ४ सफ़र ईसवी १५२७ तारीख़ २९ अक्टोबर] को चित्तौड़की गादीपर बैठे.

महाराणा संग्रामसिंहका, बाबरसे हारनेके कुछ दिनों पीछे देहान्त हुआ. यह समाचार सुनकर मांडूका बादशाह महमूद ख़िलजी बहुत ख़ुश हुआ; और उसने एक सर्दार शर्ज़ाख़ांको बहुतसी फ़ौज देकर मेवाड़की तरफ़ रवाना किया. शर्ज़ाने महाराणाके मुल्कमें लूट खसोट शुरूकी; यह देखकर महाराणा रत्नसिंहने मालवेकी तरफ़ चढ़ाई की. इसपर महमूद भी महाराणाका सामना करनेको चला और उज्जैन होताहुआ सारंगपुर पहुंचा. वहांसे मुईनख़ांको (जिसे सिकंदरख़ांने अपना बेटा मान कर देवासका मालिक बनायाथा) बुलाकर मसनदआली (बड़े दर्जेवाला) का ख़िताब और लाल डेरे (जो ख़ास बादशाहोंके होतेहैं) दिये; वैसेही सलहदी (शल्यहती) पूर्बियेको भी रायसेणसे बुलाकर बहुतसे परगने बख़्शिशकिये, और दोनोंको अपना मददगार बनाना चाहा. परंतु इनको महमूदका पूरा विश्वास न हुआ, इसलिये महाराणासे मेल करके, वे गुजरातके बादशाह बहादुरशाहके पास चलेगये. तब मारे डरके महमूद ख़िलजी मांडूको लौटगया और महाराणा, उसका मुल्क लूटते हुये चित्तौड़ आते वक़्त रास्तेमें बांसवाड़ेकी तरफ़ गुजराती बादशाह बहादुरशाहसे, जिसको मुईनख़ां और सलहदी, महमूद ख़िलजीपर चढ़ा लायेथे, मिले. महाराणा चित्तौड़ आये और बहादुरशाहने मांडू (मालवा) की बादशाहत छीनकर गुजरातमें मिलाली.

---

(१) बाज़े लोग ज्येष्ठमहीने (शाबान = मई) में गादी विराजना लिखतेहैं और बीकानेरका नेणशी महता कार्तिक (सफ़र = अक्टोबर) लिखता है. नेणशी महताने दो सौ वर्ष पहिले दर्याफ़्त कर लिखा है, इसलिये हम उसके लेखको विशेष प्रामाणिक समझते हैं—

ऐसा हो सकता है कि गादी तो ज्येष्ठ महीनेमें बिराजेहों और गादी उत्सव जो मुहूर्तसे होताहै वह कार्तिकमें हुआ हो.

(*) जहां तिथि वा तारीख़ है वहां हिजरी अथवा ईसवी सन्‌की मिलानमें यदि अंतर हो तो एकआध दिनसे अधिक नहीं होगा ऐसा पूरा अनुमान और निश्चयहै; और उसी हिसाबसे जहां केवल वर्षका ही अंकहै वहां एक वर्षका अंतर रहेगा; ऐसे ही मासमात्र हो वहां एकमासका न्यूनाधिक भाव होना संभव है. उदाहरणमें भूमिका का हिजरी ९३४ हीसमझो. यह ९३वा९४दोनों विक्रमी १५८४ में आतेहैं.

जब महाराणा सांगाने, बाबर बादशाहसे लड़ाईके लिये चढ़ाईकी, उसवक्त महाराणी हाड़ीको विक्रमादित्य और उदयसिंह समेत रणथंभोरमें रखकर आप आगे बढ़ेथे. महाराणाका देहांत होनेपीछे चित्तौड़पर तो उनके कुंवर रत्नसिंह गादीबैठे, और महाराणी हाड़ी दोनों लड़कोंके साथ सूर्यमल्लकी (१) सम्हालसे रणथंभोरमें रहीं.

रणथंभोरके साथ पचास साठ लाखका मुल्कथा. इतने बड़े देश और मज़बूत व नामी किलेका छोटे भाइयोंके हाथमें रहना रत्नसिंहको नहीं भाया; (२) इसी भीतरी आशयसे माजी हाड़ीको किसीतरह चित्तौड़ बुलालेना ठीक समझ, कोठाऱ्याके पूर्विया चहुवाण पूर्णमल्लको उन्हें लेनेके लिये रणथंभोर भेजा और कहलाया कि "आप हमारे सिरपर तीर्थहैं, और विक्रमादित्य व उदयसिंह मेरे भाई हैं; इस लिये उन्हें लेकर आपको यहां पधारना चाहिये;" इसके सिवाय और भी कई बातें पत्रमें लिखभेजीं. पूर्णमल्ल का रणथंभोरमें पहुंचने पर सब तरह शिष्टाचार हुआ. जब उसने ज़नानी ड्योढ़ी पर जाकर सबहाल मालूम कराया, तो मा साहबने इस बातको रत्नसिंहका कपट समझ, उत्तरदिया कि "विक्रमादित्य और उदयसिंह अभी बच्चे हैं, और उनकी सम्हाल रखनेके लिये श्रीहुज़ूर वैकुंठवासीने मेरेभाई सूर्यमल्लको हुक्मदियाहै, सो जाना न जाना उनके आधीन है." इसके सिवाय रत्नसिंहने महाराणा सांगाका महमूद खिलजीसे लियाहुआ जड़ाऊ ताज और कमरपेटा इन्हींके हाथ मंगवाया, वहभी महाराणी हाड़ीने नहींदिया. पूर्णमल्लने बूंदीमें राव सूर्यमल्लके पास जाकर सारा वृत्तांत कहा. सूर्यमल्लने जवाब दिया कि मैं चित्तौड़ हाज़िर होऊंगा तब सब हाल महाराणासे अर्ज़ करूंगा. पूर्णमल्ल चित्तौड़ आया और सब बातें महाराणासे निवेदन कीं; जिसपर महाराणा रत्नसिंह, सूर्यमल्लसे बहुत नाराज़ हुए और यह विरोध दिनोंदिन बढ़तागया; क्योंकि पहिले भी रत्नसिंहके गादीनशीन होनेपर टीकेकी रस्ममें सूर्यमल्लकी तरफ़से जो एक घोड़ा और हाथी आयाथा, वह पीछा रणथंभोर भेजकर महाराणाने कहलाया कि लाल लश्कर घोड़ा (३) और मेघनाद हाथी, जो श्रीबड़े हुज़ूरने

---

(१) सूर्यमल्ल—महाराणी कर्मवती का चचेरा भाईथा; इसका पूरा वृत्तान्त बूंदीके हालमें मिलेगा.

(२) हमारी रायमें महाराणा सांगाने यह काम अपनी नामवरी और बुद्धिमानीके विरुद्ध किया; क्योंकि रणथंभोर को, जुदा अपने छोटे बेटों के स्वाधीन करनेसे राज्यके दोभाग प्रत्यक्ष होचुके. महाराणा रत्नसिंहके देहांत होनेपर यदि विक्रमादित्य गादी न बैठते तो राज्यके बिगाड़में कुछ भी बाक़ी नहींथा, क्योंकि विक्रमादित्यके रहते भी राज्यमें कई रीतिके नुक़सान हुए.

(३) महाराणा सांगाने २०००० रुपये में लाल लश्कर घोड़ा और ६०००० रु० में मेघनाद हाथी ख़रीदाथा; और वही सूर्यमल्लको, उनके पिता नारायणदासके, बाबरकी लड़ाईमें, मारेजानेपर टीकेमें दियाथा—

तुमको टीकेमें दियाथा, इसवक्त नज़र करना चाहिये. इसपर सूर्यमल्लने उत्तर दिया कि मैं गांवका पटेल नहींहूं कि घोड़ा हाथी मेरेपास चराई के लिये भेजेंहों, जिन्हें पीछे मंगातेहैं ! यह मुझको श्रीहुज़ूर वैकुंठवासीके बख़्शेहुये हैं सो नज़र नहीं करसकता.

फिर बूंदीके रावने सोचा कि महाराणाने घोड़ा हाथी मांगाहै सो कभी न कभी मेरे सर्दार कामदार नज़र करवाकर मेरा हलकापन दिखावेंगे; इस विचारसे वह घोड़ा और हाथी, मीशण गोतके चारण भाणा (१) को उसकी कवितापर खुश होकर देदिया.

भाणा चित्तौड़ आया, तब महाराणाके सामने सूर्यमल्लकी बहुत बड़ाईकी. महाराणाने कहा कि सूर्यमल्लने कौनसी बहादुरी दिखाई और तुमको क्या दिया ? भाणाने बहादुरीके बारे में कहा कि एकदिन सूर्यमल्ल शिकारको गया, तब मैं भी उसके साथ था; जंगलमें सूर्यमल्लके ऊपर दो रीछ आपड़े; पर उस बहादुरने दोनोंका काम एक ही बार कटारियोंसे पूरा किया. दातारीके विषयमें लाल लश्कर घोड़ा और मेघनाद हाथी उससे इनाम मिलनेकी अर्ज़की– इसबातके सुननेसे महाराणाको बड़ा-क्रोध हुआ, और भाणाको अपने मुल्कसे चलेजानेका हुक्म दिया. भाणा वहांसे निकलकर बूंदी गया तब सूर्यमल्लने उसका बहुत सत्कार कर कहा कि महाराणाने हमारे ऊपर बड़ी मिहरबानी की, जो ऐसा आदमी मिला. उसी समय सूर्यमल्लने भाणाको हरणा गांव दिया जो अबतक उसके वंशवालोंके अधिकारमें है.

इस रीतिके विरोधसे सूर्यमल्लने सोचा कि अब किसी बड़े सहारे बिना निर्वाह होना कठिनहै. इस विषयमें अपनी बहन महाराणी हाड़ी से सलाह कर, उनकी तरफ़से बाबर बादशाहके बड़े बेटे हुमायूंको राखी (२) भेजवाई. यहबात राजपूतानेमें मशहूरहै. इस बारेमें जो बाबरने अपनी किताब तुज़कबाबरीमें लिखाहै उसका तर्जुमा क़लमीकिताबके पत्रे २६५–२६६ और २६८ से कियाजाता है–

पत्रा २६५–२६६, हि० ९३५ तारीख़ १४ मुहर्रम, मंगलवार [विक्रमी १५८५ आश्विनशुक्ल १५ = ई० १५२८ तारीख़ ३० सेप्टेम्बर.]

" तारीख़ १४ मुहर्रम को राणा सांगाके दूसरे बेटे विक्रमादित्य की तरफ़से, जो अपनी मा पद्मावतीके (३) साथ रणथंभोरके क़िलेमें रहता है, आदमी आये. ग्वालि-

(१) परगने मांडलगढ़ इलाक़े मेवाड़में रीठ व कोदिया, वग़ैरह बारह गांव महाराणाके दियेहुये इसकी जागीरमें थे और यह बूंदीमें अपने यजमान गौड़ राजपूतोंसे नेगचार लेनेको उस समय वहां गयाथा.

(२) राखी हिंदुओंमें बहन भाईको बांधती है; और जिसके राखी बंधे वह भाई समझा जाताहै—

(३) बाबरने कर्मवतीका नाम भूलसे पद्मावती लिखाहै.—

यर की सैरको रवाना होनेसे पहिले अशोक (१) नामके एक हिंदूने, जो विक्रमादित्यका प्रतिष्ठित आदमी है, आकर ताबेदारी और ख़िदमतगारी ज़ाहिरकी, और अपने गुज़रके लिये सत्तर लाखकी जागीर मांगकर, ऐसा इक़रार किया कि जब वह रणथंभोर का क़िला सौंपदे, तो उसकी इच्छानुसार परगने दियेजावें. इसबातका वादा करके हमने रुख़सतदी. हम ग्वालियरकी सैरको जातेथे, इस लिये उन आदमियोंको ग्वालियरकी मियाद दी. मियादसे कुछ ज्यादा दिन लगगये. यह अशोक हिंदू विक्रमादित्यकी मा पद्मावतीका नज़दीकी रिश्तेदार होताहै. उसने यह हाल मा बेटोंसे ज़ाहिर करदियाहै. उन्होंने भी अशोकसे इत्तिफ़ाक़ करके ख़ैरख्वाही और ख़िदमतगारी क़बूल करलीहै. एक ताज और ज़रीका पटका था. जब सांगाने सुलतान महमूद को ज़ेर किया और वह काफ़िरकी क़ैदमें आया, तब यह ताज और ज़रीका पटका, जो तारीफ़के लायक़था, लेकर महमूदको छोड़दिया. वही ताज और ज़रीका पटका विक्रमादित्यके पासथा. उसके बड़ेभाई रतनसीने (*) जो बापकी जगह राजा होकर अब चित्तौड़पर क़ब्ज़ा रखताहै, ताज और ज़रीका पटका अपने छोटेभाईसे मांगाथा. इसने नहींदिया. इन आदमियों के साथ जो आयेहैं, ताज और ज़रीका पटका मुझे देना कहलायाहै. रणथंभोरके बदलेमें बयाना मांगाथा. बयाने की बातसे उनको टालकर रणथंभोरके ऐवज़में शमशाबाद देनेका वादा कियागया. उसीरोज़ इनके आयेहुये आदमियोंको ख़िलअत पहनाकर नौ दिनकी मियादसे बयाने आनेकी रुख़्सतदी—"

पत्रा २६८ तारीख़ ५ सफ़र सोमवार [कार्तिक शुक्ल ७ = २१ अक्टोबर.]

" तारीख़ ५ सफ़र सोमवारके दिन विक्रमादित्यके अव्वल एलची और पिछले एलचीके साथ पुराने हिंदुओंमेंसे देवाका बेटा बेहरा होसी भेजागया, कि यह रणथंभोर सौंपने, ख़िदमतगारी क़बूल करने और उसके बर्तावके लिये शर्त करे. यह हमारा आदमी जो गयाहै, देखकर, समझकर, यक़ीन करके आवे और वह अपनी बातोंपर जमा रहे, तो मैंने भी वादा किया—खुदापूराकरे—उसके बापकी जगह राणा करके चित्तौड़में बैठादूंगा—"

---

(१) यह राव अशोक प्रमार वंशकाथा जिसके वंशमे बीझोल्यांके राव गोविंददास अव्वल दर्जे के सर्दारों में इसवक्त पांचवें नंबर पर गिने जाते हैं—

(*) नामोंमें अनेक कारणोंसे (उच्चारण, देश भेद वा अर्थ भेद आदिसे) अपभ्रंश होकर अन्य शब्दोंकी अपेक्षा अधिक बिगाड़ होजातेहैं— जैसे—संग्रामसिंह = सांगा, रत्नसिंह = रतनसी, अरिसिंह = अरसी, अमरसिंह = अमरसी, कुंभकर्ण = कुंभा आदि—

यह सूर्यमल्लकी ही कारवाई थी कि इतनी बात होनेपर भी बाबरको रणथंभोर न दियागया; क्योंकि उस समयके क्षत्री, मुसल्मानोंके आधीन रहना चित्तसे नहीं चाहते थे. मालूम होता है कि यह सब काम महाराणा रत्नसिंहको डरानेके लिये किया गया और उनकी तरफ़से दबाव कम होनेपर इन्होंने भी बाबरसे मिलावट नहीं रक्खी.

इस तरहकी विपरीत बातोंसे (१) महाराणाने सूर्यमल्लको मार डालना विचारकर ऊपरी दिलसे चिकने चुपड़े मज़्मूनके रुक़े चित्तौड़ आनेके लिये लिखे, परंतु सूर्यमल्ल इस बातको समझ गयेथे; कई बार बुलानेपर भी नहीं आये और टाला टूली करते रहे. बीकानेरका दीवान नेणसी महता लिखताहै कि महाराणा रत्नसिंहने सूर्यमल्लको बुलाया तब इन्होंने अपनी मा सोलंखिणी से पूछा, कि मुझको धोखेसे मारनेको बुलातेहैं सो कहिये तो बाहर निकलकर राजपूतीके हाथ बताऊं, और कहें तो बुलानेके अनुसार चला-जाऊं ? उनकी माने कहा "हमने महाराणाका कुछ अपराध नहीं किया बल्कि हम उन के हमेशहसे सामधर्मी चाकर रहेहैं; तुमको जाकर उनकी सेवामें हाज़िर होना चाहिये."

इधर, विक्रमी० १५८८ [हि० ९३७ = ई० १५३१] के शुरू गरमीके दिनोंमें महाराणा रत्नसिंह शिकारको बूंदीकी तरफ़ रवाना हुए. उधरसे सूर्यमल्ल अपनी माकी आज्ञानुसार आतेथे सो रास्तेमें ही मिलाप होगया, परंतु उनके दिलमें खटका ही था. एक दिन महाराणा मस्त हाथीपर सवारहो शिकारको निकले; सूर्यमल्ल घोड़ेपर थे; अवसर देख महाराणाने सूर्यमल्ल पर हाथी झोंका, परंतु वे बचगये. उस-वक़्त महाराणाने हाथीका क़ुसूर बताकर कहा कि अबसे इसपर सवारी नहीं करेंगे. फिर बूंदीके पास बाजणा गांव(२)में पहुंचकर शिकारके समय एक जगह सूर्यमल्लको खड़ा किया और उनके पास पूर्विया पूर्णमल्ल(३) को छोड़ आप दूसरी तरफ़ गये; पीछे आकर देखा तो पूर्णमल्लसे कुछ न बना. तब झुंझलाकर घोड़ेको झपटाया और तलवारका

---

(१) बूंदीके इतिहास वंशप्रकाशमें सूर्यमल्लसे महाराणाके विरोधका कारण, पूर्णमल्लका स्त्रियों के विषयमें झूठा अपराध लगाना लिखाहै, और कर्नेल टॉड भी कुछ हेर फेरसे वही लिखतेहैं; परन्तु इस रीतिकी कहानियों पर हमें विश्वास नहीं होता. क्योंकि दो सौ वर्ष (वि० १७२० = हि० १०७३ = ई० १६६३) पहिले एक दूसरे राज्यके प्रामाणिक मनुष्य नेणसी महताने विक्रमादित्यको रणथंभोर देना ही इस विरोध का कारण लिखाहै, और वह ऊपर लिखेहुये तुज़क बाबरीके लेखसे भी सिद्ध है—

(२) यह गांव बूंदीसे दस कोस मेवाड़की तरफ़ है—

(३) पूर्णमल्ल को धोखे से वार करनेके वास्ते पहिलेसे ही संकेत था—

एक वार (१) सूर्यमल्ल पर किया; फिर तो पूर्णमल्लने भी एक तीर मारा जो छाती फोड़ निकल गया; सूर्यमल्लने दौड़कर पूर्णमल्लको कटारसे मारा; महाराणाने पूर्णमल्लकी मदद करके दूसरा वार सूर्यमल्ल पर करना चाहा, परंतु इसने कटारका एक हाथ उनकी छातीमें ऐसा मारा कि महाराणा भी इस संसारको छोड़गये. इन महाराणाका दाह पाटण ग्राममें हुआ और उनके साथ महाराणी पंवार सती हुई—

यह महाराणा सुलहपसंद (संधिप्रिय) और बहादुर थे, परन्तु खुशामदी और मीठे बोलने वालोंकी बातपर जल्दी भरोसा करलेते थे. इनके समय कोई बड़ी लड़ाई किसी बाहरी शत्रुसे नहीं हुई; क्यौंकि दिल्लीका बादशाह बाबर तो बनारस व बंगाले की तरफ़ बंदोबस्तमें लगाथा और मांडूके प्रतापका सूर्य अस्त होचुकाथा. इसके सिवाय गुजरातियोंसे सुलह होगई थी.—

मांडूकी बादशाहत.

दिलावरखां गोरी.

इस बादशाहतकी नींव डालनेवाला दिलावरखां ग़ोरी था, जिसको दिल्लीके बादशाह फ़ीरोज़शाह तुग़लक़के बेटे नासिरुद्दीन मुहम्मद शाहने हि० ७९३ (*) [विक्रमी १४४८ = ई० १३९१] में मालवेका सूबेदार बनाया, पर दिल्लीकी बादशाहतके दुर्बल होजानेसे थोड़े दिनोंमें वह खुद मुख्तार होगया. जब हि० ८०१ [विक्रमी १४५६ = ई० १३९९] में मुग़ल बादशाह तीमूरके डरसे, सुल्तान महमूद दिल्लीसे भागकर दिलावरखांके पास धारमें आया, उसवक़ इसने उसकी ख़ातिर की, जिससे दिलावरका बेटा होशंग नाराज़ होकर मांडू चलागया, और वहां मज़बूत क़िलेकी नींव डालकर उसे अपने वक़्में पूरा किया—

होशंग.

हि० ८०८ [विक्रमी १४६२ = ई० १४०५] में दिलावरखां मरा और होशंग तख़्तपर बैठा; तब गुजरातके बादशाह मुज़फ़्फ़रने यह सुनकर कि दिलावरखांको होशंगने

---

(१) मालूम नहीं कि मारे जाने के समय पहिला वार किसका और किस तरह हुआ; परंतु यह सच है कि तीनों उसी वक्त मारेगये.

(*) प्रायः महाराणाओंके हाल विक्रमी संवत्के अनुसार और बादशाहोंके हिजरीके अनुसार हैं. इसलिये महाराणाओंके वर्णनमें पहिले विक्रमी और बादशाहोंके वर्णनमें हिजरी रक्खेहैं.

ज़हर दिलाकर मरवाया है, हि० ८१० [विक्रमी १४६४ = ई० १४०७] में धारपर चढ़ाईकी और बड़ी लड़ाईके बाद होशंगको क़ैद करके, क़िलेकी हुकूमत अपने छोटे भाई नुसरतख़ांको दी; पर उससे मुल्की इन्तिज़ाम न होसका तब एक वर्ष पीछे होशंगको वापस धार भेजदिया— मुज़फ़्फ़रके मरने बाद उसके पोते अहमद शाहने होशंगपर चढ़ाइयां कीं और फ़तह पाई, परंतु होशंगने कुछ नज़र भेट देकर पीछा छुड़ाया—

हि० ८२३ [विक्रमी १४७७ = ई० १४२०] में बादशाह होशंगने राव नरसिंह को जो पचास हज़ार सवारोंका मालिक था, मारकर सारंगगढ़ लेलिया और उसके बेटेको अपने ताबे किया; दोवर्ष पीछे मौक़ा देख कर अहमदशाह गुजरातीने मांडूको आ घेरा, परंतु क़िलेकी मज़बूतीसे कुछ बस न चला; तब लूटता मारता सारंगपुरकी तरफ़ रवाना हुआ. हि० ८२६ लगतेही [विक्रमी १४८० = ई० १४२३] होशंगने धोखा देकर गुजरातियों पर हमला किया परंतु गुजरातियोंकी फ़तह हुई. इस लड़ाईके पीछे होशंगने गागरौन और ग्वालियर के क़िलोंपर क़ब्ज़ा करलिया—

ग़ज़नीख़ां (मुहम्मद शाह), मसऊद, महमूदखिलजी—

हि० ८३८ [विक्रमी १४९२ = ई० १४३५] में बादशाह होशंग अपने बेटे ग़ज़नीख़ांको राज्यका मालिक बनाकर मरगया—महमूदख़ां ख़िलजी जो उसका बड़ा मौतबर सर्दार था, और जिसकी सुपुर्दगीमें होशंगने ग़ज़नीख़ांको रक्खाथा, कुछ दिनों पीछे लोगोंके बहकाने पर उससे रंजीदा हुआ— इसका फल यह निकला कि उसने ग़ज़नीख़ांको, जिसका ख़िताब मुहम्मदशाह था, शराब पिलानेवाले के हाथसे ज़हर दिलाकर मरवाडाला; तब मालवी सर्दार और अमीरोंने ग़ज़नीख़ां के शाहज़ादे मसऊद को, जो १३ वर्षका था, बादशाहतका मालिक बनाकर, महमूद ख़िलजीको किसी तरह धोखेसे क़त्ल करना चाहा, पर महमूदने बहुतसे अमीरोंको क़ैद व क़त्ल कर हि० ८३९ तारीख़ २९ शव्वाल [विक्रमी १४९३ ज्येष्ठकृष्ण ३० = ई० १४३६ ता० १७ मई] को, ४० वर्षकी उमरमें बादशाहतका ताज पहिना; और मसऊद उसके भयसे गुजरातको भागगया. गुजराती बादशाहने उसकी मददपर मांडूको घेरा— इधर महमूदने मांडूके सब सर्दार और आदमियोंको इनाम इकराम देकर अपनी तरफ़ कर लियाथा—उसने मौक़ा पाकर रातके वक़ गुजराती फ़ौजपर छापामारा, परंतु गुजरातियोंके होशयार होजानेसे, उसका मतलब न बना. गोरी ख़ानदानका शाहज़ादा उमरख़ां, जो थोड़े दिनों पहिले भागकर चित्तौड़ चलागया था, इस मौक़ेपर वापस आकर चंदेरीका मालिक बनगया— अहमद गुजरातीका बेटा मुहम्मदख़ां कुछ फ़ौज लेकर सारंगपुरकी तरफ़ रवाना हुआ; महमूद ख़िलजी अपने बाप आज़म हुमायूंको क़िलेमें छोड़ बाहर निकला.

शाहज़ादा मुहम्मद गुजराती तो अपने बापके पास आया, और शाहज़ादा उमरखां सारंगपुर की तरफ़ पहुंचा. महमूद ख़िलजीने यह ख़बर पातेही सारंगपुरकी सरहद्द पर उसको जा दबाया-कुछ मुक़ाबला होने बाद गिरफ़्तार करके क़त्ल किया, और उसका सिर चंदेरीमें लटकवा दिया. फिर महमूद ख़िलजी अहमदशाह गुजरातीके मुक़ाबलेको दूसरी तरफ़ रवाना हुआ, लेकिन गुजराती बादशाह, अपनी फ़ौजमें अधिक बीमारी (मरी वा हैज़ा आदि) होजानेके कारण गुजरातको लौटगया, और मसऊदख़ांसे वादाकिया कि फिर दूसरे वर्ष आकर तुम्हारा मुल्क तुम्हें दिलाऊंगा-

महमूद मांडू आया, लेकिन गोरी ख़ानदानके बचेहुये सर्दारोंने भी उपद्रव मचाया; उनको शिकस्त देकर वह हि० ८४४ [विक्रमी १४९७ = ई० १४४०] में दिल्लीकी तरफ़ रवाना हुआ; वहां पहुंचकर शहरसे दो कोसके फ़ासलेपर दिल्लीके बादशाह मुहम्मद शाहकी फ़ौजसे मुक़ाबला किया-दोनों तरफ़ बराबरी रही-परंतु मांडूमें फ़साद होजानेके डरसे महमूद (मालवी), मुहम्मदशाहसे सुलहकर लौट गया.

राजपूताना या मेवाड़की तवारीख़ोंमें लिखाहै कि इन्हीं दिनोंमें महमूद ख़िलजीको मुक़ाबला करके महाराणा कुंभाने क़ैदकिया; जिसकी यादगारीमें चित्तौड़ पर एक बड़ा मीनार (कीर्तिस्तंभ) बनाहै (१). हि० ८४६ ज़िलहिज [विक्रमी १५०० वैशाख = ई०१४४३ एप्रिल] में महमूद, सारंगपुर होताहुआ मही नदी उतरकर कुंभलमेर आया; उसवक़ किला पूरा नहीं बनाथा केवल आरेठ पौल (दरवाज़ा) वग़ैरह नाकाबंदी होकर कुछ दीवारका भी आरंभ हुआथा. इस क़िलेके नीचे कैलवाड़ा ग्राममें बाण माताके मंदिरको जो पुराना बना हुआथा, महमूदने घेरलिया; उसको बचानेके लिये बहुतसे राजपूत क़िलेसे उतरे परन्तु लड़कर मारेगये; बादशाहने मंदिरको जलाया और उसमेंकी मूर्तिका चूना बनवाकर हिंदुओंको पानमें खिलवाया- फिर बादशाह चित्तौड़की तरफ़ रवाना हुआ- उस समय महाराणा कुंभा किसी और मुहिमपर थे; यह ख़बर सुनतेही मुक़ाबलेके लिये चित्तौड़ आये लेकिन बर्सात आजानेसे महमूद मांडूकी तरफ़ वापस चलागया- इन्हीं दिनोंमें इसका बाप आज़महुमायूं मंदसोरमें मरगया. दूसरे वर्ष जौनपुरके सुल्तान महमूद शाह से, कालपीके पास महमूद ख़िलजीकी

---

(१) कीर्तिस्तंभकी प्रशस्तिसे इस महमूद ख़िलजीका शिकस्त होना (पराजय) ही निश्चयहै; और मेवाड़में महमूदका गिरफ़्तार होना प्रसिद्ध है; नेणसी महता भी यही लिखताहै परंतु तारीख़ फ़रिश्तामें केवल चित्तौड़ की तरफ़ आनाही लिखा है.

लड़ाइयां होकर शैख़ जावलदा (१) की मारफ़त सुलह हुई. हिजरी ८५० तारीख़ २० रजब [विक्रमी १५०३ कार्तिक कृष्ण ६ = ईसवी १४४६ तारीख़ ११ अक्टोबर] को महमूद मांडूसे निकलकर मांडलगढ़ वगैरह मेवाड़के ज़िलोंमें लूट खसोट करता हुआ बयाने पहुंचा. वहां अपना सिका (मुद्रा) जारी करके लड़ता भिड़ता मांडूको लौट गया, और ताजख़ांको २५ हाथी तथा आठ हज़ार सवारोंके साथ चित्तौड़की तरफ़ भेजा. हि० ८५४ [विक्रमी १५०७ = ई० १४५०] में गुजराती बादशाह मुहम्मद शाहने चांपानेरके राजा पर चढ़ाई की; राजाकी सहायताके लिये महमूद ख़िलजी मांडूसे रवाना हुआ, इस सबबसे मुहम्मद शाह अहमदाबादको लौटगया. महमूद भी चांपानेरसे कुछ नज़र लेताहुआ ईडरके राजा सूर्यमल्लको इनाम देकर पीछा मांडू चलागया.

हि० ८५५ [विक्रमी १५०८ = ई० १४५१] में एक लाख फ़ौज लेकर सुल्तान महमूद गुजरात पर चढ़ा और रास्तेमें सुल्तानपुर पर क़ब्ज़ा किया. इसी अर्सेमें सुल्तान मुहम्मद गुजरातीके मरने, और उसके बेटे कुतुबुद्दीनके बादशाह होनेकी ख़बर मिलते ही अहमदाबादके पास पहुंचकर कुतुबुद्दीनसे लड़ा. हि० ८५७ [विक्रमी १५१० = ई० १४५३] में महमूद, सुल्तान कुतुबुद्दीन गुजराती से सुलहका इक़रार कर मांडू आया, और हाड़ोतीके हाड़ा राजपूतोंपर चढ़ाई करके उनका मुल्क जीत लिया. फिर फ़िदाईख़ांको वहांका मालिक बनाकर आप बयाने होताहुआ मांडूको चलागया. दूसरे वर्ष मेवाड़पर चढ़ाई की, और कुछ लड़ाई झगड़ा करके लौटगया. हि० ८५९ [विक्रमी १५१२ = ई० १४५५] में मंदशोर होकर अजमेर आया, और वहांसे मांडू जाते समय मांडलगढ़के पास महाराणा कुंभाकी फ़ौज़से उलझ पड़ा. हि० ८६१ के शुरू मुहर्रम [विक्रमी १५१३ मार्गशीर्ष = ई० १४५६ के नवेंबर] में मांडलगढ़ लेनेके इरादे पर मांडूसे मेवाड़में आया; दो वर्षमें अपना इरादा पूरा कर शाहज़ादे ग़यासुद्दीनको मेवाड़के पहाड़ी हिस्सेकी तरफ़ रवाना किया, और आप मांडू गया. शाहज़ादा लूट मार करता हुआ हि० ८६६ [विक्रमी १५१९ = ई० १४६२] में मांडू पहुंचा— इसी वर्षमें महमूदने, दक्षिणके बादशाह निज़ामशाह बहमनी से फ़तह पाकर, हि० ८७१ [विक्रमी १५२३ = ई० १४६७] में सुलह करली. हि० ८७३ ता० १९ ज़िल्क़ाद [विक्रमी १५२६ आषाढ़ कृष्ण ५ = ई० १४६९

(१) शेख़ जावलदा एक बुज़ुर्ग (मान्य) आदमी था—

ता० ३१ मई] के दिन सुल्तान महमूदको, राजपूतानेके इलाकेसे मांडू जाते समय रास्तेमें तपकी बीमारीने दूसरे जहानकी राह बताई.

गयासुद्दीन.

महमूदके बड़े बेटे ग़यासुद्दीनने मांडूके तख़्तपर बैठतेही, अपने बड़े बेटे अब्दुलक़ादिरको नासिरुद्दीनका ख़िताब देकर, पूरे इख़्तियारके साथ प्रधानेका काम सौंपा; और आप ऐश आराममें ऐसा डूबा कि उसके ज़नानेमें दश हज़ार के लग भग औरतें इकट्ठी होगईं थीं; इनमें से कितनियों को वज़ारत वगैरह मुल्की ओहदे दिये और कितनियों को दस्तकारीके काम सिखलाये. इस बादशाहकी बनाई हुई एक इमारत उज्जैनके पास कालियादह नामसे मशहूर है, जो देखनेमें बड़ी मज़बूत और बनानेवालेकी पूरी ऐयाशी जतानेवाली है.

मेवाड़की तवारीख़ोंमें सुल्तान ग़यासुद्दीनका, महाराणा रायमल्लके शुरूवक़ में मेवाड़पर चढ़ाई करना और शिकस्त खाकर लौटजाना लिखाहै. इस बादशाहने ऐश व आरामके सिवाय कोई बात तवारीख़में लिखने लायक़ नहीं की. हि० ९०३ [विक्रमी १५५४ = ई० १४९८] में बड़े शाहज़ादे नासिरुद्दीन और दूसरे शाहज़ादे अलाउद्दीनमें रंजिश पैदाहुई. ग़यासुद्दीन अपनी बेगम खुर्शेदके (१) बहकानेसे अलाउद्दीनकी तरफ़दारी करने लगा; इससे नासिरुद्दीन शहरसे निकलगया. हि० ९०५ [विक्रमी १५५६ = ई० १५००] में फ़ौज लेकर वापस आया, और लड़ भिड़ के मांडूमें अपना अधिकार जमाकर अलाउद्दीनको बालबच्चों सहित मारडाला.

नासिरुद्दीन.

ग़यासुद्दीनने लाचार होकर अपने जीतेजी बादशाहतका ताज नासिरुद्दीनके सिरपर रक्खा. इसने हि० ९०६ शाबान [विक्रमी १५५७ फाल्गुन = ई० १५०१ मार्च] में चंदेरीके हाकिम शेरख़ां पर चढ़ाई की और धार पहुंचा; इतनेमें ग़यासुद्दीन मरगया—मांडूके सर्दारोंने इसका कारण नासिरुद्दीनकी तरफ़से ज़हर दियाजाना समझा. नासिरुद्दीनने चंदेरी फ़तह करनेके बाद मांडू आकर अपनी (सौतेली) मा खुर्शेदको ख़ज़ानेके लिये बहुत तंग किया—कई अमीरोंको ज़हरसे और कितनोंको हथियारोंसे मरवाडाला, और बहुतोंका घर बार भी छीनलिया. फिर हि० ९०८ [विक्रमी १५५९ = ई० १५०२] में आगरेपर चढ़ाई की और दूसरे वर्ष चित्तौड़ आया. इस बादशाहने अपने बड़े बेटे मुज़फ़्फ़रको ख़ारिजकर दूसरे बेटे शहाबुद्दीनको युवराज बनाया. नासिरुद्दीनके ज़ुल्मसे कुछ रैयत और सर्दारोंने तंग हो शहाबुद्दीनको बहकाकर बग़ावतका झंडा फहराया; लेकिन शहाबुद्दीन शिकस्त

(१) अलाउद्दीन इसके पेटसे पैदा हुआथा; यह बकलानेके राजाकी बेटी थी—

खाकर दिल्लीकी तरफ़ भागगया. हि० ९१६ [विक्रमी १५६७ = ई० १५१०] में नासिरुद्दीनने अपने तीसरे बेटे महमूदको बादशाहत सौंपकर दुनियासे कूंच-किया. नासिरुद्दीन बड़ा ज़ालिम और शराबी था; वह एक दिन कालियादह (१) पर शराबके नशेमें हौज़के किनारे सोरहा था, सो लुड़क कर हौज़में गिरपड़ा, तब चार लौंडियोंने जो उसवक़ मौजूद थीं, बड़ी मुश्किलसे निकाला. जब बादशाह होशमें आया तो अपना जी बचानेके बदले तलवारका एक एक वार इनाम देकर इन चारों बेक़ुसूरोंके सिर धड़से अलग किये ! यह एक छोटासा जुल्म था—यदि उसके सब जुल्म लिखेजावें तो एक जुदा इतिहास बनजावे.

महमूद सानी.

इसके तख़्तपर बैठतेही शहरके कोतवाल मुहाफ़िज़खां ख़्वाजेसराने सलाहकार बनना चाहा, पर बादशाहने कुछ ध्यान नहीं दिया तब उसके भाई साहबख़ांको बादशाह बनानेके इरादेसे उपद्रव मचाया, जिससे महमूदको भागना पड़ा. मुहा-फ़िज़ख़ांने साहबख़ांको क़ैदसे निकालकर क़िलेका मालिक बनाया—महमूदने राजा मेदिनीराय और शर्ज़ाख़ां वग़ैरह सर्दारोंकी मददसे फ़ौज इकट्ठी कर मांडूको घेरलिया; शहरके घिर जानेसे डरकर ख़्वाजेसरा और साहबख़ां दोनों निकल भागे, और महमूदने मांडूपर क़ब्ज़ा किया. इन्हीं दिनोंमें इक़बा-लख़ां और मख़्सूसख़ां, जो पहिले भागकर आसेरमें जा रहेथे, नासिरुद्दीनके दूसरे शाहज़ादे शहाबुद्दीनको लेकर मांडू लेनेके इरादेसे रवानाहुए; लेकिन शाहज़ादा तो रास्तेमें ही गर्मीके सबब बीमार होकर मरगया—तब वे दोनों, उसके बेटेको होशंग का ख़िताब दे मांडू आपहुंचे, पर महमूदने उन्हें शिकस्त देकर पहाड़ोंकी तरफ़ भगा-दिया—फिर थोड़े दिनों बाद इक़बालख़ां और मख़्सूसख़ां अपना क़ुसूर माफ़ करा-कर मांडू आये—

यहां मेदिनीरायका दख़ल दिन दिन बढ़ता जाताथा—फ़ज़लख़ां और इक़बा-लख़ां शाहज़ादे साहबख़ांसे मेल रखनेके शुबहसे क़त्ल कियेगये. चंदेरीके हा-किम बहजतख़ांने, मेदिनीरायके डरसे दिल्लीके बादशाह सिकन्दर लोदीको सा-हबख़ांकी मदद करनेके लिये अर्ज़ी लिखी—उसमें यह मतलब था कि मांडूमें

(१) इस स्थानमें पानी लानेके लिये क्षिप्रा नदीको ख़ज़ाना बनायाहै. कहीं तल घरोंमें सांपके शकलकी नहरें बहतीहैं, और कहीं बड़े बड़े हौज़ोंसे चादरें गिरती हैं; हौज़ोंके किनारोंपर छत्रियां ऐसी बनी हैं कि कोई थकाहुआ आदमी गर्मीके दिनोंमें भी वहां जाय तो तरीके मारे गर्मीको भूल जाय, यहां एक छत्रीके थंभेपर अकबरके खुदवाये हुये फ़ारसीके शैर हैं और इसमकानको देखनेके लिये उसका बेटा जहांगीर भी अपनी बादशाहतके दिनोंमें वहां गयाथा—

हिंदुओंका ज्यादा दखल होनेसे मुसल्मान बहुत दुःख पातेहैं. इधर गुजरात के बादशाह मुज़फ़्फ़रने मांडूपर चढ़ाई की, परंतु अपनी फ़ौजके एक हिस्सेके हार जाने से अपशकुन समझ पीछा लौट गया. सुल्तान सिकंदर लोदीने कुछ सर्दारोंको फ़ौजके साथ साहबख़ांकी मददके लिये भेजा, पर बहजतख़ांकी बेपरवाही देखकर पीछा बुलवा लिया. मुहाफ़िज़ख़ां जो दिल्लीकी तरफ़ भाग गया था, चंदेरीसे कुछ फ़ौज लेकर आया, और मुज़फ़्फ़राबादके पास महमूदकी फ़ौजसे शिकस्त खाकर भाग गया. शाहज़ादे साहबख़ां व चंदेरीके हाकिम बहजतख़ांने सुलह चाही और महमूदने इलाके समेत रायसेणका क़िला साहबख़ांको देकर मेल करलिया; परंतु साहबख़ां, बहजतख़ांकी दग़ाबाज़ीके भयसे दिल्ली चला गया, और बहजतख़ां महमूदके पास आया. महमूदके मांडू आनेपर मेदिनीरायकी सलाहसे कई मुसल्मान क़त्ल कियेगये—इससे सब मुसल्मान नाराज़ थे. एकदिन बादशाह तो शिकारको गयाथा— मौक़ा पाकर एक पुराना सर्दार अलीख़ां, क़िलेमें घुस बैठा; परंतु महमूदने शिकारसे आते ही उसे निकाल दिया. मेदिनीरायने बादशाहको इतना वशमें करलिया था कि किसी ओहदे वा कारख़ाने पर मुसल्मान नामको भी न रहे. यह देख महमूदको बड़ा विचार हुआ और मेदिनीरायको कहलाया कि तुम यहांसे निकल जाओ; इसपर मेदिनीरायने बड़ी नरमी से अर्ज़ कराई कि हमारे बहुतसे भाई बन्धु व रिश्तेदार बादशाही नौकरी में मारेगये; और चालीस हज़ार राजपूत तन मनसे अबतक चाकरी कर रहे हैं; फिर ऐसी दशामें हम बेकुसूर क्यों निकाले जातेहैं? उस समय बादशाहने कुछ सोच विचार कर उसको ज्योंकात्यौं बहाल रक्खा—एक दिन मेदिनीराय और शालिवाहन पूर्बिया, बादशाहके पाससे आतेथे उस समय रास्तेमें अर्दलीके मुसल्मानोंने उनपर हमला किया; शालिवाहन मारा गया, और मेदिनीराय घायल होकर अपने डेरे पहुंचा; इसपर राजपूतलोग लड़नेके लिये तैयार हुए परन्तु मेदिनीरायने रोका, और बादशाहके सामने बड़ी लाचारी दिखलाई—

इसतरहके घात करने पर भी महमूदका कुछ बस न चला तब राज छोड़ शिकारके बहाने गुजरातकी तरफ़ भाग गया. गुजराती बादशाह मुज़फ़्फ़रने महमूद की बड़ी ख़ातिर की, और हि० ९२३ [वि० १५७४ = ई० १५१७] में उसकी मददके लिये फ़ौज लेकर अहमदाबादसे मांडूकी तरफ़ रवाना हुआ. राजा मेदिनीरायने अपने बेटे नाथूरावको, दश हज़ार सवार देकर मांडूमें छोड़ा, और आप धारके क़िलेका बंदोबस्त करताहुआ चित्तौड़में महाराणा सांगाके पास पहुंचा—इधर मुज़फ़्फ़रने महमूदको साथ लेकर मांडू और धारको आघेरा, और दोनों क़िले फ़तह करके महमूदको

देदिये- फ़रिश्ता अपनी किताबमें लिखताहै कि इस लड़ाईमें ९०००० (नव्वे हज़ार) राजपूत मारेगये. महमूदने मुज़फ़्फ़रकी मेहमानदारीमें कुछ कसर न रक्खी- अंतमें मुज़फ़्फ़र गुजरातको चला. इधर मालवेमें भेलसा और सारंगपुर पर सलहदी तंवरने, व चंदेरी और गागरौन पर मेदिनीरायने क़ब्ज़ा किया, तब महमूदने उनपर चढ़ाई की, और महाराणा सांगा मेदिनीरायकी सहायताके लिये चित्तौड़से चले. महमूद लड़ाईमें घायल हुआ और महाराणाका क़ैदी बना; फिर ताज व जड़ाऊ कमरपेटा देकर छुटकारा पाया. महमूद मांडूकी बादशाहत करता रहा, और गुजरातके तख़्तपर मुज़फ़्फ़रका बेटा बहादुरशाह बैठा. बहादुर शाहका छोटा भाई चांदखां (१) महमूदकी शरणमें आया, और गुजराती सर्दार रज़ीउल्मुल्कने चांदखांका मददगार होकर दिल्लीके बादशाह बाबरके पास इसका संदेसा लेजाना और पीछा जवाब लाना स्वीकार किया; उसे निकाल देनेके लिये बहादुरशाहने महमूदको लिखा, पर इसने कुछ ध्यान न दिया. तब हि० ९३७ ता० ९ शाबान [वि० १५८८ चैत्र शुक्ल १० = ई० १५३१ ता० २९ मार्च] को बहादुरशाहने चढ़ाई करके मांडू लेलिया, और महमूदको सात बेटों समेत क़ैदकर, आसिफ़खांके साथ चांपानेरके क़िलेमें रखनेके लिये रवाना किया. रास्तेमें १४ शाबान [चैत्र शुक्ल १५ = ३ एप्रिल] को लुटेरोंने उनपर हमला किया; तब गार्डके सिपाहियोंने भागजानेके डरसे महमूदको तो मार डाला, और उसके बेटोंको चांपानेरमें क़ैद कर दिया-

उसके बाद मांडूमें ख़िलजी ख़ानदानका कोई बादशाह नहीं रहा--

बाबर बादशाहका ख़ानदान.

[हिंदुस्थानमें मुग़ल ख़ानदानके प्रथम बादशाह बाबरका देहांत महाराणा रत्नसिंहके समयमें हुआ, इसलिये उसके ख़ानदानका हाल यहां संक्षेपसे लिखाजाता है-]

यह मुग़ल ख़ानदानके नामसे मशहूरहै; इस घरानेके कई शख़्सोंके नाम अबुल फ़ज़लने लिखे हैं. प्रतीत होता है कि वे लोग बौद्धमतके थे- अमीर तराग़ायने इस्लामका मज़हब इख़्तियार किया; उसका बेटा अमीर तीमूर था, जो हि० ७३६

(१) यह चांदखां कुछ दिनोंतक चित्तौड़पर महाराणा सांगाकी पनाहमें भी रह चुकाथा—

ता० २५ शाबान [विक्रमी १३९३ वैशाख कृष्ण १० = ई० १३३६ ता० १० एप्रिल] को ईरानके शहर सब्ज़में नगीनाख़ातूनके पेटसे पैदा हुआ, और हि० ७७१ ता० १२ रमज़ान [विक्रमी १४२७ प्रथम वैशाख शुक्ल १३ बुधवार, = ई० १३७० ता० १० एप्रिल] को शहर बलख़का बादशाह हुआ. इसने ईरान, अरब और रूम कई मुल्क जीतलिये. हि० ८०१ ता० १२ मुहर्रम [विक्रमी १४५५ आश्विन शुक्ल १३ = ई० १३९८ ता० २५ सेप्टेम्बर] को सिंधु नदी उतरकर हिन्दुस्थानमें आया और बहुतसे शहर फ़तह किये. हि० ८०७ ता० १७ शाबान [विक्रमी १४६१ चैत्रकृष्ण ३ बुधवार = ई० १४०५ ता० १९ फ़ेब्रुअरी] को समर्क़ंदसे चीनकी तरफ़ ७६ कोश के फ़ासले पर अतरार गांवमें उसका इंतक़ाल हुआ. इस बादशाहको "ईश्वरका कोप" कहना चाहिये; इसका थोड़ासा जुल्म नमूनेके तौर नीचे लिखाहै—जब तीमूर दिल्ली फ़तह करने आया, उस वक़का थोड़ासा ज़िक्र तुज़क तीमूरीके (जो तीमूरने तुरकी ज़बानमें लिखी थी) उर्दू तर्जुमेके पृष्ठ ६३५ से लिखा जाता है; –

"एक दिन मजलिसमें अमीर जहांशाह और सुलेमानशाह वग़ैरहने अर्ज़ किया कि जबसे हज़रत अमीर हिंदुस्थानमें आये हैं, एक लाखसे ज्यादा काफ़िर (हिन्दू) क़ैदी, लश्करमें इकट्ठे होगये हैं. कल जो दुशमनोंसे लड़ाई हुई, उसपर यह लोग खुश होकर उम्मेद ज़ाहिर करते थे कि अगर ज़रा भी दुश्मनोंका ग़लबा हो तो बेड़ियें तोड़कर हमपर धावा करें, या दुश्मनोंसे जामिलें- इस बातमें सर्दारोंसे मैंने सलाह ली, तो सभोंने अर्ज़ किया कि बड़ी लड़ाईके दिन एक लाख आदमियोंको खाली डेरोंमें रख जाना या क़ैदसे छोड़देना मुनासिब नहीं. इतने बुतपरस्त (मूर्तिपूजक) काफ़िरोंको, जो दुश्मन हैं, क़ैदसे निकाल देना सिपहगरीके बरख़िलाफ़ है; क़त्लके सिवाय कोई तदबीर ख़ियालमें नहीं आती- तमाम अमीरोंकी सलाह सिपहगरीके मुवाफ़िक़ थी, इसलिये फ़ौरन मैंने हुक्म दिया कि लश्करमें मुनादी करदो, कि जिस जिसके पास हिन्दुस्थानी काफ़िर क़ैद हों उनको क़त्ल करे, और जो आदमी अपने क़ैदीके क़त्ल करनेमें सुस्ती करे उसको भी मार डालो; उसका माल व असबाब मारने वालेके लिये है- लश्कर वालोंने हुक्म सुनकर अपना काम पूरा किया. एक लाख काफ़िर उस रोज़ क़त्ल हुए- मौलाना नासिरुद्दीन उमरने भी, जिसने अपनी तमाम ज़िंदगीमें एक चिड़िया भी नहीं मारी थी, इस वक़ पंद्रह आदमी तलवारसे क़त्ल किये."– यह उसका एक साधारण जुल्म था.

तीमूरके चार बेटे थे—जिनमेंसे १ ग़यासुद्दीन जहांगीर मिरज़ा और २ उमरशैख़; ये दोनों तो अपने बापके जीते ही मरगये. ३ मिरज़ा मीरांशाह था, जिसकी

औलादका ज़िक्र नीचे लिखाहै. ४ मिरज़ा शाहरुख़-जो खुरासानकी हुकूमत पर था, हि० ८५० [वि० १५०३ = ई० १४४६] में मरगया.

मीरांशाह.

मिरज़ा जलालुद्दीन मीरांशाहका जन्म हि० ७६९ [वि० १४२४ = ई० १३६८] में हुआ. यह अपने बापके सामने इराक़, आज़रबायजान, दयारेबिक्र, और शामकी हुकूमत करता रहा. अमीर तीमूरके मरने बाद मीरांशाह एक बार शिकारमें घोड़ेसे गिरा और बहुत ज़ख़मी हुआ, इसी सबबसे यह कमज़ोर होगयाथा; इसलिये उसका बड़ा बेटा अबाबक्र, अपने बापके नामका खुतबा और सिक्का जारी रख, मुल्की काम आप करने लगा. हि० ८१० ता० २४ ज़िल्क़ाद [विक्रमी १४६५ द्वितीय वैशाख कृष्ण १० = ई० १४०८ ता० २४ एप्रिल] को क़रायूसुफ़ तुर्कमानसे लड़कर मीरांशाह मारा गया. इसके आठ बेटे थे-१ अबाबक्र मिरज़ा, २ अलंगर मिरज़ा, ३ उस्मान मिरज़ा, ४ हलबी मिरज़ा, ५ उमर ख़लील मिरज़ा, ६ सुल्तान मुहम्मद मिरज़ा, ७ ईजल मिरज़ा और ८ स्यूरग़ तम्श—परन्तु इस जगह सिर्फ़ ६ सुल्तान मुहम्मद मिरज़ाका ही हाल लिखना आवश्यक है.

सुल्तान मुहम्मद.

यह मिरज़ा अपने बड़े भाई ख़लीलके साथ इराक़में रहताथा; इसने मरते वक़्त तीमूरके पोते शाहरुख़के बेटे मिरज़ा अलग़बेगसे, जो खुरासानका हाकिम था, अपने बेटे मिरज़ा अबूसईदके मददगार रहनेकी सिफ़ारिश की. सुल्तान मुहम्मद के दो बेटे थे-१ सुल्तान अबूसईद मिरज़ा और २ सुल्तान मनूचिहर मिरज़ा. अबूसईद का जन्म हि० ८३० [वि० १४८४ = ई० १४२७] में हुआ; इसने २५ वर्षकी उमर में बादशाह बनकर तुर्किस्तान, बदख़शां, काबुल, ग़ज़नी और कंधारपर क़ब्ज़ा किया. अबूसईद बड़ा नेकचलन, फ़क़ीराना ढंगका था. हि० ८७३ ता० २२ रजब [वि० १५२५ फाल्गुन कृष्ण ८ = ई० १४६९ ता० ५ फ़ेब्रुअरी] को आजून हसन तुर्कको लड़ाईमें गिरिफ्तार होकर वह तीन दिन बाद क़त्ल हुआ. इसके दश बेटे थे- १ सुल्तान अहमद मिरज़ा, २ सुल्तान मुहम्मद मिरज़ा, ३ सुल्तान महमूद मिरज़ा, ४ सुल्तान उमरशैख़ मिरज़ा, ५ सुल्तान मुराद मिरज़ा, ६ सुल्तान वलद मिरज़ा, ७ सुल्तान अलग़बेग मिरज़ा ८ अबाबक्र मिरज़ा, ९ सुल्तान ख़लील मिरज़ा, और १० सुल्तान शाहरुख़ मिरज़ा.

उमरशैख़.

सुल्तान उमरशैख़ मिरज़ाका जन्म हि० ८६० [विक्रमी १५१३ = ई० १४५६] में हुआ. इसने समर्कन्दमें बड़ी नेकनीयतीके साथ हुकूमत की. यह

हि० ८९९ ता० ४ रमज़ान [वि० १५५१ आषाढ़ शुक्ल ६ सोमवार = ई० १४९४ ता० १० जून] को एक मकानमें जो पहाड़पर बनायागयाथा, कबूतरोंकी सैर कर-रहाथा. अकस्मात् पहाड़के फटजानेके कारण मकान धसगया, जिससे उमरशैख़ दबकर मरगया. इसके तीन बेटे और ५ बेटियां हुईं; जिनमेंसे १ बड़ा बेटा ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर, उससे दो वर्ष छोटा २ जहांगीर मिरज़ा, और उससे दो वर्ष छोटा ३ नासिर मिरज़ा था. लड़कियोंमें १ ख़ानज़ादा बेगम, २ मिहरबानू बेगम, ३ कारसुल्तान बेगम, ४ रज़िया सुल्तान बेगम थी; पांचवीं बचपनमें मरगई.

बादशाह ज़हीरुद्दीन बाबर

इसका जन्म हि० ८८८ ता० ६ मुहर्रम [वि० १५३९ फाल्गुन शुक्ल ८ = ई० १४८३ ता० १५ फेब्रुअरी] को कुतलक़निगारख़ानमके पेटसे हुआ, जो चंगेज़ख़ांकी औलादमेंसे थी. बादशाहका जन्मनाम "ज़हीरुद्दीन मुहम्मद" था, परन्तु तुर्की ज़बानमें इसका उच्चारण कठिन होनेसे "बाबर" रक्खा गया, और बादशाह होने-पर दोनों नाम मिलाकर बोले जातेथे. हि० ८९९ ता० ५ रमज़ान [वि० १५५१ आषाढ़ शुक्ल ७ मंगलवार = ई० १४९४ ता० ११ जून] को फ़र्ग़ाना इलाक़ेके शहर अंदजान का बादशाह (१) हुआ. बाबरने हि० ९०३ [वि० १५५४ = ई० १४९८] में अपने रिश्तेदारोंसे सात महीने तक सामना करके समर्क़ंद पर क़ब्ज़ा किया. यह बहुत बीमार होनेके कारण वहीं था, कि उन रिश्तेदारोंने मौक़ा पाकर इसकी मा, बीबी, और सर्दार वग़ैरहको अंदजानमें जा घेरा. बाबर कुछ आ-राम होनेपर अंदजान बचानेके लिये चला, परन्तु उसकी मा और बीबियोंने उसे बहुत बीमार सुनकर क़िला दुश्मनोंको सौंप दिया था; यह हाल बाबरने ख़ुजंदशहर में पहुंचने पर सुना, तो दोनों ओरसे निराश होकर ताशकंदके रईस ख़ान दादा की सहायतासे, जो उसका रिश्तेदार था, अंदजान पर चढ़ाई की. परन्तु दुश्मनोंने ख़ान दादाको रिश्वत देकर लौटा दिया. बाबर लाचार होकर फिर ख़ुजंद आया. यह पहिली ही मुसीबत थी कि जिससे वह घबराकर खूब रोया. फिर सुल्तान महमूद तुर्किस्तानी रईसकी मदद लेकर समर्क़ंद पर चढ़ा. वहांसे भी औज़बकोंके भयसे महमूदके चलेजाने पर इसे पीछा लौटना पड़ा— बाबर अपनी किताब तुज़क बाबरी में अपनी मुसीबतोंके बहुतसे हालात इस तरह पर लिखताहै. हि० ९०४ [वि० १५५५ = ई० १४९९] में यारकंदके इलाक़ेकी गढ़ियोंपर क़ब्ज़ा करलिया. यह सरदीका

---

(१) यह बादशाह होना सिर्फ़ नामके लिये था, क्योंकि बादशाह तो हिंदुस्थान पर क़ाबिज़ होनेबाद कहना ठीक है—

मौसिम आरामसे गुज़रा. फिर गरमीके दिनोंमें वहांसे रवाना होकर बड़ी बड़ी आफ़तें झेलता हुआ अपने सर्दार, अलीदोस्त तग़ाई के बुलानेसे मुर्ग़ियान गया. (यह सर्दार पहिले बाबरसे जुदा होगयाथा.) यहां भी इसके भाई जहांगीर मिरज़ा और ओज़ून-हसन वग़ैरहने आघेरा परंतु इसने उनको शिकस्त दी. फिर मुर्ग़ियानसे निकल कर दो वर्ष पीछे अंदजानपर दूसरी बार क़ब्ज़ा किया और अख़सी व काशान लेलिया; परंतु इसके अनंतर भी कई जगह लड़ाइयां करनी पड़ीं—जिनमें कहीं हारा, और कहीं जीता. हिजरी ९०५ ता० १८ मुहर्रम [विक्रमी १५५६ आश्विन कृष्ण ४ = ई० १४९९ ता० २५ ऑगस्ट] को अंदजानसे ओश पर चढ़ाई करके विना मुक़ाबले अपने क़ब्ज़ेमें लिया. बाबर ओशमें ही था कि इसतरफ़ दुश्मनोंने अंदजानको ख़ाली देख हमला किया, परन्तु शिकस्त खाकर भागे. अहमद तंबलके भाई ख़लीलने मादूके क़िलेमें पनाह ली, इस सबबसे बाबरके सर्दारोंने मादूको घेरा. कुछ लड़ाई होनेके पीछे ख़लीलको गिरिफ्तार कर अंदजान भेजा और क़िलेमें अपना अमल करालिया. फिर अंदजानके क़रीब तंबल और जहांगीर मिरज़ासे बाबर की लड़ाई हुई, जिसमें तंबल और जहांगीरके बहुतसे आदमी मरे, और जो बचे वे सब भाग गये- यह पहिली ही लड़ाई थी जो बाबरने परेड बांधकर क़ायदेके साथ की. हि० ९०५ अख़ीर शाबान [विक्रमी १५५७ के वैशाख कृष्ण = ई० १५०० के अख़ीर मार्च] को, मिरज़ा जहांगीर और तंबलसे, बाबरने इस शर्तपर सुलह की कि सब मिलकर समर्क़ंद पर हमला करें; अगर वहां क़ब्ज़ा हो तो बाबर समर्क़ंदमें रहे, और अंदजान मिरज़ा जहांगीर व तंबल को दियाजावे- ऐसी शर्त करके उसने इन भाइयोंको मिलालिया. जब कि समर्क़ंदके अमीर अलीदोस्त और मुहम्मदतरख़ां के आपसमें नाइत्तिफ़ाक़ी हुई तो मुहम्मद तरख़ांने बाबरको बुलाया- यह उसी वक़् अपनी फ़ौज लेकर चढ़ दौड़ा, परंतु समर्क़ंद उन अमीरोंने शैबानख़ां उज़्बकको दे दिया. बाबर पीछा तो लौटा, परंतु समर्क़ंद लेनेकी उम्मेद उसकी वैसी ही रही. हि० ९०६ [विक्रमी १५५७ = ई० १५०१] में बाबरने फिर चढ़ाई की और अचानक थोड़ेसे आदमी किसी बहानेसे शहरमें भेज दिये. वे लोग दरवाज़ेके किवाड़ तोड़ने लगे—इतनेमें बाबर भी सब साथियों समेत जा पहुंचा. शहरके बाशिंदों और बाबर के साथियोंने उज़्बकोंके पांच सौ आदमी मारडाले. कुछ मुक़ाबला करके शैबानख़ां भी भागगया और बाबरने समर्क़ंदपर अपना अधिकार जमाया. उसवक़् इसकी उमर १९ वर्षकी थी. थोड़े दिनों पीछे शैबानख़ां फ़ौज लेकर

चढ़ा तब बाबरने तीन कोश आगे जाकर मुक़ाबला किया परंतु शिकस्त खाकर लौटा. इस लड़ाईमें बहुतसे सर्दार और आदमी मारेगये. शैबानख़ांने शहरको घेरलिया और कई महीनों तक लड़ाई रही; जब खाने पीनेका सामान कुछ भी न रहा तब बाबर शहरसे निकल भागा; इसकी बहनको जो क़िलेमें रहगई थी शैबानने अपनी बेगम बनाया- और आप क़िलेका मालिक बना. बाबर विपतका मारा भागकर दरख़ गांवमें पहुंचा- वहांके लोगोंने कुछ मांस रोटी खानेको दी उसे भी वह बड़ी न्यामत समझा. इस वक़्त मुसीबतोंने उसे यहांतक घेरा कि पैरोंकी जूतियें भी फटजानेके कारण फेंक कर नंगे पैरों चलना पड़ा. हि० ९०८ [विक्रमी १५५९ = ई० १५०२] में बड़ी बड़ी तकलीफ़ें उठाता हुआ ताशक़ंदमें ख़ानदादाके पास पहुंचा; और उससे मदद लेकर फिर अंदजान, ख़जंद वग़ैरह कई जगहों पर क़ब्ज़ा करलिया- अंदजानकी लड़ाईमें बाबर अहमद तंबलके हाथसे ज़ख़्मी होकर भागा और ओश होताहुआ अख़सी शहरमें पहुंचा, परंतु वहां भी तंबलने आ दबाया- तब कुछ दिन लड़कर चिमन गुम्बदकी तरफ़ भाग गया- अहमद तंबलने पीछा किया जिसमें बाबरके बहुतसे आदमी मारे गये- बादशाहके पास आठ सवार रहगये थे. उनमें से भी एक एक थकता गया और पीछे रहतागया; जो जो साथ भागे वे बाबरको अपने तेज़ दौड़ने वाले घोड़े बदलकर देते गये- चलते चलते वह अकेला एक पहाड़के नीचे जा निकला; जहां उसका पीछा करनेवाले २५ सवारोंमेंसे भी दो ही साथ पहुंचे- और तीनों थकावटकी हालतमें पहाड़पर चढ़े- सवारोंने चढ़ाईसे थक जानेके कारण बाबरसे सौगंध (क़सम) खाकर कहा कि अब क्षमा कीजिये हम शत्रुता छोड़कर आपकी चाकरी करेंगे- बाबरने कुछ लाचारी और कुछ विश्वाससे उनका साथ किया- यह ऐसी मुसीबत थी कि एक दिन तो बाबर बादशाहने दोनों सवारों समेत सिर्फ़ एक एक रोटी खाकर गुज़र किया और दूसरे दिन कोदोंके दलियेसे पेटकी आग बुझाई; एक दिन बाबर उन सवारोंका पूरा विश्वास न होनेके कारण उस बाग़की (जहां वह ठहरा था) दीवार फांदकर पैदलही भाग निकला और बड़े कष्टसे ख़ुरासानकी तरफ़ एक गांवमें पहुंचा. वहां उसके ख़ैरख़्वाह आदमी मिले, जिनके साथ थोड़ी दूर चलकर वह अपनी माके पास पहुंचा; वहांसे २५० आदमीके आसरे एकट्ठे होजाने पर, बदख़्शांकी तरफ़ रवाना हुआ.

रास्तेमें और भी कई पुराने सर्दार आ मिले. सिवाय इसके बदख़शांका मालिक ख़ुसरोशाह भी, जिसके पास बीस हज़ारसे अधिक फ़ौज थी, अपने सर्दारोंका मन बाबरकी तरफ़ देख मुक़ाबला किये बिनाही हाज़िर होगया. बाबरने उसको, अपना माल असबाब

लेकर खुशीसे निकल जानेका हुक्म दिया, और ख़ुसरोने हुक्मके मुवाफ़िक शहर ख़ाली करदिया. बदख्शांमें क़ब्ज़ा होनेके पीछे बाबर ख़ुरासानके मुल्क पर भी हुकूमत करनेलगा; और हि० ९१० रबिउल्अव्वल [वि० १५६१ भाद्रपद = ई० १५०४ ऑगस्ट] में उसकी सब तकलीफ़ें मिटगई. इतने दुःख भुगतने पर भी इस बहादुरसे चुपचाप बैठा न रहागया. इसने काबुल फ़तह करनेके इरादेसे हि० रबिउस्सानी [वि० आश्विन = ई० सेप्टेम्बर] में काबुल व ग़ज़नी आदि पर हमला करके अपना अधिकार जमाया; और सियहपोश व हज़ारा वगैरह कई क़ौमों से लड़ाइयां करके बहुतसा रुपया और सामान एकट्ठा किया. काबुलके विषय तुज़-कबाबरीमें बाबर लिखता है कि "यह मुल्क तलवार बिना, क़लमसे क़ब्ज़ेमें नहीं रहसका." काबुलसे, हिंदुस्थानका इरादा करके हि० शाबान [वि० माघ = ई० १५०५ के ज्यानूअरी] में रवाना होकर जगदलक और बादामचश्मह होताहुआ दीनापुर पहुंचा. वहांसे ख़ैबर उतरा, और हिंदुस्थानके सरहद्दी इलाक़ोंमें फिरकर बंगश के पठानोंको लूटता मारता कैदकरता पीछा काबुल गया – हि० ९११ मुहर्रम [वि० १५६२ आषाढ़ = ई० १५०५ जून] में बाबरकी माका देहान्त हुआ; मातम (शोक) से फ़ुरसत पाकर वह कंधारकी तरफ़ रवाना हुआ; परन्तु रास्तेमें बीमार होनेके कारण कंधार छोड़कर क़लात पर क़ब्ज़ा किया, और वहां की आब हवा बहुत ख़राब होनेसे फिर काबुल चलागया. इन दिनोंमें शैबानखां उज़्बकने हिरात और कंधार पर क़ब्ज़ा करलिया था, परन्तु बाबर इससे मुक़ाबला न करसका. हि० ९१३ जमादिउल् अव्वल [वि० १५६४ आश्विन = ई० १५०७ सेप्टेम्बर] में हिंदुस्थान की तरफ़ दुबारा रवाना हुआ. इधर जगदलकका घाटा काबुलियोंने बंद करदिया था और वे यह समझे हुए थे कि बाबर, शैबानखांके डरसे हिंदुस्थानकी ओर भागगया; परंतु बाबरने उनको शिकस्त देकर हिंदुस्थानकी तरफ़ मुंह मोड़ा; सोचनेपर निश्चय हुआ कि थोड़ीसी जमैयत लेकर हिंदुस्थानमें जाना ठीक नहीं. इतनेही में ख़बर मिली कि शैबानखां अपने मुल्क ख़ुरासानमें फ़साद होनेके सबब सुलहकरके कंधारसे लौटा; इसीसे बाबर भी काबुल चलागया-

हि० ९१३ ता० ४ ज़िल्क़ाद [वि० १५६५ चैत्रशुक्ल ६ = ई० १५०८ ता० ८ मार्च] को शाहज़ादा हुमायूं, बाबरकी बीबी माहम बेगमके पेटसे पैदा-हुआ- शैबानखांके चले जानेपर बाबर मुल्की हुकूमतकी तरफ़से पूरा बेखटके हुआ- उसने अपने तुज़कमें लिखा है कि "अबतक तो तीमूरी औलादको ' मिरज़ा ' कहते थे परन्तु अबसे 'बादशाह' कहना चाहिये"

हि० ९१५ [वि० १५६६ = ई० १५०९] में इसने बाजौर और स्वात वग़ैरह ज़िलों पर क़ब्ज़ा किया- इसी वर्षमें बाबर के दूसरा बेटा हिंदाल पैदा हुआ- बाबरने मुल्ला मुर्शिदको दिल्लीके बादशाह इब्राहीम लोदीके पास भेजकर कहलाया कि "पंजाब वग़ैरह ज़िले, जो तुर्कमानोंके क़ब्ज़ेमें थे, उन पर हमारा दख़्ल होना चाहिये." जब एलची जवाब मिले बिना निराश होकर चला आया, तब बाबरने हिन्दुस्थान पर चढ़ाई की; और चनाब नदी तक लूट मार करके लौटगया. हि० ९२६ [वि० १५७७ = ई० १५२०] में सियहपोश काफ़िरों को शिकस्त दी. हि० ९३२ [वि० १५८२ = ई० १५२५] में बाबर जगदलककी तरफ़ गया और वहींसे हिंदुस्थानपर चढ़ाई के इरादेसे रबिउल्अव्वलकी पहिली तारीख़ [पौष शुक्ल २ = १७ डिसेम्बर] को सिंधु नदी उतरा. उस समय उसके साथ केवल १२००० आदमी थे, परंतु लाहोरके आस पास पहुंचनेपर बहुतसे हिंदुस्थानी सर्दार आमिले; पंजाबका सर्दार ग़ाज़ीख़ां तो पहाड़ोंमें भाग गया पर दौलतख़ां हाज़िर हुआ. बाबर वहां से कोटलेके पास आया. इधर दिल्लीका बादशाह इब्राहीम लोदी एकलाख फ़ौज और हज़ारों हाथियों समेत मुक़ाबलेके वास्ते तैयार था. बाबरने हि० ९३२ जमादिउल् आख़िर [विक्रमी १५८३ वैशाख कृष्ण = ई० १५२६ एप्रिल] में पानीपत पहुंचकर, मोरचे बांधे. कई दिनों पीछे इब्राहीम लोदीकी फ़ौजसे मुक़ाबला हुआ. बाबरने अपनी फ़ौजके तीन टुकड़े किये- एक दाहिनी तरफ़; दूसरा बाईंतरफ़; और तीसरा सामने. इन्हींमेंसे चौथा हिस्सा गिरदावर (घूमनेवाला) रक्खा; जिसने इब्राहीम लोदीकी फ़ौजको पीछेसे जा दबाया. चार घड़ी दिन चढ़ेसे दो पहर तक लड़ाई होती रही; अन्तमें बाबरने फ़तह पाई. वह लिखताहै कि "इब्राहीमकी लाशके गिर्द ६००० और दूसरे १६००० मिलकर २२००० आदमी लोदियोंके मारेगये."

हि० ९३२ तारीख़ ८ रजब, शुक्रवार [वि० १५८३ वैशाख शुक्ल १० = ई० १५२६ तारीख़ २२ एप्रिल] को इब्राहीम मारागया, और बाबर हिन्दुस्थानका बादशाह बना. इसने एक हफ़्तह पीछे दिल्ली जाकर अपने नामका सिक्का और ख़ुतबा जारी किया; वहांसे २२ रजब [ज्येष्ठकृष्ण ८ = ६ मई] को आगरे पहुंचा- अबुलफ़ज़ल लिखताहै कि इब्राहीम लोदीपर फ़तह पानेके वक़ बाबरके साथ नौकर चाकर वग़ैरह सब मिलाकर ७०००० फ़ौज थी, परंतु बाबरने सिर्फ़ १२००० लिखा है. वह लिखताहै कि जब "मैंने इब्राहीमपर फ़तहपाई उसवक़ हिन्दुस्थानमें पांच मुसल्मान बादशाह और दो हिन्दू राजा ख़ुदमुख़्तार थे"—

मुसल्मानोंकी सल्तनत- बिहार, बंगाल, गुजरात, दक्षिण व बीजापुर और मांडूमें; और हिन्दुओंकी चित्तौड़ (महाराणा सांगा) तथा विजयनगर (बीजानगर)मेंथी.

हि० ९३३ [वि० १५८४ = ई० १५२७] में महाराणा सांगासे बाबरने दो लड़ाइयां कीं; पहिलीमें तो हारा और दूसरीमें (बयानेके पास खानवा ग्राममें) जीता; इसका पूरा हाल महाराणा सांगाके वृत्तांतमें है. हि० ९३४ [विक्रमी १५८५ = ई० १५२८] में बाबरने बंगालेके पठानोंसे लड़कर कालपी तक मुल्क लेलिया, परन्तु बर्षाके कारण वहांसे सुलह करके चलाआया. इन्ही दिनोंमें मेदिनीरायसे चंदेरीका क़िला जो मेवाड़के अधीन था, फ़तह किया. हि० ९३५ [विक्रमी १५८६ = ई० १५२९] में दुबारा बंगालेपर चढ़ा, लेकिन फिर भी बर्सात ही के सबबसे लौटना पड़ा. आख़िरकार हि० ९३७ ता०३ जमादिउल्अव्वल [विक्रमी १५८७ पौष शुक्ल ४ = ई० १५३० ता० २४ डिसेम्बर] को जमुनाके किनारे यार बाग़में बीमार होकर मरगया. बाबरकी लाश उसकी वसीयतके मुवाफ़िक़ (१) काबुल भेजकर दफ़नाई गई. इस बादशाहका अधिकार नीचे लिखे स्थानों पर था- खुरासानमें बदख़्शां; अफ़ग़ानिस्तानमें काबुल, कंधार, और ग़ज़नी; बलूचिस्तान में क़लात वग़ैरह; और हिंदुस्थानमें मुल्तान, पंजाब, दिल्ली, आगरा, अवध और बिहार.

बाबरके ख़ालसेकी आमदनी एड्वर्ड टॉमस साहबने (२) दो करोड़ साठलाख रुपया सालियाना लिखी है. यह बादशाह नेकतबीयत, सादा मिज़ाज, दिलेर और इरादेका पक्का था, परन्तु कभी कभी सिपाहियाना बेपरवाहीसे जुल्म भी कर बैठता.

---

(१) शब्द शुद्ध लिखेजांय और भाषा सबकी समझमें आवे इन दो बातोंका ध्यान इस ग्रंथमें विशेष रक्खा है. कहीं कहीं प्रथम नियमको छोड़दियाहै, जैसे उम्रके स्थानमें उमर, मुआफ़िक़के स्थानमें मुवाफ़िक़ वा माफ़िक, करदिया है; ऐसे दसको दश, कोसको कोश, बर्ताव को वर्ताव आदि लिखाहै- बिंदुओंका नियम भी फ़ारसी शब्दोंके लिये पूरा नहीं रक्खा. कारण उच्चारण स्वयं सुने बिना करना संभव नहीं- और जानकारोंके लिये वह वैसा ही व्यर्थ है जैसा अजानोंके लिये.

(2) Revenue Resource's of the Mughal Empire by Ed. Thomas, P. 2

छंद पद्धरी.

चितौड़ रत्न राज्याभिषेक–रणथम्भ भ्रात सापत्न धेक ॥
नृप सूर्यमल्ल हड्डाविरोध–दुहुं शस्त्रघात पंचत्व बोध १
इतिहास मंडुपति पातसाह–बब्बर सवंश वृत्तान्त राह ॥
यह प्रथम बीर पूर्वज प्रकास–कविराज कीन्ह श्यामलविकास २

महाराणा रत्नसिंह— प्रथम प्रकरण

समाप्त .

महाराणा विक्रमादित्य.— द्वितीयप्रकरण.

महाराणा रत्नसिंहके पीछे राज्यके हक़दार विक्रमादित्य थे, इस लिये सब सर्दार व उमरावोंने माजी हाड़ी कर्मवतीको दोनों (१) बेटों समेत रणथंभोर से बुलवाकर विक्रमादित्यको वि० १५८८ [हि० ९३८ = ई० १५३१] में गादीपर बिठाया (२). यह महाराणा बिलकुल नादान होनेके सिवाय राज काजमें किसीका भरोसा भी नहीं करते थे– फिर इतने बड़े राज्यका बंदोबस्त किस तरह होसके! इन्होंने अपने पास ख़िदमतगारोंके सिवाय केवल सात हज़ार पहलवान रखछोड़े थे. इन महाराणाकी आदतें बहुत बुरी थीं— कभी तो सभामें चुपकेसे किसीके जामेकी कोर जाजममें सिलवा देना और वह उठे तब ख़ूब हंसना. इसी तरह

---

(१) विक्रमादित्य और उदयसिंह, जिनके रणथंभोर जानेका हाल महाराणा रत्नसिंहके वर्णनमें लिखागया है— पृष्ठ २–६ तक.

(२) कर्नेल टॉड, संवत् १५९१ में इनका गादी बैठना लिखते हैं, परंतु वह ठीक नहीं; क्योंकि संवत् १५८९ के वैशाखमें विक्रमादित्य, महाराणा होकर मांडलगढ़ शादी करने गये; तब उस परग-नेमें एक ब्राह्मणको जालिया ग्राम उदक (पुण्यार्थ) दिया; जिसका ताम्रपत्र उस ब्राह्मणके वंशजोंके पास मौजूद है- (प्रकरण समाप्तिमें उसकी नकल है नम्बर १ देखो)– बड़वा भाटोंकी पोथियों और अमरकाव्यमें गादी बैठनेका संवत् १५८७ लिखाहै. मिरात सिकन्दरीके २२२ पृष्ठसे हि० ९३७ जमादिउस्सानी [विक्रमी १५८७ माघ शुक्ल] में महाराणा रत्नसिंहका बहादुरशाह गुजरातीसे मिलना साबित है. और बून्दीके इतिहास वंशभास्कर तथा वंशप्रकाशसे संवत् १५८८ में महाराणा रत्न-सिंह और बून्दीके राव सूर्यमल्लका परस्पर माराजाना निश्चित है.

कभी कभी सर्दार उमरावोंकी हंसी कराकर कहते कि बेचारे राजपूत क्या क-रेंगे ? कोई बाहरका दुश्मन आवेगा तो हमारे पहलवान ही बहुत हैं. इन बातोंसे सर्दार उमराव तो अपने अपने ठिकानोंमें चलेगये और कारबारियों (अहलकारों) ने भी सब काम छोड़ यह कहना शुरू किया कि अब जिसको इज़्ज़त बचाना हो वह सर्कारमें जाना छोड़े; इससे सर्दारों वग़ैरहपर और भी तरह तरह की तंगी होनेलगी; रियासतमें बड़ा द्वंद मचा, परन्तु महाराणाको कुछभी परवाह न थी, न किसीके कहने सुननेपर अमल होता था. ख़राब आदतवाले स्वार्थी लोग पास रहकर अपना मतलब बनाते थे. माजी हाड़ीने भी जो बुद्धिमान थीं, बहुत समझाया, परन्तु चिकने घड़ेपर बूंदके समान कुछ असर न हुआ; ऐसी हालतमें रियासतकी बरबादी हो तो क्या आश्चर्य है—

महाराणा विक्रमादित्यने बूंदीके राव सूर्यमल्लके (१) बेटे सुल्तानको, जो कम उमर था, राज तिलक दिया.

चित्तौड़पर बहादुरशाहकी पहिली चढ़ाई.

महाराणा विक्रमादित्यकी यह दशा देख, आसपासके दुश्मनोंने उनके मुल्कपर मन चलाया; बादशाह बहादुरशाह गुजरातीने जो मालवा जीतने के पीछे मांडूमें रहता था, विक्रमी १५८९ [हि० ९३९ = ई० १५३२] में चित्तौड़की तरफ़ अपने सर्दार मुहम्मदशाह आसेरीको फ़ौज समेत रवाना किया; यह ख़बर सुनकर महाराणाके सलाहकारों (पासवान लोगों) के होश उड़गये, जिससे उन्होंने कुछ नज़र भेट देकर गुजराती फ़ौजको पीछे फेरनेका विचार किया; और मंदशोरके मुक़ाम, एलची भेजकर मुहम्मदशाह आसेरीको कहलाया कि मांडूके इलाक़ेके ज़िले जो मेवाड़में आये

इन बातोंसे सिद्ध होगया कि संवत् १५८८ चैत्र शुक्ल १ से आषाढ़ शुक्ल १५ तक चार महीने के बीचमें विक्रमादित्य गादीनशीन हुए. उक्त ताम्रपत्रसे कर्नेल टॉडका लेख रद्द होता है; बड़वा भाट अपनी पोथियोंमें कार्तिक महीनेसे संवत् बदलते हैं, जिससे ८८ के कार्तिक तक उनके लेखमें ८७ माना गया. और हमारे हिसाबसे (इस इतिहासमें) चैत्रसे ८८ शुरू हुआ—

मेवाड़में श्रावण कृष्ण १ से संवत्का आरंभ मानते हैं, इस वास्ते अमरकाव्यमें (श्रावणी) संवत् १५८७ लिखदिया है, जिससे हमारा चैत्री संवत् १५८८ श्रावणी के पहिले लगा.

मिरात सिकन्दरीसे संवत् १५८७ विक्रमी माघ शुक्लमें महाराणा रत्नसिंहका विद्यमान होना ज़ाहिर है, जिससे चैत्र शुक्ल १ से आषाढ शुक्ल १५ विक्रमी १५८८ के बीच महाराणा रत्नसिंहका देहान्त और विक्रमादित्यका राज्याधिकारी होना सिद्ध होताहै. इसके सिवाय बून्दीके इतिहाससे भी हमारा लिखना दुरुस्त है.

(१) जो महाराणा रत्नसिंहको मारकर मरे— पृष्ठ ८ देखो

हैं उन्हें छोड़नेके सिवाय आगेको भी विरुद्ध बर्ताव नहीं होगा. परन्तु कमज़ोरीकी हालतमें दुश्मन कब मानताहै; महाराणाकी बुरी आदतों और बर्तावोंसे घरके भेदू (महाराणा सांगाका भतीजा नरसिंहदेव और चंदेरीका राजा मेदिनीराय वगैरह) कई सर्दार नाराज़ होकर बहादुरशाहके पास जारहे थे, और वेही फ़ौजके साथ रहकर मुसल्मानोंको इधरका भेद बताया करते थे. मुहम्मदशाह व खुदावंदखां गुजरातीने महाराणाके पैग़ामको नहीं माना, और बेखटके फ़ौज लेकर नीमच आ पहुंचे, जहां महाराणा अपनी सेना व सर्दारोंके साथ मुक़ाबला करनेके लिये तैयार थे; परन्तु पहिली ही चढ़ाईमें मेवाड़की फ़ौज भागकर चित्तौड़के क़िलेमें आ घुसी, और सर्दार लोग अपनी अपनी जागीरोंको चलेगये; मुसल्मानोंनें चित्तौड़को आ घेरा. किसी कविने उस समय यह गद्य कहा था—

"आछी मधुरी बोल ज राव— सो भी सटके दलपतराव। पान फूल का लेते भोग— सो भी सटके राव असोग। घोड़े चढ़े फेरते भाला—सो भी सटके सज्जा झाला। हाथां सेल राखते बाना— सो भी सटके वीकम राना। मेदपाटके पाट कहेवल— सो भी सटके आसा रावल। अनमीं थक्का विरद कहावत— सोभी सटके खेता रावत."

महाराणाके वही (मतलबी) सलाहकार उनको क़िलेसे निकालकर दिल्लीके बादशाह हुमायूं (१) के पास लेगये, और उससे मदद मांगी (२). हुमायूंशाह इनकी मददके लिये फ़ौज लेकर रवाना हुआ; लेकिन ग्वालियर पहुंचनेपर बहादुरशाहकी तरफ़से उसको एक ख़त इस मज़्मूनका मिला कि "मैं जिहाद (धर्मयुद्ध) पर हूं, तुम विक्रमादित्यकी मदद करोगे तो खुदाके सामने क्या जवाब दोगे ?" इससे हुमायूं ग्वालियर में ठहरगया और दो महिने तक वहीं रहा. उसकी टालाटूली देख महाराणा पीछे चले आये.

यहां गुजराती फ़ौजने चित्तौड़ गढ़को घेरकर भैरवपोल (३) दरवाज़े तक विक्रमी १५८९ माघ शुक्ल १५ [हि० ९३९ ता० १४ रजब = ई० १५३३ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को अपना क़ब्ज़ा करलिया. यही बड़े आश्चर्यकी बात है कि

(१) महाराणाकी मा हाड़ीने महाराणा रत्नसिंह के समय हुमायूं शाहको राखी भेजी थी; और उसी प्रसंगसे इसवक्त वे मदद लेनेके लिये गये—

(२) कोई लेजाना, कोई मदद मांगना लिखता है, कोई कहताहै, कि हुमायूं अहमदाबाद पर चढ़ा आता था, और कोई बहादुरशाह पर ही चढ़ाई करना लिखताहै—

(३) इसके खंभे वगैरह कुछ निशान वि० १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] तक तो थे परंतु वे भी श्रीमान् महाराणा कैलासवासी सज्जन सिंहजीके समय (चित्तौड़ में) लॉर्ड रिपनके दरबार होनेके वक्त सड़क के लिये तोड़कर साफ़ किये गये—

क़िलेके ऊपर तक न पहुंचे ! क्योंकि क़िलेमें बहादुर राजपूतोंकी फ़ौज तो थी ही नहीं; केवल पहलवान और शागिर्दपेशालोग (छोटे नौकर) थे, वे अपनी जान बचानेके लिये बन्दूक़ वग़ैरह हथियार चलातेथे; कहावत है कि " टूटी कमान दोनों तरफ़ डराती है", इसतरह हिंडोल राड़ हो रही थी इतनेमें बहादुरशाह भी पांच हज़ार सवार और बहुतसी फ़ौजके साथ मांडूसे आ पहुंचा; अलिफ़ख़ांको (३००००) तीस हज़ार सवारों समेत लाखोटे दरवाज़े, तातारख़ां और मेदिनीराय वग़ैरहको हनूमानपोल, मल्लूख़ां और सिकंदरख़ांको धौली बुर्जकी तरफ़, और भोपतराय (भूपति) व अलिफ़ख़ां आदि को दूसरे मोर्चोंपर तइनात कर बड़ी तेज़ीके साथ इसने हमला किया. इधर से क़िले वालोंने भी कुछ लड़ाई की, परन्तु क़िला टूटनेका डर होजानेसे माजी हाड़ी कर्मवतीने (जो महाराणा सांगाकी राणी और विक्रमादित्यकी मा थीं), बादशाह के पास वकील भेजकर कहलाया कि "अब आप लड़ाई बन्द रक्खें, मालवेका जितना मुल्क पहिले मेवाड़के क़ब्ज़ेमें आयाथा उसे छोड़देनेका हम इक़रार करते हैं." फिर जड़ाऊ कमरपेटे व ताज (जो महाराणा सांगाने महमूद ख़िलजीसे लियाथा) के साथ कुछ नक़्द और सौ घोड़े तथा दश हाथी देकर बहादुरशाहको रुख़सत किया.

बहादुरशाह वि० १५८९ चैत्र कृष्ण १३ [हि० ९३९ ता० २७ शाबान = ई० १५३३ ता० २३ मार्च] को चित्तौड़से वापस गया; और हुमायूं ग्वालियर में दो महीने तक ठहरकर आगरेकी तरफ़ रवाना हुआ; महाराणा भी अपने सलाहकारों की सलाहके अनुसार, जो हुमायूंके पास गये थे, पीछे चित्तौड़ पहुंचे. इस समय राज्यके लोगोंको महाराणाके चालचलन सुधरनेका कुछ भरोसा हुआ, परंतु इनके स्वभावमें कुछ भी अन्तर न पड़ा. कहावत प्रसिद्ध है— "नीम न मीठा होय सींच गुड़ घीव सूं— ज्यांका पड्या स्वभाव क जासी जीवसूं"— ॥ जब महाराणाका बर्ताव पहिलेहीसा रहा तब रहे सहे सर्दार भी भागकर गुजराती बादशाहके पास चलेगये और बहुतोंने महाराणा की बुराई करना ही अपना काम समझ लिया—

(चित्तौड़ पर बहादुरशाहकी) दूसरी चढ़ाई.

विक्रमी १५९१ [हि० ९४१ = ई० १५३४] में बहादुरशाहने दुबारा चढ़ाई की. मांडूसे रवाना होते समय, चित्तौड़ फ़तह होनेपर वह क़िला अपने सेनापति रूमीख़ांको देदेना निश्चय कियाथा. पहिली लड़ाईमें महाराणाके दिल्ली जानेपर भी हुमायूंके मदद न करनेसे, बहादुरशाहको, इस वक़ बड़ा घमंड होगया था; और इसीसे दिल्ली तक लेनेका इरादा कर अलाउद्दीनके बेटे तातार-

खांको (४००००) चालीस हज़ार फ़ौजके साथ आगरेकी तरफ़ हुमायूंका मुल्क लूटनेके लिये रवाना किया- तातारखांने बयाने पहुंच वहांपर क़ब्ज़ा किया, और आगरे तक लूटमार मचा दी- इस ख़बरके पहुंचने पर हुमायूंने अपने भाई मिरज़ा हिंदालको फ़ौज देकर मुक़ाबलेके लिये भेजा; हुमायूंकी फ़ौजने गुजरातियोंको ऐसा मारा कि तातारखांके साथ सिर्फ़ (१००००) दश हज़ार आदमी रहगये; मिरज़ाने उनसे मुक़ाबला करके बयाना लेलिया- और तातारखां ३०० पठानों समेत मारागया-

बहादुरशाहके चढ़ आनेकी ख़बर चित्तौड़में पहुंची; उसको पहिली बार इस क़िलेका फ़तह करना कठिन दीखता था, परन्तु अब घरके भेदू मिल जानेसे वह बड़ा सहल मालूम हुआ. पहिली लड़ाईसे सब लोग डरे हुए थे; और इस वक्त़ लड़ाईका सामान न तो मौजूद था न एकट्ठा होसका, तब माजी हाड़ीने सब सर्दार उमरावोंके नाम इस मज़मूनके ख़ास रुक़्क़े लिखवाये कि " अबतक तो चित्तौड़ सीसोदियोंके क़ब्ज़ेमें रहा, परन्तु इसवक्त़ क़िला जानेका दिन आया सा मालूम होताहै; मैं क़िला तुम लोगोंको सौंपती हूं, चाहे रक्खो चाहे जानेदो. बिचार करना चाहिये कि कदाचित् किसी पीढ़ीमें मालिक बुरा ही हुआ तो भी जो राज्य परंपरासे चला आताहै उसके हाथसे निकल जानेमें तुम लोगोंकी बड़ी बदनामी होगी". मा साहबके इस रीतिसे दिल बढ़ानेवाले और सच्चे बचनोंसे क्षत्रियोंको ऐसा जोश आया कि उन्होंने अपने जीते जी चित्तौड़को मुसल्मानोंके क़ब्ज़ेमें न जाने देना ठानकर महाराणाके दुराचरणोंका ख़ियाल छोड़ा, और सब छोटे बड़े राजपूत सर्दार क़िलेपर एकट्ठे होगये. रावत बाघसिंह (१) देवलिया प्रतापगढ़के अध्यक्ष, हाड़ा अर्जुन (२), रावत सत्ता, सोनगरा माला, डोडिया भाण, सोलंखी भैरवदास, झाला सिंहा, झाला सज्जा, रावत नरबद वग़ैरह बड़े बड़े सर्दारोंने मिलकर सोचा कि इस वक्त़ बहादुरशाहको बड़ा घमंड होगयाहै और इसीसे उसका इरादा दिल्ली तक लेनेका है; फ़ौज भी उसके साथ दक्षिणी, कर्णाटकी, बीजापुरी, मालवी, गुजराती और यूरपी बड़े बड़े बुद्धिमान सर्दारों के साथ बहुत है; यहां लड़ाईका वा खाने पीने का सामान इतना भी नहीं है कि दो तीन महीने तक चले, और न होसक्ताहै; इसलिये महाराणा विक्रमादित्य को उनके छोटे भाई उदयसिंह समेत ननिहाल (बूंदी) भेजदेना चाहिये;

---

(१) महाराणा सांगा और बाबरसे बयाने में जो लड़ाई हुई उसमें इन्होंने बड़ी बहादुरी दिखाईथी.

(२) अर्जुन, बूंदीके राव सुल्तानकी तरफ़से ५००० फ़ौजके साथ आयाथा, क्योंकि उसवक्त सुल्तानकी उमर केवल ९ वर्षकी होनेसे वह खुद न आसका.

और जबतक लड़ाई हो देवलियाके रावत बाघसिंह, महाराणाके प्रतिनिधि (क़ायम मुक़ाम) रहें. यह विचार कर महाराणाको तो बूंदीकी ओर रवाने किया और सब लवाज़मे (ऐश्वर्य चिन्ह) समेत रावत बाघसिंहको (१) उनका पद दिया; तब इन्होंने सर्दारोंसे कहा कि आप लोगोंने मुझे बहुत बड़ा मर्तबा (अधिकार) देकर सब राजपूत सर्दारोंमें पहिले दर्जेका अफ़सर बनायाहै; अफ़सरको आगे रहना चाहिये इसलिये मैं क़िलेके बाहरी दरवाज़े पर रहूंगा-यह कहकर खुदने तो भैरवपोल (२) दरवाज़े बाहरके मोरचे को मज्बूत किया, और उस के भीतरकी तरफ़ सोलंखी भैरवदास, हनुमान पोलपर झाला राजराणा सजा और उनके भतीजे राजराणा सिंहा, गणेश पोलपर डोडिया भाण, और इसी तरह सब जगह दरवाज़े, पड़कोटे व कोटपर मेवाड़के कुल्ल छोटे बड़े राजपूतोंने मोरचाबंदी कर लड़ाईके लिये कमर बांधी—

उधर तातारखांके मारेजाने पर, जिसको बहादुरशाहने आगरेकी तरफ़ भेजा था, हिंदालने बयानेमें क़ब्ज़ा करलिया; इसके बाद बादशाह हुमायूंने दोस्ताना तौरपर एक खत बहादुरशाहको लिखा कि "मेरे बहनोई मिरज़ा मुहम्मदज़मान (३) को यहां भेजदो;" लेकिन उसने नहीं भेजा, क्योंकि एक तो बहादुरशाहको बड़ा घमंड होहि रहाथा, दूसरे मिरज़ा मुहम्मद ज़मान और सुल्तान बहलोल लोदीका बेटा अलाउद्दीन (४) उसके सलाहकार बनकर हुमायूंके बरखिलाफ़ होगये थे, फिर उसके खतकी तामील किस तरह होसके. इस सबबसे चित्तौड़ लेनेके लिये बहादुरशाहका पूरा इरादा सुन हुमायूं बादशाह दिल्लीसे रवाना हुआ, और सारंगपुर पहुंचकर एक खत बहादुरशाहके नाम इस मतलबका लिखा कि "तू चित्तौड़ लेना चाहता है लेकिन होशयार रहना, मैं भी तेरे ऊपर चढ़ आताहूं." इसके जवाबमें बहादुरशाहने लिखा कि "मैं चित्तौड़ पर चढ़ाई करके आयाहूं और हिंदुओंको पकड़ताहूं; यदि तुम उनकी मदद करना चाहते हो तो आकर देखो कि मैं यह क़िला किस तरह लेताहूं."

---

(१) महाराणाको दीवान भी कहते हैं, क्योंकि इस राज्यके मालिक श्रीएकलिंगजी (महादेव) और महाराणा उनके प्रधान (दीवान) समझे गये हैं. उसवक्त क़ायम मुक़ाम महाराणा बनाये जानेसे देवलिया वाले अबतक दीवान कहलातेहैं.

(२) महाराणा कुंभाने बनवानेके वक्त इस दर्वाज़ेका नाम कुछ और रक्खा होगा परंतु इस लड़ाईके अनन्तर इन्हीं भैरवसिंहके नामसे "भैरवपोल" प्रसिद्ध हुआ.

(३) मिरज़ा मुहम्मदज़मानको हुमायूंने बयानेके क़िलेमें क़ैद कर रक्खा था सो भागकर बहादुरशाहके शरणे चलागया.

(४) तातारखां जो बयानेकी लड़ाईमें मारागया इसी अलाउद्दीनका बेटा था.

बहादुरशाहने अपने सलाहकारोंसे पूछा कि पहिले हुमायूंसे लड़ें या चित्तौड़ पर हमला करें ? सभोंकी यही राय ठहरी कि पहिले चित्तौड़ लेना चाहिये, क्योंकि हुमायूं मुसल्मान है, हिंदुओंसे लड़ते वक्त हमसे सामना नहीं करेगा; इस बिचारसे चित्तौड़को घेरा. मेवाड़ी राजपूत सजेहुए ही थे, झुंडके झुंड बाहर निकलकर गुजराती फ़ौजपर हमला करने लगे; मुसल्मानोंका ज़ोर ज्यादा था और उनके संग यूरपी लोगोंके होनेसे गोला बारूत वगैरह सामान भी पूरा पूरा था, इससे क़िलेवालोंको किसी तरहकी कामयाबी हासिल न हुई. गुजरातियोंने एक सुरंग ऐसा डाटा कि, जिससे बीकाखोहकी तरफ़ क़िलेकी पैंतालीस हाथ दीवार उड़ जानेसे हाड़ा अर्जुन अपने साथियों समेत ग़ारत हुआ. गुजरातियोंने क़िलेमें हमला करना चाहा, परन्तु बचे हुये हाड़ा व दूसरे राजपूतोंने बड़ी बहादुरीके साथ रोका. इसमें बहुतसे आदमी दोनों तरफ़के मारे गये. बहादुरशाहने जलेबमें (आगे) तोपें रखकर पाडलपौल (१), सूर्जपौल व लाखोटाबारीकी तरफ़से हमला किया. तब भीतरके बहादुरोंने भी दरवाज़ोंके किवाड़ खोलदिये और बड़ी दिलेरीके साथ गुजराती फ़ौजपर टूट पड़े. देवलिया प्रतापगढ़के रावत बाघसिंह पाडलपौल दरवाज़े बाहर, देसूरीके सोलंखी भैरवदास भैरवपौलके बाहर, देलवाड़ेके राज राणा सज्जा व सादड़ी के राजराणा सिंहा हनुमानपौल बाहर, इसी तरह दूसरे दरवाज़ोंपर तथा और जगहोंमें रावत दूदा रत्नसिंहोत (२) चूंडावत, सीसोदिया कम्मा रत्नसिंहोत चूंडावत, रावत बाघ सूरचंदोत, रावत सत्ता रत्नसिंहोत चूंडावत, सोनगरा माला बालावत, रावत देवीदास सूजावत, सीसोदिया रावत नंगा सिंहावत (३), रावत कर्मा चूंडावत, डोडिया भाण (४) वगैरह लड़ते भिड़ते अपने साथियों समेत काम आये. बत्तीस हज़ार राजपूत इस लड़ाईमें मारे गये और तेरह हज़ार स्त्रियां महाराणी हाड़ी कर्मवतीके साथ आगमें जल मरीं. यह लड़ाई विक्रमी १५९२ चैत्र शुक्ल ५ [हि० ९४१ ता० ४ रमज़ान = ई० १५३५ ता० ८ मार्च] को पूरी हुई.

बहादुरशाह और हुमायूंकी लड़ाई.

इसवक्त बादशाह हुमायूं सारंगपुरसे मंदशोरकी तरफ़ कूच करचुका था— उसको

---

(१) यह दरवाज़ा पीछे बनायागया— इसके बाहर रावत बाघसिंहका चबूतरा है जहां वह मारागया था.

(२) सलूंबरके रावत इन रत्नसिंहके वंशमें हैं,

(३) इनकी औलादमें आमेठ और देवगढ़के रावत हैं —

(४) इनके वंशमें सरदारगढ़के ठाकुर हैं—

रास्तेमें महाराणा बिक्रमादित्यके वकीलोंने बहादुरशाहके चित्तौड़ छीन लेनेकी ख़बरदी; वह बहादुरशाहसे लड़नेको तो आताही था, इन लोगोंकी भी तसल्ली करके आगे बढ़ा— इधर बहादुरशाह, हुमायूंका आना सुन अपनी फ़ौज दुरुस्त कर लड़नेको चला. मंदशोर पहुंचने पर मुक़ाबला हुआ— बहादुरशाह गुजरातीके पास तोपख़ाना अच्छा था— रूमीख़ांकी तदबीरसे खाई खोदकर मोरचेबंदी की—दो महीने तक लड़ाई रही. तब हुमायूंने गुजराती फ़ौजमें रसद पहुंचना बंद करदिया, जिससे (१) बहादुरशाह घबराया, और मोरचा छोड़ बुरहानपुरके हाकिम मुबारकशाह फ़ारूक़ी, मालवी सर्दार मल्लूख़ां क़ादिरशाह और सदर जहांख़ां वग़ैरह पांच आदमियोंको साथ लेकर रातके वक़्त निकल भागा. हुमायूंने पीछा किया परंतु बहादुरशाह मांडूके क़िले में जा छुपा; हुमायूंने भी क़िले पर हमला किया. एक दिन तीनसौ पठान धावा करके क़िलेमें जाघुसे, जिससे गुजराती लोग जो वहां मौजूद थे भागगये और बहादुरशाहने भी मांडूसे निकल चांपानेरके क़िलेमें पनाहली. सदर जहांख़ां मालवी सर्दार ज़ख़्मी होजानेसे भाग न सका, उसको हुमायूंने बड़ा बहादुर समझ नौकर रखलिया और मांडू पर क़ब्ज़ा किया. फिर तीन रोज़ वहां ठहरकर हुमायूं बहादुरशाहकी तलाशमें चांपानेरकी तरफ़ रवानेहुआ, लेकिन वह (बहादुरशाह) चांपानेरसे भी बहुतसी दौलत लेकर अहमदाबादकी तरफ़ भाग गयाथा; हुमायूंने पीछा न छोड़ा, तब तो घबराकर बहादुरशाह खंभात होता हुआ जहाज़में बैठकर किसी टापूकी तरफ़ चलागया. बादशाह हुमायूं चांपानेरके क़िलेको घेरनेके लिये दौलतख़्वाजे बरलास को मुक़र्रिर करगया; उसने घेरा देरक्खा था— इतनेमें बहादुरशाहके भागजाने पर बादशाह हुमायूं भी अपनी फ़ौज लेकर आपहुंचा, और एक रात पहिले क़िलेका भेद लगाकर तीन सौ आदमियोंके साथ भीतर घुसा. दरवाज़ोंके किवाड़ खोलदिये, क़िला फ़तह हुआ और गुजरातियोंका बहुतसा ख़ज़ाना हाथलगा. इस अर्सेमें आगरेकी तरफ़ पठानोंका शोर होनेसे हुमायूंको लौटना पड़ा, और बहादुरशाहने मौक़ा देख टापूसे निकल कर गुजरातमें अमल करलिया.

चित्तौड़का पीछा मिलना

जब सुल्तान बहादुर गुजराती मंदशोरसे भागा तब रहे सहे मेवाड़ी राजपूत पांच सात हज़ार फ़ौज एकट्ठी कर महाराणा विक्रमादित्य व उदयसिंहको बूंदीसे चित्तोड़में लाये और क़िले पर अमल कर लिया. गुजराती मुसल्मानोंने मेवाड़ी

(१) इसके सिवाय पहिले बहादुरशाहने तोपख़ानेके अफ़्सर रूमीख़ांको, चित्तौड़ फ़तह होने पर जागीरमें देने का इक़रार कियाथा, उसके न मिलनेसे वह निराश होकर हुमायूंसे मिल गया—

राजपूतोंकी बहादुरी पहिलेसे देख रक्खी थी, इसके सिवाय हुमायूंके भयसे बहादुरशाह के भागनेकी ख़बर सुनकर सबके सब क़िला छोड़ भागे; महाराणाके पास जो दो चार होशियार व पुराने आदमी थे, उन्होंने जैसे तैसे मुल्कका इंतिज़ाम किया, और जो लोग पहिली लड़ाईसे बचे थे वे सब आकर हाज़िर हुए. परन्तु नादान अवस्था में बदमाश (१) लोगोंकी सुहबतके कारण महाराणा विक्रमादित्यको इतनी तकलीफ़ उठाने पर भी कुछ ख़ियाल न हुआ, और पहिलेके समान ही बर्ताव रखने लगे; तब तो रियासतके लोग अत्यन्त घबराकर ज़िंदगी और इज्ज़त बचाना कठिन जान बड़े सोच विचारमें पड़े.

बनवीर (बरवीर).

इन्ही दिनोंमें महाराणा सांगाके बड़े भाई पृथ्वीराज (जो कुंवरपदमें ही मरगये थे) की पासवानका बेटा (२) बनवीर समय देख चित्तौड़ आया और महाराणा के प्रीतिपात्र लोगोंसे मिलकर राजकाजमें दख़ल देनेलगा– यहांतक कि थोड़े ही दिनों में मुसाहिब बनगया. महाराणा किसीकी नसीहत (उपदेश) तो मानते ही नहीं थे इस पर भी कोई कुछ कहता तो उसको उलटी सज़ा देते, जिससे सब सर्दार वग़ैरह तित्तर बित्तर होगए और बनवीरने मौक़ा पाकर महाराणाको तलवारसे मारडाला; क्योंकि उस वक़ कोई ख़ैरख़्वाह तो था ही नहीं कि सामना करता; और जो बदचलन व स्वार्थी लोग थे वे उसीसे मिलगये. बनवीर, महाराणा विक्रमादित्यको मारकर राज्यका पूरा मालिक बननेके इरादेसे, उनके छोटे भाई उदयसिंह पर घात करनेके लिये तलवार लेकर उस स्थानमें पहुंचा, जहां वे सोते थे; परंतु उदयसिंहको, जिनकी अवस्था १४ वर्षकी थी, धायने छुपाकर उनके पलंगपर अपने बेटेको सुलादिया, जिसे बनवीरने आते ही उदयसिंह जान तलवारके एक ही वारमें दो टूक करदिया–

विक्रमादित्यके मारेजानेसे महलोंमें शोर तो मच ही रहा था, इतनेमें उदयसिंहकी धायने रोना पुकारना शुरू किया- बनवीर दोनोंको मार महलोंमें गया और अपनी आण दुहाई फिरवाकर बेखटके राज करने लगा. धाय उदय-

---

(१) उन लोगोंने सिखलाया कि गुजरात व मालवेकी बादशाहत तो नष्ट होगई और हुमायूं आपका मददगार है ही– अब क्या डर है. जो लोग लड़ाईमें मारेगये उनको जागीर इसी लिये मिलीथी; कि वक्तपर कामआवें.

(२) यह पृथ्वीराजकी पासवान पूतलदेके पेटसे पैदा हुआ था; उसको महाराणा सांगाने बद-चलनी के सबब मेवाड़से निकाल दिया, तब वह गुजराती बादशाह मुज़फ़्फ़रके पास चलागया; और बादशाहकी तरफ़से इसको बागड़का मुल्क जागीरमें मिला.

सिंहके नामसे अपने बेटेको उसी जगह जलवा कर उदयसिंहको सही सलामत चित्तौड़से ले निकली– (१).

महाराणा विक्रमादित्यका देहांत विक्रमी १५९२ [हि० ९४१ = ई० १५३५] में हुआ. इनका जन्म संवत् ठीक ठीक नहीं मिला, परंतु अमरकाव्यसे यह निश्चय हुआ है कि देहांतके समय इनकी अवस्था १८ वर्षकी थी.

गुजरातकी बादशाहत.

[विक्रमादित्यके समयमें बहादुरशाह गुजरातीने चित्तौड़ फ़तह किया, इस लिये प्रसंग देख गुजराती बादशाहोंका भी संक्षेप हाल लिखाहै–]

ज़फ़रख़ां

इस बादशाहतका मूल पुरुष ज़फ़रख़ां (२) था, जिसको दिल्लीके बादशाह मुहम्मद तुग़लक़ने हि० ७९३ [विक्रमी १४४८ = ई० १३९१] में गुजरातके सूबेदार फ़रहतुल्मुल्ककी (३) एवज़ वहांका सूबेदार बनाया. इसी सन् व संवत् में ज़फ़रख़ांने गुजरात जाते वक़ रास्तेमें अपने बेटे तातारख़ांके एक बेटा (अहमदख़ां) पैदा होनेकी ख़बर सुनी. हि० ७९४ [विक्रमी १४४९ = ई० १३९२] में ज़फ़रख़ां और फ़रहतुल्मुल्ककी लड़ाई अनहलवाड़ापट्टनके पास हुई; जिसमें ज़फ़रख़ांने विजयी होकर गुजरातमें अपनी हुकूमत जमा ली; और हि० ७९५ [विक्रमी १४५० = ई० १३९३] में इसने खंभातपर क़ब्ज़ा करके दूसरे वर्ष ईडरके राजाको अपने ताबे करलिया. गुजरातमें हि० ७९३ [विक्रमी १४४८ = ई० १३९१] से हि० ९८० [विक्रमी १६२९ = ई० १५७२] तक- ज़फ़रख़ांसे लेकर पंद्रह बादशाहोंने खुद मुख़्तारीके साथ हुकूमत की. हि० ७९७ [विक्रमी १४५२ = ई० १३९५] में ज़फ़रख़ां गुजरातके राजपूतोंको ज़ेर करता हुआ सोमनाथ तक पहुंचा और

---

(१) इसका मुफ़स्सिल हाल महाराणा उदयसिंहके वृत्तांतसे ज़ाहिर होगा.

(२) इस ज़फ़रख़ांका बाप वजीहुल्मुल्क पहिले तक्षक (टाक) ख़ानदानका राजपूत था, जिसने दीन इस्लाम अख़्तियार किया. उसका बेटा (ज़फ़रख़ां) बड़ा दीन दार मुसल्मान मशहूर हुआ.

(३) फ़रहतुल्मुल्कको मुहम्मद शाह तुग़लक़के बाप फ़ीरोज़शाहने गुजरातका सूबेदार बनाया था, परन्तु यह फ़ीरोज़शाहके मरे पीछे मुहम्मदशाहसे बाग़ी होगया, और उस तरफ़के आलिम मुसल्मानोंने भी इसकी शिकायतें लिखीं, जिससे मुहम्मदशाह तुग़लक़ने ज़फ़रख़ांको सूबेदार बना कर फ़ौज समेत गुजरातमें भेजदिया.

वहांके मंदिर व मूर्तियोंको तोड़कर उस जगह एक मस्जिद बनवाई. फिर हि० ७९८ [विक्रमी १४५३ = ई० १३९६] में कुछ नज़राना लेताहुआ अजमेरमें ख्वाजेसाहिब की ज़ियारत करनेको आया; और वहांसे लौटते वक्त जीलवाड़े व देलवाड़ेके मंदिरों को तोड़ता हुआ तीन वर्ष बाद अपनी राजधानी पट्टनमें पहुंचा. तारीख़ अलफ़ीके हवाले से फ़रिश्ता लिखताहै कि इस चढ़ाईके पीछे ज़फ़रखांने गुजरातमें अपना खुतबा व सिक्का जारी करदिया. हि० ८०० [विक्रमी १४५५ = ई० १३९८] में इस का बेटा तातारखां भी दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहसे नाराज़ होकर इसके पास चला आया. हि० ८०१ [विक्रमी १४५६ = ई० १३९९] में ईडरके राव रणमल्लने बखेड़ा उठाया, जिसको दबाकर ज़फ़रखांने फिर अपने ताबे किया. इसी सन्के शुरूमें अमीर तीमूरने दिल्लीको फ़तह करलिया (पृष्ठ१६); तब मुहम्मदशाहका बेटा और फ़ीरोज़शाहका पोता सुल्तान महमूदशाह भागकर गुजरातमें आया; परंतु ज़फ़र-खांके ख़राब बर्तावसे रंजीदा होकर दिलावरखांके पास मांडूकी तरफ़ चलागया. हि० ८०३ [विक्रमी १४५७ = ई० १४०१] में ज़फ़रखांने ईडरके राजासे नाराज़ होकर क़िला छीनलिया. हि० ८०४ [विक्रमी १४५८ = ई० १४०२] में सोमनाथके पूजारी और राजपूतोंने मुसल्मानोंको मारकर वहांसे निकालदिया, जिस पर ज़फ़रखांने सोमनाथमें पहुंचकर उन लोगोंको क़त्ल किया और वहां नये सिरसे एक मस्जिद बनाकर पट्टनको वापस चलागया. इन्हीं दिनोंमें दिल्लीके तुग़लक़ बादशाहोंका ख़ानदान नष्ट होने पर वहांकी हुकूमत मल्लूखां करता था, जिसपर तातारखां अपने बापसे बड़ी भारी फ़ौज लेकर दिल्ली लेनेके इरादेसे रवाना हुआ; परंतु थोड़ी दूरसे ही वापस लौट आया, और आते ही अपने बापको गादीसे उतार कर खुद बादशाह बन बैठा. इसने अपना लक़ब "अलमुवफ्फ़क़ बिताईदिर्रहमान ख़्ति-यारुद्दुनिया अबुल्ग़ाज़ी मुहम्मदशाह बिन् मुज़फ्फ़रशाह ग़ाज़ी" (१) रक्खा और अपने चचा शम्सखांको वज़ीर बनाया. दो वर्ष पीछे ज़फ़रखांके इशारेसे शम्स-खांने तातारखांको शराबमें ज़हर देकर मारडाला. इस खि़दमतके बदले ज़फ़रखांने शम्सखांको जागीरमें नागौर दिया. इन्हीं दिनोंमें मांडूका पहिला बादशाह दि-लावरखां मरगया, जो ज़फ़रखांका दोस्त था. ज़फ़रखांने यह ख़बर सुनकर, कि दिलावर खांको उसके बेटे होशंगने ज़हर देकर मारडाला है, मालवे पर चढ़ाई की; उस वक्त इसने अपना लक़ब (पदवी) "अल्मुवफ्फ़क़ बिल्लाहिल्मन्नान शम्सुद्दुनिया वद्दीन

(१) खुदाकी मिहरबानीसे मदद पाया हुआ दुनियामें बुजुर्ग (बड़ा) बहादुरीवाला मुहम्मद-शाह (ज़फ़र) बहादुरका बेटा.

अबुलमुजाहिद मुज़फ्फ़र शाह" (१) रक्खा, और मालवेमें धारका क़िला फ़तह करके होशंगको गिरिफ्तार कर लाया; परन्तु अपने आदमियोंसे वहांका इन्तिज़ाम पूरा पूरा न होनेके कारण मालवेकी बादशाहत होशंगको ही वापस देदी; फिर कुछ दिनों पीछे अपने पोते (तातारखांके बेटे) अहमद शाहको वलीअहद बनाकर हि० ८१४ तारीख़ ८ रबिउस्सानी [विक्रमी १४६८ श्रावण शुक्ल १० = ई० १४११ तारीख़ ३० जुलाई] के दिन इस दुनियांको छोड़ गया (२).

अहमदशाह पहिला.

अहमदशाहने तख़्तपर बैठनेके दूसरे वर्ष हि० ८१५ [विक्रमी १४६९ = ई० १४१२] में अपने चचेरे भाई फ़ीरोज़ख़ां पर चढ़ाई की, लेकिन उसके भागजानेसे वह वापस चलाआया. हि० ८१५ ज़िल्काद [विक्रमी १४६९ फाल्गुन शुक्ल = ई० १४१३ फ़ेब्रुअरी] में इसने साबरमती नदीके किनारे सांचल नाम ग्रामकी जगह अहमदाबाद शहरकी नींव डाली, और फ़ीरोज़ख़ांको अपने पास बुलाकर मेल करलिया, परन्तु उसने ईडरके राव रणमल्ल वग़ैरहसे मिलकर फ़साद उठाया. मुक़ाबला होनेपर फ़ीरोज़ख़ांके बहुतसे आदमी मारेगये और वह शिकस्त खाकर राव रणमल्ल समेत पहाड़ोंमें जा छुपा; फिर कुछ दिनों पीछे रणमल्ल तो फ़ीरोज़ख़ांसे नाराज़ होकर अहमदाबादकी तरफ़ चला आया और फ़ीरोज़ख़ां, नागौरके हाकिम शम्सख़ांके बेटे फ़ीरोज़ख़ां के पास जाकर उसीके हाथसे मारागया. उन दिनोंमें फ़ीरोज़ख़ां महाराणा मोकलसे लड़ाई कर रहा था. हि० ८१६ [विक्रमी १४७० = ई० १४१३] में मालवेके बादशाह होशंगने गुजरात पर चढ़ाई की; उस वक़्त अहमद, जीलवाड़ेके राजपूतोंसे लड़रहाथा; यह ख़बर सुनते ही होशंग से मुक़ाबला करनेकेलिये रवाना हुआ; जिससे होशंग मालवेकी तरफ़ वापस चलाआया. हि० ८१७ [विक्रमी १४७१ = ई० १४१४] में अहमदशाह गिरनारपर चढ़ा और वहांके राजाने बड़ी फ़ौज लेकर मुक़ाबला किया, लेकिन अहमद विजयी हुआ— राजा हारकर जूनागढ़में जा छिपा और बादशाहको ख़िराज देना क़बूल कर लिया. इसी वर्षमें अहमदने ग़ैर मज़हबी लोगों पर जिज़िया (मज़हबी टैक्स)

---

(१) अहसान करनेवाले खुदाकी तरफ़से मदद पायाहुआ धर्म और दुनियाका सूर्य बड़ा कर्तवी और साहसी मुज़फ्फ़रशाह.

(२) गुजरातकी तवारीख़ मिरात सिकंदरी व तारीख़ फ़रिश्ताके देखनेसे ज़फ़रख़ांके मरनेके सन्में फ़र्क़ मालूम होता है— याने मिरात सिकंदरीमें हि० ८१३ और फ़रिश्तामें—८१४; इसी तरह और भी कितने ही सन् वा सम्वतोंमें एक आध वर्षका अन्तर रहता है— परन्तु हमने फ़रिश्ताको मौतबर समझ उसीके मुवाफ़िक़ लिखा है.

जारी किया. हि० ८१९ [विक्रमी १४७३ = ई० १४१६] में अहमद बहुत से मंदिर और मूर्तियों को तोड़ता हुआ नागोर होकर अहमदाबाद वापस चला आया. हि० ८२१ [विक्रमी १४७५ = ई० १४१८] में अहमदशाहका होशंगसे मुक़ाबलाहुआ, परंतु इसवक़ भी होशंग भागगया. हि० ८२३ [विक्रमी १४७७ = ई० १४२०] में अहमदशाहने चांपानेरके राजा पर चढ़ाई कर उससे हमेशाके वास्ते ख़िराज लेना ठहराया. फिर दो वर्ष पीछे हि० ८२५ [विक्रमी १४७९ = ई० १४२२] में मांडूको आघेरा; छः महीने तक मुहासरा रक्खा, परंतु किला होशंगके कब्जेसे न निकल सका; तब मालवेके लोगोंको लूटता मारता वापस अहमदाबाद चला गया. हि० ८३० [विक्रमी १४८४ = ई० १४२७] में अहमदने ईडरके राव पूंजा पर चढ़ाई की. राव बादशाह की फ़ौजसे लड़ताहुआ एक पहाड़के नीचे पहुंचा था कि उसका घोड़ा बादशाही हाथी से चमककर एक गहरे खड्डेमें जापड़ा; जिससे वह तो घोड़े समेत गिर कर मर गया, और उसके बेटेने अहमदशाहको ख़िराज देना स्वीकार करलिया; इसतरह ईडरका हाल सुनकर हि० ८३३ [विक्रमी १४८७ = ई० १४३०] में राजा कान्हा और जीलवाड़ेका राजा अपना अपना राज्य छोड़ बुरहानपुर चले गये; और नसीरखांकी सिफ़ारिशसे दक्षिणके बहमनी (सुल्तान अहमदशाह) बादशाहकी मदद लेकर पीछे आये; परन्तु गुजराती शाहज़ादेसे. जो इनपर चढ़ आयाथा शिकस्त खाकर फिर भी उन्हें भागना ही पड़ा. गुजराती फ़ौजने बहमनी लश्करका यहां तक पीछा किया कि दक्षिणी बादशाहको अपनी राजधानी छोड़ महायम नाम टापूमें जाना पड़ा; परन्तु वहांसे भी थोड़े दिनोंपीछे अहमदशाह गुजरातीने मारकर निकाल दिया.

यहांसे चलकर हि० ८३६ [विक्रमी १४९० = ई० १४३३] में अहमदशाह गुजरातीने मेवात और नागौरकी तरफ़ चढ़ाई की; रास्तेमें डूंगरपुरसे कुछ तुहफ़े लेकर मेवाड़के इलाकेमें देलवाड़ा व कैलवाड़ा ग्रामके पास लूट खसोट करताहुआ नागौरकी तरफ़ होकर अहमदाबादकी ओर चलागया. यह बादशाह हि० ८४२ [विक्रमी १४९५ = ई० १४३८] में होशंगके पोते, ग़ज़नीखांके बेटे, मसऊद की मददको मांडूके नये बादशाह महमूदख़िलजी पर चढ़ा, जो मांडूके असली वारिस मसऊदको निकालकर बादशाह बनगयाथा. परंतु कुछ लड़ाई होनेबाद लश्कर में वबा (मरी) फैलने व ख़ास अपने बीमार होजानेसे वापस चलाआया. हि० ८४६ तारीख़ ४ रबिउस्सानी [विक्रमी १४९९ भाद्रपद शुक्ल ६ = ई० १४४२ ता० १३ ऑगस्ट] को अहमदशाह इस दुनियांसे कूंच करगया.

मुहम्मदशाह पहिला.

अहमदशाहके मरने बाद उसका बड़ा बेटा मुहम्मदशाह तख़्त पर बैठा. इस ने पहिलेपहल ईडर और डूंगरपुर पर चढ़ाई की और कुछ नज़र लेकर पीछा लौट आया; फिर हि० ८५४ [वि० १५०७ = ई० १४५०] में इसने चांपानेरको जा घेरा. वहांके राजा गंगदासने मालवेके बादशाह महमूद ख़िलजीको अपनी मदद पर बुलाया, जिसके डरसे गुजराती बादशाह भागकर अहमदाबाद चला गया. कुछ दिनों पीछे महमूद ख़िलजी एक लाख फ़ौज लेकर गुजरातपर चढ़ा जिससे मुहम्मद गुजरातीने अहमदाबाद छोड़कर भागजाना चाहा. उसवक़ इसके कायर पनेसे गुजराती सर्दारोंने शर्मिन्दा होकर उसे ज़हर देदिया, जिससे मुहम्मद शाह हि० ८५५ ता० ७ मुहर्रम [विक्रमी १५०७ फाल्गुन शुक्ल ९ = ई० १४५१ ता० १० फ़ेब्रुअरी] को मरगया—

कुतुबुद्दीन.

मुहम्मदशाहके मरने बाद उसका बेटा कुतुबुद्दीन तख़्तनशीन हुआ. यह हि० ८३५ ता० ८ जमादिउस्सानी [विक्रमी १४८८ फाल्गुन शुक्ल १० = ई० १४३२ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को पैदाहुआ था. इसके बादशाह होनेकी ख़बर सुन महमूद ख़िलजीने भी मातमी दस्तूर (शोकका ख़त वग़ैरह) अदा किया, परंतु लड़ाई का इरादा न छोड़ा. कुतुबुद्दीनने अहमदाबादसे निकल कर मुक़ाबला किया और लड़ाई होने पर महमूद ख़िलजी भाग गया. हि० ८६० [विक्रमी १५१३ = ई० १४५६] में कुतुबुद्दीनने मेवाड़के महाराणा कुंभापर चढ़ाई की, क्योंकि नागौरके हाकिम फ़ीरोज़ख़ांके मरनेपर मसऊदख़ां, फ़ीरोज़ख़ांके बेटे शम्सख़ांको निकाल कर खुद हाकिम बनगया था, और उस वक़ महाराणाने शम्सख़ांकी सहायता करके उसको फिर नागौरका हाकिम बनादिया, जिसका ब्यौरेवार हाल महाराणाकुंभाके वृत्तांतमें लिखा है.

कुतुबुद्दीन नागौरकी मददपर कुंम्भलमेर पहुंचा, और वहांसे बहुतसी लड़ाइयां होने बाद सुलह करके चलागया; फिर दुबारा महमूद ख़िलजीसे दोस्ती करके चांपानेर में (शपथपूर्वक) अहद (नियम) किया कि "दोनों बादशाह एकसाथ मेवाड़पर चढ़ाई करें". इस शर्तके मुवाफ़िक़ दोनोंने चढ़ाई की, परन्तु उसवक़ भी दोनों बादशाह लड़ाई झगड़ोंके बाद सुलह करके वापस लौटगये; फिर तीसरी बार हि० ८६१ [वि० १५१४ = ई० १४५७] में नागौरकी मदद करनेको कुतुबुद्दीन मेवाड़ पर चढ़ा उस मौक़ेपर भी पहिलेके समान सुलह करके चलागया.

मेवाड़की इन लड़ाइयोंका हाल महाराणा कुम्भाके वृत्तांतमें ब्यौरेवार लिखा है. इस बारेमें राजपूतानेकी व फ़ारसी तवारीख़ोंमें बहुत अन्तर होनेके कारण सही सही हाल जानना बहुत कठिन है; हमने मेवाड़की इन लड़ाइयोंका हाल और उनके विषयमें अपनी राय, महाराणा कुम्भाके प्रकरणमें लिखी है. हि० ८६३ ता० २३ रजब [विक्रमी १५१६ आषाढ़ कृष्ण ९ = ई० १४५९ ता० २६ मई] को कुतुबुद्दीनका देहान्त हुआ. इस बादशाहको ज़हर देकर मारडालनेके शकमें नागौरका हाकिम शम्सख़ां, जो कुतुबुद्दीनका श्वशुर था क़त्ल कियागया. शम्सख़ांकी बेटीको भी इसी शुबहसे हरमख़ाने (ज़नाने) की लौंडियोंने मारडाला, और कुतुबुद्दीनके काका दाऊदख़ांको तख़्त पर बिठाया—

दाऊदखां.

दाऊद तख़्तपर बैठतेही कमीने (नीच) लोगोंकी इज़्ज़त बढ़ानेलगा, जिससे सर्दारोंने उसको एक ही हफ़्ते में ख़ारिजकरके कुतुबुद्दीनके छोटेभाई महमूदको गुजरात का मालिक बनादिया.

महमूद पहिला.

महमूद के तख़्तनशीन होतेही कई सर्दारोंने इमादुल्मुल्क वज़ीरकी अदावत के सबब बादशाहके छोटे भाई हसनख़ांको बादशाह बनानेके लिये बग़ावत की; तब लाचार होकर बादशाहने उन सर्दारोंके दिल खुश करनेके लिये अपने वज़ीर इमादुल्मुल्क को क़ैद करके कुछ अर्से बाद छोड़दिया और मौक़ा पाकर बाग़ी सर्दारोंको क़त्ल करडाला. फिर इमादुल्मुल्कके बेटे शहाबुद्दीनको मलिकुश्शर्फ़ (इज़्ज़तदार सर्दार) का ख़िताब दे वज़ीर बनाया और इमादुल्मुल्क को उसकी दरख़्वास्तके मुवाफ़िक़ पेन्शन् देदी. हि० ८६७ [विक्रमी १५२० = ई० १४६३] में निज़ाम शाह बहमनी (दक्षिणी) पर महमूदने चढ़ाई की. महमूद गुजराती (१) निज़ाम शाहकी मदद पर पहुंचा, और वहांसे महमूद ख़िलजी (मालवी) को भगाकर पीछा गुजरात चलागया. इसीतरह दूसरे वर्ष भी महमूदख़िलजीने दक्षिणियों पर चढ़ाई की, परंतु गुजराती बादशाहको उनकी मदद पर आते सुन यह वापस चला आया.

हि० ८७१ [विक्रमी १५२३ = ई० १४६७] में महमूदने गिरनारके राजा मंडलीक जादव पर, जिसको फ़रिश्तह वगैरहने राव लिखा है, चढ़ाई की.

---

(१) इस महमूदको महमूद बेगड़ा (गढ़ा) भी कहते हैं— गुजराती बोलीमें बे दोको कहते हैं इससे बेगढ़ा का अर्थ दो गढ़ (चांपानेर और जूनागढ़) का मालिक जानना चाहिये.

मुक़ाबला होने बाद पहिले तो राजपूतोंने सामना किया, परंतु कुछ देर पीछे क़िलेमें जा छिपे; महमूदने क़िलेको घेरलिया और लड़ाई होने बाद नज़राना व ख़िराज लेकर अहमदाबादको लौटगया. इस क़िलेको उस समयके पहिले अहमद गुजराती और दिल्लीके मुहम्मद तुग़लक़के सिवाय और किसीने नहीं फ़तह कियाथा.

हि० ८७२ [विक्रमी १५२४ = ई० १४६७] में महमूदने राजा मंडलीक पर दुबारा चढ़ाई की; इसवक़ भी राजाने बहुतसे जवाहिरात देकर फ़ौजको वापसकिया. तीसरी बार फिर हि० ८७४ [विक्रमी १५२६ = ई० १४६९] में महमूदने जूनागढ़ पर हमलाकिया, उसवक़ राजपूतोंने क़िलेसे निकलकर बहुतसी लड़ाइयां कीं; परंतु अन्तमें राजा मंडलीक क़िला छोड़कर गिरनारके पहाड़ोंमें चलागया; तब भी महमूद ने पीछा न छोड़ा जिससे लाचार हो राजाको बादशाहके पास आकर मुसल्मान (१) होनापड़ा; महमूदने अपने सर्दारोंमें उसको दाख़िलकर, ख़ानेजहांका ख़िताब व बहुतसी जागीर दी और आप जूनागढ़में रहनेलगा. हि० ८८० [विक्रमी १५३२ = ई० १४७५] में जगत बन्दर (द्वारिका पुरी) के राजा भीमने एक समर्क़ंदी मुल्लाका असबाब लूटलिया. उसके पुकारू आनेपर महमूदने चढ़ाई की और लड़ाई होने बाद बहुतसे मंदिर व मूर्तियां तोड़कर द्वारिकामें अपना क़ब्ज़ा किया. राजा भीम तिब्बत नामके एक टापूमें भागगया, परंतु महमूदने वहा जाकर बड़ी लड़ाई की और भीमको गिरिफ़्तारकर मरवा डाला. हि० ८८८ के सफ़र [विक्रमी १५४० चैत्रशुक्ल = ई० १४८३ मार्च] में महमूदने चांपानेर पर चढ़ाई की. वहाके राजा जयसिंह चौहानने जिसको फ़ारसी तवारीख़ोंमें पताई उदयसिंहका बेटा, और रासमाला व "पचमहाल" के ग्याज़ेटियरमें नाम तो जयसिंह और पताई ख़िताब लिखाहै— वहाके राजपूतों समेत बड़ी लड़ाइयां कीं, परंतु आख़िरमें हि० ८८८ तारीख़ ७ सफ़र [विक्रमी १५४० चैत्रशुक्ल ८ = ई० १४८३ ता० १६ मार्च] को क़ैद होकर मुसल्मानोंके हाथसे मारागया.

---

(१) गुजरातकी तवारीख़ोंमें लिखा है कि १९०० वर्ष तक जादवोंकी हुकूमत गिरनार पर रही. तबक़ात अकबरी और तारीख़ फ़रिश्तह वग़ैरह फ़ारसी किताबोंमें हि० ८७५ के शुरू मुहर्रम [विक्रमी १५२७ = ई० १४७०] में राजा मंडलीकका मुसल्मान होना लिखा है; परंतु हमको एक प्रशस्ति हि० ९०२ [विक्रमी १५५४ = ई० १४९७] की मिली है- (नक़ल शेष संग्रहमें नम्बर २ देखो) जिसमें महाराणा कुम्भाकी बेटी रमाबाई और उनके पति मंडलीककी प्रशंसा महेश्वर पंडित उन दोनोंके सामने करता है; और प्रशस्तिके देखनेसे यह भी पाया जाता है कि उस वक्त तक मंडलीक गिरनार पर राज करता था— कदाचित् इस संवत् के पीछे मुसल्मान हुआ हो— परंतु हम यह भी नहीं कह सक्ते कि सब ग्रन्थकारोंने ग़लती खाई— इसलिये इस बातको हम दूसरे विद्वानोंकी राय पर छोड़ते हैं.

ये राजा चौहान राजपूतोंकी शाखमें खीची गोतके थे. राजा पालनदेवने चांपा नाम भीलसे चांपानेरका क़िला लिया, जिसके पीछे वहां नीचे लिखेहुए राजा अनुक्रमसे राज करते रहे :—

१ पालनदेव २ रामदेव ३ चांगदेव ४ चचिंगदेव ५ सोनंगदेव ६ पालनसिंह ७ जीतकरण ८ कंपूरावल ९ वीरधवल १० शिवराज ११ राघवदेव १२ त्रिंबकभूप १३ गंगदास १४ जयसिंहदेव. इस जयसिंहदेवके वंशके लोग छोटे उदयपुर व देवगढ़ बारियामें राज्य करते हैं, जो गुजरात प्रांतके राजाओं में गिने जाते हैं.

(छोटा उदयपुर.)

जयसिंहदेवका बेटा रायसिंह अपने पिताके सामने ही दो बेटे (पृथुराज और डूंगरसिंह) छोड़कर मरगयाथा. जयसिंहदेव मुसल्मानोंके हाथसे क़त्ल हुआ, तब पृथुराजने मोहनमें अपना राज्य जमाया. इनके वंशमें कई पीढ़ियों पीछे बाजीरावल राजा हुआ. उसने छोटे उदयपुरको अपनी राजधानी बनाया; जिसके समयमें मुसल्मानी हुकूमत दुर्बल और मरहटे प्रबल होगयेथे. बाजीरावलके पीछे दुर्जनसिंह, अमरसिंह, अभयसिंह और रायसिंह क्रमसे गादी बैठे. रायसिंहका देहांत विक्रमी १८७६ [हि० १२३४ = ई० १८१९] में होनेपर पृथुराज गादी बैठे; इनके समय विक्रमी १८७९ [हि० १२३७ = ई० १८२२] में यह राज्य गायकवाड़ी हुकूमतसे निकलकर ब्रिटिश गवर्नमेंटके आधीन हुआ; फिर कुछ दिनों पीछे पृथुराजका देहांत होगया.

पृथुराजके पीछे उनके भाइयोंमेंसे गुमानसिंह गादीबैठे, और २९ वर्ष राज्य कर विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = ई० १८५१] में निस्सन्तान मरगये; तब इनके भाईके बेटे जीतसिंह गादीबैठे- इनके वक्तमें हिन्दुस्थानी बाग़ियोंके साथ तांत्या टोपे (१) आया और शहरको लूट खसोट बरबाद कर मुक़ाबलेके वक्त भागगया. यह राजा सात बेटे और छः बेटियां छोड़कर विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में मरा और उसका बड़ा बेटा मोतीसिंह गादी बैठा, जो इस समय राज्य करताहै. यह राज्य पहाड़ी घाटियोंमें ५६५ गांव और (२५००००) ढाई लाख रुपया सालियाना आमदनीका है. इस राज्यसे १०५०० रुपया ख़ास राज्यके, और ६२० गरासिये भोमियोंके एवज़में अंग्रेज़ी सरकारके द्वारा गायकवाड़ सरकारको वर्षोंदी ख़िराज वगैरहकी तरह पर दिया जाताहै- यहांके राजाकेलिये सरकार अंग्रेज़की तरफ़से ९ तोपोंकी सलामीहोतीहै.

---

(१) यह मरहटा पेशवाका ज़ात बिरादर था और सरकारी पेन्शनदार होकर बिठूरमें रहता था. ई० १८५७ के बलवेमें इसकी बग़ावत प्रसिद्ध है.

(देवगढ़ बारियाका राज्य.)

चांपानेरके राजा जयसिंह देवके पोते डूंगरसिंहने महमूदके हाथसे अपने दादा के मारेजाने पीछे बड़ी लूट खसोट और बहादुरीसे अपना राज्य जमाया. इसकी गादी पर अनुक्रमसे उदयसिंह, रायसिंह, विजयसिंह और मानसिंह बैठे; विक्रमी १७७७ [हि० ११३२ = ई० १७२०] में मानसिंह तो मरगया, और एक मुसल्मान बिछूचने बारिया पर क़ब्ज़ा करलिया. मानसिंहकी राणी अपने बेटे एथुराज को लेकर डूंगरपुर आई; बारह वर्ष तक वहां रहकर विक्रमी १७९३ [हि० ११४९ = ई० १७३६] में एथुराजने डूंगरपुरकी मदद ले, बारियासे मुसल्मानोंको निकाल कर वहां एक क़िला बनाया; जिसको देवगढ़ बारिया वा देवका क़िला कहतेहैं. इनके मरने बाद रायधर, गंगदास, गंभीरसिंह, धीरतसिंह, साहबसिंह और जशवन्तसिंह क्रमसे गादी बैठे. विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = ई० १८०३] में यह रियासत जशवन्तसिंहके समय मरहटोंके क़ब्ज़ेसे निकली और सरकार अंग्रेज़के आधीन होकर अहदनामा हुआ. इसके पीछे गंगदास गादी बैठा, जिसका देहान्त विक्रमी १८७६ [हि० १२३४ = ई० १८१९] में हुआ और उनका बेटा एथ्वीराज राज्यका मालिक बना. तब विक्रमी १८८१ [हि० १२३९ = ई० १८२४] में एक दूसरा अहदनामा सरकार अंग्रेज़के साथ हुआ. विक्रमी १९२१ [हि० १२८१ = ई० १८६४] में एथ्वीराजका देहान्त हुआ, और उसका बेटा मानसिंह गादी बैठा; जो अब राज्य करताहै. यह राज्य, चौहान (खीची) राजपूतोंका रेवाकांठाकी रियासतोंमें (१७५०००) पौने दो लाख रुपया सालियाना आमदनीका है; जिसमें ४१५ गांवहैं. रियासतकी तरफ़से १२००० रुपया सालाना अंग्रेज़ सरकारको ख़िराजके तौरपर दियाजाताहै. इस रियासतकी सलामी सरकार अंग्रेज़से ९ तोपोंकी होती है.

महमूदने (१) चांपानेर पर क़ब्ज़ा करके उसका नाम मुहम्मदाबाद चांपानेर रक्खा. हि० ८९२ [विक्रमी १५४४ = ई० १४८७] में सिरोहीके रावने सौदागरोंके ४०० चार सौ घोड़े छीन लिये थे; महमूदशाहने उनकी फ़र्याद सुनकर रावको लिखा कि इनके घोड़े वग़ैरह जो माल असबाब हो फ़ौरन देदो, नहीं तो सिरोही पर चढ़ाई होगी; जिससे रावने डरकर सौदागरोंका असबाब उनके सपुर्द करदिया. हि० ९०० [विक्रमी १५५२ = ई० १४९५] में दक्षिणके बादशाह महमूदके सर्दार

(१) प्रसंग देख छोटा उदयपुर व बारियाके राज्यका हाल भी आवश्यक जान महमूदके वर्णन में ही संक्षेपसे लिखा है.

बहादुर गीलानीने बाग़ी होकर गोआ व बायलके बंदरों पर क़ब्ज़ा करलिया और वह गुजरातका मुल्क लूटने लगा, तब महमूद गुजरातीने सफ़दरुल्मुल्कको जहाज़ी फ़ौज देकर उसका मुक़ाबला करनेके लिये भेजा; परन्तु दर्याई तूफ़ानसे फ़ौज घबरा गईथी, जिससे बहादुर गीलानीने उसको क़ैद करलिया. यह ख़बर महमूद बहमनी को गुजराती बादशाहसे मिली. उसने अपने बाग़ीपर फ़ौज भेजकर उसे क़त्ल किया, और सफ़दरुल्मुल्कको सामान व जहाज़ी फ़ौज समेत गुजरात भेजदिया.

दूसरे वर्ष महमूदने ईडर और बागड़के राजाओं पर चढ़ाई की. ईडरके राव सूर्यमल्ल और बागड़ (डूंगरपुर) के रावल सोमदासने बहुतसी दौलत देकर उससे पीछा छुड़ाया. हि० ९०५ [विक्रमी १५५६ = ई० १४९९] में निज़ामुल्मुल्कने दौलताबाद पर चढ़ाई की, तब महमूद दौलताबादकी मदद पर रवाने हुआ. यह ख़बर सुनकर निज़ामुल्मुल्क वापस लौटगया और महमूद अपने मुल्कमें चला आया. फिर हि० ९०६ [विक्रमी १५५७ = ई० १५००] में महमूदने सुना कि बहमनी ख़ानदानके नौकर मुल्क दबाकर ख़ुद मुस्तार होगये हैं, जिससे वह भी अपने सर्दारोंसे ख़ौफ़ खाकर अहमदाबाद आया और बहुतसे घमंडी सर्दारोंको इस शुबह पर क़ैद व क़त्ल किया कि कदाचित् वे लोग भी उसके बाद उसकी औलादसे बहमनी ख़ानदानके मुवाफ़िक़ बर्ताव न करें. हि० ९१३ [विक्रमी १५६५ = ई० १५०८] में फ़रंगियोंके जहाज़ गुजरातके बंदरोंमें ठहरनेके इरादेसे चलेआते थे, और उनके पीछे सुल्तान रूमके जहाज़ लगेहुए थे; महमूदशाहने अपने नौकर अयाज़ को जहाज़ी फ़ौज देकर रूमियोंकी मददके लिये भेजा. बम्बईके क़रीब चोल बंदर पर रूमी व गुजराती मुसल्मानोंसे पोर्चुगीज़ोंकी लड़ाई हुई. तारीख़ फ़रिश्तह व तबक़ात अकबरी में लिखाहै कि इस लड़ाई में ४०० रूमी मुसल्मान और ३००० के क़रीब फ़रंगी मारे गये; मुसल्मानोंकी जहाज़ी तोपसे पोर्चुगीज़ोंका एक बड़ा जहाज़ जिसमें (१०००००००) एक करोड़ रुपयोंका माल और उनका अफ्सर सवार था टूटकर समुद्र में डूबगया. बचेहुए फ़रंगियोंमेंसे कुछ भागगये और बाक़ी रहे जिनको अयाज़ गुजराती उन के माल असबाब समेत क़ैदकर लाया. महमूदशाह गुजराती अपने बंदरोंका पुख़्ता इन्तिज़ामकर मुहम्मदाबाद चांपानेर चलाआया. फ़ॉर्ब्स साहब गुजरातकी हिस्टरी "रास-माला" में इन फ़ारसी तवारीख़ों (तारीख़ फ़रिश्ता वग़ैरह) के अनुसार ही लिखतेहैं, परंतु हौरेसके सफ़रनामे [अव्वल जिल्द, ६७० पृष्ठ] से फ़ारसी तवारीख़ोंके बयानमें फ़र्क़ मालूम होताहै, इसलिये उसका तर्जुमा नीचे लिखतेहैं—

"ई० १५०८ [विक्रमी १५६५ = हि० ९१३] में ट्रिस्टैनूडी स्टैकुनहा पंद्रह जहाज़ोंके साथ ज़ंज़ीबारके किनारेपर गया. उसने मलिंदाके बादशाहको उसकी बाग़ी रैयतके बरख़िलाफ़ मददकी; फिर होइया व ब्रेवाके शहरोंको जलाकर ज़कोट्रा की तरफ़ गया और उस टापूकी राजधानीको जीतकर वहां थोड़ीसी फ़ौज छोड़ दी और आप बहुत जल्दीके साथ मलाबारको गया; वहां आलमेड़ाके जहाज़ोंसे मिलकर पोर्चुगीज़ क्यालिकटके लोगोंसे, जिनकी मददके लिये अरबसे जहाज़ आयेथे, लड़ने गये, और उनको पनान शहरके सामने शिकस्तदी. थोड़े दिनोंपीछे पोर्चुगीज़लोगोंने बम्बईके पास चोल बन्दरमें मिसरके सुल्तान केम्सनके जहाज़ोंसे, जो क्यालिकट वालोंकी मदद पर आये थे, लड़कर उनको बिलकुल्ल बरबाद किया, और हर जगह फ़तहयाब हुए. लेकिन आलमेड़ाका बेटा लॉरेन्सडी आल्मेड़ा खंभात और मिसरके जहाज़ोंसे बहादुरीके साथ लड़ते समय तीरसे मारागया. इस नौजवान बहादुरकी लाश नहीं मिली; उसके बापने जहाज़ी लोगोंके वापस जाने पर उसके मरनेकी ख़बर सुनकर बड़े साहस (मज्बूत दिल) के साथ इतना ही कहा कि "मेरा बेटा अपने मुल्ककी ख़ैरस्वाही में मरा यह उसके लिये बहुत अच्छा हुआ, क्योंकि इससे बढ़कर और कोई काम नामवरीका नहीं है" (1).

इन्हीं दिनोंमें बरार देशका बादशाह दाऊदशाह फ़ारूक़ी (जिसकी राजधानी आसीरगढ़में थी) के मरजानेसे उसके वारिसोंमें फ़साद खड़ा हुआ. उस वक़ महमूद गुजरातीसे उसके दौहित्र (नवासे) आदिल्ख़ांने बरार मुल्क लेनेके लिये मदद मांगी; क्योंकि वहांके सर्दारोंने मुबारकख़ांके बेटे आलमख़ांको गादी पर बैठादिया था. इस पर महमूदने चढ़ाई की, और आदिल्ख़ांको "आज़महुमायूं" ख़िताबके साथ बरारका बादशाह बनाकर आप वापस लौटगया.

बरार. (आसीरके फ़ारूक़ी बादशाह)

मलिकराजा फ़ारूक़ी.

बरारके बादशाह फ़ारूक़ी कहलाते थे, क्योंकि हज़रत मुहम्मदके दूसरे ख़लीफ़ा उमरको पैग़म्बरने फ़ारूक़ (२) का ख़िताब दिया था, जिससे उनकी औलाद फ़ारूक़ी कहलाई. इस बादशाहतका मूल पुरुष (मूरिस आला) मलिकराजा फ़ारूक़ी था,

---

1 John Harris's Collection of Voyages and Travels. Vol 1. P. 670.

(२) फ़ारूक़का अर्थ "झूठ (दूसरे मज़्हब) और सच (दीन इसलाम) में फ़रक़ करनेवाला."

जिसको हि० ७७६ [विक्रमी १४३१ = ई० १३७४] में फ़ीरोज़शाह तुग़लक़ने ख़ानदेशमें इज़्ज़तके साथ जागीर दी थी; लेकिन बकलानेके राजा भरजी पर फ़तह पानेके सबब कुल्ल ख़ानदेशका अफ़्सर बनादिया. हि० ८०१ ता० २२ शाबान [विक्रमी १४५६ ज्येष्ठ कृष्ण ८ = ई० १३९९ ता० १० मई] को मलिकराजा फ़ारूक़ी अपने बेटे मलिक नसीरको वलीअहद बनाकर मरगया.

नसीरख़ां.

मलिक नसीरने अपना लक़ब नसीरख़ां रखकर खुतबा व सिक्का अपने नामका जारी किया, और आसा नामके एक अहीरसे आसीर (१) का क़िला छीना. इसके बाद बहमनी बादशाह अहमदशाहने हि० ८४१ [विक्रमी १४९४ = ई० १४३७] में नसीरख़ांसे आसिरका क़िला छीनलिया; इसी सन्में मुल्क निकल जानेके रंज से नसीरख़ां ज़िले गोंड़वानेमें मरगया.

आदिलख़ां.

मलिक नसीरका बेटा मीरां आदिलख़ां फ़ारूक़ी, गुजराती बादशाहोंकी मददसे दक्षिणियोंको निकालकर बरारका मालिक हुआ, और हि० ८४४ ता० ८ ज़िलहिज शुक्र [विक्रमी १४९८ वैशाख शुक्ल १० = ई० १४४१ ता० १ मई] को मारागया (२).

मुबारकख़ां.

आदिलख़ांके पीछे उसका बेटा मुबारकख़ां फ़ारूक़ी बुरहानपुर (बरार) का बादशाह बना; और हि० ८६१ ता० १२ रजब [विक्रमी १५१४ ज्येष्ठ शुक्ल १३ = ई० १४५७ ता० ६ जून] को मरगया.

ऐना आदिलशाह.

मुबारकख़ांके बेटे मीरां ऐना आदिलशाह फ़ारूक़ीने जो उसके बाद तरूतपर बैठा, आसीरके क़िलेका दोहरा कोट व दरवाज़े बनवाये, और अपना नाम झाड़खंडी सुल्तान रक्खा. हि० ८९७ ता० १४ रबिउलअव्वल [विक्रमी १५४८ माघ शुक्ल १५ = ई० १४९२ ता० १४ जान्युअरी] को उसका देहान्त हुआ.

---

(१) यह क़िला उसी आसा अहीरका बनायाहुआ था, और उसके नाम (आसा अहीर) से बिगड़कर आसीर कहलाता है. यह मुल्क सात सौ वर्षसे इसीके वंशके क़ब्ज़ेमें चला आया था.

(२) पता नहीं मिलता कि यह किस जगह मारा गया— फ़रिश्ता वग़ैरह फ़ारसी तवारीख़ोंके मुवर्रिख़ोंने इस हालसे नावाक़फ़ी ज़ाहिर की है.

मीरां दाऊद और मलिकआदिल

ऐना आदिलशाहके कोई बेटा न होनेसे सर्दारोंने उसके भाई मीरां दाऊद को गादीपर बिठाया, परंतु महमूद गुजरातीने उसे निकालकर अपने दौहित्र (नवासे) मलिक आदिलखां फ़ारूक़ी को, बादशाह बनाया. यह किसी बीमारीसे हि० ९२६ ता० १० रमज़ान [वि० १५७७ भाद्रपद शुक्ल १२ = ई० १५२० ता० २७ ऑगस्ट] को परलोक सिधारा.

मीरां मुहम्मदशाह फ़ारूक़ी.

आदिलखांके पीछे उसके बेटे मीरां मुहम्मदशाह फ़ारूक़ीने राज किया. जब हुमायूंने बहादुरशाहको शिकस्त दी, तब निज़ामशाह दक्षिणीकी सुफ़ारिशसे मुग़लिया सर्दार आसिफ़ख़ांने, मीरां मुहम्मदशाह फ़ारूक़ीको जो गुजरातियोंका हिमायती था, कुछ नहीं कहा; फिर हुमायूं बादशाह तो अफ़ग़ानोंके फ़सादसे आगरेकी तरफ़ गया और बहादुरशाह गुजराती देवके टापूमें पोर्चुगीज़ोंके हाथसे मारागया. जब उसकी औलादमें कोई न रहा, तब गुजराती सर्दारोंने इसी मीरां मुहम्मदशाह फ़ारूक़ी को अपना बादशाह मानकर इसके नामका सिक्का व ख़ुत्बा जारीकिया; परन्तु वह गुजरातका बादशाह बनकर अहमदाबाद जाते समय रास्तेमें बीमार होकर हि० ९४३ ता० १३ ज़िल्काद [विक्रमी १५९४ वैशाख शुक्ल १४ = ई० १५३७ ता० २५ एप्रिल] को मरगया.

मीरांमुबारकशाह फ़ारूक़ी.

मुहम्मदशाहके कोई बेटा बादशाहतके लायक़ नहीं था, इसलिये उसका भाई मीरां मुबारकशाह बरारका बादशाह हुआ और बहादुरशाहकी जगह उसके भतीजे मुहम्मदशाहको गुजराती सर्दारोंने गुजरातका मालिक बनाया. मीरां मुबारकशाह हि० ९७४ ता० ६ जमादिउल्आख़िर [विक्रमी १६२२ पौष शुक्ल ८ = ई० १५६५ ता० २० डिसेंबर] को मरगया.

मीरां मुहम्मदशाह फ़ारूक़ी दूसरा, व हसनख़ां फ़ारूक़ी.

मुबारकशाहके मरे पीछे उसका बेटा मीरां मुहम्मदशाह बादशाह हुआ, और हि० ९८४ [विक्रमी १६३३ = ई० १५७६] में उसके मरजाने पर उसका लड़का हसनख़ां फ़ारूक़ी गादीपर बैठाया गया.

मीरां राजे अलीख़ां फ़ारूक़ी.

हसनख़ांके तख़्तपर बैठते ही मीरां राजे अलीख़ां फ़ारूक़ी, जो दिल्लीके बाद-शाह अकबरके सर्दारोंमें था, अपने भतीजे हसनख़ांको निकाल कर बरारका बाद-

शाह बनगया. ख़ानख़ाना अब्दुर्रहीम के साथ बादशाह अकबरने निज़ाम-शाहपर जो फ़ौज भेजी, उसमें मालिक राजेअलीख़ां फ़ारूक़ी भी था, सो लड़ाईमें तोपका गोला लगनेसे हि० १००५ [विक्रमी १६५३ = ई० १५९६] में मरगया.

बहादुरखां.

राजेअलीख़ांके बाद बहादुरख़ां फ़ारूक़ी बरारका मालिक हुआ, लेकिन उस की कमअक्ली, नशेबाज़ी व बुरी आदतोंके सबब बादशाह अकबरने हि० १००८ [विक्रमी १६५६ = ई० १५९९] में बरारका मुल्क छीन कर उसे क़ैद करलिया. इसी वक़से बरारदेशमें फ़ारूक़ी ख़ानदानकी समाप्ति हुई. (१)

महमूद गुजरातीके पास, जिसका हाल हम ऊपर लिखआये हैं, हि० ९१६ [विक्रमी १५६७ = ई० १५१०] में दिल्लीके बादशाह सिकन्दर लोदीने दोस्ती और मुहब्बतके तौर पर कुछ सौग़ात भेजी. इसके पहिले दिल्लीके किसी बादशाहने गुजराती बादशाहोंके साथ ऐसा बर्ताव नहीं किया था. हि० ९१७ ता० २ रमज़ान [विक्रमी १५६८ मार्गशीर्ष शुक्ल ४ = ई० १५११ ता० २५ नोवेम्बर] को महमूद बेगड़ा मरगया, और उसका बेटा मुज़फ़्फ़रशाह गुजराती तख़्त-नशीन हुआ.

मुज़फ़्फ़रशाह.

हि० ८७५ ता० २० शव्वाल [विक्रमी १५२८ वैशाख कृष्ण ६ = ई० १४७१ ता० १२ एप्रिल] को इसका जन्म हुआ था. इसके शुरू जुलूस (गादी उत्सव) में ईरानके बादशाहकी तरफ़से एक एल्ची यादगारबेग क़ज़लबाश तुहफ़े लाया; इसी वर्ष ईडरके राव भीमदेवने बखेड़ा उठाया, और मुज़फ़्फ़रने उस पर चढ़ाई की; राव भीमदेव पहाड़ोंमें भागगया था, लेकिन मुज़फ़्फ़रके तसल्ली देने पर फिर आ जमा. हि० ९२१ [विक्रमी १५७२ = ई० १५१५] में भीमदेवका देहान्त हुआ और उसका बेटा भारमल्ल गादीपर बैठा. परन्तु ईडरके पहिले राव सूर्यमल्लका बेटा रायमल्ल जिसको भीमदेवने गादीसे उतार दिया था, महाराणा सांगाकी मददसे भारमल्लको निकाल कर ईडरका आप मालिक

---

(१) बरार—आसीरकी बादशाहतका हाल प्रसंगागत लिखागया अब फिर महमूदका शेष वृत्तान्त लिखा जाताहै.

बना. भारमल्ल मुज़फ्फ़र शाहके पास गया तब उसी वर्षकी पहिली शव्वाल [मार्गशीर्ष शुक्ल २ = ता० ९ नोवेम्बर] के दिन मुज़फ्फ़रने निज़ामुल्मुल्कको फ़ौज देकर भेजा और रायमल्लको निकलवाकर भारमल्लको राज्य दिलवाया; जिससे रायमल्ल बीजानगरके पहाड़ोंमें रहकर मुल्कपर हमला करनेलगा. निज़ामुल्मुल्क वापस आते समय ज़हीरुल्मुल्कको १०० आदमियोंके साथ ईडरमें छोड़आया था. वह हि० ९२३ [विक्रमी १५७४ = ई० १५१७] में रायमल्लके मुक़ाबलेमें मारागया; इसी वर्षमें मांडूका बादशाह दूसरा महमूद ख़िलजी मेदिनीरायके डरसे भागकर अहमदाबाद आया, जिसको महमूद गुजरातीने फिर मांडूका मालिक बनाया. इसी ज़मानेमें महाराणा सांगाने दुबारा राव रायमल्लकी मदद करके ईडर पर चढ़ाई की थी (१). हि० ९३२ ता० २ जमादिउल्अव्वल [विक्रमी १५८२ फाल्गुन शुक्ल ४ = ई० १५२६ ता० १५ फ़ेब्रुअरी] को मुज़फ्फ़रका देहान्त हुआ.

सिकन्दरशाह.

मुज़फ्फ़रके बाद, शाहज़ादे सिकन्दरको सब सर्दारोंने मिलकर गुजरातका बादशाह बनाया. कई सर्दारोंकी राय लतीफ़ख़ांको बादशाह बनानेकी थी लेकिन यह बात न होसकी. सिकन्दरने तख़्तनशीन होकर अपना नाम 'सिकन्दरशाह' रक्खा. इसने लतीफ़ख़ां पर, जो अपनी जागीर नदरबारमें रहता था, फ़ौज भेजी, जिससे डरकर वह ज़िले चित्तौड़के पहाड़ोंमें चलागया, परन्तु उसको वहांके भील और राजपूतोंने उसी जगह १७०० आदमियों समेत मारडाला.

लतीफ़ख़ां पर सख़्ती करनेसे मुज़फ्फ़री अहदके सर्दार, सिकन्दरशाहसे नफ़रत करने लगे. निदान इसी सन् हि० के १९ शाबान [विक्रमी १५८३ आषाढ़ कृष्ण ४ = ई० ता० ३० मई] के दिन वज़ीर इमादुल्मुल्क वग़ैरह सर्दारोंने सिकन्दरशाहको मारडाला.

महमूदशाह दूसरा.

सिकन्दरशाहके पीछे मुज़फ्फ़रशाहके शाहज़ादे नसीरख़ांको, जिसकी अवस्था ५ या ६ वर्ष की थी, सर्दारोंने तख़्त पर बैठाकर 'महमूदशाह' का ख़िताब दिया.

नसीरख़ांकी अवस्था कम होनेके कारण इमादुल्मुल्क ही मुख़्तार रहा; जिससे ताजख़ां वग़ैरह सर्दारोंने नाराज़ होकर बहादुरशाहको बुलाया; यह अपने बाप मुज़फ्फ़रकी नाराज़गीसे चित्तौड़ होता हुआ दिल्ली चलागया था, सो सर्दारोंके बुलानेसे

(१) यह हाल महाराणा सांगाके वृत्तांतमें लिखाहै और उसीके साथ मुज़फ्फ़रके शाहज़ादे बहादुरख़ांका चित्तौड़ आकर दिल्ली जाना भी दर्ज कियागयाहै.

आते वक़ चित्तौड़ पहुंचा; उस समय इसके दोनों भाई चांदख़ां व इब्राहीमख़ां जो पहिलेसे ही अपने बाप (मुज़फ़्फ़र) की नाराज़गीके कारण चित्तौड़में शरणे आरहे थे, इससे मिले. चांदख़ां तो वहीं रहा और बहादुरशाह इब्राहीमख़ांको साथ लेकर डूंगरपुर होताहुआ गुजरातकी ओर गया. रास्तेमें और भी कितने ही सर्दारोंके मिलजानेसे अहमदाबाद पहुंचकर महमूदकी जगह हुकूमत करने लगा.

बहादुरशाह.

यह दिल्लीसे अहमदाबाद पहुंचा और हि० ९३२ ता० १ शव्वाल [वि० १५८३ श्रावण शुक्ल २ = ई० १५२६ ता० १२ जुलाई] को गुजरातके तख़्तपर बैठकर दो चार दिनपीछे वहांसे मुहम्मदाबाद (चांपानेर) की तरफ़ जो उस वक़ गुजरातकी मुख्य राजधानी मानीजाती थी, रवाना हुआ. वहां पहुंचने पर इसने इमादुलमुल्क वग़ैरह सिकंदरके मारनेवालोंको बड़ी निर्दयतासे मारकर हि० ता० ११ ज़िल्काद [वि० भाद्रपद शुक्ल १२ = ई० ता० २० ऑगस्ट] को चांपानेर में बादशाह होने का दुबारा जुलूस (उत्सव) किया. दूसरे वर्ष महमूदशाह भी जो तख़्तसे उतारा गया था, मरगया. फिर हि० ९३४ [विक्रमी १५८५ = ई० १५२८] में बहादुरशाह ईडर और बागड़ पर चढ़ाई करके लूट खसोट करता हुआ नज़राना लेकर लौटगया; और इसी संवत्में खंभातको फ़तह कर देवके बन्दरकी तरफ़ गया; वहां जो यूरोपियन जहाज़ गिरिफ़्तार हुआ था उसमेंके कई अंग्रेज़ोंको मुसल्मान बनाकर लौट आया; फिर तो बहादुरशाह दिन दिन ज्यादा फ़तहयाब होने लगा. हि० ९३५ [विक्रमी १५८६ = ई० १५२९] में वह मुहम्मद मीरांशाहकी मददके लिये, जिसको दक्षिणियोंने दबालिया था, चला, और बरार पहुंचकर दौलताबाद तक दक्षिणियों पर धावा किया; लेकिन हि० ९३६ [विक्रमी १५८७ = ई० १५३०] में दक्षिणियोंसे दबकर गुजरातको फिर चलाआया. हि० ९३७ [विक्रमी १५८८ = ई० १५३१] में देवके बन्दर गया और वहांसे लौट कर बागड़की तरफ़ लूट मार मचाई; जिससे डूंगरपुरके रावल पृथ्वीराजने ताबेदारी क़बूल की, और उसका भाई जगमाल भागकर चित्तौड़ चलाआया. महाराणा रत्नसिंहकी सुफ़ारिशसे बहादुरशाहने जगमालका कुसूर मुआफ़कर बागड़का इलाक़ा पृथ्वीराज और जगमालको बराबर बांट दिया (१). महमूद ख़िल्जीने सारंगपुर और मेवाड़पर चढ़ाई की, जिससे महाराणा रत्नसिंह मालवेपर चढ़े; फिर सुल्तान बहादुरशाह गुजरातीने मालवेकी बादशाहत गुजरातमें मिलाकर मांडूपर

(१) इस समय डूंगरपुरमेंसे बांसवाड़ेकी रियासत अलग हुई.

अपना क़ब्ज़ा करलिया, जिसका कुछ हाल मेवाड़ और मांडूके ज़िक्रमें लिखागया है- (एष्ठ ३ और १५).

बहादुरशाहने रायसेन पर चढ़ाई की; वहांका राजा सलहदी पूर्बिया कई बार क़िलेसे निकल निकल कर लड़ा. आख़िरकार वह बादशाहके पास आकर मुसल्मान होगया; परन्तु उसके बेटे भोपत और पूर्णमल्ल व उसके भाई लक्ष्मणने क़िला ख़ाली न किया, जिससे बहादुरशाहने सलहदीको दग़ाबाज़ी के शकसे क़ैद किया; तब भोपतने बादशाहसे कहलाया कि "मेरे बापको एक बार क़िलेमें भेजदें तो हमलोग क़िला ख़ाली करदें." बहादुरशाहने ताजख़ांके साथ सलहदीको क़िलेमें भेजा, परन्तु उसने क़िलेमें जाकर अपनी राणी दुर्गावती (१) के धिक्कार वा शर्म दिलानेसे भाई बेटों समेत लड़ाईके लिये तलवार पकड़ी; यह हाल सुनकर बहादुरशाह भी क़िलेमें आ पहुंचा. कुल राजपूत लड़कर मारेगये और राणी दुर्गावती ३०० स्त्रियोंके साथ आगमें जलगई. बहादुरशाहने रायसेन क़ब्ज़ेमें कर, काल्पीके हाकिम सुल्तान आलमको चंदेरी समेत जागीरमें देदिया; और इसी सन्के हि० शव्वाल [विक्रमी ज्येष्ठ = ई० मई] में गागरौनका क़िला जो मांडूकी बादशाहतसे मेवाड़वालोंने दबालिया था हमला करके लेलिया; फिर मंदशोर पर क़ब्ज़ा करके मांडू होताहुआ पोर्चुगीज़ोंसे मुक़ाबलेके वास्ते देव बन्दरमें पहुंचा. हि० ९३९ [विक्रमी १५८९ = ई० १५३३] में बहादुरशाहने चित्तौड़को घेरा, और महमूदका जड़ाऊ ताज व कमरपेटा जो महाराणा सांगाने उससे लेलिया था, महाराणा विक्रमादित्यसे लेकर अहमदाबाद चला गया- (एष्ठ २८). हि०९४१ ता० ४ रमज़ान [विक्रमी १५९२ चैत्र शुक्ल ५ = ई० १५३५ ता० ८ मार्च] को दुबारा आकर चित्तौड़का क़िला फ़तह किया, जिसका मुफ़स्सल हाल ऊपर लिख आये हैं (एष्ठ २८-३१ देखो). फिर बहादुरशाह मन्दशोर के पास हुमायूंसे शिकस्त खाकर, मांडू होता हुआ पोर्चुगीज़ोंकी पनाह (देवके टापू) में जा छिपा. हि० ९४३ रमज़ान [विक्रमी १५९३ फाल्गुन = ई० १५३७ फ़ेब्रुअरी] में इसने फ़रंगियोंके अफ़्सरको इस मतलबसे अपने पास बुलाया कि कुछ क़ौल क़रार करके हुमायूं पर चढ़ाई करे, परन्तु बीमारीके सबब वह अफ्सर न आ सका; तब बहादुरशाह जहाज़में सवार होकर उसके पास गया; जाते समय जहाज़में कुछ धोखा मालूम होनेसे वापस लौटा, लेकिन किश्तीके हट जानेसे समुद्रमें गिरपड़ा, और पानीमें ही फ़रंगियोंने उसे बर्छोंसे मारलिया. इस जगह बहादुरशाह

(१) तारीख़ फ़रिश्तहमें लिखा है कि यह महाराणा सांगाकी बेटी थी.

के साथ मलिक अमीन फ़ारूक़ी, शुजाअतखां, लंगरखां, अलिफ़खां, सिकन्दरखां, और मेदिनीरायका भाई गणेशराव आदि मारेगये. तबक़ात अकबरी व फ़रिश्तहमें इसी तरह लिखा है, लेकिन हैरिसके सफ़रनामेका बयान यह है–

"पोर्चुगीज़ अफ़सर नन्हो डी कुन्हा अपने भाई साइमन डी कुन्हाके साथ जाड़ेका मौसिम मम्बेज़ामें गुज़ार कर हिंदुस्थानको गया, जहां पर देवके क़िले और शहरको लेनेके इरादेसे जहाज़ोंके साथ खंभातकी खाड़ीमें पहुंचा; उसके पहुंचते ही वहांके बादशाह बहादुरशाहके पाससे एक एल्ची उसको क़िला देनेकी ख़बर लेकर आया. वह क़िला मिलने पर एंटोनीसिलवैराके सुपुर्द करदिया गया."

"थोड़े ही दिनों बाद खंभातके बादशाहने तुर्कोंके बहकानेसे जो देवको खुद लेना चाहतेथे, पोर्चुगीज़ लोगोंसे वह मुक़ाम लेना चाहा; लेकिन इन्होंने उसको उसके मददगार तुर्कों समेत अच्छी तरह शिकस्त दी; उसके बहुतसे जहाज़ोंको डुबा दिया और लड़ाई में उसको भी घायल किया, उसी ज़ख़्मसे वह मरगया." (1)

मीरां मुहम्मदशाह फ़ारूक़ी— व महमूद गुजराती.

बहादुरशाहके मरनेपर उसकी मा मख़्दूमा ए जहां, गुजराती सर्दारों समेत अहमदाबाद चलीआई; और वहां आकर सब सर्दारोंकी रायसे मीरां मुहम्मद शाह फ़ारूक़ीको, जो बहादुरशाहका भानजा और आसीरका मालिक था, गुजरातका बादशाह बनानेकेलिये बुलाया, और उसके नामका सिक्का व खुतबा जारी किया. परन्तु वह अहमदाबाद आते वक़्त रास्तेमें बीमार होकर मरगया, तब गुजराती सर्दारोंने मुज़फ़्फ़रके पोते, और लतीफ़खांके बेटे महमूदखांको, जो बहादुर शाहके हुक्मसे बुरहानपुरमें क़ैद था, बादशाह बनानेकेलिये बुलाया.

मीरां मुहम्मदशाह फ़ारूक़ी के भाई मीरां मुबारकशाहने खुद बादशाह बननेकी नीयतसे महमूदखांको क़ैदसे निकालनेमें इन्कार किया; जिसपर गुजराती सर्दार चढ़ाई करके महमूदको छुड़ालाये और हि० ९४४ ता० १० ज़िलहिज [विक्रमी १५९५ प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल ११ = ई० १५३८ ता० ११ मई] को अहमदाबादमें तख़्तपर बैठाकर उसका लक़ब 'महमूदशाह' रक्खा. इस वक़्त इख़्तियारखांने वज़ीर बनकर कुल्ल काम अपने हाथमें लेलियाथा; लेकिन हि० ९४५ [विक्रमी १५९५ = ई० १५३८] में इख़्तियारखांको मारकर दर्याखां व इमादुल्मुल्क मुख़्तार बनबैठे. फिर इन दोनोंमें भी विरोध होजानेसे दर्याखां शिकारके बहाने महमूदको चांपानेर लेगया और इमादुल्मुल्कने फ़ौज लेकर पीछा किया; परन्तु गुजराती सिपाही महमूद-

(1) John Harris's Collection of Voyages and Travels. Vol. 1. P. 675-76.

से जामिले, जिससे इमादुल्मुल्क तो सुलह करके अपनी जागीर सूरतकी तरफ़ चलागया और महमूद अहमदाबाद आया. हि० ९४७ [विक्रमी १५९७ = ई० १५४०] में दर्याख़ां महमूदशाहको इमादुल्मुल्क पर चढ़ा लेगया. जिससे इमादुल्मुल्कने भाग कर मीरां मुबारकशाह फ़ारूक़ी का शरणालिया, लेकिन वहां भी गुजरातियोंने शिकस्त दी. फ़ारूक़ी बादशाहने तो क़िले आसीरमें जाकर महमूदशाहसे सुलह करली और इमादुल्मुल्क मालवेमें मल्लूख़ांके पास चलागया; महमूदशाह लौटकर अहमदाबाद आया, लेकिन दर्याख़ांके कुल्ल कारबार पर मुख़्तार होजानेसे महमूदशाह बहुत घबराया और एक दिन अहमदाबादसे पोशीदा निकलकर धोलका वा धंधूका के जागीरदार आलमख़ांके पास चलागया.

दर्याख़ांने एक लड़केको मुज़फ़्फ़र शाहके नामसे बादशाह बनाकर आलमख़ां पर चढ़ाई की, परन्तु उसने थोड़ीसी ही फ़ौजसे निकलकर दर्याख़ांको शिकस्त दी और अहमदाबादमें क़ब्ज़ा करके महमूदको वहां बुलालिया. तब तो कुल्ल सर्दार, दर्याख़ांको छोड़ अहमदाबादमें आगये और दर्याख़ां भागकर बुरहानपुर होताहुआ दिल्लीमें शेरशाहके पास चलागया; अहमदाबादमें आलमख़ां ख़ुदमुख़्तार वज़ीर होगया; यह हाल देख महमूदशाहने उसको गिरफ़्तार करना चाहा, लेकिन वह होशियार था, दिल्लीकी तरफ़ भागगया. इन ज़बरदस्त सर्दारों के निकलजाने बाद महमूदने अपनी बादशाहतको रौनक़ दी, और हर तरहसे रैयतको ख़ुश रक्खा. उसने अहमदाबादसे बारह कोशपर महमूदाबादकी नींव डाली-- परन्तु उसको पूरा न करसका; इसने हि० ९४९ [वि० १५९९ = ई० १५४२] में ख़ुदावंदख़ांके बंदोबस्तसे समुद्रके किनारे सूरतमें एक क़िला इस मतलबसे बनायाथा कि यूरोपियन लोग जहाज़ोंमें आकर रैयतको तकलीफ़ न देनेपावें; इस क़िलेके बनवानेमें पोर्चुगीज़ लोगोंने रोकटोक की; परन्तु ख़ुदावंदख़ांने उसको न माना और चन्दरोज़में क़िलेको पूरा करादिया. हि० ९६१ रबिउल्अव्वल [वि० १६१० फाल्गुन = ई० १५५४ फ़ेब्रुअरी] में बुरहान नाम ख़िदमतगारके हाथसे महमूदशाह रातके वक़्त मारागया. इस ख़िदमतगारको किसी क़ुसूरसे उसने एकबार दीवारमें चुनवाकर फिर कुछ देर बाद रहमदिलीसे निकलवा दियाथा; उसी डाहसे इस नालायक़ने महमूदको मारकर, बादशाहतका ताज अपने सिरपर रक्खा; और कई बड़े बड़े सर्दारोंको भी धोखेसे अकेले बुलाकर क़त्ल किया; परन्तु इमादुल्मुल्क व आलमख़ां हब्शी उसके दावमें न आये, जिनसे दूसरे दिन प्रभात होते ही मुक़ाबला हुआ और बुरहान, शिरवानख़ांके हाथसे मारागया.

अहमदशाह गुजराती दूसरा.

महमूदशाहके कोई लड़का बाला न था, इसलिये सर्दारोंने अव्वल महमूदकी औलादमेंसे रज़ीउलमुल्कको 'अहमदशाह सानी' का ख़िताब देकर तख़्त पर बिठाया; और एतमादख़ांको विज़ारत मिली. इसने उस बच्चे बादशाहको नामके लिये रखकर कुल्ल राज्यपर कब्ज़ा करलिया, तब अहमदशाह भागकर सैयद मुबारक बुख़ारीके पास चांपानेर (मुहम्मदाबाद) चलागया. सैयद मुबारकने उसकी मददकेलिये चढ़ाई की; अहमदाबादसे एतमादख़ां मुक़ाबलेको आया; लड़ाई होने पर सैयद मुबारकख़ां तोपके गोलेसे उड़गया और अहमदशाह शिकस्त खाकर भागा; परन्तु लाचार होकर फिर एतमादख़ांके पास अहमदाबाद चलाआया. एतमादख़ांने पहिलेके समान उसको केवल नामके लिये फिर बादशाह बनाया, परन्तु कुल्ल कारबारका मालिक आपही रहा. हि० ९६९के आख़िर [विक्रमी १६१९ = ई० १५६२] में इसने अहमदको मारडाला (१).

मुज़फ़्फ़रशाह गुजराती दूसरा.

इमादुल्मुल्कने एक लड़केको तख़्तपर बिठाकर सौगंद खाई कि यह महमूदशाहका बेटा है, और उसको 'मुज़फ़्फ़रशाह' के नामसे प्रसिद्ध किया. इसके वक्त में सर्दारोंने मुल्कको अपनी अपनी जागीरमें बांटलिया; इमादुल्मुल्क, मुज़फ़्फ़रशाहको नामके लिये तख़्तपर बिठालेता और आप उसके पीछे बैठकर लोगोंका मुजरा लियाकरता. इस बादशाहके अहदमें एतमादख़ां व चंगेज़ख़ां वग़ैरह सर्दारोंमें झगड़े उठे; आख़िरी लड़ाईमें जो चांपानेरके पास हुई, एतमादख़ां, चंगेज़ख़ांसे शिकस्त खाकर डूंगरपुरकी तरफ़ चलागया. मुज़फ़्फ़रशाहने अहमदाबाद आकर एतमादख़ांका घरबार ज़ब्त करलिया और चंगेज़ख़ां बादशाहतके कारबारका मुख़्तार बनगया. आसीरके नव्वाब मीरां मुबारकशाहने भी अहमदाबादके सर्दारोंकी फूट देख गुजरातपर हमला किया, लेकिन चंगेज़ख़ांसे शिकस्त खाकर उसे भागना पड़ा.

तीमूरिया ख़ानदानके कई मिरज़ा ऊपर लिखी लड़ाइयोंमें चंगेज़ख़ांके मददगार रहेथे. अब चंगेज़ख़ां और मुग़लोंमें बिगाड़ हुआ; पहिले तो मुग़लोंने उसकी फ़ौजको शिकस्त दी परन्तु पीछे मालवेकी तरफ़ चलेगये. फिर जुझारख़ां और उलग़ख़ां हब्शी, मुज़फ़्फ़रको एतमादख़ांके पास डूंगरपुर लेगये, लेकिन थोड़े दिनों पीछे एतमादख़ांसे नाराज़ होकर दोनों हब्शी सर्दार, चंगेज़ख़ांके पास अहमदाबाद चले आये. फिर लोगोंके वहम डालदेनेसे जुझारख़ांने चंगेज़ख़ांको मारडाला, और जुझारख़ां व उलग़ख़ांके बुलानेसे एतमादख़ां, मुज़फ़्फ़रको लेकर अहमदाबाद आया. मुग़ल

(१) मिरात सिकन्दरीमें अहमदशाहका माराजाना हि० ९६८ के शाबानमें लिखा है.

लोग जो चंगेज़ख़ांसे दबकर मालवेकी तरफ़ चलेगये थे गुजरातमें वापस आये, और कई ज़िलों पर क़ब्ज़ा करलिया; इधर गुजरातके हब्शियों व एतमादख़ांमें फिर विरोध हुआ. मुज़फ़्फ़रशाह हब्शियोंकी जमाअतके साथ चांपानेरकी तरफ़ चलागया. एतमादख़ांने दिल्लीके बादशाह अकबरको जो नागौर व सिरोहीकी तरफ़ आयाहुआ था अर्ज़ी लिखकर बुलाया; वह उसी वक़्त गुजरातकी तरफ़ रवाना हुआ; जब पट्टनके पास पहुंचा, उस समय मिरज़ा अबूतुराब शीराज़ी, एतमादख़ां, उलग़ख़ां, जुझारख़ां हब्शी, इख़्तियारुल्मुल्क वग़ैरह ख़िदमतमें हाज़िर हुए और मुज़फ़्फ़रशाह भी शेरख़ां फ़ौलादीके पाससे भागकर अकबरशाहके पास हाज़िर होगया. इस तरह हि० ९८० ता० १४ रजब [विक्रमी १६२९ मार्गशीर्ष शुक्ल १५ = ई० १५७२ ता० २२ नोवेम्बर] को, गुजरातकी बादशाहतके समाप्त होने पर, यह मुल्क दिल्लीकी हुकूमतमें शामिल हुआ.

अकबरशाह कुल्ल गुजरातपर क़ब्ज़ा कर मुज़फ़्फ़रको अपने साथ ले आगरे पहुंचा और उसे बंगालेके सूबेदार मुनइमख़ांके सपुर्द किया. मुनइमख़ांने अपनी बेटीकी शादी मुज़फ़्फ़रके साथ करदी लेकिन कुछ दिनों पीछे मुज़फ़्फ़र बंगालेसे भागकर गुजरातमें पहुंचा और फ़ौज एकट्ठीकर हि० ९८९ [वि० १६३८ = ई० १५८१] में गुजरातके सूबेदार कुतुबुद्दीनख़ांको क़त्ल करके अहमदाबाद पर क़ाबिज़ हुआ. जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाहने हि० ९९१ [वि० १६४० = ई० १५८३] में ख़ानख़ाना अब्दुर्रहीमको बड़ी भारी फ़ौज देकर गुजरातपर भेजा. गुजराती राजा व मुसल्मान सर्दार सब मुज़फ़्फ़रके मददगार होगयेथे. ख़ानख़ानाको बड़ी बड़ी लड़ाइयां करनीपड़ीं; मुज़फ़्फ़र, कई लड़ाइयोंमें शिकस्त खाकर लड़ता भिड़ता कच्छके राजा भाराके इलाक़ेमें पहुंचा; इस राजाने उसकी सहायता की, परन्तु मुग़लिया लश्करके पहुंच जानेसे डरकर मुज़फ़्फ़रको गिरिफ़्तार करके ख़ानख़ानाको सौंपदिया. मुज़फ़्फ़र हि० १००० [वि० १६४९ = ई० १५९२] में अपने हाथसे गला काटकर मरगया.

यहां गुजराती बादशाहोंका ख़ानदान ख़त्म हुआ.

महाराणा विक्रमादित्यके राज्याभिषेकका संवत् निश्चय करनेके हेतु— (पृष्ठ २५ देखो.)

शेष संग्रह.

नम्बर १—ताम्रपत्र—

श्रीरामो जैयति

श्रीगणेस प्रसादातु श्रीएकलिंग प्रसादातु

सही
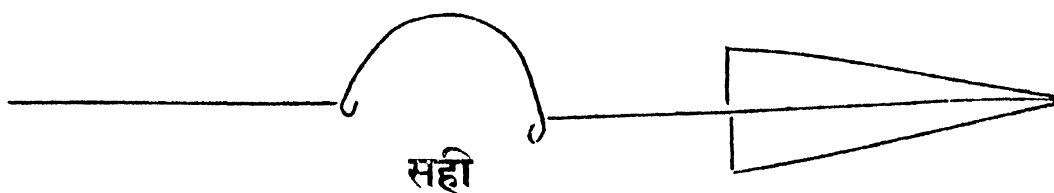
स्वस्त श्री महाराजाधीराज महाराणा श्री विक्रमादित आदेसातु प्रोहीत जानासकर हो ग्राम १ जालौ मयाकरे आघाटी रामदतु करी दिधो श्री नाइण प्रीती करेदिधो श्री राजी माडलगढी पारणीबा पधारया बाई लषा परणबा आया तिरौ चौडी मधे उदक किधौ रा श्री रावत भवानीदासजी हाडा अरजन बिदमान सहस्त्रारा बहु भीर बसुधा भुकाराय भी सगरादिभी—स्याजसजदाभुमी तस्या तस्यतदाल स्वदत परदत बाजो हरंती बसुंधरा षस्ट वर्ष सहस्त्राणा बीष्टायांजाईते क्रमी १ संवत् १५८९ बषे बौसाष सुदि ११ लीषत पंचोली महेसछौजी.

यह असल तामापत्र है इसका शुद्धरूप नीचे लिखा है—

श्रीरामोजयति

श्रीगणेशप्रसादात् श्रीएकलिंग प्रसादात्

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराणा श्री विक्रमादित्य आदेशात्– पुरोहित जानाशंकर हैं ग्राम १ जाल्यो मया करे आघाट रामदत्त करि दीधो श्री नारायण प्रीति करे दीधो श्री राणाजी मांडलगढ़ परणवा पधारया बाई लक्खा परणवा आया तीरी चौरी मध्ये उदक कीधो रा श्री रावत भवानीदासजी हाडा अर्जुन विद्यमान सहस्त्र रा ···· बहुभि र्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः॥ यस्य यस्य यदा भूमि स्तस्य तस्य तदाफलं॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरां षष्ठि वर्ष सहस्त्राणि विष्ठायां जायते कृमिः १ संवत् १५८९ वर्षे वैशाख शुदि ११ लिखितं पंचौली महेश छै जी.

मिरात सिकन्दरी व फ़रिश्तह वग़ैरह किताबों में गिरनारके राजा मंडलीकका मुसल्मान होना संवत् १५२७ में लिखा है (पृष्ठ ४० देखो) — लेकिन नीचे लिखीहुई प्रशस्तिसे संवत् १५५४ तक उसका मुसल्मान होना नहीं पायाजाता.

नम्बर २

जावरकी प्रशस्ति—

॥ ॐनमः श्रीगणेशप्रसादात् सरस्वत्यै नमः ॥ श्रीचित्र कोटा धिपति श्रीमहाराजाधिराज महाराणा श्रीकुंभकर्ण पुत्री श्रीजीर्ण प्राकारे सोरठ पति महारायां राय श्रीमंडलीक भार्या श्रीरमाबाई ए प्रासाद रामस्वामी रु रामकुंड कारापिता संवत् १५५४ वर्षे चैत्र शुदि ७ रवौ मुहूर्त कृतः ॥ शुभं भवतु ॥

श्रीमत्कुंभ नृपस्य दिग्गज रदातिक्रांत कीर्त्यं बुधेः । कन्या यादव वंश मंडन मणि श्रीमंडलीक प्रिया ॥ संगीतागम दुग्ध सिंधुजसुधा स्वादे परा देवता । प्रद्युम्नं कुरुते वनीपक जनं कं न स्मरंतं रमा ॥ १ ॥ श्रीमत्कुंभल मेर दुर्ग शिखरे दामोदरं मंदिरं । श्रीकुंडेश्वर दक्षिणा श्रित गिरे स्तीरे सरः सुंदरं ॥ श्रीमद्वारि महाब्धि सिंधु भुवने श्रीयोगिनी पत्तने भूयः कुंड मचीकर त्किल रमा लोक त्रये कीर्त्तये ॥ २ ॥ श्रीकुंभोद्भवयां बुधि र्नियमितः किं वा सुधा दीधिते र्निक्षेप स्त्रिदशै रशोषण भिया किंवाप्सरः सुंदरं ॥ प्राप्तुं पौर पुरंध्रि वृंद मभुजद्भूमी तलं मानसं चित्रं रामशर प्रहार भयतो ब्धि र्वेह कुंडायते ॥ ३ ॥ यस्मिन्नीर विहारि कोक मिथुनं क्रीडासमुन्मीलने शीतांशा वितरेतरेण नितरां विश्लेष मासाद्य च ॥ तापं नैव तनौ बिभर्त्य विरतं सोपान भित्ति स्फुरत् स्वीयांग प्रति बिंब संगम वशा द्दूरे पि तीरे चरत् ॥ ४ ॥ पानीय हार विहार शंवर सुंदरी वदनं निजं प्रतिबिंब भूत मितीह निर्मल धीर नीरग मंबुजं ॥ आदातु मुद्यत पाणिना जलदोलनेन गत श्रमा वितनोति कांचन कुंभ पूरण मत्र विस्मय विभ्रमा ॥ ५ ॥ रसाल तरु मंजुलं पिक विनोद नादो त्कलं क्वचित् कनक केतकोद्गत पराग पिंगांचलं ॥ सशीकर सुशीतलं सुरभि वृंद मंदा निलं यदीय मति निर्मलं जयति तीर भूमी तलं ॥ ६ ॥ यदीय तट भूतलं हसित कुंद पुष्पोज्वलं क्वचिद्विकच मालती कुसुम लोल भृंगैः कलं ॥ क्वचित् सरलसारणी तरल नीरता पेशलं स्तुवंति सुरयोषितः किमुत नंदना दप्यलं ॥ ७ ॥ एतद्भित्ति तटालयेपु रुचिरो त्कीर्णैः

सुरीणां गणैः क्रीडो पागत पौरयौवत युतोपांते रवंते रपि ॥ तत्तादृक्प्रतिबिंबितै रुपल-सन्नागांगना संगिभि र्मन्ये कुंड मिदं रमा विरचितं लोकत्रया दद्भुतं ॥ ८ ॥ यद्वारुण प्रतिष्ठा समये समुपेत विबुध वृंदेभ्यः ॥ कनकदुकूल वितरणं विदधाति रमेति लोलुपंति सुराः ॥ ९ ॥ यावच्छेष शिरःसु शेखर पदं भूर्भूतधान्यामयं मेरु र्मेरु गिरे रुपर्युपरितो ब्रह्मादि लोकत्रयं ॥ धत्ते यावदमुत्र वा दिनमणि र्माणिक्य नैराजनं तावच्चारुतरं रमा विरचितं कुंडं चिरं नंदतु ॥ १० ॥

श्रीरमावर्णनं

उन्मीलद्गुणरत्नरोहण मही प्रौढप्रभालंकृता सौंदर्यामृत वाहिनी मधुसुह त्साम्राज्य सर्व स्वभूः ॥ सौराष्ट्रेश्वरयादवान्वयमणेः श्री मंडलीकप्रभो राज्ञी चारु रमावती वित-नुते संगीत मानन्द दं ॥ १ ॥ कुंभब्रह्म सुमीरित क्रममगा दुच्छिन्नतां यल्क्षितौ तत्प्रो-द्धृत्य गिरीश भक्ति परमा रम्या रमा भारती ॥ संगीतं भरतादिनोक्त विधिना ब्रह्मैक तानोपमा मंदानंद विधायकं विलसति प्रोल्लासयंती परम् ॥ २ ॥ नादा नंद मयी वरो-न्नतकरा लीलो ल्लसद्वल्लकी रागा रक्त गिरीश्वर स्मरकला शर्मोर्मिरम्यो ज्वला ॥ लीलां दोलित राजहंस गमना सद्योगि भर्तृ स्तुता पद्मा मोदित मानसा विजयते वागीश्वरी श्रीरमा ॥ ३ ॥ संजाता जलधेर्विवेक विधुरा धीरे प्वबद्धादरा चापल्या ऽभिरता प्रमोद मयते या पंकजातास्थितौ ॥ विद्वत् कुंभ नृपोद्भवा गुण गणा पूर्णा प्रवीणा स्पदी स्थैर्य प्रीति मतीति तां विजयते श्रेयो चित श्रीरमा ॥ ४ ॥ राज द्रैवत भूधरांतररतं श्रीकां-त माराधयत् कांतानंदित मानसा यदनिशं राजद्रमा वल्यतः ॥ मेरौ कुंभकृते महीप तनया श्रीमंडलीक प्रिया श्रीदामोदर मंदिरं व्यरचयत् कैलास शैलोज्वलं ॥ ५ ॥ श्रीर-स्तु सूत्रधार रामा ॥

अथ श्रीमहाराज श्रीमंडलीक प्रबन्धः

इंदोरनिंदितकुलं बहुबाहुजातवंशेषु यस्य वसते रतुलं वभूव ॥ श्रीमंडलेंद्र गिरि रैवतकाधिवासो दामोदरो भवतु वः सुचिरं विभूत्यै ॥ १ ॥ श्रीमंडलीक दर्शनपरितुष्ट मना महेश्वरः सुकविः। श्रीमेदपाटवसतिर्गुणनिधिमेनं यथामति स्तौति ॥ २ ॥ आश्लिष्टः सुरविटपी संप्रति चिंतामणि र्मयाकलितः ॥ लब्धः सुवर्णशिखरी मिलिते त्वयि मंडलाधीश ॥ ३ ॥ सुरविटपि विटपविशालभुजदलकलित विपुल महत्फलं ॥ कविचित्त चिंतामणि-महागुण जाल जन्म महीतलं ॥ अनवरत सुर सरिदमलतम जल लुलित सुर शिखरि प्रभं कलयामि मंडल राज महमिह तोष मेमि हिम प्रभम् ॥ ४ ॥ परि कलित :पुरुहूतो धन नाथो नयन गोचरो रचितः ॥ साक्षात् कृतो रतीश स्त्वयि मिलिते मंडलाधीश

॥ ५ ॥ पुरुहूत मिव गुरु मंत्र यंत्रित मतुल मंगल मंडितम् ॥ धननाथ मिव धन दान तोपित चंद्र मौलि मखंडितं ॥ रति रमण मिव वर युवति कृतनुति महत् विपम शर युतं परिचिंत्य मंडल राज मह मिह मोद मगम मनुव्रतम् ॥ ६ ॥ अंकुरिता शर्मलता कोरकिता चित्त चंपक व्रतती: ॥ उल्लसिता तनु नलिनी त्वयि मिलिते मंडलाधीश ७ ॥ कलधौत वितरण तरल करजल जनित शर्म सदंकुरम् जन चित्त चंपक कुसुम संभव मधुर तर मधु बंधुरम्॥गगनैक मणि विस्फुरण पुलकित विपुल तनु नलिनी दलम् अनु-भूय मण्डल राज मिद मपि भवति हृदय मनाकुलम्॥ ८ ॥ कर्पूरं नयन युगे वपुषि सुधा रश्मि परिषेक : ॥ हृदये परमानंद स्त्वयि मिलिते मंडलाधीश ॥ ९ ॥ घन सार सारसमागमे द्रवलोचने हिमनिर्भरे सकलं प्लुतं वपु रद्य हिमहिम धाम धामनि निर्भरे ॥ मम मनसि परमानंद संपदुदारतरमभि वर्द्धते नरनाथ भवति विलोकिते सति मंडलेश शुचिस्मिते ॥ १० ॥ सुर तरु रद्य नरेश गेहदशं मम कलयति ॥ सुरगिरि रिति यदुराज राजमान समुज्वलयति ॥ सुरपति रयमिति मति रुदेति ॥संप्रति नर नायकरति पतिरिति नयना नुरक्ति रुदयति दृढसायक ॥ अनुपमतममहिम महीप सुतमं-डल सकलकलाकुशल सद्दष्टमति भवत्यवधि नवनिधि सांनिधि रधिक बला ॥ ११ ॥ श्री मेदपाटेवरेदेशे कुंभकर्णनृपग्रहे ॥ क्षेत्राष्टसूत्रधारस्य पुत्रोमंडनआत्मवान् ॥ १२ ॥ सूत्रधारमंडनसुत ईशर ए कमठाणु विरचितं देवीदासप्रतिकारित—
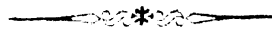
छन्दनाराच.

नृपाल विक्रमार्क सिंह पिठ चित्रकोट पै ॥
बिराज हर्ष शीत व्है कुकर्म घर्म ओट पै ॥
भटादि मान हीन धर्म छीन गुर्जरेशतें ॥
मिलेरु चित्रकोट दै संदेस छद्म वेशतें ॥ १ ॥
धनादि देरु फेर दीन्ह एक बेर ताहि को ॥
दुबार आन शाह दुर्ग छीन लीन वाहिको ॥
अनेक बीर युद्धमें समीर बेग आय कें ॥
निघात शस्त्र घात पात स्वर्ग द्वार पायकें ॥ २ ॥
दिलीप क्रोध गुर्जरेश दुर्ग ते पलायगो ॥
अनीत मग्ग फेर लीन विक्रमार्क आयगो ॥
कुमार पथ्थ पुत्त ताहि मार दुर्ग ईश भौ ॥
तदीश भ्रात गुप्त रीत कुम्भ मेरु शीस भौ ॥ ३ ॥
मुहम्मदीय गुर्जरेश वंशकी प्रणालिका ॥
तिमध्य चाहुवान वंश खिच्चि युग्म जालिका ॥
उदेपुराधि बारिया तटस्थ राज्य नर्मदा ॥
बयान बादशाह जे बरार हिंद धर्मदा ॥ ४ ॥
नृपाल सज्जनेन्द्रके विचार सिद्ध कैनको ॥
फते नृपाल के कृपाल हुक्म चित्र कैनको ॥
बिनोद बीर के दुतीय खंड सार भूत है ॥
बयान श्यामदास के विचारवान दूत है ॥ ५ ॥

वीरविनोद् विधायक सज्जन सुधियां धियो ऽभ्युदयकर्ता ॥
श्रीमान् फतहनरेंद्रो वीरविनोदेन नंदयेत्सुजनान् ॥

महाराणा विक्रमादित्य—द्वितीय प्रकरण
समाप्त.

श्रीनृसिंहजयंती— मित्रवासर— संवत् १९४३ वैशाख शुक्ल—

महाराणा उदयसिंह—तृतीय प्रकरण.

महाराणा उदयसिंहके गादी विराजनेका संवत्, विक्रमी १५९२ [हि० ९४२ = ई० १५३५] मानाजाता है, लेकिन हम इसको गादी बैठनेका समय नहीं कह सकते; क्योंकि उस वक्त बनवीर, महाराणा विक्रमादित्यको, व उदयसिंहके धोखेमें धायके बेटे को मारकर (१) राज्यका मालिक बनबैठाथा. कदाचित्, कुम्भलमेरमें बहुतसे सर्दारोंके एकट्ठा होनेपर विक्रमी १५९४ [हि० ९४४ = ई० १५३७] में जो एक जल्सा हुआ, वह दिन गादीनशीनी का समझा जाय तौभी ठीक है, नहीं तो इन महाराणाके गादी विराजनेका दिन वही जानना चाहिये, जिस रोज़ बनवीरको निकालकर वे चित्तौड़ के मालिक हुए.

उदयसिंहको उनकी धाय पन्नाने, जो खीची जातिकी राजपूतानी थी, टोकरेमें बिठाकर ऊपरसे पत्ते पत्तल ढकदिये, और एक बारिनके सिरपर रखकर अपने व उसके पतिको साथ ले देवलियाकी (२) ओर रवाने हुई; रास्तेमें बड़े बड़े दुःख उठाते हुये वे सब रावत रायसिंहके पास पहुंचे.

---

(१) अमरकाव्यमें विक्रमादित्यका माराजाना और बनवीरका गादीपर बैठना विक्रमी १५९३ में लिखाहै और उक्त संवत् की एक प्रशस्ति चित्तौड़के रामपोल दरवाज़े पर है उसमें बनवीरको महाराणा लिखाहै- (शेषसंग्रह नम्बर १ देखो).

(२) इसके एवज़ अब प्रतापगढ़ राजधानी है.

उसने इनकी बड़ी ख़ातिर की और घोड़ा वग़ैरह सवारी देकर, बनवीर के डरसे बिदा करदिया, क्योंकि उसका क्रोध वह नहीं सह सकता था. उदयसिंह वहांसे रवाना होकर अपने साथियों समेत डूंगरपुर पहुंचे, परंतु रावल आशकरणने भी बनवीरके भयसे इनको न रक्खा; केवल ख़र्च व सवारी वग़ैरह देकर रुख़सत करदिया; तब वहांसे चलकर कुंभलमेरमें आशा देपुराके (१) पास आये.

धायके पतिने आशाके सामने महाराणा विक्रमादित्यके मारेजाने और महाराणा उदयसिंहके आनेका सारा हाल कहा. यह सुनकर आशाको बड़ा रंज और फ़िक्र (२) हुआ, और उसने महाराणाको धाय समेत अपनी माके पास लेजाकर उनकी तकलीफ़ोंका हाल सुनाया; उसकी माने कहा कि "बेटा यह अवसर चूकनेका नहीं है, क्योंकि महाराणा सांगाने तुमको बहुत कुछ देकर बड़ा (इज़्ज़तदार) आदमी बनाया; अब तुम भी उनके बेटोंका हक़ दिलानेमें जहांतक होसके कोशिश करो." इन बातोंसे आशाका दिल बहुत मज़्बूत हुआ, और उसने महाराणाको अपना भानजा ज़ाहिर करके अपने पास रखलिया; परन्तु यह बात कब छिप सकती थी, थोड़े ही दिनों में सब जगह फैलगई.

बनवीर जो चित्तोड़में बेखटके राज्य करता था, अब अपनेको असल (कुलीन) बनानेकी भी कोशिश करने लगा. जिन लोगोंने उसके साथ किसी तरहका परहेज़ रक्खा उन पर उसने सख़्ती करनी शुरू की– इससे सब सर्दार व राजपूतोंके दिल बहुत बिगड़ने लगे, और जब कि उदयसिंहकी मौजूदगीकी पक्की ख़बर मिलगईथी, तो ऐसी हालतमें वे लोग उस ग़ैर हक़दार व अकुलीन की हुकूमत कब पसन्द करते.

एकदिन भोजन करते समय बनवीरने रावत ख़ान (३) पूर्विया चहुवाणको अपने थालमेंसे कुछ झूठी खानेकी चीज़ देकर कहा कि "इसका स्वाद अच्छा है सो थोड़ासा तुम भी चक्खो"- रावत ख़ानने अपनी पत्तलपर उस पदार्थके पड़ते ही खानेसे हाथ खींचलिया; तब बनवीरने पूछा कि भोजन क्यों नहीं करते ? ख़ानने जवाब दिया कि मैं खाचुका. बनवीर बोला कि यह तुम्हारा बहाना है- क्या तुम मुझे कम

---

(१) आशा देपुरा महेशरी जातिका महाजन, महाराणा सांगाके वक्तसे कुंभलमेरका क़िलेदार था.

(२) महाराणा सांगाके बेटोंकी ऐसी हालत देखने व सुननेसे रंज और अपने पास रखनेमें बनवीरके भयसे फ़िक्र.

(३) ऐसा मालूम होता है कि यह नाम किसी फ़क़ीरकी दुआसे पैदाहोनेके कारण पड़ाहोगा.

असल जानकर घिन्न करतेहो ! रावतने भी कहदिया कि "हां, अबतक तो हमने नहीं कहाथा, परंतु आप खुद ही जो कहते हैं– वह सचहै"– ऐसे सवाल जवाब होने पर रावत खान उठखड़े हुए, और अपने डेरे आकर कुंभलमेरकी तरफ़ चलदिये. वहां पहुंचकर महाराणा उदयसिंहको नज़र दिखलाई, और कोठारयेसे साईंदास, कैल-वेसे जग्गा, बागोरसे रावत सांगा वग़ैरह को भी रुके लिखकर बुलालिया. इन लोगोंने महाराणाको नज़रेंदीं और विक्रमी १५९४ [हि० ९४४ = ई० १५३७] में रीतिके अनुसार गादी उत्सव हुआ.

फिर सर्दारोंने मारवाड़से पालीके सोनगरा अखेराजको बुलाकर उसकी लड़कीका विवाह महाराणासे करदेनेके लिये कहा; उसने जवाब दिया कि " इस संबंधके करनेमें हमारी सबतरह उन्नति ही है, परन्तु बनवीरने अपने हाथसे असली उदयसिंहका मारडालना और इनका कर्तबी होना प्रसिद्ध कर रक्खाहै, सो यदि आप सब सर्दार लोग इनका झूठा खालें तो मैं अपनी बेटी ब्याहदूं." सर्दारोंने अखेराजका संदेह दूर करनेके लिये महाराणा उदयसिंहकी पंक्तिमें बैठकर भोजन किया–उस समय महाराणा अपने थालमेंसे झूठे पदार्थ सबको देतेगये, और सबने खुशीके साथ अदबसे लेकर खाया (१); तब अखेराजने अपनी बेटीका संबंध करना स्वीकार किया. सब सर्दा-रोंने जो वहां मौजूद थे बड़ी धूमधामके साथ महाराणाकी शादी की, और चित्तौड़ पर चढ़ाई करनेके लिये परवाने भेजकर बाक़ी सर्दारोंको भी बुलाया.

परवानोंके अनुसार ईडरके राव भारमल्ल, बूंदीके अधिपति हाड़ा सुल्तान, डूंगरपुरके रावल आशकरण, बांसवाड़ेके रावल जगमाल, प्रतापगढ़के राव रायसिंह, शिरोहीके राव रायसिंह, चूंडावत रावत सांईदास, चूंडावत रावत सांगा, चूंडावत रावत जग्गा, डोडिया ठाकुर सांडा, पंवार राव अखेराज इत्यादि बहुतसे सर्दार तो आकर हाज़िर हुए; परन्तु कितने ही खुदमतलबी लोग, जैसे सोलंखी रामा व सोलंखी मल्ला (२) वग़ैरह बनवीरके खैरख्वाह बने रहे. बनवीरने यह समाचार सुनकर अपनी फ़ौजकी दुरुस्ती, और लड़ाईके सामानकी तजवीज़ की.

उसी सम्वत्में महाराणा उदयसिंहने चित्तौड़ पर चढ़ाई की. इस समय उनके पास ऊपर लिखे हुये सर्दारोंके सिवाय, जोधपुरके राव मालदेवकी तरफ़से बहुतसे लोगों समेत राठोड़ कूंपा व राठोड़ जैता इत्यादि, और पालीके

---

(१) इसी दिनसे यह रिवाज, महाराणाके सामने खानेके समय अबतक प्रचलित है.

(२) सोलंखी रामाकी जागीरमें माहोली और सोलंखी मल्लाकी जागीरमें ताणा था.

सोनगरा अखेराज वग़ैरहके साथ भी भारी जमैयत थी- इस तरह बहुतसी फ़ौज एकट्ठी होगई. महाराणाके कुम्भलमेरसे रवाना होनेकी ख़बर बनवीरको चित्तौड़में मिलते ही उसने कुंवरसी तंवरको फ़ौज देकर मुक़ाबलेके लिये भेजा. माहोलीके पास मुक़ाबला हुआ-- महाराणाकी फ़तह हुई और कुंवरसी तंवर बहुतसे आदमियोंके साथ मारागया.

यहांसे रवाना होकर महाराणाने ताणेको, जहांका मालिक मल्ला सोलंखी था, एक महीने तक घेर रक्खा, लेकिन फ़तह नहीं करसके. मल्ला सोलंखी, जिसको महादेवका इष्ट था, एक दिन एक पहाड़ीकी खोहमें पूजन करते समय पता लगने पर मेदा सांखलाके हाथसे मारागया. इसके मरते ही ताणा जीतकर महाराणा चालीस हज़ार सवार व फ़ौज समेत चित्तौड़ पहुंचे, और क़िलेको घेरा; परन्तु साथ तोपख़ाना न होनेके कारण क़िलेका टूटना बहुत कठिन मालूम होताथा, इसलिये आशा देपुराने बनवीर के प्रधान चील महतासे मिलावट करली और उसको ख़ानगी तौर पर कहलाया कि "तुम भी महाराणा सांगाके नौकर हो, यह समय ख़ैरख़्वाही ज़ाहिर करनेका है"- क़िलेके भी बहुतसे आदमी महाराणा उदयसिंहको चाहतेथे. चील महताने आशाके कहलाने पर उससे गुप्त मिलावट कर बनवीरसे कहा कि क़िलेमें अन्न वग़ैरह सामान कम है सो रातके वक़् दरवाज़े खोलकर मंगाया जाय तो बहुत अच्छा है- बनवीरने यह बात उचित जान मंज़ूर की. चील महताने अपनी कार्रवाईका पूरा हाल आशाको कहला भेजा, और क़रीब डेढ़ पहर रातगये दरवाज़े खोलदिये; हज़ार पांच सौ भैंसे व बैलों पर कुछ सामान लदवाकर उनके साथ ही महाराणाके राजपूत क़िलेमें जा घुसे और दरवाज़ों पर अपना क़ब्ज़ा कर हल्ला करदिया. उस वक़् बनवीर (१) से अपने लड़केबालों समेत लाखोटा बारीके रास्ते भागजानेके सिवाय और कुछ न बनपड़ा. बहुतसे राजपूत दोनों तरफ़के मारेगये और महाराणा की फ़तह हुई (२).

फिर महाराणा उदयसिंह चित्तौड़का पूरा २ बंदोबस्त करके कुम्भलमेरको पधारे, और मेवाड़ देशमें उनका अधिकार हुआ.

---

(१) बनवीरको क़िलेके तथा राज्यके लोगोंका विश्वास नहीं था इस लिये उसने अपने राज्यके समय चित्तौड़ गढ़में राज महलोंके उत्तर तरफ़ एक छोटासा मज़बूत क़िला इस मतलबसे बनवाना शुरू कियाथा कि यदि क़िलेके लोग बदल जावें तो इसमें रहकर बचाव किया जाय; उसकी दक्षिणी दीवार तैयार भी होचुकी थी, जो अबतक मौजूद और 'नौ कोठा' के नामसे मशहूर है.

(२) अमरकाव्य और टॉड राजस्थानमें इस फ़तहका संवत् १५९७ [हि० ९४७ = ई० १५४०] लिखा है.

इन्हीं दिनोंमें शिरोहीके राव रायसिंहके मारेजाने बाद उनके बेटे उदयसिंहकी, देवड़ा दूदा के लड़के मानसिंहके साथ तकरार हुई—

राव रायसिंहने भीनमालकी लड़ाईमें मारेजानेके वक्त कहदिया था कि राज्यका मालिक मेरा छोटा बेटा उदयसिंह है, उसका पालन पोषण (परवरिश) दूदा करे. रायसिंहके कहने मुवाफ़िक़ दूदाने उदयसिंहको राज्यका मालिक बनाया, और आप रियासतका कारबार सम्हालने लगा. दूदाके मरने बाद उदयसिंहने एक वर्ष तक तो उसके बेटे मानसिंहकी जागीरमें लोहियाणा गांव, जो दूदाने अपने मरते समय अर्ज़ करके दिलायाथा, बहाल रक्खा; फिर कहा कि "मानसिंहने एक दफ़े मुझपर तुक्का (१) चलायाथा इसलिये मैं भी उसको लोहियाणेसे निकाल दूंगा." सब राजपूतोंने अर्ज़ किया कि दूदाने आपके साथ बड़ा सुलूक किया है और मानसिंह भी फ़र्मांबर्दारहै, इसलिये आपको ऐसा न बिचारना चाहिये; लेकिन राव उदयसिंहने किसीकी बात न मानी, और फ़ौज भेजकर मानसिंहको निकाल लोहियाणा ख़ाली करालिया.

मानसिंह, महाराणा उदयसिंहके पास आया तो महाराणाने बरकाण बीजेवास का पट्टा अठारह गांवोंके साथ देकर उसे अपने पास रखलिया. कुछ दिनों बाद राव उदयसिंह शीतला निकलनेसे मरा और रियासतका हक़दार मानसिंह हुआ. तब शिरोहीके राजपूत सर्दारोंने सोचा कि इस समय मानसिंह, महाराणा उदयसिंहके पास है; अगर राव उदयसिंहके मरनेकी ख़बर वहां पहुंचे तो शायद मानसिंहको मारकर महाराणा शिरोही पर क़ब्ज़ा करलेवेंगे; इस धोखेसे दो पहर तक उदयसिंहकी लाशको छिपा रक्खा, और पायगा (अश्वशाला) के दारोग़ा जयमल्लको सब बातें समझा कर कुम्भलमेर भेजा. जयमल्लने मानसिंहके पास पहुंचकर सारा हाल कह सुनाया; तब मानसिंह, चीबा सामन्तसिंहसे सब हाल कहकर पचास सवारोंके साथ शिरोही को रवाना हुआ और सामन्तसिंहको यह भी कह गया कि यदि महाराणा याद फ़रमावें तो शिकारके लिये चलेजानेका बहाना करदेना.

महाराणाने मानसिंहको याद किया तो मालूम हुआ कि शिकारको गया है; फिर शामको बुलाया तो किसीने कहा कि मुझको यहांसे दश कोश पर शिरोहीकी तरफ़ बड़ी तेज़ीके साथ जाता हुआ मिला था. उसी समय एक और आदमीने अर्ज़ किया कि "शिरोहीका राव उदयसिंह शीतलाकी बीमारीसे मरनेके क़रीब है; यह ख़बर मुझको चिट्ठीसे मिलीहै." इस पर

---

(१) तुक्का—एक छोटा तीर सात आठ अंगुल लम्बा होता है, जो होलीके दिनोंमें बांसकी नलीमें रखकर फूंकसे चलाया जाताहै; इससे कुछ ज़्यादा ज़रूम नहीं होसकता.

महाराणाने फ़रमाया कि मानसिंहके डेरेसे किसी मौतबर आदमीको बुलाकर दर्यांफ्त करना चाहिये. इस हुक्मके मुवाफ़िक़ देवड़ा जगमाल बुलाया गया और शिरोहीका हाल दर्यांफ्त करने बाद महाराणाने उससे कहा कि "मानसिंह भागकर क्यों गया, हम उसका क्या बिगाड़ते थे ?" जगमालने अर्ज़ किया कि "पृथ्वीनाथ ! यह बात तो मानसिंह जाने." तब महाराणाने फ़रमाया कि "हम शिरोहीके चार परगने ख़ालसे करना चाहते हैं, तुम मंज़ूरी लिख दो". इस बातको सुनकर जगमालने सोचा कि शायद मेरे इनकार करने पर महाराणा फ़ौज रवाना करें, और मानसिंह कहीं रास्तेमें ठहरा हो तो माराजाय. इस लिये अर्ज़ किया कि शिरोहीका सब राज्य ही आपका है और मानसिंह हुज़ूरका सेवक है, जो हुक्म देंगे वही करेगा". उस वक़ रात ज़्यादा बीतजानेसे यह बात मुल्तवी रही.

फिर प्रातःकाल होतेही जगमाल बुलाया गया, तब उसने अर्ज़ किया कि "परगने देना मेरे इख़्तियारमें नहींहै. हुज़ूर किसी आदमी को शिरोही भेजें, वहां राव मानसिंह और सब देवड़े राजपूत मौजूद हैं सो विचार कर अर्ज़ करावेंगे; यहां मैं अकेला मन्ज़ूरी नहीं लिखसक्ता; अगर हुज़ूर मुझपर ज़बरदस्ती करेंगे तो मैं राजपूत हूं, नाहक़ माराजाऊंगा." तब महाराणाने फ़रमाया कि "हम तुम्हारे साथ फ़ौज भेजते हैं अगर मानसिंह मन्ज़ूर नहीं करेगा तो जबरन् परगनों पर क़ब्ज़ा करलिया जावेगा." इसपर जगमालने दुबारा अर्ज़ कराई कि "हुज़ूर इतना श्रम न करें एक दफ़े मेरे साथ पुरोहितको भेजदें, मानसिंह हुज़ूरसे कुछ दूर नहीं है. यदि वह हुक्म न माने तो हुज़ूरकी जो मरज़ी हो सो करें." उसकी अर्ज़ मन्ज़ूर हुई और पुरोहितको लेकर जगमाल कुम्भलमेरसे शिरोही पहुंचा. राव मानसिंहने पुरोहितका बहुत आदर सत्कार किया और रुख़सतके वक़ महाराणा की नज़रके लिये हाथी घोड़े साथ देकर एक अर्ज़ी लिखी कि "हुज़ूर केवल परगनोंके लिये ही फ़रमाते हैं, मैं तो शिरोहीके राज व कुल्ल राजपूतों समेत हाज़िर हूं." पुरोहितकी ज़बानी सब वृत्तान्त मालूम होनेपर महाराणा उदयसिंह, मानसिंहकी विनय व लाचारीसे बहुत प्रसन्न (१)हुए.

इन्हीं दिनों में महाराणाने सांखला (२) मेदाको चौरासी गांवों समेत ताणेका पट्टा दिया, जो पहिले मल्ला सोलंखी की जागीरमें था.

---

(१) यह प्रसन्नता ऊपरी दिलसे थी, क्योंकि दिलसे तो देवड़ोंको बरबाद कर शिरोहीका राज्य अपने क़ब्ज़े में लेने चाहतेथे.

(२) रूणके सांखलों में से राजपालकी बेटी सौभाग्य देवी महाराणा मोकलको व्याही थी, उस प्रसंगसे सांखला मेदा महाराणाके पास रहता था.

महाराणा उदयसिंह व जोधपुर के राव मालदेव के आपसमें बिगाड़ होनेका हाल इसतरह पर है :—

हलवदके झाला अज्जा व सज्जा जो गुजरात देशसे मेवाड़में आये उनमेंसे एक तो बाबर और दूसरा बहादुरशाह की लड़ाई में मारागया, जिसका हाल हम पहिले लिखचुके हैं. राज सज्जाका पुत्र जैतसिंह किसी कारणसे जोधपुर चलागया, तब उसको राव मालदेवने खैरवाका पट्टा जागीर में दियाथा.

जब राव मालदेव अपनी राणी झाली स्वरूपदेवी समेत, जो जैतसिंहकी बेटी थी, अपनी ससुराल खैरवामें आये, उस वक्त उन्होंने स्वरूपदेवी की छोटी बहनको अधिक सुन्दर देखकर जैतसिंहको कहलाया कि " इसकी भी शादी हमारे साथ करदो." जैतसिंहने जवाब दिया कि "मैं अपनी बेटी पर दूसरी बेटीको सौत नहीं बनासक्ता." इसपर राव मालदेवने पहिले तो नर्मीसे कहलाया परन्तु उसके न मानने पर ज़ोर दिखलाया; तब स्वरूपदेवीने अपने पितासे कहा कि "आपको इस वक्त हठ करना उचित नहीं है, क्योंकि रावजी ज़बरदस्त हैं सो ज़ोरावरीसे शादी कर आपको बरबाद करदेंगे. इस लिये इस वक्त थोड़े दिन पीछे शादीका इक़रार करलेना चाहिये, फिर जैसा चाहें वैसा करें." यह बात जैतसिंहको भी पसन्द आई, और उसने राव मालदेवसे जाकर अर्ज़ किया कि "एक तो अभी लग्न नहीं है, दूसरे हमारे पास ख़र्च नहीं कि जिससे विवाहकी तैयारी कीजावे." इस पर मालदेवने उसी वक्त पंद्रह हज़ार रुपये ख़र्चके वास्ते देकर उससे विवाहका पक्का इक़रार करालिया.

राव मालदेव तो अपनी राणी स्वरूपदेवीको उसी जगह छोड़ जोधपुर की तरफ़ रवाना हुए, और जैतसिंहने महाराणा उदयसिंहके नाम इस मज़्मूनकी एक अर्ज़ी भेजी कि " मैंने अपनी छोटी बेटी का विवाह आपके साथ करना विचारा है, सो वह मेरी ओरसे आपकी राणी होचुकी ". महाराणाने भी इस बातको स्वीकार करलिया; तब जैतसिंह अपनी बड़ी बेटी स्वरूपदेवी को खैरवामें ही छोड़कर छोटी बेटी व घरवालों सहित कुम्भलगढ़की तरफ़ पहाड़ोंके पास गुढ़े (१) में चलाआया. खैरवासे इनके रवाना होते वक्त स्वरूपदेवीने अपनी छोटी बहनको दहेज़के तौर पर ज़ेवर देनाचाहा सो ज़ेवरके डिब्बेके बदले राठौड़ोंकी कुलदेवी 'नागणेची' का डिब्बा देदिया.

इधर महाराणा उदयसिंह कुम्भलमेरसे रवाना होकर गुढ़े पहुंचे और शादी करके राज जैतसिंहको भी कुम्भलमेर लेआये. जब वह डिब्बा जो ज़ेवरका समझकर स्वरूपदेवीने अपनी बहनको दिया था खोला गया, तो उसमें एक देवीकी मूर्ति

(१) इस देशमें 'गुढ़ा' छोटे गांवको कहते हैं.

निकली जिसको महाराणाने बड़ी ख़ुशीके साथ अपने पूजन (१) में रक्खा.

राव मालदेवसे महाराणा उदयसिंहकी कुछ तो पहिलेसे ही खटपट थी अब और भी बढ़ी (२). रावको खिजानेके लिये महाराणाने कुम्भलमेर क़िलेकी चोटीपर एक महल बनवाया जिसका नाम 'झालीका मालिया' रक्खा; और उसके ऊपर रखनेके लिये एक चिराग़ भी ऐसा तैयार कराया कि जो दो मन बिनौले और तेलसे जलाया जाता था— इन बातोंसे राव मालदेव बड़े शरमिन्दा और नाराज़ होकर बहुतसी फ़ौजके साथ कुम्भलमेर पर चढ़ आये. महाराणाने भी अपनी फ़ौज मुक़ाबलेके लिये भेजी; लड़ाई में दोनों तरफ़के बहुतसे राजपूतोंके मारे जाने बाद राव मालदेव भागनिकले.

वि० १६१० [हि० ९६० = ई० १५५३] में महाराणा उदयसिंहने भामाशाहके बाप भारमल्ल कावड़्याको अलवरसे बुलाकर एक लाखका पट्टा बख़्शा था.

---

(१) उस दिनसे अबतक 'नागणेची' देवीका पूजन उदयपुरमें होता है; और सालमें दो बार (माघ शुक्ल ७ व भाद्रपद शुक्ल ७ को) मेवाड़के महाराणा बड़े उत्सवके साथ दर्बार (दरीख़ाना) भी करते हैं.

(२) कहतेहैं कि राव मालदेवकी 'व्याही हुई' राणीको महाराणा 'कुम्भा' ले आये थे; और कर्नेल्टॉडके लेखसे मारवाड़के राजाकी 'सगाई की हुई' राणीको लाना पायाजाता है—ऐसी प्रसिद्ध बातके लिखनेमें, जो इस देशके हरएक छोटे बड़े आदमीकी ज़बानी मालूम होसक्ती है, हमको बड़ा सोचविचार हुआ; परंतु न लिखनेमें तवारीख़की ख़ामी समझकर लिखना ही पड़ा. विचारना चाहिये कि :—

प्रथम, महाराणा कुम्भा विक्रमी १४९० में गादी विराजकर विक्रमी १५२५ में वैकुंठवासी हुए; और मालदेवका जन्म विक्रमी १५६८ पौष कृष्ण १ के दिन, गद्दीनशीनी विक्रमी १५८८ श्रावण शुक्ल १५, और देवलोक विक्रमी १६१९ कार्तिक शुक्ल १२ को हुआ.

दूसरे, सादड़ीके राज रायसिंह व देलवाड़ाके राज फ़तहसिंहने जो अपनी तवारीख़ यहां भेजी, उसमें विक्रमी १५६२ में महाराणा रायमल्लके समय राज अज्जा व सज्जाका गुजरात छोड़ कर मेवाड़में आना लिखा है.

तीसरे, नैनसी महताने उनका आना महाराणा सांगाके वक्तमें लिखाहै- जिन्होंने विक्रमी १५६५ से विक्रमी १५८४ तक राजकिया.

जिस हालतमें कि राव मालदेवका जन्म महाराणा कुम्भाके देहान्तसे ४३ वर्ष पीछे हुआ और राज अज्जा व सज्जा क्रमसे बाबर व बहादुरशाह गुजरातीकी लड़ाइयोंमें मारे गये, तो इस सूरतमें महाराणा कुम्भाका मालदेवकी राणीको लाना जो प्रसिद्धहै किसी तरह ठीक नहीं हो सक्ता- शायद कुम्भलमेरके क़िलेपर, जो महाराणा कुम्भाके वक्तका बनाहुआ है 'झाली राणीका मालिया' (महल) होनेसे लोगोंने ऐसा मशहूर करदिया होगा- हमने जोधपुरकी तवारीख़, व महाराणा उदयसिंहके पौत्र महाराणा अमरसिंहके नामपर बनेहुये 'अमरकाव्य' नामी संस्कृत ग्रन्थ इत्यादिके लेखकी सबूतियोंसे यह निश्चयकर लिखा है.

बूंदीके राज्यसे हाड़ा सुल्तानके ख़ारिज होने पर उसकी जगह सुर्जणके मुक़र्रिर होनेका हाल इस तरह है :—

हाड़ा सूर्यमल्ल और महाराणा रत्नसिंह आपसमें लड़कर एकदूसरेके हाथसे मारे गये, और चित्तौड़ पर महाराणा विक्रमादित्य गद्दी बैठे, तब उन्होंने सूर्यमल्लके पुत्र सुल्तानको जिसकी अवस्था ८ वर्षकी थी, बूंदीकी गादीपर क़ायम किया (पृष्ठ-२६). परन्तु उसने जवान होने पर यहांतक जुल्म किया कि बूंदीके बड़े सर्दार हाड़ा सहसमल्ल और सांतलकी आंखें (१) निकलवाडालीं. इन बातोंसे सब सर्दार व राजपूत नाराज़ होकर अपनी अपनी जागीरोंपर चले गये, सिर्फ़ हाड़ा सामंत रहगयाथा; उसको भी मारना चाहा, तब वह अपनी जागीर बांसी गांवमें आकर वहांसे दिल्लीके बादशाहके पास चला गया, जिसके बाबत बूंदीकी तवारीख़में लिखाहै कि बादशाह सूरने उसको रणथंभोरकी क़िलेदारी (२) दी थी. बाज़ किताबोंके देखनेसे ऐसा मालूम होता है कि एक दफ़े शेरशाह सूरने रणथंभोर पर चढ़ाई की तब भामाशाहके बाप भारमल्लने कुछ पेशकश (नज़राना) देकर चढ़ाई मौकूफ़ रक्खी.

सुल्तानकी बदचलनीसे महाराणा उदयसिंहने नाराज़ होकर सुर्जणको (३) हुक्म दिया कि "हम सुल्तानको गादीसे ख़ारिज करते हैं तुम उससे बूंदीका मुल्क छीनलो," यह कहकर अपने हाथसे उसको राज तिलक दिया और फ़ौज देकर बूंदीकी तरफ़ रवाना किया. वहांकी कुल्ल रैयत, जो राव सुल्तानके ज़ुल्मसे घबरा रही थी, सुर्जणकी तरफ़ होगई- सुल्तान भागकर पाटन होताहुआ रायमल्ल खीचीके पास पहुंचा, जो महाराणा उदयसिंहका एक बड़ा सर्दार था. उसने सुल्तानको गुज़रके लिये बड़ोदका इलाक़ा दिया था- जिसके वंशवाले सुल्तानोत हाड़ा कहलाते हैं.

---

(१) बीकानेरके नैनसी महताने आंखें निकलवाना लिखा है, और बूंदीकी तवारीख़ वंशप्रकाश में मुसल्मानोंसे लड़कर उनका माराजाना दर्ज है.

(२) इस वक्त ऐसा हुआ होगा कि क़िलेदारी जो महाराणाकी तरफ़से, हमेशासे बूंदीके हाड़ोंकी सपुर्दगीमें रही, उसी तरह उस वक्त भी हाड़ा सुल्तानके नाम रही हो और बाक़ी क़िलेका इख्तियार शाह भारमल्लको महाराणाने देरक्खा हो; परन्तु बादशाह सलीम सूरने सामंतको मदद देकर रणथंभोरका क़िलेदार बनादिया होगा. क्योंकि उसवक्त चित्तौड़की ताक़त तो बहादुरशाहकी चढ़ाई व बनवीरके झगड़ोंसे बिल्कुल नष्ट हो रही थी-दरअस्ल इस क़िलेके मालिक हमेशासे मेवाड़के राजा ही रहे.

(३) इसने महाराणा उदयसिंहके मातहत कई लड़ाइयोंमें बड़ी बड़ी बहादुरी दिखाई, जिससे इसको जागीरमें फूलिया और बदनोरका पट्टा मिला था.

सुल्तानको भगादेने बाद सुर्जण फ़ौज लेकर क़िले रणथम्भोर पहुंचा, जहांकी क़िलेदारी भी बूंदीके राजतिलकके साथ ही महाराणाने इसको देदीथी; सामंतसिंह हाड़ाने क़िलेसे बाहर निकल कर वहांकी कुंजियां इसके सपुर्द करदी और कहा कि "मैंतो आपका सेवक हूं, और क़िलेमें भी आपकी तरफ़से ही रहताथा; मुझको किसी तरह मुसल्मानोंका तरफ़दार न समझें." तब सुर्जणने अपनी तरफ़से क़िला सामन्तसिंह की ही सपुर्दगी में रखकर कुल्ल हालकी अर्ज़ी महाराणा उदयसिंहके नाम लिखभेजी, और विक्रमी १६११ [हि० ९६१ = ई० १५५४] में बूंदी पर अपना क़ब्ज़ा करलिया.

बादशाह शेरशाह के सर्दार हाजीखां पठानके साथ जो किसी सबबसे दिल्ली से निकल कर अजमेर आया था, पांच हज़ार फ़ौज, बहुतसा ख़ज़ाना, और रंगराय नाम एक पातर थी. राव मालदेवने यह ख़बर सुनकर ख़ज़ाना लेनेकी ग़रज़से पृथ्वीराज जैतावतको फ़ौजके साथ अजमेरकी तरफ़ रवाना किया. हाजीखांने महाराणा को अर्ज़ी लिखी कि " मैं आपकी पनाह में आया हूं और राव मालदेव मुझे मारना चाहता है, सो आप मेरी मदद करें." महाराणा इस अर्ज़ीके पहुंचने पर हाजीखां की मददके लिये हाड़ा सुर्जण, राव दुर्गा और जयमल्ल मेड़तिया वग़ैरह कई सर्दारोंके साथ रवाना हुए. उनके आनेकी ख़बर सुनकर राठौड़ोंने पृथ्वीराज जैतावत को समझाया कि अब लड़ाई हाजीखांसे नहीं, महाराणासे है; यदि हम सब राजपूत मारेजावेंगे तो राव मालदेव को बड़ा ही घाटा होगा; क्योंकि अच्छे अच्छे राजपूत तो पहिली लड़ाइयों में मरचुके हैं, और रहे सहे हम लोग भी मारेजावेंगे तो उनकी ताक़त में बहुत नुक़्सान पहुंचेगा. इस तरह समझा कर वे तो लौटगये, और पृथ्वीराज शरमिन्दगीसे अपने गांव बगड़ीके बाहर ही ठहरा रहा— महाराणा उदयसिंह, हाजीखांकी तसल्ली करके पीछे चित्तौड़ पधारे.

जब राव मालदेवने झाली राणीके मामलेमें फ़ौज लेकर कुम्भलमेर पर चढ़ाई की, तब बालेचा राजपूत सूजाने (जो महाराणा उदयसिंहकी नाराज़गीसे मालदेवके पास चलागया था) मेवाड़ पर चढ़नेसे इनकार किया, और चाकरी छोड़कर मालदेव का देश लूटता हुआ महाराणाके पास आया; इन्होंने उसको पहिलेसे दूनी जागीर और नाडोल गांव दिया. राव मालदेवने सूजासे बहुत नाराज़ होकर राठौड़ नगा भारमल्लोत को ५०० अच्छे सवार व राजपूत संग देकर नाडोल भेजा. उन लोगोंने वहां के चौपाये घेरलिये तब सूजाने भी सामना किया— उस लड़ाईमें राठौड़ बाला, धन्ना, व बीजा भारमल्लोत काम आये और सूजाने अपने चौपाये छुड़ालिये. फिर राव माल-

देवने मेड़ते पर चढ़ाई करके उनसे अच्छी लड़ाई की- पृथ्वीराज जैतावत मारा गया.

महाराणा उदयसिंहने हाजीखां पठानके पास तेजसिंह डूंगरसिंहोत और बालेचा सूजाको भेजकर कहलाया कि "तुमको हमने मालदेवसे बचाया है सो चालीस मन सोना और कुछ हाथी, तथा रंगराय पातर जो तुम्हारे पास है हमको दो". तब इन दोनों सर्दारोंने अर्ज़ की कि "पृथ्वीनाथ! हाजीखांको हुज़ूरने तकलीफ़के वक्त पनाहमें रक्खा है इसलिये अब उसके साथ ऐसा बर्ताव न करना चाहिये"; परन्तु महाराणाने न माना, तब लाचार उन दोनोंने वहां जाकर हुक्मके मुआफ़िक़ हाजीखांसे कहा. उस ने ४० मन सोना और हाथी देनेका तो इक़रार करलिया, लेकिन पातरके देनेसे इनकार किया, और कहा कि यह मेरी औरत है किसतरह देसक्ता हूं.

इस पठानने इन सर्दारोंके रुख़सत करने बाद कुल्ल हाल राव मालदेवको लिख भेजा और उससे मदद मांगी. तब राव मालदेवने उसकी मददके लिये राठौड़ देवीदास जैतावत, जगमाल वीरमदेवोत, रावल मेघराज, जैतमाल जैतावत, पृथ्वीराज कूंपावत, महेश घड़सिंहोत, लक्ष्मण भदावत सिंहोत, व जैतसिंह वग़ैरह बहादुर राजपूतोंको डेढ़ हज़ार फ़ौज देकर अजमेरकी तरफ़ भेजा. इधरसे महाराणा उदयसिंह भी अपनी फ़ौज लेकर, जिसमें बीकानेरके राव कल्याणमल्ल व मेड़तिया जयमल्ल वीरमदेवोत वग़ैरह थे, अजमेरकी तरफ़ रवाना हुए. विक्रमी १६१३ फाल्गुन कृष्ण ९ [हि० ९६४ ता० २३ रबिउल् अव्वल = ई० १५५७ ता० २५ ज्यान्युअरी] को हरमाड़ा गांवमें दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबला हुआ.

हाजीखांने फ़रेब करके एक हज़ार सवारों समेत एक पहाड़ीकी आड़ली और बाक़ी पठान व राठौड़ोंको सामने खड़ा किया. महाराणा उदयसिंह हरावलमें थे; दोनों तरफ़से घोड़ोंकी बागें उठीं; हाजीखां एकतरफ़से हरावलपर टूटपड़ा. इस वक्त राव दुर्गाका घोड़ा मारा गया और वह हाथीपर सवारहुआ. हाजीखांने हाथी पर कटारी चलाई; राठौड़ देवीदास जैतावतने बालेचा सूजासे कहा कि राठौड़ बीजा और धन्नाका बैर लेना चाहता हूं– और उसको मारलिया; तेजसिंह डूंगरसिंहोत भी देवीदासके हाथसे मारा गया; कुल्ल १०० आदमी मेवाड़के, १५० हाजीखांके और ४० आदमी राव मालदेवके मारे गये. मेवाड़ी फ़ौजकी शिकस्त हुई, महाराणाके ललाटमें तीर लगा और मारवाड़ी राजपूत फ़तहके नक़ारे बजाते हुये हाजीखांको जोधपुरमें राव मालदेवके पास लेगये.

इस मारकेका ज़िक्र गुजरातकी तवारीख़ मिरात सिकंदरीमें बहुत मुख़्तसर इस तौर पर लिखा है– कि "हाजीखां गुजरातमें जाता था, जिसका रास्ता चालीस हज़ार

फ़ौज लेकर महाराणा उदयसिंहने रोका, और उससे ४० चालीस मन सोना और कितने अच्छे अच्छे हाथी व रंगराय पातर मांगी; सो सोना व हाथी देना तो हाजीख़ांने मन्ज़ूर किया, लेकिन पातरके न देनेपर लड़ाई हुई; जिसमें महाराणाने शिकस्त खाई और हाज़ीख़ां गुजरातको चला गया."

विक्रमी १७१४ वैशाख [हि० १०६७ रजब = ई० १६५७ एप्रिल] में उदयपुरके मशहूर दधिवाड़िया चारण खेमराजने इस मारकेका हाल जो नैनसी महता के पास लिखभेजा था, उसीके मुवाफ़िक़ हमने लिखाहै. हमको विश्वास है कि सौ वर्षके पहिलेका हाल जो यहांके प्रसिद्ध कविने लिखभेजा उसमें ज़्यादा ग़लती न होगी; क्योंकि जोधपुर व बीकानेरकी तवारीख़में भी उसीके मुवाफ़िक़ मिलता है.

विक्रमी १६१६ चैत्र शुक्ल ७ [हि० ९६६ ता० ६ जमादि उस्सानी = ई० १५५९ ता० १६ मार्च] को बड़े महाराज कुमार प्रतापसिंहकी राणी प्रमारके पेट से अमरसिंहका जन्म हुआ. महाराणाने पोता होनेकी बहुत खुशी की, और चित्तौड़से सवार होकर पहिले तो श्री एकलिंगजीके दर्शन किये; फिर वहांसे शिकारको आहाड़ गांवकी तरफ़ पधारे. शिकार खेलते समय एक ऐसी जगह नज़र आई, जहां बेड़च नदी एक बड़े पहाड़ी सिलसिलेको तोड़कर मेवाड़की तरफ़ चौड़े मैदानमें निकली है. उस पहाड़ी नाकेको बांधकर वहां एक बहुत बड़ी पाल (बंध) बांधनेका हुक्मदिया, और सब सर्दार व अहलकारोंसे सलाह की कि चित्तौड़का क़िला एक अलग पहाड़पर है, इसलिये जब बादशाहोंने घेरा उसी वक़ कब्ज़ेसे निकल गया, और सामानकी तंगीसे क़िले वालोंको मरना पड़ा. अगर इन पहाड़ोंके घेरेमें राजधानी बनाई जावे तो रसदकी भी कमी न होगी और मज्बूतीके साथ पहाड़ी लड़ाई करनेका मौक़ा मिलेगा. महाराणाके हुक्मको तारीफ़के लायक़ समझकर, सबने अर्ज़ की कि "पृथ्वीनाथ! यह सलाह श्रीजी-की बहुत अच्छी और कामयाबी हासिल करानेवाली है." तब महाराणाने इसी सालमें, जहां उदयपुर आबाद है उससे उत्तरकी तरफ़ एक छोटी पहाड़ी पर अपने महल और उनसे उत्तरकी तरफ़ शहर बसानेका हुक्मदिया. वहां महलोंके कुछ मकान बन भी गये थे जिनके खंडहर अब तक मौजूद और 'मोतीमहल' के नाम से प्रसिद्ध हैं— लेकिन वहां आबादी कुछ नहीं; उस जगह अब महाराणाकी शिकारगाह है.

जब महाराणा उदयसिंह शिकार खेलते हुये पीछोला (१) तालाब पर आये तो वहां एक छोटी पहाड़ी पर झाड़ीके अन्दर एक साधू बैठाथा. महाराणा

(१) यह तालाब विक्रमी १५ वीं सदीमें, महाराणा लाखाके समय किसी बणजारेने बनवायाथा—

घोड़ेसे उतर कर उसके पास गये; योगीने कहा कि "बाबा तुम यहां नगर बसाकर अपनी राजधानी बनाओ तो बहुत अच्छा है– तुम्हारे वंशसे यह शहर नहीं जावेगा."

महाराणाने उस तपस्वीका (१) कहना स्वीकार किया; जिस जगह वह बैठाथा वहीं अपने हाथसे नीवका पत्थर रक्खा, और महल बनानेके लिये हुक्म देकर डेरेको पधारे. दूसरे दिन वहां जाकर देखा तो वह योगी न मिला, तब उसकी धूनीकी जगह एक मकान बनाया, जिसके चारों तरफ़ तीन तीन दालान हैं, इस लिये उसका नाम 'नौचौक्या' रक्खा गया; और हुक्म दिया कि जिस मेवाड़के राजाको राज्याभिषेक अर्थात् गद्दीनशीनी धर्मशास्त्रके अनुसार हो वह इस जगह होना चाहिये. अब उस मकानमें वर्तमान महाराजाधिराजोंका पानेरा (२) है. उसके सामने एक दूसरा मकान बना, जिसे अब लोग 'नेकाकी चौपाड़' वा 'पांडेकी ओवरी' कहते हैं; इन दोनोंके बीचमें पत्थरका बना हुआ चौक है जो 'राय आंगन' (राज्यांगण) (३) कहलाता है. पहिले तो महाराणा उदयसिंहने ज़नाना रावला बनवाया जहां अब कोठार है; फिर इसी रायआंगन और ऊपर लिखेहुये दोनों मकानोंको ज़नाना रावला बनाकर नेकाकी चौपाड़के नीचेकी मंज़िलको मर्दाना मकान बनाया.

महाराणा उदयसिंहने विक्रमी १६१६ [हि० ९६६ = ई० १५५९] में उदयपुरसे तीन कोश पूर्वकी तरफ़ उदयसागर तालाबकी पाल बनानी शुरू की, जो विक्रमी १६१९ [हि० ९७० = ई० १५६२] में तैयार हुई; इस तालाबकी प्रतिष्ठा विक्रमी १६२२ वैशाख शुक्ल ३ [हि० ९७२ ता० २ रम्ज़ान = ई० १५६५ ता० ४ एप्रिल] को महाराणाने अपने हाथसे की.

बादशाह अकबरका चित्तौड़ लेना.

विक्रमी १६२४ आश्विन कृष्ण ११ रविवार [हि०९७५ ता० २५ सफ़र = ई० १५६७ ता० ३१ ऑगस्ट] के रोज़ बादशाह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबरने शिकारके वास्ते बाड़ीके परगनेकी तरफ़ सवारी की, और दिलमें फ़ौज कशी करना ठानकर मालवे जानेका इरादा किया– बाड़ीसे धौलपुर व ग्वालियरकी तरफ़ निकल गया. एक दिन धौलपुरके मुक़ाम पर, महाराणा उदयसिंहका छोटा बेटा

(१) इस फ़कीरके कलाम बहुतसी करामाती बातोंके साथ मशहूरहैं.

(२) जहां महाराणाके पीनेका जल रहताहै.

(३) यह नाम महाराणा संग्रामसिंह व भीमसिंहके समयसे प्रसिद्धहै.

शक्तिसिंह (जो अपने बापकी नाराज़गीसे बादशाहके पास चलागया था) बादशाहकी हुजूरमें खड़ाथा. उस समय बादशाहने फ़रमाया कि "हिंदुस्थानके बड़े बड़े राजा हमारे दर्बारमें आकर हाज़िर हुए, परन्तु राणा उदयसिंह नहीं आया; इसलिये हम उसपर चढ़ाई करना चाहतेहैं सो तुमको भी अच्छा काम देना चाहिये." इस तरहकी बातें थोड़ी देर तक बादशाह दिल्लगीमें करता रहा और शक्तिसिंह ज़ाहिरी इक़रार करता गया, लेकिन दिलमें शाही इरादेको सच्चा जानकर सोचा कि यदि मैं बादशाहके साथ जाऊं, तो मेरे ऊपर लोगोंके दिलमें अपने बापके मुल्क पर बादशाह के चढ़ा लानेका संदेह होनेसे, बड़ी बदनामी होगी; यह विचार कर वह तो रातके वक्त अपने साथी राजपूतोंको लेकर चित्तौड़की तरफ़ चलदिया.

बादशाहने यह बात सुनकर चित्तौड़ पर चढ़ाई करनेका पक्का इरादा करलिया; क्योंकि महाराणा उदयसिंह, जिनको अपने राजपूत व पहाड़ोंका बड़ा ही ज़ोर और सहारा था, जब तक ताबे न किये जाते, तब तक बादशाही हुकूमत पूरी पूरी बेखटके नहीं होसक्ती थी.

यह विचार कर बादशाहने मेवाड़की तरफ़ कूंच किया, और क़िले शिवपुरके पास, जो रणथंभोर ज़िलेका एक क़िला था, आकर डेरा दिया. वहांके लोग शाही लश्कर से मुक़ाबला करनेमें अपनेको कमज़ोर समझकर महाराणाके क़िलेदार बूंदीके हाड़ा सुर्जणके पास रणथंभोर चलेगये. बादशाहने इसे अच्छा शकुन समझ कर, नज़र बहादुर को थोड़ी फ़ौजके साथ उस क़िलेमें छोड़ा, और छः मंज़िलके बाद आप कोटे पहुंचा. वहांके क़िले और मुल्क हाड़ोतीकी हुकूमत शाह मुहम्मद क़न्धारीके सपुर्द कर गागरौन के क़िलेको घेरा; वहांसे शाह बदाग़खां, मुरादखां और हाजी मुहम्मदखां सीस्तानी वग़ैरह समेत शहाबुद्दीन अहमदखांको मालवेकी तरफ़ भेजा और खुद चित्तौड़को रवानाहुआ; कूंचके पहिले आसिफ़खां और वज़ीरखांको, जो इस मुल्कसे वाक़िफ़ थे इधर भेजा, जिन्होंने आगे बढ़कर मांडलगढ़के क़िलेको घेरा; वहांका रईस राव बल्लू सोलंखी पहिलेहीसे चित्तौड़में चलाआयाथा. थोड़ेसे लोग जो क़िलेमें थे, वे भी शाही आनेसे निकलभागे—वहां क़ब्ज़ाकर बादशाह मांडलगढ़से आगे बढ़ा.

इधर कुंवर शक्तिसिंहने धौलपुरसे चित्तौड़ आकर महाराणा उदयसिंहसे अर्ज़ की कि बादशाहका चित्तौड़पर आनेका पक्का इरादा है जो कुछ बंदोबस्त होसके वह कीजिये; महाराणाने सब सर्दार और महाराजकुमारोंको एकट्ठेकर सलाह की—मेड़ताके राव बीरमदेवका बेटा जयमल्ल राठौड़, रावत सांईदास चूंडावत, रावत साहिब खान चहुवान, राजराणा सुल्तान, ईसरदास चहुवान, चूंडावत पत्ता, राव बल्लू सोलंखी और

डोडिया सांडा वगैरह सर्दार व महाराजकुमार प्रतापसिंह, शक्तिसिंह इत्यादि सब मौजूद थे. जब महाराणाने पूछा कि अब किस तरह पर लड़ना चाहिये ? तब सब सर्दारोंने अर्ज़ किया कि "पृथ्वीनाथ ! राज्यका बल ख़ज़ाना व राजपूत हैं और पहिले गुजराती बादशाहों की लड़ाइयोंमें उसके घटजानेसे रियासत कमज़ोर होगई है; इसलिये बादशाह अकबरसे मुक़ाबला करनेमें बरबादीके सिवाय फ़ायदेकी कोई सूरत नहीं दिखाईदेती; अब यही उचित है कि हमलोग क़िलेमें रहकर बादशाहसे लड़ें और आप अपने महाराजकुमार व रणवास समेत पहाड़ोंमें चलेजायं". तब महाराणाने फ़रमाया कि हम क़िलेमें ही रहें और रणवास व कुंवर पहाड़ोंमें चलेजावें; इसपर महाराजकुमार प्रतापसिंहने अर्ज़ की कि हुज़ूर तो पहाड़ोंमें पधारकर फिर भी लड़ाइयां करसक्ते हैं और हम जवान हैं इस वास्ते पहिली लड़ाइयोंमें हमको ही तैनात कीजिये, जैसे कि अगले महाराणाओंने भी कियाथा. इसपर सब सर्दारोंने अर्ज़ की कि "हुज़ूर रणवास व अपने कुमारों समेत पहाड़ोंमें सिधारें, क्योंकि पीछे भी तो आरामसे राज्य करनेका समय नहीं है, मर मारकर हम लोगोंका बदला व अपना राज्य लेना होगा". निदान यही सलाह ठहरी तब महाराणा ८००० अच्छे बहादुर राजपूतोंको चित्तौड़के क़िलेमें तैनात कर आप कितने ही सर्दार व उनके कुंवर तथा अपने महाराजकुमार व रणवास सहित मेवाड़के दक्षिणी पहाड़ोंमें चलेगये.

इधर बादशाह अकबरने भी मांडलगढ़से कूंचकर विक्रमी १६२४ मार्गशीर्ष कृष्ण ६ बृहस्पति [हि० ९७५ ता० १९ रबिउल्आख़िर = ई० १५६७ ता० २३ ऑक्टोबर] को चित्तौड़के ३ कोश उत्तर नगरी गांवमें डेरा किया.

जब अकबरने क़िलेकी तरफ़ दृष्टि दी तो वर्षा और बिजलीकी चकाचौंधके मारे कुछ न सूझा. थोड़ी देर बाद बादल बिखर जाने पर क़िला दीखने लगा, तब बादशाहने पैमाइशवालोंसे उसका अनुमान करवाया तो पहाड़की लम्बाई दो कोश और घेरा पांच कोश मालूम हुआ. जब मोर्चे बनानेलगे तो क़िलेकी मज़बूती से बहुत सी आफ़तें उठानी पड़ीं, परन्तु अपने पक्के इरादेसे एक महीनेमें मोर्चेबंदी पूरी की. इधर राजपूतोंने भी लड़ाई पर कमर बांध जगह जगह मोर्चे सम्हाले.

खुद बादशाह अकबरने अपना मोर्चा क़िलेकी उत्तर तरफ़ लाखोटा दरवाज़े के मुक़ाबलेमें रक्खा, और क़िलेके भीतर मेड़तिया राठौड़ जयमल्ल बीरमदेवोतने लड़ाईका मोर्चा लिया. दूसरा मोर्चा राजा टोडरमल्ल और क़ासिमखांको—क़िलेसे पूर्व तरफ़ सूरजपोल दरवाज़ेके मुक़ाबिल—दिया. क़िलेके भीतर उस दरवाज़ेका मोर्चा चूंडावतोंके मुख्य सर्दार रावत सांईदासने लिया. तीसरा मोर्चा क़िलेके दक्षिण तरफ़ चित्तौड़ीकी बुर्जके सामने आसिफ़खां और वज़ीरखां वगैरहके बन्दोबस्तमें था;

क़िलेके भीतर भी अच्छे अच्छे नामी राजपूत बल्लू सोलंखी वगैरह तैनात हुए. क़िले-के पश्चिम ओर बादशाही फ़ौजके बड़े बड़े बहादुर आदमी मोर्चों पर जमायेगये थे; इसी तरह उनके मुक़ाबिल रामपोल, जोड़लापोल, गणेशपोल, हनुमानपोल, और भैरवपोल पर डोडिया ठाकुर सांडा व चहुवान ईसरदास व रावत साहिबख़ान व राजराणा सुल्तान वगैरह थे. खुद बादशाह व बड़े बड़े सर्दार अपनी अपनी जगह पर लड़ाई करनेको तैयार हुए.

अकबरने मोर्चे बंदी करते समय आसिफ़ख़ांको बहुतसे अमीरोंके साथ फ़ौज देकर रामपुराकी ओर रवाना कियाथा. वहांके अच्छे अच्छे राजपूत तो क़िले चित्तौड़में आगयेथे, और राव दुर्गभाण महाराणा उदयसिंहके पास पहाड़ों में चलागया; जो लोग रामपुराकी सम्हालके लिये वहां रक्खे गये थे उनसे लड़ाई हुई— बहुतसे राजपूत मारेगये. आसिफ़ख़ांने रामपुराको फ़तह कर बन्दोबस्तके लिये बहुत सी फ़ौज वहां तैनात की और आप चित्तौड़को लौटआया. इसी तरह हुसैन कुलीख़ांको बड़े भारी लश्करके साथ उदयपुर और कुम्भलमेरके पहाड़ोंकी तरफ़ रवाना किया था सो वह भी पहाड़ोंके किनारे किनारे लूटता हुआ चित्तौड़ पहुंचा. इन्हीं दिनोंमें एतमादख़ां गुजराती जो चंगेज़ख़ांसे हारकर डूंगरपुरमें जा छिपाथा, बादशाहकी ख़िद-मतमें चित्तौड़ आकर हाज़िर हुआ, और एक दर्याई हाथी जिसके कान बहुत बड़े थे, नज़र किया.

बादशाही लश्करके सर्दार आलमख़ां व आदिलख़ां वगैरह क़िलेके चारों तरफ़ पहाड़के नीचे दौड़ादौड़ करतेथे, लेकिन इनकी मिहनत बेफ़ायदा होती थी; क्योंकि फ़ौजमें से प्रतिदिन बहुतसे मारेजाते और बहुतसे ज़ख़्मी होते थे; क़िलेवाले भी बड़ी मर्दुमी से लड़ते थे.

जब क़िलेपर कुछ बस न चला तब बादशाहने दो सुरंगें चित्तौड़ी बुर्जकी तरफ़ लगाना तजवीज़ किया; इसी बुर्जके नीचे एक छोटीसी पहाड़ी थी जिसपर सुरंग और मोर्चेवालोंकी आड़के लिये मिट्टी डलवाकर ऊपर तक पेचदार छत्ता (१) बनाया जाता था, जहां हज़ारों मज़दूर मिट्टी डालते थे और प्रतिदिन सैकड़ों आदमी क़िलेवालोंकी बन्दूक़ वा तीरोंके निशाने होहोकर मारेजातेथे. लालच ऐसी बुरी बलाहै कि एक टोकरे मिट्टीके साथ उन लोगोंके बदनकी मिट्टी भी उसी पहाड़ी वा ज़मीनमें मिलजातीथी.

---

(१) दो दीवारें पाटकर उनमें तीरकश और खिड़कियां रक्खी गई थीं. और अंदरसे क़िले तक पहुंचकर धावा किया जाताथा- यह छत्ता सांपके समान पेचदार होताथा, इनपेच वा खिड़कियोंसे हथियार चलाकर क़िलेतक पहुंचते थे.

बादशाहने मिट्टी डालनेका भाव चांदीके मोल करादिया था; क्योंकि मिट्टी डालनेमें बहुतसी जानें तबाह होनेसे मज़दूरी ज़्यादह देनीपड़ती थी.

एक दिन क़िलेके सब सर्दारोंने सलाह की कि अगर बादशाहके पास सुलहका पैग़ाम भेजाजावे और वह मन्ज़ूर करके लड़ाईसे हाथ उठाले तो बिहतरहै; क्योंकि महाराणा तो यहांसे पहाड़ोंकी तरफ़ चले ही गये हैं और हम लोग नर्मीके साथ पेश आकर इस आफ़तको टालदेवें तो अच्छा हो. यदि बादशाह हमारी नर्मीपर भी गर्मीका बर्ताव रक्खे तो लड़ाई करनेमें कमी न करेंगे. इस तरह सब सर्दारोंने सलाह करके रावत साहिबख़ान चहुवान व डोडिया ठाकुर सांडाको क़िलेसे सुलह के वास्ते बादशाहके पास भेजा. यह दोनों सर्दार बादशाही डेरोंपर पहुंचे तो बादशाहने उनको उसी वक्त अपने सामने बुलाकर हाल दर्याफ्त किया, उन दोनोंने अर्ज़ की कि खुदावंद, हम लोगोंने हुज़ूरका कोई क़ुसूर नहीं किया है, हमारे मालिक तो पहाड़ों में चलेगये हैं और हम लोग आपको पेशकश (नज़राना) देना मन्ज़ूर करते हैं, जिसको लेकर क़िलेका घेरा उठालेवें, क्योंकि पहिलेसे बादशाहोंका यही दस्तूर रहा है कि पेशकश पाने पर मिहरबानी करते हैं. यह अर्ज़ करने पर बादशाही अमीर व सलाहकारोंने भी अर्ज़ की कि अब सुलह करलेना बिहतर है, क्योंकि यह आसमान सा ऊंचा क़िला फ़तह होना मुश्किल है. बादशाहने उन लोगोंकी सलाहपर बिल्कुल ख़याल न किया और यही जवाब दिया कि राणाके आये बग़ैर इस लड़ाईसे हाथ उठानेमें मुझे शर्म आती है, और उन दोनों सर्दारोंसे फ़र्माया कि राणाके हाज़िर हुयेबिना यह अर्ज़ मन्ज़ूर नहीं होसक्ती; तब डोडिया सांडाने अर्ज़ की कि हमारे मालिक तो पहाड़ी मुल्कके राजाहैं और पहाड़ी लोगोंमें जिहालत (असभ्यता) ज़्यादह होती है; वे इस वक्त मौजूद नहीं हैं इस लिये उनके हाज़िर होनेका इक़रार हम लोग नहीं करसक्ते. हम लोगोंको, जो पेशकश देकर लाचारी करते हैं, ज़बरदस्ती मारना बादशाही क़ायदेके ख़िलाफ़है; इसपर जयपुर के राजा भगवानदासने बादशाहके कानमें झुककर अर्ज़ की कि देखिये यह कैसा गुस्ताख़ आदमी है कि शहन्शाही दर्बारमें सख़्त कलामीसे पेश आताहै. अकबर शाह तो बड़ा क़द्रदान था, उसने फ़र्माया, कि यह शख़्स जो अपने मालिककी ख़ैरख़्वाही पर मुस्तइद होकर सवालोंके जवाब बेधड़क देरहा है इनामके लायक़ है. इससे राजा भगवानदासको, जिसने अदावतसे चुग़ली खाईथी, शर्मिन्दा होनापड़ा. बादशाहने डोडिया सांडासे फ़र्माया कि राणाके आये बग़ैर लड़ाई तो मौक़ूफ़ नहीं होसक्ती लेकिन इसके सिवाय जो तुम मांगो सो दियाजावे. सांडाने अर्ज़ किया कि अब हमको और

क्या ज़रूरत है जो मांगें, जो आप हुक्म देतेहैं तो केवल इतना ही चाहताहूं कि अगर मैं इस लड़ाईमें माराजाऊं तो मेरी लाश हिन्दुओंकी रीतिसे जलवादीजावे. बादशाहने इस बातको मन्जूर किया.

दोनों सर्दारोंने क़िलेमें आकर सब हाल ज़ाहिर किया, तब कुल राजपूतोंने ज़िन्दगीसे नाउम्मेद होकर मरने पर कमर बांधी. दोनों तरफ़से खूब लड़ाई होने लगी, बाहर बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ दोनों सुरंगें खुदकर तय्यार हुईं; चित्तौड़ीकी तरफ़वाली सुरंगमेंसे दो शाखें निकालीगईं जिनमेंसे एकके भीतर १२० मन (१) और दूसरीमें ८० मन बारूद भरीगई थी. क़िलेके लोग भी इस बातके मालूम होजानेसे होशियार होगयेथे; शाही फ़ौजके लोग हुक्मके अनुसार सुरंग उड़ानेके मुन्तज़िर थे कि जब दीवार उड़े तो भीतर घुसें. माघ कृष्ण १ [ता० १५ जमादिउस्सानी = ता० १७ डिसेम्बर] बुधवारको एक सुरंग ऐसी डाटकर उड़ाईगई कि जिससे क़िलेका एक बुर्ज ५० आदमियों समेत उड़गया उसके पत्थर बहुत दूर दूर तक गिरे और ५० कोश तक आवाज़ पहुंची. सुरंगके उड़ते ही, रास्ता होजाना समझ कर शाही मुलाज़िमोंने एकबारगी हमला करदिया. ये लोग दीवारके नज़्दीक पहुंचे थे कि इतनेमें दूसरी सुरंग भी उड़ी, जिससे बादशाही फ़ौजके बहुतसे (२) आदमी मारे गये-जिनमेंसे सय्यद अहमदका बेटा जमालुद्दीन जो बारके सय्यदोंमेंसे था, मीरखांका बेटा मीरक बहादुर, मुहम्मद सालिह हयात, सुल्तानशाहअली एशक आग़ा, यज़्दां क़ुली, मिर्ज़ा बिल्लोच, जानबेग और यारबेग वग़ैरह २० नामी आदमी बादशाहके पास रहनेवाले थे.

इसके बाद एक सुरंग आसिफ़खांके मोरचेसे बीकाखोह और मोरमगरी की तरफ़ लगाई गई, परन्तु उससे क़िलेके ३० आदमी मारेजानेके सिवाय कुछ बड़ा मतलब न निकला. चित्तौड़ीके बुर्जको जो पहिली सुरंगसे उड़गया था क़िलेवालोंने एक ही रातमें चुनकर पहिलेके मुवाफ़िक़ दुरुस्त बनालिया, और सब सर्दार राजपूत फिर मोर्चों पर मुस्तइदीसे लड़नेको खड़े होगये. इस समय अपनी फ़ौजके घबराजानेसे बादशाहको क़िला फ़तह होनेकी उम्मेद नहीं रही, तोभी उसने अपने आदमियोंको बहुत दिलासा दिया; परन्तु फ़ौजके लोग व खुद बादशाह अच्छी तरह जानचुके थे कि क़िला बहुत मज्बूतहै, और इसमें लड़नेवाले

---

(१) यह मन दो या चारसेर तक का मानाजाता था.

(२) अकबर नामेमें ये दोसौ और तबक़ात अकबरीमें व तारीख़ फ़रिश्तहमें ५०० लिखेहैं.

बहादुर हैं; क़िलेमें लड़ाई व खाने पीनेके सामानकी भी कमी नहीं है (१).

सुरंगोंसे क़िलेवालोंको इतना नुक्सान नहीं पहुंचा जितना कि बादशाही फ़ौजका हुआ. इसी तरह फिर लड़ाई होती रही लेकिन बादशाहने यही सोचा कि अगर क़िला फ़तह हुआ तो बारूदके ही वसीलेसे होगा. मोर्चेबन्दीके लिये कोरे पत्थरोंकी दीवारें खड़ी करके उनकी आड़से शाही फ़ौजके बहादुर क़िलेकी तरफ़ बन्दूक़ोंकी बाढ़ मारते थे और खुद बादशाह भी उनके साथ गोलियां चलाता था.

एक दिन बादशाह चकिया नाम हाथी पर बैठ कर क़िलेके गिर्द मोर्चे देखनेको फिरता हुआ लाखोटा दर्वाज़े की तरफ़ पहुंचा, सब लोग दीवार की आड़से क़िलेकी तरफ़ वार कररहेथे, वह भी उनके पास जा खड़ा हुआ और बंदूक़ चलानेलगा. जलाल-खां थोड़ी दूरपर दीवारके सहारेसे लड़ाईका तमाशा देख रहाथा; सो एक गोली क़िलेके भीतरसे उसके कानके पास होकर निकलगई, तब सब लोगोंने बादशाहसे अर्ज़ की कि इस बन्दूक़चीने हमारे बहुतसे आदमी मारेहैं. बादशाहने बन्दूक़ लेकर तीरकशकी तरफ़ गोली चलाई जिससे वह बन्दूक़ची मारागया, जो क़िलेके बन्दूक़चियोंका सर्दार इस्माईल नामी था.

एक दिन बादशाह मोरमगरी पर जो क़िलेके पश्चिम तरफ़ है तोपें चढ़ारहा था, एक तोप उसके सामने गिरपड़ी जिससे २० आदमी मरगये. बारूदकी लड़ाई के काम पर राजा टोडरमल्ल व क़ासिमखां दर्याई दारोग़ाको तैनात कियाथा और बादशाह भी खुद इस कामकी सम्हाल रखताथा. दो रात और एक दिन दोनों तरफ़के बहादुर लड़ाईमें ऐसे लगेरहे कि खाना पीना तक भूलगये. शाही फ़ौजके गोलन्दाज़ों ने तोपोंसे क़िलेकी दीवारको बहुत जगहसे तोड़दियाथा; आधी रात होनेपर बादशाही फ़ौजवाले हल्ला करके गिरीहुई दीवारोंकी तरफ़से क़िलेमें घुसना चाहतेथे, और क़िलेके बहादुर राजपूत उनको रोकतेथे; इसमें दोनो तरफ़के हज़ारहा आदमी मारेजातेथे. तेल, रुई, कपड़ा वग़ैरह भी जलाकर क़िलेवाले शाही फ़ौजके हमलेको रोकते थे. इसी झगड़े में एक सर्दार हज़ारमेख़ी सिलह पहने हुये दीवार के तीरकश मेंसे बादशाह को दिखाई दिया. तब बादशाहने

(१) पहिली दो बातोंके बाबत तो उन लोगोंका क़यास ठीक था लेकिन तीसरी बात में अलबत्ता ग़लती होगी, क्योंकि अकबरशाहने बहुत दिनोंसे क़िलेको घेर रक्खाथा. जब रसद वग़ैरह सामान नहीं रहा तब क़िलेके राजपूतोंने आपही किवाड़ खोल दिये और बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर मारे गये, यदि सामान की कमी न होती तो वे लोग किवाड़ कभी न खोलते, बल्कि कुछ दिनोंतक और भी लड़ते.

उस सर्दार पर एक बंदूक़ (जिसका नाम संग्राम था) चलाई, और राजा भगवान दास व शुजाअतख़ां से फ़र्माया कि इस बंदूक़की गोली उस सर्दारके ज़रूर लगी है, क्योंकि जब मेरे हाथकी गोली किसी शिकारपर लगतीहै तो मुझे मालूमहोजाताहै. तब ख़ानेजहां वग़ैरहने अर्ज़ की कि यह सर्दार बन्दोबस्त करनेको आज रातमें कई दफ़ह यहां आचुकाहै, अगर अब न आवे तो जानना चाहिये कि ज़रूर मारागया. थोड़ी देरमें जब्बारकुली–दीवाना ख़बर लाया कि क़िलेकी दीवारोंमेंसे कोई आदमी दिखाई नहींदेता.

क़िलेमें मेड़ताके राठौड़ मेड़तिया बीरमदेवके बेटे जयमल्लके (१) घुटनेमें, जो राजपूतोंमें बड़ा नामी सर्दार था, बादशाहकी गोली लगनेसे उसका पैर टूटगया; तब जयमल्लने सब सर्दारोंको एकट्ठाकरके सलाह की कि अब क़िलेमें खानेपीनेका सामान नहीं रहा इसलिये उचित है कि औरत बच्चोंको आगमें जलाकर क़िलेके दर्वाज़े खोल दियेजावें और बहादुर राजपूत हाथोंमें तलवार लेलेकर अपनी अपनी बहादुरीकी मुरादको पहुंचें. यह सलाह सब सर्दारोंने पसन्दकरके, 'जौहर' (आगमें बाल बच्चोंको जलाने) का हुक्म दिया; इसपर राजपूतोंने लकड़ियोंका ढेर लगाकर अपने अपने औरत बच्चोंको उसमें बिठाया और आग लगादी, जिसमें हज़ारों जलकर ख़ाक होगये. रावत पत्ता, अपनी मा सज्जनबाई सोनगरी और ठकुरानियोंमें से सामन्तसीकी बेटी जीवाबाई सोलंखिणी, सहस मल्लकी बेटी मदालसाबाई कछवाही, ईसरदासकी बेटी भागवती बाई चहुवान, पद्मावतीबाई झाली, रत्न बाई राठौड़, बालेसाबाई चहुवान, प्रमार डूंगरसीकी बेटी बागड़ेची आसाबाई वग़ैरह और दो बेटे व पांच बेटियां आदि सबको आगमें जलाकर, तय्यार हो आया. सब सर्दारोंने जिन जिन की ठकुरानियां तथा बाल बच्चे वहां मौजूद थे, ऐसा ही किया. जब इस जौहरकी आगकी ज्वाला (शोले) बाहर दिखाई दी उस वक़्त शाही फ़ौजके बहुतसे आदमी तरह तरहके विचार करने लगे; तब आंबेरके राजा भगवानदासने बादशाहसे अर्ज़ की कि यह आग जौहरकी है.– जब राजपूत लोग मरनेका पक्का इरादा करलेते हैं तो (अपने क़ायदेके मुवाफ़िक़) औरत व बच्चोंको आगमें जलाकर आप दुश्मनों पर टूटपड़ते हैं, इसलिये शाही फ़ौजको होशियार रहना चाहिये. बादशाहने हुक्म दिया कि सूर्य निकलते ही हल्लाकरके शाही फ़ौजके लोग क़िलेमें घुसजावें.

प्रभात होतेही राजपूतोंने क़िलेके दर्वाज़े खोलदिये. जब जयमल्लने

---

(१) यह बि० १६१९ [हि० ९६९ = ई०१५६२] में अकबरके सर्दार नागौरके सूबेदार मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीनहुसैनको मेड़ते पर चढ़ालाकर उसके हमराह क़िले पर देवीदास व जगमालके बर्ख़िलाफ़ बड़ी बहादुरीसे लड़ाथा.

कहा कि मेरा पैर टूटगयाहे और घोड़ेपर नहीं चढ़ा (१) जाता. तब उसके भाई कल्लाने कहा कि मेरे कंधेपर बैठकर अपने दिलकी हवस निकालिये. सो जयमल्ल, कल्लाके कंधेपर बैठा और यह और वह दोनों तलवार चलाते हुये हनुमान पोल व भैरव पोलके बीचमें, कामआये. डोडिया सांडा शाही फ़ौजमें घोड़ेपर सवार तलवार चलाताहुआ गम्भीरी नदीके पश्चिम तरफ़ मारागया. इस तरह राजपूत लोगोंका सख़्त हमला देख कर बादशाहने आज़माये हुये हाथियोंको सूंडोंमें दुधारेखांडे देकर आगे बढ़ाया. मदकर हाथीके पीछे जकिया और उसके पीछे सबदलिया और कादरा वगैरह हाथी चले. बहादुर राजपूत भी तलवारोंके हाथ उनपर साफ़ करनेलगे. ईसरदास चहुवानने मदकर हाथीका दांत पकड़ कर महावतसे उसका नाम पूछा और उसकी सूंडपर ख़न्जरका वार करके कहा कि बादशाहसे मेरा मुजरा बोलो. एक राजपूतने एक हाथीकी सूंड तलवारसे काटकर गिरा दी. उस हाथीने तीस आदमी तो पहिले और पन्द्रह सूंड कटने बाद मारे. मदकर हाथीने भी सूंडपर तलवार लगनेके बाद कई आदमियोंको मारडाला, और गजराज हाथी घबराकर क़िलेकी तरफ़ भागा; उसपर अज़मतख़ां सवार था सो घायल होकर थोड़े दिन बाद मरगया. बादशाह अकबर इन्हीं हाथियोंके झुंडमें रहकर अपने लोगोंको लड़ाई पर बढ़ाताजाता था; जब फ़ौज क़िलेके भीतर घुसने लगी, उस समय पत्ता चूंडावत जगावत राम-पोलके भीतर बड़ी बहादुरीके साथ अपने राजपूतों समेत सैकड़ों आदमियोंको मारकर क़त्लहुआ. बादशाह अकबरके फ़रमानेके मुवाफ़िक़ अबुलफ़ज़्ल लिखता है कि बाद-शाह क़िलेकी दीवारपर से देखरहेथे कि सबदलिया हाथी क़िलेमें राजपूतोंको मारमार-कर गिरानेलगा, जिसपर एक राजपूतने तलवारका वार किया. हाथीने उसको सूंड में लपेटकर ज़मीनपर पटका. इतनेमें किसी दूसरे राजपूतने सामने आकर दूसरा वारकिया; और हाथी उस तरफ़ चला, तब पहिले राजपूतने सूंडमेंसे छूटकर पीछेसे तलवार मारी.

खुद बादशाह अकबरका बयान है कि "क़िलेके बहादुरोंमें से किसी शख़्सने (जिसको मैं नहीं पहचानता) ऐन लड़ाईके वक़्त शाही फ़ौजके एक आदमीको लड़ने के वास्ते आवाज़ दी; वह खुशीसे उसकी तरफ़ चला, जिसपर किसी दूसरे शाही मुलाज़िमने उसकी मदद करना चाहा; उसने उसे रोकदिया और कहा कि यह बहादुरी और जवांमरदीकी बात नहीं है कि एक आदमी अकेला मुझको लड़ाईके लिये बुलावे

(१) अबुल्फ़ज़्लने बादशाहकी 'संग्राम' बन्दूक़से उसी जगह जयमल्लका माराजाना लिखाहै. लेकिन वह बाहरके ग़ैरलोगोंमें से था जैसा सुना वैसा लिखदिया.

और मैं तुमको मददके लिये साथ लूं. दोनोंका मुक़ाबला हुआ, जिसमें क़िलेका राजपूत मारागया. उस आदमीको मैंने बहुत तलाश किया लेकिन वह न मिला, फिर भी बादशाहने कहा कि जब मैं गोविन्दश्यामके मन्दिर पर पहुंचा उस समय एक महावत एक आदमीको, जो हाथीकी सूंडमें लिपटा हुआ था मेरे सामने लाया. उस वक्त उसमें कुछ जान बाक़ी थी लेकिन थोड़ी देरमें मरगया. महावतने अर्ज़ की कि यह शख़्स कोई क़िलेके सर्दारोंमें से है क्योंकि इसके संग बहुतसे आदमियोंने जान दी है. दर्याफ़्त करनेसे मालूम हुआ कि वह पत्ता जगावत था. जब शाही फ़ौजके पहिले ५० और पीछेसे ३०० हाथी तक क़िलेमें पहुंच चुके और वहां शाही झंडा खड़ा हुआ, उस वक्त हज़ारहा नौकर और रअय्यतके लोग मन्दिर व अपने घरोंमें लड़ाई करनेके लिये मुस्तइद खड़े थे, जो नंगी तलवारें व भाले लेलेकर शाही सिपाहियों पर हमला करते करते बड़ी बहादुरीके साथ मारेजाते थे. ऐसी लड़ाई न किसीने देखी और न सुनी होगी कि जिसका बयान अच्छीतरह नहीं हो सक्ता. लड़ाईके समय क़िले में लड़ाकू राजपूतोंके सिवाय ४०००० रअय्यतके लोग थे, जिनमेंसे केवल १००० आदमी बचे बाक़ी सब लड़कर मारेगये. बादशाहने रअय्यतको लड़ाकू देखकर सबके मारनेका हुक्म दे दिया.

सूर्जपोल दर्वाज़े पर रावत साईदास वगैरह बहादुर जो तैनात थे वे भी बड़ी बहादुरीके साथ मारेगये. इनकी मददके लिये दूसरे मोर्चे परसे राजराणा जैता सज्जावत और राजराणा सुल्तान आसावत पहुंचे, जो वहीं काम आये. इसतरह सब राजपूतोंने बड़ी बहादुरी ज़ाहिर की और मारेगये.

१००० एक हज़ार बन्दूक़ची (१) शाही फ़ौज के डरसे अपने बाल बच्चोंको क़ैदियों की तरह गिरिफ्तार करके शाही फ़ौजके दरमियान होकर लेनिकले, जिनकी फ़ौज वालोंने अपने ही आदमी समझकर कुछ रोक टोक न की. महाराणाके महलोंके सामने समिद्धेश्वर (२) महादेवके मन्दिरके पास, और रामपोल दर्वाज़े पर जहां पत्ता जगावत मारागया था, हज़ारों आदमियोंकी लाशोंके ढेर लगगये.

विक्रमी १६२४ चैत्रकृष्ण १२ [हि० ९७५ ता० २६ शाबान = ई० १५६८

---

(१) मोतमदख़ां अपनी किताब इक़्बालनामे जहांगीरी में लिखताहै कि येलोग काल्पी की तरफ़ के रहने वाले बक्सरिया मुसल्मान थे और हमारे ख़याल से मालूम होताहै कि येलोग बंगाली पठान होंगे, जो मुग़लों की बरख़िलाफ़ी के सबब चित्तौड़ में चले आये थे.

(२) यह मन्दिर वह नहीं है जो महाराणा मोकलने क़िलेकी दीवार पर बनवाया था बल्कि वहहै जो कीर्तिस्तंभके पूर्व तरफ़ अब खंडहरके तौर पड़ाहै.

ता० २५ फेब्रुअरी] को दो पहर के समय बादशाह अकबरने इस क़िलेपर क़ब्ज़ाकिया, और तीन रोज़ तक वहीं ठहरकर क़िले का बन्दोबस्त किया; वहां की हुकूमत ख़्वाजह अब्दुल मजीद आसिफ़ख़ांको देकर आप अजमेरकी तरफ़ पैदल रवाना हुआ क्योंकि बादशाहने ख़्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी मन्नत मानी थी कि यदि चित्तौड़का क़िला फ़तह हो जावेगा तो मैं ज़ियारत (दर्शन) करनेके लिये अजमेर तक पैदल आऊंगा. जब फ़तह पाई तब क़िलेसे अपने लश्करगाह, और वहांसे मांडल तक पैदल चला. जब अजमेरके ख़ादिमोंकी दरख़ास्तें इस मज़्मूनकी पहुंचीं कि हज़रत-ख़्वाजह साहिबका हुक्म आपके लिये सवारी पर आनेका है, तब बादशाह मांडलसे सवार हुआ; परन्तु जब अजमेर एक मंज़िल रहगया तब फिर वहांसे पैदल ही अजमेर दाख़िल हुआ. १० रोज़तक अजमेरमें रहकर आगरेकी तरफ़ कूचकिया.

महाराणा उदयसिंह इस लड़ाईके पहिले ही सब सर्दारोंकी सलाहसे चित्तौड़ छोड़कर पहाड़ोंमें होतेहुये गुजरातकी ओर रेवा कांठापर गोहिल राजपूतोंकी राजधानी राज पीपलां (१) में पहुंचगयेथे. वहांके राजा भैरवसिंहने बड़ी ख़ातिरदारी की. महाराणा ४ महीनेतक वहां ठहरे और फिर रहे सहे राजपूतोंको एकट्ठा करके उदयपुर आये; यहां आकर नौचौकियां वग़ैरह महलोंको जो अधूरे रहगयेथे पूराकिया.

अकबरका रणथम्भोरको जीतना.

दूसरे वर्ष बादशाह अकबरने रणथम्भोरका क़िला लिया (जो आज कल महाराज जयपुरके क़ब्ज़ेमें है;) पहिले इस क़िलेके मालिक चित्तौड़ के राजा थे (२) जिन्होंने वहांकी क़िलेदारी बूंदीके हाड़ा सूर्य्यमल्ल व उनके बेटे राव सुल्तान और सुर्जण

---

(१) राज पीपलां के गोहिलोंकी तवारीख़ हम इसी जगह लिखते परन्तु महाराणा उदयसिंह का वृत्तान्त थोड़ा ही रहगयाहै इस लिये प्रकरण के अख़ीर में लिखेंगे.

(२) यह क़िला १४ शतक के पहिले तो नजाने किस के क़ब्ज़ेमें था परंतु लिखीहुई सदीके शुरूसे हमीर चहुवान और उसके बापके क़ब्ज़ेमेंथा जिसको अलाउद्दीन ख़िल्जीने फ़तह किया था फिर यह क़िला मेवाड़के राजाओंके क़ब्ज़ेमें आया जिसके लेनेकी इच्छा बाबर बादशाह को भी रही और शेरशाह सूरने इसको अपने क़ब्ज़ेमें लेलिया लेकिन थोड़े ही दिनों के बाद फिर मेवाड़ के क़ब्ज़ेमें आगया. तबक़ातअकबरी और इक़बालनामह जहांगीरी वग़ैरह किताबोंमें लिखा है कि अकबरके शुरू अहदमें मुग़लोंके डरसे शेरशाह के नौकर जुझारख़ां ने राव सुर्जण को यह क़िला बेचदिया. इससे मालूम होताहै कि महाराणा उदयसिंह के इशारेसे उस क़िलेदार जुझारख़ां को कुछ रुपये दिये होंगे क्योंकि उन दिनों बूंदी भी महाराणा उदयसिंह के मातहतथी और बूंदी वालों के नाम रणथम्भोर की क़िलेदारी महाराणा सांगाके वक्त से चली आतीथी इस लिये कुछ तअ-ज्जुबकी बात नहीं है .

(जिसको महाराणाने सुल्तानके खारिज करने बाद बूंदीका मालिक बनाया था) वगैरह को दीथी. जब बादशाह अकबरने चित्तौड़का क़िला फ़तह करके मेवाड़में जगह जगह अपने थाने बिठादिये, उस समय उदयपुरके महाराणा पहाड़ोंमें दिन काटते थे परन्तु बूंदीका हाड़ा सुर्जण इसी क़िलेमें क़ायम रहा. इस हालतमें महाराणा की हुकूमत तो हाड़ोंपर कुछ रही नहीं और वह अपनी बहादुरीसे क़िलेके मालिक बने रहे.

बादशाह अकबरने सोचा कि क़िले रणथम्भोरको भी जो चित्तौड़के मालिकके हिमायतीके कब्ज़ेमें है, फ़तह करलेना चाहिये. यह इरादा करके विक्रमी १६२५ पौष शुक्ल २ तथा ३ सोमवार [हि० ९७६ ता० १ रजब = ई० १५६८ ता० २३ डिसेम्बर] को दिल्लीकी तरफ़से रवाना हुआ. इस क़िलेके लेनेके वास्ते पहिले भी बादशाहने कई बार अपने अमीरोंको भेजाथा परन्तु लड़ाई न हुई, अब खुद चढ़ाई का इरादा करके अलवर और लालसोट होता हुआ फाल्गुन कृष्ण ७ मंगलवार [हि० ९७६ ता० २१ शाबान = ई० १५६९ ता० १२ फ़ेब्रुअरी] को रणथम्भोर के पास आकर डेरा किया. बादशाहने रण नामी डूंगरी पर से क़िलेको देखकर उसकी उंचाई निचाई व पहाड़ोंके मौक़ोंके हिसाबसे मोर्चाबन्दी की. बड़ी बड़ी तोपें जो बाईस बाईस जोड़ी बैलोंसे खेंची जाती थीं उस मोर्चेपर चढ़ाईगईं जो क़ासिमखां मीर बहरी (दर्याई दारोग़ा) और राजा टोडरमल्लकी सम्हालसे बनाया गया था.

सुर्जणने भी क़िले पर अच्छी तरह मज़बूती करली. दोनों तरफ़से लड़ाई-होती रही परन्तु क़िला मज़बूत होनेके कारण नहीं टूट सका; तब बादशाहने भेद उपायकर आंबेरके राजा भगवानदासकी मारफ़त सुर्जणको क़िला छोड़देनेके लिये कह लाया- राजा भगवानदासने उसको खानगी तौरपर यह भी समझाया कि "यदि आप कुछ दिन लड़ेंगे तोभी बादशाह क़िलेको फ़तह ही करके जावेगा, क्योंकि जब चित्तौड़ के समान क़िलेको जिसमें आप जैसे बहुत सर्दार मौजूद थे, फ़तह करलिया तो इसकी क्या बुन्याद है". तब सुर्जणने उसकी मारफ़त सुलहके लिये कोशिश करनी शुरू की, और सात शर्तें लिखकर पेशकीं जिनको बूंदी वालोंने अपनी तवारीख़में इस तरह लिखा हैः—

१ हम बादशाहको बेटी न दें; २ हमारे रनिवासके लोग "नौ रोज़" (१) में न जावें; ३ हम अटक नदीके पार न उतरें; ४ आम व खास शाही दर्बारमें हम शस्त्र

---

(१) मुग़लों के यहां यह एक खुशीका दिन माना जाताहै और ईद बकराईदके समान इसमें बड़ा उत्सव होताहै.

लेकर जावें; ५ लाल कोट (१) तक हमारा नक़ारा बजे; ६ हमारे घोड़ोंके दाग़ न लगायाजावे; ७ हम किसी हिन्दू राजाके मातहत होकर लड़ाईपर न भेजे जावें.

परन्तु बीकानेरके प्रधान नैनसी महताने राजपूतानाकी तवारीख़में यह शर्तें इस तरह लिखी हैं:—

१ हम महाराणाकी दुहाई मानें; २ मेवाड़ पर बादशाही फ़ौजके साथ न जावें; ३ बादशाहको बेटी न देवें; ४ हमारे ज़नानेके लोग नौ रोज़में न जावें; ५ अटक नदीके पार हम न भेजेजावें; ६ हम शाही दर्बारमें जावें तो शस्त्र न खोलें; ७ हमारे घोड़ोंके दाग़ न लगायाजावे.

इन दोनों लिखावटोंका निर्णय हम आगे लिखेंगे— सुर्जणकी दर्ख़ास्तें बादशाहने मन्जूर कीं तब सुर्जणने अपने बेटे दूदा और भोजको विक्रमी १६२६ चैत्र शुक्ल २ [हि० ९७६ ता० १ शव्वाल = ई० १५६९ ता० १९ मार्च] को शाही दर्बार में भेजदिया, जिनके संग हाड़ा सामन्तसिंहको, जो बड़ा एतबारी था, दिया, जब दूदा और भोज शाही दर्बारमें पहुंचे तो बादशाहने बड़ी ख़ातिर की और दोनोंको ख़िल्अत पहनानेका हुक्म हुआ. जब ख़िल्अत पहनानेको लोग उन्हें दूसरे डेरेमें ले चले तब हाड़ा सामन्तसिंहने जाना कि इनको मारनेके लिये लेजाते हैं. इस कारण वह मियानसे तलवार खेंचकर चला. राजा भगवानदासके नौकर प्रयागदासने बहुतेरा समझाया और मनाकिया लेकिन सामन्तने एक न सुनी, और यही जानलिया कि यह सब फ़रेब हैं, इन दोनों लड़कोंको मारनेके लिये लेजाते हैं, सामन्तसिंहने झपटकर शाही कामदार पूर्णमल्लके बेटे पर एक वार किया और बहाउद्दीन मजज़ूब बदायूनीके दो टुकड़े कर डाले; आख़िर मुज़फ़्फ़रख़ांके नौकरके हाथसे सामन्तसिंह मारागया. बादशाहने सुर्जण व उनके बेटोंका कुछ क़ुसूर नहीं जाना, उस राजपूतकी ही जिहालत (मूर्खता) समझी. फिर सुर्जणके दोनों बेटोंको ख़िल्अत देकर विदा किया (२). दूदा व भोजने क़िलेमें पहुंचकर शाही मिहरबानीका हाल अपने बापसे ज़ाहिर किया फिर चैत्र शुक्ल ४ मंगल [शव्वाल ता० ३ = ता० २१ मार्च] को सुर्जण भी शाही डेरोंमें हाज़िर हुए और क़िले की कुंजियां बादशाहके नज़र कीं, तब बादशाहने खुश होकर रावका ख़िताब और चनारगढ़ वग़ैरह परगने इनायत किये. राव सुर्जणकी अर्ज़के मुवाफ़िक़ ३ दिन की मोहलत असबाब निकालनेकी दी गई तब सुर्जणने वहांसे कटकबिजली और धूलधाणी

---

(१) इनमेंसे अक्सर शर्तें ऐसी हैं कि जिनका सुबूत हिन्दुस्तानकी तवारीख़ों से नहीं मिलता है.

(२) और उनके साथ हुसैनकुलीख़ांको सुर्जणके लेनेके वास्ते भेजा.

दो तोपें और कल्याणरायजी व चतुर्भुजजीकी दो मूर्तियां वगैरह और कितना ही दूसरा सामान बूंदी पहुंचाया. ३ दिन पीछे रणथम्भोर क़िला शहनशाहने मेहतरखांके सपुर्द किया और आप अजमेरको रवानाहुए. आठ दिन अजमेरमें ठहर कर आगरेकी तरफ़ कूचकिया.

बूंदी वालेतो अपनी तवारीख़ वंशप्रकाशमें सुर्जणको आज़ाद (स्वतंत्र) राजा होनेके तरीक़ेसे लिखते हैं लेकिन हम इसका सही हाल पीछे लिखेंगे. चित्तौड़की लड़ाईके तीसरे साल बाज़बहादुर मालवी बादशाह, जो वहांसे निकलकर दक्षिणमें निज़ामुल मुल्क के पास गया था और वह उसको न रख सकाथा, जब महाराणा उदयसिंहके पास शरणे आया तो महाराणाने उसको बहुत ख़ातिरसे अपने पास रक्खा. यह बात बादशाह अकबरने जो बड़ा दूरअन्देश (दूरदर्शी) था सुनी तो उसके दिलमें मालवेकी तरफ़का खटका पैदा हुआ इसलिये उसने अपने ख़ज़ानूची अमीरहुसैनख़ांको भेजकर बाज़बहादुरको बहुत तसल्लीके साथ अपने पास बुलालिया.

बाज़बहादुरके यहां रहनेसे बादशाही फ़ौजें आआकर उदयपुर पर हमला करने लगीं. विक्रमी १६२७ [हि० ९७८ = ई० १५७०] में महाराणा कुंभलमेर पधारे फिर वहांसे फ़ौज एकट्ठीकरके गोगूंदे आये और विक्रमी १६२८ का दशहरा वहीं किया. यह महाराणा जब फाल्गुन महीनेमें कुछ बीमार हुए तो इन्होंने अपने पुत्र जगमालको जो महाराणी भटियाणीसे जन्माथा युवराज बनाया, क्योंकि महाराणी भटियाणी पर इन महाराणाकी ज़ियादह मिहरबानी थी. विक्रमी १६२८ फाल्गुन शुक्ल १५ [हि० ९७९ ता० १४ शव्वाल = ई० १५७२ ता० २८ फ़ेब्रुअरी] को महाराणा उदयसिंहका देहान्त हुआ.

इन महाराणाके मिज़ाज (स्वभाव) में स्थिरता बहुत कम थी और ये अक्ल व बहादुरीमें अपने बाप महाराणा सांगासे चौथे हिस्से भी नहीं थे परन्तु विक्रमादित्यसे अच्छे थे इसलिये इनकी निन्दा नहीं हुई.

कर्नेल् टॉडसाहबके लिखनेके अनुसार बहुत कायर भी नहीं थे क्योंकि इन्होंने लड़ाइयोंमें अक्सर बहादुरीका काम किया. इन महाराणाका जन्म विक्रमी १५७९ भाद्रपद शुक्ल १० [हि० ९२८ ता० ९ शव्वाल = ई० १५२२ ता० ४ ऑगस्ट] को और विक्रमी १६२८ फाल्गुन शुक्ल १५ [हि० ९७९ ता० १४ शव्वाल = ई० १५७२ ता० २८ फ़ेब्रुअरी] को देहान्त हुआ.

इनके २४ महाराजकुमार थे, सोनगरा अक्षयराजकी बेटी जैवंताबाईके गर्भ से महाराजकुमार १ प्रतापसिंह, सज्जाबाई सोलंखिणीके २ शक्तिसिंह ३ बीरमदेव, जैवंताबाई मादड़ेचीका बेटा ४ जैतसिंह, करमचंद प्रमारकी बेटी लालाबाईका बेटा

५ कान्ह, वीरबाई झालीका बेटा ६ रायसिंह, लक्खाबाई झालीके बेटे ७ शार्दूल-सिंह ८ रुद्रसिंह, धीरबाई भटियाणीके बेटे ९ जगमाल, १० सगर, ११ अगर, १२ साह, १३ पच्याण, इसीतरह १४ नारायणदास, १५ सुल्तान्, १६ लूणकरण, १७ महेशदास, १८ चंदा, १९ भावसिंह, २० नेतसिंह, २१ नगराज, २२ बैरीशाल २३ मानसिंह और २४ साहिबखां नामके थे— कुल राणियां १८ जिनसे कुल २४ बेटे वगैरह औलादथी (१).

महाराणा उदयसिंहकी अमल्दारीका फैलाव नीचे लिखीहुई जागीरोंसे तथा जो जो राजा उनकी नौकरी करते थे उनसे अच्छीतरह मालूम होसक्ताहै. इन महाराणाके पोते अमरसिंहके नामसे संस्कृत भाषा में अमरकाव्य नामी संस्कृत ग्रंथ बनाहुआ है जिसके अनुसार यह जागीरें देने वगैरहका हाल यहां दर्ज कियाजाता है.

"राव सुल्तानको अजमेर पठानोंसे लेकर दिया, आंबेरके राजा भारमल्लने अपने बेटे भगवानदासको महाराणाकी नौकरीमें भेजा, रावसुल्तानको बूंदीसे निकालकर सुर्जणको बूंदीकी गद्दी और रणथम्भोरकी क़िलेदारी दी, और १०० गांव फूलियाके और १०० गांव कुम्भलमेरके दिये. रावत साईदासको गंगराड़, भैंसरोड़, बड़ोद और बेगम दिये. ग्वालियरके राजा रामसाह तंवरको बारांदसोर दिया— मेड़ताके जयमल्ल राठौड़को एक हज़ार गांवों समेत बदनोर दिया— खीचीवाड़ा के गोपालसिंह खीची और आबूके राजा नौकरी करतेथे— राव मालदेवके बड़े बेटे रामसिंहको १०० गांव समेत कैलवेका ठिकाना दिया— ईडरका राव नारायणदास, गुजराती बादशाहोंकी मददसे नौकरीमें नहीं आताथा".— अमरकाव्य पृ० ६३.

राजपीपलांकी तवारीख़.

राज पीपलांके राजा गोहिल राजपूत हैं; इनका प्राचीन इतिहास मिलना कठिनहै लेकिन ऐसा कहते हैं कि विक्रमी १३५ में जो शालिवाहन राजा हुआ, और जिसने अपने नामका शक (संवत्) जारी किया, उसका वंश गोहिल कहलाता है. जिसमें से एक राजाने मारवाड़ देशमें खेड़ ग्रामके एक भीलको मारकर वहांपर अपना राज्य स्थापन किया. बीस पीढ़ी बाद क़न्नौजके राजा जयचंदके परपोते आस्थान राठौड़ने

(१) इन चौबीसोंमें से कई एकके वंश बढ़कर उन्हींके नामसे सीसोदियोंकी शाखा मशहूरहैं जिनका ज़िक्र मेवाड़के सर्दारोंके हालमें लिखा जायगा.

खेड़का राज गोहिलोंसे छीन लिया. उस वक़् लड़ाईमें राजा माहोदास गोहिलके मारेजानेसे विक्रमी १३०७ [हि० ६४८ = ई० १२५०] में उनके पुत्र भांभर का बेटा सेजक जूनागढ़ (सोरठ देश) के राजा महिपाल व उनके कुंवर खंगारके पास आरहा, और अपनी बेटी की शादी भी उसीके साथ करदी. कुछ दिनों पीछे राजा महिपालकी मदद्से शत्रुओं पर फ़तह पाकर अपने नामसे एक क़सबा सेजकपुर आबाद किया.

सेजकके तीन बेटे राणों, शाह और सारंग थे. जूनागढ़के राव खंगारने शाह को मांडवी और सारंगको आर्थीला चौबीस २ गांवों समेत दिया. इस वक़् शाहके वंशवाले पालीताणांमें और सारंगके लाठीमें राज्य करते हैं.

सेजकके मरने बाद् विक्रमी १३४७ [हि० ६८९ = ई० १२९०] में उनके बड़े बेटे राणकने गद्दीनशीन होकर अपने नामसे राणपुर बसाया, परन्तु विक्रमी १३६६ [हि० ७०९ = ई० १३०९] में राणकके मुसल्मानोंसे लड़कर मारेजाने पर राणपुर लूट गया, तब उसके बेटे मोखड़ाने बाला राजपूतोंको जीतकर भीमडाद वगै़रह में क़ब्ज़ा किया और उमरालाको अपनी राजधानी बनाया. फिर पीरमका टापू कोलियोंसे फ़तह करके वहां राजधानी बनाई. विक्रमी १४०४ [हि० ७४८ = ई० १३४७] में दिल्लीके तुग़लक़ बादशाहके सर्दार जुम्माखांसे लड़कर मोखड़ाके मारेजाने बाद् उसके दोनों बेटे बड़े डूंगरसिंह और छोटे समरसिंह, अपनी ननिहाल राज पीपलां व पाली ताणांमें जारहे. समरसिंहने राज पीपलांमें अपने मामू पंवार राजाके निपुत्र मरजानेसे उसकी जगह गद्दी बैठकर अपना नाम अर्जुनसिंह रक्खा. इसके दो पुत्र, उग्रसेन और भाणसिंह हुए जो क्रमसे राज पीपलांके मालिक बने. इन के बाद गैमल्ल गादी बैठा जिससे विक्रमी १४६० [हि० ८०५-६ = ई० १४०३] में अहमदशाह गुजरातीने राज पीपलांका राज छीन लिया. विक्रमी १४७३ [हि०८१९ = ई०१४१६] में गैमल्लसिंह मरगया. उसके दो बेटे, छत्रशाल व विजयपालथे जिनमेंसे बड़ा तो बापके सामने ही मरगया और दूसरा रहा, इसने राजपीपलां पर क़ब्ज़ा करलिया.

विजयपालके दो बेटे थे, बड़ा रामशाह (जिसको हरीसिंह भी कहते हैं,) और दूसरा सूरशाह. विजयपालके मरने पर हरीसिंह (रामशाह) गादी पर बैठा जिस से गुजराती (१) सुल्तान अहमदशाहने फिर राज पीपलां छीन लिया; लेकिन हरीसिंहने

---

(१) यह वक्त अहमदशाहके दादा ज़फ़रखांका था अहमद इससे ९ वर्ष बाद तख़्तपर बैठा फ़रिश्ता और मिरात अहमदीमें लिखाहै.

विक्रमी १५०० [हि० ८४७ = ई० १४४३] में (१) राजपीपलांपर फिर क़ब्ज़ा करलिया. हरीसिंहके मरने बाद अनुक्रमसे पृथूराज, दीपसिंह, करणवा, अभयराज, सुजानसिंह और भैरवसिंह गादी बैठे. भैरवसिंहके समय विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = ई० १५६७] में महाराणा उदयसिंह बादशाह अकबरकी चढ़ाईसे चित्तौड़ छोड़कर ४ महीने तक राज पीपलांमें जा रहे थे.

इन दिनोंमें गुजरातकी बादशाहत बर्बाद होजानेसे यह रियासत आज़ाद व आबाद रही. भैरवसिंहके मरने पीछे पृथूराज गद्दी बैठा. इसके वक़्में अकबर बादशाहका क़ब्ज़ा गुजरात पर हुआ, तब यह भी बादशाही सर्कारमें पैंतीस हज़ार पांचसौ छप्पन रुपया सालाना ख़िराज देनेलगे. पृथूराजके बाद दीपसिंह, दुर्गशाह, मोहराज, रायशाल, चंद्रसेन, गंभीरसिंह, सुभेराज, जयसिंह, मूलराज, शूरमाल, उदयकरण, चंद्रबा, छत्रशाल और बैरीशाल (पहिला) अनुक्रमसे गद्दी बैठे. बैरीशालके वक़् विक्रमी १७६२ [हि० १११७ = ई० १७०५] में बादशाह औरंगज़ेब आलमगीरकी तरफ़से नज़रअलीखां और ज़फ़रखां फ़ौज लेकर राज पीपलांकी तरफ़ गये. लेकिन रास्तेमें धन्ना जादू मरहटेने हमला किया सो ज़फ़रखां बाबी पठान मरहटोंका क़ैदी होगया. जिसको धन्नाने बहुतसा दंड लेकर छोड़ा, इससे राज पीपलांका बचाव हुआ.

विक्रमी १७७२ [हि० ११२७=ई० १७१५] में बैरीशालके मरनेपर इनके दो पुत्र जीतसिंह, व अमरसिंहमें से बड़ा जीतसिंह गद्दी बैठा. जिसने विक्रमी १७८७ [हिजरी ११४३ = ई० १७३०] में मुग़ल बादशाहोंकी फ़ौजको निकाल कर नादोदमें क़ब्ज़ा करलिया. विक्रमी १८११ [हि० ११६७ = ई० १७५४] में जीतसिंहका देहान्त होनेपर उनके पांच पुत्र गैमल्लसिंह, प्रतापसिंह, हमीरसिंह, चन्द्रसिंह, और पहाड़सिंहमें से, गैमल्लसिंहके अपने बापकी मौजूदगीमें मरजाने से प्रतापसिंह गद्दी बैठा. इनसे विक्रमी १८२० [हि० ११७६ या ७७ = ई० १७६३] में दामाजी राव गायकवाड़ने पेशवाके हुक्मके मुवाफ़िक़ नादोद, भालोद, बरीटी, और गोवाली परगनोंकी आमदका आधा हिस्सा ख़िराजमें लेना ठहराया था. इसके दूसरेही वर्ष प्रतापसिंहका देहान्त होगया. जिसके रायसिंह, केसरीसिंह और अजबसिंह तीन कुंवर थे. उनमें से रायसिंह गद्दी बैठा.

---

(१) इस सन्के एक वर्ष पहिले अहमदशाह मरगया था और उसका बेटा मुहम्मदशाह इस वक्त बादशाह था – इसके सिवाय तारीख़ फ़रिश्तह व मिरात सिकन्दरी वग़ैरह में इन लड़ाइयोंका ज़िक्र नहीं है– मूलमें गुजरात राजस्थानके मुवाफ़िक़ लिखागया है.

रायसिंहने अपने भाईकी बेटीकी शादी दामाजी राव गायकवाड़से करदी; जिससे गायकवाड़ने इनके चारों परगनोंमें से अपना आधा हिस्सा छोड़कर विक्रमी १८३८ [हि० ११९५ = ई० १७८१ में] चालीस हज़ार रुपया ख़िराज लेना ठहरालिया. उसके पीछे फ़तहसिंह राव गायकवाड़ने ४९००० रुपये ख़िराज लेना मुक़र्रर किया. फिर विक्रमी १८४३ [हि० १२०० = ई० १७८६] में अजबसिंहने अपने बड़े भाई राजसिंहसे राज्य छीन लिया. अजबसिंहके वक़ विक्रमी १८५० [हि० १२०७ या ८ = ई० १७९३] में ७८००० रुपया सालियाना ख़िराज गायकवाड़को देना क़रार पाया.

विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = ई० १८०३] में अजबसिंहका देहान्त हुआ. इसके बाद इसके चार पुत्र माधवसिंह, रामसिंह, नाहरसिंह और अभयसिंह रहे, जिनमेंसे माधवसिंह तो अपने बापकी ज़िन्दगीमें ही मरगया. रामसिंह हक़दार था, परन्तु नाहरसिंह ज़बरदस्तीसे गादी बैठगया, तब सब सर्दारोंने मिलकर नाहरसिंहको निकालकर रामसिंहको गद्दी बिठाया. यह शराब पीने और अय्याशीमें मशगूल रहता था. इसके वक़में गायकवाड़ने फ़ौज भेजकर डेढ़ लाख रुपया फ़ौजख़र्च लिया; और ९६००० रुपया सालियाना ख़िराज लेना ठहराया. परन्तु इसकी बदचलनीसे विक्रमी १८६७ [हि० १२२५ =ई० १८१०] में गायकवाड़ने इसको गादीसे ख़ारिजकरके इसके भाई प्रतापसिंहको गवर्नमेंन्ट अंग्रेज़ीकी रायके मुवाफ़िक़ मुक़र्रर किया, फिर थोड़ेही दिनोंबाद गद्दीसे उताराहुआ राजा रामसिंह मरगया और नाहरसिंहने जो पहिले ख़ारिज करदियागया था, दुबारा गादीपर बैठनेके लिये मुल्कमें लूटमार शुरू की. तब विक्रमी १८७० [हि० १२२८= ई० १८१३] में गायकवाड़ने फ़ौज भेजकर इस रियासतका बंदोबस्त अपने हाथमें लेलिया, और फ़ैसला होनेपर इन दोनों भाइयोंका हक़ साबित करनेको कहा; बहुत कुछ तकरार होनेबाद विक्रमी १८७८ [हि० १२३६ = ई० १८२१] में बड़ोदाके रेज़िडेन्ट साहबने प्रतापसिंहको ख़ारिज करके नाहरसिंहको राजपीपलां पर क़ायम किया; नाहरसिंह अंधा था, और इसके तीन बेटों लालसिंह, वैरीशाल, जगतसिंहमें से लालसिंह तो पहलेही मरगया था. इससे रेज़िडेन्ट साहबने वैरीशालको गादीपर बिठाया और इस रियासतको गायकवाड़की हुकूमतसे निकालकर अपनी संभालमें लिया. वैरीशालके बालक होनेके सबब गवर्नमेंन्ट अंग्रेज़ीने रियासतका काम अपनी निगरानीमें रखकर विक्रमी १८९४ [हि० १२५३ = ई० १८३७] में वैरीशालको इख़्तियार दिया.

इस अर्सेमें राजपीपलां ज़िलेके बदमाश भील वगैरह लोगोंका पक्का बन्दोबस्त होकर रियासतकी बहुत कुछ तरक़्क़ी हुई. फिर बहुत दिनों बाद वैरीशाल और उस

के कुंवर गंभीरसिंहके आपसमें नाइत्तिफ़ाक़ी हुई जिससे सर्कार अंग्रेज़ीने विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] में बैरीशालको रियासती बंदोबस्तसे अलग करके मुल्की इख्तियार गंभीरसिंहको दिया. विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में बैरीशाल मरगया और गंभीरसिंह गादी बैठा. इसके बेटे छत्रसिंह, चंद्रसिंह, कीर्तिसिंह, खुमानसिंह और पांचवां बालक है जिसका नाम नहीं रक्खा गया. अंग्रेज़ी सर्कारसे इस रियासतके लिये ११ तोपोंकी सलामी है और इनके तहतमें १५१४ मीलमुरब्बा ज़मीन है जिसमें ६७० गांव बसते हैं और ११५००० आदमी की आबादी है. सालियाना आमदनी ६००००० रुपया है, जिनमें से ६५००१ रुपया तो ख़िराज और तेरह हज़ार तीनसौ इक्कावन रुपया गायकवाड़के उन गावोंकी एवज़ जो इस ज़िलेके गांवोंसे बदलेगये, सर्कार अंग्रेज़ीकी मारफ़त कसरातके तौरपर गायकवाड़को दिया जाता है. इस रियासतमें पहाड़ी हिस्सा ज़ियादह है, और यहांकी आबोहवा भी ख़राब बतलाते हैं. गुजरातदेशमें गोहिल राजपूतोंकी और भी छोटी बड़ी बहुतसी रियासतें व ठिकाने हैं जिनके नाम मुख्तसर हाल समेत नीचे लिखेजाते हैं.

भावनगर, पालीतांणा, बला, लाठी, लींबड़ी, बावड़ी, धरवाला, भोजाबदर, समढीआला, चबारिया, खीजड़िया (डोसाजी) बांगधरा, गदूला, काटोडिया, सोनगढ़, पांचवड़ा, टोडा, चित्राबाव, रांमणका, रत्नपुर, धांमणका, गणधौल.

भावनगर.

मोखड़ा गोहिल तक का हाल तो राजपीपलांकी तवारीख़में लिखागया— जब वह पीरमके टापूमें रहकर लड़ाईके वक्त मुसल्मानोंके हाथसे मारागया, तब उसका बड़ा बेटा डूंगरसिंह (अपनी ननिहाल) पाली तांणामें, और छोटा समरसिंह राजपीपलांमें जा रहा. डूंगरसिंहने अपनी राजधानी गोघा बंदरमें बनाई, जिसके मरजाने बाद विक्रमी १४२७ [हि० ७७१ = ई० १३७०] में उसका बेटा बीसा गादी बैठा. फिर विक्रमी १४५२ [हि० ७९७ = ई० १३९५] में बीसाके मरने पर उसका बेटा कान्हा राज्यका मालिक हुआ. कान्हाके पीछे सारंग विक्रमी १४७७ [हि० ८२३ = ई० १४२०] में गादी बैठा. इसको अव्वल अहमद शाह गुजराती की फ़ौज ख़िराजके लिये क़ैद करके लेगई. तब उसका काका रामजी राज्यका मालिक बनगया. कुछ दिनों पीछे सारंग, किसी तदबीरसे मुसल्मानोंकी क़ैदसे निकलकर पताई रावलके पास चांपानेर चला गया, और उसकी मदद से अपने काका रामाको निकालकर राज्यपर क़ब्ज़ा करलिया. इसने उमराला में राजधानी बनाकर अपना पद, रावल रक्खा. विक्रमी १५०२ [हि० ८४९ =

ई० १४४५] में सारंगका देहान्त हुआ, और उसका बेटा शिवदास गादी बैठा. यह विक्रमी १५२७ [हि० ८७५ = ई० १४७०] में राज्यका कारबार अपने बेटे जेठाको सौंपकर मरगया. जेठा विक्रमी १५५७ [हि० ९०५-६ = ई० १५००] में मरा. जिसके दो पुत्र थे, उनमेंसे बड़ा रामदास गादी बैठा और छोटे गंगदासको चमारड़ीका पट्टा जागीरमें मिला. उसके वंशवाले चमारड़िया गोहिल कहलाते हैं.

रावल रामदासकी शादी चित्तौड़के महाराणा सांगाकी बेटीके साथ हुई थी; इसलिये जब महाराणा और सुल्तान महमूद गुजरातीसे लड़ाई हुई उसवक्त महाराणाकी फ़ौजमें वह भी शामिल था और उसी लड़ाईमें मारागया. इसके मरनेका संवत् गुजरात राजस्थानमें विक्रमी १५९२ [हि० ९४१ = ई० १५३५] लिखा है, जो ठीक नहीं मालूम होता; क्योंकि यह महमूदकी ही लड़ाईमें मारागया तो उसके मरनेका संवत् विक्रमी १५७६ (१) [हि० ९२५ = ई० १५१९] होना चाहिये जिसमें कि वह लड़ाई हुई.

रामदासके तीन बेटे सुल्तान, शार्दूल और भीम थे. जिनमें से सुल्तान गद्दी बैठा और शार्दूलको अधेवाड़ा और भीमको टांणा जागीरमें मिला. सुल्तान विक्रमी १६२७ [हि० ९७८ = ई० १५७०] में मरा. उसके ४ बेटोंमें से १ बीसा गद्दी बैठा; २ देवाको पछेगांव, ३ बीराको अवाणियां और मोकाको नवाणियां जागीरमें मिला.

वीसाने अपनी राजधानी सिहोरमें बनाई और विक्रमी १६५७ [हि० १००९ = ई० १६००] में वैकुंठवासी हुआ. इसके तीन बेटोंमेंसे बड़ा धूना सिहोरका मालिक हुआ, और दूसरे, भीमको हलियाद, और तीसरे कशियाको भड़ली मिली. विक्रमी १६७६ [हि० १०२८ = ई० १६१९] में काठी राजपूतोंके हाथसे धन्ना मारागया, और इसका बेटा रत्न गादी बैठा, जो विक्रमी १६७७ [हि० १०२९ = ई० १६२०] में मरगया. उसके ३ बेटे, हरभम, गोविन्द और सारंग थे, जिन में से हरभम गादी बैठनेके दो वर्ष बाद मरगया. उसका भाई गोविन्द विक्रमी १६७९ [हि० १०३१ = ई० १६२२] में गादीका मालिक हुआ. वह विक्रमी १६९३ [हि० १०४६ = ई० १६३६] में मरगया; उसके बाद उसका बेटा छत्रशाल गादी पर बैठनेको तय्यार हुआ, लेकिन हरभमका बेटा अखेराज (अक्षयराज) जिस का हक़ बालक होनेके सबब गोविन्दने छीनलिया था, अपने बापकी रियासत पर

(१) मिरात सिकन्दरी व तारीख़ फ़रिश्तह वग़ैरह कई किताबोंमें इस लड़ाईका यह संवत् १५७६ सही लिखा है.

क़ाबिज़ होगया, और छत्रशालको भंडारिया पट्टेकी जागीर दी. विक्रमी १७१७ [हि० १०७० = ई० १६६०] में अखेराजका देहान्त हुआ, और इसके चार बेटों में से बड़ा रत्न तो गादी बैठा, और हरभमको बरतेज, विजयराजको थोरड़ी और सुल्तानको मुगलाणां जागीरमें दियागया. रत्न विक्रमी १७६० [हि० १११५ = ई० १७०३] में इस दुन्याको छोड़गया, और उसका बेटा भावसिंह गादी बैठा. इसने विक्रमी १७८० [हि० ११३५ = ई० १७२३] में समुद्रके किनारे भावनगर बसा कर वहां अपनी राजधानी बनाई जिसके नामसे अब यह रियासत मशहूर है.

विक्रमी १८२१ [हि० ११७७ = ई० १७६४] में भावसिंहका इन्तिकाल होगया. इसके पांच पुत्र थे, १ अखेराज, २ बीसा, ३ रामदास, ४ गोवा पांचवेंका नाम मालूम नहीं. अखेराज गद्दी बैठा, और छोटे बेटोंको वला, हलियाद, रामपुर, और रत्नपुर वगैरह जागीरमें दियेगए. रावल अखेराजका देहान्त विक्रमी १८२९ [हि० ११८६ = ई० १७७२] में हुआ, और उसका बेटा बख़्तसिंह गादी बैठा, जिसको आताभाई भी कहते हैं. इसने काठियों वगैरह लोगोंके साथ बहुतसी लड़ाइयां कीं. विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = ई० १८०३] में बख़्तसिंहने अपनी रियासत अंग्रेज़ी सर्कारकी रक्षामें सौंपी. विक्रमी १८६१ [हि० १२१९ = ई० १८०४] में गायकवाड़की फ़ौजने सिहोरको घेरकर ख़िराज तलब किया, लेकिन उस वक़्त बख़्तसिंहने कुछ नहीं दिया और फ़ौज पीछे लौट गई. फिर दूसरे वर्ष गायकवाड़ी फ़ौजने भावनगरको आघेरा और दसदिन तक तोपोंका हमला होनेबाद बख़्तसिंहसे ख़िराज लेकर गायकवाड़ने फ़ौज हटाई. विक्रमी १८६४ [हि० १२२२ = ई० १८०७] में पेश्वा, गायकवाड़ और जूनागढ़के नव्वाब तीनोंको भावनगरसे सालाना ख़िराज देना सर्कार अंग्रेज़की मार्फ़त क़रार पाया. बख़्तसिंहने सर्कश होजानेके कारण राजका कारबार अपने पुत्र विजयसिंहको विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में देदिया, और विक्रमी १८७३ [हि० १२३१ = ई० १८१६] में उसका देहान्त हुआ.

उसका बड़ा बेटा १ विजयसिंह गादी बैठा, २ बापाको बावड़ी वगैरह तीन गांव और ३ राजसिंहको दो गांव मिले. विजयसिंहके वक़्में काठियोंने बड़ा उपद्रव मचाया जिसमें सैकड़ों आदमी मारेगये. इसका बड़ा बेटा भावसिंह विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] में मरगया, जिसके ४ बेटे अखेराज, जशवन्तसिंह, रूपसिंह और देवीसिंह थे. भावसिंहका छोटाभाई नाहरसिंह था, जिसको विजयसिंहने भींभावदर वगैरह गांव जागीरमें दिये. विजयसिंह विक्रमी १९०९ [हि० १२६८

= ई० १८५२] में परलोक सिधारा और इसका पोता अखेराज गादी बैठा. इसके छोटे भाई जशवन्तसिंहको टीमाणा, रूपसिंहको बरल और देवीसिंहको रामधरी वगैरह गांव विजयसिंहने अपनी मौजूदगीमें ही दे दिये थे. अखेराज दो वर्ष राज्य करके विक्रमी १९११ [हि० १२७० = ई० १८५४] में परलोक सिधारा. इसके कोई पुत्र न होनेसे उसका छोटा भाई जशवन्तसिंह गादी बैठा. वह विक्रमी १९२७ चैत्र शुक्ल १० [हि० १२८७ ता० ९ मुहर्रम = ई० १८७० ता० ११ एप्रिल] को दो पुत्र तख़्तसिंह व जवानसिंह छोड़कर मरगया, जिनमेंसे तख़्तसिंह गादी बैठा जो इस वक़ मौजूद है.

इस राज्यकी ज़मीन २८६० मीलमुरब्बा, ६४५ गांव, ४००००० चार लाख आदमियोंकी आबादी, और २५००००० पच्चीस लाख रुपया सालाना आमदनी, और रियासतकी सलामी ११ तोपें हैं. परन्तु वर्तमान महाराजकी ख़ास ४ ज़ियादह होकर १५ तोपोंकी सलामी होती है. यहांकी ज़मीन कुछ पहाड़ी और कुछ बराबर है; राज्य समुद्रके किनारे पर होनेसे यहां ब्योपार अच्छा होता है. और सर्कार गायकवाड़ व जूनागढ़के नव्वाबको १५४४९९ रुपया सालाना ख़िराजके तौर दियाजाता है.

पालीताणा.

सेजक गोहिलका हालतो, जो मारवाड़से जूनागढ़के राजाके पास आरहा था, राज पीपलांकी तवारीख़में लिखागया है; उसके दूसरे बेटे शाहने जिसको गिरनारके राजा ने चौबीस गांवों सहित मांडवी दी थी, गारियाधरको राजधानी बनाया. उसके बाद सुरजन गादी बैठा, जिसके दो पुत्र थे. उनमेंसे बड़ा अर्जुन तो पिताके पीछे गद्दीबैठा और कुम्भाको सेदरड़ी जागीरमें मिली. अर्जुनके बाद नोधणने राज्य पाकर रियासतको बड़ी तरक़्क़ी दी.

नौधणके बाद भारा, बन्ना, शिवा, हद्दा, खांधा, और दूसरा नौधण, एक दूसरे के पीछे गादीपर बैठे; इनके बाद दूसरा अर्जुन, दूसरा खांधा, दूसरा शिवा, क्रमसे गादी बैठे. यह शिवा काठियोंसे लड़कर मारागया; इसके बाद सुर्तान, तीसरा खांधा, पृथ्वीराज, तीसरा नौधण, दूसरा सुर्तान अनुक्रमसे गद्दी बैठे. सुर्ताननने अपने गोत्री अल्लूभाईको मारकर पालीताणा लेलिया था. लेकिन उसके भाई ऊनड़ने उससे छीन लिया. ऊनड़ भावनगरके विरुद्ध काठियोंका मददगार होगया था, लेकिन फिर बख़्तसिंह और ऊनड़ने सुलह करली. ऊनड़ विक्रमी १८७७ [हि० १२३५ = ई० १८२०] में परलोक सिधारा, तब इसका बेटा चौथा खांधा पालीताणाका मालिक हुआ. विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४०] में

चौथा खांधा मरगया और उसका कुंवर नौधण गादीपर बैठा. यह विक्रमी १९१७ [हि० १२७६ = ई० १८६०] में मरा. इसका पुत्र प्रतापसिंह गादीपर बैठा, और उसी संवत् में मरगया. उसका पुत्र सूरसिंह, गादीपर बैठा जो विक्रमी १९४२ [हि० १३०१ = ई० १८८५] में मरगया. इसके दो पुत्र- बड़ा मानसिंह जोअब ठाकुर हैऔर छोटा सावन्तसिंह. इस रियासतमें ३०५ मीलमुरब्बा ज़मीन और १०० गांव हैं जिनमें ५०००० आदमियोंकी बस्ती और ५००००० रुपया सालियानाकी आमदनी है, इसमेंसे १०३६४ रुपया सालाना ख़िराज हरसाल जूनागढ़के नव्वाब तथा गायकवाड़को दियाजाता है.

वला.

वलाको पहिले बल्लभीपुर कहते थे, जहां सूर्यवंशी राजाओंका राज था और अब जिनकी सन्तानके क़ब्ज़ेमें उदयपुर मेवाड़का राज्य है. वलाके ठाकुर गोहिल राजपूत हैं.

भावनगरके रावल भावसिंहके तीसरे बेटे वीसाको वलाकी जागीर मिली. वीसा ने बहादुरीसे अपनी जागीरको ज़ियादह बढ़ाया और विक्रमी १८३१ [हि० ११८८ = ई० १७७४] में मरगया. उसका बड़ा बेटा नथ्थू गादी पर बैठा और उससे छोटे कायाभाईको पाटी पीपलां और राजस्थली, तथा दूसरे जेठी भाईको बावड़ी गांव जागीरमें मिला. नथ्थू भाईका देहान्त विक्रमी १८५५ [हि० १२१३ = ई० १७९८] में हुआ. उसका बेटा मघाभाई गादी पर बैठा.

विक्रमी १८७१ [हि० १२२९ = ई० १८१४] में वह मरगया. उसके हरभम, पथाभाई और अदाभाई तीन बेटे थे. हरभम गादी पर बैठा, पथाको दरेड़ और अदाको कानपुर वग़ैरह की जागीर मिली. विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = ई० १८३८] में वह मरगया और उसका बेटा दौलतसिंह गादी पर बैठा. लेकिन विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४०] में उसके मरजानेसे उसके काका पथाभाईको गादी मिली. यह भी विक्रमी १९१० [हि० १२६९ = ई० १८५३] में मरगया. तब इसका बेटा पृथूराज गादी पर बैठा और विक्रमी १९१७ [हि० १२७६ = ई० १८६०] में मरगया. तब इसका बेटा मेघराज, छोटी उम्रमें गादी पर बैठा, लेकिन विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] में इसका भी देहान्त होगया. तब इसका बेटा बख़्तसिंह ११ वर्षकी उम्रमें गादी पर बैठा, जो अब वलाका ठाकुर कहलाता है.

इस रियासतमें ज़मीन १४० मीलमुरब्बा और ४१ गांव हैं जिनमें १७०००

आदमियों की बस्ती और १६५००० सालाना रुपयेकी आमदनी है. इसमें से ९२०२ रुपया गायकवाड़ और जूनागढ़के नव्वाबको ख़िराजमें दियाजाता है.

लाठी.

लाठीका तवारीख़ी हाल इस तरहपर है- जब सेजक गोहिल मारवाड़से जूनागढ़में आरहा था तब उसके तीसरे बेटे सारंगको जूनागढ़के राजाकी तरफ़से आर्थीलाकी जागीर २४ गावोंसमेत मिली थी.

सारंग के बेटे जस्साके तीन बेटोंमें से बड़े नौधणने लाठीमें क़ब्ज़ा कर लिया. इसके पीछे इसका छोटा भाई भीम गद्दीपर बैठा. भीमके दूदा और अर्जुनसिंह दो बेटे थे. दूदा जूनागढ़के राजा मंडलीकसे लड़कर मारागया, और उसका कुंवर लूणशाह जिसका दूसरा नाम जीजीबावा था लाठीमें गद्दी पर बैठा; और उसके पीछे उसके बंशके लोग कई पीढ़ियों तक वहांके मालिक रहे. विक्रमके १८ शतकके अन्तमें लाखा लाठीका ठाकुर था. इसने अपनी बेटीकी शादी दामा गायकवाड़के साथ करदी. इसकी गद्दीपर सूरसिंह बैठा, उस वक्त सर्कार अंग्रेज़ और गायकवाड़से लाठीके साथ कुछ इक़रार हुआ; लेकिन यह ठिकाना बिलकुल बरबादीकी हालतमें था. ठाकुर बख़्तसिंहका बेटा बापूभाई इसवक्त यहांका ठाकुर है.

इस रियासतमें ४८ मीलमुरब्बा ज़मीन और ८ गांव हैं जिनमें ७००० आदमियोंकी बस्ती और ७०००० रुपया की सालाना आमदनी है, जिसमेंसे २००७ गायकवाड़ और जूनागढ़के नव्वाबको ख़िराज दियाजाता है. इस ठिकानेकी सिलसिलेवार बंशावली मालूमनहीं और नीचे लिखीहुई जागिरोंकी (जो यहांके राजाके भाई बेटोंकी हैं) वंशावली व तवारीख़ नहीं मिलती.

इस नक़शेमें गोहिल राजपूतोंके वह ठिकाने लिखेजाते हैं- जो गोहिलवाड़ेमें लाठीके भाई बंधु और नव्वाब जूनागढ़के ख़िराज गुज़ार मानेजाते हैं.

नम्बर	नाम ठिकाना	तादाद ज़मीन मीलमुरब्बा	तादाद गांव	तादाद बाशिंदगान	तादाद आमदनी	तादाद ख़िराज	कैफ़ियत
१	लींबड़ा	७	४	२०००	२५०००)	१२१२)	यहांके मुख्य ठाकुर भगवानसिंह, प्रताप सिंह और हरीसिंहहैं
२	बावड़ी व धरवाला	४	४	२२००	१००००	१५३०	
३	भोजावदर	३	१	११००	५०००	५५०	
४	समढीआला	२	१	१४००	६५००	२२८०	
५	खेजड़िया	१	१	१०००	२४००	४२७	
६	बांगधरा	२	१	५००	२०००	१०४	
७	गदूला	२	१	४००	३०००	११६	
८	काटोडिया	१	१	३००	२०००	२२१	
९	सोनगढ़	१	१	११००	२०००	५७२	यहां गोहिलवाड़े का पोलिटिकल् एजंट रहता है और ३०० एकड़ ज़मीन स्टेशनके इहाते में आनेके सबब ३०० रुपये हरजाना सर्कार अंग्रेज़ी देतीहै.

पांचवड़ा.

यहांके तअ़ल्लुक़ेदार बाछाणीशाखाके गोहिल, भावनगरके भाइयोंमें से हैं, एक

गांव ४५० आदमियोंकी बस्ती, १५०० रुपये सालाना आमदनी, और २४१ रुपया ख़िराज गायकवाड़ और जूनागढ़के नव्वाबको दियाजाता है.

टोडाटोडी.

यहांके तअल्लुक़ेदार बाछाणी शाखाके गोहिलराजपूत, भावनगरके भाइयों मेंसे हैं. इनकी ज़मीन १ मीलमुरब्बा, ३ गांव और ६०० आदमियोंकी बस्ती, और ३५०० रुपया सालाना आमदनी है, जिसमें से १७५ रुपया ख़िराज गायकवाड़ और जूनागढ़के नव्वाबको देनापड़ता है.

बावड़ी बाछाणी.

ये दो गांव १ मील चौरसमें हैं जिनमें ६०० आदमीकी बस्ती और ३००० रुपयेकी आमदहै, ख़िराज गायकवाड़ सर्कार और जूनागढ़को ३५४ रुपये देते हैं– ये तअल्लुक़ेदार बाछाणी शाखाके गोहिल राजपूत हैं.

चमारड़ी.

यहांके तअल्लुकेदार भावनगरके भाइयोंमें से गोहिल राजपूत हैं; इनके ताबेमें ७ मील मुरब्बा ज़मीन, २१०० आदमियोंकी बस्ती और ९००० हज़ार रुपये की आमदनी है; गायकवाड़ और जूनागढ़के नव्वाबको ५५८ रुपये ख़िराज सालाना देते हैं.

पछेगांव.

यहांके तअल्लुक़ेदार भावनगरके भाइयोंमें से देवाणी शाखाके गोहिल राजपूत हैं, इनके क़ब्ज़ेमें १० मील मुरब्बा ज़मीन, ३ गांव, ३७०० आदमियोंकी बस्ती और ३७००० रुपये सालानाकी आमद है; ख़िराज गायकवाड़ और जूनागढ़के नव्वाबको २८०२ रुपये देते हैं.

चित्रावाव.

इस तअल्लुक़े में १ मीलमुरब्बा ज़मीन, १ गांव, ३२५ आदमियोंकी बस्ती और ६००० रुपया सालियाना आमदनी है गायकवाड़ और जूनागढ़के नव्वाबको ५२९ रुपया सालियाना ख़िराज देते हैं. ये तअल्लुक़ेदार भावनगरके भाइयोंमें से गोहिल राजपूत हैं.

रामणका.

इसमें २ मीलमुरब्बा ज़मीन ५०० आदमियोंकी बस्ती और सालियाना आमदनी १५०० रुपया और गायकवाड़ व जूनागढ़के नव्वाबको ६७२ रुपये ख़िराज देते हैं. ये तअ़ल्लुक़ेदार भावनगरके भाइयोंमें से गोहिल जातिके राजपूत हैं.

बड़ोद.

यह तअ़ल्लुक़ा गोहिल राजपूत, भावनगरके भाइयोंका है. इनके क़ब्ज़ेमें २ मीलमुरब्बा ज़मीन, ९०० आदमियोंकी बस्ती और २३०० रुपयेकी आमद है; ख़िराज गायकवाड़ और जूनागढ़के नव्वाबको देते हैं.

धोला.

यहांके तअ़ल्लुक़ेदार देवाणी शाखाके गोहिल राजपूत हैं. उनकी एक मील चौरस ज़मीन, ३०० आदमियोंकी बस्ती और १५०० रुपये की आमद है. गायकवाड़ और जूना गढ़के नव्वाबको ३८४ रुपये सालाना ख़िराज देते हैं.

गढाली.

यह तअ़ल्लुक़ा पांच मील चौरस ज़मीन, ३ गांव, २२०० आदमियोंकी बस्ती और ९००० रुपये की आमदका है. गायकवाड़ और जूनागढ़के नव्वाबको २००० रुपया ख़िराज यहांसे दियाजाता है.

रत्नपुर धामणका.

यहांके तअ़ल्लुक़ेदार भावनगरके भाइयोंमें से गोहिल जातिके राजपूत हैं. ३ मीलमुरब्बा ज़मीन, ३ गांव ९०० आदमियोंकी बस्ती और सालियाना आमदनी ५९०० रुपयेकी है, और ख़िराज ९०३ रुपये सालियाना गायकवाड़ और जूनागढ़के नव्वाबको देतेहैं.

गणधोलका.

यहांके तअ़ल्लुक़ेदार गोहिल जातिके राजपूत, पालीताणांके भाइयोंमेंसे हैं. जिनका १ गांव, २०० आदमियोंकी बस्ती, सालियाना आमदनी २००० रुपया है, और १११ रुपया ख़िराज गायकवाड़ व जूनागढ़के नव्वाबको देते हैं. यहां इस वक़्त हरीसिंह तअ़ल्लुक़ेदार है.

ऊपर, गोहिलोंकी उन रियासतोंका हाल हमने लिखा है जो कि गुजरातमें

गोहिलवाड़ेके नामसे प्रसिद्ध हैं. राजपीपलांकी एक रियासत गोहिलवाड़ेसे कुछ फ़ासलेपर नर्मदा (नर्बदा) के किनारे आबाद है.

इन गोहिल राजपूतोंमें से भावनगरवाले चित्तौड़के बापा रावलके पुत्र गुहिलकी सन्तानमें होनेका दावाकरते हैं लेकिन हमारे क़ियासमें यह बात ठीक नहीं मालूम होती. क्योंकि भावनगर वालोंके पूर्वज (अव्वल) रावल रामशाहकी शादी महाराणा सांगाकी बेटीके साथ हुई थी और इसीतरह हालमें भी राजपीपलांके महाराजने अपनी बेटीकी शादीके लिये वैकुंठवासी महाराणा श्री सज्जनसिंहके पास पैग़ाम भेजाथा. सो अगर यह लोग बापारावलकी औलादमें से होते तो क्षत्रियोंके रिवाजके बर्ख़िलाफ़ ऐसा इरादह किस तरह करते.

बूंदीका इतिहास

यह रियासत उत्तरकक्षांश २५ डिगरी ५९ मिनट ६० सेकन्ड और दक्षिणकक्षांश २४ डिगरी ५९ मिनट ३० सेकंड, उसका पूर्व देशांतर ७० डिगरी २१ मिनट और ३५ सेकन्ड है, पश्चिम देशांतर ७५ डिगरी १८ मिनट ६ सेकंड है; इसका रक्बा (क्षेत्रफल) २२१८ मील (चौरस) मुरब्बा, लंबाई ज़ियादहसे ज़ियादह ८५ मील और चौड़ाई ५० मीलहै.

यह राज्य एक चतुर्भुज विषमकोणके आकारकाहै; इसमें बस्ती कुल्ल २५४७०१ आदमियोंकी है, जिसमें हिंदू २४२१०७, मुसल्मान ९४७७, क्रिश्चियन ७, जैनी ३१०१ और सिक्ख ९ हैं. इसकी सीमापर उत्तरमें जयपुर और टौंकका राज्य, दक्षिण पूर्वमें बूंदी और कोटा दोनों राज्योंके बीच बिलकुल दूरीमें अलग करनेवाली चम्बल-नदी (१) स्वाभाविक है, पश्चिममें मेवाड़ है. इस राज्यमें दक्षिण पश्चिमसे पूर्वोत्तरकी तरफ़ पहाड़ियोंकी एक दोहरी शाख़ चलीगई है जो बूंदीकी मध्यशाख़ है और देशको अक्सर बराबर हिस्सोंमें जुदा करती है.

श्रृंग अर्थात् चोटीकी सबसे बड़ी उंचाई समुद्रके धरातलसे १७९३ फुट उस जगहपरहै जोसतूरके बड़े ग्रामसे अक्सर ५ मील दक्षिण पश्चिममें है—बूंदीके आस-पास औसत दर्जे उंचाई समुद्रसे १४०० फुट और आसपासकी नीची ज़मीनसे ऊपर ६०० फुट है. देशकी अक्सर ज़मीन पहाड़ी और किसी क़द्र साफ़ (मैदान) भी है.

---

(१) राजपूतानाके गज़ेटियरमें इस नदीको बिलकुल्ल अलग करनेवाली लिखा है-लेकिन बाज़ जगह ख़ास एकहीं रियासतकी अमल्दारीमें होकर निकली है.

नदियां इस राज्यमें चम्बल और बनास बहती हैं लेकिन उनमें गिरने वाली छोटी नदियां मेज, सूख, घोड़ापछाड़, वग़ैरह बहुत हैं. तालाब भी इस राज्यमें बहुत हैं जिनमें से जैतसागर, फूलसागर, दुघारीका तालाब, (१) कनकसागर, हींडोलीका तालाब, और नेनवांके दोनों तालाब वग़ैरह बड़े हैं— इस राजमें सब गांव ८३९ हैं जिनकी कुल आमदनी क़रीब १०१४००० दस लाख चौदह हज़ार रुपयेकेहै.

तवारीख़

कहते हैं कि परशुरामजीने जब २१ बार क्षत्रियोंका नाश किया, और राज के योग्य कोई राजा न रहा, तब वशिष्ठ ऋषिने आबूपर्वत पर यज्ञ किया और अग्निकुंडसे चार जातिके क्षत्री पैदा किये.

बूंदीके इतिहास वंशभास्कर तथा वंशप्रकाश वग़ैरहमें इस तरह लिखा है कि कलियुगके एक (१०००) हज़ार वर्ष बीतने बाद सब राजा प्रजा बौद्धमत मानने लगे और वेदमतके मनुष्य बहुत थोड़े रहजानेसे वशिष्ठ ऋषिने आबू पहाड़ पर यज्ञ करके अग्निकुण्डसे चार जातिके राजपूत १ परिहार (पड़ियार) २ चाहमान (चहुवान) ३ चालुक्य (सोलंखी) और ४ प्रमार (पंवार) निकाले; उसी यज्ञमंडपमें केलेका पेड़ खड़ा किया था, उसके फूलके डोड़ेसे एक और राजपूत पैदा किया जिसका नाम डोडिया हुआ.

इस बयानमें बहुतसा फेरफार है. मनु, याज्ञवल्क्य, विष्णु, हारीत और नारद इत्यादि बीस स्मृति, और वेदके भाष्य देखेगये और इतिहासमें महाभारत, बाल्मीकिरामचरित्र, श्रीमद्भागवत, देवीभागवत, और दूसरे भी कई पुराण व संस्कृतकी पुस्तकें बांची और सुनीगई हैं लेकिन उनमेंसे किसीमें भी ऊपर लिखा हुआ ज़िक्र नहीं मिला. तथापि इन पांचों ख़ानदान व राजपूतोंका हाल कोई घड़त नहींहै. ऐसा मालूम होताहै कि क़रीब २००० वर्ष पहिले जब बौद्धमतकी वृद्धि थी, तब पांच राजपूतों को जो बौद्धमती होगये होंगे उपदेश से वेदके मज़हबपर लाये और प्रायश्चित करने बाद वेद पढ़नेके लायक़ बनाकर उन्हीं राजपूतोंकी सहायतासे ब्राह्मणोंने अपना बल बढ़ाकर वेदमत फिर जारी कियाहोगा; धीरे २ दूसरे राजपूत भी उन राजपूतोंके साथ होकर वेदको माननेलगे होंगे. इस प्राचीन इतिहासका ठीक २ निर्णय करना बहुतही कठिनहै.

चाहमान (चहुवान) के वंशका हाल.

चाहमान (चहुवान) ने पुष्करमें अपनाराज्य जमाया और आशापुरा देवी-

(१) इस दुघारीमें सिल्लीके पत्थरकी जिस पर नाईके उसतरे व चाकू आदि औज़ार तेज़ कियेजाते हैं, बड़ी प्रसिद्ध खान है.

को कुलदेवी माना. उनके २ सामंत देव इनके ३ महादेव इनके ४ कुबेर इनके ५ बिन्दुसार, ६ सुधन्वा, ७ बीरधन्वा, ८ जयधन्वा, ९ बीरसिंह, १० बरसिंह, ११ बीरदंड, १२ अरिमंत्र, १३ माणिक्यराज, १४ पुष्कर, १५ असमंजस, १६ प्रेमपूर, १७ भानुराज, १८ मानसिंह, १९ हनुमान, २० चित्रसेन, २१ शंभू, २२ महासेन, २३ सुरथ, २४ रुद्रदत्त, २५ हेमरथ, २६ चित्रांगद, २७ चन्द्रसेन, २८ वत्सराज, २९ धृष्टद्युम्न, ३० उत्तम, ३१ सुनीक ३२ सुबाहु, ३३ सुरथ, ३४ भरत, ३५ सत्यकी, ३६ शत्रुजित, ३७ विक्रम, ३८ सहदेव, ३९ बीरदेव, ४० बसुदेव, ४१ बासुदेव, ४२ रणधीर, ४३ शत्रुघ्न, ४४ शालिवाहन, ४५ कृतवर्म्मा, ४६ सुवर्म्मा, ४७ दिव्यवर्मा, ४८ यौवनाश्व, ४९ हर्यश्व, और ५० अजयपाल हुए, जिसने अपने नामसे अजमेर शहर बसाया.

बाज़े लोग कहते हैं कि एक वक्त ऋषियोंने पुष्कर क्षेत्रके पास अजमेध (१) यज्ञ किया था और उस जगह एक शहर आबाद किया जिसका नाम उसी यज्ञके नामसे अजमेध रक्खा, और वह बिगड़कर अजमेर होगया. ये दोनोंबातें ज़बानी और क़िस्से कहानीके तौरपर हैं, किसी मोतबर संस्कृतकी पुस्तकमें नहीं मिलतीं. इस राजा (अजयपाल) की और भी कई बातें कहानियोंके तौरपर प्रसिद्ध हैं लेकिन वह बे फ़ायदा समझीजाकर यहां नहीं लिखीगई.

इनके पुत्र ५१ भटदलन उनके ५२ अनंगराज उनके ५३ भीमदेव इनके ५४ गोगादेव. इन गोगादेवको राजपूताना और हिन्दुस्थानके दूसरे इलाक़ोंमें भी भाद्रपद कृष्ण ९ को पूजते हैं और इनकी मिट्टीकी मूर्ति घोड़ेपर सवार बनाकर कुम्हार वग़ैरह लोग नवमीके दिन घरों २ में लेजाते हैं, उस वक्त घरवाले उस मूर्तिपर अपने हाथकी बंधीहुई राखियोंको (२) डालते हैं और दही भी उस मूर्ति और कुम्हारपर छिड़कते हैं, और नाज तथा पैसा और कपड़ा भी कुम्हारको देते हैं. लोगोंका अक़ीदा (धार्मिक विश्वास) है कि ये गोगादेव सर्पके अवतारथे और इनके पूजनेसे सांप नहीं काटता. उनको ज़ियादह माननेका कारण यह है कि गोगादेव मुसल्मानोंसे लड़कर बड़ी बहादुरीके साथ मारेगये.

इनके बेटे ५५ शुभकरण हुए उनके ५६ उदयकरण उनके ५७ जसकरण उनके ५८ हरिकरण उनके ५९ कीर्तीश उनके ६० बालकृष्ण उनके ६१ हरिकृष्ण उनके ६२ रामकृष्ण उनके ६३ बलदेव उनके ६४ हरदेव उनके ६५ भीम उनके ६६ सहदेव

---

(१) जिसको आगमें होमतेहैं उसीके नामसे वह यज्ञ मशहूर होता है, इस जगहपर अज याने बकरेको ब्राह्मणोंने होमाथा इसीलिये अजमेध कहागया.

(२) श्रावण शुक्ल १५ के दिन जो राखीका (रक्षाबन्धन) त्योहार होता है, आपसमें राखी बांधते हैं.

उनके ६७ रामदेव उनके ६८ वसुदेव उनके ६९ श्यामदेव उनके ७० हरिदास उनके ७१ महीधर उनके ७२ वामदेव उनके ७३ श्रीधर उनके ७४ गंगाधर उनके ७५ महादेव उनके ७६ शारङ्गधर उनके ७७ मानसिंह उनके ७८ चक्रधर उनके ७९ शत्रुजित् उनके ८० हलधर उनके ८१ महाधनु उनके ८२ देवदत्त उनके ८३ दामोदर उनके ८४ काशीनाथ उनके ८५ लीलाधर उनके ८६ धरणीधर उनके ८७ रमणेश उनके ८८ भगवद्दास इनके ८९ कृष्णदास उनके ९० शिवदास उनके ९१ हरिपूर्ण उनके ९२ देवीदास उनके ९३ कर्मचंद्र उनके ९४ रामदास उनके ९५ महानन्द.

महानन्दने सांभर (१) में अपनी राजधानी बनाई. जिनके ९६ विष्णुदास ९७ महाराम ९८ रेवादास ९९ अमरसिंह १०० गंगादास १०१ मानसिंह १०२ विश्वंभर १०३ मथुरादास १०४ द्वारिकादास १०५ माधवदास १०६ सुदास १०७ बीरभद्र १०८ गोपाल १०९ गोविन्ददास ११० माणिक्यराज.

माणिक्य राजके दो पुत्र हुए बड़े १११ हनुमान (२) और छोटे सुग्रीव हनुमानकी सन्तान पूर्बी चहुवान कहलाई. माणिक्य राजकी गद्दीपर उनका दूसरा बेटा सुग्रीव बैठा और साम्हरका राजा हुआ. इनके पुत्र ११२ अंगद ११३ केसरी ११४ जयंत ११५ जगदीश ११६ जयराम ११७ विजयराम ११८ कृष्ण ११९ जितयुद्ध १२० गोवर्द्धन १२१ मोहन १२२ गिरिधर १२३ उदयराम १२४ भरत १२५ अर्जुन १२६ शत्रुजित्.

उनके १२७ सोमदत्त १२८ दुःष्यन्त १२९ भीम १३० लक्ष्मण १३१ परशुराम १३२ रघुराम १३३ समरसिंह १३४ माणिक्यराज इनके दशपुत्र १३५ (१) मुहुःकर्म्मा २ लालसिंह ३ हरिसिंह ४ शार्दूल ५ पूर्णराज ६ मौक्तिकराज ७ निर्वाण ८ कृष्णराज ९ लसनराज और १० प्रबालराज नामके बेटे थे, से मुहुः कर्म्मा सांभरकी गद्दीपर बैठे. १३५(२) लालसिंह ने मद्रदेशको फ़तह किया इससे इनके वंशवाले माद्रेचे चहुवान कहलाते हैं.

---

(१) इस पुरीका शुद्ध नाम शाकंभरी है, महानन्द राजाको स्वप्नमें देवीने कहा कि तुम उस जगह राजधानी बनाओ तब महानन्दने शाकंभरी देवीके नामका शहर और मंदिर बनवाया,

(२) बूंदीकी तवारीख़में लिखा है कि हनुमान छोटे भाईको राजदेकर पटनेकी तरफ़ चलगये और वहांका राज बहादुरीसे लेलिया और उन्हीके वंशमें बेदला कोठारिया पारसोली वगैरह उदयपुरके राज्यमें चहुवान उमरावहैं, लेकिन बेदला कोठारिया और पारसोलीके सर्दार अपने को राजा पृथ्वीराजके काका कन्हकी औलादमें बतलाकर मैनपुरी इटावासे मेवाड़में आना बयान करतेहैं-

३ हरिसिंह के बेटे धूंधेटके नामसे धुधेड़िये चहुवान कहलाये, और ४ शार्दूलके २ बेटोंमें से बड़े घनजीके तो पंजाबी चहुवान और छोटे टांकजीके टांक चहुवान कहलाये. पूर्णराज ५ वेंने भदावरमें राज किया और उनकी औलादके भदौरिये चहुवान कहलाये. छठे मौक्तिकराजने जालौर में राज किया जिसका दूसरा नाम सोनगिरी है, जिससे उनके वंशवाले सोनगरे चहुवान कहलाये.

७ निर्वाण जिनकी औलादके निर्वाणे चहुवान कहलाये. ये ज़ियादह मारवाड़से उत्तरकी तरफ़ बसते हैं इनमें देवजी नामी चहुवानने आबू और सिरोही का राज्य लिया और उनके वंशवाले देवड़ा चहुवान कहलाये. कृष्ण राज ८ वेंने पांड्य देशमें राज्य किया इससे इनके वंशके पंडिये चहुवाण कहलाये-

९ वें लसनराजने गुजरातमें राजकिया जिसके गुजराती चहुवान कहलाये.

१० वें प्रवालराजने बक्सरमें राजकिया इससे उनके वंशके लोग बक्सरिया चहुवान कहलाये.

माणिक्यराजके मुहुःकर्म्मा सांभरके राजाथे उनके दोबेटे एक रामचन्द्र और दूसरे खिच्चीराज हुए. १३६ रामचन्द्र सांभरके राजा हुए खिच्चीराजसे खिच्ची चहुवान कहलाये, ये लोग राघवगढ़ वगैरह में ज़ियादहहैं जिसको खिच्चीवाड़ा कहते हैं. रामचन्द्रके १३७ संग्रामसिंह हुए इनके १३८ शिवादत्त उनके १३९ भोगादत्त उनके शिवदत्त और चित्रक दो पुत्रहुए. उनमेंसे शिवदत्त १४० सांभरके राजाहुये. चित्रकके वंशके चित्ते कहलाये. १४० शिवदत्त के १४१ रुद्रदत्त उनके १४२ ईश्वर इनके आठ बेटे थे, १४३ उमादत्त मयूरध्वज; बहुलक, गजलदेव, तिलवाट, चीबक, सर्पट और चित्रराज. इनमेंसे उमादत्त १४३ सांभरके राजाहुये. मयूरध्वजसे मोरेचे कहलाये. मयूरध्वज के बेटे तो बहुत थे परन्तु पर्वत १४४ और तुष्टनपाल १४४ वें के वंशके जुदे २ नामसे कहलाये. पर्वतके पब्बिये और तुष्टनपाल सांचोर देशके राजा थे इससे उनके वंशवाले साचोरे कहलाये. बहुलकसे बहोले, गजलदेवसे गयेले, तिलवाटसे तिलवाड़े, चीबकसे चीबे, सर्पट, से सर्पाटे, और चित्रराजसे चित्रावे कहलाये. चित्रराजके बेटोंमें से इन सात बेटोंके वंशके चहुवान नीचे लिखे हुए नामोंसे मशहूर हैं:-

चांडालीकके चंडालिये, चाहुड़के चाहोड़े, बटराजके बडेरे, मौरिकके मौरी, इन मोरियोंमें से चित्रांग नाम मौरीने चित्तौड़ (१) का क़िला बनवाया था. रैवतके रेवड़े, चंदनके चांदने, बंकटके बंकटे कहलाये.

---

(१) यह बात बूंदीकी तवारीख़के सिवाय और कहीं देखनेमें नहीं आई.

ईश्वर १४२ के बड़े बेटे उमादत्त १४३ वें जो सांभरके राजा थे, उनके चार पुत्र हुए, बड़े चतुर १४४ सांभरके राजा हुए. चतुर के तीन पुत्र हुए, पहिले सोमेश्वर १४५ सांभरके राजा हुए. दूसरे तुलसीरक्षक, इनके वंशके तुलसी रच्छण कहलाये.

सोमेश्वर १४५ के दो बेटे हुए बड़े भरत १४६ और छोटे उरथ, बड़े भरतकी सन्तानमें चहुवान एथ्वीराज दिल्लीवाले थे जिनके वंशमेंसे रणथम्भोरवाले हमीरकी औलादमेंके अब नीमराणे पर मुस्तार हैं. और दूसरे उरथ १४६ के चक्रपाणि १४७ इनके देवकीनन्द १४८ उनके यशोदानन्द १४९ इनके नंदनंद १५० इनके केशवदास १५१ इनके मोहन १५२ इनके समुद्रराज १५३ इनके गोपाल १५४ इनके १५५ भौमचन्द्र इनके १५६ भानुराज जिनका दूसरा नाम आस्थिपाल (१) हुआ, इनके १५७ एथ्वीपाल हुए. इनके १५८ सेनपाल इनके १५९ शत्रुशल्य इनके १६० दामोदर इनके १६१ नृसिंह इनके १६२ हरिवंश उनके १६३ हरजस उनके १६४ सदाशिव उनके १६५ रामदास उनके १६६ रामचन्द्र इनके १६७ भागचन्द्र उनके १६८ रूपचन्द्र उनके १६९ मंडन (२) हुए. इनके १७० आत्माराम इनके ६७१ आनन्दराज इनके १७२ रणधवल उनके १७३ सर्दार उनके १७४ जोधराज उनके १७५ कालिकरण इनके १७६ रत्नसिंह इनके १७७ कोल्हण इनके १७८ आशुपाल इनके १७९ विजयपाल इनके १८० बंगदेव इनके बेटे १८१ देवासिंह हुए, जिन्होंने बूंदीमें अपना राज स्थापन किया.

अब देवासे पहिलेकी जो वंशावली हमने लिखीहै उसमें बहुतसे कियासी

---

(१) बूंदीकी तवारीख़ वंशप्रकाशमें लिखा है कि भानुराजको जंगलमें एक गंभीरारंभ राक्षस खागया. उसकी कुलदेवी आशापुराने भानुराजको उसकी हड्डियां एकट्ठी करवाकर अपनी करामातसे जिलादिया, इस लिये उसका दूसरा नाम 'अस्थिपाल' रक्खा जिससे अस्थिपाल की सन्तान हाड़ा चहुवान कहलाती है.

(२) बूंदीकी तवारीख़में लिखा है कि मांडलगढ़का क़िला इन्होंने अपने नामसे मेवाड़में बनवाया, लेकिन मांडलगढ़ ज़िलेके आमलोगोंमें इस तरह मशहूरहै कि एक मांड्या नाम भीलको पारस मिलगया जिसके छूनेसे लोहा सोना होजाता था, उसके तीरका फल पारस पत्थर पर घिसनेसे सोनेका होगया, उसीजगह चांदना नाम गूजर बकरी चरारहा था; भीलने गूजरसे कहा कि मेरातीर इस पत्थरसे रंगत बदलकर ख़राब होगया. गूजर समझदार था वह पत्थर भीलसे लेकर दौलतमन्द बनगया और वहां एक क़िला बनवाया जिसका नाम उस भीलके नामसे मांडलगढ़ रक्खा. यहबात भी कहानीके तौर पर ही मशहूर है लेकिन अस्ली हाल इसका नहीं मिलता "कि किस समयमें किसने बनवाया था."

नाम मिलाये हुए मालूम होते हैं, क्यौंकि राजा अजयपालसे जिसने अजमेरका शहर आबाद किया, बंगदेव तक १३० राजाओंके नाम लिखदिये हैं, और इसी तरह दूसरी तरफ़ उससे दिल्लीवाले पृथ्वीराज चहुवान तक ७० नाम वंशप्रकाश ही में लिखे हैं और हमीरकाव्यमें, जो सम्वत् १५४० विक्रमी [हि० ८८८ = ई० १४८३] से पहिलेका बनाहुआ है, अजयपालसे पृथ्वीराज तक २५ ही नामहैं, और एक पत्थरकी प्रशस्ति जो मेवाड़में बीझोलियांके पास कामा और रेवणां गांवके पास राजा पृथ्वीराजके समयकी हमको मिलीहै, उसमें जयपालको जयराज लिखाहै, उससे लेकर पृथ्वीराज तक २६ पीढ़ियोंके नाम लिखेहैं. अगर ऊपर लिखी हुई वंशावली प्रशस्तिसे मिलाई जावे तो पीढ़ियों में फ़र्क़ पड़ता है. इस लिये बूंदीकी तवारिख़ में हाड़ा देवसिंहसे रावराजा रामसिंह तक वंशावली सही समझनी चाहिये. कोई दूसरी सिलसिले वार वंशावली सुबूतके साथ नहीं मिली, जो बूंदीकी तवारिख़में लिखा था उसीकी नक़्ल यहां दर्ज कीगई है.

देवसिंह हाड़ा जो किसीतरह ज़मीन छूट जाने बाद भैंसरोड़के पहाड़ी ज़िलेमें रहता था उसकी एक बेटी की मंगनी महाराणा लक्ष्मणसिंहके कुंवर अरिसिंह के साथ हुई थी. जब अरिसिंह शादी करने को देवसिंह के मकान पर गये तब देवासिंहकी हालत ख़राब देखकर कहा कि हम तुम्हारे मददगार हैं जहां कहीं मौक़ा देखो मुल्कपर क़ब्ज़ा करलो. देवसिंहने कहा कि बूंदी में जो मीने रहते हैं वे अक्सर आसपासके मुल्कोंमें बहुतसा नुक़्सान कर बैठते हैं अगर आपकी मदद मिले तो मैं इस मुल्क पर क़ब्ज़ा करलूं; अरिसिंहने देवसिंहके साथ अपनी कुछ फ़ौज करदी.

बूंदीका क़ब्ज़ा

कुल मीनोंका सर्दार जैता बूंदीमें रहता था जिसको दग़ासे देवसिंहने मारडाला. उसके ख़ानदानके लोगोंको भी जो शराबके नशेमें ग़ाफ़िल थे क़त्ल करके देवसिंहने बूंदी पर अपना क़ब्ज़ा करलिया, उस वक़्से आजतक बूंदीमें हाड़ोंका राज चला आता है.

यह बात नैनसी महताने तो इसी तरह लिखी है परन्तु बूंदीकी तवारीख़ में दूसरे तौरपर लिखी है. हमको नैनसी महताका लिखना मोतबर मालूम होता है क्यौंकि इस समयकी बातोंसे नैनसी महताका लिखना उस ज़मानेके कुछ क़रीबका है; उसके लिखने से ३०० वर्ष पहिले बूंदी पर हाड़ोंने क़ब्ज़ा किया था,

और अब इस बातको ५२५ वर्षसे भी ज़ियादहका अर्सा हुआ. मीनों को मारकर बूंदीका दग़ासे लेना तो बूंदीकी तवारीख़से भी साबित होता है, लेकिन बूंदीवाले चित्तौड़से मदद लेकर जाना नहीं लिखते, जिसका यह कारण है कि अब अक्सर लोग अपना मेवाड़के मातहत रहना छिपाते हैं.

देवसिंह हाड़ा बूंदीमें राज जमाकर चित्तौड़ आया और दुबारा कुंवर अरिसिंहसे मदद लेकर बूंदीके तमाम ज़िलेको अपने क़ब्ज़ेमें लाया. प्रतिवर्ष चित्तौड़के महाराणाओंकी सेवामें रहने लगा और मेवाड़के अव्वल दर्जेका सर्दार कहलाया (१).

इसके दो पुत्र हुए बड़ा हरिराज १८२ बंबावदेमें देवसिंहकी गद्दी पर बैठा और छोटा समरसिंह बूंदीका जागीरदार रहा. इस समरसिंहके तीसरे बेटे जैतसिंहने कोटिया भीलकोमारकर कोटा शहर आबाद किया, (२) उसके वंशके जैतावत हाड़े कहलाते हैं. हरिराज और समरसिंह दोनों बंबावदेमें मुसल्मानोंसे लड़कर मारेगये और समरसिंह १८२ के बाद नापा १८३ गद्दीपर बैठा. इस के तीन पुत्र हमीर १८४।१ नौरंग १८४।२ स्थिरराज १८४।३ हुए. इस के पीछे हमीर जिसे हामा कहते हैं गद्दीपर बैठा. इसके बरसिंह १८५ और लालसिंह दो बेटे हुए. बरसिंह १८५ गद्दी बैठा. लालसिंहकी बेटीकी शादी चित्तौड़के महाराणा खेताके साथ ठहरी थी. जिसवक़्त खेता शादीकरनेको गये तब लड़ाई होकर लालसिंह और महाराणा खेता दोनों मारेगये. यह हाल विस्तार सहित महाराणा खेताके बयानमें लिखागया है.

बरसिंहके बाद बैरीशाल १८६ गद्दीपर बैठा इसके समयमें मांडूके बादशाह होशंगने बूंदीको घेर लिया था. उस लड़ाईमें बैरीशाल बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर मारागया, इसके बाद भांडा १८७ गद्दीपर बैठा इसके नारायणदास, नरबद और नरसिंह तीन बेटे हुये; नारायणदास १८८ गद्दीपर बैठा. इसके वक़्तमें समर्क़न्द नाम मुसल्मान ने बूंदीपर क़ब्ज़ाकरके भांडाको मार डाला, लेकिन नारायणदासने मौक़ा देखकर उसे व दाऊदको क़त्लकरके बूंदीमें अपना राज जमाया. यह तीन भाई थे १ नारायणदास २ नर्बद ३ नृसिंह. नारायणदासके पुत्र १ सूर्यमल्ल २ रायमल्ल ३ कल्याणमल्ल, और सूर्यमल्लके सुरतान थे. नर्बदके अर्जुन, भीम, पूर और मोकल, चार बेटे और एक कर्मवती बाईथी जो महाराणा संग्रामसिंहको विवाही गई थी–अर्जुनके सुर्जण, अखे-

---

(१) बूंदीकी तवारीख़में मेवाड़के मातहत रहना बिलकुल नहीं लिखा, इस बातको हम आगे लिखेंगे जिससे बूंदीवालोंका हाड़ा देवसिंहसे लगाकर रावसुर्जण तक मेवाड़के ताबे रहना पायाजाता है.

(२) यह बात बूंदीकी तवारीख़से लिखी है वरनाकोटेका आबाद होना पहिले से पायाजाता है.

राज, खांधल और राम, चार पुत्र हुए. विक्रमी १५८४ [हि० ९३३ = ई० १५२७] में उसका देहान्त होनेपर सूर्यमल्ल १८९ गद्दी बैठा, जो महाराणा रत्नसिंहके हाथसे मारागया और महाराणा उसके हाथसे क़त्लहुए (एष्ठ८). विक्रमी १५८८ [हि० ९३७ या ३८ = ई० १५३१ में] सूर्यमल्लके बेटे सुर्तान १९० को गद्दी मिली, जो बिल्कुल कमअक्ल और ज़ालिम था. इस वास्ते विक्रमी १६११ [हि० ९६१ = ई० १५५४] में महाराणा उदयसिंहने उसको बूंदीसे निकालकर सुर्जण १९१ को राव बनाया और रणथंभोरकी क़िलेदारी भी दी (एष्ठ = ६९). जब क़िला चित्तौड़ फ़तह करने बाद बादशाह अकबरने रणथंभोरका क़िला भी विक्रमी १६२५ [हि० ९७६ = ई० १५६८] में लेलिया तो उस वक़्से बूंदीके राव राजा सुर्जण मेवाड़की मातहतीसे निकलकर बादशाही नौकर बने, लेकिन बूंदीकी तवारीख़ वंशप्रकाशके लिखनेवालेने मेवाड़की मातहतीसे उनको हर सूरतमें बचाया है.

इस बातके लिखने और नलिखने से मेवाड़का फ़ायदा और बूंदीका नुक्सान नहीं है, लेकिन तवारीख़ की ख़ामी मिटानेके लिये कई दलीलें (प्रमाण) नीचे लिखी जाती हैं. यह तो पत्थरकी प्रशस्तियों वग़ैरहसे अच्छी तरह साबित है कि चित्तौड़का पूर्वी ज़िला आंतरी ऊपरमाल और खैराड़ वग़ैरह विक्रमी १२०० [हि० ५३८ = ई० ११४३] से लेकर विक्रमी १६०० [हि० ९५० = ई० १५४३] तक चहुवान राजपूतोंके क़ब्ज़े में रहा है. कदाचित् राजा पृथ्वीराज चहुवानके ज़मानेमें इन ज़िलोंकी हुकूमत अलहदा रही हो तो तअज्जुब नहीं, लेकिन उसके बाद हमेशा मेवाड़की मातहती में उन लोगोंका रहना पायाजाता है.

अव्वल देवा हाड़ाने मेवाड़की मदद पाकर बून्दी मीनों से अपने क़ब्ज़े में ली, और मेवाड़के मातहत रहनेका हाल नैनसी महताने लिखाहै, जिसने पत्ता जयमल्लकी ख़ैरख़्वाही की तारीफ़ और सुर्जणकी नमकहरामीकी निंदा की है. बाबर बादशाह भी तुज़कबाबरीमें रणथंभोर का मेवाड़के मातहत होना लिखताहै जिससे बूंदीके मालिकोंकारणथंभोर पर क़िलेदार होना ही साबित होता है.

नैनसी महता लिखता है कि सुर्जणका बड़ा बेटा दूदा मुसल्मानोंकी नौकरीको नापसन्द करके महाराणा उदयसिंहके पास आ रहा, जिससे बादशाह अकबरने नाराज़ होकर उसकी जगह सुर्जणके दूसरे बेटे भोजको बूंदीका मालिक बनादिया; तब दूदा ने महाराणाकी फ़ौजमें रहकर बादशाही फ़ौजसे बहुतसी लड़ाइयां कीं. यह बात मौतमदख़ांकी तवारीख़ इक़बालनामे जहांगीरीके एष्ठ ३०८ से भी सही मालूम होती है जो लिखता है—कि

"रावसुर्जणका बेटा दूदा बादशाही दरगाहसे भागकर बूंदीमें लूटमार करने लगा.

इसलिये सफ़दरख़ां, बहादुरख़ां, खांदीराय जादव वग़ैरह दूदाको सज़ादेनेके लिये भेजे गये- (एष्ठ ३१४). सुर्जणका बेटा दूदा अपने बाप और भाईको बादशाही दर्गाह में छोड़कर बूंदीकी तरफ़ भागा और वहां जाकर लूटमार करने लगा. उसके मुक़ाबिले को जैनख़ां कूका (धायभाई) मुक़र्रर कियागया, जिसकी मातहतीमें सुर्जण, भोज और रामचन्द्र वग़ैरह भेजेगये- (एष्ठ ३२३). शाहबाज़ख़ां. बादशाही अफ़सर राणाके सिपहसालार दूदाको बादशाही दर्गाहमें ले आया, लेकिन बादशाहने फ़र्माया कि यह लाचारीसे हाज़िर हुआ है ख़ुशीसे नहीं आया; ऐसा ही हुआ कि वह कुछ दिनों में भागगया."

इसी तरह मौलवी अब्दुल हमीद लाहौरी अपनी तवारीख़ बादशाहनामेकी पहिली जिल्दके एष्ठ ३६९ में, जब कि रणथम्भोरका क़िला राजा विट्ठलदास गौड़को दिया गया बादशाह शाहजहांके हुक्मसे, इस तरह लिखता है कि "राणाउदयसिंहने इस क़िलेकी निगहबानी राव सुर्जणको दी थी, जो कि उसका मौतबर नौकर था."

ख़ुद बूंदीके एक बड़े मौतबर सत्य वक्ता कवि चारण मिश्रण सूर्यमल्लने अपने ग्रन्थ वंशभास्कर बुद्धसिंह चरित्रमें महाराणाको चित्तौड़का क़िला आबाद करने की इजाज़त बादशाहकी तरफ़से मिलनेके वक्त बादशाहको बुद्धसिंहका मनाकरना लिखा है, जहांका एक छन्द नीचे लिखा जाता है:-

छन्द हरिगीत

बुधसिंह रान पठाय बिन्नति चित्रकूट बसावहीं ।
किय भेट दम्म त्रिलक्ख ओ अपनो निदेस उठावहीं ॥
नय मन्द हड्ड नरिंद यों सुनि कुम्म कानिहु नांकरी ।
जयसिंह उक्त प्रपंच जानतहूं यहै कथ उच्चरी॥ १०९२ ॥
वह दुर्ग अक्बरसाह रन करि अब्दद्वादश मेलयो ।
हम आदि बहुतन रान तजि तब सीस साहनकोंन यो ॥
वह चित्रकूट बसायकें पुनि रान फैल प्रचारि है ।
अवनीप हिन्दुन फोरि अंकुर साह नाह बिसारि है॥ १०९३ ॥

अर्थ- बहादुरशाह सलाह लेता है कि ऐ बुद्धसिंह राणाने चित्तौड़ आबाद करनेकी दर्ख़्वास्त भेजी है और तीन लाख रुपये नज़र करके अपना हुक्म (बादशाहका) उठाता है. नीतिके विरोधी हाड़ा राजाने कछवाहे राजा जयसिंहका (जिसकी मारफ़त यह अर्ज़ हुई थी.) लिहाज़ नहीं किया और यह कहा कि मैं जयसिंहका फ़रेब

जानता हूं. वह क़िला (चित्तौड़) अकबर बादशाहने बारह वर्ष लड़कर लिया था

(चार महीने और कुछ दिन लड़ाई हुई थी, सूर्यमल्लको इस लड़ाईकी तवारीख़ नहीं मिली) तब हम (बूंदीके राव) से आदि बहुतोंने राणाको छोड़कर बादशाहोंके सामने सिर झुकाया (महाराणाकी नौकरी छोड़कर बादशाही नौकर बने) इस चित्तौड़को आबाद करके फिर राणा फ़ैल करेगा और हिंदू राजाओंका अंकुर उगाकर बादशाहोंकी ताबेदारी छोड़ेगा.

सिवाय इसके बूंदी वालोंका बादशाही नौकर होजाने पर भी उदयपुरसे मौतबर नौकरोंके मुवाफ़िक़ ही लिखावट वग़ैरामें बरताव रहा. जिसकी ताईद उन तहरीरोंसे होतीहै जिनकी नक्लें उसी ज़मानेकी उदयपुरके दफ़्तरमें मौजूद हैं, पहिले सब उमराव सर्दारोंसे कुछ अधिक बूंदी वालोंको मेवाड़से परवाने ही (१) लिखे जाते थे. और महाराणा दूसरे अमरसिंहने ख़रीता (२) लिखना जारी किया.

किताब मआसिरुल उमरामें नव्वाब सम्सामुद्दौला, शाहनवाज़ख़ां, राव सुर्जणहाड़ाके बयानमें लिखताहै कि "राव सुर्जण हाड़ा फ़िर्क़ेका आदमी है जो चहुवान क़ौमकी एक शाख़है, और हाड़ोती रणथंभोरके ज़िलेको कहतेहैं जो अजमेर (राजपूताना) के सूबेके मातहत है. ये लोग इस जगह ज़मींदार हैं. सुर्जण शुरूमें राणाके नौकरोंमेंसे था; अकबर बादशाहके वक़्तमें क़िले रणथंभोरके भरोसे पर ग़ुरूर करने लगा था. बादशाह चित्तौड़ लेनेके पीछे अपने १३ वें जुलूसमें लश्कर लेकर रणथंभोर आये, सामना होने पर सुर्जणने बादशाही ताबेदारी इख़्तियार की.

इन ऊपर लिखेहुए कारणोंसे देवसिंह हाड़ासे लेकर सुर्जणके अहद विक्रमी १६२५ [हि० ९७६ = ई० १५६८] तक बूंदीकी रियासत मेवाड़के मातहत रही

---

(१) परवानेकी नक़्ल,—स्वस्ति श्री उदयपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्रीजयसिंहजी आदेशात् बूंदी कोटा सुथाने राव श्री अनिरुद्धसिंहजी कस्य सुप्रसाद लिख्यते अथा अठारा समाचार भलाछै आपणा समाचार सदा कहावज्यो अपर रावलो कागल आयो समाचार मालूम हुवा कागद समाचार कहावता रहज्यो.

(२) ख़रीतेकीनक़्ल, स्वस्ति श्री आगरा सुथाने महाराव राजाश्री बुधसिंहजी जोग स्वस्ति श्री उदयपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री अमरसिंहजी लिखावतं जुहार बंचजो— अठारा समाचार भलाहै रावला सदाभला चाहिजे अपर रावला कागल आया सुखहुवो लड़ाई सम्बन्धीका समाचार लिख्या जो मालूम हुवा लिख्या अठारो साधन करणो ज्यो झालोकान्ह पहली मोखल्याहै अबे टीलो सदा मोखलायहै जो लार भाई तख़्तसिंह मदनसिंह सलामतराय आवेहै अठारो काम राजैसारो करणोहै माहें धणीनचीताईहै राजहै पांचहजारी पांचहजार असवार नोबत रावराजाईरो खिताब बकस्यो जणीरो माहें घणो सुखहुवो अठाउठारो एक व्यवहारहै जुदायगी कांई है सम्वत् १७६४ श्रावण बदी ११ सोमे.

है. जब राव सुर्जण बादशाही नौकर होगये तब बादशाह अकबरने पत्ता सीसोदिया और जयमल्ल राठौड़की तारीफ़ और राव सुर्जणकी निन्दा की. इससे सुर्जण बनारसमें जारहे और उनके बड़े बेटे दूदा और छोटे भोजमें बिगाड़ हुआ; क्योंकि दूदा मुसल्मानोंसे नफ़रतके कारण महाराणा उदयसिंहके पास चला आया था, जिससे भोजको बादशाहने बूंदीका राज्य दिया.

इस पर दूदाने अच्छी तरह लड़ाइयां कीं लेकिन बादशाही मददसे बूंदी पर भोज क़ायम रहा और दूदाको अन्तमें किसीने ज़हर देकर मारडाला (१). सुर्जण विक्रमी १६४२ [हि० ९९३ = ई० १५८५] में काशी क्षेत्रमें मरगये. बूंदी वाले तो अपनी तवारीख़में उनका दर्जा बहुत कुछ लिखते हैं परन्तु आईन अकबरीमें अबुलफ़ज़्लने इनका दो हज़ारी ज़ात और सवार मन्सब लिखा है जो सुर्जणके मरने बाद अकबरके ४० जुलूसकी फ़िहरिस्तमें दर्ज है.

भोज तो पहिलेसे ही बूंदीके राजा होगये थे लेकिन इस समयसे राज्यके पूरे मालिक कहलाये. दूदाके तीन बेटे चतुर्भुज, अमरसिंह और श्यामलसिंह थे.

सुर्जणने काशीमें एक महल और बाग़ बनवाया था जो अब तक मौजूद है. जिस वक़ सुर्जण मरे भोज गद्दी पर बैठे; इस वक़ इनकी उमर ३४ वर्षकी थी और इनके चार बेटे- रत्न, हृदयनारायण, केशवदास और मनोहर हुए. विक्रमी १६६४ आषाढ़ शुक्ल ४ [हि० १०१६ ता० २ रबिउलअव्वल = ई० १६०७ ता० २६ जून] को भोजका इन्तिक़ाल हुआ और इनके पीछे राव रत्नसिंह (१९३) गद्दी पर बैठे जिनको बादशाह जहांगीरने सरबलन्दराय और रावरायका ख़िताब और पांच हज़ारीमन्सब दिया था.

रत्नसिंहके गोपीनाथ, माधवसिंह, हरिसिंह, जगन्नाथ चार बेटे थे. गोपीनाथ तो २५ वर्षकी उम्रमें विक्रमी १६७१ [हि० १०२३ = ई० १६१४] में मरगये. उनके शत्रुशाल, इन्द्रशाल, बैरीशाल, राजसिंह, मुहकमसिंह, महासिंह, उदयसिंह, सूरसिंह, श्यामसिंह, केशरीसिंह, कनकसिंह, नगराजसिंह, रामसिंह, १३ बेटे थे. जब रावरत्न और मुल्ला मुहम्मदलारी दक्षिणमें बुरहानपुरकी क़िलेदारी पर थे उस वक़ जहांगीरसे बाग़ी होकर शाहज़ादा ख़ुर्रम बुरहानपुरके क़रीब पहुंचा तो क़िला लेनेके लिये शाहज़ादेकी फ़ौजने हमले किये. (२) उस वक़ राव रत्नके बहुतसे राजपूत मारे

(१) बीजापुरके बहमनी बादशाहकी मदद लेनेको जाते थे सो मालवेमें देवगांवके क़रीब भोजके किसी मिलावटी आदमीने ज़हर देदिया (विक्रमी १६३८ [हि० ९८९ = ई० १५८१] में).

(२) इस लड़ाई को बूंदीकी तवारीख़ में लिखदिया है कि शाहज़ादेको गिरफ्तार कर लिया और जहांगीरके मांगनेपर उसके भेजनेमें टालादूली की अख़ीरमें राव रत्नके बेटे माधवसिंहने निकाल दिया, इस तरहकी बातें बहुत कुछलिखी हैं लेकिन तुज़ुकजहांगीरी इक़बा-

गये पर इन्होंने क़िला नहीं दिया. शाहज़ादा तो आगे चलागया था और बादशाही फ़ौज समेत महाबतख़ां और शाहज़ादे परवेज़के पहुंच जानेसे उसकी फ़ौज भी चली गई; इससे राव रत्नकी बड़ी बहादुरी दिखाई दी. फिर शाहज़ादे और बादशाही फ़ौजोंके चलेआने बाद अंबर हबशीने क़िले बुरहानपुरको आ घेरा जो बहमनी बादशाहोंके बड़े नामी नौकरोंमें से था, राव रत्नने अंबरको भी क़िला नहीं दिया और वह इनके हमलोंसे लाचार होकर भागगया.

विक्रमी १६८२ के आश्विन वा कार्तिक [हि० १०३५ मुहर्रम = ई० १६२५ सेप्टेम्बर] में यह ख़बर सुनकर बादशाह जहांगीरने रावरत्नको पांचहज़ारी मन्सब और रावरायका ख़िताब दिया (१) इसके बाद शाहजहां बादशाह के वक्तमें भी यह दक्षिणकी लड़ाइयोंमें रहे. विक्रमी १६८८ [हि० १०४१ = ई० १६३१] में इनका देहांत होगया. इनके बड़े बेटे गोपीनाथका इन्तिक़ाल तो इनके सामने ही होगयाथा (२) इसलिये गोपीनाथके बेटे शत्रुशाल १९४-२५ वर्षकी अवस्थामें गद्दीपर बैठे, ये बड़े बहादुरथे. उदयपुरके महाराणा जगत्सिंहकी बेटीसे इनकी शादी हुई थी जिसका पूराहाल महाराणा जगत्सिंहके बयानमें लिखाजायगा.

बादशाह शाहजहांने रत्नसिंहके दूसरे बेटे माधवसिंहको कोटा और फला-यता वगैरह परगने जागीरमें देकर ढ़ाई हज़ारी मन्सब दिया जिससे कोटेकी रियासत अलहदा क़ायम हुई. माधवसिंहकी औलाद माधाणी हाड़ा कहलाती है, इनका ज़ियादह हाल कोटेकी तवारीख़ में लिखाजायगा.

विक्रमी १६९९ [हि० १०५२ = ई०१६४२] में बादशाह शाहजहांने अपने शाहज़ादे दाराशिकोहको कन्धारकी हिफ़ाज़तके लिये रवाना किया, जिसको ईरानका बादशाह लेना चाहता था. शाहज़ादेके साथ बड़े २ सर्दारोंको इनाम इक्राम देकर विदाकिया था. उस वक्त राव शत्रुशालको भी घोड़ा और ख़िलअत देकर

लनामे जहांगीरी बादशाह नामा अमलेस्वालिह वैग़रह किताबोंके देखनेसे वही सही मालूम होता है जो हमने ऊपर लिखा.

(१) बूंदीवाले अपनी तवारीख़में सुर्जणको रावराजाका ख़िताब और पांच हज़ारी मन्सब मिलना लिखते हैं, लेकिन फ़ारसी व राजपूतानेकी तवारीख़के हिसाबसे वह ग़लत और रत्नको ही राव रायका ख़िताब मिलना सही पायाजाता है.

(२) गोपीनाथके मरनेका ज़िक्र मौलवी अब्दुलहमीद लाहौरी अपनी तवारीख़ बादशाहनामे की जिल्द पहिली एष्ठ ४०१ में लिखताहै कि "राव रत्नसिंहका बड़ा बेटा गोपीनाथ दुबले बदन होने पर भी ऐसा ताक़तवर था कि दरख़्तकी दो शाखें जो शामियानेके थंभेके बराबर मोटी हों एकपर पैर और दूसरीपर पीठ लगाकर चीरडालता था. वह ऐसेही बेमौक़े ज़ोर करने से थोड़े दिनोंमें मरगया".

उसी फ़ौजमें शामिल किया था और दूसरी दफ़ह विक्रमी १७०२ [हि० १०५५ = ई० १६४५] में शाहज़ादे मुरादबख़्शको शाहजहांने बल्ख़ पर भेजा तब उस फ़ौज में रहकर राव शत्रुशाल हाड़ाने भी बड़ी बहादुरी दिखलाई. फिर विक्रमी १७१५ ज्येष्ठ शुक्ल ९ [हि० १०६८ ता० ७ रमज़ान = ई० १६५८ ता० १० जून] को बादशाह शाहजहांके शहज़ादे दाराशिकोह और औरंगज़ेबमें जो लड़ाई आगरेके इलाके समूनगरके पास हुई उसमें राव शत्रुशाल दाराशिकोहकी फ़ौजमें हरावल के अफ्सर होकर मारेगये.

शत्रुशालके १९६ भावसिंह, भीमसिंह, भारतसिंह, भगवन्तसिंह, भूपसिंह, भूपालसिंह और ईश्वरीसिंह ७ बेटे थे. जिनमें से १९६ भावसिंह ३५ वर्षकी उम्रमें गद्दी पर बैठे. जब यह दिल्लीमें आलमगीर बादशाहके पास गये तो उस वक्त दाराशिकोहकी तरफ़दारीमें शत्रुशालके मारेजानेसे आलमगीर इनसे कुछ नाराज़ था. इस लिये इनके भाई भगवन्तसिंहको जो पहिलेसे आलमगीरके पास रहता था रावका ख़िताब और बूंदीमें से कई परगने निकाल कर दिये.

भावसिंहके कोई बेटा नहीं था; इस लिये उन्होंने अपने छोटे भाई भीमसिंहके बेटे कृष्णसिंहको गोद रखलिया. इसके पहिले भावसिंह वग़ैरह राजाओंसे आलमगीरने एक मज़हब करलेनेका सुवाल कररक्खा था. इसके अनुसार एक फ़ौज जो उसने मंदिर तोड़नेके लिये भेजी वह बूंदीके नज़्दीक केशवरायजीका मंदिर ढाहनेको आई. उस वक्त कुंवर कृष्णसिंह ने बादशाही फ़ौजसे लड़कर मंदिरको बचाया. जब भगवन्तसिंह मरगया और १९७ कृष्णसिंह उसकी गोद बैठा तब भावसिंहने कहा कि कृष्णसिंह अब मेरी गोद नहीं रहेगा. उसका बेटा अनिरुद्धसिंह मेरे बाद बूंदीकी गद्दीपर बैठना चाहिये.

कई दिनोंके बाद बादशाह आलमगीरका शाहज़ादा मुहम्मद अकबर मालवेका सूबेदार होकर उज्जैनमें पहुंचा. विक्रमी १७३४ [हि० १०८८ = ई० १६७७] में कृष्णसिंह भी उज्जैनमें शाहज़ादेके पास गया वहां मज़हबी तक्रारके कारण कृष्णसिंह १९७ को मुसल्मानोंने मारडाला (१) और उसके साथके कई आदमी भी कामआये.

---

(१) मआसिरे आलमगीरी, में लिखा है कि "किशनसिंघ हाड़ा शाहज़ादे मुहम्मद अक्बरकी ख़िदमतमें हाज़िर हुआ. ख़िलअत पहनने के वक्त उसने बेवकूफ़ी से बहुत ज़िद की और वह आप छातीमें ख़ंजर मारकर मरगया और उसके ४ ख़िदमतगार भी अपने से दूने बादशाही आदमियोंको मारकर मारेगये". हमारे क़ियाससे बूंदी वालोंकी तवारीख़में जो लिखाहै वह सच होगा. फ़ारसी तवारीख़ वालोंने शाहज़ादेका क़ुसूर कुछ बयान नहीं किया.

भावसिंह उस वक़ औरंगाबादके पास भावपुरा गांवमें था, जो उसने अपने नाम पर बसाया था उसी जगह वह विक्रमी १७३८ वैशाख कृष्ण ८ [हि० १०९२ ता० २२ रबीउल्अव्वल = ई० १६८१ ता० १२ एप्रिल] को इस दुन्यासे कूचकरगया; और १९८ अनिरुद्धसिंह १५ वर्षकी उम्रमें गद्दी पर बैठा.

जब वह बादशाह आलमगीरके पास दक्षिणमें था उस वक़ विक्रमी १७४० वैशाख शुक्क ५ [हि० १०९४ ता० ४ जमादियुल्अव्वल = ई० १६८३ ता० २ मई] को बादशाहसे अर्ज़ हुई कि बलवनके दुर्जनशाल हाड़ाने बूंदीपर क़ब्ज़ा करलिया है. यह सुन कर बादशाहने ज्येष्ठ कृष्ण ८ [तारीख़ २२ जमादियुल्अव्वल = ता० २० मई] के दिन दुर्जनशालको बूंदीसे निकाल देनेके लिये मुग़लख़ां, महासिंह भदौरियाके बेटे रुद्रसिंह और सय्यद मुहम्मदअली वग़ैरह को ख़िलअत, हाथी, घोड़े, देकर अनिरुद्धसिंहकी मददके लिये बड़ी फ़ौजके साथ बूंदीकी तरफ़ रवाना किया और राव राजाको भी ख़िलअत हाथी और घोड़ा वग़ैरह रुख़्सतके वक़ दिया. अनिरुद्धसिंहने बादशाही फ़ौज समेत बूंदी पहुंचकर दुर्जनशालको तंग किया जिससे वह क़िला छोड़कर भागगया; और अनिरुद्धसिंहने वहां क़ब्ज़ा किया. विक्रमी १७४० भाद्रपद कृष्ण ३० [हि० १०९४ ता० २९ शाबान = ई० १६८३ ता० २३ ऑगस्ट] को मुग़लख़ांकी अर्ज़ी बादशाहके पास दक्षिणमें पहुंची कि "तीन पहर तक लड़ाई होने बाद दुर्जनशाल भागगया और अनिरुद्धसिंह बादशाही फ़ौजकी मददसे बूंदी पर क़ाबिज़ हुआ". अनिरुद्धसिंहने दक्षिणकी कई लड़ाइयोंमें बादशाही फ़ौजके शामिल रहकर बड़ी बहादुरियां दिखलाई, लेकिन आख़िरमें बादशाहने उसको काबुलकी तरफ़ फ़ौजमें भेजदिया, जहां विक्रमी १७५२ [हि० ११०७ = ई० १६९५] में उसका देहान्त हुआ.

इसके १९९ बुद्धसिंह, जोधसिंह, अमरसिंह और विजयसिंह ४ बेटे थे, जिनमें से बड़ा गद्दी पर बैठा और छोटा जोधसिंह विक्रमी १७६३ चैत्र शुक्क ३ [हि० १११७ ता० १ ज़िलहिज् = ई० १७०६ ता० १७ मार्च] को नावमें बैठकर जैतसागर तालाबमें गणगौरिके दिन सैर कररहा था सो मस्त हाथीके हमला करनेसे गणगौरि और साथियों समेत डूबकर मरगया. उस दिन से बूंदीमें गणगौरिका त्योहार नहीं होता.

बुद्धसिंहकी उदयपुर, जयपुर, बेगूं (१) तथा भणाय (२) वग़ैरहमें शादियां हुई थीं. जब बादशाह आलमगीरने बड़े शहज़ादे बहादुरशाहके साथ काबुलकी तरफ़ इसे भेजदिया

---

(१) यह मेवाड़के मातहत एक ठिकाना है.

(२) ज़िले अजमेरके मातहत एक जागीर है.

तो वह उसी शहज़ादेके पास काबुलमें हाज़िर रहा. विक्रमी १७६३ फाल्गुन कृष्ण १४ [हि० १११८ ता० २८ ज़िल्क़ाद = ई० १७०७ ता० २ मार्च] को जब आलमगीर मरगया और उसका दूसरा शहज़ादा आज़मशाह बड़ी भारी फ़ौज लेकर आगरेकी तरफ़ आया, तो बहादुरशाह भी काबुलसे चढ़ाई करके आगरेमें पहुंचा; दोनों भाइयोंमें बड़ी भारी लड़ाई हुई, आज़म अपने बेटे बेदारबख़्त और वालाजाह समेत मारागया और बहादुरशाहने फ़तह पाई. यह हाल बहादुरशाह के ज़िक्रमें मुफ़स्सल लिखा जायगा.

इस लड़ाईमें बुद्धसिंहने बहादुरशाहकी फ़ौजमें रहकर बड़ीबहादुरी दिखलाई थी, जिससे बहादुरशाहने उसको "महाराव राजा" का ख़िताब व कई परगने दिये. बूंदीकी तवारीख़में लिखाहै कि रावराजा बुद्धसिंह ही बहादुरशाहकी फ़ौजके कुल मुख़्तार थे लेकिन यह बात बढ़ावेके साथ लिखी गई है; क्योंकि उस फ़ौजके मुख़्तार बहादुरशाहके शाहज़ादे मुइज़्ज़ुद्दीन और अज़ीमुश्शान थे और पीछे बहादुरशाह भी ख़ुद आपहुंचा जो शिकार खेलनेको बुद्धसिंह समेत गयाहुआ था. आज़म व उसका शाहज़ादा बेदारबख़्त दोनों बहादुरशाहके शाहज़ादों के हाथसे मारेगये. बुद्धसिंहने भी जो कि बहादुरशाहके साथमें था अच्छी बहादुरी दिखलाई.

इस बहादुरीकी मुबारिकबादीमें उदयपुरके महाराणा (दूसरे) अमरसिंहने राव राजा बुद्धसिंहके नाम ख़रीता (१) लिखा था, जिससे पहिले बूंदीवालोंके नाम परवाना भेजाजाता था. बहादुरशाहकी मिहरबानी बुद्धसिंह पर बहुत थी इसलिये जब बहादुरशाहका इन्तिक़ाल होगया तब बुद्धसिंहको निहायत रंज हुआ और बूंदीमें बैठरहे. कुछ अर्से बाद ये तो अपनी ननिहाल गयेथे और कोटेके महाराव भीमसिंहने बादशाह फ़र्रुख़सियरके हुक्मसे बूंदीपर क़ब्ज़ा करलिया.

बुद्धसिंहकी राणी कछवाही तो आंबेर और राठौड़ भणाय चलीगई बाक़ी सब खटले को लेकर राणी चूंडावत मेवाड़के इलाके (बेगूं) में चलीआई, जिन्हें रावत देवीसिंहने बहुत ख़ातिरदारीके साथ रक्खा.

जब राव राजा बुद्धसिंह दिल्ली पहुंचे तो वहां इन्होंने फ़र्रुख़सियरको ख़ुशकरके अपने आदमियोंको भेजकर बूंदी पर क़ब्ज़ा करलिया. लेकिन फ़र्रुख़सियरके मरने बाद विक्रमी १७७६ [हि० ११३१ = ई० १७१९] में कोटेके महाराव भीमसिंहने दुबारा बूंदी छीनली, और बुद्धसिंहको दिल्लीमें भी सय्यदोंने तंग किया.

---

(१) यह ख़रीता पृष्ठ ११० में देखो.

बुद्धसिंह भागकर आंबेर चले आये, लेकिन बेगूंवाली राणी चूंडावतसे यह ज़ियादा खुश थे इस लिये जयपुरकी राणी कछवाहीका बेटा बुद्धसिंहके सामने जब लायागया तो उन्होंने पूछा कि यह किसकाहै? सवाई जयसिंहने कहाकि आपका बेटा और मेरा भानूजा है. बुद्धसिंह कछवाहीजी पर नाराज़ थे इस कारण कहदिया कि मैंतो १२ वर्षसे नामर्दहूं यह लड़का कैसे पैदा हुआ? और जयसिंहसे खानगी तौर पर कहदिया कि इस लड़केको ज़हर देकर मारडालना चाहिये और ये अक्षर भी लिख दिये कि आप जिसको बूंदीका मालिक करेंगे उसीको मैं गोद रक्खूंगा. राणी चूंडावतसे जो अब मेरा बेटा होगा वह इससे छोटा रहेगा.

जयसिंहने उस लड़केको ज़हर देकर मारडाला. बुद्धसिंह तो फ़रेबसे दाव करते थे लेकिन सवाई जयसिंह उनसे भी ज़ियादा फ़रेबी थे. आख़िरकार महाराजा जयसिंहने हाड़ा सालिमसिंहके बेटे दलेलसिंहको बुद्धसिंहके गोद रखकर बूंदीका रावराजा बना दिया. बुद्धसिंह बेगूं चले आये, जहांके रावत देवीसिंहने उनकी यहां तक ख़ातिर की कि अपनी कुल जागीर भी उनके सुपुर्द करदी. इसी सबबसे आज तक बेगूंके परगनेसे ज़मीनका हासिल बूंदीके रुपयोंसे लियाजाता है. रावराजा बुद्धसिंहने एक दोहा मारवाड़ी भाषामें कहा था, जो लिखाजाता है.

दोहा

धर पलटी पलट्यो धरम पलट्यो गोत निशंक ।
देवा हरि यंदराकियो अधिपतियां सिर अंक ॥

अर्थ—ज़मीन भी पलटी और ईमानने भी साथ छोड़ा (बुद्धसिंह का वाममार्गी होना वंशभास्कर में लिखाहै) और गोत्री भी बदल गये उस वक्त हरीसिंहके बेटे देवीसिंहने राजाओंके सिर इहसान किया.

तब रावत देवीसिंहने भी इस दोहे के जवाबमें कहा.

दोहा

देवा दरियावांतणी होड न नाडां होय ।
जो नाडो पाजां छले तो दरियाव न होय ॥

अर्थ—देवीसिंह कहता है कि समुद्र की बराबरी नाडा नहीं कर सक्ता, अगर नाडेका पानी कीनारोंसे बाहरभी छलकने लगे तो भी समुद्र नहीं हो सक्ता; अर्थात् हम आपकी बराबरी नहीं कर सक्ते.

इस तरह १२ वर्ष तक रावराजा बुद्धसिंहको बेगूंके रावत देवीसिंहने अपने

ठिकानेमें रक्खा. विक्रमी १७९६ वैशाख कृष्ण ३ [हि० ११५२ ता० १७ मुहर्रम = ई० १७३९ ता० २६ ऐप्रिल] के दिन बेगूंसे ३ कोस पर बाघपुरा गांवमें १९९ बुद्धसिंहका इन्तिकाल हुआ. इनके देवसिंह, भगवन्तसिंह, पद्मसिंह, उम्मेदसिंह, चन्द्रसिंह, दीपसिंह ६ बेटे थे. जिनमें से बेगूंके भानजे २०० उम्मेदसिंह जो दस वर्षकी उम्रमें थे उसी जगह बूंदीके रावराजा माने जाकर गद्दी पर बिठाये गये.

विक्रमी १८०० [हि० ११५६ = ई० १७४३] में जयपुरके महाराजा जयसिंह-का इन्तिकाल होगया. तब रावराजा उम्मेदसिंहने अजमेर व गुजरातके सूबेदार नव्वाब फ़ख़रुद्दौला तथा कोटेके महाराव दुर्जनशाल और शाहपुरेके राजा उम्मेदसिंहकी मदद-से विक्रमी १८०१ [हि० ११५७ = ई० १७४४] में बूंदी पर अपना क़ब्ज़ा करलिया, लेकिन विक्रमी १८०२ [हि० ११५८ = ई० १७४५] में जयपुरके राजा ईश्वरीसिंहने फिर बूंदी लेली. इसके बाद रावराजा उम्मेदसिंहने विक्रमी १८०३ [हि० ११५९ = ई० १७४६] में फिर बूंदी पर अपना क़ब्ज़ा करलिया. जयपुरके राजा ईश्वरीसिंहने नारायणदास खत्रीके साथ बड़ीभारी फ़ौज भेजी. उम्मेदसिंहने बूंदीसे निकलकर मुक़ाबिला किया लेकिन शिकस्त खाकर भागे और बूंदी पर जयपुर वालोंका क़ब्ज़ा होगया. विक्रमी १८०५ कार्तिक कृष्ण ५ [हि० ११६१ ता० १९ शव्वाल = ई० १७४८ ता० १३ ऑक्टोबर] में मल्हार राव हुल्करने जयपुरके राजा ईश्वरीसिंहको शिकस्त देकर उम्मेदसिंहको बूंदीका राव राजा बनादिया. कुछ अर्से बाद उम्मेदसिंहने जयपुरके महाराजा माधवसिंहको जाटोंकी लड़ाईमें मदद देनेके लिये अपने बेटे अजीतसिंहको भेजा और जब माध-वराव सिन्धियाने बूंदीको विक्रमी १८१९ [हि० ११७६ = ई० १७६२] में घे-रलिया तो जयपुरके महाराजा माधवसिंहने और शाहपुरेके राजा उम्मेदसिंह ने फ़ौज भेजकर बूंदीको मदद दी, इससे सिन्धिया तो कुछ फ़ौज ख़र्च लेकर चला गया, और विक्रमी १८२७ वैशाख शुक्ल १२ [हि० ११८४ ता० ११ मुहर्रम = ई० १७७० ता० ६ मई] को उम्मेदसिंहने अपने बड़े बेटे अजीतसिंहको जिसकी उम्र १८ वर्षकी थी, गद्दी पर बिठाकर केदारनाथ (१) में फ़क़ीराना ढंगसे रहना इख़्तियार किया.

२०१ अजीतसिंह जवानीमें राज्यके मालिक हुए थे इसीसे बहादुरीका अभि-मान ज़ियादह रखते थे. विक्रमी १८२९ चैत्र कृष्ण १ [हि० ११८६ ता० १५ ज़िल-

(१) बूंदीके क़रीब एक देवस्थानका नाम है.

हिज = ई० १७७३ ता० ९ मार्च]में इन्होंने महाराणा अरिसिंहको एक बर्छेसे दग़ाकरके मारडाला जिनके साथ बावलासके महाराज दौलतसिंह और सनवाड़के शंभूसिंह मारेगये. इसका मुफ़स्सल हाल हम महाराणा अरिसिंहके ज़िक्रमें लिखेंगे. थोड़ेही अर्सेके बाद विक्रमी १८३० वैशाख शुक्ल १५ [हि० ११८७ ता० १४ सफ़र = ई० १७७३ ता० ८ मई] को अजीतसिंहका (१) देहान्त होगया.

इनके पिताने तो राज छोड़ही रक्खा था; इसलिये उन्होंने ४॥ महीनेकी उम्रवाले अपने पोते २०२ विष्णुसिंह को विक्रमी १८३० ज्येष्ठ कृष्ण ११ [हि० ११८७ ता० २५ सफ़र = ई० १७७३ ता० १८ मई] में गद्दीपर बिठादिया और राज्यकी संभाल खुद उम्मेदसिंहने रखकर धायभाई सुखरामको कामपर मुरूतार किया. विक्रमी १८६१ आश्विन कृष्ण ४ [हि० १२१९ ता० १८ जमादियुल्आख़िर = ई० १८०४ ता० २५ ऑगस्ट]को उम्मेदसिंहका इन्तिक़ाल हुआ.

इनके अजीतसिंह, बहादुरसिंह, सर्दारसिंह, और त्रिलोकसिंह, चार बेटे हुए. विष्णुसिंहने अपने काका बहादुरसिंहके बेटे बलवन्तसिंह पर फ़ौज भेजी, जो उस वक्त गोठड़ाका जागीरदार, बड़ा फ़सादी और बहादुर था. बूंदीकी फ़ौजसे लड़कर बलवंतसिंह और उसका भाई शेरसिंह और बेटे धौंकलसिंह व फ़तहसिंह मारे गये. जब सर्कार अंग्रेज़ी याने ईस्टइंडिया कम्पनीकी अमल्दारी हिन्दुस्तानमें हुई तब बूंदीकी रियासतके साथ भी विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = ई० १८१८] में अह्दनामा हुआ, जिसकी नक्ल बूंदीकी तवारीख़ के पूरे होने पर लिखी जायगी.

विक्रमी १८७७ [हि० १२३५ = ई० १८२०] में कोटेके महाराव किशोरसिंह अपने प्रधान झाला ज़ालिमसिंह से तक्लीफ़ पाकर बूंदीमें चलेआये, तब विष्णुसिंह २०२ ने बड़ी ख़ातिरदारी की; कुछ अर्सेबाद महाराव दिल्लीकी तरफ़ चलेगये. इस बातका पूरा हाल कोटेकी तवारीख़में लिखाजायगा. विक्रमी १८७८ आषाढ़ शुक्ल १५ [हि० १२३६ ता० १४ शव्वाल = ई० १८२१ ता० १५ जुलाई] को विष्णुसिंह का वैकुंठवास हुआ.

इनके इन्द्रसिंह, बलदेवसिंह, रामसिंह और गोपालसिंह ४ बेटे थे, जिनमेंसे दो बड़ोंका देहान्त होगया था, इसवास्ते महाराव राजा २०३ रामसिंह साढ़े

---

(२) मेवाड़की तवारीख़में अजीतसिंहका मरना महाराणाकी तरफ़के एक छड़ीदारके हाथकी छड़ी सिरमें लगनेसे लिखाहै. लेकिन बूंदी वाले हाथपर छड़ीका लगना और देहांत होना, छः महीने पीछे शीतला निकलनेसे लिखते हैं.

नव वर्षकी उमरमें विक्रमी १८७८ श्रावण कृष्ण १२ [हि० १२३६ ता० २६ शव्वाल = ई० १८२१ ता० २७ जुलाई] को गद्दी पर बैठे. इनका विवाह विक्रमी १८८१ फाल्गुन कृष्ण ८ [हि० १२४० ता० २२ जमादियुस्सानी = ई० १८२५ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को जोधपुरके महाराजाधिराज मानसिंहकी बेटी स्वरूपकुंवरके साथ हुआ. उन दिनों बूंदीमें ख़ज़ानेकी कमीके सबब कोटेके साहूकारोंसे २००००० दो लाख रुपये शादी ख़र्चकेलिये क़र्ज़ लिये थे, जो महाराजासाहिब जोधपुरने कोटेके साहूकारोंको अदा करदिये और इसके सिवाय बहुत कुछ दहेजमें भी दिया. रावराजा बूंदी आये, उन दिनोंमें किशनराम (कृष्णराम) धायभाई बूंदीका मुसाहिब था जो महाराणी जोधपुरी के हरएक काममें बेपरवाई करता था, इसलिये जोधपुर महाराज मानसिंहके इशारेसे विक्रमी १८८६ [हि० १२४५ = ई० १८२९] में शालू राजपूतने कचहरीमें बैठे हुए, किशनराम धायभाईको तलवारसे मारडाला और महाराणी जोधपुरीके नौहरेमें जो आदमी थे वे शालूकी मददको नहीं पहुंच सके इसलिये शालू भी मारागया.

बूंदीके सर्कारी सिपाहियों ने नौहरेमें मारवाड़ी राजपूतोंको घेरलिया उसवक्त बूढसूके ठाकुर जो बूंदीमें नौकरीपर थे मारवाड़ी आदमियोंकी मददको जापहुंचे जिससे तीन आदमी मारवाड़ी तो पहिले मारेगये लेकिन बाक़ियोंको बूढसूके ठाकुरने सही सलामत निकालदिया.

पोखरणके ठाकुर विभूतसिंह राठौड़ जो दोसौ सवार और ३०० पैदल लेकर आये थे बग़ैर रुख़्सत ही मारवाड़ को चलेगये. विक्रमी १८८८ [हि० १२४७ = ई० १८३१] में रावराजा रामसिंह अजमेरमें लॉर्ड विलिअम् कैवेन्डिश बेन्टिंक की मुलाक़ात को गये. इन्होंने विक्रमी १८९० [हि० १२४९ = ई० १८३३] के अकालमें अपनी रअ़य्यतका पालन अच्छीतरह से किया.

इन्होंने अपने भाई गोपालसिंह को ख़राब चालचलन के कारण नज़रबन्द रक्खा था जो उसी हालतमें मरगया.

विक्रमी १८९८ [हि० १२५७ = ई० १८४१] में महारावराजा मथुरा, वृन्दाबन, प्रयाग, काशी, वग़ैरह की यात्राके लिये गये और विक्रमी १९०० [हि० १२५९ = ई० १८४३] में बूंदीको लौटआये. विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ = ई० १८४७] में पाटनका दोतिहाई परगना जो पहिले दलेलसिंह ने मरहटोंको देदिया था इस्तिमरार (१) के तौर पीछे लिया, जिसका अहदनामा भी पीछे लिखाजायगा.

---

(१) जिस ज़मीनके बंदोबस्तमें कभी हेरफेर नहीं कियाजाय और हमेशा एकसा क़ायम रहे उस को इस्तिम्रार कहतेहैं.

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ - १२७४ = ई० १८५७] के बलवेमें बूंदी, कोटा और झालावाड़ की फ़ौज नीमचकी छावनीको भेजीगई. वहां अथवा दूसरी जगह भी रावराजा साहिबने दिलसे अंग्रेज़ी सर्कारको मदद दी. इसी संवत् में इनकी माता राठौड़जी कृष्णगढ़वाली का इन्तिक़ाल होगया. विक्रमी १९१५ आषाढ़ शुक्ल ८ [हि० १२७४ ता० ७ ज़िलहिज = ई० १८५८ ता० २१ जुलाई] के दिन हिन्दुस्तानी बाग़ियोंकी फ़ौज बूंदीकी तरफ़ आई; रावराजा ने शहर और क़िलेके दर्वाज़े बन्द करके बाग़ियों पर तोपोंके फ़ैर करवाये, जिससे बाग़ी हटकर चले गये. उन्हीं दिनोंमें मीनोंने सिरउठाया, जो इलाक़े खैराड़की रहनेवाली एक लुटेरी रअय्यतहै; उनको ख़ूब सज़ादेकर सीधाकिया. फिर गोठड़ाके महाराज बलवंतसिंह के बेटे भोमसिंह ने उदूल हुक्मी (आज्ञाभंग) करनेपर कमरबांधी तो फ़ौज भेजकर भोमसिंह को निकाल दिया और गोठड़ा ख़ालसे करलिया. हिन्दुस्तानके ग़द्रके बाद इन रावराजा साहिब ने आगरेमें लॉर्ड एल्जिन् साहिब से और विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में लॉर्ड मेओ साहिबसे अजमेरमें मुलाक़ातकी. इन रावराजा साहिबका चालचलन और तरीक़ा पुराने ढंगपर आक़िलाना तौर (बुद्धिमानों) का है.

मज़हबी किताबोंमें वेदान्त पर यह ज़ियादह अमल रखते हैं लेकिन मन्दिर और उपासना वग़ैरह सबका सन्मान करतेहैं और किसीका खंडन नहीं चाहते; हिंदू धर्मशास्त्रके ढंगसे रियासती काम करते हैं; इन्होंने क़ायदेकी किताब भी धर्म शास्त्रके अनुसार बनवाकर जारी कीहै, अंग्रेज़ और मुसल्मानों के छूनेसे स्नानकरते हैं और मुलाक़ातकी पोशाकको भी धुलवाते हैं. समयके मुवाफ़िक़ बादशाही हाकिमोंको ख़ुश रखनेमें चतुर हैं; ज़ियादा अंग्रेज़ी दस्तअन्दाज़ी और सलाह को पसन्द नहीं करते. इनके भीमसिंह, रंगनाथसिंह, रघुवीरसिंह, रंगराजसिंह और रघुराजसिंह पांच पुत्र हुए.

इनमें से कुंवर भीमसिंहका विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में और रंगनाथसिंहका विक्रमी १९१३ [हि० १२७२ = ई० १८५६] में इन्तिक़ाल होगया. अब जो कुंवर मौजूद हैं उनको संस्कृतकी तालीम दीजाती है. बड़े कुंवर रघुवीरसिंहका विवाह जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंहकी बहिनके साथ विक्रमी १९४० [हि० १३०० = ई० १८८३] में हुआ है.

राव राजा रामसिंह साहिबने अपने बड़े सर्दारोंमें से जो सर्कश याने फ़सादी थे उनको जागीर छीन कर सीधा करदिया; और जो इनकी मन्शाके बर्ख़िलाफ़ नहीं चलते उनके साथ यह अधिक रज़ामन्दीका बरताव रखते हैं; रअय्यत इनको दिलसे चाहती है— मीने जो डकैती और चोरीका पेशा रखते थे उनको इन्होंने अपने इलाक़े से निकाल दिया.

अब उन अहदनामोंका तर्जुमा नीचे लिखाजाता है, जो सर्कारअंग्रेज़ी और रियासत बूंदीके साथ जुदे जुदे वक्तोंमें हुए हैं.

एचिसन् साहिबकी अहदनामोंकी किताब तीसरी जिल्द पहिला भाग

अहदनामा नम्बर ५२

ऑनरेबल (इज़्ज़तदार) अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कम्पनी और महाराव राजा विष्णुसिंह बहादुर बूंदीवालेका अहदनामा, जिसको ऑनरेबल कम्पनीकी तरफ़से कप्तान् जेम्स टॉड साहिबने लार्ड हेस्टिंग्ज़ गवर्नर जेनरलसे पूरा इख़्तियार पाकर उस बोहरा तुलारामके साथ किया जो राजाकी तरफ़से पूरा इख़्तियार रखता था.

पहिली शर्त– हमेशाके लिये एक तरफ़ तो सर्कारअंग्रेज़ी और दूसरी तरफ़ राजा बूंदी और उनके वारिस और जानशीनों (क्रमानुयायीवंशजों) के बीच दोस्ती, और नफ़े नुक्सानकी एकता रहेगी.

दूसरी शर्त– सर्कार अंग्रेज़ी बूंदीके राजाका देश अपनी रक्षामें लेती है.

तीसरी शर्त–बूंदीके राजा हमेशाके लिये सर्कारअंग्रेज़ीको बुजुर्ग मानतेहैं और हमेशा उसके साथी रहना स्वीकार करते हैं. वह किसी पर जुल्म न करेंगे और सर्कार अंग्रेज़ी की रज़ामन्दीके बग़ैर किसीके साथ दोस्ती और मिलावट नहीं करेंगे, अगर कभी इत्तिफ़ाक़से किसीके साथ झगड़ा हो तो उसका फ़ैसला करनेके लिये सर्कार अंग्रेज़ी मुख़्तार और न्यायकारी ठहराई जायगी. राजा अपने राज्य पर पूरा इख़्तियार रखते हैं; अंग्रेज़ी सर्कार उनके राज्यमें कोई दख़ल न देगी.

चौथी शर्त– अंग्रेज़ी सर्कार अपनी खुशीसे राजा और उनकी औलादको वह ख़िराज छोड़ देती है जो कि बूंदीके राजा हुल्करको देते थे और जिसको महाराजा हुल्करने अंग्रेज़ी सर्कारको दे दिया था. अंग्रेज़ी सर्कार बूंदीकी रियासतको वह इलाके भी छोड़ देती है जो अब तक उस रियासतकी सीमाके भीतर महाराजा हुल्कर के इख़्तियारमें थे. उनकी फ़िहरिस्त नक्शे नम्बर १ के मुताबिक़ है.

पांचवीं शर्त–बूंदीके राजा इस तह्रीरके ज़रीएसे इक़रार करते हैं कि जो ख़िराज और मालगुज़ारी अबतक महाराजा सिन्धियाको नक्शे नम्बर २ के मुताबिक़ देते थे वह अब सर्कार अंग्रेज़ीको दिया करेंगे.

छठी शर्त– बूंदीके राजा सर्कार अंग्रेज़ी को ज़रूरतके समय मांगने पर मक़दूरके मुवाफ़िक़ फ़ौज देवेंगे.

सातवीं शर्त– यह इक़रारनामा सात शर्तोंका बूंदीमें क़रार पाया और कप्तान्

जेम्सटॉड और बौहरा तुलारामने इस पर मुहर और दस्तख़त किये; आजकी तारीख़से एक महीनेके भीतर इसकी नक्ल तस्दीक़ होकर गवर्नरजेनरल और महाराव राजा बूंदीको आपसमें दीजायगी.

मक़ाम बूंदीमें ई० १८१८ ता० १० फ़ेब्रुअरी [हि० १२३३ ता० ४ रबीउलआख़िर = विक्रमी १८७४ माघ शुक्ल ४] को लिखागया.

दस्तख़त जेम्सटॉड— [मुहर]

दस्तख़त बौहरा तुलाराम [मुहर राजा]

इस अहदनामेको श्रीमान गवर्नर जेनरल बहादुरने कानपुरके पास कैम्पमें पहिली मार्च सन् १८१८ ई० को तस्दीक़ किया—

[मुहर गवर्नर जेनरल्] दस्तख़त हेस्टिंग्ज़

नक्शा नम्बर १

उन इलाक़ों का नक्शा जो सर्कार अंग्रेज़ी ने रावराजा बिष्णुसिंह बहादुरको इस अहदनामे की चौथी शर्तके मुताबिक़ छोड़ दिये.

परगना बहमनूगंज.
परगना देह.
आधा परगना बडूंदन.
बूंदीकी चौथ वग़ैरह.
परगना लाखेरियो
आधा परगना करवर
आधा परगना पाटन

नक्शा नम्बर २

उन ज़मीनोंकी कुल मालगुज़ारी और ख़िराज जो कि महाराजा सिन्धियाके तहतमें था वह कुल अबसे सर्कार अंग्रेज़ीको बूंदीके अहदनामेकी ५ वीं शर्तके मुताबिक़ दिया जायगा.

दिल्लीके सिक्केसे कुल...८०००० रुपया
परगने पाटनका दो तिहाई हिस्सा......................४०००० रु०
परगना उरीला
परगना समेंदी
आधा परगना करवर
एक तिहाई परगना बडूंदन
बूंदी और दूसरे मक़ामोंकी चौथ........................४०००० रु०
कुल जोड़..८०००० रु०

दस्तख़त, जेम्स टॉड [मुहर]

दस्तख़त, बौहरा (१) तुलाराम [राजाकी मुहर]

नम्बर ५३

पाटनके ज़िले केशवरायको अपने बन्दोबस्तमें लेलेने बावत बूंदी राज्यका इक्रारनामा—

महाराव राजा बूंदीने अंग्रेज़ी हाकिमोंके ज़रीएसे यह दरख़्वास्त की कि पाटनके ज़िले केशवरायके तमाम गांवोंके दो तिहाई हिस्सेकी इस्तिमरारदारी पूरे इख़्तियारके साथ मिले; जो ज़िला ग्वालियरने दर्बारने सर्कार अंग्रेज़ीको १३ जैन्यूअरी सन् १८४४ ई० के अहदनामेके मुताबिक़ फ़ौजके ख़र्चोंके एक हिस्सेके अदाकरनेमें दिया था और जो अब जावद, नीमचके सुपरिन्टेन्डन्टके प्रबन्धमें है और जिसकी बावत ग्वालियरके दर्बारने कई शर्तोंके साथ इसको इस्तिमरार कर देना मन्ज़ूर किया है, वह नीचे लिखी हुई शर्तोंके क़रार पर दिया जावे—

पहिली शर्त— बूंदीके महाराव राजा अपनी और अपने वारिसोंकी तरफ़से इक्रार करते हैं कि जावद, नीमच के सुपरिन्टेन्डन्टके खज़ानेमें अंग्रेज़ी सिक्केके ८०००० रुपये चालीस हज़ार दो क़िस्तोंमें हरसालके जैन्यूअरी और जुलाई महीनों में केशवराय पाटनके दो तिहाई हिस्सेकी बावत जिसे ग्वालियरके दर्बारने सर्कार अंग्रेज़ीको देदिया है और जिसका बाक़ी तीसरा हिस्सा बूंदी राज्यके क़ब्ज़ेमें है, अदा किया करेंगे; फ़स्लका नफ़ा नुक्सान या दूसरा कोई इत्तिफ़ाक़ी नफ़ा नुक्सान बूंदीके राज्य को उठाना पड़ेगा.

दूसरी शर्त— बूंदीके महाराव राजा अपनी और अपने वारिसोंकी तरफ़से इक्रार करते हैं कि पेन्शन पाने वालोंकी तनख़ाहके वास्ते जिनकी फ़िहरिस्त उनको दी गई है कोटेका ३४३० हाली (२) रुपया ७ आना ९ पाई दिया करेंगे.

तीसरी शर्त— उस ज़िलेके दोतिहाई हिस्सेकी मुआफ़ी ज़मीन जिसका विस्तार ७५०३ बीघे और १५ बिस्वे है; बूंदीके महाराव राजा अपनी और अपने वारिसों की तरफ़ से इक्रार करते हैं कि वह उन्हीं लोगोंके क़ब्ज़ेमें रक्खेंगे जिनके नामकी फ़िहरिस्त महाराव राजाको दीगई है और यह भी इक्रार करते हैं कि जो कुछ (मुआफ़ी)

---

(१) व्यवहारके सबब यह लफ़्ज़ एक क़ौमके लिये बोला जाता है.

(२) यह रुपया क़ीमतमें अंग्रेज़ी रुपयेसे भी कई पाई ज़ियादा है.

या छूट जा वदेके सुपरिन्टेन्डन्ट ने उन ज़मींदारोंको जिन्होंने नये कुएं या बावड़ियें अपने २ पट्टोंकी शर्तोंके मुवाफ़िक़ खुदवाई हैं करदी है, उसको बहाल रक्खेंगे.

चौथी शर्त– सर्कार अंग्रेज़ीने १३ जैन्यूअरी सन् १८४४ ई० के अहदनामे की बारहवीं शर्तके मुताबिक़ जो ग्वालियरके दर्बार की हुकूमतका बिल्कुल हक़ बराबर बनेरहने का इक़रार किया है, वह पाटनके ज़िलेमें बना रहनेका बूंदीके महाराव राजा अपनी ओर अपने वारिसोंकी तरफ़से कुबूल करते हैं.

पांचवीं शर्त– बूंदीके महाराव राजा की दरख्वास्तके मुताबिक़ पाटनके ज़िले केशवराय के दोतिहाई हिस्सेका इख्तियार उनको देदिया गया है, इसलिये वह अपनी ओर अपने वारिसोंकी तरफ़से इक़रार करते हैं कि अगर इक़रारके मुताबिक़ मुक़र्रर वक़ पर क़िस्त (१) अदा नहो, या ऊपर लिखीहुई शर्तोंमें से किसीके पूरा करनेमें कसर रहे तो उस हिस्सेका बल्कि तमाम परगने याने एकतिहाई हिस्सेका भी जो पहिले से उनके क़ब्ज़ेमें है, प्रबंध सर्कार अंग्रेज़ीको देदेंगे, जिससे बाक़ी रहाहुआ रुपया वुसूल करलिया जायगा. रुपयोंके वुसूल होजाने बाद बाक़ी बचीहुई एकतिहाई हिस्से की सालाना आमदनी के मुवाफ़िक दिलाई जायगी.

लेकिन ग्वालियरके दर्बार या सर्कार अंग्रेज़ी इस सबबके सिवाय और किसी तरह पर कभी केशवराय पाटनका ज़िला बूंदीके राजसे न लेगी

छठी शर्त– केशवराय पाटनके ज़िलेके दोतिहाई हिस्सोंके बंदोबस्तमें बूंदीके अफ्सर किसी तरह पर दख़्ल न देंगे जबतक कि ऊपर लिखीहुई शर्तें ख़ातिरख़ाह पूरी कीजावें.

छः शर्तोंका यह इक़रार नामा महाराव राजा रामसिंह बहादुर बूंदीके रईसके लिये तय्यार कियागया और उन्होंने इसपर दस्तख़त किये– मिती अगहन वदी ७ विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ ता० २० ज़िल्हिज = ई० १८४७ ता० २९ नोवेम्बर].

महाराव राजा रामसिंह बहादुर रईस
बूंदीकी मुहर

अहदनामा. नम्बर ५४

सर्कार अंग्रेज़ी और श्रीमान रामसिंह बहादुर महाराव राजा बूंदी व उनके वारिसों और जानशीनोंके बीचका अहदनामा, जो एक तरफ़ कप्तान अर्थर

(१) राजपूताना में खंदी कहते हैं.

नीलब्रूस साहिब पोलिटिकल एजंट हाड़ौतीने कर्नेल् विलिअम् फ्रेडरिक-ईडन साहिब मुल्क राजपूताना के एजंट गवर्नर जेनरल के हुक्मके मुताबिक़ किया जिनको पूरा इ-ख्तियार राइट ऑनरेबल् सर जॉन लेअर्ड मेयर लॉरेन्स, बैरोनेट् जी० सी० एस० आई० वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दुस्तानसे मिला था; और दूसरी तरफ़ बौहरा अमृत लालने, जिनको उक्त महारावराजा रामसिंह बहादुरसे पूरा इख्तियार मिला था, किया.

पहिली शर्त- कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी राज्यमें कोई बड़ा जुर्म करे और बूंदीकी राज्यसीमामें आश्रय लेना चाहे तो बूंदीकी सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी और दस्तूरके मुताबिक़ उसके मांगे जाने पर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

दूसरी शर्त- कोई आदमी बूंदीके राज्यका बाशिंदह वहांके राज्यकी सीमामें कोई बड़ा जुर्म करे और अंग्रेज़ी मुल्कमें जाकर आश्रय लेवे तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम बूंदीके राज्यको क़ायदेके मुवाफ़िक़ सुपुर्द कर देवेगी.

तीसरी शर्त- कोई आदमी जो बूंदीके राज्यकी रअय्यत नहो और बूंदीके राज्यकी सीमामें कोई बड़ा जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे तो सर्कार अंग्रेज़ी उस-को गिरिफ्तारकरेगी और उसके मुक़द्दमे की रूबकारी सर्कार अंग्रेज़ी की बतलाई हुई अदालतमें होगी. अक्सर क़ायदह यह है कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसला उस पोलिटि-कल अफ्सरके इजलासमें होता है, जिसके तह्तमें वारदात होनेके वक्त पर बूं-दीकी मुल्की निगहबानी रहे.

चौथी शर्त- किसी हालमें कोई सर्कार किसी आदमी को जो बड़ा मुज्रिम ठहरा हो देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जबतक कि दस्तूरके मुताबिक़ खुद वह स-र्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाक़े में कि जुर्म हुआहो और जुर्मकी ऐसी गवाही पर जैसाकि उस इलाक़े के क़ानूनके मुता-बिक़ सही समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम पाया जावे उसका गिरिफ्तार करना दुरुस्त ठहरेगा और वह मुज्रिम क़रार दिया जायगा, गोया कि जुर्म वहीं पर हुआ है.

पांचवीं शर्त- नीचे लिखे हुये काम बड़े जुर्म समझे जावेंगे.

१ खून-२ खून करनेकी कोशिश- ३ वह्शियाना क़त्ल ४ ठगी- ५ ज़हरदेना- ६ सख़्तगीरी (किसीको बहुत तंग करना)- ७ ज़ियादा ज़ख्मी करना- ८ लड़का बाला चुरा लेजाना- ९ औरतोंका बेचना- १० डकैती- ११ लूट- १२ सेंध (नक़ब) लगाना- १३ चौपाये चुराना- १४ मकान जलादेना- १५ जालसाज़ी करना- १६ झूठा सिक्का चलाना- १७ धोखा देकर जुर्म करना- १८ माल असबाब चुरालेना- १९ ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना या वर्ग़लाना (बहकाना).

छठी शर्त– ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमको गिरिफ्तारकरने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें जो ख़र्चलगे वह उसी सर्कारको देनापड़ेगा जिसके कहनेके मुताबिक़ ये बातें कीजावें.

सातवीं शर्त– ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक्त तक बरक़रार रहेगा जब तक कि अह्दनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई उसके तब्दील करने की ख्वाहिश दूसरेको ज़ाहिर न करे.

आठवीं शर्त– इस अहदनामेकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अहदनामे पर जो कि दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है कुछ न होगा सिवाय ऐसे अहदनामेके जो कि इस अहदनामेकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हो.

मक़ाम बूंदी ता० १ फ़ेब्रुअरी सन् १८६९ ईसवी.

दस्तख़त बोहरा (१) अमृतलाल.
दस्तख़त ए० एन० ब्रूस पोलिटिकल एजंट
दस्तख़त (लॉर्ड) मेओ वाइस्रॉय हिन्द.

इस अहदनामेको श्रीमान् वाइस्रॉय गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम शिमलेपर ६ ऑगस्ट सन् १८६९ ई० में तस्दीक़ किया.

दस्तख़त डब्ल्यू. एस. सेटन्कार.
सर्कार हिन्दकी फ़ॉरेन् डिपार्टमेन्टका सेक्रेटरी.

दिल्लीका मुग़ल बादशाह,
नसीरुद्दीन मुहम्मद—हुमायूं

[हुमायूं बादशाह का इन्तिक़ाल महाराणा उदयसिंह के समय में होनेसे उसका बयान यहां किया जाताहै].

इस बादशाह का जन्म हिजरी ९१३ ता० ४ ज़िल्क़ाद [वि० १५६५ चैत्र शुक्ल ५ = ई० १५०८ ता० ६ मार्च] को काबुलके क़िलेमें हुआ– और जब हिजरी ९३७ ता० ५ जमादियुलअव्वल [वि० १५८७ पौष शुक्ल ६ = ई० १५३० ता० २६ डिसेम्बर] को उसके बाप ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबरका इन्तिक़ाल हुआ, तो उस वक्त हुमायूं संभलकी तरफ़ गयाहुआ था सो ख़बर पहुंचने पर आगरे में आकर तारीख़ ९ जमादियुलअव्वल [पौष शुक्ल १० = ता० ३१ डिसेम्बर] को तख़्तपर बैठा और

(१) यह नागर क़ौमके लोग हैं जो व्याजपर रुपया देनेके सबब, बौहरे कहलाने लगे हैं.

अपने दूसरे भाई मिर्ज़ा हिन्दालको मेवात, और तीसरे कामरांको पंजाब, काबुल, कंधार, और चौथे मिर्ज़ा अस्करी को संभलके इलाके जागीरमें दिये. पहिले कालिन्जरके राजाको ताबेदार बनाया. और सिकन्दर लोदीके बेटे मुहम्मद लोदीको शिकस्तदी.

तीमूरी ख़ान्दानका एक शाहज़ादह मिर्ज़ामुहम्मद ज़मां जो बाबरके वक्में तुर्किस्तानसे भागकर आया था, हुमायूंसे बाग़ी होगया. हुमायूंने उसे कैदकरके बयाने के क़िलेमें भेजदिया था, जो वहांसे भागकर बहादुरशाह गुजरातीके पास चलागया; इस पर हुमायूंने बहादुरशाहके नाम ख़रीता लिखकर मुहम्मदज़मांको मांगा लेकिन उसका जवाब बहादुरशाहने सख़्त भेजा, तब हुमायूंने उस पर चढ़ाई की.

बहादुरशाह उनदिनों चित्तौड़गढ़ के महाराणा विक्रमादित्य से लड़ रहा था इस लिये मज़हबी लड़ाई समझकर हुमायूं ग्वालियरसे आगे न बढ़ा, फिर बहादुरशाह ने तातारखां लोदीको ४०००० सवार देकर आगरा और बयानेकी तरफ़ लूटमार करने के लिये भेजा, और आप दुबारा चित्तौड़गढ़ की तरफ़ चला; हुमायूंने ग्वालियरके पाससे मिर्ज़ा हिन्दालको तातारखां के मुक़ाबिलेके लिये भेजा जिससे लड़कर तातारखां मारागया और हिन्दालने फ़तह पाई. जब हुमायूं मन्दशोर की तरफ़ आया तो बहादुरशाह भी- जो चित्तौड़ फ़तह कर चुका था वहां पहुंचा.

रूमीखांके मिलजाने से जो बहादुरशाह के तोपख़ानेका अफ्सर था बहादुरशाह को भागना पड़ा जिसका हुमायूंने पीछाकिया, सो बहादुरशाह मांडू और बुर्हानपुर के क़िलोंका सहारा लेताहुआ अहमदाबाद होकर देवके टापूमें पहुंचा. हुमायूं खंभात तक उसका पीछा करनेबाद लौटा और अहमदाबाद अपने भाई मिर्ज़ा अस्करीको, अनहलवाड़ा पट्टन मिर्ज़ा नासिरको, भड़ौंच हिन्दूबेगको, चांपानेर तर्दीबेग को और बड़ौदा कासिमहुसैन वग़ैरह को जागीरमें देकर दिल्ली चलाआया.

थोड़ेही अर्सेमें बहादुरशाह गुजरातीने अपनी मौरूसी बादशाहत पर दुबारा क़ब्ज़ा करलिया-इन्हीं दिनोंमें ईरानके बादशाह तहमास्पने कन्धार लेलिया और बंगाले में शेरख़ां पठानने बग़ावत करके जौनपुर बिहार और चनार (चरणाद्रि) पर क़ब्ज़ा करलिया. हुमायूं आगरेसे रवाना होकर रूमीख़ांकी तदबीरोंसे क़िले चनारको फ़तह करताहुआ बंगालेमें पहुंचा.

शेरख़ां भागगया, हुमायूंके पीछे मिर्ज़ा हिन्दालने आगरेमें फ़साद उठाया, बादशाह, जहांगीरबेगको बंगालेमें छोड़कर आगरेको लौटा. शेरख़ां जो झाड़खंडीकी तरफ़ भागगया था फिर बंगालेमें बढ़ने लगा- मिर्ज़ा कामरां भी ईरानियोंसे कंधार लेकर

लाहौर होता हुआ दिल्लीकी तरफ़ चला. इन बातोंसे हुमायूं घबराया और शेरख़ांने ख़ुशीके साथ ताबेदारीका इक़रार किया, लेकिन फिर धोखा देकर उसके अचानक हमला करनेसे हुमायूं शिकस्त खाकर आगरेको चलाआया, इस वक़ कामरां और हिन्दाल भी बग़ावत छोड़कर हुमायूंके पैरोंमें आ गिरे.

कुछ अर्सेके बाद कामरां लाहौर चलागया और हुमायूंसे रंजीदह हुआ. इस हालको सुनकर शेरख़ांने गङ्गा किनारे तक मुल्क दबालिया.

हुमायूंके सर्दारों क़ासिमहुसैन उज़्बक और नासिरहुसैन मिर्ज़ा वगैरह, और पठानोंसे काल्पीके पास लड़ाई हुई, जिसमें शेरख़ांका एक बेटा मारागया; यह सुनकर ख़ुद हुमायूं बंगालेकी तरफ़ चला और क़न्नौजके पास पहुंचकर एक महीने तक ठहरा रहा; वहां इसकी फ़ौजके सिपाही भागने लगे, जब बहुत कम जमय्यत रहगई तब शेरख़ांने हमला किया; हुमायूंने शिकस्त खाकर गंगामें घोड़ा डाला उस वक़ घोड़ेसे जुदा होकर डूबनेके क़रीब था कि शम्सुद्दीन मुहम्मद ग़ज़नवीने बचाया; हुमायूंशाह आगरेकी तरफ़ आया लेकिन वहां भी कम जमय्यतके सबब न ठहर सका, और लाहौरको चलदिया. शेरख़ां भी इसका पीछा करता हुआ लाहौरसे ३० कोस पर आ पहुंचा.

हुमायूंशाहके भाई कामरां, हिन्दाल वगैरह अपनी अपनी फ़िक्रमें पड़े तब हिजरी ९४७ आख़िर जमादियुस्सानी [वि० १५९७ मार्गशीर्ष कृष्ण = ई० १५४० ऑक्टोबर] में हुमायूं लाहौर छोड़कर सिन्धुकी तरफ़ रवाना हुआ, मिर्ज़ा कामरां और अस्करी दोनों काबुलको चल दिये; कई मन्ज़िलके बाद हुमायूं सिन्धु नदी उतर कर भक्करमें पहुंचा, और ठट्ठेके हाकिमको अपनी तरफ़ करनेके लिये छः महीने तक वहां पड़ा रहा. फिर रसद न मिलनेके सबब पानड़की तरफ़ गया. वहां उसने हमीदाबानूके साथ शादी की जो होनहार अक्बरकी मा थी (१). मिर्ज़ा हिन्दालभी यहांसे क़न्धारकी तरफ़ चला गया, और नासिर मिर्ज़ा भी जुदा हुआ. भक्करके लोगोंने बादशाहसे मुक़ाबिला किया जिसमें हुमायूं का सर्दार मीर अबुलबक़ा मारा गया.

हिजरी ९४८ शुरू जमादियुलआख़िर [वि० १५९८ आश्विन = ई० १५४१ सेप्टेम्बर] में बादशाह ठट्ठेकी तरफ़ चला लेकिन उसी इलाक़ेमें घूमकर कुछ अर्सेबाद नासिर मिर्ज़ाकी तरफ़ आया जो भक्करका मालिक बनगया था, उसने भी बादशाहको कुछ मदद न दी और मुक़ाबिलेको तय्यार हुआ, लेकिन उसके सर्दार हाशिमबेगने रोकदिया. तब हुमायूं यहांसे रवाना होकर हिजरी ९४९ ता० ८ रबीउल अव्वल

(१) यह बेगम मिर्ज़ा हिन्दालके उस्ताद की बेटी थी और मिर्ज़ाकी माके पास रहती थी.

[वि० १५९९ आषाढ़ शुक्ल ९ = ई० १५४२ ता० २२ जून] को राठौड़ राव मालदेवके मुल्क मारवाड़की तरफ़ चला. ता० १७ रबीउल आख़िर [श्रावण कृष्ण ३ = ता० १ जुलाई] को बीकानेर से १२ कोसपर पहुंचा, वहां बहुतसे हुमायूंके आदमियों ने राव मालदेवकी तरफ़से दग़ा होनेका शुब्हा किया तब बादशाहने समन्दरबेग को रावकेपास जोधपुर भेजा. उसने वापस आकर कहा कि राव ज़ाहिरदारीमें बहुत ख़ातिर करता है लेकिन उसकी बातें एतिबारके लायक़ नहीं हैं.

जब बादशाह फलोदीमें पहुंचा तब वहांसे एक बादशाही ड्योढ़ीवान राजू और दूसरा ख़ानमुहम्मद भागकर राव मालदेवके पास पहुंचे, जिन्होंने बादशाहके पास बहुत जवाहिरात होना बयान किया; फिर बादशाह जोगीतालाबपर पहुंचा जो अब किशनगढ़ (कृष्णगढ़) के पास है; जब बादशाहको राव मालदेवकी तरफ़से ज़ियादह ख़तरा हुआ तो वहांसे सांभरमें आ ठहरा, लेकिन उस जगह भी न जमसका और उसके बहुतसे साथियोंने अपनी २ राह ली, बादशाह वहांसे भी चला उसवक़ उसकी सवारीको दो घोड़े और एक ख़च्चरके सिवाय और कुछ न था.

इसवक़ की तक्लीफ़ का हाल बादशाहका आफ़्ताबची (१) अक्बर जौहर लिखता है, जो इस सफ़रमें हमराह था. इस हालको सुनकर कलेजा कांपता है, कि जिसकी सवारीमें लाखों सवार और हज़ारों हाथी चलते थे वह अपनी बेगमको पैदल उतारकर लड़ाईके समय घोड़ेपर सवार हुआ. मारवाड़की थलियोंमें उसके बहुतसे आदमी प्यासकेमारे मरगये. जब बादशाहके साथी बीस सवार रास्तह भूलकर गुम होगये उस वक़ पांचसौ सवार राजपूतोंके आपहुंचे. बादशाहके पास कुल सोलह सवार रहगये थे, लेकिन मुक़ाबिला होते ही दो सर गिरोह राजपूत मारेजानेसे बाक़ी सब राजपूत भागगये. फिर जैसलमेर के इलाक़ेमें भी गाय मारनेपर वहांके राजपूतोंने लड़ाई की. ये लोग लड़ते भिड़ते ५ कोस पर एक गांवमें जा ठहरे.

रावल लूणकरण ने अपने बेटे मालदेवको हुक्म दिया कि रास्तोंपर जितने कुए हों उन्हें रेतेसे भरदो. यह आफ़तमें और आफ़त पैदाहुई. जहां पहुंचकर कुएमें डोल डालते पीछे निकालनेपर ख़ाली मिलता (२); अक्सर वक़ पानी मिलने पर तक़्सीम करनेमें ख़ुद बादशाहको इन्तिज़ाम करना पड़ता था जिसपर भी कई आदमी प्यासके मारे मरगये, और तक्लीफ़ इस दर्जेपर पहुंची कि रौशनबेग का घोड़ा जो बादशाहकी गर्भवती बेगमको दियागया था उसने वापस लेलिया. तब बादशाहने ख़ुद पैदल

(१) रजवाड़े में इसको पानेरी कहते हैं.

(२) वहां कुए इसक़दर गहरे थे कि डोल बाहर निकाले बिदून पानीकी आवाज़ नहीं आती थी.

होकर बेगमको अपने घोड़ेपर सवार किया; जब बादशाह थकगया तो पखालके ऊंटपर बैठलिया. और आख़िरमें ये तक्लीफ़ें उठाताहुआ अमरकोट पहुंचा.

वहांका राणा प्रसाद बड़ी मिहरबानी से पेश आया, पहिले अपने भाइयोंको बादशाहके पास भेजा और पीछेसे खुद आकर कहा कि हम सातहज़ार राजपूत सवार आपका साथ देनेको तय्यार हैं. इस बातसे बादशाहको तसल्ली हुई और खाना पीना भी अच्छा मालूम हुआ. बादशाह अपनी गर्भवती बेगमको खटले समेत अमरकोट क़िलेमें छोड़ कर आप बहुतसे राजपूतोंके साथ वहांसे बारह कोस जून मक़ामके तालाब पर पहुंचा. वहां बड़ी फ़ज्र क़ासिदोंने आकर ख़बर दी कि अमरकोटमें हमीदहबानू बेगमके पेटसे बादशाहके एक शहज़ादह पैदा हुआ.

हिजरी ९४९ ता० १४ शाबान [वि० १५९९ मार्गशीर्ष शुक्ल १५ = ई० १५४२ ता० २३ नोवेम्बर] शनिवार को यह खुशी हुई. बादशाहने निहायत खुश होकर जौहर आफ्ताबचीसे कस्तूरीका नाफ़ा लेकर सब सर्दारोंको बांटा और १४ तारीखको जन्म होनेसे "बद्रुद्दीन" और "जलालुद्दीन" शाहज़ादेका नाम रक्खा गया, क्योंकि चौदहवीं तारीखके चांदको बद्र कहते हैं और जलाल भी उसीके अर्थसे मिलता है (१).

फिर हुमायूंशाहने अपनी बेगम और शाहज़ादेको कई दिनके बाद अपने पास बुलालिया उस समय शाहज़ादेकी उम्र ३५ दिनकी थी और इस वक्त सोढा व काठियावाड़ी वगैरह पन्द्रह या सोलह हज़ार सवार बादशाहके पास जमा होगये थे, लेकिन चन्द रोज़ बाद ख्वाजा गाज़ी और अमरकोटके राणा प्रसादमें बिगाड़ हो गया जिससे प्रसाद नाराज़ होकर चला गया और इसीसे दूसरे राजपूतोंकी जमग्यत बिखर गई तब हुमायूंशाहने कन्धारकी तरफ़ जानेका इरादा किया, उसी समय बैरमखां (२) भी हुमायूंसे आ मिला, जो कन्नौजकी लड़ाईमें हुमायूंसे जुदा होकर संभलके राजा मित्रसेनके पास चलागया था और जिसको शेरशाहने अपने पास बुलाकर ख़ातिरसे रक्खा

---

(१) अबुलफ़ज़्ल अपनी तवारीख़ अक्बरनामा और निज़ामुद्दीन अहमद तबक़ात अक्बरीमें ५ वीं रजबको अक्बरका जन्म होना लिखते हैं लेकिन जौहर आफ़्ताबची जो उस वक्त हुमायूंके साथ था उसका लिखना मोतबर है और उसने १४ तारीखको बद्र होनेके सबब उसका नाम बद्रुद्दीन और जलालुद्दीन रक्खा जाना लिखा है सो ग़लत नहीं हो सक्ता. दूसरी किताबोंमें भी जो अबुलफ़ज़्ल वगैरह के बयानसे ५ वीं रजब लिखदिया है इसका ज़ियादा बयान हम अक्बरके हालमें लिखेंगे.

(२) यह वही बैरमखां है जो हुमायूं और अक्बरके वक्तमें खानखानांके नामसे प्रसिद्ध था.
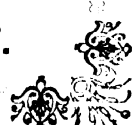
था. लेकिन वह बुर्हानपुरसे भागकर अहमदाबाद और सूरतकी तरफ़ छिपता हुआ हुमायूंके पास चला आया. हुमायूं इसके मिलनेसे बहुत ख़ुश हुआ और कन्धारकी तरफ़ कूचकिया.

जब कन्धार थोड़ी दूर रहा तब मिर्ज़ा काम्रांके लिखनेसे मिर्ज़ा अस्करी बद इरादे के साथ हुमायूं पर चढ़ा, लेकिन हुमायूंको किसी शख़्सने अस्करीकी दग़ाबाज़ीसे वाक़िफ़ करदिया था जिसके सबब मक़ाम सालज़मिस्तांसे हुमायूं अपनी बेगम, शाह-ज़ादे और साथियोंको छोड़कर २२ आदमियों समेत भाग निकला. अस्करीने आ-कर हुमायूंको न पाया तब वह बेगम और शाहज़ादेको साथियों समेत कन्धार ले गया और हुमायूं रास्तेमें तक्लीफ़ उठाता हुआ बिलोचिस्तानमें पहुंचा, जहां बिलोच लोग बड़ी ख़ातिरदारीसे पेश आये. फिर वहांसे ईरानके इलाके सीस्तानमें पहुंचा जहांका हाकिम मुहम्मद सुल्तान शामलू पेशवाईको आया और बहुत अदब आदाब बजा लाया. एक शख़्स ग़यासबेग उस हाकिमका उस वक्त नायब था जिसकी बेटी नूरजहां बेगम, बादशाह जहांगीरशाहके समयमें हिन्दुस्तानकी बड़ी मुख़्तार हुई.

जब यह ख़बर ईरानके बादशाह तहमास्प को मिली तो उसने अपने शाहज़ादे सुल्तान मुहम्मद मिर्ज़ाको जो उस समय हिरातमें था हुक्मनामा लिखभेजा. अगर हम उस हुक्मनामे का तर्जुमा यहां लिखें तो बहुत बढ़जावे. उसका मतलब यह है कि १२ कोस तक तो सीस्तानका हाकिम हिरातसे जावे और ३ कोस तक शाहज़ादा खुद पेशवाईकरे. उम्दा तौरपर पेशवाईके साथ हिरातमें पहुंचने पर हुमायूंशाह की इस क़द्र ख़ातिर हुई कि दिल्लीका तख़्त छोड़नेके बाद आरामके साथ इतनी इज़्ज़त न मिली होगी, फिर हिरातसे मशहदमें, हिजरी ९५१ ता० १५ मुहर्रम [वि० १६०१ वैशा-ख कृष्ण १ = ई० १५४४ ता० ८ ऐप्रिल] को नेशापुर, वहांसे सब्ज़वार, वहांसे दाम-ग़ान और फिर सियाम, वहांसे सिनान और वहांसे अग्दू फिर सेमा, वहांसे क़ज़्वीन की तरफ़ चला. वहां बादशाह ईरानका भाई शाहज़ादा साममिर्ज़ा, और शाहज़ादा बहराम पेशवाईके लिये आये. इस मक़ामपर बड़ी ख़ातिरके साथ मिहमान्दारी हुई, फिर सुल्तानिया मक़ामके पास खुद बादशाह ईरान पेशवाईके लिये जमादियुलअव्वल [भाद्रपद = ऑगस्ट] में आया और बड़ी ख़ातिर की; इसके बाद दोनों बादशाह अपने २ डेरोंको गये, दूसरे दिन दावत हुई. इसी तरह दिन बदिन हुमायूंशाह की ख़ातिर होती थी.

एक दिन बादशाह तहमास्प ने बादशाह हुमायूंसे पूछा कि आपको इतनी त-क्लीफ़ें किस सबबसे हुई ? हुमायूंने जवाबदिया कि भाइयोंकी नालायक़ी से. इस बात

को सुनकर तह्मास्पका भाई मिर्ज़ा बहराम नाराज़ होकर तह्मास्पको बहकाने लगा लेकिन उसपर कुछ असर नहीं हुआ. ईरानियों ने हुमायूंकी बहुत कुछ ख़ातिर की और शाह तह्मास्पने हुमायूंशाहको यह भी कहा कि हिन्दुस्तानी राजाओंके साथ रिश्तेदारी होती तो आपकी बादशाहतमें ख़लल् न आता, हुमायूंने भी इस नसीहतको पसन्द किया. इस तरह तीन वर्ष बड़े आरामके साथ ईरानमें गुज़रे, फिर तह्मास्पशाहने अपने शाहज़ादे मुरादको १२ हज़ार फ़ौज समेत हुमायूंका मददगार बनाकर हिन्दुस्तानकी तरफ़ रवाना किया.

हुमायूंशाह मन्ज़िल ब मन्ज़िल क़न्धार पहुंचा; उसके भाई अस्करीने क़िलेको दुरुस्त किया. लड़ाई होनेके ३ महीने बाद मिर्ज़ा अस्करी हुमायूंके पास लाचार होकर चला आया, तब क़िला क़न्धार ख़ाली करवाकर हुमायूंशाहने इक़रारके मुवाफ़िक़ ईरानी सर्दारोंको सौंप दिया. थोड़े दिनों बाद ईरानी शाहज़ादा मुराद मरगया, जिसके बाद हुमायूंशाहने क़िला क़न्धार ईरानियोंसे छीन लिया और काबुल लेनेकी फ़िक्र हुई. इन दिनोंमें काबुलसे मिर्ज़ा कामरांको छोड़कर मिर्ज़ा हिन्दाल और नासिर मिर्ज़ा क़न्धारमें भाग आये थे. बादशाहने काबुल पर चढ़ाई की, मिर्ज़ा कामरां पहिले तो लड़ाई करनेके लिये तय्यार हुआ लेकिन जब इसके सर्दार हुमायूंसे आ मिले, तब रातके वक़्त ग़ज़नीकी तरफ़ भागगया और हिजरी ९५३ ता० १० रमज़ान [वि० १६०३ कार्तिक शुक्र ११ = ई० १५४६ ता० ५ नोवेम्बर] को हुमायूंने काबुल पर क़ब्ज़ा करलिया (१).

कामरांको ग़ज़नीमें घुसनेका मौक़ा नहीं मिला, जिससे वह हज़ारह (२) लोगोंकी तरफ़ चलागया, फिर नासिर मिर्ज़ाने बग़ावत करनी चाही तो बादशाहने उसे क़ैद करके क़त्ल करवादिया. जब हुमायूं बदख़्शांको फ़तह करके वहां बीमार होगया तब मौक़ा देखकर पीछेसे मिर्ज़ा कामरांने ग़ज़नी और काबुलपर क़ब्ज़ा करलिया. यह सुनकर तन्दुरुस्त होनेकेबाद हुमायूं फिर काबुलकी तरफ़ चला; रास्तेमें घाटियोंपर कामरांकी फ़ौजसे मुक़ाबिला करताहुआ फ़तहयाबीके साथ काबुल आपहुंचा और क़िलेको घेरलिया. उस समय कामरांने दाया (धाय) समेत शाहज़ादे अक्बरको क़िलेकी दीवारके कंगूरोंपर बिठाया और हुमायूंके सर्दारोंके बालबच्चोंको भी

---

(१) अबुलफ़ज़्ल इस फ़तहको हिजरी ९५२ ता० १२ रमज़ान [वि० १६०२ मार्गशीर्ष शुक्र १३ = ई० १५४५ ता० १७ नोवेम्बर] में लिखता है और हमने तबक़ात अक्बरीके मुवाफ़िक़ लिखा है.

(२) पठानोंके एक गिरोहका नाम है.

कंगूरोंसे लटकादिया, लेकिन परमेश्वरकी कृपासे शाहज़ादे अक्बरको कोई चोट न लगी. [अबुल्फ़ज़्ल बड़ी ख़ुशामदके साथ लिखता है कि वह शाहज़ादा वली (देवपुरुष) था इस कारण उसे चोट नहीं लगी] .

हुमायूंके पास बल्ख़ और कन्धारसे फ़ौजी मदद आगई और कामरां क़िला छोड़ भागा. हिजरी ९५४ ता० ७ रबीउल्अव्वल [वि० १६०४ वैशाख शुक्ल ९ = ई० १५४७ ता० ३० एप्रिल] को हुमायूंने दुबारा काबुल पर क़ब्ज़ा किया.

कामरांने हज़ारा लोगोंकी मददसे बदख़्शां लेलिया, लेकिन तालक़ान क़िलेके पास हुमायूं की फ़ौजसे शिकस्त खाने बाद वह हाज़िर होगया. बादशाह उसको कोलाबका इलाक़ा जागीरके तौर देकर काबुलमें लौट आया. कुछ दिनोंके बाद हुमायूं शाहने बदख़्शांकी तरफ़ चढ़ाई करके वहां क़ब्ज़ा करलिया; फिर बल्ख़की तरफ़ सुल्तान मुहम्मद उज़्बकसे भी लड़ाई हुई, जिसमें बादशाह हुमायूंने फ़तह पाई लेकिन दूसरी दफ़ा उज़्बकोंने तीस हज़ार फ़ौजलेकर हमला किया और हुमायूं शिकस्त खाकर काबुलकी तरफ़ भाग आया.

इस समय मिर्ज़ा कामरां भी दुबारा बाग़ी होगया, हुमायूंके सर्दारोंकी मिलावटसे मुक़ाबिलेको आया और हुमायूंके सर्दार उससे जामिले. इस लड़ाई में हुमायूंके सिरमें तलवारका घाव लगा और घोड़ा भी घायल हुआ आख़िरकार हुमायूं जानलेकर बामियां मक़ामकी तरफ़ भागगया.

यह लड़ाई काबुलपर हिजरी ९५५ ता० ५ जमादियुल्अव्वल् [वि० १६०५ आषाढ़ शुक्ल ६ = ई० १५४८ ता० १५ जून] को हुई, हुमायूंशाह फ़ौज एकट्ठी करके तीन महीने बाद काबुल आया, जहां कामरांसे लड़ाई हुई. कामरां भागगया, लेकिन मिर्ज़ा अस्करी और उसके दूसरे साथी क़ैद करलिये गये, तीसरीबार हुमायूंने काबुलमें क़ब्ज़ा करलिया, एक वर्ष तक हुमायूंने यहां आराम पाया, इसके बाद कामरांको हमेशा शिकस्त ही मिलतीरही.

ऊपर लिखे संवत् व सन्में कामरांने एकबार हुमायूंकी फ़ौजपर छापा मारा जिसमें मिर्ज़ा हिन्दाल मारागया, लेकिन कामरां भागकर हिन्दुस्तानके पठान बादशाह सलीमशाहके पास चला आया.

तब बादशाह हुमायूंने हिजरी ९५९ [वि० १६०९ = ई० १५५२] में हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की, उस समय कामरां दिल्लीसे भागकर कक्खड़ पठान सुल्तान आदमके पास पहुंचा; उसने मिर्ज़ाको पकड़कर हुमायूंके हवाले करदिया. हुमायूंका इरादा तो अब भी इसपर रह्म करने ही का था लेकिन सर्दारोंने उसे क़त्ल करना चाहा

तब हुमायूंने उसकी आंखोंमें सलाई फिरवाकर अन्धा करवादिया, कामरां रुख्सत लेकर मक्केकी तरफ़ चला गया और उधर ही हिजरी ९६४ [वि॰ १६१४ = ई॰ १५५७] में मरगया.

हुमायूंका इरादा कश्मीर लेनेकाथा लेकिन सिपाहियों की बेदिलीसे वापस काबुलको लौटआया. हिजरी ९६१ ता॰ १५ जमादि युल्अव्वल् [वि॰ १६११ ज्येष्ठ कृष्ण १ = ई॰ १५५४ ता॰ १८ एप्रिल] को हुमायूंकी दूसरी बेगमके पेटसे दूसरा शाहज़ादा मिर्ज़ा हकीम पैदा हुआ. हिजरी ९६१ ज़िलहिज [वि॰ १६११ कार्तिक = ई॰ १५५४ के नोवेम्बर] में दिल्लीके पठान बादशाह सलीमशाह के मरनेकी ख़बर सुनने बाद हिन्दुस्तान पर हुमायूंने चढ़ाई की और पेशावर होकर लाहौरको बिना लड़ाई लेलिया. इसी तरह सरहिन्द, हिसार, और जालन्धर पर जमाव करलिया.

देपालपुरके पास पठानोंसे मुग़लिया फ़ौजकी लड़ाई हुई जिसमें मुग़ल ग़ालिब रहे. सिकन्दरशाह सूरने हबीबखां और तातारखांकी मातहतीमें ३०००० फ़ौज हुमायूं से लड़नेको भेजी. सतलजके किनारेपर रातके समय पठानोंकी फ़ौजमें आग भड़कने से ख़राबी होगई और मुग़लिया फ़ौजने यहां भी फ़तह पाई. यह ख़बर सुननेसे सिकन्दरशाह सूर खुद ८०००० फ़ौज लेकर सरहिन्दके पास आया, जिसके मुक़ाबिल हुमायूंशाह भी फ़ौज लेकर चला, सरहिन्दपर लड़ाई हुई और सिकन्दरशाह भागा, हुमायूंके सर्दारोंने पीछा किया. यह लड़ाई हिजरी ९६२ ता॰ २ शाबान [वि॰ १६१२ आषाढ़ शुक्ल ४ = ई॰ १५५५ ता॰ २३ जून] को हुई. सिकन्दरशाह सिवालकके पहाड़ोंकी तरफ़ भागगया जिसका पीछा करनेके लिये हुमायूंने शाह-अबुल्मआलीको भेजा.

हुमायूं बादशाह पहिली रमज़ानको सलीमगढ़ और ४ रमज़ान [श्रावण शुक्ल ६ = ई॰ ता॰ २५ जुलाई] को दिल्लीमें दाख़िल हुआ और अपने नामका सिक्का व ख़ुतबा दूसरी बार हिन्दुस्तानमें जारी किया. शाह अबुल्मआलीसे सिकन्दरशाहका कुछ भी नुक्सान नहीं हुआ. जब क़िले सियालकोटमें वह छिपताहुआ जाता था तब हुमायूंशाहने शाहज़ादे मुहम्मद अक्बरको बैरमखांके साथ उस तरफ़ भेजा. यह शाहज़ादा कलानौरके पास पहुंचा था कि पीछेसे हिजरी ९६३ ता॰ १५ रबीउल्अव्वल् [वि॰ १६१२ फाल्गुन कृष्ण १ = ई॰ १५५६ ता॰ २७ जैन्यूअरी] को हुमायूं गुज़रगया.

यह हाल इस तरह पर है कि शामके वक्त हुमायूंशाह कुतबख़ाने (पुस्तकालय) के कोठे पर बैठा हुआ था, जब नीचे उतरने लगा तो नमाज़के समय आज़ानकी आवाज़ सुनकर अदबकरनेकी इच्छासे सीढ़ी पर बैठगया, खड़ा होनेके वक्त हाथमें की लकड़ी फिसलजानेसे लुढ़कता हुआ ज़मीन पर आ गिरा. सिरका हिस्सा

फटकर कानसे कुछ ख़ून आया. यह बात सातवीं रबीउल्अव्वल्को हुई, और इस तक्लीफ़से एक हफ्ते बाद देहान्त होगया. ता० २८ रबीउल्अव्वल् [फाल्गुन कृष्ण १४ = ता० ९ फेब्रुअरी] को इस बातकी ख़बर पहुंचने पर शाहज़ादा अक्बर १३ वर्षकी उम्रमें कलानौर मक़ाम पर तख्तनशीन हुआ.

बादशाह हुमायूं इल्मका शौक़ीन व क़द्रदान, वादेका पक्का, सीधा, सच्चा और बहादुर व उस समय के मुग़लोंसे बहुत कुछ नर्म दिल और दयावान था.

अब यहां उन पठान बादशाहोंका हाल लिखा जाता है, जो हुमायूंके निकलजाने पर तीन पीढ़ी तक दिल्लीके बादशाह रहे और चौथे सिकन्दरशाहको हुमायूंने मुल्कसे निकाल दिया.

फ़रीदख़ां-शेरशाह सूर.

दिल्लीके बादशाह सुल्तान बहलोल् लोदीके समय स्वादबाजौर (१) के पहाड़ी ज़िलेका रहनेवाला इब्राहीम सूर दिल्लीके किसी सर्दारके पास आकर नौकर हुआ, जिसके बेटे (२) हसनको थोड़े दिनोंबाद हिसारकी हुकूमत् मिली, और वह सुल्तान इब्राहीमके सर्दारोंमें गिनागया. उसको सहसराम, टांडा और ख़वासपुर वग़ैरह परगने बिहारकी तरफ़ जागीरमें मिले.

हसनके आठ बेटे थे, जिनमें से फ़रीद और निज़ाम तो विवाहता पठानीके पेट से थे और बाक़ी ६ लौंडियोंसे पैदाहुए थे. फ़रीद अपने बापकी नामिहरबानीके सबब जौनपुर चलागया, लेकिन रिश्तहदारोंने पीछे बुलाकर रज़ामन्दीके साथ हसन की जागीरका इन्तिज़ाम उसे दिलादिया. उसने वहां अच्छी कार्रवाई की; लेकिन वह अपनी सौतेली माकी नाराज़गी के कारण दौलतख़ांके पास चलागया, जो इब्राहीम लोदी बादशाहका सर्दार था. हसनके मरने पर उसकी जागीर दौलतख़ांने फ़रीदको दिलादी; जब कि इब्राहीम लोदी और बाबर बादशाहकी लड़ाई से पठानों की बादशाहत बिगड़गई तब फ़रीदख़ां, बिहारके ख़ुद मुख़्तार हाकिम सुल्तान मुहम्मद के पास जा रहा. सुल्तान मुहम्मद एक दिन शिकारको गया था, उसपर शेर झपटा. फ़रीदख़ांने हिम्मत करके तलवारसे शेरको मारडाला, जिसपर सुल्तान-मुहम्मदने ख़ुशहोकर फ़रीदको "शेरख़ां" का ख़िताब दिया और अपने बेटे जलालख़ांका

---

(१) यह अफ़ग़ानिस्तानका पूर्वी हिस्सा है.

(२) तबक़ात अक्बरीमें लिखाहै कि उसी इब्राहीमका नाम हसन था और तारीख़ सलातीन अफ़ाग़िना और तारीख़ फ़िरिश्तामें इब्राहीमको हसनका बाप लिखाहै और तोह्फ़ए अक्बरीका भी यहीबयान है.

अतालीक़ बनाया. जोंदाके हाकिम मुहम्मदख़ांने शेरख़ांके भाइयोंको जागीर पर क़ाबिज़ करादिया, तब शेरख़ां नाउम्मेद होकर बाबर बादशाहके सर्दार जौनपुरके हाकिम सुल्तान जुनैद बरलाससे जामिला और फ़ौज मांगकर उसने अपनी जागीर से मुहम्मदकी फ़ौजको निकालदिया.

शेरख़ां अपने छोटे भाई निज़ामख़ांको जागीरमें छोड़कर बादशाह बाबरके पास हाज़िर हो गया और चंदेरीके सफ़रमें बादशाहके साथ रहा. लेकिन मुग़लोंकी तरफ़से डरके सबब शेरख़ां भागकर अपनी जागीरमें चला आया और वहांसे सुल्तान मुहम्मदके पास बिहारमें पहुंचा. सुल्तान मुहम्मदने दुबारा शेरख़ांको अपने बेटेका उस्ताद बनाया. सुल्तान मुहम्मदके मरने पर उसके बेटे जलालख़ांके समयमें शेरख़ां बड़ा ताक़तवाला हो गया. तब जलालख़ां, दूसरे पठानों समेत तंग होकर बंगालेके सुल्तानसे जा मिला. शेरख़ांने धोखा देकर बंगाली पठानोंकी फ़ौजको शिकस्त दी और उनका बहुतसा सामान हाथ लगनेसे ताक़त पाकर बिहारका एक रईस बनगया.

इसी अर्सेमें इब्राहीम लोदीका मातहत, क़िले चनारका हाकिम ताजख़ां अपने बेटे के हाथसे मारागया तब शेरख़ांने उसकी बीबी लाडोमलिकासे निकाह (विवाह) करलिया और क़िले चनारको ख़ज़ाने समेत अपने तहत्में लिया. फिर इसने बंगाले पर चढ़ाई करके वहांके बादशाहको भी शिकस्त दी. इस वक्त़ हुमायूंशाह अपने भाइयोंकी लड़ाई और बहादुरशाह गुजरातीके झगड़ोंमें लगरहा था, इससे शेरख़ांको मुल्क लेनेका ख़ूब मौक़ा मिला. सिकन्दर लोदीका बेटा महमूद जो महाराणा सांगा के साथ बाबर बादशाहसे शिकस्त खाकर भागा था ठट्ठेमें अपना अमल जमाताहुआ एक फ़ौज बनाकर बिहारमें आया. शेरख़ांने पठानोंको उसका तरफ़दार देखकर ताबेदारी इख़्तियार की. महमूदने बिहारका इलाक़ा सर्दारोंमें बांटकर शेरख़ांको भी थोड़ीसी जागीर दी और कहा कि मुग़लों पर फ़तह पाने बाद यह सब इलाक़ा तुझको ही जागीर में दिया जावेगा; सुल्तान महमूद लोदीने मुग़लोंकी फ़ौजपर फ़तह पाकर मानकपुर तक क़ब्ज़ा करलिया. हुमायूंशाहने कालिन्जरसे अमीर हिन्दूबेग को फ़ौज देकर उस तरफ़ भेजा. शेरख़ां लड़ाईके समय हिन्दूबेगसे मिलावट करके भागनिकला, जिससे पठानोंकी फ़ौज बर्बाद होगई.

हिजरी ९४९ [वि० १५९९ = ई० १५४२] में सुल्तान महमूद लोदी परेशान फिरताहुआ मरगया.

क़िला चनार ख़ाली न करनेके सबब हुमायूंशाहने शेरख़ांपर चढ़ाई की

लेकिन शेरख़ांने नरमीके साथ अपने बेटे कुतुबख़ांको हुमायूंशाह की ख़िद्मतमें भेज-दिया. हुमायूंने भी बहादुरशाह गुजरातीकी लड़ाईके सबब इस सुलहपर राज़ी होकर पीछे कूच किया, लेकिन जब बादशाह गुजरातमें पहुंचा तब कुतुबख़ां भागकर अपने बापकेपास चलाआया. शेरख़ांने इस अर्सेमें सुल्तान महमूद बंगालीसे बंगाला फ़तह करलिया लेकिन थोड़ेही दिनोंके बाद हुमायूंने शेरख़ांपर चढ़ाई करके क़िला चनार फ़तह करलिया.

हुमायूं अपने सर्दार दोस्तबेगको इस क़िलेमें छोड़कर शेरख़ांके पीछे चला और रास्तेमें ही गढ़ीनाम क़िले और गौड़ (१) को फ़तह किया. शेरख़ांने भागकर क़िला रोहतास फ़रेबके साथ वहांके राजासे छीनलिया, हुमायूंशाहको तीन महीने तक आराम करने बाद ख़बर मिली कि मिर्ज़ा हिन्दालने आगरे और मेवातकी तरफ़ बग़ावतकी है. तब बादशाह ५००० सवार बंगालेमें छोड़कर आप आगरेकी तरफ़ चला. जब जोसार मक़ाममें पहुंचा तो शेरशाहने बादशाहको धोखा देकर छापा मारा जिसमें हुमायूंको हिजरी ९४६ [वि० १५९६ = ई० १५३९] में शिकस्त खाकर भागना पड़ा और बहुतसी मुग़लिया फ़ौज बर्बाद हुई.

इसके बाद शेरख़ां बंगाले में पहुंचा, वहां जहांगीर कुली ५००० फ़ौज के साथ गौड़ मक़ाम पर ठहराहुआ था, कई लड़ाइयों के बाद इस फ़ौज को भी बर्बाद करके शेरख़ांने अपना लक़ब "शेरशाह" रक्खा. हुमायूंशाह आगरे में पहुंचा और मिर्ज़ा कामरां लाहौर चलागया, दूसरे रिश्तहदार भी बिखरगये; लेकिन हुमायूंशाह हिम्मत के साथ एक लाख (२) फ़ौज एकट्ठी करके क़न्नौज में शेरशाह के मुक़ाबिल पहुंचा.

हिजरी ९४६ ता० २३ ज़िलहिज [वि० १५९७ ज्येष्ठ कृष्ण ९ = ई० १५४० ता० २ मई] को हुमायूं पर अचानक शेरशाह का हमला हुआ जिससे हुमायूंशाह बिना मुक़ाबिले के शिकस्त खाकर आगरे होताहुआ लाहौर पहुंचा और शेरशाहने बादशाही ताज अपने सिरपर रक्खा.

हिजरी ९४९ [वि० १५९९ = ई० १५४२] में ग्वालियरका क़िला भी शेरशाह ने हुमायूंके सर्दार अबुल् क़ासिमबेगसे छीन लिया, और इसी संवत् में इसने मालवेकी तरफ़ चढ़ाई की और क़िला रणथंभोर सुलह के साथ लेकर आगरे आगया.

दूसरे वर्षमें मुल्तान का सूबा भी लेलिया. हिजरी ९५० [वि० १६०० = ई० १५४३] में रायसेन का क़िला लिया और वहांके राजा सलहदी तंवर के बेटे

(१) गौड़ एक मक़ामका नामहै जिसे लखनौती भी कहते हैं.

(२) फ़ौज की तादाद में बाज़ बाज़ किताबों के बयानसे इख़्तिलाफ़ पायाजाता है.

पूर्णमल्ल को बालबच्चों समेत अमनका भरोसा देकर थोड़ी दूर क़िलेसे बाहर निकलने दिया, लेकिन पीछेसे फ़ौज भेजकर घेरलिया और राजा औरतों समेत बहादुरीसे लड़कर मारागया.

शेरशाह आगरे में आया और वहांसे उसने बड़ी फ़ौजके साथ मारवाड़के राव मालदेव पर चढ़ाई की.

हिजरी ९५० ता० १० शव्वाल [वि० १६०० पौष शुक्र ११ = ई० १५४३ ता० ७ डिसेम्बर] को मुक़ाबिले की नौबत पहुंची अजमेरके पास दोनों फ़ौजें एक महीने तक मुक़ाबिल पड़ी रहीं, आख़िरकार ऊपर लिखे हुए दिनको शेरशाहने फ़रेबके साथ फ़तह पाई, जिसका पूरा ज़िक्र मारवाड़ की तवारीख़ में लिखाजायगा.

इस लड़ाईके पीछे चित्तौड़वालोंसे सुलह करता हुआ वापस रणथम्भोर आया, और वहांसे कालिन्जर पहुंचकर क़िलेका घेरा डाला. वहांके राजाने मुक़ाबिला किया, शेरशाह एक दिन बारूदके ख़ज़ाने (मेगज़ीन) के पास खड़ा था कि उसमें आग लगजानेसे वह मए अपने उस्ताद वगैरहके जलगया. हिजरी ९५२ ता० १२ रबीउल्अव्वल [वि० १६०२ ज्येष्ठ शुक्र १३ = ई० १५४५ ता० २४ मई] को इस तक्लीफ़में फ़तहकी ख़बर सुनकर मरगया.

यह बादशाह आमतौर पर इन्साफ़ पसन्द और मुल्कगीरीमें दग़ाबाज़ था. अपनी रअय्यतको दिलसे आराम देना चाहता था. इसने सड़कें तय्यार करवाकर दोतरफ़ा सायादार पेड़ लगवाये थे और मौके २ पर कुए और सराएं बनवाई थीं. जब वह अपनी डाढ़ीको सिफ़ेद देखता तो अफ्सोसके साथ कहता कि मुझको शामके वक्त बादशाहत मिली.

जलालख़ां इस्लामख़ां, सलीमशाह सूर.

शेरशाहके पीछे दो बेटे आदिलख़ां और जलालख़ां रहे, उनमेंसे आदिलख़ां तो अपने बापके मरनेके वक्त रणथम्भोरमें था और जलालख़ां छोटा पास होनेके सबब सर्दारोंकी मददसे कालिन्जरके पास तख़्त पर बैठा. इसने अपने बड़े भाई आदिलख़ांके नाम एक अर्ज़ी लिख भेजी, कि आप दूर फ़ासले पर थे जिससे मैं पास होनेके कारण तख़्त पर बैठगया ताकि सल्तनतमें किसी प्रकार ख़लल न आवे, वरना मैं तो आपका ताबेदार ही हूं.

इस तरह सलीमशाह हिजरी ९५२ ता० १५ रबीउल्अव्वल [वि० १६०२ आषाढ़ कृष्ण १ = ई० १५४५ ता० २६ मई] को तख़्तपर बैठकर सीकरी में

पहुंचा, और अपने भाई आदिलख़ांको बुलाकर उसकी बहुत कुछ ख़ातिर की, फिर आगरे में पहुंचकर आदिलख़ांको तख़्तपर बैठनेके लिये कहा लेकिन उसने इन्कार किया और सलीमशाहको तख़्तपर बिठाया, तब सलीमशाहने आदिलख़ांको बयाने का इलाका देकर विदा किया; लेकिन सलीमशाहने दो महीनेके बाद आदिलख़ांके क़ैद करनेके लिये ग़ाज़ी महल्दारको भेजा. आदिलख़ां यह ख़बर सुनकर मेवातके हाकिम ख़वासख़ांके पास पहुंचा. जब ग़ाज़ी महल्दार गुजरातमें पहुंचा तो ख़वास-ख़ांने महल्दारको क़ैदकिया और आप आदिलख़ां का मददगार होकर आगरेकी तरफ़ चला. इसने सलीमशाहके कई सर्दारोंको मिलालिया था लेकिन आगरेके पास लड़ाई होने पर सलीमशाहने फ़तह पाई और आदिलख़ां भागकर पटनेकी तरफ़ चलागया, जहांसे उसका कुछ भी पता नलगा, और ख़वासख़ां वग़ैरह उसके साथी भी भागकर बिखरगये. सलीमशाह फ़तह पानेके बाद अपनी राजधानी में आया.

ख़वासख़ां और ईसाख़ां पर सलीमशाहने चढ़ाई की लेकिन फ़ीरोज़पुरके पास शिकस्त खाई दूसरी बार चढ़ाई करनेसे वे दोनों सर्दार कमाऊंकी तरफ़ भागगये ख़वासख़ां और ईसाख़ां दोनों, आज़महुमायूंके पास पहुंचे जो लाहोरका हाकिम था. सलीमशाहने उस तरफ़ भी चढ़ाई की और दिल्लीमें पहुंचकर सलीमगढ़ नामी क़िला बनवाया जो अबतक मौजूद है.

दिल्लीसे लाहौरकी तरफ़ चला, अंबालेके पास मुक़ाबिला हुआ; आज़महुमायूं और ख़वासख़ांके बीच नया बादशाह बनानेके बारेमें तकरार होगई जिससे ख़वासख़ां लड़ाईके शुरूमें अलहदा होकर चलदिया, और आज़महुमायूं शिकस्त खाकर पहा-ड़ोंमें भागगया. सलीमशाह कुछ फ़ौज लाहोरमें छोड़कर लौट आया.

हिजरी ९५४ [वि० १६०४ = ई० १५४७] में मालवेके सूबेदार शुजाअत-ख़ां को किसी आदमीने तलवारसे ज़ख़्मी किया, जिसको उसने सलीमशाहके इशारेसे मरवाडालने का इरादा समझा और मालवेकी तरफ़ भागा. सलीमशाहने मांडू तक उसका पीछा किया, लेकिन वह बांसवाड़ेकी तरफ़ पहाड़ोंमें जा छिपा. सलीमशाह, ईसाख़ां सूरको बीस (२००००) हज़ार सवारोंके साथ उज्जैनमें छोड़कर आप आगरे चलाआया.

आज़महुमायूं दुबारा, नियाज़ी कक्खड़ोंसे मिलकर फ़साद करानेलगा; तब सलीमशाहने उसपर चढ़ाई की. कक्खड़ लोगोंका मुल्क फ़तह होगया तो आज़म-हुमायूं और सईदख़ां कश्मीर पहुंचकर वहांके लोगोंके हाथसे क़त्लहुए और सलीमशाह वापस आया.

इन्हीं दिनोंमें हुमायूंशाहका भाई मिर्ज़ा काम्रां सलीमशाहके पास आकर सिवालकके पहाड़ोंकी तरफ़ चलागया जिसको कक्खड़ोंने पकड़कर हुमायूंके हवाले किया जिसका पूरा ज़िक्र हुमायूंशाहके हालमें लिखागया है.

सलीमशाहने हुमायूंशाहके सिन्धु नदीपर आनेकी ख़बर सुनकर पन्जाबकी तरफ़ चढ़ाई की लेकिन हुमायूंशाहके पीछे लौटजानेकी ख़बर सुनकर यह भी ग्वालियर में चलाआया. फिर वह आंतरी (१) की तरफ़ शिकारको आया, उसके बदख़्वाहोंने उसे क़त्ल करवाना चाहा लेकिन वह बचगया. सलीमशाह इस शकमें सय्यद् बहाउद्दीन और महमूदको क़त्ल करवाकर ग्वालियरको चलागया, और दूसरे भी कई ज़बरदस्त सर्दारोंको क़ैद और क़त्ल किया.

हिजरी ९५९ [वि० १६०९ = ई० १५५२] में शुजाअतखां, संभलके हाकिम ताजखांके पास पहुंचा, जिसने सलीमशाहके कहनेसे शुजाअतखांको क़त्ल करवाडाला. पिछले दिनों में सलीमशाह ज़ियादा अय्याश होगया और उसे भगन्दरकी बीमारी हुई जिस पर दाग़ दिलवानेसे तक्लीफ़ ज़ियादा बढ़गई. आख़िर, शुरू हिजरी ९६० [वि० १६१० = ई० १५५३] में इस जहान्से कूच करगया.

यह बादशाह फ़रेबी और बहादुर था, पिछले दिनोंमें ऐश इशरत और शिकार में अपना समय खोनेलगा. इसके समय में एक नई बात यह हुई कि अब्दुल्ला अफ़ग़ान, शैख़ सलीम चिश्तीका मुरीद इमाम महदी बनकर बयाने में मश्हूर हुआ. सलीमशाहने पहिले तो उसको समझाया और जब वह अपने इरादेसे नहीं फिरा तब उसको अपने इलाक़े से निकलवादिया, लेकिन फिर वह चलाआया और ज़ियादा बीमार हुआ तो सलीमशाहने कहा कि तू अपनी ज़बानसे कहदे कि मैं महदी नहीं हूं. इसपर उसने मुंह फेरलिया, जिससे सलीमशाहने गुस्सेमें आकर तीन चाबुक लगवाये और जाली (बनावटी) महदीका दम निकलगया.

मुबारिज़ख़ां मुहम्मदशाह अदली.

जब सलीमशाह मरगया तो उसका १२ वर्षका बेटा फ़ीरोज़ ग्वालियरमें तख़्त पर बिठाया गया, लेकिन तीन ही दिनके बाद शेरशाहके भाई निज़ाम सूरके बेटे मुबारिज़ख़ांने (२) जो सलीमशाहका साला भी था अपने भान्जेको मारकर सलीमशाह

(१) आंतरी मेवाड़का पूर्वी ज़िला कहलाता है, जिसका कुछ हिस्सा बेगूंरावतकी जागीरमें से ग्वालियरके क़ब्ज़ेमें चलागया है.

(२) तारीख़ अफ़ाग़िनामें इसका नाम ममेरेज़ लिखा है.

का तख़्त ले लिया और अपना ख़िताब मुहम्मदशाह आदिल रक्खा. इसने अपना वज़ीर शेरख़ांके गुलाम शमशेरख़ांको बनाया और दौलतख़ां नौहानीको मुसाहिब ठहराया. फिर हेमूं नाम ढूंसर (१) जो बाज़ारका चौधरी था, मुहम्मदशाहअदलीके इज़्ज़तदार नौकरोंमें होगया. एक महीना भी इसकी सल्तनतको नहीं हुआ था कि मुहम्मदशाह ने क़न्नौजकी जागीर मुहम्मद क़रमलीसे छीनकर शम्सख़ांको देनी चाही, क़रमलीके बेटे सिकन्दरने शम्सख़ांको बादशाहके सामने मारडाला. मुहम्मदशाह अदली ज़नानख़ानेमें भागगया, लेकिन उसके बहनोई इब्राहीमख़ांने सिकन्दरको मारडाला. ताजख़ां बाग़ी होकर भागा, अदलीशाहने उसका पीछा किया, ताजख़ां अपने भाइयों और मकरानी मुसल्मानोंसे मिलकर लड़ने लगा, अदलीशाहके मुसाहिब हेमूं ढूंसरने उनको शिकस्त देकर भगादिया.

अदलीशाहके बहनोईका बेटा इब्राहीम (२) डरकर चनारसे भागा और अपने बाप ग़ाज़ीख़ांके पास हिंडौनको चलागया. ईसाख़ांको अदलीशाहने उसके पीछे फ़ौज देकर भेजा, काल्पीके पास मुक़ाबिला हुआ, इब्राहीम फ़तहपाकर दिल्ली और आगरेका बादशाह बनगया, और अदलीशाह चनारको चला गया.

यह दिल्ली और आगरेमें सुल्तान इब्राहीमके नामसे मश्हूर हुआ और इसने सिक्का और ख़ुत्बा अपने नामका जारी किया.

पंजाबमें अदलीशाहके दूसरे बहनोई अहमदख़ां सूरने बादशाह बनकर अपना लक़ब सिकन्दरशाह रक्खा और आगरेकी तरफ़ सुल्तान इब्राहीम पर चढ़ाई की. सामना होने पर इब्राहीम शिकस्त खाकर संभलकी तरफ़ भागा और सिकन्दरशाहने दिल्ली आगरेमें सिक्का और ख़ुत्बा अपने नामका जारी किया. इस मौक़े पर हुमायूंशाहके हिन्दुस्तानमें आकर लाहौर पर क़ब्ज़ा कर लेनेकी ख़बर मिली. सिकन्दरशाह बड़ी जर्रार फ़ौज लेकर पंजाबकी तरफ़ चला और सरहिंदके पास मुक़ाबिले से भाग कर पहाड़ोंमें चला गया. हुमायूंशाह फ़तह पाकर दिल्लीमें आया, जिसका हाल ऊपर लिखा गया है.

इब्राहीम एक बड़ी फ़ौज बनाकर काल्पीकी तरफ़ गया जहां मुहम्मदशाह अदली और उसके मुसाहिब हेमूंसे शिकस्त खाकर बयानेमें अपने बाप ग़ाज़ीख़ांके पास पहुंचा. हेमूंने वहां भी इसे जाघेरा. इब्राहीम वहांसे भागकर ठट्ठेमें आया

---

(१) ढूंसरको अक्सर तवारीख़ोंमें बनिया लिखा है परन्तु यह और ही क़ौम है जो अपनेको ब्राह्मणोंसे निकला बतलाती है और अपनी ज़ात भार्गव ब्राह्मण भृगु ऋषिसे बयान करती है.

(२) यह इनकी ख़ास बहिनका बेटा था या बहनोईकी दूसरी बीबीका, इस बातका पता न मिलनेसे बहनोईका बेटा लिखा है.

और वहांके राजा रामचन्द्रने उसको क़ैद करलिया. फिर वहांसे निकलकर मालवे की तरफ़ होताहुआ उड़ीसेमें पहुंचा; वहां कर्रानी सुलैमानके हाथसे हिजरी ९७५ [वि० १६२४ = ई० १५६७ या ६८] में मारागया.

मुहम्मदशाह अदली और हेमूंकी चरकटा मक़ाम पर मुहम्मदख़ां से लड़ाई हुई जिसमें वह मारागया. मुहम्मदशाह अदली तो चनारमें आया और हेमूंको फ़ौज देकर अक्बरसे मुक़ाबिलेके लिये दिल्ली और आगरेकी तरफ़ भेजा; क्योंकि वह हुमायूंके बाद दिल्लीके तख़्त पर बैठगया था. आगरेके मुग़लिया सर्दार सिकन्दरख़ां उज़बक और क़बाख़ांने दिल्लीकी राह ली और हेमूंने आगरे पर क़ब्ज़ा किया. मुहम्मदशाह अदलीका सर्दार ईसाख़ां दिल्ली पर चढ़ा जिसने तर्दीबेगख़ां मुग़लसे दिल्ली छीन ली. ईसाख़ां पानीपतकी लड़ाईमें मुग़लोंके हाथसे मारागया जिसका हाल मौक़े पर लिखा जायगा. हेमूं पर बैरमख़ां वग़ैरह सर्दारोंको फ़ौज देकर अक्बरशाह ने रवाना किया जिन्होंने हेमूंको गिरिफ़्तारीके बाद क़त्ल किया, इसका पूरा हाल भी अक्बरके ज़िक्रमें लिखा जायगा.

आख़िरमें मुहम्मदशाह अदली और महमूदख़ां गौड़ियाके बेटे ख़िज़रख़ांसे लड़ाई हुई जिसमें मुहम्मदशाह अदली मारागया. तीन वर्ष के अनुमान मुहम्मदशाह अदली की हुकूमत गिनीजाती है. इसके बाद हिन्दुस्तान में पठानों की सल्तनत का ख़ातिमाहो कर मुग़लोंकी बादशाहत जमगई, जिनमें से अक्बर बड़ानामी बादशाह हुआ; उसका हाल आगे मौक़े पर लिखाजायगा.

शेषसंग्रह.

महाराणा विक्रमादित्यका माराजाना और बनवीरका गद्दी पर बैठना विक्रमी १५९३ में लिखा है, इस हिसाबसे उक्त संवत् के श्रावण कृष्ण १ से फाल्गुन कृष्ण २ के बीचमें यह बात हुई होगी; क्योंकि अमरकाव्यमें श्रावणादि संवत् हैं और दूसरी तवारीख़ोंमें संवत् १५९२ वि० लिखा है, सो उसमें उक्त लेखसे सन्देह होता है.

चित्तोड़गढ़के ऊपरी दर्वाज़े रामपोलके दक्षिणी दीवारपर बाहरकी तरफ़ यह प्रशस्ती लिखी है–

प्रशस्ती.

महाराजाधिराज महाराणा श्री बणवीर आदेशातु चारण ब्राह्मण जोग्यां दाण दपाण मुक्ति कीधो जको चित्रकूट राजविहो एन चारण भाटशुं दाणलेवे जींकी माउए गधेगाल है श्री मुखी सम्वत १५९३ वर्षे फागण वदी २ दिने चारण कालजीवाही दाणमुक्ति करायो चारण.

छन्द मुक्तादाम.

कियो बध विक्रमको बनबीर । उदै हरि गे गिरि कुम्भल तीर ॥
धरे बनबीर तबें सिर छत्र । सुभट्टनके थट झंझट तत्र ॥ १ ॥
मिले महिपालहि कुम्भलमेर । निकार दियौ बनबीरहि फेर ॥
सिरोहियकी धर दावन सार । कियो नृप ऊदल मन्द विचार ॥ २ ॥
सगारथ झल्लनके हित सोध । बढ्यो मरुमाल महीप विरोध ॥
पदच्युत बुन्दियतें सुल्तान । दियो नृप सुर्जन कों वह थान ॥ ३ ॥
भयो सरणागत हाजियखान । कियो अनयी बन युद्ध दिवान ॥
उदैपुर और उदै सर थाप । तहां प्रसर्यो निज वंश प्रताप ॥ ४ ॥
अकव्वर दिल्लियतें दल आंन । ललक्क चितोर लियो मुगलान ॥
वही फिर वत्सर अन्तर आय । लियो रणथम्भक् सुर्जणनाय ॥ ५ ॥
लिख्योद्धत गोहिलपिप्पलिराज । वही विधि पत्तन भाव समाज ॥
तदन्वय क्षत्रप पालिय तान । तथा लघु गोहिल वंश बयान ॥ ६ ॥
कह्यो फिर बुन्दियको इतिहास । कियो तिहि ठां कुल हड्ड निवास ॥
हुमायुं दिलीपति जीवन वृत्त । भयो सुख दुक्ख लिखी सब बत्त ॥ ७ ॥
भयो बिच सूर पठानन राज । कियो मुगलान कबूतर बाज ॥
सुशेर सलीम सिकन्दर शाह । रच्यो इतिहास जु सुक्षम राह ॥ ८ ॥
प्रकाशन आशय सज्जन रान । फते नृप शासन पाय महान ॥
कियो कविराज सुश्यामलदास । उदै नृप वीर विनोद बिलास ॥ ९ ॥

महाराणा उदयसिंह– तृतीय प्रकरण

समाप्त.
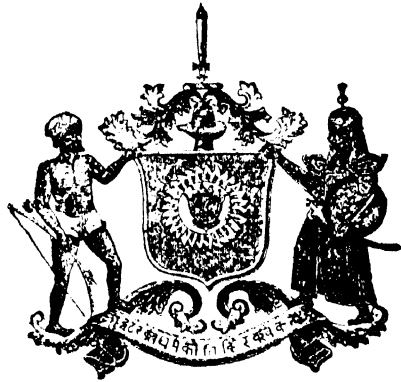
महाराणा प्रतापसिंह-चतुर्थ प्रकरण.

यह महाराणा विक्रमी १६२८ फाल्गुन शुक्ल १५ [हि० ९७९ ता० १४ शव्वाल = ई० १५७२ ता० १ मार्च] को गोगूंदे मक़ाममें राज्य गद्दीपर बैठे, जिसका वृत्तान्त इस तरह पर है-कि जब महाराणा उदयसिंहका देहान्त हुआ उस समय सब सर्दार व महाराजकुमार महाराणाकी दाह क्रियामें गये. कुंवर सगरसे ग्वालियरके राजा रामसिंहने पूछा कि जगमाल कहां हैं ? सगर ने उत्तर दिया कि आप क्या नहीं जानते हैं-कि वैकुंठवासी महाराणाने उनको राज्यका मालिक बनाया है. सर्दारोंमें से अक्षयराज सोनगराने रावत् कृष्णदास और रावत् सांगासे कहा कि आप चूंडाके पोते हैं यह काम आप हीकी सम्मतिसे होना चाहिये, क्योंकि बादशाह अक्बर जैसा तो दुश्मन सिरपर लगाहुआ है; चित्तौड़ छूट गया, मेवाड़ उजड़ रहा है, अब यह घरका बखेड़ा भी उठा तो फिर इस राज्य की बर्बादी में क्या सन्देह रहा ? रावत् कृष्णदास और सांगाने कहा कि पाटवी, हक्दार और बहादुर प्रतापसिंह किस कुसूरसे ख़ारिज समझा जावे ? इस विचार के बाद महाराणाकी उत्तर क्रिया करके जब सब सर्दार वापस आये तो प्रतापसिंह को लाकर गद्दीपर बिठा दिया, और जगमालको उतारकर कहा कि आपकी बैठक गद्दीके सामने है, सो वहां बैठना चाहिये.

जगमाल नाराज़ होकर वहांसे निकलगया, तब सब सर्दारोंने महाराणा प्रताप-

सिंहको नज़राना करके प्रार्थना की कि आज होलीका दिन है सो आप अहेड़ा (१) के शिकारके लिये पधारिये; यदि आप शोक रक्खेंगे तो पुश्तों तक इस दिनकी "ओख" (ग़मीकी रस्म जिसमें कुछ भी खुशी न मानीजाय) रहजायगी. यह सुनकर महाराणा, नक़ारा बजायेजाने बाद शिकार खेलकर पीछे पधारे. उस दिन की एक कहावत मारवाड़ी भाषामें कवियोंकी कही हुई अब तक प्रसिद्ध है "मारीजे किम मांजरे होली जिशो तुहार" (२). गोगूंदे से महाराणा सवार होकर कुम्भलमेर पधारे और वहीं राज्याभिषेक का उत्सव किया.

जगमाल गोगूंदेसे निकलने बाद अपने बालबच्चोंको लेकर जहाज़पुर गया. अजमेरके सूबेने उसके बालबच्चोंके रहनेके लिये आज्ञा दी और जहाज़पुरका परगना ठेकेमें लिख दिया. फिर जगमाल अक्बर बादशाहके पास दिल्ली (दिह्ली) गया और सब बीते हुये समाचार कह सुनाये. बादशाह अक्बरने जहाज़पुर (३) का परगना उसको जागीरमें दिया.

महाराणा प्रतापसिंह कुम्भलमेरमें रहकर मेवाड़का राज्य करने लगे; और यह ख़बर बादशाह अक्बरको भी मिली. परन्तु उसने पहिले गुजरातका फ़साद दूर करना ज़ुरूर समझकर सिद्धपुरकी तरफ़ कूच किया, और विक्रमी १६२९ [हि० ९८० = ई० १५७२] में गुजरातको फ़तह करके डूंगरपुर व उदयपुरकी तरफ़ फ़ौज भेजी, जिसके अफ़्सर आंबेरके कुंवर मानसिंह कियेगये और उनके साथ दूसरे भी सर्दार शाह कुलीख़ां, मुरादख़ां, मुहम्मद कुलीख़ां, सय्यद अब्दुल्ला, आंबेरके राजा भारमल्लका छोटा बेटा जगन्नाथ कछवाहा, राजा गोपाल, बहादुरख़ां, लश्करख़ां, जलालख़ां और बूंदीके राव हाड़ा भोज, वग़ैरह को भेजा और हुक्म दिया कि जो बादशाही ख़िदमत करें उनकी ख़ातिर करो, और जो प्रतिकूल अर्थात् बर्ख़िलाफ़ हों उनको सज़ा दो. यह हुक्म लेकर कुंवर मानसिंह डूंगरपुर पहुंचे. वहां रावल आशकरनसे लड़ाई हुई, जिसमें दोनों तरफ़के बहुतसे आदमी मारेगये; बादशाही फ़ौजने डूंगरपुरको फ़तह करलिया और रावल वहांसे निकलकर पहाड़ोंमें चलागया.

मानसिंहने डूंगरपुरको क़ब्ज़ेमें लेकर अपनी ज़ुरूरतसे ज़ियादा फ़ौजको अजमेर भेजा और कुछ फ़ौजके साथ महाराणाको समझानेके लिये विक्रमी १६३०

---

(१) होलीके दिन शिकारको जानेका राजपूताना में आम रिवाज है, उसे "अहेड़ा" का शिकार कहते हैं.

(२) अर्थ—होली जैसे महोत्सवको व्यर्थ खोना अनुचित है.

(३) यह परगना बूंदी और जयपुरकी हद्द पर उदयपुरसे ईशान कोणमें मेवाड़के तह्तमें है.

प्रथम आषाढ़ [हि० ९८१ सफ़र = ई० १५७३ जून] में उदयपुर आये, जिनका महाराणा प्रतापसिंहने बहुत आदर (ख़ातिर तवाज़ो) किया और आपसमें मुहब्बतका बर्ताव हुआ.

मानसिंहने महाराणा प्रतापसिंहको बादशाहकी ख़िद्मतमें लेजानेके विचारसे बहुत बहाने और उद्योग किये, परन्तु वे सब बेफ़ायदा गये, यानी महाराणाने एक भी बात न मानी (१). महाराणाने कुंवर मानसिंहके वास्ते उदयसागर तालाबपर गोठ (२) की तय्यारी करवाई और कुंवर अमरसिंह समेत मानसिंहको लेकर उदयसागरपर पहुंचे. भोजन तय्यार होनेपर अमरसिंहने परोसकारी करके कुंवर मानसिंहसे भोजन करनेको कहा; इनका विचार महाराणाको अपने साथ भोजन करानेका था, परन्तु महाराणाने पेटकी गिरानी अर्थात् अजीर्णका उज़्र करके टाला (३). मानसिंहने डोडिया ठाकुर भीमसिंहकी मारफ़त कहलायाकि गिरानीकी दवा मैं ख़ूब जानता हूं, अबतक तो हमने आपकी भलाई चाही लेकिन आगेको होश्यार रहना चाहिये. जिसपर महाराणाने उत्तर दिया कि जो आप अपनी ताक़तसे आएंगे तो मालपुरे तक पेश्वाई कीजावेगी और जो अपने फूफाके (४) ज़ोरसे आएंगे तो जहां मौक़ा होगा वहां ख़ातिर करेंगे. भीमसिंहने यह बात ज्योंकी त्यों कुंवर मानसिंहसे कहदी. मानसिंह और भीमसिंहमें ज़बानी तकरार हुई जिसमें भीमसिंहने कहाकि तुम जिस हाथीपर चढ़कर आओगे उसीपर भाला मारूं तो मेरा भी नाम भीमसिंह है; अपने फूफाको लेकर जल्दी आना. इस तरह् रसविरस होगया और सब घोड़ोंपर सवार होकर चलदिये.

मानसिंह के रवाना होजाने बाद महाराणाने खानेकी चीज़ें, चांदी सोने के पात्रों (बरतनों) समेत तालाब में फिकवादीं. जहां कुंवर मानसिंह खड़े थे वहां दो दो गज़ ज़मीन खुदवाकर गंगाजल छिड़कवाया और सब राजपूतों को स्नान करवाकर कपड़े बदलवाये. इस बातको अक्बरनामेमें अबुल्फ़ज़्लने मुख़्तसर लिखा है कि "कुंवर मानसिंह वग़ैरह उदयपुर पहुंचे जो राणाका वतन है. वहां पर राणाने

(१) क्योंकि उनके मिज़ाजमें आज़ादी घुसी हुई थी.

(२) गोठका अर्थ दावतके खानेका है.

(३) मुसल्मानों के संबंधकी नफ़रतसे नहीं खाया.

(४) अक्बरको इनकी भुवा विवाही गई थी, जिससे जहांगीर पैदा हुआ, इसीसे फूफाका इशारा बादशाहकी तरफ़ है.

पेश्वाई करके बादशाही ख़िल्अत (१) अदबके साथ पहना और मानसिंह को मिहमानी के लिये अपने घर लेगया, और नालियाक़ती से उज़्र करनेलगा कि बादशाही हुज़ूर में मेरे जानेका मौक़ा अभी नहीं है". यहां 'उज़्र' शब्दसे दावतमें शामिल न होना तथा बादशाह के पास जाने में इन्कार करना भी साबित होता है.

राजपूताना की पुस्तकों में यह हाल ऊपर लिखे अनुसार है. हिन्दी कविता में राम कवि की बनाई हुई "जयसिंह चरित्र" नामक जयपुर की तवारीख़में भी यह बात इसीप्रकार लिखी है.

दोहा

राना सों भोजन समय गही मान यह बान ॥
हम क्यों जेंवें आपहू जेंवत हो किन आन ॥ १ ॥
कुंवर आप आरोगिये राना भाख्यो हेरि ॥
मोहि गरानी सी कछू अबै जेंइहूं फेरि ॥ २ ॥
कही गरानी की कुंवर भई गरानी जोहि ॥
अटक नहीं करदेहुंगो तूरण चूरण तोहि ॥ ३ ॥
दियो ठेल कांसो कुंवर उठे सहित निज साथ ॥
चुलू आन भरि हों कह्यो पोंछ रुमालन हाथ ॥ ४ ॥

सिवाय इसके नैनसी महताके इतिहास और राजसमुद्र की प्रशस्ति और बूंदीके वंशभास्कर आदि में भी यह बात इसी तरह लिखी है.

कुंवर मानसिंह तो सीधे आगरे पहुंचे, बादशाह वहां गुजरातकी मुहिमसे पहिले ही आचुके थे. मानसिंहने उदयसागरकी ज़ियाफ़तका हाल बादशाहसे अर्ज़ किया. अक्बरने कुंवर मानसिंहको बहुतसी तसल्ली दी; लेकिन हमारा ख़याल है कि बादशाह दिलमें खुश हुए होंगे, क्योंकि राजपूतोंका मेल मिलाप उनको नागवार था, गो मस्लहतसे (२) ख़ाली न था. बादशाह उसी वक्त मेवाड़पर फ़ौज भेजते,

(१) हमारी रायमें ख़िल्अत पहननेके लिये या तो कुंवर मानसिंहने अपनी कारगुज़ारी दिखाने के वास्ते बादशाहसे बयान करदिया होगा या अबुल्फ़ज़्लने बादशाही बड़प्पन दिखानेको लिखा है वर्ना ख़िल्अत तो विक्रमी १६७१ [हि० १०२३ = ई० १६१४] में महाराणा अमरसिंहने पहना, जिस लज्जासे अगरचे वे पांच वा छः वर्ष जीते रहे लेकिन इस मुद्दतमें किसी आदमीको मुंह नहीं दिखलाया, और प्रतापसिंहने उनको ताना भी दिया था जिसका हाल मौक़े पर लिखा जायगा.

(२) इस बातके दो वर्ष बाद शाहबाज़ख़ां क़िले कुम्भलमेरको गया उस वक्त उसने राजा भगवानदास और कुंवर मानसिंहको बादशाह अक्बरके पास भेजदिया था कि शायद ये मिल न जावें. (देखो इक्बालनामह जहांगीरी की जिल्द २ के पृष्ठ ३२१ में हि० ९८६ वें का हाल).

लेकिन दूसरे मुल्की इन्तिज़ामकी फ़िक्रमें लगरहे थे, इससे देर होगई. अनुमान ५ या ६ महीनेके बाद राजा भगवानदास कछवाहा, जिसको अक्बर बादशाह गुजरातमें बन्दोबस्तके लिये छोड़ आयाथा, गोगूंदे आया (१) और महाराणा प्रतापसिंहसे मिला. इन्होंने उनकी बड़ी खातिर की, इस मौकेपर अबुल्फ़ज़्ल अपनी किताब अक्बरनामह की तीसरी जिल्दके ४४ वें एष्ठमें लिखता है कि "राणाने अपने बेटे अमराको राजा भगवानदासके साथ बादशाही खिदमतमें भेजकर अपने आनेमें उज़्र किया, और कहा कि बादशाही मिहरबानियां होंगी तो फिर मैं भी आजाऊंगा. राजा भगवानदास राणाके बेटे अमराके साथ आगरेमें हाज़िर हुआ". यह बात हमारे ध्यानमें नहीं आती, क्योंकि प्रथम, तो महाराणा प्रतापसिंह बादशाही ताबेदारी और खिलअत पहनने और फ़र्मान लेनेसे बिल्कुल नफ़रत (घृणा) रखते थे और इसी बारेमें अपने बेटे अमरसिंहको जो ताना दिया, उसका बयान उनके हालमें किया जायगा, दूसरे, बादशाह जहांगीर, तुज़कजहांगीरीके एष्ठ १३४ में शहज़ादे खुर्रम और महाराणा अमरसिंहकी सुलहके बयानमें, लिखता है कि "राणा अमरसिंह और उसके बाप दादोंने घमंड और पहाड़ी मक़ामोंके भरोसेपर किसी बादशाहके पास हाज़िर होकर ताबेदारी नहीं की है, यह मुआमिला मेरे समयमें बाक़ी न रहजावे". तीसरे, इसके पहिले भी जब बादशाह जहांगीरने अपने शाहज़ादे परवेज़को महाराणा अमरसिंह पर भेजा, उस समय लिखता है कि "राणा तुझसे आकर मिले और अपने बड़े बेटेको हमारेपास भेजदेवे तो सुलह करलेना". और इसी तरह जब खुर्रमको भेजा तो सुलह भी मन्ज़ूर हुई और कुंवर कर्णसिंह जहांगीर के पास पहुंचे, उसका ज़िक्र जहांगीरने अपनी किताब में बहुत बढ़ाकर लिखा है. कुंवर कर्णसिंह जब जहांगीर के दर्बार में अजमेर गये उस समय इंग्लिस्तान के बादशाह पहिले जेम्स का एल्ची 'सर टॉमस रो' भी वहां मौजूद था, जो लिखता है कि "पोरसके खान्दानका एक राजा मुग़ल (बादशाह) की सल्तनत में है जो कि गत वर्षके पहिले कभी ताबे नहीं हुआ था". इन बातोंसे प्रकट होता है कि कुंवर कर्णसिंहसे पहिले कोई मेवाड़का पाटवी कुंवर शाही दर्बार में नहीं गया, अगर गया होता तो अबुल्फ़ज़्ल भी कुछ उसको ज़ियादा

(१) जयपुर की तवारीख़ में इसतरह लिखा है कि राजा भगवानदास गुजरात से आते हुये महाराणा प्रतापसिंह से मिले, और खाना खाने के समय महाराणा उनके शामिल नहीं बैठे; तब भगवानदास ने कहा कि मेरी तरह मानसिंह का हतक न करना क्योंकि उसका मिज़ाज तेज़ है, इसके बाद मानसिंह आये और उनके साथ भी वैसा ही बर्ताव कियागया, परन्तु अक्बरनामे में मानसिंह का पहिले और भगवानदास का पीछे आना लिखा है, जैसा कि मूलमें लिखा गया.

तफ्सीलके साथ लिखता. मालूम होता है कि महाराणा प्रतापसिंहका कोई छोटा बेटा या भाई गया होगा, जिसका नाम अबुल्फ़ज़्लने 'अमरसिंह' ग़लतीसे लिखदिया है. लेकिन कुंवर मानसिंह की खटक बादशाहके दिलकी मुराद को ख़त्म करनेवाली थी.

वि० १६३२ [हि० ९८३ = ई० १५७५] में बादशाह अजमेरको आये और दिलमें पक्का इरादा करलिया कि मेवाड़ के राणा को ज़ेर करना चाहिये. इसलिये कुंवर मानसिंह को, जिसे वह बेटा कहाकरता था, इस मुहिम पर रवाना किया, क्यौंकि बादशाह जानता था कि मानसिंह और प्रतापसिंह में तक्रार (१) हुई है जिससे लड़ने को वह ज़रूर आवेगा और माराजावेगा. कुंवर मानसिंह के साथ बड़े बड़े सर्दार किये, जिनके नाम ये हैं- गाज़ीखां बदख़्शी, ख़्वाजह ग़यासुद्दीनअली, आसिफ़ख़ां, सय्यद अहमदख़ां, सय्यद हाशिमख़ां, जगन्नाथ कछवाहा, सय्यद राजू, मिहतरख़ां, माधवसिंह कछवाहा, मुजाहिदबेग, राय लूणकर्ण वग़ैरह.

हल्दीघाटीकी लड़ाई.

जब कुंवर मानसिंह शाही फ़ौज लेकर मांडलगढ़ पहुंचे, उस वक्त महाराणा प्रतापसिंह भी कुम्भलमेरसे निकलकर गोगूंदेमें आये और लड़ाईके लिये सलाह व मश्वरा किया. महाराणाकी सलाह तो यही थी कि मांडलगढ़के पास जाकर मानसिंहसे मुक़ाबिला करें, लेकिन सब सर्दारोंने अर्ज़ की कि कुंवर मानसिंह अपनी ताक़तसे नहीं आये हैं, वह अपने फूफा याने बादशाह की फ़ौज लेकर आये हैं, इसवास्ते आपको भी लाज़िम है कि पहाड़ोंमें रहकर उनको बहादुरी दिखलावें. जिस पर यही बात पक्की ठहरी.

कुंवर मानसिंह भी महाराणासे लड़ना और उदयसागर तालाब पर अपने कहे हुए बोलको सिद्ध करना कुछ छोटी बात नहीं समझते थे. इसलिये बहुतसी फ़ौज एकट्ठी करने बाद जब लड़ाईका पूरा सामान तय्यार होगया तो उन्होंने वहांसे

---

(१) मोतमदख़ां इक्बालनामह की दूसरी जिल्द के ३०३ पृष्ठ में लिखता है कि कुंवर मानसिंह को भेजने से बादशाहका अस्ल मत्लब यह था कि-मानसिंह राणाकी क़ौममें से है, बल्कि अक्बर बादशाह के जुलूस के पहिले मानसिंह के बाप दादा राणाके ताबे और खिराज गुज़ारों में दाखिल रहे हैं. शायद ज़ियादा शर्म और घमंड से इस मर्तबा उसके मुक़ाबिले पर आकर लड़ाई करे. अबुल्फ़ज़्ल अक्बर नामह की तीसरी जिल्द के १५१ वें पृष्ठ में लिखता है कि कुंवर मानसिंह मांडलगढ़ पहुंचकर फ़ौज एकट्ठी करने के लिये ठहरा. राणा निहायत गुरूर से गुस्सेमें आया और बादशाही ताक़त पर ध्यान न रखकर बादशाही फ़ौजके सर्दार मानसिंह को अपना मातह्त ज़मींदार ख़याल करके मक़ाम मांडलगढ़ पर लड़ाई के लिये आना चाहता था.

मोही (१) गांवमें आकर डेरा किया. महाराणाने भी लड़ाईका सब सामान दुरुस्त कर लिया, कुंवर मानसिंहने भूताला गांवके पास होते हुये शाही लश्कर समेत खमनोरके नज़्दीक हल्दी घाटीके पास पहुंचकर बनास नदीके किनारे पर डेरे किये. महाराणा प्रतापसिंह भी अपनी फ़ौजको दुरुस्त करके गोगूंदेसे चढ़े, सो दोनों फ़ौजोंमें तीन कोसका फ़ासिला था.

विक्रमी १६३२ [हि० ९८३ = ई० १५७५] को कुंवर मानसिंह शिकार खेलनेके वास्ते एक हज़ार सवार समेत अपने डेरोंसे दो कोस महाराणाकी फ़ौजकी तरफ़ आये (२), उस वक्त कितने ही सर्दारोंने अर्ज़ की कि कुंवर मानसिंह पर हम्ला करें, लेकिन झाला बीदाने कहा कि इस तरह दग़ा करना बहादुरोंका काम नहीं है. महाराणाने भी बीदाके कहनेको पसन्द किया– दूसरे रोज़ कुंवर मानसिंहको महाराणा प्रतापसिंहके आनेकी ख़बर मिली.

विक्रमी १६३३ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल २ [हि० ९८४ ता० १ रबीउल्‌अव्वल् = ई० १५७६ ता० ३१ मई] को मानसिंहने अपनी फ़ौज लड़ाईके लिये इस तरह पर तय्यार की कि दहिनी तरफ़ बारहके सय्यद, और बाईं तरफ़ ग़ाज़ीखां बदख़्शी और राय लूणकर्ण, हरावल (आगे) में कछवाहा जगन्नाथ, ख़्वाजह गयासुद्दीन अली व आसिफ़ख़ां, और चंदावलमें याने पीछे माधवसिंह और दूसरे कई अमीरोंको मुक़र्रर किया; और मिहतरख़ांको बहुतसे अमीरोंके साथ फ़ौजके आगे रवाना किया. महाराणा प्रतापसिंहने भी अपनी फ़ौजको इस तरह तय्यार किया– ग्वालियरका राजा रामसिंह तंवर, अपने बेटों शालिवाहन, भवानसिंह व प्रतापसिंह समेत, व भामाशाह अपने भाई ताराचन्द सहित दहिनी तरफ़, और झाला मानसिंह जैतसिंहोत सजावत, झाला बीदा सुल्तानोत और सोनगरा मानसिंह अक्षयराजोत बाईं तरफ़ मुक़र्रर हुए– हरावलमें डोडिया भीमसिंह, रावत कृष्णदास चूंडावत, रावत सांगा (संग्रामसिंह), राठौड़ रामसिंह और पठान हकीमख़ां सूर–और चंदावलमें याने पीछे भीलोंका सर्दार मेरपुरका राणा पूंजा, पुरोहित गोपीनाथ, पुरोहित जगन्नाथ, पड़िहार कल्यान, बछावत महता जयमल्ल, महता रत्नचन्द खेमावत, महासहानी जगन्नाथ और चारण जैसा और केशव (सोदा, बारहट) नियत हुए. पहर दिन चढ़े घाटी पर दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबिला हुआ. अबुल्फ़ज़्ल लिखता है कि "ये दोनों लश्कर लड़ाईके दोस्त और जिन्दगीके दुश्मन थे; जिन्होंने जान तो

(१) यह गांव अब महाराणाकी तरफ़से भाटी राजपूतोंकी जागीरमें है.
(२) यह बात नैनसी महता ने लिखी है.

सस्ती और इज़्ज़त मंहगी करदी". बाई तरफ़का महाराणाका लश्कर दहिनी तरफ़के बादशाही लश्कर पर टूटपड़ा. राय लूणकर्ण भागकर शाही फ़ौजके दहिनी तरफ़ आघुसा और शैख़ज़ादे सीकरी वाले भी एकदम् भागे. महाराणाका तीर शैख़ मन्सूरके कूल्हेपर लगा. क़ाज़ीख़ां मर्दानगी करके पहिले तो खड़ा-रहा लेकिन एक अंगुली कटने बाद भाग गया. महाराणाकी हरावल फ़ौजने शाही हरावल फ़ौजको शिकस्त दी. महाराणाकी तरफ़से लूणा हाथी और शाही फ़ौजका गजमुक्ता हाथी आपसमें लड़नेलगे. शाही हाथी ज़ख़्मी होकर भागनेको था कि इसी अर्सेमें लूणा हाथीके महावतके गोली लगी जिससे वह गिरगया, और हाथी भी पीछे मुड़गया. फिर महाराणाके रामप्रसाद हाथी और शाही फ़ौजके गज-राज हाथीमें लड़ाई हुई. इस वक़् भी रामप्रसाद हाथीके महावतके गोली लगी और हाथी बादशाही फ़ौजके हाथ लगा. निदान पहर दिन चढ़ेसे दोपहरके वक़ तक दोनों फ़ौजोंमें ख़ूब मुक़ाबिला हुआ. महाराणाकी तरफ़से जयमल्लका बेटा राठौड़ रामदास, कछवाहे जगन्नाथके मुक़ाबिलेमें लड़कर मारागया, और झाला मानसिंह व बीदा तथा ग्वालियरका राजा रामसिंह अपने तीनों बेटों समेत बड़ी बहादुरीसे लड़कर काम आये; चारण बारहट जैसा और केशव भी मारेगये. इसी अर्सेमें डोडिया ठाकुर भीमसिंह ने अपने घोड़ेको बढ़ाकर कुंवर मानसिंहके हाथी पर उड़ाया, और कहा कि "मैं भीम-सिंह आगया हूं संभलना", यों कहकर बर्छा चलाया, सो मानसिंह तो बचगया और बर्छा हौदेमें लगकर रहगया. लेकिन भीमसिंह बड़ी बहादुरीके साथ मारा गया. महाराणा प्रतापसिंहने अपने चेटक नामक घोड़ेको उड़ाकर कुंवर मानसिंहसे कहा कि "तुझसे जहां तक हो सके बहादुरी दिखला (१) प्रतापसिंह आया", सो मानसिंह तो हाथीके हौदेमें झुककर बचगये, और महाराणा प्रतापसिंहका बर्छा हौदेमें लगा. महा-राणाके चेटक घोड़ेके दोनों अगले पैर कुंवर मानसिंहके हाथीके सिर पर लगे और हाथीकी सूंडमें जो खांडा याने तलवार थी, उसके वारसे महाराणाके घोड़ेका पिछला एक पैर कट पड़ा. महाराणाने घोड़ेको पीछे मोड़कर यह समझलिया कि कुंवर मानसिंहका काम तमाम होगया. शाही फ़ौजकी हरावल भाग निकली.

मौलवी अब्दुल्क़ादिर मुन्तख़बुत्तवारीख़वाला, जो उस लड़ाईमें मौजूद था, लिखता है कि शाही फ़ौजकी भागने वाली हरावल पांच या छः कोस तक भाग चुकी थी, और अबुल्फ़ज़्ल अक्बर नामह में बना कर लिखता है कि क़रीब था

---

(१) यह मज़्मून, डोडिया भीमसिंह और महाराणा प्रतापसिंहका, मेवाड़वालोंके कथनानुसार लिखा है.

कि शाही फ़ौज भागे, लेकिन इसी अर्सेमें शाही चंदावल फ़ौजने एक दम आगे बढ़ कर हौरा मचाया कि बादशाह आगये, जिससे शाही फ़ौजकी मज़्बूती हुई और मेवाड़ी फ़ौजके पैर उखड़ गये. पानड़वेके भीलोंका सर्दार पूंजा राणा लड़ाईके शुरूमें ही भागनिकला. महाराणाने अपना घोड़ा गोगूंदेकी तरफ़ बढ़ाया, जिनका पीछा दो मुसल्मान सर्दारोंने किया. महाराणा प्रतापसिंहके छोटे भाई महाराज शक्तिसिंह, जो शाही फ़ौजमें मौजूद थे, ज़ाहिरदारीमें शाही सर्दारोंकी मदद्के लिये रवाना हुए, लेकिन अन्दरूनी मन्शा इनका अपने भाईको मदद पहुंचानेका था. पीछेसे उन दोनों अमीर मुसल्मानोंको उनके साथियों समेत हम्ला करके शक्तिसिंहने मारलिया. उन दोनों अमीरोंके नाम मेवाड़की पोथियोंमें 'खुरासानखां' व 'मुल्तानखां' लिखे हैं; कियाससे मालूम होता है कि वे खुरासान और मुल्तानके रहने वाले थे और ये उनके खिताबी नाम होंगे.

शक्तिसिंहने अपने भाई प्रतापसिंहको आवाज़ दी कि आप किस तरह चले जाते हैं, अपने घोड़े को देखिये कि वह तीन पैरसे चलरहा है. महाराणाने अपने भाईकी आवाज़ सुनकर घोड़ेको रोका और दोनों भाई उतरकर मिले; शक्तिसिंहने उन दोनों मुसल्मानोंके मारनेका हाल कहा महाराणाका घोड़ा पैर कटनेके सिवाय बहुत ज़ख्मी होगया था, जिससे उसी जगह गिर कर मर गया; शक्तिसिंहने अपना घोड़ा नज़र किया, जिस पर सवार होकर महाराणा आहोर होतेहुये कोल्यारी ग्राममें पहुंचे.

मेवाड़की पोथियोंमें लिखा है कि महाराणाके पास बीस हज़ार सवार और कुछ पैदल थे, जिनमेंसे सिर्फ़ आठ हज़ार बचकर कोल्यारीमें पहुंचे, बाक़ी सब मारेगये और कितने.ही भागगये. मेवाड़की पोथियोंमें कुंवर मानसिंहके संग ८०००० फ़ौज लिखी है, और फ़ारसी तवारीखोंमें कोई तादाद नहीं है. अबुल्फ़ज़्ल लिखता है कि गर्मियोंके सबबसे ग़नीमका पीछा शाही फ़ौजने नहीं किया. लेकिन लड़ाईके हाल से मालूम होता है कि लड़ाई करनेकी ताक़त दोनोंमें नहीं रही थी. अल्बत्ता फ़तह का झंडा बादशाही फ़ौजके हाथ रहा.

महाराणा प्रतापसिंहके चेटक घोड़ेका चबूतरा हल्दीघाटीमें बनाया गया, जो अबतक मौजूद है. महाराज शक्तिसिंहने पीछे शाही फ़ौजमें पहुंचकर ज़ाहिर किया कि महाराणा प्रतापसिंहने मेरे घोड़ेको मारकर उन दोनों मुसल्मान सर्दारोंको भी साथियों समेत क़त्ल कर डाला.

कुंवर मानसिंह दो रोज़के बाद बादशाही फ़ौजके साथ गोगूंदेको आये

जो महाराणाका पहाड़ी क़ियामगाह था, लेकिन वहां दस बीस आदमियोंके (१) सिवाय किसीसे मुक़ाबिला न हुआ; क्योंकि महाराणा तो कोल्यारीकी तरफ़ अपने बहादुर ज़स्मी आदमियोंकी हिफ़ाज़तमें लगरहेथे, कुंवर मानसिंहने बहुत बड़ा हिस्सा गोगूंदेके थाने पर मुक़र्रर करके अजमेरकी तरफ़ कूच किया. रामप्रसाद हाथी जो शाही फ़ौजके हाथ लड़ाईके वक़ आया था वह पेश्तर ही मौलवी अब्दुल्क़ादिर बदायूनीके साथ बादशाहकी ख़िदमतमें भेजदिया गया था. जब मानसिंह शाही दर्बार (अजमेर) में पहुंचे, तो बादशाहने खुशहोकर उनकी बहुत ख़ातिर की और अपने सब बहादुरों की इज़्ज़तें बढ़ाईं.

कर्नेल् टॉड साहिब अपनी किताबमें यह लड़ाई शाहज़ादे सलीमके साथ होना लिखतेहैं; परन्तु यह ठीक नहीं, क्योंकि बादशाह अक्बरने कुंवर मानसिंह को महाराणासे ना इत्तिफ़ाक़ी होनेके कारण भेजाथा, और यह लड़ाई विक्रमी १६३३ (२) द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल [हि० ९८४ शुरू रबीउल् अव्वल् = ई० १५७६ जून] में हुई; जिस वक़ जहांगीर यानी शाहज़ादे सलीमकी उम्र ६ वर्षकी थी, क्योंकि इस शाहज़ादे का जन्म विक्रमी १६२६ आश्विन कृष्ण २ [हि० ९७७ ता० १६ रबीउल्-अव्वल् = ई० १५६९ ता० २९ ऑगस्ट] को हुआथा. सोचनेसे भी यहबात साबित हो सक्ती है कि ऐसी उम्रमें शाहज़ादा लड़ाईपर नहीं भेजा जासक्ता. इसके सिवाय राजपूताना की मोतबर तवारीख़ोंमें भी लिखाहै कि यह लड़ाई कुंवर मानसिंहसे ही हुई, और महाराणा प्रतापसिंहके ज़मानेका चित्रपट यानी (तस्वीरोंका नक्शा) उसी वक़के मुसव्विरों के हाथका अबतक मौजूद है, जिसमें कहीं शाहज़ादे सलीमका निशान भी नहीं है, सिर्फ़ कुंवर मानसिंह व महाराणा प्रतापसिंहकी तस्वीरें तरफ़ैनके सर्दारों समेत हैं. जयपुरके पुस्तकालयकी दो तीन तवारीख़ी पोथियोंमें भी कुंवर मानसिंह व महाराणा प्रतापसिंह

---

(१) ये दस बीस आदमी महाराणाके महल व मन्दिरोंकी हिफ़ाज़तके लिये रहगये थे, जो मुक़ाबिले में मारे गये.

(२) मेवाड़की पोथियोंमें इस लड़ाईका होना विक्रमी १६३२ [हि० ९८३ = ई० १५७५] में लिखाहै और फ़ारसी तवारीख़ोंके हिसाबसे विक्रमी १६३३ [हि० ९८४ = ई० १५७६] है. इसका फ़ैसला इस तरहपर होसक्ता है कि यहां विक्रमी संवत् ज्योतिषके तरीक़ेसे, व साहूकारोंमें व जन्त्रियोंमें तो चैत्र शुक्ल १ से मानते हैं और फ़सली संवत् मेवाड़के सर्कारी मुलाज़िम कुल श्रावण कृष्ण १ से गिनते हैं. हमने अपनी किताबमें ज्योतिष, आम रिवाज और जन्त्रियोंके तरीक़ोंसे लिखा है, जिससे विक्रमी १६३३ हुआ क्योंकि इसी संवतकी वैशाख शुक्ल २ को हिजरी ९८४ का मुहर्रम शुरू हुआ और ज्येष्ठ महीना अधिक पड़ा जिससे द्वितीय ज्येष्ठके शुक्ल पक्षमें लड़ाई हुई, और यह रियासती संवत् उस वक्त भी इसी तरह समझा जाता था जैसाकि अब माना जाता है.

से इस लड़ाईका होना लिखा है, और अबुल्फ़ज़्ल भी अक्बरनामहमें साफ़ साफ़ कुंवर मानसिंहसे ही मुक़ाबिला होना तहरीर करताहै. इसी तरह मुन्तख़बुत्तवारीख़ व फ़ारसीकी कुल किताबोंमें प्रतापसिंह और कुंवर मानसिंहमें ही लड़ाई होना लिखाहै, कर्नेल् टॉड साहिबने महाबतख़ांको भी शाहज़ादे सलीमके साथ इस लड़ाईमें शामिल होना लिखकर महाराणा उदयसिंहके बेटे महाराज सगरका बेटा बतलाया है, लेकिन यह भी ग़लत है क्योंकि वह जहांगीरसे भी उम्रमें छोटा और काबुलके रहनेवाले सय्यद ग़यूरबेगका बेटा था जो ज़िले ईरानके शहर शीराज़से काबुलमें आरहा था और जिसका असली नाम ज़मानबेग था और उसको तख़्तनशीन होकर जहांगीरने 'महाबतख़ां' का ख़िताब दिया; इसके पहिले यह अहदियोंमें नौकर था; इसका मुफ़स्सल हाल किताब मआसिरुल्उमरा वग़ैरह में लिखा है—

जब कुंवर मानसिंह गोगूंदेसे अजमेर गये तब कई सर्दारोंको ज़बरदस्त फ़ौज के साथ गोगूंदेके थाने पर छोड़ गये थे, और बादशाह अक्बरने कई अमीरोंको फिर वहां भेजा, लेकिन महाराणा प्रतापसिंहने ज़ख़्मी बहादुरोंका इलाज कराकर अपने राजपूत व भीलोंकी ताक़तसे कुल पहाड़ी रास्ते व नाके बन्द करदिये; न रसद वग़ैरह खानेका सामान पहुंचने दिया और न किसी छोटे गिरोह को बाहर निकलने दिया. शाही फ़ौजके आदमी हवालाती क़ैदियोंके मुवाफ़िक़ गोगूंदेमें पड़े थे. जो कभी थोड़े आदमी रसद वग़ैरह लेनेके लिये फ़ौजसे अलहदा जाते तो उन पर महाराणाके राजपूतोंका धावा होता था. जब शाही फ़ौजके लोग बहुत घबरा गये और खाना पीना न मिलसका तब मेवाड़के राजपूतोंसे लड़ते भिड़ते पहाड़ोंसे निकलकर बादशाहके पास अजमेर पहुंचे; बादशाह इन लोगों पर बहुत नाराज़ हुए लेकिन पीछे सब हाल सुनकर इनको बेकुसूर समझा. महाराणा प्रतापसिंह कोल्यारी गांवसे गोगूंदे होते हुये मजेरा ग्राममें राणेराव तालाबकी पाल पर पहुंचे और मुल्क (मेवाड़) में फ़ौज भेजकर बादशाही थानेदारोंको निकाल दिया और अपना अमल क़ायम किया. गोगूंदेके थाने पर मांडण कूंपावतको रखकर महाराणा आप कुम्भलमेर क़िलेमें चले गये और महता नर्बदको वहांका क़िलेदार किया.

जब यह ख़बर बादशाह अक्बरको मिली तो वह गुस्से होकर उसी संवत् व सन्में मेवाड़की तरफ़ आया; महाराणाने भी क़िले कुम्भलगढ़में लड़ाई की तय्यारी की. इन महाराणाके ससुर ईडरके राव नारायणदास भी इनके लिखनेके मुवाफ़िक़ उन बादशाही थानों पर हम्ला करने लगे, जो गुजरातकी तरफ़ थे. बादशाह अक्बर भी इस हंगामेका हाल सुनकर बढ़ते आते थे, जब

मांडल वग़ैरह मेवाड़के थानोंकी तरफ़ ठहरते हुये मोही गांवमें पहुंचे तो वहांसे अपनी सब फ़ौजको दुरुस्त करके गोगूंदेकी तरफ़ रवाना हुए. साफ़ मुल्कमें कुछ लड़ाई नहीं हुई, लेकिन पहाड़ोंमें शाही फ़ौज पर महाराणाके राजपूत कहीं कहीं घाटियों के मौक़े पर हमला करते थे; बड़ी लड़ाई कहीं नहीं हुई. बादशाह ख़ुद गोगूंदे में आ पहुंचा. महाराणा प्रतापसिंहके जो बहुतसे राजपूत पहिले हल्दीघाटी की लड़ाईमें मारे गये थे, इस लिये फ़ौजी ताक़तकी कमीसे मुक़ाबिला न किया गया, लेकिन महाराणाकी बहादुराना हिम्मत और जिस्मानी ताक़तमें बिल्कुल् फ़र्क़ न आया. उन्होंने वक़्की मस्लहत से अपने ससुर नारायणदासको साथ लेकर पहाड़ोंमें लड़ाई करना मुफ़ीद समझा.

बादशाहने गोगूंदेसे मुक़ाबिलेके वास्ते पहाड़ोंमें फ़ौज भेजी, जिसमें कुतुबुद्दीनख़ां, राजा भगवानदास और कुंवर मानसिंह थे. ये सब लोग हल्दीघाटीके पास इधर उधर फिर कर पीछे बादशाही फ़ौजमें आ शामिल हुए.

फिर बादशाहने ईडरकी तरफ़ क़िलीचख़ां, ख़्वाजह ग़यासुद्दीन, नक़ीबख़ां, तीमूर बदख़्शी, मीर अबुल्ग़ौस और नूरक़िलीच वग़ैरहको रवाना किया. ईडर की सरहद पर महाराणा प्रतापसिंह व राव नारायणदाससे मुक़ाबिला हुआ. उमरख़ां पठान व हसन बहादुर वग़ैरह शाही फ़ौजके अफ़्सर बहुतसे फ़ौजी सिपाहियोंके साथ मारे गये और राजपूत भी बहुत लड़कर काम आये. आख़िरमें ईडर पर बादशाही क़ब्ज़ा होगया.

मेवाड़में बादशाह अक्बरने गोगूंदेसे बांसवाड़ेकी तरफ़ कूच किया, जहां पर बांसवाड़ेके रावल प्रतापसिंह, और डूंगरपुरके रावल आशकर्ण, पहिली बार राजा भगवानदासकी मारफ़त बादशाही ख़िद्मतमें हाज़िरहुए. इसके पीछे बादशाहने मोही व मदारियामें बहुतसी फ़ौजें रख कर थाने बिठाये. मोहीमें ग़ाज़ीख़ां बदख़्शी और शरीफ़ख़ां, मुजाहिदख़ां, व सुब्हानकुलीतुर्क वग़ैरह, और मदारिये में अब्दुर्रहमान मुअय्यिदबेग और अब्दुर्रहमान जलालुद्दीनबेग वग़ैरहको तइनात करके बादशाह आप पीछे लौटे और पंजाबकी तरफ़ रवाना होकर लाहौर पहुंचे.

विक्रमी १६३५ चैत्र [हि० ९८६ मुहर्रम = ई० १५७८ मार्च] में बादशाह अक्बरने बड़ी जर्रार फ़ौजके साथ शाहबाज़ख़ांको कई अमीरों समेत कुम्भलगढ़की तरफ़ भेजा. शाहबाज़ख़ां जब तय्यार होकर चला तब उसको शक हुआ कि राजा भगवानदास और कुंवर मानसिंह, जो मेरेसाथ हैं, राणाके हमक़ौम (राजपूत) होनेसे मिलावट न करलें. इसलिये सोच विचारकर दोनोंको बादशाही ख़िद्मतमें रवाना करदिया और अपने साथ बैरमख़ांके बेटे मिर्ज़ाख़ां ख़ान्ख़ानां, शरीफ़ख़ां व ग़ाज़ीख़ां

वगैरह बहादुरोंको लिया. महाराणा प्रतापसिंह भी कुम्भलगढ़ क़िलेपर मौजूद थे; राजपूत लोग, शाही फ़ौजपर पहाड़ोंकी घाटियोंमें हम्ला करनेलगे. एक दिन मेवाड़ी राजपूतोंने रातके वक़्त छापा मारकर शाही फ़ौजके ४ हाथी क़िलेमें लाकर महाराणाको नज़्र किये. जब शाही फ़ौजने नाडोल व कैलवाड़ा की तरफ़ नाकाबन्दी करके क़िलेके रास्ते रोकदिये और रसदका पहुंचना दुश्वार (कठिन) होगया तब महाराणा प्रतापसिंहसे सब राजपूतोंने अर्ज़ की कि घिरकर मरना आपका काम नहीं है, हम लोग क़िलेमें अच्छी तरह लड़ेंगे, और आप मारेजावेंगे तो मुल्की दावा कोई न करसकेगा. इस तरह पर समझाकर महाराणाको बाहर जानेको तय्यार किया, और कुम्भलमेरमें राव अक्षयराजका बेटा भाण क़िलेदार मुक़र्रर कियागया. महाराणा प्रतापसिंह क़िलेसे निकलकर राणपुरमें आ ठहरे, जहांसे रवाना होकर ईडरकी तरफ़ चूलिया ग्राममें पहुंचे.

क़िलेपर बादशाही फ़ौजके हम्ले होने लगे, और बहादुर राजपूत भी लड़कर फ़ौजके हम्लोंको रोकते थे, परन्तु आख़िरकार शाही फ़ौजके बहादुर क़िले पर चढ़ने लगे, उस वक़्त क़िलेवालोंने भी किवाड़ खोल दिये. राव भाण सोनगरा वगैरह बहुतसे नामी बहादुर राजपूत क़िलेके दर्वाज़ों व मन्दिरों पर मारेगये, और शाहबाज़खांने फ़तहके साथ क़िलेपर बादशाही झंडा क़ायम किया.

कुम्भलमेर क़िलेकी फ़तह विक्रमी १६३५ आषाढ़ कृष्ण ३० [हि० ९८६ ता० २९ रबीउल्अव्वल् = ई० १५७८ ता० ५ जून] को हुई. यह क़िला विक्रमी १५०९ [हि० ८५६ = ई० १४५२] में बनवाया गया था, और जबसे अबतक इसपर किसी दुश्मनका क़ब्ज़ा नहीं हुआ था. शाहबाज़खांने कुम्भलमेर क़िलेमें पुख़्ता बन्दोबस्त करके क़िले गोगूंदेकी तरफ़ कूच किया.

महाराणाका प्रधान भामाशाह कुम्भलमेरकी रअय्यतको लेकर मालवेमें रामपुरेकी तरफ़ चलागया, जहांके राव दुर्गाने उसको साथियों समेत बड़ी हिफ़ाज़तसे रक्खा. यहां शाहबाज़खांने गोगूंदा व उदयपुरमें शाही फ़ौजके थाने बिठादिये.

इसी संवत् व सन्में भामाशाह व उसका भाई ताराचन्द मुल्क मालवेसे दंडके २५००००० रुपये और २०००० अशर्फ़ियें लेकर चूलिया ग्राममें महाराणा प्रतापसिंहके पास पहुंचा और रुपये व अशर्फ़ियें नज़्र कीं. इस अर्सेमें रामा महासहाणी प्रधानेका काम करता था. जिसके एवज़ भामाशाहको वह काम सौंपागया. उस वक़्तके किसी शाइरने मारवाड़ी ज़बानमें एक दोहा कहा था, जो यहां लिखाजाता है—

दोहा (१).

भामो परधानो करै रामो कीधो रद्द ॥
धरची बाहर करणनूं मिळियो आय मरद्द ॥ १ ॥

महाराणा प्रतापसिंहने भामाशाहकी बहुत ख़ातिर की और उसके व अपने साथी राजपूत सर्दारों समेत दिवेरके शाही थानेपर हम्ला किया. उस थानेपर सुल्तानख़ां मुग़ल मुस्तार था, जिसकी छातीमें राजकुमार अमरसिंहके हाथका बर्छा लगकर घोड़ेमें होताहुआ पार निकलगया, और वह घोड़े समेत मारागया. एक दूसरे राजपूतके हाथकी तलवार हाथीके लगी जिससे उसका पिछला पैर कटपड़ा. इसके बाद जहां जहां शाही थानोंपर थोड़े आदमी थे वे सब ख़ौफ़ खाकर भागगये. बहलोलख़ां नामी मुग़लके महाराणाके हाथकी तलवार लगी जिससे वह घोड़े समेत क़त्ल हुआ, और इसी तरह इस थानेपर दूसरे आदमी भी मारे गये, और दिवेरकी नालपर महाराणा ने क़ब्ज़ा करलिया; महाराणाने वहांसे चलकर हमीरसर तालाबपर, जो कुम्भलमेरके नज़्दीक है, मक़ाम किया. कुम्भलमेरमें बन्दोबस्तके लिये शाहीफ़ौजके थोड़े से आदमी रहगये थे, वे महाराणाकी दहशतसे क़िला छोड़कर भागगये, और वहां भी बन्दोबस्त करतेहुए महाराणा ओवरां ग्राममें आ ठहरे, वहांसे जावरमें क़ब्ज़ा करके छप्पन, बागड़के पहाड़ोंमें फ़तह पाकर चांवंडमें निवास किया.

महाराणाने भामाशाहके भाई ताराचन्दको मालवेमें रामपुरेकी तरफ़ भेजा था, जिसको शाहबाज़ख़ांने जा घेरा. और ताराचन्द वहांसे लड़ाई करताहुआ बसीके नज़्दीक पहुंचा, जहां ज़ख़्मी होनेके सबब घोड़ेसे गिरा. लेकिन बसीका राव देवड़ा साईंदास, उस ज़ख़्मीको जो बेहोश होगया था, उठाकर अपने क़िलेमें ले आया. शाहबाज़ख़ां तो दूसरी तरफ़ रवाना हुआ, और यह हाल महाराणा प्रतापसिंहने सुनकर चांवंडसे कूच किया, सो दशोर वग़ैरह मालवेके शाही थानोंको तहस नहस करते और दंड लेतेहुए चांवंडमें आ पहुंचे.

फिर बादशाहने मिर्ज़ाख़ां ख़ानख़ानांको फ़ौज देकर मालवेकी तरफ़ भेजा, जिससे भामाशाह जाकर मिला. मिर्ज़ाख़ांने महाराणाको बादशाहकी ख़िदमतमें लेजाना चाहा लेकिन भामाशाहने मंज़ूर न किया.

जब छप्पनके राठौड़ोंने शोर मचाया तब महाराणाने लूणा चावंडिया राठौड़को चांवंडसे निकालकर वहां अपनी राजधानी बनाई, और आसपास, दूर नज़्दीक जहां

---

(१) अर्थ-भामा प्रधाना करता है-रामा दूर कियागया, और देशकी तरफ़दारी करनेको वह मर्द आमिला.

शाही थाना सुनते वहीं जाकर छापा मारते. चांवंडमें महाराणाने चामुंडा माताका मन्दिर (१) और अपने रहनेके लिये छोटे छोटे महल बनवाये. कुछ दिनों बाद बांसवाड़े व डूंगरपुर वालोंको, जो बादशाही ख़िदमतमें हाज़िर होचुके थे, फ़ौज भेजकर अपने ताबे किया.

विक्रमी १६३७ [हि० ९८८ = ई० १५८०] में महाराणा प्रतापसिंह का यह सब हाल सुनकर बादशाहने शाहबाज़ख़ां को बड़ी जर्रार फ़ौज देकर मेवाड़की तरफ़ भेजा और उसके साथ गाज़ीख़ां बदख़्शी और शैख़ मुहम्मदहुसैन व तीमूर और मिर्ज़ा ज़ादेअलीख़ां वग़ैरह को रवाना किया. इन लोगोंने जहाज़पुर व मालवेकी तरफ़से मेवाड़ी पहाड़ों पर बहुतसे हम्ले किये लेकिन कामयाब न हुए. बादशाह ने शाहबाज़ख़ां को इस मुहिम से बुलाकर बंगाले की तरफ़ भेजदिया.

विक्रमी १६३९ [हि० ९९० = ई० १५८२] में बादशाह अक्बर ने आंबेरके राजा भारमल्लके बेटे राजा जगन्नाथ कछवाहे को जाफ़रख़ां बदख़्शी समेत मेवाड़ पर भेजा, जिसने मांडलगढ़, मोही, और मदारिया वग़ैरह मेवाड़के हिस्सोंमें बहुतसे थाने बिठाये, लेकिन महाराणा प्रतापसिंह ने भी जहां मौक़ा पाया वहां इन लोगोंसे मुक़ाबिला किया, और मेवाड़में आम हुक्म जारी करदिया कि जो कोई एक बिस्वा ज़मीन भी ज़िराअत (खेती) करके मुसल्मानों को हासिल देगा उसका सिर काटा जायगा. इसी हुक्मके मुवाफ़िक़ ज़िराअतका करना कुल मेवाड़में बन्द होगया. किसान लोग अपने बालबच्चों समेत खेतीका सामान लेकर दूसरे इलाक़ों में जा बसे. जितने शाही थाने तइनात थे उनके लिये खाने पीनेकी रसद भी अजमेरकी तरफ़से पूरे बन्दोबस्तके साथ मंगाई जाती थी. शाही मुलाज़िमों के सामने कभी राजपूतोंका छोटा गिरोह आता तो उसको क़त्ल या क़ैद किये बिना नहीं छोड़ते थे. इसी तरह राजपूतोंके क़ाबूमें जब कभी शाही मुलाज़िम आजाता तो वे भी अपना बदला लेनेमें कोताही (कमी) नहीं करते. ऊंटालेकी शाही फ़ौजके किसी थानेदारने एक किसानसे एक क़िस्मकी तर्कारी खेतमें बुवाई थी, इसका हाल सुनकर महाराणा प्रतापसिंहने रातके समय शाही फ़ौजके बीचमें जाकर उस किसानका सिर काटडाला, कि जिसने हुक्मके ख़िलाफ़ तर्कारी बोई थी. बहुतसे फ़ौजी आदमियोंने भी महाराणा पर हम्ला किया, सो यह उनसे लड़ते भिड़ते पीछे पहाड़ोंमें चले आये; इसके पीछे एक बिस्वा ज़मीनमें भी कहीं ज़िराअत न हुई.

---

(१) मन्दिर तो अबतक साबित है और महलोंके खंडहर पड़े हैं.

विक्रमी १६४० के श्रावण शुक्ल १२ [हि० ९९१ ता० १० रजब = ई० १५८३ ता० १ ऑगस्ट] को कुंवर अमरसिंहकी स्त्रीके गर्भसे राजकुमार कर्णसिंहका जन्म हुआ. उन्हीं पहाड़ोंमें महाराणा प्रतापसिंहने समयानुसार अपने घर पोता होनेकी खुशी की.

इसी संवत्के कार्तिक शुक्ल ११ [ता० १० शव्वाल = ता० २७ ऑक्टोबर] को महाराणा उदयसिंहके पुत्र जगमाल, जो महाराणा प्रतापसिंहके भाई थे सिरोहीमें राव सुल्तान देवड़ासे लड़कर मारे गये. जिसका हाल इस तरह पर है कि- महाराज जगमालकी शादी सिरोहीके राव मानसिंहकी बेटीके साथ हुई थी, और मानसिंहके औलाद नहीं थी. इस वास्ते सब राजपूतोंने मिलकर सिरोही का राज्य तिलक राव सुल्तान भाणावतको दिया. राव मानसिंहकी राणी बाढ़मेरीको गर्भ था सो वह निकलकर अपने पीहर बाढ़मेरमें चली गई; वहां उसके बेटा पैदा हुआ. देवड़ा बिजा हरराजोत बड़ा बहादुर आदमी था और राव सुल्तान भी उसकी सलाहसे रियासतका काम करता था, लेकिन राव सुल्तानके काका सूजा रणधीरोतकी, जिसके पास अच्छे अच्छे राजपूत सवार मौजूद थे, बिजासे दुश्मनी होगई; इससे बिजाने सूजाको मारने और राव सुल्तानको गादीसे खारिज करने तथा मानसिंहके बेटेको बाढ़मेरसे लाकर गादी पर बिठानेका इरादा किया, और अपने भाइयोंसे कहा कि सूजाको मारना चाहिये. उसके भाइयोंने मना किया, लेकिन बिजाने नहीं माना और रावत शेखावत, बालीशा देवड़ा व जगमाल देवड़ाको भेजकर सूजाको मरवाडाला और आप भी वहां जा पहुंचा. देवड़ा गोविन्ददास भी इसी लड़ाईमें मारा गया. फिर बिजाने मानसिंहके बेटेको बाढ़मेरसे बुलाया और राव सुल्तानको कालधरी गांवमें क़ैद रखकर आप कुंवरकी पेश्वाईकेलिये गया. पीछेसे राव सुल्ताननने देखा कि बिजा आकर मुझको मारडालेगा, इसलिये देवड़ा डूंगरोत व चीबासे कहा कि मुझको निकालदो तो मैं जन्मभर तुम्हारा इहसान्मन्द रहूंगा- इस तरह राव सुल्तान निकलकर रामसेन चलागया. जब देवड़ा बिजाने देवड़ा सूजाको मारा था, उस वक्त सूजाका एक बेटा माला तो मारागया और दूसरे पृथ्वीराज श्यामदास सूजावतको इनकी मा छिपा कर रामसेनमें ले आई.

बिजा देवड़ा जो राव मानसिंहके बेटेकी पेश्वाईके लिये गया था, उसने लड़केको अपनी गोदमें लिया, लेकिन दैव इच्छासे वह लड़का उसी रातमें मरगया, जिससे बिजा देवड़ा उदास होकर फिर सिरोही आया और देवड़ा समरा व सूरासे कहा कि मुझको सिरोहीका राज्यतिलक देदो, जिसपर इन दोनोंने इन्कार किया और जवाब दिया कि राव लाखाकी औलादमें बीस आदमी मौजूद हैं, तुमको सिरोहीका राज्यतिलक नहीं

दिया जासक्ता. इस पर बिजाकी उनसे तक़रार हुई जिससे वे यहांसे निकल गये. यह बात महाराणा प्रतापसिंहने सुनकर अपने भान्जे राव कल्ला मेहाजलोतको फ़ौज देकर सिरोहीका मालिक करदिया. विजा यहांसे निकलकर ईडर चलागया, राव सुल्तान भी कल्लाके ताबे होकर सिरोहीमें आगया. देवड़ा चीवा और खेमा भारमलोत राव कल्लाके मुसाहिब थे; देवड़ा समरा और सूरा भी कल्लाके पास आगये; चीवा और समरा व सूरामें तक़रार होगई, तब समरा व सूरा दोनों गुस्सेमें आकर निकलगये और राव सुल्तानको अपने पास बुलाकर सिरोहीका मालिक बनानेका इरादा किया. बिजा देवड़ा भी इनके लिखनेके मुवाफ़िक़ ईडरसे रवाना हुआ और उसके आनेकी ख़बर सुनकर राव कल्लाने देवड़ा रावत हामावतको ५०० सवार देकर घाटेपर लड़नेको भेजा. रावत हामावत माल ग्राममें और देवड़ा विजा ब्रह्माण ग्राममें आगये. दोनों ग्रामोंकी सरहद्दपर मुक़ाबिला हुआ, जिसमें राव कल्लाके चालीस आदमी मारेगये और ६० ज़ख़्मी हुए, बिजाके भी बहुतसे राजपूत काम आये, लेकिन देवड़ा विजा फ़तहयाब होकर रामसेन ग्राममें सुल्तानसे जामिला. बिजाके आनेसे सुल्तानको बड़ा ज़ोर होगया. जालौरके हाकिम मलिकख़ांको भी अपनी मददके वास्ते सुल्तानने बुलालिया. ३००० आदमी तो इनके और १५०० मलिकख़ां (१) के होगये. यह बात सुनकर राव कल्ला भी सिरोहीसे ४००० आदमी लेकर चढ़ा और रास्तेमें कालधरी ग्रामपर आकर मोर्चाबन्दी की; तब देवड़ा समरा, सूरा व बिजाने राव सुल्तानसे कहा कि हमको कालधरी जानेसे क्या मत्लब है ? सीधे सिरोही चलना चाहिये— यों कहकर ये लोग राव सुल्तानको सिरोहीकी तरफ़ लाये.

कालधरीसे एक कोसके फ़ासिलेपर पहुंचे थे कि वहां राव कल्ला भी अपनी फ़ौज लेकर सामने आ मौजूद हुआ, लड़ाई शुरू हुई, दोनों तरफ़के बहादुर राजपूत ख़ूब लड़े. राव सुल्तानकी तरफ़के दस बीस बड़े आदमी मारे गये, और देवड़ा समराका भाई सूरा नरसिंहोत भी काम आया. राव कल्लाके भी कई राजपूत चीवा, पत्ता सीसोदिया, मुकुन्ददास सीसोदिया, श्यामदास सीसोदिया और दलपत वगैरह मारे गये. आख़िरकार राव सुल्तानने फ़तह पाई, और राव कल्ला यहांसे निकलकर कहीं पहाड़ोंमें जा छिपा. राव सुल्तान सिरोहीका मालिक हुआ, जिसका बड़ा मुसाहिब देवड़ा बिजा था. फिर राव सुल्तान व देवड़ा बिजाके भी आपसमें

---

(१) मलिक ख़ान नाम नैनसी महताने अपनी किताबमें लिखा है, लेकिन तवारीख़ 'गुजरात राजस्थान' में इसका नाम 'मलिकख़ानजी ख़ान' लिखाहै, जो अस्लमें 'मलिकख़ाने जहां' मालूम होता है.

बिगाड़ होने लगा. रावने अच्छे अच्छे राजपूतोंको अपनी तरफ़ मिला लिया, यहां तक कि बिजाके भाई लूणा और मानाको भी अपना खैरख्वाह बनाकर बिजाको सिरोहीसे निकालदिया.

बिजा अपनी जागीरके ग्राममें जाकर कुछ फ़साद उठानेको था, कि इसी अर्से में बीकानेरके महाराज रायसिंह, जिनको बादशाह अक्बरने गिरनार व सोरठका सूबा दिया था, वहां जातेहुए सिरोही आ निकले. राव सुल्तानने उनसे मुलाक़ात करके अपनी सारी हक़ीक़त कह सुनाई; तब महाराज रायसिंहने राव सुल्तानसे सिरोहीका आधा राज्य बादशाहके नज़र करनेका इक़्रार लिखवाकर मदना पातावतको ५०० सवारोंके साथ राव सुल्तानकी मदद्के लिये छोड़दिया और आप गिरनार पहुंचकर वहांसे बादशाहके हुजूरमें सिरोहीकी हालत लिख भेजी; उस वक्त महाराणा उदयसिंहका बेटा जगमाल, बादशाहकी खिदमतमें हाज़िर था, जिसको सिरोहीका वाकिफ़कार और वहांके राव मानसिंह देवड़ाका दामाद समझकर आधा राज्य बादशाहने लिख दिया, जिसके सबब महाराज जगमाल वहां रहने लगा.

राव सुल्तान भी जगमाल से मुहब्बत रखता था, लेकिन देवड़ा बिजा जगमाल के पास आरहा, जो जगमाल (१) को कहने लगा कि आपके ससुरके महल व क़िले में सुल्तान रहता है सो आपको छीन लेना चाहिये. इसका कहना जगमालको भी पसन्द आया. एक दिन राव सुल्तान तो कहीं बाहर गया था और पीछेसे जगमाल ने उनके मकानों पर हम्ला किया लेकिन काम्याबी हासिल न हुई, जिसकी शर्मिन्दगीसे जगमालने दिल्ली जाकर बादशाह अक्बरको अपनी सरगुज़श्त कह सुनाई.

बादशाहने इनको मदद्के तौर फ़ौज दी और यह शाही फ़ौज लेकर सिरोही आये. इनकी अवाई सुनकर राव सुल्तान आबूके पहाड़ों में जा बैठा. जगमाल कुल राज्यका मालिक होकर सिरोहीके क़िलेमें रहने लगा लेकिन देवड़ा बिजा की सलाहसे राव रायसिंह चन्द्रसेणोत व कोलीसिंह दांतीवाड़ा वालेको शाही फ़ौज समेत साथ लेकर जगमालने राव सुल्तानपर चढ़ाई की, और देवड़ा बिजा हरराजोत व राठौड़ खींवा मांडणोतको राव सुल्तानके राजपूतों पर दूसरी तरफ़ विदा किया. जब बिजा हरराजोतने महाराज जगमालसे कहा कि मैं आपसे जुदा हूंगा तो राव सुल्तान आपकी तरफ़ ज़रूर आवेगा. तब राठौड़ रायसिंह चन्द्रसेणोतने जवाब दिया कि क्या जहां मुर्ग़ा होता है वहीं फ़ज्र (सवेरा) होती है ? यह सुनकर देवड़ा बिजा

---

(१) जगमालकी स्त्री देवड़ी भी हमेशा रो रोकर अपने पतिसे कहती कि मेरे बापके रहनेकी जगहसे सुल्तानको निकालदेना चाहिये.

तो दूसरे पहाड़ोंकी तरफ़ राव सुल्तानके राजपूतोंसे लड़नेको गया, लेकिन राव सुल्तान व देवड़ा समराने अपनी जमइयत समेत विक्रमी १६४० कार्तिक शुक्र ११ [हि० ९९१ ता० १० शव्वाल = ई० १५८३ ता० २७ ऑक्टोबर] को धावा करके फ़तह पाई और महाराज जगमाल लड़ाईमें मारागया, और बहुतसे सर्दार उनके साथ काम आये, जिनके नाम नीचे लिखेजाते हैं--

राव रायसिंह चन्द्रसेणोत, दांतीवाड़ेका कोलीसिंह, गोपालदास किशनदासोत गांगावत राठौड़, सादूल (शार्दूल) महेसोत कूंपावत, राठौड़ पूर्णमल्ल मांडणोत कूंपावत, राठौड़ लूणकर्ण सुर्ताणोत गांगावत, राठौड़ केसरदास ईसरदासोत, चहुवान शेखा झांझणोत पड़ियार, गोरा राघावत, पड़ियार भाण अभावत, देवा ऊदावत, भाटी नेतसी, मांगलियो जयमल्ल, बारहट ईसर सेलहत वाला, मांगलिया किशना, धांधू खेतसी, राजसी राघावत, भाटी कान्ह आंबावत, मांगलियो गोपाल भोजावत, राठौड़ खीमो, रायसलोत ईंदो और चारण (१) महडूजाड़ा वगैरह लोग शाही मददगारोंके साथ मारेगये- यहबात महाराणा प्रतापसिंहने सुनी, लेकिन गादीनशीनीकी अदावतसे जगमालके मरनेका कुछ शोक न किया. इन महाराणाके वक्तमें बादशाह अक्बरने ऊंटाला, मोही, मदारिया, चित्तौड़, मांडल, मांडलगढ़, जहाज़पुर, और मन्दशोर वगैरहमें बड़े मज़्बूत थाने बिठादिये थे, जिनमेंसे हर एक जगह हज़ारहा आदमियोंका लश्कर था. महाराणाने शाही थानोंपर कई दफ़ा हम्ला किया, और कहते हैं कि इन्होंने अपने वदनसे ज़िरह बक्तरको एक घड़ीभर भी दूर नहीं किया. इनकी तमाम ज़िन्दगी शम्शेर हाथमें लिये बहादुराना बर्तावसे गुज़री, आराम करना बिल्कुल् हराम होगया था. यह भी मश्हूर है कि जिस वक़्त अक्बर बड़ी जर्रार फ़ौज लेकर खुद गोगूंदेमें आया और बादशाही फ़ौजें इन महाराणाके पीछे चारों तरफ़से लगीं उस वक़्त एक जगह महाराणाके भोजनकी तय्यारी होरही थी, जहां दुश्मनोंने आघेरा. वहांसे हटकर दूसरे पहाड़ोंमें भोजन तय्यार करनेका हुक्म दिया- इसी तरह एक दिनमें रसोईके लिये सात मक़ाम बदलने पड़े, तो भी आरामसे भोजन न मिला.

विक्रमी १६४६ [हि० ९९७ = ई० १५८९] में इन महाराणाने फिर फ़ौज

---

(१) यह वही जाड़ा महडू है जिसको जगमालने जहाज़पुर देदिया था. जाड़ा महडूने थोड़े अर्से तक जहाज़पुरको अपने क़ब्ज़ेमें रक्खा और पीछे जहाज़पुर तो जगमालके सुपुर्द किया और सरसिया ग्राम अपनी औलादके लिये उसी परगनेमें से रखलिया, जो अब तक उसकी औलाद के क़ब्ज़ेमें मौजूद है.

एकट्ठी करके शाही थानोंपर हम्ला किया, जो उनके प्रधान भामाशाहकी हिम्मतसे हुआ था. चित्तौड़, मांडलगढ़ और अजमेरके सिवाय कुल बादशाही थाने उठादिये गये, जिसपर बादशाह अक्बरने बहुतसी फ़ौज देकर मानसिंह, माधवसिंह व जगन्नाथ कछवाहेको, कई मुसल्मान सर्दारोंके साथ मेवाड़पर भेजा. इन लोगोंने नये सिरसे हरएक जगह थाने जमादिये.

एक दिन महाराणा प्रतापसिंह किसी पहाड़पर फूसके झोंपड़ोंमें अपनी राणियों और बेटों सहित सोते थे, कि मेंह बरसने लगा. उस समय महाराणा तो एक झोंपड़ी में तल्वार हाथमें लिये होश्यार बैठे थे और दूसरे छप्परमें कुंवर अमरसिंह मौजूद थे; जब ऊपरसे पानी टपकने लगा तब कुंवरानीने लम्बा सांस खेंचकर कहा कि "हम इस दुःखसे कभी पार उतरेंगे या नहीं"? तब महाराजकुमारने जवाब दिया कि "हम क्या करें? दाजीराज (१) के बर्ख़िलाफ़ कुछ नहीं कर सक्ते". कुंवर और कुंवरानी की ये बातें सुनकर महाराणा प्रतापसिंहने सवेरे सब सर्दारोंको एकट्ठा करके उनसे महाराजकुमार अमरसिंहके सामने रातकी सुनी हुई बातोंका इशारा जताकर कहा कि "ऐ सर्दार लोगो! मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मेरे पीछे यह अमरसिंह, जो दिलसे आराम चाहता है, कभी तक्लीफ़ न उठावेगा और मुसल्मान बादशाहोंके दियेहुये ख़िल्अत पहनेगा और फ़र्मानको अदबके साथ लेना और तावेदारी करना कुबूल करेगा, और हमारे बेदाग़ वंशको अपने आरामके लिये दाग़ लगावेगा". कुंवर अमरसिंह इस बातको सुनकर बहुत शर्मिन्दा हुए, लेकिन अपने पिताके सामने कुछ न कहसके, मगर दिलमें मज़्बूत इरादा करलिया कि "मैं हर्गिज़ बादशाहोंका फ़र्मांबर्दार न बनूंगा.

इन महाराणा प्रतापसिंहका वैकुंठवास विक्रमी १६५३ माघ शुक्ल ११ [हि० १००५ ता० ९ जमादियुस्सानी = ई० १५९७ ता० २९ जैन्यूअरी] को ५७ वर्षकी उम्र पाकर चांवंड ग्राममें हुआ. इनका जन्म विक्रमी १५९६ ज्येष्ठ शुक्ल १३ (२) [हि० ९४६ ता० ११ मुहर्रम = ई० १५३९ ता० ३१ मई] में और राज्याभिषेक विक्रमी १६२८ फाल्गुन शुक्ल १५ [हि० ९७९ ता० १४ शव्वाल = ई० १५७२ ता० १ मार्च] को हुआ था.

इन महाराणाका क़द लम्बा और पुष्ट, आंखें बड़ी, चिहरा और मूंछें बड़ी, हाथ लम्बे, और सीना चौड़ा था, पुराने रिवाजके मुवाफ़िक़ डाढ़ी नहीं रखते

---

(१) "दाजीराज" शब्द मेवाड़के राजा व राज्यवंशी अपने बापके लिये बोलते हैं.

(२) 'अमरकाव्यमें,' जो महाराणा राजसिंहके समयमें बना है, ज्येष्ठ शुक्ल १३ लिखी है और नैनसी महताके लिखनेसे ३ मालूम होतीहै.

थे; और रंग गेहुवां था; चिहरेपर ऐसी तेज़ी थी कि तस्वीर देखकर अब भी हरएक आदमीपर रोब छाजाता है. इनके बेटे यानी महाराज कुमार नीचे लिखे मुवाफ़िक़ थे–

महाराणी अजबांदे पंवारके गर्भसे अमरसिंह और भगवानदास; महाराणी सोलंखिणी पूर बाईके गर्भसे सहसा और गोपाल; महाराणी चंपाबाई झालीके गर्भसे कचरा, सांवलदास और दुर्जनसिंह; महाराणी जसोदाबाई चहुवानके गर्भसे कल्याणदास; महाराणी फूलबाई राठौड़के गर्भसे चांदा व शेखा; महाराणी शाहमतीबाई हाड़ीके गर्भसे पूरा; महाराणी खीचण आसाबाईके गर्भसे हाथी और रामसिंह; महाराणी आलमदेबाई चहुवानके गर्भसे जसवन्तसिंह; महाराणी रत्नावतीबाई प्रमारके गर्भसे माना; महाराणी अमराबाई राठौड़के गर्भसे नाथा और महाराणी लखाबाई राठौड़के गर्भसे रायभाण.

महाराणा प्रतापसिंहकी छत्री यानी समाधि उदयपुरसे दक्षिण की तरफ़ १७ कोसके फ़ासिलेपर प्रसाद ग्राम व जयसमुद्रके बीच चावंडमें मौजूद है.

अबुल्फ़तह जलालुद्दीन मुहम्मद,
अक्बर बादशाह.

इस बादशाहका जन्म हिज्री० ९४९ ता० १४ शाबान [वि० १५९९ मार्गशिर शुक्ल १५ = ई० १५४२ ता० २३ नोवेम्बर] शनिवार को अमरकोटमें हमीदाबानू बेगमके गर्भसे हुआ.

अक्बरनामह, तबक़ात अक्बरी व मुन्तख़बुत्तवारीख़ वग़ैरह किताबोंमें ऊपर लिखेहुए हिज्री सन्‌की ५ वीं रजबको आदित्यवारके दिन पैदा होना लिखा है, लेकिन बादशाह हुमायूंके हमेशा पास रहनेवाला, जो अक्बरके जन्म समय पर भी हाज़िर था, अपनी किताब 'तज़्किरतुल्वाक़िआत' में १४ वीं शाबान ही लिखता है. इस सन्देहके दूर करनेके लिये हमने एकलेख एशियाटिक् सोसाइटी बंगालके जर्नल नम्बर १ भाग १ सन् १८८६ ईसवीमें लिखा है जिसका तर्जुमा शेषसंग्रह[नम्बर१]में

लिखा जायगा.

यह बादशाह १३ वर्षकी (१) उम्रमें हिज्री ९६३ ता० ३ रबीउस्सानी [वि० १६१२ फाल्गुन शुक्र ५ = ई० १५५६ ता० १५ फ़ेब्रुअरी] को कलानोर मक़ाममें तख़्त पर बैठा और २५ दिनके बाद इसने नौरोज़ (खुशीके दिन) का जल्सा करके उसी दिनसे एक नया सन् फ़स्लका हिसाब रखनेको "इलाही" नामसे जारी किया. इसके महीने तुर्की हैं और सन्का हिसाब सूर्यकी चालपर रक्खागया है, जिसके महीनोंके नाम ये हैं—

१ फ़र्वर्दी, २ उर्दीबिहिश्त ३ खुर्दाद, ४ तीर, ५ मिर्दाद, ६ शहरेवर, ७ मिहर, ८ आबान, ९ आज़र, १० दै, ११ बहमन्, १२ इसफ़िन्दार्मुज़.

इलाही सन्, हि० ९६३ ता० २८ रबीउस्सानी [विक्रमी १६१३ चैत्र शुक्ल १ = ई० १५५६ ता० १२ मार्च]को शुरू हुआ. इसके हरएक महीनेके ३० दिन मानेगये हैं. आख़िरी महीनेमें ५ दिन बढ़ाकर 'इसफ़िन्दार्मुज़' ३५ दिनका करलिया जाता है. संक्रान्तिके हिसाबसे मेषसंक्रान्तिका प्रारंभ, 'फ़र्वर्दी' अर्थात् पहिले महीनेका, शुरू दिन है.

अक्बरशाहने अपना फ़ौजी व मुल्की वज़ीर व वकील मुत्लक़् (२) बैरमखां खानूखानां को, जो उसके बापके समयसे काम करता था, बनाया; और तख़्त नशीन् होते ही एक वर्षके लिये अपनी कुल बादशाहत में साइरका महसूल मुआफ़ करदिया. तर्दीबेगख़ांको दिल्ली और मेवातका सूबेदार बनाकर अपने नामका सिक्का और खुत्बा जारी करनेके लिये भेजकर सिकन्दर सूरकी गिरिफ्तारीके विचारमें ठहरा रहा. नगरकोटका राजा रामचन्द्र, जो उत्तराखंडके पहाड़ों में बड़ा नामवर था, उसके पास हाज़िर होगया.

इन्हीं दिनोंमें नारनौलके हाकिम मज्नूं क़ाक़शाल अक्बरशाहीको, शेरखां पठानके नौकर हाजीखांने घेर लिया, जिसके साथ आंबेरका राजा भारमल्ल कछवाहा भी था. भारमल्लने सुलह कराकर क़ाक़शालको सलामतीके साथ दिल्लीकी तरफ़ रवाना किया और नारनौलका क़िला हाजीखांको दिला दिया. यह ख़बर सुनकर तर्दीबेग सूबेदार दिल्लीसे चला, और हाजीखांको नारनौलसे मेवातकी दक्षिणी सीमा तक भगाकर, आप फ़तहके साथ पीछे दिल्लीमें आगया; परन्तु अदलीशाह का वज़ीर हेमूं ढूसर फ़ौज लेकर दिल्लीकी तरफ़ चला, जिसके साथ ५०००० सवार १००० हाथी और १५० तोपें थीं.

---

(१) इस बादशाहकी उम्र तख़्त पर बैठनेके वक्त हिन्दीके हिसाबसे १३ वर्ष २ महीने और २० दिन की, हिज्री सनके हिसाबसे १३ वर्ष ७ महीने १८ दिनकी, और सन् ईसवीसे १३ वर्ष २ महीने १८ दिनकी थी.

(२) यह ओह्दा बादशाह के एवज़का समझा जाता था.

हिजी ९६३ ता० २ ज़िल्हिज [वि० १६१३ कार्तिक शुक्ल ४ = ई० १५५६ ता० ८ ऑक्टोबर] को दिल्लीके पास तुग़ल्क़ाबादमें शाही फ़ौजसे मुक़ाबिला हुआ, जिसमें तर्दीबेग शिकस्त खाकर भागा और हेमूंने दिल्ली पर क़ब्ज़ा करलिया. जालन्धरमें पहुंचते ही तर्दीबेगको बैरमखां खानूखानांने दग़ासे मरवाडाला.

अक्बरशाह बैरमकी सलाहपर चलता था और उसको खानूबाबा कहाकरता था. बादशाह दिल्लीकी तरफ़ रवाना हुआ, जहांसे हेमूंने भी लड़ाईकी तय्यारी की. पानीपतके पास दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबिला हुआ. हिजी ९६४ ता० २ मुहर्रम [वि० १६१३ मार्गशिर शुक्ल ३ = ई० १५५६ ता० ६ नोवेम्बर] को हेमूंने शिकस्त खाई और आंखमें तीर लगनेसे ज़ख्मी होकर क़ैदमें आने बाद बैरमखांके हाथसे क़त्ल हुआ.

तर्दीबेगखां बादशाही नौकर और हेमूं दुश्मन, दोनोंको बैरमखांने बादशाहकी मर्ज़ीके बख़िलाफ़ मारा, परन्तु उस वक़्त बादशाह अक्बरको बैरमखांका राज़ी रखना ज़रूर था इसलिये चुप हो रहा. इस फ़तहके बाद अक्बरशाहने दिल्लीमें पहुंचकर अली कुलीखांको खानेज़मांका ख़िताब और संभलका ज़िला जागीरमें दिया और क़ियाखांको आगरेकी निज़ामत इनायत की.

इन्हीं दिनोंमें मज्नूंखां क़ाक़्शालकी सिफ़ारिशसे बादशाहने आंबेरके राजा भारमल्ल कछवाहेको दिल्ली बुलाया और उसको बहुत कुछ इन्आम इक्राम देकर रुख़्सत किया. जब यह वहांसे जानेको तय्यार हुआ तो एक मस्त हाथी, जिसपर उस समय बादशाह सवार थे, लोगोंकी तरफ़ हम्ला करने लगा; सब लोग भागगये लेकिन राजा भारमल्ल अपने राजपूतों सहित बहादुरीसे जमारहा. अक्बरशाहके दिल पर राजपूतोंकी बहादुरीका यह पहिला जमाव था. बादशाहने राजाको बहुत ख़ातिर के साथ तसल्ली देकर फिर जल्दी आनेके लिये ताकीद करदी.

इसी वर्षमें मौलवी पीरमुहम्मदको बड़ी फ़ौज देकर हाजीखां पठान और हेमूंके बापपर भेजा, जो मेवातकी तरफ़ अपना अमल जमारहे थे. मौलवी पीर मुहम्मदने हेमूंके बापको गिरिफ्तार करके हाजीखांको शिकस्त दी और हेमूंके बापको मुसल्मानी मज़हब इख्तियार (१) न करनेके कारण मरवाडाला. हाजीखां भागकर अजमेरकी तरफ़ आया और महाराणा उदयसिंहके शरणमें रहा, लेकिन कुछ दिनों पीछे महाराणासे लड़ाई करके गुजरातकी तरफ़ चलागया; जिसका मुफ़स्सल हाल पहिले लिखागया है—[एष्ठ ७० व ७१].

(१) इस बूढ़ेने जवाब दिया था– कि अस्सी वर्ष एक मतमें रहकर थोड़े दिनोंके वास्ते दूसरा मज़्हब क्या इख्तियार करूं ?.

इसी सालमें ईरानियोंने कन्धार दबालिया और सिकन्दरखां सूरने लाहौरके हाकिम ख्वाजह खिज़रखांको शिकस्त दी. अक्बर बादशाहने सिकन्दरखांको क़िले मानगढ़में जा घेरा. छ:महीने तक लड़ाई करनेके बाद वह अपने बेटे अब्दुर्रह-मानको अक्बर बादशाहकी खिदमतमें भेजकर आप बंगालेकी तरफ़ चलागया. उसी स्थान (मानगढ़) पर अक्बरकी मा हमीदाबानू बेगम काबुलसे आई और मिर्ज़ा हकीमको, जो काबुलमें रहगया था, वहांकी हुकूमत दीगई.

इस वर्षमें बड़ा भारी अकाल (क़हत्) पड़ा और इसी हिज्री ९६४ [वि० १६१४ = ई० १५५७] को खानूखानां बैरमखांके बेटे अब्दुर्रहीमका जन्म हुआ, जो मिर्ज़ाखां खानूखानांके खिताबसे प्रसिद्ध था. बैरमखांका इख्तियार यहांतक बढ़गया था कि उसकी मर्ज़ी बगैर बादशाह कुछ भी नहीं करसक्ताथा. बाबर बादशाहकी दोहिती सलीमासुल्तान, बैरमखांके साथ ब्याहीगई. हिज्री ९६५ ता० २५ जमादियुस्सानी [वि० १६१५ वैशाख कृष्ण ११ = ई० १५५८ ता० १५ एप्रिल] को बादशाह पंजाबसे दिल्ली आये. बैरमखां और बादशाहकी नाइत्तिफ़ाक़ी प्रति दिन बढ़ती गई, और बैरमखां खानूखानांने मुसाहिबबेग नाम सर्दारको, जोकि उस से नाइत्तिफ़ाक़ी (विरोध) रखता था, मरवाडाला

हिज्री ९६६ शुरू मुहर्रम [वि० १६१५ कार्तिक = ई० १५१८ ऑक्टोबर] में बादशाह आगरे पहुंचा. इसी वर्षमें रणथम्भोर क़िला लेनेको फ़ौज भेजी, जो बगैर कामयाबीके वापस बुलालीगई. फिर बैरमखांने मौलवी पीरमुहम्मदको जो पहिले उसका दोस्त था, बयाना क़िलेमें क़ैदकरके ज़बर्दस्ती मक्केको भेज-दिया.

इसी अर्सेमें ग्वालियरका क़िला बैरमखांकी मारफ़त फ़तह हुआ. यह क़िला पठान बादशाहोंकी राजधानी बनगया था. अलीकुलीखांने जौनपुर और बनारसका इलाक़ा भी इन्हीं दिनों में लेलिया. शैख मुहम्मद गौस ग्वालियरी बादशाहके पास आया, जिसकी अक्बरशाह खातिर करना चाहता था, परन्तु बैरमखांने उसे निकालदिया और वह ग्वालियरको लौटगया- इस तरह पर बैरमखांकी तरफ़से बादशाहको रंज ज़ियादा हो गया. बादशाह आगरेका इन्तिज़ाम बैरमखांको सौंप-कर शिकार खेलने चला और मुसाहिबों की सलाहसे अपनी माके देखनेको दिल्ली पहुंचा, जहां पर सब लोग बैरमखांके दुश्मन जमा थे, उन्होंने बादशाहको ज़ियादा भड़काया. अक्बर बहुत विचारवान था, लेकिन जिस तरह सूखीहुई लकड़ी में भी अधिक घिसनेसे आग जल उठती है वैसे ही उसमें भी आदमी होनेके सबब

बातोंने असर किया; क्योंकि हक़ीक़तमें बैरमखां ज़ालिम ही था. उसने आगरे से बादशाहको अर्ज़ियां भेजीं लेकिन उनसे कुछ फ़ायदा नहुआ, इस लिये वह डरसे आगरा छोड़कर मालवेकी तरफ़ चलदिया. उसके साथी सर्दार उसे छोड़ छोड़ कर बादशाहके पास चलेआये; तब बैरमखांने नागौर आकर मक्के जानेका इरादा किया, लेकिन उसके साथियोंने उसको बाग़ी बनाना चाहा. इसी अर्सेमें तसल्लीका शाही फ़र्मान आगया और वह मक्के जानेके इरादेसे बीकानेर पहुंचा. राव मालदेवसे बैरमखांकी दुश्मनी थी, इसलिये बीकानेरके राव कल्याणमल्लसे मदद लेकर उसने मक्केको जाना चाहा लेकिन उसके साथियोंने उसको फिर बहकाया. यह खबर सुनकर बादशाहने मुल्ला पीरमुहम्मदको, जो मक्केके रास्तेसे लौट आया था, बैरमखांका पीछा करनेको भेजा. बैरमखां वहांसे पंजाबकी तरफ़ भागा और खानेआज़मसे माछीवाड़ेके पास मुक़ाबिला होने बाद जम्बूकी तरफ़ निकलगया, फिर बादशाहने ख्वाजह अब्दुल्मजीदको 'आसिफ़-खां' का खिताब देकर दिल्लीका सूबेदार बनाया और आप लाहौरकी तरफ़ रवाना हुआ. बैरमखांको पहाड़ोंमें जाकर दबाया, जिससे वह लाचार होकर हिज्री ९६८ रबीउस्सानी [वि० १६१७ पौष = ई० १५६० डिसेम्बर] में बादशाहके पास हाज़िर होगया.

जब वह पैरोंमें गिरकर रोने लगा तो बादशाहने तसल्लीके साथ फ़र्माया कि तुम्हारी इच्छा हो तो काल्पी और चंदेरी वगैरहका इलाक़ा जागीरमें दियाजावे, मुसाहिबीमें रहना चाहते हो तो यह भी मंज़ूर है और जो मक्केजानेकी ख्वाहिश हो तो मुनासिब सामान इनायत कियाजावे. इसपर उसने मक्केजानेकी ख्वाहिश ज़ाहिर की. बादशाहने ५०००० रुपया और मुनासिब सामान देकर उसे रवाना किया, और आप दिल्लीको लौट आया. बैरमखां गुजरातमें पट्टनके पास पहुंचा था कि वहां एक पठान मुबारिकखां नामीने, जिसके बापको बैरमखांके नौकरोंने हेमूंकी लड़ाईमें मारा था, हिज्री ९६८ ता० १५ जमादियुल्अव्वल् [वि० १६१७ फाल्गुन कृष्ण १ = ई० १५६१ ता० २ फ़ेब्रुअरी] में, उसको दग़ासे मारडाला. बैरमखांके बेटे अब्दुर्रहीम को, जो उस समय ४ वर्षकी उम्रमें था, गुजराती सर्दार एतिमादखांने हिफ़ाज़तके साथ बादशाह अक्बरके पास दिल्लीमें भेजदिया.

बादशाह अक्बरने अदहमखां कूका (धायभाई) को बाज़बहादुरकी तरफ़ मालवेमें भेजा, जो सारंगपुरमें हुकूमत करता था, परन्तु बाज़बहादुर, अदहमखांसे मुक़ाबिला करनेके बाद, भागकर बुर्हानपुरकी तरफ़ चलागया. बादशाह अक्बर भी

आगरेसे रवाना होकर गागरौनको फ़तह करताहुआ सारंगपुर पहुंचा. अदहमख़ांने तीन कोसपर आकर पेश्वाई की. फिर मुहम्मदशाह अदलीका बेटा शेरख़ां ४०००० सवार लेकर बंगालेकी तरफ़से जौनपुर लेनेको आया और वहांके अक्बरशाही सर्दार अली कुलीख़ां ख़ानेज़मांसे मुक़ाबिला करके बंगालेकी तरफ़ भागगया.

हिज्री ९६९ जमादियुल्अव्वल् [वि॰ १६१८ माघ = ई॰ १५६२ जैन्यूअरी] को बादशाह आगरेसे राजपूतानाकी तरफ़ रवाना हुआ, जब क़ियाम कलावली ग्राममें हुआ तो चग़ताख़ांने राजा भारमल्लके ख़िदमतमें आने और ताबे रहनेकी ख्वाहिश ज़ाहिर की और शरफ़ुद्दीनहुसैन मिर्ज़ा मेवातके जागीरदारकी कार्रवाईके बर्ख़िलाफ़ राजाको सांगानेरमें हाज़िर किया. बादशाहने मक़ाम सांभरमें राजा भारमल्ल कछवाहेकी बड़ी बेटीके साथ शादी की. यह पहिला ही मौक़ा है कि राजपूतोंकी बेटी ख़ुशीसे बादशाहके साथ व्याहीगई, और बादशाह हुमायूंकी इच्छा उसके बेटे अक्बरशाहने पूरी की (१).

फिर शरफ़ुद्दीन वग़ैरहको फ़ौज देकर मेड़तेकी तरफ़ रवाना किया और आप ख्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीके दर्शन करके आगरेको लौटगया. शरफ़ुद्दीन हुसैन मिर्ज़ा ने क़िले मेड़ताको फ़तह किया, जिसका ज़ियादा बयान जोधपुरके हालमें लिखाजायगा. इन्हीं दिनोंमें मौलवी पीरमुहम्मद मालवेके सूबेदार अक्बरशाहीने बाज़बहादुरसे मुक़ाबिलेके लिये चढ़ाई करके बीजानगर और बुर्हानपुर लेलिया. लेकिन मीरां मुहम्मदशाह फ़ारूक़ीसे मदद लेकर बाज़बहादुरने हम्ला किया, जिससे मौलवी पीरमुहम्मद भागताहुआ नर्मदा नदीमें डूबकर मरगया, और बाज़बहादुरने मालवे पर क़ब्ज़ा करलिया.

जब मालवेके भागेहुए मुग़लिया लश्करके सर्दार आगरेमें पहुंचे तो बादशाहने

---

(१) आम राजपूत लोगों में इस बातका ज़िक्र इस तरहपर है- कि हुमायूंशाहकी वसिय्यत के मुवाफ़िक़ बादशाह अक्बरने राजपूतोंसे कहा कि हमारे रिश्तेदार तो तुर्किस्तान में दूर रहते हैं और हम बड़े ख़ान्दानोंके सिवाय रिश्तहदारी नहीं कर सक्ते. तुम लोग हिन्दुस्तानमें बड़े इज़्ज़तदार और पुराने ख़ानदानी हो, इसलिये हमारी बेटियोंके साथ शादी करना क़ुबूल करो. जिसपर राजपूतोंने सोच विचारकर कहा कि आपकी बेटियां तो हमारी सर्दार हैं, जिनके साथ शादी करना बेअदबीमें दाख़िल होगा और अपनी बेटियां हम लोग आपको व्याहदेंगे. इन लोगोंका इस बात से यह मत्लब था कि बादशाहोंकी बेटियां हमारे घरों में आईं तो उनके बड़प्पनसे परहेज़में ख़लल आकर मुसल्मान होना पड़ेगा और हमारी बेटी बादशाहके घरमें गई तो ज़ियादा अन्देशेकी बात नहीं है; इसलिये राजा भारमल्ल कछवाहेने सबसे अव्वल अपनी बेटी बादशाह को दी.

उनको क़ैद किया और अब्दुल्लाखांको नई फ़ौज देकर मालवेकी तरफ़ भेजा. बाज़बहादुर भागकर महाराणा उदयसिंहके पास मेवाड़में आया और यहांसे गुजरातकी तरफ़ भागता छुपता अन्तमें अक्बर बादशाहके पास हाज़िर होगया; और बादशाहने उसे अपना नौकर बनालिया. इसी वर्षमें ईरानके बादशाह तहमास्पका चचा एल्ची होकर आगरे आया, जिसको बादशाहने सात लाख रुपया और बहुतसे तुहफ़े देकर बिदा किया.

हिज्री ९७० ता० २२ रमज़ान [वि० १६२० ज्येष्ठ कृष्ण ८ = ई० १५६३ ता० १६ मई] को अद्हमखां कूकेने ख़ानेआज़म शम्सुद्दीन कूकेको दग़ासे बादशाही महलोंमें मारडाला. बादशाह ज़नानेमें था तलवार लेकर दौड़ा, अद्हमखांने दौड़कर उसके हाथ पकड़लिये. लेकिन बादशाहने हाथ छुड़ाकर उसे गिरादिया और दूसरे लोगोंने उसको छतसे नीचे डालकर मारडाला. ख़ानेआज़मका बड़ा बेटा अपने बापका एवज़ लेनेको तय्यार हुआ था लेकिन बादशाहकी इन्साफ़ी कार्रवाईसे ठंडाहोगया और आज़मके बेटों व भाइयोंको तनख़्वाह, इज़्ज़त और मन्सब देकर खुश किया.

अक्बरने कक्खड़ोंको, जिन्होंने पंजाबकी तरफ़ सिर उठायाथा, सज़ा देकर आदमखां कक्खड़को गिरिफ़्तार करलिया. फिर शरफ़ुद्दीनहुसैन मिर्ज़ा और शाह अबुल्मआली ने बग़ावतका भंडा खड़ा किया और नारनौलको जा लूटा. अजमेरके सूबेदार हुसैन कुलीने उन्हें शिकस्त देकर भगादिया. अबुल्मआली काबुलमें पहुंचा, जहां अक्बरके छोटे भाई मिर्ज़ा हकीमने अपनी बहिनका विवाह उसके साथ करदिया. अबुल्मआलीने काबुलकी बादशाहत लेनेके लिये अपनी सासको क़त्ल और मिर्ज़ा हकीमको क़ैद करदिया. लेकिन मिर्ज़ा सुलैमानने, बदख़्शांसे काबुलमें आकर अबुल्मआलीको मारडाला. मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीन हुसैन भागकर जालौर होताहुआ गुजरातमें पहुंचा.

हिज्री ९७१ [वि० १६२० = ई० १५६४] में शरफ़ुद्दीनके नौकर क़ल्लक़ फ़ौलादने आगरेके बाज़ारकी दूकानमें बैठकर अक्बरशाहपर सवारीमें जातेहुए तीर चलाया, जो उसकी भुजामें घुस गया. मुज्रिमको लोगोंने मारडाला और बादशाह का घाव एक अठवारेमें अच्छा होगया. इसी वर्षके अख़ीरमें बादशाह, नरवरकी तरफ़ हाथियोंका शिकार खेलने गया, और अब्दुल्लाखां उज़्बकको बाग़ी जानकर मालवे में पहुंचा. अब्दुल्लाखां भागकर गुजरातकी तरफ़ चलागया और आसिफ़खांने राणी दुर्गावतीसे गोंडवानेका इलाक़ा फ़तह किया.

हिज्री ९७२ मुहर्रम [वि० १६२१ भाद्रपद = ई० १५६४ ऑगस्ट] को बाद-

शाह मांडूमें पहुंचा और आसेरका मालिक मीरां मुहम्मदशाह फ़ारूक़ी बादशाहके तावे हुआ. बादशाह, क़राबहादुरख़ांको मालवेकी सूबेदारी देकर आप आगरेको लौटआया.

इसी वर्षमें मिर्ज़ा हकीम और मिर्ज़ा सुलैमान बदख़्शांके हाकिममें नाइत्तिफ़ाक़ी हुई; सुलैमानने पेशावर तक अपना क़ब्ज़ा करलिया. यह ख़बर सुनकर बादशाहने अपने भाई मिर्ज़ा हकीमकी मददके लिये पंजाबके सर्दारोंको भेजा, जिनकी मददसे मिर्ज़ा हकीम ने जलालाबाद और काबुलपर अपना जमाव किया और ख़ानेकलां, मिर्ज़ा हकीमका मददगार रक्खागया, लेकिन कुछ अर्से बाद मिर्ज़ाकी नाराज़गीके कारण वह लाहौरमें चलाआया.

इसी संवत् और सन्में आगरेके क़िलेकी नीव डालीगई और क़िला आठ-वर्ष (१) में बनकर तय्यार हुआ. तीन या चार हज़ार आदमी उसपर हर रोज़ काम करते थे; इस क़िलेके ४ दर्वाज़े और २० बुर्ज रक्खे गये हैं और यह लाल पत्थरका बहुत मज्बूत बनाया गया है.

बादशाह, हिज्री ९७३ शव्वाल [वि० १६२३ वैशाख = ई० १५६६ एप्रिल] में आसिफ़ख़ां, सिकन्दरख़ां, अलीकुलीख़ां और इब्राहीमख़ां उज़्बक वगैरह अपने सर्दारोंको सज़ा देनेके लिये, जो बाग़ी होकर इलाक़े दबा बैठे थे, जौनपुर और काल्पीकी तरफ़ रवाना हुआ. बादशाही फ़ौजकी कई बार हार जीत हुई, कभी आसिफ़ख़ां और कभी बहादुरख़ां बादशाहके पास हाज़िर होगये, और कभी भागकर अपने साथियों में जामिले. आख़िरकार बादशाहने फ़तह पाकर बाग़ियोंको तबाह किया. इसी सालमें बादशाहके छोटे भाई मिर्ज़ा हकीमने, लोगोंके बहकानेमें आकर काबुलसे चढ़ाई करके लाहोरको आघेरा, इसलिये हिज्री ९७४ ता० १४ जमादियुलअव्वल् [वि० १६२३ मार्गशिर शुक्ल १५ = ई० १५६६ ता० २८ नोवेम्बर] को बादशाह पंजाबकी तरफ़ रवाना हुआ, और यह सुनकर मिर्ज़ा, हकीम पीछे भागगया. थोड़े दिनों बाद मुहम्मदहुसैन मिर्ज़ा, इब्राहीम मिर्ज़ा, मसऊद हुसैन मिर्ज़ा, आक़िल मिर्ज़ा, अलग़ मिर्ज़ा, और शाह मिर्ज़ाने संभलकी तरफ़ बग़ावत की; लेकिन उनको वहांके जागीरदारोंने मारकर निकालदिया और सुल्तान मिर्ज़ाको मुनइमख़ांने गिरिफ़्तार करके क़िले बयानामें भेजदिया. दूसरे मिर्ज़ाओंने भागकर मालवा जादबाया, और वहांसे वे गुजरातमें पहुंचे, जिनका हाल गुजराती बादशाहोंकी तारीख़में लिखा गया है.

(१) तबक़ात अक्बरीमें ४ वर्ष लिखा है.

हिजी ९७५ ता० १९ रबीउस्सानी [वि० १६२४ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ = ई० १५६७ ता० २३ ऑक्टोबर] को बादशाहने चित्तौड़का क़िला आघेरा और उसी सालकी २५ शाबान [चैत्र कृष्ण ११ = ई० १५६८ ता० २४ फ़ेब्रुअरी] मंगलवारको क़िला फ़तह करके बादशाह ख़्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारत करता हुआ आगरे पहुंचा, इसका मुफ़स्सल बयान महाराणा उदयसिंहके हालमें लिखागया है-- (एष्ठ ७३). इसी सालमें इब्राहीमहुसैन और मुहम्मदहुसैन मिर्ज़ाने उज्जैनको घेरलिया लेकिन उनको क़िलीचख़ां वग़ैरह अक्बरके सर्दारोंने मार भगाया.

हिजी ९७६ [वि० १६२५ = ई० १५६८] में बादशाहने आगरेसे कूच करके क़िले रणथंभोर पर घेरा डाला और ता० ३ शव्वाल [वि० १६२६ चैत्र शुक्ल ४ = ई० १५६९ ता० २१ मार्च] को रणथंभोरके क़िलेदार राव सुर्जणने ताबेदारी कुबूल करके क़िला हवाले करदिया. वहांसे लौटतेहुये बादशाह आंबेरमें राजा भगवानदासके घर मिहमान रहा, जहांसे ता० २४ ज़िल्क़ाद [ज्येष्ठ कृष्ण १० = ता० ११ मई] को आगरे पहुंचा. इन्हीं दिनोंमें सीकरी ग्राममें बहुतसी इमारतें बनवाकर उसका नाम फ़तहपुर रक्खा, क्योंकि उसके दादे बाबर बादशाहने महाराणा सांगा पर इसी जगह फ़तह पाई थी.

हिजी ९७७ सफ़र [वि० १६२६ श्रावण = ई० १५६९ जुलाई] में कालिंजरके राजा रामचन्द्र बुंदेलाने कालिंजरका क़िला बादशाहके हवाले किया, और इसी वर्षमें राजा भारमल्ल कछवाहेकी बेटीके पेटसे बादशाह अक्बरके शाहज़ादा "सलीम" पैदा हुआ; जिसका हाल इस तरहपर है कि बादशाहकी उम्र जब २७ वर्षके क़रीब पहुंची और कोई लड़का न हुआ तो इससे उसको बहुत फ़िक्र थी.

फ़तहपुरमें एक फ़क़ीर "शैख़ सलीम" चिश्ती ख़ानदानका रहता था और बादशाह उसके दर्शनोंको अक्सर जायाकरता था. जब राजा भारमल्ल कछवाहेकी बेटी और भगवानदासकी बहिन, अक्बरकी बीबीको गर्भ रहा; तो बादशाहने उस बेगमको शैख़ सलीमके घरपर रखदिया कि इस करामाती फ़क़ीरकी बरकत और दुआसे लड़का पैदा होकर ज़िन्दा रहे. हिजी ९७७ ता० १७ (१) रबीउल्अव्वल् [वि० १६२६ आश्विन कृष्ण ३ = ई० १५६९ ता० २९ ऑगस्ट] बुधवार को शाहज़ादेका जन्म हुआ और उसका नाम उसी वलीके नामपर सलीम रक्खागया. इस वक़्त बादशाह

(१) लेकिन बादशाह जहांगीर अपनी किताब तुज़ुकजहांगीरी में अपनी पैदाइशका दिन १८ रबीउल्अव्वल् लिखता है, और कहता है कि मेरे बापने कभी मुझको 'सलीम' नामसे नहीं पुकारा, 'शैखूबाबा' कहाकरतेथे.

को बहुत खुशी हुई परन्तु ज्योतिषियोंकी अर्ज़के अनुसार कुछ अर्सेतक शाहज़ादेको नहीं देखसका. इसी सालकी तारीख़ १२ शाबान [माघ शुक्ल १३ = ई० १५७० ता० २० जैन्यूअरी] को आगरेसे पियादा ख़्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारतके लिये अजमेरको रवाना हुआ, क्योंकि शैख़ सलीम चिश्तीकी मर्ज़ीके अनुसार इसने यह मन्नत मानी थी. अजमेरकी ज़ियारत करके माह रमज़ान [फाल्गुन = फ़ेब्रुअरी] को आगरे पहुंचगया.

हिज्री ९७८ ता० ३ मुहर्रम [वि० १६२७ आषाढ़ शुक्ल ५ = ई० १५७० ता० ८ जून] को दूसरा शाहज़ादा मुराद पैदा हुआ और इसी सालकी ता० २० रबीउस्सानी [आश्विन कृष्ण ६ = ता० २० सेप्टेम्बर] में बादशाह फिर ख़्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारत करनेको अजमेर आया और वहांकी शहरपनाह बनवाकर एक छोटासा क़िला तय्यार कराया.

अजमेरसे बादशाह नागौर गया, जहांपर राव मालदेवका बेटा चन्द्रसेन और बीकानेरका राव कल्यानमल्ल उसके पास हाज़िर हुए. राव कल्यानमल्लके भाई राव कान्हाकी बेटीकी शादी अक्बरके साथ इसी मक़ामपर हुई और जैसलमेरके रावल हर-राजकी बेटीको भी बादशाहने राजा भगवानदासकी मारफ़त मंगवाकर इसी जगह अपने महलोंमें दाख़िल किया. राव मालदेवकी बेटी रुक्मावती, जो टीपू पातरके पेटसे पैदा हुई थी, उसकी भी शादी बादशाहके साथ इसी मक़ामपर हुई. इस जगहसे बादशाह पट्टनकी तरफ़ शैख़ फ़रीदकी ज़ियारत करताहुआ देपालपुर और लाहौरकी तरफ़ चला. राव कल्यानमल्ल भारी बदनके कारण घोड़े पर नहीं चढ़ सक्ता था इसलिये उसको बीकानेरकी रुख़्सत देकर कुंवर रायसिंहको अपने साथ लिया.

हिज्री ९७९ ता० १ सफ़र [वि० १६२८ अषाढ़ शुक्ल २ = ई० १५७१ ता० २४ जून] में हिसार की तरफ़ होताहुआ ज़ियारतके लिये अजमेर आया, और वहांसे आगरेको गया. हिज्री ९८० ता० २० सफ़र [वि० १६२९ श्रावण कृष्ण ६ = ई० १५७२ ता० ३ जुलाई] को आगरेसे रवाना होकर अजमेरमें पहुंचा; वहांसे बादशाह नागौरकी तरफ़ चलकर बीलोद मक़ामपर था कि पीछे अजमेरमें ता० २ जमादियुल्अव्वल् [आश्विन शुक्ल ४ = ता० १३ सेप्टे-म्बर] को शाहज़ादे दानियालका जन्म हुआ. यहांसे बादशाह गुजरातकी तरफ़ गया और लड़ाई झगड़ोंके बाद वह मुल्क फ़तह किया, जिसका ज़िक्र गुजराती बाद-शाहोंके हालमें मुफ़स्सल लिखा गया है. इसी समय मुज़फ़्फ़रशाह गुजराती, अक्बर बादशाहके पास हाज़िर होगया.

हिज्री ९८१ ता० २४ रबीउस्सानी [वि० १६३० भाद्रपद कृष्ण १० =

ई० १५७३ ता० २४ ऑगस्ट] को गुजरातमें फ़सादकी ख़बर सुननेपर बादशाह छड़ी सवारीसे आगरा छोड़कर अहमदाबादकी तरफ़ चला. इस वक़ उसके साथ, नीचे लिखेहुए सर्दार थेः—

बैरमका बेटा मिर्ज़ाख़ां, सैफ़ख़ां कूका, ख़्वाजह अब्दुल्ला, जगन्नाथ कछवाहा, रायसाल, जयमल्ल, जगमाल पंवार, अली आसिफ़ख़ां, ख़्वाजह ग़यासुद्दीन, राजा बीरबल,राजा दीपचन्द, राजा मझोला, नक़ीबख़ां, मुहम्मदज़मान, मानसिंह दर्बारी, शैख़ अब्दुर्रहीम, रामदास कछ्वाहा, रामचन्द्र, बहादुरख़ां, सांवलदास जादव (यादव), चारण हापा (१) बारहट, कान्हा दर्बारी, हरदास, ताराचन्द ख़वास और लाल कलांवत वग़ैरह कुल ३०० आदमी.

आगरेसे अहमदाबाद ९ दिनमें पहुंचे, और वहां इख़्तियारुल्मुल्क गुजराती और मुहम्मद हुसैन मिर्ज़ापर, जिनके साथ १२००० फ़ौज थी, हम्ला किया. मिर्ज़ा ज़ख़्मी होकर पकड़ागया, जो बीकानेरके राजा रायसिंहकी सुपुर्दगीमें रहा. उसके बाद जब इख़्तियारुल्मुल्कसे लड़ाई हुई, तब मिर्ज़ाको रायसिंहके आदमियोंने भागजानेके डरसे मारडाला, इख़्तियारुल्मुल्क भी पकड़ागया. इस थोड़ी जमय्यतके हम्लेकी फ़तहसे बादशाहका बहुत रोब जमगया, इस कारण कई एक ज़ईफ़-एतिक़ादवाले लोग अक्बरशाहको वली, करामाती और जादूवाला जानने-लगे थे.

बादशाह अज़ीज़ कूकेको गुजरातके सूबेपर छोड़कर आप आगरे चला-गया. इसी वर्षमें बंगालेका दाऊदख़ां कर्रानी पठान बाग़ी होगया. पहिले मुनइमख़ांसे उसकी लड़ाई हुई; फिर राजा टोडरमल्ल भेजागया, लेकिन उसका फ़साद न मिटा, तब बादशाहने ख़ुद चढ़ाई की. वह भागा और बादशाह अपनी फ़ौज और सर्दारोंको उसके पीछे छोड़कर आगरे चला आया. सर्दारोंने उसका बहुत पीछा किया; आख़िर दाऊदख़ां लाचारीके साथ हाज़िर होगया- इसी वर्षमें शैख़ अबुल्फ़ज़्ल बादशाही नौकर हुआ.

हिज्री ९८१ [वि० १६३० = ई० १५७३] में बादशाहने मारवाड़ और सिवाने की तरफ़ फ़ौज भेजी, लेकिन उससे मत्लब हासिल नहीं हुआ, जिससे बाद-शाह हिज्री ९८२ [वि० १६३१ = ई० १५७४] को अजमेरमें आया और सिवाने की तरफ़ ज़ियादा फ़ौज भेजी, लेकिन फिर भी काम्याबी न हुई. बादशाह आगरेको

---

(१) इसकी औलादके लोग अबतक जयपुरमें चारण हापावत मशहूरहैं और महाराजा जयपुरके पौलपात (दर्वाज़ेपर विवाहमें नेग लेनेवाले) हैं.

लौटा और अजमेरसे आगरे तक हरएक कोस पर उसने मनारा और कुआ बनवादिया.

हिज्री ९८३ [वि० १६३२ = ई० १५७५] में दाऊदखां पठानने भागकर बंगालेमें फिर फ़साद उठाया, लेकिन गिरिफ्तार होकर क़त्ल कियागया. इसी वर्षमें नागौर और सिवानेके क़िले लेनेको शाहबाज़खां भेजागया और उसने उनको फ़तह किया- जिसका मुफ़स्सल हाल मारवाड़की तवारीख़में लिखाजायगा.

हिज्री ९८४ [वि० १६३३ = ई० १५७६] में बादशाह अजमेर आया और कुंवर मानसिंह कछवाहेको बड़ी फ़ौजके साथ उदयपुर भेजा. महाराणा प्रतापसिंहने हल्दी घाटीपर मुक़ाबिला किया. पीछे खुद बादशाह गोगूंदा, डूंगरपुर और बांसवाड़े की तरफ़ होताहुआ आगरे चलागया, और शाहबाज़खांने कुम्भलमेरका क़िला फ़तह किया. यह बयान ब्यौरेवार पहिले लिखा गया है-- (एष्ठ १५७).

इसी सन्में बूंदीके राव सुर्जणका बड़ा बेटा दूदा बादशाही नौकरीसे दिल उठाकर दिल्लीसे वापस चला आया और उसने बूंदीपर क़ब्ज़ा करलिया; बादशाह ने सुर्जणके छोटे बेटे भोजको बड़ा बनाया और ज़ैनखां कूकेको फ़ौज देकर उसके साथ भेजा. कई लड़ाइयां होने बाद दूदा तो क़िला छोड़कर उदयपुरके पहाड़ोंकी तरफ़ चलागया और भोज (१) को बूंदीका मालिक बनाकर ज़ैनखां वापस लौट आया.

इसी सालमें बादशाहने ओरछाके राजा मधुकरशाहपर सादिक़खां, मोटा राजा (२), राजा आसकर्ण और क़ासिमअलीखां वग़ैरहको फ़ौज समेत भेजा. लड़ाई होने बाद राजा मधुकरशाह अपने बेटे रामशाह समेत पहाड़ोंमें भागगया और ओरछापर बादशाही क़ब्ज़ा होगया.

हिज्री ९८५ [वि० १६३४ = ई० १५७७] में बादशाह शैख़ फ़रीदके दर्शनके लिये पंजाबकी तरफ़ गया- इस वक्त इसका इरादा काबुल जानेका था, लेकिन किसी सबबसे पीछे लौट आया. शायद पूंछल तारेके उदय होनेसे उसने जाना मुनासिब नहीं समझा होगा, क्योंकि उन्हीं दिनोंमें एक पूंछल तारा (धूमकेतु) उदयहुआ था.

---

(१) भोजका बाप सुर्जण जीता था परन्तु उसने मज़्हबी विश्वासके मुवाफ़िक़ राज्य छोड़कर काशीवास किया था.

(२) मोटा राजा जोधपुरके राव मालदेवका तीसरा बेटा उदयसिंह था, परन्तु इन दिनोंमें जोधपुर उनको नहीं मिलाथा, शायद राजाका ख़िताब मिलगया होगा, या 'राजा' का ख़िताब भी पीछे मिला हो, लेकिन इस सबबसे कि इक्बाल नामह अक्बरके समयसे पीछेका बनाहुआ है, उसके बनानेवालेने 'राजा' लिखदिया हो, तो आश्चर्य नहीं और 'राजा' के साथ 'मोटा' लफ़्ज़ जोधपुरकी गद्दीपर बैठनेके बाद मिला है.

हिज्री ९८६ [वि० १६३५ = ई० १५७८] में इब्राहीम् मिर्ज़ाके बेटे मुज़फ़्फ़र-हुसैन मिर्ज़ाको उसकी मा समेत ख़ानदेशके फ़ारूक़ी राजेअलीख़ांने गिरिफ़्तार करके बादशाहके पास भेजदिया. अक्बरशाहने मिहर्बान होकर उसको अपनी बेटी शाहज़ादाख़ानम् ब्याहदी.

हिज्री ९८८ [वि० १६३७ = ई० १५८०] में राजा गजपतिने बंगाले में फ़साद किया, जिसपर बादशाहने शाहबाज़ख़ां वग़ैरह सर्दारोंको फ़ौज समेत भेजा; उन्होंने उसे ताबे बनालिया.

हिज्री ९८९ ता० ११ मुहर्रम [वि० १६३७ फाल्गुन शुक्ल १२ = ई० १५८१ ता० १५ फ़ेब्रुअरी] को अक्बर बादशाहके भाई मिर्ज़ा हकीमने बंगालेका फ़साद सुनते ही काबुलसे रवाना होकर लाहौरको आघेरा. वहांके सूबेदार सर्दारख़ां और मददगार राजा भगवानदास और कुंवर मानसिंह कछ्वाहेने क़िलेको मज़्बूत किया. यह सुनकर बादशाह अक्बर भी लाहौरको चला. पानीपतके मक़ामपर पहुंचने की ख़बर सुनकर मिर्ज़ा हकीम काबुलकी तरफ़ भागा; बादशाह भी उसके पीछे चला. काबुलके पास हरावल फ़ौजके अफ़्सर शाहज़ादे मुराद (१) से मिर्ज़ा हकीमकी लड़ाई हुई, जिसमें मिर्ज़ा शिकस्त खाकर पहाड़ोंमें भागगया, लेकिन बादशाह उसकी लाचारीपर काबुलकी हुकूमत छोड़कर लौट आया. हिज्री ९९० [वि० १६३९ = ई० १५८२] में सिन्धु नदीपर अटक नामका एक क़िला बनाया और उसकी क़िलेदारी राजा भगवानदासको देकर वापस फ़तहपुर चला आया. इन्हीं दिनोंमें बादशाहने ज्वर और दस्तकी बीमारीसे ज़ियादा तक्लीफ़ पाई, लेकिन कुछ अर्सेके बाद तन्दुरुस्त होगया.

हिज्री ९९१ शव्वाल [वि० १६४० कार्तिक = ई० १५८३ ऑक्टोबर] में गंगा जमुनाके संगम 'प्रयाग' पर एक क़िलेकी नीव डाली, जो अबतक इलाहाबादके क़िलेके नामसे मश्हूर है. इसी वर्षमें महाभारत पुस्तकका तर्जुमा फ़ार्सीमें करवाकर उसका नाम 'रज़्मनामह' (२) रक्खा. इसी सालमें सिरोहीके राव सुल्तान देवड़ासे

(१) शाहज़ादे मुरादकी उम्र इस समय १० वर्षकी थी लेकिन किसी बड़े सर्दारके साथ हरावल में गयाहोगा, क्योंकि अक्बरके भाईसे मुक़ाबला करनेमें नौकरोंका रोब नहीं माना जाता था, और किसी वक्त ऐसा भी होता था, कि नामके लिये फ़ौजके गिरोह की सर्दारी शाहज़ादोंके नाम पर मुक़र्रर की जाती थी, चाहे शाहज़ादा उस फ़ौजमें हो या न हो, कमउम्र शाहज़ादे अलहदा नौकरीपर नहीं भेजे जाते थे.

(२) लड़ाई के हालकी किताब.

उसका इलाका लेकर महाराणा प्रतापसिंहके भाई जगमालको दिलानेके लिये एतिमाद-खांको हुक्म भेजा, और उसने हुक्मके अनुसार रावको निकालकर जगमालको वह इलाका दिलादिया और उसकी सहायताके लिये गज़्नीखां, महमूदखां जालौरी, बिजा देवड़ा और राव चन्द्रसेन राठौड़के बेटे रायसिंहको मुक़र्रर किया. इन महाराज जगमाल का बाक़ी हाल ऊपर लिखा गया है- (पृष्ठ १६२-१६३).

इसी सालमें मुज़फ़्फ़र गुजरातीने भागकर गुजरातमें फ़साद मचाया, जिसका बयान गुजराती बादशाहोंके हालमें लिखा गया है.

हिज्री ९९२ [वि० १६४१ = ई० १५८४] में निज़ामशाह बहरी, अपने भाई मुर्तज़ा निज़ामशाहसे शिकस्त खाकर अक्बरशाहके पास चला आया, जिसकी सलाहसे बादशाह अक्बरने खानेआज़म अज़ीज़कूकेको फ़ौज देकर दक्षिणकी तरफ़ भेजा; लेकिन दक्षिणियोंकी फ़ौज ज़ियादा होनेके कारण खानेआज़म दबकर गुजरातमें लौट आया.

हिज्री ९९३ [वि० १६४२ = ई० १५८५] में बदख़्शांका नव्वाब शाहरुख़ मिर्ज़ा, अब्दुल्लाखां उज़्बकके दबावसे बादशाह अक्बरके पास चलाआया और बादशाहने उसे पांचहज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया. इसी सालमें आंबेरके राजा भगवानदास कछवाहेकी बेटीके साथ शाहज़ादे सलीमकी शादी बड़ी धूमधामसे हुई. बादशाह राजाके घरपर बरात लेकर गया. इसी सालमें बूंदीके राव सुर्जणके बड़े बेटे दूदाका इन्तिक़ाल होगया.

हिज्री ९९४ [वि० १६४३ = ई० १५८६] में अक्बरशाहका भाई मिर्ज़ा हकीम काबुलकी जागीर छोड़कर दूसरे जहानको उठगया, जिसका बादशाहने बहुत रंज किया. बादशाह इस वर्षमें पंजाबकी तरफ़ गया और कुंवर मान-सिंह, मिर्ज़ा हकीमके दोनों बेटोंको काबुलसे रावलपिंडीमें बादशाहके पास लेआया.

हिज्री ९९५ [वि० १६४४ = ई० १५८७] में बादशाहने शाहरुख़ मिर्ज़ा और राजा भगवानदास वगैरह को कश्मीर लेनेके लिये भेजा और कूका ज़ैनखांको अफ़्ग़ानिस्तानमें स्वाद बाजौरकी तरफ़ रवाना किया, जहांके पठानोंने बादशाही फ़ौज को बड़ी शिकस्त दी और ज़ैनखांके साथी बड़े बड़े सर्दारोंको ८००० आदमियों समेत क़त्ल किया. कुंवर मानसिंहको काबुलकी क़िलेदारी देकर खैबरी लोगोंके ज़ेर करनेको भेजा.

इसी वर्षमें बीकानेरके राव रायसिंहकी बेटीकी शादी शाहज़ादे सलीमके साथ

राजाके मकानपर हुई और राजा बासू तंवर बादशाहके पाससे भागकर पंजाबके उत्तरी पहाड़ोंमें फ़साद करने लगा, लेकिन राजा टोडरमल्लके समझानेसे हाज़िर होकर बादशाही नौकर होगया. इसी वर्ष कश्मीरका इलाक़ा ख़ालिसेमें शामिल किया गया.

हिज्री ९९६ [वि० १६४५ = ई० १५८८] में राजा भगवानदासकी बेटीके गर्भसे मक़ाम लाहौरमें शाहज़ादे सलीमके बेटा पैदा हुआ, जिसका नाम सुल्तान ख़ुस्रौ रक्खागया. इसी साल कुंवर मानसिंहसे अफ़्ग़ानोंका मुक़ाबला हुआ और वह हारकर बंगशकी तरफ़ भागगया, तब बादशाहने ज़ैनख़ां कूकेको काबुलमें भेजकर मानसिंहको बिहारका सूबेदार बनाया. इसी वर्ष शाहज़ादे मुरादके एक बेटा पैदा हुआ जिसका नाम मिर्ज़ा रुस्तम् रक्खागया.

हिज्री ९९७ [वि० १६४६ = ई० १५८९] में बादशाहने कश्मीर और काबुलकी तरफ़ दौरा किया, और ख़बर मिली कि राजा भगवानदास और राजा टोडरमल्लका देहान्त हुआ. इन्हीं दिनोंमें कलांवत तानसेन मरगया, और यह भी ख़बर मिली कि अजमेरका सूबेदार राजा गोपाल जादव मरगया. शाहज़ादे सलीमके ख़्वाजह हसनकी बेटीसे शाहज़ादा पर्वेज़ पैदा हुआ.

हिज्री ९९८ [वि० १६४७ = ई० १५९०] में बिहार और उड़ीसाकी तरफ़ राजा मानसिंहने लड़ाइयों में फ़तह पाकर अच्छी कार्रवाइयां कीं. इसी सालमें ज़ैनख़ां कूका कश्मीरका फ़साद मिटानेके लिये भेजागया, और वह नीचे लिखे-हुए राजाओंको ताबे बनाकर बादशाहके पास लेआयाः—

राजा बुधचन्द, जम्बूका राजा परशुराम, मऊका ज़मींदार राजा बासू, राजा अनिरुद्ध जैसवाल, काम्लोरीका राजा सिख, राजा जग्दीशचन्द ग्वालियरी, राजा संसारचन्द दहवाला, राव प्रताप, राव भसौर, राव बलभद्र, राव दौलत, राव कृष्ण, राव नारायण और राव उदय. इन राजाओंके हुक्ममें आठ हज़ार सवार और एक लाख पैदल थे; इसी वर्ष क़न्धार ईरानियोंके क़ब्ज़ेसे लेलियागया.

हिज्री ९९९ [वि० १६४८ = ई० १५९१] में शाहज़ादे मुरादको मालवे की सूबेदारीपर जगन्नाथ कछ्वाहा, रामपुरेके राव सीसोदिया चन्द्रावत दुर्गभानु सहित भेजा, जो अपने सूबेसे ओरछेकी तरफ़ फ़साद सुनकर वहां पहुंचा; और राजा मधुकर-शाहको शिकस्त देकर पहाड़ोंमें भगादिया, जो उन्हीं दिनों पहाड़ोंमें मरगया, और उसका बेटा रामचन्द्र बादशाही नौकर हुआ. जाड़ेचा जाम और जूनागढ़के नव्वाब दौलतख़ांने मिलकर बग़ावत की, लेकिन अज़ीज़ कूकेने उन दोनोंको शिकस्त

देकर भगादिया; इसी साल अज़ीज़ कूकेने मुज़फ़्फ़रशाह गुजरातीपर फ़तह पाई, और उसके मददगार बहुतसे गुजराती राजपूत मारेगये, बाक़ी मुज़फ़्फ़रके साथ पहाड़ोंमें भागगये.

हिज्री १००० [वि० १६४८ = ई० १५९१] में सिन्धुका मुल्क ख़ालिसा किया गया, और वहांका सर्दार जानीबेग बादशाही ख़िदमतमें हाज़िर होगया; इसी वर्षमें मुज़फ़्फ़रशाह गुजरातीने क़ैद होकर उस्तरेसे खुद कुशी (आत्मघात) की, और तबक़ात अक्बरीका मुसन्निफ़ निज़ामुद्दीन बादशाही मीरबख़्शी हुआ.

हिज्री १००० ता० ३० रबीउल्अव्वल् [वि० १६४८ माघ शुक्ल २ = ई० १५९२ ता० १७ जैन्यूअरी] को जोधपुरके राजा उदयसिंहकी बेटी मानबाईके पेटसे शाहज़ादे सलीमके एक बेटा पैदा हुआ, अक्बरशाहने उसका नाम सुल्तानखुर्रम रक्खा, पीछे इस शाहज़ादेका पद (लक़ब) बादशाह जहांगीरने "शाहजहां" रक्खा था, सो इसके बादशाह होने पर भी यही लक़ब क़ायम रहा; जब इस शाहज़ादेका जन्म लाहौरमें हुआ, बादशाह अक्बर भी सिंधु और कश्मीरके झगड़े दूर करनेके इरादे पर वहीं मौजूद था.

हिज्री १००१ [वि० १६५० = ई० १५९३] में अहमदाबादके सूबेदार अज़ीज़ कूकेको डाढ़ी मुंड्वाना, सिज्दा करना वग़ैरह मुहम्मदी मज़्हबके बर्ख़िलाफ़ बातें नापसन्द हुईं, इस लिये बादशाहके तलब करनेपर बे इजाज़त वह मक्केको चलागया; बादशाहने सुल्तान मुरादको गुजरातकी सूबेदारी दी, और मिर्ज़ा शाहरुख़को मालवेकी निज़ामत इनायत की.

हिज्री १००२ मुहर्रम [वि० १६५० आश्विन = ई० १५९३ ऑक्टोबर] में दक्षिणके बादशाहोंको दबानेके लिये शाहज़ादा मुराद रवाना कियागया, और उसके साथ ७०००० फ़ौज समेत नीचे लिखेहुए सर्दार भेजेगये :—

मिर्ज़ा अब्दुर्रहीम ख़ानख़ानां, शाहबाज़ख़ां कम्बो, बीकानेरका राव रायसिंह, राजा जगन्नाथ कछवाहा, रामपुरेका राव दुर्गभान चन्द्रावत सीसोदिया, ओरछेका राजा रामचन्द्र गहरवार वग़ैरह.

इन्हीं दिनोंमें बादशाह लाहौर और कश्मीरकी तरफ़ गया; और तबक़ात-अक्बरीका बनानेवाला ख़्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद बख़्शी मरगया, जिसने अपने मरनेके वर्षतक हिन्दुस्तानकी तवारीख़ लिखी है. हमारे विचारसे दूसरे फ़ार्सी तवारीख़ लिखनेवाले लोगोंसे इसमें मज़्हबी व क़ौमी तअस्सुब कुछ कम है. हां अबुल्फ़ज़्ल भी बे तअस्सुब है लेकिन बादशाही खुशामद ज़ियादा करता है और उसकी तवारीख़ शाइरी के ढंगसे फैलावके साथ लिखी गई है. इसी वर्षमें शाहज़ादे सलीमको १० हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया, जिसमें पांच हज़ार राजपूत, चार हज़ार मुग़ल

और एक हज़ार अहदी थे; शहज़ादेके मातहत (फ़ौजी अफ़्सर) नीचे लिखेहुये लोग थे:-

जगत्सिंह कछवाहा, मिर्ज़ा मुहम्मदबाक़िर अन्सारी, मीर क़ासिम बदख़्शी, शक्तिसिंह, तख़्ताबेग, राव मनोहर कछवाहा और बहादुरख़ां वगैरह. इसी साल क़न्धारका हाकिम रुस्तम मिर्ज़ा जो बादशाह ईरानकी तरफ़से वहांका सूबेदार था, अपने बादशाहसे रंजीदा होकर बादशाह अक्बरके पास चलाआया, और क़िला क़न्धार बादशाही लोगोंके हवाले किया, जिसपर बादशाह अक्बरने मुल्तानकी सूबेदारी उसको दी.

हिज्री १००३ ता० १४ शव्वाल [वि० १६५२ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १५ = ई० १५९५ ता० १३ जून] में जोधपुरका राजा उदयसिंह दमेकी बीमारीसे मरगया और चार स्त्रियां उसके साथ सती हुईं. इन्हीं दिनोंमें हकीम हुमाम जो बड़ा आलिम् था मरगया, और इसी वर्षमें शहज़ादे मुरादके दक्षिणकी तरफ़ जानेके सबब अहमदाबाद की सूबेदारी जोधपुरके राजा सूरसिंहको मिली. बुर्हान निज़ामशाह अहमद-नगरवाला मरगया और उसका बेटा इब्राहीम निज़ामशाह भी बीजापुरके इब्राहीम आदिल्शाहसे लड़कर मारागया; तब निज़ामशाही सर्दार मंझूख़ांने अहमद नामी लड़केको निज़ाम बनाया. इसपर दूसरे सर्दारोंने मंझूख़ांसे झगड़ाकिया, तब उसने शहज़ादे मुरादको मददपर बुलाया लेकिन शहज़ादेके पहुंचनेपर मंझूख़ां अहमदशाह को लेकर बीजापुरके इलाक़ेमें चलागया और अहमदनगरमें चांद सुल्ताना बेगमको शाहज़ादेसे लड़ाई करनेके लिये छोड़ा.

हिज्री १००४ [वि० १६५२ = ई० १५९६] में शहज़ादे मुरादने लड़ाई होने बाद बरारका इलाक़ा लेकर सुलह करली और बालापुरके पास एक क़स्बा बसाकर वहां अपनी छावनी रक्खी.

हिज्री १००५ [वि० १६५३ = ई० १५९७] में निज़ामशाह, आदिल्शाह और कुतुबुल्मुल्क, तीनोंकी फ़ौजने एक होकर लड़ाईपर तय्यारी की. शाहज़ादे मुरादने भी नीचे लिखीहुई तर्तीबसे फ़ौज जमाकर मुक़ाबला किया:-

बीचकी फ़ौजमें मिर्ज़ा शाहरुख़, अब्दुर्रहीम ख़ान्ख़ानां, मिर्ज़ा अलीबेग, शैख़ दौलत, एतिबारख़ां, वफ़ादारख़ां, अफ़्ज़ल तोलक्ची, शेरअफ़्गन्, मीरशरीफ़ गीलानी मुहम्मदख़ां, क़ादिर कुली कूका, इस्लामख़ां, कुतुबुद्दीन, मीर तूफ़ान वगैरह; दाहिनी तरफ़ सय्यद क़ासिम् बारह, अबुल्फ़तह, हुसैनख़ां, शैख़ मुस्तफ़ा, आलमख़ां, केशवदास, शैख़ सालिह, शैख़ उस्मान् वगैरह; बाईं तरफ़ ख़ान्देशका नव्वाब राजेअलीख़ां अपनी फ़ौज समेत; हरावलमें जगन्नाथ कछवाहा, राव दुर्गभान सीसोदिया, राजसिंह, ओर्छेका

रामचन्द्र गहरवार, दूसरा केशवदास, सांवलदास, रायमल्ल, तीसरा केशवदास, जैसलमेर का रावल भीम, नारायणदास जाड़ेचा, (१) मनोहर जाड़ेचा, पृथ्वीराज, नरहरदास, कल्ला, शक्तिसिंह, मुल्तान भाटी, ठाकुरसी, भोजराज, परशुराम, शैख़ जमाल वग़ैरह. जब दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबला हुआ तो बड़ी लड़ाईके बाद दक्षिणियोंकी फ़ौज हारकर भागी जो क़रीब ६०००० के थी, और बादशाही २०००० फ़ौजने फ़तह पाई. इस लड़ाईमें बादशाही सर्दार नव्वाब राजेअलीख़ां फ़ारूक़ी, द्वारकादास, सय्यद जलाल, ओछेका राजा रामचन्द्र वग़ैरह मारेगये; राजा जगन्नाथ कछवाहा, राजसिंह, राव दुर्गभान चन्द्रावत आदिने अच्छी बहादुरी दिखलाई; बहुतसे दक्षिणियोंको मारा और ज़ख़्मी किया. इन्हीं दिनोंमें बहादुर, जो मुज़फ़्फ़रशाह गुजराती का बेटा था गुजरातके इलाक़ेमें उपद्रव करनेलगा, जिसकी जोधपुरके राजा सूरसिंहके साथ धँधूका मक़ामपर लड़ाई हुई; बहादुर शिकस्त खाकर भागगया. इसी वर्षमें बादशाहने कश्मीरकी तरफ़ दौरा किया, राव पितरदासकी कोशिशसे क़िला बांधू फ़तह हुआ, राजा मानसिंह कछवाहेका बेटा दुर्जनसिंह बंगालेके पठानोंकी लड़ाइयोंमें बहादुरीसे लड़कर मारागया.

हिज्री १००६ [वि० १६५४ = ई०१५९८] में जोधपुरके राजा उदयसिंहकी बेटी मानबाईके पेटसे शहज़ादे सलीमके एक लड़की पैदा हुई. शहज़ादे मुरादकी फ़ौजमें ख़ान्ख़ानां अब्दुर्रहीमसे सर्दारोंकी तक्रार हुई, जिससे बादशाहने ख़ान्ख़ानांको बुलाकर अबुल्फ़ज़्लको शहज़ादेके पास भेजा. इसने वहां जाकर परनाला और खेलना वग़ैरह क़िले फ़तह किये.

हिज्री १००७ [वि० १६५५ = ई० १५९९] में शहज़ादा मुराद ज़ियादा शराब पीनेके कारण बीमार होकर बरारके इलाक़े शाहपुरकी छावनीमें मरगया, जिससे बादशाहको बहुत रंज हुआ; शाहज़ादेकी लाश दिल्लीमें लाकर हुमायूं बादशाहके मक्बरे में गाड़ी गई और उसकी जगहपर शहज़ादा दान्याल, अब्दुर्रहीम ख़ान्ख़ानां समेत भेजागया.

हिज्री १००८ [वि० १६५६ = ई० १६००] में बादशाहने सुना कि दक्षिणियोंकी फ़ौजें एकट्ठी होकर ज़ोर पकड़ती जाती हैं, इसलिये आप उस तरफ़को रवाना हुआ और शहज़ादे सलीमको राजा मानसिंह समेत अजमेरमें छोड़कर हिदायत की कि महाराणा उदयपुरको धमकाता रहे. इन्हीं दिनोंमें राजा मानसिंहका बड़ा बेटा जगत्सिंह उसके एवज़ बंगालेकी सूबेदारीपर रवाना किया-

(१) यहदोनों, कच्छके राव खंगार जाड़ेचाके बेटे थे.

गया था, जो रास्तेमें मरगया; मानसिंहने उसके एवज़ अपने पोते महासिंहको भेजा. बादशाह अक्बरने आसीरका किला बहादुरख़ां फ़ारूक़ीसे लड़कर लेलिया. बादशाहकी धाय कूका अज़ीज़की मा मरगई, अक्बरने उसके जनाज़ेको थोड़ी दूरतक कन्धा दिया और डाढ़ी मूंछें मुंडवाईं, जिसकी पैरवी कई अमीरोंने भी की. इन्हीं दिनोंमें नासिकका इलाक़ा फ़तह हुआ; राजू हब्शीने फ़साद उठाना चाहा लेकिन वह शाहज़ादे दानयालके भेजेहुए राजा सूरसिंह और दौलतख़ां वगैरह के पहुंचनेसे भगगया.

हिज्री १००९ [वि० १६५७ = ई० १६००] में अहमदनगर फ़तह हुआ, इसी अर्सेमें शाहज़ादा सलीम जो अजमेरसे मेवाड़की तरफ़ धावा कररहा था, राजा मानसिंह वगैरह सर्दारोंके बहकानेसे बंगालेकी तरफ़ चलागया और उसने इलाहाबाद (प्रयाग) का इलाक़ा बंगाले समेत दबालिया, ख़फ़ीख़ां मुन्तख़बुल्लुबाबमें लिखता है कि अक्सर तवारीख़ लिखनेवाले लोग शाहज़ादेकी ख़ास बातोंको छोड़गये हैं. अस्लमें शाहज़ादे सलीमका मन्शा आगरेपर क़ब्ज़ा करलेनेका था क्योंकि बादशाह अक्बर, अबुल्फ़ज़्ल और शाहज़ादा दानयाल, तीनोंके दक्षिणमें होनेसे वह डरता था, वह आगरेमें अपनी दादी हमीदा बानूके मौजूद होनेसे नहीं गया और इलाहाबाद वगैरह पर क़ब्ज़ा करलिया; अक्बरने भी अहमदनगर, बरार, आसीर और बुर्हानपुर शाहज़ादे दानयालको जागीरमें देकर ख़ानगी मुल्की फ़सादोंके कारण आगरेकी तरफ़ कूच किया, और दक्षिणकी लड़ाइयोंका काम अबुल्फ़ज़्लके भरोसेपर छोड़ा. दक्षिणियोंसे लड़ाई होनेपर ख़ानख़ानां अब्दुर्रहीमने अबुल्फ़ज़्लकी मन्शाके बर्ख़िलाफ़ सुलह करली, क्योंकि बड़े शाहज़ादेके फ़सादसे बादशाही मदद मिलनेकी उम्मेद न थी.

हिज्री १०१० [वि० १६५८ = ई० १६०१] में शाहज़ादे सलीमने इलाहाबादमें तीस हज़ारसे ज़ियादा सवार एकट्ठे करके आगरेकी तरफ़ कूच किया, लेकिन बादशाहके मुहब्बतसे भरेहुए कोमल शब्दोंके फ़र्मानके पहुंचनेपर शाहज़ादा इटावेसे इलाहाबादको लौटगया; पीछेसे बादशाहने बंगाला भी शाहज़ादेको जागीरमें लिख भेजा.

हिज्री १०११ पहिली रबीउल्अव्वल् [वि० १६५९ भाद्रपद शुक्ल ३ = ई० १६०२ ता० २१ ऑगस्ट] में शैख़ अबुल्फ़ज़्लको दक्षिणसे बादशाहने बुलाया, यह ख़बर सुनकर शाहज़ादा सलीम घबराया और राजा नरसिंहदेव बुंदेलेको भेजकर ग्वालियरके पास अबुल्फ़ज़्लको मरवाडाला. बादशाहको अबुल्फ़ज़्लके मरनेका अधिक रंज हुआ, और राजा रामचंद्र बुंदेले आदिको हुक्म

दिया कि राजा नरसिंहदेवको क़त्ल करो या पकड़लाओ; लेकिन वह हाथ न आया, इस क़त्लके इनआममें शाहज़ादे सलीमने तख़्तपर बैठनेके बाद राजा नरसिंहदेवको एक मन्दिर केशवरायका मथुरामें बनानेकी आज्ञा दी, जिसको राजाने ३६०००० छत्तीस लाख रुपये लगाकर बनवाया.

बादशाह अक्बरने अपनी बेगम सलीमा सुल्तानको इलाहाबाद भेजकर सलीमको बुलाया. शाहज़ादा सलीम अपनी सौतेली मा (१) की नसीहतसे आगरेको रवाना हुआ, लेकिन डरता था, इसलिये अपनी दादी हमीदा बानूके साथ बादशाहके पास जानेकी ख़्वाहिश की. उसकी इच्छाके मुवाफ़िक़ हमीदाबानू लेआई और दोनोंको मिलादिया; शाहज़ादेने बारह हज़ार मुहर और ९७७ हाथी बादशाहको नज़्र दिये, बादशाहने अपनी पगड़ी उतारकर शाहज़ादेके सिरपर रखदी.

फिर शाहज़ादेको बादशाहने मेवाड़पर भेजनेको तय्यार किया (२) लेकिन् वह फ़तहपुरमें ठहरकर जंगी सामान दुरुस्तीके साथ न मिलनेकी शिकायत करनेलगा, तब बादशाहने उसको इलाहाबाद जानेकी आज्ञा दी जिससे वह उस तरफ़ चलागया.

हिज्री १०१२ [वि० १६६० = ई० १६०३] में राजा भगवानदासकी बेटी शाहज़ादे सलीमकी बड़ी बेगम अफ़ीम खाकर मरगई, क्योंकि उसका बेटा ख़ुस्रौ अक्बरशाहके पास अपने बाप सुल्तान सलीमकी हमेशा बुराइयां किया करता था, इस लज्जासे उसने आप घात किया, शाहज़ादे सलीमको उसके मरनेसे अधिक रंजहुआ.

शाहज़ादे सलीमका वाक़िआनवीस (इतिहास लेखक) एक ख़वासपर आशिक़ था और वह ख़वास दूसरे नौकर पर, इन तीनोंने भागकर दक्षिणमें शाहज़ादे दान्यालके पास जाना चाहा; लेकिन वे गिरिफ़्तार होकर सलीमकेपास लायेगये, वाक़िआनवीसको तो खाल खिंचवाकर मरवाडाला, ख़िदमतगारको ख़ोजा बनाया और ख़वासको बेतों (बेदों) से पिटवाया. यह बात सुनकर बादशाह अक्बरने बहुत रंज किया और कहा कि हमनेतमाम उम्रमें किसी बकरीकी भी खाल नहीं खिंचवाई, लेकिन हमारे बेटे ऐसे पैदा हुए कि आदमियोंकी खाल खिंचवाकर बेरहमीसे मारते हैं. शाहज़ादेको अपने पास लानेके लिये आप बादशाह आगरेसे इलाहाबादको रवाना हुआ, लेकिन अपनी

---

(१) इसने सलीमको बेटेके समान पर्वरिशकिया था.

(२) इसके साथ राजा जगन्नाथ, रायसिंह, माधवसिंह, राय दुर्गा, राय भोज, हाशिमख़ां, क़राबेगख़ां, इफ़्तिख़ारबेग, राजा विक्रमादित्य, राजा उदयसिंह जोधपुर वालेका बेटा दलीप, ख़्वाजा हिसार, राजा शालिबाहन, मिर्ज़ा यूसुफ़ख़ांका बेटा लश्करी, शाहक़ुली और शाहबेग वग़ैरा थे.

मा हमीदाबानूकी ज़ियादा बीमारीके कारण पीछे लौटआया, हमीदाबानू ज़ियादा बीमार होकर हिज्री १०१३ ता० ७ जमादियुल्अव्वल् [वि० १६६१ आश्विन शुक्क ९ = ई० १६०४ ता० ४ ऑक्टोबर] को मरगई. बादशाहको बहुत रंज हुआ; अपनी माके जनाज़ेको कन्धा देकर दिल्ली भेजा और हुमायूंशाहके मक्बरेमें दफ़्न कराया, बादशाह ने अपनी और अपने अमीरोंकी डाढ़ी मूछें मुंडवाईं. इसी वर्षमें दान्यालका बेटा बायसग़र पैदा हुआ; शाहज़ादा सलीम भी हमीदाबानूके मरने और अपने बापके इरादे और रवानगीकी ख़बर सुनकर आगरे चलाआया. बादशाहने उसको तसल्ली देकर अपनी निगरानीमें रक्खा, लेकिन पीछे उसको उसकी हवेलीमें भेजदिया. इसी वर्ष कश्मीरमें फ़साद उठा लेकिन जल्द मिटादिया गया. राजा मानसिंह कछवाहेको बंगालेसे बुलवाया, क्योंकि बादशाहका इरादा था कि शाहज़ादा सलीम और राजा मानसिंह तूरानका देश फ़तह करनेको भेजेजावें, लेकिन बीमारीके सबब यह कार्रवाई बन्द रही.

हिज्री १०१३ [वि० १६६१ = ई० १६०४] में ओर्छा फ़तह हुआ और राजा नरसिंहदेव पहाड़ोंमें भागगया. इसी सालकी २८ शव्वाल [चैत्र कृष्ण १४ = ई० १६०५ ता० ८ मार्च] को बुर्हानपुरमें शाहज़ादा दान्याल बहुत शराब पीनेके सबब मरगया, उसके ३ बेटे और ४ बेटियां बाक़ी रहीं, जिनके नाम नीचे लिखे हैं—

बेटे—	बेटियां—
१ तहमूर्स	१ सआदत्बानू
२ होशंग	२ बुलाक़ी बेगम
३ बायसग़र	३ बाई बेगम
	४ बुर्हान बेगम

बादशाहने हिज्री १०१४ [वि० १६६२ = ई० १६०५] में अपने पोते, शाहज़ादे खुस्रोको दस हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया, और राजा मानसिंह सात हज़ारी ज़ात और छः हज़ार सवारका मन्सब पाकर सुल्तान खुस्रोका मददगार बनाया गया.

इसी वर्षकी १८ जमादियुल्अव्वल [मुताबिक़ कार्तिक कृष्ण ४ = ता० १ ऑक्टोबर] में बादशाह अक्बरको दस्तकी बीमारी हुई और कुछ बुख़ार भी आनेलगा. हकीमोंने बहुतसा इलाज किया परन्तु कुछ भी सिहत न हुई. आख़िरकार इसी सालकी १३ जमादियुस्सानी [कार्तिक शुक्क १४ = ता० २६ ऑक्टोबर] बुधवारकी रातको बादशाहका देहान्त होगया.

इस बादशाहके तीन बेटे और तीन बेटियोंमेंसे एक शाहज़ादा सलीम और तीन

बेटियां बाक़ी रहीं. उसने ख़ज़ानेमें दस किरोड़ रुपये नक्द, दस मन सोना, सत्तर मन चांदी और बहुतसा जवाहिर छोड़ा था; उसकी पायगाहमें ख़ासे ६००० छः हज़ार हाथी और बारह हज़ार घोड़े थे, शिकारी चीते एक हज़ार और हिरण ५००० गिने जाते थे; अबुल्फ़ज़्ल इस बादशाहके ज़नानख़ानेकी पांच हज़ार औरतें आईन अक्बरीमें लिखता है और हरएक बेगमकी तनख़्वाह सात व आठसौ रुपये माहवारीसे लेकर सोलहसौ रुपये तक; और हरएक ख़्वासकी तनख़्वाह २० रुपयेसे लेकर ५१ रुपये तक बयान करता है.

यह बादशाह अपने ख़यालसे तो एकके सिवाय दूसरी औरतके साथ शादी करना बुरा जानता था, परन्तु उसका यह नेक ख़याल ४० वर्षकी उम्रके बाद हुआ, वर्ना शायद इतनी बेगमें नहीं करता. मौलवी अब्दुल्क़ादिर अपनी किताब 'मुन्तख़बुत्तवारीख़' में हिज्री ९९५ [वि० १६४४ = ई० १५८७] के बयानमें लिखता है कि "बादशाहने यह हुक्म जारी किया कि कोई भी एक विवाहके सिवाय दूसरी औरत न करने पावे."

इस बादशाहमें नेक आदतें ज़ियादा और बुरी बहुत ही कम निकलेंगी; इसका एतिक़ाद ४० वर्षकी उम्रके पहिले ज़ईफ़ था लेकिन पीछे बहुत दुरुस्त होगया. वह सब मज़्हबोंको एकसा समझता था. मौलवी अब्दुल्क़ादिर बदायूनीने मज़्हबी तअ़स्सुबसे ज़ियादा हिक़ारतके साथ उस बादशाहके ऐब छांटे हैं, जिनके देखनेसे पढ़नेवालोंको वेही उसके गुण मालूम होंगे. यह मौलवी मुहम्मदी मज़्हबका बड़ा पक्षपाती और भद्दे ख़यालका आदमी था और इसने बादशाहकी निस्बत मुन्तख़बुत्तवारीख़के एष्ठ २२० से २२४ तक में जो हाल लिखाहै, वह नीचे बयान कियाजाता है:—

"हिज्री ९८६ [वि० १६३५ = ई० १५७८] में अब्दुल्क़ादिरने एक किताब, जिसका नाम 'किताबुल् अहादीस' है फ़तहपुरमें बादशाहको नज़्र कीथी, जो कुतबख़ाने में दाख़िल कीगई.

बादशाह अक्बर आलिम और बुज़ुर्ग लोगोंकी सुहबतमें अपना वक़्त ख़र्च करता रहा, बड़ी छोटी कुल बातें निश्चय (तहक़ीक़) करनेका ख़याल रखता था. आलिमोंने आपसकी दुश्मनी और ज़िद्दसे एक दूसरेको काफ़िर और गुमराह कहना शुरू किया; यह झगड़ा सुन्नी, शीआ, सूफ़ी और हकीमोंसे गुज़रकर सारा मुआमिला बिगड़गया और कई वर्षमें मज़्हबका कुछ भी निशान बाक़ी न रहा.

इस तरहपर कई वर्षमें हर मुल्क, हर क़ौम और हर मज़्हबके होश्यार लोग दर्बारमें एकट्ठे होते गये, जिनको बादशाहसे हरतरहकी बातें करना नसीब होगया. बादशाह हमेशा रात दिनकी तलाश और फ़िक्रसे, जिसके सिवाय दूसरे काम कम होते थे, इल्म और हिक्मतकी बारीक और गहरी बातें, जिनके लिये कई दफ़्तर

चाहियें, ज़िह्न नशीन करता जाता था; जो कुछ पसन्द आता था हरएक आदमीसे चाहे किसी मज़्हबका हो चुन लेता और हरएक ना पसन्द चीज़से पर्हेज़ रखता था.

लड़कपनसे शुरू जवानी और जवानीसे आख़िर जवानी तक कई हालतें बदलती रहीं, हरएक मज़्हबकी सब बातें सुनने और अपनी अक़्के सोचनेसे एक जदी कैफ़ियत पैदा होगई, जोकि किताबोंमें नहीं पाई जाती है.

तमाम सूरतवाली चीज़ोंके लिये एक मादेका होना तबीअतमें जमगया, और यह बात पक्की मानली कि अक़्मन्द लोग तमाम मज़्हबोंमें मौजूद हैं और मिहनती व इबादत करनेवाले हर गिरोहमें पैदा होते हैं.

नेकी और सच्च हर जगह पाया जासक्ता है, एक मज़्हब या क़ौममें उसके लिये क़ैद नहीं है, क्योंकि हरएक नये और पुराने मज़्हबके बर्ख़िलाफ़ दूसरे बहुतसे मज़्हब होते हैं, सबको बे दलील बुरा जानकर एकको बड़ा समझलेना अक़्के ख़िलाफ़ है.

कुछ अर्से तक ब्राह्मणोंपर तवज्जुह होगई थी. फिर मुसल्मानोंके तसव्वुफ़ याने वेदान्तपर दिल लगाया गया.

ईरानियोंकी सुहबतसे राफ़िज़ीपनको अच्छा जानलिया था, फ़रंगियोंके बुज़ुर्ग याने पाद्रियोंकी हाज़िरीसे 'इन्जील' तर्जुमा कराकर सुनीगई; सूरजको नाज, मेवा और दरस्त पैदा होनेका बड़ा सबब जानकर ताज़ीमके लायक़ समझा.

गुजरातकी तरफ़से मजूसी याने पार्सियोंने हाज़िर होकर ज़र्दुश्ती बातें बयान कीं, जिससे महलके क़रीब आतिश्कदा (अग्निस्थान) बनानेकी इजाज़त दी.

राजाओंकी बेटियोंके साथ महलमें होम कियेजाते थे, सूरज और आगको भी सिज्दा कियाजाता था मुसल्मानोंके बर्ख़िलाफ़ बहुतसी बातें रिवाजमें करली थीं, जिनका कुछ ठिकाना नहीं है.

अबुल्फ़ज़्ल बहुतसी दहरिया (नास्तिकी) बातें, जो किसी मज़्हबकी न हों, बनाता था, जिसके मुक़ाबलेपर किसीको बोलनेकी ताक़त न थी. लाचार मैं (अब्दुल्क़ादिर) ने दर्बारसे अलहदगी इख़्तियार की, जिसके एवज़ बेइज़्ज़त रहना पड़ा; लेकिन ख़ुदाका शुक्र है कि मैं इस हालमें ही ख़ुशहूं".

पृष्ठ २२७-

"हिज्री ९८७ [वि० १६३६ = ई० १५७९] में बादशाह आख़िरी दफ़ा अजमेरको ज़ियारतके लिये गये; शहरके पास पहुंचकर हँसीसे कहते थे कि ख़्वाजह के मुवाफ़िक़ ज़मीन पर हज़ारों वली हुए हैं.

कुछ दिनोंमें करामातकी बातों, जिन्न और फ़रिश्तोंके होनेसे साफ़

इन्कार करने लगे, बल्कि मौतके बाद रूहका बाक़ी रहना भी मुश्किल् समझते थे".

पृष्ठ २३८ से २४० तक-

"हिजी ९९० [वि० १६३९ = ई० १५८२] में बीमारी वग़ैरह ज़ुरूरत के लिये शराब पीना ठीक समझा गया और एक कलालकी दूकान क़ायम की गई, कि शराब लेजाने वालोंका नाम लिखलिया करे; अगर कोई ज़ियादा पीकर फ़साद करे तो उसे सज़ा दीजावे.

बाज़ारी औरतें जो राजधानीमें एकट्ठी होगई थीं उनको शहरसे बाहर बसा कर उनके महल्लेका नाम 'शैतानपुरा' रखदिया और वहां भी एक दारोग़ा मुक़र्रर किया, जिसका यह काम था कि वहां आने जाने वालोंके नाम लिखलिया करे. जब कोई बड़ा सर्दार ऐसे काममें शरीक दर्याफ़्त होता तो उसको क़ैद करते थे.

एक बार बीरबलका नाम मालूम हुआ, और उसके नाम जागीरसे हाज़िरीका फ़र्मान गया, वह जोगी बनना चाहता था कि उसका क़ुसूर मुआफ़ करदिया गया.

राजाओंकी बेटियें जो बहुतसी महलमें दाखिल होगई थीं उनके बहकानेसे, गाय का गोश्त, पियाज़, लहसन खानेसे पर्हेज़ किया और डाढ़ीका मुंडवाना बिहतर समझा.

ख़ास मुसाहिबोंसे इक़ार लियाजाता था कि बादशाहके वास्ते जान, माल, इज़त, मज़्हब, फ़िदा (न्यौछावर) करनेमें कभी कोताही न होगी, इसका नाम 'चारतर्क' (चार चीज़ें-छोड़ना) था.

आदमीके मरनेपर खाना पकाना बिल्कुल फ़ुज़ूल सम्झा गया. मामा और चाचाकी बेटियोंसे विवाह करना बुरा सम्झा क्योंकि ख़्वाहिश कम होती है, इसी तरह लड़के के लिये सोलह वर्ष और लड़कीके लिये चौदह वर्षसे कम उम्रमें विवाह करना मना करदिया क्योंकि ऐसा करनेसे औलाद कम्ज़ोर होती है.

मर्दोंके लिये सोना और रेशम पहरना मामूली बात होगई.

मज़्हबी अरबी किताबें पढ़ना बन्द और हिक्मत, तवारीख़, शेर, हिसाब वग़ैरह सीखना ज़ुरूर होगया".

पृष्ठ २४३--

"मुहम्मद, मुस्तफ़ा वग़ैरह अरबी नाम छोड़कर तुर्की शब्द पसन्द कियेगये, लेकिन् यह भी मुनासिब था कि नालायक़ लोग अच्छे नामसे न पुकारे जाएं".

पृष्ठ २४६--

"हिजी ९९१ [वि० १६४० = ई० १५८३] में कई घटनाएं हुईं- रविवार के दिन तमाम मुल्कमें जानवर मारना मना करदिया गया और अपनी पैदाइशके महीनेमें भी यही हुक्म दिया".

छः महीनेसे ज़ियादा तक आप भी गोश्त नहीं खाते थे और ऐसा इरादा था कि धीरे धीरे बिल्कुल गोश्त खाना छोड़ दियाजावे.

मस्जिद और मन्दिरोंमें फ़र्राशख़ाने और चौकीख़ाने नज़र आते थे, शहरके अन्दर क़ब्र बनाना मना था.

शहरके बाहर दो महल बनवायेगये, जिनमेंसे हिन्दू और मुसल्मान फ़क़ीरोंको खाना दियाजाता था; इन मकानों में से एकका नाम "ख़ैरपुरा" और दूसरेका "धर्मपुरा" रक्खा गया".

"हिज्री ९९२ [वि० १६४१ = ई० १५८४] में गुम्बदकी शक्का ख़ेमा जो फ़रंगियोंका बनाया हुआ है जश्नके लिये खड़ा कियागया, ख़ास मुसाहिबोंको बादशाहकी तस्वीरें मिलीं, कि सोने और जवाहिरमें जड़वाकर पगड़ीपर बांधा करें".

पृष्ठ २५३—

"हिज्री ९९२ [वि० १६४१ = ई० १५८४] में अपने जारी कियेहुए क़ायदेके मुवाफ़िक़ सोलह वर्षकी उम्रमें बड़े शाहज़ादे सलीमका विवाह राजा भगवानदासकी बेटीके साथकिया".

पृष्ठ २५८ —

"हिज्री ९९५ [वि० १६४४ = ई० १५८७] में यह घड़न्त हुई, कि हर आदमी एक औरतसे ज़ियादा विवाह न करे, लेकिन् उस सूरतमें करसक्ता है कि औरत बांझ हो"'

विधवा औरतें अगर विवाह करना चाहें तो कोई उनको न रोके, परन्तु चालीस वर्षसे ज़ियादा उम्रमें ऐसा न कियाजावे.

हिन्दू मुर्देके साथ कोई औरत ज़बर्दस्तीसे सती न कीजायाकरे, और कम उम्रवाली जो स्वामी (ख़ाविन्द) के पास नगई हो उसको सती होनेसे ज़बर्दस्ती रोकाजावे. इसके बर्ख़िलाफ़ करनेवाले, ज़ातसे बाहर निकाले जावेंगे".

पृष्ठ २६६—

"हिज्री ९९९ [वि० १६४८ = ई० १५९१] में भैंस, भेड़, घोड़े और ऊंटका गोश्त खाना हराम कियागया, कई कई भांति (मुख़्तलिफ़ क़िस्म) के रुपये और अशर्फ़ियोंको गलवाकर चांदी सोनेके भावमें बेचनेका हुक्म दिया, एक वज़्नका रुपया और अशर्फ़ी जारी हुई"—

पृष्ठ २६६—

हमारी रायमें बादशाहने कई क़ायदे अच्छे अच्छे ज़ारी किये थे.

शैख़ अबुल्फ़ज़्ल और राजा टोडरमल्लने मालका इन्तिज़ाम बहुत उम्दा

किया था, उन्होंने पटैल पटवारी और क़ानूंगो, हरएक गांवमें मुक़र्रर करदिये. हर जगह पर फ़ौज्दारी और दीवानीका इन्तिज़ाम भी अच्छा किया.

इज़्ज़तदार अमीरोंके लिये मन्सब, जो पहिले बादशाहोंके वक्तमें एक ख़िताबी नाम गिने जाते थे; इस बादशाहने उनको क़ायदेके साथ जारी किया.

(१) माही मरातिबका बयान—

[स्लीमन् साहिबकी किताबकी पहिली जिल्दके पृष्ठ १७८ से लिखा जाता है]

जब ईरानके बादशाह नौशीरवांका पोता "खुस्रौ पर्वेज़" ईरानसे निकाला गया और उसने यूनानमें जाकर "शीरीं" नाम एक शाहज़ादीसे शादी करके अपनी ससुराल की फ़ौजी मददसे ईसवी ५९१ [= वि० ६४८] में ईरानको फिर फ़तह किया, तो उस वक्त 'चाँद' मीन राशि यानी 'माही' बुर्जमें था, उसने अपने ज्योतिषीके कहनेके मुवाफ़िक़ एक तो चांद और दूसरी मच्छीकी शक्ल बनवाकर अपने सर्दारोंको इज़्ज़तके लिये दी. इस बातके बहुत अर्से बाद दूसरा बादशाह सिंह राशि यानी चाँदके शेर बुर्जमें होनेके वक्त ईरानकी गद्दीपर बैठा. उसने एक तरफ़ शेरका सिर, दूसरी तरफ़ चाँद और बीचमें मच्छीकी शक्ल बनाकर अपने सर्दारों को इज़्ज़तके तौर दी. जब मुग़्लोंने हिन्दुस्तानको फ़तह किया तो ईरानके पड़ोसी होनेके कारण "माही मरातिब" की रस्म इन लोगोंने यहां भी जारी की.

मन्सबका बयान.

अबुल्फ़ज़्ल अपनी किताब आईनअक्बरीकी पहिली जिल्दके १४० पृष्ठमें लिखता है—कि बादशाहने इन्तिज़ामके लिये दससे लेकर दसहज़ार तक मन्सब जारी किये.

पांच हज़ारीसे कम मन्सब नौकरोंके लिये, और इससे ज़ियादा दसहज़ारी तक शाहज़ादोंके लिये थे.

जब मन्सबमें ज़ातकी बराबर सवार हों तो अव्वल दरजेका मन्सबदार उसी तादादी मन्सबमें गिना जावेगा. मन्सबमें ज़ातसेआधे तक सवार हों तो दूसरे दरजेमें शुमार होगा, और मन्सबमें ज़ातसे आधेसे भी कम सवार हों तो तीसरे दरजेका मन्सबदार होगा. मन्सबका पूरा हाल उस नक्शेसे समझना चाहिये जो यहां लिखाजाताहै:—

(१) "माही" का अर्थ मछली और चाँद वाली चीज़का है.

मन्सबदारोंके क़ायदेका नक्शा.

मन्सब	घोड़े							हाथी						बारबर्दारी				कुल मीज़ान	माहवारी तन्ख़्वाह		
	इराक़ी	मुजन्नह	तुर्की	यबू	ताज़ी	जंगला	मीज़ान	शेरगीर	सादा	मंझोला	करहा	फंदुरकिया	मीज़ान	ऊंट	खच्चर	गाड़ी	मीज़ान		अव्वल दरजेकी	दूसरे दरजेकी	तीसरे दरजेकी
दसहज़ारी	६८	६८	१३६	१३६	१३६	१३६	६८०	४०	६०	४०	४०	२०	२००	१६०	४०	३२०	५२०	१४००	६०००० रु०	०	०
आठहज़ारी	५४	५४	१०८	१०८	१०८	१०८	५४०	३५	५०	३६	३४	१५	१७०	१३०	३४	२६०	४२४	११३४	५०००० रु०	०	०
सातहज़ारी	४९	४९	९८	९८	६८	६८	४३०	३०	४२	२७	२७	१२	१३८	११०	२७	२२०	३५७	८२५	४५००० रु०	०	०
पांचहज़ारी	३४	३४	६८	६८	६७	६६	३३७	२०	३०	२०	२०	१०	१००	८०	२०	१६०	२६०	६९७	३०००० रु०	२९००० रु०	२८००० रु०
चारहज़ार नौसो	३३	३३	६७	६७	६६	६५	३३१	२०	३०	१९	१९	१०	९८	७८	१९ व ४	१५७	२५८	६८७	२७६०० रु०	२७४०० रु०	२७३०० रु०
चारहज़ार आठसो	३२	३२	६६	६६	६५	६५	३२६	२०	२९	१९	१९	९	९६	७७	१९ व २	१५२	२५०	६७२	२७००० रु०	२६८०० रु०	२६७०० रु०
चारहज़ार सातसो	३१	३१	६५	६५	६३	६३	३१८	१९	२९	१९	१८	९	९४	७५	१९ व १	१५१	२४६	६५८	२६८०० रु०	२६६०० रु०	२६५०० रु०
चारहज़ार छ : सो	३१	३१	६३	६३	६२	६२	३१२	१८	२८	१९	१८	९	९२	७४	१८ त ४	१४८	२४४	६४८	२६४०० रु०	२६२०० रु०	२६१०० रु०
चारहज़ार पांचसो	३१	३०	६१	६१	६१	६१	३०५	१८	२८	१९	१७	८	९०	७२ व ३	१८ व ३	१४५	२४१	६३६	२६००० रु०	२५८०० रु०	२५७०० रु०
चारहज़ार चारसो	३०	२९	६०	६०	५९	५९	२९७	१८	२८	१९	१६	७	८८	७१	१८ व १	१४२	२३२	६१७	२५२०० रु०	२५००० रु०	२४८०० रु०
चारहज़ार तीनसो	२९	२८	५९	५९	५८	५८	२९१	१७	२७	१९	१६	७	८६	६९ व ३	१८	१३९	२२९	६०६	२४४०० रु०	२४२०० रु०	२४००० रु०
चारहज़ार दोसो	२८	२७	५८	५८	५७	५६	२८४	१६	२६	१९	१६	७	८४	६८	१७ व ३	१३६	२२४	५९२	२३९०० रु०	२३४०० रु०	२३२०० रु०
चारहज़ार यकसो	२७	२७	५६	५६	५६	५५	२७७	१६	२६	१८	१६	६	८२	६८	१७ व २	१३३	२२०	५७९	२२८०० रु०	२२४०० रु०	२२२०० रु०
चारहज़ारी	२७	२७	५४	५४	५४	५४	२७०	१६	२५	१८	१५	६	८०	६५	१७	१३०	२१२	५६२	२२००० रु०	२१८०० रु०	२१६०० रु०
तीनहज़ार नौसो	२६	२६	५३	५३	५३	५२	२६३	१६	२४	१८	१५	६	७९	६३ व ३	१६ व ४	१२७	२१३	५५५	२१४०० रु०	२१२०० रु०	२११०० रु०
तीनहज़ार आठसो	२६	२६	५१	५१	५१	५१	२५६	१६	२३	१८	१५	६	७८	६२	१६ व २	१२४	२०४	५३८	२०८०० रु०	२०६०० रु०	२०५०० रु०
तीन ह० सातसो	२५	२५	५०	५०	५०	४९	२४९	१६	२३	१७	१५	६	७७	६० व ३	१६ व १	१२१	२०१	५२७	२०२०० रु०	२०००० रु०	१९९०० रु०

मन्सबदारोंके क़ायदेका नक़्शा.

मन्सब	घोड़े							हाथी						बारबर्दारी				कुल मीज़ान	माहवारी तन्ख़्वाह		
	इराक़ी	येगान	तुर्की	टट्टू	ताज़ी	जंगला	मीज़ान	शेरगीर	सादः	मंझोला	करहा	फंदुरकिया	मीज़ान	ऊंट	खच्चर	गाड़ी	मीज़ान		अव्वल दरजेकी	दूसरे दरजेकी	तीसरे दरजेकी
तीनहज़ार छः सौ	२५	२५	४९	४८	४८	४७	२४२	१६	२३	१७	१४	६	७६	५९	१५ व ४	११८	१९६	५१४	१९६०० रु०	१९४०० रु०	१९३०० रु०
तीनहज़ारी पांचसौ	२४	२४	४७	४७	४७	४६	२३५	१६	२३	१७	१४	५	७५	५७ व३	१५ व३	११५	१९३	५०३	१९००० रु०	१८८०० रु०	१८७०० रु०
तीनहज़ार चारसौ	२३	२३	४६	४६	४६	४४	२२८	१६	२२	१७	१४	५	७४	५६	१५ व१	११२	१८४	४८६	१८६०० रु०	१८४०० रु०	१८३०० रु०
तीनहज़ार तीनसौ	२२	२२	४५	४५	४४	४३	२२१	१५	२२	१७	१४	५	७३	५४ व३	१५	१०९	१८१	४७५	१८२०० रु०	१८००० रु०	१७९०० रु०
तीनहज़ार दोसौ	२१	२१	४४	४४	४२	४२	२१४	१५	२१	१७	१४	५	७२	५३	१४ व३	१०६	१७६	४६२	१७८०० रु०	१७६०० रु०	१७५०० रु०
तीनहज़ार यकसौ	२०	२०	४३	४३	४१	४०	२०७	१५	२०	१७	१४	५	७१	५१ व३	१४ व२	१०३	१७३	४५१	१७४०० रु०	१७२०० रु०	१७१०० रु०
तीनहज़ारी	२०	२०	४०	४०	४०	४०	२००	१५	२०	१६	१४	५	७०	५०	१४	१००	१६४	४३४	१७००० रु०	१६८०० रु०	१६७०० रु०
दोहज़ार नौसौ	१९	१९	३९	३–	३९	३९	१९४	१५	१९	१६	१३	४	६७	४८	१३ व१	९६	१५८	४१९	१६४०० रु०	१६२०० रु०	१६१०० रु०
दोहज़ार आठसौ	१८	१८	३८	३८	३८	३८	१८८	१५	१८	१४	१२	३	६२	४६	१२ व२	९२	१५२	४०२	१५८०० रु०	१५६०० रु०	१५५०० रु०
दोहज़ार सातसौ	१७	१७	३७	३७	३७	३७	१८२	१४	१७	१३	११	३	५८	४४	११ व३	८८	१४६	३८६	१५२०० रु०	१५००० रु०	१४९०० रु०
दोहज़ार छः सौ	१७	१७	३६	३६	३५	३५	१७६	१३	१५	१२	११	३	५४	४२	१० व४	८४	१४०	३७०	१४६०० रु०	१४४०० रु०	१४३०० रु०
दोहज़ार पांचसौ	१७	१७	३४	३४	३४	३४	१७०	१२	१४	१२	१०	२	५०	४०	१०	८०	१३०	३५०	१४००० रु०	१३८०० रु०	१३७०० रु०
दोहज़ार चारसौ	१७	१७	३३	३३	३३	३३	१६६	१२	१३	११	१०	२	४८	३८	९व२	७६	१२५	३३९	१३६०० रु०	१३४०० रु०	१३३०० रु०
दोहज़ार तीनसौ	१६	१६	३३	३३	३२	३२	१६२	१२	१२	१०	१०	२	४६	३६	८व४	७२	१२०	३२८	१३२०० रु०	१३००० रु०	१२९०० रु०
दोहज़ार दोसौ	१६	१६	३२	३२	३१	३१	१५८	११	१२	९	९	२	४३	३४	८व१	६८	१११	३१२	१२८०० रु०	१२६०० रु०	१२५०० रु०
दोहज़ार यकसौ	१५	१५	३१	३१	३१	३१	१५४	१०	१२	९	९	२	४२	३२	७व३	६४	१०६	३०२	१२४०० रु०	१२२०० रु०	१२१०० रु०
दोहज़ारी	१५	१५	३०	३०	३०	३०	१५०	१०	१२	९	७	२	४०	३०	७	६०	९७	२८७	१२००० रु०	११९०० रु०	११८०० रु०

मन्सबदारोंके क़ायदेका नक्शा.

मन्सब	घोड़े							हाथी						बारबर्दारी				कुल मीज़ान	माहवारी तनख्वाह		
	इराक़ी	दोग़ले	तुर्की	टट्टू	ताज़ी	जंगला	मीज़ान	शेरगीर	सादा	मंझोला	करहा	फंदूकिया	मीज़ान	ऊंट	खच्चर	गाड़ी	मीज़ान		अव्वल दरजेकी	दूसरे दरजेकी	तीसरे दरजेकी
यकहज़ार नौसौ	१४	१४	२९	२९	२९	३०	१४५	१०	१२	९	७	२	४०	२८ व४	६ व३	५८	९९	२८४	११७५० रु०	११६५० रु०	११४५० रु०
यकहज़ार आठसौ	१४	१३	२८	२८	२८	२९	१४०	१०	११	९	७	२	३९	२७ व३	६ व१	५६	९३	२७२	११४०० रु०	११३५० रु०	११३०० रु०
यकहज़ार सातसौ	१४	१३	२७	२७	२७	२७	१३५	९	११	९	७	२	३८	२६ व२	५ व४	५४	९१	२६४	११२२५ रु०	११००० रु०	१०८०० रु०
यकहज़ार छःसौ	१३	१३	२६	२६	२५	२५	१२८	९	१०	९	७	२	३७	२५ व१	५ व२	५२	८५	२५०	१०६०० रु०	१०४०० रु०	१०२०० रु०
यकहज़ार पांचसौ	१२	१२	२४	२४	२४	२४	१२०	८	१०	८	७	२	३५	२४	५	५०	७९	२३४	१०००० रु०	९८०० रु०	९७०० रु०
यकहज़ार चारसौ	१२	१२	२४	२४	२३	२३	११८	८	१०	८	७	२	३५	२३ व२	४ व४	४९	८२	२३५	९६०० रु०	९४०० रु०	९३०० रु०
यकहज़ार तीनसौ	१२	१२	२३	२३	२३	२२	११५	८	१०	७	७	२	३४	२३	४ व३	४८	७८	२२७	९२०० रु०	९१०० रु०	९०५० रु०
यकहज़ार दो सौ	११	११	२२	२२	२२	२२	११०	७	९	७	७	२	३२	२२ व२	४ व३	४६	७७	२१९	९००० रु०	८९०० रु०	८८०० रु०
यकहज़ार यकसौ	११	११	२२	२२	२१	२१	१०८	७	९	७	७	२	३२	२२	४ व२	४४	७२	२१२	८७०० रु०	८५०० रु०	८४०० रु०
यकहज़ारी	१०	१०	२१	२१	२१	२१	१०४	७	८	६	७	२	३०	२१	४ व१	४२	६८	२०२	८२०० रु०	८१०० रु०	८००० रु०
नौसौवाले	१०	१०	२०	२०	२०	२०	१००	७	८	६	७	२	३०	२०	४	४०	६४	१९४	७७०० रु०	७४०० रु०	७१०० रु०
आठसौवाले	१०	९	१७	१७	१६	१३	८२	७	८	६	५	२	२८	१७ व३	३ व२	३४	५९	१६९	५००० रु०	४७०० रु०	४४०० रु०
सातसौवाले	६	८	१३	१३	१४	७	६१	४	५	५	४	१	१९	१५ व२	३	२७	४७	१२७	४००० रु०	३७०० रु०	३६०० रु०
छः सौवाले	५	७	९	९	४	४	३८	४	३	५	२	१	१५	१४	२ व२	२१	३९	९२	३५०० रु०	३२०० रु०	३००० रु०
पांचसौवाले	४	७	८	८	४	३	३४	४	२	२	२	१	११	१३	२	१५	३०	७५	२८०० रु०	२७५० रु०	२७०० रु०
साढ़े चारसौवाले	४	६	८	८	४	३	३३	३	२	२	२	१	१०	१०	०	१२	२२	६५	२५०० रु०	२३०० रु०	२१०० रु०
चारसौ वाले	३	४	५	६	२	०	२०	२	३	२	२	१	१०	५	०	१२	१७	४७	२००० रु०	१७०० रु०	१५०० रु०

मन्सबदारोंके क़ायदेका नक़्शा.

मन्सब	घोड़े							हाथी						बारबर्दारी				कुल मीज़ान	माहवारी तन्ख़्वाह		
	इराक़ी	दोग़ला	तुर्की	टट्टू	ताज़ी	जंगला	मीज़ान	शेरगीर	सादा	मंझोला	करहा	फंदूर्किया	मीज़ान	ऊंट	ख़च्चर	गाड़ी	मीज़ान		पहले दरजेकी	दूसरे दरजेकी	तीसरे दरजेकी
साढ़े तीनसौ वाले	३	४	४	४	२	०	१७	१	१	२	२	१	७	४व२	०	११	१७	४१	१४५० रु०	१३७५ रु०	१३५० रु०
तीनसौ वाले	३	३	३	४	२	०	१५	१	१	२	२	१	७	४	०	१०	१४	३६	१३०० रु०	१२५० रु०	१२०० रु०
ढाईसौ वाले	३	३	३	४	२	०	१५	१	१	२	२	०	६	३व२	०	८	१३	३४	११५० रु०	११०० रु०	१००० रु०
दोसौ वाले	२	३	३	३	२	०	१३	१	१	१	२	०	५	३	०	७	१०	२८	९७५ रु०	९५० रु०	९०० रु०
डेढ़सौ वाले	२	३	३	३	२	०	१३	१	२	१	२	०	६	४	०	६	१०	२९	८७५ रु०	८५० रु०	८०० रु०
यकसौ पच्चीसी	२	२	२	३	२	०	११	०	१	१	२	०	४	२व१	०	५	८	२३	७८० रु०	७६० रु०	७५० रु०
यकसौबीसी	२	२	२	३	२	०	११	०	१	१	२	०	४	२व१	०	५	८	२३	७४५ रु०	७४० रु०	७३० रु०
यकसौ वाले	२	२	२	२	२	०	१०	०	१	१	१	०	३	२	०	५	७	२०	७०० रु०	६०० रु०	५०० रु०
चारबीसी	२	१	२	२	१	१	९	०	०	१	२	०	३	२	०	३	५	१७	४१० रु०	३८० रु०	३५० रु०
तीनबीसी	१	१	२	२	१	१	८	०	०	१	१	०	२	१व२	०	२	५	१५	३०१ रु०	२८५ रु०	२७० रु०
पचासी	१	१	२	२	१	१	८	०	०	१	१	०	२	१व२	०	२	५	१५	२५० रु०	२४० रु०	२३० रु०
दोबीसी	१	२	२	१	१	१	८	०	१	०	०	०	१	१व२	०	१	४	१३	२२३ रु०	२०० रु०	१८५ रु०
तीर बन्द	०	१	१	२	१	१	६	०	०	०	१	०	१	१व१	०	१	३	१०	१७५ रु०	१६५ रु०	१५५ रु०
यकबीसी	०	१	१	१	२	०	५	०	०	०	१	०	१	१व१	०	१	३	९	१३५ रु०	१२५ रु०	११५ रु०
दस वाले	०	०	२	२	०	०	४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	४	१०० रु०	८२ ॥) रु०	७५ रु०

मन्सबके बयानके बाद उन मन्सबदारोंके नाम लिखेजाते हैं जो अबुल्फ़ज़्लने 'आईन अक्बरी' पहिली जिल्दके १८१ एष्ठसे १८६ तक हिज्री १००३ [वि० १६५२ = ई० ११९५] में लिखे हैं, इस वर्षसे पहिले जो मरचुके और जो इस सालमें ज़िन्दा थे उनमेंसे मरे हुओंके ५०० मन्सबसे ऊपर, और ज़िन्दा लोगोंके २०० मन्सबसे ज़ियादा वालों तकके नाम नीचे लिखेजाते हैं--

अक्बर बादशाहके मन्सब्दार सर्दार.

(दसहज़ारी.)

१ शाहज़ादा सलीम, बादशाहका बड़ा बेटा.

(आठहज़ारी.)

२ शाहज़ादा शाहमुराद, बादशाहका दूसरा बेटा.

(सातहज़ारी.)

३ शाहज़ादा दानयाल, बादशाहका तीसरा बेटा.

(पांच हज़ारी.)

४ सुल्तान खुस्रो, बड़े शाहज़ादेका बेटा.

५ मिर्ज़ा सुलैमान तीमूरी.

६ मिर्ज़ा इब्राहीम तीमूरी.

७ मिर्ज़ा शाहरुख़ तीमूरी

८ मिर्ज़ा मुज़फ्फ़र हुसैन सफ़वी ईरानी.

९ मिर्ज़ा रुस्तम ईरानी.

१० बैरमख़ां ख़ान्ख़ानां.

११ बैरमबेगका बेटा मुनइमख़ां.

१२ तर्दीबेगख़ां तुर्किस्तानी.

१३ ख़ानेज़मां शीबानी.

१४ अब्दुल्लाख़ां उज्बक.

१५ शम्सुद्दीन अत्काख़ां.

१६ मीरमुहम्मद्– ख़ानेकलां.

१७ शरफ़ुद्दीनहुसैन मिर्ज़ा अहरारी.

१८ अत्काख़ांका बेटा यूसुफ़ मुहम्मदख़ां.

१९ अद्हमख़ां धायभाई.

२० पीर मुहम्मदख़ां शिर्वानी.

२१ अत्काख़ांका बेटा ख़ानेआज़म मिर्ज़ा.

२२ बहादुरख़ां.

२३ एथ्वीराज कछवाहेका बेटा-राजा भारमल्ल.

२४ हुसैन कुली–ख़ानेजहां.

२५ सईदख़ां.

२६ शिहाबुद्दीन अहमदख़ां.

२७ राजा भारमल्लका बेटा–राजा भगवानदास.

२८ कुतुबुद्दीनख़ां.

२९ बैरमख़ांका बेटा– अब्दुर्रहीम ख़ान्ख़ानां.

३० राजा भगवानदासका बेटा-राजा मानसिंह.

३१ मुहम्मद कुलीख़ां बर्लास.

३२ तरसूंख़ां.

३३ क़ियाख़ां गुंग.

(साढ़ेचार हज़ारी.)

३४ ज़ैनख़ां हर्वी.

३५ मिर्ज़ा यूसुफ़ख़ां रज़वी.

(चार हज़ारी.)

३६ महदी क़ासिमख़ां.

३७ मुज़फ़्फ़रख़ां तर्बेनी.

३८ सैफ़ख़ां कूका.

३९ राजा टोडरमल्ल खत्री.

४० मुहम्मद क़ासिमख़ां नेशापुरी.

४१ वज़ीरख़ां.

४२ क़िलीचख़ां.

४३ सादिक़ख़ां.

४४ कल्यानमल्ल बीकानेरीका बेटा–राव रायसिंह.

(साढ़ेतीन हज़ारी.)

४५ मिर्ज़ा जानीबेग.

४६ सिकन्दरख़ां उज़्बक.

४७ अब्दुल्मजीद आसिफ़ख़ां.

४८ मज्नूंख़ां काक़्शाल.

४९ मुक़ीम शुजाअतख़ां अरबी.

५० शाहबदाग़ख़ां समर्क़न्दी.

५१ हुसैनख़ां.

५२ मुरादख़ां.

५३ हाजीमुहम्मदख़ां सीस्तानी.

५४ सुल्तानअली अफ़्ज़लख़

५५ शाहबेगख़ां अलीमबेग–ख़ान आलम

५६ दर्याई दारोग़ा क़सिमख़ां.

५७ बाक़ीख़ां.

५८ मीर मुइज़्ज़ुल्मुल्क.

५९ मीर अलीअक्बर.

६० शरीफ़ख़ां.

(ढाई हज़ारी.)

६१ इब्राहीमख़ां शीबानी.

६२ जलालुद्दीन ख़ुरासानी.

६३ हैदर मुहम्मदख़ां.

६४ एतिमादख़ां गुजराती.

६५ पाइन्दाख़ां मुग़ल.

६६ राजाभारमल्लकाबेटा-जगन्नाथ.

६७ मख़्सूसख़ां.

६८ शैख़ मुबारिकका बेटा–अबुल्फ़ज़्ल.

(दोहज़ारी.)

६९ इस्माईलख़ां.

७० मीर उलूस.

७१ अश्रफ़ख़ां सब्ज़वारी.

७२ सय्यद महमूद बारह

७३ अब्दुल्लाख़ां मुग़ल.

७४ शैख़ मुहम्मद बुख़ारी.

७५ सय्यद हामिद बुख़ारी.

७६ रुस्तमख़ां तुर्किस्तानी.

७७ शहबाज़ख़ां कम्बो.

७८ दर्वेश मुहम्मद उज़्बक.

७९ शैख़ इब्राहीम सीकरीवाला.

८० अब्दुल्लतीफ़ख़ां.

८१ एतिबारख़ां ख़्वाजासरा.

८२ राजा बीरबल ब्राह्मण.

८३ इख़्लासख़ां ख़्वाजासरा.
८४ हुमायूंका गुलाम- बहादुरख़ां.
८५ शाह फ़ख़्रुद्दीन.
८६ राजा रामचन्द्र बघेला.
८७ लश्करख़ां ख़ुरासानी.
८८ सय्यद अहमद बारह.
८९ काकड़ अलीख़ां चिश्ती.
९० बीकानेरका राव कल्याणमल्ल.
९१ ताहिरख़ां.
९२ शाह मुहम्मदख़ां क़लाती.
९३ बूंदीका राव सुर्जण हाड़ा.
९४ शाहमख़ां जलाइर.
९५ जअ़्फ़रबेग आसिफ़ख़ां.

(डेढ़ हज़ारी.)

९६ शैख़ फ़रीद बुख़ारी.
९७ हलीमबेगका बेटा समानजीख़ां
९८ तर्दीबेग.
९९ हुमायूंका गुलाम- मिहतरख़ां.
१०० रामपुरेका राव दुर्गा सीसोदिया.
१०१ राजा भगवानदासका बेटा माधवसिंह.
१०२ सय्यद क़ासिम.

(एक हज़ार दोसौ मन्सब वाले.)

१०३ रायशाल शैख़ावत दर्बारी.

(एक हज़ारी.)

१०४ मुहिब्बे अलीख़ां.
१०५ सुल्तान् ख़्वाजा.
१०६ ख़्वाजा अब्दुल्ला.
१०७ ख़्वाजा जहां.
१०८ तातारख़ां ख़ुरासानी.
१०९ हकीम अबुल्फ़त्ह गीलानी.
११० शैख़ जमाल.
१११ जअ़्फ़रख़ां.
११२ शाह फ़त्ता.
११३ असदुल्लाख़ां तब्रेज़ी.
११४ राजा भारमल्लका भाई- रूपसी बैरागी.
११५ एतिमादख़ां ख़्वाजासरा.
११६ बाज़ बहादुर.
११७ राव मालदेवका बेटा- मोटा राजा उदयसिंह.
११८ शाह मन्सूर शीराज़ी.
११९ क़ल्लक़ क़दमख़ां.
१२० आदिलख़ां.
१२१ ग़यासुद्दीनख़ां.
१२२ फ़र्रुख़ हुसैनख़ां उज़्बक.
१२३ मुईनख़ां.
१२४ मुहम्मद कुली तोक्बाय.
१२५ मिहर अलीख़ां सल्दोज़.
१२६ ख़्वाजा इब्राहीम बदख़्शी.
१२७ सलीमख़ां काकड़.
१२८ हबीब अलीख़ां कोलाबी.
१२९ राजा भारामल्लका भाई जगमाल.
१३० अलग़ख़ां, गुजराती ख़ानहज़ाद.
१३१ मक्सूद अलीख़ां कोर.
१३२ क़ुबूलख़ां.

(नौसौ मन्सबवाले.)

१३३ कोचक अलीख़ां कोलाबी.

१३४ हुमायूंका- गुलाम सब्दलखां.
१३५ अमरोहेका सय्यद मुहम्मद, मीरअद्ल.
१३६ रज़वीखां रज़वी.
१३७ मिर्ज़ा निजाबतखां.
१३८ सय्यद हाशिम् बारह.
१३९ ग़ाज़ीखां बदख़्शी.
१४० फ़रहत्खां.
१४१ रूमीखां.
१४२ गोर्चीका बेटा समान्जीखां.
१४३ शाहबेगखां.
१४४ मिर्ज़ा हुसैनखां.
१४५ हकीम जम्बील.
१४६ खुदावन्दखां दखनी.
१४७ मिर्ज़ा अलीखां.
१४८ सआदत मिर्ज़ा.
१४९ शिमालखां चेला.
१५० शाह ग़ाज़ीखां.
१५१ अफ़ाज़िल्खां.
१५२ मअ़्सूमखां.
१५३ तोलकखां.
१५४ ख्वाजा शमसुद्दीन ख़ाफ़ी.
१५५ राजा मानसिंहका बड़ा बेटा जगत्सिंह.
१५६ नक़ीबखां.
१५७ मीर मुर्तज़ा.
१५८ अअ़्ज़म मिर्ज़ाका बेटा-शम्सी
१५९ मीर जमालुद्दीन हुसैन.
१६० सय्यद राजू बारह.
१६१ मीर शरीफ़ आमिली.
१६२ शेरोयाखां.
१६३ नज़रबेगउज्बक.
१६४ जलालखां कक्खड़.
१६५ ताशबेगखां मुग़ल.
१६६ शैख अब्दुल्ला ग्वालियरी.
१६७ राजा आसकर्ण कछवाहेका बेटा-राजसिंह.
१६८ राव सुर्जणका बेटा-राव भोज.

(आठसौ मन्सबवाले.)

१६९ शेर ख्वाजा.
१७० अअ़्ज़म मिर्ज़ाका बेटा खुर्रम.

(सातसौ मन्सबवाले.)

१७१ क़ुरैश सुल्तान.
१७२ क़रा बहादुर.
१७३ मुज़फ़्फ़र हुसैन मिर्ज़ा.
१७४ क़बीज़ोकखां उज्बक.
१७५ सुल्तान अब्दुल्ला.
१७६ मिर्ज़ा अब्दुर्रहमान.
१७७ क़ियाखां.
१७८ बारखां.
१७९ अब्दुर्रहमान.
१८० क़ासिमअलीखां.
१८१ बाज़बहादुरखां.
१८२ सय्यद अब्दुल्लाखां.
१८३ टोडरमल्लका बेटा-बिहार.
१८४ अहमदबेग काबुली.
१८५ हकीम अली ईरानी.
१८६ गूजरखां.
१८७ सद्रेजहां मुफ़्ती.

१८८ तरुताबेग काबुली.
१८९ राव पित्रदास खत्री.
१९० शैख़ अब्दुर्रहीम.
१९१ मेदिनीराय चहुवान.
१९२ अबुल् क़ासिम तमकीन्.
१९३ वज़ीरबेग जमील.
१९४ ताहिर सैफुल् मुल्क.
१९५ बाबू मंगली.

(छः सौ मन्सबवाले.)

१९६ मुहम्मद कुली तुर्कमान.
१९७ इख्तियार बेग.
१९८ हकीम हुमाम गीलानी.
१९९ ख़ाने अअ्ज़मका बेटा-मिर्ज़ा-नूर.

(पांचसौ मन्सबवाले.)

२०० बाल्तूख़ां.
२०१ मीरख़ां बहादुर.
२०२ लालख़ां.
२०३ शैख़ अहमद सलीम.
२०४ सिकन्दर बेग.
२०५ बेग नौरसख़ां.
२०६ जलालख़ां क़ोर्ची.
२०७ परमानन्द खत्री.
२०८ तीमूरख़ां यक्का.
२०९ सानी हर्वी.
२१० सय्यद जलाल बारह.
२११ जगमाल पुँवार.
२१२ हुसैन बेग.
२१३ हुसैनख़ां पन्नी.
२१४ सय्यद छज्जू बारह.
२१५ मुनासिफ़ख़ां हर्वी.
२१६ क़ाज़ीख़ां बख़्शी.
२१७ हाजी यूसुफ़ख़ां.
२१८ रावल भीम जैसलमेरी.
२१९ हाशिमबेग.
२२० मिर्ज़ा फ़रेदूं.
२२१ यूसुफ़ख़ां कश्मीरी.
२२२ पूर क़िलीच.
२२३ मीर अब्दुल हय्य.
२२४ शाह कुलीख़ां.
२२५ फ़र्रुख़ख़ां.
२२६ ख़ाने अअ्ज़मका बेटा-शादमां.
२२७ हकीम ऐनुल्मुल्क शीराज़ी.
२२८ जांशबहादुर मुग़ल.
२२९ मीर ताहिर.
२३० मिर्ज़ा अलीबेग.
२३१ रामदास कछवाहा.
२३२ मुहम्मदख़ां नियाज़ी.
२३३ अबुल् मुज़फ़्फ़र.
२३४ ख़्वाजगी मुहम्मद हुसैन.
२३५ अबुल् क़ासिम.
२३६ क़मरख़ां.
२३७ राजा मानसिंहका बेटा-अर्जुन-सिंह.
२३८ राजा मानसिंहका बेटा सबल-सिंह.
२३९ मुस्तफ़ा गल्ज़ई.
२४० नज़रख़ां.
२४१ मधुकरका बेटा-रामचन्द्र.
२४२ राजा मुकुटमणि भदौरिया.

२४३ उड़ीसेका ज़मींदार रामचन्द्र.
२४४ अमरोहेके सय्यद मुहम्मदका बेटा-अबुल् क़ासिम.
२४५ रायसिंह बीकानेरीका बेटा-दलपत.

(चारसौ मन्सबवाले.)

२४६ अबुल्फ़ज़्लका भाई शैख़ फ़ैज़ी.
२४७ हकीम मिसरी.
२४८ मिर्ज़ाखांका बेटा-ईरज.
२४९ राजा मानसिंहका बेटा-शक्तिसिंह.
२५० मिर्ज़ा अअ़ज़मका बेटा-अब्दुल्लाख़ां.
२५१ अली मुहम्मद अस्प.
२५२ मिर्ज़ा मुहम्मद.
२५३ शैख़ बायज़ीद सीकरीवाला.
२५४ ग़ज़नीख़ां जालोरी.
२५५ कजक ख़्वाजा.
२५६ शेरख़ां मुग़ल.
२५७ फ़त्हुल्ला.
२५८ लूणकर्णका बेटा-राव मनोहर.
२५९ ख़्वाजा अब्दुस्समद.
२६० राजा भारमल्लका बेटा-सलहदी.
२६१ रामचन्द्र कछवाहा.
२६२ बहादुरख़ां क़ोरदार.
२६३ बालका कछवाहा.

(साढ़ेतीनसौ मन्सबवाले.)

२६४ मिर्ज़ा अबू सईद.
२६५ मिर्ज़ा संजर.
२६६ अली मर्दान बहादुर.
२६७ रज़ा कुली.
२६८ शैख़ ख़ूबू.
२६९ ज़ियाउल् मुल्क काशी.
२७० हम्ज़ाबेग फ़रागली.
२७१ मुख़्तारबेग.
२७२ हैदरअली अरब.
२७३ पेशरौख़ां.
२७४ हाजी हसन क़ज़्वीनी.
२७५ मीर मुराद.
२७६ मीर क़ासिम बदख़्शी.
२७७ बन्दे अली मैदानी.
२७८ ख़्वाजगी फ़त्हुल्ला.
२७९ ज़ाहिद.
२८० दोस्त.
२८१ यार.
२८२ इज़्ज़तुल्ला.

(तीनसौ मन्सबवाले.)

२८३ अलतून् क़िलीच.
२८४ सैफ़ुल्ला.
२८५ चीन क़िलीच.
२८६ अबुल् फ़त्ह.
२८७ सय्यद बायज़ीद बारह.
२८८ बलभद्र राठौड़.
२८९ अमरोहेके सय्यद मुहम्मदका बेटा-अबुल् मआली.
२९० बाक़िर अन्सारी.
२९१ बायज़ीदबेग तुर्कमान.
२९२ शैख़ दौलत बख़्तियार.

२९३ हुसैन पगलीवाल.
२९४ जयमल्लका बेटा—केशवदास.
२९५ मिर्ज़ाखां.
२९६ मुज़फ़्फ़र.
२९७ तुलसीदास जादव.
२९८ रह्मतखां.
२९९ अहमद क़ासिम कूका.
३०० बहादुर गोहिलोत.
३०१ दौलतखां लोधी.
३०२ शाहमुहम्मद.
३०३ हसनखां मियानह.
३०४ ताहिरबेग.
३०५ कृष्णदास तँवर.
३०६ मानसिंह कछवाहा.
३०७ मीर गदाई.
३०८ क़ासिम ख़्वाजा.
३०९ नादेअली मैदानी.
३१० उड़ीसेका ज़मींदार नीलकण्ठ.
३११ गयासबेग तहरानी.
३१२ ख़्वाजा शरफ़.
३१३ शरफ़बेग शीराज़ी.
३१४ इब्राहीम कुली.

(ढाईसौ मन्सब वाले.)

३१५ अबुल् फ़त्ह.
३१६ बेग मुहम्मद तौक़बाय.
३१७ इमामकुली शिग़ाली.
३१८ सफ़्दरबेग.
३१९ ख़्वाजा सुलैमान
३२० बरखुर्दार.
३२१ मीर मअ्सूम भक्करी.
३२२ ख़्वाजा मलिक.
३२३ राय रामदास दीवान.
३२४ शाह मुहम्मद.
३२५ रहीम कुली.
३२६ शेरबेग.

(दोसौ मन्सब वाले.)

३२७ इफ़्तिख़ारबेग.
३२८ राजा भगवानदासका बेटा प्रतापसिंह.
३२९ हुसैनखां क़ज़्वीनी.
३३० यादगार हुसैन.
३३१ कामरांबेग गीलानी.
३३२ मुहम्मदखां तुर्कमान.
३३३ निज़ामुद्दीन अहमद.
३३४ राजा मानका बेटा-जगत्सिंह.
३३५ इमादुल् मुल्क.
३३६ शरीफ़ सर्मदी.
३३७ क़रा बहरी.
३३८ तातारबेग.
३३९ ख़्वाजा मुहब्बेअली ख़ाफ़ी.
३४० हकीम मुज़फ़्फ़र अर्दिस्तानी.
३४१ अब्दुस्सुबहान.
३४२ क़ासिमबेग तब्रेज़ी.
३४३ शरीफ़.
३४४ तक़िया शुस्तरी.
३४५ अब्दुस्समद काशी.
३४६ हकीम लुत्फुल्ला.
३४७ शेर अफ़्ग़न.
३४८ अमानुल्लाखां.
३४९ सलीम कुली.

३५० ख़लील कुली.
३५१ वली बेग.
३५२ बेग मुहम्मद.
३५३ मीरख़ां.
३५४ सरमस्तख़ां.
३५५ अमरोहेके सय्यद मुहम्मदका बेटा-अबुल् हसन.
३५६ अमरोहेका सय्यद अब्दुल-वाहिद.
३५७ ख़्वाजाबेग.
३५८ सगरा-राना प्रतापका भाई.
३५९ शादीबे उज़्बक.
३६० बाक़ीबेग.
३६१ नौमानबेग.
३६२ शैख़ कबीर चिश्ती.
३६३ मिर्ज़ा ख़्वाजा.
३६४ मिर्ज़ा शरीफ़.
३६५ शुक्रुल्ला.
३६६ मीर अब्दुल मोमिन.
३६७ लश्करी.
३६८ मुहम्मद अली हाजी.
३६९ मथुरादास खत्री.
३७० सुथरादास.
३७१ मीर मुराद.
३७२ कल्ला कछवाहा.
३७३ सय्यद दर्वेश.
३७४ जुनैद मड़ल.
३७५ सय्यद अबू इस्हाक़.
३७६ फ़त्हख़ां चीताबान.
३७७ मुक़ीमख़ां.
३७८ लाला-राजा बीरबलका बेटा.
३७९ यूसुफ़ कश्मीरी.
३८० जय-यसावल.
३८१ हैदर दोस्त.
३८२ दोस्त मुहम्मद.
३८३ शाहरुख़.
३८४ शाह मुहम्मद.
३८५ सांवलदास जादव.
३८६ ख़्वाजा ज़हीरुद्दीन.
३८७ मीर अबुल् क़ासिम.
३८८ हाजी अर्दिस्तानी.
३८९ मुहम्मदख़ां.
३९० ख़्वाजा मुक़ीम.
३९१ क़ादिर अली.
३९२ फ़ीरोज़ख़ां.
३९३ मीर शरीफ़ कोलाबी.
३९४ बहादुरख़ां बिल्लोच.
३९५ केशवदास राठौड़.
३९६ शेर मुहम्मद.
३९७ अली कुली.
३९८ सय्यद लाद बारह.
३९९ जैनुद्दीन अली.
४०० नसीर मुबीन.
४०१ सांख पुंवार.
४०२ क़ाबिल.
४०३ उड़ीसेका ज़मींदार ओडण्ड.
४०४ उड़ीसेका ज़मींदार सुन्दर.
४०५ पूरम, इब्राहीमका धायभाई.

अक्बर बादशाहने अपने नवें जुलूसमें सब रअय्यतसे जिज़्या (१) लेना मुआफ़ किया, और कहा कि-बादशाह सब रअय्यतका निगहबान है, ख़ज़ानेमें किसी चीज़की कमी नहीं, तो इस लागतके लेनेकी भी ज़रूरत नहीं है. हिज्री ९९४ [वि० १६४३ = ई० १५८६] में जब अकाल पड़ा तो बादशाहने रअय्यतसे महसूलका छठा हिस्सा छोड़दिया.

"जब हिज्री ९७७ तारीख़ २३ रमज़ान [वि० १६२६ चैत्र कृष्ण ९ = ई० १५७० ता० २८ फ़ेब्रुअरी] को जेज़ुविट् पादरी रोडॉल्फ़ो एका वाइवा, एन्टोनियो डी मौन्सीरैटी, फ्रैन्सिस्को एनरिक्स, फ़त्हपुर सीकरीमें बादशाह अक्बरके पास पहुंचे और मर्यम् और क्रॉसपर चढ़ेहुए ईसाकी तस्वीरें पेश कीं तो बादशाहने हिन्दू, मुसल्मान और ईसाई तीनोंके तरीक़ेसे उस तस्वीरको तअ्ज़ीम देकर कहा कि खुदाको सब तरह पूजना चाहिये" (२). इस बादशाहने कुल्ल मज़्हबोंका झगड़ा मिटानेको एक जुदा मज़्हब चलाना चाहा था.

सलामका तरीक़ा भी बदल दिया था कि एक आदमी "अल्लाहु अक्बर" कहता, दूसरा 'जल्ला जलालुहू' बोलकर जवाब देता; सब मज़्हबोंके तरीक़े थोड़े थोड़े इख़्तियार करलिये थे कि जिससे सब लोग खुश रहें, तीर्थोंपर जो महसूल दूसरे बादशाहोंने लगाये थे इसने छोड़दिये, और प्रयागमें गंगा जमुनाके संगम पर उस करोत (आरा) को जिससे हिन्दू लोग चिरकर जानदेते थे ख़राब जानकर तुड़वाडाला, और ज़बर्दस्ती सती करना बन्द किया.

इस बादशाहकी नेकियां और आक़िलाना कार्रवाई लिखी जावे तो बहुत फैलाव होगा, अब इसके वक़्तकी मुल्की आमदनी लिखीजाती है.

चौदह किरोड़ उन्नीस लाख नौ हज़ार पांचसौ चौरासी रुपये ज़मीनकी पैदा-इश, और सायर, ख़िराज वग़ैरह सब मिलाकर बत्तीस किरोड़ रुपयेकी आमदनी थी. अन्तमें इस बादशाहका विश्वास किसी मज़्हब पर नहीं रहा था- मिरात वारदातमें लिखा है कि "बादशाह दस्तोंकी बीमारी छः महीने तक रहनेसे मरनेके क़रीब

(१) जिज़्या, एक तरहका महसूल था जो मुसल्मानोंके पैग़म्बर और उनके ख़लीफ़ाओंके समयमें यहूदी, ईसाई, पार्सी, मूर्तिपूजकोंसे उनकी हिफ़ाज़तके एवज़ लियाजाता था.

हरएक लड़ने वाले काफ़िर, कमउम्र आदमी, औरत, गुलाम, लंगड़े, लुंजे, अन्धे, और दीवाने व बहुत ग़रीब लोगोंसे मुआफ़ था, हरवर्षमें कमदरजेके आदमीसे १२ दिरम याने क-ल्दार ३ रु० आठआनेके अनुमान और मध्यम दरजेके आदमीसे इसका दूना याने २४ दिरम और अमीर आदमीसे ४८ दिरम लियाजाना मुक़र्रर था— तारीख़ मिरात अहमदी जिल्द २.

(२) यह बयान ह्यू मरे साहिबकी किताब (डिस्कवरीज़ ऐण्ड ट्रैवल्ज़ इन एशिया) की दूसरी जिल्दके पृष्ठ ८९ से लियागया है, जो सन् १८२० ईस्वी में एडिम्बरा में छपी.

होगया, उस समय मिर्ज़ा अज़ीज़ ख़ाने अअ्ज़म कूका और राजा मानसिंह कछवाहा मौजूद थे. ख़राब हाल देखकर ख़ाने अअ्ज़मने बादशाहसे मज़्हबी कलिमा पढ़ने को कईबार कहा, लेकिन उसने कुछ भी ध्यान न दिया.

फिर ख़ाने अअ्ज़मके इशारेसे अक्लमन्द राजा मानसिंहने अर्ज़की कि हम लोगोंने ज़िदके सबब कुफ़्रकी बातें कुबूल नहीं कररक्खी हैं बल्कि इस कारणसे हिन्दू बनेहुए हैं कि जो अकेले मुसल्मानी कुबूल करलें तो क़ौमके लोग हमें छोड़कर अलग होजावें और कोई सर्दार न बनावे, इस झगड़ेके सबब लाचार हैं; वर्ना सब मज़्हबोंसे मुसल्मानी मज़्हब बिहतर जानते हैं, तक्लीफ़की हालतमें हुज़ूरको ऐसी इबारत जो कि मुक्ति दिलासक्ती है पढ़नी चाहिये. यह बात सुननेसे बादशाह अपना मुंह दूसरी तरफ़को फेरना चाहता था कि दम निकलगया-इस मुआमलेसे ख़ाने अअ्ज़म और दूसरे बुज़ुर्ग लोगोंने बादशाहके जनाज़ेपर नमाज़ रवा न रक्खी, और विना नमाज़के आगरेसे सिकन्दराबाद लेजाकर दफ़्न करदिया, जो आगरेसे अलहदा पुराना शहर था".

इस बादशाहके समयमें सवारोंकी तनख़्वाह पन्द्रह रुपयेसे लेकर २५ रुपये तक, और पैदलोंकी ६ रु० से लेकर १२॥ रु० तक थी; ख़ालिसे और ज़मींदारोंकी कुल फ़ौज अबुल्फ़ज़्लने चालीस लाखसे ज़ियादा लिखदी है, लेकिन क़लमबन्दीकी ख़ास फ़ौज पांच लाख ख़याल कीजाती है.

इस बादशाहके मुल्ककी सीमा, जिसने ५० वर्षसे कुछ ज़ियादा हुकूमत की, काबुलसे बंगाला, और कश्मीरसे बरारतक थी.

शेषसंग्रह.

अक्बरके जन्मदिनमें तारीख़ीफ़र्क़.

राजपूतानाकी तारीख़ बनानेके लिये सामान एकट्ठा करनेके वास्ते हिन्दुस्तान के इतिहासोंके देखनेसे पायाजाता है कि अक्बर बादशाहके जन्मदिनकी बाबत फ़ार्सी तारीख़ लिखनेवालोंकी राय एकसी नहीं है.

१ अक्बरके वज़ीर (शैख़) अबुल्फ़ज़्लका बयान है कि "हुमायूंकी बेगम हमीदाबानूके पेटसे शाहज़ादे अक्बरका जन्म हिज्री ९४९ ता० ५ रजब रविवार [वि० १५९९ कार्तिक शुक्ल ६ = ई० १५४२ ता० १५ ऑक्टोबर] की रातको अमरकोट में हुआ"- (अक्बर नामह जिल्द १ एष्ठ ३१- ५३). परन्तु अबुल्-फ़ज़्लने इस तारीख़का ठीक होना तहक़ीक़ नहीं किया- वह कहता है कि जब शाहज़ादे

का जन्म हुआ उस वक़ दो ज्योतिषी, मौलाना 'चांद' और 'इल्यास' अमरकोटमें मौजूद थे.

इससे ख़याल कियाजाता है कि अबुल्फ़ज़्लके लिखनेसे पहिले उन दोनोंका देहान्त हो चुका था–– क्योंकि अगर ऐसा न होता तो वह उनसे पूछकर शाहज़ादे का जन्म दिन लिखता. पैदाइशके वक़ उनके मौजूद होने ही पर अपने लेख को मज्बूत न करता.

उसने (अक्बरनामेमें) शाहज़ादेकी कई जन्मपत्रियां लिखी हैं, जिनमेंसे कोई यूनानी और कोई हिन्दुस्तानी तरीक़ेसे बनाई गई है, लेकिन आपसमें एक भी नहीं मिलती, किसीमें सूर्य तुला राशिका और किसीमें वृश्चिकका लिखा है– किसीमें जन्म सिंह लग्न का और किसीमें कन्याका बताया है–– अबुल्फ़ज़्लने अक्बरके सालाना जुलूसके मुताबिक़ उसके जन्मोत्सवका बयान नहीं किया है.

(२) 'तबक़ात अक्बरी' का लिखनेवाला निज़ामुद्दीन अहमद बख़्शी अक्बरके जन्मका दिन वही बतलाता है जो अबुल्फ़ज़्लने लिखा, और 'मुन्तख़बुत्तवारीख़' के बनानेवाले मौलवी बदायूनीका बयान भी उसीके मुवाफ़िक़ है.

इन तीनों शख़्सोंका लिखना, जो अक्बर बादशाहके मोतबर आदमी थे, ठीक और यक़ीनके लायक़ मानागया. इसी कारण १ 'इक्बालनामए जहांगीरी' २ 'तारीखे फ़िरिश्ता' ३ 'मुन्तख़बुल्लुबाब' ४ 'सैरुल्मुतअख़्ख़िरीन' और ५ 'मुलख़्ख़सुत्त-वारीख़' वग़ैरहके बनानेवालोंने भी वही लिखदिया.

(३) 'मिराते आफ़ताबनुमा' के बनानेवालेने इस मुआमिलेमें कोई मज्बूत राय नहीं दी, सिर्फ़ नीचे लिखेहुए शुब्हेसे वह कहता है कि–

"कई तहरीरोंके मुताबिक़ हिज्री ९४९ में और किसीसे हिज्री ९५० को जलालुद्दीनमुहम्मद अक्बरका जन्म अमरकोटमें हमीदाबानूबेगमके पेटसे, जो अहमद जामकी औलादमें थी, हुआ. अक्बरनामेके बयानसे इस नेक शाहज़ादेका जन्म अमरकोटमें, हिज्री ९४९ ता० ५ रजब रविवारकी रातको हुआ, जिस समय सूरज वृश्चिक राशिपर था"––

'तज़्किरतुल् वाक़िआत' (क़लमी किताब ४४ पत्र) का बनानेवाला अक्बर जौहर, हुमायूं बादशाहका आफ़्ताबची (पानेड़ेका दारोगा) लिखताहै कि "बादशाह हुमायूं अमरकोटसे भक्कर लेनेके इरादेपर आगे बढ़े, वहांसे १२ कोसपर एक हौज़के पास ठहरे थे, जहां सुबहके वक़ अमरकोटसे एक क़ासिद मुबारिकबादी लाया और अर्ज़ किया कि बुज़ुर्ग खुदाने हज़रतके घरमें एक नेकबख़्त बेटा इनायत किया. इस

ख़बरके सुननेसे हज़रत बादशाह बहुत खुश हुए, शाहज़ादेकी पैदाइशका वक्त हिज्री ९४९ शश्र्बानकी १४ तारीख़ [वि० १५९९ मार्गशिर शुक्ल १५ = ई० १५४२ ता० २३ नोवेम्बर] शनैश्चरकी रात है- १४ वीं रातके चांदको 'बद्र' कहते हैं, जिस तारीख़को शाहज़ादेकी पैदाइश हुई. 'जलालुद्दीन' और 'बद्रुद्दीन' का एकसाही अर्थ है इस लिये शाहज़ादेका नाम 'बद्रुद्दीन' और जलालुद्दीन रक्खा; जब हज़रत बादशाह नमाज़ पढ़चुके तब अमीरोंने आकर सलाम किया.

इसके बाद हज़रत बादशाहने इस तावेदार (जौहर आफ़्ताबूची) से फ़र्माया कि हमने तुझको अमानत सौंपी थी; जवाबमें अर्ज़किया कि दुरुस्त है. दुबारा फ़र्माया कि क्या थी ? अर्ज़ किया कि २०० शाहरुख़ी रुपये, चांदीके दस्ताने और एक कस्तूरीका नाफ़ा (नाभि) था.

शाहरुख़ी रुपये और दस्ताने हज़रतके हुक्मसे खुदावन्दखांको देदिये. हज़रतने फ़र्माया वह शाहरुख़ी रुपये व दस्ताने तुमको इनायत किये थे, तुमने किस वास्ते देदिये. तावेदारने अर्ज़ किया कि हज़रत बादशाहके हुक्मसे दिये. हुक्म दिया कि वह कस्तूरीका नाफ़ा ले आओ ! तावेदारने पेश करदिया. बादशाह ने एक चीनीकी रकाबी मांगी, वह हाज़िर की गई, जिसमें नाफ़ेको तोड़ा; सर्दारोंको बुलाकर वह नाफ़ा बांटदिया, और कहा कि यह हमारे बेटा पैदा होनेकी खुशीका निशान है- तमाम आदमियोंने दुआके साथ मुबारिकबाद दी".

(५) अंग्रेज़ी किताबोंके बनानेवालोंने अबुल्फ़ज़्लकी तहरीर यक़ीनके लायक़ मानकर उसीके मुवाफ़िक़ लिखदिया है- ज़ियादा तलाश नहीं की, जैसे :-

१ अर्स्किन् साहिबने हिन्दुस्तानके बादशाह बाबर और हुमायूंके बयानमें- जिल्द २ पृष्ठ २५४ - में लिखा है.

२ अलिग्ज़ेंडर डाउ ने हिन्दुस्तानकी तारीख़ - जिल्द २ पृष्ठ १६०- में

३ इलियट साहिबकी - हिन्दुस्तानकी तवारीख़ - जिल्द १ पृष्ठ ३१८-

४ एल्फ़िन्सटन - हिन्दुस्तानकी तवारीख़ - पृष्ठ ४५३-

५ मिल् साहिबने कोई तारीख़ नहीं लिखी-

२ मौजूदा तारीख़ लिखने वालोंकी राय-

अक्बर जौहरके बयानके मुवाफ़िक़ बादशाह अक्बरका जन्मदिन अबुल्फ़ज़्लकी लिखी हुई तारीख़से ४० दिन (अर्थात् ५ वीं रजबसे १४ शश्र्बान तक फ़र्क़के सबब) पीछे हुआ.

यह फ़र्क़ देखकर मुझे बड़ा शुब्हा हुआ- इसलिये मैंने इस बातको तहक़ीक़

करनेके लिये यह सुवाल पहिले तो अपने दोस्त मौलवी उबैदुल्लाह फ़र्हतीकी मारफ़त उर्दू अख़्बार 'ख़ैरख़्वाहे आलम' में छपवाकर ज़ाहिर किया, लेकिन उसका जवाब कहींसे नहीं मिला.

फिर मैंने नीचे लिखे हुए शख़्सोंको लिखा, जो हिन्दुस्तानके मश्हूर तारीख़ जानने वाले हैं:—

१ राजा शिवप्रसाद– सितारेहिन्द.

२ मौलवी सय्यद अहमद ख़ान बहादुर– सितारेहिन्द.

३ मौलवी अनवारुलहक़–राजपूताना रेज़िडेन्सीके मीरमुन्शी.

इनमेंसे सिर्फ़ राजा शिवप्रसाद साहिबने जवाब दिया, जिसका मैं शुक्रिया अदा करता हूं. अगरचे उनके लेखसे ज़ियादा मत्लब न निकला, क्योंकि वह अबुल्फ़ज़्लके मुवाफ़िक़ उन दो तीन फ़ार्सी किताबोंका हवाला देकर, जिनके नाम ऊपर लिखे हैं, अक्बरका जन्म ५ रजबको बतलाते हैं; और उसे साबित करनेके लिये लिखते हैं कि यक़ीनके लायक़ हिन्दू ज्योतिषियोंके पास जो जन्मपत्रियां हैं उनमें भी अक्बरके जन्मकी यही तारीख़ पाईजाती है. मेरे पास भी उज्जैन वगै़रहके ज्योतिषियोंसे मिली हुई, मुग़ल बादशाहों व उदयपुर, जयपुर और जोधपुर वगै़-रह ठिकानोंके राजाओंकी जन्मपत्रियां मौजूद हैं; लेकिन अक्बरकी कोई जन्मपत्री यक़ीनके लायक़ नहीं मिली.

६ डॉक्टर हन्टरसाहिब अपने गज़ेटियर (जिल्द ९ एष्ठ १८२) में अमरकोट की बाबत लिखते हैं कि "यहां ऑक्टोबर सन् १५४२ ई० में हुमायूंका बेटा अक्बर पैदा हुआ, जब कि हुमायूं भागकर अफ़्ग़ानिस्तानको जारहा था; जिस स्थान में अक्बरका जन्म होना बतलाया जाता है, वहां एक खुदाहुआ पत्थर जमाया गया है".

यह पता पाकर मुझको अक्बरका सहीह जन्म दिन मिलनेकी कुछ उम्मेद हुई, इसलिये मैंने अपने दोस्त सर एडवर्ड आर० सी० ब्रैड्फ़ोर्ड साहिब, के० सी० एस० आई०, एजेन्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानाको उस प्रशस्तिकी नक़्ल मंगानेके लिये एक काग़ज़ लिखा; उसके जवाबमें जो ख़त मेरे पास आया मैं उसका धन्यवाद देकर उसका तर्जुमा नीचे लिखता हूं—

कैम्प अजमेर

१ डिसेम्बर सन् १८८५.

मिहर्बान दोस्त,

आपके १ ऑक्टोबरके ख़तके जवाबमें सर एडवर्ड ब्रैडफ़ोर्ड साहिबने आपके पास

इसके साथका काग़ज़ भेजनेके लिये फ़र्माया है, जो कि 'थर' और 'पारकर' के डिप्युटी कमिशनरके यहांसे आया है, और जिसमें अमरकोटके लिखेहुए पत्थरकी नक्ल़ है.

बनाम
कविराज श्यामलदास
उदयपुर.

द० इलियट कॉल्विन्

चिट्ठीके साथके काग़ज़का तर्जुमा—

साहिब,

छब्बीसवीं तारीख़के काग़ज़के जवाबमें अर्ज़ करता हूं, कि वह पत्थर अमरकोट से एक कोस पश्चिमोत्तर कोनमें है– जिसपर यह इबारत अरबी हर्फ़ोंमें खुदी हुई है–

"हिन हन्दमे
मुहम्मद अक्बरबादशाह
जायो सन् ९६३ हिज्री मे".

अर्थ—अक्बर बादशाह यहां सन् ९६३ हिज्रीमें पैदा हुआ.

अमरकोट ३० ऑक्टोबर
सन् १८८५ ई०
बनाम के० बी० क़ाज़ी फ़ैज़ मुहम्मद

द० उम्मेद अली, मुन्शी
हेडमास्टर अमरकोट स्कूल.

हिज्री ९६३ [वि० १६१३ ई० १५५५–५६] अक्बरके जुलूसका सन् है; जन्म संवत् इस लेखमें नहीं है–इसलिये यह लिखाहुआ पत्थर, जो पीछेसे जमाया गया होगा, किसी कामका नहीं है.

अब मैं मज्बूरीसे अपनेही भरोसेपर यह ज़ुरूर समझताहूं कि इस बाबत अपनी राय बंगालेकी एशियाटिक सोसाइटीके आलिम मेम्बरोंको ज़ाहिर करूं, जिनके लिये यह मज़्मून नये सालकी भेटके तौर तय्यार कियागया है.

३. लिखनेवालेकी राय.

मैं नीचे लिखेहुए सुबूतों पर अक्बर जौहरका लिखना सहीह् और यक़ीनके लायक़ मानता हूं.

(१) अक्बर जौहर हर हालमें हमेशा हुमायूंके पास रहता था, और बादशाहको उसपर पूरा एतिबार था.

(२) जब अक्बरके जन्मकी ख़ुशख़बरी हुमायूंके पास पहुंची तो उसवक़ अक्बर जौहर मौजूद था और उसीसे कस्तूरीका नाफ़ा लेकर बादशाहने सर्दारोंको बांटा.

इस हालतमें शाहज़ादे अक्बरका जन्मदिन वह ग़लत नहीं लिख सक्ता.

४. शुब्हेका दूर करना.

(क) यह शक नहीं होसक्ता कि 'तज़्किरतुल् वाक़िआत'के बननेके पीछे नक्ल करनेमें लेखक दोष आगया हो, क्योंकि अक्बर जौहरने जन्मकी तारीख़ व महीना लिखकर शाहज़ादेका नाम 'जलालुद्दीन' (बद्रुद्दीन) रखाजाना १४ वीं तारीख़को जन्महोनेके सबब माना है; जिस दिनका चन्द्रमा पूरा होनेके कारण 'बद्र' कहलाता है.

इससे किसी दूसरी तारीख़के बदलेमें भूलसे १४ वीं तारीख़का लिखाजाना क़ियासमें नहीं आता.

(ख) यह शक भी नहीं होसक्ता कि अक्बरने तख़्तपर बैठकर अपना नाम "जलालुद्दीन" रक्खा हो, क्योंकि जौहरके लिखनेसे यह नाम अक्बरकी पैदाइशके वक़ ही रक्खाजाना पायाजाता है, जो शाहनवाज़ख़ांकी किताब 'मिरात आफ़ताबनुमा' के लेखसे भी सिद्ध होता है, जिसने लिखा है कि-

"क़िला जोयशाही जो अब 'जलालाबाद' के नामसे मश्हूर है शाहज़ादगीके दिनोंमें रोटी खर्चके तौर मुहम्मद हुमायूं बादशाहने अपने बेटे जलालुद्दीन अक्बरको जागीर में इनायत किया था, जिस वक़ कि बादशाहको पठानोंने हिन्दुस्तानसे निकाल दिया और जिसके बाद वह अपने भाइयोंसे लड़कर काबुलका मालिक बन गया था. जिस वक़से कि यह जगह उन (अक्बर) के तअ़ल्लुक़ कीगई, ज़ियादा आबाद होकर 'जलालाबाद' नामसे मश्हूर हुई"- (कल्मी किताब पृष्ठ २१२). इस तरह १४ वीं तारीख़को जन्म होने में जैसा अक्बर जौहरने लिखा है कुछ भी शुब्हा नहीं रहा.

इसके सिवाय 'जौन' मक़ामपर जब हमीदाबानू बेगम और शाहज़ादे अक्बर को बादशाहने अमरकोटसे बुलाया, उस बाबत जौहर अपनी किताबके ४५ वें पृष्ठमें लिखता है कि-

"जौन गांवके पास कई लुटेरे दुश्मनोंसे सामना करना पड़ा; शैख़ अलीबेग उन लोगोंको भगाकर वापस आया, तो बादशाहने गांवके पास एक बाग़में डेरा किया, उसके गिर्द खन्दक़ खुदवाकर एक सर्दारको हुक्म दिया कि शाहज़ादे, औरतों और नौकरोंको 'जौन' में ले आवे- जब शाहज़ादा अमरकोटसे जौनमें पहुंचा और

अपने बुजुर्ग बापकी खिदमतमें इज़्ज़त हासिल की, रमज़ान महीनेकी २०वीं तारीख़ थी. शाहज़ादेकी पैदाइशको ३५ दिन हुए थे कि इस मुलाक़ातका मौक़ा मिला". इस बयानसे शाहज़ादेका जन्म १४ वीं शअ़्बानको होनेमें कुछ शक न रहा; इसी बयान में थोड़ी इबारतके आगे रोज़ा रखनेका हाल है; इसलिये शाहज़ादेके रमज़ान महीने में आनेकी बाबत भी शुब्हा नहीं रहा क्योंकि रोज़ा रमज़ानमें ही रक्खा जाता है.

अब यह बात रहगई कि 'अक्बरनामा', 'तबक़ात अक्बरी' और 'मुन्तख़बुत्तवारीख़' के बनाने वालोंने १४ शअ़्बान शनिवारके एवज़ पांचवीं रजब रविवार क्यों लिखा?

हिन्दुओंको नीचे लिखे हुए श्लोकके अनुसार ९ बातें बतलाना मना है—

आयुर्वित्तं गृहच्छिद्रं मंत्र मैथुन मौषधीं ॥ दान मानापमानञ्च नवगोप्यानि कारयेत् ॥

अर्थात् उम्र, घरका धन, घरके ऐब, मंत्र (वैदिकहों या तांत्रिक), मैथुन, दवा, दान, मान और अपमान; ये ९ बातें गुप्त रखनी चाहियें.

[१ जन्मदिनके बतलानेसे कोई जादूकरके मारडाले; २ घरका धन जानलेनेसे राजा छीनले, या चोरलेजावे; ३ घरका दोष ज़ाहिर करनेमें बेइज़्ज़ती है; ४ मन्त्र दूसरोंको बतलानेसे झूठा होजाता है; ५ मैथुन ज़ाहिरकरनेमें लज्जा है; ६ दवा मालूम होजानेसे बीमारका विश्वास चलाजाता है और शायद दूसरे लोग उसमें विष मिलादें या उसपर जादू करदें; ७ दान प्रसिद्धकरनेसे पुण्य नहीं होता और एक तरह अपनी तारीफ़ करना है; ८ अपना मान ज़ियादा बतलाना घमंड है; ९ अपनी बेइज़्ज़तीका हाल दूसरोंसे कहना लज्जाकी बात है.]

इनमेंसे पहिली बातको अबतक हिन्दुस्तानके बड़े आदमी मज़्बूतीके साथ मानते हैं; सौ में सिर्फ़ दस आदमी, जिनके विचार वर्तमान वक़्के अनुसार होंगे, अपना जन्म दिन दूसरोंको बतलावेंगे—सालगिरहकी खुशी अक्सर ठीक जन्मदिनसे एक या दो दिन आगे पीछे कीजाती है, और अगर इस तरहसे जन्मकी तिथि ज़ाहिर हो जावे तो जन्म संवत् नहीं बतलाया जाता. बड़े आदमियोंकी जन्मपत्रियां बड़े एतिबारी पुरोहितोंके पास रक्खी रहती हैं, जो किसी दूसरेको नहीं बतलाते.

देखागया है कि बाज़े लोग अपने दुश्मनोंको किसी बड़े आदमी पर जादूकरनेका दोष लगाते हैं तो उसको सच ठहरानेके लिये उस आदमीके घरसे, जिसपर अपराध लगाते हैं, कुछ निशानोंके साथ बनीहुई उस बड़े आदमीकी जन्मपत्री और कपड़े का बनाहुआ पुतला निकालनेका सामान करते हैं; इस तरहकी बातें अगले वक़्तोंमें मुग़ल लोगोंमें भी जारी थीं, क्योंकि पहिले हिन्दू (आर्य) उनके साथ तिब्बत वग़ैरामें एक जगह रहते थे.

मेरेमित्र कर्नेल् जॉन् बिडल्फ़ साहिब अपनी किताब 'ट्राइब्ज़ आफ़ दी हिन्दूकुश' (हिन्दू कुशकी कौमोंका हाल) के पृष्ठ ९४ से ९८ तक में लिखते हैं कि "यहांके लोग नक्षत्र, भूकम्प और भूत प्रेत वगैरह के होनेपर यक़ीन रखते हैं". इस लेखसे साफ़ पायाजाता है कि मध्य एशिया और तिब्बतके रहनेवालोंने मुसल्मानी मज़्हब, क़ुबूल करनेपर भी उन दस्तूरोंको नहीं छोड़ा, जो उनके आर्य भाइयों में जारी थे.

मुग़ल लोग बड़े काम करनेके समय शकुन भी लेते थे जैसे--

(१) फ़त्हपुर सीकरीकी लड़ाईके वक्त जो विक्रमी १५८४ [हि० ९३३ = ई० १५२७]में महाराणा सांगा (संग्रामसिंह) और बाबर बादशाहसे हुई थी, शरीफ़ नाम ज्योतिषीने कहा था, कि मंगलका तारा साम्हने है इसलिये बादशाह ज़रूर हारेगा. बाबरने अपना मत्लब बिगड़ता हुआ देखकर उसकी बातको न माना, पर उसकी फ़ौजके लोग नुजूमीकी बातको सच मानकर घबरागये.

(२) जब शाहज़ादा हुमायूं बहुत बीमार पड़ा तो उस वक्त लोगोंने सलाह दी कि शाहज़ादेको आराम होनेके लिये बहुत प्यारी और निहायत क़ीमती चीज़ न्योछावर करनी चाहिये.

बादशाहने शाहज़ादेके पलंगकी परिक्रमा (तवाफ़) करके यह दुआ मांगनी चाही कि बीमारी उसे छोड़कर मुझमें आजावे.

सर्दारोंने इस बातमें बादशाहकी जानका नुक्सान समझकर ऐसा करनेसे मना किया, लेकिन बाबरने न माना. अबुल्फ़ज़्लने इस बातका नतीजा इस तरहपर लिखा है–

"जबसे कि बादशाहने ऐसा काम (तवाफ़) किया उसी वक्तसे बीमारीने शाहज़ादेको छोड़ा और बाबरको घेरा, जिससे उसका इन्तिक़ाल होगया" – (अक्बरनामह जिल्द १ पृष्ठ १४४ – १४५).

(३) शाहज़ादे अक्बरके जन्मसे आठवें महीनेके शुरूमें उसकी धाय जीजी अनूका जो दूसरी धाय माहम् अनूकासे दुश्मनी रखती थी, उसके बारेमें लोगोंने हुमायूं बादशाहसे कहदिया था कि जीजी अनूकाने शाहज़ादेपर जादू करदिया है कि दूसरी औरतका दूध न पीवे; इन बातोंकी फ़िक्र दूरकरनेके लिये जीजी अनूकासे आठ महीनेकी उम्रवाले शाहज़ादेने एकान्तमें कहा कि तू सोच मतकर, मैं तेरेहीपास पर्वरिश पाऊंगा और तेरी औलादको बहुत फ़ायदा पहुंचाऊंगा– (अक्बर नामह जिल्द १ पृष्ठ २२५).

(४) अबुल्फ़ज़्लने एक करामाती छुरीका बयान, जो अक्बरके चौदहवें जुलूसमें कजलीके राजाने बादशाहको भेजी थी, इसतरह पर लिखा है–

"वह छुरी अबतक बादशाही ख़ज़ानेमें मौजूद है और कई बार मैंने हज़्रत बादशाहकी ज़बानी सुना कि दोसौ आदमियोंसे ज़ियादा, जो बीमारीसे मरनेके क़रीब पहुंचे थे, इस छुरीके मल्ने (स्पर्श) से अच्छे होगये"-(अक्बरनामह जिल्द २ पृष्ठ ४३१).

(५) "बादशाहके एक दो लड़केबाले होकर मरगये तो शैख़ सलीम चिश्ती की दुआसे शाहज़ादा सलीम पैदा हुआ, जिसको लोगोंने दो महीने तक अक्बरके सामने नहीं लानेदिया"-(अक्बरनामह जिल्द २ पृष्ठ ४३५). अबुल्फ़ज़्ल इस बातको बनावटके साथ लिखता है, लेकिन यह ज्योतिषीके कहनेसे हुआ होगा.

इसमें कुछ शक नहीं कि बादशाह अक्बर, शैख़ सलीमको करामाती मान्ता था. वह एकबार ख़्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी यात्राको आगरेसे पियादा और उसीतरह चित्तौड़की फ़त्हके बाद मान्ता मानकर (अजमेरकी तरफ़) गया था.

मुग़लोंके एतिक़ादकी ऐसी बातें ज़ियादा लिखना ज़ुरूर नहीं; अस्ल बात यह है कि जब अक्बर बादशाह बालक था उस वक़्से लेकर तख़्तपर बैठनेके बाद तक उसकी मा रक्षा करनेवाली हमीदाबानू मौजूद थी, औरतोंको जादू वग़ैरहमें ज़ियादा यक़ीन होनेके सबब अक्बरका जन्मदिन शायद उसीने छिपाया हो. अबुल्फ़ज़्ल वग़ैरह दूसरे लोगोंको उसीने १४ शअ्बानके बदले ५ वीं रजब बतलाया होगा; क्योंकि अक्बरके जन्मकी मुसीबती हालतमें उसकी जन्म तिथि उनको याद न रही होगी; जो हमीदाबानू बेगमने कहा वह सच मानकर शायद जन्मपत्री बनाई हो; ऐसा भी हो सक्ता है कि 'अक्बरनामह', 'तबक़ात अक्बरी' और 'मुन्तख़बुत्तवारीख़' के बनानेवालों ने अक्बरकी हिफ़ाज़तके वास्ते ख़ैरख़्वाही दिखानेको जान बूझकर दूसरी तारीख़ (१) लिखी हो, क्योंकि ४० वर्षकी उम्र तक ख़ुद अक्बर भी ज़ईफ़ एतिक़ादवाला (भ्रम रखने वाला) था.

यह भी शुब्हा किया जासक्ता है कि बादशाह जलालुद्दीन मुहम्मद अक्बरके जन्मका हाल, जो तज़्किरतुलवाक़िआतमें अक्बर जौहरने लिखा है, उसपर लोगोंका ख़याल क्यों नहीं गया?

अक्बर जौहर एक सीधा सादा कमदरजेका आदमी, अपना काम चलानेके लायक़ पढ़ा लिखा था, अपनी समझके मुवाफ़िक़ जैसा देखा वैसा लिखदिया.

---

(१) इस बाबत अबुल्फ़ज़्लकी यह बात सच मालूम होती है, जो अक्बरकी कई जन्मपत्रियां लिखकर यह राय ज़ाहिर करता है- कि "ऐसे कुद्रतके नमूने (अक्बर) का-हाल हर एक आदमीको न जानना ही अच्छा है".

उस ज़मानेके दूसरे किताब बनाने वालोंकी तह्रीर के मुवाफ़िक़, जिनका रिवाज ज़ियादा था, जौहरकी लिखावट साफ़ और उम्दा नहीं थी.

उसके मरने बाद बहुत वर्ष तक उसकी किताब छिपेहुए ख़ज़ानेकी तरह पड़ी रही; जब यूरोपके होश्यार लोगोंने पुरानी किताबोंका खोज लगाया तो यह किताब भी क़द्रके लायक़ समझी गई, और लोगोंमें मश्हूर हुई, जिसका नतीजा यह निकला कि इसकी क़ल्मी लिखीहुई जिल्दें मिलती हैं.

अक्बर जौहरको बादशाहका जन्मदिन बदलनेसे कुछ ग़रज़ नथी, क्योंकि वह अपने तौरपर बग़ैर किसीकी ख़ुशामदके हाल लिखता था और जन्मतिथि ज़ियादा तफ्सीलके साथ लिखी है.

इस लिये मेरी रायमें अक्बर बादशाहका जन्म हिज्री सन् ९४९ ता० १४ शअ्‌बान शनिवार [विक्रमी १५९९ मार्गशीर्ष शुक्ल १५ = ई० १५४२ ता० २३ नोवेम्बर] को हुआ, जैसा कि 'तज्किरतुल वाकिआत' में लिखा है.

उम्मेद है कि सोसाइटीके लायक़ मेम्बर इसकी बाबत अपनी राय ज़ाहिर करेंगे; और जो उसमें कुछ ज़ियादा मज़्बूती पाईजायगी तो मैं उसे धन्यवादके साथ अपनी किताबमें लिखूंगा-

कविराज-

श्यामलदास. (१)

(१) हमने इस लेखका अंग्रेज़ी तर्जुमा अपने कारख़ानेके अहलकार बाबू रामप्रसादसे कराकर सोसाइटीमें भेजा था.

छन्द गीतिका.

वसु नैन अंग शशांक वत्सर रान ऊदल पात भो ।
जगमाल गद्दिय बैठ ताहि उठाय पातल नाथ भो ॥
फिर कच्छ राजकुमार मानहि रान भोजन कैनकों ।
बढ़ि क्रोध त्यों भगवानदास महीप मेलन व्हैनकों ॥ १ ॥
बनि घोर युद्ध अथोर पातल मान हरदीघाट पैं ।
तब क्रोध बोधहि सोध शाह अनेक जोधन दाट पैं ॥
मेवार आगम धार दुग्ग पहार घेरन फेरको ।
भटसेन साजरु शाहबाज बिरोध कुम्भलमेरको ॥ २ ॥
इसलाम और प्रताप युद्ध विरुद्ध सेन पलायकें ।
लघु सब्ज़ खेत निहार खेतियकार मार मलायकें ॥
जगमाल अर्बुद नाथ होय विरोध जुज्झ शताप भो ।
परलोक बास प्रताप तें इसलाम सेन अताप भो ॥ ३ ॥
इतिहास अक्बरशाह रीतिरु नीति प्रीति बिलेखतें ।
उर वृत्त सज्जन रान होन प्रकाश लेखन लेखतें ॥
कविराज श्यामलदासने फतमाल शासन मानकें ।
यह ग्रन्थ वीर विनोद खंड प्रताप पूरन ठानिकें ॥ ४ ॥

महाराणा प्रतापसिंह–चतुर्थ प्रकरण समाप्त.
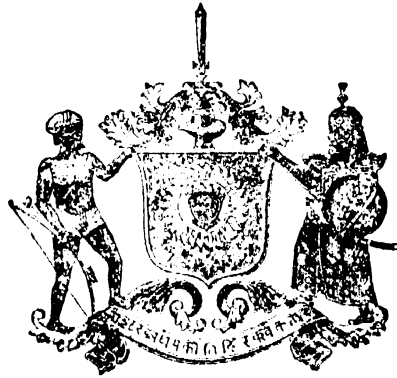
महाराणा अमरसिंह अव्वल- पञ्चम प्रकरण.

इन महाराणाका राज्याभिषेक विक्रमी १६५३ माघ शुक्ल ११ [हि० १००५ ता० ९ जमादियुस्सानी = ई० १५९७ ता० २९ जैन्यूअरी] को चावंडमें हुआ, जिस का वृत्तान्त इस तरह पर है-कि गद्दीपर बैठते ही इन्हें महाराणा प्रतापसिंहकी वह बात याद आई जो उन्होंने तानेके साथ मुसल्मानोंकी नौकरी करने व ख़िलअ़त पहरनेके बारेमें कही थी.

गद्दी बैठनेके वक़्से ही महाराणा अमरसिंहने तलवारसे लड़ाईके सिवाय और दूसरे सब काम मुल्तवी रक्खे. पहिले इन्होंने कुल्ल बादशाही थाने उठाकर मेवाड़में अपना अमल जमाया, जिसका हाल बादशाहने भी सुना.

बादशाह अक्बर महाराणा प्रतापसिंहके देहान्तका हाल सुनकर बहुत फ़िक्र और हैरानीके साथ चुप होरहा. यह हाल देखकर सब दर्बारी लोगोंको बड़ा अचम्भा हुआ, कि महाराणा प्रतापसिंहके मरनेसे बादशाहको खुश होना चाहिये न कि उदास! उस समय चारण दुरसा आढ़ाने एक छप्पय मारवाड़ी भाषामें कही, जिसका ज़िक्र सुनकर बादशाहने उसे रूबरू बुलाया और उस छप्पयको सुना, लोगोंने जाना कि बादशाह दुरसासे ज़रूर नाराज़ होगा, परन्तु अक्बरने इनआम देकर कहा कि इस चारणने प्रतापसिंहके मरने पर मेरे दिलगीर होनेके सबब को ज़ाहिर करदिया- वह छप्पय यह थी:-

छप्पय.

अश लेगो अण दाग, पाघ लेगो अण नामी।
गो आडा गवड़ाय, जिको बहतो धुर बामी॥
नव रोजे नह गयो, नगो आतशां नवल्ली।
न गो झरोखा हेठ, जेथ दुनियाण दहल्ली॥
गहलोत राण जीती गयो, दसण मूंद रशणा डसी।
नीशास मूक भरिया नयण, तोमृत शाह प्रतापसी॥१॥

अर्थ— अपने घोड़ोंको दाग़ (१) नहीं लगवाया, अपनी पाघ (सिर) को किसीके सामने नहीं झुकाया, आड़ा (२) गवाता हुआ चलागया, जो कि हिन्दुस्तानके भारकी गाड़ीको बांई तरफ़से खेंचनेवाला था (३) "नौ रोज़" के जल्सेमें कभी नहीं गया, नये आतश (बादशाही डेरों) में नहीं गया, और ऐसे झरोखेके नीचे नहीं आया जिसका रोब दुन्यापर ग़ालिब था. इस तरहका गहलोत (राणाप्रतापसिंह) फ़त्हयाबीके साथ गया, जिससे बादशाहने ज़बानको दांतोंमें दबाया, और वह ठंडा श्वास लेकर आंखोंमें पानी भरलिया. ऐ प्रतापसिंह! तेरे मरनेसे ऐसा हुआ.

जब महाराणा अमरसिंहका ज़ोरशोर बादशाहने बहुत दिनोंतक सुना, तो विक्रमी १६५५ [हि० १००७ = ई० १५९८] में मेवाड़पर चढ़ाई की, और महाराणा भी साम्हना करनेकी तय्यारीमें मश्गूल हुए. पहिले बादशाहने फ़ौज भेजी और फिर आप उदयपुरकी तरफ़ चला. महाराणाने बादशाही फ़ौजपर कई बार हम्ले किये और बहुतसे बादशाही परगने लूटकर पहाड़ोंमें चलेआये. इनका काम यही था कि धावा मारकर पहाड़ोंमें चले आवें.

---

(१) बादशाही दस्तूरसे उन घोड़ोंके पुट्ठेपर दाग़लगाया जाता था, जो बादशाही फ़ौजोंमें नौकरी देते थे.

(२) राजपूतानामें अबतक रिवाज है कि-ऐसी शाइरी कीजाती है-जिसमें उससे अदावत रखनेवाले पर ताना हो- इसतरहके सोरठे प्रतापसिंहके साम्हने ढोली गायाकरते थे, जैसा कि-

सोरठा.

अक्बर घोर अंधार, ऊंघाणा हीन्दू अवर॥
जागे जग दातार, पोहोरे राण प्रतापसी॥१॥
अइरे अकबरियाह, तेज तुहालो तुर्कड़ा॥
नय नय नीसरियाह, राण बिना शहराजवी॥२॥

(३) बहादुर राजपूतोंको राजपूतानाके कवी यह उपमा देते हैं.

बादशाही फ़ौजके क़ाबूमें महाराणा नहीं आये, तब बादशाह तो दक्षिणकी तरफ़ ग़द्र सुनकर चलेगये और शाहज़ादे सलीमको राजा मानसिंह कछवाहे समेत अजमेरमें छोड़ा, परन्तु शाहज़ादा आगरे होताहुआ प्रयागको चलागया और यहां बादशाही फ़ौजके ऊंटाला, मोही, मदारिया कोशीथल, बागौर, मांडल, मांडलगढ़ और चित्तौड़, वग़ैरहमें थाने बैठगये.

विक्रमी १६५७ [हि० १००९ = ई० १६००] में महाराणा अमरसिंहने मेवाड़के बादशाही थानोंपर हम्ला करनेकी तय्यारी करके पहिले ऊंटालेके थानेदार क़ायमख़ां मुग़लपर चढ़ाई की और ग्राम ऊंटालेको घेरलिया. शाही फ़ौजके बहादुरों ने भी लड़ाईके लिये महाराणाकी पेशवाई की और खूब मुक़ाबला होकर सैकड़ों आदमी दोनों तरफ़के मारेगये; क़ायम ख़ान् मुग़लको ख़ुद महाराणाने मारा, बहुतसे आदमी शाही फ़ौजके भागकर बिखरगये और बहुतसोंने ऊंटालेकी गढ़ीका सहारा लिया. जब महाराणाने अपने बहादुर राजपूतोंको क़िलेपर हम्ला करनेका हुक्म दिया, तो शाही मुलाज़िमोंने भी क़िलेसे तीर बन्दूक़ चलाना शुरू किया, जिनसे मेवाड़की फ़ौजके सैकड़ों आदमी निशाना बनकर मारेगये (१).

महाराणाकी फ़ौजमें क़ायदा था कि हरावलमें चूंडावत और चन्दावलमें (याने फ़ौजके पीछे,) शक्तिसिंहके बेटे पोते शक्तावत रहें. इस बातसे चूंडावत हरएक बात में शक्तावतोंको ताना दियाकरते थे. इसवक़ महाराणा अमरसिंहने हुक्म दिया कि पहिले ऊंटालेके क़िलेमें जो हमारी फ़त्हका निशान क़ायम करेगा उन्हींके नामपर हरावल होगी. यह हुक्म सुनकर शक्तावत व चूंडावत दोनों गिरोहके सर्दार अपनी अपनी जमइयत सहित क़िलेकी तरफ़ चले. बल्लू शक्तावत तो दर्वाज़ेकी तरफ़ गया और रावत जैतसिंह कृष्णावत दीवारकी तरफ़. बल्लू शक्तावतने अपने हाथीके महावत से कहा कि हाथीको हूलकर दर्वाज़ेके किवाड़ तुड़वा. हाथीवानने कहा कि हाथी मुकना (बिना दांतका) है और किवाड़ोंमें भाले लगे हैं, इसलिये टक्कर नहीं मारता. रावत बल्लूने किवाड़के भालोंपर खड़े होकर हाथीवानको कहा कि मेरे बदनपर हाथीको हूलदे, नहीं तो तुझको मारडालूंगा; उसने वैसाही किया. जब कि बल्लूके बदनपर हाथी झुका तो उसी वक़ रावत जैतसिंह कृष्णावत सीढ़ी लगाकर दीवारपर चढ़ा, और क़िलेवालोंकी तरफ़से उसकी छातीमें गोली लगी; जब सीढ़ीसे गिरनेलगा तो अपने साथियोंसे कहा कि मेरा सिर काटकर क़िलेमें फेंकदो, जिसपर उसके राजपूतोंने वैसाही किया, और सीढ़ियोंसे चूंडावत क़िलेपर चढ़गये, शक्तावत भी किवाड़ तोड़कर

---

(१) अमर काव्यमें यह हम्ला संवत् १६६४ वि० के बाद लिखा है.

भीतर चलेआये, क़िला फ़त्ह हुआ, शाही मुलाज़िम अक्सर मारेगये और बहुतसे पकड़ लियेगये. शक्तावत और चूंडावतोंकी महाराणाने तारीफ़ करके इज़्ज़तें बढ़ाई, और हरावल चूंडावतों की साबित् रही. इस लड़ाईमें रावत जैतसिंह, शक्तावत बल्लू, रावत तेजसिंह खँगारोतके सिवाय और भी बहुतसे बहादुर मारेगये.

इसके बाद महाराणा अमरसिंह यहांसे कूच करके मांडल और बागौर वग़ैरह के थाने उठातेहुए मालपुरे तक पहुंचे. बाज़े शाही थानेदार लड़े और बाज़े भागकर अजमेर चलेगये.

यह ख़बर बादशाह अक्बरने सुनकर मिर्ज़ा शाहरुख़को बड़ी फ़ौजके साथ मेवाड़की तरफ़ बिदा किया. महाराणा मालपुरेसे पीछे लौटकर उदयपुर चलेआये. बादशाहको उग्रसेन रावल बांसवाड़े वालेपर ज़ियादा गुस्सा आया, क्योंकि पेश्तर डूंगरपुर और बांसवाड़े (बांसवाला) के दोनों रावल बादशाह अक्बरके नौकर होचुके थे; और मानसिंह, जो बांसवाड़ेका मालिक बनगया था उसको उठाकर महाराणा प्रतापसिंहने रावल उग्रसेनको गद्दीपर बिठाया था; इसलिये उग्रसेन महाराणाकी फ़ौजमें रहकर शाही मुलाज़िमोंपर हमेशा हम्ला करतारहा, और इस वक्त भी उसने सबसे बढ़कर बहादुरी दिखलाई, जिसपर बादशाहने शाहरुख़को हुक्म दिया कि उग्रसेनको बहुत बड़ी सज़ा देकर उसका मुल्क छीनलेना चाहिये. शाहरुख़ने राजा भारमल्लके बेटे राजा जगन्नाथ आंबेर वालेको बहुतसी फ़ौज देकर मांडलके थानेपर मुक़र्रर किया और आप चित्तौड़ होताहुआ बांसवाड़े पहुंचा. वहां रावल उग्रसेनने साम्हना किया जिसमें सैकड़ों राजपूत और मुसल्मान मारेगये. शाहरुख़ फ़त्ह पाकर बांसवाड़ेमें ठहरा और रावल उग्रसेनने वहांसे निकलकर शाही मुल्क मालवेको लूटना शुरू किया, बहुतसे शाही मुलाज़िमोंको मारा और रअ़य्यतसे दण्ड लिया. यह ख़बर सुनकर शाहरुख़ अपनी फ़ौज समेत मालवेकी तरफ़ चला, और रावल उग्रसेनने मालवेसे लौटकर अपने मुल्कपर क़ब्ज़ा करलिया; शाहरुख़ने फिर पहाड़ोंकी तरफ़ रुख़ न किया.

अब थोड़ासा हाल महाराज सगरका लिखाजाता है, जो महाराणा प्रतापसिंह के समयमें नाराज़ होकर दिल्ली चलेगये थे:-

महाराज जगमाल महाराणा उदयसिंहके बेटे, महाराणी भटियाणीके गर्भसे थे, जिनका जन्म विक्रमी १६११ प्रथम आषाढ़ कृष्ण ५ रविवार [हि० ९६१ ता० १९ जमादियुस्सानी = ई० १५५४ ता० २२ मई] को, और सगर उनके छोटे भाई का जन्म विक्रमी १६१३ भाद्रपद कृष्ण ३ [हि० ९६३ ता० १७ रमज़ान = ई० १५५६ ता० २५ जुलाई] को हुआ था.

जब महाराज जगमाल, जिनका ज़िक्र ऊपर होचुका है, सिरोहीमें राव सुल्तानसे लड़कर मारेगये, तो उनके छोटे भाई सगर महाराणाके ही पास रहे. महाराणा अमर सिंहने अपनी बाईका सम्बन्ध करनेके लिये सिरोहीके राव सुल्तानको कहलाया. यह बात सुनकर महाराज सगरने महाराणा प्रतापसिंहसे अर्ज़ की- कि हमने भी इसी घरमें जन्म लिया है, आप हमारे मालिक और हम आपके ताबेदार भाई हैं, मेरे बड़े भाई जगमाल, जिनको सिरोहीके राव सुल्तान व देवड़ा समरा, सूराने मारडाला, उनकी चिता हमारे कलेजेमें जलरही है और आप अपनी बाईका सम्बन्ध हमारे दुश्मन, सिरोहीके रावके साथ करते हैं, तो हमारा बैर लेनेवाला कौन है ? यह सुनकर महाराणा प्रतापसिंहने (जगमालके गद्दी नशीन होनेकी बातको याद करके) फ़र्माया कि कुछ सीसोदिये हमारे भाई हैं, जिनमेंसे बहुतसे मारेजाते हैं, हम किस किसका बैर लेतेफिरें, सिवाय इसके हम राजाओंके सामने सब राजपूत बराबर हैं. सगरने उठकर सलाम किया कि हमको रुख़सत हो, महाराणाने फ़र्माया कि बेशक चलेजाओ, तुम्हारे जानेसे हमारा कुछ हर्ज नहीं. लेकिन् इस तर्ज़पर जाना जभी समझाजावे कि आप खुद अपने पराक्रमसे नामवरी हासिल करें, वर्ना ज़ाहिर है कि हमारे घरानेके नामसे दिल्ली जाकर मुसल्मानोंकी नौकरी करके पेट भरोगे.

इस बातको सुनकर सगर चुपचाप अपने मकानपर चलेआये, किसीको कुछ भेद न दिया, आधी रातके वक्त अकेले एक तलवार हाथमें लेकर पैदल ही चलदिये, और आंबेरके कुंवर मानसिंहके सिपाहियोंमें जाकर नौकरी करली. बहुत अर्सा गुज़र जानेके बाद एक दिन सगर आंबेरके महलोंके नीचे रातके वक्त पहरा दे रहे थे, और राजा मानसिंह महाराणी भटियाणीके साथ महलमें सोते थे. यह भटियाणी रावल लूणकरण भाटी की उन दो बेटियोंमेंसे एक थी, जिनमेंसे बड़ी बहिनकी शादी महाराणा उदयसिंहके साथ हुई थी, और जिनके गर्भसे जगमाल, सगर वगैरह पांच बेटे पैदा हुए; और छोटीकी शादी मानसिंहके साथ की थी; सो वही भटियाणी सगरकी मौसी कुंवर मानसिंहके पास मौजूद थी. अंधेरी रातके समय मेह मूसलाधार बरसरहा था, महलकी छतके पर्नालेका पानी नीचे पत्थरोंपर गिरनेसे सख़्त आवाज़ सुनकर सगरने दिलमें सोचा कि इस वक्त कुंवर और कुंवरानी दोनों खुशीमें हैं, इस पर्नालेके पानीकी आवाज़ उनको बे शक बुरी मालूम होती होगी; सगरने घोड़ोंके पायगाहसे घास लाकर उस पानीकी धारके नीचे डालदी, जिससे वह आवाज़ बन्द होगई. कुंवरने लौंडियोंसे पूछा कि क्या पानीका बरसना बन्द होगया? उन्होंने कहा कि नहीं हुआ, तब कुंवरने आप उठकर झरोखेसे निगाह डाली तो बिजलीकी रौशनीसे पर्नालेकी धारके नीचे घास पड़ी हुई दिखाई दी; उस सिपाहीकी इस कार्रवाईसे खुश हुए और सोचा कि यह आदमी ग़रीब सिपाही नहीं है,

किसी बड़े घरानेका बेटा या किसी अमीरका ख़ास मुसाहिब है, जो किसी आफ़तसे इस नौबतको पहुंचा है; एक लौंडीसे फ़र्माया कि नीचे जाकर इससे दर्याफ़्त कर कि तेरा नाम, ग्राम और ख़ान्दान क्या है ? उसने दर्याफ़्त किया तो सगरा सीसोदिया मालूम हुआ; मानसिंहको शक हुआ कि महाराज सगर तो नहीं हैं; तब कुंवरानीने अपनी धायको भेजा, जो सगरको बचपनसे पहचानती थी, उसने भटियाणीके हुक्मसे उसको जाकर आवाज़ दी कि तुम्हारा नाम क्या है ? सगरने जवाब दिया कि तुम को मेरे नामसे क्या काम है ? अगर कोई काम हो तो कहो. उनकी आवाज़ पहचानकर धाय नज़्दीक गई और रौशनीसे पूरा पहचानकर गले लिपटगई, और कहा कि ओ हो लालजी तुम्हारी यह क्या हालत है !

धायकी यह आवाज़ सुनकर कुंवर मानसिंह भी नीचे दौड़आये और सगरका हाथ पकड़कर महलमें लेगये जहां सब हाल दर्याफ़्त किया; सगरने जो गुज़रा था कह सुनाया और इसके बाद अपनी मौसीसे मिले. मानसिंहने पोशाक मंगाकर उनको पहनाई और ज़ाहिरा अपने पास रखनेलगे, कुछ अर्से बाद महाराज मानसिंह बादशाही खिद्मतमें दिल्ली जानेलगे, तब सगरसे कहा कि आप अगर अपने दिलकी मुराद पूरी करना चाहें तो बग़ैर बादशाही नौकरीके कुछ भी नहीं होसक्ता- यह समझाकर अपने साथ लेगये, और सगरने बादशाहके सामने भी अपनी सब सरगुज़श्त कह सुनाई, जिसपर बादशाहने फ़र्माया कि हम अपनी मिहर्बानीसे तुम्हारी मुराद पूरी करेंगे.

देवड़ा बिजा भी महाराज सगरके पास हाज़िर होगया था; एक दिन बादशाह ने जोधपुरके महाराज उदयसिंहसे, जिनको मोटा राजा भी कहते थे, फ़र्माया कि हम जामबेगको तुम्हारे साथ फ़ौज देकर भेजते हैं और सगर भी तुम्हारे साथ जावेगा, तुम्हारे भतीजे रायसिंह चन्द्रसेणोत और सगरके भाई जगमालको सिरोहीके देवड़ों ने मारडाला था, सो तुम लोग भी शाही मदद लेकर उनको बर्बाद करो. जब महाराज उदयसिंह, सगर, जामबेग व देवड़ा बिजा फ़ौज लेकर सिरोही आये तो वहां राव सुल्तानने इनसे लड़ाई की, जिसमें देवड़ा समरा नरसिंहोत बड़ी बहादुरीसे लड़कर मारागया और देवड़ा पत्ता सावन्तसिंहोत, तोगा सूरावत और चीबा व जैता खिमावत बहुतसे राजपूत राव सुल्तानके मातहत मारेगये, उसवक्त राव सुल्तान निकलकर पहाड़ोंमें चलागया और देवड़ा बिजा मारागया; तब सगर अपने घायल राजपूतोंको उठाने और दुश्मनके ज़ख़्मियोंको मारने लगा. राव सुल्तानके नेगी चारण दुरसा आढ़ाको ज़ख़्मी पड़ाहुआ देखकर सगरने कहा कि यह कोई

देवड़ोंका बड़ा सर्दार है, इसको भी दूध पिलाना (१) चाहिये, तब दुरसाने कहा कि मैं चारण हूं, तुमको राजपूत होकर मेरा मारना उचित नहीं, सगरने कहा कि सम्धी थोड़े जीनेके वास्ते दूसरेकी औलाद बनना बहादुरोंका काम नहीं है! इसपर दुरसाने कहा कि सचमुच मैं चारण हूं. सगरने जवाब दिया कि तुम सच ही चारण हो तो यह समरा देवड़ा जो अभी अच्छी तरह बहादुरीसे मारागया है उसकी तारीफ़में कोई दोहा कहो, उसने उसी वक् मारवाड़ी भाषामें यह दोहा कहा–

दोहा.

धर रावां जश डूंगरां, वृद पोतां सत्र हाण॥
समरे मरण सुधारियो, चहुं थोकाँ चहुँवाण॥ १ ॥

अर्थ–समराने चारों तरहसे अपना मरण सुधारा, सिरोहीके रावोंकी ज़मीन मज्बूत की, पहाड़ोंकी तारीफ़ करवाई कि जिनमें रहकर कई लड़ाइयां कीं, और अपने बेटे पोतोंको इस बातका अभिमान दिया कि हमारा बुज़ुर्ग नाम्वर था, और दुश्मनों को नुक्सान पहुंचाया.

सगरने दुरसाको पालकीमें बिठाकर उसकी हिफ़ाज़त करवाई. सिरोहीके मुल्कको तहसनहस करके महाराज उदयसिंह जोधपुर और महाराज सगर दिल्ली गये, बादशाह अक्बरने इनको अपने पास रक्खा और फ़र्माया कि तुमको हम उदय-पुरका राणा बनादेवेंगे, क्योंकि तुम्हारे भाई जगमालकी यही मुराद थी जो कि पूरी न हुई.

अब यह काम तुम पूरा करो और राणा अमरसिंहको अपना ताबेदार बनाओ, आजसे हमने तुमको 'राणा' का ख़िताब दिया.

महाराज सगरने आदाब बजालाकर नज़्र दी, लेकिन् ख़िताब राणाका नाम मात्र के लिये था. अक्बरने मेवाड़की तरफ़ फिर कोई बड़ी चढ़ाई नहीं की, इससे महाराणा अमरसिंहको फ़ुरसत मिली और मेवाड़को आबाद करने लगे. फिर बादशाह अ-क्बरका देहान्त होगया जिसका ब्योरेवार हाल ऊपर लिखागया है.

अक्बरके बाद शाहज़ादा सलीम तरूतपर बैठा और उसने अपना लक़ब "नूरु-द्दीन मुहम्मद, जहांगीर" रक्खा. उसने तरूतपर बैठते ही अपने बापकी उस उम्मेद को जिसे वह दिलमें रखकर मरा था, याद किया और कहा कि उदयपुरके राणाकी मुहिम् मेरे बापने मेरे नाम लिखदी थी, इसलिये मुझे ज़रूर है कि पहिले इसी काम

(१) दूध पिलानेसे इशारा मारनेका है, कि हिन्दुओंके एतिक़ादसे यह शरीर छोड़कर दूसरा जन्म लेवे और अपनी माका दूध पीवे.

को करूं. और ऐसा दस्तूर भी है कि जब कोई राजा या बादशाह तख़्तनशीन होता है तो अपना रोब जमानेके लिये किसी कठिन कामपर हाथ डालता है.

बादशाह जहांगीरने विक्रमी १६६२ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष [हि० १०१४ रजब = ई० १६०५ नोवेम्बर] में अपने शाहज़ादे पर्वेज़को महाराणा अमरसिंहपर लड़ाईके लिये भेजा और उसके साथ नीचे लिखेहुए सर्दार किये.

आसिफ़ख़ां वज़ीर, अब्दुर्रज़्ज़ाक़ मअ़मूरी बख़्शी, आसिफ़ख़ांका चचा दीवान मुख़्तारबेग, राजा भारमल्लका बेटा जगन्नाथ, महाराणा उदयसिंहका बेटा राणा सगर, राजा मानसिंह कछवाहेका भाई माधवसिंह, रायसाल शैख़ावत, शैख़ रुक्नुद्दीन पठान, शेरख़ां, अबुल्फ़ज़्लका बेटा शैख़ अब्दुर्रहमान, राजा मानसिंहका पोता महासिंह, सादिक़ख़ांका बेटा ज़ाहिदख़ां, वज़ीर जमील, क़राख़ां तुर्कमान, मनोहरसिंह (१) शैख़ावत और १००० अहदी; इन सबको अपने अपने लश्करों समेत शाहज़ादेके साथ करदिया. बादशाह जहांगीर अपनी किताब 'तुज़क जहांगीरी' में लिखता है कि "मेरे बापकी आर्ज़ू पूरी करनेके लिये मेरे जुलूसके मौक़ेपर बड़े बड़े मन्सबदार मए अपनी जमइयतोंके एकट्ठे होगये थे, उन सब उमरावोंको मैंने इस बड़ी मुहिमपर भेजदिया".

इस तरह पर्वेज़ने मेवाड़पर चढ़ाई की. महाराणा अमरसिंहने पहिले तो अपने देशको ऊजड़ करदिया कि जिससे शाही लश्करको कोई रसद खाने पीनेकी न मिले. जब शाहज़ादे पर्वेज़की फ़ौजके कई हिस्से होकर अजमेरसे मेवाड़की तरफ़ रवाना हुए, तो महाराणाके बहादुर राजपूतोंने भी देसूरी, बदनौर, मांडल, मांडलगढ़, चित्तौड़की तलहटीकी शाही फ़ौजोंपर हमला करना शुरू किया. इन लड़ाइयोंमें मांडलपर अचलदास चूंडावत व बसीके पहाड़ोंमें जयमल्ल सांगावत वग़ैरह बहुतसे राजपूत दुश्मनोंको मारकर मारेगये, और शाहज़ादे पर्वेज़ने शाही हुक्मके मुवाफ़िक़ राणा सगरको चित्तौड़पर राणा बनाकर गद्दी बिठाया, और अपने दादा अक्बरके बचनको पूरा किया. सगर भी अपने बड़े भाई जगमालका इरादा पूरा करनेके

---

(१) यह राव मनोहर सिंह फ़ार्सी ज़बान खूब जानता था, और उसमें शाइरी भी करता था, जिसका एक शेअ़्र बादशाह जहांगीरने तारीफ़के साथ अपनी किताबमें लिखा है-

शेअ़्र--ग़रज़ ज़ि ख़िल्क़ति सायह हमीं बुवद कि कसे, * ब नूरि हज़्रति ख़ुर्शेद पाय ख़ुद न निहद.*

अर्थका दोहा.

चरण दैन रवि किरणपै दोषजान करतार ॥
यह छाया पैदा करी हरज मिटावन हार ॥
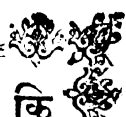
लिये मेवाड़के राजा बनकर चित्तौड़पर चंवर उड़वाने लगे, लेकिन यह ऐसे राजा थे कि 'काग हंसकी चाल चलनेलगा, सो अपनी भी भूलगया'; क्योंकि जो मेवाड़के तह्तका आबाद मुल्क था जैसे बदनौर, हुरड़ा, मांडल, जहाज़पुर, मांडलगढ़, वह सब तो बादशाही ख़ालिसेमें शुमार कियागया, और चित्तौड़से पश्चिमी देश मेवाड़का हिस्सा बिलकुल वीरान पड़ा था, केवल पहाड़ी मुल्क महाराणा अमरसिंहके क़ब्ज़ेमें रहा, फ़क़त् चित्तौड़से पूर्वी इलाक़ा कुछ खैराड़, आंतरी और थोड़ासा मालवेका टुकड़ा सगरकी जागीरमें था. बादशाही मुलाज़िमोंने कहा कि हम मददगार हैं अपने मुल्कको आबाद करके आप क़ब्ज़ेमें लाओ, लेकिन् सगरसे यह कब होसक्ता था.

चित्तौड़ और उदयपुरके बीचकी ज़मीनको तो राजपूत और मुसल्मान बहादुरोंके बलिदानकी भूमि कहना चाहिये, क्योंकि कोई दिन ऐसा नहीं जाता था कि मेवाड़ी राजपूतोंने शाही मुलाज़िमोंपर हम्ला न किया हो. गुजरात, मालवा व अजमेरका शाही मुल्क लूट लूट कर मेवाड़ी राजपूत अपना और अपने मालिकका खर्च चलाते थे. कभी शाही फ़ौजके बहादुर पहाड़ोंमें घुसकर राजपूतोंको क़ैद व क़त्ल करते थे, कभी मेवाड़ी बहादुर बादशाही बहादुरोंको मारकर हटादेते थे.

विक्रमी १६६३ के चैत्र शुक्लपक्ष [हि० १०१४ ज़िलहिज = ई० १६०६ मार्च] में शाहज़ादा पर्वेज़ चारों तरफ़की शाही फ़ौजको मिलाकर ऊंटाला, और देबारी (देवड़ाबारी) के बीच आया. महाराणा अमरसिंहने भी अपने कुल राजपूतोंको एकट्ठा करके शाही फ़ौजपर हम्ला करनेका विचार किया. पानड़वाके भील सर्दार पूंजा राणाके बेटेको हज़ारों भीलोंका अफ़्सर बनाकर पहाड़ोंमें अपनी फ़ौजका मददगार और शाही फ़ौजकी रसद लूटने पर नियत किया. रातके वक़् शाही फ़ौजपर महाराणा अमरसिंहने हम्ला किया. इस हम्लेसे दोनों तरफ़के बहादुरोंने अपने खूनसे ज़मीनको लाल करदिया, और बादशाही फ़ौजका बहुत नुक़्सान हुआ, शाहज़ादा पर्वेज़ भागकर मांडलकी तरफ़ चलागया.

इस लड़ाईका ज़िक्र फ़ार्सी तवारीखोंमें कहीं भी नहीं लिखा, सिर्फ़ बहुतसे हम्लोंका होना बयान करके विक्रमी १६६३ के वैशाख [हि० १०१५ के मुहर्रम = ई० १६०६ एप्रिल] में लिखा है– कि जहांगीरने पर्वेज़को खुस्रौके फ़सादसे आगरेकी हिफ़ाज़तके लिये बुलालिया, सो वह मेवाड़की मुहिम्पर बादशाही फ़ौज बाज़े सर्दारोंके सुपुर्द करके महाराणा अमरसिंहके बेटे बाघसिंहको लेकर लाहौरमें हाज़िर हुआ. बल्कि जहांगीर बादशाहने अपने तुज़कमें शाहज़ादे पर्वेज़की इस लड़ाईमें फ़त्ह लिखी है, लेकिन् इस लड़ाईका हाल राजपूताना

की बहुतसी पोथियोंमें लिखा है जिसकी तस्दीक़ ईस्ट इंडिया कम्पनीके मुलाज़िम लेफ़्टिनेएट कर्नेल् अलिग्ज़ैएडर डाऊकी हिन्दुस्तानकी तवारीख़की तीसरी जिल्दके ४३ वें एष्ठसे स्पष्ट है, बल्कि डाऊ साहिब लिखते हैं कि जहांगीर ने पर्वेज़से बहुत नाराज़ होकर उसको वली अहदीके हक्क़से ख़ारिज करदिया, और शाही मुलाज़िमोंने जुदी जुदी चिट्ठियां बादशाहको लिखीं, जिनमें एक दूसरेका क़ुसूर ज़ाहिर करता था.

कर्नेल् टॉड साहिब भी कर्नेल् डाऊ साहिबके मुताबिक़ ही पर्वेज़का शिकस्त खाना अपनी किताबमें लिखते हैं, लेकिन हमारे बर्ख़िलाफ़ वह इस लड़ाईका होना खमनोर मुतअ़ल्लिक़ कुम्भलमेर पर लिखते हैं.

सगर महाराजने चित्तौड़पर नये उमराव और सर्दार बनाना शुरू किया; महाराणा उदयसिंहके परपोते शक्तिसिंहके पोते अचलदासके बेटे नारायणदासको बेगूं ८४ गांवों और रत्नगढ़ ८४ गांव समेत जागीरमें दिया. बादशाह जहांगीरने मुइज़्ज़ुल् मुल्कको बख़्शी बनाकर मेवाड़पर भेजा. इसी फ़ौजने मिर्ज़ा शाहरुख़के बेटे बदीउज़्ज़मांको गिरिफ़्तार किया, जो मालवेमें कुछ फ़साद उठाकर महाराणा अमरसिंह से मिलना चाहता था. इस फ़ौजने भी बहुतसी दौड़ धूप की लेकिन अस्ली मत्लब बादशाहका पूरा नहीं हुआ. तब बादशाह जहांगीरने विक्रमी १६६५ चैत्र शुक्लपक्ष [हि० १०१६ ज़िलहिज = ई० १६०८ मार्च] में महाबतख़ांको नीचे लिखीहुई बड़ी जर्रार फ़ौज देकर मेवाड़ पर भेजाः-

१२००० जंगी सवार और सर्दार लड़नेवाले, ५०० पैदल, २००० बर्क़न्दाज़, और १७ तोप गजनाल और शुतरनाल, ६० हाथी व बीस २०००००० लाख रुपये का ख़ज़ाना.

बादशाहने महाबतख़ांको तीन हज़ारी ज़ात और २५०० सवारका मन्सब दिया, और ख़िलअ़त, घोड़ा हाथी और पटका, जड़ाऊ ख़ंजर, इनायत किया, दूसरे उमरावोंको, जो उसके साथ थे, इनआम देकर विदा किया. महाबतख़ां बड़े ग़रूरके साथ शाहज़ादे पर्वेज़की फ़ौजकी ख़राबीका बदला लेना चाहता था; वह अजमेरसे निकलकर मेवाड़में शाही थाने ठौर ठौर बिठाता हुआ ऊंटाले तक पहुंचा और यहां अपनी फ़ौजको मज़बूत करके पहाड़ोंमें होकर महाराणा अमरसिंहको फ़त्ह करना चाहता था; उसी अर्सेमें उसको दो तीन रोज़ इस मक़ामपर न गुज़रे होंगे कि महाराणा अमरसिंहने पहाड़ोंसे उदयपुरमें आकर अपने राजपूतोंको शाही फ़ौजपर हम्ला करनेका हुक्म दिया और आप भी पहाड़ोंसे बाहर निकले.

रातका समय था, रावत मेघसिंह गोविन्ददासोत चूंडावतने अपनी होश्यारी से एक हिक्मत सोचकर अपने दस बीस राजपूतोंको कीरोंके लिबासमें भैंसोंके साथ करके शाही लश्करमें भेजदिया और उन भैंसोंमें ख़रबूज़ोंके एवज़ जो वे लोग बेचाकरते हैं आतिश्बाज़ी भरदी. जब ये लोग अपने भैंसोंको लेकर शाही लश्कर में महाबतख़ांकी ड्योढ़ीके पास पहुंचे, तो रावत मेघसिंहने दस बीस आदमियोंको गाय व बैलोंके सींगोंसे फ़लीते (फ़तीले) बंधवाकर तीन तरफ़से शाही फ़ौजकी तरफ़ चलाया. महाबतख़ांकी ड्योढ़ीपर उन राजपूतोंने भैंसोंकी आतिश्बाज़ीमें आग डाली, जंगलमें बहुतसी रौशनी दिखाई देनेसे वे लोग घबराकर भागने लगे, हरएकको यह ख़याल होगया- कि बड़ा भारी लश्कर आपहुंचा, जिधर जिसका मुंह उठा भाग निकला.

रावत मेघसिंहने अपने पांचसौ सवारोंसे शाही लश्करपर हम्ला करदिया, जिससे नव्वाब महाबतख़ांको भी भागना पड़ा. इस ख़बरके पाते ही मेवाड़के कुल सर्दारोंने शाही फ़ौजका पीछा किया. कहते हैं कि उसी रातमें जितने थाने महाबतख़ांने बिठाये थे, सब भागगये. इस लड़ाईमें हज़ारहा आदमी शाही फ़ौजके मारेगये, और माल अस्बाब मेवाड़के राजपूतोंने लूटा; बादशाह जहांगीरने नाराज़ होकर महाबतख़ांको बुलालिया-इस फ़त्हका हाल भी पर्वेज़की शिकस्तकी तरह जहांगीरने अपनी किताब तुज़क जहांगीरीमें बयान नहीं किया. सिर्फ़ इतना ही लिखा है कि राणाकी लड़ाई जैसी चाहिये थी न हुई, इससे उसको बुलालिया; लेकिन इतने ही लिखनेसे ऊपर लिखी हुई लड़ाईकी सच्चाई मालूम हो सक्ती है.

केवल चित्तौड़पर शाही फ़ौज समेत महाराज सगर व मांडलके थानेपर राजा जगन्नाथ कछवाहा भारमल्लोत ठहरा रहा लेकिन् सम्वत् (१) विक्रमी १६६६ [हि० १०१८ = ई० १६०९] में राजा जगन्नाथ बीमार होकर मरगये, जिनकी छत्री सफ़ेद पत्थरकी मांडलमें विक्रमी १६७० [हि० १०२२ = ई० १६१३] में बनाई गई जो अबतक मौजूद है. (शेषसंग्रह देखो प्रशस्ति नम्बर १)-इनका जन्म विक्रमी १६०९ पौष कृष्ण ९ [हि०९५९ ता० २३ ज़िलहिज = ई० १५५२ ता० ११ डिसेम्बर] का था; इस राजाके मरनेका बादशाह जहांगीरको भी बहुत रंज हुआ.

फिर जहांगीरने अब्दुल्लाख़ांको बहुत बड़ी फ़ौज देकर मेवाड़में भेजदिया, पेश्तर महाबतख़ांने मोहीके परगनेमें पहुंचकर दर्याफ़्त किया कि अमरसिंहका खटला

---

(१) नैनसी महताने विक्रमी १६६५ लिखा है, लेकिन तुज़क जहांगीरी वग़ैरह किताबोंके देखने से विक्रमी १६६६ मालूम होताहै—

कहां रहता है ? किसीने कहदिया कि महाराणाके बालबच्चे जोधपुरके राजा सूरसिंहके मुल्कमें रहते हैं, तब उसने राजा सूरसिंहसे सोजतका परगना ज़ब्त करके राठौड़ चन्द्रसेन उग्रसेनोतको इस शर्तपर देदिया कि राणा व राणाका खटला उस तरफ़ आवे तो हमको फ़ौरन् ख़बर दो; जब अब्दुल्लाखां आया तो सूरसिंहके कुंवर गजसिंहने अपना परगना पीछे लेनेकी कोशिश की. अब्दुल्लाख़ांने सोजत वापस देकर गजसिंहको नाडोलके थानेपर तईनात किया. अहमदाबादसे एक क़तार कुछ ख़ज़ाना व सामान लेकर आगरेको जाती थी, जिसकी ख़बर अम्बावके पहाड़ोंमें महाराणा अमरसिंहको मिली, और कुंवर कर्णसिंह उस वक्त नीचे लिखे हुए राजपूतोंको साथ लेकर चढ़ेः--

शेखा राणा प्रतापसिंहोत, कुंवर बाघसिंह अमरसिंहोत, झाला शत्रुशाल मानावत, सोलंखी बीरमदेव, राठौड़ किसनदास (कृष्णदास) गोपाल दासोत, राठौड़ हरिदास बलुओत, सीसोदिया माधवसिंह, शार्दूलसिंह राणा उदयसिंहोत, सहसमल्ल राणा प्रतापसिंहोत, सींधल बीदो, सींधल सांवलदास बीदावत, कुंवर अर्जुनसिंह अमरसिंहोत, माधवसिंह राणा उदयसिंहोत, राठौड़ माला भीमकर्णोत, देवड़ा पत्ता कलावत, सींधल अमरा भांडावत, सींधल तोगा भांडावत, सोनगरा केशवदास भाणावत, अक्षयराजका पोता सोनगरा सावन्तसिंह नारायणदासोत और चूंडावत दूदा सांगावत वगैरह. जब मारवाड़में सोनगरा नारायणदास डोडिया गोपालदास, डोडिया सादा, डोडिया सूजा, डोडिया अगरा, डोडिया जगमाल क़तार लूटनेको पहुंचे तो ख़बर लगी कि क़तार निकलकर पेश्तर अजमेर चली गई. इस लिये ये निराश होकर पीछे फिरे, उस वक्त अब्दुल्लाख़ांकी बादशाही फ़ौज, जो थानोंपर तईनात थी, जा पहुंची, नाडौलसे भाटी गोविन्ददास भी अपनी जमइयत लेकर शाही फ़ौजमें शामिल हुआ, भादराजून और मालगढ़के पास शाही मुलाज़िमोंसे मुक़ाबला हुआ. सख़्त लड़ाई होनेके बाद कुंवर कर्णसिंह भागकर पहाड़ोंमें चलेगये, तरफ़ैनके अक्सर बहादुर कामआए. कर्णसिंहकी तरफ़के नीचे लिखेहुए राजपूत मारेगये-

दूदा सांगावत, राठोड़ हरीदास, नारायणदास सोनगरा, डोडिया गोपालदास, डोडिया सादा, डोडिया सूजा, डोडिया अगरा, और डोडिया जगमाल. यह लड़ाई विक्रमी १६६८ [हि० १०२० = ई० १६११] में हुई; इसके बाद अब्दुल्लाख़ांका लश्कर कुछ दिनों तक मेवाड़में इधर उधर घूमता रहा, मेवाड़के राजपूत भी जहां मौक़ा देखते हमला करते.

एक वक्त कैलवा ग्रामके नज़्दीक राठौड़ ठाकुर मन्मनदास मुकुन्ददासोतने शाही फ़ौजपर छापा मारा; अब्दुल्लाख़ांसे भी बादशाहकी मन्शाके मुवाफ़िक़ काम न हुआ.

तब विक्रमी १६६८ [हि० १०२० = ई० १६११] में अब्दुल्लाख़ांको बादशाहने चार लाख (४०००००) रु० देकर गुजरातकी सूबेदारीपर भेजा, और मेवाड़की लड़ाई पर उसके एवज़ राजा बासू (१) मुक़र्रर होकर रवाना कियागया.

---

(१) राजा बासू, तंवर राजपूत, पंजाबके पहाड़ी ज़िलेमें ग्राम नूरपुरका राजा था, जो इलाके जालन्धर ज़िले कांगड़ामें गिनाजाता है,— इनका कुछ तवारीख़ी हाल, नूरपुरके पुरोहित सुखानन्दके काग़ज़ोंसे मालूम हुआ, जो विक्रमी १९४१ [हि० १३०१ = ई० १८८४] में यहां (उदयपुर) आया था. उस पुरोहितके पास एक ताम्रपत्र भी, महाराणा अमरसिंहके समय विक्रमी १६६९ श्रावण कृष्ण ९ [हि० १०२१ ता० २३ जमादियुल अव्वल = ई० १६१२ ता० १३ जुलाई] का है, जिसकी नक़्ल तारीख़ी अहवालके साथ नीचे लिखीजाती है—

राजा दलीपसे जब दिल्लीकी राजधानी छूटी और उनके पुत्र जैतपाल भेटने नूरपुरको अपनी राजधानी बनाया; उससे २४ वीं पीढ़ीमें राजा बासू हुआ, जो बादशाह जहांगीरके भेजनेसे अपने प्रधान पुरोहित व्यास समेत चित्तौड़ आया, उस समय राजा बासूने महाराणा अमरसिंहसे एक मूर्ति, जो अब नूरपुरके क़िलेमें व्रजराज स्वामीके नामसे प्रसिद्ध और मीरां बाईकी पूजीहुई बताते हैं, मांगी, इसपर महाराणाने उनके प्रधान पुरोहित व्यासको वह मूर्ति एक ग्राम समेत, जिसका ताम्रपत्र नीचे लिखाजायगा, संकल्प करके देदी, इससे मालूम होता है— कि महाराणा अमरसिंहसे राजा बासू मिलगया था.

राजा बासूका बेटा जगतसिंह बड़ा प्रतापी हुआ, जो बादशाहोंसे अक्सर लड़ता रहा. इनके क़ब्ज़ेमें कई लाखका मुल्क होगया था, यह जगतसिंह किसी साधूके कहनेसे हिमालयमें जाकर गलगया.

जगतसिंहसे छठी पीढ़ीमें राजा बीरसिंहके समयमें राजा रणजीतसिंह सिक्खने इनका बहुतसा मुल्क छीनलिया, बल्कि धोखेसे लाहौरमें उसे बुलाया और क़ैद करके क़िला नूरपुर भी लेलिया. बीरसिंहने क़ैदसे छूटने बाद कईबार हम्ले किये, लेकिन राजधानी हाथ न आई.

हालके राजाके क़ब्ज़ेमें दस बारह हज़ार सालाना आमदनीकी जागीर रहगई है, और नूरपुरसे आध मीलके फ़ासिलेपर खुश नगरमें उनका निवास है.

विक्रमी १९१४ [हि० १२७४ = ई० १८५७] के ग़द्र बाद सर्कार अंग्रेज़ीने क़िले नूरपुरको तोड़कर आधा क़िला और कुछ बाग़बगीचा भी वर्तमान राजा जशवंतसिंहको देदिया.

१ राजा दलीप, २ जैतपाल भेट, ३ त्रिपाल, ४ बुधपाल, ५ जरीपत, ६ जयपाल, ७ सकूनी, ८ जगरथ, ९ राम, १० गोपाल, ११ अर्जुन, १२ विद्धारथ, १३ झगड़मल्ल, १४ राम २, १५ कीरत, १६ धीरवो, १७ जसता, १८ कैलाश, १९ नागा, २० पृथ्वीमल्ल, २१ भीलो, २२ बख़्तमल्ल, २३ पहाड़मल्ल, २४ बासू, २५ जगतसिंह, २६ राजरूप, २७ मानधाता, २८ दयाधाता, २९ पृथ्वीसिंह, ३० फ़त्हसिंह, ३१ बीरसिंह, ३२ यशवन्तसिंह.

महाराणा अमरसिंहने बादशाही फ़ौजसे १७ सत्रह लड़ाइयां कीं, जब अपने बापका क़ौल इनको याद आता तो जोशमें आकर शाही मुलाज़िमोंपर हम्ला किये बग़ैर नहीं रहते थे, लेकिन् तमाम हिन्दुस्तानके बादशाहके साथ छोटेसे मुल्कका मालिक कब बराबरी करसक्ता है, इसके सिवाय आमदनीका मुल्क बिल्कुल वीरान होगया, रिआया इलाक़ा छोड़कर भागगई, सिर्फ़ पहाड़ी हिस्सोंमें भील लोग आबाद थे, जिनसे सिवाय लड़ाईकी मददके कुछ आमदनी नहीं होसक्ती थी. विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = ई० १५६७] से वि० १६७० [हि० १०२२ = ई० १६१३] तक हज़ारहा आदमियों व रणवास वग़ैरहका ख़र्च बड़ी मुश्किलसे चलायागया.

राजपूत लोगोंमेंसे दोदो चारचार पीढ़ियां सबकी मारीगई थीं. पहाड़ोंके चारों तरफ़से बादशाही फ़ौजोंके हम्ले होते थे, आज एक बहादुर राजपूत मौजूद है, कल मारागया, परसों उसके बेटेने भी हम्लाकरके अपनी जान दी, उनकी बेवा औरतें अपने ख़ाविन्दोंके साथ आगमें जलती थीं, उन लोगोंके लड़के लड़की, जो कमउम्र रहजाते, उनकी पर्वरिश भी महाराणाको ही करनी पड़ती थी; जिसपर

तामूपत्रकी नक़ल.

श्रीरामो जयति.

श्रीगणेशप्रसादातु. श्रीएकलिंग प्रसादातु.

महाराजाधिराज महाराणा श्रीअमरसिंहजी आदेशातु पुरोहित व्यास कस्य,

(१) ग्राम झीध्यो रेवलीरी पाखतीरो उदक आघाट करे मया कीधो. विक्रमी १६६९ वर्षे सावण कृष्णा ९ रवे ऊ स्वदत्त परदत्तं वायेहरंति वसुंधरा षष्टीवर्ष सहस्राणां विष्ठायांजायते क्रमी दुए श्रीमुख प्रति दुए साह डूंगरसी लिखतं पंचोली शंकरदास.

(१) अर्थ- रेवल्याके पासका झींत्या ग्राम समर्पण किया.

भी यह खौफ़ था कि हमारे राजपूतोंकी औलाद मुसल्मानोंके हाथ पड़कर गुलाम न बनाई जावे. अगर कभी ऐसा हो भी जाता था तो उस बातका सद्मा महाराणा अमरसिंहके दिलमें छेद करता था, एक एक दिनमें कई जगह रसोई (खाना) करना पड़ा है, याने एक जगह भोजन तय्यार हुआ और शाही मुलाज़िमोंने आघेरा, फिर दूसरी जगह बनाना पड़ा, वहां भी दुश्मनोंने आदबाया, तब तीसरी जगह किसी पहाड़की खोहमें रोटियां होने लगीं. छोटे छोटे बच्चे अपने अपने मा बापसे खाना मांगते, वे उनको दम देदेकर दिन कटाते थे. लेकिन धन्य है मेवाड़के उन बहादुर राजपूतोंको कि ऐसी तक्लीफ़ें उठानेपर भी अपने बाप दादोंकी इज़्ज़त और कहावतोंपर ख़याल करके मरते और मारते थे, और जो कोई आदमी निकलकर शाही मुलाज़िम होता था उसपर हज़ारहा लानत मलामत करते थे, लेकिन् जो महाराज शक्तिसिंहके समान अपने मालिककी खैरख़्वाहीको दिलमें मज़बूत रखकर शाही नौकरी करते, ऐसे लोगोंको अपने एल्चीके मुवाफ़िक़ जानकर ख़बर वगैरहका काम निकालते थे. यह लानत मलामत राजपूत लोग महाराज जगमाल व सगर जैसे क़ौमी दुश्मनोंपर करते थे.

जब शाहज़ादा पर्वेज़ व महाबतखां और अब्दुल्लाखां वगैरह शिकस्तें खाखाकर नाउम्मेद होचुके, तो बादशाह जहांगीरने सोचा कि बग़ैर हमारे जानेके उदयपुरका महाराणा ताबे नहीं होसक्ता. तब खुद बादशाह विक्रमी १६७० आश्विन शुक्ल ४ [हि० १०२२ ता० २ शाबान = ई० १६१३ ता० १९ सेप्टेम्बर] को सात घड़ी रात गये आगरेसे अजमेरकी तरफ़ रवाना होकर मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [ता० ५ शव्वाल = ता० २० नोवेम्बर] को अजमेरमें दाखिल हुआ.

बादशाहने अपना क़ियाम अजमेरमें रखना मुनासिब जानकर शाहज़ादे खुर्रमको मेवाड़ पर जानेका हुक्म दिया. शाहज़ादेको कपड़े, गहना, हाथी, घोड़े, हथयार, खिलअ़त व खिताबसे बढ़ाकर नीचे लिखे हुए सर्दार, उमरावोंको साथ दिया:—

जोधपुरके राजा सूरसिंह राठौड़ उदयसिंहोत, नवाज़िशखां, सैफ़खां, तर्बियतखां, अबुल्फ़त्ह दक्षिणी, राजा सूरसिंहके भाई कृष्णगढ़के राजा कृष्णसिंह, सगर राणा उदयसिंहोत, सुलैमानबेग वाक़िआ नवीस, बूंदीके राव हाड़ा रत्न, राजा सूरजमल्ल तँवर, नूरपुरके राजा बासूका बेटा जगत्सिंह, राजा विक्रमादित्य भदौरिया, सय्यद अली- खिताब सलाबतखां, सय्यद हाजी हाजीपुरी, शाहरुख़का बेटा मिर्ज़ा बदीउज़्ज़मां, मीर हिसामुद्दीन, रज़ाक़बेग उज़्बक, दोस्तबेग, ख़्वाजा मुहूसिन, अरबखां, बारहका सय्यद शिहाब.

विक्रमी १६७० पौष शुक्ल १५ [हि० १०२२ ता० १४ ज़ीक़ाद = ई०

१६१३ ता० २६ डिसेम्बर] को शाहज़ादा खुर्रम, जिसकी उम्र २१ वर्ष ११ महीने ११ दिनकी थी, रवाना कियागया, और सूबे मालवेसे खान् आज़म मिर्ज़ा अज़ीज़ कोकल्ताश सूबेदार, फ़रेदूंखां, सर्दारखां और वहांके सब मन्सबदार; सूबे गुजरातसे अब्दुल्लाखां बहादुर सूबेदार, दिलावरखां काकड़, सज़ावारखां, ज़ाहिद, यारबेग वग़ैरह मन्सब्दार; सूबे दक्षिणमें, जो बादशाही लश्कर शाहज़ादे पर्वेज़के तह्तमें था, उसमेंसे राजा नरसिंहदेव बुंदेला, मुहम्मदखां, याकूबखां नियाज़ी, हाजीबेग उज़्बक, मिर्ज़ा मुराद सफ़वी, शिर्ज़ाखां, अल्लाह यार कूका, गज़नीखां जालौरी वग़ैरह; सबको हुक्म हुआ कि शाहज़ादे खुर्रमकी मददके वास्ते शाही लश्करमें शामिल हों.

हमको एक बात बादशाहनामेकी जिल्द १ सफ़्हे १६५ से, जिसको मौलवी अब्दुल हमीद लाहौरीने लिखा है, बयानकरनी ज़ुरूर हुई, क्योंकि फ़ार्सी मुवर्रिख़ोंके सिवाय खुद बादशाह जहांगीर भी अपनी शाही फ़ौजोंकी शिकस्त व ख़राबियोंके हालको हज़्म करगया. मुल्ला अब्दुल् हमीद लिखता है कि राणाकी मुहिम् पर जानेसे शाहज़ादे पर्वेज़ व महाबतखां व अब्दुल्लाखांने सिवाय परेशानी व सरगर्दानीके कुछ फ़ायदा न उठाया.

इस कलामके देखने से पढ़ने वालोंको यक़ीन होगा कि ऊपर लिखीहुई शिकस्तोंसे भी बढ़कर शाही फ़ौजोंकी ख़राबिया हुई हैं. हमको मेवाड़ी मुवर्रिख़ जानकर तरफ़दारीका दोष कोई न लगावेंगे, हमने बहुतसी लड़ाइयोंका हाल, जो कर्नेल् टॉड वग़ैरहने लिखा है, छोड़दिया; क्योंकि एक तो छोटी छोटी लड़ाइयोंके लिखनेसे तवालत (विस्तार) होजाती है– दूसरे हमारी तसल्लीके लायक़ सुबूत न मिले. ख़ैर अब हम अस्ली मतलबको बयान करते हैं.

जब शाहज़ादा बादशाही लश्कर समेत मांडलमें, जो मेवाड़में उदयपुरसे ईशान कोनकी तरफ़ क़रीब ४० कोसके है, पहुंचा, तो मुल्ला अब्दुल् हमीद बादशाह नामेकी जिल्द १ सफ़्हे १६७ में लिखता है कि "सुल्तान पर्वेज़ व महाबतखां इस जगहसे आगे न बढ़े थे, सो वास्तवमें उनका यहांसे कामयाबीके साथ आगे बढ़ना नहीं जानपड़ता, क्योंकि जब बढ़े तब ख़राब हालतसे वापस आये,–शाहज़ादे खुर्रमको पहिले यह फ़िक्र हुई कि उदयपुरमें हमारे पास रसद पहुंचनेका पक्का बन्दोबस्त कियाजावे, इसीवास्ते एक फ़ौजका टुकड़ा जमालखां तुर्कीके साथ मांडलमें छोड़ा, दूसरा फ़ौजका हिस्सा कपासनमें दोस्तबेग और ख़्वाजह मुहासिनके हवाले किया, तीसरा थाना ऊंटालेमें सय्यद हाजीके सुपुर्द किया, चौथा नाहर मगरेके थानेपर अरबखांके हवाले रहा, पांचवां थाना डबोकमें नियत किया, और छठे देबारीके थानेपर सय्यद शिहाब

बारहको रक्खा; ये छओं थाने बिठाकर शाहज़ादा उदयपुर आया, जहां दूसरी तय्यारीकी. राजा सूरसिंहने शाहज़ादेको ऊंटालेमें ठहरनेकी राय दी थी, लेकिन् वह उसकी सलाहके बर्खिलाफ़ उदयपुरमें विक्रमी १६७० फाल्गुन [हि० १०२३ मुहर्रम = ई० १६१४ फ़ेब्रुअरी] को आपहुंचा; गुजरातसे अब्दुल्लाखां भी बहुत बड़ी जमइयतके साथ उदयपुरमें शाहज़ादेके पास हाज़िर हुआ. खुर्रमने पहाड़ोंमें घुस कर हमला करनेका पक्का विचार करके नीचे लिखे लोगोंको अलह्दा अलह्दा तय्यार किया--

पहिले गिरोहका अफ़्सर अब्दुल्लाखां बहादुर फ़ीरोज़जंग, जो अहमदाबादसे आया था; दूसरी फ़ौजका मालिक दिलावरखां काकड़, और उसकी मददके लिये बैरमबेग बख़्शी; तीसरी सेनाका अफ्सर सय्यद सैफ़खां व कृष्णगढ़का राजा कृष्णसिंह राठौड़; चौथे गिरोहका मुख़्तार मीर मुहम्मद तक़ी मीरबख़्शी हुआ; इन चारों फ़ौजोंने हर तरफ़ लूटना, मारना, जलाना, गिरिफ़्तार करना, शुरू किया.

महाराणा अमरसिंहने भी अपने बहादुर राजपूत, चहुवान राव बल्लू, चहुवान रावत पृथ्वीराज, राठौड़ सांवलदास, झाला हरदास, पंवार शुभकरण, चूंडावत रावत मेघसिंह, चूंडावत रावत मानसिंह, झाला कल्याण, सोलंखी बीरमदेव, राठौड़ कृष्णदास, सोनगरा केशवदास भाणावत, डोडिया जयसिंह भीमसिंहोत वग़ैरहको मए अपने काका, भाई व बेटोंके जुदा जुदा सेनापति बनाकर शाही फ़ौजका मुक़ाबला करनेको तय्यार किया. राजपूत लोगोंका यह काम था कि पहाड़ों में शाही फ़ौजको न घुसने दें, उनको ग़ाफ़िल देखकर धावा करें और रसद लूटें. लेकिन् खुद जहांगीर अजमेरमें बैठकर कुल हिन्दुस्तानकी फ़ौजको मेवाड़के पहाड़ों पर विदा करचुका, तो कहांतक एक मेवाड़का राजा लड़सक्ता था. बादशाही फ़ौज पहाड़ोंमें अपना क़ब्ज़ा बढ़ाती जाती थी. अब्दुल्लाखांने, जो पहाड़ोंमें बढ़गया था, महाराणा अमरसिंहके आलमगुमान नामी हाथीको, जो पांच हाथियों समेत उसके हाथ आया, विक्रमी १६७१ चैत्र शुक्ल ११ [हि० १०२३ ता० ९ सफ़र = ई० १६१४ ता० २२ मार्च] को लाकर शाहज़ादेके नज़्र किया.

जब महाराणा अमरसिंहने शाही फ़ौजोंका ज़ियादा ज़ोर शोर देखा तो लाचार चावंडको छोड़कर ईडरके पहाड़ोंकी तरफ़ चले. उस वक्त ये हाथी पीछे रहगये थे, जिनको अब्दुल्लाखांके आदमियोंने गिरिफ़्तार करलिया. दिलावरखां व बैरमबेगके क़ब्ज़ेमें भी महाराणाके कई हाथी आगये और दूसरे सर्दारोंने भी जिसके जो हाथ आया शाहज़ादेके पास पहुंचाया. शाहज़ादेने आलम् गुमान हाथी समेत सत्रह हाथी फ़त्ह किये हुए बादशाह जहांगीरके पास अपने दीवान जादूरायके

साथ अजमेर भेजदिये. बादशाहने इन हाथियोंको देखकर और फ़तहकी खुशख़बरी सुनकर अपने बेटे खुर्रमको बहुत तारीफ़के साथ ख़ास अपने हाथसे फ़र्मान लिख भेजा. शाहज़ादेने बादशाही फ़ौजोंके नीचे लिखेहुए थाने क़ायम करदिये.

कुम्भलमेरमें बदीउज़्ज़मांको अच्छे बन्दूक़दारों समेत, झाड़ौलमें सय्यद सैफ़ख़ांको, गोगूंदेमें राणा सगरको, आंजणेमें दिलावरख़ांको, औगनेमें फ़रेदूंखां और हाड़ा रत्नसिंह बूंदी वालेको चावंडमें, मुहम्मद तक़ी मीरबख़्शीको, बीजापुरमें बैरमबेगको, जावरमें इब्राहीमख़ांको, मादड़ीमें मिर्ज़ा मुरादको, पानड़वेमें सज़ावारख़ांको, केवड़ेमें ज़ाहिद, और सादड़ीमें राठौड़ राजा सूरसिंहकी फ़ौजको मुक़र्रर किया.

इन थानोंमेंसे हरएकपर इसक़दर फ़ौज रक्खीगई थी- कि एक दूसरेकी मददका सहारा न देखे. इसतरह मेवाड़के उत्तरी पहाड़ोंको शाही फ़ौजोंने क़ब्ज़ेमें करलिया, जिससे उनके लिये रसद आनेमें कुछ भी खटका न रहा, क्योंकि उत्तरी मेवाड़में राजपूतों का पहुंचना बिल्कुल बन्द होगया था. महाराणा और उनके सर्दार व बालबच्चे दक्षिणी पहाड़ोंमें रहे. गर्मियोंके मौसममें कभी कभी कहीं कहीं लड़ाइयां होती रहीं. बदनौरवालोंका बुज़ुर्ग जयमल्ल मेड़तिया जो विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = ई० १५६७] को चित्तौड़की लड़ाईमें मारागया था, उसका बेटा मुकुन्ददास गोड़वाड़में राणपुरके मन्दिरोंकी ख़राबी करनेवाली बादशाही फ़ौजसे लड़कर मारा गया, जिसका बेटा मन्मनदास बदनौर और विजयपुरका जागीरदार रहा.

झाला मानसिंह देलवाड़ेका जागीरदार, जिसकी शादी महाराणा उदयसिंहकी बेटीसे हुई थी, और जो विक्रमी १६३३ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल २ [हि० ९८४ ता० १ रबी-उलअव्वल = ई० १५७६ ता० ३१ मई] को हल्दीघाटीमें शाही फ़ौजसे लड़कर मारागया था, उसके बेटों शत्रुशाल, कल्याण, और आसकरण मेंसे शत्रुशाल महाराणा प्रतापसिंहकी बहिनका बेटा होनेके कारण तेज़ मिज़ाजीके साथ महाराणासे बोलचालमें खटपट रखता था. किसी वक़्त देलवाड़ेमें दस्तक् (धौंस) होनेपर रूबरू महाराणा प्रतापसिंहसे तक्रार होगई. शत्रुशाल नाराज़ होकर निकला, महाराणाने अंगरखेका दामन पकड़कर रोका; उन्होंने पेशक़ब्ज़से दामन काटडाला. महाराणाने फ़र्माया कि शत्रुशालके नामवालेको मैं कभी अपने राजमें न रक्खूंगा, शत्रुशालने अर्ज़ किया कि मैं भी ज़िन्दगी भर सीसोदियोंकी नौकरी न करूंगा. यह कहकर वह यहांसे निकलकर जोधपुरके महाराजा सूरसिंहके पास चलागया. वहांसे उनको भाद्राजूनका पट्टा जागीरमें मिला. महाराणाने राठौड़ मन्मनदासको देलवाड़ा इनायत किया, मन्मनदासने अर्ज़ की कि शत्रुशाल आपकी बहिनके बेटे हैं, अर्ज़ मारूज़ या मुहब्बतसे उनका ठिकाना उनको पीछे दियाजावे तो मेरी हंसी होगी, महाराणाने क़सम खाकर फ़र्माया कि

तुम्हारी ज़िन्दगी तक देलवाड़ा तुमसे हर्गिज़ तागीर (तग्य्यीर) न होगा, शत्रुशालके छोटे भाई कल्याण और आसकर्ण देलवाड़ा खालिसे होनेसे कुछ अर्से तक चीरवामें, जो ब्राह्मणोंका सासण ग्राम है, रहे; जब महाराणा प्रतापसिंहका देहान्त हुआ और महाराणा अमरसिंहने बहुतसी लड़ाइयां बादशाही फ़ौजोंसे कीं, तब कल्याणने भी महाराणाको कई लड़ाइयोंमें अपनी बहादुरी दिखलाई. महाराणाने किसी जागीरका हुक्म दिया. कल्याणने अर्ज़ की कि हमारे बापका ठिकाना तो देलवाड़ा है वही इनायत कीजिये, महाराणा अमरसिंहने फ़र्माया कि देलवाड़ातो राठौड़ मन्मनदासकी ज़िन्दगी तक उनके क़ब्ज़ेमें रखनेके लिये श्री दाजीराज (पिता) का हुक्म है, जिसको हम नहीं मिटासक्ते.

विक्रमी १६६७ [हि० १०१९ = ई० १६१०] में जब राठौड़ मन्मनदासका देहान्त हुआ तब राज कल्याणको महाराणा अमरसिंहने देलवाड़ा इनायत किया, और राठौड़ मन्मनदासके बेटे सांवलदास बदनौरमें रहे, जब इस वक्त शाहज़ादे खुर्रमकी फ़ौजके ज़ोरशोर से झालोंको अपने ख़ैरख़्वाह राजपूत जानकर महाराणा अमरसिंहने राज कल्याणको हुक्म दिया कि तुम जोधपुर जाकर अपने भाई शत्रुशालको ले आओ, हम उनको दूसरी जागीर देंगे; महाराणाके हुक्मसे कल्याण जोधपुरकी तरफ़ गया, शत्रुशाल अपने मालिक पर बादशाही फ़ौजकी चढ़ाई जानकर सूरसिंहके साथ शाही फ़ौजमें न आया. जोधपुरमें कुंवर गजसिंहने शत्रुशालको हँसीके तौरपर कहा कि आज कल महाराणा अपनी रानियों समेत पहाड़ोंमें दौड़ते फिरते हैं, शत्रुशालने कहा कि हां बादशाहोंको बेटियां देकर आराम लेना दूसरोंके अनुसार उन्होंने पसन्द नहीं किया. और इस इज़्ज़तकी तक्लीफ़को बे इज़्ज़तीके आरामसे बिहतर जानकर मुसल्मानोंको वे अपनी बहादुरी दिखला रहे हैं. कुंवर गजसिंहने गुस्सेमें आकर कहा कि ऐसे ख़ैरख़्वाहोंको तो शाही फ़ौजसे लड़कर मरना चाहिये. शत्रुशाल उठखड़ा हुआ और कुंवरसे कहा कि मैं आपकी नसीहतको ग़नीमत जानकर शाही फ़ौजसे लड़ूंगा.

शत्रुशाल जोधपुरसे रवाना होकर मेवाड़की तरफ़ आता था, कल्याण रास्तेमें मिला और महाराणाका हुक्म अपने भाईको सुनाया. शत्रुशालने सुनकर जवाब दिया कि मैंने महाराणाकी नौकरी करनेकी सौगन्द खाई है, और जिस कामके लिये बुलाते हैं वह काम करना मुझे फ़र्ज़ है, जोधपुरकी सरगुज़श्त भी अपने भाईको कहसुनाई, दोनों भाइयोंने सलाहकरके मेवाड़ मारवाड़के बीच पहाड़ी घाटेकी अंवल् संवल्की नालमें नव्वाब अब्दुल्लाखांके ज़ेरदस्त जो शाही फ़ौज तईनात थी, उसपर हम्ला किया. तरफ़ैनके बहादुर खूब लड़े; झाला भोपत वगैरह बहुतसे राजपूत कल्याण

और शत्रुशालके मारेगये. शत्रुशाल तो ज़ख़्मी होकर मेवाड़के पहाड़ोंमें चलागया, और कल्याण अपना घोड़ा मारेजाने और ख़ुद ज़ख़्मी होनेके सबब बादशाही फ़ौजसे घिरगया. वह एक मन्दिरमें बैठकर कमानसे तीर चलाने लगा और जबतक तीर रहे किसीको नज़्दीक न आने दिया; जब तीर न रहे तो लोगोंने उसको चारों तरफ़से हम्लाकरके गिरिफ़्तार करलिया. नव्वाब अब्दुल्लाख़ांने राज कल्याण ज़ख़्मीको पालकी में बिठाकर शाहज़ादे ख़ुर्रमके पास भेजदिया. शाहज़ादेने मर्हम पट्टी वग़ैरह इलाजका हुक्म दिया. शत्रुशालने पहाड़ोंमें तन्दुरुस्तहोकर गोगूंदेके थानेपर, जहां राणा सगर वग़ैरह शाही मुलाज़िम बड़ी जर्रार फ़ौजके साथ तईनात थे, हम्ला किया. क्योंकि शत्रुशाल तो जोधपुरसे मरना ठानकर निकला था इसलिये गोगूंदेकी फ़ौजसे लड़ता-हुआ रावल्यां गांवमें मारागया. यह ख़बर सुनकर महाराणा अमरसिंहने सब सर्दारों केसाम्हने हुक्म दिया कि शत्रुशाल गोगूंदेमें मारागया जिससे गोगूंदा ही हमने उसकी औलादके लिये जागीरमें इनायत किया. फिर अम्न हुआ तो उसवक़ गोगूंदा शत्रु-शालके छोटे बेटे कान्हकी जागीरमें रहा और बड़े नाथसिंह मदारके जागीरदार कह-लाये, जो अब देलवाड़ेके ताबेदार राजपूतोंमें हैं. इसका ज़ियादा ज़िक्र सर्दारोंकी तवारीख़में लिखाजायगा. राज कल्याणको तन्दुरुस्त होनेके बाद शाहज़ादेने क़ैदसे छोड़ दिया, [जिसका ज़िक्र बादशाहनामेकी पहिली जिल्दके अव्वल दौर, दूसरे हिस्सेके दूसरे सफ़्हेमें लिखा है.]

बर्सात आनेपर शाही फ़ौजोंने अपने अपने थानोंको मज़्बूत किया, और मेवाड़ी राजपूत कभी २ रात या दिनको धावा मारजाते थे. जब बर्सात गुज़री और सर्दीका मौसम आया तो शाही फ़ौजने ज़ियादा ताक़त पाई.

दिन बदिन मेवाड़ी राजपूतोंका बल कम होने लगा, तब सब रियासती आदमियोंने कहा कि अब सुलह किये बिना राज्य रहना कठिन है; महाराणाने हुक्म दिया कि एक दोहा हम लिखदेते हैं जो ख़ानख़ानां अब्दुर्रहीमके पास पहुंचायाजाय, क्योंकि वह अक्बर बादशाहका मुसाहिब और हमारा ईमान्दार मित्र है; उसका उत्तर आनेपर हम जवाब देंगे. यह दोहा किसी दोस्तकी मारफ़त क़ासिदोंके हाथ दाक्षिण में ख़ानख़ानांके पास पहुंचाया गया, और उसने भी उसका जवाब दोहेमें लिखभेजा- वे दोनों दोहे नीचे लिखेजाते हैं.

महाराणाका लिखाहुआ दोहा

गोड़ कछाहा राठवड़ गोखां जोख करंत ॥
कहजो खानांखानने बनचर हुआ फिरंत ॥ १ ॥

अर्थ- गौड़ कछवाहा राठौड़ महलोंके झरोखोंमें आराम करते हैं इसवास्ते ख़ानांख़ानको कहना कि हम (महाराणा) बन मानुष हुए फिरते हैं. महाराणाका यह इशारा था, कि तुम कहो तो हम भी अपनी आज़ादीको छोड़कर मुस्लमान बादशाहोंके नौकर कहलावें-यह दोहा पढ़कर ख़ानूख़ानां अब्दुर्रहीमने मारवाड़ी भाषा ही में जवाबी दोहा लिखा-

जवाबी दोहा.

धर रहसी रहसी धरम खपजासी खुरसाण ॥
अमर विशंभर ऊपरा राखो निहचो राण ॥ १ ॥

अर्थ—ज़मीन और ईमान रहेगा, और खुरासानी लोग अर्थात् मुग़ल नाश होजाएंगे, ऐ राणा अमरसिंह आप इस दुन्याके पालने वाले पर भरोसा रक्खें. अब्दु-र्रहीमका यह मत्लब था कि ज़मीन और ईमान्दारी सदा क़ायम रहती है और बादशा-हत हमेशा ग़ारत हुआकरती है, इसलिये हिम्मत रखना चाहिये, अर्थात् गैरतके आरामसे इज़्ज़तकी तक्लीफ़ अच्छी है.

यह ख़ानूख़ानां अरबी, फ़ार्सी, तुर्की, संस्कृत, और हिन्दीका आलिम व शाइर था, हिन्दी शाइरोंके ज़रीएसे महाराणाकी और उसकी दोस्ती थी.

इस दोहेके पहुंचनेसे महाराणाको और भी ज़ियादह हिम्मत हुई, और अपने सर्दारोंको वह दोहा बतलाया; फिर कुछ दिनों तक ऐसी लड़ाइयां होती रहीं, कि ज़िन्दगीकी उम्मेद भी बाक़ी न रही.

इसलिये कुल राजपूतोंने मिलकर कुंवर कर्णसिंहसे सलाह की कि अब क्या करना चाहिये ? खानेको अन्न व पहन्नेको कपड़ा नहीं रहा, लड़ाईका सामान भी नहीं है, एक एक घरानेकी चार चार पुश्तें मारीगईं. किसीके बालबच्चे मुसल्मानोंके हाथ पड़जाते हैं, तो लौंडी गुलाम बनायेजाते हैं, गूलरके फल खा खाकर दिन्न काटने पड़ते हैं, इसपर भी मरनेके सिवाय इज़्ज़त बिगड़नेका खौफ़ लगारहता है, क्योंकि मेवाड़ी राजपूतोंके बालबच्चे पकड़े जानेपर राठौड़ व कछवाहे उनको देखकर हंसते हैं, हमारी बहादुराना हिम्मतको जिहालत और अपनी आरामीको बुद्धिमानी जानकर घमंड करते हैं; हम लोग मरनेसे डरकर आपसे यह नहीं कहते हैं. ४७ वर्ष बड़ी बड़ी तक्लीफ़ें उठाकर निकाले, और यह उम्मेद नहीं कि कब तक्लीफ़ें ख़त्म होंगी. यह सुनकर कुंवर कर्णसिंहने कुल भाई बेटे और राजपूतोंकी बहादुरी व खैरख्वाहीपर हज़ारों धन्यवाद देकर कहा- कि मैं भी जानता हूं कि मेरे प्यारे भाई और राजपूत गूलरके फल खा खाकर शाही फ़ौजोंपर हम्ले करते हैं, लेकिन्

दाजीराज (अमरसिंह), श्री महाराणा प्रतापसिंहके उस तानेको जो उन्होंने बादशाही ताबेदार बननेकी बाबत दिया था, यादकरके हर्गिज़ सुलह करना नहीं चाहते; तब झाला हरदास और पँवार शुभकर्णने अर्ज़ की कि हम सब लोग सुलह करनेपर तय्यार होंगे तो अकेले महाराणा क्या करसक्ते हैं ? अव्वल शाहज़ादे खुर्रमके मन्शाको जांचें, कि पाटवी बड़े कुंवरके शाही दर्बारमें जानेपर सुलह करसक्ता है या नहीं ? अगर आपके जानेपर सुलह होजावे तो कुछ हर्ज नहीं क्योंकि अपने यहां पाटवी कुंवरकी बैठक बड़े दरजेके कुल उमराव सर्दारोंके नीचे है. बादशाह तो यह समझेंगे कि पाटवी कुंवर आगये और हम अपने यहांसे इस बातको एक सर्दारका जाना ख़याल करेंगे.

इन दोनों सर्दारोंकी सलाह सबने पसन्द की और एक ज़बान होकर कहदिया कि यही करना चाहिये, लेकिन् कुंवर कर्णसिंहने कहा कि यह सलाह महाराणाके कान तक पहुंचेगी तो कभी पसन्द न करेंगे, इसलिये तुम दोनों आदमी, उनके बग़ैर हुक्म शाहज़ादे खुर्रमके पास चलेजाओ. तब उन्होंने अर्ज़ की कि पेश्तर काग़ज़ भेजकर शाहज़ादेका मन्शा दर्याफ्त कीजिये कि अगर इस शर्तपर सुलह मन्ज़ूर हो तो कीजावे, वर्ना हम लोग राजपूत हैं तलवारसे सवाल जवाब करेंगे. इसको भी सबने पसन्द किया और इस मुआमलेका काग़ज़ राय सुन्दरदास (१) की मारफ़त शाहज़ादेके पास भेजा गया, सुन्दरदासने शाहज़ादेके पास जाकर कुल हाल इस सुलहका जिसतरहपर कुंवर कर्णसिंह चाहते थे अर्ज़ किया. तब खुर्रमके इशारे से सुन्दरदासने तसल्लीका जवाब लिखा जिससे कुंवर कर्णसिंहने हरदास झाला और पँवार शुभकर्णको भेज दिया, इसके बाद शाहज़ादेने मौलवी शुक्रुल्लाह और सुन्दरदासको महाराणा अमरसिंहके पैग़ामी काग़ज़ देकर बादशाह जहांगीरकी ख़िदमतमें अजमेरको रवाना किया. इन दोनों सर्दारोंने वहां पहुंचकर कुल हाल बादशाहसे अर्ज़ किया, जिससे वह खुश हुआ, और इस खुशख़बरी पहुंचानेके एवज़ मुल्ला शुक्रुल्लाहको 'अफ़्ज़लखां' व राय सुन्दरदासको 'रायरायां' का ख़िताब देकर उसी वक्त वापस उदयपुर भेजदिया और एक फ़र्मान महाराणा अमरसिंहके नाम जिसमें बहुतसी ख़ातिर, तसल्लीकी बातें लिखी थीं, और एक ढाकेकी मलमलके टुकड़े पर बादशाहके ख़ास पंजेका निशान केसरकी रंगतका लगाहुआ, (जो अभीतक रियासतमें मौजूद है), भेजा. इस पंजेके निशानसे बादशाहका यह मत्लब था कि

---

(१) मेवाड़की पोथियोंमें जयपुरवाले कछवाहोंकी मारफ़त भेजाजाना लिखा है, शायद उनमेंसे भी कोई शरीक होगा.

इसको हमारा वचन समभकर राणा अमरसिंह कुछ ख़ौफ़ न करे, और शाहज़ादेको लिखा कि राणा उदयपुर जिन शर्तोंके साथ दस्ख़्वास्त पेश करे, वह मंज़ूर करके कुंवर कर्णसिंहको हमारे पास लेआओ. सुन्दरदास और शुक्रुल्लाहके अजमेरसे पीछे आनेपर झाला हरदास व शुभकर्ण दोनों तसल्लीका जवाब पहुंचनेसे राय सुन्दरदास की मारफ़त शाहज़ादेके पास हाज़िर हुए, जिनको बहुत तसल्ली देकर अपने आदमियोंके साथ मए शाही फ़र्मानके रुख़्सत दी.

गोगूंदेके पश्चिमी पहाड़ोंमें, जिनको आज कल ढाणा बोलते हैं महाराणा अमरसिंह मए अपने राजपूत व भाई बेटोंके आगये थे- ये पहाड़ बड़ेही विकट हैं- जब इतनी बात होचुकी और फ़र्मान कुंवर कर्णसिंहके पास पहुंचगया, तब मए कुल्ल सर्दार व भाई बेटोंके कुंवर कर्णसिंहने महाराणाके पास जाकर सुलहका सब हाल अर्ज़ किया, महाराणा अमरसिंह सुनकर चुप होगये, ज़बान से कुछ न कहा, लेकिन चिहरे पर ऐसी उदासी छा गई कि मानो कोई आसमानी बला एक दम उनके सिर पर आपड़ी है. उस ख़ामोशीके आलममें थोड़ी देरके बाद महाराणाने कहा कि मैं अकेला अब क्या करसक्ता हूं? तुम सब लोगों की यही मरज़ी है तो मुझको भी सहना पड़ेगा, दाजीराजका ताना सहन करनेका इरादा मेरा नहीं था लेकिन् ईश्वरने आंखसे दिखाया. सब सर्दारोंने जो आक़िल और दाना थे, बहुतसी नसीहतोंसे अर्ज़ किया कि बादशाहके साम्हने आपके बड़े कुंवर भेजेजाते हैं, जो उमरावके बराबर हैं. तब महाराणाने कहा कि तुम लोग जो मेरी तसल्लीके लिये बातें करते हो वह सब ठीक हैं, लेकिन् फ़र्मानकी पेश्वाईको जाना, ख़िलअ़त पहन्ना और शाहज़ादेके पास जाकर सलाम करना, जो आजतक मेरे बड़े बूढ़ोंने कभी नहीं किया, वह मुझको करना पड़ा. इस तरह अफ़्सोस करनेके बाद दस्तूरके मुवाफ़िक़ पेश्वाई वग़ैरह करके शाही फ़र्मान लियागया.

इसके बाद सबको एकट्ठा शाहज़ादेके पास जानेमें दग़ाका ख़ौफ़ होनेसे, कुंवर कर्णसिंहको डेरोंपर छोड़कर महाराणा अमरसिंह शाहज़ादे ख़ुर्रमके पास गये, भीमसिंह, सूरजमल्ल, बाघसिंह महाराणाके तीनोंबेटे, और सहसमल्ल, कल्याण भाइयों वग़ैरहने महाराणाको अकेला न जानेदिया, और साथ होलिये. इनके सिवाय दूसरे भी १०० बड़े दरजेके बहादुर राजपूत सर्दार, मए अपने अपने चुनेहुए मुलाज़िमोंके हमराह चले, गोगूंदा मक़ाममें लश्करके नज़्दीक पहुंचे तो शाहज़ादेने महाराणाकी पेश्वाईके लिये अब्दुल्लाहख़ां बहादुर (गुजरातका सूबेदार), राजा सूरसिंह (जोधपुरवाला), राजा नरसिंहदेव बुंदेला, सुखदेव

व सय्यद सैफ़ख़ां बारहको भेजा. इन लोगोंने लश्करके बाहर आकर पेश्वाई की और बड़ी इज़्ज़तके साथ शाहज़ादेके पास लाये. दस्तूरके मुवाफ़िक़ सलाम कलामके बाद शाहज़ादेके बाईं तरफ़ महाराणा बिठाये गये.

महाराणा अमरसिंहकी तरफ़से एक बहुत उम्दा लाल (१) जो तोलमें ८ टांक, और क़ीमतमें रु० ६०००० का था, और दूसरे जवाहिरात बेश क़ीमत, जड़ाऊ शस्त्र, ९ हाथी व ९ घोड़े शाहज़ादेको नज़्र कियेगये. और शाहज़ादेने भी ख़िलअ़त और जड़ाऊ जमधर व तलवार जड़ाऊ और घोड़ा १ सोनेके साज़ समेत और हाथी १ चांदीकी झूल समेत दिया, और महाराणाके ३ बेटे, दो भाई व ५ राजपूत सर्दारों मेंसे, जो बड़े इज़्ज़तदार थे, हरएक को ख़िलअ़त व जड़ाऊ जम्धर और घोड़ा, और चालीस अमीर सर्दारोंको ख़िलअ़त व घोड़ा, और पचास राजपूतोंको ख़ाली ख़िलअ़त दिये, और बड़े आदर सत्कारके साथ महाराणा को विदा किया, शुक्रुल्लाह अफ़्ज़लख़ां व सुन्दरदास रायरायांको महाराणाके पहुंचानेके लिये पेश्वाईकी जगह तक भेजा.

महाराणा पीछे अपने स्थानपर गये और कुंवर कर्णसिंहको शाहज़ादेके पास जानेकी आज्ञा दी. शाहज़ादेने भी अफ़्ज़लख़ां व रायरायां सुन्दरदासको हुक्म दिया कि आज ही कुंवर कर्णसिंहको लावें, क्योंकि आज की ही तारीख़ ज्योतिषियोंने रवानगीके लिये मुक़र्रर कीहै.

कुंवर कर्णसिंह उसी दिन शाहज़ादेके पास गये, इज़्ज़तके साथ अफ़्ज़-लख़ां और सुन्दरदास पेश्वाई करके उनको लेआये, शाहज़ादेने कर्णसिंहको ख़िल-अ़त व जड़ाऊ जम्धर व घोड़ा सोनेके सामान समेत व हाथी चांदीके गहने व झूल समेत दिया. जब शाहज़ादेने कर्णसिंहको अपने साथ अजमेर चलनेके लिये कहा, तो कर्णसिंहने अपने मुल्ककी बर्बादी व तक्लीफ़ोंका हाल कहकर जल्दी सफ़र न करसकनेका उज़्र किया, शाहज़ादेने ५०००० रु० नक़्द अपने पाससे सफ़र ख़र्चके लिये कुंवरको दिये. तब कुंवरने अपना सामान दुरुस्त करके शाहज़ादेके साथ चलनेकी तय्यारी की.

---

(१) यह लाल मारवाड़के राजा मालदेवके पास था जो उनके बेटे चंद्रसेनने महाराणा उदयसिंहको दिया था, जब शाहज़ादे ख़ुर्रमने अजमेर पहुंचकर जहांगीरकी नज़्र किया, तो जहांगीरने इस लाल पर यह खुदवाया कि (बसुल्तान ख़ुर्रम दर हीने मुलाज़मत, राना अमरसिंह पेशकश नमूद). वही लाल विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में किसी सौदागरकी मारफ़त हिन्दुस्तानमें बिकनेको आया था, जिसका ज़िक्र कई अख़बारोंमें सुना गया.

शाहज़ादा खुर्रम कुंवर कर्णसिंहको लेकर कूच दरकूच विक्रमी १६७१ फाल्गुन कृष्ण ५ [हि० १०२४ ता० १९ मुहर्रम = ई० १६१५ ता० १८ फ़ेब्रुअरी] को अजमेरमें पहुंचा, जहां बादशाहके हुक्मसे सब अमीरोंने शाहज़ादेकी पेश्वाई की. दूसरे रोज़ शाहज़ादा बादशाही दर्बारमें हाज़िर हुआ, उस वक़्की खुशी बादशाह जहांगीरकी जो कोई शरूस मालूम करना चाहे वह तुज़क जहांगीरी को देखले. जब कुंवर कर्णसिंह बुलायेगये उस वक़् इंग्लिस्तानके बादशाह अव्वल जेम्सका एल्ची सर टामस रो शाही दर्बारमें मौजूद था. वह लिखता है कि "बादशाहने कुंवर कर्णको कटहरेके भीतर बुलाया और उसका सिर चूमा". बादशाह जहांगीर लिखता है कि- "मैंने कर्णकी जंगली तबीअत देखकर उसको खुश करनेके लिये मिहर्बानी की कोई बात बाक़ी न रक्खी, उसको ख़िलअ़त और तलवार जड़ाऊ, और इसके दूसरे दिन तलवार जड़ाऊ, फिर ख़ासा इराक़ी घोड़ा जड़ाऊ ज़ीन समेत बख़्शा, और उसी दिन कर्ण ज़नाने महलपर गया, तो नूरजहां बेगमकी तरफ़से ख़िलअ़त, तलवार जड़ाऊ, घोड़ा ज़ीन समेत और १ हाथी मिला. पीछे एक माला मैंने कर्णको दी. दूसरे दिन हाथी ख़ासा बख़्शा".

बादशाहने चाहा कि कर्णको तमाम चीज़ोंमेंसे एक एक देनी चाहिये, इस लिये तीन बाज़, ३ जुर्रे, १ तलवार ख़ासा, १ ज़िरह बक्तर और दो अंगूठियां एक लाल जड़ीहुई दूसरी पन्नेकी, बख़्शी. इसी महीनेके अंतमें क़ालीन नमदा तक्या और हर तरहकी खुशबू और सोनेके बरतन व दो बैल गुजराती और दुशाले वग़ैरह, १०० किश्तियोंमें रखकर कर्णको दिये, और दिन दिन ज़ियादा मिह-र्बानी बढ़ती रही. एक माला नीलम और मोतियोंकी जिसमें लाल था बख़्शी, और पांचहज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया.

बादशाहने विक्रमी १६७२ ज्येष्ठ कृष्ण ८ [हि० १०२४ ता० २२ रबीउस्सा-नी = ई० १६१५ ता० २१ मई] में कुंवर कर्णसिंहको जिस तफ़्सीलके साथ जा-गीर इनायत की, उसके फ़र्मानका तर्जुमा नीचे लिखाजाता है-

जहांगीर बादशाहके फ़र्मानकी नक़्ल-

उन इक़रारोंके मुवाफ़िक़ जो १९ वीं तीर सन् १० जुलूसको हुए हैं, इस वक़्में बड़े दर्जेवाला फ़र्मान मिहर्बानीके तरीक़ेसे जारी किया जाता है- कि पांच कि-रोड़ तीस लाख छः हज़ार आठसौ बत्तीस दाम, बुज़ुर्ग सर्दार मिहर्बानियोंके लायक़ बादशाहके पसन्दीदा कुँवर कर्ण, बड़ी इज़्ज़तवाले ख़ान्दानी राणा अमरसिंहके बेटेकी जागीरमें मुक़र्रर होकर सौंपे जाते हैं.

मुनासिब है कि बड़े हाकिम, अह्लकार, जागीरदार और कामदार दीवानी वाले, बादशाही हुक्म मानने वाले और कामोंके संभालनेवाले, बड़े पाक हुक्मके मुवाफ़िक़ तामील करके उन परगनोंको, ज़िक्र किये हुए आदमीके क़ब्ज़ेमें छोड़कर, वहांके क़ायदोंमें किसी तरहका फ़र्क़ न डालें.

चौधरी, क़ानूनगो, पटैल, रअ़य्यत और किसानोंको चाहिये- कि नीचे लिखे हुए परगनोंमें ऊपर लिखेहुए आदमीको अपना जागीरदार (हाकिम) जानकर अच्छी तरह दीवानीकी रस्मोंमें क़ायदेके मुवाफ़िक़ फ़स्ल फ़स्लपर और वर्ष वर्षपर जवाबदिही करते रहें, किसी तरह इस काममें कमी न करें-- उस (कर्ण) के हिसाबी गुमाश्तोंकी सलाह और तदबीरसे बर्ख़िलाफ़ न होकर उनकी जगहमें उनके पास हाज़िर होते रहें, हुक्मसे बर्ख़िलाफ़ कोई काम न हो, अपने क़ायदेपर जमे रहें.

कुंवर कर्ण, राणा अमरसिंहके बेटेकी जागीर-

५ क्रिरोड़.

३० लाख.

६ हज़ार ८ सौ ३२ दाम.

याद्दाश्तकी मुवाफ़िक़ तारीख़ दिन आज़र ३१ वीं उर्दीबिहिश्त सन् १० जुलूस वृहस्पति वार सन् १०२४ हिज्री ता० २२ रबीउस्सानी को बादशाही उम्दा सर्दार और बादशाही कामोंके मुख्तार एतिमादुद्दौलाके रिसालेमें, और बड़े अक्लमन्द हकीम मसीहुज़्ज़मांकी चौकीमें, और छोटे ख़ैरख़्वाह इसहाक़की वाक़िआ नवीसीकी बारीमें, बुज़ुर्ग हुक्म जारी हुआ, कि कुंवर कर्ण, राणा अमरसिंहके बेटेकी जागीर मुवाफ़िक़ मन्सब पांचहज़ारी ज़ात और सवारके इस तरह मुक़र्रर हो- बादशाही याद्दाश्तके मुवाफ़िक़ लिखा गया.

यह लिखावट वाक़िएके मुवाफ़िक़ है- बयान लिखावटका एतिमादुद्दौला दुबारा अर्ज़ करे- बयान बादशाही दर्गाहके हाज़िरबाश मुख़्लिसख़ांके हाथसे लिखाहुआ तारीख़ ५ वीं ख़ुर्दाद सन् १० जुलूस मुवाफ़िक़ २७ वीं रबीउस्सानीको दुबारा अर्ज़ होकर, एतिमादुद्दौलाके हाथसे बुज़ुर्ग फ़र्मान लिखा जावे.

५ हज़ार सवार मए ख़ास,

मुक़र्रर तनख़्वाह

५२ लाख दाम,

ख़ास पांच हज़ारी ज़ात.

३० हज़ार ४० दाम,

१२ लाख दाम,

मुक़र्रर वर्षके सवार, रियासती हिस्सेके,

५ किरोड़,

७२ लाख दाम ख़ास चौथके,

माल

५ किरोड़

३९ लाख दाम,

३८ लाख,

६ हज़ार ७ सौ ३४ दाम— रत्लामके परगने, उज्जेनके ज़िले, मालवेके सूबेमेंसे.

बयानपर एतिमादुद्दौलाके
हाथसे बादशाही महफ़िलमें तज्वीज़
होकर बादशाही दस्तख़त हुए, बाद
अस्ल काग़ज़ दफ़्तरमें गई।

याद्दाश्तके क़रारसे
दिन आज़र उर्दी सन् १० जुलूस
मुवाफ़िक़ शनिवार २८ वीं महीने सफ़र
सन् १०२८ हिज्रीको, उम्दा सर्दार, बादशाहके
वज़ीर, मुल्कके बख़्शी, ख़्वाजह अबुल् हसन, के रिसालेमें,
और मिहर्बानीके लायक़, दाऊदख़ां ख़्वाजा इब्राहीम हुसैनकी चौकीमें,
और बादशाही दर्गाहके तावेदार अस्करी मामूरीकी वाक़िआनवीसीकी
बारीमें, बुज़ुर्ग हुक्म जारी हुआ, कि कुँवर कर्ण, राणा अमरसिंहका बेटा "पांच हज़ारी ज़ात
और सवार", के मन्सबपर सर बुलन्द हो- याद्दाश्तके मुवाफ़िक़ लिखागया— यह बयान
वाक़िआनवीसकी लिखावटके मुवाफ़िक़ है.
दूसरा बयान बुज़ुर्ग सर्दार एतिमादुद्दौलाकी लिखावटका दुबारा अ़र्ज़में पहुंचा, और बयान मिहर्बानीके
लायक़ मिर्ज़ा सादिक़की लिखावटका तारीख़ पहली आबान् फ़रवर्दी सन् १० जुलूस मुवाफ़िक़ ६ रबी-
उल्अव्वल सन् १०२८ हिज्री "पांच हज़ारी ज़ात और पांच हज़ार सवार", दुबारा बादशाहसे अ़र्ज़ हुआ.

५ किरोड़
३९ लाख २ सौ ६६ दाम.

इक़रारकी लिखा कुंवर कर्णके दस्तख़तसे, १९ वीं महीने ख़ुर्दाद सन् १० जुलूसके मुवाफ़िक़. मतलब इस लिखेहुएसे यह है, कि मेरानाम कुंवर कर्ण है पांच किरोड़ उन्तालीस लाख दामकी जागीर, नीचे लिखे हुए इलाक़ोंमेंसे, शुरू बर्ख़िलाफ़ीसे अपनी रज़ामन्दीके साथ क़ुबूल करताहूं—कि लिखावट एतिमादुद्दौलाकी एतिबार कीजावे–नीचे लिखे मुवाफ़िक़–

लिखावट एतिमादुद्दौलाके
आधी रबीअ् तविश्क़ां.

फ़स्ल रबीअ् (१) तवि-
श्क़ां ईलसे–
३ किरोड़
१५ लाख
५४ हज़ार ७ सौ दाम.

आधी रबीअ् तविश्क़ां ईल
बदनौर परगनेसे–
५० लाख दाम.

दूसरी लिखावट
आधी तविश्क़ां ईलसे.

फ़स्ल ख़रीफ़ तविश्क़ां ईलसे–
एक किरोड़
३५ लाख
३८ हज़ार ५ सौ ६६ दाम.

ख़रीफ़ तविश्क़ां ईलसे

---

(१) हिन्दू लोग चार या बारह वर्षका एक युग मानते हैं, उसी तरह तुर्किस्तान के लोगोंने बारह वर्षका एक दौर ठहराकर उन बारह वर्षोंके जुदे २ जानवरों के नाम पर नाम रक्खे हैं– जिनका फल भी उन्हीं जानवरोंकी आदतसे निकालते हैं— उन जानवरोंके नाम यह हैं—

१	सिच्क़ां	=	चूहा
२	ऊद	=	गाय
३	पारस	=	चीता
४	तविश्क़ां	=	ख़रगोश
५	लोए	=	मगर
६	पीलां	=	सर्प
७	योंत	=	घोड़ा
८	क़ोए		गाडर
९	बीचे	=	बन्दर
१०	तख़ाक़ू	=	मुर्ग़
११	ईत	=	कुत्ता
१२	तुंगोज़	=	सूअर

और ईल, वर्षको कहते हैं, जिससे जानवरके नामके बाद ईल लगायाजाता है–जैसे तविश्क़ां ईल वग़ैरह.

आधेकी मुवाफ़िक़–

२ किरोड़
६२ लाख.
५० हज़ार दाम.

३८ लाख ६ हज़ार ७ सौ ३४ दाम परगने रतलाम, ज़िले उज्जैन, सूबे मालवासे निकाले गये.

रावल गिर्धरदास ज़मींदार बांसवालाकी जागीरमेंसे रबीअ़ तविश्क़ां ईलसे निकालनेका हुक्म हुआ–

३३ लाख
९९ हज़ार दाम.

४४ लाख १३ हज़ार २ सौ ३६ दाम, इस तरह द्वारिकादासकी जागीरमेंसे–

५ लाख
३६ हज़ार ७ सौ ३७ दाम.

शम्शेर अरबकी जागीर रबीअ़ तविश्क़ां ईल अपने तौरपर ख़रीफ़ तविश्क़ां ईलसे निकालने का हुक्म हुआ.–

४ लाख
७ हज़ार ७ सौ ३४ दाम.

२ किरोड़
३१ लाख
४३ हज़ार २ सौ ६६ दाम.

रबीअ़ तविश्क़ां ईल मेंसे–
४६ लाख
४० हज़ार ७ सौ दाम.

ख़रीफ़ तविश्क़ां ईल मेंसे–
१ किरोड़,
३५ लाख,
३८ हज़ार ५ सौ ६६ दाम.

आधी रबीअ़ तविश्क़ां ईल परगने बदनौरसे–
५० लाख दाम.

(परगना.)

फूलिया वग़ैरह सूबे अजमेरमेंसे—
२ किरोड़,
१९ लाख,
१६ हज़ार ४ सौ ४१ दाम.
२९ लाख ७७ हज़ार ८ सौ ७५ दाम, परगने जीरणसे, जो दूसरी जागीरमें लिखा गया.

१ किरोड़
८९ लाख
३८ हज़ार ५ सौ ६६ दाम.

रबीअ़ तविश्क़ां ईलसे—
४ लाख दाम.

आधी रबीअ़ तविश्क़ां ईल परगने बदनौरसे—
५० लाख दाम.

ख़रीफ़ तविश्क़ां ईलसे—
१ किरोड़
३५ लाख
३८ हज़ार ५ सौ ६६ दाम.

फूलिया वग़ैरह, रावत सगरकी जागीर मेंसे, जिसकी रबीअ़ तविश्क़ां ईल भामावत करोरीकी नौकरीमें ख़ालिसे से मुक़र्रर हुई. ख़रीफ़ तविश्क़ां ईलसे जागीरदारको हुक्म मिला—

१ किरोड़
८ लाख
८८ हज़ार ३१ दाम.

बदनौर वग़ैरह—
८० लाख
५० हज़ार ५ सौ ३० दाम.

फूलिया, भामावत कम्बोकी नौकरी में—
४४ लाख दाम.
अस्ल—
३० लाख दाम.
इज़ाफ़ा—

मांडलगढ़ वग़ैरह हरीदासकी नौकरीमें—
६४ लाख
८८ हज़ार ३१ दाम.
मांडलगढ़, पुर, रावत सगर ४४ लाख से उतारकर-

रबीअ़ तविश्क़ांईलसे—
४ लाख दाम.
ख़रीफ़ तविश्क़ांईलसे—
२६ लाख
५० हज़ार
५ सौ ३० दाम—

आधी रबीअ़ तविश्क़ां ईलसे—
५० लाख दाम.

१४ लाख दाम.	३ हज़ार २ सौ७२दाम.	२५ लाख ८७ हज़ार २ सौ ८१ दाम.	बदनौरसे आधीरबीअ़ तविश्क़ां ईलसे निकालनेका हुक्महुआ—	भैंसरोड़ वगैरह, राव चांदासे ख़रीफ़ तविश्क़ां ईलके निकालनेका हुक्म हुआ—
	१३ लाख ४७ हज़ार ७सौ १ दाम.	ख़ास जागीर—	५० लाख दाम.	२६ लाख ५० हज़ार ५ सौ ३० दाम.
	ख़ालसा, रावत सगर कीजागीर से३०लाख ५५हज़ार ५-सौ६५दाम.	१९ लाख दाम. कमी— ६ लाख ८७ हज़ार २ सौ ८१ दाम.	नरहरदाससे किशनसिंह मोटे राजाकेबेटे निकालेहुए- से निकाले हुए- ४७ लाख ४१हज़ार दाम. / २ लाख ५९ हज़ार दाम.	भैंसरोड़ १४लाख ५०हज़ार दाम. / नीमच १२लाख ५ सौ ३० दाम.
	बागोर, रावत सगरकी जागीरसे— ८ लाख दाम.	हमीरपुर, ४५ हज़ार १ सौ ८५ दाम.	ऊपरमाल, उग्रसेनकी जागीरसे रबीअ़ तविश्क़ां ईलके निकालनेका हुक्म हुआ— ४ लाख दाम.	
	ख़ास जागीर. ४ लाख २० हज़ार ८ सौ ७५ दाम.	ज़ियादा— ३ लाख, ७९ हज़ार १ सौ २५ दाम.		

परगना.

जीरण वगैरह
८० लाख
११ हज़ार ४ सौ ३४ दाम.

३८ लाख ३ हज़ार ७ सौ ३४ दाम, परगने रतलाम, ज़िले उज्जैन, सूबे मालवासे, ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ निकालनेका हुक्म हुआ.

४२ लाख
४ हज़ार ७ सौ १ दाम.

जीरण, ज़िले चित्तौड़, सूबे अजमेर, रावत सगरकी जागीरसे रबीअ़ तविश्क़ां ईलसे निकालनेका हुक्म हुआ—

बसार वगैरह, ज़िले मन्दसोर, रबीअ़ तविश्क़ां ईलसे
१२ लाख

२९ लाख
७७ हज़ार
८ सौ ७५ दाम.

२६ हज़ार ७ सौ ९५ दाम.

बसार–	गयासपुर–
९ लाख	२ लाख
६६ हज़ार ३ सौ	६० हज़ार ४ सौ
७५ दाम.	२० दाम.

आधी रबीअ़ तविश्क़ां ईलसे–
२ किरोड़
६९ लाख
५० हज़ार दाम.

परगने उदयपुर वग़ैरह सूबे अजमेरसे–
८० किरोड़
४४ लाख
३८ हज़ार ७ सौ ६१ दाम.

परगना.

परगना उदयपुर वग़ैरह, जो हमेशा बादशाही नौकरोंकी तनख़्वाहमें रहा है, क़रार याद्दाश्त वाक़े दिन आज़र तारीख़ शुरू माह ख़ुर्दाद इलाही सन् १० जुलूस, मुवाफ़िक़ शुक्रवार रबीउस्सानी सन् १०२४ हिज्री, रिसाले नव्वाब शाहज़ादे इज़्ज़तदार और चौकी इरादतखां और नौबत वाक़िआनवीसी मुहम्मद ज़ाहिद मर्वारीदमें जारी हुआ, बाज़े परगने, इलाक़े रानाकी ज़मीनके पासवाले, मुद्दतसे दो तरफ़ा अमलमें रहे, और वह परगने मिहर्बानीसे तनख़्वाहमें जागीर दारोंको मिले; अगरचि ज़ाहिर है कि जागीर-दार कुछ नहीं पाते थे.

इस वक़्त कि जागीर और तनख़्वाह कुंवर कर्णकी पेश है, हुक्म हुआ कि आधी तनख़्वाह दें, और अर्ज़ करें कि परगने मज़्कूर जो काग़ज़ोंमें अमली सीग़ेमें दाख़िल हैं उनमें से आधी ग़ैर अमल तनख़्वाह होती है–– जो हक़ीक़त उस तरफ़की बादशाहसे अर्ज़ हुई, हुक्म बादशाही सादिर हुआ, कि वह परगने मुवाफ़िक़ अर्ज़ कुंवर कर्णके उसको देवें और दीवान आधेमें ग़ैर अमल एतिबार करके तनख़्वाह देवें. मुवाफ़िक़ तस्दीक़ याद्दाश्तके लिखा गया, हाशियेका बयान वाक़िएके मुवाफ़िक़ है, शरह ज़ुम्दतुल्मुल्कके ख़तसे दोबारा अर्ज़में पहुंची.

दूसरी शरह मुख़्लिसखांके ख़तसे तारीख़ माह इलाही सन् १०, मुवाफ़िक़ २७ रबीउस्सानी सन् १०२४ हिज्री दूसरी दफ़ा अर्ज़ हुई–

६४ लाख
३८ हज़ार ७ सौ ६१ दाम.

उदयपुर वग़ैरह–
३ परगने
उदयपुर चार परगने
भीलवाड़
२१ लाख
२० हज़ार दाम.

बेगूं, रावत सगर
की जागीरसे–
११ लाख
७५ हज़ार
७ सौ २९ दाम.

शाहज़ादा आबाद,
उर्फ़ कपासन, रावत
सगरकी जागीरसे–
५ लाख
८५ हज़ार
९ सौ दाम.

बादशाही रिआयत–
६ लाखदाम.

ज़ियादा–
४ लाख
८५ हज़ार
९ सौ दाम.

शाहआबाद उर्फ़
बसार–
९ लाख,
५ हज़ार ९ सौ दाम.

बादशाही रिआयत–
८ लाख
१२ हज़ार
३ सौ दाम.

ज़ियादा–
९२ हज़ार
७ सौ दाम.

सादड़ी, रावत सगरसे
उतार कर–
४ लाख
२० हज़ार ८ सौ दाम.

कोस्माना–
२ लाख
६३ हज़ार
८ सौ
१२ दाम.

अरनोद–
२ लाख.

मदारिया–
१ लाख
६० हज़ार दाम.

इस्लामपुर–
१ लाख
८ हज़ार ९ सौ दाम.

(परगना).

डूंगरपुर, ग़ैर अमली, ८० लाख दाम.

बयान जुम्दतुल्मुल्कके ख़तका, डूंगरपुर
की जमा एक किरोड़ साठ लाख दाम
क़रार पाई, ज़ियादाकी निस्बत दूसरा जो
कुछ कि हुक्म होगा अमलमें लाया जावेगा.

(परगना).

बाक़ी ज़िला कुम्भलमेर और ज़िला गोगूंदा वगैरह, राना अमरसिंहके मुल्क में से-

८० किरोड़
२५ लाख
११ हज़ार
२ सौ ३९ दाम.

मुवाफ़िक़ यादाश्त तारीख़ दिन गोश १४ तारीख़ महीना खुर्दाद इलाही सन् १० जुलूस, मुवाफ़िक़ ब्रहस्पति वार तारीख़ १७ जमादियुल्अव्वल् सन् १०२४ हिज्री, रिसाले एतिमादुद्दौला, चौकी हकीम मसीहुज़्ज़मां, नौबत वाक़िआनवीसी इस्हाक़में, हुक्म बादशाही सादिर हुआ, कि जागीर कुंवर कर्णकी ख़ास और सवार पांच हज़ारी, एवज़ परगने रतलाम, ज़िला उज्जैन, सूबे मालवासे इस तरह मुक़र्रर हो.

मुवाफ़िक़ बादशाही यादाश्तके लिखा गया,- बयान हाशियेका मुवाफ़िक़ वाक़िएके है- बयान जुम्दतुलमुल्कने दूसरी बार अर्ज़ किया- बयान मुख़्लिसख़ांके ख़तसे तारीख़ आठवीं माह तीर सन् १० को दूसरी दफ़ा बादशाहसे अर्ज़ हुआ. बयान जुम्दतुलमुल्कके ख़तसे यह है कि फ़र्मान आलीशान लिखा जावे.

३८ लाख

६ हज़ार ७ सौ ३४ दाम की जमा कुंवर कर्णकी बहाल जागीरमें मुक़र्रर तनख़्वाह, नीचे लिखे मुवाफ़िक़ हैं-

२९ लाख.
१३ हज़ार ५ सौ ६६ दाम.

जहाज़पुर ज़िला और सूबा अजमेर, राजा सूरजसिंहकी जागीरसे-

१८ लाख
१३ हज़ार ५ सौ ६६ दाम.

इस्लामपुर, ज़िला चित्तौड़, कर्मसेन और रामसिंहसे उतारकर- ११ लाख दाम.

मन्सब वगैरा देनेके बाद बादशाहने लिखा है–कि "कुँवर कर्णकी रुख़्सतके दिन नज़्दीक आगये थे, और मैं अपने बन्दूक़ चलानेका फ़न् कर्णको दिखलाना चाहता था, इसी अर्सेमें शिकारी एक शेरनीके आनेकी ख़बर लाये. मैंने अहद किया था, कि सिवाय शेरनरके मादाका शिकार न करूंगा, लेकिन् इस ख़यालसे कि शायद इसके जाने तक कोई और शेर न मिले, शेरनी ही के शिकारपर मुतवज्जिह हुआ, और कर्णसे पूछा कि जिस जगह तुम कहो वहीं गोली लगाऊं, तब कर्णने दहिनी आंखमें लगानेको कहा. इत्तिफ़ाक़से उस वक्त हवा तेज़ चलती थी, और सवारीकी हथनी भी शेरके ख़ौफ़से घबराकर एक जगह न ठहरती थी; इन दो बातोंके होनेपर भी मेरी गोली मुक़र्रर जगह याने दहिनी आंखमें लगी– खुदाने मुझे उसके सामने शर्मिन्दा न किया, ख़ास बन्दूक़ कुंवर कर्णने मांगी, मैंने उसी वक्त उसको देदी– फिर कुंवर कर्णको मैंने मज्लिसमें क़बाय परमनर्म (दुशाला) ख़ासा और १२ हिरन और १० कुत्ते ताज़ी और दूसरे दिन ४० घोड़े और तीसरे दिन ४१ घोड़े; चौथे दिन २० घोड़े; पांचवें दिन १० चीरे, १० क़बा, १० कमरबन्द और छठेदिन १ लाल और एक कलग़ी २००० रुपयेकी कर्णको दी. जब कर्णने घरजानेकी रुख़्सत पाई, तो घोड़ा और हाथी ख़ासा और ख़िल्अत और मोतियोंका एक झुब्बा क़ीमती ५००० रु० का और ख़ंजर क़ीमती २००० रु० का कर्णको देकर राणा अमरसिंहके लिये घोड़ा व हाथी और मुबारिकख़ां सज़ावलको पहुंचानेके लिये साथ किया".

जहांगीर बादशाह फिर लिखता है– कि "मैंने कुंवर कर्णको हाज़िरीके समयसे रवानगी तक जवाहिरात, शस्त्र और नक्द वगैरा जो कुछ दिया, उसकी क़ीमत दो लाख है, और सिवाय इसके ११० घोड़े और ५ हाथी दिये, शाहज़ादे खुर्रमने जो सामान और नक्द कई दफ़ा दिया है, वह भी इसके सिवाय है. बहुत सी बातें मुहब्बत व नसीहतकी राणा अमरसिंहको कहलाईं."

इस पुस्तकके पढ़ने वालोंको याद रखना चाहिये कि जिस तरह ब्रिटिश इंडिया गवर्मेन्ट इस समय में अफ़्ग़ान लोगोंके साथ बर्ताव कर रही है, उसी तरह मेवाड़ी राजाओंके साथ जहांगीरने किया था, अगर यह मुआमिला वर्तमान समयसे पीछे मुसल्मान बादशाहोंके साथ मेवाड़ी राजपूतोंका हुआ होता तो हम बेशक ब्रिटिश इंडिया गवर्मेन्ट व अफ़्ग़ान राजनीतिको उपमा और उसको उपमेय कहते, लेकिन उसके पहिले और इसके पीछे होनेसे प्रतीप अलंकार समझना चाहिये. सर टॉमस रो इंग्लिस्तानके जेम्स बादशाहका एल्ची उस वक्त वहां मौजूद था उसने केन्टरबरी के आर्चबिशप अर्थात् केन्टरबरीके मुख्य लॉर्ड

पादरीको, जो चिट्ठी लिखी उसमें बयान करता है कि "एक पोरसके ख़ानदानका राजकुमार, मुग़ल बादशाहके दर्बारमें आया, जिसको बड़े मुग़ल (बादशाह) ने बख़्शिशों से ताबे बनाया है, तलवारके ज़ोरसे नहीं." अब सोचना चाहिये कि इस चिट्ठी के मज़्मूनसे या जहांगीरकी कर्णके साथ मुल्की तदबीरसे इस घरानेके राज कुमारोंको दिल्लीके मुसल्मान बादशाह किस कठिनताके साथ अपने क़ाबूमें लाये थे.

कुंवर कर्णसिंह अजमेरसे निकलकर अपने मुल्क मेवाड़को, जितना हो सका, आबाद करतेहुये उदयपुरमें पहुंचे, और महाराणा अमरसिंहको बड़ी रंजीदा हालतमें पाया, जो अपने नामके अमर महलमें गोशानशीन थे. कर्णसिंहके आते ही राज्यका कुल काम महाराणा अमरसिंहने उनके सुपुर्द करदिया. कोठार व राय (राज्य) आंगन तथा उसके पूर्व पश्चिमकी चौपाड़ें, जो अब 'नीकाकी चौपाड़', 'पांडेकी ओवरी' तथा 'पांणेरा' के नामसे मश्हूर हैं, महाराणा उदयसिंहने बनवाये थे, और महाराणा प्रतापसिंहने थोड़ीसी इमारत चावंडमें रहनेके लायक़ बनवाली थी, क्योंकि उन को लड़ाईकी तक्लीफ़ोंसे उदयपुरमें ज़ियादा रहनेका मौक़ा न मिला. इन महाराणा अमरसिंहने, जिनका प्रधान भामाशाह ओसवाल कावड़िया गोतका महाजन बड़ा आक़िल और बहादुर था, उसीके प्रधानेमें महलोंका अव्वल दर्वाज़ा, जिसको 'बड़ी पौल' कहते हैं, और 'अमर महल', जो ज़नाने महलोंके नज़्दीक हैं बनवाये थे.

भामाशाह बड़ी जुरअतका आदमी था, महाराणा प्रतापसिंहके शुरू समयसे महाराणा अमरसिंहके राज्यके २॥ तथा ३ वर्ष तक प्रधान रहा, इसने ऊपर लिखी हुई बड़ी बड़ी लड़ाइयोंमें हज़ारों आदमियोंका ख़र्च चलाया. यह नामी प्रधान सम्वत् १६५६ माघ शुक्ल ११ [हिज्री १००८ ता० ९ रजब = ई० १६०० ता० २७ जैन्यूअरी] को ५१ वर्ष ७ महीनेकी उम्रमें परलोकको सिधाया; इसका जन्म सम्वत् १६०४ आषाढ़ शुक्ल १० [हिज्री ९५४ ता० ८ जमादियुल्अव्वल् = ई० १५४७ ता० २८ जून] सोमवारको हुआ था, इसने मरनेके एक दिन पहिले अपनी स्त्रीको एक बही अपने हाथकी लिखी हुई दी, औरकहा कि इसमें मेवाड़के ख़ज़ानेका कुल हाल लिखा हुआ है, जिस वक्त तक्लीफ़ हो, यह बही उन (महाराणा) की नज़र करना. यह ख़ैरख़्वाह प्रधान इस बहीके लिखे हुए ख़ज़ाने से महाराणा अमरसिंहका कई वर्षों तक ख़र्च चलाता रहा. मरनेपर इसके बेटे जीवाशाहको महाराणा अमरसिंहने प्रधाना दिया था, वह भी ख़ैरख़्वाह आदमी था, लेकिन् भामाशाहकी सानीका होना कठिन था.

जब कुंवर कर्णसिंह बादशाह जहांगीरके पास अजमेर गये, तब शाह जीवराज भी साथ था. जीवराजके पीछे भी महाराणा कर्णसिंहने उसके बेटे अक्षयराजको प्रधाना दिया. इसके घरमें तीन पुश्त तक तीन महाराणाओं

का प्रधाना रहा. भामाशाहके बाप भारमल्लको महाराणा सांगाने रणथम्भोरकी क़िलेदारी दी थी, जो पीछे सूरजमल्ल हाड़ा बूंदी वालेको मिली, इसपर भी क़िले रणथम्भोरमें एतिबारी नौकरी और कुल कारबार भारमल्लके ही हाथ रहा था. इस ख़ैरख़्वाह घरानेके आदमी कुल अच्छे ही थे, परन्तु भामाशाहके नामसे ओसवाल ज़ातके हरएक महाजनको घमंड होता है, जिसतरह वस्तपाल तेजपाल, जो अन्हलवाड़ेके सोलंखी राजाओंके प्रधान थे और जिन्होंने आबूपर जैनके मन्दिर बनवाये, वैसाही पराक्रमी और नामी भामा शाहको भी जानना चाहिये, जिसकी नौकरीके एवज़ में वर्तमान समय तक उसकी औलादके कावड़िये महाजन महाजनोंके बड़े जल्सोंमें सबसे पहिले पेशानीपर तिलक पाते हैं, अब उन लोगोंमें कोई मश्हूर आदमी नहीं रहा, तो भी भामा शाहका नाम कुल मुल्कमें मश्हूर है.

कुंवर कर्णसिंह उदयपुरमें आये और मुल्क की रिआयाको बुला बुलाकर आबाद किया. कुछ दिनों बाद कुंवर कर्णसिंहके बड़े पुत्र भंवर (१) जगत्सिंहको हरदास झाला और बहुतसे राजपूतों समेत, बादशाह जहांगीरके पास भेजा; बादशाहने २०००० रुपये और १ हाथी व १ घोड़ा और ख़िलअ़त और शाल ख़ासा, भंवर जगत्सिंहको, ५००० रुपये और १ घोड़ा ख़िलअ़त हरदास झालाको देकर विदा किया.

जब कुंवर कर्णसिंह अजमेरसे उदयपुरको आये थे, तभी सगर अपने राणा पदको क़िले चित्तौड़में छोड़कर मए अपने बालबच्चोंके जहांगीरके पास पहुंचे, तब बादशाहने रावतका ख़िताब और ऊमरी भदौराका परगना उनको जागीरमें दिया, जो अबतक उनकी औलादके क़ब्जेमें चला आता है. क़िला चित्तौड़ महाराणा अमरसिंहके क़ब्ज़ेमें आया, लेकिन् नारायणदास अचलदासोत शक्तावतने बेगूं का क़ब्ज़ा नहीं छोड़ा, जो सगरका जागीरदार था; कुंवर कर्णसिंहने रावत मेघसिंह गोइन्ददासोत चूंडावतको उसके निकालदेनेके लिये भेजा, मेघसिंहने बेगूं जाकर नारायणदासको समझाया- कि महाराणा अपने मालिक व मा बाप हैं, उनसे साम्हना न करना चाहिये, इस तरह समझानेसे नारायणदास वहांसे निकल गया, और बेगूं व रत्नगढ़में महाराणाका क़ब्ज़ा होगया महाराणा अमरसिंहके हुक्मसे कुंवर कर्णसिंहने बल्लू चहुवानको बेगूंका पट्टा लिखदिया, जिससे नाराज़ होकर रावत मेघसिंहने उदयपुर आकर रुख़सत चाही

(१) दादेकी मौजूदगीमें कुंवरके बेटेको मेवाड़में भंवर कहते हैं.
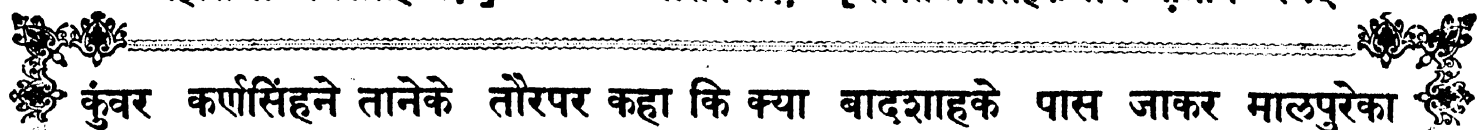
कुंवर कर्णसिंहने तानेके तौरपर कहा कि क्या बादशाहके पास जाकर मालपुरेका पट्टा पाओगे ? इसी ताने पर रावत मेघसिंह वहांसे निकल कर दिल्ली पहुंचा. एक दिन बादशाह जहांगीरने कहा कि तुमने एक रातमें मेवाड़के कुल बादशाही थाने किस तरह उठादिये थे, उसी तरहका लिबास पहिनकर हमारे साम्हने आओ.

मेघसिंहने डेरे जाकर मए अपने राजपूतोंके काले कपड़े पहिने और सिरपर धोंकड़े की टहनियोंके एवज़ रजकेकी किलंगियें लगाकर छोटी मश्क पानी पीनेकी बग़लमें रखी, बन्दूक़ तलवार कसकर बादशाहके साम्हने आया, तब जहांगीरने कहा कि इसको 'काली मेघ' कहना चाहिये. बादशाह ख़ुश हुआ और मेघसिंहकी अर्ज़के मुवाफ़िक़ मालपुरा जागीरमें देदिया, इस बाबत बादशाही फ़र्मान व शाहज़ादे ख़ुर्रमके निशान, जो मेघसिंह और उसके बेटे नरसिंहदासके नाम आये थे, उनका तर्जुमा यहां लिखाजाता है-

---

जहांगीर बादशाहका फ़र्मान, रावत् मेघसिंहके नाम.

फ़र्मान, अबुल् मुज़फ़्फ़र, नूरुद्दीन मुहम्मद, जहांगीर बादशाह ग़ाज़ी.

इस वक़ बड़े दरजेका नेक फ़र्मान जारी किया जाता है- कि बाईस लाख अड़तीस हज़ार पांच सौ दामकी जागीर, परगने मालपुरेकी, शुरू फ़स्ल रबीअ़ ईत ईल (चैती) से, मौजूद ज़मानेके मुवाफ़िक़, रावत मेघाकी तनख़्वाही जागीरमें मुक़र्रर कीजावे.

मुनासिब है कि हाकिम, काम्दार, जागीरदार, दीवानीके अहल्कार और हिसाबी ज़िम्मेदार, पाक और बुज़ुर्गहुक्मके मुवाफ़िक़ अमल करके, उन गांव और जागीरको ज़िक्र कियेहुए आदमीके क़ब्ज़ेमें छोड़ दें- किसी तरहका फ़र्क़ और कोई तब्दीली उसके क़ायदोंमें न करें.

चौधरी, क़ानूनगो, पटेल, रअ़य्यत, किसान वग़ैरहको चाहिये कि ज़िक्र किये हुए रावतको अपना जागीरदार (हाकिम) जानें.

दीवानी और माली हिसाब किताबको दस्तूरके मुवाफ़िक़ हर फ़स्ल और हर वर्ष पर उसे समझावें और जवाब देते रहें.

किसी तरह इसमें कमी न करें, उसकी हिसाबी तद्बीरोंसे बख़िलाफ़ी न करके हर बातके लिये ज़िक्र कियेहुए रावतके पास हाज़िर होते रहें-हुक्मकी ताबेदारी ज़ुरूर समझें.

(काग़ज़की पीठकी तह्रीह).

जागीर ________________________________

रावत् मेघाके नाम याद्दाश्तके मुवाफ़िक़ यह है–

सुब्हके वक़ दिन आस्मान २७ इस्तिक़ार इलाही सन् १० जुलूस, बुधवार हिज्री १०२५ ता० २७ सफ़र (१) को जुम्दतुल्मुल्क, मदारुल्महाम, मुस्ता-रुद्दौला, एतिमादुद्दौलाके रिसालेमें, और नेकबख़्त मुस्तफ़ाख़ांकी चौकी, और बादशाही ताबेदार मुहम्मदअ़ली शुक्रुल्लाहकी वाक़िआनवीसी में, बुज़ुर्ग, रौशन हुक्म जारी हुआ–कि रावत् मेघाकी जागीर ज़ाती चारसौ और सवार दोसौ इस तरह मुक़र्रर कीजावे– तस्दीक़के मुवाफ़िक़ लिखागया, बयान वाक़िआनवीसका सहीह है, दूसरा बयान जुम्दतुल्मुल्क, मदारुल्महाम, एतिमादुद्दौला वज़ीरके ख़तसे दो बारा अ़र्ज़हुआ, दूसरा बयान ख़ास मुसाहिब दियानतख़ांने ११ जुलूस, मुवाफ़िक़ मंगलवार तारीख़ १० रबीउल्अव्वल् सन् १०२५ हिज्री को कार्रवाईमें हुक्मके मुवाफ़िक़ दोबारा अ़र्ज़ हुआ– दूसरा बयान जुम्दतुल्मुल्क वज़ीरके ख़तसे, फ़र्मान लिखा जावे.

२०० सवार मए ख़ास
तनख़्वाह
२२३८५०० दाम.
मुक़र्रर एवज़
परगना भरसावर, ज़िला उज्जैन, सूबे मालवासे, जो केशवदासको तनख़्वाहमें मिला था.

दूसरी बार १०००००० दाम ज़ियादा तनख़्वाह, २०० सवार,
३२३८५०० दाम.

मुक़र्रर तनख़्वाह परगने मालपुरा, ज़िले रणथम्भोर, सूबे अजमेरमेंसे, जो मिर्ज़ा रुस्तमसे उतारकर ख़ालिसेमें दाख़िल हुआ था.

शरह
याद्दाश्त दिन आस-
मान २७ बहमन, १० जुलूस,
मुताबिक़ मंगलवार २७ मुहर्रम सन
१०२५ हिज्रीको बड़े सर्दार अबुलग़ियासुल्मुल्क
ख़्वाजा अबू इस्हाक़के रिसाले, और मिह्रबानियोंके आय-
के तातारख़ांकी चौकीमें, वाक़िआनवीसके मुताबिक़ यह मन्सब
ई–कि रावत मेघाका मन्सब जागीरके सिवाय है–बादशाही हुक्म जारी
हुआ–कि ज़ात और सवारके मुवाफ़िक़ सरबुलन्द है–दियानतख़ांकी लिखावटसे
सन १० जुलूस मुवाफ़िक़ मंगलवारको कार्रवाईकी फ़र्द दोबारा अ़र्ज़ हुई–चारसौ ज़ात,
दोसौ सवार.

---

(१) विक्रमी १६७२ चैत्र कृष्ण १४ = सन् १३१६ ई० ता० १६ मार्च.

बयान उम्दतुल्मुल्क
वज़ीरका यह है, कि शुरू-
अत इसमें वाक़िआं द-
र्ज़ किये करें- दूसरा बयान
उम्दतुल्मुल्कका यह है
कि ज़िक्र किये हुए रावत
मेघाकी तनख्वाहके लिये
जागीरमें बांटदियाजावे.

शाहज़ादे ख़ुर्रमका निशान, रावत् मेघसिंहके नाम-

खुदा
शाहे जहां करदो बुलन्द
इक्बालु दाद अफ़्सर; ब
खुर्रमशाह, बिन् शाहे ज-
हांगीर इब्निशह
अक्बर.

निशान्, आलीशान् खुर्रम, इब्ने अबु-
ल् मुज़फ़्फ़र, नूरुद्दीन मुहम्मद, जहांगीर
बादशाह ग़ाज़ी . ॥

बराबरी वालोंमें उम्दा रावत् मेघ, शाही मिहर्बानीका उम्मेदवार होकर जाने- हम उसको अपना ख़ैरख़्वाह, कारगुज़ार राजपूत जानते थे, इसलिये हमने उसको कांगड़ेके झगड़ेपर मुक़र्रर किया था- उसने अपनी जागीरमें जाकर इस क़दर देर लगादी कि ख़ैरख़्वाह मददगार ताबेदार एतिबारके लायक़ राजा विक्रमादित्यने सूरजमल्लके मुआमलेको थमा रक्खा- इसलिये बड़े हज़रत (जहांगीर) बुज़ुर्ग दरजेके बादशाहने उसकी जागीर उतारनेके लिये हुक्म दिया था, लेकिन् ख़ैरख़्वाह सर्दार मिहर्बानियोंके लायक़ कुंवर भीमने हमसे अर्ज़ किया कि वह ज़रूरतके सबब ठहरगया है, अब पूरा ख़याल है कि वह रवाना होचुका होगा- इस बातको हमने बादशाही हुज़ूरमें अर्ज़ करके उसकी जागीर साबिक़ दस्तूर बहाल रक्खी है, और बुज़ुर्ग निशान् उस मुआमलेकी बाबत हमने भेजदिया.

दुबारा उसका एक ख़त ख़ैरख़्वाह सर्दार ख़्वाजा अबुल्हसनके नाम पहुंचा, जिसका मज़्मून हज़रत शहन्शाहके हुज़ूरमें अर्ज़ हुआ, तो मालूम हुआ, कि वह

अबतक कांगड़ेके लश्करकी तरफ़ रवाना नहीं हुआ, इस लिये बड़े हज़रतने उसकी जागीर उतार कर ख़ास ख़ैरख़्वाह बड़े दरजेके सर्दार मिह्बोनीके लायक़ बादशाह-तके मोतबर आसिफ़ख़ांको इनायत फ़र्मादी. अगर वह चाहता है कि इस क़ुसूरका एवज़ करे, और बड़े हज़रत उसकी ख़ता मुआफ़ करें, तो मुनासिब है कि अच्छी जमइयत लेकर बाला बाला अपने घरसे ज़िक्र किये हुए राजाके पास चलाजावे. जब कि राजा उसके और ज़ाबतेकी मुवाफ़िक़ उसकी जमइयत पहुंच जानेकी बाबत अर्ज़ी लिखेगा, तो उस वक्त़ हम बड़े हुज़ूरकी ख़िदमतमें अर्ज़ करके उसका क़ुसूर मुआफ़ करादेंगे– और बड़े दीवानको हुक्म देंगे कि उसकी जागीर किसी दूसरे मुनासिब इलाक़ेसे तन्ख़्वाहके तौर जारी करदें– अगर इस तरीक़ेपर अमल न करे, और हमारी ख़िदमतमें नौकरीका इरादा रखता हो, तो फ़ौरन् हाज़िर हो जावे कि उसके लायक़ मिह्बानियोंके साथ सरबुलन्दी बख़्शी जावे– और जो नहीं तो जहां चाहे चलाजावे, कोई रोकने वाला नहीं है– तारीख़ २६ बहमन् इलाही सन् १३ जुलूस, मुताबिक़ सन् १०२७ हिज्री.

पीठकी इबारत.

बड़े ख़ैरख़्वाह ताबेदार अफ़ज़ल्ख़ांके रिसाले और वाक़िआ नवीसीमें जारी हुआ.

शुक्रुल्ला
अफ़ज़ल्खां बन्द-
इ शाहजहां.

जहांगीर बादशाहका फ़र्मान, नरसिंहदासकी जागीरके लिये–

फ़र्मान, अबुल्मुज़फ़्फ़र, नूरुद्दीन मुहम्मद, जहांगीर बादशाह गाज़ी.

इस वक्त़ बुज़ुर्ग फ़र्मान जारी कियागया कि २९८१०० दो लाख अट्ठानवे हज़ार एक सौ दामकी जागीर, परगने मालपुरा, ज़िले रणथम्भोर, सूबे अजमेरमें से शुरू रबीअ ईत ईलसे रावत मेघाके बेटे नरसिंहदासकी जागीरी तन्ख़्वाहमें मुक़र्रर की जावे– मुनासिब है कि हाकिम, जागीरदार और दीवानीके अहल्कार और हर तरहके

बादशाही नौकर हुक्मके मुवाफ़िक़ अमल करके, ज़िक्र कियेहुए आदमीके क़ब्ज़ेमें रखदें- किसी तरह वहांके ज़ाबितों और क़ायदोंमें हेर फेर न करें- चौधरी, क़ानूनगो, पटैल, रअ़य्यत् और किसानोंको लाज़िम है, कि ज़िक्र कियेहुए आदमीको वहांका जागीरदार समझकर माली और दीवानी जवाबदिही दस्तूरके मुवाफ़िक़ उसके पास फ़स्ल फ़स्ल और साल साल पर करते रहें, किसी तरह इस बातमें कमी नकरें-उसकी हिसाबी तदबीरोंसे बर्ख़िलाफ़ न रहकर उसके पास हाज़िर होते रहें- इस हुक्मके मुवाफ़िक़ तामील ज़रूरी समझें- तारीख़ २२ उर्दीबिहिश्त इलाही सन् ११ जुलूस, मुताबिक़ सन् १०२५ हिज्री.

पीठकी तफ़्सील.

जागीर ____

रावत मेघाके बेटे नरसिंहदासके नाम, याद्दाश्तकी मुवाफ़िक़ दिन आसमान् तारीख़ २७ इस्तिक्रार मुताबिक़ बुधवार २७ सफ़र सन् १०२५ हिज्री को, ज़ुम्द-तुल्मुल्क मदारुल् महाम एतिमादुद्दौला वज़ीरके रिसालेमें, और नेक ख़ान्दान् मुस्त-फ़ाख़ांकी चौकीमें, बादशाही नौकर मुहम्मद हयात शुक्रुल्लाहकी वाक़िआ़ नवीसीके मुवाफ़िक़ बुज़ुर्ग हुक्म जारी हुआ कि रावत मेघाके बेटे नरसिंहदासकी जागीर, चार बीसी ज़ात, २० सवार की बाबत, मुक़र्रर की जावे- तस्दीक़से लिखा गया- हाशियेका बयान वाक़िआ़ नवीसके ख़तसे दुरुस्त है- दूसरा बयान ज़ुम्दतुल्मुल्क वज़ीरके ख़तसे दुबारा अ़र्ज़ हुआ- दूसरा बयान बादशाही मुसाहिब दियानत-ख़ांके ख़तसे- दिन आबान् ता० १० फ़र्वर्दी सन् ११ जुलूस, मुवाफ़िक़ बुधवार ता० ११ रबीउल्अव्वल् सन् १०२५ को मुहम्मद हयात ख़ुश् नवीसकी वाक़ि-आ़ नवीसीसे दुबारा अ़र्ज़ हुआ- दूसरा बयान वज़ीरके ख़तसे लिखा गया, कि फ़र्मान लिखा जावे-

रु० २१ सवार मए ख़ास.
मुक़र्रर दरमाहा-
३०८०० दाम.
ख़ास ____________
चार बीसी ज़ात-
मुक़र्रर दरमाहा-
४०३७० दाम.

याद्दाश्तका बयान रोज़ मुर्दाद छठी इस्तिक्रार सन् १० जुलूस मुताबिक़ बुधवार ६ सफ़र सन् १०२५ हिज्री को बड़े दरजेके सर्दार बादशाही ख़ैरख़्वाह बख़्शि-युल्मुल्क ख़्वाजा अबू इस्हाक़के रिसालेमें और नेक

बाबत ________

फ़ी नफ़र २० बीस सवार

१६८०० दाम-

मुक़र्रर साल्याना सिवाय

३३८८०० दाम.

४८४०० दाम ख़ास.

२९८१०० दाम.

ख़ान्दान् मुस्तफ़ाख़ांकी चौकी और बादशाही नौकर मुहम्मद मुक़ीमकी वाक़िआ नवीसीमें बुज़ुर्ग हुक्म जारी हुआ कि रावत मेघाके बेटे नरसिंहदासका मन्सब, जो बापके साथ इन दिनोंमें रानाके पाससे आया, ज़ात और सवार इस मुवाफ़िक़ मुक़र्रर किया जावे-बयान वाक़िआ नवीसके ख़तसे सहीह है-दूसरा बयान जुम्दतुल्मुल्क मदारुल्महाम एतिमादुद्दौला वज़ीरके ख़तसे दुबारा अर्ज़ हुआ-दूसरा बयान मिहर्बानियोंकी लायक़ दियानतख़ांके ख़तसे दिन आबान् १० फ़र्वर्दी सन् ११ जुलूस मुवाफ़िक़ बुधवार, हुक्म की मुवाफ़िक़ अर्ज़ होगया-

चार सदी.
बीस सवार.

मुक़र्रर तन्स्वाह परगना मालपुरा, ज़िला रणथम्भोर, सूबा अजमेरसे, जो मिर्ज़ा रुस्तम्से वापस ख़ालिसे में करोरीके मातहत मुक़र्रर हुआ था.

हसनख़ां
मुरीदे जहांगीर
शाह.

दूसरा बयान जुम्दतुल्मुल्क
वज़ीरके ख़तसे, वाक़िआमें दाखिल
किया जावे-
१८

२९८१०० दाम.

ज़ि शाहे जहांगीर
किश्वर कुशाय; शुदह
राय बन्मालिये
रामराय.

सादिक़ख़ां
मुरीदे जहांगीर
बादशाह.

जहांगीर बादशाहकी तरफ़से रावत मेघसिंहकी मन्सबी जागीरका फ़र्मान.

अल्लाहु अक्बर.

तारीख़ दिन आज़र शुरू मिहर इलाही सन् १३ जुलूस, मुवाफ़िक़ सोमवार महीना शव्वाल् सन् १०२७ हिज्री को जुम्दतुलमुल्क मदारुलमहाम बादशाही सर्दार एतिमादुद्दौला वज़ीरके रिसालेमें और बड़ेदरजेके सर्दार मोतमदख़ांकी चौकी, और बादशाही ताबेदार अलीनक़ी की वाक़िआ नवीसीमें, बुज़ुर्ग हुक्म जारी हुआ कि, रावत मेघ वग़ैरह की जागीर ५०० पांचसौ ज़ात, २५० सवारकी बाबत, नीचे लिखी तफ़्सीलके मुवाफ़िक़ मुक़र्रर की जावे--बादशाही याद्दाश्तके मुवाफ़िक़ लिखा गया.

मीज़ान.

मुक़र्ररा तन्ख़्वाह-

३२५८२०० दाम.

अगले दस्तूरके मुवाफ़िक़ -

२५०४७०० दाम.

इन दिनोंकी तरक़्क़ी, मुवाफ़िक़ १३ उर्दी बिहिश्त इलाही सन् १३ जुलूस के-

७०४५०० दाम.

२३००० दाम हाथियोंकी ख़ुराक.

३२३५२०० दाम.

जागीर-

ज़ात ५०० पांचसौ सवार २५० ढाईसौ.

२५१ सवार मए ख़ास

मुक़र्रर दरमाहा-

३०७२०० दाम.

ख़ास——————

५०० पांचसौ ज़ात.

२४४० दाम.

मातह्त जमइयत——————

२५० सवार.

२२१४०० दाम.

मन्सबदार

३ तीन आदमी—

बाबत १३८०० दाम.

फूलदास हरीदास

बीसी. बीसी.

परसराम

बीसी.

४६०० दाम.

जमइयत

२४७

६००८०० दाम.

१९७६०० दाम.

९६००० दाम.

मुक़र्रर साल्याना सिवाय—

३३८१४०० दाम.

३८१३५० दाम.

ख़ास— चार मन्सब्दार—

२६४००० दाम. ३७३५० दाम.

याद्दाश्तका बयान—

तारीख़ आज़र १३ उर्दीबिहिश्त सन् १३ जुलूस, मुवाफ़िक़ १७ जमादियुल् अव्वल् सन् १०२७ हिज्री शनिवार को बड़े इज़्ज़तदार, उम्दा सर्दार, बख़्शियुल्मुल्क ख़्वाजा अबुल् हसनके रिसालेमें और बड़े अक्लमन्द होश्यार हकीम मसीहुज़्ज़मांकी चौकी, और बादशाही नौकर मुहम्मद मुक़ीम हिजाज़ी की वाक़िआ नवीसीके मुताबिक़, बुज़ुर्ग हुक्म जारी हुआ कि रावत मेघा अस्ल मन्सब और तरक़्क़ी के साथ सरबुलन्द रहे—बख़्शी की तस्दीक़ से याद्दाश्त लिखीगई—हाशियेका बयान वाक़िआ नवीसके ख़तसे सहीह है—बयान वज़ीरके ख़तसे दुबारा अर्ज़ हुआ— दूसरा बयान उम्दा सर्दार दियानतख़ांके ख़तसे ता० आज़र इस्फ़न्दार २९ उर्दीबिहिश्त सन् १३ जुलूस, मुवाफ़िक़ शनिवार ता० २३ जमादियुल् अव्वल् सन् १०२७ हिज्री— अलावल की वाक़िआ नवीसी में दुबारा अर्ज़ होगया—वज़ीर के ख़त से यह बयान लिखागया कि तफ़सील करदें —

५०० ज़ात.

२५० सवार.

पहला मन्सब—

४०० चार सौ ज़ात.

२०० दोसौ सवार.

इनदिनों में, दोवर्ष दो महीने सोलह दिन पीछे तरक़्क़ी दीगई—

१०० ज़ात.

५० सवार.

पहिला मन्सब चारसौ ज़ात दोसौ सवार, इन दिनोंकी तरक़्क़ी एकसौ ज़ात, पचास ५० सवार

दोसौ सवार.

मुक़र्रर दरमाहा-

२२९४०० दाम.

ख़ास——— अर्दली———

४०० ज़ात, २०० दोसौ सवार

१४५० दाम. १७१४०० दाम.

मातहत मन्सब्दार

३ आदमी तीनबीसी

१३८८० दाम.

फूलदास हरीदास

११५ बीसी-

४६०० दाम.

४६०० दाम.

३१ दाम.

४६०० दाम.

अर्दली

१९७

६००८०० दाम. १८१६०० दाम.

५८००० दाम.

मुक़र्रर साल्याना सिवाय-

२५२३४०० दाम.

१९७४५० दाम ख़ास.

अर्दली ख़ास दाम. अर्दली मन्सब्दार-

१९०५०० दाम. ३७३५० दाम.

२३२५३५०- ७४०५०० दाम.

मुसव्वदा–

रावत मेघका भाई, तीन बीसी ज़ात, दो बीसी सवार–

११ सवार.

मुक़र्रर दरमाहा

१९००० दाम

ख़ास–	अर्दली–
तीन बीसी ज़ात	१० सवार
२७५ दाम	८०० दाम
११००० दाम.	७००० दाम.

मुक़र्रर सालयाना, सिवाय

बख़्शिश–

२०९००० दाम.

३०२५० दाम ख़ास–

मुक़र्रर तन्ख़्वाह

१७८७५० दाम

३२३५२०० दाम.

जागीर–	मदद ख़र्च–
३१३५२०० दाम.	१००००० दाम.

बयान उम्दतुल्मुल्क मदारुल्महाम वज़ीरके ख़तमें लिखागया कि वाक़िअ़में दाख़िल करें–

बयान तारीख़ २० रमज़ान सन् १०२७ हिज्री का, इस लिखावट से यह मत्लब है कि मैं बादशाही दरगाहका नौकर रावत मेघ हूं, मैं कुबूल करता हूं, कि तीन महीनेके बाद ज़ाबितेके मुवाफ़िक़ कांगड़ेके मुत्सद्दियोंके पास जाकर घोड़ोंको फ़ौजी दाग़ करायाजावेगा, अगर न कराया जावे तो तरक़्क़ीकी जागीर ज़ब्त फ़र्मावें–यह कई फ़िक्रे लिखेगए–उम्दतुल्मुल्क वज़ीरका यह बयान है, कि यह आदमी कांगड़ेकी नौकरी पर मुक़र्रर कियागया और हज़रत शाहज़ादे तज्वीज़ करते हैं कि अपने पुराने आदमियोंके घोड़ोंको वहां पर फ़ौजी दाग़ हासिल करावें, इस लिये यह लिखाहुआ मंज़ूर कियाजाता है, लेकिन अगर वादेमें बर्ख़िलाफ़ी करे तो जागीर उतारलें

बयान बख़्शी-उल्मुल्क सादिक़- कि वाक़िआ यह है मंज़ूर रक्खें

साबिक़ दस्तूर परगने मालपुर वग़ैरा से २५०४७०० दाम.

परगना मालपुर ज़िला रणथम्भोर सूबा अजमेर जो मिर्ज़ा रुस्तमसे उतारकर बादशाही ख़ालिसे, परगना ताल, ज़िला मन्दसोर, सूबा मालवा फ़स्ल ख़रीफ़ लोय ईल से

मुक़र्रर हुआ था, शुरू रबीअ़ लोय ईल २६६२०० दाम.

२७इस्फ़न्दारमुज़ सन् १० जुलूससे–

२२३८५०० दाम.

इन दिनोंकी तरक़्क़ी एक सौ ज़ात, पचास सवार मन्सब,

७४०५०० दाम

२३००० दाम. हाथियोंकी ख़ुराक

७३०५०० दाम.

मुक़र्रर तन्ख़्वाह. ७३०५००. दाम

बयान जुम्दतुल्मुल्क वज़ीरके ख़तसे फ़स्ल ख़रीफ़ ईत ईल से–

जागीर परगना इकनोद, ज़िला मन्दसौर, सूबे मालवासे, जो सेवाकिशन मारूसे उतारी गई और जिसको बांसवाड़ा परगनेमें एवज़ दिया गया–

८०७०६१ दाम.

१७६५६१ दाम दूसरेको तन्ख़्वाह दीजायगी,

बयान कुबूलियत–

इस लिखावटका यह मत्लब है–कि मैं रावत मेघ हूं, ६३०५०० दाम परगने इकनोदमें शुरू फ़स्ल ख़रीफ़ ईत ईलसे मैंने कुबूल किये–यह बयान सनदके तौर मैंने लिख दिया, ता० ५ शहरीवर इलाही सन् १०२७ हिज्री, मक़ाम महमूदाबाद–

१३०५०० दाम.

मदद ख़र्चके एवज़में याद्दाश्तके मुवाफ़िक़ रोज़ बहमन् दूसरी शहरीवर इलाही सन् १३ जुलूस, मुताबिक़ ६ रमज़ान सन् १०२७ हिज्रीको मिहर्बानियोंके लायक़ सर्दार मोतमदख़ांके रिसाले, और मिहर्बानियोंके लायक़ आक़िल्ख़ांकी चौकी, और बादशाही नौकर अब्दुल्वासिअ़की वाक़िआ़ नवीसीमें ख़िद्मतगारख़ांने अ़र्ज़ किया कि रावत मेघ, मदद ख़र्च यानी ख़ालिसेका महसूल अदा करनेमें, उज़्र और बहाना करता है–बज़ुर्ग हुक्म जारी हुआ कि जो कुछ मददख़र्च सर्कारी रावत मेघके ज़िम्मे है, ज़ाबि-

ते और सनदके मुवाफ़िक़, बादशाही दीवानीके अहल्कार उसकी जागीरसे वुसूल करलें, याद्दाश्तके मुवाफ़िक़ तस्दीक़ लिखी गई-

५३०० दाम, मदद ख़र्च याद्दाश्त ता० १० दै इलाही सन् ११ जुलूस के मुवाफ़िक़ हुक्म हुआ कि ५००० रुपये रावत मेघके महसूली दारोग़ा कमाल हुसैनसे लिये जावें, और मुचल्का लिखवाया जावे कि परगने मालपुरामेंसे, जो उसकी जागीर है, फ़स्ल रबीअ़ और ख़रीफ़ ईलाईल सन् १२ जुलूस अजमेरके फ़ौज्दार शार्दूलके पास भिजवादें कि वह ख़ज़ाने में पहुंचा देगा.

१०७८ वुसूल हुए, शार्दूलको लिख दिया जावे-

४३२२ मुक़र्रर मीआ़दके मुवाफ़िक़, जब बराबर होंगे, एवज़ दिया जावेगा-

यह है कि बयान उम्दतुल्मुल्क एतिमादुद्दौलाका
१००००० दाम वह कांगड़ेकी लड़ाई पर मुक़र्रर हुआ,
बादशाही कामके लिये उसकी तमाम तन्ख्वाहमेंसे मदद ख़र्चके तौर
ताकीद लिखी गई- कि वह वुसूल किये जावें- दुबारा वज़ीरके बयानसे
१०००००दाम वुसूल किये जावें- नौकरी पर मुक़र्रर हुआ है उसकी तन्ख्वाहसे

हाशिया
अल्लाहु अक्बर
वाक़िएके मुवाफ़िक़
है-

१००००० दाम.

अल्लाहु अक्बर (ख़ुदा बुज़ुर्ग है.)
दिन आबान १० वीं तारीख़ मिहर सन् १३ जुलूस, मुवाफ़िक़ बुद्धवार १३ वीं शव्वाल १०२७ हिज्री को नईमाके वाक़िएमें दुबारा अर्ज़ हो चुका, और नौकरीके वास्ते ज़बरदस्त हुक्म जारी हुआ-

जब शाही फ़ौज कांगड़ेकी तरफ़ जानेलगी, तो मेघसिंहको भी उसमें जानेका हुक्म हुआ उसने इन्कार किया, परन्तु अपने तीनों बेटों रामचन्द्र, लक्ष्मण, और कल्याणको शाही फ़ौजके साथ भेजदिया- लक्ष्मण और कल्याण तो कांगड़ेकी लड़ाईमें मारेगये, और रामचन्द्रके पीछे आनेपर रावत मेघसिंह ने कहा कि तुम हमारे कामके न रहे, क्योंकि अटक (१) उतरजाने बाद आदमी मुसल्मान होजाता है - लाचार रामचन्द्रको मुसल्मान होना पड़ा. यह बात जहांगीरने सुनी, तो क़ाज़ीका (२) ख़िताब और फ़ीरोज़पुर जागीरमें दिया-यह बेगूं वालोंका बयान है.

विक्रमी १६७३ चैत्र शुक्ल ३ [हिज्री १०२५ ता० ५ रबीउल्अव्वल = ई० १६१६ ता० २० मार्च] में कुंवर कर्णसिंह बादशाह जहांगीरके पास दिल्ली पहुंचे और १०० अशर्फ़ी, एक हज़ार रुपये, चार घोड़े, और एक हाथी नज़्र किया, फिर कुछ दिन ठहरकर पीछे लौटते हुए मालपुरेमें आये, मेघसिंहने बहुतसी ख़ातिर की. भोजन करते समय कुंवर कर्णसिंहने हाथ खेंचलिया, तब मेघसिंहने अर्ज़ की, कि चाकरी बतलानी चाहिये, आप भोजन क्यों नहीं करते ? उन्होंने उत्तर दिया कि तुमको दाजीराज ने बुलाया है, उदयपुर चलना चाहिये. मेघसिंहने पहिली नाराज़गीका गुबार निकाला, लेकिन् कुंवरने तसल्ली दी और मेघसिंहने चलनेको कहा, तब कुंवरने भोजन किया. मेघसिंह उदयपुर आया और महाराणा अमरसिंहसे बेगूंका पट्टा (३) उसको मिला, और बल्लू चहुवानको बेगूंके बदले गंगारका परगना जागीरमें दियागया. कुछ अर्से बाद ख़ुर्रमने मेघसिंहको बुलानेके लिये निशान् लिखभेजा.

जब बादशाह जहांगीर दक्षिणकी तरफ़ गये, तो शाहज़ादा ख़ुर्रम उदयपुरमें आया, महाराणा अमरसिंहने मुलाक़ात की, शाहज़ादे ने जड़ाऊ तलवार, घोड़े हाथी, ख़िलअ़त वगैरह उनको और उनके भाई बेटोंको दिये.

महाराणाने भी ५ हाथी, २७ घोड़े, व जवाहिरातका भराहुआ एक थाल नज़्र किया, परन्तु शाहज़ादेने तीन घोड़े लेकर बाक़ी सामान वापस करदिया.

---

(१) शायद वह फ़ौज अटक नदीके पार किसी कामके लिये गई होगी, वर्ना कांगड़ेका इलाक़ा अटकके पार नहीं है.

(२) क़ाज़ी कोई ख़िताब नहीं है और न यह किसी नये मुसल्मानको मिलता है, बल्कि एक ओहदे का नाम था, जो सिवाय किसी बड़े आलिम शख़्सके दूसरे को नहीं मिलता था.

(३) जागीरकी तफ़्सील यह है- बेगूं ग्राम ८४ से, रत्नपुर ग्राम ८४ से, गोठोलाई ग्राम ४२ से, नीमोतो ग्राम १२ से, बांसिया ग्राम १२ से, और तीन ग्राम उदयपुरके पास घास लकड़ीके वास्ते दिये.

शाहज़ादे ख़ुर्रमके साथ डेढ़ हज़ार सवार सहित कुंवर कर्णसिंहका दक्षिण में जाना ठहरा.

कुंवर कर्णसिंहने दक्षिणकी लड़ाइयोंमें बड़ी बहादुरी दिखलाई. कुछदिनों बाद जहांगीरके पास जाकर इसकी ख़ुशख़बरी सुनाई, और उदयपुर चले आये. फिर राजा भीम (महाराणा अमरसिंहका बेटा) व भंवर जगत्सिंह शाही दर्बारमें गये और कश्मीरके सफ़रमें बादशाहके साथ रहे. इन दोनों राजकुमारोंपर बादशाह निहायत मिहर्बानी करता था. बादशाह जहांगीरके लौटनेके वक्त ये दोनों राजकुमार भी लश्करके साथ थे.

इन्हीं दिनोंमें रावत मेघसिंह चूंडावत और शक्तावतोंमें बखेड़ा हुआ, जिस का हाल इसतरहपर है, कि बेगूंके एक ग्रामका रहनेवाला शक्तावत पीथा बाघावत मेघसिंहको अपना मालिक नहीं समझता था. इसलिये मेघसिंहने उसका ग्राम जलादिया, तब पीथाने नारायणदास शक्तावतके पास भणायमें जाकर सब अहवाल कहा, जिससे भाई बन्धु सगे सम्बन्धी सब १२०० सवार एकट्ठे करके नारायणदासने चढ़ाई की, उस वक्त मेघसिंह तो कहीं विवाह करनेको गया था और उसका बड़ा बेटा नरसिंह दास क़िलेके किवाड़ बन्द करके बैठरहा; नारायणदास बेगूंके चारों तरफ़ घोड़ा फेरकर एक हाथी मेघसिंहका लेगया. मेघसिंह पीछा आया तो अपने बेटे नरसिंहदासको निकालदिया और अपने भाई चूंडावतोंकी फ़ौज एकट्ठी करने लगा, लेकिन् पीछे आपसके वंश नाश होनेके ख़यालसे मेघसिंहने सब्र किया. पँवार केशवदाससे, जिसके पट्टेमें भैंसरोड़गढ़ था, मेघसिंहकी लड़ाई हुई, तो मेघसिंहके छोटे बेटे राजसिंहने केशवदासको भाला मारकर हाथीसे गिरादिया. भैंसरोड़में भी मेघसिंहका क़ब्ज़ा होगया, लेकिन् महाराणा अमरसिंहने नाराज़ होकर वह मक़ाम वापस पँवारोंको दिलवाया.

मेघसिंहने महाराणासे अपने मरते समय अ़र्ज़ कराया कि मेरे बाद मेरे ठिकानेका मालिक राजसिंह रहे, जब रावत मेघसिंहका देहान्त होगया तब आपस का झगड़ा मिटानेके लिये नरसिंहदासको तो गोठोलाई, जो सब चूंडावतोंका क़दीमी वतन है, और राजसिंहको बेगूं, रत्नगढ़ वग़ैरह देकर दोनोंका दरजा बराबर रक्खा.

विक्रमी १६७६ माघ शुक्ल २ बुधवार [हि० १०२९ ता० १ रबीउल् अव्वल् = ई० १६२० ता० ३० ऑक्टोबर] को महाराणा अमरसिंहका देहान्त उदयपुरमें हुआ. उनकी आख़िरी सवारी बड़ी धूमधामके साथ होकर आहाड़ ग्राममें

पहुंची, वहां गंगोद्भव कुण्डपर उनकी दग्ध क्रिया की गई, और उनके साथ १० रानी, ९ ख़वास और ८ सहेलियां सब २७ औरतें सती हुईं, उनकी छत्री महाराणा कर्णसिंहने सफ़ेद पत्थर की बहुत बड़ी बनवाई, जो अब तक मौजूद है. (महाराणा कर्णसिंह बड़े पिताभक्त थे, कहते हैं कि वे १२ महीने तक अपने पिताके दग्धस्थानपर रहे, और वहां अर्ज़करके सब राज्यका कारोबार चलाते थे). इन महाराणाका जन्म संवत् १६१६ विक्रमी चैत्र कृष्ण ३० [हि० ९६७ ता० २८ जमादियुस्सानी = ई० १५६० ता० २६ मार्च] को हुआथा.

महाराणा अमरसिंहका क़द लम्बा, रंग गेहुवां सियाही मायल, आंखें बड़ी, चिहरा रोबदार, मिज़ाज तेज़ था, लेकिन् वह दयावान, और सच्चे व मिलनसार, दोस्तीके पूरे, इक़ारको पूरा करने वाले थे. इनके देहान्तका मेवाड़के सर्दार, भाई, बेटे, रिआया वगैरा कुल्लको बहुत बड़ा रंज हुआ, इनके गुज़रनेकी ख़बर कश्मीरसे लौटते हुए बादशाह जहांगीरको मिली, उसने कुंवर जगत्सिंह व भीमसिंहकी बहुत तसल्ली की. बादशाह लिखते हैं कि- "मैंने भीमको व जगत्सिंहको खिलअ़त देकर राजा कृष्णदासको कुंवर कर्णके वास्ते तसल्लीका फ़र्मान व खिलअ़त और एक हाथी और एक घोड़ा देकर विदा किया, जिसने जाकर मातमपुर्सी व मस्नद नशीनीकी रस्म अदा की."

इन महाराणाके ६ बेटे- १ कर्णसिंह, २ सूरजमल्ल, ३ भीम, ४ अर्जुनसिंह, ५ रत्नसिंह, ६ बाघसिंह, और एक बेटी बछवन्तां बाई थी.

इनके समयके १८ वर्ष तो लड़ाई झगड़ोंमें बीते, और पिछले ५ वर्ष देशमें अम्न रहा.

शेष संग्रह- (नम्बर १).

ग्राम मांडलमें राजा जगन्नाथ कछवाहे की बत्तीस थंभोंकी छत्रीकी प्रशस्तिकी नक़्ल.

स्वस्ति श्रीगणेशायनमः यंब्रह्मवेदांत विदोवदंति पर प्रधानं पुरुषं तथान्यः वि-श्वोद्गतं कारणमीश्वरंवा तस्मैनमोविघ्न विनाशनाय ॥ १ ॥ हजरत श्री पातिसाह अक-ब्बर जीकी जलाल दीनगाज़ीकी पातसाही सलामति श्री पातसाह हज़रति साहि सलेम जहांगीर विजय राज्ये पातिसाह दिल्लीके मुगल्वेक ताको उमराव महाराज श्री जगन्नाथजी राज श्री भारमल सुत कछाहा राजा आमेरका, ताकी छत्री सवंराय राज श्री अभैकरसिंहजी राज श्री करमचंद सुतः छत्रीकी प्रतिष्ठा हुई सम्वत् १६७०

का बरषे शाके १५३५ प्रवर्तमाने मार्गशिर सुदि ११ एकादशी शुक्रवारके दिन श्री सिंहेश्वर महादेव थाप्या सन् १०२२ (हिज्री) मक़ाम माडिल छत्री काराई, तमाम राज श्री आसानंदजी पदम सुतबैसर जसुतः पोतदार सहा धरमदास खंडेलवाल मुसरफ़ी ठाकुर सीतलदास कायथ माथुर वास गढरणथंभ सुत्रधार माधोगोबिंदः रामदास गढका आज्ञा उदयपुरसु पंडित टोडाका सुवाई खिजमतदार श्रीशुभंभवतु श्रीः

छन्द तोटक.

जबही शिवलोक प्रताप गये । अमरेश बरेश नरेश भये ॥
पत शाहिय फौज प्रबंध कियो । वह थानक व्यूह बखेर दियो ॥ १ ॥
सुत ऊदल सागर मान मते । गत कूरम मान कुमार नते ॥
पहुंचे वहिं संग दिलीप ढिगे । पद रानप पायरु रीत डिगे ॥ २ ॥
सुल्तान चढ्यो पर्वेज़ जबे । अमरेश किये बहु जुद्ध तबे ॥
कछु राज चितौर कियो सगरे । जिंहते बल जीवनको बिगरे ॥ ३ ॥
चढ़ खान महाबत धार धुके । रजपूतन तें इस्लाम रुके ॥
पत शाहिय थानक लूट लिये । फिरकें अब्दुल्ल प्रफुल्ल अये ॥ ४ ॥
चढ़कें फिर कर्ण कुमार लरे । अरु बासुकि सेनप होय अरे ॥
सुल्तान चढ्यो जब शाह जहां । घुस पब्बय बोलत रान कहां ॥ ५ ॥
कलियान सता मकवान दहूं । जिनके गुन फैलिय चक्क चहूं ॥
जब शाहिय फौजन ज़ोर चढ्यो । रजपूतनपें दुख घोर बढ्यो ॥ ६ ॥
अमरेशरु खान सलाह करी । निज बानि नसीहत काव्य भरी ॥
पतशाहनतें नृप संधि नई । सुल्तान दिवान मिलान भई ॥ ७ ॥
अजमेरहि कर्ण कुमार गये । जिनपें अति शाह प्रसन्न भये ॥
तज रानप रावत सग्र बने । भट मेघ रिसानरु मान मनें ॥ ८ ॥
अमरेश गये शिवलोक सही । जिनकी सब आदत रीत कही ॥
अभिलाप मनोभव सज्जनतें । फ़तमाल प्रभा गुन कज्जनतें ॥ ९ ॥
सच बीरन बीर बिनोद लह्यो । कविराज तबें यह खंड कह्यो ॥
यह बीर कथा श्रुत धीर धरे । भ्रम होय यथा लखि शुद्ध करे ॥ १० ॥

महाराणा अमरसिंह अव्वल- पञ्चम प्रकरण समाप्त.

महाराणा कर्णसिंह-षष्ठ प्रकरण.

महाराणा कर्णसिंहका राज्याभिषेक विक्रमी १६७६ माघ शुक्ल २ बुधवार [हि० १०२९ ता० ३० सफ़र = ई० १६२० ता० ७ फ़ेब्रुअरी] को हुआ, जिसके लिये पहिली बार राजा कृष्णदास राज्यतिलकका टीका (१) और खिल्अत बादशाह जहांगीरकी तरफ़से लेकर आये, इसके लेने बाद दूसरे राजाओंका भेजाहुआ दस्तूरी सामान लियागया.

इन महाराणाके समयमें सारे देश भर में चैन और आनन्द रहा, किसीतरहका झगड़ा नहीं हुआ.

महाराणा अमरसिंह व शाहज़ादे खुर्रमकी सुलहके बाद से ही इनका राज्य कहना चाहिये, क्योंकि महाराणा अमरसिंहने तो उसी दिनसे अकेले रहना इख्तियार किया था और सारे कामकी संभाल इन्हींके ज़िम्मे थी; इन्होंने मेवाड़ देशमें जुदे जुदे परगने क़ायम किये और ग्रामोंमें पटैल, पटवारी, सेना, और गांव बलाई बनाये, लेकिन् फिर भी हासिलका एक क़ायदा सारे देशमें न होसका.

थोड़ेही दिनोंमें यहदेश प्रजासे आबाद होगया, फिर ज़नाना रावला (महल)

---

(१) गद्दीनशीनीके समय जो छोटे बड़े और बराबरी वाले महाराजाओंकी तरफ़से राज्य तिलक में हाथी घोड़े वग़ैरह आनेका दस्तूर है, उसे राज्य तिलक का टीका कहते हैं.

रसोड़ा (रसोड़ेका बड़ा महल), तोरण पौल, सभाशिरोमणि (बड़ा दरीख़ाना), गणेश ड्योढ़ी, दिल्ख़ुशाल(दिलकुशा), महलके भीतरकी चौपाड़, चन्द्रमहल, महलोंकी सूर्य हस्तीशाला के नीचे के दालान, जो लदावसे बड़े मज्बूत बनेहुए हैं और जिनके ऊपर हाथियोंके बांधनेकी जगह है, और कृष्णनिवास के हौज़ तथा चंपाबाग़ वगैरह तय्यार कराये; भटियानी चौहटेके गुम्बज़, जो अब देलवाड़ेराजकी हवेलीमें आगये हैं, जग-मन्दिरके बड़े गुम्बज़, जिनकी नीव विक्रमी १६७०-७१ [हि० १०२२-२३ = ई० १६१३--१४] में शाहज़ादे ख़ुर्रमने डाली थी, पूरे तय्यार कराये.

महाराणाने रोहड़िया बारहट लक्खाको लाख पशाव और तीन ग्राम (मन्सूवो, थरावली, जडाणा) इनायत किये, जिनका दानपत्र चित्तौड़के रामपोल दर्वाज़ेपर पत्थर में खुदा है- (शेष संग्रह नम्बर १) देखो. यह लक्खा बारहट बादशाह जहांगीरके दर्बारमें मन्सब्दार शाइर था, जैसे कि दूसरे राजाओंके पोलपात (१) होते हैं उसी तरह अपनी पौलका नेग भी बादशाह इसको देता था.

इन्हीं दिनोंमें कश्मीरके सफ़रमें बादशाह जहांगीरने महाराणाके भाई भीम-सिंहको राजाका ख़िताब और मन्सब दिया, फिर वह शाहज़ादे ख़ुर्रमके पास नौकरीपर रक्खागया, जिससे शाहज़ादेका ख़ास सर्दार बना.

अब बादशाह जहांगीरकी नाराज़गीके सबब शाहज़ादे ख़ुर्रमका महाराणा
कर्णसिंहके वक़ उदयपुरमें रहनेका हाल लिखाजाता है-

फ़ार्सी मुवर्रिख़ोंने इस हालको बिल्कुल छोड़दिया है परन्तु उदयपुरमें शाहज़ादे ख़ुर्रमके रहनेकी कई मज़्बूत दलीलें हैं.

अव्वल, राजसमुद्रकी प्रशस्तिमें, जिसको महाराणा राजसिंहने बनवाया था, पांचवें सर्गके १३ वा १४ वें श्लोकमें साफ़ लिखा है, कि ख़ुर्रम जब जहांगीरसे बर्ख़िलाफ़ था, उस वक़ उसको अपने देश मेवाड़में रक्खा, और जहांगीरके देहान्त होने बाद अपने भाई अर्जुनसिंहको साथ देकर उसे दिल्लीका मालिक बनाया, वह श्लोक यह है-श्लोक- दिल्लीश्वरा जहांगीरा त्तस्यः खुरम नामकम् ॥ पुत्रंविमुखता प्राप्तं स्थापयित्वा निज क्षितौ ॥ १३ ॥ जहांगीरे दिवंयाते संगेभ्रातरमर्जुनं ॥ द वा दिलीश्वरंचक्रे सोऽभूत् शाहजहांभिधः ॥ १४ ॥ यह प्रशस्ति महाराणा राजसिंहके पुत्र महाराणा जयसिंहके समयकी खुदीहुई है, और इसका

(१) राजपूतानाके छोटे बड़े सब राजपूत लोगोंमें रिवाज है कि जिस तरह पुरोहित मंगल वा अमंगल कार्योंमें दस्तूर लेता है, उसी तरह ये लोग मंगलीक, जन्म, विवाहआदि कार्योंमें दस्तूर पाते हैं, परन्तु ग़मीमें नहीं लेते, उस पौलपात लेनेवालेको बारहट कहते हैं, इसका पूरा हाल पहिली जिल्दमें देखना चाहिये.

बनाने वाला रणछोर भट्ट महाराणा कर्णसिंहके पुत्र महाराणा जगत्सिंहके समयमें मौजूद था.

दूसरे, बीकानेरकी तवारीख़में (जो जोधपुरके रेज़िडेण्ट, लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल् पाउलेटने बीकानेरकी रियासतसे बड़ी कोशिशसे तहक़ीक़ात करके मंगाई, और जिस की एक नक़्ल मुझे दी), लिखा है- कि शाहज़ादा ख़ुर्रम कितनेही महीनों तक जहांगीरकी नाराज़गीके सबब उदयपुरमें रहा.

तीसरे, बूंदीकी तवारीख़ वंशभास्करके ख़ुलासे वंशप्रकाशमें भी ऐसाही लिखा है.

चौथे, कर्नेल् टॉड अपनी किताबमें इस बातको बड़ी मज़्बूतीके साथ पुख़्ता करते हैं.

पांचवें, इक़बालनामह जहांगीरीके ६१३ एष्ठमें लिखा है- कि विक्रमी १६८३ [हि० १०३५ = ई० १६२६] में महाबतख़ां, बादशाह जहांगीरकी नाराज़गीके कारण शाहज़ादे ख़ुर्रम (शाह जहां) के पास चलागया. जहांगीरने इसके पकड़लाने अथवा सरहद से बाहर निकाल देनेके लिये फ़ौज भेजी थी, इससे वह राणाके इलाक़े की घाटियोंमें रहने लगा; इससे भी पुख़्ता यक़ीन होता है, कि उस समय शाहज़ादा ख़ुर्रम (शाह जहां) भी मेवाड़ में था, क्योंकि उदयपुरके सिवाय उसके छिपे रहनेके लिये और कोई स्थान न होगा- मुसीबतके वक़्में एक दूसरे का आश्रय और दो तक्लीफ़ वालोंका मेल रहा करता है, और ज़ियादा तर ऐसी दशामें जब कि महाबतख़ां और ख़ुर्रमको बादशाही फ़ौजसे एकसाही डर था, और जब कि महाबतख़ां पहाड़ोंकी जगहको मज़्बूत जानकर यहां रहा तो, ख़ुर्रम किस लिये इस जगहकी मज़्बूती पर ख़याल न करता.

छठे, कुल फ़ार्सी तवारीख़ों तुज़क जहांगीरी, इक्बाल नामह जहांगीरी, बादशाह नामा और शाहजहांनामा वग़ैरह में शाह जहांकी इन तक्लीफ़ोंका हाल लिखा है.

शाहजहांने तख़्तपर बैठनेके बाद महाबतख़ांको अपना सेनापति बनाया. यह उस समयकी दोस्तीका फल था, परन्तु यह किसी तवारीख़में नहीं देखा, कि शाहजहांके मक़ाम स्थान स्थानके तारीख़वार लिखेहों, लेकिन् बीच बीचमें इस मुआमलेके कई महीनोंका हाल नहीं मिलता, कि शाहज़ादा कहां रहा; इसलिये यही गुमान होता है कि वह उदयपुरमें ही रहा होगा, और महाबतख़ांका मिलना भी शाहज़ादे शाहजहांसे उसी समय में साबित होता है.

सातवें, शाहज़ादेकी लाल पगड़ी अभी तक एक काठके डिब्बेमें रक्खी हुई मौ-

जूद है, जो शाहज़ादेने महाराणा कर्णसिंहसे भाईचारे (१) में बदली बतलाते हैं.

अगर कोई यह एतिराज़ करे कि दोसौ साठ या दोसौ पैंसठ वर्ष तक कपड़ा नहीं रहसक्ता, तो हमारा यह जवाब है कि शाहज़ादेके मेवाड़में रहनेसे दस बारह वर्ष पहिले, जो बादशाह जहांगीरने महाराणा अमरसिंहको तसल्लीका फ़र्मान भेजा था, उसका लपेटा ढाकेके मलमलका, जिस पर ख़ास बादशाह के पंजेका लगाया हुआ केसरका निशान है, अबतक साबित है, उस कपड़ेकी मज़्बूती तार निकालकर देखनेसे नये कपड़ेके बराबर पाईजाती है; यक़ीन होता है कि बहुत वर्षों तक और भी उस कपड़ेका कुछ नहीं बिगड़ेगा. दूसरा कोई यह एतिराज़करे कि इतने बड़े बादशाहके शाहज़ादेने एक राजासे पगड़ी बदलकर अपनी बराबरी दिखलानेको किस तरह ऐसा काम किया होगा; इस बातका हम यह जवाब देते हैं कि जब तक जहांगीरसे सुलह न हुई, तब तक यह राजा भी अपने को एक खुद मुख़्तार बादशाह समझते थे और सुलह होनेपर भी इनका बड़प्पन, जहांगीरकी किताब 'तुज़क जहांगीरी' के देखनेसे ज़ाहिर होता है, और तक्लीफ़में हरएक शख़्स अपने रुतबे का गुरूर छोड़देता है, जैसे इसी शाहज़ादेने अपनी इस तक्लीफ़ के शुरूमें ख़ान् ख़ानां अब्दुर्रहीमसे कहा था कि "हमारी शर्मका लिहाज़ रखना" - (देखो शाहजहां नामह क़लमीका पृष्ठ १३).

आठवें, शाहज़ादे ख़ुर्रमने किसी शहीद या वलीकी मन्नत मानकर जगमन्दिरोंमें एक छोटीसी ज़ियारत बनवाई थी, जिसको अब भी बहुतसे आदमी कपूरबाबा कहकर पूजते हैं (इसका सहीह नाम ग़फ़ूर बाबा होगा).

नवें, शाहज़ादे ख़ुर्रमके रहनेके लिये, जो महल बनवायागया था, वह बड़ा गुम्बज़दार पच्चीकारीके कामका (शाहज़ादेकी यादगार) अभी तक मौजूद है, जिसका नक़्शा बिलकुल् शाहजहांनी इमारतोंसे मिलता है.

दसवें, क़िस्से कहानीके तौरसे भी यह बात इतनी मश्हूर है, कि राजपूताना के किसी ग्रामके रहनेवालेसे भी पूछाजाय, तो यही कहेगा, कि शाहज़ादा उदयपुरमें रहा था, जिसके लिये यह बड़ा गुम्बज़ बनवाया गया. सोचना चाहिये कि शुहरत भी बिलकुल बे बुन्याद नहीं हुआकरती.

ग्यारहवें, उदयपुरके पहाड़ोंकी जगह ऐसी महफ़ूज़ थी, कि ४८ वर्ष तक बादशाह अक्बर और जहांगीरने कई दफ़ा पूरा पूरा इरादा किया, कि उदयपुरके राजाओंको ताबेदार करें, लेकिन् सिवाय परेशानी व सरगर्दानीके कुछ भी बस

---

(१) हिन्दुस्तानकी रस्म है, कि जब कोई शख़्स किसीसे भाईचारा करता है, तो आपसमें एक दूसरेसे पगड़ी बदलता है.

न चला, और सुलह होनेके बाद भी मेवाड़के राजाधिराजोंको दिल्लीके बादशाह ने दामउपायसे ज़ेर किया था, जो सर टॉमस रो की ऊपर लिखी हुई चिट्ठीसे बख़ूबी साबित होता है. दूसरे सफ़र करने वाले जौन एल्बर्ट डी मेंडल्स्लो जर्मनकी फ्रांसीसी ज़बानकी किताबके अंग्रेज़ी तर्जुमेसे भी यही पायाजाता है, जो हैरिसके सफ़रनामेकी पहिली जिल्दके ७५८ पृष्ठ में लिखा है–"कि अहमदाबादके शहरसे थोड़ी दूर बाहरकी तरफ़ मारवा (१) के बड़े पहाड़ दिखाई देते हैं, जो २१० माइलसे ज़ियादा आगरेकी तरफ़ फैले हुए हैं, और ३०० माइलसे अधिक औयौ (२) की तरफ़, जहां बिकट चटानोंके बीच गढ़ चित्तौड़में राजा राणाका वासस्थान था. मुग़ल और पाटन (३) के बादशाहकी मिलीहुई फ़ौजें मुश्किलसे उसको जीत सकीं, मूर्तिपूजक हिन्दुस्तानी लोग अभीतक उस राजाकी बड़ी ताज़ीम करते हैं, जो उनके कहनेके मुताबिक़ युद्धक्षेत्रमें एक लाख बीस हज़ार सवार लानेके योग्य था." इससे भी साफ़ साबित होता है, कि सुलह होनेके बाद भी मेवाड़के राजा कैसे ताक़तवर और बे ख़ौफ़ थे; तो ऐसे राजाके बे ख़ौफ़ मुल्कमें शाहज़ादेका उस हालतमें रहना सम्भव है.

अब शाहज़ादे खुर्रमपर शाहन्शाह जहांगीरकी नाराज़गीका हाल शुरूसे आख़िर तक लिखा जायगा.

लेकिन् पेश्तर हमको बादशाह जहांगीरकी बेगम नूरजहांका हाल लिखना ज़ुरूर है, जो कि इस फ़साद की बुन्याद डालने वाली थी.

नूरजहां बेगमका हाल.

ख़्वाजा मुहम्मद शरीफ़, जो पेश्तर हिरातके हाकिम मुहम्मदख़ां तक्लूका दीवान और उसके मरने बाद ईरानके बादशाह तहमास्पका वज़ीर हो गया था, उसने बादशाह हुमायूंकी तक्लीफ़ोंमें हिरातके मक़ाम पर बहुत ख़ातिर्दारी की थी, जबकि पठान लोग उसे निकालकर दिल्लीके मालिक हो गये थे. ख़्वाजा मुहम्मद शरीफ़ मरगया, तो उसके दो बेटे ग़यासबेग व मुहम्मद ताहिरबेग ज़मानेकी गर्दिशसे ईरान

(१) मारवाड़ अथवा मेवाड़ होगा.
(२) शायद उज्जैन होगा.
(३) पाटनसे मुराद गुजराती बादशाह होंगे, क्योंकि पहिले गुजरातकी राजधानी पट्टनमें थी.

छोड़कर हिन्दुस्तानको रवाना हुए, गयासबेगके साथ उसकी बीबी और दो लड़के और एक लड़की थी. कन्धारके मकाम पर बहुत तक्लीफ़की हालतमें एक लड़की और पैदा हुई, जिसका नाम मिहरुन्निसा रक्खा–– (यही नूर जहां थी).

गयासबेगकी तक्लीफ़ोंका ज़ियादा लिखना फ़ुज़ूल समझकर मुख़्तसर कर-दिया गया है.

किसी ज़रीएसे यह लोग बादशाह अक्बरके दर्बारमें पहुंचे, गयासबेग पढ़ा लिखा और होश्यार आदमी था, कुछ इल्मके ज़रीएसे या हुमायूं शाहकी ख़िद्मतों के सबब बादशाह अक्बरके दर्बारमें इज़्ज़तदार होगया, इसको एतिमादुद्दौलाका ख़िताब और विकालतका उहदा मिला; जब बादशाहके ज़नानख़ानेमें इसकी औरत आने जाने लगी, तो उसके साथ मिहरुन्निसा भी जाती थी, इसकी ख़ूब-सूरती पर शाहज़ादा सलीम याने जहांगीर माइल होगया और कुछ छेड़छाड़ भी करने लगा, जिसकी ख़बर बादशाहके कानों तक पहुंची, तो बादशाहने मिहरुन्निसाका निकाह शेरअफ़्गनके साथ करादिया. यह शेरअफ़्गन ईरानके बादशाहज़ादे इस्माईल शाहके बावरचीख़ानेका दारोग़ा था, जिसका अस्ली नाम अली कुली और कौम इस्तजलू है; इस्माईलके मरजाने पर यह शख़्स ख़ानख़ानां अब्दुर्रहीम के ज़रीएसे शाही दर्बारमें पहुंचा, और इसने कई लड़ाइयोंमें बहादुरी करनेके सबब शेरअफ़्गनका ख़िताब पाकर सूबे बंगालेमें जागीर हासिल की.

जब बादशाह अक्बरका इन्तिकाल होगया, और जहांगीर बादशाह हुआ, (जिसके दिलपर मिहरुन्निसाकी मुहब्बत जमीहुई थी) तो उसने ख़्वाजह सलीम चिश्ती वलीके पोते कुतुबुद्दीनको बंगालेका सूबेदार बनाकर ख़ानगीमें कह दिया, कि शेर अफ़्गनको समझादेना, कि वह मिहरुन्निसाको तलाक़ दे; अगर वह ऐसा नकरे तो किसी तुहमतसे या लड़ाई से क़त्ल या क़ैद कियाजावे; जब कुतुबुद्दीनने बंगालेमें पहुंचकर शेर अफ़्गनको इशारेसे बादशाहका मन्शा ज़ाहिर किया, तो उसने गुस्सेमें आकर कुतुबुद्दीनको तलवार से मारडाला, और कुतुबुद्दीन के आदमियोंने शेर अफ़्गनख़ांका भी काम तमाम किया. मिहरुन्निसा एक लड़की समेत, जो कि शेर अफ़्गनसे थी, क़ैद करके शाही दर्बार में पहुंचाई गई, जहां ४ वर्ष बाद विक्रमी १६६८ [हि० १०२० = ई० १६११] को वह बादशाह जहांगीरके निकाहमें आई. उसका ख़िताब बादशाहने पहिले 'नूर महल' और पीछे 'नूरजहां' रक्खा, और कुछ अर्से बाद उसके ऐसा इख़्तियारमें होगया, कि मुहर और सिक्केमें भी उसका नाम खुदवा-दिया था. इसके भाई अबुल्हसनको पहिले एतिक़ादख़ां और पीछे आसिफ़ख़ांका ख़िताब

इनायत हुआ, जिसकी बेटी हमीदाबानू ('मुम्ताज़महल') की शादी शाहज़ादे ख़ुर्रमके साथ हुई, इसी सबबसे नूरजहां पहिले शाहज़ादे ख़ुर्रमकी बड़ी मददगार थी.

शाहज़ादे ख़ुर्रमकी इज़्ज़त बादशाह जहांगीरने इतनी बढ़ाई, कि किसी शाहज़ादे की न हुई होगी; इस शाहज़ादेको चालीस हज़ारी ज़ात मन्सब व शाहजहांका ख़िताब और शाही दर्बारमें तख़्तके सामने कुर्सीपर बैठनेका रुतबा मिला था. नूरजहां बेगम की बेटी, जो शेर अफ़्ग़नसे थी, उसका निकाह कुछ अर्से बाद शाहज़ादे शहरयारके साथ कियागया, यही बात शाहजहांकी इज़्ज़त और आरामके जंगलमें चिंगारी के समान हुई, क्योंकि बादशाह जहांगीर तो मोमकी पुतलीके मानिन्द जिधर नूरजहां फेरती थी उसी तरफ़ फिरजाता, वह नामके लिये बादशाह था, शहनशाहीका झंडा नूरजहां बेगम के हाथमें समझना चाहिये, जिसकी मुहरमें यह शिअ्र खुदाहुआ था—

शिअ्र

नूर जहां गश्त ब हुक्मे इलाह—
हमदमो हमराज़े जहांगीर शाह.

अर्थ— नूरजहां ख़ुदाके हुक्मसे, जहांगीर बादशाहकी दोस्त और सलाहकार हुई.

मुहरके हालको देखकर पढ़नेवालोंको ज़ियादा अचंभा न करना चाहिये, क्योंकि ख़ास जहांगीरके सिक्केमें भी नीचे लिखा हुआ शिअ्र दर्ज था—

शिअ्र

ब हुक्मि शाहे जहांगीर याफ़्त सद ज़ेवर—
ब नामे नूरजहां बादशाह बेगम ज़र.

अर्थ— जहांगीर बादशाहके हुक्मसे और नूरजहां बादशाह बेगमके नामसे रुपयेने बहुतसी रौनक़ पाई.

ऊपर लिखे हुए शिअ्रोंके पढ़नेसे हरएक आदमी अच्छी तरह जान सक्ता है, कि बेगमको सब कुछ इख़्तियार था. उसने शाहजहांकी तरफ़से बादशाहके दिलको फेरना शुरू किया, वह चाहती थी कि मेरा दामाद शहरयार वलीअ़हद किया जावे. शाहज़ादे शाहजहांने दक्षिणकी मुहिम्से लौटकर मांडूके क़िलेसे बादशाहके पास ज़िले धौलपुरको अपनी जागीरमें मिलानेकी दर्ख़्वास्त भेजी, और दर्या नाम पठानको वहांकी हुकूमतके लिये रवाना किया, लेकिन् नूरजहां बेगमने यह जागीर पहिले ही शहरयारके नामपर लिखवाकर शरीफ़ुलमुल्कको धौलपुर भेजदिया था; जब दर्याख़ां वहां पहुंचा, तो दोनोंमें लड़ाई हुई, शरीफ़ुलमुल्क आंख

में तीर लगनेसे अन्धा हुआ. यह खबर नूरजहांके कान तक पहुंची, वह मक्कार बेगम तो पहिलेसे ही बहाना ढूंढरही थी यह ताज़ा गुनाह शाहज़ादेका उसके हाथ आया, बेगमने बादशाहको खूब भड़काया. बादशाहने शाहज़ादे खुर्रमको लिखभेजा, कि तुम कन्धारकी तरफ़, (जो उन्हीं दिनों ईरानके बादशाहने अपने कब्ज़ेमें करलिया था), रवाना हो. इससे बेगमका यह मत्लब था, कि खुर्रमको हिन्दुस्तानके बाहर निकालदियाजावे और शहरयारका रोब बढ़ायाजावे. शाहज़ादे खुर्रमने अपने दीवान अफ़्ज़लखांके साथ बहुत नरमीसे बादशाहके पास अर्ज़ी भेजी और चाहता था, कि यह फ़साद रफ़ा हो; दीवानने बहुत कोशिश की, लेकिन् कुछ पेश न गई, और ना उम्मेद फिर आया. शाहज़ादेके दुश्मन मौक़ा पाकर बेगम और बादशाहके सामने बनावटकी बातें पेशकरने लगे, और आसिफ़खां नूरजहांके भाईसे भी उसका दिल फेरदिया, आसिफ़खांको आगरेका सूबेदार करके वहां भेजा, और महाबतखांको काबुलसे बुलाया, लेकिन् महाबतखांने उज़्र किया, कि जबतक आसिफ़खां और मोतमदखां मेरे दुश्मन वहां रहेंगे, उस वक्त तक मैं हाज़िर नहीं होसक्ता; आसिफ़खांको सूबे बंगालपर भेजाजावे, और मोतमदखां मारडाला जावे, तो बेशक मैं आसक्ता हूं. बेगमने महाबतखांके बेटे अमानुल्लाको मन्सब तीन हज़ारी ज़ात और सतरह सौ सवारका दिलाया, और महाबतखांको लिखागया, कि इसको अपनी जगहपर काबुलमें छोड़ कर जल्दी चलाआवे.

लाहौर मक़ामपर महाबतखां हाज़िर हुआ और उसकी जगह याकूबखां बदख़्शीको नक्कारा देकर काबुलकी सूबेदारीपर भेज दिया. इसी मक़ामपर ईरान के बादशाह अब्बासके एल्ची हैदरबेग वगैरह आये. हम उस ज़मानेके बादशाहोंकी पोलिटिकल् कार्रवाइयोंको दिखलानेके लिये इस किताबके पढ़नेवालों को उन दोनों काग़ज़ोंके तर्जुमोंसे भी बेखबर नरक्खेंगे, जो शाह अब्बास और जहांगीरने आपसमें लिखे थे-

ईरानके बादशाह अब्बासके खतका तर्जुमा-

उन दुआओंकी हवाएं, जिनकी कुबूलियतकी खुशबूओंसे मुरादकी कली खिलकर रिश्तेदारीके दिमाग़की खुशी बढ़ाती है, और उन तारीफ़ोंकी किरनें, जिन की साफ़ चमकसे दोस्तीकी महफ़िल् रौशन् होकर बेगानगी के अंधेरे को दूर करती है, उन बड़े हज़रत सायह खुदाकी महफ़िल का इत्र और उन खुदाके नूरपले हुएकी सच्चाई और सफ़ाईकी महफ़िल्का चिराग़ बनाकर, रौशन अक्ल और रौशनी फैलानेवाले साफ़ दिलपर ज़ाहिर कियाजाता है- कि उन जानकी बरा-

बर भाई के होश्यारी पसन्द करनेवाले दिल और आस्मान्की बराबर बलन्द तबी-अत पर, जो दानाई और होश्यारीका आईना और पैदाइशकी हक़ीक़तोंकी सूरतका शीशा है, रौशन और मालूम होगा-कि बादशाह स्वर्गवासीके बे इलाज मुआमलेके (गुज़रनेके) पीछे बहुतसे झगड़े ईरानमें ज़ाहिर हुए, जिनमें बाज़े इलाक़े इस बुज़ुर्ग खान्दान्के क़ब्ज़ेसे निकल गये. जब यह बे पर्वाह दर्गाह (खुदा) का आजिज़ (मैं) बादशाहतके कामोंको चलाने लगा, तो खुदाकी मिहर्बानियोंकी बरकत और दोस्तों की उम्दह तवज्जुहसे तमाम मौरूसी इलाक़े, जो दुश्मनोंके क़ब्ज़ेमें थे, छीन लिये गये. क़न्धारको, जो उस बड़े खान्दान् (आप) के एजन्टोंके क़ब्ज़ेमें था, अपना ही जानकर झगड़ा न किया गया, भाई बन्दी और दोस्तीके तरीक़ेसे हमको उम्मेद थी कि आप भी अपने स्वर्ग वासी बाप दादोंकी तरह पर उसके सौंप देनेमें तवज्जुह फ़र्मावेंगे; आपने जब गफ़्लतसे परवाह न की, तो कई बार कागज़ और पैग़ामके ज़रीएसे इशारे और साफ़ बयान् भी उसके मांगनेके वास्ते किये गये; शायद आपकी हिम्मत के आगे यह कमदरजा मुल्क इस लायक़ न मालूम हुआ, कि इस खान्दान्के वारिसोंको देकर दुश्मनोंका बद गुमान और बदख्वाहोंकी ज़बान्दराज़ी और ऐबजोई दूर करें; कुछ लोगोंने पहिले इस बातको देरमें डाल दिया. जब इस मुआमलेकी हक़ीक़त दोस्त और दुश्मनोंमें फैलगई, और आपकी तरफ़ से कोई जवाब इक़ार और इन्कार की बाबत न पहुंचा, तो मेरी साफ़ तबीअत में यह खयाल आया, कि क़न्धारकी तरफ़ सैर व शिकार किया जावे, शायद इस वसीलेसे उन नामवर मक्सदवर भाईके एजेन्ट दोस्ती और मुहब्बतके तरीक़ोंसे, जो आपसमें जारी हैं, इक़्बालमन्द लश्करकी पेश्वाई करके मेरी खिदमत्में पहुंचेंगे, और नये सिरसे दुन्याके लोगों पर दोनों तरफ़की एकताकी बड़ाई ज़ाहिर होकर दुश्मनों और बदी चाहने वालोंकी ज़बानकी रुकावटका सबब हो. इस इरादे पर बग़ैर भारी सामान क़िला लेनेके मुतवज्जिह होकर, जब फ़राह मक़ाम पर पहुंचे, तो एक हुक्म मिहर्बानीके साथ क़न्धारकी सैर व शिकारका मन्शा ज़ाहिर करनेको वहांके हाकिमके पास भेजा, ताकि मिहमानीका सामान् करे; इज़्ज़तदार ख्वाजह बाक़ी कर्कराक़ को बुलाकर वहांके हाकिम और अमीरोंको, जो क़िलेमें थे, पैग़ाम दिया, कि बड़े हज़रत बादशाह (जहांगीर) और हमारी सल्तनतमें जुदाई नहीं है, और जो कुछ आपसमें जान पहिचान है, वह सब जानते हैं; हम सैरके तरीक़ेपर उस सूबेकी तरफ़ आते हैं, ऐसा न करें, कि कोई रंजीदगी की बात पैदा हो. उन्होंने हुक्मके मज़्मून और पैग़ाम की मस्लहतको सफ़ाईके साथ न सुना और दोनों तरफ़ की मुहब्बत और दोस्तीकी रस्मोंपर खयाल न रखकर गुस्ताखी और गुनाह-

गारी ज़ाहिर की. जब हम क़िलेके पास पहुंचे तो फिर इज़्ज़तदार ख़्वाजह बाक़ी को बुलाकर जोकुछ नसीहतका हक़ था उसको कहलाभेजा, और दस रोज़ तक फ़त्हमन्द लश्करको ताकीद फ़र्मादी, कि क़िलेके गिर्द न भटकें; लेकिन् नसीहतोंने कुछ फ़ायदा न दिया, और दुश्मनीसे ज़िद्द की. जब कि इससे ज़ियादा नरमीकी गुन्जाइश न मालूम हुई, क़ज़लबाश लश्करने बावजूद क़िलागीरीका सामान न होनेके क़िलेका मुहासरा शुरू किया, थोड़े दिनोंमें बुर्ज और चारदीवारीको ज़मीन की तरह बराबर करके क़िलेवालोंको लाचार करदिया, जिससे उन्होंने पनाह मांगी. हमने भी मुहब्बतका तरीक़ा, जो बहुत दिनोंसे इन दो बड़े ख़ान्दानोंमें जारी चला आता है, और भाईबन्दीका लिहाज़, जो नयेसिरेसे उस बड़े दरजे और बुज़ुर्गीके तख़्तनशीनकी हुकूमतके वक़्से हमारी सल्तनतके साथ इस तरहपर मज़्बूत हुआ था, कि दुन्याके बादशाहोंको जलन पैदा हुई, अपनी नज़रमें क़ायम रखकर, ज़ाती मुरव्वतके सबब से उनके क़ुसूरों और नालायक़ियों को, अपनी बख़्शिशसे मुआफ़ करके मिहर्बानियोंके साथ बिल्कुल् सहीह सलामत हैदरबेग तूरबाशीके हमराह, जो इस ख़ान्दानके सच्चे ख़ैरख़्वाहोंमेंसे है, बड़ी दरगाह (आपके पास) को रवाना किया. क़सम है कि मौरूसी मुहब्बत और मामूली दोस्तीकी बुन्याद इस सफ़ाई ढूंढनेवाले की (मेरी) तरफ़से ऐसी बलन्द और मज़्बूत नहीं है, कि बाज़े कामोंके ज़ाहिर होनेके सबब, जो ख़ुदाकी क़ुदरत से पैदा होजाते हैं, नुक़्सान पावे.

शिअ्र.

मियाने मा ओ तो रस्मे जफ़ा नख़्वाहद बूद,
बजुज़ तरीक़ए मिहरो वफ़ा नख़्वाहद बूद.

तर्जुमा-हमारे और तुम्हारे दर्मियान् सख़्तीका तरीक़ा न बर्ताजावेगा, सिवाय मुहब्बत और वफ़ादारीकी रस्मके दूसरी बात न होगी.

यह उम्मेद कीजाती है, कि आपकी तरफ़से भी यही उम्दा तरीक़ा जारी रहकर बाज़े इत्तिफ़ाक़िया कामों को नेक निशान नज़रसे पसन्द न फ़र्माकर, अगर कोई नुक्सान मुहब्बतके तरीक़ेमें पैदा हुआ हो, तो ज़ाती मिहर्बानी और क़ुदरती मुहब्बतकी उम्दगीसे, उसके दूर करनेमें कोशिश करके हमेशाकी बहारवाले एक दिली और एकताके फूलको सरसब्ज़ और ताज़ा रखकर, अपनी बलन्द हिम्मतको दोस्तीकी जड़ोंकी मज़्बूती और इत्तिफ़ाक़की मन्ज़िलोंकी दुरुस्तीपर, जो जहान और जहान वालोंकी आराम बख़्शने वाली हैं, मसरूफ़ फ़र्मावें, और हमारे क़ब्ज़ेके कुल इलाक़ोंको अपने तअ़ल्लुक़में जानकर, जिस किसीको चाहें, अता फ़र्माकर इत्तला

बख़्शें, कि बिला तअम्मुल उसको सौंप दिया जावे. इन छोटी बातोंपर कुछ ख़याल न करना चाहिये. जो अमीर और सर्दार क़िलेमें थे, उनसे आगरचि कई, ऐसे काम, जो दोस्तीकी रस्मोंके ख़िलाफ़ थे, ज़ाहिर हुए, लेकिन् जो कुछ भी हुआ हमारी तरफ़से समझें; उन लोगोंने, जो कुछ नौकरी और वफ़ादारीका हक़ था, अदा किया. मुझको यक़ीन है, कि वह हज़रत भी बादशाही बुज़ुर्गी और बड़ी मिह-र्बानी उनके हालपर ज़ाहिर फ़र्माकर, हमको उनसे शर्मिन्दा न करेंगे. ज़ियादा क्या लिखाजावे, हमेशा आस्मान तक पहुंचनेवाले नेज़े ख़ुदाकी तरफ़से मदद पाते रहें.

इसके जवाबमें शहन्शाह जहांगीरने शाह ईरानको
जो ख़त लिखा उसका तर्जुमा यह है-

वह शुक्र, जो क़ियासकी हदसे बाहर है, और वह तारीफ़, जो ज़ाहिरी मिसा-लोंसे अलहदा है, उस बुज़ुर्ग ख़ुदाको लायक़ है, जिसने बड़े बादशाहोंके इक़ारों और क़ानूनोंकी मज़्बूतीको दुन्याके इन्तिज़ामका सबब, और जहानमें हुकूमत रखनेवालोंको आदमियोंकी आसानी और आरामका ज़रीआ जो ख़ुदाकी एक अमानत है, बनाया है. इस बयान और मुआमलेकी पूरी मिसाल वह मुवाफ़क़त और दोस्ती है, जो इस बड़े ख़ान्दान बलन्द दरजेके दरमियान क़ायम हुई, और हमारी रोज़ बरोज़ बढ़नेवाली बादशाहतके वक़्में नये सिरसे उस दरजेपर बलन्द और म-ज़्बूत हुई, कि ज़मानेके बादशाहोंको रंज दिलाने लगी. उन बादशाह जमशेदके दरजे, सितारोंकी फ़ौज, आस्मानकी दरगाह, और कैयानी ख़ान्दानके चमकने वाले ताज, बादशाही तख़्तके लायक़, बुज़ुर्ग बादशाहतके बाग़के फलदार दरख़्त, बड़े ख़ान्-दानके चुनेहुए, सफ़वी घरानेके सरताजने, बग़ैर किसी सबबके दोस्ती और भाई बन्दी और एक दिलीके बाग़को परेशान किया, जिसपर ज़मानोंके गुज़रने और वक़्तोंके बदलनेसे नुक़्सानकी धूलके जमनेका मौक़ा न हुआ था. ऐसी ज़ाहिरी दोस्ती और मुहब्बत दुन्याके मामूली हाकिमोंमें होती है, कि ऐन मज़्बूती और भाईबन्दी और दोस्तीमें, जिसपर क़सम खालीजाती है, और निहायत रूहानी मुवाफ़क़त और जिस्मानी सच्चाईसे, जिसके सबबसे जान तककी भी परवाह न रखकर मुल्क और मालकी कुछ हक़ीक़त नहीं समझीजाती, इसतरह पर सैर व शिकार कियाजावे.

मिसरअ

सद हैफ़ बर मुहब्बते बेश अज़ क़ियासे मा.

अर्थ- हमारी क़ियाससे ज़ियादा मुहब्बत पर सैकड़ों अफ़्सोस हैं.

मुहब्बत भरे हुए ख़तके आनेसे, जो कन्धारकी सैर और शिकारके उज़में, नेकबख़्त हैदरबेग और वलीबेगके हाथ भेजा था, और उस फ़रिश्तोंकी आदत वाली ज़ातकी तन्दुरुस्तीके हालसे भरा हुआ था, ख़ुशीके निशान मुबारक हालतके साथ पैदा हुए. उन बड़े दरजेके मक़्सदवर भाईकी दुन्या संवारनेवाली रायपर पोशीदा न रहे, कि बुज़ुर्ग पैग़ाम वाले रम्बलबेगके हमारी दरगाहमें पहुंचने तक कभी तहरीरी या ज़बानी ख़्वाहिश कन्धारके मुआमलेकी बाबत न ज़ाहिर की गई थी. जब कि हम उम्दा इलाके काश्मीर की सैर व शिकारमें मश्ग़ूल थे, उसवक़ दक्षिणके कमहिम्मत लोगोंने बेवकूफ़ीसे तावे-दारीके तरीक़ेसे क़दम बाहर रखकर गुनहगारीका तरीक़ा इख़्तियार किया, जिससे बाद-शाही हिम्मत पर उन बेवकूफ़ोंकी सज़ा और तंबीह लाज़िम हुई, और हमारा लश्कर दारुस्सल्तनत लाहौरमें पहुंचा. प्यारे बेटे शाहजहांको ज़बरदस्त फ़ौजके साथ उन बदबख़्तोंपर मुक़र्रर फ़र्माया, और हम आप दारुलख़िलाफ़त आगरेकी तरफ़ रुजूअ हुए; उस वक़ रम्बलबेग पहुंचा, और मुहब्बत बढ़ाने वाला और तख़्त की रौनक़ बख़्शनेवाला ख़त पेश किया; हम उस दोस्तीके तावीज़को एक अच्छा शगून (शकुन) समझकर दुश्मनोंकी शरारतके दूर करनेके इरादेपर आगरेकी तरफ़ रवाना हुए. उस बड़े क़ीमती ख़तमें कन्धारकी ख़्वाहिश ज़ाहिर न कीगई थी, रम्बलबेगने ज़बानी कहाथा, जिसके जवाबमें हमने फ़र्मादिया था, कि "हमको उन मक़्सदवर भाईसे किसी चीज़में तअम्मुल नहीं है, अगर ख़ुदाने चाहा तो दक्षिणकी मुहिम्के तै होने बाद जिस तौरपर कि हमको मुनासिब मालूम होगा, तुमको रुख़सत करेंगे", और हमने फ़र्माया था, कि वह दूर दराज़ सफ़र तै करके आया है, थोड़े दिन लाहौर में रास्तेकी तक्लीफ़ोंसे आराम ले, फिर बुलालिया जावेगा; आगरेमें पहुंचनेके बाद हमने उसको तलब किया, ताकि रुख़्सत दीजावे. ख़ुदाकी मिहर्बानियें उसकी दरगाहके तावेदारके (मेरे) हालपर जारी हैं, इस सबबसे फ़तहके साथ तबीअतको इत्मी-नान हासिल हुआ, और मैं पंजाबको रवाना होकर इसी बातकी फ़िक्रमें था, कि क़ासिदको रुख़सत करूं, बाज़े ज़ुरूरी कामोंके पूरा होनेके बाद इलाक़े काश्मीर की तरफ़, जो आब हवाकी दुरुस्ती और सफ़ाईमें तमाम दुन्याके सय्याहोंके नज़्दीक उम्दा मानाहुआ है, मुतवज्जिह हुए; उस दिलपसन्द इलाक़ेमें पहुंचने पर रम्बलबेगको हमने रुख़्सतके लिये बुलाया, ताकि अपने साथ रखकर उस जगहकी एक एक ताज़गी और ख़ुशी बख़्शनेवाली चीज़को उसे दिखलावें. इसी मौक़ेपर उन मक़्सदवर भाईके कन्धारको लेनेके इरादेकी ख़बर, जो हर्गिज़ ख़ातिरमें न गुज़री थी, पहुंची; बड़ा तअज्जुब मालूम हुआ, कि एक भट्टी की मुवाफ़िक़ गांवकी क्या हक़ीक़त है, जिसके लेनेकेवास्ते ख़ुद मुतवज्जिह और

दोस्ती व भाईबन्दी और मुहब्बतकी आंख बन्द करलें. अगरचि सच्चे सहीह कौल वाले मुख़्बिर इत्तला देते थे, लेकिन् हम यक़ीन नहीं करते थे. जब कि यह ख़बर तह्क़ीक़ होगई, फ़ौरन् अब्दुल्अज़ीज़ख़ांको हमने हुक्म भेजादिया, कि उन मक़्सद-वर भाईकी मरज़ी से बख़िलाफ़ी न करे, अभी तक भाईबन्दीका बर्ताव मज़्बूत है; इस दोस्ती और एकताके दरजेको हम एक जहान भरसे ज़ियादा जानते हैं, और किसी चीज़को उसके बराबर नहीं समझते. बस इसवास्ते भाई बन्दीके लायक़ और मुनासिब यह था, कि एल्चीके आने तक, जो शायद अपने मत्लब व मुद्दआके मुवाफ़िक़ ख़िद्मतमें पहुंचता, सब्र फ़र्माते. एल्चीके पहुंचनेसे पहिले ऐसा नुक्सान रवा रखनेपर ज़माने वालोंके नज़्दीक इक़ार और सच्चाईके क़ानून, और मुरव्वत व हिम्मतवरीके तोड़नेका क़ुसूर किसकी तरफ़ समझा जावेगा. बुज़ुर्ग ख़ुदा हर-एक हालतमें निगहबान और मददगार रहे.

शाहज़ादे खुर्रमकी जागीरें, जो गंगा जमुनाके आसपासकी थीं, ज़ब्त होकर दूसरे सर्दारोंको देदी गईं, और शाहज़ादेको लिखागया, कि मालवे, दक्षिण और गुजरातकी तरफ़ अपनी जागीर मुक़र्रर करे. सूबे दक्षिणमें जिस क़दर बादशाही फ़ौज मौजूद है, फ़ौरन् क़न्धारकी मुहिम्के लिये यहां भेजदे. यह सब हुक्म बेगमकी तरफ़से होता था, बादशाहकी दिली ख़्वाहिश नहीं थी.

इस फ़सादके वक़ बादशाह काश्मीर व लाहोरकी तरफ़ था, शाहज़ादेके दक्षिणसे आगरेकी तरफ़ कूच करनेकी ख़बर सुनकर बादशाह भी लाहोरसे आगरेको रवाना हुआ; उसी वक़ आगरेसे आसिफ़ख़ांकी अरज़ी पहुंची, कि जो ख़ज़ाना तलब फ़र्माया गया है, उसके भेजनेका वक़ नहीं है, क्यौंकि शाहज़ादे खुर्रमका इरादा बद मालूम होता है, और उसके आगरेकी तरफ़ आनेकी ख़बर गरम है. इस पर बादशाहने बहुत ख़फ़ा होकर शाहज़ादे खुर्रमका नाम 'बेदौलत' रख-दिया, बल्कि तहरीरोंमें भी यही नाम लिखनेका हुक्म होगया. बादशाह ख़ास अपनी तुज़क जहांगीरी नाम किताबमें निहायत रंजसे लिखता है— कि—

"वह पर्वरिशें और मिहर्बानियें, जो उस (खुर्रम) के हक़में मुझसे ज़ुहूरमें आई हैं, मैं कह सक्ता हूं, कि अब तक किसी बादशाहने अपने बेटे पर नकी होंगी; जो कुछ मेरे बापने मेरे भाइयोंको उहदे दिये थे, मैंने उसके नौकरोंको इनायत किये, और ख़िताब व नेज़ा और नक़ारा उनको दिया गया, जैसा मैं सिलसिले वार इस

किताबमें पहिले लिख आया हूं, पढ़ने वालोंसे पोशीदा न रहेगा; जिस क़दर तवज्जुह और मिहर्बानी उस पर की गई, क़लमको उसके लिखनेकी ताक़त नहीं है, ज़ियादा रंजके सबब नहीं लिखाजासक्ता. इस वक्तमें, जब कि सफ़रकी थकान और मिज़ाजकी कमज़ोरी और आब हवाकी ना मुवाफ़क़त मौजूद है, मुझको सवार होकर ऐसे नालायक़ बेटेकी तरफ़ चलना पड़ता है, बहुतसे नौकर, जिनको बहुत वर्षों तक मैंने पाला था, और अमीरीके दरजेपर पहुंचाया था, और वह आजके दिन उज़बक या क़ज़लबाश क़ौमकी लड़ाईमें काम आते, वे बेदौलतकी बदबख़्तीसे बे फ़ायदा सज़ाको पहुंचे, और मेरे हाथसे ख़राब हुए; लेकिन् मैं खुदाका शुक्र करता हूं, कि उस बुज़ुर्ग और पाकने इसक़दर हिम्मत और बुर्दबारी मुझको बख़्शी है, कि इन तमाम तक्लीफ़ोंको उठालूंगा, और अपनी उम्रके दूसरे अहवालकी तरहपर पूरा करके आसान करलूंगा, लेकिन् जो बात मेरे दिलपर भारी गुज़रती है, और मेरे ग़ैरत्दार मिज़ाजको परेशानीमें डालती है, वह यह है, कि ऐसे वक्तमें मुनासिब था, कि मेरे नेकबख़्त लड़के और साफ़ दिल सर्दार आपसमें एक इरादा होकर कन्धार और ख़ुरासानकी कारगुज़ारीको, जो हिन्दुस्तानकी बादशाहतके लिये इज़्ज़त है, इख़्तियार करते, इस बे नसीबने अपने पांवपर कुल्हाड़ी मारकर, इस इरादेको रोक दिया, और कन्धारके मुआमलेकी गिरह मेरे दिलमें पड़ी रहगई, जिसका सुलझना देरमें होगा; मैं उम्मेद रखता हूं, कि बुज़ुर्ग खुदा इन फ़िक्रोंको मेरे दिलसे दूर करेगा".

बादशाहकी इबारतका तर्जुमा इस वास्ते लिखा गया, कि पढ़ने वालोंको मालूमहो, कि बूढ़े बादशाहको मत्लबी लोगोंने किस तरहकी तक्लीफ़ें पहुंचाईं. इस वक्त महाबतखांने अपनी पुरानी दुश्मनीका बदला लेना शुरू किया, मुहतरमखां ख्वाजेसरा, ख़लीलबेग ज़ुल्क़द्र और फ़िदाईखां मीरतुज़क तीनों आदमियों पर शाहज़ादे खुर्रमसे ख़तकिताबत रखनेका इल्ज़ाम लगाया, मुहतरमखां और ख़लीलबेगको मिर्ज़ा रुस्तमके क़समिया बयान व नूरुद्दीन कुलीकी तस्दीक़से और अबूसईदके कई ख़ूनी मुक़द्दमातकी तुहमत लगानेसे महाबतखांने शाही हुक्मके मुताबिक़ अपनी तलवारसे बेगुनाह क़त्ल किया, और फ़िदाईखांको बे क़ुसूर जानकर क़ैदसे छोड़दिया.

बादशाहने राजा रोज़अफ़्ज़ूंको शाहज़ादे पर्वेज़के लानेके लिये बंगाले व बिहारकी तरफ़ डाकमें रवाना किया; जब बादशाह नूरसराय मक़ामपर पहुंचा, तो उस वक्त एतिबारख़ांकी अरज़ीसे मालूम हुआ, कि शाहज़ादा खुर्रम फ़तहपुर और आगरेके पास पहुंचा, और क़िलेके मज़बूत होनेसे भीतर न घुसने पाया,

ताहम बाहर जहां कहीं क़ाबू पाया, वहां बिगाड़ किया, जैसे लश्करख़ांके मकानसे नौ लाख रुपये और दूसरे अमीरोंसे जितना मिलसका, शाहज़ादेके मुलाज़िम सुन्दरदासने लूटलिया. बादशाह जहांगीरने मूसवीख़ांको इस वारदातकी ख़बरके पहिले शाहज़ादेकी दिली ख़्वाहिश जानने व फ़हमाइशके वास्ते रवाना करदिया था, वह ख़ुर्रमके पास पहुंचा, तो शाहज़ादा दिलसे चाहता था, कि मैं अकेला बापकी ख़िदमत्में हाज़िर होजाऊं, जिससे दोनोंकी नेकनामीको दाग़ न लगे; मूसवीख़ांके साथ अपने मोतमद क़ाज़ी अब्दुलअज़ीज़को शहन्शाही ख़िदमत्में भेजदिया, और आप आगरे और फ़त्हपुरकी तरफ़से चला गया. बादशाहको तो नूरजहांने आगका शोला बनारक्खा था, क़ाज़ीकी एक बात भी न सुनी, और क़ैदकरके महाबतख़ांके हवाले किया.

जब बादशाह दिल्ली पहुंचे, तो बहुतसी फ़ौजें एकट्ठी होगईं, शाहजहां के मुक़ाबलेके लिये पच्चीस हज़ार सवार अब्दुल्लाख़ां और ख़्वाजह अबुल्हसनकी मातहती में, लश्करख़ां, फ़िदाईख़ां और नवाज़िशख़ां वग़ैरह समेत भेजे, वह मालवेकी सरहद पर शाहज़ादेकी फ़ौजके नज़्दीक पहुंचे थे, कि शाहज़ादेने अपने बापकी फ़ौजसे मुक़ाबला करना वाजिब न जानकर या और किसी सबबसे परगने कोटलाकी तरफ़ किनारा किया, जो रास्तेसे २० कोस बाईं तरफ़ था; शाही फ़ौजको रोकनेके लिये ख़ानख़ानां अब्दुर्रहीमके बेटे दाराबख़ां व राजा विक्रमादित्यको छोड़ा, दोनों तरफ़के फ़ौजी अफ़्सरोंने लड़ाईके लिये लश्करोंकी दुरुस्ती की, लेकिन् मुक़ाबलेके वक़्त अब्दुल्ला-ख़ां शाही हरावल फ़ौजका बड़ा अफ़्सर शाहज़ादेकी फ़ौजसे जामिला, उस वक़्त ज़बरदस्तख़ां व शेरपंजा व शेरहमला व मुहम्मदहुसैन ख़्वाजह जहांका भाई और नूरज़मां असदख़ां मामूरीका बेटा वग़ैरह अब्दुल्लाख़ांकी फ़ौजसे लड़कर मारेगये, और शाहज़ादेकी फ़ौजका अफ़्सर राजा विक्रमादित्य भी गोली लगनेसे हलाक हुआ; दोनों तरफ़की फ़ौजोंमें शोर मचगया, क्योंकि शाही फ़ौजसे तो अब्दुल्लाख़ां शाहज़ादे की तरफ़ आगया और शाहज़ादेकी फ़ौजका बड़ा अफ़्सर (राजा विक्रमादित्य) (१) मारागया, इसी सबबसे दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबला होना बन्द रहा. फिर शाही फ़ौज तो लौटकर अजमेरकी तरफ़ आई और शाहज़ादा मए अपनी फ़ौजके मांडूमें पहुंचा.

---

(१) यह राजा विक्रमादित्य क़ौमका ब्राह्मण और पहिले बादशाही तोपख़ानेका दारोग़ा था, जो ख़ुर्रमका साथी होगया.

शाहज़ादा पर्वेज़ बंगालेसे शाही ख़िदमत्में हाज़िर हुआ. बादशाह जहांगीरने उसको शाही फ़ौजका अफ़्सर बनाकर शाहज़ादे खुर्रमके पीछे रवाना किया, और पर्वेज़का मददगार महाबतख़ां हुआ. शाही फ़ौज जब मालवेमें पहुंची तो शाहज़ादे शाहजहांने भी अपनी फ़ौज उसके मुक़ाबलेको रवाना की, लेकिन् रुस्तमख़ां (जिसको शाहज़ादे शाहजहांने अदना दरजेसे पंजहज़ारी मन्सब देकर गुजरातका सूबेदार बनाया था) भागकर महाबतख़ां व पर्वेज़की फ़ौजसे मए अपने साथियोंके जामिला, जिससे शाहजहांकी फ़ौजका इन्तिज़ाम बिल्कुल बिगड़ गया, और कुल अपने साथी सर्दारोंसे शाहज़ादेका एतिबार उठगया, तो जो अपनी फ़ौज थी उसको बुलाकर क़िले मांडूसे नर्मदाके पार होकर बैरमबेग बख़्शीको थोड़ी फ़ौजके साथ नर्मदा किनारे छोड़कर आप क़िले आसेरगढ़ व बुर्हानपुरकी तरफ़ चलागया, किसी क़दर नर्मदा पर जो किश्तियां थीं वे बैरम बेगने अपने क़ब्ज़ेमें करलीं, इस वक्त मुहम्मद तक़ी बख़्शीने एक चिट्ठी पकड़कर शाहज़ादे खुर्रमको नज़्रकी, जो ख़ानख़ानां अब्दुर्रहीमकी तरफ़से महाबतख़ांके नाम लिखीगई थी, उसमें यह शिअर दर्ज था.

शिअर.

सद् कस् ब नज़र निगाह मेदारन्दम्,
वरना बिपरीदमे ज़ि बे आरामी.

अर्थ——मुझको सैकड़ों आदमी निगाह रखते हैं, नहीं तो बे क़रारीसे निकल भागता.

जब यह चिट्ठी ख़ानख़ानांको मए उसके लड़केके तलब करके शाहज़ादेने दिखलाई तो उससे कुछ जवाब न दियागया, इस लिये क़ैद कियागया.

शाहजहां क़िले आसेरमें बहुतसा खटला मए लौंडी बांदियोंके छोड़कर गोपालदास राजपूतको वहांका हाकिम बनाने बाद आप बुर्हानपुरकी तरफ़ चलागया.

पीछेसे शाहज़ादा पर्वेज़ मए महाबतख़ांके शाही फ़ौजको लेकर नर्मदा नदी पर आया, लेकिन् बैरमबेग शाहज़ादे खुर्रमका मुलाज़िम पेश्तरसे ही किश्तियोंको अपने क़ब्ज़ेमें करलेनेसे दक्षिणी किनारेको तोपख़ाने व अपने बहादुर सिपाहियोंसे मज़्बूत करके लड़ाईको तय्यार था. महाबतख़ांने नदी उतरना मुश्किल जानकर ख़ानख़ानां अब्दुर्रहीमको पोशीदा लिखावटसे अपनी तरफ़ मिलाया. उस बूढ़ेने भी महाबतख़ांके दावमें आकर शाहज़ादेको फ़रेबसे कहा, कि अब सुलह इख़्तियार करना बिहतर है, मैं आपका ख़ैरख़्वाह हूं, अगला क़ुसूर मुआफ़ कर

दीजिये अब हर्गिज़ ख़िदमत् गुज़ारीमें फ़र्क़ न आवेगा. शाहज़ादा ख़ुर्रम उसके कहनेको सच मानगया और कुरआनकी सौगन्द दिलाने पर उसको महाबतख़ांकी तरफ़ रवाना किया, और उसके बेटोंको अपने क़ब्ज़ेमें रक्खा, उसको चलते वक़् लाचारीसे यह भी कहा, कि हर तरह इज़्ज़त हाथसे न देना चाहिये. ख़ान्‌ख़ानां दक्षिणी किनारेसे हुक्मके मुवाफ़िक़ सुलहके लिये तहरीरी शर्तें कररहा था, जिससे जंगी लोग मए बैरमबेगके सुस्त होगये; रातके वक़् शाही फ़ौजके मुलाज़िम नदी उतर आये और ख़ानूख़ानां उनसे मिलगया. बैरमबेगने भागकर शाहज़ादेको इस हालकी ख़बर दी, शाही फ़ौजने बुर्हानपुर तक पीछा किया, और शाहज़ादा ख़ुर्रम गोलकुंडा वग़ैरह ग़ैर अमल्दारीमें होताहुआ उड़ीसेकी तरफ़ पहुंचा, वहांके हाकिमोंने सामना न किया, जो कुछ माल अस्बाब हाथ आया लेताहुआ बर्दवानको गया; वहांका हाकिम मुहम्मद सालिह कुछ मुक़ाबलेसे पेश आया, लेकिन् भागकर इब्राहीमख़ां सूबेदार बंगालाको ख़बर दी.

ख़ुर्रमने उसको मिलाना चाहा लेकिन् वह नमक हलाल नूरजहां बेगमका मौसा बादशाही ख़ैरख़्वाहीपर निगाह रखकर शाहज़ादेसे न मिला, और ढाकेसे चलकर राजमहलके पास मुक़ाबला करनेको तय्यार हुआ. शाहज़ादेने भी राजा भीम महाराणा अमरसिंहके बेटे, अब्दुल्लाख़ां फ़ीरोज़जंग, ख़्वाजा साबिर, ख़ान्‌दौरां, दर्याख़ां, बहादुरख़ां रुहेला, अलीख़ां व शेरबहादुर वग़ैराको तय्यार करके उसकी तरफ़ मुक़ाबलेके लिये भेजा. इब्राहीमख़ांने भी मए पांच हज़ार सवार व जंगी हाथियोंके मुक़ाबला किया, दोनों तरफ़के बहुतसे बहादुर आदमी मारेगये, और अब्दुल्लाख़ांके किसी सर्दारने इब्राहीमख़ांका सिर काटकर अपने मालिकके पास पेश किया. शाहज़ादेने ढाकेपर क़ब्ज़ा करलिया, वहांसे चालीस लाख ४०००००० (१) रुपया नक़्द व पांच सौ हाथी हासिल हुए; शाहज़ादा ख़ुर्रम ख़ान्‌ख़ानांके बेटे दाराबख़ांको बंगालेका नाज़िम मुक़र्रर करके उसके बेटे शाहनवाज़ व एक बेटी और उसकी औरतको साथ लेकर जौनपुर व इलाहाबादकी तरफ़ रवाना हुआ. बंगालेके बहुतसे सर्दार शाहज़ादे ख़ुर्रमसे आमिले, और सय्यद मुबारकने हाज़िर होकर क़िला रुहतास (रोहिताश्व) शाहज़ादेके सुपुर्द किया; उसी क़िलेमें विक्रमी १६८१ कार्तिक कृष्ण ११ [हि० १०३३ ता० २५

---

(१) इनमेंसे तीन लाख रुपये अब्दुल्लाख़ां फ़ीरोज़ जंगको, दो लाख रुपये राजा भीम सीसोदियेको, एक लाख रुपये दाराबख़ां, एक लाख दर्याख़ां, पचास पचास हज़ार रुपये वज़ीरख़ां, शुजाअतख़ां, मुहम्मद तक़ी और बैरमबेगमें से हरएकको दिये.

ज़िलहिज = ई० १६२४ ता० ९ ऑक्टोबर] शनिवारको चार घड़ी रात गये शाहजहांके बेटे शाहज़ादे मुरादबख़्श का जन्म हुआ. शाहज़ादा ख़ुर्रम अपने ज़नानेको इसी क़िलेमें छोड़कर जौनपुर गया.

बादशाह जहांगीरने शाहज़ादे पर्वेज़को मए शाही लश्कर व बड़े अमीरोंके बुर्हानपुरकी तरफ़से इलाहाबाद जानेका हुक्म दिया, और पर्वेज़को यह भी लिखा कि ख़ानख़ानां अब्दुर्रहीम नज़रबन्द रक्खाजावे, क्योंकि उसका बेटा दाराबख़ां, शाहजहांके पास है, पर्वेज़ने वैसाही किया, लेकिन् ख़ानख़ानां के एक गुलाम फ़हीम नामीने क़ैद होना पसन्द न करके अपने एक बेटे और चौदह आदमियों समेत लड़कर जान दी. अब्दुल्लाख़ांने इलाहाबादका क़िला जाघेरा, लेकिन् पर्वेज़ और महाबतख़ांके पहुंचनेसे उसे छोड़कर पीछे लौटनापड़ा. शाहज़ादे ख़ुर्रमने गंगा पर बन्दोबस्त कररक्खा था, कि शाही फ़ौज न उतरसके, बादशाही लश्करने उतरना चाहा; वहां मुहम्मद ज़मान् शाही लश्करके अफ़्सरसे लड़कर ख़ुर्रमका सर्दार बैरम-बेग मारागया, और बादशाहकी सेना गंगा उतर गई.

जब शाहज़ादा ख़ुर्रम टौंस नदीपर पहुंचकर अपने सर्दारों से सलाह करनेलगा तो अब्दुल्लाख़ांने दिल्लीकी तरफ़ होकर दक्षिणमें जानेकी सलाह दी, और कहा कि ४०००० बादशाही फ़ौजसे अपनी सात हज़ार फ़ौजका लड़ना कठिन है; लेकिन् राजा भीमसिंह अमरसिंहोतने उसके बर्ख़िलाफ़ लड़नेके लिये ज़िद की. शाहज़ादेने भी यही सलाह पसन्द की और दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबला हुआ. मेवाड़की पोथियों में व शाइरोंने दो बातें फ़ार्सी तवारीख़ोंसे ज़ियादा लिखी हैं, वे ये हैं-

राजा भीमने जौनपुर मक़ामपर अपने राजपूत सर्दारोंको ज़िरह बक्तर व घोड़े तक़्सीम किये, और केसरिया (१) कपड़े पहनाये, उस वक़ राजा भीमने मानसिंह शक्तावतके लिये, जो उनका पूरा मित्र था, एक घोड़ा और एक ज़िरह बक्तर बाक़ी रक्खा, तब सब लोगोंने कहा कि वह मेवाड़में बहुत दूर है इस लड़ाईमें इतनी दूरसे किसतरह आसक्ता है ! राजाने कहा कि वह मेरा पूरा मित्र है मेरी तक्लीफ़ों और ऐसे तीर्थोंके मौक़े पर लड़ाइयोंका हाल सुनकर ज़ुरूर आवेगा. जब यह लड़ाई टौंस नदीपर शुरू हुई, उस वक़ मानसिंह गया, और अपनी ज़िरह बक्तर पहनकर बड़ी बहादुरीके साथ लड़ाईमें मारागया.

---

(१) राजपूतोंमें आम तरीक़ा है, कि जब जीनेसे बिल्कुल ना उम्मेद होजाते हैं, और मरना इख़्तियार करलेते हैं, तब केसरिया कपड़े पहनते हैं. ऐसा लिबास करने बाद या तो मारे जावें, या फ़तह करें, वर्ना दूसरे सबबोंसे जीते वापस नहीं फिरते.

दूसरी बात यह है, कि जयपुरके राजा जयसिंह कछवाहे और जोधपुरके राजा गजसिंह राठौड़ने, जो शाही फ़ौजमें पर्वेज़के साथ थे, राजा भीमसिंहसे कहलाया कि तुम कहाकरते थे कि क़िला चित्तौड़ हमारे सिरपर बन्धा है, अब उसको पैर से बांधकर किसतरह घसीटते फिरतेहो (२), जिसपर भीमसिंहने कहलाया कि मैं भागता नहीं हूं, कोई तीर्थका मौक़ा देखता हूं, जहां लड़ाई होनेसे हज़ारहा आदमियोंको मोक्ष मिले. इसी बातपर शाहज़ादेसे कहा कि हम तो ज़रूर लड़ कर मारे जावेंगे, और आप उदयपुर महाराणा कर्णसिंहके पास पहाड़ोंमें जाकर ठहरें. इस पिछली बातकी तस्दीक़ कुछ कुछ तुज़क़जहांगीरीसे भी लड़ाईकी सलाह देनेसे होती है.

राजा भीमसिंह अपने बहादुर राजपूतोंके साथ बादशाही फ़ौज पर हमला करनेको तय्यार हुआ, उस वक़ राजाका साला शार्दूलसिंह प्रमार, जिसने पेश्तरकी लड़ाइयोंमें कईजगह बड़ी बहादुरियें दिखलाई थीं, घबराया; तब राजाने कहा कि "तू इस तरह क्यों डरता है, यह वक़ राजपूतोंके वास्ते खुशीका है" इस तरह पर समझाकर राजाने उसका हाथ पकड़ लिया और लड़ाईमें चलनेके लिये कहा, तब शार्दूलसिंह बोला कि पहिली लड़ाइयों में मुझको हाथी मैंडक और आदमी मच्छरके बराबर दिखाई देते थे, और अब पहाड़ व मशेरके मानिन्द नज़र आते हैं और तलवार व भालोंकी चमक, तोपोंकी धमकसे मेरा कलेजा फटा जाता है. भीमसिंहने उसका हाथ छोड़कर अपने हाथको गंगाजलसे धोया, शार्दूलसिंह भागकर घरको गया, और राजा भीमसिंहने अपने साथियों समेत घोड़ोंकी बाग शाही लश्कर पर उठाई. महाराजा आंबेर व महाराजा जोधपुर के लश्करोंको तितर बितर करता हुआ शाहज़ादे पर्वेज़के नज़्दीक पहुंचा, जोताजोत एक बड़े नामी हाथीको, जो लड़ाईमें अपना सानी न रखता था, राजा भीमने तलवारों और बछोंसे मारकर गिरादिया; क़रीब था कि शाहज़ादे पर्वेज़को भी अपनी तलवारोंसे बहादुरीका तमाशा दिखावे, लेकिन् खुर्रमकी फ़ौजके दूसरे सर्दारों मेंसे किसीने मदद न की, इससे भीमसिंह सत्ताईस ज़ख़्म भाले और तलवारोंके अपने बदनपर खाकर, शाहज़ादे पर्वेज़की खास अर्दलीके लोगोंके हाथसे मारेगये. इस राजा भीमकी बहादुरीका हाल तुज़क जहांगीरी, बादशाह नामा, मुन्तख़बुल्लुबाब, शाहजहां नामा वग़ैरा बहुतसी किताबोंमें बख़ूबी लिखा है, जिनमेंसे मुन्तख़बुल्लुबाब, के बयानका तर्जुमा नीचे लिखाजाता है—

(२) यह एक ताना था, कि अब ग़ैरत छोड़कर भागते फिरते हो.

"राजा भीम और शेरखांने बहादुरीके साथ शाहज़ादे पर्वेज़की फ़ौजके मुक़ाबिल आकर तोपखानेपर ऐसी तेज़ी और जोशसे सख्त हम्ला किया, कि बयानमें नहीं आसक्ता, खास राजा भीम अपने हाथसे तलवार मारताहुआ वफ़ादार हमराहियों समेत फ़ौजकी सफ़को चीरकर खास सुल्तान् पर्वेज़के गिरोह तक पहुंच गया. इस मौक़ेपर जो कोई उसके सामने आया तलवार और भालेसे क़त्ल हुआ, उसके सुल्तान पर्वेज़ की फ़ौजमें पहुंचने तक बहुतसे बहादुर आदमी और नामी सर्दार घोड़ोंसे गिरकर जानसे गये, और क़रीब था, कि चालीस हज़ार सवारकी बादशाही फ़ौजका जमाव बिखरजावे, महाबतखांने फ़र्माया, कि उसके मुक़ाबिल मस्त हाथी कियाजावे. राजा भीम और शेरखांने दूसरे राजपूतोंके साथ उस काली बला याने हाथीको तलवार और बर्छियोंके ज़ख्मसे सूंड काटकर ज़मीनपर गिरादिया, हर बार जब कि वह ज़ोर शोरसे हम्ला करता, दोनों तरफ़से तारीफ़ सुनीजाती. आख़िरमें खुद महाबतखां कई दिलेर हमराहियों समेत उसके मुक़ाबिल पहुंचा; राजा भीम बहुतसे सख्त ज़ख्म उठाकर कई हम्ले करने बाद महाबतखांके सामने घोड़ेसे गिरा, जब एक आदमी उसका सिर काटनेके इरादेपर पास आया, तो फिर उसने ग़ैरतके जोशसे खड़ेहोकर अपने दुश्मन्का काम तमाम किया, और जबतक कि उसके दममें दम रहा, तलवार हाथसे न डाली, शेरखां भी कई राजपूतों समेत दिलेरीसे लड़कर मारागया".

राजा भीमके मारेजानेसे शाहज़ादे खुर्रमकी फ़ौजी ताक़त कम होगई, तो भी वह दिली मज़्बूतीसे शाही फ़ौजपर खुद हम्ला करना चाहता था, लेकिन् अब्दुल्लाखांने मए कितने एक दूसरे अमीरोंके बाबर व हुमायूंकी मिसाल देकर शाहज़ादेको रुहतास गढ़की तरफ़ बचेहुए सवारों समेत पीछे लौटाया. शाहज़ादा रुहताससे अपने बेटे व बेगमोंको लेकर दक्षिणकी तरफ़ रवाना हुआ, जिसकी खबर जहांगीरको मिली. बादशाहने शाहज़ादे पर्वेज़को लिखा, कि सूबे बंगालेको महाबतखांके सुपुर्द करके तुम फ़ौरन् दक्षिणकी तरफ़ जाओ और शाहजहांका पीछा करो. खान्खानां अब्दुर्रहीमके बेटे दाराबखांने शाहज़ादे खुर्रम के साथ जानेमें चन्द उज्र लिख भेजे, इसलिये अब्दुल्लाखांने दाराबखांके बेटेको शाहजहांके बग़ैर इत्तिला मारडाला, और दाराबखांको महाबतखांने क़त्ल किया. फिर शाहज़ादे शाहजहांने दक्षिणमें पहुंचकर सूबे बुर्हानपुर पर क़ब्ज़ा किया.

विक्रमी १६८३ [हि० १०३५ = ई० १६२६] तक का हाल, जो शाहज़ादे शाहजहांपर गुज़रा, नहीं मिलता, कि वह सन् १०३४ हिज्रीके किस किस महीनेमें कहां कहां रहा था ? इससे पाया जाता है, कि शायद वह इन दिनोंमें

उदयपुर रहा, और महाराणा कर्णसिंहसे पगड़ी बदलकर भाईचारा किया, क्योंकि जहांगीरके खौफ़से उसको ठहरनेकी जगह न मिलती थी और उन दिनों पर्वेज़ वारिस तख़्तका ज़िन्दा था और खुर्रमको जहांगीरके बाद तख़्त लेनेकी आर्जू थी, इस लिये उसने ऐसे राजपूतोंके गिरोहके मालिक महाराजाको अपना मददगार बनाया, और वह बड़ा गुम्बज़, जो पेश्तरसे तय्यार होरहा था, महाराणा कर्णसिंहने उसके रहनेके लिये बहुत जल्द पूरा करवाया, लेकिन् यह इमारत शाहज़ादेकी सलाहसे शुरू और इस वक्त भी उसकी मरज़ीके मुवाफ़िक़ तय्यार हुई; यह कहाजासक्ता है, कि इसी नमूनेके मुवाफ़िक़ उसने मुम्ताज़गंजके रौज़ेका काम बनवाया; अलबत्ता यह इमारत बहुत छोटी है जिसमें पच्चीकारीके बेलबूटे भी मोटे और थोड़े हैं, लेकिन् तर्ज़में दोनों कुछ कुछ एकसे कहे जासक्ते हैं.

यहां आम आदमियोंकी ज़बानी इस तरह मश्हूर है, कि शाहज़ादा पहिले देलवाड़ेकी हवेलीके गुम्बज़ोंमें ठहरायागया था, लेकिन् सवारियों और नक्कारखानों वगैरा रियासती दस्तूरोंको उसने अपने सामने होना बे अदबी बयान किया, तब महाराणा कर्णसिंहने उसको जगमन्दिरोंके उसी गुम्बज़में मिहमान रक्खा. यह साबित होता है, कि कुछ अर्से बाद शाहज़ादा वापस दक्षिणको चलागया; मेरे क़ियाससे तो शाहज़ादेने, जब दुबारा दक्षिणको गया, याने वि० १६८१ [हिज्री १०३३ = ई० १६२४] के बाद, उदयपुरको अपना पोशीदा क़ियामगाह रक्खा होगा. और दक्षिण, गुजरात व सिन्ध वगैरा मुल्कोंमें यहांसे निकलकर जाना और उन्हीं मुल्कोंमें अपना रहना मश्हूर किया होगा. इससे पीछे जब गुजरातमें रहा उस समय भी उदयपुरमें रहना ख़याल किया जासक्ता है.

शाहजहांने वि० १६८३ [हिज्री १०३५ = ई० १६२६] में अपने दो शाहज़ादों दाराशिकोह व औरंगज़ेबको बादशाह जहांगीरके हुज़ूरमें भेजदिया. उन्हीं दिनोंमें बादशाह जहांगीर महाबतख़ांसे नाराज़ हुए, जो अपनी जान व इज़्ज़तके खौफ़से भागकर शाहज़ादे खुर्रमके पास चलागया. महाबतख़ां कुछ अर्से तक उदयपुर व देवलियाके पहाड़ोंमें रहा और उसने देवलियाके रावत जसवन्तसिंहको क़ीमती जवाहिरकी जड़ीहुई एक अंगूठी भी दी. इन्हीं तक्लीफ़ोंके वक्तकी मुहब्बतके सबबसे उसने हरिसिंहको शाहजहां बादशाहसे मन्सब दिलाकर देवलियाका ठिकाना उदयपुरकी मातहतीसे जुदा किया. इसी सालमें शाहज़ादे खुर्रमने सिन्धमें ठठ्ठेकी तरफ़ धावा किया और उसी मक़ामपर महाबतख़ां शाहज़ादेसे जा मिला; फिर वहांसे गुजरातकी तरफ़ गया. अब शाहज़ादेका हाल छोड़कर महाराणा कर्णसिंहका बाक़ी बयान लिखा जाता है.

इन्हीं दिनोंमें महाराणा कर्णसिंहने मेवाड़के मेरोंकी सरकशीसे उनपर ठाकुर जयसिंह डोडियाकी अफ्सरीमें फ़ौज भेजी; फ़ौजने मेरोंकी सरकशी तो मिटादी, लेकिन् ठाकुर जयसिंह लड़ाईमें मारा गया. इसके बाद महाराणा कर्णसिंहने बादशाही अह्दके ख़िलाफ़ क़िले चित्तौड़की मरम्मत करानी शुरू की.

इन महाराणाके वृत्तान्तमें लिखनेके लायक़ यही शाहज़ादे खुर्रमका यहां रहना था, जो मुफ़स्सल लिखागया.

इन्हीं दिनोंमें बादशाह जहांगीरका देहान्त हुआ, यह सुनकर शाहजहां (खुर्रम) दक्षिणसे गुजरात होता हुआ आगरेकी तरफ़ तरूत नशीनीके लिये जाते समय गोगूंदेमें ठहरा. महाराणाने मुलाक़ात करके अपने भाई अर्जुनसिंहको शाहजहांके साथ करदिया, और आप उदयपुर चले आये, जहां बीमारीने आघेरा और उसी बीमारीसे उनका इन्तिक़ाल होगया. इनका गेहुवां रंग, मभोला क़द, बड़े नेत्र और बड़ी पेशानी थी और दयावान, बहादुर, हँसमुख और सच्चाई व सफ़ाई पसन्द करनेवाले थे, परन्तु मुआमले व मुक़द्दमोंमें हर एक रीतिसे काम निकाललेनेको भी रवा रखते थे.

यह पहिले बहुत तक्लीफ़ पानेके कारण अपने राज्यके समयमें ऐसा ज़ियादा ख़र्च नहीं करते थे जैसा कि उनके बड़ोंने किया था. इन महाराणाका जन्म विक्रमी १६४० श्रावण शुक्ल १२ [हि० ९९१ तारीख़ ११ रजब = ई० १५८३ ता० १ ऑगस्ट] को और देहान्त विक्रमी १६८४ फाल्गुन् [हि० १०३७ रजब = ई० १६२८ मार्च] को हुआ.

अब इनका हाल ख़त्म करके बादशाह जहांगीरकी वफ़ात इन्हीं दिनोंमें होनेसे उसका मुरूतसर हाल यहां लिखाजाता है.
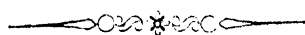
अबुल् मुज़फ्फ़र नूरुद्दीन मुहम्मद
जहांगीर बादशाह.

इस बादशाहका जन्म हिज्री ९७७ ता० १७ रबीउल् अव्वल् [वि० १६२६ आश्विन् कृष्ण ३ = ई० १५६९ ता० ३० ऑगस्ट] को फ़तहपुर सीकरीमें शैख़ सलीम चिश्तीके घरपर आंबेरके राजा भारमल्ल कछवाहेकी बेटीसे हुआ था, और हिज्री १०१४ ता० १३ जमादियुस्सानी [वि० १६६२ कार्तिक शुक्ल १४ = ई० १६०५ ता० २६ ऑक्टोबर] को तख़्त नशीनी समझी जाती है, क्योंकि इसी दिन बादशाह अक्बरका देहान्त हुआ था.

जब बादशाह अक्बरका देहान्त हुआ उस वक्त राजा मानसिंह कछवाहा और खानेआज़म मिर्ज़ा अज़ीज़ कूकेने शाहज़ादे खुस्रोको तख़्तपर बिठा दिया, जो जहांगीरका बड़ा बेटा और राजा मानसिंह कछवाहेका भानजा था, जहांगीर झगड़ेके डरसे अपनी हवेलीमें चुपचाप बैठारहा, सातवें रोज़ अर्थात् २० वीं जमादियुस्सानी [मार्गशीर्ष कृष्ण ६ = ता० २ नोवेम्बर] को शाहज़ादा खुस्रो तो अपने दादेकी क़ब्रपर हलवा बांटने गया और शैख़ फ़रीद बख़्शीने जहांगीरको क़िलेमें बुलाकर तख़्तपर बिठादिया-- हक़दार होनेके सबब सब लोगोंने तावेदारी कुबूल की. सलीमने तख़्तपर बैठकर अपना ख़िताब अबुल्मुज़फ्फ़र नूरुद्दीन जहांगीर रक्खा, और नीचे लिखेहुए १३ हुक्म जारी किये-

(१)-एक सोनेकी ज़ंजीर आगरे क़िलेके शाह बुर्जसे जमना किनारे एक छोटे पत्थरके मूंडे तक लगादी थी, इस ज़ंजीरमें एक घंटा लटकाया था, जो ज़ंजीर हिलानेसे बजता था-- हरएक फ़र्यादी जिसने किसी हाकिमसे जुल्म उठाया हो, इस ज़रीएसे इन्साफ़को पहुंच सक्ता था.

(२)-हर क़िस्मके मज़्हबी और मुल्की महसूल, जो सूबेदार और जागीरदारोंने जारी कर रक्खे थे, मौक़ूफ़ किये.

(३)-हुक्म था, कि ऊजड़ रास्तोंमें, जहां लूट मारका डर हो, एक सराय और कुआ व मस्जिद तय्यार कराई जावे-यह जगह ख़ालिसेमें हो तो सर्कारी अहल्कार, और अगर जागीरमें हो तो वहांका ज़मींदार इसका बन्दोबस्त करे, और किसी सौदागरका माल बग़ैर उसकी रज़ामन्दीके न खोला जावे.

(४)-मुल्कमें जो कोई ग़ैर मज़्हबी आदमी या मुसल्मान मरजावे, तो उसका माल

असबाब उसके वारिसोंको दियाजावे, अगर कोई वारिस न मिले तो उसके खर्चसे पुल, तालाब और कुए रअय्यतके फ़ायदेको बनवाये जावें.

(५)-शराब और दूसरी नशेदार चीज़ें कोई न बनावे और न बेचे; बादशाह कहता है कि- "अगरचि मैं इस ख़राबीमें पड़रहा हूं, लेकिन् दूसरोंके लिये इसका नुक्सान पसन्द नहीं करता."

(६)-किसी आदमीके घरपर दख़्ल न कियाजावे.

(७)-कोई आदमी किसी कुसूरवारके नाक, कान न काटे, बादशाही तरफ़से भी यह सज़ा किसीको न दी जावे.

(८)-हुक्म दियागया, कि ख़ालिसेके अहल्कार और कोई जागीरदार रअय्यत की ज़मीन न दबावें.

(९)-ख़ालिसेका हाकिम या किसी परगनेका जागीर दार बग़ैर बादशाही हुक्म के आपसमें रिश्तेदारी न करे.

(१०)-हर एक बड़े शहरमें शिफ़ाख़ाने तय्यार होकर दवाके वास्ते हकीम और वैद्य मुक़र्रर किये जावें, और इसका तमाम ख़र्च सर्कारसे दिया जावे.

(११)-अक्बरके तरीक़े पर हुक्म दिया, कि १८ वीं रबीउल्अव्वलको, जो बादशाहकी पैदाइशका दिन है, और हर अठवारेमें दो दिन और इतवार (रविवार) को, जिस दिन कि अक्बर पैदा हुआ था, तमाम मुल्कमें कोई जानवर न मारा जावे.

(१२)-अक्बरके वक्तकी जागीरें और मन्सब बहाल रक्खे गये, और किसी क़द्र तरक़्क़ी दी गई.

(१३)-जुलूसके दिन तमाम क़ैदी छोड़ दियेगये.

इस बादशाहने अपने नामका सिक्का जारी करके उसमें यह शिअ्र खुदवाया.

रूए ज़र्रो साख़्त नूरानी बरँगे मिहरो माह,
शाहे नूरुद्दीं जहांगीर इब्ने अक्बर बादशाह.

अर्थ- रुपयेकी सूरतको चांद और सूर्यकी तरह पर, अक्बर बादशाहके बेटे नूरुद्दीन जहांगीर शाहने रौशन किया.

शरीफ़ख़ांको वज़ीर आज़मका उहदा, अमीरुल्उमराका ख़िताब व पांच हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया, और राजा मानसिंह कछवाहेको भी बंगालेकी सूबेदारी पर बहाल रक्खा.

यद्यपि राजाने ख़ुस्रोको तख़्तपर बिठाकर बड़ा भारी फ़साद करना चाहा था, परन्तु जहांगीर शाहने इस बातपर कुछ भी ख़याल न किया.

बादशाहने इस समय बड़ा भारी लश्कर एकट्ठा देखकर अकबर बादशाहकी मन्शाके मुवाफ़िक़ महाराणा मेवाड़को अपना ताबेदार बनानेके लिये शाहज़ादे पर्वेज़को भेजा, जिसका पूरा हाल महाराणा अमरसिंहके ज़िक्रमें लिखागया है- (देखो पृष्ठ २२२).

इसके बाद यह हुक्म हुआ, कि पुराने नौकरोंको उनके वतनमें जागीरें दी जायें, जो हमेशा बहाल रहें, ऐसी जागीरके फ़र्मानोंपर शंगर्फ़ (हिंगलू) की मुहर लगाई जाती, जिसकी डिबिया सोने की थी.

इसी वर्षमें ग़यूरबेग काबुलीके बेटे ज़मानाबेगको डेढ़ हज़ारी मन्सब और महाबतख़ांका ख़िताब दिया- राजा नरसिंहदेव बुंदेलेको तीन हज़ारी और राजा मानसिंह कछवाहेके बेटे भावसिंहको डेढ़ हज़ारी मन्सब दिया.

आंबेरके राजा भगवानदासके छोटे बेटे अक्षयराज के तीन बेटों अभयराम, जयराम, और श्यामराम ने बादशाहके बिना हुक्म आगरेसे चुपके निकलकर महाराणा अमरसिंहके पास चलाजाना चाहा, यह ख़बर सुनकर बादशाहने इन तीनोंको शरीफ़ख़ां अमीरुल्उमराकी निगरानीमें नज़र क़ैद करदिया.

जब इनके हथियार, खुलवाने चाहे तो ये लोग मरने मारनेपर तय्यार हुए, और तलवार व जम्धरसे लड़कर तीनों मारेगये, और बादशाही मुलाज़िमोंमेंसे दिलावरख़ां कई अहदियों सहित इनके हाथसे क़त्ल हुआ. बादशाहने हिन्दुस्तान व काबुलका सायर (देश दान) बिल्कुल मुआफ़ करदिया.

इसी सन्में आठवीं ज़िल्हिज [वि० १६६३ चैत्र शुक्ल १० = ई० १६०६ ता० १८ मार्च] को शाहज़ादा खुस्रौ क़िलेसे भागकर पंजाबकी तरफ़ चला गया, उसके पीछे शैख़ फ़रीद बख़्शीको भेजकर दूसरे दिन आप भी सवार हुआ, पानीपतसे आगे अब्दुर्रहीम खुस्रौसे मिलकर उसका मुसाहिब बनगया, और शाहज़ादेने मलिक अनवर राय का ख़िताब दिया; पानीपतके मक़ामसे दिलावर-ख़ांने भागकर लाहौरका क़िला मज़्बूत किया. दो दिनके बाद खुस्रौ भी लाहौर पहुंचा और उसने क़ब्ज़ा करना चाहा, लेकिन् दिलावरख़ांने शहरमें नहीं घुसने दिया, और सईदख़ां भी कश्मीरसे दिलावरख़ांकी मददको आपहुंचा; पीछेसे बादशाहके आनेकी ख़बर मिली, यह सुनकर खुस्रौ लाहौर से बापके मुक़ाबलेको चला; बादशाही फ़ौजके आदमियोंसे सुल्तानपुरके पास मुक़ाबला करके उसको भागना पड़ा, चनाब नदीमें उतरनेके वक़्त वहांके बाशिन्दों और बादशाही

नौकरोंने शाहज़ादेको हिजी १०१४ ता० २९ ज़िल्हिज [वि० १६६३ वैशाख शु० १ = ई० १६०६ ता० ८ एप्रिल] को गिरिफ़्तार करलिया.

हिजी १०१५ ता० ३ मुहर्रम [वि० वैशाख शु० ५ = ई० ता० १२ एप्रिल] को लाहौरमें खुस्रौको मए अब्दुर्रहीम (१) मुसाहिब व हुसैनबेगके हाज़िर किया, बादशाहने खुस्रौको कैदमें रखकर अब्दुर्रहीमको गधेके और हुसैनबेगको गायके चमड़ेमें सिलाया और गधोंपर लटकवाकर शहरमें फिरवाया; हुसैनबेग तो उसी हालतमें मरगया, और अब्दुर्रहीम जीतारहा, बादशाहने उसका अब्दुर्रहीम खर नाम रक्खा. बाक़ी जो शाहज़ादेको गिरिफ़्तार करनेवाले थे उनको जागीर और ज़मीन दी, और खुस्रौके साथी जो गिरिफ़्तार हुए थे सड़कके दोनों तरफ़ सूलीपर चढ़ादिये गये. इन्हीं दिनोंमें खुस्रौका उपद्रव सुनकर ईरानके क़ज़लबाश लोगोंने कन्धारपर हमला किया, लेकिन् शाहबेगखांकी दिलेरीसे वे क़िला न लेसके; उसकी मददके लिये लाहौरसे मिर्ज़ा गाज़ीको मए फ़ौजके भेजा, इसके बाद अर्जुन नाम हिन्दू फ़क़ीरको पकड़वाकर क़त्ल करवादिया, जो खुस्रौका करामाती मददगार बनगया था. यह आदमी नानकके पन्थ में (सिक्खोंका गुरु) था.

शाहज़ादा पर्वेज़ जो मेवाड़की मुहिमसे आगरे आया था, लाहौरमें हाज़िर हुआ, बादशाहने उसको छत्र छांगी और दस हज़ारी मन्सब दिया. जहांगीरकी मा, जो राजा भारमल्लकी बेटी थी, लाहौरमें आई, बादशाहने पेश्वाई वगैरह बहुत कुछ ताज़ीम की, इसके बाद राजा मानसिंह कछवाहेसे बंगाले और उड़ीसेकी सूबेदारी उतारकर कुतुबुद्दीन कूकेको दी.

अज़ीज़ कूकेका खत, जो खुस्रौका ससुर और उसका मददगार था, पकड़ा-गया, जो उसने अक्बर बादशाहके समयमें फ़ारूक़ी राजे अलीखांको बादशाहकी बुराईमें लिखा था. जहांगीरशाहने उसके हाथमें देकर पढ़वाया, और शर्मिन्दा न होनेपर बहुतसी लानत मलामत करके उसका मन्सब और जागीर ज़ब्त करली.

इन्हीं दिनोंमें बीकानेरके राजा रायसिंह और उनके बेटे दलपत पर नाराज़ होकर ज़ाहिदखां और अबुल्फ़ज़्लके बेटे अब्दुर्रहमान व राणा सगर उदयसिं-होत व मुइज़्ज़ुलमुल्क वगैरह को भेजा, नागोरके पास मुक़ाबला होनेपर रायसिंह भागगया.

बादशाहने काबुलकी तरफ़ कूच किया, और शहर गुजरातमें मक़ाम हुआ, जिसको बादशाह अक्बरने गूजरोंके बसाये जानेसे गुजरात नाम दिया था.

---

(१) यह लाहौरके सूबेमें दीवान था.

वहांसे कश्मीरकी सैर करताहुआ हिज्री १०१६ ता० १ मुहर्रम [वि० १६६४ वैशाख शुक्ल ३ = ई० १६०७ ता० २९ एप्रिल] को क़िले रुहतासमें पहुंचा, और वहांसे रावलपिंडी, अटक, पेशावर, होता हुआ हिज्री तारीख़ १४ सफ़र [वि० ज्येष्ठ शुक्ल १५ = ई० ता० १० जून] को काबुलमें दाख़िल हुआ; इसी सफ़रमें विज़ारतका उहदा अमीरुल् उमरा शरीफ़ख़ांसे बुढ़ापेके सबब लेकर आसिफ़ख़ां को दिया.

हिज्री तारीख़ १२ रबीउल्अव्वल् [वि० आषाढ़ शुक्ल १३ = ई० ता० ७ जुलाई] में शाहज़ादे खुस्रोको क़ैदसे छोड़ा, इन्हीं दिनोंमें राजा मानसिंह के पोते महासिंह और रामदास कछवाहेको बंगशके फ़सादियों पर फ़ौज देकर विदा किया और इसी महीनेमें राणा सगरको ढाई हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया.

फिर शेर अफ़्गन और कुतुबुद्दीन कूकाके मारेजानेकी ख़बर बंगालेसे पहुंची, जिसका हाल पृष्ठ २७४ में लिखागया है. नूर जहां इसी शेर अफ़्गनकी बीबी थी-(पृष्ठ २७३).

हिज्री तारीख़ ४ जमादियुल्अव्वल् [वि० भाद्रपद शु० ६ = ई० ता० २८ ऑगस्ट] में बादशाह जहांगीर काबुलसे हिन्दुस्तानकी तरफ़ रवाना हुए. इन्हीं दिनोंमें मिर्ज़ा शाहरुख़ मालवेके सूबेदारके मरनेकी ख़बर आई.

रास्तेमें फिर शाहज़ादे खुस्रोने जहांगीरको मारडालनेका इरादा किया, यह बात खुस्रोके मिलावटी लोगोंमेंसे एकने खुर्रमके दीवान ख़्वाजह वैसी से कही, जिस ने खुर्रमके कान तक पहुंचाई और उसने बादशाहको इत्तिला दी. बादशाह जहांगीरने उसी समय हकीम फ़तहुल्लाको क़ैद किया, जो फ़सादी लोगोंमें मुख्य था, और नूरुद्दीन व एतिमादुद्दौलाके बेटे शरीफ़ वगैरहको क़त्ल करवादिया.

इसी सफ़रमें यह ख़बर मिली कि मिर्ज़ा शाहरुख़का बेटा बदीउज़्ज़मां महाराणा अमरसिंहसे मिलकर कुछ फ़साद उठाना चाहता था, लेकिन् अब्दुल्लाख़ांने गिरिफ़्तार करलिया. पंजाबमें अमीरुल्उमरा शरीफ़ख़ांकी मारिफ़त बीकानेरका राजा रायसिंह राठौड़ बादशाहके पास हाज़िर होगया, जहांगीरने उसका कुसूर मुआफ़ करके मन्सब व जागीर पहिलेके मुवाफ़िक़ बहाल रक्खी.

इसी हिज्री सालके शअबान [वि० मार्गशीर्ष = ई० डिसेम्बर] में रामपुरेके राव दुर्गभान चन्द्रावतके मरनेकी ख़बर मालूम हुई, और हिज्री ता० ८ ज़ीक़ाद [वि० फाल्गुन शु० १० = ई० १६०८ ता० २५ फ़ेब्रुअरी] को बादशाह दिल्ली पहुंचे. हिज्री ज़िल्हिज [वि० १६६५ चैत्र शुक्ल = ई० १६०८ मार्च] में बूंदीके राव रत्न हाड़ाको सरबलन्द रायका ख़िताब दिया. इन्हीं दिनोंमें जोधपुरका महाराजा सूरसिंह राठौड़ हाज़िर हुआ, और महाराज जगमालके

बेटे और महाराणा उदयसिंहके पोते श्यामसिंहको साथ लाया. बादशाह लिखता है, कि श्यामसिंह हाथीपर अच्छा सवार होता है.

हिज्री १०१७ ता० ४ रबीउल्अव्वल् [वि० १६६५ आषाढ़ शुक्ल ६ = ई० १६०८ ता० २० जून] को आंबेरके राजा मानसिंहकी पोती और जगतसिंहकी बेटीकी शादी बादशाहके साथ हुई (१). इन्हीं दिनोंमें महाबतखांको फ़ौजके साथ मेवाड़में भेजा, जिसका ज़िक्र महाराणा अमरसिंहके हालमें लिखागया है.

इसी संवत् और सन्में बीकानेरका राजा रायसिंह मरगया, और उसके बेटे दलपतको बीकानेरका राजा बनाया, इसी वर्ष बादशाहने हुक्म जारी किया, कि कोई मेरे मुल्कमें बच्चे या आदमीको जान बूझकर ख़ोजा (हिजड़ा) बनावेगा तो उसे जन्म क़ैद या क़त्लकी सज़ा दीजावेगी, और कोई गुलाम बेचने और ख़रीदने न पावे.

इसी वर्षमें अक्बरका मक़्बरा सिकन्दरेमें तय्यार हुआ, जिसपर १५ लाख रुपये ख़र्च पड़े. इन्हीं दिनोंमें ख़ान्ख़ानांको दक्षिणकी मुहिम् पर भेजा और उसके साथ जोधपुरके राजा सूरजसिंह (सूरसिंह) को तीन हज़ारी ज़ात और दो हज़ार सवार का मन्सब दिया.

इसके बाद हिज्री ता० ४ ज़िल्हिज्ज [वि० १६६५ के फाल्गुन् शु० ६ = ई० १६०९ ता० १२ मार्च] को शाहज़ादे ख़ुस्रौके ख़ाने आज़मकी बेटीसे एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम बलन्द अख़्तर रक्खागया.

हिज्री १०१८ मुहर्रम [वि० १६६६ चैत्र शुक्ल = ई० १६०९ एप्रिल] में महाबतखांको मेवाड़की लड़ाईसे बुलाया और उसके एवज़ अब्दुल्लाखांको फ़ीरोज़ जंगका ख़िताब देकर भेजदिया, जिसका हाल महाराणा अमरसिंहके बयानमें लिखागया है.

राजा मानसिंह कछवाहेको दक्षिणमें भेजा और जगन्नाथके बेटे रामचन्दको भी दो हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब देकर पर्वेज़ के साथ दक्षिणकी तरफ़ रवाना किया.

---

(१) मआसिरुल् उमरा वाला, बूंदीके राव भोज हाड़ाके बयानमें इस शादीकी बाबत लिखता है-कि बादशाह जहांगीरने इरादा किया, कि राजा मानसिंहके बड़े बेटे जगतसिंहकी बेटी बादशाही महलमें दाख़िल कीजावे, राव भोज जो इस लड़कीका नाना था इस बातसे राज़ी न हुआ, इस सबबसे बादशाहने चाहा था कि रावको पूरी सज़ा दी जावे, लेकिन् वह बादशाहके काबुलसे वापस आनेके पहिले हिज्री १०१६ [वि० १६६४ = ई० १६०७] में मरगया.

हिज्री ता० २८ मुहर्रम [वि० ज्येष्ठ कृ० १४ = ई० ता० १५ मई] को भारमल्लके बेटे जगन्नाथ कछवाहेको पांच हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दियागया. इन्हीं दिनोंमें भांग वगैरह नशीली चीज़ोंके न बेचनेकी सख्त ताकीद हुई, और जुआ खेलना बिल्कुल् बन्द कराया. हिज्री ता० २५ रमज़ान [वि० पौष कृ० ११ = ई० १६०९ ता० ३ जैन्यूअरी] को रामचंद्र बुंदेलेकी लड़कीके साथ बादशाह की शादी हुई. इसी वर्षकी ता० १४ ज़िलहिज् [वि० फाल्गुन् शुक्ल १५ = ई० ता० २० मार्च] को अब्दुर्रहीमका कुसूर मुआफ़ करके शिकार खानेका दारोग़ा बनाया.

हिज्री १०१८ ता० ४ सफ़र [वि० १६६६ वैशाख शु० ६ = ई० १६०९ ता० १० मई] को जाली खुस्रौ पकड़ा गया; यह कोई बदमआश था, जो कहता था, कि मैं शाहज़ादा खुस्रौ हूं, और क़ैदसे भाग आया हूं; बहुतसे बदमआशोंने उसके साथ होकर पटनेका क़िला दबा लिया, और पुन्पुना नदीपर अफ्ज़लखांसे मुक़ाबला किया— फिर लड़ाईसे भागकर पटनेमें जा घुसा, अफ्ज़लखांने पकड़कर मरवाडाला.

इसी सालके रमज़ान [वि० मार्गशीर्ष = ई० डिसेम्बर] में आगरेके जंगलोंमें बादशाह शिकारको गया था, शेरने बादशाहपर हमला किया, उस समय राजा अनूपसिंह बड्गूजर शेरसे लिपटगया, शेरने उसका हाथ चाबा और उसने खंजर और तलवारसे शेरको घायल किया, बादशाह भी इस धक्कम् धक्केमें ज़मीनपर गिर पड़ा, दूसरे लोगों ने शेरपर वार किये और अनूपसिंहको छुड़ा लिया, पीछेसे उसने फिर तलवार मारी, शेर पीछे उसपर चला, तब उसने तलवारसे उसका सिर ज़ख्मी किया, और शेर मरगया; बादशाहने अनूपसिंहको बहादुरीके एवज़ सिंहदलन अनीरायका खिताब दिया.

हिज्री १०२० ता० २४ मुहर्रम [वि० १६६८ वैशाख कृष्ण १० = ई० १६११ ता० ९ एप्रिल] को ईरानके शाह अब्बासका एल्ची आया, जिसको खिलअत और ३०००० तीसहज़ार रुपया खर्चके लिये दिया. इसी वर्ष बादशाहने नूर जहांके साथ निकाह किया, और काबुलमें पठानोंने फ़साद उठाया, जिसको बादशाही सर्दारोंने दूर किया.

ग्यासबेग एतिमादुद्दौलाको विज़ारत दी गई, और अब्दुल्लाखां फ़ीरोज़-जंगको मेवाड़से गुजरातकी सूबेदारीपर भेजा, उसकी जगह राजा बासू मुक़र्रर हुआ. इसी वर्षमें रामदास कछवाहेको राजाका खिताब और क़िला रणथम्भोर देकर दक्षिणकी लड़ाईपर भेजा. इन्हीं दिनोंमें मिर्ज़ा शाहरुखके बेटे बदीउज़्ज़मांको

मेवाड़ पर भेजा. फिर इसी वर्षके ज़ीक़ाद [वि० पौष = ई० १६१२ के जैन्यूएरी] में नीचे लिखे हुए हुक्म जारी किये-

(१)-कोई झरोखेमें न बैठे. (२)-अपने मददगार अमीर लोगोंसे पहरा चौकी न ले. (३)-हाथी न लड़ावे. (४)-किसी क़ुसूरपर अन्धा न करें, और नाक, कान न काटें. (५)-ज़बर्दस्ती किसीको मुसल्मान न बनावें. (६)-अपने नौकरोंको कोई ख़िताब न दें. (७)-बादशाही नौकरोंसे ताज़ीम न लें. (८)-दर्बारके क़ाइदेपर गवय्ये लोगोंसे कोई वारी बांधकर न गवावें. (९)-सवारीके वक्त नक़ारा न बजावें. (१०)-हाथी घोड़ा जब अपने नौकरों या बादशाही आदमियों को दें, तो उनके कन्धेपर अंकुश रखाकर सलाम न करावें. (११)-अपनी सवारीमें बादशाही नौकरोंको पैदल न चलावें. (१२)-अगर बादशाही आदमियोंको कुछ लिखें तो मुहर काग़ज़की पेशानी पर न लगावें. ये क़ाइदे तमाम मुल्कमें जारी किये गये.

इसके सिवाय ख़फ़ीख़ां मुन्तख़बुल्लुबाबमें इतना और ज़ियादा लिखता है-कि घोड़ोंके वास्ते कोई सुर्ख़ कपड़ेकी झूल न बनावे, और उसपर बेल बूटे भी न खेंचे. इन्हीं दिनों बंगालेमें उस्मानख़ां पठानने उपद्रव उठाया, जिसको इस्लामख़ां और सुब्हानख़ां वग़ैरह बादशाही सर्दारोंने फ़त्हमन्दीके साथ मिटा दिया.

हिज्री १०२१ [वि० १६६९ = ई० १६१२] में अब्दुल्लाख़ां फ़ीरोज़-जंगने मए राजा रामदास कछवाहे के दक्षिणी फ़ौजपर हम्ला किया, लेकिन् शिकस्त खाकर भागना पड़ा. इस वर्षमें महाराजा रायसिंह बीकानेरवालेका देहान्त हुआ, जहांगीर शाह अपने तुज़कमें लिखते हैं, कि-

"दलीप (राव दलपत) दक्षिणसे हाज़िर हुआ, उसका बाप राव रायसिंह गुज़र गया था, इस लिये मैंने उसको ख़िल्अ़त पहिनाकर रावका ख़िताब दिया. रायसिंह अपने दूसरे बेटे सूरजसिंहको राज देना चाहता था, क्योंकि उसकी मा से वह ज़ियादा मुहब्बत रखता था. जिस वक्त रायसिंहके मरनेका ज़िक्र होरहा था, सूरजसिंह कम अक़्ली और कम उम्रीसे अर्ज़ करने लगा, कि बापने मुझको टीका दिया है, तब मैंने कहा, कि हम दलीपको इज़्ज़तके साथ टीका देते हैं. मैंने अपने हाथसे उसके टीका लगाकर वतनकी जागीर इनायत की."

इसी वर्षके ज़ीक़ाद [वि० पौष = ई० १६१३ जैन्यूएरी] में बादशाहकी सौतेली मा सलीमा सुल्तान जो उसे मासेभी ज़ियादा प्यारी थी, मरगई, इसका बड़ा रंज हुआ. इन्हीं दिनोंमें ख़ाने आज़मको मेवाड़पर जानेकी इजाज़त मिली.

हिज्री १०२२ ता० २ शश्रबान [वि० १६७० आश्विन शु० ४ = ई० १६१३ ता० १८ सेप्टेम्बर] को बादशाहने अजमेर आकर ख्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारत और उदयपुरपर चढ़ाई की, जिसका ज़िक्र महाराणा अमर-सिंह के हालमें लिखागया (देखो पृष्ठ २२९).

हिज्री ता० ५ शव्वाल [वि० मार्गशीर्ष शु० ७ = ई० तारीख़ २० नोवेम्बर] को बादशाह अजमेर में दाख़िल हुआ, इसके दो दिन बाद शिकार के लिये पुश्कर गया, और वहां जो रावत् (राणा) सगरका बनवाया हुआ श्री बाराह भगवानका मन्दिर था उसकी मूर्तिको नापसन्द होनेके कारण तालाब में डलवादिया. फिर आप तो अजमेरमें रहा, और शाहज़ादे खुर्रमको महाराणा अमरसिंह पर बड़ी फ़ौजके साथ भेजा-

हिज्री १०२३ [वि० १६७१ = ई० १६१४] में बीकानेरके राव दलपतने उपद्रव किया, इससे उसके छोटे भाई सूरसिंहको बीकानेरका राव बनाया, और दलपत गिरिफ्तार होकर मारागया, जिसका बयान बीकानेरके हालमें लिखाजायगा; शाहज़ादे खुस्रौको सलाम करजानेका हुक्म मिलगया, लेकिन् थोड़े ही दिनोंके बाद उसका आना फिर बन्द हुआ. इसी वर्षमें राजा मानसिंह कछवाहे का दक्षिणमें देहान्त हुआ. बादशाह जहांगीर लिखता है, कि-

"मैंने अक्सर बादशाही नौकरोंको दक्षिणकी मुहिम्पर भेजा था, इनमेंसे राजा मानसिंह भी था; वह उस तरफ़ मरगया, तो मैंने उसके होश्यार बेटे भावसिंहको हुजूरमें बुलाया, वह शाहज़ादगीके दिनोंसे मेरी ख़िदमत् बहुत करता था. आंबेरकी रियासत हिन्दुओंके क़ाइदोंके मुवाफ़िक़ महासिंहको पहुंचती थी, जो जगतसिंहका बेटा और मानसिंहका पोता है. मैंने इसको पसन्द न किया, भावसिंहको मिर्ज़ा राजाका ख़िताब, चार हज़ारी मन्सब और आंबेरकी जागीर इनायत की. महासिंहके खुश रखनेको उसके मन्सबमें तरक़्क़ी करके गढ़का इलाक़ा इनआममें दिया".

इसी वर्षमें आनासागरकी पालको दुरुस्त करवाकर उसपर सफ़ेद पत्थरके बहुत उम्दा मकान बाग़ समेत बनवाये. इसी वर्षमें शाहज़ादे खुर्रमकी मारिफ़त महाराणा उदयपुरसे सुलह हुई. हिज्री १०२४ [वि० १६७२ = ई० १६१५] में शाहज़ादे खुर्रमके हमीदाबानू (मुम्ताज़महल) से दाराशिकोह पैदा हुआ. इसके बाद जोधपुरके राजा सूरजसिंहको पांच हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया. मोटे राजा उदयसिंहके बेटे सूरसिंहका मुसाहिब गोइन्ददास भाटी और मोटे राजाका दूसरा बेटा किशनसिंह अजमेरमें लड़मरे, जिसका पूरा हाल कृष्णगढ़ की तवारीख़में लिखाजायगा. आंबेरके राजा मानसिंह कछवाहेके बड़े बेटे जगत्-

सिंहके बेटे महासिंहको राजाका ख़िताब दिया. राजा रायसिंह कछवाहा दक्षिणमें मरगया, और उसके बेटे रामदासको एक हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया. हिज्री १०२५ [वि० १६७३ = ई० १६१६] में दक्षिणियोंसे शाही फ़ौजकी लड़ाई हुई. बिहार और पटनेकी तरफ़को खेड़ाके रईस दुर्जनसालको, जिसके इलाक़ेमें हीरेकी खान थी, गिरिफ्तार करलिया, और उसके इलाक़ेपर बादशाही क़ब्ज़ा हुआ; इस लड़ाईमें इब्राहीमख़ांको फ़त्हजंगका ख़िताब मिला.

इसी वर्षमें हमीदाबानू (मुमताज़महल) से शाहज़ादा शुजाअ़ पैदा हुआ, और नूरमहलको नूरजहांका ख़िताब और उसके बाप एतिमादुद्दौलाको सात हज़ारी ज़ात और पांच हज़ार सवारका मन्सब दिया. अ़ब्दुल्लाख़ां फ़ीरोज़ जंग गुजरातके सूबेदारने वाक़िअ़ानवीसको अपनी बुरी ख़बरें लिखनेके सबब धमकाया; यह ख़बर सुनकर बादशाहने हुक्म दिया, कि दियानतख़ां जाकर उसे अहमदाबादसे पैदल निकाले और रास्तेमें घोड़ेपर लावे और सूबेदारी उतार-ली जावे. बेचारे अ़ब्दुल्लाख़ांने अहमदाबादके एवज़ आधेसे ज़ियादा रास्ता पैदल तै किया, दियानतख़ांने मुश्किलसे सवार कराया; कुछ अ़र्से तक ड्योढ़ी मुआ़फ़ रही, फिर शाहज़ादे ख़ुर्रमकी सिफ़ारिशसे सलाम हुआ. राव मनोहर कछवाहा शैखा-वत दक्षिणमें मरगया, जो वहां बादशाही नौकरीपर गया हुआ था. इन्हीं दिनोंमें महाराणा अमरसिंहके बेटे कुंवर कर्णसिंहको रुख़्सतके समय ख़िलअ़त, घोड़ा, हाथी और शस्त्र देकर विदा किया; लाहोरके सूबेदार मुर्तज़ाख़ांके मरनेकी ख़बर मिली. इस के बाद एक तरहकी ऐसी मरी फैली कि जिससे हज़ारहा आदमी मरने लगे. बांधूगढ़का राजा बिक्रमादित्य शाहज़ादे ख़ुर्रमकी मारिफ़त हाज़िर हुआ, और ग़ैर हाज़िरीका क़ुसूर मुआ़फ़ किया.

जैसलमेरके बारेमें बादशाह जहांगीर लिखता है-कि "कल्यान जैसलमेरी, जिसके बुलानेको राजा कृष्णदास गया था, हाज़िर हुआ, और उसने १०० अशर्फ़ी, एक हज़ार रुपया नज़ किया. उसका बड़ा भाई भीम जागीरदार था, जब वह गुज़र गया, तो उसने दो महीनेका बच्चा छोड़ा, वह भी ज़ियादा न जिया. शाहज़ादगीके दिनोंमें उसकी बेटीको मैंने ब्याहा था, और मलिकए जहां ख़िताब दिया था. ये लोग मुद्दतसे हमारे ख़ैर ख़्वाह रहे हैं, और इनसे रिश्तेदारी भी होगई थी, इसलिये मैंने रावल भीमके भाई कल्याणको बुलाकर राजका टीका और रावलका ख़िताब दिया."

हिज्री जमादियुल्अव्वल [वि० ज्येष्ठ = ई० मई] में शाहज़ादे ख़ुर्रमकी

एक बेटी मरगई, जिसका बादशाहको बड़ा रंज हुआ. बादशाहने आपही दक्षिणमें जाना बिचारा और शाहज़ादे पर्वेज़को दक्षिणसे इलाहाबाद जानेका हुक्म दिया, और शाहज़ादे खुर्रमको शाह खुर्रमका खिताब दिया. इसी सालकी ता० १ ज़ीकाद [वि० १६७३ कार्तिक = ई० १६१६ नोवेम्बर] को अजमेरसे बग्गी (१) में सवार होकर बादशाह दक्षिणको रवाना हुआ, देवराई ग्राममें पहिला मक़ाम किया, और वहांसे चलकर रामसरमें आठ दिन तक ठहरा रहा; इस मक़ामसे महाराणा अमरसिंहके पोते जगत्सिंह को घोड़ा और खिलअ़त देकर उदयपुरकी रुख़सत दी, और उसके साथ केशवदास भालाको भी घोड़ा इनायत किया. राजा महासिंह कछवाहेका बेटा मक़ाम रणथम्भोर में हाज़िर हुआ, शामके वक्त बादशाहने वहांके क़ैदियों को छोड़दिया.

इन्हीं दिनों ता० २५ ज़ीकाद [वि० मार्गशीर्ष कृ० ३० = ई० ता० ९ डिसेम्बर] को उदयपुरमें महाराणा अमरसिंहके बनवायेहुए बड़ीपोल दर्वाज़े (जो राज-महलका सदर दर्वाज़ा है) की छतके नीचे पत्थरमें क़ाज़ी मुल्ला जमालने कुछ अ़रबी आयत व एक शिअ़्र वग़ैरह लिखा, और एक तरफ़ पंडित लोगोंने तीन पंक्ति नागरीमें लिखीं. ये अक्षर खुदवाकर उनके भीतर सुर्ख़ी भरवादीगई थी- (देखो शेषसंग्रह नम्बर २).

हिज्री १०२६ [वि० १६७४ = ई० १६१७] में बादशाह उज्जैन पहुंचे, वहां जालौरके जागीरदार ग़ज़नीख़ांके बेटे पहाड़ख़ांको उसकी माके मारडालने के क़ुसूरपर क़त्ल करवाया, और यहींपर जगरूप नामके एक सन्यासीके दर्शनको गया, जिसके फ़क़ीरी ढंग और वेदान्तकी बातोंसे बहुत खुश हुआ. चार महीने और दो दिनमें अजमेरसे चलकर क़िले मांडूपर पहुंचे, जहां क़िलेकी मरम्मत करवानेमें तीन लाख रुपये खर्च किये, इस क़िलेमेंसे नसीरुद्दीन ख़िल्जी की क़ब्रको खुदवाकर नर्मदामें फिकवादिया, इस ख़यालसे कि उसने अपने बाप ग़यासुद्दीनको ज़हर देकर मारडाला था. शाहज़ादे खुर्रमने बुर्हानपुर पहुंचकर आदिलशाह बीजापुरीपर दबाव डाला, उसने बरारका इलाक़ा छोड़कर सालयाना ख़िराज देना क़ुबूल किया. इन्हीं दिनोंमें बादशाहने तम्बाकूका पीना बन्द करदिया, जो उसी समयमें यूरोपियन लोग अमेरिकासे लाये थे. मिर्ज़ा राजा भावसिंह कछवाहेको पांच हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया, और सूबे गुजरातकी दीवानी केशवदाससे उतारकर मिर्ज़ा हुसैनको दी. इन्हीं दिनोंमें राजा मानसिंह

---

(१) यह सवारी पहले पहल अंग्रेज़ी एल्ची सर टॉमस रो ने इसी मक़ामपर बादशाहको नज़ की थी, जिसको बादशाहने तुज़क जहांगीरीमें फ़रंगी रथ लिखा है.

कछवाहेका पोता महासिंह बरारके इलाक़ेमें ज़ियादा शराब पीनेके सबब ३२ वर्षकी उम्रमें मरगया. तुज़ुक जहांगीरीमें लिखा है, कि-"इसका बाप भी इसी बत्तीस वर्षकी उम्रमें ज़ियादा शराब पीनेके कारण मरा था". इसी मौक़ेपर महाराणा अमरसिंहने बादशाहके लिये दो घोड़े, गुजराती थान और आचार, मुरब्बा भेजा, और बादशाहने आदिलख़ां बीजापुरीकी तरफ़का आया हुआ मस्त हाथी गजराज, महाराणाके लिये भेजा. वांसवाड़ेका रावल समरसी बादशाहके पास हाज़िर हुआ, जिसने तीस हज़ार रुपया और तीन हाथी वगै़रा नज़्र किये; इसके बाद अहमदनगर फ़त्ह करनेकी ख़बर शाहज़ादे ख़ुर्रमने बादशाहको भेजी, और इसी वर्षमें बादशाहने ख़ास लिबासके लिये भी हुक्म जारी किया, कि दूसरे लोग इस तरहके कपड़े न पहिनने पावें- लिबास नादिरी, तूसी, ज़रीका पटका वगै़रह.

हिज्री ता० २८ शअ्बान [वि० भाद्रपद कृ० १४ = ई० ता० ३० ऑगस्ट] को आंबेरके राजा मानसिंहके पड़पोते और महासिंहके बेटे जयसिंहको बादशाहने अपने पास बुलाकर एक हज़ारी ज़ात और पांच सौ सवारका मन्सब दिया, और आदिल्शाह बीजापुरीके नाम शाहज़ादोंके मुवाफ़िक़ फ़र्मान लिखा गया. इन्हीं दिनोंमें शाहज़ादे ख़ुर्रमके एक बेटी पैदा हुई, जिसका नाम रौशनआरा रक्खा गया. चन्द्रकोटेके रईस हरिभानको दो हज़ारी ज़ात और डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब दिया, और विक्रमादित्य भदौरियेका लड़का भोज दक्षिणसे बादशाहके पास हाज़िर हुआ.

हिज्री ता० ११ शव्वाल [वि० आश्विन शुक्ल १३ = ई० ता० १३ ऑक्टोबर] को शाहज़ादा ख़ुर्रम दक्षिणसे मांडूमें बादशाहके पास हाज़िर हुआ, और नीचे लिखे हुए शाहज़ादेके साथी सर्दारोंकी नज़्रें हुईं.

ख़ाने जहां लोदी, अब्दुल्लाख़ां फ़ीरोज़जंग, महाबतख़ां, मिर्ज़ा राजा भावसिंह कछवाहा, दाराबख़ां, सर्दारख़ां, शुजाअ़तख़ां अरब, दियानतख़ां, मोतमदख़ां बख़्शी, ऊदाराम मरहठा, बीजापुरी आदिलख़ांके वकील वगै़रह.

इस फ़त्हके इनआममें बादशाहने शाहज़ादेको तीस हज़ारी ज़ात और बीस हज़ार सवारका मन्सब और तख़्तके सामने कुर्सीकी बैठक व शाहजहांका ख़िताब दिया, और शाहज़ादेने भी बहुतसी चीज़ें नज़्रमें पेश कीं, जिनमेंसे बीस लाख रुपयेकी क़ीमती चीज़ें बादशाहने रखकर बाक़ी फेर दीं. बादशाह मांडूसे अहमदाबादकी तरफ़ रवाना हुआ, और कई दिन पीछे परगने हलवदपर, जो केशवदासकी जागीरमें था, मक़ाम हुआ.

हिज्री १०२७ [वि० १६७५ = ई० १६१८] में बादशाह खम्भात पहुंचे, जहां

किश्तियोंमें बैठकर दर्याकी सैर की—यह व्यापारका बड़ा बन्दर था. बादशाहने कुल सायर (दाण) का महसूल मुआ़फ़ करदिया. बादशाह अहमदाबादमें आया, और गुजरातका देश शाहज़ादे ख़ुर्रमको जागीरमें देदिया. ईडरके राव कल्याणने हाज़िर होकर एक हाथी और नौ घोड़े नज़ किये. बादशाहको अहमदाबादका शहर बिल्कुल ना पसन्द आया, और इसी जगह यह हुक्म जारी किया, कि जती लोगोंको बादशाही इलाक़ोंसे निकाल दियाजावे, जो कि जैनी महाजनोंके गुरू हैं.

शाहबाज़ख़ां लोदी व विक्रमादित्य राजाको कांगड़ेका फ़साद मिटानेके लिये भेजदिया, जो नूरपुरके राजाने किया था, और वहांसे आगरेकी तरफ़ कूच किया, मही नदी पर राजा जाम जस्सा (जेहा) हाज़िर हुआ, और उसने ५० घोड़े नज़ किये, कूचबिहारका राजा लक्ष्मीनारायण भी इसी जगह आया. फिर सीसोदिया रावत् सगर उदयसिंहोत सूबे बिहारमें मरगया. यह ख़बर सुनकर बादशाहने उसके बेटे रावत मानसिंहको दो हज़ारी ज़ात और छःसौ सवारका मन्सब दिया. भुजका राव भारा जाड़ेचा भी हाज़िर हुआ, जो उस समय नव्वे वर्षकी उम्र का था. इसी सफ़रमें बादशाहने यह हुक्म जारी किया, कि कोई मुजिम बग़ैर तीन हुक्मके क़त्ल न कियाजाय.

हिज्री ता० १ शव्वाल [वि० आश्विन शु० ३ = ई० ता० २३ सेप्टेम्बर] को राजा भारा जाड़ेचाको जड़ाऊ तलवार, घोड़ा, और ख़िलअ़त देकर वतन की रुख़्सत दी. ता० १५ ज़ीक़ाद [वि० मार्गशीर्ष कृ० १ = ई० ता० ४ नोवेम्बर] को शाहज़ादे ख़ुर्रमके बेगम मुम्ताज़महल से शाहज़ादा औरंगज़ेब पैदा हुआ. बादशाह उज्जैनकी तरफ़ आया, जहां महाराणा अमरसिंह के बेटे कुंवर कर्णसिंह गये.

हिज्री १०२८ [वि० १६७५ = ई० १६१८] में बादशाह रणथम्भोर होतेहुए अख़ीर मुहर्रम [वि० माघ कृष्ण पक्ष = ई० डिसेम्बर] को आगरे पहुंचे. यह मेवाड़, मालवा और गुजरातका सफ़र पांच वर्ष और चार महीनेमें तै हुआ. इन दिनोंमें कांगड़े और मऊका क़िला फ़तह हुआ, और राजा सूरजमल्ल वहांसे भागगया; उसके छोटेभाई जगत्सिंहको वहांका राजा बनाया. राजा कृष्णसिंहके छोटे बेटे जगमाल और भारमल्लको पांच सौ ज़ात और सवादो सौ सवारका मन्सब दिया. शाहनवाज़ख़ांके मरनेपर उसके भाई दाराबख़ांको पांच हज़ारी ज़ात व सवार का मन्सब दिया, और बूंदीके हाड़ा राव रत्नसिंहको सर बलन्द राय का ख़िताब मिला. शाहज़ादा पर्वेज़ इलाहाबाद (प्रयाग) से हाज़िर हुआ.

हिजी शव्वाल [वि० १६७६ भाद्रपद = ई० १६१९ सेप्टेम्बर] में जोधपुरके राजा सूरजसिंहके मरनेकी ख़बर मिली, जो दक्षिणकी फ़ौजमें था, उसके बेटे गजसिंहको राजाका ख़िताब और तीन हज़ारी ज़ात और दो हज़ार सवारका मन्सब दिया. फिर बादशाहने हुक्म दिया, कि आगरेसे दिल्ली और अटक तक पंजाबमें और बंगाले तक पूर्वमें सड़कें बनाकर दोतरफ़ा पेड़, व कोस कोसपर मीनार और तीन तीन कोसपर कुआ बनाया जावे. शाहज़ादे खुस्रोको क़ैदसे छोड़कर सलाम करजानेकी इजाज़त दी. मिर्ज़ा राजा भावसिंह कछवाहेको दक्षिणकी फ़ौजमें भेजा, इसके बाद बादशाह दिल्लीकी तरफ़ होता हुआ कश्मीरको चला.

हिजी १०२९ ता० ११ मुहर्रम [वि० मार्गशीर्ष शुक्ल १३ = ई० ता० २१ डिसेम्बर] को शाहज़ादे खुर्रमके हमीदाबानू (मुम्ताज़ महल) से एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम उम्मेदबख़्श रक्खागया.

जब बादशाह कश्मीरको जाते हुए हसन अब्दालसे एक मंज़िल आगे ग्राम सुल्तानपुरमें पहुंचे, तो वहां महाराणा अमरसिंहके देहान्तकी ख़बर मिली, तब महाराणाके वलीअह्द पोते जगत्सिंह और छोटे बेटे भीमसिंहको, जो उस वक्त बादशाही लश्करमें मौजूद थे, मातमी ख़िलअत देकर जगत्सिंहको उदयपुरकी रुख़सत दी, और राजा कृष्णदासको टीके (गद्दी नशीनी) का सामान देकर उदयपुर भेजा. बादशाह कश्मीरमें पहुंचे, जहां राव मनोहर शैखावतके बेटे पृथ्वीचन्दके कांगड़ेकी लड़ाईमें मारेजानेकी ख़बर सुनी.

कुछ दिनों पीछे दक्षिणियोंके फ़सादकी ख़बर मिली, दाराबख़ांने उनको शिकस्त देकर हबशी मन्सूर दक्षिणीको पकड़ लिया. इन्हीं दिनोंमें बादशाहने महाराणा अमरसिंहके छोटे बेटे भीमसिंहको राजाका ख़िताब दिया, और सीसोदिया रावत सगरके बेटे मानसिंहको डेढ़ हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब इनायत किया.

हिजी ज़िल्हिज्ज [वि० १६७७ कार्तिक = १६२० नोवेम्बर] में बादशाह कश्मीरसे पंजाबकी तरफ़ रवाना हुए.

हिजी १०३० [वि० १६७७ = ई० १६२१] में शाहज़ादे खुर्रमको साढ़े छः सौ मन्सबदार, एक हज़ार अहदी, एक हज़ार बर्क़न्दाज़, एक हज़ार गोलंदाज़ और बहुतसा तोपख़ाना व हाथी देकर दक्षिणको रवाना किया, जहां इकत्तीस हज़ार सवार पहिलेसे मौजूद थे. इन्हीं दिनोंमें उदयपुरसे महाराणा कर्णसिंहके कुंवर जगत्सिंह बादशाहके पास गये, जिनको शाहज़ादे खुर्रमके साथ दक्षिणमें भेज दिया. बूंदीके हृदयनारायण हाड़ाको नौसौ ज़ात और छः सौ सवारका मन्सब दिया.

हिज्री रबीउल्अव्वल [वि० माघ = ई० १६२१ फेब्रुअरी] में बादशाह आगरे आये, ईरानके तीन एल्चियोंको रुख्सत दी. खाने आलम (१) के भतीजेको इस कुसूरमें क़त्ल करवाया, कि उसने किसी आदमीको मरवाडाला था. हिज्री शव्वाल [वि० १६७८ भाद्रपद = ई० १६२१ ऑगस्ट] में एतिक़ादखां नूरजहांके भाईको चार हज़ारी ज़ात और ढाई हज़ार सवार, व राजा गजसिंह जोधपुर वालेको चार हज़ारी ज़ात और तीन हज़ार सवारका मन्सब दिया. अब्दुल्लाखां फ़ीरोज़जंग दक्षिणसे बग़ैर हुक्म चला आया, जिससे उसकी जागीर छीनकर वहीं जानेका हुक्म हुआ.

इन दिनों बादशाहको दमेकी बीमारी हुई, इससे शुरू हिज्री १०३१ [वि० १६७८ = ई० १६२१] में आगरेका सूबेदार मुज़फ़्फ़रखांको बनाकर काश्मीरकी तरफ़ रवाना हुए. आंबेरका मिर्ज़ा राजा भावसिंह, जो दक्षिणकी तरफ़ तईनात था, ज़ियादा शराब पीनेके कारण हिज्री १०३१ सफ़र [वि० पौष = ई० डिसेम्बर] में परलोक सिधारा, और उसके बड़े भाई जगत्सिंहका पोता और महासिंहका बेटा जयसिंह आंबेरका राजा बनायागया. नूरजहांके बाप और मा दोनों मरगये, इसी अर्सेमें बादशाहको पंजाबमें शाहज़ादे खुर्रमकी अर्ज़ीसे मालूम हुआ, कि खुस्रो मरगया. राजा किशनदासको दिल्लीकी फ़ौज्दारी दी, और फ़ौज्दारी फ़ैसलेकी लगान सारे मुल्कसे मुआफ़ करदी. शाहज़ादे खुर्रमकी सुफ़ारिशसे अब्दुल्लाखां फ़ीरोज़ जंगको छः हज़ारी मन्सब और जोधपुरके राजा गजासिंहको नक़्क़ारा इनायत हुआ.

बादशाह हिज्री १०३१ जमादियुल् अव्वल [वि० १६७९ चैत्र शुक्ल पक्ष = ई० १६२२ मार्च] में कश्मीर पहुंचे. इन दिनोंमें मालूम हुआ, कि ईरानके बादशाह अब्बासने कन्धारको घेरलिया, इसपर जहांगीर शाहने भी कश्मीरसे चलनेकी तय्यारी की. शाहज़ादे खुर्रमको भी दक्षिणसे बुलाया था, लेकिन् उसकी अर्ज़ी वर्षाके बाद हाज़िर होनेके उज़्रसे आई, जिसपर बादशाहने नाराज़ होकर मुसल्मान और राजपूत सर्दार व मन्सबदारोंको भेजदेनेका हुक्म दिया. इस समयसे शाहजहां पर बादशाहकी नाराज़गी बढ़ने लगी, क्योंकि नूरजहां उसकी दुश्मन होगई थी, जिसकी बेटी जो शेर अफ़्गनसे थी, शाहज़ादे शहरयारके साथ

---

(१) इसके बाप दादा तीमूरके समयसे इज़्ज़तदार नौकर चलेआते थे, और इसको भी बादशाह जहांगीरने पांच हज़ारी मन्सब और खाने आलमका ख़िताब, व शाहजहांने छः हज़ारी मन्सब दिया. इसका अस्ली नाम मिर्ज़ा बरखुर्दार था.

ब्याही गई थी, और वह उसको वलीअह्द बनाना चाहती थी. यह कुल हाल शाहजहां और जहांगीरकी ना इत्तिफ़ाक़ीका ऊपर लिखा गया है- (देखो पृष्ठ २७५). क़न्धार, जो ईरानके बादशाहने लेलिया, और जिसपर जहांगीर शाह और शाह अब्बासके दर्मियान जो ख़त किताबत हुई, वह शाहज़ादेकी बग़ावतके हालमें लिखी गई है. बादशाहने शाहज़ादे शहरयार और मिर्ज़ा रुस्तमको बहुतसी फ़ौजके साथ क़न्धार भेजा, लेकिन् उन्हें मुल्तानमें ठहरनेका हुक्म था. इन्हीं दिनोंमें बादशाहको स्वासकी बीमारीने बहुत सताया, इस कारण मोतमदख़ांको हुक्म हुआ, कि तुज़ककजहांगीरी, जो बादशाह ख़ुद लिखा करते थे, आगेको वह लिखा करे और दिखा दिया करे.

हिज्री १०३२ [वि० १६८० = ई० १६२३] में बादशाह दिल्लीके पास पहुंचे, वहां आंबेरका राजा पहिला जयसिंह हाज़िर हुआ.

राजा नरसिंहदेव बुंदेलेको महाराजाका ख़िताब दिया, फिर शाहज़ादे ख़ुर्रम के मुक़ाबलेपर महाबतख़ांको फ़ौज देकर भेजा, आगरेके पास लड़ाई हुई, जिसमें शाहज़ादेका मुसाहिब रायरायां सुन्दरदास मारागया. इसके बाद बूंदीका राव सर-बलन्द राय रत्न हाज़िर हुआ, और आंबेरके राजा जयसिंहको तीन हज़ारी ज़ात और डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब दिया. जब बादशाह हिंडौन स्थानपर पहुंचे, तो वहां बंगालेकी तरफ़से शाहज़ादा पर्वेज़ हाज़िर हुआ, जिसको चालीस हज़ारी ज़ात और तीस हज़ार सवारका मन्सब दियागया. इन्हीं दिनोंमें मिर्ज़ा शाहरुख़का बेटा बदीउज़्ज़मां अपने भाइयोंके हाथसे मारागया, लेकिन् मारनेका क़ुसूर उनपर साबित न हुआ.

जोधपुरके राजा गजसिंह व बीकानेरके राजा सूरसिंह भी हाज़िर हुए, इनमेंसे पहिलेको पांच हज़ारी ज़ात और चार हज़ार सवारका मन्सब दिया, और दोनों पर्वेज़के साथ शाहज़ादे ख़ुर्रमपर भेजे गये, बंगालेकी सूबेदारी आसिफ़-ख़ांको दी. इसके बाद हिज्री रजब [वि० वैशाख = ई० एप्रिल] में बाद-शाहकी मा आंबेरके राजा भारमल्लकी बेटीका देहान्त हुआ. इसके बाद शाह-ज़ादे ख़ुर्रमको बादशाही लोगोंने गुजरातसे भी निकाल दिया, वह सूरतकी तरफ़ होता हुआ बंगालेमें पहुंचा.

हिज्री १०३३ सफ़र [वि० १६८० मार्गशीर्ष = ई० १६२३ डिसेम्बर] में महा-राणा कर्णसिंहके कुंवर जगत्सिंहको बादशाहने उदयपुरकी रुख़्सत दी. राजा गिरधर कछवाहा, पर्वेज़ और महाबतख़ांकी फ़ौजमें मारागया, जिसका हाल इस तरहपर है, कि सय्यद कबीरके आदमियोंमेंसे किसी शख़्सने तलवार साफ़ करनेके लिये

सैक़लगरको दी थी, जिसपर तक्रार हुई, वह सैक़लगर राजा गिरधरके पड़ोसमें रहता था, मज़्दूरी देने लेनेकी बाबत झगड़ा बढ़ा, और राजपूत व सय्यदोंमें लड़ाई हुई, उसमें राजा गिरधर २६ आदमियों समेत सैक़लगरकी हिमायत करनेके सबब मारागया, और ४० राजपूत घायल हुए; सय्यदोंकी तरफ़के चार आदमी क़त्ल और कई ज़ख़्मी हुए. इसपर राजपूत और सय्यदोंकी दो बड़ी फ़ौजें लड़नेको तय्यार होगईं, इस फ़सादको शाहज़ादे पर्वेज़ और महाबतख़ांने बड़ी मुश्किल से रोका, और सय्यद कबीरको महाबतख़ांने पकड़कर क़त्ल किया, इससे राजपूतोंका जोश कम हुआ.

इसके बाद मेवातके मेव और जाटोंने लूटमार शुरू की, वहां ख़ानेजहां लोदीको भेजा, उसने मारकूटकर फ़सादियोंको ज़ेर किया. इन्हीं दिनोंमें राजा बासूके बेटे जगत्सिंहने कांगड़ेकी तरफ़ फ़साद किया, जहां सादिक़ख़ां भेजा गया, उसने राजाको क़िलेमें घेरलेनेके बाद बादशाहके पास हाज़िर किया.

इसी वर्षमें बादशाहने आब हवा बदलनेके इरादेसे कश्मीरकी तरफ़ कूच किया, सरहिन्दके पास पहुंचकर बादशाहको ख़बर मिली, कि शाहज़ादा ख़ुर्रम दक्षिण और उड़ीसे होता हुआ बंगालेमें पहुंचा; अक़ीदत्ख़ांकी अर्ज़ीसे जानागया, कि जोधपुरके राजा गजसिंहकी बहिनके साथ शाहज़ादे पर्वेज़ने हुक्मके मुवाफ़िक़ शादी की.

इसी वर्षमें ख़ाने आज़म मिर्ज़ा अज़ीज़ कोकेके मरनेकी ख़बर मिली, और इसी वर्षसे मोतमदख़ांके एवज़ मिर्ज़ा मुहम्मद हादीने जहांगीरके तुज़कको लिखना शुरू किया. इसी सालमें बादशाहकी बहिन आरामबानू बेगम चालीस वर्षकी उम्र पाकर मरगई; उज़्बक लोगोंने काबुलियोंसे मिलकर सरहद्दपर फ़साद किया, जो सय्यद हाजी व सिंहदलन अनीरायने उनको निकालकर मिटाया. फिर अर्ज़ हुई, कि शाहज़ादे पर्वेज़ और महाबतख़ांने बंगालेमें शाहजहां (शाहज़ादा ख़ुर्रम) पर फ़त्ह पाई; इसपर महाबतख़ांको ख़ानख़ानांका ख़िताब और सिपहसालारीका उहदा दियागया.

हिज्री १०३४ [वि० १६८२ = ई० १६२५] में बादशाह कश्मीरसे पंजाबको लौटे, और पंजाबकी सूबेदारी आसिफ़ख़ांको और बंगालेकी महाबतख़ांको दीगई. शाहज़ादा ख़ुर्रम बंगालेसे भागकर दक्षिणमें पहुंचा. इन्हीं दिनोंमें ख़बर मिली, कि महाबतख़ां बंगालेमें ज़ियादा ज़ुल्म करता है; इस बातकी तहक़ीक़ातके लिये अरबख़ां भेजागया, हुक्म था, कि महाबतख़ांको लेआवे, महाबतख़ां अच्छे अच्छे राजपूतोंकी फ़ौज बनाकर रवाना हुआ.

हिज्री १०३५ [वि० १६८३ = ई० १६२६] में बादशाह पंजाबसे फिर

कश्मीरकी तरफ़ चले, और ख़बर मिली, कि क़िले बुर्हानपुरमें बूंदीके हाड़ा राव रत्नने ख़ुर्रमकी फ़ौजसे अच्छा मुक़ाबला किया, और क़िला हाथसे नहीं जाने दिया; इसके इनआममें बादशाहने रत्नको रावरायका ख़िताब और पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया. इन्हीं दिनोंमें ख़ुर्रमके दोनों शाहज़ादे दाराशिकोह व औरंगज़ेब बादशाहके पास बुलालियेगये. सर्दी आजानेके कारण बादशाह कश्मीरसे लौटे; अब्दुर्रहीम ख़ानख़ानां बादशाहके पास हाज़िर हुआ, बादशाहने तसल्ली दी. अब्दुल्लाख़ां फ़ीरोज़ जंगने भी ख़ानेजहांकी मारिफ़त क़ुसूरोंकी मुआफ़ी चाही, जो बादशाहने मंज़ूर की.

इन दिनोंमें महाबतख़ांपर भी बादशाही नाराज़गी बढ़गई, और उसके जमाई बरख़ुर्दारको क़ैद करदिया, बादशाह काबुलको रवाना हुए; महाबतख़ां और आसिफ़ख़ांसे तक़रार होगई थी, इसी सबब नूरजहां बेगम अपने भाईकी हिमायत से महाबतख़ांको मरवाडालना चाहती थी, महाबतख़ांने पांच हज़ार राजपूतोंके साथ तय्यार होकर जिहलम नदीके किनारेपर बादशाहको घेरकर अपने क़ाबूमें करलिया, जब कि तमाम बादशाही लश्कर नदीके पार उतरगया था; दो हज़ार राजपूतों को नदीकी तरफ़ भेजा और बाक़ी तीन हज़ार सवारोंको साथ लेकर बादशाही डेरोंकी तरफ़ चला, और दो सौ राजपूतोंके साथ ख़ास डेरोंमें जाकर जहांगीरको घेरलिया. महाबतख़ां ज़बानी बहुत अदबके साथ पेश आया, और बादशाहको हाथीपर सवार कराकर अपने डेरोंमें लेआया. नूरजहां बेगम अपने भाई आसिफ़ख़ांके पास पहिले ही नदी पार फ़ौजमें जापहुंची थी, वहांसे उसने मए शाही फ़ौजके हम्ला किया. बहुतसे सवार नदीमें डूब मरे, और ख़ास बेगमकी दोहिती, जो हाथीपर उसके पास सवार थी, तीर लगनेसे ज़ख़्मी हुई, और शाही फ़ौज ख़राब होकर दर्याकी तरफ़ लौटी; आख़िरको नूरजहां बेगम बड़े बड़े सर्दारों सहित महाबतख़ांकी फ़ौजमें चलीआई, और आसिफ़ख़ां क़िले अटकमें जा छिपा, लेकिन् वहांसे क़ैद होकर महाबतख़ांके पास लायागया, उसके कई दोस्तोंको महाबतख़ांने मरवाडाला. फिर बादशाहको महाबतख़ां अपने क़ाबूमें लेकर काबुलको रवाना हुआ, और जलालाबाद होते हुए सब काबुल पहुंचे; वहां महाबतख़ांके राजपूत और बादशाही अहदियोंमें फ़साद हुआ, सैकड़ों राजपूत वग़ैरह मारेगये, इससे महाबतख़ांकी ताक़तमें फ़र्क़ आगया. इस ख़बर को सुनकर शाहज़ादा ख़ुर्रम भी दाक्षिणसे अजमेर व मारवाड़ होताहुआ ठट्ठे की तरफ़ चला, अजमेरमें उसका बड़ा सर्दार राजा भीमका बेटा कृष्णसिंह मरगया, जो पांच सौ राजपूत सवारोंका अफ़्सर था, इससे शाहज़ादेको बहुत रंज हुआ. बादशाह भी काबुलसे लाहौरकी तरफ़ लौटे, और नूरजहांकी सलाह

से महाबतख़ांपर ज़ियादा मिहर्बानी ज़ाहिर करते थे, जिससे वह ग़ाफ़िल रहने लगा; क़िले रुहतासके पास नूरजहां बेगमने अपनी फ़ौजकी हाज़िरीके बहानेसे बादशाह को महाबतख़ांसे अलग किया, यह हाल पेश आनेसे महाबतख़ां जान लेकर भागा, लेकिन् दानयालके शाहज़ादे और आसिफ़ख़ां व उसके बेटे अबूतालिबको क़ैदी बनाकर साथ लेगया. बादशाहके कहलानेसे दानयालके बेटेको तो छोड़दिया, लेकिन् आसिफ़ख़ां व उसके बेटेको, जबतक दूर न निकलगया, न छोड़ा.

हिज्री १०३६ मुहर्रम [वि० १६८३ आश्विन = ई० १६२६ सेप्टेम्बर] में बादशाह लाहौर पहुंचे, वहां अब्दुर्रहीम ख़ानख़ानांका सात हज़ारी मन्सब बहाल करके अजमेर जागीरमें दिया, और महाबतख़ांका पीछा करनेको तईनात किया, और मुकर्रमख़ांको बंगालेकी सूबेदारी इनायत की. इसी हिज्रीकी ता० ७ सफ़र [वि० कार्तिक शुक्ल ९ = ई० ता० २९ ऑक्टोबर] को शाहज़ादा पर्वेज़ ३८ वर्ष की उम्रमें मरगया. बादशाहने आसिफ़ख़ांके बेटे अबूतालिबको शायस्ताख़ांका ख़िताब दिया. इन्हीं दिनोंमें याकूतख़ां हबशीने राव राजा रत्न हाड़ेकी मारिफ़त बादशाही तावेदारी कुबूल की. शाहज़ादे ख़ुर्रमने ईरान जानेका विचार किया था, परन्तु पर्वेज़ के मरजानेसे उस इरादेको छोड़कर दक्षिण पहुंचा. बादशाहने आसिफ़ख़ांको सात हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया. ख़ानेजहांने तीन लाख होन (१५ लाख रुपये) लेकर बाला घाटका इलाक़ा दक्षिणियोंको देदिया; इसी वर्षमें अब्दुर्रहीम ख़ानख़ानां मरगया. बादशाहको ख़बर मिली कि महाबतख़ां ख़ुर्रमके पास पहुंचगया, और उसने उसको अपनी फ़ौजका अफ़्सर बनाया.

बादशाह कश्मीरकी तरफ़ चले, और रास्तेमें बीमारीसे ज़ियादा तक्लीफ़ हुई, आख़िरकार राजौर मक़ामपर हिज्री १०३७ ता० २८ सफ़र [वि० १६८४ कार्तिक कृष्ण १४ = ई० १६२७ ता० ९ नोवेम्बर] में बादशाह जहांगीरका देहान्त हुआ. शाहज़ादा ख़ुर्रम (शाहजहां) अपने ससुर आसिफ़ख़ांकी मददसे कई भाई भतीजोंको क़त्ल कराकर बादशाहतका मालिक बना, जिसका पूरा ज़िक्र मौक़ेपर किया जायगा.

हम बादशाह जहांगीरका कुछ चाल चलन लिखना चाहते थे, लेकिन् जॉन-हैरिस डी, डी, और ऐफ़, आर, ऐस के सफ़रनामेमें, जो ईसवी १७६४ [वि० १८२१ = हि० ११७७] में लंडनमें छपा है, उसका ज़िक्र मिलगया, इसलिये उसका ही तर्जुमा यहांपर लिखदिया जाता है. इस सफ़रनामेकी पहिली जिल्द, दूसरा बाब, बाईसवां खंड और नवें लेखके ६३७ पृष्ठमें लिखा है- कि "इस बादशाह जहांगीरकी लयाक़त (ज़ाती तौरपर) उसके बापसे बहुतही कम थी, और

ऐबोंमें वह उससे बहुतही बढ़कर था. वह खाना व पीना जितना बादशाहोंको चाहिये उससे बहुत ज़ियादा पसन्द करता था, और ख़ास सबब उसके मुसल्मानी तरीक़के बर्ख़िलाफ़ क्रिस्तानी मज़्हबकी तरफ़ झुकनेका यह था, कि इस मज़्हबमें उसको खाने पीनेकी बाबत कुछ रोक टोक नहीं थी, जैसी कि पहिलेमें. वह बहुत दिलेर था, गो कि अपने बुज़ुर्गोंकी तरह लड़ाई पसन्द नहीं करता था, परन्तु जब कभी उसको लड़ाईके मौक़ेपर जाना पड़ता, तब वह फ़ौज लेजानेमें वैसी ही लयाक़त दिखलाता, जैसे कि उसके बुज़ुर्ग. वह फ़िरंगी अर्थात् यूरोपी लोगोंको बहुत चाहता था, क्योंकि वे लोग मुसल्मानोंकी बनिसबत ज़िन्दगीके उस तरीक़ेकी तरफ़ ज़ियादा माइल थे, जिसे वह सबसे ज़ियादा पसन्द करता था, और मुसल्मानोंके साथ बड़ी सख़्ती और रुखाईसे सुलूक करता, क्योंकि वह सालके उस वक़्में दावतें देना पसन्द करता था, जब कि अपने क़ानूनके मुवाफ़िक़ उनको फ़ाक़ा अर्थात् रोज़ा रखना ज़रूर होता था, अगर ऐसे वक़ पर वे उसकी मर्ज़ीके ख़िलाफ़ खाने पीनेसे इन्कार करते, तो उन्हें खाना खानेकी कोठरीकी खिड़की मेंसे बाहर फेंक देनेकी धमकी देता, जहां हमेशा दो शेर ज़ंजीरोंसे बंधे रहते थे. इससे जानाजाता है, कि वह हठी और ज़ालिम था, परन्तु यह निश्चय है, कि कोई बादशाह औरतों या वज़ीरोंके ज़ेर असर उससे ज़ियादा न था".

अब हम इस बादशाहके ज़ालिम होनेके और भी सुबूत लिखते हैं, कि वह आदमियोंको ऐसी सख़्त सज़ा देता था, कि उसके बापने किसीको न दी होगी, इसने अपनी शाहज़ादगीके वक़ इलाहाबाद (प्रयाग) में एक आदमी की खाल खिंचवाकर भुस भरवाया, और बादशाह होनेपर सर टॉमस रो (एल्ची जेम्स बादशाह इङ्गलेण्ड) के सामने एक महलकी औरत को जिन्दा ज़मीनमें गड़वाया, और खोजेसराको हाथीके पैरोंसे खुंदवाडाला. यह बात सर टॉमस रो की किताबके ३७ वें पृष्ठमें लिखी है. जहांगीर आप भी अपनी किताबमें लिखता है, कि मैं हिज्री १०१८ [वि० १६६६ = ई० १६०९] में जब साम्भरका शिकार कररहा था, उस वक़ एक अर्दलीका सिपाही और दो कहार, बीचमें आगये, उनमेंसे सिपाहीको तो जानसे मरवाडाला और कहारों के पैर कटवादिये. उस ज़मानेके सब बादशाह वग़ैरा ऐसा ज़ुल्म करते थे, परन्तु यह अक्बरका बेटा होनेके कारण ज़ालिम समझागया. वरना पहिले ख़िल्जी, तुग़लक़ वग़ैरह बादशाहोंके ज़ुल्म देखते, यह बादशाह बड़ा नेक और रहमदिल था, अगरचि वह बाज़ दफ़ा गुस्से और शराबके जोशमें बाज़े सख़्त हुक्म देता था— लेकिन् दिलसे हमेशा इन्साफ़ पसन्द करता था, जैसा कि आगरा क़िलेके

बुर्जसे जमुनाके किनारे तक फ़र्यादियोंके लिये ज़ंजीर लटकाने, और कुसूरवारोंके हाथ पाँव न काटनेकी बाबत ताकीदोंसे ज़ाहिर है. इस बादशाहकी औलाद पांच शाहज़ादे और दो बेटियां थीं :- १ खुस्रौ, २ पर्वेज़, ३ ख़ुर्रम, ४ जहांदार, ५ शहरयार, और बेटियोंमें बड़ी सुल्तानिनसा और छोटी बहारबानूबेगम.

शाहज़ादा खुस्रौ हिज्री ९९५ [वि० १६४४ = ई० १५८७] में राजा भगवानदास कछवाहे की बेटीसे पैदा हुआ था, जो बापके सामने मरगया. शाहज़ादा पर्वेज़ हिज्री ९९७ [वि० १६४६ = ई० १५८९] में ज़ैनख़ां कोकेकी बेटीसे पैदा हुआ था, जो बापसे एक वर्ष पहिले गुज़र गया. तीसरा खुर्रम हिज्री १००० के रबीउल्अव्वल [वि० १६४८ पौष = ई० १५९१ डिसेम्बर] में मोटेराजा उदयसिंह जोधपुरवालेकी बेटीसे पैदा हुआ, जो बापके बाद बादशाह बना. चौथा शाहज़ादा जहांदार और पांचवां शहरयार था, ये दोनों पासवानोंके पेटसे पैदा हुए थे, जिनमेंसे पहला तो बापके सामने ही मरगया, और पिछला शाहजहांके बादशाह होनेपर क़त्ल कियागया; सुल्तान निसाबेगम केशवदास मेड़तिया राठौड़की बेटीसे हिज्री ९९८ [वि० १६४७ = ई० १५९०] में पैदा हुई, और बहार बानूबेगम हिज्री ९९९ [वि० १६४८ = ई० १५९१] में कर्मसी राठौड़की बेटीसे पैदा हुई. इनमेंसे जहांगीरके बाद शाहजहां और दोनों बेटियां ही बाक़ी रहीं.

शेषसंग्रह (नम्बर १).

(यह प्रशस्ति चित्तौड़ गढ़के रामपोल दर्वाज़े बाहर जातेहुए दहिनी तरफ़ है).

श्री महाराजा धिराज महाराणा श्री कर्णसिंहजी आदेशातु बारहठ लखा कस्य- पहिली श्री दिवाण, लखाजी हे गाम तांबापत्र करेदीधा, यां गांवांरा पत्र गढ़ चित्र-कोटरी पौले लिखायो, १ गाम मन्सवो मांडलगढ़रो, १ गाम थरावली फुल्यारो, १ गाम जडाणो भिणायरो, संवत् १६७८ वर्षे आसोज शुदि १५. गंगामस्तु धारि आलाक्षरांमें सु कोई चोलण करे, श्रीएकलिंगजीरी आण-लिखितं पंचोली शवरदास रामदास उपादेली लिखितं ॥

शेषसंग्रह (नम्बर २).

खयाल कियागया है, कि मेवाड़के महाराणा सुलह होनेपर भी बादशाही खैरख्वाही से नफ़त करते थे, और फिर लड़ाई फ़सादका इरादा रखते थे इस लिये दर्वाजेकी हिफ़ाज़त के वास्ते काज़ी मुल्ला जमालसे (जो यहांपर बादशाही मुकर्रर किया हुआ काज़ी होगा), अरबीकी आयत व फ़ार्सी शिअ्र लिखवाकर खुदवाया, कि जिससे मुसल्मान लोग इस दर्वाजे (बड़ी पौल) व महल वगैरहको न तोड़ें.

बड़ीपौल दर्वाजेकी छतके अन्दरकी खुदीहुई इबारत व शिअ्र-

श्रीएकलिङ्गजी प्रसादात्. श्रीगणेशायनमः संवत् १६७३ वर्षे मार्गसिर बदी ४ शुक्रे राजाधिराज महाराणा श्री अमरसिंहजी चिरंजीव महाराजकुंअर श्री करणजी चरण कमलानु - - - - श्रीमेदपाटेनृप सूनु कर्णे - - - विण - - परागसेवित्मंडनोयं ॥ - - विसूत्रधारास्तेने कितंभूपतिवल्लभोयम् ॥ १ ॥ शुभं भवतु - - - - सेवक सुतार मुकन्दरामको बेटो - - - - - - तूरकी ईक्षर, लिखा काज़ी मूला जमालखां.

बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम.

नस्रुम्मिनल्लाहे व फ़त्हुन क़रीब, व बशिशरिलमुअ्मिनीन: फ़ल्लाहु खैरुन हाफ़िज़ा.

अर्थ- मदद और फ़त्ह खुदाकी तरफ़से आसान है, और खुशखबरी ईमान्दारोंके वास्ते हो; बेशक खुदा उम्दा हिफ़ाज़त करने वाला है.

शिअ्र.

या हाफ़िज़ — हरकि दरीं खानः नज़र बद कुनद,
ऐ निगाहबान — चश्म शवद कोरो शिकम दर्द (१) कुनद.

अर्थ-अगर इस मकानमें कोई बद निगाह करे, तो उसकी आंख अंधी हो, और पेट दर्द करे.

दर अमले राणा अमरसिंह, व कुंवर कर्णसिंह, काज़ी मुल्ला जमाल.

अर्थ-राणा अमरसिंह और कुंवर कर्णसिंहके वक्त में काज़ी जमालने तय्यार किया.

तारीख़ २२ ज़िल्क़ाद

सन् १०२५ हिज्री.

---

(१) दर्दके एवज़ रद रक्खाजावे, तो शिअ्रका वज़्न और क़ाफ़िया ठीक होजावे, लेकिन अस्ल प्रशस्तिमें ऐसा ही लिखाहै.

त्रिभंगी छन्द.

नृप अमर निदानं, गे सुरथानं, जान जहानं, हानि भई ॥
परिजन दुखहर्नं, भूपति कर्नं, नीति वितर्नं, प्रीति नई ॥
खुर्रम जुवराजा, पितु भय भाजा, छोर समाजा, छांह लई ॥
नृप कर्ण सहाई, व्है शर्णाई, कै निज भाई, बांह दई ॥ १ ॥
बेगम बढ़ि मानं, नूरजहानं, ता दृत गानं, लेख भयो ॥
फिर नृप ईरानी, मधु कटु बानी, दल बड़मानी, सार लयो ॥
जन्नत्त मकानी, उत्तर ठानी, दुस्सह हानी, मान दयो ॥
प्रिय सुत विपरीतं, संगर नीतं, जान अनीतं, शाह नयो ॥ २ ॥
राणावत भीमं, साहस सीमं, दै जुध नीमं, जुज्झ पर्यो ॥
फिर भूपति कर्णं, गेशिव शर्णं, लोक विवर्णं, शोक भर्यो ॥
अक्बर सुत तासं, कछु इतिहासं ,श्यामलदासं, लेख कियो ॥
नृप सज्जन इच्छा, फ़तमल शिच्छा पूरण दिच्छा पूर हियो ॥ ३ ॥

महाराणा कर्णसिंह–षष्ठ प्रकरण
समाप्त.
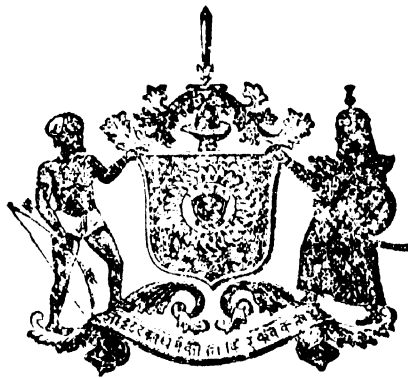
महाराणा जगत्सिंह-अव्वल.
सप्तम प्रकरण.

इनका राज्याभिषेक विक्रमी १६८४ के फाल्गुन् [हि० १०३७ रजब = ई० १६२८ मार्च] में, और राज्याभिषेकोत्सव विक्रमी १६८५ वैशाख शुक्ल ५ [हि० १०३७ ता० ३ रमज़ान = ई० १६२८ ता० ९ मई] को हुआ. यह महाराणा महेचा राठौड़ जशवन्तसिंहकी बेटी जाम्बुवती बाईके पेटसे पैदा हुए थे; इनकी तबीअत बालकपनेसे ही तेज़ थी; जब यह बालकपनमें बादशाह जहांगीरके पास गये, तो बादशाहने भी इनकी शान शौकत व बहादुराना सूरतकी तारीफ़ की. यह अपने पिता व दादाके वक्तमें जहांगीरके साथ हरिद्वार काश्मीर वगैरह हिन्दुस्तानके कई हिस्सोंका सफ़र कर चुके थे. महाराणा कर्णसिंहके वैकुंठवास होनेके पहिले इन्होंने विक्रमी १६८२ [हि० १०३४ = ई० १६२५] के क़रीब ढुंढाड़के एक नरूका राजपूतको, जो उन्हींके पास रहता था, किसी कुसूरपर मरवाडाला. उस राजपूतके छोटे भाईने अपने बड़े भाईका माराजाना सुनकर पगड़ीके एवज़ सिर पर रूमाल बांधना इख्तियार किया, कि जबतक मैं अपने भाईके मारने वालेको न मारलूंगा, पगड़ी न बांधूंगा; उसके घरमें एक उम्दा और बड़े धावेका घोड़ा था, जिसपर वह सवार होकर उदयपुर आया, और चारण खेमराजके हाथसे मारागया, जिसका हाल इस तरहपर है :-

महाराणा प्रतापसिंहके पुत्र सहसमल्लके बेटे भोपतराम बाठरड़ाके जागीरदार

थे, और अब उनकी औलाद वाले धरयावदके जागीरदार रावत कहलाते हैं; ग्राम ऊंटालाके नज़्दीक धारता ग्रामके चारण दधिवाड़िया जयमल्लका बेटा खेमराज अपनी ग़रीबी हालतमें धारतेसे निकलकर बाठरड़े जाता था, धूपकी गरमीसे दुपहरीके वक़ बड़के दरख़्तके नीचे सोरहा, थोड़ी देरमें उसके मुंहपर धूप आने लगी, उस समय एक काले सांपने अपने फनसे छाया की; इस मौक़ेपर माहोलीका एक ओसवाल महाजन किसी ज़रूरी कामके लिये कहीं जाताहुआ उधर आ निकला, महाजनको देखकर सर्प तो चलागया, लेकिन् महाजनने सर्पका साया करना देखलिया था, खेमराजको जगाकर कहा, कि तुमको जो शकुन हुआ है, उसका फल मुझको दे दीजिये. खेम-राज पन्द्रह वर्षकी उम्रका था, लेकिन् होश्यारीसे उसने इन्कार किया, फिर उस महाजनने कहा, कि जब आपका रुत्बा बढ़े, तब काम करनेका इक़ार मुझको लिखदीजिये, खेमराजने इसपर भी बहुत इन्कार किया; आख़िरकार महाजनकी हुज्जतसे लिखदिया, महाजनने भी जो दस बीस रुपये उसके पास थे, खेमराजको देदिये, वह लेकर बाठरड़े पहुंचा, और महाराज भोपतरामके पास रहने लगा, कभी बाठरड़े कभी उदय-पुर आता जाता रहा; अपनी होश्यारीके सबब भोपतरामके कुल कामका मुख़्तार होगया. बल्कि उसके कुंवर विजयसिंहसे भी उसकी सर्कारमें खेमराजकी हुकूमत ज़ियादा थी.

एक दिन घोड़ा दौड़ा कर खेमराज शहर (उदयपुर) में आता था, उस वक़ वह नरूका राजपूत भी उसी तरफ़ आया, जिसने अपनी तलवार निकालकर एक सैक़लगरको दी और कहा, कि पांच रुपये ले और मेरी तलवारकी धारको ऐसा दुरुस्त करदे, कि इसके मुवाफ़िक़ किसी दूसरे की न हो. यह बात खेमराजने सुनकर विचार किया, कि ऐसा घोड़ा और ऐसे ढंगसे अजनबी बहादुर आदमी पहर रात गये अपनी तलवारकी धार दुरुस्त करने के लिये पांच रुपये देता है, बग़ैर किसी ज़रूरी सबबके न होगा, खेमराजने भी अपनी तलवार किसी दूसरे सैक़लगरको देकर उसीतरह पांच रुपये दिये; उस राजपूतने दो घड़ी रात रहे तलवार लेनेका इक़ार किया, इसने चारघड़ी रात रहे लेनेका वादा किया, और पांच घड़ी रात रहे एक अमव्वा दुपट्टा सिरपर बांधकर और उसी रंगका अंगरखा पहनकर अबलक़ घोड़े पर सवार होकर सैक़लगरसे वादेके मुवाफ़िक़ तलवार मांगली, और भटियाणी चौहट्टे होताहुआ शीतला माताके पास पहुंचा; वह नरूका राजपूत भी अपने वादेके मुवाफ़िक़ सैक़लगरसे तलवार लेकर बाटेश्वर महादेव व महोली चौहट्टेमें होता हुआ वहीं पहुंचा, जहां खेमराज तय्यार खड़ा था.

कुंवर जगत्सिंह दिन निकलते ही छोटे घोड़ेपर सवार होकर बीस तीस शागिर्दपेशा लोगोंके साथ हमेशा ख़रगोशोंके शिकारके वास्ते कृष्णपौल दर्वाज़े बाहर जाया करते थे; बाप बेटोंमें ज़ियादा मुहब्बत होनेके कारण महाराणा कर्णसिंह दिल्कुशाल (दिल्कुशा) के गोखड़ेसे अपने बेटे को आतेवक़ देखते रहते थे, उस दिन भी देखने लगे. उस नरूके राजपूतने खेमराजसे कहा, कि मेराघोड़ा तेरे घोड़े से बिगड़ता है, इसलिये दूर रह, जिसपर खेमराजने जवाब दिया, कि मेरा भी घोड़ा है घोड़ी नहीं, इसके सिवाय तेरा घोड़ा क्रोध करता हो तो तूही दूर चलाजा, राजपूतको दूसरा काम करना था, चुप हो रहा; महाराजकुमार जगत्सिंह भी उस वक़ कृष्णपौलकी तरफ़से नज़्दीक आये, उस राजपूतने तलवार निकालकर आवाज़ दी, कि कुंवर मैं अपने भाईका बैर मांगता हूं, यह कहकर अपना घोड़ा उनकी तरफ़ दौड़ाया; खेमराजने अपने घोड़ेको खेंचकर एक हाथ तलवारका मारा, जिससे उस राजपूतका सिर और तलवारका हाथ बदनसे जुदा होकर कुंवर जगत्सिंहके सामने जापड़ा; खेमराज तो उसी समय अपने घोड़ेको मोड़कर भोपतरामकी हवेली चलाआया. महाराणा कर्णसिंह दिल्कुशाल (दिल्कुशा) के गोखड़ेसे अपने बेटेको आताहुआ देखरहे थे, तलवारका निकलना देखकर घबराये, और कहा, कि मेरा घर डूबगया. इधर कुंवर और उनके साथवाले भी भयचकसे रहगये, किसी ने कहा, कि खुद एकलिंगजीने आकर आपकी रक्षा की है, किसीने कहा, इस शख़्सको मारनेवाला कोई दैवी मनुष्य था. आख़िरकार उस नरूके राजपूतका सिर और घोड़ा लेकर कुंवर अपने पितासे आमिले. महाराणाने भी अपने बेटेकी ज़िन्दगी नई जानकर हज़ारहा रुपया लोगोंको ख़ैरातमें दिया.

कुंवरने अर्ज़ की कि मैंने अपनी जान बचानेवालेको देखा है, वह कोई मेवाड़ी बहादुरोंमेंसे था. तब सबने कहा, कि ऐसी बड़ी नौकरीपहुंचकर वह क्यों चलागया ? इस बातका आश्चर्य है. महाराणाने हुक्म दिया, कि उमराव सर्दार व भाई बेटे कुल अपनी अपनी जमइयतोंके साथ बड़ीपौलमें होकर महलोंके नीचे होते हुए पीछोलेकी पालकी तरफ़ निकल जावें. महाराज भोपतरामने घोड़ेका पसीना और खेमराजके कपड़ोंपर ख़ूनके छींटे देखकर कहा, कि बेटे खेमराज अगर यह काम तैंने किया हो तो बहुत बड़ी बात है, मेरी और तेरी इज़्ज़त बढ़नेका कारण होगा, छिपानेकी बात नहीं है; तब खेमराजने सारी कार्रवाई कह सुनाई. भोपतरामने खेमराजको छातीसे लगाकर उसी अब्लक़ घोड़ेपर सवार कराया, और मए अपनी जमइयतके महलोंकी बड़ी पौलमें लाया; नज़र पड़तेही महारा-

ज कुंवर जगत्सिंहने महाराणासे अर्ज़ की, कि मेरा प्राण रक्षक यही शख़्स है, जो अब्लक़ घोड़ेपर चढ़ा आता है. महाराणाने खुश होकर मए महाराज भोपतरामके खेमराजको ऊपर बुलाया और दौड़कर खेमराजको छातीसे लगाकर कहा, कि अबतक मेरे तीन बेटे थे, आजसे तुझ समेत चार हुए, फिर उसको कुंवर जगत्सिंहके पास रखदिया, और उसका कुल खर्च अपने छोटे बेटोंके मुवाफ़िक़ सर्कारसे मुक़र्रर किया. कुंवर जगत्सिंह भी खेमराजको भाई कहाकरते थे. जब जगत्सिंह गादीपर बैठे, तो थोड़े ही अर्सेके बाद खेमराजको ७०००० सत्तर हज़ार रुपये सालयाना आमदनीकी जागीरके कई ग्रामों सहित ठीकरिया ग्राम दिया, और उसका नाम खेमपुर रक्खा- (देखो शेषसंग्रह नम्बर १).

जब महाराणा जगत्सिंहका राज्याभिषेक हुआ, उस समय बादशाह शाहजहांने राजा बीरनारायण बड़गूजर दक्षिणीके साथ गद्दी नशीनीका दस्तूरी सामान (टीका) महाराणा जगत्सिंहके लिये भेजा, जिसमें खिल्अत खासा, जड़ाऊ खपुवा मए फूलकटारेके, जड़ाऊ तलवार, घोड़ा खासा मए सुनहरी सामानके, और खासा हाथी चांदी के असबाब सहित था. राजा बीर नारायणने आकर गद्दी नशीनीके वक्त सब दस्तूर अदा किये.

जब शाहजहां बादशाहने महाबतखांको खान्खानांका ख़िताब और सिपहसालारीका उह्दा इनायत किया, तब कुछ दिनोंके बाद वह देवलियाके महारावत जशवन्तसिंहकी तरफ़दारी करने लगा, क्योंकि तक्लीफ़के वक्त जहांगीरकी नाराज़गी से वह देवलियामें रहा था. देवलियाका जशवन्तसिंह, रावत सिंहाकी गादीपर विक्रमी १६७९ [हि० १०३१ = ई० १६२२] में बैठा था, जब वह महाबतखांकी तरफ़दारीसे उदयपुरके हुक्मकी बर्ख़िलाफ़ी और सर्कशी करने लगा, तब कई दफ़ा लिखागया, लेकिन् उन्होंने हिमायतसे जगत्सिंहके हुक्मको बिल्कुल न माना; महाराणाने किसी आदमीको भेजकर तसल्लीके साथ रावतको उदयपुर बुलवाया. जशवन्तसिंह दिलमें महाराणाकी तरफ़से खटका होनेके कारण अपने छोटे बेटे हरीसिंहको देवलियाका कुल बंदोबस्त सौंपकर आप मए बड़े बेटे महासिंह व एक हज़ार अच्छे राजपूतोंके उदयपुर आया, और चम्पाबाग़में डेरा किया, जो महाराणा कर्णसिंहका बनवाया हुआ शहरसे एक मीलके फ़ासलेपर पूर्वी तरफ़ है. जशवन्तसिंहको महाराणाने यहांकी फ़र्मांबर्दारीके बर्ख़िलाफ़ न रहनेकी बाबत बहुतसी नसीहत की, लेकिन् उसके दिलमें महाबतखांकी हिमायत का ज़ोर भरा हुआ था, महाराणाके मन्शासे ख़िलाफ़ जवाब दिया. महाराणाने अपने सलाहकारोंसे पूछा, तो सबने अर्ज़ की, कि जशवन्तसिंह यहांसे चला गया, तो बिल्कुल आपकी हुकू-

मतसे अलहदा होजावेगा. तब महाराणाने अपने सलाहकारोंके कहनेपर अमल करके, अपने बड़प्पनको बट्टा लगानेवाली बात, याने जशवन्तसिंहका मारडालना इख्तियार किया.

महाराणाको मुनासिब था, कि जशवन्तसिंहको अपने यहांसे विदाकरके देवलिया पर फ़ौज भेजते, लेकिन् उन्होंने धोखेके साथ कार्रवाई की, और रामसिंह (१) राठौड़को फ़ौज देकर आधीरातके वक्त चम्पाबागमें महारावतके घेरलेनेका हुक्म दिया; रामसिंहने वैसा ही किया. जशवन्तसिंह मए अपने कुंवर महासिंह व एक हज़ार राजपूतोंके अच्छी तरह लड़कर मारे गये, महाराणाके राजपूत भी बहुतसे काम आये. यह झगड़ा विक्रमी १६८५ [हि० १०३८ = ई० १६२८] में हुआ.

इस नामुनासिब कामके करनेसे देवलिया महाराणाके हाथसे निकल गया, क्योंकि जशवन्तसिंहके छोटे बेटे हरीसिंहने, जो देवलियाकी गादीपर बैठा, अपने बाप और भाईके मारेजानेसे बिल्कुल विश्वास उठालिया, इस खौफ़से कि महाराणा फ़ौज भेजकर मुझे मरवा डालेंगे. वह अपनी गादी नशीनीका दस्तूर करके सीधा दिल्ली बादशाह शाहजहांके पास चलागया. इस वक्तसे देवलिया वालोंको उदयपुरकी हुकूमतसे अलहदा होनेका मौक़ा मिला. अगरचि इस वक्तकी अलहदगी बहुत अर्से तक न रही, लेकिन् जिस वक्त ताक़त पाई, तब ही जुदा होनेकी कोशिश करते रहे. हरीसिंहके विचारके मुवाफ़िक़ ही नतीजा पैदा हुआ, कि हरीसिंह तो अपने बाप और भाईके मारेजानेकी ख़बर सुनते ही दिल्लीकी तरफ़ चलागया, और राठौड़ रामसिंह फ़ौज लेकर देवलिये पहुंचा, जहां बहुतसी लूटखसोट करके उस इलाक़ेको बर्बाद किया. उसी संवत्में डूंगरपुरके रावल पूंजा पर, जो बादशाही मन्सबदार होकर उदयपुर की सरपरस्तीको नहीं मानता था, महाराणाने अपने प्रधान अक्षयराजको फ़ौज देकर डूंगरपुरकी तरफ़ भेजा. पेश्तर महाराणा प्रतापसिंहके वक्तमें डूंगरपुरके रावल आशकरण बादशाह अक्बर के मन्सबदार होगये थे, तबसे डूंगरपुरवाले भी उदयपुरकी फ़र्मांबर्दारीसे निकलगये थे, इस लिये यह फ़ौज भेजीगई. रावल पूंजा तो पहाड़ोंमें भागगया, और फ़ौजने डूंगरपुरको बर्बाद करके चन्दन के गोखड़ेको,

---

(१) राव मालदेवके बेटे चन्द्रसेन और चन्द्रसेनके बेटे उग्रसेन और उसके बेटे कर्मसेनका बेटा रामसिंह था, जो महाराणा जगत्सिंहकी बहिनसे पैदा हुआ, और महाराणाके पास नौकरीमें रहनेलगा था; वह हिज्री १०५० [वि० १६९७ = ई० १६४०] में बादशाह शाहजहांके पास गया, और हज़ारी ज़ात व छःसौ सवारका मन्सब व ख़िलअ़त पाकर बादशाही नौकर हुआ-यह रामसिंह रोटलाके नामसे अबतक मश्हूर है.

जो उसके महलोंमें था, गिरादिया; इस तरहपर डूंगरपुरको भी ख़राब करके फ़ौज लौट आई.

विक्रमी १६८६ कार्तिक कृष्ण २ [हि० १०३९ ता० १ सफ़र = ई० १६२९ ता० ४ ऑक्टोबर] को महाराणा जगत्सिंहके, राजसिंह मेड़तियाकी बेटी महाराणी जनादे बाई मेरतणीके गर्भसे, कुंवर राजसिंहका जन्म हुआ; फिर एक वर्षके बाद उन्हीं महाराणीसे छोटे कुंवर अरिसिंह पैदा हुए. डूंगरपुर और देवलियाके मुवाफ़िक़ सिरोहीके राव अक्षयराजने भी सरकशी इख्तियार की. सिरोहीके राव सुल्तानका देहान्त होने बाद उसका बड़ा बेटा राजसिंह सिरोहीकी गादीपर बैठा; वह सीधा सादा सर्दार था. राव सुल्तानके छोटे बेटे सूरसिंहने राजसिंहसे बग़ावत करना शुरू किया; देवड़ा भैरवदास समरावत और राघव डूंगरोत वग़ैरह भी सूरसिंहकी तरफ़दारी करते थे, और रावकी तरफ़दारीमें भी देवड़ा पृथ्वीराज सूजावत वग़ैरह कई आदमी थे. लड़ाई होनेपर सूरसिंहको शिकस्त देनेसे पृथ्वीराजको ग़ुरूर होगया था, इसी सबबसे पृथ्वीराज और राजसिंहके बीचमें भी अदावत पड़ी. पृथ्वीराजके भाई भतीजे वग़ैरह रिश्तेदार राजपूतोंकी ज़ियादती थी, जब ज़ियादा अदावत बढ़ने लगी, तो महाराणा अमरसिंहके कुंवर कर्णसिंहने राव राजसिंह व पृथ्वीराजको बुलाकर आपसमें मेल रखनेकी बहुतसी नसीहतें कीं, उस वक्त तो वह इक़ार करके पीछा सिरोही चलागया, लेकिन् इनकी अदावतकी आगके शुअ्ले ज्यों के त्यों भड़कते रहे, तब राव राजसिंहने भैरवदास समरावतको जागीर देकर अपने पास रक्खा. मौक़ा देखकर पृथ्वीराजने भैरवदास समरावतको मारडाला, राव राजसिंह पृथ्वीराजसे दबकर न बोला, लेकिन् भैरवदासके बेटे रामदासको उसके बापकी जागीर देकर अपने पास रखलिया, आख़िरकार इस अदावतसे पृथ्वीराजके राजपूत सीसोदिया पर्वतसिंह व देवड़ा रामाके हाथसे राव राजसिंह मारागया, और उसका बेटा अक्षयराज दो वर्षकी उम्रमें विक्रमी १६७५ [हि० १०२७ = ई० १६१८] को सिरोहीकी गादीपर बैठा; इस बालक राजाकी हिमायत व हिफ़ाज़त महाराणा कर्णसिंहने अच्छी तरह की, पृथ्वीराज मए अपने मातहत राजपूतोंके अम्बावके पहाड़ोंकी तरफ़ चलागया, और सिरोहीके मुल्कमें लूटमार करतारहा; आख़िरकार पृथ्वीराज, अक्षयराजके राजपूतोंके हाथसे मारागया, और पृथ्वीराजके बेटे चांदाने बहुतसी लड़ाइयां कीं. राव अक्षयराजने महाराणा कर्णसिंहकी पर्वरिशको भूलकर महाराणा जगत्सिंहसे सरकशी की. महाराणाने भी फ़ौज भेजकर राव अक्षयराजको दुरुस्त किया.

इसी तरह बांसवाड़ेके रावल समरसीने भी महाराणा प्रतापसिंहकी अगली पर्वरिश को भूलकर बादशाही हिमायतका सहारा लिया. महाराणा जगत्सिंहने अपने प्रधान भागचन्दको फ़ौज देकर बांसवाड़े पर भेजा, रावल समरसी वहां से भागकर पहाड़ोंमें चलागया, सो प्रधान भागचन्द छः महीने तक वहां ही ठहरा रहा. रावल समरसीने अपने शहर व मुल्ककी बर्बादी के बाद २००००० दो लाख रुपया जुर्माने के तौर नज़ करके कुसूरकी मुआफ़ी चाही, उदयपुरसे भी उसकी तसल्ली कीगई. यह हाल किसी क़दर ग्राम बेड़वासकी बावड़ी की प्रशस्तिमें (जो इसी प्रधान भागचन्दके बेटे फ़तहचन्दकी बनवाई हुई है) लिखा है — (देखो शेष संग्रह नम्बर २).

महाराणा जगत्सिंहने अपनी बहिनकी शादी तो बीकानेरके महाराज कर्णसिंहके साथ की, और अपनी बेटी बूंदीके राव शत्रुशाल हाड़ाको व्याह दी. इन शादियोंमें लाखों रुपये इनआम व इक्राम वगैरहमें खर्च हुए. पहिले लिखागया है, कि बूंदीके राव शत्रुशालके बुजुर्ग उदयपुरकी ताबेदारी करते थे, जिनको बादशाह अक्बरने अपना नौकर बनाया था; शत्रुशालने इस खानदानसे बेटी मिलनेका मौक़ा ग़नीमत समझकर चारणोंको बहुतसे हाथी इनआममें दिये; लिखा है, कि महलोंकी सीढ़ियोंपर चढ़ते गये और फ़ी सीढ़ी एक एक हाथी देतेगये. एक चारण संडायच हरीदासको गफ़्लतसे हाथी न दियागया, तब हरीदासने नाराज़ होकर मारवाड़ी ज़बानमें यह दोहा कहा—

दोहा.

जाती काया सांसवें राव कवड्डी रेस ॥
शत्रशल माया ऊधमें छाया फल जगतेस ॥ १ ॥

इसका मत्लब यह है, कि बड़े सूम (कंजूस) शत्रुशाल एक कौड़ी के वास्ते अपने बदनको दुब्ला करते हैं, लेकिन् इस वक्त जो दौलत उड़ाते हैं, महाराणा जगत्सिंहकी छाया पड़नेका नतीजा है.

जब चित्तौड़की मरम्मत व डूंगरपुर, बांसवाड़ा और सिरोही वगैरह पर फ़ौजकशी करनेकी शिकायतें बादशाह शाहजहांके कान तक पहुंचीं, तो महाराणा जगत्सिंहने, जो बड़े बुद्धिमान थे, अपने सलाहकारोंसे राय ली, कि अब बादशाही गुस्से को ठंढा करना चाहिये वर्ना वही ढंग फिर होजायगा, जो अक्बर व जहांगीरके वक्तमें था. झाला राज कल्याणको मए एक हाथी व चन्द तुह्फ़ोंके दिल्लीकी तरफ़ रवाना किया, उसने बादशाह शाहजहांके दर्बारमें पहुंचकर महाराणाकी तरफ़से वह हाथी और तुह्फ़े नज़ किये. विक्रमी १६९० फाल्गुन कृष्ण ६

[हि० १०४३ ता० २० शअ्बान = ई० १६३४ ता० १९ फेब्रुअरी] को बादशाहने राज कल्याणको खुश होकर खिलअ्त और घोड़ा इनायत किया, और महाराणाके लिये उम्दा खिलअ्त और दो घोड़े, जिनमें से एकपर सुनहरी सामान और दूसरे पर सोनेका मुलम्मा कियाहुआ था, और एक हाथी देकर रुख़्सत किया.

जब बादशाही तक़ाज़ा ज़ियादा होनेलगा, कि एक हज़ार सवार जहांगीरी अहदके मुवाफ़िक़ दक्षिणमें भेजना चाहिये, तब महाराणाने भोपतराम (१) वग़ैरह राजपूतोंको भेजदिया; वहां उन लोगोंने शाही फ़ौजमें रहकर अच्छी कारगुज़ारी दिखाई. भोपतरामने विक्रमी १६९३ भाद्रपद शुक्ल पक्ष [हि० १०४६ रबीउस्सानी = ई० १६३६ सेप्टेम्बर] को दिल्ली पहुंचकर दक्षिणकी फ़त्हकी मुबारकबादी बादशाह शाहजहांको दी, और उदयपुर आया. कुछ अर्से बाद विक्रमी १६९४ [हि० १०४७ = ई० १६३७] में राज कल्याण झालाको कुछ चीज़ें बादशाहके वास्ते देकर महाराणाने रवाना किया, उसने वहां पहुंचकर बादशाही दर्बारमें सामान नज़्र किया. बादशाहने बहुत खुश होकर एक घोड़ा और एक हाथी राज कल्याणको और महाराणाके लिये बहुत उम्दा खिलअ्त और हाथी देकर रुख़्सत किया.

इसके बाद पौष कृष्ण १ [ता० १५ रजब = ता० ३ डिसेम्बर] को जब बादशाह शाहजहां अजमेरसे रवाना होनेलगा, तो महाराणा जगत्सिंहके कुंवर राजसिंहको, जो वहां गया था, जड़ाऊ खिलअ्त, खपुवा (२) और सोनेके सामानकी तलवार, हाथी घोड़ा तथा इनके साथवाले राजपूत राव बल्लू चहुवान और रावत मानसिंह चूंडावत वग़ैरहको खिलअ्त और घोड़े, और महाराणा जगत्सिंहके लिये हाथी देकर विदा किया.

विक्रमी १६९८ [हि० १०५१ = ई० १६४१] में महाराणा जगत्सिंहने अपनी माता जाम्बुवती बाईको द्वारिकानाथकी यात्राके लिये बड़ी फ़ौजके साथ भेजा; द्वारिकापुरीमें जाकर उन्होंने सोनेकी तुला वग़ैरह लाखों रुपयेका दान दिया, फिर पीछे उदयपुर आनेपर बाईजीराजको गंगास्नान करनेके लिये सोरमजीकी तरफ़ मए कुंवर राजसिंहके रवाना किया. वे शूकर क्षेत्र याने सोरमजीमें पहुंचे, तब बाईजीराज और कुंवर राजसिंहने सुवर्णकी तुला की. इसके सिवाय और भी लाखों रुपयेका धन वहां

(१) भोपतराम धरयावद वालोंका पूर्वज था.

(२) यह एक छोटी क़िस्मके हथियार का नाम है.

ख़ैरात किया. फिर पीछे बाईजीराज व महाराजकुमार उसी जर्रार फ़ौजके साथ उदयपुर आये, लेकिन् दोनों बार सफ़रमें जो बादशाही मुल्क रास्तेमें पड़ते थे इस से कहीं कहीं बेजा रोक टोकके सबब मुसल्मानोंसे छोटे छोटे बखेड़े भी होगये, जिनको शाही मुलाज़िमोंने बड़ी तूल तवील शिकायतोंके साथ लिखकर बादशाहके कान तक पहुंचाया. बादशाह दिलमें नाराज़ होकर महाराणा जगत्सिंहको फ़ौजी ताक़त दिखलानेके लिये तय्यार हुआ, कि जिससे कुल्ल राजपूतानाके राजपूत दबे रहें.

शाहजहांने ज़ाहिरा ख्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारतके बहानेसे विक्रमी १७०० मार्गशीर्ष कृ० ४ [हि० १०५३ ता० १८ शअ्बान = ई० १६४३ ता० १ नोवेम्बर] चन्द्रवारको आगरेसे रवाना होकर बाग़ नूरमन्ज़िलमें मकाम किया, और सय्यद खानेजहांको खिलअ्त उम्दा देकर आगरेकी हिफ़ाज़तके वास्ते छोड़ा, किश्वरखांके बेटे शैख़ अल्लाहदियाको, कि जो पहिले एक हज़ारी ज़ात और आठ सौ सवारका मन्सब रखता था, डेढ़ हज़ारी ज़ात और हज़ार सवारका मन्सब दिया. मार्गशीर्ष कृष्ण ६ [ता० २० शअ्बान = ता० ३ नोवेम्बर] को नूरमन्ज़िलसे बुस्तान सराय मक़ाम किया; सुबह रूपवासमें ठहरकर कितनेही अमीरोंको फ़त्हपुर की तरफ़ रुख़्सत करके आप वहां शिकार खेलने लगा, जहां सलाबतखांको नक़ारा व निशान मिला, और दो शेर बादशाहकी बन्दूक़से शिकार हुए. मार्गशीर्ष कृष्ण १० [ता० २४ शअ्बान = ता० ७ नोवेम्बर] को ख्वाजेजहांकी सरायके पास डेरा हुआ. इस मन्ज़िलमें इस्लामखां वगैरह कई सर्दार हाज़िर होगये. मार्गशीर्ष शुक्ल ३ [ता० १ रमज़ान = ता० १३ नोवेम्बर] को चाटसूके पास राजा जयसिंहने मए अपने बेटोंके आंबेरसे आकर हाज़िरी दी, क्योंकि उनकी राजधानी यहांसे क़रीब थी; मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [ता० ३ रमज़ान = ता० १५ नोवेम्बर] को महाराजा जयसिंहने एक हाथी और ९ घोड़े बादशाहको नज़ किये. मार्गशीर्ष शुक्ल ९ [ता० ७ रमज़ान = ता० २० नोवेम्बर] को जोगी तालाबपर मकाम हुआ, जो अजमेरके क़रीब है.

जब आगरेसे जर्रार फ़ौजके साथ बादशाहका रवाना होना अजमेरकी तरफ़ सुना, तो महाराणा जगत्सिंहने सोचा, कि चित्तौड़की मरम्मत कराना व डूंगरपुर, बांसवाड़ व सिरोहीपर फ़ौजका भेजना और तीर्थ यात्रामें हमारी फ़ौजका शाही मुलाज़िमोंके साथ कुछ कुछ बखेड़ा करना और बादशाह जहांगीरके वक्त बड़े कुंवर को शाही दर्बारमें भेजनेका जो इक़ार हुआ था, उसमें भी हमारी गद्दी नशीनीके बाद टाला टूली रहना, नापसन्द हुआ; ज़ुरूर अजमेरकी ज़ियारतके बहानेसे बादशाहका इरादा मेवाड़ पर चढ़ाई करनेका होगा, क्योंकि पहिले भी बादशाह अक्बरने

शिकारके बहानेसे आगरेको छोड़कर चित्तौड़की तरफ़ कूच किया था, और जहांगीरने भी विक्रमी १६७० [हि० १०२२ = ई० १६१३] में अजमेरमें रहकर मेवाड़पर फ़ौज भेजी थी. इसलिये कुंवर राजसिंहको बादशाही दर्बारमें भेजकर सफ़ाई करलेना चाहिये. इस ख़यालसे कुंवर राजसिंहको उदयपुरसे रवाना किया. वे अजमेरके नज़्दीक जोगी तालाबपर शाही दर्बारमें पहुंचे, और वहां हाज़िर होकर एक हाथी नज़ किया, बादशाहने भी इनकी हाज़िरीसे खुश होकर कुंवर राजसिंहको ख़िलअ़त उम्दा और सरपेच, जड़ाऊ जम्धर और घोड़ा मए सोनेके सामानके दिया.

विक्रमी १७०० मार्गशीर्ष शुक्ल १० [हिज्री १०५३ ता० ८ रमज़ान = ई० १६४३ ता० २१ नोवेम्बर] को बादशाह मक़ाम अजमेरके तालाब आनासागरकी पालपर पहुंचे, वहां ख़्वाजह मुई नुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारत करके रु० १०००० दस हज़ार वहांके ख़ादिम और मुहताजोंको देकर डेरोंमें आये, फिर अपने शिकार किये हुए रोझके गोश्तका पुलाव बड़ी देग (१) में पकवाकर मुहताजोंको खिलाया. इसी मक़ामपर महाराजा जशवन्तसिंह जोधपुरवाला भी हाज़िर हुआ, और आंबेरके महाराजा जयसिंहने पांच हज़ार सवार राजपूतों समेत हाज़िरी दी. पौष कृष्ण १ [ता० १५ रमज़ान = ता० २७ नोवेम्बर] को बादशाहने आगरेकी तरफ़ कूच किया, और महाराजा जशवन्तसिंह व महाराजा जयसिंहको ख़िलअ़त देकर अपने अपने वतन जानेकी रुख़्सत दी, और महाराजा जयसिंहके कुंवर रामसिंह और कीर्तिसिंहको घोड़ा और सिरोपाव देकर उनके बापके साथ विदा किया. पौष कृष्ण २ [ता० १६ रमज़ान = ता० २८ नोवेम्बर] में कुंवर राजसिंहको ख़िलअ़त उम्दा, तलवार, ढाल व सामान सुनहरी मीनाकार समेत घोड़ा व हाथी तथा कुछ ज़ेवर जो राजपूत राजा पहनते थे, और अव्वल दरजेके दो सर्दारोंको ख़िलअ़त और घोड़े और आठ सर्दारोंको ख़िलअ़त दिये, और महाराणा जगत्सिंहके वास्ते मोतियोंकी माला और तलवार, ढाल सुनहरी मीनाकारीकी व दो घोड़े, एक अरबी और एक इराक़ी मए सोने के सामानके देकर रुख़्सत किया. पौष कृष्ण ४ [ता० १८ रमज़ान = ता० ३० नोवेम्बर] के दिन सादुल्लाखांको ख़िलअ़त और डेढ़ हज़ारी ज़ात और तीन सौ सवारसे दो हज़ारी ज़ात व पांच सौ सवारका मन्सब देकर ख़िदमत मीरसामानीपर मुक़र्रर किया. पौष कृष्ण १० [ता० २४

---

(१) इस देगमें १४५ मन बादशाही तोलके चावल, गोश्त, घी, मसाला वगैरह एकबार पकता है, इसे बादशाह जहांगीरने हिज्री १०२३ [वि० १६७१ = ई० १६१४] में बनवाकर भेट किया था.

रमज़ान = ता० ६ डिसेम्बर] को मालपुरेमें मकाम हुआ, जो राजा बिट्ठलदास गौड़की जागीरमें था; राजा बिट्ठलदासने एक हाथी और एक हथनी बादशाह को नज़ की; जिसमेंसे हथनी रक्खी गई. रामपुरकी तरफ़ होतेहुए पौष शुक्ल १ [ता० आख़िर रमज़ान = ता० १२ डिसेम्बर] को बाड़ी पहुंचे, वहां राजा कृष्णसिंह भदौरियेके मरनेकी ख़बर पहुंची. कृष्णसिंहके औलाद न होनेके सबब उसके भतीजे बदनसिंहको गोद रखकर राजाका ख़िताब व ख़िलअ़त और मन्सब इनायत किया, और अब्दुल्लाखां फ़ीरोज़जंगकी जागीर ज़ब्त होकर जो रु० १००००० एक लाख सालियाना नक़्द मुक़र्रर होगये थे, बादशाहने फिर मिहर्बान होकर छः हज़ारी ज़ात व छः हज़ार सवारका मन्सब दिया. इसके बाद माघ कृष्ण १ [ता० १५ शव्वाल = ता० २७ डिसेम्बर] को बादशाह आगरे दाख़िल होगये. कुंवर राजसिंह भी बादशाहसे रुख़सत होकर उदयपुर आये.

जब राव अमरसिंह राठौड़ नागौर वाला आगरेमें सलाबतखांको मारकर शाही दर्बारमें अर्जुन गौड़के हाथसे मारागया और यह बात मश्हूर हुई, उस वक़ राठौड़ बल्लू चांपावत व राठौड़ भावसिंह कूंपावत, जो बादशाही नौकर थे, अमरसिंहके मकानके पास रहते थे. अर्जुन गौड़का मकान भी अमरसिंह के मकानके पासही था. अमरसिंहके आदमियोंमेंसे जिनका जी नहीं ठहरा वे तो उसी वक़ भागकर नागौरकी तरफ़ चलेगये, और कितने ही राजपूतोंने अर्जुन गौड़को मारकर अपने मालिकका बदला लेना चाहा, बल्लू व भावसिंह भी इनके शरीक होगये; जिस वक़ बल्लू राठौड़ मरनेके लिये तय्यार हुआ उसी वक़ महाराणा जगत्सिंहका भेजाहुआ नीला घोड़ा उसके पास पहुंचा.

यह इस तरह हुआ, कि राठौड़ बल्लू चांपावत जोधपुरके महाराज सूरसिंहके पास रहता था, इसका मिज़ाज बहुत तेज़ था, सो कुछ तक्रार होनेके सबब उदयपुर में महाराणा अमरसिंहके पास आरहा, फिर कुछ अर्से बाद महाराणा कर्णसिंहके वक़ कुंवर अमरसिंह राठौड़ने इसको बुलालिया अमरसिंह बादशाही मन्सबदार होगया, तब इन दोनों राजपूतोंको भी शाही ख़िदमतमें हाज़िर किया, और बादशाही मुलाज़िम बनवाया. कुछ अर्सेके बाद उदयपुरमें महाराणा जगत्सिंह के पास एक काठियावाड़ी चारण तीन घोड़े लाया और हर एक की क़ीमत दस हज़ार रुपये बयान की. रुपये ज़ियादा होनेके बाइस एतराज़ हुआ, तब उस सौदागरने घोड़ोंका सख़्त इम्तिहान करनेको कहा, उसी तरह एक घोड़ेका इम्तिहान किया गया, उस घोड़ेके दोनों बग़लमें पूरे पूरे पेशक़ब्ज़ मारकर जितनी दूरका वादा

कियागया था, वहांतक घोड़ेने बराबर धावा किया, और फिर घोड़ा मरगया. सौदागरको तीस हज़ार रुपये तीनों घोड़ोंके दियेगये, एक इम्तिहानमें मरा, दो बाक़ी रहे; महाराणाने फ़र्माया, कि एक घोड़ेपर हम चढ़ेंगे, और दूसरा बल्लू चांपावतके लायक़ है; उस दूसरे नीले घोड़ेको मए सामानके आगरेकी तरफ़ रवाना किया, वह घोड़ा उसी वक्त पहुंचा कि जब बल्लू मरनेको तय्यार होरहा था. घोड़ेपर सवार होकर महाराणा जगत्सिंहसे अर्ज़ करवाई, कि मुझको ऐसे वक्तमें घोड़ा इनायत करके पूरा राजपूत बनाया, जिसका शुक्रिया अदा नहीं कर सक्ता, मैं तो माराजाऊंगा और इसका बदला ईश्वर आपको देगा. यह कहकर बल्लू चांपावत मारागया, जिसका हाल मौक़ेपर लिखा जायगा.

जबसे महाराणा जगत्सिंहने मेवाड़का राज्य पाया, तबसे वह मज़्हबी अक़ीदोंको तरक़्क़ी देते रहे, विक्रमी १७०४ [हि० १०५७ = ई० १६४७] में ॐकारनाथकी यात्रा करनेके लिये उदयपुरसे कूच किया, पहिला मक़ाम उदयसागरकी पालपर हुआ; पालके नीचे नालेपर अपने बनवाये हुए महलोंमें, जो शिकस्ता अभी तक मौजूद हैं, रात रहे, वहांसे मन्ज़िल बमन्ज़िल बड़े लश्करके साथ उज्जैन पहुंचे, जहां मालवेका सूबेदार रहता था. सूबेदारसे कुछ बिगाड़ होगया, लेकिन् फ़ौजकी ज़ियादतीके सबब वह दब गया, वहांकी तीर्थ यात्रा और क्षिप्रा (छपरा) नदी का स्नान करके मान्धातापुरी (ॐकारनाथ) में पहुंचे, और नर्मदा स्नान करनेके बाद विक्रमी १७०५ आषाढ़ कृष्ण ३० [हि० १०५८ ता० २९ जमादियुल्अव्वल् = ई० १६४८ ता० २२ जून] को सुवर्णका तुला दान (१) किया–(शेषसंग्रह प्रशस्ति नम्बर ३), और पीछे उदयपुर पधारे. मालवेके सूबेदार ने महाराणाकी बड़ी लम्बी चौड़ी शिकायत शाही दर्बारमें लिख भेजी, जिससे बादशाह दिलसे नाराज़ हुआ, परन्तु शाहजहां अपने पिताके ज़मानेमें उदयपुरकी सुलह अपनी मारिफ़त होना व शाहज़ादगीमें अपनी पनाहकी जगह जानकर दरगुज़र करता था.

फिर इन महाराणाने राजधानी उदयपुरमें जगन्नाथरायजीका मन्दिर बनवाकर विक्रमी १७०९ द्वितीय वैशाख शुक्ल १५ गुरु वार [हि० १०६२ ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० १६५२ ता० २४ मई] को प्रतिष्ठा की–(शेषसंग्रह, नम्बर ४), जिसमें कृष्ण भट्टको बहुत दान दिया, मुकुन्द व भूधर गजधरको बहुत इनआम दिया. इस मन्दिरके

---

(१) इस तुला दानका तोरण कृति श्वेत पाषाणका ॐकारनाथके द्वारपर है, और काले पत्थरकी प्रशस्ति मन्दिरकी दक्षिणी दीवारमें अभीतक मौजूद हैं.

पास उत्तर दिशा एक दूसरा मन्दिर इन महाराणाकी धायने इसी ज़मानेमें बनवाया- (शेषसंग्रह, प्रशस्ति नम्बर ५). इन महाराणाने इसी वर्षके अख़ीरमें तीर्थ यात्रा करनेका इरादा किया था, लेकिन् ईश्वरेच्छासे वह न होसका, उनकी उम्रका भी अन्त आचुका था; आख़िरकार विक्रमी १७०९ कार्तिक कृष्ण ४ [हि० १०६२ ता० १८ ज़ीक़ाद = ई० १६५२ ता० २५ ऑक्टोबर] को इस संसारसे परलोक निवासी हुए.

इन महाराणाके देहान्तसे हिन्दुस्तानके अक्सर लोगोंको बड़ा ही रन्ज हुआ; इनकी प्रकृति मिलनसार रहमदिल् थी, कभी कभी लोगोंके कहनेसे बेरहमी भी करते थे, परन्तु बहुत कम; यह बुलन्द हिम्मत थे, इनकी बख़्शिश मश्हूर है, कि अपनी गद्दीनशीनीके दिनसे देहान्त तक हर साल सुवर्णका तुलादान करते थे, तुलादानके चिन्ह सफ़ेद पत्थरके तोरण, ऊँकारनाथ व श्री एकलिंगजीकी पुरी व उदयपुरमें बड़ीपोलके भीतर पूर्वी दीवारपर खड़े हैं. यह अपने मज़्हबके बड़े पाबन्द थे, ब्राह्मण और चारणोंको इन्होंने जो दान दिया उसकी संख्याका एक दोहा मश्हूर है--

दोहा.

सिन्धुर दीधा सातसै हैवर छपन हज़ार ॥
एकावन सासण दिया जगपत जगदातार ॥ १ ॥

इसी तरह एक श्लोक भी लिखा है-

लक्षं हयान् सप्त शतं गजानां ग्रामान् शतं षोडश दान युक्त ॥
योदत्तवानर्थि जनाय भूपतिः कस्तंनृपं स्तोतु मिह प्रसज्येत् ॥ १ ॥

ऊपरके दोहे और श्लोकमें इख़्तिलाफ़ है, इसका यह सबब मालूम होता है, कि दोहेमें जो दिये हुए हाथी, घोड़े, ग्राम हैं, वह तादाद चारणोंको मिलनेकी है, और श्लोकमें ब्राह्मण चारण वग़ैरह कुल्लको मिलनेकी तादाद होगी. दोहेकी तादाद- हाथी ७००, घोड़े ५६०००, ग्राम ५१. श्लोककी तादाद- हाथी ७००, घोड़े १०००००, और ग्राम १००. उनके प्रजापालन व नौकरोंकी पर्वरिशका बयान अबतक मेवाड़के छोटे बड़े लोगोंकी ज़बानपर जारी है. एक दोहा मारवाड़ी भाषामें आम लोगोंकी ज़बानी मश्हूर है-

दोहा.

साईं करे परेवड़ा जगपतरे दरबार ॥
पीछोले पाणी पियां कण चुग्गां कोठार ॥ १ ॥

मतलब इसका यह है, कि ईश्वर हमको जानवर भी बनावे, तो जगत्सिंहके दर्बारका कबूतर करे, ताकि पीछोले तालाबमें पानी पियें और कोठारके दाने चुगें. इन महाराणाका दर्मियानीक़द, मज्बूत बदन, बड़ी आंख, चौड़ी पेशानी, हंस मुख चिहरा, और सियाही माइल गेहुवां रंग था; इन्होंने चित्तौड़गढ़की मरम्मत करवाई, माला बुर्ज, पाडल पौल, लक्ष्मण पौलका शुरू तो महाराणा कर्णसिंहने किया था, लेकिन् इन्होंने तमाम तय्यार कराया; जगमन्दिरोंमें बड़ा गुम्बज़ महाराणा कर्णसिंहने तय्यार करवा-दिया था, लेकिन् इन्होंने ज़नाना महल व बाग़ीचा वग़ैरह बनवाकर उन महलोंका जगमन्दिर नाम रक्खा, और अपने संग्रहीता स्त्री अर्थात् ख़वासके बेटे मोहनदासके नामसे छोटासा मोहनमन्दिर महल पीछोलेमें बनवाया, जो शहरके पास पश्चिम तरफ़को है, इन्होंने उदयसागर तालाबकी पालके नीचे पूर्वी तरफ़ नालेपर महल बनवाया. इन महाराणाके पुत्र २, बड़े **राजसिंह और छोटे अरिसिंह** थे. महाराणाका जन्म विक्रमी १६६४ भाद्रपद शुक्ल ३ [हि० १०१६ ता० १ जमादियुल्-अव्वल् = ई० १६०७ ता० २५ ऑगस्ट] को हुआ था.

अबुल् मुज़फ़्फ़र शिहाबुद्दीन मुहम्मद ख़ुर्रम, साहिब क़िराने सानी,

शाहजहां बादशाह.

इस बादशाहका जन्म हिज्री १००० ता० आख़िर रबीउल्अव्वल् [वि० १६४८ माघ शुक्ल १ = ई० १५९२ ता० १७ जैन्यूअरी] को हुआ. जब बादशाह जहांगीरका देहान्त हुआ, उस समय एक साथ तहल्का मचगया, परन्तु आसिफ़्ख़ां बड़ा होशियार आदमी था, जिसने शाहज़ादे खुस्रौके बेटे बुलाक़ीको क़ैदसे निकालकर नामके वास्ते तख़्तपर बिठाया, और अपने दामाद शाहजहांके पास बनारसी नामी क़ासिदको अपने नामकी अंगूठी देकर दक्षिणकी तरफ़ रवाना किया.

नूरजहां बेगम अपने दामाद शहरयारको तख़्त नशीन करना चाहती थी, उसने आसिफ़्ख़ांको बुलाया, लेकिन् वह न गया; सब लोग जहांगीरकी लाश लेकर नूरजहां सहित लाहौर पहुंचे, वहां नूरजहांके बाग़में उसको दफ़्न किया. सब अमीर आसिफ़्ख़ांकी दिली ख़्वाहिशको जानते थे, कि वह अपने दामाद शाहजहांको

तख़्तनशीन करेगा, इसलिये उससे मिलावट करने लगे. ये लोग तो फ़ौज सहित नदीके पार थे, शाहज़ादे शहरयारने लाहौरमें खज़ाने व शाही कार्ख़ानोंपर क़ब्ज़ा किया और बहुतसे इनआम इक्राम व मन्सब देनेलगा, एक फ़ौज एकट्ठी करके आसिफ़ख़ां वगैरहकी फ़ौजसे सामना किया. नूरजहां बेगम आसिफ़ख़ांकी हिरासतमें नज़रबन्द थी, लड़ाईमें शहरयार हारकर भागा, और क़िले लाहौरमें जा घुसा. आख़िरकार वह गिरिफ़्तार होकर बुलाक़ीके सामने लाया गया, फिर अल्लाहवर्दीख़ांकी सुपुर्दगीमें क़ैद हुआ और उसकी आंखोंमें सलाई फेरदीगई; शाहज़ादे दानयालके दो बेटे तहमूर्स और हौशंग भी, जो शहरयारके सिपहसालार बने थे, गिरिफ़्तार होकर क़ैद कियेगये.

बनारसी क़ासिद आसिफ़ख़ांकी मुहर लेकर २० दिनमें निज़ामुल्मुल्ककी हद मुल्क दक्षिणके खैबर मक़ामपर शाहज़ादेके लश्करमें पहुंचा. पहिले महाबतख़ांसे सब हाल कहा, जो उसको शाहजहांके पास लेगया, और आसिफ़ख़ांकी अंगूठी नज़ करके उसकी खैरख़्वाहीका हाल बयान किया. शाहजहांने उसी समय एक फ़र्मान आसिफ़ख़ांके नाम लिखकर अमानुल्लाह व बायज़ीदख़ांके हाथ अपनी रवानगीके बारेमें भेजा, और दूसरा फ़र्मान दक्षिणके सूबेदार ख़ानेजहांके पास जांनिसारख़ांके हाथ पहुंचाया, लेकिन् ख़ानेजहांने शाहजहांके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई की. निज़ामुल्मुल्कसे मिलकर कुछ मुल्क तो उसके सुपुर्द किया, और आप मए राजा गजसिंह जोधपुरवाले व राजा जयसिंह आंबेरवाले वगैरह शाही सर्दारोंके मांडूमें पहुंचकर दक्षिण व मालवेमें क़ब्ज़ा करलिया, क्योंकि वह जहांगीरका बड़ा एतिबारी सर्दार और शाहजहांका दुश्मन था.

शाहजहांने हिज्री १०३७ ता० २३ रबीउल्अव्वल् [वि० १६८४ मार्गशीर्ष कृष्ण ९ = ई० १६२७ ता० ४ डिसेम्बर] को कूच किया. नाहरख़ां उर्फ़ शेरख़ांकी अर्ज़ी अहमदाबादसे पहुंची, कि बन्दह तो आपका नौकर है, परन्तु सैफ़ख़ांका दिल बिल्कुल फिराहुआ है. इस अर्ज़ीके जवाबमें शेरख़ांको अहमदाबादका सूबेदार मुक़र्रर करके सैफ़ख़ांको गिरिफ़्तार करलानेका हुक्म दिया, लेकिन् बादशाहकी बेगम मुम्ताज़महलकी बहिन (आसिफ़ख़ांकी दूसरी बेटी) का विवाह सैफ़ख़ांके साथ हुआ था, इस ख़यालसे ख़िद्मतपरस्तख़ांको भेजदिया, कि सैफ़ख़ांको नज़रबन्द हमारेपास लेआवे, और उसे किसी तरहकी तक्लीफ़ न हो. शाहजहां, नर्मदा पार होकर सिनौरमें पहुंचा, वहीं सालगिरहका जश्न किया, और ख़िद्मतपरस्तख़ां सैफ़ख़ांको लेकर हाज़िर हुआ. शाहजहांने मुम्ताज़महलकी सुफ़ारिशसे उसे छोड़दिया. फिर वहांसे अहमदाबादमें पहुंचकर कांकरिया

तालाबपर ठहरा और शेरखांको पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब देकर गुजरात का सूबेदार बनाया; मिर्ज़ा ईसातरखांको चार हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब और पटनेकी सूबेदारी मिली. सात दिन तक यहीं ठहरे, और उसी जगहसे एक खास दस्तख़ती फ़र्मान आसिफ़्ख़ांके नाम ख़िदमतपरस्तख़ांके हाथ लिखकर लाहौर भेजा, कि इस वक्त बहुत सख़्त गर्मी पड़रही है, अगर दावरबख़्श व गुर्शास्प ख़ुस्रौके बेटे और शाहज़ादा शहरयार व शाहज़ादे दानयालके बेटे तहमूर्स व होशंग, पांचोंको मारडालाजावे, तो सब झगड़ा दूरहोकर बे फ़िक्री हो.

हिज्री १०३७ ता० २२ जमादियुल्अव्वल् [वि० १६८४ माघ कृष्ण ८ = ई० १६२८ ता० ३० जैन्यूअरी] को "अबुल्मुज़फ़्फ़र शिहाबुद्दीन मुहम्मद साहिब क़िराने सानी शाहजहां बादशाह गाज़ी" के नामसे लाहौरमें खुत्बा पढ़ागया. उसी वक्त दावरबख़्श क़ैद हुआ, और उसी महीनेकी २५ तारीख़ [वि० माघ कृष्ण ११ = ता० २ फ़ेब्रुअरी] को रज़ाबहादुरके हाथसे पांचों शाहज़ादे लाहौरमें मारेगये (१). शाहजहां अहमदाबादसे कूच करके गोगूंदे आया, वहां महाराणा कर्णसिंहने मुलाक़ात (२) की. दस्तूरके अनुसार नज़्र व बख़्शिश हुई; महाराणाने अपने छोटे भाई अर्जुनसिंहको फ़ौज सहित शाहजहांके साथ करदिया. उस (शाहजहां) ने अपने लश्करकी हरावलमें अर्जुनको मुक़र्रर किया. फिर मांडल के तालाबपर ३६ वर्षकी उम्र पूरी होकर सैंतीसवां साल शुरू होने के सबब शाहजहांकी सालगिरहका जश्न (उत्सव) सूर्यके हिसाबसे हुआ.

ता० १७ जमादियुल् अव्वल् [माघकृष्ण ३ = ता० २५ जैन्यूअरी] को अजमेरमें पहुंचकर ख़्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारत की, और एक मस्जिद संग मरमरकी वहां बनवाई, जो अबतक मौजूद है. ता० २६ जमादियुल्अव्वल् [माघ कृष्ण १२ = ता० ३ फ़ेब्रुअरी] गुरुवार को रात्रिके वक्त आगरे पहुंचकर नूरजहांके बाग़में ठहरा, और ता० ८ जमादियुस्सानी [फाल्गुन् कृष्ण १४ = ता० ७ मार्च] को तख़्तपर बैठकर अपना ख़िताब "अबुल् मुज़फ़्फ़र शिहाबुद्दीन मुहम्मद साहिब क़िराने सानी शाहजहां बादशाह

---

(१) मारवाड़की ख्यातमें लिखा है, कि इस वक्त शाहजहांके हुक्मसे आसिफ़्ख़ांने शाही ख़ान्दानके १८ शाहज़ादोंकी जान ली, एक दोहा भी इस बाबत मारवाड़ी भाषामें मश्हूर है—

दोहा.

सबल् सगाई नागिणे। ना सबलांसूं सीर॥ खुरम अठारा मारिया। कीका, काका, बीर॥ १॥

(२) यह मिलना शाहज़ादगीके तौरपर ही हुआ था.

गाज़ी" खुतबों व फ़र्मानोंमें जारी किया, इसी जुलूसमें राजा भीमसिंह अमरसिंहोतके बेटे रायसिंहको दो हज़ारी ज़ात और एक हज़ार सवारका मन्सब दिया. उस वक्त रायसिंह बहुत बालक था, लेकिन् भीमसिंहकी बहादुरी व उम्दा ख़िद्मतोंपर ख़याल रक्खा, और टोडेका परगना जो भीमसिंहको जहांगीरसे मिला था, (और अब जयपुरके राज्यमें है) रायसिंहको कितने ही नये परगनों समेत इनायत किया.

इस बादशाहने सिज्देका रिवाज, जो अक्बरके अहदसे जारी था, बदलकर ख़ाली ज़मीनसे हाथ लगाकर सलाम करनेका तरीक़ा बांधा, और आलिम व सय्यद लोगोंके लिये सलामके एवज़ ख़ाली हाथ उठाकर दुआ पढ़देना क़रार पाया. आसिफ़ख़ांको आठ हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया, और महाबतख़ांको ख़ान्ख़ानांका ख़िताब, सिपहसालारीका उहदा व सात हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया, इसके सिवाय और भी कई आदमियोंको मन्सब दियेगये, जिनकी फ़िहरिस्त आख़िरमें लिखी जायगी.

इसी सन्की ता० १ रजब [फाल्गुन् शुक्क ३ = ता० १० मार्च] को दाराशिकोह लाहौरमें हाज़िर हुआ, और इरादतख़ांको विज़ारतका उहदा मिला. ता० १८ रजब [चैत्र कृष्ण ४ = ता० २७ मार्च] को क़ासिमख़ां व राजा जयसिंहको महाबनका फ़साद मिटानेके लिये भेजा. फिर ता० २३ शअ्बान [वि० १६८५ वैशाख कृष्ण ९ = ता० २९ एप्रिल] को सात वर्षकी उम्रमें सुरय्याबानू का देहान्त हुआ, जो इस बादशाहकी बेटी थी. इसके बाद ता० ४ रमज़ान [वैशाख शुक्क ११ = ता० ८ मई] को शाहज़ादा दौलतअफ्ज़ा पैदा हुआ, और क़ासिमख़ां व राजा जयसिंह महाबनका बन्दोबस्त करके लौटआये. बल्ख़ व बदख़्शांके बादशाह नज़्रमुहम्मदने काबुलपर चढ़ाई की, लेकिन् वह शिकस्त खाकर पीछा चलागया. महाबतख़ां ख़ान्ख़ानांको काबुलका बन्दोबस्त करनेके लिये भेजा, जिसके साथ नीचे लिखे हुए सर्दार थे-

राव रत्न सरबलन्दराय हाड़ा, राजा रायसिंह कछवाहा, सर्दारख़ां, बीकानेरका राव सूर व मोतमदख़ां वग़ैरह. इनके वहां पहुंचनेपर तुर्क लोग काबुलसे भागगये.

हिज्री ता० १५ ज़िल्हिज [वि० भाद्रपद कृष्ण १ = ई० ता० १७ ऑगस्ट] को क़ासिमख़ांको बंगालेकी सूबेदारी मिली, और महाबतख़ांके बेटे ख़ानेजहांको दाक्षिण, बरार और ख़ान्देशकी सूबेदारी दीगई. बीजापुर और गोलकुंडेके बादशाहोंने कुछ तुहफ़े और अर्ज़ियां बादशाहके पास भेजीं.

हिज्री १०३८ [वि० १६८५ = ई० १६२९] में महाबतखां काबुलसे लौट आया, और तूरानके बादशाह इमामकुलीखांके पास शाहजहांने एल्ची भेजा; अब्दुल्लाखांने जुझारसिंह बुंदेलेके कई क़िले लेलिये, आख़िरमें महाबतख़ांकी मारिफ़त सुलह होगई. इसके बाद बालाघाटका इलाक़ा, जो ख़ानेजहां लोदी पहिले सूबेदारने कई किरोड़ रुपये लेकर दक्षिणियोंको देदिया था, बादशाह शाहजहांकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ निज़ामुल्मुल्कने वापस दे दिया. इसी सालकी ता० ८ रमज़ान [वि० १६८६ वैशाख शुक्ल ६ = ई० १६२९ ता० २९ एप्रिल] को शाहज़ादा दौलत-अफ़्ज़ा मरगया, और ईरानके शाह अब्बासने बहरी बेगको एल्ची बनाकर शाहजहांके पास भेजा. ख़ानेजहां लोदी बादशाहसे बाग़ी होकर भागा, जिसके पीछे नीचे लिखे हुए सर्दारोंको भेजा-

ख़्वाजह अबुल्हसन, ख़ानेज़मां, सय्यद मुज़फ़्फ़रखां, राजा जयसिंह कछवाहा, नसीरीख़ां, फ़िदाईख़ां, बीकानेरका राव सूर, राजा बिट्ठलदास गौड़, राजा भारथ बुंदेला, सर्दारख़ां, मोतमदख़ां, ख़िदमतपरस्तख़ां, माधवसिंद हाड़ा, राय हरचन्द परिहार वग़ैरह. इनमेंसे मुज़फ़्फ़रख़ां और राजा बिट्ठलदास धौलपुरके पास जल्द जापहुंचे, सामना होनेपर ख़ानेजहां भाग गया, दोनों तरफ़के बहुतसे आदमी मारेगये, फिर ख़ानेजहां भागकर निज़ामुल् मुल्कके पास चलागया.

हिज्री १०३९ ता० ८ जमादियुल्अव्वल् [वि० १६८६ पौष शुक्ल ६ = ई० १६२९ ता० २१ डिसेम्बर] को बादशाह शाहजहां दक्षिणकी तरफ़ रवाना हुआ. ता० २० रजब [चैत्र कृष्ण ६ = ई० १६३० ता० ५ मार्च] को फ़ौजके तीन हिस्से किये. एक इरादतख़ांके साथ, जिसमें जुझारसिंह बुंदेला, रिज़वांख़ां मश्हदी, इक्रामख़ां फ़तहपुरी, नूरुद्दीन कुली, राव दूदा चन्द्रावत रामपुरेका, राजा भगवानदास कछवाहेका पोता और माधवसिंहका बेटा शत्रुशाल कछवाहा, कर्मसी राठौड़, अहमदख़ां नियाज़ी, राजा द्वारिकादास कछवाहा, बलभद्र शेख़ावत, मीरअब्दुल्ला, मुग़लख़ां, श्यामसिंह सीसोदिया जगमालोत, राजा गिर्धर, मुल्तफ़ितख़ां, इह्तिमामख़ां, राव मनोहरका पोता मुल्कचन्द, रामचन्द्र हाड़ा, जगन्नाथ राठौड़, मुकुन्ददास जादव, उदयसिंह राठौड़, याकूतख़ां हबशी, मालू घोसलाके भाई खेलू और मन्ना, पर्सू भूंसला वग़ैरह, कुल् बीस हज़ार सवार मुक़र्रर हुए.

दूसरी फ़ौजका अफ़्सर राजा गजसिंह था, जिसके साथ नुस्रतख़ां, बहादुरख़ां रुहेला, राजा बिट्ठलदास गौड़, अनीराय बड़गूजर, राजा मनरूप कछवाहा, जांनिसारख़ां, रावल पूंजा डूंगरपुर वाला, शरीफ़ख़ां, भीम राठौड़,

राजा बीरनरायण बड़गूजर, ख़ानेजहां काकड़, ख़न्जरख़ां, उस्मान् रुहेला,

हबीब सूर, मीर फ़ैजुल्ला, गोकुलदास सीसोदिया, नूरमुहम्मद अरब, करीम दादबेग काक़्शाल, नरहरदास झाला, राव हरिचन्द परिहार और ऊदाराम वगैरह, कुल्ल पन्द्रह हज़ार सवार कियेगये.

तीसरी फ़ौजमें शायस्ताखांके मातहत, सिपहदारखां, राजा जयसिंह कछवाहा, फ़िदाईखां, बीकानेरका राव सूर, पहाड़सिंह बुंदेला, अल्लाह वर्दीखां, माधवसिंह हाड़ा, राजा रोज़्अफ़्ज़ूं, मरहमतखां, चन्द्रमन बुंदेला, राजा कृष्णसिंह भदौरिया, भगवानदास बुंदेला, इमाम कुली, रावत् राव, आतिशखां हबशी, आसिफ़्खांकी जागीरके तीन हज़ार सवार, महाराणा जगत्सिंहके काका अर्जुनसिंहके साथवाले पांच सौ सवार, और दूसरे मन्सबदार वगैरह, सब पन्द्रह हज़ार सवार थे; कुल्ल फ़ौजकी तादाद ५०००० थी.

ता० २६ रजब [चैत्रकृष्ण १२ = ता० ११ मार्च] को बादशाह बुर्हानपुर पहुंचे, और फ़ौजोंको आगे बढ़ाया. हिज्री ज़ीक़ाद [वि० १६८७ प्रथम आषाढ़ = ई० जून] में खांनेजहां और उसके मददगार दक्षिणियोंसे मुक़ाबला करके शाहजहां के नीचे लिखे हुए सर्दार मारे गये-

इमाम कुली, रहमानुल्ला, शत्रुशाल कछवाहा अपने दो बेटों भीमसिंह व अनन्दसिंह सहित, राव चन्द्रसेन राठौड़का पोता कर्मसी, बलभद्र शैखावत, जयमल्ल मेड़तियेका पोता और केशवदासका बेटा राजा गिरधर राठौड़ वगैरा कई दूसरे लोग बहादुरीसे लड़कर मारे गये. राजा द्वारिकादास शैखावत ज़ख्मी होकर गिरगया, और मुल्तफ़तखां व राव दूदा चन्द्रावतने भागकर जान बचाई.

हिज्री १०४० रबीउस्सानी [वि० १६८७ कार्तिक = ई० १६३० नोवेम्बर] को आज़मखांकी मातहतीमें खांनेजहां लोदी पर राजा जयसिंह व अर्जुनसिंह महाराणा अमरसिंहके बेटे वगैरहने हम्ला किया, जिससे दक्षिणी भाग गये, और परगना जामखेड़ा फ़ौजने अपने क़ब्ज़ेमें करलिया. इसी सन्के जमादियुस्सानी [वि० पौष = ई० १६३१ जैन्यूअरी] को दर्याखां दक्षिणी मारागया, और क़िला धारोड़ शाहजहांकी फ़ौजने दक्षिणियोंसे छीन लिया.

हिज्री ता० २८ जमादियुस्सानी [वि० माघ कृष्ण १४ = ई० ता० १ फ़ेब्रुअरी] को खानेजहां बाग़ीपर सख्त हमला हुआ, और उसके बेटे व साथी मारेगये. खाने-जहां भागकर कालिन्जरके इलाक़ेमें सय्यद मुज़फ़्फ़रखां और माधवसिंहसे मुक़ाबला करके मारागया, और १०० आदमी व उसके बेटे क़त्ल हुए; बादशाही तरफ़के २८ आदमी मारेगये, और कुछ ज़ख्मी हुए. इसी साल दक्षिण व गुजरात वगैरहमें बारिशकी कमीसे बड़ा भारी अकाल पड़ा; राजा बिट्ठलदास गौड़को उसकी कारगुज़ारीके एवज़ रणथम्भोरका क़िला दियागया.

इसी सालकी तारीख़ १७ ज़िल्क़ाद [वि० १६८८ आषाढ़ कृष्ण ३ = ई० ता० १७ जून] को बादशाहकी बेगम मुम्ताज़महल मरगई, जिससे शाहजहां को बड़ा रन्ज हुआ.

हिज्री १०४१ ता० ५ रबीउल्अव्वल् [वि० १६८८ आश्विन शुक्ल ३ = ई० १६३१ ता० २९ सैप्टेम्बर] को बीकानेरके राव सूरसिंहका देहान्त हुआ, उस के बेटे कर्णसिंहको, दो हज़ारी ज़ात व डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब और रावका ख़िताब देकर बीकानेरकी जागीर बहाल रक्खी; दूसरे बेटे शत्रुशालको पांच सौ ज़ात व दो सौ सवारका मन्सब मिला. इसी वर्षके जमादियुल्अव्वल् [वि० मार्गशीर्ष = ई० नोवेम्बर] में बूंदीका राव रत्नसिंह हाड़ा मरगया, तब शाहजहां बादशाहने उसके पोते राव शत्रुशालको तीन हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवार का मन्सब और रावका ख़िताब देकर बूंदी व कटखड़ वग़ैरह परगने जागीर में बहाल रक्खे. राव रत्नसिंहके दूसरे बेटे माधवसिंह (१) को ढाई हज़ारी ज़ात व डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब देकर परगना कोटा व फलायता जागीरमें इनायत किया, जिससे आगेको अलहदा रियासत क़ायम होगई. इन्हीं दिनोंमें बादशाहने फ़त्हख़ां हबशीको मिलाकर अहमदनगरके निज़ामको दौलताबादमें मरवा-डाला, और उसके दस वर्षके बेटे हुसैनको निज़ाम बनादिया.

आसिफ़ख़ां को गजराज समेत बीजापुरकी तरफ़ भेजा, लेकिन् शोलापुरके पाससे ये पीछे लौट आये. जशवन्तसिंह (२) राठौड़के बेटे कृष्णसिंहने नूरुद्दीन कुलीको मारडाला, जो कि दर्बारसे अपने घरको जाता था, क्योंकि पहिले नूरुद्दीन के आदमियोंने जशवन्तसिंहको मारडाला था. इसकेबाद राजा भीमसिंह के बेटे राजा रायसिंहको एक हज़ारकी तरक़्क़ी से तीन हज़ारी ज़ात व बारह सौ सवार का मन्सब मिला. बादशाह शाहजहां नीचे लिखीहुई ज़रूरतोंसे ता० २४ रमज़ान [वि० १६८९ वैशाख कृष्ण १० = ई० १६३२ ता० १६ एप्रिल] को आगरे वापस चला- अव्वल् ख़ानेजहां लोदी, जो बाग़ी होगया था, अपने रिश्तेदारों सहित मारागया; निज़ामुल्मुल्क उसका मददगार बन्नेसे तबाह हुआ. बीजापुरका मुल्क, जो पहिले वक़्में ख़राबीसे बचरहा था, इस बार उजाड़ दियागया. बादशाहकी बहुत पसन्दीदा बेगम मुम्ताज़महल मरगई. सफ़रमें दक्षिणकी सूबेदारी आज़मख़ांसे उतारकर महाबतख़ांको दीगई, और दूसरी फ़ौजें

---

(१) इसकी औलादके लोग अबतक कोटेमें राज करते हैं, और ये माधाणी हाड़ा कहलाते हैं.

(२) यह जशवन्तसिंह जोधपुरका राजा नहीं है, कोई दूसरा राठौड़ सर्दार मालूम होताहै.

दक्षिणसे लौटालीगई. हिज्री ता० १८ जिल्काद [वि० आषाढ़ कृष्ण ४ = ई० ता० ७ जून] को बादशाह आगरे पहुंचा. और वहांसे ता० १ जिल्हिज [वि० आषाढ़ शुक्ल ३ = ई० ता० २१ जून] को दिल्लीमें दाखिल हुआ. उड़ीसेकी सूबेदारी बाक़रखांसे उतारकर मोतकिदखांको दीगई.

हिज्री १०४२ ता० १८ मुहर्रम [वि० १६८९ भाद्रपद कृष्ण ४ = ई० १६३२ ता० ५ ऑगस्ट] को कश्मीरकी सूबेदारी एतिक़ादखांसे उतारकर ख्वाजह अबुल्हसनको दी. बंगालेकी तरफ़ हुगलीमें फ़रंगियोंने क़िला बना लिया था, जिसपर क़ासिमखां बंगालेके सूबेदारका बेटा अल्लाहयारखां फ़ौजके साथ भेजा गया; उसने हज़ारों यूरोपियोंको क़त्ल व क़ैद करके वहांका बन्दर बर्बाद करदिया. दक्षिणमें साहू घोसलेने एक नया निज़ाम बनाया, और फ़तहखां हबशीसे साहूकी तक्रार होगई थी, इस सबब मौक़ापाकर शाहजहांकी फ़ौजने क़िला कालना दबालिया.

इन्हीं दिनोंमें मालवेकी तरफ़ खाताखेड़ीका भागीरथ भील, नसीरखांकी कोशिशसे बादशाही ताबेदार हुआ. इसी वर्षमें बादशाहने यह हुक्म जारी किया, कि हमारे इलाक़ेमें कोई नया मन्दिर न बनवाने पावे. इसके बाद दाराशिकोहकी शादी पर्वेज़की बेटीके साथ हुई. तारीख़ १४ रमज़ान [वि० १६९० चैत्र शुक्ल १५ = ई० १६३३ ता० २५ मार्च] को राजा जयसिंह कछवाहा आंबेरसे बादशाहके पास हाज़िर हुआ, और आठ दिनके बाद राजा गजसिंहने भी हाज़िरी दी.

हिज्री शव्वाल [वि० वैशाख = ई० एप्रिल] में शाहज़ादे औरंगज़ेब पर सिद्धकर हाथीने हम्ला किया. शाहज़ादेने, जो घोड़ेसे गिरगया था, उठकर हाथीके सिरपर भाला मारा, और पीछेसे शाहज़ादे शुजाअ व आंबेरके राजा जयसिंह कछवाहेने भी बर्छा लगाया; आख़िरकार दूसरे सुन्दर नामी हाथीने, जो सिद्धकरसे लड़नेको मौजूद था, हम्ला करके भगादिया, और शाहज़ादा बचगया. इन्हीं दिनोंमें क़िला दौलताबाद दक्षिणकेसूबेदार खानेजहांने फ़त्ह करलिया. दक्षिणियोंमें साहू और रणदौला आदिलखां बीजापुरी की तरफ़से मुक़ाबले पर थे; खानेजहांकी बादशाही फ़ौजमेंसे राव शत्रुशाल हाड़ा बूंदीका, राव कर्णसिंह राठौड़ बीकानेरका, राव दूदा चन्द्रावत रामपुरेका, महाराणा जगत्सिंहका काका अर्जुनसिंह मेवाड़की फ़ौज समेत और पृथ्वीराज राठौड़ वग़ैरहने हम्ला किया. इन्हीं लड़ाइयोंमें राव दूदा चन्द्रावत मारागया, और निज़ामुल्मुल्क बादशाही फ़ौजमें पकड़ा गया.

हिज्री १०४३ [वि० १६९० = ई० १६३३] में शाहज़ादा शुजाअ मए राजा जयसिंह, सय्यद खानेजहां, अल्लाह वर्दीखां व माधवसिंह हाड़ा वग़ैरहके दक्षिणमें भेजागया. इसी वर्षमें बादशाह कश्मीरकी सैरको गया.

हिज्री १०४४ [वि० १६९१ = ई० १६३४] में शाहज़ादे शुजाअ़ने अपनी फ़ौजका हरावल राजा जयसिंह व मुबारिज़खांको बनाकर बीजापुरकी फ़ौजपर कई बार धावा किया, लेकिन् कामयाबी न हुई, और बर्सातके आजाने से पीछा बुर्हानपुरमें लौटआनापड़ा. इसी वर्षमें दक्षिणका मुल्क एक सूबेदारसे न संभलता देखकर दो सूबे बनाये- एक तो बालाघाट, जिसमें सब दक्षिण, दौलताबाद, पट्टन संगमनेर व कुल्ल तिलंगाना वग़ैरह थे, और जिसकी आमदनी ३०५००००० रुपये थी, खानेज़मांको सौंपागया; और दूसरा हिस्सा पायांघाट, जिसमें तमाम ख़ान्देश और बरारका इलाक़ा था, और आमदनी २३२५०००० रुपये थी, ख़ानेदौरांकी सूबेदारीमें दियागया; और हुक्म हुआ, कि बालाघाट वाले ख़ानेज़मां के पास राजा जयसिंह, मुबारिज़खां, राव शत्रुशाल हाड़ा व जगराज वग़ैरह दौलताबादमें रहें, और पायांघाटके सूबेदार ख़ानेदौरांके पास राजा भारसिंह बुंदेला, माधवसिंह व नज़र बहादुर वग़ैरह बुर्हानपुरमें रहें, और छोटे मन्सबदार बराबर बांटलियेजावें. इन्हीं दिनोंमें ज़मानाबेग महाबतखां ख़ानख़ानां दक्षिणमें सख़्त बीमारीसे मरगया. इसी वर्ष बादशाह शाहजहांने एक किरोड़ रुपयेकी लागतसे तख़्त ताऊस (१) बनवाया; यह तख़्त सवातीन गज़ लम्बा, दो गज़ चौड़ा और पांच गज़ ऊंचा था, जिसके दोनों कोनोंपर दो मोर और बीचमें एक दरख़्त जवाहिरातसे बनवाया था. तीन सीढ़ियें जवाहिरकी जड़ीहुई थीं- यह तख़्त सात वर्षमें बना. इसी वर्षमें राजा जयसिंह कछवाहेको एक

---

(१) लोग कहते हैं, कि इस तख़्तमें वह बड़ा हीरा (कोहेनूर) भी जड़वाया था, जिसका पुराना वृत्तान्त कई तरहपर है - बाज़े लोगोंका कहना है, कि कई हज़ार वर्ष पहिले यह हीरा राजा कर्णको मिला था; बाज़े कहते हैं, कि महाभारतमें भीम पांडवने जब भूरिश्रवाका हाथ काटा उस वक्त यह उसके भुजपर ज़ेवरमें जड़ा था; कोई कहता है, कि उज्जैनके राजा विक्रमादित्य पंवार को यह हीरा मिला था.

बाबर बादशाह अपनी किताबके दो सौ दो वरक़में लिखता है, कि यह हीरा अ़लाउद्दीन ख़िल्जीके पास था, फिर ग्वालियरके राजा विक्रमादित्यके पास रहा, और उसकी औलादने शाहज़ादे हुमायूंको दिया, जो वज़नमें आठ मिस्क़ाल (साढ़े चार माशेकी एक मिस्क़ाल गिनीजाती है) का था.

इस हीरेकी बाक़ी तवारीख़ एडविन डब्ल्यू स्ट्रीटरने "दि ग्रेट डायमन्ड्स् ऑफ़ दि वर्ल्ड" के पृष्ठ ११६ से १३५ तक में इस तरह लिखी है, कि इसको नादिरशाह इस तख़्तके साथ ईरान में लेगया, और उसके मरनेपर अहमदशाह दुर्रानीको मिला, जिसकी औलादमें से शुजाउ़ल्मुल्क से, जो कन्धार छोड़कर लाहौरमें आरहा था, पंजाबके राजा रणजीतसिंहने लेलिया, और लाहौर ज़ब्त होनेके बाद वह हीरा सर्कार अंग्रेज़ीने लेकर क्वीन विक्टोरियाके ताजमें लगाया.

हज़ारकी तरक़ीसे पांच हज़ारी ज़ात व चार हज़ार सवारका मन्सब मिला.

हिज्री १०४५ [वि० १६९२ = ई० १६३५] में ओर्छेका राजा जुझारसिंह बुंदेला बाग़ी होगया, जिसपर बादशाह अब्दुल्लाखां फ़ीरोज़जंगको भेजकर पीछेसे आप भी रवाना हुए. जुझारसिंह अपने बेटे विक्रमादित्य समेत पहाड़ोंमें भागगया, और उन दोनोंको गोंड लोगोंने मारडाला. उसकी रानी अपने दोनों बेटों दुर्गभान और दुर्जनशाल समेत बादशाही क़ैदमें आई; पचास लाख सालयाना आमदनीका मुल्क ख़ालिसे हुआ, एक किरोड़ रुपया उसके ख़ज़ानेसे बादशाही तह्तमें आया. फिर वहांसे बादशाह दौलताबाद पहुंचा, माधवसिंह हाड़ा, राव शत्रुशाल हाड़ा, राव हरिसिंह चन्द्रावत और अर्जुनसिंहने मए मेवाड़की जमइयतके क़िला रामसेन दूसरे छः क़िलों सहित दक्षिणियोंसे छीनलिया, और राजा जयसिंह कछवाहा व खाने दौरांने गुलबर्गा मक़ाम तक बीजापुरका मुल्क लूट मारकर तबाह करदिया, जिससे डरकर आदिल्शाहने शाहजहांके पास तुह्फ़े भेज कर मुआफ़ी चाही. साहू घोसला भी आदिलशाहके पास चलागया, और क़िला जुनैर बादशाही क़ब्ज़ेमें आया. नया और पुराना दक्षिणका सूबा, जिसकी आमदनी पांच किरोड़ सालयाना थी, शाहज़ादे मुहम्मद औरंगज़ेबके हवाले हुआ.

हिज्री १०४६ ता० ७ रबीउस्सानी [वि० १६९३ भाद्रपद शुक्ल ९ = ई० १६३६ ता० १० सेप्टेम्बर] में बादशाह दक्षिणसे लौटकर मांडूके क़िलेमें पहुंचे, महाराणा जगत्सिंहने कल्याण झालाको कुछ तुह्फ़े देकर दक्षिणी फ़त्हकी मुबारकबादी देनेको बादशाहके पास भेजा. हिज्री ता० २४ जमादियुस्सानी [वि० मार्गशीर्ष कृष्ण १४ = ई० ता० २८ नोवेम्बर] को उसके साथ महाराणाके लिये जड़ाऊ सरपेच और जड़ाऊ तलवार भेजी. बादशाह वहांसे रवाना होकर खजूरी, फलायता, और मुंडावरकी तरफ़ निकले; रामपुरेके राव हरिसिंह, कोटेके राव माधवसिंहके बेटे मोहनसिंह व जुझारसिंह और बूंदीके राव शत्रुशाल के बेटे भावसिंह तीनोंने ऊपर लिखे तीनों मक़ामोंपर नज़्रें दीं, और बादशाहने उनको खिल्अ़त इनायत किये. ता० १२ रजब [मार्गशीर्ष शुक्ल १४ = ता० १३ डिसेम्बर] को अजमेरमें पहुंचे; वहां महाराणा जगत्सिंहके कुंवर राजसिंहने आकर नौ घोड़े पेश किये, और बादशाहने जड़ाऊ सरपेच वग़ैरह खिल्अ़त दिया. इन्हीं दिनोंमें साहू घोसलाने निज़ामुल्मुल्कके जमाईको, जिसे उसका वारिस बनाया था, बादशाही नौकरोंके हवाले किया, और वह क़ैद होकर ग्वालियर भेजागया. बादशाह अजमेरसे आगरे चला, तब महाराणाके कुंवरको हाथी घोड़े खिल्अ़त और उनके सर्दार बल्लू चहुवान और रावत मानसिंह चूंडावत वग़ैरहको भी घोड़े खिल्अ़त

देकर उदयपुरकी रुख्सत दी. जब बादशाह आगरे पहुंचे, तो खानेदौरांको छः हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और राजा जयसिंहको एक हज़ार सवारकी तरक़ीसे पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और चाटसूका परगना जागीरमें दिया. महाराजा गजसिंहके बेटे कुंवर अमरसिंहको तीन हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब और माधवसिंह हाड़ाको तीन हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब दिया. खानेज़मां दौलताबादमें मरगया. इसी वर्षके ज़िल्हिज महीनेमें शाहज़ादे औरंगज़ेबकी शादी शाहनवाज़खां सफ़वी ईरानीकी बेटीके साथ की गई.

हिज्री १०४७ [वि० १६९४ = ई० १६३७] में कश्मीरके सूबेदार ज़फ़रखांने कुछ तिब्बतका इलाक़ा लेलिया. महाराजा गजसिंह जोधपुरसे अपने छोटे बेटे जशवन्तसिंह समेत और कल्याण झाला महाराणा जगत्सिंहकी तरफ़से बादशाही हुज़ूरमें आये. इसी वर्ष बादशाही फ़ौजने तुर्किस्तानमें बुस्तका क़िला फ़त्ह किया.

हिज्री १०४८ ता० २ मुहर्रम [वि० १६९५ ज्येष्ठ शुक्ल ४ = ई० १६३८ ता० १८ मई] को आगरा मक़ामपर महाराजा गजसिंहका देहान्त हुआ, महाराजाने मरते समय बादशाहसे कहा था, कि मेरे राज्यका मालिक जशवन्तसिंहको करना चाहिये. बादशाहने भी महाराजाकी ख्वाहिशके मुवाफ़िक़ वैसाही किया, जिसका व्यौरेवार हाल जोधपुरकी तवारीखमें लिखा जायगा. महाराजा जशवन्तसिंहकी कम उम्र होनेके कारण उसके राज्यकी निगरानी राठौड़ राजसिंहको सौंपीगई, जो पहिले महाराजा गजसिंहका नौकर और फिर बादशाही मन्सबदार एक हज़ारी ज़ात व सवारका होगया था. महाराजा जशवन्तसिंहको चार हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब व राजाका ख़िताब वगैरह मिला, और रायसिंह झालाको आठ सौ ज़ात व चार सौ सवारका मन्सब इनायत कियागया; सूबे पटनाकी सूबेदारी अब्दुल्लाखांके एवज़ शायस्ताखांको दीगई.

हिज्री १०४९ [वि० १६९६ = ई० १६३९] में बादशाह काबुलको चले, और आंबेरके राजा जयसिंह कछवाहेको पहिले रवाना किया; काबुलकी सैर करके थोड़ेही दिनोंमें लाहौरको लौट आये. फिर इन्हीं दिनोंमें नूरपुरके पास अली मर्दानखां रावी नदीको काटकर एक नहर बादशाही हुक्मके मुताबिक़ लाहौरमें लाया; इसके बाद कश्मीरकी सैरको बादशाह गये, जहां राव चन्द्रसेन राठौड़का पोता कर्मसेनका बेटा और महाराणा जगत्सिंहका भानजा रामसिंह राठौड़ हाज़िर हुआ, उसको एक हज़ारी ज़ात और छः सौ सवारका मन्सब व ख़िलअत दियागया. इन्हीं दिनोंमें मेवाड़ इलाक़े के सर्दार सादड़ीके जागीरदार हरिदास झालाके बेटे रायसिंहको एक हज़ारी ज़ात और चार सौ सवारका मन्सब मिला.

हिज्री १०५० [वि० १६९७ = ई० १६४०] में बादशाह लाहौर आये, और शाहज़ादा मुरादबख़्श, माधवसिंह हाड़ा वग़ैरह समेत हाज़िर हुआ. इन्हीं दिनोंमें इस जगहपर मुल्ला सादुल्ला लाहौरी बादशाही नौकर बना, जो पीछे सादुल्लाखां वज़ीरके नामसे मश्हूर हुआ; राजसिंह राठौड़के मरजाने से राजा जशवन्तसिंहके प्रधानेका काम महेशदास राठौड़को दियागया, जो बादशाही मन्सबदार था.

हिज्री १०५१ ता० ११ मुहर्रम [वि० १६९८ वैशाख शुक्ल १३ = ई० १६४१ ता० २३ एप्रिल] में रायसिंह झालाको एक सौ सवारकी तरक़ीसे हज़ारी ज़ात व पांच सौ सवारका मन्सब मिला. इसी वर्षमें नूरपुरका राजा जगत्सिंह बाग़ी होगया, जिसपर शाहज़ादे मुरादबख़्शको मए राजा जयसिंह कछवाहा, नागौरके राव अमरसिंह राठौड़, कोटेके राव माधवसिंह हाड़ा, कृष्णगढ़के राजा हरिसिंह राठौड़, सावरके गोकुलदास सीसोदिया और सादड़ीके रायसिंह झाला वग़ैरहको भेजा; इन्होंने मऊका क़िला फ़त्ह करके जगत्सिंहको बादशाही दर्बारमें हाज़िर किया.

हिज्री १०५२ [वि० १६९९ = ई० १६४२] में शाहज़ादा दाराशिकोह कन्धारकी तरफ़ रवाना कियागया, क्योंकि ईरानका बादशाह उस मक़ामको दबाना चाहता था; शाहज़ादेके साथ जोधपुरका महाराजा जशवन्तसिंह, राजा जयसिंह कछवाहा, टोडेका राजा रायसिंह सीसोदिया, नागौरका राव अमरसिंह राठौड़, और बूंदीका राव शत्रुशाल वग़ैरह बहुतसे मन्सबदार थे; लेकिन् ईरानका बादशाह लड़नेको न आया; इसलिये शाहज़ादा वापस लौटा. इसी वर्षमें मुरादबख़्शकी शादी शाहनवाज़खां सफ़वीकी बेटीके साथ हुई, और मुम्ताज़महल बेगमका .मक़्बरा आगरेमें तय्यार हुआ, जिसपर पचास लाख रुपया बादशाही ख़र्च हुआ, लेकिन् बहुतसा काम बेगारमें लियागया, और पत्थर मुफ़्त हाथ लगे थे; दो लाख रुपये सालानाकी आमदनीके गांव इसके ख़र्चके लिये मुक़र्रर किये गये.

हिज्री १०५३ [वि० १७०० = ई० १६४३] में बादशाह अजमेरमें ख्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारतके लिये आये; जोगी तालावपर (जो कृष्णगढ़ के पास है) महाराणा जगत्सिंहके कुंवर राजसिंह गये. ता० १५ रमज़ान [पौष कृष्ण १ = ता० २७ नोवेम्बर] को बादशाह आगरेकी तरफ़ लौटे, और जोधपुरके राजा जशवन्तसिंह और आंबेरके महाराजा जयसिंहको वतनकी रुख़्सत दी·

हिज्री १०५४ सफ़र [वि० १७०१ चैत्र शुक्र पक्ष = ई० १६४४ मार्च] में कृष्णगढ़का राजा हरीसिंह बे औलाद मरगया. बादशाहने उसके भतीजे रूपसिंहको उसकी जगह क़ायम किया. इसी वर्षमें शाहज़ादे औरंगज़ेबसे बादशाह नाराज़ होगये, और उसकी जागीर, जो दक्षिणमें थी, और मन्सब वगैरह ज़ब्त करके खानेदौरां नुस्रतजंगको दक्षिणका सूबेदार बनादिया. हिज्री जमादियुस्सानी [वि० श्रावण = ई० जुलाई] में राव अमरसिंह राठौड़, सलाबतखां मीर बख्शीको मारकर खलीलुल्लाखां और अर्जुन गौड़के हाथसे शाहज़ादे दाराशिकोहके मकानपर बादशाहके सामने मारागया, जिसका ज़ियादा हाल मारवाड़के इतिहासमें लिखा जायगा. कल्याण झालाको, जो बहुत दिनोंसे आयाहुआ था, उदयपुर जानेकी रुख़्सत मिली; अब्दुल्लाखां बहादुर फ़ीरोज़जंग सत्तर वर्षकी उम्रमें मरगया. दक्षिणमें खानेदौरांके पहुंचने तक महाराजा जयसिंह कछवाहेको क़ायम मक़ाम सूबेदार रहनेका हुक्म हुआ. हिज्री ज़ीक़ाद [वि० पौष = ई० डिसेम्बर] में राव अमरसिंहका बेटा रायसिंह अपने वतनसे हाज़िर हुआ, जिसको बादशाहने एक हज़ारी ज़ात व सात सौ सवारका मन्सब देकर नागौरकी जागीरपर बहाल रक्खा.

हिज्री १०५५ [वि० १७०२ = ई० १६४५] में बादशाह लाहौर होकर कश्मीर गये, अलीमर्दानखांको काबुलमें भेजा, और उसकी मददके लिये टोडेके राजा रायसिंह, राजा भारतसिंह बुंदेला व कोटेके राव माधवसिंहको रवाना किया. इन्हीं दिनोंमें हमीरसिंह (१) सीसोदिया ईश्वरदासका बेटा और दूदाका पोता अपनी खुशीसे बादशाही नौकर हुआ; उसे पांच सौ ज़ात व तीन सौ सवारका मन्सब मिला. इसी वर्षमें रायसिंह झाला इलाके मेवाड़के मातहत सर्दार सादड़ीके जागीरदारको एक हज़ारी ज़ात व छः सौ सवारका मन्सब मिला; नूरजहां-बेगम, जो दो लाख रुपया सालाना तनख्वाह पाती थी, मरगई, और उसके बापके मक्बरेमें दफ्न कीगई. अली मर्दानखांकी मातहतीमें दो हिस्से फ़ौजके बनाकर बल्ख और बदख्शांकी तरफ़ भेजेगये- अव्वल हिस्सेमें सर्दार निजाबतखां, मिर्ज़ाखां, शैख फ़रीद, किश्वरखां, मुल्तफ़ितखां, बहादुरखां, राजा बिठ्ठलदास गौड़ अजमेरका, राव शत्रुशाल हाड़ा बूंदीका, राव माधवसिंह हाड़ा कोटेका, नज़र बहादुर, महेशदास राठौड़ राजा उदयसिंहका पोता और रतलाम वालोंका बुज़ुर्ग, सय्यद आलम, शिवराम गौड़, राजा रूपसिंह कृष्णगढ़का, रामसिंह राठौड़, हयातखां, जमालखां, मुहकमसिंह, गोपालसिंह, गोकुलदास सीसोदिया, गिर्धरदास गौड़, राजा अमर-

(१) यह हमीरसिंह मेवाड़के मातहत सर्दार देवगढ़ वालोंके बड़ोंमेंसे था.

सिंह नर्वरका, सय्यद शिहाब, रायसिंह झाला सादड़ीका, अर्जुन गौड़, सय्यद नूरुल्अयां, सय्यद मुहम्मद, दूसरा महेशदास राठौड़, मुहम्मद क़ासिम, सुजानसिंह सीसोदिया शाहपुरेका, कृष्णसिंह तँवर, राव रूपसिंह चन्द्रावत, कृपाराम गौड़, उग्रसेन, इन्द्रशाल, चन्द्रभानु महूका, संग्राम कछवाहा, सय्यद शाहअली, सय्यद मक्बूल, हमीरसिंह सीसोदिया (देवगढ़ वालोंका बड़ा), पेमचन्द्र कछवाहा राव मनोहरका पोता, दानीदास मेड़तिया, सय्यद अजमेरी, बल्लू चहुवान, रावत नारायणदास सीसोदिया (बानसीवालोंका बड़ा); दूसरे हिस्सेमें क़िलीचख़ां, शाहबेगख़ां, राजा देवीसिंह बुंदेला, तुर्कताज़ख़ां, ख़न्जरख़ां, इहतिमामख़ां, रुस्तमख़ां, नूरुल् हसन, टोडेका राजा रायसिंह सीसोदिया, राजा राजरूप, सय्यद असदुल्ला, राजा बिहरोज़, शत्रुशालका बेटा अजबसिंह, सय्यद चावन, चतुरभुज चहुवान, कृष्णसिंह कछवाहा, नज़ीरबेग, चन्द्रमन बुंदेला, वग़ैरह, काबुलसे आगे बढ़े, और हिज्री १०५६ [वि० १७०३ = ई० १६४६] में बल्ख़ बदख़्शांको दबालिया. वहांका बादशाह नज़्मुहम्मद भागकर ईरान पहुंचा. महाराणा जगत्सिंहके कुंवर राजसिंहने बादशाहके पास दिल्ली जाकर फ़त्हकी मुबारकबाद दी, और कुछ दिनों बाद रुख़्सत पाई.

थोड़े दिनों बाद शाहज़ादा मुरादबख़्श, जो इस फ़ौज और मुल्ककी संभाल के लिये भेजागया था, बेरुख़्सत चला आया, जिससे वहांका इन्तिज़ाम बिगड़ गया; इसलिये हिज्री १०५७ [वि० १७०४ = ई० १६४७] में शाहज़ादा मुहम्मद औरंगज़ेब वहांका बन्दोबस्त करनेको भेजागया.

हिज्री १०५८ [वि० १७०५ = ई० १६४८] में बुख़ाराका बादशाह अब्दुल्अज़ीज़ख़ां मुल्क दबाने लगा, तब मुनासिब समझकर नज़्मुहम्मदख़ांको ईरानसे बुलाकर उसका मुल्क उसको सौंप दिया.

हिज्री १०५९ [वि० १७०६ = ई० १६४९] में ईरानके बादशाह दूसरे अब्बासने क़िले क़न्धारको लेलिया; वहां क़िला वापस लेनेके लिये बादशाही फ़ौज भेजी गई, परन्तु कुछ कामयाबी न हुई, और बर्फ़ व सर्दीके डरसे लौट आना पड़ा. इन्हीं दिनोंमें बादशाह काबुल गये, और शाहज़ादे दाराशिकोहको छोड़कर आप हिन्दुस्तानमें वापस आये. इसके बाद ठठ्ठे, भक्कर और मुल्तानकी सूबेदारी शाहज़ादे औरंगज़ेबको दी.

हिज्री १०६० [वि० १७०७ = ई० १६५०] में बादशाहने शाहज़ादे मुरादबख़्शको काबुल भेजकर दाराशिकोहको अपने पास बुलालिया. बादशाहने मेवातका इलाक़ा

महाराजा जयसिंह कछवाहेके दूसरे बेटे कीर्तिसिंहको जागीरमें दिया, उसने फ़सादी मेवोंको मारपीटकर सीधा किया.

हिज्री १०६१ [वि० १७०८ = ई० १६५१] में बादशाह कश्मीरकी सैर को गया, पीछे लौटने पर लाहौरमें शाहज़ादा दाराशिकोह हाज़िर हुआ. इसी वर्षमें रूमके सुल्तान मुहम्मद्का एल्ची मुहयुद्दीन आया, जिसकी यहां बहुत ख़ातिरदारी कीगई, फिर सुना गया, कि राजा विठ्ठलदास गौड़ मरगया, इससे रंज हुआ, और अनिरुद्धसिंहको उसके बापकी जागीर और मन्सब पर क़ायम किया. इसी वर्षमें सर्दारख़ां बहादुर ज़फ़रजंग मरगया, और उसके बेटे लुहरास्पको पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और महाबतख़ांका ख़िताब देकर काबुलकी सूबेदारी इनायत की, और हाजी अहमद सईद एल्ची बनाकर रूमकी तरफ़ भेजागया. इसी वर्षके माह रमज़ान [वि० भाद्रपद = ई० सेप्टेम्बर] में बादशाह काबुल जाकर पीछे लौट आये.

हिज्री १०६२ मुहर्रम [वि० १७०८ पौष = ई० १६५१ डिसेम्बर] में जहांगीर बादशाहकी बहिन शुक्रुन्निसा मरगई, और शाहज़ादे दाराशिकोहको बड़े लश्करके साथ कन्धार भेजा, लेकिन् फिर भी कामयाबी न हुई.

हिज्री १०६३ ता० १ जमादियुस्सानी [वि० १७१० वैशाख शुक्ल ३ = ई० १६५३ ता० ३० एप्रिल] को उदयपुरके महाराणा जगत्सिंहके देहान्त पीछे मेवाड़के वकील बादशाही दर्बारमें पहुंचे. बादशाहने टीकेका सामान जड़ाऊ जमधर, तल्वार, हाथी, घोड़ा वगैरह बादशाही मन्सबदारके साथ भेजा, और महाराणा जगत्सिंहके छोटे भाई गरीबदासको डेढ़ हज़ारी ज़ात व सात सौ सवार का मन्सब देकर नौकर रक्खा. इसी वर्षमें शाहज़ादे औरंगज़ेबके शाहजादा आज़म पैदा हुआ, और आगरेके क़िलेमें सफ़ेद पत्थरकी मस्जिद तय्यार करवाई, जिस में नौ लाख रुपये ख़र्च पड़े.

हिज्री १०६४ [वि० १७१० = ई० १६५३] में शाहज़ादे मुराद बख़्शको शायस्ताख़ांके एवज़ गुजरातकी सूबेदारी और जोधपुरके राजा जशवन्तसिंहको महाराजाका ख़िताब दिया. इसी सनके रबीउल्अव्वल् [वि० माघ = ई० १६५४ जेन्यूअरी] में जसरूप मेड़तिया राठौड़, जो बादशाही नौकर था, किसी रंजके सबब तलवार खेंचकर बादशाहकी तरफ़ दौड़ा, पहिलेही ज़ीनेपर पहुंचा था, कि नौबतख़ां कोतवाल और ख़्वाजा रहमतुल्लाके हाथसे मारागया. नागौरके राव अमरसिंह राठौड़की बेटी, जो महाराजा जयसिंह आंबेरवालेकी

भान्जी थी, शाहज़ादे सुलैमानशिकोहको व्याहीगई. इन्हीं दिनोंमें तवारीख़ बादशाहनामहका लिखनेवाला मौलवी अब्दुल्हमीद लाहौरी मरगया. हिज्री ता० २ ज़िल्हिज [वि० १७११ आश्विन शुक्ल ४ = ई० १६५४ ता० १६ ऑक्टोबर] को बादशाह अजमेर आया, जिसका हाल महाराणा राजसिंहके बयानमें लिखाजायगा.

हिज्री १०६५ [वि० १७१२ = ई० १६५५] में शाहज़ादे दाराशिकोह को "शाहे बुलन्द इक्बाल" का ख़िताब और तख़्तके सामने सोनेकी कुर्सीपर बैठक मिली; सिरोहीके राव अक्षयराजको घोड़ा, सरपेच और कुछ ज़ेवर इनायत कियागया, और शायस्ताख़ांको मालवेकी सूबेदारी दीगई.

हिज्री १०६६ [वि० १७१३ = ई० १६५६] में मीर जुम्ला, जो दक्षिणी कुतुबुल्-मुल्कका वज़ीर था, किसी नाराज़गीसे निकलकर शाहज़ादे औरंगज़ेबकी सुफ़ारिशसे बादशाही नौकर हुआ, जिसको पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब मिला, और इसी शाहज़ादेकी सुफ़ारिशसे राव कर्ण बीकानेरीको जसोल बन्दर, जो गुजरातमें है, श्रीपत ज़मींदारसे छीनकर बख़्शागया. इसी वर्षमें ता० २२ जमादियुस्सानी [वि० वैशाख कृष्ण ८ = ई० ता० १५ एप्रिल] को सादुल्लाख़ां वज़ीर, जो बड़ा आलिम और होशयार था, मरगया, जिसका बादशाह शाहजहांको बहुत रंज हुआ; यह वज़ीर बड़ा ख़ैर ख़्वाह और नेक चलन आदमी था. जब मीर जुम्ला भागकर बादशाही नौकर हुआ, तब कुतुबुल्मुल्क ने उसके बेटे मुहम्मद अमीनको क़ैद किया. बादशाहने औरंगज़ेबको लिखभेजा, कि हैदराबादपर चढ़ाई करे, कुतुबुल्मुल्कने मुहम्मद अमीनको शाहज़ादेके पास भेजदिया, परन्तु उसका अस्बाब ज़ेवर वगैरह दाब रक्खा, जिसपर औरंग-ज़ेबने अपने बेटे मुहम्मद सुल्तानको हैदराबादपर भेजा, और लड़ाई होनेपर आप भी वहां गया.. कुतुबुल्मुल्कने ज़ेवर अस्बाबके सिवाय अपनी बेटी मुहम्मद सुल्तानको व्याहकर एक किरोड़ रुपया दहेजमें देनेपर पीछा छुड़ाया. इस फ़त्हके एवज़ मुहम्मद सुल्तानको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब, और शायस्ताख़ांको ख़ाने-जहांका ख़िताब मिला.

हिज्री १०६७ [वि० १७१४ = ई० १६५७] में आदिल्शाह बीजापुरी मरगया, और अली आदिल्शाह उसकी जगहपर बैठा. बादशाहने औरंगज़ेब को लिखभेजा, कि ख़ानेजहांको दौलताबादमें छोड़कर आप बीजापुरपर चढ़ाई करे. शाहज़ादे दाराशिकोहकी तनख़्वाह डेढ़ किरोड़ रुपये सालाना कीगई. इन्हीं दिनोंमें ऐसी वबा फैली, कि कांखबिलाईकी बीमारीसे हज़ारों आदमी मरे. इस वर्ष दिल्लीके चारों तरफ़ शहरपनाहकी मज्बूत दीवार बनवाई, जिसमें २७ बुर्ज

और छोटे बड़े ११ दर्वाज़े रक्खेगये, जो अबतक मौजूद हैं. ज़ाहिदख़ां अपने शाहजहांनामहमें इसकी लागत चार लाख रुपये लिखता है; इससे मालूम होता है, कि बेगारसे मुफ़्तमें बहुतसा काम लिया होगा. अली मर्दानख़ां अमीरुल्-उमरा कश्मीरकी सूबेदारीपर जाताहुआ ता० १२ रजब [वि० वैशाख शुक्ल १३ = ई० ता० २६ एप्रिल]को रास्तेमें मरगया. इसके बाद मुअ़ज़्ज़मख़ां मीर जुम्ला, औरंगज़ेबके पास दक्षिणमें भेजागया, जिसकी मददसे क़िला बीडर शाहज़ादेने फ़त्ह करलिया. फिर गुलबर्गापर दक्षिणियोंसे बादशाही फ़ौजका बड़ा मुक़ाबला हुआ, जिसमें महाराणा राजसिंहकी जमइयतका सर्दार शिवराम मारागया, और राजा रायसिंह सीसोदिया व सुजानसिंह वग़ैरह ज़ख़्मी हुए. परन्तु गुलबर्गा और कल्यानीके क़िले फ़त्ह हुए, और दक्षिणी भागगये, परिन्देका क़िला मए ज़िले कोकनके व एक किरोड़ रुपया लेनेपर सुलह ठहरी. इसी अ़र्सेमें बादशाह शाहजहांको कई बीमारियोंने घेरलिया, जिससे दिन दिन ताक़त कम होतीजाती थी. दाराशिकोह बादशाहत पानेकी उम्मेदमें अपना इख़्तियार बढ़ाता था.

हिज्री १०६८ [वि० १७१५ = ई० १६५८] में बीमारीके वक्त शाहजहां दाराशिकोहपर मिहर्बान था, लेकिन् इस हालतमें उसकी तरफ़से शक भी पैदा होगया, तो भी बिल्कुल शाहज़ादेके इख़्तियारमें रहा; शाहज़ादे शुजाअ़ने बंगालेमें फ़ौज तय्यार करके आगरेकी तरफ़ आनेका विचार किया; और औरंगज़ेबने मुरादबख़्शको बादशाह बनानेका लालच देकर मिलाया. दाराशिकोहने फ़ौजें बढ़ाकर अपना ज़ाबिता किया, अपने बेटे सुलैमानशिकोहको मए महाराजा जयसिंह कछवाहेके, जिसको छः हज़ारी मन्सब मिलगया था, शुजाअ़को रोकनेके लिये बंगालेकी तरफ़ रवाना किया. सुलैमानशिकोहने बनारसके पास बहादुरपुर ग्राममें शाहज़ादे शुजाअ़की फ़ौज पर हम्ला करदिया, जब कि वह सोरहा था; शाहज़ादा शुजाअ़ भागकर मूंगेर पहुंचा, लेकिन् सुलैमानशिकोहके डरसे वहां न ठहरा, और बंगाले चलागया. शाहज़ादे औरंगज़ेब और मुरादबख़्शको रोकनेके लिये दाराशिकोहने बीस हज़ार फ़ौज देकर जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंह और क़ासिमख़ांको दूसरे कई राजा और सर्दारोंके साथ मालवेकी तरफ़ रवाना किया. शाहज़ादे औरंगज़ेबने मीरजुम्लाको मिलाना चाहा, जो बड़ी फ़ौजके साथ दक्षिणमें कल्यानीका क़िला घेरेहुए था, और बादशाहके बड़े सर्दारोंमें गिनाजाता था; उसको बुलाकर दौलताबादके क़िलेमें क़ैद किया, लेकिन् यह क़ैद मीरजुम्लाके कहनेसे की गई थी, क्योंकि उसके बालबच्चे आगरेमें दाराशिकोहके इख़्तियारमें थे; मीर जुम्लाकी फ़ौजको साथ लेकर औरंगज़ेब आगरेकी तरफ़ रवाना हुआ, नर्मदाके पास मुराद-

बख़्श भी आ मिला; औरंगज़ेबने धोखा देनेके लिये मुरादबख़्शको बहकाया, कि मुझे बादशाहतकी ज़रूरत नहीं है, दारा जो काफ़िर होगया है, वह मज़्हब ख़राब करदेगा, और शुजाअ भी राफ़िज़ी (१) है, इस लिये तुमको बादशाहीके लायक़ जानकर तख़्तपर बिठानेके बाद मैं ख़ुदाकी इबादतमें रहूंगा. इस फ़रेबसे वह कम अक़्ल (मुराद) बिल्कुल अपनेको बादशाह समझने लगा, औरंगज़ेब भी उसको हज़रत कहकर अदबके साथ पुकारने लगा; आख़िरकार हिज्री १०६८ ता० २१ रजब [वि० १७१५ वैशाख कृष्ण ७ = ई० १६५८ ता० २४ एप्रिल] को उज्जैनसे सात कोस पर धर्मातपुर के पास दोनों शाहज़ादोंका मक़ाम हुआ.

महाराजा जशवन्तसिंह और क़ासिमख़ां मालवेमें पहुंचकर उज्जैनमें ठहरे हुए थे, और इनको हुक्म भी यही था, कि पहले शाहज़ादे मुरादकी ख़बर लें. ये दोनों सर्दार मुरादसे मुक़ाबला करनेकी फ़िक्रमें खाचरोद पहुंचे, लेकिन् औरंगज़ेबने नर्मदाके किनारे पर पूरा पूरा बन्दोबस्त करदिया था, कि इधरकी ख़बर बादशाही लश्करमें न पहुंचे, इससे महाराजा जशवन्तसिंहको उधरका कुछ हाल न मालूम हुआ. जब ये लोग पीछे उज्जैनकी तरफ़ लौटे, उस वक़ दोनों शाहज़ादोंके नर्मदा उतरनेकी ख़बर मांडूके क़िलेदार राजा शिवरामने महाराजा जशवन्तसिंहके पास भेजी. तब ये पलटकर धरमातपुरके पास शाहज़ादोंकी फ़ौजसे एक कोसकी दूरीपर ठहरे, औरंगज़ेबने कविराय (२) ब्राह्मणको महाराजा जशवन्तसिंहके पास भेजकर कहलाया, कि हम लड़ाईके बिचारसे नहीं जाते हैं, आला हज़रत (शाहजहां) की क़दम्बोसी और उनकी तन्दुरुस्तीका हाल दर्याफ़्त करना ज़रूर है, तुम्हें चाहिये, कि या तो हमारे शरीक होजाओ, या रास्ता छोड़कर अपने घर चलेजाओ. जशवन्तसिंह और क़ासिमख़ांने यह बात न मानी, और जवाब दिया, कि हमको बादशाही हुक्म है, कि आपको आगे न बढ़ने दें. इसपर ता० २२ रजब [वैशाख कृष्ण ८ = ता० २५ एप्रिल] को पांच छः घड़ी दिन चढ़े लड़ाई शुरू हुई. शाहज़ादे औरंगज़ेबका हरावल उसका बेटा मुहम्मद सुल्तान था, जिसके साथ निजाबतख़ां और उसका बेटा शुजाअतख़ां और सय्यद मुज़फ़्फ़रख़ां बारह, लोदीख़ां, पुरदिल्ख़ां, कमाल लोदी, सय्यद नसीरुद्दीन दक्षिणी, जमाल बीजापुरी, इलहामुल्ला, अब्दुल्बारी अन्सारी, मीर अबुल्फ़ज़्ल मामूरी और क़ादिरदाद अन्सारी वग़ैरह; मददगार फ़ौजमें ज़ुल्फ़िक़ारख़ां उर्फ़ मुहम्मदबेग, कुछ तोपख़ाना और

---

(१) सुन्नी लोग शिया फ़िर्केको राफ़िज़ी कहते हैं, जिसके मअ्नी फिरेहुए के हैं.

(२) इस कविरायका अस्ली नाम कहीं नहीं लिखा.

बहादुरख़ां, हादीदादख़ां, सय्यद दिलावरख़ां, ज़बरदस्तख़ां, सआ़दतख़ां, और हमीद काकड़ वगै़रह; ख़ास तोपख़ानेका अफ़्सर मुर्शिदकुलीख़ां था, जिसके मातह्त कई फ़रांसीस भी काम करते थे; दाहिनी तरफ़ शाहज़ादा मुरादबख़्श अपनी फ़ौज व सर्दारों समेत तय्यार था. औरंगज़ेबके बाई तरफ़की फ़ौजका अफ़्सर शाहज़ादा मुहम्मद आज़म, जिसके साथ मुल्तफ़तख़ां, हिम्मतख़ां, कारतलबख़ां, सिपहदारख़ां, राजा इन्द्रमणि धन्धेरा, होशदारख़ां, मुख़्तारख़ां, मीर बहादुरदिल्, मुनइमख़ां, शैख़ अब्दुल् अ़ज़ीज़, सय्यद यूसुफ़, इस्माईल नियाज़ी, याकूब, दिलावर, उज़्बकख़ां, नेमतुल्ला, सय्यद हसन, कर्णसिंह (१) कच्छी, राजा सारंगधर, गै़रतबेग, मुर्तज़ाख़ां, हमीदुद्दीन एतिमादुद्दौलाका पोता; औरंगज़ेबके पास दाहिनी तरफ़ शैख़ मीर, सय्यदमीर, अब्दुर्रहमान, ग़ाज़ी बीजापुरी, फ़त्हख़ां रुहेला, इस्माईल खेश्गी, केसरीसिंह बीकानेरके राव कर्णसिंहका बेटा अपने छोटे भाई पद्मसिंह सहित, रघुनाथसिंह राठौड़, मसऊद मंगली, सय्यद मन्सूर, बादल बख़्तियार, सैफ़ बीजापुरी वगै़रह. औरंगज़ेबके बाई तरफ़ सफ़् शिकनख़ां कितने एक तोपख़ाने वालों समेत, ख़वासख़ां, सिकन्दर रुहेला, और कई एक दक्षिणी सर्दार जादवराय, रुस्तमराय, दौलतमन्दख़ां, दामाजी, बाबाजी घोसला, बीतूजी और जशवन्तराव थे. फ़ौजकी गिर्दावरी पर ख़्वाजह उबैदुल्ला, कज़लबाशख़ां, अब्दुल्लाख़ां, मुहम्मद शरीफ़ तोलकची और राद-अन्दाज़बेग, वगै़रह थे. इस तमाम फ़ौजके बीचमें औरंगज़ेब ख़ुद रहा; ख़ास अर्दलीमें असालतख़ां, मुख़्लिसख़ां, तहव्वुरख़ां, क़िलीचख़ां, जौहरख़ां, हिज़्ब्रख़ां, मीर इब्राहीम कोरबेगी, बूंदीके राव शत्रुशाल हाड़ाका बेटा भगवन्तसिंह, शुभकर्ण बुंदेला, अल्लाहयारबेग मीरतुज़क वगै़रह थे.

महाराजा जशवन्तसिंहकी शाहीफ़ौजका जमाव इस तरह पर था, हरावल फ़ौजका सर्दार क़ासिमख़ां, जिसके साथ मुकुन्दसिंह हाड़ा, राजा सुजानसिंह बुंदेला, अमरसिंह चन्द्रावत रामपुरेका, राजा रत्नसिंह राठौड़ रतलामका, अर्जुन गौड़, दयालदास झाला, मोहनसिंह हाड़ा, ख़ुशहाल बेग काशग़री, सुल्तान हुसैन वगै़रह थे; इनके आगे बहादुरबेग फ़ौजबख़्शी और दारोग़ा तोपख़ानहको रक्खा, जिसके साथ जानीबेग वगै़रह लोग थे; और गिर्दावरी पर मुख़्लिसख़ां, मुहम्मदबेग, यादगारबेग तूरानी; और मददगार फ़ौजमें महेशदास गौड़, गोवर्धन राठौड़ आदि थे; आप महाराजा जशवन्तसिंह चुनेहुए दो हज़ार राजपूतों समेत

(१) कर्णसिंह कच्छी कच्छ भुजके चन्द्र वंशी जाड़ेचा हैं.

बीचमें रहे, जिनमें भीमसिंह गौड़ राजा विठ्ठलदासका बेटा वगैरह था; दहिनी तरफ़की फ़ौजमें टोडेका राजा रायसिंह सीसोदिया व शाहपुरेका सुजानसिंह सीसोदिया अपने भाइयों और बहादुर राजपूतों समेत मुक़र्रर हुआ; बाईं तरफ़की फ़ौजमें इफ़्तिख़ारख़ां, जिसके साथ सय्यद शेरख़ां बारह, सय्यद सालार, यादगार मसऊद, मुहम्मद मुक़ीम वगैरह थे. कारख़ाने और डेरोंकी संभाल मालूजी, पर्सूजी और राजा देवीसिंह बुंदेलाके सुपुर्द थी.

औरंगज़ेब व मुराद बख़्शसे जशवन्तसिंह और क़ासिमख़ांका मुक़ाबला.

इस तरह दोनों फ़ौजें तय्यार हुईं, तब औरंगज़ेबने अपना तोपख़ाना नदी (नरायनाचोर नाला) के किनारे बुलन्दीपर रक्खा, और यह हुक्म दिया, कि दूसरी फ़ौज तोपख़ानहकी मददसे नदी उतरनेको बढ़ाई जावे; ऐसा ही कियागया, लेकिन् बादशाही फ़ौजके तोपख़ानह ने शाहज़ादोंकी हरावलको रोका, और बान, बन्दूक़ और तोपोंसे सामना हुआ. उस वक्त क़ासिमख़ांकी हरावलसे बड़े बड़े बहादुर राजपूतों मुकुन्दसिंह हाड़ा, राजा रत्नसिंह राठौड़, दयालदास झाला, अर्जुन गौड़ वगैरहने आगे निकलकर औरंगज़ेबके तोपख़ानह पर हम्ला किया. तोपख़ानहके अफ़्सर मुर्शिदक़ुलीख़ां व ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने अपने साथियों समेत उन बहादुर हम्ला करनेवाले राजपूतोंके साथ अच्छा मुक़ाबला किया; मुर्शिदक़ुलीख़ां मारागया, और ज़ुल्फ़िक़ारख़ां अपने साथियों समेत सवारियां छोड़कर लड़नेमें ज़ख़्मी हुआ. जशवन्तसिंहकी शाही फ़ौजके राजपूत तोपख़ानहसे आगे बढ़कर औरंगज़ेब के ख़ास हरावलपर गिरे, और पिछले राजपूत भी उनकी मददको पहुंच गये. यह लड़ाई बहुत भारी और नामी हुई. औरंगज़ेबके शाहज़ादे मुहम्मदसुल्तान व मददगार निजाबतख़ांने भी बहुत अच्छी बहादुरी दिखलाई; इसी मौक़ेपर शैख़ मीरने एक फ़ौजकी टुकड़ी लेकर दहिनी तरफ़से राजपूतोंकी फ़ौजपर हम्ला किया, और उसकी मददके लिये औरंगज़ेबका सर्दार मुर्तज़ाख़ां भी पहुंच गया. इसी तरह बाईं तरफ़से सफ़्शिकनख़ां राजपूतोंपर टूट पड़ा, और राजपूतोंके ज़बरदस्त धावे रोकनेके लिये औरंगज़ेबने अपने सर्दारोंकी मदद करनेको अपनी अर्दलीके लोग भेजकर आप हम्ला करना शुरू किया. यह लड़ाई ऐसी हुई, कि हरावल व दहिनी व बाईं तरफ़की फ़ौजोंका इन्तिज़ाम बिगड़गया, और आगे पीछे होगईं; बर्छा, तलवार, कटार चलनेकी नौबत पहुंची; उस समय महाराजा जशवन्तसिंहकी फ़ौजके सर्दार मुकुन्दसिंह हाड़ा, सुजानसिंह सीसोदिया, राजसिंह राठौड़, अर्जुन गौड़ राजा बिट्ठलदासका बेटा, दयालदास झाला, मोहनसिंह हाड़ा, अपने हज़ारों राजपूतोंके साथ औरंगज़ेबकी फ़ौजके बहुतसे आदमियोंको मारकर मारेगये.

जब शाहज़ादोंकी फ़ौजकी ताक़त बढ़ती हुई देखी, तब टोडेका राजा रायसिंह व राजा सुजानसिंह बुंदेला और अमरसिंह चन्द्रावत रामपुरेका अपने साथियों सहित भाग निकले. उस समय शाहज़ादा मुराद, जो बड़ी बहादुरीसे लड़रहा था, इतना बढ़गया, कि महाराजा जशवन्तसिंहके पीछे डेरोंपर जापहुंचा; डेरोंके मुहाफ़िज़ मालू व पर्सू और देवीसिंह वग़ैरहने शाहज़ादेसे कुछ देर तक मुक़ाबला किया, बहुतसे आदमी काम आये, आख़िरकार मालू, पर्सू वग़ैरह भागनिकले, और देवीसिंहने शाहज़ादेकी ताबेदारी इख़्तियार की. जब मुराद दहिनी तरफ़से आगे बढ़ा, और महाराजा जशवन्तसिंहके पास होकर लड़ताहुआ निकला, तो इससे महाराजा जशवन्तसिंहकी फ़ौजमेंसे इफ़्तिख़ारख़ां बहुतसे आदमियों समेत मारागया. सामनेकी फ़ौजसे भी लड़ाई होरही थी, इस कारण जशवन्तसिंहकी फ़ौज शाहज़ादे मुरादको न रोक सकी, औरंगज़ेब व मुरादकी फ़ौजोंने चारों तरफ़से हम्ला किया; बहुतसे उम्दा सर्दार तो पहिले ही मारे जाचुके थे, अब अक्सर भागगये. इससे जशवन्तसिंहके राजपूतों ही पर ज़ोर आपड़ा; इस विषयमें बर्नियर फ़रांसीसी लिखता है, कि- क़ासिमख़ां जशवन्तसिंहको तक्लीफ़में छोड़कर पहिले ही भाग निकला, और आलमगीरनामह व मुन्तख़बुल्लुबाबमें जशवन्तसिंहके भागजाने बाद क़ासिमख़ांका भागना लिखा है. बर्नियर फ़रांसीसी कहता है, कि मैं इस लड़ाईके वक्त मौजूद नहीं था, परन्तु औरंगज़ेबके तोपख़ानहपर जो फ़रांसीसी अफ़्सर उस लड़ाईमें मौजूद थे, उनके बयानसे लिखताहूं; हम भी फ़ार्सी तवारीख़ोंसे उसको मोतबर मानते हैं. जशवन्तसिंह अपने बहादुर राजपूतों समेत अच्छी तरह लड़ा, यहांतक कि आठ हज़ार राजपूतोंमें से सिर्फ़ छः सौ बाक़ी रहे. राजपूताना के कवि इसका बयान इस तरहपर करते हैं, कि जशवन्तसिंहके राजपूतोंने उसको इस लड़ाईसे ज़बरदस्ती निकाला, जैसा किसी मारवाड़ी कविने कहा है--

बैत.

औछीबाढ़ो जशवन्त काढ़ो ॥ राजा राख्यां बाजी रहसी ॥
कमधां कोई बुरा न कहसी ॥ भारतरा भार रत्नागरने भलिया ॥
बागां भाल जशवन्त वलिया ॥

बर्नियर फ़रांसीसीका लिखना भी इसके क़रीब ही है. ख़ैर जशवन्तसिंह और क़ासिमख़ांके निकलनेसे (१) लड़ाई ख़त्म हुई. तोपख़ाना, ख़ज़ाना वग़ैरह कुल

---

(१) मारवाड़की तवारीख़में लिखा है कि क़ासिमख़ां वग़ैरह बादशाही मुसल्मान सर्दार औरंगज़ेबसे मिलगये इसकी तस्दीक़ बर्नियर फ़रांसीसीके बयानसे होती है.

सामान इनका दोनों शाहज़ादोंके हाथ लगा. जंगलोंमें लाशोंके ढेर लगगये.

शाह्ज़ादोंकी फ़त्ह.

ऑरंगज़ेबने उसी दिनसे क़स्बे धर्मातपुरका नाम फ़त्हाबाद रक्खा, जो अब तक मौजूद है. बर्नियरने तो आठ हज़ार राजपूतोंमेंसे छःसौ बाक़ी बचना लिखा है, और आलमगीरनामह व मुन्तख़बुल्लुबाबमें जशवन्तसिंहकी फ़ौजके छः हज़ार आदमी मारेजाने लिखे हैं, परन्तु दोनोंकी लिखावटमें कुछ ज़ियादह फ़र्क़ नहीं है, इस सबबसे, कि इस लड़ाई के खेतसे जो ज़ख़्मी निकल गये, उनकी गिन्ती आलमगीरनामहसे भी सिवाय है. ऑरंगज़ेब और मुरादबख़्शकी फ़ौजके नामी सर्दारोंमेंसे मुर्शिदक़ुलीख़ांके सिवाय कोई जानसे नहीं मारागया, लेकिन् नामी सर्दार ज़ुल्फ़िक़ारख़ां, सिकन्दर रुहेला, शैख़ अब्दुल् अज़ीज़, राठोड़ रघुनाथसिंह ज़ख़्मी हुए, और दूसरे लोग तो हज़ारों मारेगये होंगे, जिनकी तादाद किसी किताबमें नहीं मिलती.

इस फ़त्हके बाद दोनों शाहज़ादोंने उज्जैनमें आकर बहुतसे सर्दारोंको ख़िलअ़त, ख़िताब और मन्सब दिये. फिर ता० २७ रजब [वैशाख कृष्ण १३ = ता० ३० एप्रिल] को यहांसे रवाना होकर ता० २८ शअ़्बान [ज्येष्ठ कृष्ण १४ = ता० ३१ मई] में दोनों शाहज़ादे ग्वालियर पहुंचे. वहां रायसेनके क़िलेदार ख़ानेदौरांका बेटा नुस्रतख़ां ऑरंगज़ेबसे आमिला, उसे ख़िलअ़त, हाथी, घोड़ा, और ख़ानेदौरांका ख़िताब दिया. दाराशिकोहने जब फ़त्हाबाद पर अपने लोगोंकी शिकस्तका हाल सुना तो बहुत उदास हुआ, और अपने बेटे सुलैमानशिकोहको बंगालेसे जल्दी चलेआनेके लिये लिखा, और आप फ़ौजकी तय्यारी करने लगा; जितने मुसल्मान और राजपूत सर्दार बादशाहतके ताबे थे, सब बुलायेगये. शाहजहांके नामसे हुकूमत थी, लेकिन् उसके इख़्तियारकी बाग बिल्कुल दारा हीके हाथ थी दाराकी इख़्तियारी हुकूमतसे बहुत सर्दार नाराज़ थे, क्योंकि शाहजहांने पहिले ही से उसका इख़्तियार बढ़ादिया, वह दूसरे की सलाह कम पसन्द करता था, लेकिन् उस समय उसने बहुतसी फ़ौज एकट्ठी करली. बर्नियर फ़रांसीसी लिखता है, कि एक लाख सवार, बीस हज़ार पैदल और अस्सी तोपें ऑरंगज़ेब और मुरादके मुक़ाबले को तय्यार की थीं, ऑरंगज़ेबके पास सब चालीस हज़ारसे ज़ियादा फ़ौज न होगी. आलमगीरनामहमें दाराकी साठ हज़ार फ़ौज और शाहजहांनामहमें ऑरंगज़ेबकी तीस हज़ार फ़ौज लिखी है; परन्तु ख़याल होता है, कि कुछ दाराके बेटे सुलैमानशिकोहके साथ भेजीगई, बाक़ी फ़ौज दिल्ली, आगरेकी हिफ़ाज़तको रही. यह सब मिलाकर बर्नियरकी लिखी हुई तादाद सहीह होगी.

जब दारा, ऑरंगज़ेब व मुरादसे लड़ाईके लिये जानेको तय्यार हुआ, तब शाह-

जहांने उसे रोका, और अपना पेशख़ैमा खड़ा करनेका हुक्म दिया, कि मैं औरंगज़ेब व मुरादसे मुक़ाबला करूंगा; लेकिन् दाराको शक था, कि बादशाह शाहज़ादोंमें मिलजावे, या वे अपनी ताक़तसे बादशाहको क़ाबूमें करलें, तो बड़ा नुक़्सान हो; इस लिये शाहजहां को हर सूरतसे रोका. दाराने ता० १६ शअ्बान [ज्येष्ठ कृष्ण २ = ता० १९ मई] को बादशाही सर्दारोंमेंसे ख़लीलुल्लाख़ांको अफ़्सर और उसके मातह्त क़ुबादख़ां, रायसिंह राठौड़, इमाम कुली, नूरीबेग आग़र वग़ैरह और अपने मुलाज़िमोंमें से दाऊदख़ां, अस्करीख़ां, वग़ैरहको कुछ फ़ौज देकर धौलपुरकी तरफ़ रवाना किया, कि चम्बल नदीको रोककर मोर्चे जमावें. फिर शाहजहांके मन्शाके बर्ख़िलाफ़ आए अपने छोटे बेटे सिपह्रशिकोह सहित लड़ाईपर जानेकी रुख़्सत लेनेको बादशाहकी ख़िद्मतमें हाज़िर हुआ, उस वक्त शाहजहांकी आंखें भरआईं, और आंसू बह निकले; उसको इस बातका बहुत रंज हुआ, कि मेरे घरकी बर्बादी का समय आगया, और वही बर्ताव होरहा है. बादशाहने कई बार औरंग-ज़ेब और मुरादको फ़र्मानों व एतिबारी आदमियों की मारिफ़त बहुत समझाया, और दाराशिकोहको भी अच्छी तरह नसीहतें कीं. वह यह चाहता था, कि मेरी आंखोंके सामने मेरे घरकी बर्बादी न हो; परन्तु ईश्वरको ऐसाही करना था, किसी फ़िक्रसे फ़ायदा न हुआ. जब दाराको उसके इरादेसे रुकता न देखा, तब शाहजहांने कहा, कि ऐ मेरे बेटे मैंने तुझे ईश्वरके हवाले किया, जाओ ईश्वर तुम्हारी उम्मेदको पूरा करे; आख़िरकार ता० २५ शअ्बान [ज्येष्ठ कृष्ण ११ = ता० २८ मई] को दारा अपने छोटे बेटे सिपह्रशिकोह समेत बहुतसी फ़ौजके साथ आग-रेसे रवाना होकर पांच मन्ज़िलमें धौलपुर पहुंचा, और वहां क़ियाम करके अपने बड़े बेटे सुलैमानशिकोहके आनेकी राह देखता था; शाहजहांने भी दाराशि-कोहको लिखभेजा, कि जबतक सुलैमानशिकोह न आवे, लड़ाई न करना. दिलमें तो दाराके भी यही था, परन्तु अपनी ज़ियादह फ़ौजके घमंडसे शाहजहांको जवाब लिखा, कि तीन दिनके भीतर औरंगज़ेब और मुरादको बांधकर आपकी ख़िद्मत में हाज़िर करूंगा, पीछे आप अपने दोनों बाग़ी शाहज़ादोंके हक़्में, जो मुनासिब जानें, वह करें.

दाराशिकोहसे औरंगज़ेब व मुराद बख़्शकी लड़ाई.

दाराशिकोहने अपनी फ़ौजोंसे चम्बलके जितने घाटे उतरनेके लायक़ समझे, सब मज़्बूतीके साथ रुकवा दिये. औरंगज़ेब व मुरादने देखा, कि दाराने बिल्कुल नदीके रास्ते बन्द करदिये हैं, तब उन्होंने हरएक आदमीसे पूछकर नदीसे उतरनेकी कोशिश की. दाराने जो रास्ते रोकरक्खे थे, वह छोड़कर ता० १ रमज़ान [ज्येष्ठ

शुक्ल २ = ता० ३ जून] को ग्राम भदौरी (भदावर) की तरफ़ राजा चंपत बुंदेले की मददसे औरंगज़ेबने अपने लश्करको नदीके पार किया. दाराको ख़बर मिली, कि दोनों शाहज़ादे नदी और कठिन पहाड़ोंसे निकलकर आगरेकी तरफ़ जारहे हैं, तब उसने उनको रोकना चाहा, और आगरेसे १५ या १६ मीलके फ़ासिले पर समूनगर व राजपुरेके पास जा डेरे किये. शाहजहांने फिर भी बहुत मना किया, कि एक दम लड़ाई न कीजावे, लेकिन् वह नातजिबेकार शाहज़ादा इस घमंडमें भूलाहुआ था, कि एक हम्लेमें दोनोंपर फ़तह पालूंगा. औरंगज़ेब और मुरादने भी ता० ६ रमज़ान [वि० ज्येष्ठ शुक्ल ७ = ई० ता० ८ जून] को दाराके लश्करसे डेढ़ कोसपर आकर मक़ाम किया, दूसरे दिन ता० ७ रमज़ान [वि० ज्येष्ठ शुक्ल ८ = ई० ता० ९ जून] को दाराशिकोहने अपनी फ़ौज इस तरहपर तय्यार की– ख़ास अपने तोपख़ानेको बर्क़न्दाज़ख़ांकी मातह्तीमें अपनी फ़ौजके आगे दहिनी तरफ़ जमाया, बादशाही तोपख़ानेको हुसैनबेगख़ांके इख़्तियार में फ़ौजके आगे बाईं तरफ़ रक्खा, और बूंदीके राव शत्रुशाल हाड़ाको हरावल फ़ौजका अफ़्सर बनाकर उसके साथ नीचे लिखे हुए लोगोंको तईनात किया–

राजा रूपसिंह राठौड़ रूपनगर या कृष्णगढ़का, वीरमदेव सीसोदिया शाहपुरेके रईस सुजानसिंहका भाई (महाराणा अमरसिंहका पोता), गिर्धर गौड़ राजा विट्ठलदास का भाई, भीम राजा विट्ठलदास गौड़का बेटा, राजा शिवराम गौड़ जो उज्जैनकी लड़ाईसे भागकर आया था, और दूसरे भी कई नामी राजपूत उनके साथ तईनात हुए, और अपने ख़ास मुलाज़िमोंमेंसे दाऊदख़ां कुरैशीको चार हज़ार आदमी और अपने मीर बख़्शी अस्करख़ांको तीन हज़ार आदमी देकर हरावलका मददगार किया; ख़लीलुल्लाख़ां बादशाही फ़ौजके मीरबख़्शीको दहिनी फ़ौजका अफ़्सर बनाकर उसके साथ इतने सर्दार किये– इब्राहीमख़ां अलीमर्दानख़ांका बेटा, इस्माईलबेग, इस्हाक़बेग, ताहिरख़ां, क़ुबादख़ां और तूरानी लोग, रामसिंह राठौड़ कर्मसेनका बेटा और जोधपुरके राव चन्द्रसेनका पोता, सुल्तानहुसैन, मीरख़ां, राजा विष्णुसिंह गौड़, पृथ्वीराज भाटी, वग़ैरा दूसरे अमीर व मन्सबदारोंको उस फ़ौजमें मुक़र्रर किया; बाईं फ़ौजकी अफ़्सरीपर अपने छोटे बेटे सिपहरशिकोहको मए रुस्तमख़ां बहादुरके मुक़र्रर किया– और उसके साथ नीचे लिखेहुए सर्दार थे– क़ासिमख़ां, सरबुलन्दख़ां, सय्यद शेरख़ां बारह, मालूजी, पर्सूजी दक्षिणी, सय्यद बहादुर भक्करी, महासिंह भदौरिया, अब्दुन्नबीख़ां, सय्यद निजाबत, सय्यद मुनव्वर बारह, सय्यद मक़्बूलेआलम, और तमाम सय्यद व अर्दलीके लोग व बादशाही गुर्ज़बर्दार; आप तीन हज़ार अच्छे ख़ास बहादुर व

फ़ैजुल्ला और खुशहालबेग काशग़री बादशाही नौकरों समेत बीचमें ठहरा. आंबेरके राजा जयसिंहके बड़े कुंवर रामसिंहको फ़ौजका गिर्दावर बनाकर उसके साथमें उसका छोटा भाई कीर्तिसिंह, शैख़ मुअ़ज़्ज़म फ़त्हपुरी और दूसरे राजपूत कुल दस हज़ार सवार मुक़र्रर हुए; इसके सिवाय दो फ़ौजें दहिनी और बाईं तरफ़ मुक़र्रर कीं, जिनमेंसे दहिनी तरफ़वाली फ़ौजकी अफ़्सरी ज़फ़रखां फ़ीरोज़ मेवातीको, और बाईं तरफ़की फ़ौजकी निगहबानी फ़ाख़िरखां नज्मे-सानीको दी.

औरंगज़ेबने भी अपनी फ़ौजको नीचे लिखे मुताबिक़ तय्यार किया - सबसे आगे तोपख़ाना, और मस्त जंगी हाथियोंको सब सामान और लड़ाईके हथियारोंसे सजाकर तोपख़ानहके पीछे जगह जगह खड़ा किया; बड़े शाहज़ादे मुहम्मद सुल्तान को नजाबतख़ां ख़ान्ख़ानां बहादुर सिपहसालार समेत हरावल बनाकर सय्यद मुज़फ़्फ़रख़ां बारह, शजाअ़तख़ां, लोदीख़ां, पुरदिलख़ां, इख़्लासख़ां, तहव्वुरख़ां, रशीदख़ां, ख़्वास-ख़ां, ज़बरदस्तख़ां, अहमदबेगख़ां, मामूरख़ां, सय्यद नसीरुद्दीन दक्षिणी, जमाल बीजापुरी, क़ादिरदादख़ां, अब्दुलबारी अन्सारी, और इनायत पठानको मुक़र्रर किया. ज़ुल्फ़िक़ारख़ां और बहादुरख़ांको किसी क़द्र तोपख़ानह देकर हरावलसे आगे रहनेका हुक्म हुआ. कुल तोपख़ानहकी अफ़्सरी पर मुर्शिद क़ुलीख़ां रक्खागया.

दहिनी फ़ौजकी अफ़्सरी मुरादबख़्शके नाम कीगई, और उस फ़ौजमें इस्लामख़ां, आज़मख़ां, ख़ानेज़मां, मुख़्तारख़ां, कार तलबख़ां, सैफ़ख़ां, होश्दारख़ां, हिम्मतख़ां, राजा इन्द्रमणि धन्धीरा, राजा सारंगधर, चंपत बुंदेला, भगवन्तसिंह हाड़ा, सय्यद हसन, इस्माईलख़ां नियाज़ी, ग़ैरतबेग, और कछवाहे कर्ण वग़ैरह शामिल कियेगये. शाहज़ादह मुहम्मद आज़मके नाम बाईं फ़ौज की अफ़्सरी रक्खीगई; मददगार फ़ौजकी सर्दारी शैख़ मीरको सौंपीगई, उसके साथ सय्यद मीर उसका भाई, शिरज़ाख़ां, फ़त्हजंगख़ां, जांबाज़ख़ां, सय्यद मन्सूरख़ां, रघुनाथसिंह राठौड़, केसरीसिंह भूरटिया, मंगलीख़ां, इनायत बीजापुरी, वग़ैरह दूसरे लोग तईनात कियेगये. बहादुरख़ांको औरंगज़ेबके दहिनी तरफ़ रक्खागया, और उसके साथ दिलावरख़ां, हिज़ब्रख़ां, हादीदादख़ां, शुभकर्ण बुंदेला और काले पठान थे. ख़ानेदौरांको फ़ौजके बाएं हाथकी तरफ़ रक्खा. ख़्वाजह उबैदुल्ला क़रावलबेगीको मए अब्दुल्लाख़ां, दोस्तबेग, और मुहम्मद शरीफ़ वग़ैरह के गिर्दावरी पर मुक़र्रर किया; आप औरंगज़ेब फ़ौजके अन्दर एक बड़े हाथीपर सवार हुआ, और शाहज़ादे आज़मको भी हाथीपर अपने पास रक्खा. मुर्तज़ाख़ां, असालतख़ां, दीनदारख़ां, सज़ावारख़ां, सआ़दतख़ां, ग़ैरतख़ां,

जुल्फ़िक़ारखां, औरंगखां, दौलतमन्दखां दक्षिणी, मीर इब्राहीम क़ोरबेगी, अल्लाहयार मीर तोज़क, ख़ानहज़ादखां, शैख़ अब्दुल्क़वी वग़ैरह ख़ास लोगों को अर्दलीमें रक्खा.

बर्नियर अपनी किताबमें इस तरह लिखता है- आगेही आगे तोपख़ानह ज़ंजीरोंसे बंधा हुआ, फिर शुतरनाल याने ऊंटोंके ज़ंबूरे और पीछेको बन्दूक़ वाले पैदल सिपाही. और रिसालेके लोगोंके पास तलवार, तीर कमान और बछेंदारोंकी फ़ौजकी सजावट लिखी है; और इसी तरह औरंगज़ेब व मुरादबख़्शकी. लेकिन् इतना सिवाय था, कि बड़े बड़े सर्दारोंके गिरोहमें मीर जुम्ला की तज्वीज़से बड़ी बड़ी तोपें छिपा रक्खी थीं, जिनसे अच्छी कामयाबी हुई; पहिले पहिल बान चलाये गये, जो बारूदके हथियार होते हैं.

खास लड़ाई.

जब दोनों फ़ौजोंकी दुरुस्ती अच्छी तरह होचुकी, तब तारीख़ ७ रमज़ान [वि० ज्येष्ठ शुक्ल ८ = ई० ता० ९ जून] को दो पहर दिन चढ़े दाराशिकोहकी फ़ौजसे पहिले तोप, बन्दूक़, बान वग़ैरह चलने शुरू हुए, और औरंगज़ेब व मुरादकी फ़ौजसे भी उसके जवाब दिये गये. बाईं तरफ़के गिरोहसे सिपहरशिकोह और रुस्तमखां बहादुर फ़ीरोज़जंग दक्षिणीने अपनी दस बारह हज़ार फ़ौजसे औरंगज़ेबके तोपख़ानह पर हम्ला किया. तोपख़ानह वालोंने भी उनको बड़ी मज्बूतीके साथ रोका, लेकिन् वे न रुक सके, और तोपख़ानहकी लैनको चीरकर शाहज़ादे मुहम्मद-सुल्तानकी हरावल फ़ौजपर गिरे, जिससे औरंगज़ेबकी फ़ौजमें बड़ी हल चल होगई. रुस्तमखांके साथियोंमें हाथीपर एक सर्दारके गोला लगा और वह मरगया, जिस से ज़रा सिपहरशिकोह और रुस्तमखांका गिरोह रुका, और फिर औरंगज़ेबकी दहिनी फ़ौजपर झुका, जिसका कि अफ्सर औरंगज़ेबका धाभाई बहादुरखां था. उसने इस हम्लेको बड़ी बहादुरीके साथ रोका और बहुत ज़ख़्मी हुआ, बहुतसे आदमी दोनों तरफ़के मारे गये. रुस्तमखांकी मददके लिये बराबर फ़ौज आती जाती थी, जिससे औरंगज़ेबकी फ़ौजके पैर उखड़नेको थे, लेकिन् इसी मौक़े पर इस्लामखां, सय्यद दिलावरखां, पठान दिलावरखां, बहादुरखांकी मददको पहुंचगये. इसी वक्त शैख़ मीर, सय्यद हुसैन, सैफ़खां, अरबबेग, मुहम्मदसा-दिक़ वगैरा मददगार फ़ौज लेकर पहुंचे, जिससे दोनों तरफ़ बराबरका मुक़ाबला हुआ. उस वक्त सय्यद दिलावरखां औरंगज़ेबका मातहत सर्दार बहुतसे ज़ख़्म खाकर मारागया, और हादीदादखां, सय्यद हुसैन, सैफ़खां, अरबबेग मुहम्मद सादिक़ वग़ैरह ज़ख़्मी हुए, लेकिन् सख़्त मुक़ाबला होनेके बाद सिपहरशिकोह और

रुस्तमख़ांकी फ़ौजके पैर उखड़े. यह ख़बर सुनकर दाराशिकोह बीस हज़ार सवार लेकर सिपहरशिकोह और रुस्तमख़ांकी मददको पहुंचा, लेकिन् औरंगज़ेबके तोपख़ानहकी मारसे दूसरी तरफ़ हटकर मुरादबख़्शसे मुक़ाबला करने लगा; उस वक़् हवा तेज़ और बारिश शुरू थी, थोड़ी देरके बाद बारिश बन्द हुई, और तोपें चलने लगीं. यह ऐसी सख़्त लड़ाई हुई, कि दाराशिकोहकी सवारीका सिंघली हाथी मुर्दोंकी लाशोंसे घिरगया.

औरंगज़ेबके तोपख़ानहसे दाराकी फ़ौजका बहुत नुक्सान हुआ, अरबोंके ऊंट और घोड़े तित्तर बित्तर होगये; तोपोंके बाद तीर कमानोंसे मुक़ाबला हुआ, परन्तु उनसे हवाकी तेज़ीके सबब कम नुक्सान पहुंचा; पीछे दोनों फ़ौजोंके बहादुरोंने बर्छे, तलवार, कटार, और ख़न्जरोंसे अच्छे सवाल जवाब किये. उस वक़् शाहज़ादा दाराशिकोह अपने बहादुरोंका दिल बलन्द आवाज़से बढ़ाताथा. औरंगज़ेबकी फ़ौजका रिसाला पीछे हटा; पर वह बड़ी दिलेरीके साथ अपने मरे हुए बहादुरोंका बदला लेना चाहता था, लेकिन् कामयाब न हुआ. उसने अपनी अर्दलीके सवारों समेत बड़ी बहादुरीके साथ धावा किया, परन्तु दाराके बहादुरोंने हटा दिया. उस वक़् औरंगज़ेबके पास एक हज़ार सवार रहगये थे, तो भी वह बहादुर शाहज़ादा बिल्कुल् न घबराया, बल्कि अपने बहादुरोंको पुकार पुकारकर कहता रहा कि– "ऐ मेरे बहादुरो ख़ुदा तुम्हारे साथ है, हिम्मत न हारो, भागने वालोंके लिये दक्षिण बहुत दूर है, जहां सहारा मिले". दारा औरंगज़ेब पर हम्ला करना चाहता था, परन्तु ऊंची नीची ख़राब ज़मीन और औरंगज़ेबके बहादुर सवारोंके सबब आगे नहीं बढ़ सका.

फिर दारा और मुराद बख़्शका सामना हुआ. मुरादका हाथी भागने लगा, तो मुरादने उसके पैरोंमें ज़ंजीरें डलवादीं. दाराशिकोहका औरंगज़ेबपर हम्ला न करनेका सबब बर्नियरने इस तरह लिखा है, कि जब दाराके बाई तरफ़की फ़ौज तित्तर बित्तर होगई, उस वक़् उसे ख़बर मिली, कि रुस्तमख़ां और बूंदीका हाड़ा राव शत्रुशाल मारेगये, और राजा रामसिंह राठौड़ मुरादके मुक़ाबले पर ख़तरेकी हालत में है, तब औरंगज़ेबका मुक़ाबला छोड़कर दारा अपने बाई तरफ़की फ़ौजकी मदद को पहुंचा, उस वक़् मुरादकी फ़ौजी हालत ख़ौफ़नाक थी. औरंगज़ेब अपने छोटे भाईकी मदद करनेको तय्यार हुआ. आलमगीर नामहमें तो मददगार होकर हम्ला करना लिखा है, लेकिन् ख़फ़ीख़ां मुन्तख़बुल्लुबाबमें लिखता है, कि शाहज़ादे मुरादके साथ मेरा बाप था, और वह लड़ाईमें ज़ख़्मी होकर आख़िर तक

वहां मौजूद रहा, उसके बयान से लिखा है, कि औरंगज़ेब मुरादकी मददको तय्यार हुआ, तो शैख़ मीरने उसे रोका, और कहा, कि एक तीरमें दो चिड़ियां मारी जावें, तो क्या खूब हो; यानी दोनों शाहज़ादे आपसमें ही लड़मरें, तो आपको फ़ायदा है. औरंगज़ेब यह सुनकर रुकगया, लेकिन् मुराद बड़ी बहादुरीके साथ मुक़ाबला करता रहा. राठौड़ रामसिंह रोटला (१) अपने राजपूतों समेत मुरादके हाथी को घेरकर ललकारा कि तू दाराशिकोहके मुक़ाबलेमें क्या बादशाह होना चाहता है? और हाथीके महावतसे कहा, कि हाथी को बिठादे; एक बर्छा मुरादबख़्श पर मारा, उसने ढालके सहारेसे रोका, फिर रामसिंह हाथीका रस्सा काटनेलगा, इसी अर्सेमें शाहज़ादे मुरादने एक तीर रामसिंह के सिरमें बड़े ज़ोरसे मारा, जिसके सबब वह घोड़ेसे गिरकर वहीं मरगया. यह रामसिंह केसरके रंगकी पोशाकके सिवाय सिरपर मोतियोंका सिहरा बांधे हुए था, जो राजपूतोंका लड़ाईमें मरनेके इरादेका लिबास है, रामसिंहके बहुतसे राजपूत हम्ला करके मुरादके हाथीके इर्द गिर्द मारेगये. उसी वक़ राजपूतोंका एक गिरोह औरंगज़ेब और उसकी फ़ौजपर टूटपड़ा, जिसमें कृष्णगढ़ का राजा रूपसिंह, जो घोड़ा छोड़कर पैदल था, अपने राजपूतों सहित नंगी तलवारोंसे औरंगज़ेबकी फ़ौजको चीरकर अपने साथियोंके मारेजाने बाद अकेला शाहज़ादेके हाथी तक पहुंचा, और औरंगज़ेबके हाथी का रस्सा काटने लगा; शाहज़ादे ने बहुत सा कहा, कि इस बहादुर राजपूतको जीता ही पकड़ो, लेकिन् उस वक़ कौन सुनता था, अर्दलीके लोगों के मुक़ाबले में टुकड़े टुकड़े होकर मारागया. राजा विठ्ठलदास गौड़का बेटा रामसिंह और भीमसिंह व राजा शिवराम गौड़ सख़्त ज़ख़्मी हुए.

बर्नियर लिखता है, कि दहिनी फ़ौजके अफ़्सर ख़लीलुल्लाख़ांको, जिसकी बे इज़्ज़ती चन्द साल पेश्तर दाराशिकोहने की थी, हुक्म दिया, कि अपनी फ़ौजको आगे बढ़ाओ, तब उसने जवाब दिया, कि हमारी फ़ौज ज़ुरूरतके वास्ते रक्खी गई है, आपके कहनेसे हम एक क़दम भी नहीं बढ़ सक्ते, और न एक तीर छोड़ेंगे; यह उसने अपनी पहिलेकी हतक इज़्ज़तका बदला लिया, तब दाराशिकोहने अपने दहिनी तरफ़की फ़ौजसे मुरादको पीछे हटाया, और ख़लीलुल्लाख़ांके हम्ला न करनेसे उसका कुछ भी नुक़्सान न हुआ.

---

(१) यह रामसिंह राव मालदेवके बेटे चन्द्रसेन और उसके बेटे कर्मसेनका बेटा था, इसने किसी अकालमें ग़रीब लोगोंको रोटियें बांटी थीं, और हमेशासे दातार था, इस सबबसे शाइरोंने उसको रोटला मश्हूर कर दिया.

खलीलुल्लाखां अपनी फ़ौजका थोड़ासा हिस्सा लेकर दाराशिकोहके पास पहुंचा, जिस वक्त कि वह मुरादको हटारहा था; खलीलुल्लाने चिल्लाकर कहा, कि मुबारक हो मुबारक हो !! फ़तह आपकी है, लेकिन् मैं खैरख्वाहीसे अर्ज़ करता हूं, कि बहुतसे तीर, बन्दूक और गोले चलरहे हैं, कहीं आपके लगजावे, तो मुबारक वक्तमें बड़ा नुक्सान हो. दग़ाबाज़ खलीलुल्लाकी सलाहका दाराशिकोहपर यह असर हुआ, कि वह हाथीसे उतरकर घोड़ेपर चढ़ा; उसका हाथीसे उतरना मानो हिन्दुस्तानके तख्तसे उतरना था. बर्नियरके बयानसे आलमगीरनामह व मुन्तखबुल्लुबाब के बयानमें यह फ़र्क़ है, कि खलीलुल्लाकी दग़ाबाज़ीका बिल्कुल ज़िक्र नहीं, जो उसने लड़ाईके वक्त की, बल्कि खफ़ीखां और मुहम्मद काज़िमने लिखा है, कि मुरादबख़्श पर खलीलुल्लाखांने बड़ा सख्त हम्ला किया; खलीलुल्लाखांका औरंगज़ेबके पास चलाजाना फ़ार्सी तवारीखोंमें भी लिखा है, लेकिन् बर्नियरने तो दाराके भागते ही खलीलुल्लाका औरंगज़ेबसे मिलजाना और फ़ौज वगैरह सुपुर्द करदेना ऊपर लिखे मुताबिक़ ही बयान किया है, और फ़ार्सी तवारीखोंमें जैसे दूसरे लोगोंका औरंगज़ेबसे लड़ाईके बाद आमिलना लिखा है, उसी तरह इसका हाल ज़ाहिर किया है; अब नहीं मालूम कौनसी बात कहांतक सच है, हमने दोनों बयानोंमें जो फ़र्क़ था वह बतला दिया.

दाराशिकोहकी शिकस्त-

ज्योंहीं कि दाराशिकोह हाथीसे उतर कर घोड़ेपर चढ़ा, फ़ौजने जाना, कि वह मारागया या भागगया. इस खयालसे फ़ौज भी भाग निकली, और लाचार दाराशिकोहको भी भागना पड़ा. औरंगज़ेबने दाराके भागनेसे मुरादको हिन्दुस्तानका बादशाह कहा, और खलीलुल्लाखांको भी मुरादबख़्शके पास लेजाकर कहा, कि यही हिन्दुस्तानका ताज पहरनेके लायक़ है, और इसीकी होश्यारी व दिलेरीसे फ़तह हुई.

इस लड़ाईमें दाराकी तरफ़के नीचे लिखे हुए बहादुर सर्दार मारेगये :-

रुस्तमखां बहादुर, बूंदीका राव शत्रुशाल हाड़ा, रामसिंह राठौड़, भीम गौड़, राजा शिवराम गौड़, कृष्णगढ़का रूपसिंह राठौड़, मुहम्मद सालिह दीवान, सय्यद नाहरखां बारह, यूसुफ़खां रुहेला, इस्माईलबेग, इस्हाक़बेग, शैख मुअ़ज़्ज़म फ़तहपुरी, ख्वाजहखां, हाजीबेग, इस्फन्दयारबेग, आसिफ़बेग गुर्ज़ बर्दार, सय्यद बायज़ीद, गुमानसिंह हाड़ा, शैख खान मुहम्मद, केसरीसिंह राठौड़, महदीबेग तुर्कमान, सय्यद इस्माई-ल बारह, सय्यद कमालुद्दीन बुखारी, इब्राहीमबेग नज्मे सानी, सुजानसिंह राठौड़, सय्यद फ़ाज़िल बारह वगैरह. और बहुतसे लोग ज़ख्मी हुए.

औरंगज़ेब की तरफ़के सर्दारोंमेंसे-- आज़मखां फ़तहके बाद हवाकी तेज़ी

और ज़िरहबक्तरकी गर्मीसे मरगया. सज़ावारखां, हादीदादखां और सय्यद दिलावरखां मारेगये; बहादुरखां कूका, ज़ुल्फ़िक़ारखां, मुर्तज़ाखां, दीनूदारखां, गैरत-बेग, मुहम्मद सादिक़, मम्रेज़ महमन्द वगैरह ज़ख़्मी हुए-

मुरादबख़्शकी फ़ौजमेंसे ग़रीबदास सीसोदिया महाराणा राजसिंहका काका, जिसने तीन बार दाराशिकोहकी फ़ौजमें घोड़ा डाला और वह दाराके हाथी तक पहुंचगया था, परन्तु हाथी ऊंचा होनेके कारण कुछ नुक्सान न पहुंचा सका, बड़ी बहादुरीके साथ मारागया. सुल्तानयार और सय्यद शैखन् बारह वगैरह बीस सर्दार मारेगये. मुरादबख़्श अपने सर्दारोंके सिवाय खुद भी घायल हुआ, उसके बदन व चिहरेपर तीरोंके ज़ख़्मोंसे लोहू टपकता था, और उसके बैठनेका हौदा तीर व बर्छोंके लगनेसे टांटियों (बरों) के छत्तेकी तरह होगया था, जो कि फ़र्रुख़सियरके अह्द तक अजायबातके तौरपर रक्खा रहा. औरंगज़ेबने मुरादको अपने घुटनेपर लिटाकर उसके ज़ख़्मोंका खून पोंछा, और आंखोंमें आंसू भरलाया, व उसकी बहादुरीकी तारीफ़ करके उसको बादशाह होनेकी मुबारकबाद देता था.

बर्नियरके क़ौलके बमूजिब तीन या चार सौ आदमी और ख़फ़ीख़ांके लिखनेके मुताबिक़ दो हज़ार सवार दाराके पास बचे थे. वह शामके वक़ अंधेरेमें अपनी आगरेकी हवेलीमें दाख़िल हुआ. शाहजहांने उसको अपने पास बुलाना चाहा, परन्तु वह शर्मिन्दगीके मारे न गया. उसी रातके पिछले पहरको सिपहरशिकोह वगैरह लड़के और औरतोंको सवारियोंपर बिठाकर रुपये, अशर्फ़ी और जवाहिरात वगैरह दौलत जितनी चल सकी हाथी, ऊंट व खच्चरों पर लादी, और दिल्लीकी तरफ़ रवाना हुआ. जब वहांसे तीन मन्ज़िल पहुंचा, तब कितने ही उसके भागे हुए व शाहजहांके भेजेहुए कुल पांच हज़ार आदमीके क़रीब एकट्ठे होगये. जिस वक़ कि वह आगरेसे निकल गया, तो शाहजहांने पीछेसे लिखभेजा, कि तुम दिल्ली जाओ, वहां तुमको एक हज़ार घोड़े और वहांके हाकिमसे बहुत कुछ मदद मिलेगी; मैं भी तुमको तहरीरके ज़रीएसे ख़बर देता रहूंगा, और क़ाबू पाया तो औरंगज़ेबको भी सज़ा दूंगा. इसी मुवाफ़िक़ दारा दिल्ली गया, और ता० १४ रमज़ान [ज्येष्ठ शुक्ल १५ = ता० १६ जून] को वहां पहुंचकर बाबरके क़िलेमें उसने क़ियाम किया.

अब औरंगज़ेबका कुछ हाल क़लम बन्द किया जाता है—

इस बड़ी फ़त्हके बाद औरंगज़ेब और मुरादने समूनगरके महलोंमें मक़ाम किया, जो कि जमुनाके किनारे पर हैं. वहां अपने बहादुर ज़ख़्मियों व मुराद-बख़्शके ज़ख़्मोंका इलाज करवाया. औरंगज़ेब ज़ाहिरमें बे अक़्ल मुरादको

हज़रत और बादशाह कहता था, लेकिन् पोशीदा अपनी ही बादशाहतकी बन्दिशें बांधरहा था; उसने कुल सर्दारोंको मिलानेके लिये खत जारी किये, और मामूं शायस्ताखांको मिला लिया, कि जिसके सबब शाहजहांके पास भी वसीला हो; क्योंकि बादशाहकी बेटी जहांआरा दाराकी मददगार हर वक्त बादशाहके पास मौजूद रहती थी. शाहजहांने दाराके इशारेसे या अपने शकसे शायस्ताखांको कैद किया, लेकिन् दो दिनके बाद उसे छोड़दिया. औरंगज़ेब ने एक अर्ज़ी इस मज़्मूनकी अपने बापको लिखी, कि- मेरा इरादा तो आपकी सिहतपुर्सीको आनेका था, क्योंकि आपकी बीमारीकी कई तरहसे खराब खबरें सुनीगई, मैं हर्गिज़ लड़ाई करना नहीं चाहता था, लेकिन् राजा जशवन्तसिंह ने बे अक्ली और गुस्ताखीसे मुझे उज्जैनके पास रोका, मैं लाचार उसे सज़ा देकर आगरेकी तरफ़ रवाना हुआ, तो बेवकूफ़ दाराने फ़सादके इरादेसे फ़ौज लेकर मुझे रोका, जिसका फल जैसा चाहिये था, वैसा उसे भी मिला, और मैं लाचार हूं, जो तक्दीरमें था, हुआ.

ता० १० रमज़ान [ज्येष्ठ शुक्ल ११ = ता० १२ जून] को समूनगरसे रवाना होकर नूरमन्ज़िल बाग़में पहुंचा, जो आगरेसे तीन मील है. वहां शायस्ताखां व मीर जुम्लाका बेटा मुहम्मद अमीनखां औरंगज़ेबसे आमिले. दूसरे दिन उसकी बहिन जहांआरा बेगम, जो शाहजहांके दिलकी मुख्तार थी, शाहज़ादोंके पास नसीहत करनेको आई, लेकिन् उसकी नसीहतोंका असर, जैसा कि चाहिये था, न हुआ; वह पीछे अपने बापके पास गई- शाहजहांने दुबारा एक खत नसीहतों के साथ और एक तलवार शाही सिलहखानेसे उम्दा क़िस्मकी, जिसका नाम आलमगीर था, औरंगज़ेबके पास भेजी. औरंगज़ेबने उसे अच्छा शकुन समझकर रखलिया, और दिलमें इरादा किया, कि अगर मैं बादशाह हुआ, तो इसीके नामसे अपना आलमगीर खिताब इख्तियार करूंगा; इसके बाद आगरेके क़िले पर क़ब्ज़ा किया, और मथुरामें मुरादको क़ैद करलिया, दाराशिकोहको मारा, शुजाअ्को शिकस्त दी, और आप "आलमगीर" नामसे बादशाह बना. यह बयान मौक़ेपर आगे लिखा जायगा.

इस समयसे औरंगज़ेब (आलमगीर) को बादशाह कहना चाहिये, शाहजहां आगरेके क़िलेमें नज़र क़ैद रहा, लेकिन् बाज़े आदमी जो आलमगीरकी बदनामी करनेके लिये शाहजहांको सख्त क़ैद रखना लिखते हैं, वह नादुरुस्त है, उसको सिर्फ़ ग़ैर आदमियोंसे मिलने और आगरेके क़िलेसे बाहर जानेकी मनाई थी. वह क़िलेमें आरामके साथ रहता, और जो चीज़ चाहता, वही हाज़िर कीजाती थी.

शाहजहां हिज्री १०७६ ता० २६ रजब [वि० १७२२ माघ कृष्ण १२ = ई० १६६६ ता० १२ फ़ेब्रुअरी] को पेचिश और पेशाब बंद होनेकी बीमारीसे मरगया, और आगरा मक़ामपर मुम्ताज़ महलके रौज़ेमें दफ़्न हुआ.

इस बादशाहका क़द मंझोला, रंग गेहुआं कुछ पीलापन लिये हुए, मंझली पेशानी, डाढ़ीमें दहिनी तरफ़ एक तिल, भौं अलग अलग, आंखें मंझली व सफ़ेद, पुतली सियाह, दहिनी आंखकी पलकपर तिल था, सीधी और बड़ी नाक, बाईं आंख और नाकके बीचमें एक मस्सा, कान मंझले, मुंहफाड़ भी मंझली, ऐसेही होंठ, छोटे छोटे मिले हुए दांत, मीठी आवाज़, और तुर्की, फ़ार्सी, हिन्दीमें अच्छी तरह बात चीत करता था. डाढ़ी एक मुठ्ठीसे ज़ियादह लंबी कभी नहीं रक्खी. गर्दन मंझली, सीना कुछ चौड़ा, हाथ मंझले. अंगुलियां न कड़ी न नर्म और दहिने हाथकी अंगुलीमें दो तीन तिल थे.

यह बादशाह पहिले शाहज़ादगीके दिनोंमें बहादुर और लड़ाईका शौक़ीन था, लेकिन् तख़्तपर बैठनेके बाद अय्याश होगया, यह नर्म दिल और सख़ी तबीअत था, परन्तु कभी कभी सख़्ती भी करता, जैसा कि हैरिसके सफ़र-नामोंकी किताबकी पहिली जिल्दके ७६३ एष्ठमें जॉन ऐल्बर्ट डी मेन्डेल्स्लो अपने हालमें लिखता है, कि "जब मैं हिन्दुस्तानका सफ़र करने आया, तो वहां शाह खुर्रमकी हुकूमत थी, जो हर रोज़ शेर हाथी चीते वग़ैरह वहशी जानवरोंकी लड़ाई और अक्सर उन जानवरोंके साथ आदमियोंकी लड़ाई भी देखता था. अपने बेटेके जन्मदिन पर एक शेर बबर और एक बाघकी लड़ाई देखनेके लिये बैठा था; वह दोनों आपसमें लड़कर बहुत घायल हुए, तब बादशाहके हुक्मसे यह इश्तिहार दियागया, कि जिस किसीकी इतनी हिम्मत हो, कि सिर्फ़ तलवार और ढाल लेकर इनमेंसे एक जानवरके साथ लड़े, तो उसको इस जानवरके हरादेनेपर खां का ख़िताब मिलेगा. तीन हिन्दुस्तानी तय्यार हुए, और उनमेंसे एक आदमी एक ज़बरदस्त शेरसे लड़ने लगा; थोड़ी देर तक खूब लड़ा, और जब वह जानवर उसके बाएं हाथकी तरफ़ ज़ोरसे झपटा, जिसमें उसकी ढाल थी, तो उसके बोझसे ढाल गिरी; आदमीने अपनी जान ख़तरेमें देखकर कमरसे कटार निकाला, और शेरके जबड़ेमें घुसा दिया; इससे शेर उसे छोड़कर जाने लगा, लेकिन् उस आदमीने उसका पीछा किया, और मारकर ज़मीनपर गिरादिया. बादशाह उससे खुश न हुआ, बल्कि उसपर ज़ियादह गुस्सा किया, क्योंकि तलवार और ढालके अलावा उसने कटारका इस्तेमाल किया. बादशाहने हुक्म दिया, कि उस आदमीका पेट चाक किया जावे, और उसकी लाश

सारे शहरके लोगोंको दिखलाई जावे. फिर दूसरा आदमी भी एक बाघसे लड़ने को तय्यार हुआ, लेकिन् जानवरने उसकी गर्दन पकड़कर मारडाला. तीसरा आदमी अपने साथियोंकी बद क़िस्मतीसे बिल्कुल न डरा, और बड़ी दिलेरीके साथ उसने शेरको मारलिया; पहिले एक वारमें उसके दोनों पंजे काटडाले थे; उसकी बहादुरीसे बादशाह बहुत ख़ुश हुआ, और ख़ांका ख़िताब व एक कलाबतूनी पोशाक उसे अपने हाथसे बख़्शी-"

इसी तरह बादशाहके ज़ियादह आराम तलब और बेख़बर होजानेके सबब उसके नौकर भी अक्सर जुल्म किया करते थे- जैसे कि वही मुसाफ़िर इसी किताबके ७५९ एष्ठमें गुजरातका हाल लिखता है- कि

"हिज्री १०४८ ता० ७ जमादियुस्सानी [वि० १६९५ आश्विन शुक्ल ९ = ई० १६३८ ता० १८ ऑक्टोबर] को अहमदाबादके हाकिम अरबख़ां की मुलाक़ातको मैं एक अंग्रेज़ सौदागरके साथ गया, वह ख़ां एक बाग़में ठहराहुआ था. एक घंटे बातचीत करने बाद हम लोगोंकी दावत की. ता० ९ जमादियुस्सानी आश्विन शुक्ल ११ = ता० २० ऑक्टोबर] को दूसरी दफ़ा मुलाक़ात करनेके लिये गया, वह उसी जगहमें था, उसकी बात चीत शाह सफ़ीके बाबत होती रही, और उसके बारेमें यह पूछा, कि उसकी संगदिली अभीतक क़ायम है? मैंने जवाब दिया, कि ज़ियादा उम्र होनेके सबब उसके मिज़ाजकी तेज़ी तो कुछ कम हुई है; तब उसने कहा, कि ख़ान्दानी जुल्म और संगदिली उसके दादाके वक़्से चलीआती है.

खाना खानेके बाद हम लोग ख़ांसे रुख़्सत हुए; एक दिन अंग्रेज़ी और डच कारख़ानेके दो ख़ास दारोग़ोंको दावतके लिये बुलवाया, और उनको नाच दिखलानेके लिये तवाइफ़ोंका एक गिरोह तलब किया, उनका तमाशा होजानेके बाद दूसरा गिरोह बुलानेका हुक्म दिया, लेकिन् वह दूसरी जगह मश्ग़ूल होनेके सबब न आसका, और बीमारीका बहाना किया, लेकिन् ख़ां उस उज़्रसे चुप न हुआ, दूसरी बार बुलावा भेजा; उसके नौकर फिर भी वही जवाब लेकर ख़ाली वापस आये, तो नौकरोंको सज़ा देनेका हुक्म दिया, वे अपने तई ख़तरेमें देखकर ख़ांके पैरों पड़े, और साफ़ बयान किया, कि बीमारीका सबब नहीं था, लेकिन् रुपयेके लालचसे उन औरतोंने हुक्मको नहीं माना. इसपर ख़ां हंसा, और फ़ौरन एक गारद भेजा, कि जाकर उन्हें गिरिफ़्तार कर लावे; जब वे गिरिफ़्तार होकर आईं, तब उनका सिर काटनेका हुक्म दिया, जिसकी फ़ौरन् तामील हुई."

शाहजहां बादशाहकी औलाद १६ थी, जिनमेंसे पुरहुनर बानू लड़की मुज़फ़्फ़र-

हुसैन मिर्ज़ा सफ़वीकी बेटीसे हिज्री १०२० ता० १२ जमादियुस्सानी [वि० १६६८ श्रावण शुक्ल १३ = ई० १६११ ता० २३ ऑगस्ट] को और शाहज़ादा जहां-अफ़रोज़ नाम मिर्ज़ा अब्दुर्रहीम खानखानांकी बेटीसे हिज्री १०२८ ता० १२ रजब [वि० १६७६ आषाढ़ शुक्ल १३ = ई० १६१९ ता० २६ जून] में पैदा हुआ था, जो डेढ़ वर्षका होकर मर गया.

बाक़ी ८ बेटे और ६ बेटियें हमीदाबानू मुम्ताज़ महलसे पैदा हुई थीं, जिसका बयान इस तरहपर है-

(१)- बादशाहज़ादी हूरनिसा बेगम हि० १०२२ ता० ८ सफ़र [वि० १६७० चैत्र शुक्ल १० = ई० १६१३ ता० ३१ मार्च] शनैश्चरके दिन पैदा हुई, जो तीन वर्षके बाद मरगई.

(२)- जहां आरा शाहज़ादी, मश्हूर बेगम साहिब हि० १०२३ ता० २१ सफ़र [वि० १६७१ वैशाख कृष्ण ७ = ई० १६१४ ता० १ एप्रिल] शनैश्चर को पैदा हुई.

(३)- बड़ा शाहज़ादा मुहम्मद दारा शिकोह, हि० १०२४ ता० २९ सफ़र [वि० १६७२ चैत्र शुक्ल १ = ई० १६१५ ता० ३० मार्च] रवि वारको पैदा हुआ.

(४)- बादशाहज़ादा मुहम्मद शुजाअ बहादुर, हि० १०२५ ता० १८ जमादियुस्सानी [वि० १६७३ श्रावण कृष्ण ४ = ई० १६१६ ता० ४ जुलाई] शनैश्चरकी रातको पैदा हुआ.

(५)- बादशाहज़ादी रौशनराय बेगम, हि० १०२६ ता० २ रमज़ान [वि० १६७४ भाद्रपद शुक्ल ४ = ई० १६१७ ता० ४ सेप्टेम्बर] को पैदा हुई.

(६)- बादशाहज़ादा मुहम्मद औरंगज़ेब बहादुर, हि० १०२७ ता० १५ ज़िल्क़ाद [वि० १६७५ मार्गशीर्ष कृष्ण १ = ई० १६१८ ता० ४ नोवेम्बर] रवि वारकी रातको पैदा हुआ.

(७)- बादशाहज़ादा उम्मेदबख़्श, हिज्री १०२९ ता० ११ मुहर्रम [वि० १६७६ मार्गशीर्ष शुक्ल १३ = ई० १६१९ ता० २१ डिसेम्बर] बुध वारके दिन पैदा हुआ, और दो वर्ष बाद मरगया.

(८)- बादशाहज़ादी सुरय्याबानू बेगम, हिज्री १०३० ता० २० रजब [वि० १६७८ आषाढ़ कृष्ण ६ = ई० १६२१ ता० ११ जून] को पैदा हुई, और सात वर्ष बाद मरगई.

(९)- एक लड़का हिजी १०३२ [वि० १६८० = ई० १६२३] में पैदा होकर नाम रखनेसे पहिले थोड़े दिनोंमें मरगया.

(१०)- शाहज़ादा मुराद बख़्श, हिजी १०३३ ता० २५ ज़िल्हिज [वि० १६८१ कार्तिक कृष्ण ११ = ई० १६२४ ता० ९ ऑक्टोबर] बुधकी रातको पैदा हुआ.

(११)- बादशाहज़ादा लुत्फ़ुल्लाह, हि० १०३६ ता० १४ सफ़र [वि० १६८३ कार्तिक शुक्ल १५ = ई० १६२६ ता० ४ नोवेम्बर] बुधकी रातको पैदा हुआ, और डेढ़ वर्ष बाद मरगया.

(१२)- बादशाहज़ादा दौलतअफ़ज़ा, हि० १०३७ ता० ४ रमज़ान [वि० १६८५ वैशाख शुक्ल ६ = ई० १६२८ ता० १० मई] बुध वारकी रात को पैदा हुआ, और एक वर्ष बाद मरगया.

(१३)- शाहज़ादी कुद्सिया बेगम, हिजी १०३९ ता० १० रमज़ान [वि० १६८७ वैशाख शुक्ल १२ = ई० १६३० ता० २४ एप्रिल] को पैदा हुई, और जल्दी ही मरगई.

(१४)- शाहज़ादी गौहर आरा बेगम, हिजी १०४० ता० १७ ज़िल्काद [वि० १६८८ आषाढ़ कृष्ण ३ = ई० १६३१ ता० १७ जून] बुध वारकी रातको पैदा हुई.

इनमेंसे शाहजहांकी बीमारीके वक्त हिजी १०६८ [वि० १७१५ = ई० १६५८] में चार शाहज़ादे दाराशिकोह, शुजाअ् बहादुर, औरंगज़ेब बहादुर और मुरादबख़्श ज़िन्दा थे.

औरंगज़ेबने तख़्तपर बैठकर दाराशिकोह और मुरादबख़्शको क़ैद होने बाद क़त्ल करादिया, और शुजाअ् भागकर अराकानमें मारागया.

शाहजहां बादशाहके मन्सब्दार सर्दारोंकी फ़िहरिस्त नीचे लिखीजाती है—

मन्सब्दारोंकी फ़िहरिस्त- सन् १०६८ हिजी [वि० १७१५ = ई० १६५८] तक.

बादशाहज़ादे.

(१) बड़ा शाहज़ादा मुहम्मद दाराशिकोह- साठ हज़ारी ज़ात, चालीस हज़ार सवार.

(२) बादशाहज़ादा शुजाअ् बहादुर- बीस हज़ारी ज़ात, पन्द्रह हज़ार सवार.

(३) बादशाहज़ादा मुहम्मद औरंगज़ेब बहादुर- बीस हज़ारी ज़ात, पन्द्रह हज़ार सवार.

(४)- शाहज़ादह मुराद बख़्श- पन्द्रह हज़ारी ज़ात, बारह हज़ार सवार.
(५)- शाहज़ादह दाराशिकोहका बेटा सुलैमानशिकोह- पन्द्रह हज़ारी ज़ात, आठ हज़ार सवार.
(६)- दाराका दूसरा बेटा फ़ल्कशिकोह (सिपह्रशिकोह)- आठ हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(७)- शाहज़ादह शुजाअ़का बेटा ज़ैनुद्दीन- सात हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(८)- शाहज़ादह औरंगज़ेबका बेटा मुहम्मद सुल्तान- सात हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.

मन्सब्दार सर्दार

नौ हज़ारी.

(९)- यमीनुद्दौला आसिफ़ख़ां ख़ानख़ानां सिपहसालार- नौ हज़ारी ज़ात व सवार.

सात हज़ारी.

(१०)- ख़ानेदौरां बहादुर नुस्रतजंग- सात हज़ारी ज़ात, व सात हज़ार सवार.
(११)- अ़ली मर्दानख़ां अमीरुल उमरा- सात हज़ारी ज़ात, व सात हज़ार सवार.
(१२)- इस्लामख़ां- सात हज़ारी ज़ात, व सात हज़ार सवार.
(१३)- सईदख़ां बहादुर ज़फ़रजंग- सात हज़ारी ज़ात, व सवार.
(१४)- मुल्ला सादुल्लाख़ां- सात हज़ारी ज़ात, व सात हज़ार सवार.
(१५)- महाबतख़ां ख़ानख़ानां- सात हज़ारी ज़ात, सात हज़ार सवार.
(१६)- अ़ब्दुल्लाख़ां बहादुर ज़फ़रजंग- सात हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.
(१७)- ख़ानेजहां लोदी- सात हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.
(१८)- सय्यद ख़ानेजहां बारह- सात हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.
(१९)- अफ़्ज़लख़ां- सात हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.
(२०)- जोधपुरका महाराजा जशवन्तसिंह राठौड़- सात हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.
(२१)- रुस्तमख़ां बहादुर- सात हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.

छः हज़ारी.

(२२)- सय्यद जलाल बुख़ारी- छः हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.
(२३)- ख़्वाजह अबुलहसन- छः हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.
(२४)- शायस्ताख़ां ख़ानेजहां- छः हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार.
(२५)- मिर्ज़ा राजा जयसिंह कछवाहा आंबेरका- छः हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.

(२६) - खानेज़मां बहादुर- छः हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(२७) - क़िलीचखां बहादुर- छः हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.

पांच हज़ारी.

(२८) - वज़ीरखां- पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(२९) - शाह नवाज़खां- पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३०) - उदयपुरका महाराणा जगत्सिंह - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३१) - जोधपुरका राजा गजसिंह राठौड़ - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३२) - राजा विट्ठलदास गौड़ अजमेरका - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३३) - सफ़्दर्खां - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३४) - सिपहदारखां - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३५) - राणा राजसिंह (१) उदयपुरका - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३६) - ख़्वासखां - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३७) - राव रत्नसिंह हाड़ा बूंदीका - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३८) - राजा जुझारसिंह बुंदेला ओर्छेका - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(३९) - जाफ़रखां - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(४०) - मालूजी (मरहटा) दक्षिणी - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(४१) - ऊदाजी राम (मरहटा) दक्षिणी - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(४२) - ख़लीलुल्लाखां - पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार.
(४३) - असालतखां - पांच हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(४४) - मिर्ज़ा अलीतरखां - पांच हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(४५) - राजा रायसिंह सीसोदिया टोडेका - पांच हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(४६) - मुअ़ज़्ज़मखां मीरजुम्ला - पांच हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.

चार हज़ारी.

(४७) - सय्यद शजाअ़तखां - चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(४८) - मक्रमतखां - चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(४९) - नजाबतखां - चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(५०) - मोतक़िदखां - चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.

---

(१) इनको बादशाह तो अपनी तरफ़से मन्सब्दारोंमें शुमार करते थे और यह अपनेको आज़ाद जानते थे, हक़ीक़तमें यह न नौकरीमें जाते न घोड़ोंकी गिनती करवाते, लेकिन् मुसल्मान मुवर्रिख़ोंने बड़प्पन दिखलानेको फ़िहरिस्तमें दर्ज करदिया, इस लिये हमने भी लिखा है.

(५१) – सैफ़ख़ां – चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(५२) – सादिक़ख़ां – चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(५३) – दर्याख़ां रुहेला – चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(५४) – क़ासिमख़ां – चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(५५) – राव शत्रुशाल हाड़ा बूंदीका– चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(५६) – नज़र बहादुर– चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(५७) – रशीदख़ां– चार हज़ारी ज़ात, चार हज़ार सवार.
(५८) – सर्दारख़ां– चार हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
(५९) – राजा भारसिंह बुंदेला– चार हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
(६०) – जांसुपारख़ां– चार हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
(६१) – शाहबेगख़ां– चार हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
(६२) – राव अमरसिंह राठौड़ नागोरका– चार हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
(६३) – राव सूरसिंह बीकानेरका– चार हज़ारी ज़ात, तीन हजार सवार.
(६४) – रूपसिंह राठौड़ कृष्णगढ़का– चार हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
(६५) – सफ़्दरख़ां– चार हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(६६) – सलाबतख़ां बख़्शी– चार हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(६७) – मोतमदख़ां– चार हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(६८) – हमीरराय– चार हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(६९) – एतिक़ादख़ां– चार हज़ारी ज़ात, बारह सो सवार.
(७०) – अब्दुर्रहमान– चार हज़ारी ज़ात, पांच सो सवार.

तीन हज़ारी.

(७१) – ज़ुल्फ़िक़ारख़ां– तीन हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
(७२) – कारतलबख़ां– तीन हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
(७३) – सज़ावारख़ां– तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(७४) – माधवसिंह हाड़ा कोटेका– तीन हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
(७५) – पुर्दिलख़ां– तीन हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
(७६) – जौहरख़ां– तीन हज़ारी ज़ात तीन हज़ार, सवार.
(७७) – राजा बांधू अनूपसिंह बघेला रीवांका–तीन हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार.
(७८) – राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ अजमेरका– तीन हज़ारी ज़ात. तीन हज़ार सवार.
(७९) – सआदतख़ां– तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(८०) – जहांगीर कुलीख़ां– तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.

(८१) – अज़ीज़ुल्लाख़ां- तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(८२) – महेशदास राठौड़ रतलामके राजाओंका बुज़ुर्ग और जोधपुरके राजा उदयसिंहका पोता- तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(८३) – शाह बाज़ख़ां- तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(८४) – मीर नूरुल्ला – तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(८५) – बकलानेका भरजी – तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(८६) – ज़ुलक़द्रख़ां-- तीन हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(८७) – मिर्ज़ा हसन-- तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(८८) – महाबतख़ांका बेटा लुहरास्पख़ां – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(८९) – अब्दुर्रहीमका पोता मिर्ज़ाख़ां-- तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९०) – अब्दुल्लाख़ांका भतीजा ग़ैरतख़ां – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९१) – अमीरख़ां – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९२) – शैख़ फ़रीद – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९३) – आंबेरके राजा जयसिंहका बेटा रामसिंह – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९४) – राव मुकुन्दसिंह हाड़ा कोटेका – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९५) – राव करण बीकानेरी – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९६) – शाह कुलीख़ां – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९७) – मुर्तज़ाख़ां – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९८) – ज़फ़रख़ां – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(९९) – मऊका राजा जगत्सिंह- तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१००)- फ़ीरोज़ख़ां – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१०१)- ऊदाजीराम (मरहटा) दक्षिणी- तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१०२)- पर्सूजी मरहटा सितारे वाला घोसला – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१०३)- हमीदख़ां – तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१०४)- जादवराय (मरहटा) दक्षिणी- तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१०५)- हबशख़ां- तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१०६)- मनकूजी बनालकर (मरहटा)- तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१०७)- रावत राय (मरहटा) दक्षिणी- तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१०८)- सय्यद हिज़ब्रख़ां- तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१०९)- ताहिरख़ां – तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(११०)- कर्मसी राठौड़का बेटा सर्दारसिंह – तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.

(१११)– असदखां मामूरी – तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(११२)– राजा अनूपसिंह – तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(११३)– आक़िलखां – तीन हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(११४)– मुहम्मद अमीनखां – तीन हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(११५)– राजा मनरूप कछवाहा – तीन हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(११६)– बीरमदेव सीसोदिया (शाहपुरेके सुजानसिंहका छोटा भाई और महाराणा पहिले अमरसिंहका पोता) – तीन हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(११७)– फ़ाज़िलखां – तीन हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(११८)– हकीम मसीहुज़्ज़मां – तीन हज़ारी ज़ात, पाच सौ सवार.
(११९)– तक़र्रुबखां – तीन हज़ारी ज़ात, तीन सौ सवार.

ढाई हज़ारी.

(१२०)– मुर्शिदकुलीखां तुर्कमान – ढाई हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(१२१)– अहमदखां नियाज़ी – ढाई हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(१२२)– शम्शेरखां – ढाई हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(१२३)– हादीदादखां – ढाई हज़ारी ज़ात, ढाई हज़ार सवार.
(१२४)– जांनिसारखां – ढाई हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१२५)– सफ़्शिकनखां – ढाई हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१२६)– एवज़खां क़ाक़शाल – ढाई हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१२७)– राजा देवीसिंह बुंदेला – ढाई हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१२८)– नाम्दारखां – ढाई हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१२९)– लश्करखां – ढाई हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१३०)– ख़िद्मतपरस्तखां – ढाई हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१३१)– दिलावरखां दक्षिणी – ढाई हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.
(१३२)– शम्सखां दक्षिणी – ढाई हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१३३)– तर्बियतखां – ढाई हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१३४)– हयातखां – ढाई हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१३५)– फ़ाख़िरखां – ढाई हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१३६)– सबलसिंह सीसोदिया (शक्तावत भींडर इलाके मेवाड़का) – ढाई हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१३७)– अब्दुर्रहीम उज़्बक – ढाई हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१३८)– नवाज़िशखां – ढाई हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.

(१३९)- जीवनखां - ढाई हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.

(१४०)- सय्यद हिदायतुल्ला - ढाई हज़ारी ज़ात, दो सौ सवार.

दो हज़ारी.

(१४१)- अरबखां- दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.

(१४२)- उज़्बकखां - दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.

(१४३)- कज़ाक़खां - दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.

(१४४)- बाक़ीखां - दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.

(१४५)- मुबारकखां - दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.

(१४६)- मुहम्मदज़मां - दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.

(१४७)- एथ्वीराज राठौड़ - दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.

(१४८)- राजा राजरूप पंजाबी नूरपुर कांगड़ाका - दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.

(१४९)- राजा सुजानसिंह बुंदेला - दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.

(१५०)- इरादतखां - दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.

(१५१)- ख्वाजह बर्खुर्दार - दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.

(१५२)- गिर्धरदास गौड़ अजमेरका - दो हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार.

(१५३)- महेशदासका बेटा रत्न राठौड़ रतलामका राजा- दो हज़ारी ज़ात, सोलह सौ सवार.

(१५४)- इख्लासखां - दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.

(१५५)- जाहिदखां कोका - दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.

(१५६)- एहतिमामख़ां - दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.

(१५७)- इनायतुल्ला - दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.

(१५८)- रहमतखां - दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.

(१५९)- अहमदबेगखां - दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.

(१६०)- राजा सूरजसिंहका बेटा सबलसिंह राठौड़ - दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.

(१६१)- ज़बरदस्तखां - दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.

(१६२)- मुख्तारखां - दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.

(१६३)- रामपुरेका राव दूदा चन्द्रावत - दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.

(१६४)- अर्जुन गौड़ शिवपुरका - दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.

(१६५)- राजा शिवराम - दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.

(१६६)- अबुल्मआली - दो हज़ारी ज़ात, चौदह सौ सवार.
(१६७)- दीनदारखां - दो हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१६८)- बिहारीसिंह कछवाहा - दो हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१६९)- राव रूपसिंह चन्द्रावत रामपुरेका - दो हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१७०)- राजा रोज़ अफ़ज़ूं - दो हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१७१)- अब्दुल्हादी - दो हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१७२)- आतिशखां हबशी - दो हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१७३)- हाजी मन्सूर - दो हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१७४)- बख़्तियारखां - दो हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१७५)- अब्दुर्रहीमबेग - दो हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१७६)- राजा रामदास नर्वरी - दो हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१७७)- शेरखां - दो हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१७८)- पीथूजी (मरहटा) दक्षिणी - दो हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१७९)- सुजानसिंह सीसोदिया शाहपुरेका - दो हज़ारी ज़ात, आठ सौ सवार.
(१८०)- खुशहालबेग - दो हज़ारी ज़ात, आठ सौ सवार.
(१८१)- दयानतखां - दो हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(१८२)- महदीकुलीखां - दो हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(१८३)- हक़ीक़तखां - दो हज़ारी ज़ात, तीन सौ सवार.

डेढ़ हज़ारी.

(१८४)- मुहम्मद हुसैन - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१८५)- सय्यद अब्दुल्वहहाब - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१८६)- राय टोडरमल्ल - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१८७)- यक्का ताज़खां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१८८)- अमानबेग - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१८९)- बहादुरखां रुहेला - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१९०)- इसफ़िन्दयारबेग - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१९१)- अब्दुर्रहमान - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१९२)- डूंगरपुरका रावल पूंजा - डेढ़ हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवार.
(१९३)- कुतुबुद्दीनखां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, चौदह सौ सवार.
(१९४)- राजा बदनसिंह भदौरिया - डेढ़ हज़ारी ज़ात, चौदह सौ सवार.

(१९५)- ख़ानहज़ादख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१९६)- शरीफ़ख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१९७)- सरन्दाज़ख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, बारह सौ सवार.
(१९८)- राजा गजसिंहका पोता नागौरका राव रायसिंह - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(१९९)- मिर्ज़ा मुरादकाम् - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२००)- जांबाज़ख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२०१)- लुत्फुल्लाह - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२०२)- भीम राठौड़ - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२०३)- दौलतख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२०४)- राजा सूरजसिंहका भाई हरिसिंह राठौड़ - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२०५)- राजा द्वारिकादास कछवाहा - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२०६)- उज्जैनका राजा प्रताप - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२०७)- राजा अमरसिंह नर्वरी - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२०८)- अल्लाहकुली - डेढ़ हज़ारी ज़ात, नौ सौ सवार.
(२०९)- चन्द्रमन बुंदेला - डेढ़ हज़ारी ज़ात, आठ सौ सवार.
(२१०)- अब्दुल्लाबेग - डेढ़ हज़ारी ज़ात, आठ सौ सवार.
(२११)- शम्सुद्दीन - डेढ़ हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२१२)- महलदारख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात सात सौ सवार.
(२१३)- मुहसिनख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२१४)- हिसामुद्दीनख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२१५)- राणा कर्णसिंहका बेटा ग़रीबदास सीसोदिया (कैरियावालोंका बुज़ुर्ग) - डेढ़ हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२१६)- यादगार हुसैनख़ां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२१७)- कृष्णसिंह राठौड़का बेटा जगमाल - डेढ़ हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२१८)- आक़ा अफ़्ज़ल - डेढ़ हज़ारी ज़ात छः सौ सवार.
(२१९)- कर्मसी राठौड़का बेटा श्यामसिंह - डेढ़ हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२२०)- कंवर मक़ामका ज़मींदार संग्राम - डेढ़ हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२२१)- ख़िद्मतख़ां ख़्वाजासरा - डेढ़ हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२२२)- ज़ुल्फ़िक़ारबेग तुर्कमान - डेढ़ हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.

(२२३)- रायबा दक्षिणी - डेढ़ हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२२४)- मिर्ज़ा सुल्तान् - डेढ़ हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२२५)- जमालखां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२२६)- खुश्हालबेग - डेढ़ हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२२७)- नवाज़िशखां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२२८)- रहमतखां - डेढ़ हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२२९)- हकीम गीलानी - डेढ़ हज़ारी ज़ात, तीन सौ सवार.
(२३०)- मीर अब्दुल्करीम - डेढ़ हज़ारी ज़ात, दो सौ सवार.
(२३१)- हकीम मोमिन् - डेढ़ हज़ारी ज़ात, एक सौ सवार.

एक हज़ारी.

(२३२)- आगाहखां - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२३३)- खानेदौरांका बेटा सय्यद मुहम्मद - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२३४)- करमुल्लाह - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२३५)- सुल्तान् यार - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२३६)- हिम्मतखां कोका - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२३७)- लश्करखांका बेटा लुत्फुल्लाह - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२३८)- सय्यद असदुल्लाह - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२३९)- गोपालसिंह कछवाहा - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२४०)- नजफ़अली - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२४१)- बांसवाड़ेका रावल समर्सी - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२४२)- पलामूका प्रताप चर्वा - एक हज़ारी ज़ात, एक हज़ार सवार.
(२४३)- बहरामखां - एक हज़ारी ज़ात, नौ सौ सवार.
(२४४)- राजा जयसिंहका बेटा कीर्तिसिंह - एक हज़ारी ज़ात, नौ सौ सवार.
(२४५)- शाद्मां - एक हज़ारी ज़ात, नौ सौ सवार.
(२४६)- सय्यद शैखन् बारह - एक हज़ारी ज़ात, नौ सौ सवार.
(२४७)- खलीलबेग - एक हज़ारी ज़ात, आठ सौ सवार.
(२४८)- उस्मानखां रुहेला - एक हज़ारी ज़ात, आठ सौ सवार.
(२४९)- दिल्दोस्तखां - एक हज़ारी ज़ात, आठ सौ सवार.
(२५०)- रहमान्यार - एक हज़ारी ज़ात, साढ़े सात सौ सवार.
(२५१)- अबू मुहम्मद कम्बो - एक हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२५२)- रावल सबलसिंह जेसलमेरी - एक हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.

(२५३)- सादड़ी इलाके मेवाड़का रायसिंह झाला - एक हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२५४)- नसीबखां - एक हज़ारी ज़ात, सात सौ सवार.
(२५५)- मीर जाफ़र - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२५६)- राजसिंह राठौड़ - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२५७)- भगवानदास बुंदेला - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२५८)- ज़ियाउद्दीन - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२५९)- नज़ीरबेग - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६०)- अब्दुल्क़ादिर - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६१)- बलभद्र शैखावत - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६२)- राजा हरनारायण बड़गूजर - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६३)- रूपचन्द्र ग्वालियरी - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६४)- पर्वरिशखां - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६५)- भोजराज दक्षिणी - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६६)- कृष्णसिंह राठौड़का बेटा भारमल्ल कृष्णगढ़ वाला - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६७)- जयमल्ल मेड़तियाका पोता राजा गिर्धर - एक हज़ारी ज़ात, छःसौ सवार.
(२६८)- चेतसिंह राठौड़ - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२६९)- मित्रसेन गौड़ - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२७०)- मुहम्मद अली - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२७१)- दर्वेश बेग - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२७२)- सुजानसिंह - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२७३)- नाज़िरखां - एक हज़ारी ज़ात, छः सौ सवार.
(२७४)- मुहम्मद हाशिम - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२७५)- हिम्मतखां काबुली - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२७६)- ताहिरखां - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२७७)- हुसैनबेग - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२७८)- मीर खलील - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२७९)- सय्यद खादिम बारह - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२८०)- राय तिलोकचन्द कछवाहा - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार
(२८१)- राजा कृष्णसिंह तंवर - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.

(२८२)- गोरधनदास राठौड़ - एक हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवार.
(२८३)- सिकन्दरख़ां - एक हज़ारी ज़ात, साढ़े चार सौ सवार.
(२८४)- सुल्तानूनज़र - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२८५)- लतीफ़ख़ां नक़्शबन्दी - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२८६)- तुर्कताज़ख़ां - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२८७)- सय्यद मक्बूले आलम - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२८८)- शफ़ीउल्लाह बरलास - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२८९)- मुहम्मद सफ़ी - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२९०)- असालतख़ां - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२९१)- मुहम्मद मुराद सल्दोज़ - एक हजारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२९२)- किश्तवारका राजा कुंवर सेन - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२९३)- चंपाका राजा पृथ्वीचन्द्र - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२९४)- यह्याख़ां - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२९५)- इस्हाक़बेग - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२९६)- दानादिल - एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवार.
(२९७)- सय्यद मुनव्वर - एक हज़ारी ज़ात. तीन सौ सवार.
(२९८)- फ़िरासतख़ां - एक हज़ारी ज़ात, तीन सौ सवार.
(२९९)- तश्रीफ़ख़ां - एक हज़ारी ज़ात, ढाई सौ सवार.
(३००)- राय काशीदास - एक हज़ारी ज़ात, ढाई सौ सवार.
(३०१)- सय्यद अ़ली - एक हज़ारी ज़ात, ढाई सौ सवार.
(३०२)- मीर महमूद - एक हज़ारी ज़ात, ढाई सौ सवार.
(३०३)- राय माईदास - एक हज़ारी ज़ात, दो सौ सवार.
(३०४)- अमानतख़ां - एक हज़ारी ज़ात, दो सौ सवार.
(३०५)- फ़िदाईख़ां - एक हज़ारी ज़ात, दो सौ सवार.
(३०६)- यकदिलख़ां - एक हज़ारी ज़ात, दो सौ सवार.
(३०७)- हिदायतुल्ला - एक हज़ारी ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(३०८)- क़ाज़ी मुहम्मद अस्लम - एक हज़ारी ज़ात, एक सौ सवार.
(३०९)- हकीम मोमिना - एक हज़ारी ज़ात, एक सौ सवार.
(३१०)- बीकानेरके राजाकी ख़वासका बेटा राय बनमालीदास - एक हज़ारी ज़ात, एक सौ सवार.
(३११)- हकीम फ़त्हुल्ला मुइज़ुल्मुल्क - एक हज़ारी ज़ात, एक सौ सवार.

(३१२)- मुहम्मद मुराद - एक हज़ारी ज़ात, एक सौ सवार.

नौ सौ.

(३१३)- राजा मानसिंह तंवर ग्वालियरी - नौ सौ ज़ात, नौ सौ सवार.
(३१४)- सूफ़ी बहादुर - नौ सौ ज़ात, आठ सौ सवार.
(३१५)- जाफ़र क़दीमी - नौ सौ ज़ात, साढ़े सात सौ सवार.
(३१६)- जगराम कछवाहा - नौ सौ ज़ात, सात सौ सवार.
(३१७)- शिर्ज़ाख़ां - नौ सौ ज़ात, सात सौ सवार.
(३१८)- अब्दुल्हादी - नौ सौ ज़ात, छः सौ सवार.
(३१९)- राय दयालदास झाला गंगराड़का, (झालावाड़के इलाके कूंडला वालोंका बुज़ुर्ग) - नौ सौ ज़ात, छः सौ सवार.
(३२०)- इनायतुल्ला - नौ सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(३२१)- अली कुली - नौ सौ ज़ात, साढ़े चार सौ सवार.
(३२२)- आदिल्ख़ां - नौ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३२३)- मुहम्मद तक़ी - नौ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३२४)- राव हरचन्द कछवाहा - नौ सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(३२५)- राजा जयसिंहका बेटा माहरू - नौ सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(३२६)- अब्दुल्ख़ालिक़ - नौ सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(३२७)- अब्दुल्करीम थानेसरी - नौ सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(३२८)- मुहम्मद शरीफ़ - नौ सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(३२९)- रशीदा खुश नवीस - नौ सौ ज़ात, एक सौ सवार.
(३३०)- नाम्दारख़ां - नौ सौ ज़ात, एक सौ सवार.
(३३१)- मीर जाफ़र बलख़ी - नौ सौ ज़ात, पचास सवार.

आठ सौ.

(३३२)- सय्यद लुत्फ़ अली - आठ सौ ज़ात, आठ सौ सवार.
(३३३)- सय्यद हसन - आठ सौ ज़ात, आठ सौ सवार.
(३३४)- जालोरका मुजाहिदख़ां (पालनपुर वालोंका बुज़ुर्ग) - आठ सौ ज़ात, आठ सौ सवार.
(३३५)- नरसिंहदास - आठ सौ ज़ात, आठ सौ सवार.
(३३६)- हमीरसिंह - आठ सौ ज़ात, आठ सौ सवार.
(३३७)- क़ियामख़ां - आठ सौ ज़ात, सात सौ सवार.
(३३८)- कृपाराम गौड़ - आठ सौ ज़ात, सात सौ सवार.

(३३९)- अबुल्बका- आठ सौ ज़ात, छ : सौ सवार.
(३४०)- निज़ामखां- आठ सौ ज़ात, छ : सौ सवार.
(३४१)- उग्रसेन कछवाहा- आठ सौ ज़ात, छ : सौ सवार.
(३४२)- सैफुल्ला- आठ सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(३४३)- बहादुरखां बाबी- आठ सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(३४४)- लक्ष्मीसेन चहुवान- आठ सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(३४५)- राजा उदयभान- आठ सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(३४६)- अब्दुल्अज़ीज़ आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३४७)- रनबाज़खां कम्बो- आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३४८)- सय्यद अब्दुल् माजिद अमरोहा- आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३४९)- इन्द्रगढ़का राजा इन्द्रशाल हाड़ा- आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५०)- सय्यद लुत्फ़अली- आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५१)- राय जगन्नाथ राठौड़ - आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५२)- राजा उदयसिंह तंवर- आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५३)- सय्यद अमजद- आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५४)- सय्यद हामिद- आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५५)- अलीअक्बर- आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५६)- मनोहरदास गौड़- आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५७)- कोटाके राव माधवसिंहका दूसरा बेटा मोहनसिंह हाड़ा - आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५८)- अजबसिंह कछवाहा- आठ सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३५९)- अमरकोटका राना जोधा- आठ सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(३६०)- नाहर सोलंखी- आठ सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(३६१)- यादगार मसऊद- आठ सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(३६२)- फ़तहसिंह सीसोदिया (बानसी इलाके मेवाड़के रावत केसरीसिंहका बेटा) - आठ सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(३६३)- क़ाज़ी निज़ामा- आठ सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(३६४)- बेबदलखां- आठ सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(३६५)- अक़ीदतखां- आठ सौ ज़ात, एक सौ सवार.
(३६६)- अब्दुर्रज़ाक़- आठ सौ ज़ात, एक सौ सवार.
(३६७)- मीर ग़यास- आठ सौ ज़ात, पचास सवार.

(३६८)- रिज़्कुल्ला - आठ सो ज़ात, चालीस सवार.

सात सौ.

(३६९)- सय्यद सालार बारह - सात सौ ज़ात, सात सौ सवार.
(३७०)- सय्यद अब्दुर्रहमान - सात सौ ज़ात, सात सौ सवार.
(३७१)- मुज़फ्फ़र सर्वानी - सात सौ ज़ात, सात सौ सवार.
(३७२)- राजा बिहरोज़ - सात सौ ज़ात, सात सौ सवार.
(३७३)- नरूका चन्द्रभान - सात सौ ज़ात, सात सौ सवार.
(३७४)- सद्रखां - सात सौ ज़ात, छ: सौ सवार.
(३७५)- नस्रुल्ला अरब - सात सौ ज़ात, छ: सौ सवार.
(३७६)- संग्राम कछवाहा - सात सौ ज़ात, छ: सौ सवार.
(३७७)- जलालुद्दीन - सात सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३७८)- नसीरुद्दीन - सात सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३७९)- बल्लू चहुवान - सात सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३८०)- सुन्दरदास शक्तावत सीसोदिया (सावर ज़िले अजमेरका ठाकुर) - सात सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(३८१)- नेकनामखां - सात सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(३८२)- फ़त्हसिंह कछवाहा - सात सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(३८३)- रावत नारायणदास शक्तावत सीसोदिया (बान्सी इलाके मेवाड़के रावत अचलदासका बेटा) - सात सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(३८४)- शाहअली - सात सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(३८५)- इब्राहीम - सात सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(३८६)- इस्लामखां - सात सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(३८७)- आरिफ़बेग - सात सौ ज़ात, एक सौ सवार.
(३८८)- राय सभाचन्द - सात सौ ज़ात, एक सौ सवार.
(३८९)- मुश्कीबेग - सात सौ ज़ात, अस्सी सवार.
(३९०)- रशीदा - सात सौ ज़ात, साठ सवार.
(३९१)- सय्यद अब्दुस्समद - सात सौ ज़ात, पचास सवार.
(३९२)- मुहम्मद अमीन - सात सौ ज़ात, तीस सवार.

छ: सौ.

(३९३)- मुहम्मद शाह - छ: सौ ज़ात, छ: सौ सवार.
(३९४)- सय्यद अब्दुल्ला - छ: सौ ज़ात, छ: सौ सवार.

(३९५)– डूंगरपुरका रावल गिर्धरदास – छः सौ ज़ात, छः सौ सवार.
(३९६)– चतुरभुज सोनगरा – छः सौ ज़ात, छः सौ सवार.
(३९७)– राव मनोहरका पोता पेमचन्द शेखावत – छः सौ ज़ात, छः सौ सवार.
(३९८)– जाफ़रख़ां तुर्किस्तानी – छः सौ ज़ात, छः सौ सवार.
(३९९)– सय्यद अब्दुल्मुनइम – छः सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(४००)– रूहुल्ला ताश्कन्दी – छः सौ ज़ात, साढ़े चार सौ सवार.
(४०१)– सय्यद सुलैमान बारह – छः सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(४०२)– सरमस्त बड़गूजर – छः सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(४०३)– इलाहयारका बेटा माहयार – छः सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(४०४)– प्रद्युम्न – छः सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(४०५)– अहमद क़ासिम् – छः सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(४०६)– पाइन्दाबेग – छः सौ ज़ात, दो सौ अस्सी सवार.
(४०७)– सय्यद कुतुब – छः सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४०८)– खुदादोस्त – छः सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४०९)– अमीरबेग – छः सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४१०)– अमरसिंहका बेटा अक्बरसिंह – छः सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४११)– कोटावाले माधवसिंह हाड़ाका बेटा किशोरसिंह – छः सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४१२)– जलालुद्दीन महमूद – छः सौ ज़ात, दो सौ सवार
(४१३)– पृथ्वीराज राठौड़का बेटा केसरीसिंह – छः सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४१४)– मस्ऊद बेग – छः सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(४१५)– जुल्फ़ीबेग – छः सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(४१६)– होश्दारख़ां – छः सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(४१७)– राठौड़ मुकुन्ददास चांपावत पालीका – छःसौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(४१८)– हिदायतुल्ला – छः सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(४१९)– मीर बाक़िर – छः सौ ज़ात, सवा सौ सवार.
(४२०)– ख्वाजह मुहम्मद – छः सौ ज़ात, एक सौ सवार.
(४२१)– मीर मुअ़ज़्ज़म – छः सौ ज़ात, साठ सवार.
(४२२)– ख्वाजह बख़्शी शामलू – छः सौ ज़ात, पचास सवार.
(४२३)– मीर नूरुद्दीन – छः सौ ज़ात, चालीस सवार.
(४२४)– क़ाज़ी खुश्हाल – छः सौ ज़ात, तीस सवार.

(४२५)- ख्वाजह मीना - छः सौ ज़ात, तीस सवार.
(४२६)- मीर ख्वालिह - छः सौ ज़ात, बीस सवार.
(४२७)- शैख़ फ़ज़्लुल्लाह - छः सौ ज़ात, बीस सवार.

पांच सौ.

(४२८)- असदुल्ला - पांच सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(४२९)- हुसैनकुली आग़र - पांच सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(४३०)- शरफ़जानबेग तुर्कमान - पांच सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(४३१)- क़ासिमअली - पांच सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(४३२)- राजा कृष्णसिंह तंवर - पांच सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(४३३)- चतुरभुज सोनगरा - पांच सौ ज़ात, पांच सौ सवार.
(४३४)- सय्यद अब्दुस्समद - पांच सौ ज़ात, साढ़े चार सौ सवार.
(४३५)- पृथ्वीराज भाटी - पांच सौ ज़ात, साढ़े चार सौ सवार.
(४३६)- क़रामान - पांच सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(४३७)- मुहम्मद ज़मां अर्लात - पांच सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(४३८)- बहादुर कम्बो - पांच सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(४३९)- राजा जगमन जादव - पांच सौ ज़ात, चार सौ सवार.
(४४०)- सय्यद इख़्तियारुद्दीन - पांच सौ ज़ात, तीन सौ चालीस सवार.
(४४१)- मीर अहमद - पांच सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(४४२)- लुत्फ़ुल्लाह शीराज़ी - पांच सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(४४३)- अली अक्बर सौदागर - पांच सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(४४४)- हमीरसिंह सीसोदिया (जिसकी औलाद अब देवगढ़ इलाके मेवाड़की जागीरदार है) - पांच सौ ज़ात, तीन सौ सवार.
(४४५)- अल्लाह दोस्त काशग़री - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४४६)- हसनअली - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४४७)- अबालैल् अरब - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४४८)- हाजीबेग बरलास - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४४९)- शिताबखां - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४५०)- शैख़ अबुल् फ़ज़्लका पोता पिशोतन - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४५१)- गोविन्ददास राठौड़ - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४५२)- महेशदास राठौड़का भाई जश्वन्त - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४५३)- राजा मानसिंहका पोता पृथ्वीसिंह - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.

(४५४)- राजा मानसिंहका पोता कृष्णसिंह - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४५५)- शक्तिसिंह चहुवान - पांच सौ ज़ात, ढाई सौ सवार.
(४५६)- नईमबेग - पांच सौ ज़ात, दो सौ बीस सवार.
(४५७)- नजफ़अ़ली - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४५८)- याकूबबेग - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४५९)- राजा नरसिंहदेव बुंदेलेका बेटा बैनीदास - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६०)- मीर फ़त्ताह - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६१)- दर्या पठान - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६२)- फ़र्हाद बिल्लोच - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६३)- अबुल्बक़ा - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६४)- फ़त्हुल्ला बर्लास - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६५)- जवाहिरख़ां - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६६)- तुग़्रिल अर्सलां - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६७)- इब्राहीम हुसैन तुर्क्मान - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६८)- इनायतख़ां रुहेला - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४६९)- राजा मानसिंहका पोता उग्रसेन कछवाहा - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४७०)- राजा विक्रमादित्यका बेटा मानसिंह - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४७१)- राजा विठ्ठलदासका भाई मनोहरदास - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४७२)- बलभद्र शैखावतका बेटा कन्हई - पांच सौ ज़ात, दो सौ सवार.
(४७३)- अलीबेग ज़ीक - पांच सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(४७४)- जमालुद्दीन - पांच सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(४७५)- मुत्तलिबख़ां - पांच सौ ज़ात, डेढ़ सौ सवार.
(४७६)- सईदख़ां बहादुरका बेटा फ़त्हुल्ला - पांच सौ ज़ात, एक सौ पच्चीस सवार.
(४७७)- शैख़ मुअ़ज़्ज़म - पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४७८)- अताउल्ला ख़ाफ़ी - पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४७९)- मुहम्मद हुसैन तैराही - पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४८०)- सलाबतख़ांका बेटा मुहम्मद मुराद - पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४८१)- ग़ाज़ी बेग - पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४८२)- मीरक् हुसैन ख़ाफ़ी - पांच सौ ज़ात, सौ सवार.

(४८३)– इस्माईल बेग ज़ीक – पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४८४)– सय्यद शिहाब बारह – पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४८५)– केसरीसिंह राठौड़ – पांच सौ ज़ात, सौ सवार.
(४८६)– मुह्सिन सफ़ाहानी – पांच सौ ज़ात, अस्सी सवार.
(४८७)– मुईनुद्दीन राजगढ़ी – पांच सौ ज़ात, अस्सी सवार.
(४८८)– मुहम्मद स्वालिह ख़ुश्नवीस – पांच सौ ज़ात, साठ सवार.
(४८९)– अहदियोंका बख़्शी अस्करी – पांच सौ ज़ात, साठ सवार.
(४९०)– ख्वाजह नूरुल्लाह – पांच सौ ज़ात, पचास सवार.
(४९१)– सनाईबेग शामलू – पांच सौ ज़ात, पचास सवार.

शेष संग्रह नम्बर–१.

श्री रामोजेयति.

श्री गणेस प्रसादातु. श्री ऐकलिंग प्रसादातु.

१ भाई षीमराज
धधवाड़ेहीथोजी १

॥ महाराजा धिराज महाराणा श्री जगत्सिंघजी आदेशातु गढ वी षीमराज जात धधवाड्या कस्य १ गांम ठीकरयो वड़ो उदक आघाट करे मयाकीधो, दुवे श्रीमुख प्रतदुवे साह अखेराज लीषतं पंचोली केसोदास स्वदतं परदतं जे हरंत वीसंधरा षस्ट वरस से हसराणां वीस्टा अंजाईते क्रम संवत १६८५ व्रषे असाढ़ वदी ३ सुक्रे.

शेष संग्रह नम्बर- २.

यह प्रशस्ति बेड़वासकी सरायके पासवाली बावड़ी में
सीढ़ी उतरते वक्त दहिनी तरफ़के आलेमें है.

श्रीरामजी ॥ श्री गणेशायनमः ॥ श्री श्री श्री पेमजमाताजी प्रसादात् ॥ श्री सिद्धश्री गणेशगोत्र देव्या प्रसादात् ॥ श्री कृष्णायनमः ॥ सर्व देवेभ्योनमः ॥ ब्रह्मको उपास कायस्थो नाम धरकः तस्यवंश मध्ये कायस्थ भटनागरः कुलदेव्या पेमज. काश्यपगोत्रे. तस्यवंश मध्ये उत्कृष्टोनामः अथ कुलवर्णनः तिणकुल मध्ये प्रथम पंचोली बड़वोजी तस्य सुत श्री चेलोजी. तत् सुत कन्हजी तत् सुत मोल्होजी तिणे गाम मोलेला आपरे नामे बसायो प्रासाद उद्धरया. तत् सुत पंचोली श्री मोकलजी तत् सुत श्री गोपीजी तत् सुत श्री लखमीदासजी तत् सुत श्री सदारंगजी. तत् सुत श्री भागचन्दजी वंशरा भागीरथ हुआ राणेजी श्री जगत्सिंहजी प्रधान पदवी दीधी तणी समे गाम दश दीधा ग्रामरा नाम ऊंटालो, दड़वो, देलावास, दांतों, महूड़ी, कलड़वास, बड़ोली, सेटवाणो, थोहरयो, भीलेड़ो, ए गाम १०, हाथी गजराज घोड़ा ५१ एकावन तिणा मध्ये १ रूपारी सागतसू वस्त्र आभूषण सहित राजमान घणो हुवो; जातरा २ कीधी १ श्री द्वारकाजीरी मांधाताजीरी, राणाजी श्री जगत्सिंहजीरा हुकम थी बांसवाला ऊपरे बिदा हुआ, बड़ा बड़ा उमराव लोग साथे दिया. जाय बांसवालो भांज्यो मास छः सुधी उठे रह्या, तदी रावल समर्सीजी आवे मिल्या इतरो दंड माथे करे अणे राणाजी श्रीजगत्सिंहजीरे पावें लगाया, बांसवालारा देशरो दाण तथा गांम दश. पंचोलीजी श्री भागचंदजी श्रीएकलिंगजी श्रीपीमज-माताजी रो देवल उधरयो देवल ईंडो चढाव्यो तदी तुला १ रूपारी कीधी रुपिया हजार ७२०० सात हजार दोयसे तुला सूर्य्यो रुणरी पोथी छोड़ावी रुपिया हजार च्यार रो दान कीधो राणेजी श्री जगत्सिंहजी वार तीन पंचोली श्री भागचंदजीरे घरे पधारया इतरा हाथी पाया. चंचलो १ सार धार १ जगत्सोभा १ हथणी सहेली १ उदेपुरमांहें राणेजी श्री जगत्सिंहजी नवा महेल मंडावे दीधा जीव्या पर जंत प्रधान पदवी रही पंचोलीजी श्री भागचंदजी सुत पंचोली श्री फतहचंदजी चिरंजीवी राणेजी श्री राजसिंहजी पंचोली श्री फ़तहसिंहजी हे प्रधान पदवी दी धी जिकां ई पंचोली श्रीभागचंदजी पाव्यो थो जितरो सघलो श्री फतहचंदजीने मयाकीधो इतरा हाथी पाया १ रामपसाव १ नादरगज १ गजनिधान घोड़ा पहलां पाया जितरा तिणा मध्ये घोड़ो १ तेजरूप रूपासोनारी सागत सहित राणेजी श्री राजसिंहजी पंचोली श्रीफतहचंदजीने बांसवाला ऊपरे बिदा कीधा, इतरा उमराव साथे दीधा- १

रावत रुपमांगद १ राठौड़ दुरजणसिंहजी १ रावत रुगनाथसिंहजी १ सगतावत मौहकमसिंहजी १ रावत राजसिंहजी १ सीसोदिया माधवसिंहजी १ रावत मानसिंह सारंगदेवोत १ राठौड़ माधोसिंह १ सोलंखी दलपत १ चहुवाण उदेकरण १ सगतावत गिरधरजी १ सगतावत सूरसिंहजी १ ईडरयो जोधजी १ भालो महासिंहजी १ रावल रिणछोड़दास तथा और ही बड़ा बड़ा उमराव तथा बंड़ालोक कामदार वितगरा सरब साथे विदा कीधा असवार हजार पांच हाथी रणजगंसाथे विदा हुया रावल समर्सी सामो आवे मिल्यो इतरो कबूल कीधो रुपीया एक लाख गाम दस हाथी १ हथणी १ इतरी वसत कबूल करावे राणाजी श्री राजसिंहजीरे पावें रावल समर्सीजी आणे लगाया तठा पाछे देवल्ये विदा हुआ तदी रावत हरीसिंहजी भागेने श्री पातसाहजी हजूर गया देवल्यो भंज्यो कुंवर प्रतापसिंहजी आवे मिल्यो इतरो दंड कबूल कीधो रुपिया हजार पांच हथणी १ उतरो उणातीराथी दंडलेने राणाजी श्री राजसिंहजीरे पावें आया राणे श्री राजसिंहजी मालपुरो मारवा पधास्या तदी पंचोली श्रीफतेचंदजी हे गढ तोड़ा (टोडा) ऊपरे विदा कीधा आगे बिषो हुयोथो तदी तोडारे धणी मेवाड़रा लोगाथी बेअदबी कीधीथी तिणी खूनरे वास्ते असवार हज़ार तीन ३००० पंचोली श्री फतेचंदजीरी साथे देने विदा कीधा तदी श्री दीवाणजीरा प्रतापथी राजा रायसिंहजी तोड़ामाहें थी टालो लीधो रुपीया हजार पेंतीस ऊभे दंडलेने राणाजी श्री राजसिंहजीरे पावें पाछा दिन दो माहें मालपुरे आवे पगेलागा-- राणोजी श्री राजसिंहजी वार तीन पंचोली श्री फतहचंदजीरे घरे पधास्या जात्रा ३ कीधी १ श्री द्वारकानाथजीरी १ श्री रेवाजीरी १ श्री अर्बुदाचलजीरी तठापछे चित्तमें इसी आवी एक वकत ठिकाणो इसो कीजे तिणथी नाम रहे गांम बेड़वास तीरे वावडी नाम नंदा पंथरे माथे करावी संवत १७२५ वर्षे शाके १५९० प्रवर्तमाने उत्तरायण गते श्री सूर्ये वसंत ऋतौ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे ६ षष्ठी तिथौ सौम वासरे पुष्य नक्षत्रे तद्दिने श्री वावड़ीरी प्रतिष्ठा हुई वावड़ी सामी सराय एक करावी सराय मध्ये महल कराव्या वावड़ी तीरे बाग १ बीघा १३ रो कराव्यो संवत् १७३० वर्षे चैत्र वदी ९ शुक्रेरे दिन महाराणाजी श्री राजसिंहजी उदेपुरथी तलाव राज समंद पधारतां वावड़ी आवे ऊभा रहे वावड़ीरो पाणी मंगावे अरोगे हुक्म कीधो पाणी निपट अवल हे श्री दुहा. भागचंदको सुत बली फतेचंद बहु जाण ॥ चिरजीवो श्रीचंद जुत करत दान सन्मान ॥ फतेचंद कीनी नवल गाम बहडवा मांहि ॥ थिर व्हे रहजो वावडी बाग सरस घन छांहि ॥ २ ॥ कमठाणो इहवो कियो चिहु जुग चावो चंद ॥ जुग विसराम लिये जठे दिनसी राम दुणिंद ॥ ३ ॥ जिहां असमान धरतीयां जिहां रामरहमान ॥ जिहां लग रहसी चन्दतन कीध फता कमठाण ॥ ४ ॥

श्लोक

आरोग्य मस्तु कमलाभि मुखी सदास्तु । वलमस्तु महज्यशेसास्तु ॥ धन धान्य पुत्रा गमसिद्धि रस्तु । वंशे सदैव भवतां हरि भक्ति रस्तु ॥ ५ ॥ दोहा ॥ एकलिंग दश सहस धर उदियापुर रजधान ॥ त्यों कमठाणा चन्दका ठामा ऊग विहाण ॥ ६ ॥ क्यारो लिखमीदास कुल सदा रंग अंकूर ॥ फूल भागचंद फल फतो दिन दिन चढ़तो नूर ॥ ७ ॥ देखन आये बावड़ी वाका खलक लिखाण ॥ पाट भगत ज्यानो फता नीर अरोग्यो राण ॥ ८ ॥ उदियापुर व्हेजे अचल चंद वाय दरसाय ॥ तिनकूं सिध नव निध मिले देस प्रदेसां जाय ॥ ९ ॥ जब लग अंबर मेदनी नेह मेह मघवान ॥ जब लग वेली चंदकी राजी रहसी राण ॥ १० ॥ इति श्री भापा प्रशस्ति संपूर्ण लिखतं सूत्रधार हम्मीरजी सुतसाइब भवानी-शंकर संवत् १७२५ लिखतं गजधर कमलाशंकर सुत दोलो गजधर रूपो मंडोवरा वास उदयपुरर गजधर जात गौड़

शेषसंग्रह नम्बर ३

ऊँकारनाथकी प्रशस्ति.

श्री महागणपतयेनमः ॥ श्री नर्मदादेव्यैनमः ॥ श्री ओंकारेश्वरायनमः ॥ जयति श्री रघुवंशः श्रीरामो यन्न मौक्तिक प्रख्य ॥ काश्यां मुक्तौ मंत्रं यस्य सदा शंकरो दत्ते ॥ १ ॥ तस्यान्ववाये शिवदत्तराज्यो वापाभिधानो जनि मेदपाटे ॥ संग्राम भूमौ पटुसिंह रावं लातित्यतो रावल इत्य भाणि ॥ २ ॥ राहप्य राणा भुवि तस्य वंशे राणेति शब्दं पृथयन् पृथिव्यां ॥ रणो हि धातुः खलु शब्द वाची तं कारयत्येषयतः पराङ्मुखान् ॥ ३ ॥ तस्मान्नर पति राणा दिनकर राणा बभू-वाथ ॥ अजनिजसकर्ण राणा बभूव तस्मा न्नाग पालाख्यः ॥ ४ ॥ श्री पूर्ण-पाल नामा पृथ्वीमल्ल स्ततो राणा ॥ सबभूव भुवनसिंहस्तत्पुत्रो भीमासिंहो भूत् ॥ ५ ॥ अजनि जयसिंह राणा जातस्तस्माच्चलखमसी राणा ॥ अरसीत तो हमीरः सजातः क्षेत्र सिंहोस्मात् ॥ ६ ॥ श्रीलक्षसिंह भूपो राणा श्री मोकल स्तस्मात् ॥ श्रीकुंभकर्ण उद भूद्राणा श्रीराय मल्लोस्मात् ॥ ७ ॥ संग्रामसिंह राणा जातो भूपाल मौलिमणिः ॥ श्री राणोदयसिंहः प्रतापसिंह स्ततोजातः ॥ ८ ॥ अमर समो मरसिंह स्ततो नृपः कर्णसिंहो भूत् ॥ गुण गण निधिस्ततो भूद्रा णा श्रीमजगत्सिंहः ॥ ९ ॥ जगत्सिंहो मही भूपः कल्प वृक्षः कथं समः ॥ सहि जीवन साकांक्ष स्त्वंतु जीवन भूभृतां ॥ १० ॥ जगत्सिंहोमहाराजः चिंतितादधिक

प्रदः ॥ चिंतना वधि दाताहि कथं चिंता मणिः समः॥ ११ ॥ नित्य नैक करेषुच भूपेंद्र भुवन प्रदः ॥ एक वार बलिप्राणो वामने भुवनं ददौ ॥ १२ ॥

श्रीएकलिंग प्रसादात् ॥ जयति जगति विख्यातः सकल महिलोक पावनः सुमतः श्रीएकलिंग देवतं गोत्रं श्री वैज बापाङ्कः ॥ १ ॥ तस्य कुलालं करणो गुहदत्तो न्वर्थ नामधेयो भूत् ॥ अद्यापि यस्य नाम्ना वंशोयं ख्याति मान् जगति ॥ २ ॥ श्रीमाननूप नृपति गुहिला भिधानो धर्माच्छशासवसुधां मधु जित्प्रभावः ॥ यस्मादथो गुहिल वर्णन या प्रसिद्धो गौहल्य वंश भवराज गणोत्र जातः ॥ ३ ॥ मात्रा प्रसूतः किल जांबवत्या श्रीकर्ण भूपात्मज एष राणा ॥ श्रीमज्जगत्सिंह इवास्ति सिंहः सिंहासने पुत्रवति प्रतापी ॥ ४ ॥ धर्मात्मा धन्य शीलो धवलित ककुभं कीर्ति सोमं प्रशास्ता शास्ता वार्ध्यं बराया श्चतुरधिकतमा शीति कोदाधिनाथं ॥

जातो वंशोदवस्या खिल धरणि भृतां भूभृतां क्षत्रियाणां ॥ मौलिर्मौलींदु भक्त स्तत मातर चल श्री जगत्सिंह राणा ॥ ८ ॥ एकदादान वर्षाय समुद्दिश्य हरालयं ॥ दिदृक्षुः समगा त्तत्र मांधातार मुपा सितुम्॥ ९ ॥ तत्र दृष्ट्वा नदीं रम्यां रेवां चामर कंटकां ॥ तत्रोंकारेश्वरंराणाप्रसन्नमनसाजगौ ॥ १० ॥ श्रीमत् कस्यपरे परार्द्ध समये वैवस्वते चांतरे चाष्टाविंशतिमे कलौ युग वरे श्री विक्रमार्के दिने ॥ वेद व्योम १७०४ हयेंदु वत्सर वरे मांघातृके पत्तने वैज्बापा यन गोत्र वंश तिलकः श्रीराण वंशोद्भवः ॥ ११ ॥ मुक्ता रत्न सुवर्ण मिश्रित महा पूजां तुलां चा करोत् । कर्ण स्यात्मज एपवर्षशतशोजीयान्निर्गता दशा ॥ यत् श्लाघात्र गृणंति ब्रह्म मुनयः प्रज्ञा प्रसादोद्भवा । कीर्ति वंदिज ना रणक्षिति भवां दानोद्भवां चेतरे ॥ १२ ॥ मास्या षाढे सिते पक्षे कुव्हां मंगल वासरे ॥ रवि पर्वणि रात्र्योघे ः सुवर्णैश्चा करो तुलां ॥ १३ ॥ प्रशस्ति क्रियतां चेयं तोरणे चतुलोद्भवे ॥ भान्वाख्य सूत्र धारस्य मुकुंदेनच सूनुना ॥ १४ ॥ पंचोली कह्ला सुतपंचोली सुजरण जात गुधावत्

सूत्रधार मुकुंद भूधर गजधर श्रीरस्तु

श्री नर्मदा प्रसन्नोस्तु

शेष संग्रह नम्बर ४

जगन्नाथरायजीके मंदिरकी प्रशस्ति.

॥ श्रीमहागणपतयेनमः श्रीएकलिंगजी प्रसादात् श्रीजगन्नाथरायजी प्रसादात्

श्रीभवान्यैनमः श्रीविश्वकर्म्मणेनमः ॥ गुणगुरुगौरीसिंहाद्यस्माद्भीता दिशां-करिणः ॥ तमपि व्यथयत् सरवैः कोपिकरींद्राननः पायात् ॥ १ ॥ भवानी भय भृद्भूभृद्भुजंगभजनाभृतः ॥ भवतो भवतो भूयाद्भव्यं २ भवे भवे ॥ २ ॥ अतीवतेजोद्युपतींद्र पूज्यं व्रतीश्वरैः सप्त शतीभिरर्च्यं ॥ रतीश जीवातु गतिं दधानं प्रतीत दुर्गा ग्रिमतीववंदे ॥ ३ ॥ राणा श्री मज्जगत्सिंह प्रशस्ति कृष्ण सूनुना ॥ कठौड़ीग्रामतैलंग लक्ष्मीनाथेन तन्यते ॥ ४ ॥ सजयति रघुकुलतिलकः श्रीरामः कीर्तिमुक्ताक्तः ॥ काश्यांमुक्त्यै मंत्रं यस्य मुदा शंकरो दत्ते ॥ ५ ॥ तद्वंशे नृपमुकुटस्थायिपदो विजयभूपपृथ्वीन्द्रः ॥ पद्मा दित्य स्तद्भूस्त्यक्त्वा योध्यां बभूव दक्षिणगः ॥ ६ ॥ बापाभिधोथोजनि मेदपाटे तस्या न्ववाये शिवदत्त राज्यः ॥ संग्राम भूमौ पटुसिंह रावं लातीन्यतो रावल इत्यभाणि ॥ ७ ॥ वातीति यस्मात्त्रिजगत् सुनित्यं वाशब्द वाच्यः किलतेन वायुः ॥ तंप्राण वायुंजगतीतलेस्मिन् यत्पाति बापा इतितेन जातः ॥ ८ ॥ आगच्छ शब्दे किल दक्षिणस्यां राशब्द एव क्रियते जनेन ॥ बलेति संबुध्य महाबलिष्ठं बापा नृपंतं किल दाक्षिणात्यम् ॥ ९ ॥ राज्यं प्रदातुं पटु मेदपाटे यद्रावले त्याह्वय देकलिंगः ॥ ततः प्रभृत्यस्य नृपस्य वंश्या दधुस्त दाख्यां भुवि रावलेति ॥ १० ॥ राहप्प राणो जनितस्य वंशे राणेति शब्दं प्रथ यन् प्रथिव्यां ॥ रणोहि धातुः खलु शब्द वाची तंकारयत्येष रिपून्द्रुतार्त्तान् ॥ ११ ॥ वन्हेर्वाची यत्प्रसिद्धोरशब्दो धातुश्चास्तेजीवनार्थेह्यणस्तु ॥ यज्ञे रग्ने र्जीवनादप्यजस्रं राणः शब्दस्तेषु भूपेषु वित्तः ॥ १२ ॥ राणा भवन्नरपतिः पटुनामधेयो भूभार दूर करणाय नरा वतारः ॥ यस्याभि मन्यु रहतोपिहतः कथंचिच्चंचत्कृपादिगुरुणाथसुयोधनेन ॥ १३ ॥ राणादिन-करो पूर्वः सत्संज्ञस्तेजसैवयः ॥ छायया संगतस्यापी नमंदः कोप्य भूत्सुतः ॥ १४ ॥ अभूतपूर्वः कर्णोभूज्जसकर्णा भिधःप्रभुः ॥ परेषां कवच च्छेत्ता नराधेयोपि योभवत् ॥ १५ ॥ नागपालो भवत्पृथ्वीं विधृत्य भुजयैकया ॥ दिग्नागशेषनागानां पालनात् सार्थकाव्हयः ॥ १६ ॥ अन्ये क्षीणस्य पातारः पूर्णपाल स्त्वभूत्प्रभुः ॥ धनाध्यक्षादिपूर्णानां पालनात्सार्थका व्हयः ॥ १७ ॥ यंवीक्ष्यस्तंभ सक्तं सकल मपिजगद्यत्पदाधारपीठीं नत्योन्नत्यापि विभृत् पृथुलमणि शिलां संगतं वैगदातैः ॥ पृथ्वीत्थंमल्लरूपा भवति नरपतौ यत्र यस्मान्नृपालः ॥ पृथ्वीमल्लेत्यभिख्यो नरपतिमुकुटालंकृति स्तेन जातः ॥ १८ ॥ यत्रैवस्थीयते तत्तुंसिंहेनान्येन रक्ष्यते ॥ अयं भुवनसिंहो भूद्र-क्षितुं भुवन त्रयम् ॥ १९ ॥ भीमसिंहो हरिस्पर्द्धी शिवोभूत् करजश्रिया ॥ बलि

प्रल्हाद भिल्लोके हिरण्य कशिपुक्षमः ॥ २० ॥ एकलिंग प्रभावेन जयसिंह क्षमा-धरः ॥ कृत्स्न गोरक्षक स्तस्या रजः संमार्जनं दधौ ॥ २१ ॥ अस्माभिर्गहने-गतं बहुविधः क्लेशोपि सोढः परं ॥ शत्रुश्चेन्निहतः प्लवंगनिवहैः कैश्चि दिने रावण : देवेनाशुनखेनासिंहवपुषा तत्रैव शत्रुर्हतस्तस्मालक्ष्मणसिंह एष किमभू द्विज्ञः सरामानुजः ॥ २२ ॥ अकारवाच्यो भवतीहविश्नु स्तस्यार्चने यत्सुचिरं प्रवृत्तः ॥ गुणाम्बुधिर्भूमि पतीश्वरो महान् राणाततो भूदरसीति वित्तः ॥ २३ ॥ हकार वाच्ये किलकोप वन्हौ साम्लेच्छजातिःखलुमीर वाच्या ॥ प्रवेश्य दग्धेतिहमीरनामा बभूव राणा जगती शिरो मणिः ॥ २४ ॥ पर-क्षेत्रग्रहीतापिस्वक्षेत्रनिरतः शुचिः ॥ क्षेत्रेषु क्षेत्र दाताय:क्षेत्रसिंह स्ततो भवत् ॥ २५ ॥ म्लेच्छा म्लेच्छ पतिं तृणस्य पुरुषं कृत्वान्य भूभृन्मृगान् विद्राव्यक्षितिमंडलेद्विजगणान्क्षेत्राण्यभोकुंदधु : ज्ञात्वातान्यवनान्नि गृह्य कृषिकान् सक्षेत्र भूपः क्रुधा क्षेत्राणिस्ववशानि तानि दयया किंनद्विजे भ्यो ददौ ॥ २६ ॥ प्रत्यहं हसति सिंहवाहिनीमांविलोक्य वृषवाहनं हरं ॥ माधरिप्यति सदैव मूर्द्धन्र्ययं लक्षसिंह मितिकिं नृपं व्यधात् ॥ २७ ॥ पुत्रवत्सु महासेनां दुर्गां दत्वे व प्रष्टतः ॥ लक्षसिंहो द्विषच्चंण्ड मुण्ड च्छेताद्भुतं स्वयं ॥ २८ ॥ युग्मम् मकार वाच्यो विधिरेष विष्णुस्त्वकार वाच्योथ शिवोह्यु कारः ॥ कलास्त्रयाणा मिहसंति यस्मात् तस्मादभून्मोकलनाम भूपः ॥ २९ ॥ श्री कुंभोद्भवमेव भूमि वलये श्रीकुम्भ कर्णं नृपं गत्यां धीर गजेन्द्र मन्द गमहो सद्वाड़ वाग्निं मृधे ॥ भीमंच स्मृति मानयन् रिपुगणो भुक्तिं निनायक्षयं नोचित्रं तदि हास्ति यत् स्वयमपि प्राप्तः क्षणाद्भस्मतां ॥ ३० ॥ कांतंकुंभंजगन् मूर्न्द्धियत्सुवर्णोत्तरंविधिः ॥ न्यधात्तस्यांतराभूपात्किं म्लेच्छमुख दर्शनं ॥ ३१ ॥ दिनेदिनेदृढ़ीभूतंशीतलाचलचेतसि ॥ स्नेहं पाकोद्भवः कुम्भो जडंत्यक्त्वानकिंदधे ॥ ३२ ॥ मेरौदेवानरक्ष्याः सुररिपुभयतः कुम्भमेरुंसुदुर्गं कृत्वायः कुंभराजो हरिरिवविवभावप्सरः सत्कुलेन ॥ सत् सन्तानं सकल्पोगम दलित मही पारिजातोत्सवाख्यं ॥ नोद्यानंनन्दनंकिंस्वय मिहकृत्वान्सोभिषिक्तंचकुम्भः ॥ ३३ ॥ क्षुद्रम्लेच्छांधकूपान्तर विल विल सञ्जीवन ग्राहि वेगाद् भूलोके कुम्भ राजत् कुलमतुलरसं संवृषं सद्गु-णौघं ॥ काले स्मिन्नेक काष्ठे प्रतिपल चपलेःकुम्भ यन्त्रे निधाय क्षेत्राणि क्षेम वृक्षान् द्विजकुलमतुलंजीवयामासवेधाः ॥ ३४ ॥ नेत्रे मीनंच कूर्मंपदकमलयुगेपांडुको लंक्षमायां सिंहंमध्ये प्रकोष्टे गुरुजननमने वामनंसंगरेन्यं ॥ स्नेहेन्यं मूर्न्द्धि कृष्णं भुविनर दयने बुद्धमन्यं शकांते

पद्मानाथावतारं जगति जयतिको राजमल्लं नृमलः ॥ ३५ ॥ सर्वेपिसंतः सुखिनो भवंति नवारिराशीन् क्षपयन् क्षमातः ॥ शिष्टाननंतान् स्वयशोंबुधीन् परान्कुंभोद्भवोप्यद्भुतमाततान ॥ ३६ ॥ भूत्वानंगः कृष्णपुत्रोपि सांगो राज्यं नापत्तेन भूपोत्र भूत्वा ॥ कृत्वावश्यंशंबरंराज्यमाप द्धर्मे मोक्षे चार्थे कामे रतिंच ॥ ३७ ॥ सोयंसांगमहीपतिः स्मरतनुः श्रीमांडवाख्यालसद्दुर्गेशंयवने श्वरं मुदफरं बध्वात्यजत्सत्कृपः ॥ बध्वाथो महमूदखानमतुलं म्लेच्छाधिपं शंबरं जित्वा दुर्जयगुर्जरेश्वरमतः कीर्त्याभिषिक्तो भवत् ॥ ३८ ॥ सशूरः पश्चिमादुद्यन् क्रामन्नकबरः क्षितिं ॥ नकिंहीनकरो भूयात् प्राप्योदयमहीभृतं ॥ ३९ ॥ सदो दयोद्भ वोभास्वान् प्रतापो वारुणीं जहौ ॥ भवत्य कबरध्वांते नसंध्याक्को नचास्तभाः ॥ ४० ॥ कृत्वा करे खड्गलतां स्वबल्लभां प्रतापसिंहे समुपागते प्रगे ॥ साखंडिता मानवती द्विषच्चमूः संकोचयंती चरणं पराङ्मुखी ॥ ४१ ॥ वार्द्धिं मथित्वा प्यनुजेन विष्णुना समाहृता श्री रिति लज्जितः किमु ॥ भूमौ समेत्ये त्यमरेंद्र भूभृता म्लेच्छाब्धिमामथ्य रमा करेकृता ॥ ४२ ॥ सदाक्षमापाः करिणो पियस्य करेण सिंचंति पदं मुदैव ॥ यंभूपसिंहं नरपाल गव्योप्यहो भजंते दयया वशीकृतं ॥ ४३ ॥ जातो भूपामरेंद्रान्महितगुरुकृपश्चाप विह्लक्षभेत्ता कृष्णोद्वाही सदासौ द्विजकुल सुगवीः पालयन् स्तीर्थसेवी ॥ जातः श्री मत्सुभद्रांगजइति वनदो वाडवा यक्षमेंद्रान् जित्वास्यामर्जुना दप्यधिक इति पुनः किंनु कर्णोवतीर्णः ॥ ४४ ॥ राणा श्री कर्णसिंहः क्षिति कुल तिलकः क्षोभयन् क्षोणिचक्रं सर्वत्र व्याप्तसैन्यं तृणमिव कलयन् म्लेच्छ नाथं मदोग्रं ॥ जित्वा दग्ध्वा सिरोंजाभिधनगरवरं चित्र वद्दिल्लि भर्तु श्चक्रे काष्ठा समस्ताः प्रतिरव विलस दुंदुभिध्वान पूर्णाः ॥ ४५ ॥ उग्र प्रभावाद्भुवि यत्पदांते भूभृन् मृगा मुक्त मदा लुठंति ॥ कुलीन भूभृच्चमरी मृगाश्च यंभूपसिंहं चमरै रवीजयन् ॥ ४६ ॥ जातस्तस्मान् महाराणा जगत्सिंहाभिधः प्रभुः ॥ सौम्योपि सोम भक्तो भूत् युधिष्ठिर इवापरः ॥ ४७ ॥ भास्वान्भीमो बलिघ्वंसी जगन्माता विनायकः पूज्यः श्री मज्जगत्सिंहः पंचदेवमयः प्रभुः ॥ ४ ॥ वर्षे वेदाष्टशास्त्रक्षितिगण नयुते माधवे शुक्लपक्षे पंचम्यां राज्यपीठं कलयति शुभदं श्री जगत्सिंह भूपे ॥ देवा संतुष्ट चित्ता दधति सुकवयो ग्राम रत्नाश्व नागा न्यौंस्तान् संख्यातु मीष्ठे दशशतरसनो नैव शेषः कुतोन्यः ॥ ४९ ॥ सद्वंशां चित्रकूटे शिरसि विकसित श्रीजगत्सिंह राजा मुद्वेल्लन्म्लेच्छ वार्द्धौ सुजनमणिभृतां मेद पाठाख्य नौकां ॥ वातेद्वे षिण्यधर्मे स्थिर यितुमनिशं कर्णधारैकालिङ्गो नीचै रेवा क्षिपत्किं दृढ कमठ शिलां श्रृंखलां शेष नागं ॥ ५० ॥ आलाने चित्रकूटे सुकृत पटुगुणै

वैंधनी कुंभमेरुदुर्गे कुंभस्थलं किं कलयति भुवियः शैलकायोति दानी ॥ भास्वद्वंशोपरिस्थद्धजपटमिहिरो नेकपो मेदपाटः श्रीमानुग्र प्रभावात्तमवति न किमु श्रीजगत्सिंहभूपः ॥ ५१ ॥ भास्वद्वंश धरैर्नृपैः परिधृतं सत्कुंभमग्रे जगत्सिंहेनप्रतिभूषितं बहुयशो मुक्ताफलैर्मण्डितं ॥ सच्छायं पुरुषार्थ सत्पदमहो धैर्यादिभृत्यैर्वृतं मेवाडं सुखपालमाप्यसशिवः शक्रादि वाहा-स्पृहः ॥ ५२ ॥ सूर्यं स्वर्णवितानमेतदुपारि श्वेतं वितानं विधुं सद्वंशो परि सद्गुणै र्नियमयन् कीलाद्रिपूष्णे कलौ ॥ मेवाडे पटुदान शालिनि जगत्सिंहंनृपं स्थापयंस्त्यक्ताम्लेच्छमदोत्कटोत्कटभयं रंता भवान्या भवः ॥ ५३ ॥ देशे वागड़ नामके नरपतिः श्रीपुंजराजोजनि श्रीमडुंगरपूर्व कस्य नगरस्याधीश्वरो दुर्जयः केनाप्यत्रन निर्जितो बहुमतिः सत्कोश वांस्तं पुनर्यन्मंत्री कृतवान् पराङ्मुखमहोदग्धंपुरं चाकरोत् ॥ ५४ ॥ युधिष्ठिरोयं तेनैव विजयेन महात्मना ॥ दुर्निरीक्ष्यो भवद्दिक्षु कुतो म्लेच्छ पाति : सम : ॥ ५५ ॥ शत्रुस्त्रीभिः स्ववेण्यां ग्रहणसुसमये दृग्जलैस्तेप्रदत्तः कीर्तिग्रामोमहीयान् सुलिखितपठितोम्लेच्छवक्रेप्वापिद्राक् ॥ कल्पस्थाप्यस्य सीमां कलयितु मखिलांबं भ्रमं स्वत्प्रतापः काष्टास्वव्यापिनित्यं दशसु तवगुणै र्मापयन्नान्तमेति ॥ ५६ ॥ त्वदनंत गुणान्वदिष्याति तदनंतः कथितः स्वयंभुवा ॥ विफलं तदवेक्ष्य शेष वक्तुरभिधां शेषइति ध्रुवंदधे ॥ ५७ ॥ भूपेंद्र त्वत्प्रतापैः पृथुभिरनुदिनं च्छादिता यांत्रिलोक्या मत्यूष्मोद्वेदतो भूद्भव शिरसि हर श्चांघ्रि देशे स्त्रवंती ॥ शेषस्याहो शिरस्सुस्फुटमणिमिपतः स्फोटकाः प्रादुरासन् भूमौत्वन्मौलिलोल च्चमरजपवनैस्तापशांत्याहिशांतिः ॥ ५८ ॥ स्वामिन्स्वर्मार्गदंभा स्तवगुण निकरानासुवेलं सुमेरोः संतान्य स्वर्णसूत्रावृतरविवलयंभ्रामयित्वायनाभ्यां ॥ वेधाःकृत्वांचलेद्वे हिमकरकिरणै रौप्यसूत्रैश्चमध्ये प्रत्यब्दं कीर्तिवस्त्रं वयति नवनवं वेष्टनं वारिराशेः ॥ ५९ ॥ दिक्पालान् दशवीक्ष्यनेत्रदशकं जातं कृतार्थं मुहुः शेषं नेत्र युगं निरर्थकमहो विज्ञेन धात्राकृतं ॥ इत्थंचिंतयताचिरं नृपजगत्सिंहंपुनः पश्यता दृग्द्वंद्वंतुतदेव जन्मफलभाक् क्रौंचच्छिदा ज्ञायते ॥ ६० ॥ चक्रप्रेमार्ककृष्णा विबुधभिपजौ सुश्रुताविस्मृतिस्त्वं लक्षोन्मर्द्दीपुसाधूइवसदसिकवीकोशपुर्ण प्रतिष्ठः ॥ संध्याभ्राजीरसेन द्विजपतिसचिवौ सद्विधिश्चैवयद्वद्वार्तासक्तः सुधीष्टा विवजगति जगत्सिंहजीयाः शतायुः ॥ ६१ ॥ हुंकारेण कुरंगराजनिकरा वश्या दृशाद्वीपिनो भूदाराः सुरवेण तेपिकरिणो हस्तेनतेखड्गिनः ॥ सेव्योष्टापदसंचये रपिजगत्सिंहस्य तस्याधुना वृद्धस्यैक वृपस्यवश्य करणे कावास्तुतिस्तन्यतां ॥ ६२ ॥ मंगोरीजातिराजा तनुजविमलधीः सूत्रधारोहि भाणा तत्पुत्रः श्रीमुकुंदो

वशसकल कला भूधराख्यो द्वीतीयः॥ याभ्यां ग्रामःप्रदत्तो हतरिपुनिकरः श्री जगत्सिंह भूपैर्दत्तौ सौवर्ण रौप्यौऽमल इह कृपाख्यापयन्मापदंडो ॥ १ ॥ राणा श्रीमज्जग-त्सिंह कारितं मंदिरं शुभं ॥ ताभ्यामेवकृतं श्रीमज्जगन्नाथाभिधप्रभो ः॥ २॥ ताभ्यांश्री मज्जगत्सिंह ०द्ग्रामो-----॥ चित्रकूटांतिकंप्राप्तः प्रतिष्ठायां रमापतिः॥ ३॥ श्री सर-स्वत्यैनमः १ ॥ श्री गणेशायनमः श्री एकलिंगजी प्रसादात् श्री जगन्नाथरायजी प्रसादात् श्री सरस्वत्यैनमः श्री विश्वकर्मणेनमः अथ राणा श्री जगत्सिंहस्य मांधातृतीर्थ यात्रा प्रसंगः ॥ अथैकदातीर्थ वरंसुराढ्यं रेवोपकंठे सकलार्थ दायकं॥ ओंकार नामप्रभुशंभुपीठं मांधातृनामव्रजितुं मनो व्यधात् ॥ ६३ ॥ श्री रामराजेन पुरोहितेन विचार्य सद्दान समूहतो द्विजान् ॥ धनाधिपान् कर्तु मनाः पुरा दगात् करेणु मारुह्य जगत्पतिर्मुदा ॥ ६४ ॥ ततो चलन् देव गजोपमागजाः पुरः पताका समलं कृताः पुरः ॥ सच्चामरालंकृतवक्र मंडला यांती — वर्ष्यानु वसंत सक्ताः॥ ६५॥ उच्चैरादित्य हेलास्त्यजदुप मितयो नैव कृष्णं स्वतोन्यं मन्वाना मुक्तिहीनाः सततमवमतः स्थापनास्थाः श्रुतीनां ॥ प्रत्यक्षंस्थापयंतः परमिहनपरं किंपुनर्मत्तताया नात्मज्ञा बौद्ध बुद्धिं धरणि धरपते धारयंतिद्विपेंद्राः ॥ ६६ ॥ येमी कर्दम शायिनस्तृणगृहे स्त्रीणां रवैर्निष्ठुरै धिक्कारंगमिताश्चकूप सलिले मंक्तुंकृतोपक्रमाः ॥ तेमीकां चन मंचिकोपरिगताः सौधे बुधा स्त्रीसखा राज्ञादत्त करींद्र त्वांहितरवै रानंदिता स्तेप्ययुः ॥ ६७ ॥ ततोचलन् देवहयोपमाहया येषांन वेगे समतां दधुर्मृगाः॥ नवायवोनैव मनांसि भास्वतः कुतो हयास्तेपि भवंतिताद्दशाः ॥ ६८ ॥ भास्वंतः सततं मृगांक गतयः सन्मंगलाः संततं सौम्याः स्वामिमतात्सुजीव कविकाः पत्याज्ञयामंदगाः॥ सिंहीजाः सितकेसरैः क्षणमपि स्थैर्यायुताः केतवः पृथ्वीनाथ नवग्रहा इवहयाः संपीड़यंति द्विषः॥ ६९॥ धारयंतः श्रुतेरुच्चैः शिष्य प्राया महाम्मृगाः॥ सद्वेगास्ति मितस्वांता हरयो मुनि वद्ययुः॥ ७०॥ एताद्दशान् पुरस्कृत्य तुरंगान् भूपतिर्व्रजन् ॥ नवासवं इदानीतं कुरुतेन्यंनरं कथं ॥ ७१ ॥ कंपंते शत्रुनाथास्तदनुतदबलाः सागरांता स्ततोब्धिः शेषः कूर्मो वराह स्तदनुच गिरयो दिग्गजेन्द्राः सनाथाः ॥ किंकिं जातं किमेतद्भवति जगतिहा न्योन्य पृष्टास्तदोचु मांधातु स्तीर्थराजं जिगमिषु रजनि श्री जगत्सिंह भूपः॥ ७२ ॥ संगत्योदय सागरस्य सविधेसौधेस्वकीयेद्भुते कैलाशाधिककांतिपूर कलिते भूपो वसत्तद्दिनं ॥ यत्रस्थं नृपतिं पयोनिधि शयं पद्मापते स्तंजना जानंतिस्म समान मेवसततं श्री सेवितांघ्रि द्वयं ॥ ७३ ॥ अमानानि समानानि विमानानी वरेजिरे ॥ शिबिराणिततस्तेषु नृपादेवा इवावसन् ॥ ७४ ॥ स्थित्वा परेद्युः सु-

दिने व्रजन्नृप स्तीर्थं महाकालनिकेतनं गतः ॥ अवंतिकां मुक्तिंददर्शनन्तां सेव्यां सुरेंद्रादि गिरीशवंद्यां ॥ ७५ ॥ क्षिप्रांसमासाद्य सुपापहंत्रीं स्नात्वाथ दत्वा बहुशो द्विजेभ्यः॥ दृष्ट्वाप्यवंती मवमत्य तत्पतिं मार्गादगाल्लोक भयंवितन्वन् ॥ ७६॥ गतोथमांधातृ समीपनर्मदातटं कियद्भिः सुदिने महींद्रः ॥ कोवा पृथिव्याम् भवतीदृशः परो मात्रुद्भवो यःपथिरोधमाचरेत् ॥ ७७ ॥ गंगांसमानीयसुपाप सागरं कुलं पुनातिस्म भगीरथो नृपः ॥ सेनां तथै वेष जगत्प्रभुर्नयन् पवित्र यामास सुपापसागरं ॥७८॥ नर्मदोतर रोधस्सु शिबिराणि क्षमापतेः ॥ ओंकारे श्वर पर्यंतं कावेरी संगतो भवन्॥ ७९ ॥ महाराणा जगत्सिंहो राजपुत्राश्च सर्वशः ॥ रेवाकावेरिका रंगे स्नाताः सौख्यं समागताः॥ ८० ॥ इत्थं सर्वेपि संतुष्टा स्नात्वा दत्वा प्यनेकशः ॥ अथ राजानृपालैः स्वै र्भोजनंकर्तुमागतः॥ ८१ ॥ अन्यासक्तै र्मृदुभिर्हरिभक्ते रिव तदाभक्तैः ॥ जलतापयोगपाकात्तप्तै रपिमोददान परैः॥ ८२॥ सभाजनैः सुभोजनै रनेकवस्तुभिस्तुतैः॥ सभाजनैः सुभोजिता द्विवारमित्यहर्निशं ॥ ८३ ॥ अथान्येद्युस्तृतीयेस्मिन्यामे सूर्यग्रहोदये ॥ महाराणा जगत्सिंहः कांचनस्य तुलांव्यधात्॥ ८४॥ वेदव्योममुनींद्वब्देशुचौ सूर्यग्रहे तुलां ॥ महाराणा जगत्सिंहः कांचनस्यतुलां व्यधात् ॥ ८५ ॥ ओंकारेशसमीपनर्म्मदतटे श्रीराण कर्णात्मभू रारूढं स्वतुलांहिर्ण्यकशिपुव्यूहं विभज्य स्वयं ॥ नैवंपूर्वमकारितेन सुभगो भूत्वान्नृसिंहः पुनः प्रीत्याभूरितयापलान्यगणयन् क्षुद्रद्विजेभ्योप्पदात्॥८६॥ वेगान् मारणतो भवे दिदमहो दुःखं कुलीनस्यत द्ध्वा वाल मथो हिरण्य कशिपुं कृत्वा -रे- स्थितं ॥ त्रैलोक्यांच गृहे गृह इतः संप्रापयन् श्रीपते र्वाहुस्तंभ समुद्भवो विजयते श्रीमन्नृसिंहःप्रभुः ॥ ८७ ॥ भास्वान् श्रीमजगत्-सिंह स्तुला मारुह्यचयद्व्यधात् ॥ स्वाति वृष्टिं ततो मुक्तान् नस्युर्जन्मे च्छवः कथं ॥ ८८ ॥ जगत्सिंह महाराज चिंतनादधिकप्रदः ॥ चिंतना वाधि दाताहि कृते चिन्ता मणिः समः ॥ ८९ ॥ राजन्नभूतपूर्वेयं धनुर्विद्या विराजते ॥ स्वयं लक्षाणि गच्छंति ग्रहस्थानपि मार्गणान् ॥ ९० ॥ नहि चापलता सक्तो न पराङ्मुख मार्गणः॥ कदापि न गुणच्छेदी कीदृशस्त्वं धनुर्धरः॥ ९१॥ कन्या संपदमास्थाय तुलारोहि प्रभाकरः ॥ शुचेरमां समासाद्य जगत्सिंहमहीपतिः ॥ ९२ ॥ जगत्सिंह महाराज तुला स्वर्ण मिषात्तव ॥ सिंहीजभयतोभानु-र्मन्येत्वां शरणंगतः ॥ ९३ ॥ तपनग्रहणे जाते तपनीय तुलांनकिं ॥ अकरो त्तेजसादिक्षु जगत्सिंहः क्षमापतिः॥ ९४ ॥ अथदृष्ट्वा तुलांवेदीं शिलास्तंभ द्वयोदितां ॥ देवा नागा मनुष्येंद्रा श्चक्रुस्तत्प्रेक्षणं मिथः॥ ९५ ॥ दृष्ट्वाला मनु-रागिणीव बहुधा रामादि कीर्तिःसिता भूपवत्कृत पांडुरा तुल तुला स्तंभ द्वय

व्याजतः ॥ नीलोच्चैर्वसुधातलात्करयुगं संमेलयंतीमियत्त्वामालिंगितुमुत्सुका प्रतिपलं स्त्रीभावतोजृंभते ॥ ९६ ॥ रेवा मथ प्राप्यसु पुण्यदात्रीं स्नात्वा च दत्वा बहुशो द्विजेभ्यः ॥ इत्थंस्तुतिं भूमिपतिर्व्यतानीच्छ्रुत्वायदेतत्सकलो विपाप्मा ॥ ९७ ॥ ये दिव्यांबरधारिणः समदृशः सौम्यांगनोपासिता यांगंगामपहायसेवनपराः श्रीनर्मदायास्तव ॥ तान्दृष्ट्वैवदिगंबरांस्त्रिनयनां श्चंडीश्वरान्सांप्रतं रूढ़ा मूर्द्धनि नृत्यति त्रिपथगा केनाद्यसा वार्यतां ॥ ९८ ॥ उद्धृत्या सगर स्तुरंगममनो यत्प्रापयन् मन्यवे तद्दैवा दमरे श्वरेण कपिलाभिख्यांतिकेप्रापितं तस्यानुश्रितपापसागरकुलं तत्रोग्रदृष्ट्याहतं मातर्दक्षिणजान्हविलमधुना तस्यान्वयं मोचये: ॥ ९९ ॥ स्मृत्या पातक माहरामि जगतां दृष्ट्वा सुरत्वं ददे स्पर्शा देव ददामिविश्नुतनुतां स्नानार्थिनेकिंददे ॥ इत्यालोच्य महेश्वरस्य तनया रत्नाकरस्यांगना यन्निम्नं व्रजति त्रपा भरवशात्तन्निम्नगा नर्मदा ॥ १००॥ ततः सुरेन्द्रादिसमर्चनीय मोंकार नामेश्वर माशुगत्वा ॥ सर्वोपचारै रचयन्महीपती रत्नैः सुवर्णै स्तुति मप्य गादीत् ॥ १०१ ॥ रेवाद्यावनमध्यतः परिपतन्भिल्लाघसंघंगजं कीलालस्यकणान् मुहः परिवमन् पाथोजसत्केसरी ॥ यावद्वंधवहोह्यनंतजठरे नप्रापयेन्मां प्रभो सोमस्त्वं कृपयाकुरंगमपिमांतावन्नयस्वांतरे ॥ १०२ ॥ दिनांतरेप्येवममुंप्रपूज्य स्नात्वापुरावत्सुमनोमहींद्रः ॥ दत्वा सुवर्णानि पुरोहिताय गावर्णनीया श्चसुराधिपाद्यैः ॥ १०३ ॥ देश देशोद्भवंभव्यं गजाश्ववसनादिकं ॥ विश्नुप्रीत्याददौभूप स्तत्संख्यातासहस्त्रदृक् ॥ १०४ ॥ इत्थं वितीर्य मनसेप्सितमर्थजातं भूपोचलत्स्वदिशमेवभयाक्तशत्रुः ॥ मार्गेपि वृष्टिरतुलांतपनीयसंघै स्तन्वन् सुपात्रततिषुप्रमदेनसक्तः ॥ १०५ ॥ गामथो भयमुखीं पथिमध्ये यांददौ द्विजवरायं सुवर्णैः ॥ वर्णनां कथमहो रसनैका संतनोति मनुजोहि कवींद्रः॥ १०६ ॥ इत्थंकियद्भिः सुदिनैः क्षितींद्रं सन्मालवक्षोणिपतेर्विमत्य ॥ दत्वापदं मूर्द्धिरिपोः समागाद्देशंपुरं हर्म्यवरं धनाढ्यं॥ १०७ ॥ माताप्राणमिवप्रियादृशमिव क्षोणीश्वरानाथव द्वेष्टारो यमवत्प्रजा जनकव दृष्ट्वानृपंचागतं ॥ देश ग्राम पुरेषु यःप्रतिग्रहं जातोमहा नुत्सवः कस्तं वर्णयितुं क्षमः सुरपते राचार्य तोन्यः पुमान् ॥ १०८ ॥ अथद्विजाग्र्यान् बहुकाशिवासिनः स्वर्णस्य वृष्ट्यैव कृतार्थ तांनयन् ॥ सुखात् सुराज्यं परिपाल यन्सभादसक्तचित्तोरघुनाथवत्प्रभुः ॥ १०९ ॥ स्फाटिक्यां वेदिकायां कलयति भुवियो मूलदेशेसुनीलं वैडूर्यं मस्तके दाक् तदनुगुरुगुणान्हीरकान्स्कंधकेषु ॥ मौलिस्तेशाखिकाग्रेमरकतमतुलं

वैद्रुमानूपल्लवौगान् मुक्तागुच्छान्नरस्त्रगिजहयमणिगोमत्फलः पंचशाखः ॥ ११० ॥ ब्रह्मा रुद्रोपि विश्नु स्तदनुरतिपतिः स्थापितायस्यनीचैः सोयं सत्कल्पवृक्षोपरतरुसहितः श्री जगत्सिंहहस्तात् ॥ वाणव्योमर्षि चंद्रैः समुदित शरादिश्वेतभाद्रे तृतीयां प्राप्यप्राप्तोद्विजानां गृहगृहमनिशं रम्यहर्म्याणि कुर्वन् ॥ १११ ॥ स्वदेहव्ययंयतोपुष्णात् द्विजानूकल्पद्रुमोह्यसौ ॥ जगत्सिंहकरस्पर्शात् किंचिदनुगुणांदधौ ॥ ११२ ॥ भास्करभट्टजमाधव पुत्रश्रीरामचन्द्रोद्भूः ॥ सर्वेश्वरस्तदंगाल्लक्ष्मीनाथः कठोडीति ॥ ११३ ॥ श्रीराणोदयसिंहैस्तस्मै ग्रामोहि भूर वाडाख्यः ॥ दत्तो मुष्मै ग्रामो होलीनामाप्य मरसिंह नृपैः ॥ ११४ ॥ लक्ष्मीनाथ सुतो रामचन्द्र कृष्णस्तुतत्सुतः ॥ अदात्तस्मै जगत्सिंहो मृगराज इयं हयं ॥ ११५ ॥ चतुःसहस्त्रीं यन्मूल्यं दत्वादहृदणार्णवं ॥ महाराणा जगत्सिंहैः समोनास्तिकुतोधिकः ॥ ११६ ॥ वर्षे शास्त्रवियन् मुनींदु गणिते भाद्रे तृतीयातिथौ शुक्ले जन्मदिने निजे नृप जगत्सिंहः कृपाया निधिः ॥ दत्वाकांचनमेदिनींसजलधिं श्री चित्रकूटांतिके ग्रामं कृष्ण बुधायसद्गुणनिधिः श्रीभेसडाख्यंददौ ॥ ११७ ॥ राणा श्री मज्जगत्सिंहोमधुसूदनशर्मणेप्रददावाहड़ग्रामेहलद्वयमितांभुवं ॥ ११८ ॥ एकांलक्ष्मीमगृह्णांतदपिसुरपतिः क्रुद्धहस्तेनभूमौभूत्वाम्लेच्छाब्धिमाथी सुगज सुरतरून्गाद्विजेभ्यः प्रदाय ॥ कीर्तींदुंकृष्णभट्टे हयमणिममलं भैसडाग्राम चिंता रत्नंदत्वाप्सरोभि र्जगतिविजयते श्रीजगत्सिंहः विश्नुः ॥ ११९ ॥ ऋषिव्योम मुनींद्वब्देजगत्सिंह महीपतिः ॥ भाद्र शुक्ल तृतीयायांसप्तादत्सप्तसागरान् ॥ १२० ॥ गजव्योममुनींद्वब्दे जगत्सिंहः क्षमापतिः ॥ भाद्रशुक्लतृतीयायां विश्वचक्रं ददौप्रभुः ॥ १२१ ॥

श्री महागणपतयेनमः॥ श्रीजगन्नाथरायजी प्रसादात्॥ श्रीएकलिंगजी प्रसादात्॥ श्री भवान्यैनमः श्री विश्वकर्मणेनमः॥ श्री सरस्वत्यैनमः॥ अथ श्रीराणा जगत्सिंह कारित श्री जगन्नाथरायमंदिरादिवर्णनं ॥ श्रीकृष्णभक्त्याथजगत्सुवर्ण्यंदेवालयं श्रीकमितुर्विधाय॥यंवारवारं सुरनाग मानवा विलोक्यचित्रोल्लिखिताइवाभवन्॥१॥ यस्यापिदेवा भुवि वर्णनां मुहुः कर्तुंनशक्ता कुतएवमानवाः॥ तस्यस्वशक्त्या वितनोतिवर्णनां श्रीकृष्णभट्टात्मजएषबाबुः ॥ २ ॥ गंगाकेतुयुतः कपर्दघटभाक् भालाक्षिरत्नाकरः कांत्यावेष्टितकंथकः सुरवह व्याजेनवैराग्यभाक् ॥ ह्याधायहरिं तपस्यतिहरस्तत्किंवृपस्तैर्गुणैर्बध्वाभक्तमहाद्विपहृत यशोमंडे ननापोषयत् ॥ ३ ॥ पुण्यंप्राप्यतदेकलिंगविषये श्रीमेदपाटस्थलं ब्रह्मा भूपमणे श्चतुर्मुखलसद्देवालयव्याजतः ॥ वेदाध्यायिजनस्वनैः किमपठद्वेदान्यदेकाग्रह

त्तद्रूपं कमलोपभोग हृदयाकिंराजहंसा : श्रिता : ॥ ४ ॥ मत्कार्यं क्रियते नृपस्य यशसेत्युत्पन्नवैराग्यतः कृत्वाद्वंद्वसहंशिलामयवपुर्देवालयव्याजतः ॥ धृत्वांत : सहरिंपठद्विजरवै र्मूर्ध्न्यंबुकुंभं दधात् पूर्णाभ्यासवशंस्थिरे पठतिकिं वेदान् द्विजेंद्रो विधुः ॥ ५ ॥ क्षारान्नाति गभीर नीरधि जलादत्यस्वचित्तंचिरा द्विश्नौनैवविमुंचतिक्षितिपतिं कृत्वामहामन्दिरं ॥ लोकानामवलोकनायकृपया तत्रोन्नते निर्मले स्निग्धेपौरप्टदाचकिं प्रतिकृतिं श्रीभर्तुरास्थापयत् ॥ ६ ॥ श्रीमद्वानिशिरोमणिर्नृप जगत्सिंहो महीमंडले व्याप्तंयद्यशसाबभौत्रिजगती वृंदं सुधांशुप्रभं ॥ प्रासादं जगदीश्वरस्य रचितं मत्वामुना स्वर्गता : दृष्ट्वा चेतसि विस्मिता इवनिजं त्यक्त्वानिमेषंस्थिताः ॥ ७ ॥ कर्णसिंहाब्धि संभूतो जगत्-सिंह सुधाकरः ॥ यस्य मृदुकर स्पर्शेनप्रजातापवत्यभूत् ॥ ८ ॥ भूपस्योन्नतविश्नु सद्म कलश व्याजाद्विवस्वानसौ ज्ञातुं मार्गमहो रथस्य तरसा रूढस्त दुच्चंपदं ॥ स्थित्वे वात्र जगत् प्रकाश मधुना कुर्यां मुदेति स्थित स्तेनत्वा मरुणो हिसा रथिरयं कोपो भवत् संश्रितः ॥ ९ ॥ स्वनामाढ्यं जगन्नाथ राय इत्य-भिधांहरेः ॥ कल्पयन् श्रीजगत्सिंहः ख्यातकीर्तिरभूद्भुवि ॥ १० ॥ पांडूच्चं हरिमंदिरं नृपजगत्सिंहेनयत्कारितं राजद्रत्नघटंममेति किमहोभारो हिरा चिंतयन् ॥ भूर्लोके विधृते भुजेननृपते रीपच्चलत्कंचुकं वातात्केतु मिपात् सरत्न मनयद्भूमेर्बहि स्वंशिरः ॥ ११ ॥ स्ववैंनोभोगभूमिर्जलधिरपि गुरुर्नागराजोतिभीमः कुत्राहंसौख्ययुक्तो हरिगणपशिवार्कान्वितः संवसेयं ॥ चित्तेस्यागत्य दत्वान्नृपमुकुटमणिंकर्णसुनुंनिजाज्ञां प्रासादार्थंविधायाकृत वसतिं महो श्रीजगन्नाथरायः ॥ १२ ॥ जगत्सिंहो राणः कथमिहसमागं तुममराः समर्थो भूयाद्वे सकलजनसा रक्षणपरः ॥ जगन्नाथ श्चेत्थं नृपहृदयभावं विदितवानवासी दत्रैवस्वजनकरुणा नन्दजलधिः ॥ १३ ॥ धर्मोद्भूत युधिष्ठिरं तदनुजं कीर्तिवृजं ह्यर्जुनं वीक्ष्यैकंजितधार्तराष्ट्र प्रतनं स्तद्भ्योहरि र्विस्मयेः ॥ सज्जेद्वारिरथेस्वसद्मनिपतः स्थित्वाचिरंतद्गुणान्नाज्ञासीत् पुरुषार्थ सार्थ तुरगान् देशे खिले चारिणः ॥ १४ ॥ सन्मुहूर्तेसुता राक्षैसानुकुलेनवग्रहे ॥ निधिव्योममुनींद्वन्दे पवित्रे मासि माधवे ॥ १५ ॥ शुक्लपक्षेशुभेयोगेपूर्णिमायांतथातिथौ ॥ गुरुवारेप्रतिष्ठाप्य विश्नुंग्रामान् ददौ प्रभुः ॥ १६ ॥ हिरिण्याश्वं कल्पलता गोसहस्त्रंच दत्तवान् ॥ तत्र प्रतिष्ठां परमेश्वरस्य यथाविधानं विरचय्य भूपतिः ॥ स्तुतिंव्यजानी जगदीश्वरस्य पुनः पुनः सत्पुलका कुलःसन् ॥ १७ ॥ प्रादुर्भूतचतुर्भुजंकमलदृक्पी-तांबरंचक्रभृत्पूर्णब्रह्माविकाशिकौस्तुभमणि श्रीवत्ससंदीपितम् ॥ यन्नीलंजग-

तांत्रयस्यजनकौविस्माप्यसन्प्रीतिदं तद्रूपं गिरिधारिणः कलयतु प्रायेण लोक प्रियं ॥ १५ ॥ पूतनाशकटकार्ज्जुने स्तृणावर्त्तकाघ वृषभादिके शिहन् ॥ द्वेषिकालियसमल्ल नागराट् कंससूदनहृदित्वमिहस्याः ॥ १६ ॥ इत्यादि स्तुतिमाधाय माधवस्य महामनाः ॥ दानं दत्वा गृहंप्राप्तः पश्यन् मंगल मुत्तमं ॥ १७ ॥ वर्षे निध्यं बरर्षिक्षिति गणनयुते माधवे पूर्णिमायां राणा श्री कर्ण पुत्रः सकल गुण जगत्सिंह भूपः प्रमोदात् ॥ विष्णुं संपूज्य चिन्हैः प्रकट तररूपं श्रीजगन्नाथ नाम्ना दानं श्री कल्प कल्पाः कनक हय मथो गो सहस्रंच दत्वा ॥ १८ ॥ ग्रामान्दत्वासद्गुणान्पंचभूपो वस्त्रैर्धान्यैरत्नमिश्रैर्द्विजा ग्र्यान् ॥ संतोष्यायं श्रीजगन्नाथरायं ध्यात्वा ध्यात्वा तोषमाधत्त भूपः ॥ १९ ॥ अथप्रतिष्ठांप्रविलोक्यकौतुकाद्रमापते स्तन्निकटे महीपतेः ॥ प्रसाद मालोक्य सुरासुरानरा नागाश्चकुर्वन्महतिंसुवर्णनां ॥ २० ॥ भूपत्वत्कृत विश्नुसद्मिषतोवैकुंठलोकोह्ययंवीक्ष्यत्वत्कृतमेरुमंदिरगुणान् पूर्वं श्रुतानेवहि ॥ तद्वार्येवविमूर्च्छितः स्थिरइति प्रायेणमन्दाकिनीलोलत्केतुमिषा द्व्यथाक्षितिकृते तंस्रोतसासिंचति ॥ २१ ॥ अथालोक्य तदासन्नांसभांमणिमयींशुभां ॥ इत्थमुत्प्रेक्षणंचक्रुः सुराविस्मयिनो मुहुः ॥ २२ ॥ लोकोभूपयशःसुधांशुरनिशं प्राकाशयत्तद्भयं त्यक्त्वाकेतुघटाक्तविश्नुभवनव्याजंप्रतापोंशुमान् क्ष्मांवेगादटातिद्विप द्विषमहत्सप्तीन्विमुच्यांतिकेतान्वद्धुंकृतवान्गुणाकुलतुला स्तंभाननेकान्नपः ॥ २३ ॥ श्रीराणामरसिंह कारितमिदंसौधंगुणौघैर्महद्रूपस्यास्ययशोजितोविधुरहो मूर्च्छामवाप्यापतत् ॥ तंद्रष्ट्वा नृपकर्णसिंहरचितं शुद्धांतहर्म्यं व्रज व्याजात् सेवितु मागताः किमुडवः सप्ताधिका विंशतिः ॥ २४ ॥ सौधं मध्येतड़ागंहृदय मिवसदाराममच्छंमहद्वैविष्णोर्वासायदूरे जलधि रितिधिया यज्जगत्सिंह क्लृप्तं ॥ कालेधर्मादिसेवीन्नृपतिरयमहं नित्य निद्रः स्त्रियाक्तः कर्मत्यागीति लज्जोत्रवसतिनहरिः किंतु चित्तस्यलीनः ॥ २५ ॥ कृला मोहन मंदिरंमुनिमनोमुत्कर्णसत्सागरे कैलाशाधिकमद्भुतंत्रिजगति स्यातंसकर्णात्मजः ॥ रुद्रंनंदपितानमामितिहरिर्वार्द्धौरुजा मूर्च्छितः शेतेद्याप्यपटेपिशेषशयने शीतोष्ण वर्षाहतः ॥ २६ ॥ अथैकलिंगाख्यमहाप्रभोर्मुदाश्री मोकलेन्द्रेण कृतंच मंदिरं दृष्ट्वानकैलाश गिरिंनचेतरन्जानंति देवाः स्ममहाद्भुतस्थलं ॥ २७ ॥ तत्रागत्यसुराः सर्वे देवदेव महेशितुः ॥ यथाशक्तिस्तुतिंचक्रुरेकलिंगमहा-प्रभोः ॥ २८ ॥ गिरिशगिरिप्रभुतनयांसनयांबिभ्रत्वमेकलिंगजय ॥ गिरि तनयास मुदीक्ष दक्षण हतः प्रजेश दक्षस्य ॥ २९ ॥ सदैकलिंगस्यपदारविंदं भाजामनोयाम कदाचिदेव इत्थंविधायस्तुतिमस्य देवताः स्वर्गस्य रक्षा कृतये

त्वरा कुला: ॥ ३० ॥ अथ श्री मज्जगत्सिंह कारितं केलि मंदिरं ॥ तदतीवाद्भुतं मत्वा वैजयंतंनमेनिरे ॥ ३१ ॥ अथदृष्ट्वा महादेवी मत्युच्च शिखरिस्थितां ॥ राठासेनाभिधांवंद्यां जानंतिस्मेतिदेवता: ॥ ३२ ॥ आगत्योदयसागरेक्षयजले मिष्टांभसि प्रायशो गंभीरे सततं वसत्वमधुनापक्षस्य रक्षाकृते ॥ राठासेन गिरींद्रजेति सततं मैनाकनामानुज प्रीत्याह्वानरतानचावजगती पाया त्रिकुट स्थला ॥ ३३ ॥ अथश्रीमज्जगत्सिंहकारितं रूपसागरं ॥ विहारस्थल मालोक्य निनिदुर्मानसंसर: ॥ ३४ ॥ अथदृष्ट्वोदय सागर मग्रे विस्मापकं नृणां ॥ श्रीराणोदयसिंहकारितं --------- ॥ ३५ ॥ अमृताकरेप्युदयसिंहकारिते कमलाकरेप्युदय सागराभिधे ॥ कमलापति: शयितुमुत्सुकोपिसस्तटएवविस्मितइवावतास्थिवान् ॥ ३६ ॥ रुद्रेणोदयसागरद्युतिमलं वीक्ष्यानिशंविस्मय स्तब्धेनस्थितमत्रनो गिरिभुव: सौख्यंगिरींद्रं विना ॥ तद्गौरीप्रियकाम्ययानरपतिस्तस्यैवतीरेतनोत् कैलाशाधिक निर्मला --मुदा रम्यंसुहर्म्यंनकिं ॥ ३७ ॥ अथजावराभिधान ग्रामे देवीमहाद्भुतादेवा: ॥ दृष्टांबिकाभिधानांनेमुर्यस्या: प्रभावत: सततं ॥ ३८ ॥ मेदपाठमहींद्राणां राज्येरूप्य मयीशुभा ॥ अनिशंखन्यमानापि पूर्णैवभुविदृश्यते ॥ ३९ ॥ वर्षेनिध्यंवरर्षिक्षितिगणनयुते भाद्रशुक्ल द्वितीया तिथ्यां श्रीकर्ण सूनुस्त्रिजगति सुयशा: श्रीजगत्सिंह भूप: ॥ दत्वा श्रीरत्नधेनुं मणिकनक मयीं कृष्णभट्टायदु: खादुद्धर्ता पापरूपादृणवरनरकान् सैषभूयाच्चिरायु: ॥ ४० ॥ भ्रात्रागरीबदासेन शत्रुसिंहेन चप्रभो: ॥ रामसिंहारिसिंहेति ------ रामत: ॥ ४१ ॥ वर्षवर्षांतरेणाथ जगत्सिंहो थयान्तनोत् ॥ महादानानि सर्वाणि कल्पद्रुमइवप्रभु: ॥ ४२ ॥ जगत्सिंहो महाराज श्चिंतामणि रिवापर: ॥ पुत्रै: पौत्रै: परिवृतोजीयादाचंद्रतारकं ॥ ४३ ॥ श्रीमत्कर्णमहीभृदात्मज जगत्सिंह: प्रभो राज्ञया प्रासादं किलमेरुजातक मिमं श्रीरत्नशीर्षाव्हयं ॥ भंगोरा प्रथितान्वयो: गुणनिधी भानोस्तनूजोत्तमौ शील्पीशौसमुकुंदभूधर इतिख्या तौ चिरं चक्रतु: ॥ ४४ ॥ श्रीमद्भास्करपुत्रमाधवसुत श्रीरामचंद्रोद्भव: श्री सर्वेश्वरभट्टसूनुरभवत् पूर्वस्थलक्ष्मीपद: ॥ नाथस्तत्सुतरामचंद्रतनुज श्रीकृष्ण भट्टांगभूलक्ष्मीनाथकृता प्रशस्तिरतुला दद्यात्सतां मंगलं ॥ ४५ ॥ इति श्रीमन्महाराजा धिराज महारणा श्रीजगत्सिंहजीकारिता कंठोडी ग्रामाधिप कृष्ण भट्ट ----- लक्ष्मी नाथा परनाम बाबू भट्ट कृता प्रशस्ति संपूर्णा अचल इव अचल शक्ति: कीर्त्या बुद्ध्या श्रिया ह्रिया शक्त्या ॥ युक्तानि जयति भक्त्या कायस्थे शोचलाख्यात: ॥ १ ॥ तत्कुल कमल दिवाकर तुल्यो पूर्वार्थ वृद्धि भव मुक्ति: ॥

कल्याण कृत्प्रजानां कलाभिधान : प्रमाए वचा : ॥ २ ॥ सद्विजा दिव वृक्षो कला भिरतिवर्द्धमानबहुशाखः ॥ सत्रार्चना भिधानो --- व्योर्जुन पाण्ड्यो.

श्री महागणपतयेनम : ॥ श्री जगन्नाथरायजी प्रसादात् ॥ श्री एकलिंगजी प्रसादात् ॥ श्री भवान्यैनम : ॥ श्री विश्वकर्मणेनम : ॥ वंशोरवेरपूर्वोयं यद्भूता भूरिभूभृतः ॥ अंतक्षिप्ता रसांभोधिं ररक्षु स्तद्धि पक्षत : ॥ १ ॥ तत्रान्ववाये शिवदत्त राज्यो बापा भिधानो जनिमेदपाटे ॥ संग्राम भूमौ पटुसिंह रावं लातीत्यतो रावल इत्यभाणि ॥ २ ॥ राहप्य राणा भुवितस्य वंशे राणेति शब्दं प्रथयन् पृथिव्यां ॥ रणोहि धातु : खलुशब्द वाची तंकार यत्येष रिपूनद्रु तार्तान् ॥ ३ ॥ तस्मान्नरपति राणा दिनकर राणा बभूवाथ ॥ अजनिजसकर्ण राणा बभूव तस्माच्च नागपालाख्य : ॥ ४ ॥ श्री पूर्णपाल नामा पृथ्वीमल्ल स्ततो जात ॥ उदितोथ भुवनसिंह स्तत्पुत्रो भीमसिंहो भूत् ॥ ५ ॥ अजनि जयसिंह राणा जातस्तस्मा च्चलखमसी राणा ॥ अरसी ततो हमीर : संजात : क्षेत्रसिंहोस्मात् ॥ ६ ॥ तस्मालाखाभिज्ञो राणा श्री मोकलस्तस्मात् ॥ श्री कुंभकर्ण उदभूद्राणा श्री रायमल्लो स्मात् ॥ ७ ॥ संग्रामसिंह राणा जातो भूपाल मौलिमणिः ॥ श्री राणोदयसिंह : प्रतापसिंह स्ततो जात : ॥ ८ ॥ अमरसमो ऽ मरसिंह स्ततो नृप : कर्णसिंहो भूत् ॥ गुणगण निधि स्ततो भूद्राणा श्री मजगत्सिंह : ॥ ९ ॥ जगत्सिंह महीभर्तु : कथं चिंतामणि : सम : ॥ चिंतना वधिदाताय श्चितनाधिक दोनृप : ॥ १० ॥ राणा श्री राजसिंहो स्मात् प्रद्युम्न इवकृष्णत : ॥ यस्यदृष्ट्या कृतार्था भूत् समस्त द्विज संतति : ॥ ११ ॥ श्री मान् रामप्रजायां यशसि नलनृप : सत्य संधासु पार्थो दाने कर्णप्रतापे प्रकट दिनमणि र्धर्मसूनुर्दयायां ॥ राणा श्री राजसिंह क्षितिकुल तिलक : श्री जगत्सिंह पुत्रो जीयादा चंद्रतारा गण रवि धरणी क्षीर पाथोधि शैलं ॥ १२ ॥ वर्षेनिध्यंबरर्षि क्षिति गणनयुते फाल्गुणस्य द्वितीया तिथ्यां कृष्णाख्य पक्षे सकलनृप मणि : श्री जगत्सिंह पुत्र : ॥ राज्य श्री चिन्ह भूतं त्रिजगति सुखदं हेमसिंहा सनंसत् सल्लग्ने धिष्ठितोभूत् सकल रिपुकुल त्रासदो राजसिंह : ॥ १३ ॥ वर्षेनिध्यं वरर्षि क्षितिगणन युते मार्गशीर्षेपि शुक्ले पंचम्या मेकलिंगे कनकमणि मयीं सत्तुलां राजताख्यां ॥ राणा श्री राजसिंह क्षितिपति मुकुट : श्री जगत्सिंह पुत्र : कृत्वातत्र द्विजाग्र्या न्सपदि विहितवान् राजराजेन्द्र तुल्यान् ॥ १४ ॥ स्वच्छत्वंनोभयत्रप्रभवति मुकुरे रोचना निंद्यजन्मा रक्षित्वं श्रोत्रियेनो तुरग वृषभगो हस्तिनो ज्ञानहीना : ॥ वन्हिर्ज्वाला करालो जलमय मखिलं तीर्थजातंततोमुं राणा श्री राजसिंहं भजतभजतरे मंगलंमंगलार्थे ॥ १५ ॥ लक्ष्मी चित्तस्थितंयद्विजपतिसुखदं कंटका संगशोभं फुल्लन्मित्रं समंता दसुर

मधुपे नैव सेव्यं कदापि ॥ शूरोत्ताम प्रदानं जडकुल रहितं श्री जगत्सिंह पुत्र श्रीराणा राजसिंहाद्भुत पदकमलं राजहंसा भजध्वं ॥ १६ ॥ यौनित्यंदापयंतौ त्रिदशतरुफला न्युच्चकैः प्रापयित्वा वैरिभ्योऽ प्रीयमाणौ समरभुवि गलान्कृंत यित्वा विविक्षून् ॥ तिष्ठद्भ्योत्रैवदत्तः स्वयमिह सुफलंयौसुहृद्भ्यस्तयोः किंराणा श्रीराजसिंह त्वदतुलकरयोः कल्पवृक्षेणसाम्यं ॥ १७ ॥ नंतायोहलिनं द्विजेंद्र रुचिरंनो रुक्मिणंद्वेपिणं जिश्नौदत्तसुभद्रकोवलरतः सत्यात्मनि प्रायशः॥ शूरोद्भूत सुतः सदानरपतिः श्रीमागधः प्रस्तुतः श्रीकृष्णस्तव मस्तके विजयतां श्रीराज सिंह प्रभो ॥ १८ ॥ राणाश्री राजसिंह त्वदतुलविमला दृष्टिरेषैवगंगा नोचेल्लेशाद वाप्ता कथमिहमनुजंपापमुक्तं विधत्ते ॥ मूर्द्ध्ना वाप्तामदेशं सपदि करतले पद्मगेहंकरोति प्राप्ताचेदंघ्रिदेशे कलयतिसततं तंनरेशं रमेशं ॥ १९ ॥ मंथ न्माकिल मंदरागइहयल्लक्ष्मींददौमत्सुतां तस्मै श्यामजनार्दनाथ तनुजं चंद्रं कपर्दश्रीये ॥ भूत्वाभूपकरः समुद्रइतिरुद्भूमृन्मथस्तद्भुवः पद्माः स्वात्मजभृत्य वाड्वकरंतज्जंयशोधोनयत् ॥ २० ॥ राणाश्रीराजसिंहस्य प्रतापोवाड्वानलः देहंगेहंतृणप्रायंजहज्जीवनमात्रहृत् ॥ २१ ॥ राणा श्रीराजसिंहोयं राजतेभूमि मंडले ॥यत्प्रतापासहः सूर्यो गमनेभूत्सहस्त्रपात् ॥ २२ ॥ राणाश्रीराजसिंहेन्द्र गुणैर्वृद्धोभवान्ध्रुवं ॥ सद्दाननीरदोनित्यं वलिभ्राजीनतानतः ॥ २३ ॥ श्रीमत् जगत्सिंह नवीनभानोः श्रीराजसिंह प्रतिबिंब रूपः॥ चित्रं जगत्प्राणवृतोर्थलोल प्रकाश कृत्तापकरो जडांतः ॥ २४ ॥ अष्टापदतिरस्कारि सदयं हृदयं प्रभोः॥ राणा श्री राजसिंहस्य हरिर्वसति तत् सदा ॥ २५ ॥ चित्तोन्मेष वृषः सदासुमिथुनः कीर्त्या प्रतापेनसत् कर्कोनाम्नितु सिंह एषहितभूभृत्कन्यकः सत्तुलः ॥ सत्यालिः सुधनुर्मुखेहिमकरः सत्कुंभि मीनेक्षणो नित्यं द्वादश राशिसंगतइतो भास्वान्नवीनो भवान् ॥ २६ ॥ वर्षे बाणां बरर्षिक्षिति गणनयुते माधवे शुक्लपक्षे पूर्णायां पूर्णकामः कनक मणिमयीं सत्तुलां शूकराख्ये ॥ क्षेत्रे गंगा तटांते द्विजगण महिते श्री जगत्सिंह पुत्रः कौमारे संविधाय स्वजन परजना न्नाकरोत् किंधनाढ्यान् ॥ २७ ॥ अवतार मुनींद्वब्दे मार्गस्या सितपक्षके॥ त्रयोदश्यामया शितींददौकन्या महाप्रभुः॥ २८॥ राणा श्री राजसिंह त्वमिह भुविभवन् कल्पवृक्षावतारो दत्वासंख्या श्वनागे कनकमणियुता शीति संख्याः सुकन्याः॥ व्यासेनोक्तं नृकन्या गजहयमणिदः कल्पवृक्षस्तदेतत् मिथ्येत्युक्तिं नराणां दलपितुमभवस्त्वां मुनिस्तत्सपायात् ॥ २९ ॥ मुनिव्योम मुनीद्वद्वे तड़ागांते स्व मंदिरं॥राणा श्री राजसिंहोयं कौमारे कृतवान् प्रभुः॥ ३० ॥ शक्रः स्वानुज विश्नुमेत्ययदिवे याचेत पक्षाच्छिदां नूनंचक्रधरादिहापिजलधौ

पक्षस्यरक्षानतत् ॥ मैनाकः किमुसेवतेबहुतरः स्नेहायकौमारतो राणाश्रीयुतराजसिंहभवतः प्रासादवर्यच्छलात् ॥ ३१ ॥ ब्रह्मा वत्सहतौ हरेरिव गुणान् ज्ञातुं तव प्रायशः संप्राप्तश्चतुराननोपिनगुण प्रान्तं यदाज्ञातवान् ॥ व्रीडाजाड्ययुतस्तदास्थित इह प्रायोगवाक्षा ननो राणाश्रीयुतराजसिंहभवतः कौमारसौधच्छलात् ॥ ३२ ॥ मूढायत्र वदन्तिचित्र मखिलं यच्चित्र क्वचित्रितं तन्मन्येनकुमारमंदिरमिदं किलदभुतं प्रेक्षितुं ॥ आयाते स्त्रिदिवाधिपादिकसुरैर्दृष्ट्वा मुहुर्विस्मिते श्चित्री भूय सदास्थितं स्थितमहो पाताल देवैरपि ॥ ३३ ॥ राणा श्री राजसिंहोयं वाटिका मद्भुतां व्यधात् ॥ वैजयंत मिव प्राप्तं तत्र प्रासाद मातनोत् ॥ ३४ ॥ विश्नो श्चक्र मिवप्रताप दहनः श्रीमेदपाटप्रभो सोढुंदुः सह एषमानकलितैर्नम्रानुकं पीपरं ॥ इत्थं चंद्र मसा विचिंत्य सुचिरं श्री राजसिंहप्रभो रुद्याने स्वकृता द्यसौध मिपतो नूनं निवासः कृतः ॥ ३५ ॥ राणा श्रीजगदाद्यसिंह रचितं यन्मन्दिरं श्रीपतेः राणा श्रीधर राजसिंह विहितं तस्यैव पार्श्वेष्वितः ॥ शंभू श्रीगणपार्यमा चलतनूजानां सुधांशुच्छविप्रासादाच्छचतुष्टयं कविरिहोत्प्रेक्षामकार्षी दिमां ॥ ३६ ॥ राणा श्रीपतिराजसिंहनृपते कीर्तिर्नटीस्वैरिणी स्पृष्ट्वा मोह महो विधास्यतिततः सार्द्धमहाविष्णुना ॥ वत्स्यामः किलपंचभिर्भवति यद्युक्तं हितत्सन्मुखं द्वंद्वस्वैर्भवनैर्वसत्यपि शिवे भास्येनशैलात्मजा ॥ ३७ ॥ द्रष्टुं देहजमर्बुदं हिमवतः श्रीविष्नुसद्मच्छलात् प्राप्तस्यात्र सुपुण्यके स्थितवतः श्रीमेदपाटे चिरं ॥ राणा श्रीधर राजसिंह कृतस द्देवालयानामिपाल्लोकेभिन्न रुचे हदैव दधतस्तंतंसुरं तत्सुताः ॥ ३८ ॥ राणा श्रीयुत राजसिंह यशसा व्याप्त त्रिलोकीतले मायेशोहरिरेवनीलरुचितांधत्तेनचान्येभुवि ॥ नाध्यक्षावयमे तदंगकसुराः स्यामोनुमेया अपि प्रायः शंभुगणेशसूर्यगिरजा ऐशानतस्तत् स्थितः ॥ ३९ ॥ देवासर्वे सद्गुणैर्बंध माता गेहान् कृत्वा श्रीपतेः पार्श्वतः किं ॥ कृत्वा शैलीमूर्तिमेवात्रतस्थुः श्रीमान् शंभुः सद्गजास्येन चंड्यः ॥ ४० ॥ राणा श्रीराजसिंहत्वदतुलनृपतः सद्रूपैक्येन रुद्रः पृथ्व्यां दत्ताद्गजौघात् सजल घन रवाद्दंति वक्रो गणेशः ॥ सूर्यस्तत्ते प्रतापात्तव भुज बलत श्चंडिकां शस्त्रदेवी कृत्वा गेहान् सलज्जा अभिहरिनिलयं पार्श्वतः किंनिलीनाः ॥ ४१ ॥ सिंचेन्मांरक शीकरैः करिमुखो मांवृष्टि कर्तारविर्मेघै रित्थमुभौ गणेश नयनौ किंत्वत्प्रतापाकुलौ ॥ सिंचेन्मां विधुमौलिरेषसुधया मांचंद्र वक्राशिवा सिंचेदेव मुभौ हरोहिमगरेः पुत्रीव संपन्मुखौ ॥ ४२ ॥ लोकेयास्तिप्रतिष्ठाप्रतिदिन नुदयन् लोक यात्रा कृदेष त्रातुंतांकिंनिमज्य प्रतिरजनिजलेवारिधे साश्व-

सूतः ॥ भूयो लज्जालु रुद्यन्ननुदिनमवशः प्रायशो यातिवेगाद्राणाश्रीराजसिंह क्षितिपकुलमणेः किंप्रतापोपतप्तः ॥ ४३ ॥ एकं पुत्रं समुद्रः कलयति हृदये वाडवं जीवनैः स्वैरन्यंनेत्रेमहेशस्तड़ितइहसुतावारिदेभ्यः प्रदत्ता ॥ तंत्रि स्विन्नोदिग्गंतान् व्रजतिचजवतः प्राप्यदिग्भ्योंघ्रिसेवी राणाश्रीराजसिंह क्षितिप-कुलमणेः सत्प्रतापोपिवृद्धः ॥ ४४ ॥ राणा श्रीराजसिंहत्वदतुल सुयशः सत्प्रतापास्य भूमौ कर्तुंचंद्रान् सुवन्हीन् हर इह विधयेस्वर्णवारायदत्वा ॥ अन्यैर्द्रव्यैर्नकुर्यादितिमनसि भियातत्परीक्षार्थमिंदोः खंडंवन्हिंचतत्तत्सदृशमिह-दधत्पातुवश्चंद्रचूडः ॥ ४५ ॥ राणाश्रीराजसिंहोयं पुत्रत्रयविराजितः ॥ शंभुर्नेत्रत्रयेणेवजीयादाचंद्रतारकं ॥ ४६ ॥ श्रीमद्भास्करपुत्रमाधवसुतः श्रीरामचंद्रोद्भवः श्रीसर्वेश्वरभट्टसूनुरभवत्पूर्वस्थलक्ष्मीपदः ॥ नाथस्तत्सुतराम-चंद्र तनुज श्रीकृष्णभट्टांगभूर्लक्ष्मीनाथकृतिः सतांमधिमुदे भूयादियंनिर्मला ॥ ४७ ॥ इति श्री मन्निखिलभूपालमौलिमाला मणिमरीचिनीराजितचरणारविंद-महाराजाधिराजमहाराणा श्री जगत्सिंहपुत्रस्यराणा श्री राजसिंहस्य प्रशस्ति. राणा श्री मज्जगत्सिंहैः कृपयादय याहितः ॥ प्रासादे स्मिन् महाकार्येप्यधिकारी कृतःसुधीः ॥ १ ॥ गुघावत कुलोत्पन्नः पंचोली कमलासुतः ॥ अर्जुनो नाम पुण्यात्मा भूयात्कार्य करो हरेः ॥ २ ॥ भंगोराज्ञाति राजा तनुसु विमलधी सूत्रधारोहि भाणो तत्पुत्रः श्री मुकुंदो वशसकल कलो भूधराख्यो द्वितीयः॥ याभ्यां ग्रामः प्रदत्तो हृतरिपुनिकरः श्री जगत्सिंहभूपैः दत्तौसौवर्णरौप्यौ क्रमइह कृपया ख्यापकौ मापदंडौ ॥ १ ॥ राणा श्री मज्जगत्सिंह कारितं मंदिरं शुभं ॥ ताभ्यामेवकृतं श्री मज्जगन्नाथाभिध प्रभोः ॥ २ ॥ ताभ्यां श्री मज्जगत्सिंह ग्रामोदेवदहा भिधः॥ चित्रकूटांतिकं प्राप्तः प्रतिष्ठायां रमापतिः॥ ३ ॥ सूत्रमुकुन्दो द्भवबाघा अस्मरी लीपि अगमत् संवत् १७०८ वर्षे द्वितीय वैशाख शुदि पौर्णमासि १५ गुरुवासरे श्री जगन्नाथरायजी पाट पधराया कृष्णभट्टपुत्र बाबूकृता.

जगदीशके चौकमें जहां अब पुलिसकी कचहरी होती है कहते हैं कि वह पहिले धायका मंदिर था.

शेष संग्रह नम्बर- ५.

धायके मन्दिरकी प्रशस्ति.

श्रीरामजी श्रीनवलश्यामजी श्रीगणेशगोत्रदेव्यो प्रसादात् स्वस्तिमहाराजाधिराज महाराणा श्री जगत्सिंहजी विजयराज्ये संवत् १७०४ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे तृती-यायां तिथौ शुभदिने पट्ट प्रतिष्ठा ॥ श्री उदयपुर नगरे राणा श्री जगत्सिंहजीनी धायजी

श्री माजी भाईपुराजी हेमाजी पुत्र लाधूजी धाय नोजूबाई प्रासाद कराव्यो नवलश्यामजीने मूहुर्त प्रतिष्ठा कीधी एकोतरशत कुल उधारणार्थाय ॥ शुभं भवतु श्री लाधुजी भार्या बाई जगीसबाई राधां श्रीरस्तु शुभं भवतु.

छन्द दुर्मिला.

शिवलोक समध्धिय भोगन बध्धिय सोखिल सध्धिय कर्णसमें
जगतेश बिचच्छन लेन्नृप लच्छन ब्यूह बिपच्छन जच्छनमें
कुल चारण बट्टसु क्षेम अघट्टसु तद्विष कट्टसु खग्गततें
दिव दुग्गय रावत पच्छ महावत घेरन धावत मन्दमतें ॥ १ ॥
पुर पब्बय लुट्टन अब्बुव जुट्टन छैक्छक छुट्टन जोध जई
कलियान सु जोधहि बीर प्रबोधहि दिल्लिप मोदहि भेट भई
जननी नृप अङ्गन गङ्ग तरङ्गन छैदल सङ्गन ध्यान धरें
फिर दिल्लिय पत्तन ईश प्रमत्तन केछल कथ्थन होश हरें ॥ २ ॥
अजमेरसु आनहि पाय प्रयानहि सो सुन रानहि भेद भयो
मुगली दल हल्लिय तोपन टल्लिय पीलु प्रपिल्लिय नीति नयो
तब साम उपायन भूपति भायन पुत्त हिपायन साह पठे
कुल चंप दहानल बल्लु महाबल खाम किये खल मोत मठे ॥ ३ ॥
जगतेश उजागर संश्रति सागर त्याग प्रजागर देश परयो
तिंह दान कथा सु महानजथा तत लेख तथा कल्लु शोध करयो
सुत पुत्र अकब्बर जोजग जब्बर बानक बब्बर शाहजहां
इतिहास प्रकथ्थहि आदतसथ्थहि पुत्तन पथ्थहि गथ्थतहां ॥ ॥ ४ ॥
भल सज्जन भावन पूर प्रभावन पैत्रिक पावन जान गिरा
फतमल्ल सुशासन पाय प्रकाशन संशय नाशन थान थिरा
कविराज बिरच्चिय श्यामल सच्चिय जोमति जच्चिय जासगरे
इतिहास विचारक मोमति तारक धीसम धारक शोधकरे ॥ ५ ॥

महाराणा जगत्सिंह-अव्वल.

सप्तम प्रकरण समाप्त.
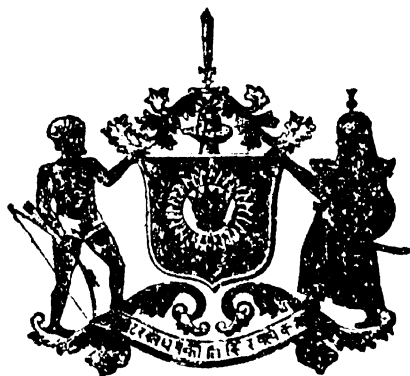
आठवां प्रकरण.

महाराणा राजसिंह-अव्वल.

इन महाराणाका राज्याभिषेक विक्रमी १७०९ कार्तिक कृष्ण ४ [हिज्री १०६२ ता० १८ ज़िल्क़ाद = ई० १६५२ ता० २२ ऑक्टोबर] को, और राज्याभिषेकोत्सव फाल्गुण कृष्ण २ [हिज्री १०६३ ता० १६ रबीउल् अव्वल = ई० १६५३ ता० १४ फ़ेब्रुअरी] को हुआ था. इनके वास्ते बादशाह शाहजहांने भी टीकेका दस्तूर शाही मन्सबदार गौड़ (नरदमन) और कल्याण झाला (जो महाराणाकी तरफ़से बादशाहके पास गया था) के हाथ भेजदिया.

इन्होंने गादी बैठते ही चित्तौड़के क़िलेकी मरम्मत बड़ी तेज़ीके साथ करवानी शुरू की; इन्हीं दिनोंमें बादशाही मुलाज़िमोंने सूबे मालवा व अजमेरके मन्दिरोंकी ख़राबी करके गोवध आदि करना शुरू किया, तब महाराणा के मुलाज़िम भी क़ाबू पाकर छेड़ छाड़ करनेलगे.

इसी वर्षमें बीकानेर के राजा कर्णसिंहके कुंवर अनोपसिंह के साथ, महाराणाने अपनी बहिनका विवाह किया, और ७१ लड़कियें अपने भाई बेटे राजपूतों की उनके साथवाले दूसरे राजपूतोंको व्याह दीं.

फिर टीका दौड़ (१) करनेका विचार बादशाही मुल्क पर किया, परन्तु कुछ

(१) टीका दौड़ से यह मत्लब है, कि रईस गादी नशीन होकर किसी दुश्मन के शहर या इलाके को लूटे, अगर कोई बड़ा दुश्मन उस वक़ न हो, तो मेवाड़ के महाराणा अपने ही देश के भील, मेर वग़ैरह के ग्रामों पर उस रीति को पूरा करते थे.

दिलमें खौफ़ था, इसलिये मौक़ा देखते रहे. इनकी यह धूमधाम बादशाह शाहजहांके कान तक पहिले ही पहुंच चुकी थी, और वह वैकुण्ठ वासी महाराणा जगत्सिंहकी बाज़ी बातोंसे भी नाराज़ था; इसके सिवाय महाबतखां देवलियाके रावत हरिसिंहका तरफ़-दार होकर बादशाहको भड़कानेलगा, तोभी शाहजहांने शाहज़ादगीमें उदयपुर रहनेके लिहाज़से यह सब कुछ सहा, और कभी कभी जगत्सिंह भी दबकर तुहफ़ोंके साथ जमइयत नौकरीमें भेजदेते थे. कभी ज़ियादा ज़ोर शोर देखा तो कुंवरको भेजकर नारा-ज़गी दूर करदी, लेकिन् महाराणा राजसिंहने गादी नशीन होते ही बड़ी सख़्त कार्र-वाइयां कीं. मालूम होता है, कि शाहजहां ज़ियादा भड़का होगा, परन्तु दाराशिकोह मेवाड़का मददगार था, इससे वह टालता रहा. आख़िर कार ग़रीबदास जो महाराणा कर्णसिंहके छोटे बेटे, जगत्सिंहके भाई और महाराणा राजसिंहके चचा थे, दिल्ली गये; तब विक्रमी १७१० वैशाख शुक्ल ३ [हिज्री १०६३ ता० १ जमादि-युस्सानी = ई० १६५३ ता० ३० एप्रिल] को शाहजहांने उन्हें डेढ़ हज़ारी ज़ात व सात सौ सवार का मन्सब और जागीर दी. फिर जब बादशाहने उदयपुरकी तरफ़ फ़ौज भेजनेका इरादा किया, तब ग़रीबदास बे रुख़्सत उदयपुर चला आया. बादशाहने नाराज़ होकर जागीर और मन्सब ज़ब्त किया, और महाराणा से बहुत नाराज़ हुआ, क्योंकि इन्होंने ग़रीबदासको यहां आते ही रियासती कारो-बारमें मुसाहिब बना दिया.

मेवाड़पर ज़ोर डालने व बखेड़ा बढ़जानेपर फ़ौजी ताक़त बढ़ानेके लिये आप शाहजहां विक्रमी १७११ आश्विन शुक्ल ४ [हिज्री १०६४ ता० २ ज़िल्हिज = ई० १६५४ ता० १६ ऑक्टोबर] को आगरेसे ख़्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारतके बहानेसे अजमेरकी तरफ़ रवाना हुआ, और मौलवी सादुल्लाखां वज़ीरको तीस हज़ार सवार देकर क़िले चित्तौड़की तरफ़ भेजा. कार्तिक कृष्ण १२ [हिज्री ता० २५ ज़िल्हिज = ई० ता० ८ नोवेम्बर] को अजमेर पहुंचकर आनासागर पर बादशाहका क़ियाम हुआ. इस मौक़ेपर महाराणा राजसिंहके मोतमद भी शाह-ज़ादे दाराशिकोहकी मारिफ़त आगरेके पास बादशाहकी ख़िद्मतमें हाज़िर होगये थे; बादशाहने मुन्शी चन्द्रभान ब्राह्मणको महाराणा राजसिंह के समझानेके लिये उदयपुरकी तरफ़ रास्ते ही में से रवाना किया, कि जिससे महाराणा ज़ियादा फ़साद न बढ़ावें; सादुल्लाखां भी विक्रमी कार्तिक कृष्ण १२ [हिज्री ता० २५ ज़िल्हिज = ई० ता० ८ नोवेम्बर] को फ़ौज समेत चित्तौड़ पहुंचा, और क़िला ख़ाली पाया.

महाराणा राजसिंहने चित्तौड़ पर लड़ाई करना ठीक न जानकर अपने आद-

मियोंको बुला लिया था, और सारी मेवाड़ की प्रजाको माल, अस्बाब, मवेशी, औरत व बच्चे लेकर पहाड़ोंमें चले जानेका हुक्म देदिया. विक्रमी १७११ कार्तिक कृष्ण ८ [हिज्री १०६४ ता० २१ ज़िल्हिज = ई० १६५४ ता० ४ नोवेम्बर] को मुन्शी चन्द्रभान भी उदयपुर पहुंचा. महाराणाने क़ाइदेके साथ ख़ातिर की, लेकिन् सादुल्लाखांने क़िले चित्तौड़को गिराना और बर्बाद करना शुरू कर दिया.

उदयपुर में मुन्शी चन्द्रभान से रद बदल होने बाद चन्द्रभानकी अर्ज़ी और महाराणाके मोतमद लोग शाहज़ादे दाराशिकोहकी मारिफ़त बादशाही ख़िद्मतमें पहुंचे.

उन अर्ज़ियोंका तर्जुमा किताब 'इन्शाय ब्राह्मण' से यहां लिखाजाता है, जो कि मुन्शी चन्द्रभानने इस मुआमलेकी बाबत बादशाहकी ख़िद्मतमें रवाना की थीं. (अस्ल अर्ज़ियोंको नोटमें देखो (१)-)

मुन्शी चन्द्रभान ब्राह्मणकी पहिली अर्ज़ीका तर्जुमा.

ताबेदार दशहरेके दिन हुज़ूरसे रुख़्सत होकर चाहता था, कि एक हफ़्तेके अन्दर मक्सदके मक़ामपर पहुंचे, लेकिन् राजाके आदमियोंकी हमराहीमें तईनाती हुई थी. सफ़र ते करके सोमवारके दिन इक्कीस ज़िल्हिज सन् २८ जुलूसको उदयपुर पहुंचा. पिछले दिनको राना पेश्वाईकी मामूली जगहपर आया, और बुज़ुर्ग फ़र्मान् और जड़ाऊ सरपेचसे सरबलन्द हुआ. मामूली अदबकी रस्मोंके बाद हुज़ूरके इस अदना ताबेदारको मोतबर जानकर दूसरे क़ासिदोंके बख़िलाफ़ बग़लगीरीके साथ मुलाक़ात की, और बहुत ताज़ीमसे पेश आया. सवारीमें बातें करता हुआ अपने घर तक साथ लेगया, और वहांसे रुख़्सत किया.

---

(۱) عرضداشتے کہ منشي چندربهان بنام شاهجهان بادشاه نگاشته *

——***——

عرضداشت (۱) * کمترین بندگان عقیدت نشان چندربهان بعد از ادای لوازم بندگي و عبودیت و تقدیم مراسم اخلاص و عقیدت ذرّه وار بموقف عرض باریافتگان محفل جاه و جلال و ایستادهای بزم دولت و اقبال میرساند - که روز دسهره از خدمت سراسر سعادت مرخص گشته میخواست که در عرض یکهفته بمطلب رسد - چون برفاقت کسان زبدهٔ راجهای والاتبار مامور بود همپای آنها طي مسافت نموده روز مبارک دوشنبه بیست و یکم شهر ذي حجه سنه ۲۸ به اودیپور رسید *

آخر روز رانا دو رجای که بجهت استقبال مقرر است آمده بورود منشور لامع النور عنایت سرپیچ مرصع سرفراز و ممتاز گردید * بعد از ادای مراسم آداب کمترین بندگان را بندهٔ درست اعتقاد صافي نهاد جناب عالمیان مآب دانسته برخلاف دیگر فرستادها درکنار گرفت - و به تواضعی که درخور فرستادهای آستان دولت نشان باشد - در سر سواري حرف زنان تا خانه همراه خود برده از آنجا رخصت کرده *

दूसरे दिन एकान्त में बुलाकर अपने खास लोगों के साम्हने हुज़ूरी हुक्मों का मज़्मून पूछा, और अपने कुसूरोंसे ख़बरदार होना चहा. ताबेदारने वे हुक्म, जो हुज़ूरकी पाक ज़बानसे सुने थे, बहुत साफ़ और नर्म लफ़्ज़ोंमें उसके समझानेको बयान किये. रानासे कहा, कि अब होश्यारीके साथ बातें सुननेका वक्त है ज़रा ज़ाहिरी बातिनी हवास दुरुस्त करके सुनना ज़रूर है; अपनी और अपने बापकी ख़ताओं पर इत्तिला हासिल करनी चाहिये.

अव्वल, जो कुसूर तुम्हारी और तुम्हारे बापकी तरफ़से ज़ाहिर हुआ, वह क़िले चित्तौड़का बनाना है, और हक़ीक़त में जब कि बादशाही फ़ौजने क़िला फ़तह करके बिल्कुल बर्बाद कर दिया, और अव्वल रोज़ यह शर्त होगई-कि क़िला किसी तरह दुरुस्त न किया जावे. इस हुक्म पर कुछ लिहाज़ न रक्खा; इस बातकी ख़राबीसे जो आंख ढक कर क़िलेकी दुरुस्ती शुरू कर दी, वह अक़्लके बिल्कुल ख़िलाफ़ है, तुमसे और तुम्हारे बापसे बड़ा कुसूर हुआ, बादशाही दर्गाहमें इक़ार के ख़िलाफ़ कार्रवाई करना बड़ा गुनाह है. जिस वक्त में कि बादशाही लश्कर आगरेसे दूर गया हुआ था, बहुतसे सवार, पैदल, साथ लेकर बादशाही सरहद्द पर आना और उसका दर्शन स्नान नाम रखना, क्या समझा जावे; बुज़ुर्ग बादशाहोंके आगे मुल्की ख़िद्मतोंमें कमी करनेसे यह कुसूर ज़ियादह है.

روز دیگر در خلوت طلبیده در حضور معتمدان مدار علیه خود استفسار مضمون احکام لازم الانعام نمود و خواست که بر جرایم و تقصیرات خود مطلع گردد * بنده بنا بر مزید احتیاط آنچه از زبان معجز بیان اشرف اقدس ارفع اعلیٰ ارشاد یافته بقید قلم در آورده بود آنرا در نظر داشته بزبان قریب الفهم عام فریب خاص پسند شروع در گذارش مقدمات احکام لازم الاعلام نمود — و به رانا گفت که الحال وقت شنیدن کلمات هوش افزاست لختی حواس ظاهر و باطن خود را فراهم آورده احکام مطاعه را بگوش هوش بشنوید و بر تقصیرات خود و پدر خود مطلع شوید *

اوّل تقصیرے که از پدر شما و شما بوقوع آمد ساختن قلعه چتور است — در واقع قلعه را که بادشاه آفاق ستان بضرب شمشیر عالم گیر مفتوح ساخته خراب مطلق گردانیده بخاک برابر ساخته باشند و روز اوّل این شرط بمیان آمده باشد — که اصلاح جای دران قلعه نسازند و تعمیر نکنند و مرمت نکنند — پاس این حکم نداشته این عهد موکد را فراموش گردانیده چشم بصیرت پوشیده و از قبح این افعال نه اندیشیده شروع در ساختن جاها نموده بمرور ایام کار تا باینجا رسانیده باشند — داخل چه حساب و شایستهٔ کدام عقل دوربین است — و این تقصیر عظیم است که از پدر شما و شما که هم در زندگی پدر شریک این مصلحت بوده اید و هم بعد پدر دست درین کار داشته اید بظهور آمده — و در درگاه سلاطین پناه هیچ تقصیر عظیم تر ازین نیست که اندیشهٔ خلاف عهد بخاطر کسے بگذرد — و درحین که رایات جاه و جلال از مستقر الخلافت اکبرآباد بعزم مهمی بسرحد دور دست تشریف برده باشند —

दूसरे, दुन्याके सब लोगोंपर ज़ाहिर है, कि यह सल्तनत सारी दुन्याके बादशाहोंकी जाय पनाह है. इराक़, खुरासान, मावराउन्नहर, बल्ख़, बदख़्शां, काशग़र वग़ैरह के अमीर, सर्दार, बादशाही ख़िद्मतमें हाज़िर रहते हैं, और मन्सब व दरजे पाते हैं; दक्षिण वालोंकी क्या हक़ीक़त है, जो इस बादशाहतके हरतरह ताबेदार हैं. हर महीने हर वर्ष हर जगहके आदमी यहां इज़्ज़त पाते हैं. दूसरा ज़ाबिता यहांका यह है, कि जिसको कहीं पनाह न मिले, उसका ठिकाना यहां है; जो यहां आया, वह कहीं नहीं जाता; और बग़ैर रुख़्सत कोई नौकर दूसरी जगह नहीं जासक्ता; यह बड़े बादशाहों का दस्तूर है, उनके भागेहुए नालायक़ नौकरको दूसरा अपने पास नहीं रखसक्ता. बड़ी आर्ज़ूके साथ बाज़े लोगोंको मन्सब इनायत किये गये, और बावजूद सर्कारी बाक़ियातके वह जिहालतसे तुम्हारे यहां आकर बैठरहे; तुमने और तुम्हारे बापने उनको अपना मोतबर बनालिया, और कुछ पर्वाह न की; यह कौनसी अक़्लमन्दी की बात है. जिस वक़्त कि कन्धारकी मुहिम् पेश आई, और ताबेदारोंके इम्तिहानका वक़्त था, इतनी थोड़ी जमइयत भेजी, कि जो किसी गिन्तीके लायक़ न थी. दक्षिणमें जो एक हज़ार सवार रखनेका इक़ार था, उसमें भी कमी रही; इन बातोंसे ख़ैरख़्वाहीका दावा बिल्कुल बेजा है, ज़बर्दस्त बादशाहोंके रूबरू ज़रूरतके वक़्त नौकरीसे बचना, बड़ा क़ुसूर है.

ازاودے پور باجمعیت بسیار سوار و پیاده بر آمدن - و در آمدن به ملک بادشاهي آنرا زیادت و فسل نامیدن - حمل بر چه توان نمود * پیش بادشاهان عظیم الشان بهنسبت کوتاهي خدمت در معاملات ملکي این تقصیر کلان است *

دیگر آنکه بر عالم و عالمیان ظاهر است که این دولت خداداد مرجع و مآب بادشاهان هفت اقلیم است - و امرا و خانان و مرزبانان عراق و خراسان و ماوراءالنهر و بلخ و بدخشان و کاشغر وغیر آن در رکاب ظفر انتساب کمر خدمت بسته حاضراند - تا بدنیاداران دکهن که حلقهٔ بندگي درگوش و غاشیهٔ عبودیت بر دوش این درگاه سلاطین پناه‌اند چه رسد - و در هر ماه و هر سال طبقه طبقه از هر قسم و هر قوم از اطراف و جوانب در درگاه معلی آمده بمناصب و مراتب سرفرازي میبابند - و یکے از لوازم این دولت ابد پیوند آنکه هرکه از جاے دیگر جاے نباشد جاے او اینجا است - هرکه اینجا آمد بجاے دیگر نمیرود * اگر کسے را ضرورتے رویدهد تا از حضرت خلافت رخصت حاصل نه نماید بجاے دیگر نمیتوان رفت - و این ضابطهٔ مخصوص بادشاهان عظیم الشان است - بدیگرے نمیرسد که اگر بندهٔ ازین درگاه آسمان جاه از بي سعادتي برمد - در پیش خود نگاهدارد * هرگاه قاعده چنین باشد - جمعے که بآرزوي تمام بندگي این درگاه والا اختیار نموده منصب و جاگیر یافته در سلک بندها منتظم گشته باشند و بر ذمهٔ بعضي از ان طلب مطالبهٔ سرکار اعلي بوده باشد - محض از روے جهالت بے اجازت حضور راه پیش گیرد - پدر شما و شما آنها را پیش خود جاي داده مدار علیه خود سازند - و از بازپرس اینمعني حذر نکنند - داخل کدام عقل صواب اندیش است *

जब यह बातें तुमसे ज़ाहिर हुईं, तो इस लिये हज़्रत शहन्शाह अजमेर तश्रीफ़ लाये, और ज़बर्दस्त फ़ौजें चित्तौड़की तरफ़ रवानह कीं; जिससे यह मत्लब था, कि राना ख़िद्मतमें हाज़िर हो, या अपने कियेका एवज़ पावे. इस अर्सेमें तुम्हारे वकीलोंने हाज़िर होकर कुसूरोंकी मुआफ़ी चाही, हज़्रतने ज़ाती रहमदिलीसे तुम्हारे पुराने ख़ान्दान को, जो बिगड़ता जाता है, तरस खाकर क़ायम रक्खा. और यही बात काफ़ी समझी, कि फ़ौज भेजकर क़िलेकी मरम्मत बिगाड़ दी जावे, और तुम्हारा वलीअह्द बेटा अजमेरमें हाज़िर होकर रुख़्सत पावे, और हमेशा मामूली जमइत पूरी तादादमें किसी भाई बन्धुके साथ दक्षिणमें मौजूद रहे, और आगेको कोई बात हुक्मके ख़िलाफ़ ज़ाहिर न हो. अजमेरके पास वाले परगनोंकी बाबत हुज़ूरकी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ कार्रवाई होगी; तुम्हें इन मिह्र्बानियों की क़द्र अच्छी तरह जाननी चाहिये, और इसका शुक्र अदा करना मुनासिब है. अपने वलीअह्द बेटेको बहुत जल्द भेजना लाज़िम है, इसमें देर लगाना ठीक नहीं है.

जब ताबेदारने यह सच्ची, तेज़ और नर्म बातें बादशाही वकीलोंके दरजेकी मुवाफ़िक़ साफ़ साफ़ बयान करदीं, राणा जिसके कानों तक ऐसा हाल कभी न पहुंचा था, इनके

دیگر آنکه در وقتی که مهم قندهار درمیان آمده هنگام امتحان عیار جوهر اخلاص بندهاے عقیدت کیش بود - جمعی را که عدم و جود آنها مساوی داشته فرستادند — و در دکهن که قرارداد هزار سوار بود قلیلی نگاهداشتند — این چه دعوی اخلاص است * پیش پادشاهان ممالک ستان کوتاهی خدمت خصوص در هنگام ضرورت تقصیر کلان است *

چون این قسم تقصیرات از جانب شما بظهور پیوست درینوقت که خاطر ملکوت ناظر اشرف اقدس اعلی از هیچ طرف نگرانی نداشت و بجهت پاداش این جرایم عساکر ظفر طراز از اندازهٔ حساب افزون و بیرون طلبداشته متوجه اجمیر گردیدند — و افواج قاهرهٔ منصوره بر چتور تعین فرمودند — و خاصه عزم مقدّس آنکه یا رانا بملازمت سراسر سعادت اشرف اقدس اعلی مستسعد گردد - یا هر چه بیند از خود بیند * درین اثنا فرستادهاے شما رسیدند - و بوسیلهٔ باریافتگان محفل بهشت آئین استعفاے تقصیرات شما نمودند - و بندگان اشرف اقدس اعلی بمقتضاے فتوّت ذاتی و مروّت جبلی خانمان آباد اان چندین سالهٔ شما را که نزدیک بزوال و اختلال رسیده بود بحال داشتند — و اکتفا بهمین فرمودند که افواج قاهرهٔ منصور بر قلعهٔ چتور رفته جاها را که ساختهٔ و مرمّت کرده باشند مسمار نموده برگردد - و پسر تیکه در اجمیر بملازمت اشرف اقدس رسیده سعادت ابدی حاصل نماید و رخصت شود - و جمعیت مقرّری تماموجودی نه کاغذی همیشه با برادر شما تعینات دکهن باشد — و در آینده امرے خلاف حکم مقدّس از شما سرنزند — و درباب عنایت پرگنات نواحی اجمیر در آنچه رضاے مقدّس باشد بعمل خواهد آمد * قدر این عنایت را بواقع باید دانست و شکر این نعمت را بجا مے باید آورد و پسر تیکهٔ خود را زود روانه باید نمود — تاخیر درین کار جایز نباید داشت *

چون فقیر این مقدّمات درست و راست و تلخ و شیرین را بشرح و بسط بزبانے و آئینے که در خور

सुननेसे बहुत हैरान और पशेमान हुआ. सिवाय मुआफ़ीके कोई इलाज नज़र नहीं आया; इतना कहा, कि अक्सर बातें मेरे बापके वक्तमें हुईं, लेकिन् मैं सबको अपने ऊपर लेताहूं, और इनकी मुआफ़ी चाहता हूं; आगेको बादशाही मर्ज़ीके ख़िलाफ़ कोई काम न होगा, और अपने बड़ोंसे ज़ियादह मैं ख़ैरख़्वाही करूंगा. राणाके मुसाहिब, जो सलाहमें शरीक थे, उनमें से किसीने कुछ जवाब नहीं दिया, सब चुप रहे; यह ताबेदार सर्कारी नौकर बेग़रज़ सच कहने वाला है, और ये लोग भी शुरूसे एतिबार करते हैं, इस लिये बे ख़ौफ़ सब बातें उम्दह तौरपर कहडालीं.

दूसरे दिन राणाने अपने घर मश्वरा करके अपने फ़ायदेके वास्ते यह बात ठहराई, कि अपने वलीअह्द बेटेको ताबेदारके साथ हुज़ूर में भेजदे. दूसरी बात बहुत सलाहके बाद यह बयान की, कि सब शहर और गांवके आदमी फ़ौज के आनेसे घबरा गये हैं, जब लश्कर क़िले चित्तौड़को ख़राब करके लौटेगा, उसी रोज़ लड़केको तुम्हारे साथ अजमेर भेजूंगा. ताबेदारने कहा- यह वहम बेफ़ायदह है. उसने जवाब दिया, कि- मैं बेफ़िक्रीसे बेटेका भेजना अपनी इज़्ज़त समझता हूं, लेकिन् इस इलाक़ेके लोग जंगली हैं; बड़ा वहम करते हैं, लश्करके चित्तौड़से लौटते ही तामील होगी. बहुत फ़िक्र और मुश्किलके बाद इस मुआमलेकी अर्ज़ी लिखकर बल्लूके हाथ, जो

فرستادهاے این دولت پایدار باشد - ادا نمود * و راناکه هرگز رنجدّت گوش او آشناے این کلمات نشده بود پی باین تقصیرات برده بمجرّد استماع این سخنان بهوش آمد — آثار حیرت وندامت از ناصیهٔ او مشاهده افتاد - ودانست که درگاه والا این تقصیرات عظیم بوده است * بعد ازان که یقین او شد که جواب غیر از ندامت وعذرخواهی ندارد عذر این تقصیرات خواست - وهمین قدر گفت که این جرایم اکثر نسبت به پدر من دارد وکمتر به من - اما من همه را برخود گرفته قبول دارم عذر میخواهم وامید عفو دارم و بعد ازین اصلا امرے که خلاف مرضی طبع مقدّس باشد از من بظهور نخواهد آمد — وبرجادهٔ بندگی زیاده از اسلاف خود ثابت قدم خواهم بود * ومعتمدان مدارعلیه راناکه درین خلوت بودند هیچکس راجواب نیامد — پیش سخنان معقول ساکت ماندند * وفقیر چون بندهٔ راست ودرست اعتقاد سرکار فیض آثار است — واصلا اغراض نفسانی مطمح نظر ندارد پیش این قوم نیز از آغاز آفرینش یک گونه اعتبارے دارد - مطالب را بےحجابانه وبےباکانه از روے معقولیت ادا نموده *

روز دیگر رانا در خانه مشورت نموده راه به بهبود خود برده قرار داد - که پسر تیکهٔ خود را همراه فقیر روانهٔ درگاه والا نماید * سخنے که بعد از کنکایش بسیار برزبان آورده اینست که چون مردم درون و بیرون از رسیدن افواج قاهرهٔ منصوره متوهّم و مضطرب شده اند - همین که لشکر نصرت اثر قلعه چتور را خراب ساخته برگردد پسر را همان روز برفاقت کمترین بندگان روانهٔ اجمیر سازد * فقیر باو گفت که در فرستادن پسر وا همه بیجاست * اظهار کرد که خاطر من بالکل جمع شد که فرستادن پسر را سعادت میدانم - امّا چون اهل این دیار وحشی نهاد اند ملاحظهٔ کلی دارند — بمجرّد روانه شدن لشکر از چتور پسر را بلا توقف درهمان روز روانه میسازم * چون رانا وهمراهانش بعد از ردّ و بدل

मुआमलेसे वाक़िफ़ है, और अक़्लसे खाली नहीं है, भेजी. चित्तौड़के लश्करके सिवाय मन्दसोरकी तरफ़से भी फ़ौजके आजानेका वहम होगया है. इन लोगोंने पहिलेसे अपने बाल बच्चे और अस्बाबको पहाड़ोंमें भेजकर इरादा किया है, कि जब लश्कर चित्तौड़से लौट जावेगा, उनको उदयपुरमें बुलालेंगे. हुक्मके मुवाफ़िक़ तमाम बातें बे ग़रज़ीके साथ ज़ाहिर करदीं; राना भी, जो अपने सर्दारोंसे ज़ियादह अक़्लमन्द है, अच्छे बर्ताव और नर्मीके साथ हर तरह इस कामका पूरा होना चाहता है. रघुनाथसिंह अगर्चि राजपूत है, लेकिन् समझसे खाली नहीं है. वह अक्सर मौक़ोंपर इत्तिफ़ाक़ रखता है, और अपनी जमइयत समेत हाज़िर है. यह अर्ज़ी ख़्वाजह जमाल आक़िलख़ानी के हाथ हुज़ूरमें भेजी जाती है, अगर उससे कुछ पूछा जावे, शायद ठीक बयान करे.

यहांका मेवा एक क़िस्मकी खास ककड़ी है, गन्ना भी बुरा नहीं है; कुछ अनार रानाके बाग़में से मंगाकर देखेगये, अगर्चि अ़रक़ ज़ियादह है, लेकिन् मिठास नहीं है. हवा दोपहरको किसी क़द्र गर्महोती है, और रातको कुछ ठंडी; इस मुल्ककी रअ़य्यत हर तरफ़ भागगई है, आबादी कम नज़र आती है. उदयपुरमें महाजन व्यापारी और शहर वालोंमें से किसीका पता नहीं है, सब इस बातके तै होजाने की फ़िक्रमें हैं. हुज़ूरकी सल्तनत हमेशा क़ायम रहे.

بسیار قرار داد اینمعنی نمودند که عرضداشت نوشته مصحوب بلو که آشنا ئے معامله است وخالی از راستی نیست فرستادند * انچه ظاهر میشود در فرستادن پسر سعادت میدانم — اما همین ملاحظهٔ لشکر چتور و آمدن فوج از جانب مندسور بر آنها مستولی شده — آن نیز منقریب از خاطر آنها بر مے آید تا حال افواج بحر امواج بچتور رسیده — کارے که باید کرد کرده باشد — همین که این خبر به آنها برسد — چند روز پیش ازین اهل وعیال خود را با حمال واطفال بجبل فرستاده قرار داده اند که چون لشکر ظفر اثر از چتور برگردد — آنها را باودے پور بطلبند * بموجب ارشاد والا اداے احکام واجب الانجام از روے راستی ودرستی نمود — سیرچشمی وبیغرضی خود را برانا ظاهر ساخته — وهم رانا را که معقولتر از ارباب کنکایش خود است — بحسن سلوک وسخنان راست ودرست از خود راضی گردانیده امیدوارست — که بکرم کریم کارساز اینخدمت بوجه احسن بتقدیم رسد * رگهناتهه سنگه اگرچه راجپوت است — اما خالی از معقولیت و معامله فهمی نیست — در خلوت وکثرت او را همه جا با خود متفق ساخته — و با جمعیت خود حاضر است * این عرضداشت را بمصحوب خواجه جمال عاقلخانی روانهٔ ملازمت فیض موهبت نمود — اگر حرفے از و پرسیده شود شاید که درست ادا نماید *

میوهٔ این ملک بالفعل همین بادرنگ کلان است که بزبان اینجا ککڑی گویند — نیشکر هم بد نیست — انارے چند از باغ رانا آورده بود اگرچه سیراب بود اما شیرینی نداشت — میانه روز هوا بقدرے گرمست — شبها مایل بسردی * ورعیت این ملک جا بجا فرار شده — آبادانی کمتر بنظر در مے آید — در اودے پور اثرے از مهاجن وبیوپاری واهل شهر نیست — وهمه کس نظر بر اصلاح این معامله دارند * ایام دولت واقبال مستدام باد *

दूसरी अर्ज़ी.

राणाने तमाम हिदायत और हुक्मकी बातें अच्छी तरह सुनी हैं, तामील के लिये अपना फ़ायदह समझकर दिलसे तय्यार है, ख़ैरस्वाह लोगोंकी कोशिशसे, जिनकी तफ़्सील हुज़ूरमें अर्ज़ की जायगी, कुंवर को सात घड़ी गुज़रनेपर शनैश्चरकी रातमें रुख़्सत करके उदयपुरके बाहर एक खेमे (डेरे) में ठहरा दिया है; अब उसके साथियों का सामान करता है. राणा और उसके मुसाहिब उम्मेद करते हैं, कि फ़तहमन्द लश्कर चित्तौड़ को उजाड़ कर लौट जावे तो हम अच्छी तरह उदयपुर में रहसकें और कुंवरको बे फ़िक्रीसे अजमेर भेजदिया जावे; ताबेदारोंकी तरफ़से कोशिश में कुछ कमी नहीं रक्खी गई, राणाको ऊंची नीची बातोंसे खूब क़ायल करदिया है, और सच सच बग़ैर घटाव बढ़ावके जो बातें इन लोगोंसे सुनीं, अर्ज़ कर दी गईं. हुज़ूर की बादशाहत और नसीबे का सूरज हमेशा चमकता रहे.

तीसरी अर्ज़ी.

हुज़ूर के बुज़ुर्ग रौशन फ़र्मान से, जो अजमेर मक़ाम से जारी हुआ था, इज़्ज़त और सरबलन्दी हासिल की. राणा को जो हुज़ूरकी मिहर्बानीका उम्मेदवार

عرضداشت دوم — ۲ *

کمترین بندهاے عقیدت کیش زمین خدمت بلب ادب بوسیده ذرّه آسا بموقف عرض والا میرساند — که رانا جمیع ابواب ارشاد وهدایت را بگوش هوش شنیده نظر بر اتفاق احکام لازم الانجام اشرف اقدس ارفع اعلی وبهبود حال ومآل خود دانسته — بسعي بندهاے عقیدت کیش که تفصیل آن درحضور بعرض خواهد رسید — کنور را بعد از انقضاے هفت گهڑی از شب شنبه رخصت نموده — در نواحي اودیپور خیمه ایستاده کرده فرود آورد * الحال سامان همراهیان او میکند - ورانا ومعتمدان او التجا همي دارند - که لشکر ظفر اثر چتور راخراب ساخته زون برگردد — که تابخاطر جمع دراودیپور توانیم بود — وکنور بجمعیت خاطر باجمیر تواند رفت * درکوشش ازجانب بندها تقصیر نرفته - وبسخنان عقلي ونقلي پست وبلند رانارا معقول ساخته شد * اما چون وقت درست نوشتن وراست گفتن است - انچه ازین جماعه شنیده میشود - بےکم وکاست معروض داشتن لازم است * آفتاب عالمتاب دولت واقبال تابان ودرخشان باد *

عرضداشت سوم — ۳ *

کمترین بندهاے عقیدت نشان بعد از اداے لوازم بندگی ذرّه وار بموقف عرض باریافتگان محفل بهشت آئین میرساند — که از طغراے فرّاے ابهت وجلال که ازدارالبرکت اجمیر

था, फ़र्मानके मज़्मूनसे ख़बरदार कर दिया, कुंवरकी रवानगीमें बहुत ज़ियादह ताकीद की गई है. राणा अगर्चि फ़र्मानके देखने और हम लोगों के पहुंचने से बेफ़िक्रीके साथ कुंवर के रवाना करने में राज़ी था, लेकिन् निहायत डर के साथ फ़त्हमन्द लश्कर की वापसी का इन्तिज़ार रखता था.

अब हुज़ूर के ताज़ा हुक्मसे, जो उसको बतादिया गया, बहुत तसल्ली होगई है. राणाने अपने फ़ायदेको सोच कर मुसाहिब और पुरोहित एकट्ठे किये हैं; शुक्र के दिन् शनैश्चर की रात में से सात घड़ी गुज़रने पर मुहर्रम महीने में अपने बेटे की रवान्गीके लिये नेक घड़ी तज्वीज़ की है. मुहूर्तका काग़ज़, जो राणाके पुरोहितोंने लिखा है, उसके साम्हने बन्द करके बजिन्स हुज़ूर में भेजाजाता है.

राणा अर्ज़ करता है, कि मैं ने साफ़ दिलीके साथ हुज़ूरी हुक्मोंकी तामील की है, उम्मेद है, कि मेरे मुल्क और मालपर कुछ नुक्सान न पहुंचाया जायगा, और मैं अपने बुज़ुर्गोंसे ज़ियादह रिआयत, और बराबरी वालोंसे ज़ियादह इज़्ज़त पाऊंगा, और मेरा बेटा जल्दी लौटा दिया जायगा. जंगली लोगोंमें ज़िद और वहम ज़ियादह होता है, हुज़ूरके ताबेदारोंने हर तरह तसल्ली करदी है. यह मुल्क बिल्कुल ख़राब होरहा है, सब आदमी पहिलेसे शहर छोड़ कर पहाड़ोंमें चलेगये हैं, बाज़ार

شرف نفاذ و عزّ ورود یافت — آداب بندگي و استقبال بتقديم رسانيده سعادت کونين حاصل نمود * و رانا را که منتظر و مترصد نويد عنايت والابود برمضمون عنايت مشحون آن مطلع گردانيده بيشتر ازبيشتر تاکيد در روانه ساختن کنور نمود * رانا اگرچه بعد از مشاهدهٔ منشور لامع النوّر و رسيدن بندهاے عقيدت کيش مطمئن خاطرگشته درصدد روانه ساختن پسر بود — امّا از غايت هيبت و هراس نظر برمراجعت لشکر فيروزي اثر داشت * الحال که بتازگی بر مضمون امر لازم الاتباع که درين وقت محض از روے کشف صادر شده بود مطلع گرديده تقويت ظاهر و باطن حاصل نمود * رانا پے به بهبود وسود خود برده معتمدان و پروهتان را جمع ساخته — بعد ازانقضاے روز جمعه پس از گذشتن هفت گهڙي از شب شنبه شهر محرّم ساعت روانه ساختن پسر اختيار نمود — چنانچه کاغذ ساعت بخط پروهتان ومعتمدان رانا بجهت احتياط د رحضور رانا گرفته بجنس ارسال داشته شد *

ورانا اظهار مينمود که چون من سعادت خود دانسته اطاعت حکم مقدس بجا آورده ام — يقين که بهيچ وجه من الوجوه فتورے و آسيبی بملك و مال من نخواهد رسيد — و زياده از اسلاف خود رعايت خواهم يافت و بين الاقران سربلندي حاصل خواهم نمود — پسر من زود بمن خواهد رسيد * چون ضد قلوب و حشی نهادان را لازم است — بندهاے درگاه دلاسا نموده خاطر او را مطمئن ميکردند * تزلزل و تفرقهٔ تمام بحال اينملك راه يافته — پيش از رسيدن بندها شهر او ديپور را خالی ساخته مال و متاع را بکوه فرستاده اند — بازارها و خانها خالی افتاده —

और मकान ख़ाली पड़े हैं, सिर्फ़ राणा और उसके नौकर बाक़ी रहगये हैं; यहांके आदमी कहते हैं, कि अगर यह मुआमला तै न पाता, तो राणा अबतक पहाड़ोंमें चला जाता. ताबेदारोंके तसल्ली दिलानेसे उसके होश हवास क़ायम रहे हैं. यहां एक सत्तर वर्षकी उम्रका फ़क़ीर नज़र आया, जो चालीस वर्षसे शहरके बाहर अलहदा एक गुफ़ामें आज़ादीसे रहता है, इस वक्त़ शहरकी वीरानीसे वह भी घबरा गया था. ताबेदारोंके पहुंचनेसे कुछ अम्न हुआ है, लेकिन् अभी लोगोंको आपसमें खुशी और त्योहार मनानेकी गुंजाइश नहीं है, सब लोग मुआमलेके तै होनेपर नज़र रखते हैं. कल्याणदास राजपूत वग़ैरह मौक़ेपर पहुंचे, उनकी ख़िद्मत क़द्रके लायक़ है. हुज़ूरकी बादशाहत और दौलत हमेशा रहे.

चौथी अर्ज़ी.

ताबेदारने राणाके बेटेकी रवानगीकी कैफ़ियत शनैश्चरकी रात चौथी मुहर्रम को उदयपुर शहरसे भेजी है, कि शहरके बाहर एक कोसपर डेरा जमा दियागया है, और राणा लश्करके लौटनेका इन्तिज़ार रखता है, हुज़ूरमें पेश हुई होगी. इन दिनोंमें इज़्ज़तदार सर्दार शैख़ अब्दुल्करीम मिहर्बानीके फ़र्मान समेत यहां पहुंचे; जिनसे राणाको लश्करकी वापसीकी ख़बर सुनकर बहुत तसल्ली हुई; उसने

همین نوکران رانا اند که درشهر مے باشند - و مردم اینجا میگویند که اگر اصلاح این معامله نمیفرمودند - تاحال رانا درجبل بود * بتقویت و دلاسائے بندها استقلال او بحال مانده * درویش هفتاد ساله گوشه گزینے درینملک بنظر افتاد - چهل سال است که کنج خمول گرفته وقت راخوش میگذراند - درینولا که شهر ویران شده تفرقهٔ بجمعیت اونیز راه یافته * و از رسیدن بندها فی الجمله امنے بهم رسیده - امابالفعل کسے را دماغ دیدن و صحبت داشتن بدیگرے نیست و همه کس را نظر بر اصلاح معامله است * وکلیانداس راجپوت بوقت رسیدند - مجرائے خدمت آنهاشود * ایام دولت واقبال مستدام باد *

عرضداشت چهارم - ۴ *

کمترین بندگان عقیدت نشان پس از انجام لوازم بندگی واخلاص ذرّهٔ آسا بذروهٔ عرض ناصیه سایان آستان ملایک نشان میرساند - که حقیقت برآمدن پسر رانا شب شنبه چهارم محرم الحرام از شهر اودیپور و نزول آمدن بخیمهٔ که دریك کروهی شهر نصب نموده بودند و داشتن رانا چشم انتظار بر معاودت لشکر فیروزی اثر قبل ازین عرضداشت نموده بود - امید که بسمع والا رسیده باشد * درین اثنا مشیخت و وزارت پناه شیخ عبدالکریم بافرمان مرحمت عنوان رسید - و مژدهٔ صدور حکم مراجعت لشکر نصرت اثر بگوش رانا که غیر ازین مانعے در روانه ساختن پسر نداشت رسانیده * رانا که بر همه احکام سابق مطلع گشته پسر را یکهفته پیشتر از شهر بر آورده بود - بتازگی رهین منت واحسان عنایت و مرحمت گردید *

बेटेको एक हफ़्तह पहिले शहरके बाहर ठहरा रक्खा था, अब दुबारा बहुत इह्सानमन्द होगया है. इज़्ज़तदार सर्दार शैख़ और ताबेदार और राणाका बेटा इतवारकी सुबह तारीख़ १२ मुहर्रम सन् २८ जुलूसको हुज़ूरकी ख़िद्मतमें रवाना होते हैं. इस कार्रवाईमें ताबेदारोंने बहुत दिलसे कोशिश की है, ऐसे वक़्में कि राणा निहायत बे क़रारीसे चलदेनेको था, और उसके बेटेको पहाड़ोंसे बुलाकर शहरके बाहर डेरेमें ठहराया, हुज़ूरके दिलपर भी, जो दुन्याका आईना है, रोशन होगा. हुज़ूरकी सल्तनत और दौलत हमेशा रहे.

महाराणा राजसिंहने चन्द्रभानके उदयपुर पहुंचने से पहिले सुलह के पैग़ाम लेकर वज़ीर सादुल्लाख़ां के पास मधुसूदन भट्ट व रायसिंह झाला को भेज दिया था. इन्होंने वज़ीर को बहुत कुछ समझाया, लेकिन् वज़ीर का गुस्सा ठंडा न हुआ, और उसने महाराणाके कई कुसूर बतलाये; सबसे बड़ा ताज़ा कुसूर यह बयान किया, कि ग़रीबदास रुख़्सत बग़ैर किस तरह चलागया ? तब मधुसूदन भट्ट वज़ीरसे बोला, कि उदयपुरके राजपूतों को दिल्ली और उदयपुर दोनों ठहरनेकी जगह हैं, जिस तरह कि रावत मेघसिंह व शक्तिसिंह बादशाह अक्बर व जहांगीरके पास चलेगये थे, और बुलाने पर महाराणा अमरसिंह व प्रतापसिंह के पास पीछे चलेआये. उदयपुर और दिल्लीका बर्ताव पहिले ही से ऐसा होता रहा है.

यह बात सुनकर वज़ीर और भी भड़का, और कहा कि क्या उदयपुर को दिल्लीके दूसरे दरजे पर समझने लगे ? (यह ज़िक्र राज समुद्र की प्रशस्तिमें छठे सर्गके ग्यारहवें श्लोकसे छब्बीस श्लोक तक खुदा हुआ है).

फिर झाला रायसिंह और मधुसूदन भट्टसे वज़ीरने कहा, कि राणाके पास कितने सवार हैं ? उसने जवाब दिया छब्बीस हज़ार. वज़ीर बोला कि बादशाह के पास अभी एक लाख सवार मौजूद हैं; तुम कैसे मुक़ाबला करसक्ते हो ? तब मधुसूदन भट्टने कहा–कि छब्बीस हज़ार ही लड़ाई करनेके लिये काफ़ी हैं.

شیخ مشاً الیه و بندها ے درگاه باپسر رانا صبح یکشنبه دوازدهم محرم سنه ۲۸ روانهٔ ملازمت سراسر سعادت گردید * خدمتے از رسیدن بندها بوقتےکه رانا از غایت اضطراب پاے دررکاب و عنان دردست داشت و نگاهداشتن او بلطائف عقلی و نقلی و سخنان پست و بلند و طلبیدن پسراو از جبل و برآوردن از شهر اودیپور و فرود آوردن درزیرخیمه — از بندها ے باخلاص بظهور آمده * امید که برآئینهٔ ضمیرانور که جام جهان نما عبارت ازان است پرتو انداخته باشد * ایام دولت واقبال مستدام باد *

ऐसी बातोंने वज़ीरसे तो मेल न होने दिया, परन्तु चन्द्रभान मुन्शीकी मारिफ़त शाहज़ादे दाराशिकोहने अपने दीवान शैख़ अब्दुल् करीमको महाराणाके बड़े कुंवर सुल्तानसिंहके लेनेके लिये भेजदिया था.

महाराणाने भी इस मौक़ेपर नर्मी इस्तियार की, और बेदलाके राव रामचन्द चहुवान वग़ैरह आठ बड़े सर्दारोंको कुंवर सुल्तानसिंहके साथ बादशाहके पास रवाना किया; उस समय कुंवरकी उम्र पांच या ६ वर्षकी थी.

मुन्शी चन्द्रभान व दीवान शैख़ अब्दुल्करीमके साथ कुंवर सुल्तानसिंह मालपुरे में विक्रमी १७११ मार्गशीर्ष कृष्ण ७ [हिजी १०६५ ता० २१ मुहर्रम = ई० १६५४ ता० २ डिसेम्बर] को बादशाह शाहजहांके पास पहुंचे. इस वक़ तक महाराणाके कुंवरका नाम मुक़र्रर नहीं हुआ था; इस लिये बादशाहने सुहागसिंह (१) नाम रक्खा, और मोतियोंका सरपेच, जड़ाऊ तुर्रा, मोतियोंका बालाबन्द, जड़ाऊ उर्बसी दी; और उसके साथियों में से राव रामचन्द चहुवान वग़ैरह आठ आदमियों को घोड़ा और ख़िलअ़त बख़्शा.

दूसरे दिन अर्थात् इसी संवत् के मार्गशीर्ष कृष्ण ८ [हि० ता० २२ मुहर्रम = ई० ता० ३ डिसेम्बर] को सादुल्लाखां फ़ौज समेत चित्तौड़से बादशाही ख़िद्मतमें हाज़िर हुआ; और मार्गशीर्ष कृष्ण १२ [हि० ता० २६ मुहर्रम = ई० ता० ७ डिसेम्बर] के दिन कुंवर को बादशाहने घोड़ा और हाथी देकर उदयपुरकी रुख़्सत दी.

कुंवर उदयपुर आये और बादशाह आगरे पहुंचे, इस मौक़े पर दबना ही ठीक जानकर महाराणा राजसिंह चुप हो रहे.

विक्रमी १७१३ ज्येष्ठ कृष्ण १० [हि० १०६६ ता० २४ रजब = ई० १६५६ ता० १९ मई] को ख़वासण सुन्दरकी अ़र्ज़ पर महाराणा राजसिंहने गंधर्व ब्राह्मण मोहनको रंगीली ग्राम रामार्पण दिया- (शेष संग्रह नम्बर १)

चित्तौड़ में इमारतका नुक्सान और मुल्क वीरान होनेके सबब प्रजाको भी बहुत दुःख पहुंचा, इस सबब से महाराणाको ज़ियादा गुस्सा आया, और बखेड़ा करना विचार कर जंगी फ़ौज तय्यार करनेका इरादा किया. शाहजहां बाद-

---

(१) सुहागसिंहका मत्लब मालिकका शुभचिन्तक अर्थात् बादशाही भक्त है, जैसे कि सुहागवती स्त्री, यह बात महाराणा राजसिंहको नापसन्द हुई, और पीछे अपने बेटेका नाम सुल्तानसिंह रक्खा; ज़ाहिरमें तो यह बात कि सुल्तानका किया हुआ सिंह, लेकिन् इसका दूसरा मत्लब यह था, कि सुल्तान पर सिंहकी मुवाफ़िक़ ज़बरदस्त

शाहने जो पुर, मांडल, ख़ैराबाद, मांडलगढ़, जहाज़पुर, सावर, फूलिया, बनेड़ा, हुरड़ा, बदनौर वगैरह परगने मेवाड़से निकालकर सूबे अजमेरमें मिला लिये, वे पहिले वक्तोंसे मेवाड़के शामिल रहे हैं, परन्तु विक्रमी १६२४ [हिज्री ९७५ = ई० १५६७] से बादशाह अक्बरकी चढ़ाईके बाद मुग़लोंकी बादशाहत के आख़िर तक कभी ज़ब्त और कभी छूटते रहे हैं; यानी कभी मेवाड़के महाराणाओं ने अपने तहतमें करलिये, और कभी बादशाही फ़ौजने क़ब्ज़ा करलिया. और कभी बादशाहोंने ख़ुशीसे बख़्श दिये, ऐसा ही बर्ताव होता रहा.

महाराणा राजसिंहने मांडलगढ़ पर फ़ौज भेजी, कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहको बादशाह शाहजहांने यह क़िला देदिया था, उनकी तरफ़से राघवदास महाजन वहां का क़िलेदार मुक़ाबलेसे पेश आया, लेकिन् एक दो दिन ठहरकर भाग गया.

विक्रमी १७१४ आश्विन शुक्ल १० [हिज्री १०६८ ता० ९ मुहर्रम = ई० १६५७ ता० १८ ऑक्टोबर] को दशहरा पूजनेके बाद महाराणा राजसिंहने टीका दौड़की रस्म पूरी करनेको फ़ौज तय्यार की, और बादशाही मुल्क लूटने पर कमर बांधी. विक्रमी कार्तिक [हि० सफ़र = ई० नोवेम्बर] में उदयपुरसे कूच किया, और चित्तौड़की तलहटी तथा मालवेके लोगोंको मिलाकर विक्रमी १७१५ वैशाख शुक्ल १० [हिज्री १०६८ ता० ९ शअ्बान = ई० १६५८ ता० १२ मई] को चित्तौड़से कूच हुआ, और ख़ैराबादको लूटकर पुर, मांडल व दरीबा को आघेरा. वहां बादशाही थानेके कुछ लोग थे, उनमें से कितने ही तो भागगये, और बहुतसे मारे गये, जिनका सारा सामान महाराणाकी फ़ौजने लूटलिया, और मांडल, पुर व दरीबाके ज़मींदारोंसे बाईस हज़ार रुपये दण्डके लेकर अपने थाने बिठादिये.

इसी तरह बनेड़ेके ज़मींदारोंको मातहत करके छब्बीस हज़ार रुपये दण्डके लिये. शाहपुरेके अधिकारी सुजानसिंह, जो महाराणाके चचा थे, और चित्तौड़पर फ़ौज कशीके वक्त सादुल्लाख़ां वज़ीरके साथ थे; इसी रंजके सबब महाराणाने शाहपुरेपर घेरा डाला, और बाईस हज़ार रुपया जुर्माना लिया, परन्तु इन दिनों सुजानसिंह शाह-जहां बादशाहकी भेजी हुई फ़ौजमें उज्जैनकी तरफ़ था. महाराणा इसी तरह सावर, जहाज़पुर, केकड़ी वगैरहसे दण्ड लेते हुए मालपुरे पहुंचे. उन दिनों मालपुरेकी प्रजा मालदार थी. महाराणा नौ दिन तक वहां ठहरे, और शहरको अच्छी तरह लूटा. इस शहरकी लूटका हाल लोग कई तरहपर बयान करते हैं- कोई कहता है कि एक करोड़का माल लूटा, किसीका बयान है कि पचास लाखका माल मेवाड़की फ़ौजने लिया.

टोडेके राजा रायसिंह, महाराणा अमरसिंहके पोते भीमसिंहके बेटे भी सादुल्ला-ख़ांकी फ़ौजके साथ क़िले चित्तौड़के गिरानेमें शामिल थे. इस कारण महाराणाने

अपने प्रधान कायस्थ फ़तहचन्दको तीन हज़ार सवार देकर टोडेपर भेजा. वहां राजा रायसिंहकी माने साठ हज़ार रुपये जुर्माना देकर इलाक़ेको बचाया. उस समय राजा रायसिंह शाहजहांके हुक्मसे बादशाही फ़ौजमें मालवेकी तरफ़ गये थे; बर्सात आजानेके सबब महाराणा तो उदयपुर चले आये, और इस धूम धामकी ख़बर बादशाहके कान तक पहुंची.

कर्नेल् टॉड अपनी किताबमें लिखते हैं, कि इन ख़बरोंको सुनकर बादशाहने कहा, कि मेरा भतीजा (महाराणा कर्णसिंहका पगड़ी बदल भाई होनेसे) लड़कपन से ऐसी बातें करता है, मैं इन बातोंपर ध्यान नहीं देता. हमारी राय कर्नेल् टॉडसे नहीं मिलती, क्यों कि शाहजहांको उदयपुरमें रहनेके इहसान का ख़याल होता तो देवलियाके रावत हरिसिंहको उदयपुरकी मातहतीसे अलग नहीं करता.

दूसरे– पुर, मांडल, मांडलगढ़, जहाज़पुर, भणाय, हुरड़ा, वग़ैरह परगने मेवाड़ से छीनकर सूबे अजमेरमें नहीं मिलाता.

तीसरे– अपने वज़ीर सादुल्लाख़ांको तीस हज़ार सवारके साथ क़िले चित्तौड़ को गिरानेके लिये कभी नहीं भेजता.

इन बातोंसे मालूम होता है, कि वह पुराने इहसानको तख़्तपर बैठनेके बाद भूलगया, और महाराणा राजसिंहकी धूमधामको सुनकर ज़रूर दिलमें जला होगा. परन्तु एक तो बीमारी दूसरे चारों शाहज़ादोंके आपसमें फ़सादके सबब, जिससे कि अपनी बड़ी भारी सल्तनत (हिन्दुस्तान) के उलट पुलट होनेका डर था, बादशाहने मालपुरेकी लूटका ख़याल नहीं किया होगा. इन्हीं दिनोंमें महाराणा राजसिंहने शाहज़ादे औरंगज़ेबसे मेल करनेके इरादेसे चिट्ठियां भेजीं, और औरंगज़ेबने उनके जवाबमें महाराणाको अपना मददगार बनाने के लिये लिखा. उन काग़ज़ोंका तर्जुमा जिनकी नक़्ल फ़ार्सी नोटमें कीगई है, यहां लिखा जाता है–

औरंगज़ेबका पहिला निशान.

उस नेक इरादह ख़ैरख़्वाहने अर्ज़ किया था, कि उदयकर्ण (१) चहुवान और शंकर भट्टको मए उनके साथवालोंके रुख़्सत दीजावे, और इन दिनोंमें हमारे साम्हने अर्ज़ हुआ, कि बाक़ी जमइयत जो माधवसिंह सीसोदिया के साथ रहेगी,

(१) इन्हीं उदयकर्ण चहुवानकी सन्तान इस वक़् तक कोठारियाके जागीरदार सोलह उमरावों मेंसे है.

वह भी फ़तहमन्द लश्करमें आगई; इस लिये उस उम्दा सर्दारकी अर्ज़ कुबूल कीगई. इस वक़ में कि फ़तहमन्द लश्कर बीजापुरकी मुहिम पर रुजूअ होने वाला है, और बाक़ी उस ख़ैरख़्वाह साफ़ तबीअतकी सब जमइयत अगली और अबकी हमारी ख़िद्मत में रहेगी. इस लिये उदयकर्ण और शंकरभट्टको कुछ साथियों समेत हमने रुख़्सत दी, कि अपने घर जावें.

इन्द्रभट्ट, जो हमारी नाम्दार सर्कारका पुराना एतिबारी नौकर है, उसको भी हमराह भेज दिया गया है, कि उस ख़ैरख़्वाहको ख़ास इनायत और मिहर्बानियोंसे, जो ज़बानी कह दीगई हैं, ख़बरदार करे.

इस वक़ उम्दा ख़िलअ़त और जड़ाऊ उर्बसी उसकेवास्ते इनायत फ़र्माई गई, कि सर्फ़राज़ करके उस बे शुबह ख़ैरख़्वाह सर्दारकी तन्दुरुस्तीकी ख़बर लावे, और बादशाही मिहर्बानी व बख़्शिशोंको अपनी बाबत रोज़ बरोज़ ज़ियादह समझे, और ख़ैरख़्वाही व साफ़ दिलीका तरीक़ा हाथसे न देकर पुराने दस्तूर बर्तावपर क़ायम रहे.

कम दरजेके ख़ैरख़्वाह ज़ियाउद्दीन हुसैनके रिसाले में जारी हुआ.

نشان بمهر محمد اورنگ زیب بهادر که در زمان شاهزادگي - بنام رانا راج سنگه نوشته - بتاریخ نوزدهم ۱۹ - شهر ربیع الاوّل سنه ۳۰ جلوس میمنت مانوس *

———***———

خلاصهٔ مخلصان وافي عقیدت نتیجهٔ دودهٔ وافرالارادت عمدةالاشباه و الاعیان رانا راج سنگه - بعنایت بے غایت پیشگاه سلطنت مفتخر و مباهي گشته بداند - که چون آن خلاصهٔ مخلصان وافي عقیدت التماس نموده بود - که اودیکرن چوهان و شنکربهت را باهمراهان آنها دستوري دهیم - درینولا بموقف عرض والا رسید که بقیه جمعیت که با مادهوسنگه سیسودیه خواهد بود نیز برکاب ظفر انتساب آمده - نبابران ملتمس آن عمدة الاشباه والاعیان را مبذول داشته - درینوقت که موکب نصرت قرین متوجه مهم بیجاپوراست وما بقے تمامي جمعیت آن نتیجهٔ دولتخواهان صافي طویت از سابق و لاحق در خدمت والاے ما باشد مومي الیهما را باهمسران رخصت فرمودیم که بوطن مالوف خود روند *

و اندرجي بهت ملازم سرکار نامدار را که بندهٔ معتمد قدیم الخدمت این درگاه است نیز باتفاق آنها فرستادیم - که آن خلاصهٔ مخلصان بے اشتباه را بر بعض مراتب عنایات و توجهات خاص که بتقریر او معوّل است آگهي بخشد * بالفعل از خلعت فاخره و اربسي مرصّع که باو مرحمت فرموده ایم سرفراز گردانیده خبر صحت وعافیت آن عمدة الاشباه والاعیان را بیاورد * اعطاف و الطاف پیشگاه سلطنت را دربارهٔ خویش روز افزون شناسد - وسر رشتهٔ عقیدت و اخلاص را از دست نداده به همان وتیره برجادهٔ قویم مستقیم باشد *

برسالهٔ کمترین فدویان ضیاءالدین حسین *

———***———

औरंगज़ेबका दूसरा निशान.

उम्दा सर्दार, बराबरी वालोंसे बिहतर, वफ़ादार ख़ैरख़्वाहोंका बुज़ुर्ग, बलन्द इरादह बहादुरोंका पेश्वा राणा राजसिंह- बेहद मिहरबानी और ख़ास तवज्जुहसे ख़ुश् होकर जाने, कि क़दीमी मुहब्बत पर नज़र रखकर इन्द्रभट्टको जो एतिबारकी लाइक़ है, हमने उस बुज़ुर्ग सर्दारके पास भेजा है, कि जो बातें उससे कही गई हैं, ज़ाहिर करे, और जवाब जल्दी लावे-

यक़ीन है कि बिहतरीकी उम्मेद और बेफ़िक्रीके साथ साफ़ और दुरुस्त जवाब ज़ाहिर करके अपने इक़ारोंके मुवाफ़िक़ बर्ताव रक्खे, और इसे तीन दिनसे सिवाय न ठहरावे, हुज़ूरमें रुख़्सत करे.

ख़िलअ़त ख़ासा, एक हीरेकी अंगूठी उसके हाथ भेजी है; व ख़ासा हाथी सामान समेत फ़िदवी ख़्वाजह मन्ज़ूरके हवाले किया गया है, जो भेज देगा.

—∗—

نشان والا شان که بدستخط خاص محمد اورنگزیب بهادر زیب ترقیم یافته *

عمدةالاعیان مفخرالاقران خلاصهٔ دولتخواهان وفاکیش زبدهٔ متهوران جلادت اندیش رانا راج سنگه — بعنایت بےنهایت وتوجه خاص الخاص بیغایت خوشوقت گشته معلوم نماید — که نظر بر اخلاص درست قدیم آن عمدهٔ دولتخواهان کرده اندربهت راکه محل اعتماد است نزد آن مفخرالامیان فرستادیم تامقدماتے که باو گفته ایم ظاهر نموده جواب آن را بزودی بیاورد -

باید که بامیدواری تمام وجمعیت خاطر مالاکلام باظهار جواب صدق و یکرنگی پرداخته بموجب اقرار عمل نموده زیاده برسه ۳ روز نگاه ندارد — ورخصت حضور پرنور کند *

خلعت خاصه بانگشتری الماس مصحوب اوعنایت نمودیم — فیل خاصه باتلایر حوالهٔ فدوی خواجه منظور فرموده ایم — خواهد فرستاد *

शाहज़ादे औरंगज़ेबके ख़ास दस्तख़ती और
पंजेवाले तीसरे निशानका तर्जुमा.

उम्दा वफ़ादार, बुज़ुर्ग सर्दार, बराबरी वालोंसे बिहतर, ख़ैरख़्वाहोंका पेश्वा बहुत मिहर्बानियोंके लायक़, साफ़दिल दोस्त, नेकनियत ख़ैरख़्वाह, बड़े राजाओं का बुज़ुर्ग, (राणा राजसिंह) शाही मिहर्बानियोंसे ख़ुशख़बरी हासिल करके जाने; जिन आदमियोंको कि हमारी फ़ौजके बहादुर हरावल अफ्सरने उस हिन्दुस्तानके राजाओंके बुज़ुर्गके पास भेजा था, उन्होंने इन्तिज़ारके वक्त हुज़ूरमें पहुंचकर ख़ैरख़्वा-ही और साफ़दिलीकी बातें, जो नेकइरादा लोगोंका एतिबार बढ़ानेवाली हैं, तफ्सीलवार अर्ज़ कीं; जिससे उस वफ़ादारपर हज़ारों शाही मिहर्बानियें लाज़िम आईं. यह ज़ाहिर है, कि ज़बरदस्त बुज़ुर्ग नाम्दार बादशाहोंकी ज़ात ख़ुदाकी नक्ल और उसका साया समझीजाती है, और इस बुज़ुर्ग तबीअत गिरोहकी बलन्द

हिम्मत, जो ख़ुदाई कारख़ानेके थंभे हैं, इस बात पर रुजूअ़ रहती है, कि मुख़्तलिफ़ क़ौम और हर मज़्हबके आदमी अम्न और आरामके साथ बे फ़िक्रीसे अपनी ज़िन्दगी

نشان شاهزادهٔ محمد اورنگ زیب بهادرکه بدستخط خاص ونقش پنجهٔ مبارک
زینت تحریر یافته *

عمدهٔ اخلاص کیشان دولتخواه زبدة الاعیان والاشباه خلاصة الاماثل والاقران نقاوة النظایر والاخوان سلالهٔ فدویت منشان سزاوار الطاف و احسان مخلص باختصاص فدوی درست اخلاص راجهٔ راجهاے عالیمقدار مستوجب احسانات بیشمار (رانا راج سنگه) بشمول توجهات شاهی مستظهر و مستبشر بوده بدانند — کسانی راکه شهامت دستگاه مقدمة الجیش نزد آن سرامد راجهاے هند فرستاده بود آنها از دین انتظار بحضور پرنور رسیده مراتب عقیدت و اخلاص که جبه افروز مراد یکرنگان خیرسگال است یکیك بعرض عالی متعالی رساندند * آن اخلاص کیش مورد هزاران هزار عنایت و لطف خسروانه گردید * ازانجاکه ذوات نعمت آیات سلاطین نامدار و بادشاهان والاقدر عالیمقدار ظل ظلیل آفریدگار و سایهٔ بلند پایهٔ نعمت پروردگار واقع شده -

पूरी करें, और कोई किसीपर ज़ियादती न करसके. जिस किसीने इस बुज़ुर्ग गिरोह में से तअस्सुब और हठ धर्मीके साथ लड़ाई झगड़े और उस ख़ल्क़तकी तक्लीफ़, जो अस्ल में ख़ुदाई दर्गाहकी एक अमानत है, इख़्तियारकी, उसने ख़ुदाई कार्रवाई और उसकी बुन्यादोंके उखाड़ने में कोशिश की, जो इस गिरोहके लिये ख़राब आदत और नाक़िस हालत कही जासक्ती है. अगर ख़ुदाने चाहा तो उसके पीछे कि हक़ अपनी जगह पर ठहरजावे, और मुरादकी सूरत एकदिल ख़ैरख़्वाहों की ख़्वाहिशके मुवाफ़िक़ नज़र आवे, तो हमारे बुज़ुर्ग बाप दादोंके क़ाइदे और ज़ाबिते, जो सब लोगोंको बहुत पसन्द हैं, जारी होकर तमाम दुन्याकी रौनक़ बढ़ावेंगे.

उस नेक आदत वफ़ादारने परगने मांडल वग़ैरह चार जागीरोंकी बाबत, जिनकी तन्ख़्वाह एक करोड़ तीस लाख दाम होती है, अर्ज़ किया, ये जागीरें परगने ईडर समेत उन इक़ारोंके पूरा होने बाद, जो आपसमें क़रार पाये हैं, बख़्शे जानेके लिये मन्ज़ूर की गईं. मुनासिब है, कि हरतरहसे ख़ातिर जमा और मिहर्बानियोंका उम्मेदवार होकर उस बड़े कामके लिये, जिसका हमने इरादह कर लिया है, कमर बांधे; और एक उम्दा फ़ौज किसी नज़्दीक रिश्तेदारके साथ रवाना करदे, कि बुधके रोज़ इस महीनेकी तीसवीं तारीख़ हमारे हरावल लश्करके अफ़्सरके पास आकर शामिल होजावे. बुज़ुर्ग ख़ुदाकी मिहर्बानीसे यक़ीन है, कि बहुत जल्द

همت والانهمت این طبقهٔ ملیا که اساطین بارگاه جبروتند مصروف برآنست که کافهٔ مختلف المشارب و متلوّن المذاهب درمهادِ امن و امان بوده بفراغ بال بگذرانند — واحدے متعرض بحال دیگرے نگردد— و هرکدام ازین گروه آسانی شکوه را تعصب درپیش گرفته بےسبب مجادله و مخاصمه و ایذاے جمهورا نام که درواقع ودایع بدایع درگاه صمدیت اندگردید- درمعنی درتخریب معموراتِ یزدانی و هدم بنیانِ ربانی که ازصفات مردودهٔ واوضاع مطرودهٔ این طایفهٔ والاست کوشیده * انشاء الله تعالے بعد ازانے که حق بمرکز قرارگرفت ونقش مراد بحسب خواهش مخلصانِ یکدل صورت بست- فوائد مراسم آباء کرام و ضوابط اجدادِ عظام انار الله براهینهم که مرغوب طبائع عباد است- رونق افزاے معمورات ربع مسکون خواهد گشت *

آن اخلاص کیش وفادار از مرحمت کردن پرگنهٔ ماندل وغیره چهار محال که تنخواه آن یك کروروسي لکهه دام میرسد التماس نموده— باپرگنهٔ ایدر بعد ایفاے عهود و مواثیق که بمیان آمده بدرجهٔ اجابت مقرون شد * باید که من جمیع الوجوه خاطرجمع داشته وامیدوار عنایات والا گشته کمرهمت بتقدیم امرے که پیش نهادِ خاطر معلے است بسته- فوجی شایسته که بسرکرد گيِ یکی ازاقربا قراریافته منظور نظر اعلے گردیده روانه نماید— که چهارشنبه که سیم ماه حال باشد آمده بلشکرخان مزبور ملحق شود * رجا بفضل فیاض مطلق واثق است

हम कोशिशका दर्या तैरकर मुरादके किनारेपर पहुंचेंगे. यह एक पुराना ज़ाबिता है, कि राणाईकी तलवार उसके बुज़ुर्गोंको हिन्दुस्तानके बादशाहोंकी तरफ़से मिलती है, इस लिये हमने तलवार ख़ास ख़िल्अ़त समेत, जो हमारे पहननेकी चीज़ोंमेंसे है, तुहफ़ेके तौर उस नेक इरादह सर्दारके लिये इनायत फ़र्माई. जैसा कि हमने उसको दूसरी दुन्याके सफ़र करने वाले (महाराणा जगत्सिंह) की जगह समझा है, वह भी हमको हक़दार बादशाह और मुल्कका मालिक जानकर रियासत और राणाईकी तलवार फ़र्मांबर्दारीके साथ कमरपर बांधे, और ख़ास ख़ुराकके ख़रबूज़े, जो इनायत हुए, इसको नेक शकुन ख़याल करे.

रघुनाथके हाथ भेजीहुई अ़र्ज़ी नज़रसे गुज़रकर पसन्द हुई, रघुनाथ को फ़ौजके साथ रुख़्सत करे, इस क़द्र वक़्त नहीं रहा, कि आज कलमें काम टाले जावें, देरका हर्गिज़ मौक़ा नहीं है, सुस्तीमें हर तरहके नुक़्सान होना मश्हूर बात है. हम शौक़के साथ ऐसे इन्तिज़ार में हैं, कि अगर वह जल्द आवे तो भी देर समझी जावे. उम्दा वक़्तपर यह काग़ज़ लिखागया.

औरंगज़ेबका चौथा निशान.

इन्द्रभट्ट सर्कारी नौकर और ब्रजनाथ अपने नौकर के साथ जो अ़र्ज़ी भेजी थी, नज़रसे

که عنقریب بساحل مراد میرسم * چون ضابطهٔ قدیم آن بود که عطاے شمشیر رانائی به نیاکان
او از مراحم گری فرمان روایان ممالک هندوستان است — بنابر آن شمشیر با خلعت خاصه
از ملبوسات خاص بصیغهٔ تهنیت به آن عقیدت سرشت مرحمت فرمودیم — باید که چنانچه
ما اورا بجاے آن سفر گزین اقلیم آخرت (راناجگت سنگه) دانسته ایم - او نیز ما را خلیفهٔ بحق و
سریر آراے مملکت دانسته شمشیر ریاست و رانائی بر کمر اخلاص و اطاعت بربندد — و الوش خاصهٔ
خربزه که مرحمت شده این را شگون یخشی تصوّر نماید *

عرضداشت مرسل یافتهٔ مصحوب رگهناته رسید - از نظر فیض اثر گذشت مستحسن افتاد *
رگهناته را همراه فوج رخصت کند — وقت آن قدر نمانده که با مروز فردا بگذرد — فرصت را
اصلا محل نیست "فی التاخیر آفات" از اقوال مشهوره است *

— شعر —

.... آنچنان منتظرم درره شوق * که اگر زود بیاید دیر است * ....
در ساعت مسعود و هنگام محمود زینت نگارش یافت *

———***———

م نشان عالیشان اورنگ زیب بهادر

عمدة الاشباه والاقران زبدة الامثال و الاعیان خلاصهٔ دولتخواهان تمام اخلاص اسوهٔ

गुज़री और तमाम बातें जो कि उसके साथ कहलाई थीं, अर्ज़ मुबारकमें पहुंचीं, और मिहर्बानियोंकी उम्मेदका हाल ज़ाहिर हुआ.

अगर खुदाने चाहा, तो उन कारगुज़ारियोंके पीछे, जिनके लिये वह उम्दह सर्दार मुक़र्रर हुआ है, जैसा कि इक़ार किया, अपने बेटेको अच्छी जमइयतके साथ बुज़ुर्ग दर्गाहमें भेजे, और दोस्तोंकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ काम हो, तो जैसा कि उसने अर्ज़ किया, राणा सांगासे भी ज़ियादह हमारी तरफ़से इनायात होकर कोई दरजा हिमायत और रिआयतका उस ख़ैरख़्वाहके वास्ते न छोड़ा जायगा; और निशान जो खास खतसे लिखागया और पंजे मुबारकसे रौनक़-दार होकर क़ौलके तौरपर भेजागया है, खुदाकी मिहर्बानीसे इसमें ज़रा भी फ़र्क़ न पड़ेगा. बे फ़िक्रीके साथ बन्दगीके रास्तेपर साबित क़दम रहकर अपने बेटे को अच्छी जमइयतके समेत हुज़ूरमें भेजे, कि नर्मदासे लश्कर उतरनेके बाद ख़िद्मतमें हाज़िर हो, और आप उस ख़िद्मतपर, कि जिसका इक़ार किया, तय्यार हो. पर्वरिशके तरीक़ेसे एक जड़ाऊ तुर्रा उस उम्दा सर्दारके लिये इनायत कियागया. हमारी ख़ास इनायतको अपनी बाबत रोज़ बरोज़ ज़ियादह समझे.

معتقدان وافرالاختصاص رانا راج سنگه — بعنایات و توجهات خاص سرفراز بوده بدانند — مرضداشتے که مصحوب اندر بهت ملازم سرکار دولتمدار و برجناتهه نوکر خود ارسال داشته بود از نظر مقدس گذشت — وجمیع ملتمسات او که حواله بتقریر آنها کرده بود بعرض مبارک رسید — و آرزوے مکرمت و مرحمت مایحتاج مقرون اجابت گردید * انشاء الله تعالی بعد ازینکه آنعمدة الاعیان مصدر خدمتے که مامور گردیده و چنانچه تعهد نموده پسر خود را باجمعیت خوب بدرگاه والا جاه بفرستد وجهان بکام دولتخواهان گردد — چنانچه التماس نموده زیاده بر آنچه که رانا سانگا داشت از پیشگاه سلطنت مرحمت شده دقیقهٔ از دقایق حمایت و رعایت نسبت به آنعمدهٔ دولتخواهان فروگذاشت نخواهد شد — و آن نشان عالیشان که بخط خاص زینت تحریر یافته و به پنجهٔ مبارک مزیّن گردیده و بمنزلهٔ قولست انشاء الله تعالی العزیز هرگز خلل بزیر نخواهد بود * وثوق تمام حاصل نموده برجادهٔ اخلاص و بندگی ثابت و مستقیم بوده پسر خود را باجمعیت خوب بحضور اقدس بفریسد — که بعد عبور رایات عالیات از نربده آمده بملازمت اشرف مشرّف شود — و خود بخدمتے که تعهد نمودهٔ متوجه شود * از روے بنده نوازی طرّهٔ مرصّع بآن زبدة الاشباه عنایت نموده شد — عنایات خاص ما را نسبت بخود روز افزون داند *

इन ऊपर लिखे हुए काग़ज़ोंसे साफ़ ज़ाहिर होता है, कि औरंगज़ेब दिलसे हिन्दुस्तानकी सल्तनतका मालिक बनना चाहता था, और उसको यह भी ख़याल होगा, कि उदयपुरका राणा हमारा रास्ता न रोके, इस लिये यह निशान लिख कर तरफ़दार बनाना चाहा.

महाराणा राजसिंह तो शाहजहांसे बिगड़ ही रहे थे, इस शाहज़ादेकी हिमायतसे उन्होंने मांडलगढ़ वग़ैरह परगनोंपर क़ब्ज़ा करके मालपुरेकी लूटसे टीकादौड़की रस्म पूरी की. जब शाहज़ादे औरंगज़ेबने शाहज़ादे मुराद समेत नर्मदा उतर कर महाराजा जशवन्तसिंह पर भारी लड़ाई के बाद फ़तह पाई, तो उसके बाद महाराणा राजसिंहके नाम यह काग़ज़ लिखा.

नर्मदाकी फ़त्हका निशान.

नर्मदासे लश्कर पार उतरने बाद उज्जैनसे छःकोसके फ़ासिले पर पहुंचनेके वक्त ख़ानहज़ादपर्वरी और क़द्रदानीसे राजा जशवन्तसिंहको हमने कहला भेजा, कि हम आला हज़रत (शाहजहां) की मुलाज़मतके इरादे पर अक्बराबाद (आगरा) की तरफ़ जाते हैं, उसको चाहिये कि सूबे मालवासे, जो उसके नाम मुक़र्रर हुआ, ख़बरदार होकर लड़ाई और झगड़ेका ख़याल, जिसकी वह ताक़त नहीं रखता, हर्गिज़ न करे; लेकिन् उसने कम लियाक़तीसे ख़राब इरादे पर हैसियतसे ज़ियादह क़दम बढ़ाया, और फ़ौज तय्यार करके लड़ाईको साम्हने आया; इस लिये हम भी अपने प्यारे नाम्वर भाईके इत्तिफ़ाक़से जो गुजरातसे हमारी मुलाक़ातको आये थे, राजाके गुरूर की सज़ा और अदब देनेके लिये फ़तह मन्द लश्करको दुरुस्त करके उसका फ़साद दूर करनेके लिये तय्यार हुए.

ه-عمدة الاشباه والاعیان زبدة الامثال و الاقران خلاصهٔ دولتخواهان وافر اخلاص اسوهٔ متخصصان تمام اختصاص رانا راج سنگه بعنایت بیغایت سرفراز و ممتاز بوده بد اند—که چون بعد از عبور رایات عالیات نصرت آیات از دریاے نربده و رسیدن به شش کروهي اجین هرچند از روے خانه زاد پروری و قدردانی براجه جسونت سنگه گفته فرستادیم که مابارادهٔ ملازمت اعلی حضرت متوجه دارالخلافته اکبرآبادیم — باید که از صوبهٔ مالوه که بعهدهٔ او مقرر گردیده خبردار بوده اندیشهٔ مجادله و محاربه که نه یاراے امثال اوست نکند-اصلا توفیق قبول آن نیافته بارادهٔ فاسد قدم از اندازهٔ خود فراترگذاشته افواج آراسته بقصد جنگ پیش آمد - بنابران ما نیز باتفاق برادربجان برابر اعز ارشد کامگار نامدار عالیمقدار که از گجرات براے ملاقات ما آمده بودند بجهت تنبیه و تادیب و جزاے غرور او شکر ظفر اثر فتح رهبر را تزوک نموده متوجه دفع شر او شدیم-و بکرم الهی لشکر آنطرف را که زیاده بربست هزار سوار باتوپخانهٔ بسیار بود در عرض دوپهر شکست فاحش دادیم —
چنانچه اکثر سرداران آن لشکر باشش هفت هزار سوار در میدان جنگ کشته شدند —

खुदाकी बुज़ुर्गीसे उस तरफ़के लश्करको, जो बड़े तोपख़ानेके सिवाय बीस हज़ार सवारसे ज़ियादह था, दो पहरके अर्सेमें साफ़ शिकस्त दी, और उस लश्कर के अक्सर सर्दार छः सात हज़ार सवारों समेत लड़ाईके मैदानमें मारेगये, और राजा मज़्कूरने सख़्त ज़ख़्म खाकर भागनेकी बदनामी इख़्तियार की; जिससे तमाम सामान तोपख़ानह, ख़ज़ानह, हाथी वगैरह बर्बाद हुए. इस बड़ी फ़त्हका शुक्र, जो हमको हासिल हुई, किसी तरह हमसे अदा नहीं हो सक्ता. यक़ीन है, कि वह उम्दा ख़ैरख़्वाह इस नेक ख़बरसे ख़ुशी हासिल करेगा, और अपने बेटेको एक अच्छी जमइयतके साथ इक़ारके मुवाफ़िक़ जल्दी हुज़ूरमें रवाना करेगा, और आप उदयपुरसे कहीं नहीं जायगा. अब मिहर्बानीके तरीक़ेसे जो परगने कि उसके इलाक़े में से निकालकर जागीरदारोंको तनख़्वाहमें देदिये गये थे, उस उम्दा ख़ैरख़्वाहको इनायत कियेगये; उनपर जल्दी क़ब्ज़ा करले.

जिस वक़ उसका बेटा मुनासिब जमइयतके साथ हमारी ख़िदमतमें पहुंचेगा, और ज़माना दोस्तोंके मत्लबके मुवाफ़िक़ हो, तो उन मिहर्बानियोंसे जिनका कि उसकी अर्ज़के मुवाफ़िक़ पहिले इक़ार कियागया है, सर्बलन्दी दीजावेगी.

इस मुआमलेमें पूरी ताकीद जानकर हुक्मके मुवाफ़िक़ अमल रक्खे, और किसी तरह देर और बहाना न करे.

इसके बाद दाराशिकोह पर आगरेके पास समूनगर में शाहज़ादे औरंगज़ेब और मुरादने फ़त्ह पाकर दाराका पीछा किया. विक्रमी १७१५ अपाढ़ शुक्ल १ [हि० १०६८ आख़िर रमज़ान = ई० १६५८ ता० १ जुलाई] को सलीमपुर मक़ामपर महाराणाके कुंवर सुल्तानसिंह अपने चचा अरिसिंह समेत गये, और इस फ़त्हकी मुबारकबाद दी.

و راجهٔ مزکور زخمهاے کاری برداشته عار فرار اختیار نموده تمام سامان و توپخانه و خزانه و فیلخانه را برباد داد * شکر این فتح عظیم و نصرت جسیم که روزی روزگار فرخنده آثار ماگردیده بهیچ طریق اداتوان نمود — یقین که آن عمدهٔ دولتخواهان تمام اخلاص ازین خبر بهجت اثر ابواب شادمانی و مسرّت بر روزگار خویش مفتوح خواهد داشت و پسرخودرا باجمعیت شایسته موافق تعهدے که نموده بزودی روانهٔ حضور پرنور نموده خود ازاودیپور حرکت نخواهد کرد * بالفعل از روے تفضل پرگناتے که از ولایت متعلقهٔ او که درینولا به تنخواهٔ جاگیر داران داده شده بود به آن زبدهٔ مخلصان مرحمت فرمودیم—بزودی متصرف شود — که هرگاه پسراو باجمعیت لایق درین سفرخیراثر بملازمت اقدس برسد—و جهان بکام دولتخواهان گردد—بعنایاتے که قبل ازین حسب الالتماس او وعده شده سرفراز خواهد شد * درین باب تاکید تمام دانسته بموجب حکم والا عمل نماید—اصلا تاخیر و تعلل نکند *

शाहज़ादे औरंगज़ेबने ख़िलअ़त, मोतियोंकी कंठी, सर्पेच, जड़ाऊ छोगा दिया, और महाराणा राजसिंहको देनेके लिये बड़ी क़ीमतका जड़ाऊ सर्पेच भेजा. फिर औरंगज़ेबके साथ यह मथुरा आये; वहां भी कुंवर सुल्तानसिंहको सर्पेच और जड़ाऊ तुर्रा दिया गया, और महाराणाके भाई अरिसिंहको जड़ाऊ धुकधुकी देकर कुंवरको विदा किया. इसके बाद शाहज़ादे मुरादको क़ैद करके औरंगज़ेबने लाहौर तक दाराका पीछा किया.

जब औरंगज़ेब बादशाह बनाहुआ लाहौरकी तरफ़ बढ़रहा था, महाराणाके कुंवर सुल्तानसिंहको मथुरासे रुख़्सत देदी, और अरिसिंह साथ रहे, जिनको राय-रायांकी सरायसे विक्रमी १७१५ भाद्रपद कृष्ण ३ [हि० १०६८ ता० १७ ज़ीक़ाद = ई० १६५८ ता० १६ ऑगस्ट] को ख़िलअ़त, जड़ाऊ जम्धर, मोतियोंकी कंठी, घोड़ा मए सामानके देकर रुख़्सत किया, और महाराणा राजसिंहके नाम फ़र्मान व उम्दा ख़िलअ़त, एक हाथी और हथनी भेजी. फ़र्मानकी नक़्ल फ़ार्सी नोटमें और तर्जमा यहां लिखाजाता है.

महाराणा राजसिंहके नाम औरंगज़ेब बादशाहके फ़र्मानका तर्जमा.

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम.

मामूली अल्क़ाब व आदाबके पीछे मालूम हो- इन दिनोंमें जो अ़र्ज़ी साफ़ ख़ैरख़्वाही और उम्दा ताबेदारीसे हमारी ज़बर्दस्त दर्गाहमें भेजी थी, बुज़ुर्ग नज़र से गुज़र कर हमारी मिहर्बानीके बढ़नेका सबब हुई. उस में बाज़ी जागीरोंके मिलने की उम्मेद कीगई है, जो पहिले दिनों में उस ख़ैरख़्वाहके बाप, राणा जगत्‌सिंह के इलाक़े में थीं, निहायत मिहर्बानी और बहुतसी ख़ुशीके साथ, जो हमको उस उम्दा नेक ख़ैरख़्वाहपर है, उसका पहिला मन्सब जो पांच हज़ारी ज़ात और पांच हज़ार सवार था, छः हज़ारी ज़ात व छः हज़ार सवार और एक हज़ार सवार दो अस्पा सिह अस्पा मुक़र्रर किया गया; और इसके सिवाय पांच लाख

रुपये इन्ऋामके तौरपर इस मिहर्बानी में ज़ियादा कियेगये- परगने बदनौर ऋौर मांडलगढ़, जो एक मुद्दतसे उस उम्दह ख़ैरख़्वाह ताबेदारसे उतार लियेगये थे, उन में से पहिला उम्दा राजा, बलन्द ख़ान्दान, बहादुर ऋादत, मिहर्बानीके लायक़ महाराजा जशवन्तसिंहसे ऋौर दूसरा रूपसिंहसे उतार कर शुरू सियाली (ख़रीफ़ ईत ईल) से ऋौर परगने डूंगरपुर, बांसवाड़ा, बसावर, ग़यासपुर, जो मुद्दत

بسم الله الرحمن الرحیم

هو الغالب *

آنعمدهٔ دولتخواهان تمام اخلاص - بنوید این الطاف نمایان و مراحم بیکران استظهار و استبشار فراوان اندوخته بمراسم شکر گذاری و خدمتگاری قیام نماید - و توجهات والا را شامل حال و طالع آمال خود داند * چون مفتوا نوع ایفض آن زبدة الاعیان مشتمل بر التماس رخصت ارسی پور او از نظر انور گذشت - از روے عنایت اورا مرخص ساختیم و خلعت فاخره باو فیل خاصه و ماده فیل مصحوب اوبه آن خلاصة مخلصان مرحمت فرمودیم *

زبدهٔ نیکخواهان عقیدت کیش خلاصهٔ هواخواهان خیراندیش - نتیجهٔ دودمان وفاخوئی - نقیهٔ خاندان رضاجوئی - سلالهٔ فدویت منشان - سزاوار الطاف و احسان - مطیع الاسلام رانا راج سنگه — بعنایات بے نهایت شاهانه مستظهر بوده بداند — عرضداشتے که درینولا از روے خلوص ارادت و رسوخ عقیدت ببارگاه جهان پناه فرستاده بود از نظر اشرف اعلی گذشت — وباعث مزید مرحمت والا گشت * وآنچه درباب عطاے بعضے محال که درسوالف ایام باقطاع رانا جگت سنگه پدر آنمورد مراحم تعلق داشت معروض واقفان سدهٔ سنیه گردانیده بود پیرایهٔ معلومیت معلی یافت — از راه نهایت عنایت و غایت مرحمتے که نسبت به آنخلاصهٔ صلاح اندیشان عبودیت کیش داریم - منصب اورا که پنجهزاری ذات و پنج هزار سوار بود - شش هزاری ذات و شش هزار سوار - یکهزار سوار دواسبه وسه اسپه مقرر فرمودیم - ودوکرور دام دیگر بطریق انعام ضمیمهٔ

से राणा जगत्सिंहकी हुकूमतसे अलहदा होगये थे, गिर्धर पूंजा और हरिसिंह देव-लिया वगैरहसे इसी फ़स्लसे उतारकर मन्सबकी ज़ियादह तन्ख़्वाह और इन्आममें नीचे लिखे मुवाफ़िक़ हमने इनायत किये. अब मुनासिब है, कि हमारी बुज़ुर्ग मिह-र्बानियों और बलन्द बख़्शिशों को अपने हाल और उम्मेदके मुवाफ़िक़ जानकर इस बड़ी मिहर्बानीका शुक्र अदा करे, और लिखी हुई जागीरोंपर क़ब्ज़ा करके हमेशा ताबेदारी और ख़ैरख़्वाही और ख़िद्मत गुज़ारीके तरीक़ेपर अपने क़दमको मज़्बूत रक्खे, और हमारे पाक हुक्मोंकी तामीलको बलन्द मिहर्बानियोंके ज़ियादा होनेका सबब समझे. लाला कुंवर उस उम्दा ख़ैरख़्वाहका बेटा, और अर्सी उसका भाई हमारी बादशाही दर्गाहमें पहुंचे; जिन्होंने सलाम और हाज़िरीकी बुज़ुर्गी हासिल करके बादशाही मिहर्बानियोंका मौक़ा पाया. उस उम्दा सर्दारकी अर्ज़के मुवाफ़िक़ उसके भाईको बहुतसी बुज़ुर्ग मिहर्बानियोंके साथ इज़्ज़त देकर जल्द वापस जानेकी रुख़्सत बख़्शी जावेगी- तारीख़ १७ ज़ीक़ाद सन् १०६८ हिज्री.

این عاطفت گردانیدیم - و پرگنهٔ بدهنور و پرگنهٔ ماندل گده که از مدتے از نعمدهٔ نیک خواهان فدویت اندیش تغیر یافته بود - نخستین از تغیر عمدهٔ راجهاے والاتبار زبدهٔ متهوران شهامت شعار سزاوار عنایات بے پایان مهاراجه جسونت سنگه - و دومین از انتقال روپسنگه از سر آغاز فصل خریف ایت ئیل - و پرگنهٔ دونگرپور و بانسواله و بساور و غیاث پور را که از دیر یاز از تصرف رانا جگت سنگه برآمده بود - از تغیر گردهر پونجا و هري سنگه دیولیه وغیره - از ابتداء فصل مزبور در طلب اضافهٔ منصب و انعام بموجب مفصلهٔ ضمن باو مرحمت کردیم * می باید که الطاف واعطاف اشرف ارفع را شامل حال و کافل آمال خود دانسته شکر این عطیهٔ عظمے و موهبت کبری بجا آورده و محال مزبور را متصرف گردیده - همواره برمسلك اطاعت و فرمان برداری و منهج عبودیت و خدمتگذاری را سخ دم و ثابت قدم باشد - امتثال قدسی احکام را موجب زیادتی عواطف و عوارف معلے داند * دیگر لاله کنور پسر وارسي برادر آن زبدهٔ هوا خواهان عقیدت کیش بجناب سلطنت رسیده دولت بارکورنش اقدس یافته مشمول مراحم شاهانه گردیدند - حسب الالتماس آنعمدة الاعیان برادر اورا عنقریب بگوناگون مرحمت والا سرفراز ساخته دستوري معاودت خواهیم بخشید * بتاریخ هفتدهم شهر ذي قعده سنه ۱۰۶۸ هزار و شصت و هشت هجري تحریر یافت *

برساله نوّاب قدسی القاب - نوباوهٔ بوستان خلافت - گزین ثمر شجرهٔ عظمت - چراغ دودمان ابهت - فروغ خاندان شوکت - قرهٔ باصرهٔ دولت واقبال - غرّهٔ ناصیهٔ حشمت واجلال - گرامي نسب سمي المکان - الممدوح بلسان العبد والحر شاهزادهٔ نامدار کامکار بختیار محمد سلطان بهادر * فقط
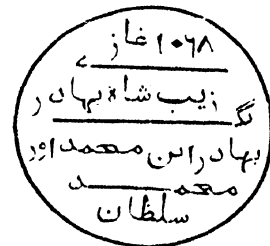
पेशानीकी ख़ास लिखावट (जो शायद बादशाहके हाथसे लिखीगई).

वह उम्दा साफ़ ख़ैरख़्वाह हमारी बहुतसी मिहर्बानियोंसे निहायत मज्बूती और खुशी हासिल करके शुक्रगुज़ारी और ख़िद्मत गारीके तरीक़े पर क़ायम रहे, और हमारी बलन्द मिहर्बानियों को अपने हाल और उम्मेदोंके मुवाफ़िक़ जाने; इस सबबसे कि उस उम्दा सर्दारकी कई अर्ज़ियां बराबर उसके भाई अर्सीको रुख़्सत मिलनेके वास्ते नज़रसे गुज़रीं; मिहर्बानीसे उस को रुख़्सत दीगई, और उम्दा ख़िलअ़त और ख़ासा हाथी व हथनी इसके साथ उस उम्दा ख़ैरख़्वाहके वास्ते इनायत फ़र्माई गई.

पीठकी लिखावट.

नव्वाब बादशाही बाग़के नये दरख़्त, बुज़ुर्गीके दरख़्तके फल, बुज़ुर्ग ख़ान्दानके चराग़, इज़्ज़त और नसीब की आंखकी पुतली, बड़े दरजेके नाम्दार मक्सदवर बख़्त-यार, शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तानके रिसाले में जारी हुआ.

सुल्तान मुहम्मद
बहादुर, इब्न मुहम्मद
औरंगज़ेब शाह बहादुर
ग़ाज़ी १०६८.

मुक़र्रर तफ़्सील
छः हज़ारी
छः हज़ार सवार.

दो अस्पा सिह अस्पा–	दूसरे—
एक हज़ार सवार.	पांच हज़ार सवार.

मुक़र्रर तनख़्वाह मए इनआम—
८८०००००० आठ क़िरोड़, अस्सी
लाख दाम.

مقررہ ضمن
ششهزاری
٦٠٠٠—سوار

دواسپه سه اسپه	براوردی
١٠٠٠—سوار	٥٠٠٠—سوار

مقرره طلب مع انعام
٨٠٠٠٠٠٠٠—کرور
٨٠٠٠٠٠٠—لاکهه
دام
موافق منصب
ششهزاري
٦٠٠٠—سوار

मुवाफ़िक़ मन्सब-
छः हज़ारी,
छः हज़ार सवार.

दो अस्पा सिह अस्पा-
एक हज़ार सवार.

दूसरे-
पांच हज़ार सवार.

मुक़र्रर तन्ख्वाह-
६८००००००
छः किरोड़ अस्सी लाख दाम.

आगेकी मुवाफ़िक़-
पांच हज़ारी,
पांच हज़ार सवार.
मुक़र्रर तन्ख्वाह-
५००००००००
पांच किरोड़ दाम.

इन दिनोंकी तरक़्क़ी-
एक हज़ारी ज़ात,
एक हज़ार सवार
दो अस्पा सिह अस्पा.
मुक़र्रर तन्ख्वाह-
१८००००००
एक किरोड़ अस्सी लाख दाम.

دو اسپه سه اسپه
۱۰۰۰ - سوار

بر آوردی
۵۰۰۰ - سوار

مقرره طلب
۶۰۰۰۰۰۰۰ - کرور
۸۰۰۰۰۰۰ - لاکهه
دام

بدستور سابق
پنجهزاری
۵۰۰۰ - سوار
مقرره طلب
۵۰۰۰۰۰۰۰ - کرور
دام

درینولا اضافه
یکهزاری ذات
۱۰۰۰ - سوار دو اسپه سه اسپه
مقرره طلب
۱۰۰۰۰۰۰۰ - کرور
۸۰۰۰۰۰۰ - لاکهه
دام

بصیغهٔ انعام
دوکرور دام
۲۰۰۰۰۰۰۰ کرور
۲۰۰۰۰۰۰ - لاکهه از پرگنهٔ اودیپور وغیره بدستور سابق
دام

इन्आमके तौर

२०००००००० दो किरोड़ दाम.

४४०००००० चार किरोड़ चालीस लाख दाम,

परगने उदयपुर वग़ैरह से साबिक़ दस्तूर—

४४०००००० चार किरोड़ चालीस लाख दाम.

मन्सबकी तरक़्क़ी और इन्आम—

३७०००००० दाम.

मन्सबकी तरक़्क़ी— १८०००००० दाम.

इन्आम— १९०००००० दाम.

परगने कोटगीर इलाक़े तिलंगानाके एवज़—

२१०००००० दाम.

पहिले परगने चित्तौड़से—

७०००००० दाम.

मुक़र्रर तन्ख़्वाह शुरू फ़स्ल ख़रीफ़ ईत ईलसे देख भालकर इनायत कीगई—

४४०००००० दाम.

परगना बदनौर वग़ैरह ज़िले चित्तौड़ सूबे अजमेरसे—

१८०००००० , दाम.

डूंगरपुर वग़ैरह—

२६००००००

بنابر اضافۀ منصب انعام

۳۰۰۰۰۰۰۰-کرور

۷۰۰۰۰۰۰-لاکهه

دام

بنابر عیوض پرگنه کوت گیر از صوبه تلنگانه

دوکرور ۱۰۰۰۰۰۰-لاکهه

دام

سابق پرگنۀ حویلی چتور

۷۰۰۰۰۰۰-لاکهه دام

بنابر اضافه منصب

۱۰۰۰۰۰۰۰-کرور

۸۰۰۰۰۰۰-لاکهه

دام

بصیغۀ انعام

۱۰۰۰۰۰۰۰-کرور

۹۰۰۰۰۰۰-لاکهه

دام

مقرره تنخواه از ابتداء فصلخریف ئیل مرحمت شد طلب اضافه دیده و دانسته

۴۰۰۰۰۰۰۰-کرور

۴۰۰۰۰۰۰-لاکهه

دام

پرگنه بدنور وغیره از سرکار چتور صوبۀ اجمیر

۱۰۰۰۰۰۰۰-کرور

۸۰۰۰۰۰۰-لاکهه دام

پرگنۀ ڈونگرپور وغیره

۲۰۰۰۰۰۰۰-دوکرور

۶۰۰۰۰۰۰ لاکهه دام

बदनौर महाराजा जश्वन्तसिंह से उतार कर– १००००००००, एक किरोड़ दाम.

परगना मांडलगढ़ रूपसिंह राठौड़से उतार कर– ८०००००, अस्सी लाख दाम.

डूंगरपुर वगैरह ज़िले चित्तौड़ सूबे अजमेरसे– २४०००००००, दो किरोड़ चालीस लाख दाम.

परगना बसावर वगैरह ज़िले मन्दसौर सूबा मालवा देवलिया के हरिसिंह से उतारकर– ३००००००, तीस लाख दाम.
इन दिनोंमें १००००००, दामकी कमीसे २०००००० दाम.

डूंगरपुर गिर्धर पूंजासे उतार कर– १६००००००, दाम.

बांसवाड़ा रावल समरसी से उतार कर ८००००० दाम.

परगना बसावर २०००००० दाम– इन दिनों ६००००० दामकी कमी से– १४००००० दाम.

परगना गयासपुर १०००००० दाम– इन दिनोंमें ४००००० दामकी कमी से– ६०००००० दाम.

—⊂⁎⊃—

پرگنۂ بدنور از تغیر مہا راجۂ جسونت سنگه
۱۰۰۰۰۰۰۰-کرور
دام

پرگنۂ منڈل گڑہ از انتقال روپسنگه راتہور
۸۰۰۰۰۰ لاکهه
دام

پرگنۂ ڈونگرپور وغیرہ از سرکار چتور صوبۂ اجمیر
۲۰۰۰۰۰۰۰-دوکرور
۴۰۰۰۰۰۰-لاکهه
دام

پرگنۂ بساور وغیرہ از سرکار مندسور صوبۂ مالوہ از تغیر هریسنگه دیولیه
۳۰۰۰۰۰۰-لاکهه
دام
۱۰۰۰۰۰۰-لاکهه تخفیف درینولا مرحمت شد
دام
۲۰۰۰۰۰۰-لاکهه
دام

ڈونگرپور از تغیر گردهر پونجا
۱۰۰۰۰۰۰۰-کرور
۶۰۰۰۰۰۰-لاکهه
دام

بانسواله از تغیر راول سمرسي
۸۰۰۰۰۰-لاکهه
دام
فقط

پرگنۂ بساور
۲۰۰۰۰۰۰-لاکهه
۶۰۰۰۰۰-لاکهه
تخفیف درینولا
۱۴۰۰۰۰۰-لاکهه
دام

پرگنۂ غیاث پور
۱۰۰۰۰۰۰-لاکهه
۴۰۰۰۰۰-لاکهه
تخفیف درینولا
۶۰۰۰۰۰-لاکهه
دام

—⁎⁎⁎—

औरंगज़ेबने पंजाबसे बंगालेमें पहुंच कर शाहज़ादे शुजाअ़को मुक़ाबले में शिकस्त दी. इस लड़ाईमें महाराणा राजसिंहके छोटे कुंवर सर्दारसिंह भी मौजूद थे, जो पेश्तर औरंगज़ेबके पास पहुंच गये थे; इनको बादशाहने मोतियोंकी एक कंठी, जड़ाऊ सर्पेच और छोगा दिया.

औरंगज़ेब इलाहाबाद (प्रयाग) की तरफ़से लौटा, और शाहज़ादह दाराशिकोह पंजाबसे सिन्ध व कच्छकी तरफ़ होता हुआ गुजरात पहुंचा; वहांसे औरंगज़ेबका मुक़ाबला करनेको विक्रमी १७१५ फाल्गुण शुक्ल २ [हि० १०६९ ता० १ जमादियुल्आख़र = ई० १६५९ ता० २३ फ़ेब्रुअरी] को रवानह होकर सिरोहीमें आया, और वहांसे एक निशान महाराणा राजसिंहके नाम लिखा, जिसका तर्जुमा यह है- (अस्ल फ़ार्सी नोटमें देखो)

शाहज़ादे दाराशिकोहके निशानका तर्जुमा—

मुहरकी नक्ल
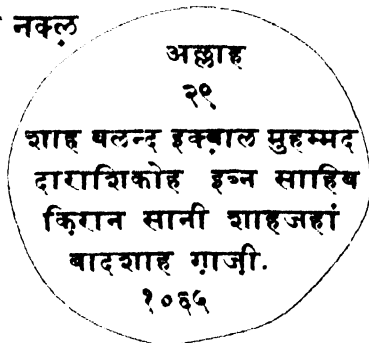
तुग़्राकी नक्ल

मुहम्मद दाराशिकोह इब्न शाहजहां बाद शाह.

मामूली अल्क़ाबके बाद मालूम हो, हम लश्कर समेत सिरोही आगये हैं, और

هو الغالب

نقل طغرا

نقل مہر

عمدهٔ راجهاے بلند مکان - قدوهٔ رایان عالیشان - امارت و ایالت پناه شوکت و حشمت دستگاه - سزاوار توجهات گوناگون شایستهٔ الطاف روز افزون - رانا راج سنگه - بوفور عنایات

जल्द् अजमेर पहुंचेंगे; हमने अपनी शर्म सब राजपूतों पर छोड़ी है, और अस्लमें हम सब राजपूतोंके मिहमान होकर आये हैं; महाराजा जश्वन्तसिंह भी इस बातपर तय्यार होगया है कि हाज़िरी दे, और वह (महाराणा) हर क़िस्मकी मिहर्बानियोंके लायक़ तमाम राजपूतोंका सर्दार है.

इन दिनोंमें अर्ज़ हुआ कि उस राजाओंके सर्दारका बेटा उस (औरंगज़ेब) के पाससे चला आया है, इस सूरतमें उस उम्दा राजासे हमको यह उम्मेद है, कि तमाम राजपूतोंको साथ लेकर हमारे पास आजावे, कि आपसमें एका करके आला हज्रतको छुड़ावें. यह नेकनामी उस उम्दह राजाके खान्दानमें वर्षों और युगों तक यादगार रहेगी, अगर आनेमें मुश्किल हो, तो अपने किसी रिश्तेदारको दो हज़ार अच्छे सवारों समेत हमारी खिद्मतमें भेजदे, कि मेड़तेमें जल्द पहुंच जावें. हमारी मिहर्बानी अपने हालपर बहुत ज़ियादा समझे.

ता० २० जमादियुल्अव्वल सन् ३२ जुलूस हि० १०६८.

—∞✱✱✱✱∞—

شاهی مسرور و مباهی بوده بدانند-که ما بدولت واقبال بالشکر فیروزي اثر بسروهی رسیدیم-
ودرین نزدیکی باجمیر میرسم-شرم رابر جمیع رجپوتیه انداختیم-ودرمعني مهمان همه رجپوتان
شده آمدهایم-و زبدۀ راجهاے زمان مهاراجه جسونت سنگه نیز مستعد و طیارشده که آمده
حصول سعادت ملازمت نماید-و آن سزاوار عنایات گوناگون سردار همه رجپوتان اند-و
درینولا بعرض رسیده که پسرآن زبدۀ راجها نیز از آنجا برخاسته آمده-درینصورت توقع ازان
عمدۀ راجها این داریم-که خود تمام رجپوته رابا خود گرفته آمده دریافت دولت ملازمت
والانمایند-که باتفاق یکدیگر رفته حضرت اعلی راخلاص سازیم-که این نیکنامي تا سالها و
قرنها درقبیلۀ آن شایستۀ توجهات روز افزون یادگار خواهدماند * واگربدانند که آمدن زبدۀ
رایان بلند مکان نمیشود-یکے از خویشان خود رابا جمعیت دوهزار سوارکار آمدني بخدمت
والا بفرستند-که زود آمده درمیرته بملازمت والا برسد * عنایات شاهانه را نسبت بحال خود
بمرتبۀ اعلي تصور نمایند * تحریر في التاریخ ۲۰ شهر جمادي الاولے سنه ۳۲ جلوس فقط *

महाराणा राजसिंह तो दोनों तरफ़का तमाशा देखना चाहते थे, जो उनको मुनासिब था, क्योंकि वे फ़ायदह अपनी ताक़त घटाना ठीक न था. जो बादशाह बनता उसीसे दबना पड़ता; परन्तु महाराजा जश्वन्तसिंहको ज़ुरूर था, कि दाराशिकोहका साथ देते; क्योंकि शाहजहां जश्वन्तसिंहको अपना तरफ़दार जानता था, और दाराशिकोहका भी उसपर पूरा इत्मीनान था. इसके सिवाय महाराजा जश्वन्तसिंहके लिखने हीसे दाराशिकोह गुजरातसे आगे बढ़ा था. परन्तु महाराजा जश्वन्तसिंह महाराजा जयसिंहके बहकानेमें आकर अपनी जगहसे न हिले, औरंगज़ेब दाराके मुक़ाबलेको अजमेरकी तरफ़ आरहा था, फ़तहपुरके मक़ामपर महाराणा राजसिंहकी तरफ़से दो तलवार जड़ाऊ सामान समेत और जड़ाऊ बर्छा मीनाकारीके कामका पेश हुआ; और महाराणाके कुंवर सर्दारसिंह, जो शुजाअ़की ही लड़ाईके वक़से औरंगज़ेबके साथ थे, उनको ख़िलअ़त, मोतियोंकी सुमर्णी, जड़ाऊ छोगा और हाथी, ज़र्दोज़ीकी झूल सहित देकर उदयपुरकी रुख़सत दी.

महाराणा राजसिंहको गद्दीनशीन होते ही दिल्लीके बादशाहके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करना मन्ज़ूर था, और बादशाह शाहजहांसे पहिले ही कुछ बिगाड़ हो चुका था, परन्तु इस क़ुसूरका एवज़ आगरेके क़िलेमें बादशाहके साथ ही क़ैद होगया; और यह आलमगीरके शुरूसे ही तरफ़दार थे, लेकिन् हमेशहसे यह क़ाइदह चला आता है, कि बलन्द हिम्मत आदमी किसीके क़ाबूमें नहीं रहना चाहता, और ज़बरदस्त हाकिम ताक़त्वर आदमीका हमेशह बल घटाना चाहता है.

मांडलगढ़ व बदनौरके परगनों पर महाराणा राजसिंहने विक्रमी १७१५ ज्येष्ठ, [हि० १०६८ रमज़ान = ई० १६५८ जून] में ही क़ब्ज़ा करलिया था. दारासे लड़ाई जीतने व शाहजहां को क़ैद करनेके बाद आलमगीरने इन परगनोंके सिवाय डूंगरपुर, बांसवाला, गयासपुर, बसावर वग़ैरह परगनोंका भी फ़र्मान बहुतसे इन्आम समेत महाराणा राजसिंहके खुश करनेके लिये इसी विक्रमीके भाद्रपद [हि० ज़िल्हिज = ई० सेप्टेम्बर] में लिखभेजा, परन्तु डूंगरपुरके रावल गिर्धरदास, बांसवालाके रावल समरसी और देवलियाके रावत हरिसिंहने उस फ़र्मानके मुताबिक़ ताबेदारी कुबूल नहीं की; इस लिये महाराणाने विक्रमी १७१६ वैशाख कृष्ण ९ [हि० १०६९ ता० २३ रजब = ई० १६५९ ता० १६ एप्रिल] मंगलवारको अपने प्रधान फ़तहचन्द कायस्थ को नीचे लिखे सर्दार और पांच हज़ार फ़ौज समेत बांसवाले भेजा.

सर्दारोंके नाम- कोठारियेका रावत रुक्माङ्गद, घानेरावका राठौड़ दुर्जनसिंह, सलूंबरका रावत रघुनाथसिंह, भींडरका महाराज मुहकमसिंह शक्तावत, बेगमका रावत

राजसिंह चूंडावत, माधवसिंह सीसोदिया, कान्होड़का रावत मानसिंह सारंगदेवोत, देसूरीका सोलंखी दलपत, कोठारियेका कुंवर उदयकर्ण चहुवान, शक्तावत गिर्धर, शक्तावत सूरसिंह, ईडरिया राठौड़ जोधसिंह, झाला महासिंह, रावल रणछोड़दास; और सर्दारोंके सिवाय रणजंग हाथी, जो लड़ाईके कामका था, साथ दिया.

बांसवालेसे रावल समरसीने फ़ौजके साम्हने आकर सुलह की, और एक लाख रुपया फ़ौज ख़र्च व दस ग्राम तथा देश दाण (साइर), एक हाथी और एक हथनी महाराणाके लिये नज़ देकर ताबेदारी क़ुबूल की.

प्रधान फ़त्हचन्द कुछ दिनों तक तो बांसवाले ठहरा, फिर रावल समरसी को साथ लेकर उदयपुर आया. महाराणा राजसिंहने उसे अपना मातहत समझ कर ख़ुशीके साथ देश दाण और दस ग्राम छोड़दिये, और बीस हज़ार रुपये ख़िल्अ़तके इनायत किये. फिर प्रधान फ़त्हचन्द उसी फ़ौजके साथ देवलियाके रावत हरिसिंहसे लड़नेको गया. रावत हरिसिंह दिल्लीकी तरफ़ भाग गया, और फ़त्हचन्द प्रधानने उनके ठिकानेको लूटकर बर्बाद किया. रावत हरिसिंहकी मा अपने पोते प्रतापसिंहको लेकर फ़त्हचन्दके साथ उदयपुर आई, और पांच हज़ार रुपये सहित एक हथनी महाराणा राजसिंहको नज़ की.

राजसमुद्रकी प्रशस्तिके आठवें सर्गके २३ वें श्लोकमें बीस हज़ार रुपया नज़ करना लिखा है, जो रणछोड़भट्टने ग़लतीसे लिखदिया होगा, क्योंकि फ़त्हचन्द प्रधान ने अपनी बनवाई हुई ग्राम बेड़वासकी बावड़ीकी प्रशस्तिमें, जो उसी वक्तकी है, पांच हज़ार रुपये लिखे हैं, और राजसमुद्रकी प्रशस्ति इस मुआमलेके अठारह वर्ष पीछे तय्यार हुई, इस सबबसे फ़त्हचन्दकी बावड़ीकी प्रशस्तिका लेख सच और माननेके लायक़ मालूम होता है- (देखो पृ० ३८१).

इसके बाद डूंगरपुरके रावल गिर्धरने आपसे ही ताबेदारी मन्जूर करली, और महाराणाने भी उसको इन्आ़म देकर तसल्लीके साथ मातहत बना लिया.

इसी विक्रमीके श्रावण [हि० ज़ीक़ाद = ई० जुलाई] में महाराणा पहाड़ी दौरा करनेके ख़यालसे पहिले बहुतसी फ़ौज लेकर बांसवालेकी तरफ़ गये. रावल समरसीने दिलसे ख़ातिर तवाज़ो की, जैसा कि मातह्तोंको लाज़िम है.

रावत हरिसिंह, प्रधान फ़त्हचन्दके ख़ौफ़से भागकर बादशाह आलमगीरके पास गया, परन्तु वह पूरा मत्लबी था, कब ऐसे वक्तपर, जब कि वह लड़ाइयोंमें फंसा हुआ था, महाराणा राजसिंहको रन्जीदा करता. वहां सुनवाई न होनेके कारण हरिसिंह लाचार देवलियाको आया, और महाराणा राजसिंह बांस-वालेरवाना हुए. इनके देवलियापर चढ़ाई करनेकी ख़बर सुनकर रावत हरिसिंह

बहुत घबराया, और सादड़ी राज सुल्तानसिंह व बेदले राव सबलसिंह, सलूंबरके रावत रघुनाथसिंह, भींडर महाराज मुहकमसिंह, चारों सर्दारोंकी मारिफ़त बात चीत करके रावत हरिसिंह महाराणाके पास हाज़िर हुआ, और ग़यासपुर बसावर वग़ैरह परगनोंका दावा छोड़कर ताबेदारी इख़्तियार की. रावत हरिसिंह फ़तहचन्द प्रधानके साथ ही हाज़िर होजाता, क्योंकि महाराणा राजसिंह व आलमगीरके बर्तावसे तो वाक़िफ़ ही था, और यह भी निश्चय होगा कि आलमगीर ऐसे वक़्में महाराणाको नाराज़ नहीं करेगा, लेकिन् इसको अपनी जानका ख़ौफ़ होगा- जैसे कि इसके बाप रावत जश्वन्तसिंहको महाराणा जगत्सिंहने विश्वास देकर बुलाया, और चम्पाबाग़में घेरकर मरवाडाला. कहावत मश्हूर है- कि "दूधका जला छाछको भी फूंक फूंक कर पीता है". राजा व बादशाहों को अपनी ज़बानका विश्वास खोदेनेसे बड़े बड़े नुक्सान उठाने पड़ते हैं.

महाराणा राजसिंह उदयपुर आये, और आलमगीरको राज़ी रखनेके लिये एक हाथी और हथनी चांदीके सामान समेत तथा उम्दा जवाहिरात देकर उदयकर्ण चहुवान को दिल्लीकी तरफ़ रवाना किया. विक्रमी १७१६ आश्विन कृष्ण ८ [हि० १०६९ ता० २२ ज़िलहिज = ई० १६५९ ता० ९ सेप्टेम्बर] को यह सारा सामान दिल्लीमें बादशाहके नज़्र हुआ. इसके बाद इसी विक्रमीके पौष कृष्ण ८ [हि० १०७० ता० २२ रबीउल्अव्वल = ई० १६५९ ता० ६ डिसेम्बर] के दिन बादशाहने उदयकर्ण चहुवानको एक घोड़ा और महाराणा राजसिंहके लिये जाड़ेके मौसमका ख़िलअ़त देकर रवाना किया; और इसी दिन कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहके बेटे राजा मानसिंहको जड़ाऊ जम्धर और मोतियोंकी कंठी देकर घर जानेकी रुख़्सत दी.

महाराणा राजसिंह बाण विद्या (निशानाबाज़ी) में भी पूरे थे, जिन्होंने इसी संवत् में सन्तूके मगरेमें एक सांभर पर तीर मारा, और वह एक ही तीरमें मरगया, जिसकी यादगारके लिये उस जगह पर एक स्तम्भ बनायागया, और उस पर प्रशस्ति खुदवाई गई; जो अब तक मौजूद है- (शेष संग्रह नम्बर २).

इन महाराणाके वक़् में ख़वासण सुन्दरने विक्रमी १७१७ [हि० १०७० = ई० १६६०] में उदयपुरसे २॥ मील ईशान कोणको ग्राम पारड़ाके पास सुन्दर बाव नामकी बावड़ी बनवाई, और उसकी प्रतिष्ठा में महाराणाने व्यास गोविन्दराम, व्यास बल्भद्रको भवाणा ग्राम में ७५ बीघा ज़मीन दी. इस ज़मीन पर गोविन्दरामकी माने बावड़ी कराई, और उसीने लालीकी सराय बनवाई- (शेष संग्रह नम्बर ३).

विक्रमी १७१७ [हि० १०७० = ई० १६६०] में जिस तरह महाराणा राजसिंह और बादशाह आलमगीरके बिगाड़ हुआ, वह लिखाजाता है--

कृष्णगढ़ व रूपनगरके राजा रूपसिंहकी बेटी चारुमती बहुत ख़ूबसूरत थी, इसलिये बादशाह आलमगीरने उसकी तारीफ़ सुनकर राजा रूपसिंहके बेटे मानसिंहको हुक्म दिया, कि तुम्हारी बहिनसे हम शादी करेंगे. मानसिंहने इस बातको मन्जूर किया, क्यों कि जहांगीर बादशाहने यह रीति निकाली थी, कि बादशाही हुक्मके बग़ैर राजा या रईस कोई भी आपसमें विवाह न करे; इससे ज़ाहिरा मत्लब यह होगा, कि आपसकी रिश्तेदारीसे एका करके सल्तनतमें ख़लल न डालें, परन्तु अन्दरूनी मन्शा यही होगा, कि स्वरूपवती लड़कियें बादशाही हरमख़ानेमें दाख़िल की जावें.

फ़ार्सी तवारीख़ोंमें यही बात इस तरह लिखी है, कि फ़लाने राजाने अर्ज़ की, कि मेरी बेटी ख़ूबसूरत है, सो कुबूल होकर बादशाही हरमख़ानेमें दाख़िल हो; लेकिन् यह बात माननेमें नहीं आती, क्योंकि उस समय भी राजपूत लोग अपनी बेटियां मुसल्मान बादशाहोंको देनेमें अपनी कम इज़्ज़ती समझते थे; जैसे कि जयपुरके राजा भारमल्ल और भगवान्दासकी बेटियां अक्बर और जहांगीरको ब्याहनेके सबब मानसिंह और महाराणा प्रतापसिंहमें विक्रमी १६३० प्रथम आषाढ़ [हि० ९८१ सफ़र = ई० १५७३ जून] को उदयसागर तालाबकी पालपर इसी तानेके सबब खाना खानेसे इन्कार और बड़ी ज़िद हुई, जिसका हाल महाराणा प्रतापसिंहके ज़िक्रमें पूरे तौरपर लिखागया है.

दूसरे, रीवांके बघेलोंने बादशाहको प्रसन्न करके बचन लेलिया, कि हम बादशाहोंको बेटियां न दें; और इसी तरह बूंदीके राजाओंने मेवाड़से अलग होते समय बादशाह अक्बरसे इक़ार करलिया था, कि हम बादशाहोंको बेटी न देंगे; अगर बेटी देनेमें बे इज़्ज़ती न जानते, तो ऐसे इक़ार न करते.

तीसरे, जोधपुरके महाराजा अजीतसिंह और जयपुरके राजा सवाई जयसिंहको विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] में महाराणा अमरसिंहने अपनी बहिन और बेटी ब्याही, तो उन दोनों राजाओंने यह इक़ार लिखदिया, कि अब हम तुर्कोंको हर्गिज़ बेटियां न देंगे. इन बातोंके लिखे हुए अस्ल काग़ज़ मेवाड़के कारख़ानेमें मौजूद हैं, और वे इस किताबमें भी मौक़ेपर दर्ज कियेजावेंगे.

इन्हीं बातोंसे हरएक शख़्स ख़याल कर सक्ता है, कि मुसल्मान बादशाहोंको राजा लोग अपनी बेटियां ख़ुशीसे नहीं देते थे. अक्बर बादशाहने राजनीतिसे यह रस्म जारी करदी, इसी कारण बादशाहोंके मांगने पर लाचारीसे राजा लोग बेटियां

देते होंगे; अगर वे लोग खुशीसे बादशाहोंको अपनी लड़कियां ब्याह देनेकी आर्ज़ू करते, तो दूसरे मुसल्मान सर्दारोंके साथ और और राजपूत भी इसी तरह बरतते, और एक आम रिवाज होजाता; परन्तु सिवाय बादशाहोंके आम मुसल्मानोंके साथ यह रिवाज बिल्कुल नहीं पायागया, सिवाय इसके कि गुजरातके सूबेदारोंने बाज़ ज़मींदारोंसे हाकिमाना तौरपर बेटियां लीं.

मानसिंहने अपने घर आकर ज़िक्र किया, कि बाई चारुमतीकी सगाई बादशाह आलमगीरसे करनेकी पक्की बात चीत होगई है.

राजपूतानह में तो यह भी मश्हूर है कि आलमगीरने अहदी और नाज़िर लोगोंको रूपसिंहकी बेटीका डोला लेआनेके लिये रूपनगर भेजदिया था. रूपसिंहकी बेटी चारुमती बाईने भी सुना कि मैं मुसल्मान बादशाहके साथ ब्याही जाऊंगी; उनके घरानेमें वल्लभीय संप्रदायका मत नाथद्वारेकी उपासनाके साथ पहिले ही से था. रूपसिंहको इस मत और श्रीनाथजीकी मूर्तिपर ऐसा विश्वास था, कि दारा और औरंगज़ेबकी समूनगरकी लड़ाई में जब वह घायल होकर ज़मीन पर गिरपड़ा, उस आख़िरी वक्तमें एक ब्राह्मणसे जो वहां मौजूद था यह कहा, कि मेरे गलेमें जो हीरोंका जड़ाऊ बेश क़ीमती कंठा है, उसे तू खोलकर लेजा, और श्रीनाथजी की भेट करना; इसके एवज़में गुसांईजी पांच हज़ार रुपया तुझे इन्आम देंगे. वह ब्राह्मण कंठा लेकर मथुरा पहुंचा, जहां उन दिनों श्रीनाथजीका मश्हूर मन्दिर था; वह कंठा खूनमें भरा देखकर गुसांईजीने साफ़ करनेके लिये किसी सुनारको दिया. गुसांई लोग व उनके मानने वाले वैश्नव बहुतसी करामाती बातें उस कंठेके विषयमें कहते हैं, जिनका यहां लिखना फ़ुज़ूल है, परन्तु उनमेंकी एक यह बात यहां लिखी जाती है, कि राजा रूपसिंह श्रीनाथजीका ऐसा सच्चा भक्त था, कि जिसका भेजा हुआ खूनसे भराहुआ कंठा आधी रातके वक्त सुनारके घरसे लाकर श्रीनाथजीने धारण करलिया. इस बातके लिखनेसे हमारा मत्लब यह है, कि अक्सर मत वाले (मज़्हबी) लोग दूसरे लोगोंको अपने मतमें मिलानेके लिये ऐसी बातें बना लिया करते हैं.

राजा रूपसिंहका इन गुसांई लोगोंपर बहुत यक़ीन था. ये गुसांई लोग दूसरे मतवालोंसे बड़ा बचाव रखते हैं, यहां तक कि जिस शहर या आदमीके नाम में कोई फ़ार्सी या अरबी शब्द हो, तो उसका नाम मन्दिरमें कभी नहीं लेते, और उसके एवज़ समझौतीके लिये संस्कृत नाम रखलेते हैं. इसी ज़िदसे राजा रूपसिंहकी बेटी चारुमती बाईने अपनी मा और भाईसे कहा, कि अगर मेरा विवाह मुसल्मान बादशाहसे करोगे, तो अन्न जल छोड़कर या ज़हर खाकर जान खो-

दूंगी. यह सुनकर घर में और भी रंज हुआ; परन्तु आलमगीरसे ज़ियादा ऐसा कौन राजा था, कि जो इस कन्यासे विवाह करे. फिर कुटम्बके सब लोगोंने एकट्ठा होकर यह सलाह की, कि हम लोग तो बादशाहके फ़र्मांबर्दार बने रहें, और यह लड़की खुद अपनी अर्ज़ी महाराणा राजसिंहके पास भेजे, और वे आकर ज़बर्दस्ती विवाह लेजावें, तो इसके प्राण बचें, और हमारी ख़राबी न हो; वर्ना और दूसरी कोई तदबीर नहीं नज़र आती. सबकी सलाहसे चारुमती बाईने एक अर्ज़ी अपने हाथसे लिखकर किसी ब्राह्मणके हाथ महाराणा राजसिंहके पास भेजी, जिसमें यह लिखा था, कि जिस तरह भीष्म राजाकी बेटी रुक्मणीके ब्याहनेको दुष्ट राजा शिशुपाल चढ़आया, और रुक्मणीकी अर्ज़ी जानेपर श्रीकृष्णचन्द्र द्वारिकासे चढ़े, और शिशुपालको हराकर रुक्मणीको लेआये, उसी तरह मुसल्मान बादशाह आलमगीरके पंजेसे मुझको छुड़ाइये, और मेरा धर्म और प्राण रखकर विवाह लेजाइये, यदि आप देर करेंगे तो मैं विष खाकर मरूंगी, और यह गुनाह आपके सिर रहेगा.

इस अर्ज़ीके आते ही महाराणा राजसिंहने बहुतसी फ़ौजके साथ कृष्णगढ़की तरफ़ कूच किया, वहां पहुंचकर राजा मानसिंहको तो नामके लिये एक महलमें क़ैद किया, और उनके लोगोंका आना जाना बन्द करके शादी करनेके बाद सबको छोड़कर वहांसे रवाना हुए, और राणी राठोड़को लेकर उदयपुर चले आये. कृष्णगढ़वाले यह भी कहते हैं, कि मांडलगढ़का क़िला जो बादशाही तरफ़से मिला था, इसी शादीके दहेज़में महाराणाको महाराजा मानसिंहने दिया; परन्तु राजसमुद्रकी प्रशस्तिमें इस विवाहसे दो वर्ष पहिले इस क़िलेको लेना लिखा है.

इस बातकी चर्चा फैली, और लोगोंको यह अन्देशा हुआ, कि आलमगीर नाराज़ होकर महाराणा पर ज़रूर फ़ौज भेजेगा. देवलियाका रावत हरिसिंह तो ऐसा मौक़ा देख ही रहा था, दौड़कर आलमगीरके पास पहुंचा, और इस बातकी ख़बर दी. यह सुनकर बादशाह नाराज़ तो हुआ, लेकिन् ज़ाहिरा इस बातको टाल दिया. क्यों कि ज़ाहिरा इसपर गुस्सा करनेसे ज़ियादह फ़ज़ीहत होती, कि बादशाहकी मगनी कीहुई लड़की राजसिंह विवाह लेगये. परन्तु दिलसे तो नाराज़ हुआ, और इसीसे ग्यासपुर व बसावर देवलियाके रावत हरिसिंहको पीछा देकर महाराणा राजसिंहके नाम फ़र्मान लिख भेजा, जिसका ज़िक्र आगे आता है.

जब बादशाह आलमगीरने ग्यासपुर और बसावर उदयपुरसे अलग करके रावत हरिसिंहको देदिये, और महाराणाने सुना तो बर्दाश्त न हुई, बल्कि देवलिया पर फ़ौज भेजनेका इरादह किया; परन्तु मन्त्रियोंकी सलाह और सब मुलाज़िमोंकी एक माति होनेके सबब बादशाहके नाम एक अर्ज़ी लिखी, जिसकी नक़्ल उसी वक़्की हमारे पास मौजूद है; उसका तर्जमा फ़ार्सी नोट समेत नीचे लिखाजाता है.

अर्ज़ीका तर्जमा.

आदाब व अल्क़ाबके बाद अर्ज़ है- कि सुबह शाम, बल्कि हमेशा आपकी उम्र, दौलत और बादशाहतकी ख़ैरियत मुद्दत तक बरक़रार रहनेकी दुआ ईश्वरसे करता रहता हूं, कि वह हरतरहसे आपका मर्तबा बलन्द करे.

दूसरे अर्ज़ है, कि जो बुज़ुर्गीका फ़र्मान बहुत मिहर्बानीसे मेरे पास आया, उसका ताज़ीमके साथ इस्तिक़्बाल करके तस्लीम और ताज़ीमके साथ दोनों जहानकी बुज़ुर्गी (बड़प्पन) हासिल की. उसमें लिखा था, कि बादशाही हुक्मके बगैर शादीके वास्ते कृष्णगढ़ गया, जो ज़ाती बन्दगीसे दूर दिखलाई दिया; सो क़िब्ले दीन और दुन्याके सलामत, राजपूतोंका रिश्ता सदासे राजपूतोंहीके साथ होता आया है, और इस सूरतमें कोई मनाई भी जानने में नहीं आई; पहिले राणा भी पुंवारोंके घर अजमेरके पास ब्याहे थे, इसी सबबसे मैंने भी हुक्मकी दर्ख़्वास्त नहीं की, और न कोई बादशाही मुल्कमें फ़साद पैदा हुआ, कि अर्ज़ करे.

मैंने आपकी शाहज़ादगीके मुबारक वक़्से ही अपनी साफ़ नीयतीके साथ जहानमें ख़ास इनायतों और दौलतसे तरक़्क़ी पानेकी ग़रज़से बुज़ुर्गी पानेकी उम्मेद रक्खी है.

هوالغالب

اشرف اقدس ارفع اعلے

عرضداشت که بدرگاه جهان پناه ارسال داشته * بندهٔ درگاه خیرخواه بلا اشتباه رانا راج سنگه - مراسم آداب بندگی و لوازم عبودیت و پرستندگی بجا آورده بموقف عرض بوسیلهٔ ایستادهاے پایهٔ سریر سلطنت سلیمانی میرساند - که صبح و شام بلکه علے الدوام در وظایف دعاگوئی دولت و خلافت ابدطراز اشغال داشته بدرگاه کارساز حقیقی استدعا مینماید - که الهی سایهٔ بلندپایه برفرق جمیع خیرخواهان تا ابدالدهر ممدود و مخلدباد - آمین - ثانیاً التماس میدارد - که قبلهٔ جهان و جهانیان سلامت - فرمان عالیشان که از روے عنایات بیغایات بنام بندهٔ درگاه شرف صدور یافته بود - بقدم اطاعت استقبال آن نموده لوازم تعظیمات و تسلیمات بجا آورده سرافراز کونین گردید - مزین بود که بے صدور حکم جهان مطاع آفتاب شعاع که جهت کتخدا شدن بکشن گده رفته بود - از آداب ذاتی بعید نمود * قبلهٔ دین و دنیا سلامت - پیوند راجپوتان براجپوتان شده آمده است - درینصورت هیچ مناهی ندانسته - و سابق رانایان نیز بخانهٔ پنواران متصل دارالخیر اجمیر کتخدا شده بودند - ازین جهت بندهٔ درگاه استدعاے حکم ننموده - هیچگونه درملک بادشاهی فتور واقع نگشته که بعرض برساند *

و بندهٔ درگاه از ایام مبارک شاهزادگی بعقیدهٔ خاص دست بدامن دولت ابد پیوند

और यह भी लिखा था कि हरिसिंह, बेकुसूर था, इस वास्ते उसको बसावरका परगना और गयासपुर हमने इनायत फ़र्माया है. क़िब्ले ज़मीन और ज़मानेके सलामत- अक्बर और जहांगीरके समयसे देवलिया हुक्मके मुवाफ़िक़ मेरे बाप दादेकी हुकूमतमें था; शाहजहांके वक्तमें दूसरी तरह हुआ, वह भी अर्ज़में पहुंचा होगा. और परगनों मज्कूरके इनायत होनेके वक्त भी भाई अर्सीने तीन चार बार अर्ज़ किया कि हुक्मसे कुछ चारा नहीं, पर आख़िरको उसे इनायत फ़र्मावेंगे; फिर हुक्म सादिर हुआ कि हुक्म बादशाहोंका सिकन्दरकी दीवारके मानिन्द मज़्बूत है, हर्गिज़ नहीं बदलेगा, ख़ातिर जमासे क़ब्ज़ा करे. इसी तरह इसी मज़्मूनकी दो तीन बार अर्ज़ी भेजकर फ़र्मान हासिल किया; उसमें लिखा है, कि जिस तरह जाने अमल करे, कि इह्तियातन् आख़िरको सनद हो; काका जयसिंहके साथ वैसे ही बुज़ुर्ग हुक्म जारी हुआ. जहानके इन्तिज़ामकी जड़ ख़ास मज़्बूत हुक्मपर है.

زده - که ازعنایات خاص الخاص درمیان عالمیان باضافهٔ وترقی دولت سرافرازی خواهد یافت - و نیز مزّین بود "که چون هریسنگه بے تقصیر بود - بنابر آن پرگنهٔ بساورو غیاث پور بازبا و مرحمت فرموده‌یم" *
کعبهٔ زمین و زمان سلامت - اولا هریسنگه مذکور از عهد حضرت عرش آشیانی و حضرت جنت مکانی بموجب احکام متعلق خدمت آبا واجداد بندهٔ درگاه بود - چندگاه در عهد حضرت صاحب قران ثانی بنوع دیگر شده - آن نیز بعرض رسیده باشد * ودروقت عنایات پرگنات مذکور برادرارسی سه چهارمرتبه بعرض رسانیده - که ازحکم هیچ چاره نیست - امّاثانی الحال باو مرحمت خواهند فرمود - حکم صادرشد "که حکم بادشاهان چون سد سکندر است - هرگزتبدیل نخواهد شد - بخاطرجمع بگیرید" * همین آئین مشتمل بر همین مضمون دوسه کرت عرضه داشت ارسال داشته فرمان عالیشان حاصل نمود - دران چنین مزّین است که "بهروجهی که بداند عمل نماید" * باز بجهت احتیاط که ثانی الحال دست آویزباشد بمصحوب عموی جے سنگه بعرض رسانیده - آن چنان حکم شرف نفاذیافت - مطابق چندین حکم جهان مطاع عالم مطیع که مدارانضباط عالم خاص برحکم محکم است متصدیان خود راباچندے راجپوتان به آن پرگنات فرستاده - هریسنگه مذکور ازروے ناعاقبت اندیشی و بدطینتی خلاف حکم نموده رعایاے پرگنات مذکور را بدراه ساخته - حیله آموزي درپیش آورد - بعدازچند روز هردو پرگنه را مطلقاً برهم نموده برخاسته رفت - وکسان خود رادرپے گذاشته که اصلاًاین جارا آبادان شدن ندهید * بالضرور بموجب احکام مقدّس جمعیتے را به آن ضلع فرستاده * آن ناعاقبت اندیشان مواضعات رازده زده درکوهستان درآمده میگشتند - فصل خریف رااین قسم خوردند وفصل ربیع را نیز ابتر نموده رعایا را قرارداده هردوفصل را همچنین نمودند - چنانچه یکدانهٔ محصول برگنات مزبور بدست بندهٔ درگاه نیامده - و تصرف جمعیت و پریشانی به واقفان درگاه سلاطین سجدگاه روشن است که درخیلے تصرفات افتاد - والحال ازبے طالعی چنین حکم شرف نفاذ یافته *

बहुतसे बादशाही हुक्मोंके मुवाफ़िक़ अपने मुत्सद्दियोंको कितनेएक राजपूतों समेत उन परगनोंमें भेजा, जिसपर हरिसिंहने हुक्मके बख़िलाफ़ बेसोचे बदज़ातीसे परगनोंकी रअ़य्यतको गुमराह करके हीला किया, थोड़े दिनोंके बाद उन परगनोंको बिल्कुल् ऊजड़ करके आप भी उठगया, और अपने आदमियोंको वहां छोड़ गया कि इस जगहको हर्गिज़ आबाद न होनेदेवें. तब ज़ुरूरतसे बुज़ुर्ग हुक्मोंके मुवाफ़िक़ एक जमइयत उस जगह भेजी; वह बेवकूफ़ रअ़य्यतको उजाड़कर पहाड़ोंमें फिरता था. सियालीको तो इस तरह खोया, और उन्हालीको भी ख़राब करके रअ़य्यतको परेशान किया- दोनों फ़स्लोंको ऐसा खोया कि एक दाम भी परगनों मज़्कूरका मेरे हाथ नहीं आया. जमइयतका ख़र्च और परेशानी आपको रौशन है, कि बहुत ज़ेरबार हुआ, अब बे नसीबीसे ऐसा हुक्म हुआ; उस शख़्सकी अजब नेक बख़्ती है, कि जो हुक्मसे ख़िलाफ़ करे, उसको ऐसा हुक्म हो; और वह शख़्स, जो कि दौलत ख़्वाहीमें कुर्बान हुआ हो, उसको ऐसा हुक्म हो! इस सूरतमें कुछ इलाज नहीं, इन्साफ़ हुज़ूरके हाथ है. बाक़ी हक़ीक़त उदयकर्ण चहुवानके रवाना करनेके पीछे हरिसिंहको परगनोंके इनायत होनेकी ज़ाहिर हुई. इसवास्ते अब पीछेसे अ़र्ज़ करके उम्मेदवार है कि जो कुछ चहुवान मज़्कूर अ़र्ज़ करे, क़बूल फ़र्माया जावे.

यह अ़र्ज़ी लेकर कोठारियेका उदयकर्ण चहुवान आलमगीर बादशाहके पास दिल्ली पहुंचा. वहां जाकर इन परगनोंके मिलने और रावत हरिसिंहको मातहृत करनेकी बहुत कोशिश की, लेकिन् सब बे फ़ायदह गई.

विक्रमी १७१८ पौष शुक्ल १० [हि० १०७२ ता० ८ जमादियुल्अव्वल् = ई० १६६१ ता० ३१ डिसेम्बर] को तसल्लीका फ़र्मान और ख़ास ख़िलअ़त

زہے سعادت شخصے کہ چنین خلاف حکمی نمودہ آنرا چنان حکم شد- وآن کسیے کہ درراہ دولتخواہی فداشدہ است آنرا ہمچنین حکم صادرگشت * درینصورت ہیچ چارہ نیست- انصاف وعدل بدست واقفان حضور پرنوراست * وبعد از روانہ نمودن اودیکرن چوہان ازواقعۂ دربار عالم مدار حقیقت پرگنات کہ بہریسنگہ مرحمت شدہ ظاہر گردیدہ- بنابر آن از عقب عرضہ داشت نمودہ امیدوار است- آنچہ کہ عرض چوہان مذکور نماید- مقرون اجابت گردد * آفتاب اقبال از مشارق اجلال ساطع ولامع باد- آمین *

देकर उदयकर्ण चहुवानको किसी बादशाही इज़्ज़तदार मुलाज़िमके साथ उदयपुर भेजा. उस शाही मुलाज़िमने ज़बानी बातोंसे महाराणाको हिम्मत दिलाई, परन्तु कहावत मश्हूर है, कि- "दामोंका लोभी बातोंसे राज़ी नहीं होता" - दिन दिन नाइत्तिफ़ाक़ी बढ़ती जाती थी.

कृष्णगढ़वाले राजा मानसिंहने भी अपनी कम उम्री, नाताक़ती और महाराणा राजसिंहकी ज़बर्दस्ती जतलाकर अपनी बहिनके विवाह लेजानेका ज़िक्र आलमगीर से किया, और यह भी कहा कि मैं तो हर तरह ताबेदार हूं, मेरी दूसरी बहिन हाज़िर है. तब आलमगीर बादशाहने विक्रमी १७१८ माघ शुक्ल ६ [हि० १०७२ ता० ४ जमादि युस्सानी = ई० १६६२ ता० २६ जैन्यूअरी] को महाराजा मानसिंहकी दूसरी बहिनसे बड़े शाहज़ादे मुअ़ज़्ज़मकी शादी करदी, जिस वक्त कि शाहज़ादेकी उम्र १७ वर्षकी थी.

महाराणा राजसिंहको इमारतका बहुत शौक़ था. इन्होंने महाराणा जगत्‌सिंह के सामने अपने कुंवर पनेमें "सर्व ऋतु विलास" बाग़ और उसमें महल, हौज़, फ़व्वारे तथा बावड़ी, महाराणा कर्णसिंहकी बनवाई हुई कर्णबाव नामकी बावड़ीके पास बनवाई, और उसी ज़मानेमें इन महाराणा (राजसिंह) का पहिला विवाह बूंदीके राव शत्रुशालकी बेटीके साथ हुआ था. उन्हीं दिनोंमें राव शत्रुशालकी दूसरी बेटीके ब्याहनेके लिये जोधपुरके महाराजा जश्वन्तसिंह भी आये थे, और तोरण बांधने पर कुंवर राजसिंहसे तक्रार भी होगई थी, क्योंकि जश्वन्तसिंहने कहा कि हम क़दीमी राजा और जयचन्दकी औलादमें हैं, जिनको कि हिन्दुस्तानके सब राजा बड़ा मानते थे. महाराज कुमार राजसिंहने कहा कि हम 'हिन्दवा सूर्य' और चित्तौड़के राजा हैं, तुम्हारे बाप दादोंने हमारे बाप दादोंकी नोकरी की है; इस लिये पहिले तोरण बांधना हमारा हक़ है.

ऐसी बातोंपर ज़िद बढ़कर दोनों तरफ़से लड़नेको फ़ौजें तय्यार होगईं, तब राव शत्रुशालने महाराजा जश्वन्तसिंह और उनके साथियोंको समझाया, कि उदयपुर के राणा क़दीमसे हिन्दवासूर्य कहाते हैं, और मुसल्मान बादशाहोंके समयमें भी इन्हीं के सबब हमारा धर्म रहा, वर्ना सबको बादशाह मुसल्मान करडालते. इस तरह समझाकर जश्वन्तसिंहको ख़ामोश किया, और कुंवर राजसिंहने पहिले तोरण बांधा. राव शत्रुशालने दोनोंमें मिलाप करवादिया, परन्तु इस बखेड़ेके सबब दोनोंकी ज़िन्दगी तक दिलसे रंजका दाग़ न मिटा.

जश्वन्तसिंहने महाराणा जगत्‌सिंहके समयमें उनका बधनोरका परगना शाहजहां बादशाहसे अपनी जागीरमें लिखवा लिया था, सो इन महाराणा

(राजसिंह) ने मौक़ा देखकर जश्वन्तसिंहसे पीछा छीन लिया; इसी तरह बिगाड़ होता रहा.

विक्रमी १६९८ [हि० १०५१ = ई० १६४१] में महाराणा राजसिंह का दूसरा विवाह जैसलमेर हुआ. विवाहसे वापस आते समय गौमती नदी को देखकर वहीं एक सुन्दर तालाब बनवानेकी मर्ज़ी हुई थी, वह उस वक़ तो न बना और विक्रमी १७१८ मार्गशीर्ष [हि० १०७२ रबीउस्सानी = ई० १६६१ नोवेम्बर] में जब रूपनारायणके दर्शनके लिये महाराणा राजसिंह उधर गये, तब पहिले मन्सूबेके मुवाफ़िक़ फ़र्माया, कि हम यहां एक तालाब बनवाना चाहते हैं. पुरोहित ग़रीबदासने अर्ज़ किया, कि यह तो होसक्ता है, परन्तु इसमें तीन बातोंका बन्दोबस्त होना चाहिये- अव्वल तो रुपयेके खर्चकी तरफ़ ख़याल न रक्खाजाय; दूसरे कामके अन्जाम तक ऐसी ही तवज्जुह रहे; तीसरे मुसल्मान बादशाहोंसे झगड़ा न हो; वर्ना वे इसको पूरा न होने देंगे.

महाराणाने तीनों बातों का इक़ार किया, और विक्रमी १७१८ माघ कृष्ण ७ बुधवार [हि० १०७२ ता० २१ जमादियुल् अव्वल = ई० १६६२ ता० १२ जैन्यूअरी] को राज समुद्र तालाबकी नीवका खातमुहूर्त किया गया. इस तालाबके बनवानेके कई सबब लोग बयान करते हैं- कोई कहता है, कि जब महाराणा जैसल-मेरसे शादी करके वापस आते थे, तो बारिशकी ज़ियादतीसे गौमती नदीका बहाव बढ़गया, इससे दो तीन दिन ठहरना पड़ा, तब महाराणाने विचारा कि इस नदीको रोकना ज़रूर है. किसीका कहना है कि महाराणाने अपने एक पुत्र, एक बारहठ, एक पुरोहित व महाराणीको मारडाला था, इस लिये वह हत्या उता-रनेके वास्ते यह तालाब बनवाया, जिसका ज़िक्र इस तरहपर है--

महाराणाके पास कोई बादशाही मुलाज़िम (१) दिल्लीसे आया, तब इन्होंने शाहाना दर्बार किया, और हुक्म देदिया कि कोई ताज़ीमी सर्दार दर्बारमें पीछेसे न आवे, अगर आवेगा तो हम ताज़ीम न देंगे. बारहठ उदयभाणने कहा कि आजके दिन बादशाही एल्चीके साम्हने ताज़ीम न हो तो फिर इज़्ज़तके लिये और कौनसा दिन होगा. महाराणा दर्बार किये हुए बिराजे थे, कि बारहठ उदयभाण मना करने

(१) विक्रमी १७११ [हि० १०६४ = ई० १६५४] में जो शाहजहां बादशाहकी तरफ़से एल्ची बनकर मुन्शी चन्द्रभाण आया था, सो शायद यही हो.

पर भी आया और मामूलके मुवाफ़िक़ आशीर्वाद दिया, लेकिन् महाराणा नहीं उठे; तब बारहठने नाराज़ होकर मारवाड़ी भाषामें निशाणी छन्द कहा, जिसके आख़िरी मिस्रे ये हैं-

गया राणा जगत्सिंह जगका उजवाळा ॥
रही चिरम्मी बप्पड़ी कीधां मुंह काळा ॥

इन दोनों मिस्रोंका यह अर्थ है- कि जगत्को रौशन करनेवाले महाराणा जगत्सिंह संसारसे उठगये, और उस जगहपर काले मुंहकी चिरमिटी (घूंघची) रहगई है.

महाराणा इस शाइरीको न सुन सके, और गुस्सेमें आकर एक लोहेका गुर्ज़, जो पास रक्खा था, बारहठके सिरपर मारा, जिससे वह वहीं मरगया. कोई इस बात को इस तरह भी कहता है, कि उदयभाणको क़ैद किया, और वह क़ैदमें ही अपने हाथसे फांसी लगाकर मरगया.

इन्हीं महाराणाकी राणीने (१) अपने बेटे सर्दारसिंहको युवराज बनानेके लिये बड़े कुंवर सुल्तानसिंहकी तरफ़से महाराणाको शक दिलाकर उनका चित्त कुंवर की तरफ़से हटाया, और महाराणाने नाराज़ होकर उसी गुर्ज़से कुंवर सुल्तानसिंह का काम तमाम किया. थोड़े दिन पीछे अपने पुरोहितको उसी राणीने एक पत्र लिखा, कि मैंने सुल्तानसिंहको तो इस फ़रेबसे मरवाडाला, अब दर्बारको भी ज़हर देदेना चाहिये, जिससे कि मेरा बेटा राज्यका मालिक बने. पुरोहितने उस काग़ज़ को अपनी कटारीके खीसेमें रखदिया. पुरोहितके पास एक महाजन दयाल नामी नौकरी करता था, उसकी शादी किसी महाजनके यहां ग्राम दिवाली में हुई थी, जो कि उदयपुरसे दो मीलके फ़ासिलेपर है. एक दिन त्यौहारपर पहर रातगये दयाल अपने मालिक पुरोहितसे छुट्टी लेकर ससुराल जानेको था, रात होनेके सबब पुरोहितसे एक शस्त्र मांगा, पुरोहितने अपनी कटारी देदी. वह रातको अपनी ससुराल गया, और वहां एक घरमें ठहरा, वह कटारीका खीसा खोलकर उस काग़ज़को बांचने लगा, बांचतेही वह वहांसे दौड़ा और उदयपुर आया; आधी रातके समय महाराणाको ज़ुरूरी

---

(१) बड़वा भाटोंकी पोथियोंमें महाराणी भटियाणीके गर्भसे सुल्तानसिंह, सर्दारसिंह वग़ैरह कुंवरोंका होना लिखा है, परन्तु इस हालके सुननेसे मालूम होता है, कि सुल्तानसिंह किसी दूसरी महाराणीके पेटसे थे.

कामकी अर्ज़के बहानेसे बाहर बुलवाया, और कागज़ नज़ किया. महाराणाने भीतर जाकर गुर्ज़से उस राणीका भी काम तमाम किया, और पुरोहित (१) को बुलाकर उसी गुर्ज़से मारडाला. कुंवर सर्दारसिंह, जो इन बातोंसे बिल्कुल बे ख़बर थे, कुंवरपदेके महलोंमें ही ज़हर खाकर मरगये, और मरते समय यह दोहा लिखकर अपने सिरके पास रखदिया-

दोहा.

पाणी पिंड तणाह पिंड जातां पाणी रहै॥
चींतारसी घणाह सुपना ज्यूं सर्दार सी ॥ १ ॥

इसका यह अर्थ है, कि- 'इज़्ज़त बदनकी है, परन्तु बदन जाय और इज़्ज़त रहे, तो उसे आदमी स्वाबकी तरह याद करेंगे'.

कुंवर सर्दारसिंहकी पूजा शम्भूनिवासके पास कुंवरपदेके महलकी छत्रीमें अब तक होती है, और लोग अबतक उनकी बहुतसी करामाती बातोंके खयालसे उनको देवताके समान मानते हैं.

महाराणाने इन ऊपर लिखी बातोंके पापसे छुटकारा पानेके उपाय ब्राम्हणों से पूछे, तब ब्राम्हणोंने धर्म रीतिसे तीन तदबीरें बतलाईं- पहिली यह कि सूखे हुए पीपलके पेड़में बैठकर आगमें जलमरना चाहिये- दूसरी, कोई एक बड़ा तालाब बनवाना- तीसरी, लड़ाईमें माराजाना. महाराणाने पिछली दो बातें मन्ज़ूर कीं; और इसी कारण यह राजसमुद्र तालाब बनवाया, और उस दयाल महाजन का बहुत दरजा बढ़ाकर अपना प्रधान बनाया.

बाजे लोगोंका बयान है, कि विक्रमी १७१८ [हि० १०७२ = ई० १६६१] में बड़ा भारी अकाल पड़ा, और चार पांच वर्ष तक वर्षाकी कमी रही, इस कारण महाराणाने गरीबोंकी पर्वरिशके लिहाज़से यह तालाब बनवाना शुरू किया.

ये ऊपर लिखी हुई बातें लोगोंमें मश्हूर हैं, लेकिन् नहीं मालूम कहां तक सच हैं या गलत हैं, अल्बत्ता अकाल पड़ना तो राजसमुद्रकी प्रशस्तिमें भी लिखा है- (शेष संग्रह नम्बर ४).

विक्रमी १७१९ [हि० १०७३ = ई० १६६२] में मेवल ज़िलेके पहाड़ी भीलोंने सिर उठाया, जिन पर महाराणा राजसिंहने अपने प्रधान फ़तहचन्द

---

(१) पाटवी पुरोहित इन दिनोंमें गरीबदास था, परन्तु उसका माराजाना नहीं पाया जाता, शायद यह कोई उसके भाई बन्धुमेंसे होगा.

के साथ उमराव सर्दारोंकी फ़ौजके सिवाय अपनी भी फ़ौज भेजी. इस फ़ौज ने बारापाल, नठारा, पडूना, बीलक, सगतड़ी, सराड़ा, धनकावाड़ा वग़ैरह पालोंको तबाह करके माल अस्बाब, गाय भैंस वग़ैरह सब लूट लिया; भीलों के सिर काट काट कर पेड़ोंमें लटकाये गये, और महुवा तथा आमके सब दरख़्त कटवादिये गये, क्यौं कि यही इनकी बड़ी आमदनीके ज़रीए थे.

उसके बाद गमेती (ग्रामके मुखिया भील) मुसाहिबोंके पैरों पड़े, तब दुबारा बसाये गये, और थोड़े दिनोंके बाद महाराणाने इस मुल्कको अपने उमराव सर्दारोंकी जागीरमें इस मन्शासे बांट दिया, कि लुटेरी ज़ातको हमेशह दबाये रहें.

विक्रमी १७२० [हि० १०७४ = ई० १६६३] में सिरोहीके राव अक्षयराज के कुंवर उदयसिंहने मौक़ा पाकर अपने बापको क़ैद किया, और आप सिरोहीका राज्य करने लगा. यह ख़बर महाराणाके पास पहुंची, तब कई बार उसको नसीहतें लिख भेजीं, परन्तु कुछ असर न हुआ; निदान महाराणाने रामसिंह राणावतको फ़ौज देकर सिरोही भेजा, इसके पहुंचते ही कुंवर उदयसिंह पहाड़ोंमें भागगया. रामसिंहने राव अक्षयराजको पीछा गादीपर बिठाया, तब अक्षयराजने रामसिंहकी मारिफ़त महाराणाका शुक्रिया अदा किया.

विक्रमी १७२१ [हि० १०७५ = ई० १६६४] में बांधूके बघेला राजा अनोपसिंहके कुंवर भावसिंहके साथ महाराणा राजसिंहने अपनी बेटी अजबकुंवर बाईका विवाह किया. बघेले लोग खाने पीनेमें बहुत पर्हेज़ रखते हैं, लेकिन् उदयपुरमें राजपूतानाके रिवाजके मुवाफ़िक़ इतना ख़याल नहीं है, आख़िरकार खानेके वक़्त भावसिंहने अर्ज़ की कि आपके साथ भोजन करनेमें हमारी इज़्ज़त है, बल्कि हम उसको जग्दीशका प्रसाद समझते हैं. इस तरह यह विवाह बड़े स्नेहके साथ हुआ. अजबकुंवर बाईके साथ अट्ठानवे लड़कियां अपने भाई बेटोंकी दूसरे अच्छे राजपूतोंको विवाहीगई. इसी संवत्में शहरके पश्चिमोत्तर कोणमें तालाबकी तीरपर अम्बा माताका मन्दिर बनवाकर प्रतिष्ठा कीगई- (शेष संग्रह नम्बर ५).

विक्रमी १७२१ फाल्गुण कृष्ण १२ [हि० १०७५ ता० २६ रजब = ई० १६६५ ता० १२ फ़ेब्रुअरी] को आगरेमें पेशाब बन्द होजानेकी बीमारीसे बादशाह शाहजहांका देहान्त होना सुना.

महाराणा राजसिंह ने इसी संवत् के माघ शुक्ल १५ [हि० ता० १४

रजब = ई० ता० ३१ जैन्यूअरी] के दिन चन्द्रग्रहण होनेके सबब दो हज़ार मुहर और बहुतसे सामान समेत कामधेनु गऊ का दान किया. विक्रमी १७२१ मार्गशीर्ष कृष्ण १० [हि० १०७५ ता० २४ रबीउस्सानी = ई० १६६४ ता० १५ नोवेम्बर] को इन महाराणाने अपनी माता राठौड़ राजसिंह मेड़तिया की बेटी और महाराणा जगत्सिंहकी राणी जनादे बाईजी राजके नामसे तालाब बनानेका मुहूर्त बड़ी नाम ग्राम में किया, और विक्रमी १७२५ माघ शुक्ल १० [हि० १०७९ ता० ८ रमज़ान = ई० १६६९ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को प्रतिष्ठा करके उसका नाम 'जना सागर' रक्खा- (शेषसंग्रह नम्बर ६).

इस तालाबके बनानेमें २६१००० दो लाख इकसठ हज़ार रुपया ख़र्च पड़ा, और प्रतिष्ठाके समय दो ग्राम गलूंड और देवपुरा पुरोहित ग़रीबदासको दिये. यह तालाब उदयपुरसे वायव्य (उत्तरी पश्चिमी) कोणमें छः मीलके फ़ासिले पर है (१). इस तालाबकी प्रतिष्ठाके वक्त महाराणा राजसिंहकी माताका देहान्त होगया.

इन्हीं दिनोंमें महाराणाके कुंवर जयसिंहने पीछोला तालाबके उत्तर अम्बावगढ़के नीचे उदयपुरके पास रंगसागर नामका एक तालाब बनवाया, और उसकी प्रतिष्ठाके समय भी बहुतसा दान पुण्य किया.

राजसमुद्रकी पालपर मिट्टी विक्रमी १७१८ माघ कृष्ण ७ [हि० १०७२ ता० २१ जमादियुल् अव्वल = ई० १६६२ ता० १२ जैन्यूअरी] में पड़नी शुरू होगई थी, जिसमें हज़ारों आदमी काम करते थे.

विक्रमी १७२२ वैशाख शुक्ल १३ सोमवार [हि० १०७५ ता० ११ शव्वाल = ई० १६६५ ता० ८ मई] के दिन गोमती नदीको बांधनेके लिये दोनों पहाड़ोंके बीच पालकी पक्की बुनयाद डालनेका मुहूर्त हुआ, और विक्रमी १७२८ आश्विन कृष्ण ४ [हि० १०८२ ता० १८ जमादियुल् अव्वल = ई० १६७१ ता० २६ सेप्टेम्बर] को राजसमुद्र तालाबमें नावका मुहूर्त एक गड्ढेमें पानी भरवाकर किया, क्योंकि फिर सिंह राशिपर वृहस्पति आता था, और इसमें भले काम करनेकी ज्योतिषके मतसे मनाई है.

इस राजसमुद्र तालाबमें- सिवली, भीगावदा, भाणा, लुहाणा, बांसोल

---

(१) वि० १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] की अति वृष्टिसे पालकी बहुतसी मिट्टी बहगई थी, जिसका बयान महाराणा सज्जनसिंहके हालमें लिखा जायगा.

और गुड़ली ग्राम आये; और मोरचणा, पसूंध, खेड़ी, छापरखेड़ी, तासोल और मंडावरकी सीम इस तालाबके पेटेमें आई.

इस राजसमुद्रमें गौमती, ताली और केलवाकी नदीका पानी आता है. इस तालाबकी पुख्ता पाल (बन्द) छः हज़ार चार सौ तेरह गज़की है. इसमें पानीके तीन मुख्य निकास हैं, और चौथा अधिक भरजानेके समय गौघाटकी चटानों परसे बहता है.

विक्रमी १७३१ श्रावण शुक्ल ५ [हि० १०८५ ता० ३ जमादियुल् अव्वल् = ई० १६७४ ता० ८ ऑगस्ट] को इस पानीसे भरे हुए तालाबमें एक नाव छोड़ी; और विक्रमी १७३२ माघ शुक्ल ७ [हि० १०८६ ता० ५ ज़िल्काद = ई० १६७६ ता० २३ जैन्यूअरी] को कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी बेटी चारुमती महाराणी राठौड़ने राजनगर ग्रामके पश्चिम तरफ़ सफ़ेद पत्थरकी बावड़ी बनवाई, जिसमें तीस हज़ार रुपये ख़र्च पड़े. महाराणा राजसिंहने माघ शुक्ल ९ [हि० ता० ७ ज़िल्काद = ई० ता० २५ जैन्यूअरी] को राजसमुद्रकी प्रतिष्ठा की, और शास्त्रानुसार लाखों रुपयेका दान ब्राम्हणोंको दिया, और जप होमके बाद राजसमुद्रकी परिक्रमा करनेके लिये राणियों समेत पैदल चले - नौचौकियोंसे पश्चिमकी तरफ़ होकर मोरचणा, पसूंध, तासोल, भाणा और कांकरौली होते हुए १४ कोसके घेरेको पूरा किया.

विक्रमी १७३२ माघ शुक्ल १५ [हि० १०८६ ता० १४ ज़िल्काद = ई० १६७६ ता० १ फ़ेब्रुअरी] के दिन इसकी प्रतिष्ठा पूरी हुई. चारण तथा ब्राम्हणोंको लाखों रुपयेका दान दिया, और अपने पुरोहित ग़रीबदासको बारह ग्राम बख़्शे. सबसे ज़ियादा धन ब्राम्हणोंके हिस्सेमें, दूसरे चारण और तीसरे दरजेमें सर्दार पासवान मुत्सद्दियोंने पाया.

महाराणाने अपनी पाटवी राणी और कुंवर समेत सुवर्णकी तुला की; और पुरोहित ग़रीबदासने सोनेकी और उसके बेटे रणछोड़रायने चांदीकी तुला की. टोडेके राजा रायसिंहकी माता, व सलूंबरके राव चहुवान केसरीसिंह, और बारहठ चारण केसरीसिंहने चांदीकी तुला की. इसी जल्सेमें तालाबका नाम 'राजसमुद्र' पहाड़ परके महलका नाम 'राजमन्दिर' और शहरका नाम 'राजनगर' रक्खागया. इस तालाबके बड़े भारी जल्सेमें छयालीस हज़ार ब्राम्हण एकट्ठे हुए थे; इनके सिवाय रिश्तेदार और राजपूत वग़ैरह बहुतसे लोग थे, और जो राजा लोग

इस जल्सेपर किसी ख़ास कारणसे नहीं आये थे, महाराणाने उनके लिये नीचे लिखे अनुसार तुहफ़े भेजेः-

जोधपुरके राजा जश्वन्तसिंहके लिये ९००० रुपये, परमेश्वर प्रसाद हाथी, नरतन, फत्ते और कनक कलश नामके तीन घोड़े और तीन दुशाले रणछोड़ भट्टके साथ भेजे.

आंबेरके राजा रामसिंह कछवाहेके वास्ते १०२५० दस हज़ार दो सौ पचास रुपये, सुन्दरगज हाथी, और सुन्दर व हद्द नामके दो घोड़े और छः दुशाले पुरोहित रामचन्द्रके हाथ भेजे.

बीकानेरके राजा अनूपसिंहके लिये ७५०० साढ़े सात हज़ार रुपये, मदन मूर्ति हाथी, शाहश्रृंगार व तेजनिधान दो घोड़े और ११ दुशाले माधव जोषी (ज्योतिषी) के हाथ भेजे.

बूंदीके राव भावसिंह हाड़ाके लिये होनहार हाथी, नरतन, सर्वशोभा और सिरताज नामके तीन घोड़े तथा कई दुशाले देकर भास्कर भट्टको भेजा.

रामपुरेके राव मुह्कमसिंह चन्द्रावतके वास्ते फ़तह दौलत हाथी, मोहन और एक दूसरा, दो घोड़े द्वारिकानाथ ब्राह्मणकी मारिफ़त भेजे.

जैसलमेरके रावल अमरसिंह भाटीके वास्ते प्रतापश्रृंगार हाथी, हयमुकुट तथा रतिमुकुट नामके दो घोड़े और दुशाले देवनन्द जोषी (ज्योतिषी) के संग पहुंचाये.

डूंगरपुरके रावल जश्वन्तसिंहके लिये सारधार हाथी, जहतरंग व कनक नामके दो घोड़े हरजीके साथ भेजे.

अपने प्रधानको प्रतापश्रृंगार हाथी, और राणावत रामसिंहको सिंहनाद हाथी दिया.

राजसमुद्र तालाबके जुदे जुदे दारोगोंको ६० घोड़े वस्त्र और ज़ेवर समेत दिये. दो सौ छः घोड़े चारण भाट और कवियोंको, और बांधूगढ़के राजा भावसिंह बघेलाको अनूप हाथी, विनयसुन्दर व एक दूसरा, दो घोड़े तथा दुशाले गहना लादू महासहाणीके साथ भेजे; और बहुतसे घोड़े उन लोगोंको, जो राजाओंके बुलानेको गये थे, दिये. टोडेके राजा रायसिंहके बेटोंके लिये सहेली नामकी हथनी उनकी माके साथ भेजी, और महाराणा जगत्सिंह, कर्णसिंह, अमरसिंह, प्रतापसिंह व महाराणा हमीरसिंह और रावल समरसी तकके भी दिये हुए सासणिक चारण व भाटों को जुदे जुदे घोड़े दिये. इसके सिवाय दूसरे पंडित तथा चारणोंको एक लाख बाईस हज़ार दो सौ अड़सठ रुपयेके ख़रीदे हुए ५५२

घोड़े और एक लाख दो हज़ार एक सौ दस रुपये में मोल लिये हुए १३ हाथी व हथनी सिरोपाव गहने वगैरह समेत बांटे.

इस राजसमुद्र तालाबके बनवाने तथा जल्से आदिमें १०५४७५८४ एक किरोड़ पांच लाख सैंतालीस हज़ार पांच सौ चौरासी रुपये ख़र्च पड़े (१). विक्रमी १७१८ माघ कृष्ण ७ [हि० १०७२ ता० २१ जमादियुल्अव्वल् = ई० १६६२ ता० १२ जैन्यूअरी] के दिन यह काम शुरू हुआ, और विक्रमी १७३२ आषाढ़ [हि० १०८६ रबीउस्सानी = ई० १६७५ जून] तक बराबर ख़र्च होता रहा, जिसकी तफ्सील यह है— राणावत रामसिंहके द्वारा २७३६४९७॥ सत्ताईस लाख छत्तीस हज़ार चार सौ सत्तानवे रुपया आठ आना ख़र्च पड़ा; महाराणाके काका की मातहतीमें ५०४८८०। पांच लाख चार हज़ार आठ सौ अस्सी रुपये चार आने उठे; कुंवर मुह्कमसिंहके अधिकारसे २१२५३८ दो लाख बारह हज़ार पांच सौ अड़तीस, और कायस्थ श्यामलदासके हस्ते ४७८१०७ चार लाख अठत्तर हज़ार एक सौ सात रुपये ख़र्च हुए; और चौकड़ियोंकी खुदवाईमें ३२६०१। बत्तीस हज़ार छः सौ एक चार आने ख़र्च पड़े.

इन सबका जोड़ रु० ३९६४६२३॥। जिसमेंसे रु० ३२००२८८०। तो मिट्टीसे पाल की भरवाई और चूनेकी चुनाईके काममें ख़र्च हुए, और रु० ७६१७४३॥ पत्थर की खुदाई, पुराई आदि में लगे (२); कुल १०५४७५८४ एक किरोड़ पांच लाख सैंतालीस हज़ार पांच सौ चौरासी रुपये ख़र्च हुए, जिनमें से रु० ३९६४६२३॥। तो केवल तालाब के काममें ख़र्च हुए, बाक़ी रु० ६५८२९६०। इन्आम, ख़ैरात और जल्से वगैरह में उठे.

इस तालाबके शुरू से ख़त्म होने, तक जो जो और बातें हुईं, वे नीचे लिखी जाती हैं:—

विक्रमी १७१७ भाद्रपद शुक्ल ९ [हि० १०७१ ता० ७ मुहर्रम = ई० १६६०

---

(१) राजसमुद्रकी प्रशस्तिके २१ वें सर्गके १६ वें श्लोकमें लिखा है कि एक पक्षमें ऊपर लिखे हुए यानी ३९६४६२३॥। और उसी सर्गके २२ वें श्लोकमें लिखा है कि १०५०७५८४ रु० दूसरे पक्षमें लगे, इससे यदि यह मानाजाय कि ऊपरकी रक़म तो तालाबके कार्यमें लगी और दूसरी दूसरे कामोंमें; तब तो सब मिलाकर १४४७२२०७॥। होते हैं, लेकिन् हमने इन श्लोकों का अर्थ इस तरह पर समझा है कि एक पक्षमें तो पहली रक़म जो तालाबके काममें लगी वह लिखीगई है, और दूसरे पक्षमें विशेष ख़र्चको मिलाकर सब जोड़ लिख दिया है, अगर १४४७२२०७॥। भी ख़र्च पड़गये हों तो तअज्जुब नहीं है.

(२) अस्ल प्रशस्तिके २१ वें सर्गके १४ वें श्लोकमें ७६०७४४॥ लिखे हैं, परन्तु ऊपरकी जोड़ से ९९९ का फ़र्क़ पड़ता है.

ता० १४ सेप्टेम्बर] को महाराणा राजसिंहकी तरफ़से सूरसिंह आलमगीरके पास गया था, जिसको बादशाहने घोड़ा और ख़िल्ज़त देकर विदा किया.

श्री नाथजीकी मूर्तिका ब्रजसे मेवाड़में पधारना.

नाथद्वारेके गोसाईं लोगोंने तो इन सब इतिहासी बातोंको अपनी पुस्तकोंमें करामाती ढंगसे लिखा है, और ज़ाबिता यह रक्खा है कि अपने चेलोंके सिवाय और किसीको अपने मतकी पुस्तकें न दीजावें, बल्कि चेलोंको भी पुस्तक देते वक्त हिदायत करते हैं कि इसमेंका एक शब्द भी किसी दूसरेके सामने न कहा जावे, क्यौंकि दूसरोंको कहदेनेसे पुस्तक भ्रष्ट समझी जाती है, और कहने वाला पापी ठहरता है. अक्सर इसी सबबसे इन गोसाईं लोगोंके अस्ली हाल ग़ैर लोगोंको कम मिलते हैं- गोसाईंजी और सातों स्वरूपका बयान किसी और मौक़ेपर लिखा जायगा, यहां केवल गिरिराजसे श्री नाथजीके पधारने और सिहाड़ ग्राममें विराजनेका हाल लिखा जाता है.

पहिले मथुराके पास गिरिराज पर्वत पर श्री नाथजीका मन्दिर था, आलमगीरने गोसाईं लोगोंके पास एक आदमी भेजकर कहलाया, कि तुम लोग मथुराके फ़क़ीर हो तो कुछ करामात दिखलाओ, वर्ना निकाले जाओगे. इससे गोसाईं विठ्ठलदासजी के पुत्र गिरिधारीजीके बेटे दामोदरजी घबराये, और श्री नाथजीकी मूर्तिको एक रथमें बिठाकर अपने काका गोविन्दजी, बालकृष्णजी, वल्लभजी और गंगाबाईके साथ मथुरासे विक्रमी १७२६ आश्विन शुक्ल १५ [हि० १०८० ता० १४ जमादियुल् अव्वल् = ई० १६६९ ता० १० ऑक्टोबर] को घड़ीभर दिन बाक़ी रहे निकले, और आगरे पहुंचे; १६ दिन तक वहीं छिपे रहे. फिर कार्तिक शुक्ल २ [हि० ता० १ जमादियुस्सानी = ई० ता० २६ ऑक्टोबर] को आगरेसे चलकर बूंदीके राव राजा अनिरुद्धसिंहके पास आये, बर्सातका मौसम कोटेके ज़िले कृष्णविलास में काटा; वहांसे पुष्कर होकर कृष्णगढ़ पधारे, तब कृष्णगढ़के राजा मानसिंहने कहा, कि आपको छिपकर रहना मन्ज़ूर हो तो यहां रहिये, क्यौंकि मैं ज़ाहिरा नहीं रख सक्ता. निदान बसन्त और किसी क़द्र गर्मी कृष्णगढ़में ही पूरी की; उसके बाद मारवाड़ की तरफ़ गये. जोधपुरके महाराज जशवन्तसिंह अपनी ननिहालमें थे. गोसाईं जीने जोधपुरसे तीन कोस की दूरीपर चांपासेणी ग्राममें श्री नाथजीको पधराया, और बर्सातके आख़िर तक वहीं रहे. मथुरासे निकलनेके बाद पहिला बर्सातका मौसम संजेतीधारके पास कृष्णपुर में, दूसरा कोटेके पास कृष्ण विलास और तीसरा चांपासेणी में बिताया.

ये गोसाई लोग बादशाह आलमगीरके डरसे सारे रजवाड़ोंमें फिरे, परन्तु बादशाही नाराज़गीको झेलनेकी ताक़त किसीमें न पाई; लाचार मारवाड़में महाराजा जशवन्तसिंहके पास गये, लेकिन् जब उनके मुलाज़िमोंकी भी ताक़त न देखी, तब टीकेत गोसाई दामोदरजीके काका गोविन्दजी महाराणा राजसिंहके पास आये, और श्री नाथजीके बारेमें जो अपनी ख्वाहिश थी ज़ाहिर की. महाराणाने खुशीके साथ मन्ज़ूर किया, और कहा कि, "जब मेरे एक लाख राजपूतोंके सिर कट जावेंगे, उसके बाद आलमगीर इस मूर्तिको हाथ लगा सकेगा". गोविन्दजी बड़े प्रसन्न होतेहुए चांपासेणी गये, और वहांसे विक्रमी १७२८ कार्तिक शुक्ल १५ [हि० १०८२ ता० १४ रजब = ई० १६७१ ता० १७ नोवेम्बर] को चले, और उदयपुरसे १२ कोस उत्तरकी तरफ़ बनास नदीके तीर सिहाड़ ग्रामके पास मन्दिर बनवाकर श्री नाथजी को विक्रमी १७२८ फाल्गुण कृष्ण ७ [हि० १०८२ ता० २१ शव्वाल = ई० १६७२ ता० २० फ़ेब्रुअरी] शनिवारके दिन पाट बिठाया.

श्री नाथजी जब मेवाड़की सीमामें आये, तो महाराणा वहींसे पेश्वाई करके उनको लाये थे, और श्रद्धासे उत्सव में शामिल थे. इसका हाल यहां पर बिल्कुल् कमीके साथ लिखागया है.

सलूंबरका रावत रघुनाथसिंह चूंडावत कृष्णावत, जो महाराणा जगत्सिंहके समय ही से मुसाहिबी करता था, महाराणा राजसिंहके वक्में भी पास रहता था; जब बादशाह शाहजहांका भेजाहुआ चन्द्रभान मुन्शी उदयपुर आया, तो उसने शाहजहांकी खिद्मतमें रावत रघुनाथसिंहकी तारीफ़ लिखी थी. शायद उसने इसी सबबसे घमंडमें आकर महाराणाको नाराज़ किया होगा, या आपसकी फूटसे लोगोंने महाराणाको उससे नाराज़ किया हो. निदान महाराणाने और सब पट्टों समेत सलूंबर; रावत रघुनाथसिंहसे छीनकर चहुवान रामचन्द्रके छोटे बेटे केसरीसिंहको रावका ख़िताब देकर जागीरमें लिखदिया.

बेदलाका राव बल्लू जिसको महाराणा अमरसिंहने गंगारका पट्टा दिया था, उसका बेटा राव रामचन्द्र और इसका बड़ा पुत्र राव सबलसिंह बेदलाकी जागीर पर क़ायम रहा, और छोटे पुत्र केसरीसिंहको पारसौलीका पट्टा व रावका ख़िताब मिला.

केसरीसिंहसे यह महाराणा बहुत प्रसन्न थे, इसी सबब रावत रघुनाथसिंह पर नाराज़ होने बाद सलूंबर भी इसीको लिख दिया. चहुवान और चूंडावतोंमें लड़ाई पहिले ही से चली आती थी, क्योंकि महाराणा अमरसिंहने जब बेगमका पट्टा राव बल्लूको दिया था तब सलूंबरके रावत कृष्णदासका भतीजा रावत मेघसिंह महाराणासे बिगड़कर दिल्लीमें बादशाह जहांगीरके पास चला गयाथा- कुछ दिनोंके

बाद फिर महाराणाने उसको बुलाकर बेगमका पट्टा पीछा लिखदिया, और राव बल्लूको उसके बदलेमें गंगार और बेदला दिया. इस समय चहुवानोंका पेच चला, तो सलूंबर, जो सब चूंडावतोंका पाटवी ठिकाना है, ले लिया. आखिरकार रावत रघुनाथसिंह इस बातसे नाराज़ होकर बादशाह आलमगीरके पास विक्रमी १७२६ ज्येष्ठ शुक्ल १४ [हि० १०८० ता० १३ मुहर्रम = ई० १६६९ ता० १३ जून] को लाहौर पहुंचा, जिस वक्त कि हयात बाग़में बादशाहके डेरे थे; बादशाहसे महाराणा की नाराज़गी तथा बीती हुई सारी कैफ़ियत कह सुनाई. आलमगीरने उसको एक हज़ारी ज़ात व तीन सौ सवारका मन्सब और एक हज़ार रुपयेकी क़ीमतका जम्धर इनायत किया.

इन्हीं दिनोंमें टोडेके राजा रायसिंह भीमसिंहोतका देहान्त हुआ; इनके बेटे १ मानसिंह, २ महासिंह, और ३ अनोपसिंह विक्रमी १७३० वैशाख शुक्ल पक्ष [हि० १०८४ मुहर्रम = ई० १६७३ एप्रिल] में बादशाह आलमगीरके पास हाज़िर हुए; बादशाहने तीनों को तसल्लीके साथ खिलअ़त दिये.

महाराणाने विक्रमी १७३१ श्रावण शुक्ल ५ [हि० १०८५ ता० ३ जमादियुल्-अव्वल = ई० १६७४ ता० ८ ऑगस्ट] को दैबारी दर्वाज़े पर किवाड़ चढ़वाये, जिसकी प्रशस्ति उसके बाईं तरफ़ लिखी है-(शेष संग्रह नम्बर ७).

महाराणा राजसिंहके लिये आलमगीर बादशाहने विक्रमी १७३१ पौष शुक्ल २ [हि० १०८५ ता० १ शव्वाल = ई० १६७४ ता० ३० डिसेम्बर] को अपने अठारहवें जुलूस पर ख़ासा खिलअ़त, जड़ाऊ जम्धर और फ़र्मान भेजा.

विक्रमी १७३२ [हि० १०८६ = ई० १६७५] में महाराणी रामरसदे ने त्रिमुखी बावड़ी बनवाई-(शेष संग्रह नम्बर ८). इस ज़मानेमें आलमगीर बादशाहने अपने मतके पक्षसे अथवा मुसलमानोंको प्रसन्न रखनेके विचारसे दूसरे मज्हब वालों को तक्लीफ़ पहुंचाना, मन्दिरोंको तुड़वाना और दूसरे मतकी धर्म पुस्तकें न पढ़ने देना वगैरह शुरू किया; इससे सारी प्रजाका नाकमें दम आगया. अक्बर बादशाहने अपनी फ़ौजके तीन हिस्से इसी मस्लहतसे रक्खे थे, और वह १ शीआ, २ सुन्नी और ३ राजपूतोंका गिरोह था; अगर एक दल बदलजाय, तो दो उसको सज़ा देनेके लिये तय्यार रहते; परन्तु आलमगीरने अक्बरके बर्खिलाफ़ कार्रवाई की, कि सुन्नियोंको राज़ी रखनेके लिये शीआ (अलीको बड़ा मानने वाले मुसल्मान) और राजपूतोंका दिल तोड़दिया, जिससे एक न एक झगड़ा अक्सर बना रहता था.

महाराणा राजसिंहकी हर एक कार्रवाई बादशाहके मन्शाके बर्खिलाफ़

होती थी, दिन दिन नये मन्दिरोंका बनना, मथुराके गोसाईं, जो श्री नाथजीकी मूर्तिको लेकर आये, उन्हें अपनी पनाहमें रखना, संस्कृत विद्याकी शिक्षाका जारी करना, जोधपुरके राठौड़ोंको मदद पहुंचाना वगैरह बहुतसी बातोंसे आलमगीर बादशाहने मौका देखकर विचार किया होगा कि, महाराजा जशवन्तसिंह तो इन दिनों काबुलकी तरफ़ भेजेही गये हैं, अगर इस मौकेपर उदयपुरके महाराणाको दबादें तो सारे राजपूत दबजावेंगे, और फिर कोई सिर न उठावेगा.

यह इरादह करके विक्रमी १७३५ माघ शुक्ल ८ [हि० १०८९ ता० ६ ज़िल्हिज = ई० १६७९ ता० २० जैन्यूअरी] को ख्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारत (दर्शन) के बहानेसे बादशाह अजमेरकी तरफ़ आया, और विक्रमी १७३५ फाल्गुण शुक्ल १४ [हि० १०९० ता० १३ मुहर्रम = ई० १६७९ ता० २४ फ़ेब्रुअरी] को रास्तेहीमें आंबेर के राजा रामसिंह का पोता विष्णुसिंह उसके पास हाज़िर हुआ; चैत्र कृष्ण ४ [हि० ता० १८ मुहर्रम = ई० ता० १ मार्च] के दिन बादशाह अजमेर पहुंचा; महाराणाने उसका मन्शा पहचानकर अपने वकील उसके पास भेजदिये, और जो हुक्म हुआ मन्जूर किया.

विक्रमी १७३६ चैत्र शुक्ल ११ [हि० १०९० ता० ९ सफ़र = ई० १६७९ ता० २३ मार्च] के दिन कुंवर जयसिंहके डेरे बाहर खड़े करवाये. आलमगीरने शाहज़ादे काम्बख़्शकी सर्कारके बख़्शी मुहम्मद नईमको महाराणाकी दर्ख्वास्त पर कुंवरके लेनेके लिये उदयपुर भेजा, जिसकी बाबत यहां अस्ल फ़र्मानका तर्जमा और उस की नक्ल फ़ार्सी नोटमें लिखीजाती है:-

---

बादशाही फ़र्मानका तर्जमा.

बिस्मिल्लाहि रेहमानि रेहीम.

तुग़रामें कुरआनकी आयत.	अतीउल्लाहः व अतीउर्रसूलः व उलिल् अम्रे मिन कुम.	अर्थ. आदमियोंको खुदा और पैग़म्बर की और जो उनमें हाकिम हो उसकी इताअत करनी चाहिये.

मुहरकी नक्ल

वफ़ादार खैरख्वाह- नेक सर्दारोंका बुज़ुर्ग-
बराबरी वालोंसे बिहतर- फ़र्मां बर्दारोंका सरताज
बहुतसी मिहर्बानियोंके लायक़ राणा राजसिंह बादशाही मिहर्बानियोंसे इज़्ज़त-दार और ख़बर्दार होकर जानें, जो अर्ज़ी कि साफ़ दिली और सच्ची खैरख्वाहीसे केसरीसिंह और नर्सिंहदास अपने नौकरोंके हाथ बादशाहोंकी पनाहवाली दर्गाहमें भेजी थी, बुज़ुर्ग सल्तनतके हाज़िर रहनेवालोंकी मारिफ़त पाक साफ़ नज़रसे गुज़री. उस उम्दह सर्दारकी बाज़ दर्ख्वास्तें बुज़ुर्ग वज़ीर बड़े दरजेके सर्दार जुम्दतुल्मुल्क असदख़ां, और बुज़ुर्ग ख़ान्दान बहादुरीके निशान बहुत मिहर्बानियोंके लायक़ बख़्शि-युल्मुल्क सर्बलन्दख़ांके ज़रीएसे मालूम हुई.

बुज़ुर्ग दर्गाह में अर्ज़ हुआ कि वह अपने बेटेको बादशाही दर्गाहमें हाज़िरीसे बुज़ुर्गी हासिल करनेको भेजना चाहता है, और उम्मेद रखता है, कि एक सर्कारी आदमी उसके लानेको हुज़ूरसे मुक़र्रर किया जावे; इसलिये सबके माननेके लायक़ बुज़ुर्ग हुक्म जारी होता है, कि हम उसको पुराने मज्बूत इरादह वफ़ादार कारगुज़ारोंमें से जानते हैं- ख़ान्दानी बहादुर मुहम्मद नईमको, जो नेक-बख़्त नाम्दार, बादशाही आंखकी पुतली, सल्तनतके बाग़के ताज़ा फूल, आली ख़ान्दान, जहानवालोंकी ताज़ीमके लायक़, बादशाहज़ादह मुहम्मद कामबख़्शकी सर्कारका बख़्शी है, इनायतके तरीक़ेसे उस उम्दह सर्दारके बेटेको लाने

के लिये उस तरफ़ रुख़्सत फ़र्माया है. लाज़िम है कि तबीअत को बादशाही मिहर्बानियोंसे जमा रखकर उसको ज़िक्र कियेहुए आदमीके हमराह बुज़ुर्ग दर्गाह में भेजदे, कि सलामसे बुज़ुर्गी हासिल करने बाद बहुतसी मिहर्बानियोंके साथ वापसीकी इजाज़त पावेगा- तारीख़ २५ मुहर्रम साल २२ जुलूस = १०९० हिज्री को लिखा गया.

---

* بسم الله الرّحمن الرّحيم *

نقل طغرا

* اطيعوا الله واطيعوا الرّسول *
* واولى الامر منكم *

نقل مهر
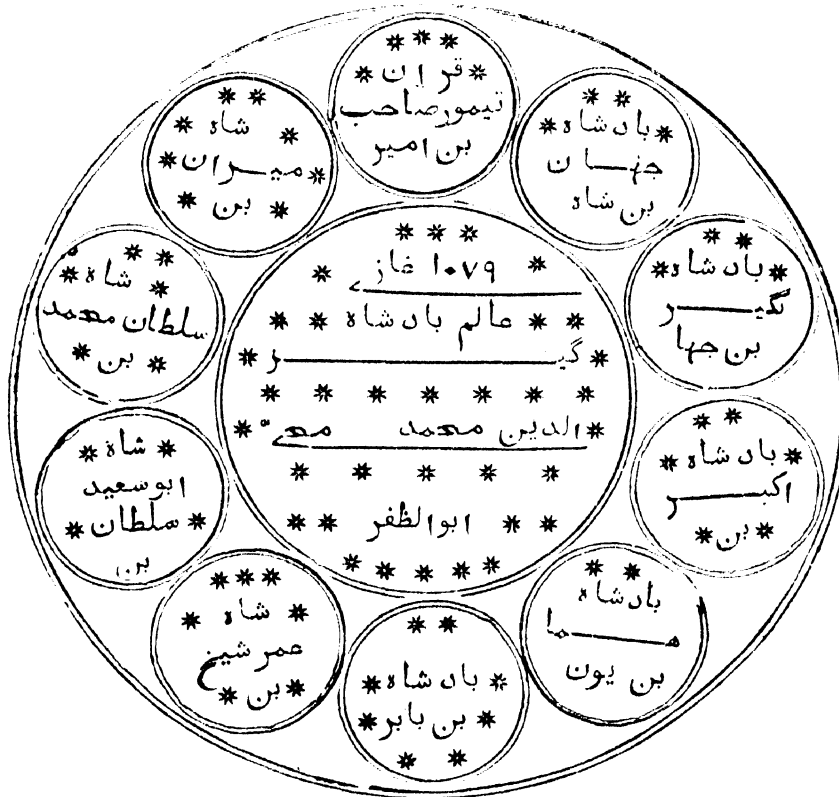
عمدة اخلاص كيشان دولتخواه زبدة الاعيان والاشباه خلاصة الاماثل
والاقران نقاوة النظاير والاخوان سلالة فدويت منشان سزاوار لطف
واحسان مطيع الاسلام رانا راج سنگه بعنايت بادشاهي مفتخر ومباهي گشته بدانند - عرضه داشتے
كه ازروے صدق اخلاص وخلوص بندگي مصحوب كيسريسنگه ونرسنگداس نوكران خود بدرگاه
خواقين پناه ارسال داشته بود - بتوسط ايستادهاے پاية سرير خلافت مصير ارفع اعلى از نظر انور

पीठकी इबारत और मुहर.

* ११ *
मुहम्मद मुअ़ज़्ज़म
शाह आलम, इब्न आलम-
गीर बादशाह गाज़ी
* १०८७. *
* * *

नव्वाब बुज़ुर्ग अल्क़ाब जहानवालोंकी पनाह, बलन्द दरजे वाले, दीन दुन्याकी रौनक़, बुज़ुर्गी और नसीबहके बाग़के दरख़्त, बुज़ुर्गी और बड़ाईके दरख़्तके फल, नसीबहवर, बलन्द ख़ान्दान, ख़ुदाई कारख़ानेके पसन्दीदह, बादशाही ताजके मोती, ख़ुदाई रहमतोंके नमूने, बुज़ुर्ग क़द्र, बादशाहज़ादह नाम्दार, मुहम्मद मुअ़ज़्ज़मके रिसाले में,

अदना दरजेके वफ़ादार असदख़ांकी मारिफ़त (जारीहुआ).

اظهر گذشت - و بعض ملتمسات آن عمدة الاعیان بوساطت عمدهٔ وزرا ے رفیع الشان زبدهٔ خوانین بلند مکان خان شجاعت نشان جمدة الملك مدار المهام اسدخان و شرافت و نجابت پناه شجاعت و شهامت دستگاه مورد مرحم بیکران بخشي الملك سربلند خان بموقف عرض مقدس معلی رسید * و معروض پیشگاه سلطنت عظمی گردید که میخواهد پسر خودرا بجهت احراز دولت آستانبوس والا بفرستد - امیدوارست که یکے از بندهاے پادشاهی براے آوردن او از حضور لامع النور تعیین شود * حکم جهانمطاع واجب الاتباع شرف نفاذ مے یابد که چون اورا از بندگان قدیم برجادهٔ بندگی مستقیم میدانم سیادت و شجاعت انتساب محمد نعیم بخشي سرکار فرزند سعادتمند برخوردار نامدار قرهٔ باصرهٔ دولت غرهٔ ناصیهٔ سلطنت نوباوهٔ نهال حشمت تازهٔ گل بوستان خلافت والاگوهر عالی نسب پادشاهزادهٔ عالم و عالمیان محمد کام بخش را از راه عنایت جهت آوردن پسر آنزبدة الاشباه رخصت آنطرف فرمودیم - باید که خاطر از مراحم پادشاهانه جمع داشته اورا برفاقت مشار الیه روانهٔ بارگاه سلطنت گرداند - که بعد استلام عتبهٔ رفیع مرتبهٔ خلافت مشمول نوازش گردیدهٔ اجازت انصراف خواهد یافت * بیست و پنجم شهر محرم الحرام سال بیست و دوم از جلوس والا نوشته شد ۵

برسالهٔ نواب قدسی القاب عالم مآب رفیع جناب غرهٔ ناصیهٔ دین ودولت قرهٔ باصرهٔ ملك و ملت بهین دوحهٔ حدیقهٔ ابهت و اقبال - گزین ثمرهٔ شجرهٔ عظمت وجلال - شاهزادهٔ نامدار کامگار عالی نسب والاتبار - منظور نظر حضرت آفریدگار - درة التاج سلطنت عظمی - واسطة العقد خلافت کبرے - مهبط انظار عنایت الهی - مطلع انوار مرحمت ظل الهی جلیل القدر منیع الشان - عظیم المنزلت سمو المکان فروغ دودمان مجد و کرم - پادشاهزادهٔ محمد معظم شاه عالم ۵

مهر شاهزاده

بمعرفت کمترین فدویان
اسدخان *

बादशाह विक्रमी चैत्र शुक्क ९ [हि० ता० ७ सफ़र = ई० ता० २१ मार्च] को अजमेरसे दिल्लीकी तरफ़ रवाना हुआ; जब दिल्ली दो कोस रहगई तो कुंवर जयसिंह, चन्द्रसेन झाला और ग़रीबदास पुरोहित सहित बादशाहके दर्बारमें विक्रमी वैशाख कृष्ण ३० [हि० ता० २९ सफ़र = ई० ता० ११ एप्रिल] को दाख़िल हुए. शाही डेरोंकी ड्योढ़ी तक नागोरका राव इन्द्रसिंह पेश्वाई करके अन्दर लेगया. कुंवरके पहुंचने पर बादशाहने ख़ासा ख़िल्अ़त, पन्ने और मोतियों की कंठी, उर्वसी, जड़ाऊ पहुंची, तथा हथनी दी.

विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ४ [हि० ता० १८ रबीउ़ल्अव्वल् = ई० ता० ३० एप्रिल] के दिन कुंवर जयसिंहको ख़िल्अ़त, मोतियोंका सर्पेच, कानोंके लालके बाले, जड़ाऊ तुर्रा, अ़रबी घोड़ा सुनहरी सामान समेत और हाथी देकर घर जानेकी रुख़्सत दी; इनके साथ महाराणाके लिये ख़िल्अ़त, जड़ाऊ सर्पेच, बीस हज़ार रुपया नक्द और फ़र्मान भेजा. कुंवर जयसिंह मथुरा बृन्दावनकी तरफ़ तीर्थ करते हुए विक्रमी प्रथम ज्येष्ठ शुक्क १५ [हि० ता० १४ रबीउ़स्सानी = ई० ता० २६ मई] के दिन महाराणाके पास आये.

इस वक्त तो मेल करना ही मुनासिब जानकर रज़ामन्दीके साथ बादशाहको अजमेरसे वापस लौटाया; परन्तु भगवानकी इच्छा हज़ारों आदमियोंका ख़ून ज़मीन पर बहानेकी थी- एक नया झगड़ा बादशाहने आम मुसल्मानोंको खुश करनेके लिये उठाया; वह यह था, कि एक लागत (टैक्स) जिज़्यह नामी दूसरे मत वालों पर जारी की.

जिज़्यहके लगानेसे कुल हिन्दू नाराज़ थे, लाखों आदमी बादशाहके पास फ़र्यादी गये, यहां तक कि एक दिन बादशाह जामिअ़् मस्जिदको जाते थे, फ़र्यादी हिन्दू लोगोंके हुजूमसे रास्ता नहीं मिला, गुर्ज़ बर्दारोंने बहुतसे आदमियोंके हाथ पैर तोड़डाले, आख़िर कार एक हाथी सवारीके आगे कियागया, जिसकी टक्करसे बहुतसे आदमियोंको नुक्सान पहुंचा; लेकिन् आलमगीरने जिज़्यह मुआफ़ करनेका हुक्म नहीं दिया. यह जिज़्यहकी लागत शुरूमें हज़्रत मुहम्मद पैग़म्बरने जारी नहीं की थी, उनके पीछे दूसरे ख़लीफ़ा उ़मरने ख़र्चकी तंगीसे इस तरह पर जारी की, कि अव्वल दरजेके मालदार आदमीसे सालानह ४८ दिरम, और मंझले दरजेके आदमीसे २४ दिरम, और तीसरे दरजेके आदमीसे १२ दिरम लियाजावे. शहन्शाह अक्बरके हुक्मके मुवाफ़िक़ अबुल् फ़ज़्लने आईन अक्बरीकी पहिली जिल्दके सफ़ह २३६ में लिखा है, कि हर मुल्कमें इस तरहके इरादे फ़साद पैदा करते हैं, और लोगोंको तक्लीफ़ पहुंचाते हैं, इस वास्ते शहन्शाह अक्बरने जिज़्यहकी बुरी रस्मको मौकूफ़ करदिया, और इस

को एक तरहका ज़ुल्म ख़याल किया. आलमगीरने तो अक्बरको अपनी दानिस्तमें बेसमझ ठहराया होगा. आलमगीरने हिन्दुओंको ही तक्लीफ़ नहीं दी, बल्कि मुसल्मानोंसे भी रु० २॥ सैकड़ा सालानह ज़कातके नामसे जब्रन् वसूल करनेका हुक्म जारी किया- यह ज़कात मुहम्मदी मज़्हबमें ईमान्दार आदमियोंको खैरात करनेके लिये मुक़र्रर हुई है, और बादशाहोंको जब्रन् वसूल करनेकी इजाज़त नहीं है. इन बातोंसे कुल हिन्दुस्तानमें बेदिली फैलरही थी.

इसके सुन्ते ही महाराणा राजसिंहको बहुत रंज हुआ, और यह सोचा कि हिन्दुओंको बेदीन जानकर यह कर लगाया है, यह विचारकर एक अर्ज़ी आलमगीर बादशाहके नाम भेजी, जिसका तरजमा कर्नेल् टॉडकी किताबसे नीचे लिखा जाता है-

अर्ज़ीका तरजमा.

आदाब अल्क़ाबके बाद - ज़ाहिर हो कि मैं आपका खैरख़्वाह अगर्चि आप की हुज़ूरसे दूर हूं, परन्तु फिर भी ताबेदारी और नमकहलालीके कामोंमें तय्यार हूं. मैं हिन्दुस्तानके बादशाहों, अमीरों, मिर्ज़ाओं, राजाओं, रावों और ईरान, तूरान, रूम, शामके सर्दारों, सातों विलायतोंके रहनेवालों तथा ख़ुश्की और दर्याके मुसाफ़िरोंकी खैरख़्वाही में मश्गूल हूं; यह मेरा कहना बहुत साफ़ तरह पर है, इस बातको सब जानते हैं, और मुझे भरोसा है कि इसमें आपको भी कोई शक न होगा. मैं अपनी पहिली चाकरी और आपकी मिहर्बानी पर नज़र करके हुज़ूरसे यह अर्ज़ रखता हूं, कि उन बातोंकी तरफ़ कि जिनमें आपकी और दुन्यावालोंकी बिहतरी है, और जो नीचे लिखी जाती हैं, ध्यान देंगे-

मैंने सुना है कि आपने बहुतसा रुपया मुझ खैरख़्वाहकी ख़राबीकी तदबीरों में ख़र्च किया है, और हुज़ूरने अपना ख़ज़ानह भरनेके लिये जिज़्यहका महसूल लगाया है. हुज़ूर पर रौशन है कि मुहम्मद जलालुद्दीन अक्बर ने, जो आपके बाप दादाओंमें से थे, बादशाही कामोंको ५२ वर्ष तक बड़े इन्साफ़के साथ पूरा करके हर एक क़ौमको आराम पहुंचाया. ईसाई, मूसाई, दाऊदी, मुसल्मान और ब्राह्मण तथा दिहरिये, जो दुन्याको आपसे आप पैदा होनेके क़ाइल हैं, उनकी निगाहमें बराबर थे; और सब पर एकसी मिहर्बानीकी नज़र जारी रहती थी, उनका इन्साफ़ और रहम इस क़द्र ज़ियादह था कि प्रजाने उनका लक़ब जगत् गुरु रक्खा था. नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीरने भी २२ वर्ष तक अपनी प्रजाकी हुकूमत और हिफ़ाज़त की, और कभी अपनी

कार्रवाईमें सुस्ती नहीं की, उन्होंने अपने नेक इरादोंके सबब हर एक जगह काम्याबी हासिल की. मश्हूर शाहजहांने भी ३२ वर्ष तक अच्छे इन्साफ़के साथ बादशाहत चलाई, और ऐसा नाम पैदा किया कि हमेशह दुन्याके पर्देपर क़ायम रहेगा; यह नतीजा उनको रहम दिली और नेकीके तुफ़ैल मिला था. आपके बाप दादोंकी ख़्वाहिश दिलसे भलाईकी तरफ़ थी, जैसा कि ऊपर लिखा गया.

वह सख़ावत और रहमदिलीकी बातों पर अमल करते थे, इससे जिधर को क़दम उठाते थे, फ़त्ह उनके साथ चलती थी, और साफ़ नियत होनेके सबब बहुतसे क़िले फ़त्ह, और अक्सर मुल्क ताबे होगये थे; आपके अह्दमें बहुतसे ज़िले बादशाहतसे निकल गये हैं, बहुतसी नई ज़ियादती होनेसे और भी इलाक़े हाथसे जाते रहेंगे. आपकी प्रजा कंगाली और तक्लीफ़में फंसी हुई है, ख़राबी फैलती जाती है, कई मुश्किलें बढ़ती जाती हैं. जब ग़रीबीने बादशाहों और शाहज़ादोंके घरमें क़दम रक्खा हो तो अमीर और रअय्यतका तो ईश्वर ही मालिक है; सिपाही शिकायत करते हैं, सौदागर फ़र्यादी हैं, मुसल्मान नाराज़ हैं, हिन्दू और दूसरे लोग ज़रूरतोंसे इस क़द्र तंग होगये हैं कि शामको खाना भी नहीं मिलता, और सारे दिन दुःखसे बेचैन रहते हैं.

यह कब हो सक्ता है, कि जो बादशाह अपनी कंगाल प्रजापर सख़्त २ महसूल डालता है, क़ायम रहे. पूर्वसे पश्चिम तक यह अफ़्वाह फैली हुई है, कि हिन्दुस्तानका बादशाह हिन्दू पुजारियोंसे जलनके कारण सब ब्राह्मणों, जोगियों, सन्यासियों, वैरागियोंसे ज़बर्दस्ती महसूल लेना चाहता है, वह तीमूरी ख़ान्दानकी इज़्ज़तकी तरफ़ ख़याल न करके, लाचार कोनेमें बैठने वाले पुजारियों पर ज़ोर दिखाना चाहता है. अगर आप उस किताब पर विश्वास रखते हैं, जिसको कलामि इलाही समझा जाता है, तो उसमें साफ़ लिखा है कि "खुदा सिर्फ़ मुसल्मानों ही का मालिक नहीं है, बल्कि सारे जगत्का पालने वाला है" (अल्हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन - الحمد لله رب العلمين -) हिन्दू और मुसल्मान उसकी नज़रमें एकसे हैं, रंग और सूरतका फ़र्क़ ईश्वरकी कुद्रतसे है, और वही सबका पैदा करने वाला है; मुसल्मानोंके इबादत ख़ानों में भी उसीका नाम लिया जाता है, और मन्दिरोंमें भी मूर्तिके साम्हने, जहां घंटे बजते हैं, उसीकी तारीफ़ और पूजा होती है. दूसरी क़ौमोंके मज़्हबों और रीतोंको दूर करना ईश्वरकी मरज़ीके ख़िलाफ़ है; जब हम किसी तस्वीरका मुंह बिगाड़ते हैं, तो उसके बनाने वालेको नाराज़ करते हैं.

किसी शाइरने यह बात बहुत ठीक लिखी है कि- "खुदाई कारख़ानेमें

एतिराज़ न करो"- मत्लब यह है कि हिन्दुओंपर, जो जिज़्यहका महसूल लगाया है, इन्साफ़से दूर है, और मुल्की इन्तिज़ामसे भी दुरुस्त नहीं है; उससे मुल्क गरीब और तबाह होजावेगा. इसके सिवाय वह एक नई घड़न्त है, और हिन्दुस्तानके पुराने दस्तूरोंके खिलाफ़ है, यदि अपने मज़्हबी खयालोंकी पैरवीसे यह बात पसन्द की है तो इन्साफ़ यह चाहता है, कि अव्वल जिज़्यहका महसूल रामसिंह (जयपुर वाले) से जो हिन्दुओंका सरगिरोह है, और फिर मुझ ख़ैरख़्वाहसे मांगना चाहिये, जहांसे कि महसूल वसूल करनेमें आपको ज़ियादह दिक़्क़तें न उठानी पड़ेंगी; परन्तु चेंटी और मक्खियोंको तक्लीफ़ देना बेजा है, और हिम्मतवर तथा बहादुरोंके लायक़ नहीं है. तअ़ज्जुब है कि बादशाही वज़ीरोंने इज़्ज़त और रास्तीकी बाबत सलाह नहीं दी.
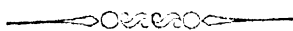
कर्नेल् टॉडने चिट्ठीकी बाबत जो नोट दिया है उसका तर्जमा भी यहां लिखाजाता है--

"यूरोप वालोंको इस चिट्ठीका हाल ओर्म साहिबकी लिखावटसे पहिली बार ज़ाहिर हुआ. ओर्म साहिबका यह बयान कि जशवन्तसिंह मारवाड़ वालेने यह चिट्ठी लिखी थी गलत है, क्योंकि जिज़्यहका हुक्म जारी होनेके पहिले वह मरचुका था. जशवन्तसिंहकी मौतका हाल रामसिंहके नाम की लिखावटसे साफ़ ज़ाहिर है. जयसिंह रामसिंहका बाप जशवन्तसिंहके वक़्में था, वह उसके मरनेके बाद एक वर्ष तक हुकूमत करता रहा, मेरा मुन्शी उदयपुरसे अस्ल चिट्ठीकी नक़्ल करलाया, इससे मालूम होता है कि वह राणाकी लिखीहुई थी; उस चिट्ठीका मज़्मून सर डब्ल्यू० बी० रोज़ने उम्दह इबारतमें लिखा है, इस सबबसे अस्ल चिट्ठीका तर्जमा करना फ़ुज़ूल समझा.

अब इस नोट पर हमारी यह राय है कि इस अर्ज़ीके लिखनेमें यह शक करना कि दूसरे राजाओंने लिखी है, बेजा है; क्योंकि कर्नेल् टॉडके लिखनेके मुवाफ़िक़ ही महाराजा जशवन्तसिंह तो पहिले मर चुके थे, और आंबेरके राजा रामसिंह का इसी अर्ज़ी में हवाला है, इससे आपही साबित है कि इसका लिखनेवाला कोई और है, सोचनेकी जगह है कि हिन्दुस्तान में उदयपुरके सिवाय और कौन ऐसा ज़बर्दस्त राजा था, जिसने इस ज़ोर शोरके साथ आलमगीरको चिट्ठी लिखी.

कर्नेल् टॉडने महाराजा जशवन्तसिंह का हमअ़सर आंबेर के राजा जयसिंह कछवाहेको बताकर यह लिख दिया है, कि उसके एक वर्ष बाद जीतारहा;

अगर इससे आंबेरके राजा जयसिंह ख़याल कियेजावें, तो वे जशवन्तसिंहसे दस वर्ष पहिले मरचुके थे, और रामसिंह ख़याल किये जांय, तो जशवन्तसिंह की मौत के दस वर्ष बाद मरे थे; इस सबबसे टॉड साहिब का पिछला बयान ग़लत है.

आलमगीर इस चिट्ठीको देखते ही आग होगया, और फ़ौरन् उदयपुरकी तरफ़ फ़ौजकशी करनेका हुक्म दिया; इसी आगमें ईंधन डालने का सामान दूसरा यह हुआ कि महाराजा जशवन्तसिंह का बेटा अजीतसिंह, जो दिल्ली से छिपकर भागआया था, उसे महाराणाने अपने पास मेवाड़में रखलिया.

वह इस तरह पर है— कि दुर्गदास वग़ैरह राठौड़ोंने सोचा कि अकेले हम लोगोंसे आलमगीरकी फ़ौजका मुक़ाबला होना कठिन है. इसीसे महाराजा अजीतसिंहको लेकर उदयपुर चलेआये. महाराणा राजसिंहने अजीतसिंह और उसके खटलेके ठहरनेको कैलवा ग्राम सुपुर्द किया, और दुर्गदास वग़ैरह राठौड़ों को तसल्ली देकर कहा कि एक लाख सीसोदिया और राठौड़ोंकी फ़ौजको आलमगीर आसानीसे नहीं दबासकेगा, तुम बेफ़िक्र रहो. बादशाह महाराणा पर तो जिज़्यहकी चिट्ठीसे चिड़ ही रहा था, अब अजीतसिंहको यहां रखलेनेसे और भी बिगड़ा, और विक्रमी १७३६ भाद्रपद शुक्ल ९ [हि० १०९० ता० ७ शअ्बान = ई० १६७९ ता० १५ सेप्टेम्बर] को जंगी फ़ौजके साथ दिल्लीसे उदयपुरकी तरफ़ चला, और उसी दिन बालम क़स्बेसे शाहज़ादे मुहम्मद अक्बर को आगे रवाना किया, कि अजमेर में ठहरे. आश्विन शुक्ल १ [हि० ता० २९ शअ्बान = ई० ता० ७ ऑक्टोबर] को बादशाहने अजमेर पहुंचकर ख्वाजह मुईनुद्दीन चिश्ती की ज़ियारत करने .बाद जहांगीरके बनवायेहुए महलोंमें आनासागरकी पालपर क़ियाम किया.

विक्रमी कार्तिक शुक्ल ३ [हि० ता० १ शव्वाल = ई० ता० ७ नोवेम्बर] के दिन तहव्वुरख़ांको ख़िलअ्त, हाथी और तीर कमान इनायत करके मांडल वग़ैरह परगनोंकी ज़ब्तीके लिये भेजा, और नागौरके राव इन्द्रसिंहको नीमच, रघुनाथसिंहको सियाना वग़ैरह, मुह्कमसिंह मेड़तियाको पुरकी थानेदारी पर फ़ौजके साथ रवाना किया; और एक फ़र्मान दक्षिणमें शाहज़ादे मुअ़ज़्ज़मके नाम लिखा, कि फ़ौरन् हुक्मके मुवाफ़िक़ उज्जैनमें आकर कार्रवाई करे. दूसरा फ़र्मान बंगालेमें शाहज़ादे आज़मके पास भेजा, कि जिस तरह होसके, बहुत जल्दी हमारे पास हाज़िर हो. इस तरह कार्रवाई करके बादशाह ने विक्रमी १७३६ मार्गशीर्ष शुक्ल ९ [हि० १०९० ता० ७ ज़िल्क़ाद = ई० १६७९ ता०

१३ डिसेम्बर [को अजमेरसे उदयपुरकी तरफ़ कूच किया, और उसी दिन मेड़तेकी तरफ़से शाहज़ादह मुहम्मद अक्बर हाज़िर हुआ.

जब बादशाही लश्कर मेवाड़के इलाक़ेमें पहुंचा, उसी वक्त विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १५ [हि॰ ता॰ १४ ज़िल्क़ाद = ई॰ ता॰ १९ डिसेम्बर] को शाहज़ादह आज़म भी बादशाहकी ख़िदमत में हाज़िर होगया; कुछ दिनों तक मांडल में ठहरनेके बाद विक्रमी माघ कृष्ण १ [हि॰ ता॰ १५ ज़िल्हिज = ई॰ १६८० ता॰ १८ जैन्यूअरी] को उदयपुरकी तरफ़ चढ़ाईका हुक्म हुआ.

महाराणाने सर्दार, उमराव और कामदार वग़ैरहको एकट्ठा करके सलाह की. उस समय महाराणाके छोटे भाई अरिसिंह, फ़त्हसिंह और गुमानसिंह अपने तीनों कुंवरों सहित और महाराजकुमार जयसिंह तथा छोटे कुंवर भीमसिंह, रावल जशकर्ण, राणावत भावसिंह, महाराज मनोहरसिंह, महाराज दलसिंह, वेदलेका चहुवान राव सबलसिंह, सादड़ीका झाला राज चन्द्रसेन, बान्सीके रावत केसरीसिंहका कुंवर गंगादास, देलवाड़ेका झाला राज जैतसिंह, बीजोल्यांका पुंवार राव बैरीशाल, बेगमका रावत महासिंह चूंडावत, रावत रत्नसिंह चूंडावत कृष्णावत रघुनाथसिंहोत, बदनोरका राठौड़ ठाकुर सांवलदास, आमेटका रावत मानसिंह चूंडावत जग्गावत, चहुवान राव केसरीसिंह बान्सीका, भींडरका शक्तावत महाराज मुहकमसिंह, गांव समदड़ी इलाके मारवाड़का राठौड़ दुर्गदास, सोनगरा सामन्तसिंह, देसूरी रूपनगरका सोलंखी विक्रमादित्य, कोठारिये रावत रुक्माङ्गद चहुवान, गोगूंदेका राज जशवन्तसिंह झाला, घाणेरावका मेड़तिया ठाकुर गोपीनाथ राठौड़, पुरोहित ग़रीबदास बड़ा पल्लीवाल ब्राह्मण, नीमड़ीका महेचा राठौड़ अमरसिंह, खीची रत्नसिंह, प्रधान साह दयालदास ओसवाल वग़ैरहने अपनी अपनी बुद्धिके अनुसार अर्ज़ की. किसीने कहा कि अजमेरसे निकलते ही शाही लश्कर पर छापा मारें, किसीने सलाह दी कि मेवाड़में आते वक्त लड़ाई कीजाय, किसीने बयान किया कि चित्तौड़ गढ़में रहकर लड़ाई करना चाहिये. इसी तरह सबकी तरफ़से बयान होनेके बाद पुरोहित ग़रीबदासने अर्ज़ किया, कि राजपूतोंका यही हक़ है कि अपने बलसे बढ़कर जवाब दें, क्योंकि जिसे मरनेकी फ़िक्र नहीं होती, वह नफ़े नुक्सानको नहीं विचारता; परन्तु मेरी समझमें बादशाहसे बराबरीके तौर पर मुक़ाबला करना ठीक नहीं है, क्यों कि पहिले भी जब बादशाह अक्बरसे काम पड़ा था, तब महाराणा प्रतापसिंह और महाराणा उदयसिंहने चित्तौड़ और उदयपुर छोड़ा, और पहाड़ों में चलेगये, दिन या रातको जिस वक्त मौक़ा पाते, छापा मारते, और बादशाही मुल्क बर्बाद करते; और जब कठिन पहाड़ोंमें फ़ौज आती, तब घाटियोंमें मौक़ेसे सामना करते,

जहांपर बादशाही तोपखाने, हाथी और घोड़े बिल्कुल बेक़ाबू रहते थे. इन्हीं कारणोंसे बादशाह अक्बर, जहांगीर और शाहजहांने तंग होकर सुलह को ही ग़नीमत समझा था; इस लिये आपको भी चाहिये, कि उदयपुर छोड़कर कठिन पहाड़ोंमें पधारें, और अपने बहादुर राजपूतोंको चारों तरफ़से सामना व धावा करने और बादशाही देश लूटनेका हुक्म दें. पालवी भील व ग्रासियों (भील ज़मींदार) को बादशाही लश्करकी रसद लूटने पर तय्यार रहनेकी ताकीद करें.

महाराणा राजसिंहको यह सलाह पसन्द आई, और उसी वक़ उन्होंने शहरकी रअय्यत समेत अपने कुंवर व ज़नानेको उदयपुरसे रवाना कराके पहिला मक़ाम देवी माताके पहाड़ोंमें, जो उदयपुरसे दक्षिणकी तरफ़ ४ कोसपर है, किया; दूसरा भोमट के ज़िलेमें कठिन पहाड़ोंके बीच नेणवारे गांवमें हुआ, और इसी जगह मेवाड़ व मारवाड़के राजपूतोंके बालबच्चे और दोनों देशकी प्रजा रही. इन सबकी हिफ़ाज़तका भार महाराणा ही पर था. बड़े कुंवर जयसिंह चारों तरफ़की फ़ौजोंकी मददके लिये तेरह हज़ार सवारों समेत मुक़र्रर हुए.

बदनौरके ठाकुर सांवलदास राठौड़, देसूरीके विक्रमादित्य सोलंखी और घाणेरावके मेड़तिया ठाकुर गोपीनाथको देसूरी, घाणेराव और बदनौर तक के पहाड़ी ज़िलोंकी तरफ़ तईनात किया; प्रधान साह दयालदास मालवेकी फ़ौजोंके हम्ले रोकने को तय्यार रहा; दूसरे कुंवर भीमसिंहको एक फ़ौजका हाकिम बनाकर गुजरातकी तरफ़ भेजा; और ओगना, पानड़वा, जवास, मादड़ी वग़ैरह के भील सर्दारोंको हुक्म दिया कि अपने ज़िलेके भीलों समेत तीर कमान लेकर घाटों और नाकोंका बन्दोबस्त करें, और रसद लूट लूटकर हमारे पास पहुंचावें.

मेवाड़ में तो इस तरह पर लड़ाई का बन्दोबस्त हुआ, और बादशाह ने जब मांडलसे कूच किया, उसी वक़ देबारी के घाटेसे आदमियोंके उठजाने और महाराणाके उदयपुर छोड़कर पहाड़ों में चलेजाने की ख़बर मिली, फिर अमीनखांने अर्ज़ किया, कि मेरे नौकर पहाड़ोंपर चढ़कर देखआये हैं, उदयपुरके आसपास कोई आदमी नज़र नहीं आता.

इस बारेमें ख़फ़ीख़ांने लिखा है कि उदयपुरके राणाने उदयपुरको मए गिर्द नवाहके ख़ुद वीरान करदिया. निदान बादशाह बहुतसी फ़ौजके साथ विक्रमी माघ कृष्ण ८ [हि॰ ता॰ २२ ज़िल्हिज = ई॰ ता॰ २५ जैन्यूअरी] को देबारीके बाहर आपहुंचा, और शाहज़ादह आज़म व ख़ानेजहां बहादुर को देखनेके लिये उदयपुर भेजा.

यक्का ताज़ख़ां और रूहुल्लाख़ांको मन्दिरों और मूर्तियोंके तोड़नेके लिये हुक्म

मिला. जब ये लोग उदयपुर पहुंचे, तो अव्वल बारहठ नरू मारागया, जिसका हाल इस तरह पर है - कि महाराणा राजसिंहके पहाड़ोंमें जाने बाद सर्दार लोग अपने अपने बाल बच्चोंको लेकर उदयपुरसे रवाना होतेजाते थे, उस समय महाराणाके बारहठ (१) नरूको किसी आदमीने ताना दिया कि, "जिस दर्वाज़े पर नरूजीने बहुतसे दस्तूर (नेग) लिये हैं, उसको लड़ाईके वक़ कैसे छोड़ेंगे". नरूने उससे तो कुछ भी न कहा, लेकिन् आप अपने बालबच्चोंको महाराणाके पास भेजकर चुनेहुए बीस आदमियों समेत उदयपुरमें महलोंके दर्वाज़ेके साम्हने श्री जगन्नाथरायजीके मन्दिरमें जा बैठा. जब यक्का ताजख़ां और रूहुल्लाख़ां फ़ौज समेत मन्दिरके पास आये, तो जगन्नाथरायजीके मन्दिरकी उत्तरीय खिड़कीसे एक एक आदमी निकलने और मरने मारने लगा. इसी प्रकार जब बीसों आदमी मुक़ाबला करके मरचुके, तब नरू बाहर आया, और बड़ी बहादुरीसे लड़कर मारागया, जिसका चबूतरा मन्दिरके पास बड़के पेड़के नीचे अब तक मौजूद है. इस मुआमलेका मारवाड़ी भाषामें एक गीत छन्द (२) मश्हूर है.

बादशाहने शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरको चालीस हज़ारकी क़ीमतका सर्पेच देकर विक्रमी माघ कृष्ण १० [हि० ता० २४ ज़िल्हिज = ई० ता० २७ जैन्यूअरी] को उदयपुरकी तरफ़ भेजा, और हसन अलीख़ांको बहुत बड़ी फ़ौज देकर महाराणा का पीछा करनेके लिये पहाड़ोंकी तरफ़ रवाना किया.

---

(१) "बारहठ" उन चारणों को कहते हैं जिनको, कि राजपूत लोग अपनी पौल का नेग देते हैं, यानी दुलहा ब्याहनेको आवे तो दुलहनके बापका चारण दर्वाज़े पर खड़ा रहता है, और दुलहा हाथी या घोड़े पर चढ़कर तोरण बांधता है, उस हाथी वा घोड़ेका हक़ उसी चारणका होता है. "बार" दर्वाज़ेको कहते हैं, और दर्वाज़े पर हठ करके अपना नेग लेनेसे "बारहठ" का पद चारणों में अक्सर होता है, और बच्चोंकी पैदाइशके वक़ भी ये लोग नेग लेते हैं.

(२) कहियो नरपाल आविया कटकां । धूण छड़ाल धरापै धौल ॥
पौल बड़ा गज बाज पामतो । पड़ते भार न छोडूं पौल ॥ १ ॥
गजड़ कियो राण छल रूड़ो । कानों दे नीसरूं कठै ॥
अर घोड़ो फेरण किम आवे । तोरण घोड़ो लियो तठै ॥ २ ॥
आखा पीला करे ऊजला । मौ बो रोदां कलह सझ ॥
करग मांडिया नेग कारणै । कलम खांडिया नेग कज ॥ ३ ॥
उदयापुर मांझे अजरायल । कलमां हूं भारत कियो ॥
दन लेतो आवे दरवाजै । देवल आवे मरण दियो ॥ ४ ॥

मीर बख़्शी सर्बलन्दख़ां बीमार होकर मरगया, उसकी जगह रूहुल्लाख़ां मीर बख़्शी बनायागया, और रूहुल्लाख़ांकी जगह तोपख़ानहका दारोग़ा सलाबतख़ां मुक़र्रर हुआ; तहव्वुरख़ांको "बादशाह कुलीख़ां" का ख़िताब मिला.

विक्रमी १७३६ माघ शुक्ल ४ [हि॰ १०९१ ता॰ २ मुहर्रम = ई॰ १६८० ता॰ ५ फ़ेब्रुअरी] को बादशाह उदयसागर की पालपर आये, और महाराणा उदयसिंह के बनवाये हुए तीन मन्दिरोंको गिरवादिया. यहां ही मालूम हुआ, कि महाराणाकी फ़ौजपर हसन अलीख़ांने विक्रमी माघ शुक्ल १ [हि॰ ता॰ २९ ज़िल्हिज = ई॰ ता॰ २ फ़ेब्रुअरी] के दिन हम्ला किया, जिससे डेरे और अनाज वग़ैरह बहुतसा सामान हसन अलीख़ांके हाथ आया. फिर विक्रमी माघ शुक्ल ९ [हि॰ ता॰ ७ मुहर्रम = ई॰ ता॰ १० फ़ेब्रुअरी] को हसन अलीख़ां महाराणाकी फ़ौजसे छीने हुए सामानके बीस ऊंट लदवाकर बादशाह के पास हाज़िर हुआ. इसके बाद अर्ज़ कीगई कि उदयपुरमें बड़े मन्दिरोंके सिवाय १७२ मन्दिर तोड़ेगये; इस पर खुश होकर हसन अलीख़ां को "हसन अलीख़ां बहादुर आलमगीर शाही" का ख़िताब दिया. विक्रमी माघ शुक्ल १० [हि॰ ता॰ ८ मुहर्रम = ई॰ ता॰ ११ फ़ेब्रुअरी] को ख़ानेजहां बहादुरको ख़िलअ़त, जड़ाऊ खंजर और सोनेके सामान समेत घोड़ा देकर मन्दसौरकी तरफ़ भेजा.

विक्रमी फाल्गुण शुक्ल ३ [हि॰ ता॰ १ सफ़र = ई॰ ता॰ ५ मार्च] को बादशाहने चित्तौड़की तरफ़ कूच किया, और वहां पहुंचकर ६३ मन्दिर तुड़वा डाले. विक्रमी फाल्गुण शुक्ल ७ [हि॰ ता॰ ५ सफ़र = ई॰ ता॰ ९ मार्च] को ख़ानेजहां बहादुर चित्तौड़ आया, जिसे विक्रमी फाल्गुण शुक्ल ११ [हि॰ ता॰ ९ सफ़र = ई॰ ता॰ १३ मार्च] को दक्षिणकी सूबेदारी मिली. इसके पीछे हाफ़िज़ मुहम्मद अमीनख़ांको ख़िलअ़त और हाथी देकर अहमदाबादकी तरफ़ रवाना किया. विक्रमी फाल्गुण शुक्ल १४ [हि॰ ता॰ १३ सफ़र = ई॰ ता॰ १६ मार्च] को शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरको बहुतसी फ़ौज समेत चित्तौड़के क़िले पर रहनेका हुक्म दिया, और हसन अलीख़ां व रज़ियुद्दीनख़ां वग़ैरह सर्दारोंको भी शाहज़ादहके मातहत किया. इसके बाद विक्रमी फाल्गुण शुक्ल १५ [हि॰ ता॰ १४ सफ़र = ई॰ ता॰ १७ मार्च] को बादशाह चित्तौड़से अजमेरको चला, और मुकर्रमख़ांको बदनौरका फ़साद दूर करनेके लिये भेजा.

विक्रमी १७३७ चैत्र शुक्ल ३ [हि॰ १०९१ ता॰ १ रबीउ़ल्अव्वल = ई॰ १६८० ता॰ २ एप्रिल] को बादशाह अजमेर पहुंचा, उस वक़्त तोपख़ानहका दारोग़ा सलाबतख़ां किसी क़ुसूरके सबब मन्सबसे बर तरफ़ हुआ,

और हामिदखां, सोजत व जैतारणकी तरफ़के फ़साद दूर करनेको भेजा गया. विक्रमी आषाढ़ कृष्ण १२ [हि॰ ता॰ २६ जमादियुल्अव्वल = ई॰ ता॰ २५ जून] को मुहम्मद अक्बरकी जगह शाहज़ादह मुहम्मद आज़मको चित्तौड़ भेजा, जो विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ९ [हि॰ ता॰ ७ जमादियुल्आख़िर = ई॰ ता॰ ७ जुलाई] को चित्तौड़ पहुंचा, और शाहज़ादह मुहम्मद अक्बर इस बेजा तब्दीलीके सबबसे नाराज़ होकर सवारीमें ही बड़े भाईसे मिलनेके बाद सोजत व जैतारणकी तरफ़ चलागया. आंबेरमें ६६ मन्दिरोंको तोड़कर विक्रमी भाद्रपद कृष्ण १० [हि॰ ता॰ २४ रजब = ई॰ ता॰ २१ ऑगस्ट] को अबूतुराब, अजमेरमें बादशाहके पास आया. इसके बाद बादशाहने ख़िद्मतगुज़ारखांको चित्तौड़की बख़्शी-गरी और वाक़िआ नवीसी दी, फिर गज़न्फ़रखां और मुहम्मद शरीफ़को बहुतसे बन्दूक़ची व ४०० सवारोंके साथ राजसमुद्र तकके मक़ाम (१) मुक़र्रर करनेको भेजा.

विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १२ [हि॰ ता॰ २६ शव्वाल = ई॰ ता॰ २० नोवेम्बर] को हामिदखां मेड़तेकी बग़ावत मिटानेको रवाना हुआ.

रूहुल्लाखां विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ३ [हि॰ ता॰ १ ज़िल्क़ाद = ई॰ ता २६ नोवेम्बर] को शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरके पास सोजतकी तरफ़ भेजा गया, और इसी दिन मुग़लखांको सांभर और डीडवाणेकी हिफ़ाज़तके लिये भेजा. विक्रमी पौष कृष्ण ४ [हि॰ ता॰ १८ ज़िल्क़ाद = ई॰ ता॰ ११ डिसेम्बर] को मुहम्मद नईम शाहज़ादह कामबख़्शका बख़्शी भी अपनी जमइयतके साथ शाहज़ादह मुहम्मद अक्बर के पास गया. इसी दिन भदौरिया उद्योतसिंहको चित्तौड़की क़िलेदारी मिली. विक्रमी पौष शुक्ल ८ [हि॰ ता॰ ६ ज़िल्हिज = ई॰ ता॰ ३० डिसेम्बर] को राठौड़ राजसिंह और पृथ्वीसिंहको बादशाहने दो दो हज़ार रुपया इनआम दिया.

यह ऊपर लिखा हुआ बयान 'मआसिरे आलमगीरी' से लिया है, परन्तु 'मुन्त-ख़बुल्लुबाब' में ख़फ़ीखां इस तरह पर लिखता है—

बादशाह आलमगीर उदयसागर तालाब पर थे, और शाहज़ादह आज़मकी फ़ौज राठौड़ोंको मारने और क़ैद करनेमें मश्ग़ूल थी, गल्लेको मेवाड़में जानेसे रोकती, और खेती बर्बाद करती थी. महाराणा राजसिंहकी मददके लिये महाराजा जशवन्तसिंहके पच्चीस हज़ार सवार एकट्ठे होगये. उन्होंने तेज़ीके साथ बादशाही फ़ौजसे मुक़ाबला किया, कई बार शाही फ़ौजकी रसद लूटी; एक बार दो ढाई हज़ार शाही फ़ौजके सवारोंको धोखा देकर पहाड़ोंमें

(१) इन मक़ामोंके मुक़र्रर करनेसे मालूम होता है कि फिर आलमगीरका इरादह अजमेरसे उदयपुरकी तरफ़ जानेका था, या शाहज़ादहको सुलहके लिये भेजनेका.

ले गये, जहां ख़ूब लड़ाई हुई, और शाही मुलाज़िम मारे गये; बहुतों का तो पता तक नहीं मिला; इस पर बादशाही सर्दारोंको बहुत गुस्सा पैदा हुआ, और एक दम लड़ाई करनेका विचार किया. राजपूतोंने भी रसद लूटनी बन्द करके पहाड़ और घाटियोंको रोककर रात बिरात बेख़बर पाकर छापा मारना शुरू किया. बादशाही मुलाज़िम तहव्वुरख़ांने राजपूतोंकी बस्तियोंको उजाड़कर मकानोंको गिराया, दरख़्तों व बाग़ोंको काटडाला, और बाल बच्चे, स्त्री, वगैरह, जो पाये, क़ैद किये; ऐसे ही अहमदाबादके सूबेदार मुहम्मद अमीनख़ांने भी अक्सर राजपूतों को मार कर हटादिया.

इस ज़मानेका अब व्यौरेवार ठीक ठीक हाल मिलना कठिन है, अगर्चि फ़ार्सी तवारीख़ोंसे सिलसिलेवार हाल मिलता है, परन्तु ख़ुशामदसे भरा हुआ है, जैसे कि 'मिराते अहमदी' की पहिली जिल्दके ४६२ पृष्ठमें लिखा है– कि, "जिस वर्ष बादशाही ज़बर्दस्त फ़ौज राजपूतानह के सर्दारों और ख़ास कर राणाके धम्काने व पीछा करने पर मुक़र्रर थी, राजपूत लोग घरोंको छोड़ कर पारेकी तरह उछलते, और एक जगह नहीं ठहर सक्ते थे. दूसरे– हज़रत बादशाह थोड़े दिनोंके लिये चित्तौड़में ठहरे थे, उस वक्त भीमसिंह राणाका छोटा बेटा बादशाही फ़ौजके डरसे एक फ़ौजकी टुकड़ीके साथ तंग पहाड़ोंसे निकल कर गुजरातके इलाके को भागा, और वहां जाकर कमअक़्लीसे बड़नगर वगैरह क़स्बे और गांवोंको लूटने बाद फिर पहाड़ोंमें चलागया".

अब सोचना चाहिये कि यदि महाराणाके छोटे कुंवर भीमसिंह डरे होते, तो पहाड़ों को छोड़कर साफ़ मुल्क गुजरातमें क्यों जाते, फिर डरके मारे तो उधर गये, और वहां जाकर गांव और क़स्बा लूटा. तीसरे– जिन पहाड़ोंसे डरकर भागे थे, गांव वगैरह लूटकर फिर उन्हींमें आघुसे. सिर्फ़ इस लिखावटसे ही 'मिराते-अहमदी' वालेकी तरफ़दारी और ख़ुशामद लोगोंके ध्यानमें आजायगी.

अब जो राजपूतानह के बड़वा भाटों अथवा ख्यात व शाइरोंकी पुस्तकों पर तवज्जुह कीजाय, तो वे भी घमंड और शेख़ीसे ख़ाली नहीं हैं. इसके सिवाय फ़ार्सी तवारीख़ों ही से काम लें तो उनमें मुसल्मानोंकी शिकस्त और राजपूतोंकी कारगुज़ारी का ज़िक्र नहीं मिलता. निदान यही सोच विचार कर राजपूत लोगोंका बाक़ी हाल राजसमुद्रकी प्रशस्तियों, पत्रों और पुस्तकोंसे, जो उसी वक्तकी हैं, छांट छांटकर लिखा जाता है.

यह एक बात इस देशके लोगोंकी ज़बानी सुनीगई है, कि महाराणा राजसिंह

ने राजसमुद्र तालाबकी पाल तोड़नेके इरादेपर आलमगीरकी अवाई सुनकर उसी जगह लड़ाईका इरादह किया था, इसपर कुल सर्दारोंने मुनासिब समझकर महाराणाको तो मना किया, और आप सब लोग लड़नेके लिये पालपर जा जमे, लेकिन् सीसोदिया ग़रीबदास कर्णसिंहोतके बेटे श्यामसिंहने, जो बादशाही फ़ौजमें था, अर्ज़ी लिख भेजी, कि बादशाह तालाबको उम्दह बना हुआ देखकर उसकी पालको हर्गिज़ नहीं तुड़ावेगा, और अपने राजपूत सर्दारोंके नाहक़ मारे जानेसे आगेको तक्लीफ़ उठानी पड़ेगी, इसलिये दर्बारके पालपर रहनेके वक्त जैसी होती है, वैसी तय्यारी करादीजावे, और सर्दारोंको बुला लिया जावे. यह सलाह पक्की होनेपर सर्दारोंके नाम बुलावेका काग़ज़ लिखा गया, उसमें सब सर्दारों के नाम, जो पालपर मौजूद थे, लिखे, लेकिन् बणोलके ठाकुर सांवलदास (१) के भाई राठौड़ अनन्दसिंहका नाम भूलसे रहगया.

यह पत्र आने पर सब लोग महाराणाके पास चलेगये, और राठौड़ अनन्द-सिंह अपने कितने एक साथियों समेत बादशाही फ़ौजसे लड़कर पालपर ही मारा-गया, जिसकी छत्री महाराणाने बनवाई, जो अबतक मौजूद है.

बादशाहने तालाब और पालकी ख़ूबसूरती और तय्यारी देखकर उसका कुछ भी बिगाड़ न किया.

जब आलमगीर बादशाह मांडलसे रवाना होकर उदयसागरके पास पहुंचा, तो पहिले रास्तेमें राजसमुद्र तालाबके पास मंगरोप महाराज सबलसिंह पूरावत, भींडरके महाराज मुहकमसिंह शक्तावत और कई चूंडावत सर्दारोंने शाही फ़ौजपर छापा मारा; इससे बीस नामी राजपूत कई बादशाही मुलाज़िमों को मारकर मारे गये.

चीरवेके घाटेके पास, जहां शाहज़ादह अक्बर और तहव्वुरख़ां ठहरे हुए थे, झाला प्रतापसिंहने छापा मारा, और शाहज़ादहकी फ़ौजसे दो हाथी लेजाकर महाराणाको नज़ किये. इसी तरह भदेसरके जागीरदार बल्ला राजपूतोंने भी कई बार छापा मारा.

बादशाह आलमगीरने नीचे लिखे हुए मक़ामों पर थाने बिठाये—

चित्तौड़, पुर, मांडल, मांडलगढ़, बैराठ, भैंसरोड़, नीमच, चलदू, सतखंडा, जीरण, ऊंटाला, कपासण, राजनगर और उदयपुर.

---

(१) इस सांवलदासके बेटे कृष्णदासको महाराणा जगत्सिंहने कैलवा जागीरमें दिया था, जो अबतक उसकी औलादके क़ब्ज़ेमें है.

कुंवर उदयभान और अमरसिंह चहुवानने २५ सवारोंके साथ उदयपुरके शाही थानेपर छापा मारा; और सहीह सलामतीसे निकलकर माल अस्बाब, जो हाथ आया, महाराणाको नज़ किया- इन्हें महाराणाने खुश होकर १२ ग्राम इनायत किये.

घाणेरावके ठाकुर मेड़तिया राठौड़ गोपीनाथ और देसूरीके ठाकुर सोलंखी विक्रमादित्यने बड़ी बहादुरीके साथ इस्लामखां रूमीको, जो १२ हज़ार फ़ौज लिये आता था, रोका, और घाटेमें नहीं घुसने दिया, खूब लड़ाई हुई, आख़िर इस्लामखां रूमी शिकस्त खाकर हटगया. महाराणाने चार हज़ार फ़ौजके साथ कुंवर भीमसिंहको गुजरातकी तरफ़ भेजा, इन्होंने बड़नगरके ज़िलेको लूटा, और तीन सौ छोटी मस्जिदें तुड़वा डालीं, फिर बड़नगरके निवासियोंसे फ़ौज ख़र्चके चालीस हज़ार रुपये लेकर पहाड़ोंमें चले आये; हसनअलीखां जंगी फ़ौज लेकर पहाड़ोंमें घुस आया, और ऊंदरी, पेई, कोटड़ा और गोराणाकी नालमें होताहुआ झाड़ोल पहुंचा.

महाराणाने रावत रत्नसिंह चूंडावत कृष्णावत रघुनाथसिंहोत, सलूंबर व पारसौलीके चहुवान राव केसरीसिंह, चूंडावत रावत महासिंह मेघावत राजसिंहोत और डोडिया ठाकुर नवलसिंह, चारोंको एक फ़ौजके साथ लड़नेके लिये भेजा. इन्होंने रातमें दुश्मनकी फ़ौज पर छापा मारा.

राजसमुद्रकी प्रशस्तिमें हसनअलीखांके साथ दूसरे सर्दार अब्दुल्लाखांका नाम लिखा है, परन्तु फ़ार्सी तवारीख़ोंमें इसका नाम कहीं नहीं है. अल्बत्ता यक्का ताज़खां, जिसे कि आलमगीरने उदयपुरके मन्दिर तोड़नेपर मुक़र्रर किया था, उसके तीन बेटोंमें से एक का नाम अब्दुल्लाखां था, शायद वही हसन-अलीखांके साथ हो.

इस लड़ाईसे शाही फ़ौजका ज़ियादह नुक्सान हुआ, और हसनअलीखां जान लेकर बादशाहके पास पहुंचा. डोडिया ठाकुर नवलसिंह अपने बेटे मुह्कमसिंह और कृष्णसिंह समेत इस लड़ाईमें बड़ी बहादुरीके साथ काम आया. महाराणाने नाही, व कोटड़े ग्राममें आकर अपने सब सर्दारोंको हुक्म दिया, कि मेवाड़में, जो मुसल्मानोंने थाने बिठाये हैं, एक दम सब उठा दो.

बादशाह अपनी फ़ौजका नुक्सान सुनकर उदयपुरसे चित्तौड़की तरफ़ रवाना होगया.

बान्सीके रावत केसरीसिंहके बेटे गंगादास शक्तावतको महाराणाने शाही फ़ौजके पीछे भेजा; उसने जाते ही हाथियोंके गिरोहपर छापा मारा, नौ हाथी छीन लाया,

और महाराणाको नज़ किये (१). आलमगीर तीसरे शाहज़ादह अक्बरको अपनी जगह छोड़कर चित्तौड़से अजमेरको चल दिया.

महाराणाने बदनौरके ठाकुर सांवलदास राठौड़को कुछ फ़ौज देकर बदनौरकी तरफ़ भेजा, जिसने रूहुल्लाखां पर फ़त्ह पाई, महाराणाने बड़े कुंवर जयसिंहको तेरह हज़ार सवार और छब्बीस हज़ार पैदल देकर चित्तौड़की तरफ़ शाहज़ादह अक्बरसे लड़नेको भेजा. कुंवरने विक्रमी १७३७ आषाढ़ [हि० १०९१ जमादियुस्सानी = ई० १६८० जुलाई] को सादड़ीके झाला चन्द्रसेन, बेदलाके राव सबलसिंह चहुवान, रावत रत्नसिंह चूंडावत, बान्सीके कुंवर गंगादास शक्तावत, बीजोल्याके पुंवार वैरीशाल, बान्सीके रावत केसरीसिंह, भींडरके महाराज मुह्कमसिंह शक्तावत, सलूंबर व पारसौलीके राव केसरीसिंह चहुवान, महाराज भगवन्तसिंह, कोठारियाके रावत रुक्माङ्गद चहुवान, राव रत्नसिंह खीची, आमेटके चूंडावत रावत मानसिंह, शक्तावत रावत मुह्कमसिंह, चूंडावत रावत केसरीसिंह, चूंडावत माधवसिंह, शक्तावत कान्हजी, वगैरह सर्दारोंको दस हज़ार सवार और दस हज़ार पैदल देकर चित्तौड़की तलहटीमें शाहज़ादहकी फ़ौजपर हम्ला करनेको भेजा. उस वक़ अंधेरी रात और पानीकी बूंदें गिरती थीं; राजपूत लोग एक दम टूट पड़े, किसीने सामना किया, कोई यों ही भागा, बहुतसे आदमी आपस हीमें लड़ मरे. राजपूतोंने खूब दिल खोलकर तलवार, कटार, और बर्छोंसे सवाल जवाब किये. फिर हाथी, घोड़ा, डेरा, अस्बाब, नक़ारा निशान, जो हाथ आया, लूट लिया; और सूर्य निकलनेसे पहिले कुंवर जयसिंहके पास चलेआये.

---

(१) इस लड़ाईके बारेमें कर्नेल् टॉड लिखता है, कि बादशाह आलमगीरकी सर्केशियन बेगमको महाराणा राजसिंहने गिरिफ्तार किया, और उसको बहिन बनाकर वापस बादशाहके पास भेजदिया. इसके सिवाय नाथद्वारेके गोसांइयों की 'प्रागट्य' नाम पुस्तकमें भी लिखा है, कि आलमगीरकी रंगी चंगी बेगमको महाराणाने गिरिफ्तार किया था, लेकिन् हमको इन लेखोंके सिवाय और कोई पुख़्ता सुबूत नहीं मिला है. नाथद्वारेकी पुस्तकमें औरंगज़ेबकी बेगम औरंगाबादीको बिगाड़ कर रंगी चंगी लिखा हो तो वह बेगम बादशाहके उदयपुरसे अजमेर पहुंचनेके बाद आगरेसे अजमेरमें विक्रमी १७३७ ज्येष्ठ कृष्ण २ [हि० १०९१ ता० १६ रबीउस्सानी = ई० १६८० ता० १७ मई] को आई थी- शायद बादशाहके आते जाते वक़ कोई दूसरी बेगम पर यह हाल गुज़रा हो तो मालूम नहीं, क्योंकि निर्मूल बातकी ज़ियादह प्रसिद्धि नहीं होती, और यह बात बहुत मश्हूर है, और फ़ार्सी तवारीखोंका इस बातसे एतिबार नहीं है कि उन्होंने मुसल्मानोंकी शिकायतें बिल्कुल छोड़ दीं.

कुंवरने इन लोगोंकी तारीफ़ करके हिम्मत दिलाई, और इज़्ज़त बढ़ा बढ़ा कर जागीरें दीं; लूटे हुए सामानमें से, जो रखनेके लायक़ था, लिया; बाक़ी इन्हीं लोगोंको बांट दिया.

इसके बाद कुंवर जयसिंह अपने साथी सर्दारों समेत पूर्वी पहाड़ोंमें ठहरकर यहांसे मालवा वगैरह बादशाही मुल्कोंको नुक्सान पहुंचाते रहे, परन्तु बर्सातका मौसम आजानेके सबब लड़ाईपर जियादह ज़ोर नहीं दिया, और बादशाही तरफ़से भी हम्ला न हुआ. कुंवर जयसिंहकी इस हम्ला आवरीका हाल फ़ार्सी तारीख़ वालोंने बिल्कुल छोड़दिया, शाहज़ादह अक्बरके एवज़ आज़मको चित्तौड़ भेजना, और अक्बरका नाराज़ होकर मारवाड़की तरफ़ जाना, इस लड़ाईके हालको ज़ाहिर करता है; क्योंकि आलमगीरने नाराज़ होकर अक्बरकी बदली की होगी. इस बड़ी लड़ाईके सिवाय इन महाराणाका और कोई हाल जिसके ख़त्म होनेसे पहिले वह गुज़रगये, लिखनेके लायक़ नहीं मिलता.

विक्रमी १७३७ कार्तिक शुक्ल १० [हि० १०९१ ता० ८ शव्वाल = ई० १६८० ता० ३ नोवेम्बर] को महाराणा राजसिंहने कुंभलगढ़ परगने नलाके ग्राम ओड़ा में इन्तिक़ाल किया. इनके देहान्तकी बाबत अक्सर लोगोंका ख़याल है, कि उनको ज़हर दियागया.

रईस, आदमी बीमार होकर मरे तो जादूसे जान देनेका शुब्ह, और एकदम किसी बीमारीसे प्राण निकल जांय तो ज़हर देनेकी फ़र्याद होती है, परन्तु किसी वक़् बेशक बे ईमान लोग ज़हर देकर भी अपने मालिकको मार डालते हैं. बहुतसे लोग इनको विष देनेके बारेमें यह कारण बताते हैं. पहिला- तेज़ मिज़ाजीके सबब सब लोगोंकी नाराज़गी; दूसरे- महाराणाका यह विचार था कि राणी, कुंवर, पुरोहित, और बारहठके मार डालनेका पाप दूर करनेके लिये लड़ाईमें माराजाना, चाहिये; इससे लोगोंकी यह राय थी, कि इन्हें तो आप पाप उतारना है, लेकिन् दूसरे हज़ारों आदमियोंकी जान देकर देशको क्यों बर्बाद करते हैं.

तीसरे- आलमगीर और उसके बेटोंके मुवाफ़िक़ इन महाराणाके कुंवर भी उनके स्वभावसे कांपते थे, कि हमारी जान भी कभी ख़तरेमें न आजावे, क्योंकि कुंवर सुल्तानसिंहको महाराणाने मारडाला था, और कुंवर सर्दारसिंह भी ज़हर खाकर मरगये थे. अगर इन ऊपर लिखी हुई बातोंसे महाराणाको विष दियागया हो तो तअ़ज्जुब नहीं है, और दूसरी यह बात भी ज़हर देनेकी ताईद करती है कि महाराणाने हुक्म दिया कि कोठारियासे पूर्व चौगान (मैदान) में तलवार, बर्छे और

कटारसे लड़ मरना उचित है- यही सोचकर शाहज़ादह आज़मको लिख भेजा, उसने भी खुशीसे कुबूल करके लड़ाईकी तय्यारी की, क्योंकि इसे महाराणापर फ़तह पानेकी बहुत आर्ज़ू थी. आख़िरकार बादशाही फ़ौज रुक्मगढ़के पास आपहुंची, परन्तु महाराणाको सब मुसाहिबोंने रोका और कहा, कि अपनी सब फ़ौज पहिले एकठी कर ली जावे, फिर लड़ना चाहिये. इसपर महाराणाने कहा, कि मुसल्मानोंको मैं बुलवा चुका हूं, उनसे झूठा पड़ूंगा; जिसपर कोठारियाके रावत रुक्माङ्गदने कहा, कि आपके एवज़ बादशाही फ़ौजसे मैं लड़ूंगा, और यह बहादुर सर्दार उसी प्रकार अपने राजपूतों समेत लड़नेको जा पहुंचा; बड़ी बहादुरीके साथ लड़ाई की (१). इसके बाद महाराणा नेणवारा ग्रामसे निकलकर कुंभलमेर जाते थे, सुबहके वक़् ओड़ा नाम ग्राममें पहुंचे, वहां खिचड़ी तय्यार करवाई, और दधिवाड़िया चारण खेमराजके बेटे आशकरणको, जिसे महाराणा भाई कहकर पुकारते थे, साथ लेकर भोजनको बैठे, थोड़ी देरके बाद दोनोंका देहान्त होगया.

इसी बातपर एक कविका मारवाड़ी भाषामें बनायाहुआ दोहा इस तरह मश्हूर है:-

दोहा.

ओड़ै रतन संघारिया । राजड़ आश करन्न ॥
ऊ हिंदवाणी पातशा । ऊ पातशा बरन्न ॥ १ ॥

इनका जन्म विक्रमी १६८८ कार्तिक कृष्ण २ [हि० १०४१ ता० १६ रबीउल्अव्वल = ई० १६३१ ता० १२ ऑक्टोबर] को मेड़तिया राठौड़ राजसिंहकी बेटी जनादे बाईसे हुआ था.

इन महाराणाका छोटा क़द, बड़ी आंखें, चौड़ी पेशानी और गेहुआं रंग था; मिज़ाज तेज़ व सख़्त, लेकिन् किसी किसी मौक़ेपर रहम भी करते थे, ऐश आराम व फ़य्याज़ी ज़ियादह पसन्द थी; दूसरेकी सलाहपर कम चलने वाले और खुद बहादुर थे. इनके समयमें प्रजा प्रसन्न और ख़ज़ाना भरपूर था, धर्मके पक्के और आक़िबत (परलोक) का पूरा विचार रखते थे.

इन्होंने ब्राह्मणोंको बहुतसा दान दिया, और लाखों रुपया चारण आदि

(१) कोठारिया वालोंके बयानसे रुक्माङ्गदका इसी लड़ाईमें माराजाना ज़ाहिर होता है, परन्तु महाराणा जयसिंहकी जब आलमगीरसे सुलह हुई, तब उसका उस वक़्के काग़ज़ोंसे ज़िन्दा होना साबित है, इससे मालूम होता है, कि ज़ख़्मी होकर बचा, या छापा मारकर चला आया होगा.

कवियोंको इनायत किया था. (१) इनके ख़ौफ़से मुलाज़िम हमेशह डरे हुए रहते थे, तो भी राजपूत लोग सच्चे ख़ैरस्वाह और बहादुर थे.

इन महाराणाके महाराणियां नीचे लिखे अनुसार थीं:-

१ बूंदीके राव शत्रुशालकी बेटी महाराणी हाड़ी कुंवरांबाई.
२ राव मनोहरदासकी बेटी महाराणी भटियाणी कृष्णकुंवर.
३ राठौड़ राव कल्याणदासकी बेटी महाराणी राठौड़ आनन्द कुंवर.
४ झाला बिजयराजकी बेटी महाराणी झाली केसर कुंवर.
५ बीझोल्यांके पुंवार राव इन्द्रभाणकी बेटी महाराणी पुंवार सदा कुंवर.
६ झाला बिजयराजकी बेटी महाराणी झाली रूपकुंवर.
७ बीरपुरा जशवन्तसिंहकी बेटी महाराणी बीरपुरी दुर्गावतां.
८ बेदलाके पूर्विया चहुवान राव रामचन्द्रकी बेटी महाराणी चहुवान जगीस कुंवर जिनके पुत्र राजा भीम हुए.
९ पुंवार जुझारसिंहकी बेटी महाराणी पुंवार बदन कुंवर.
१० चहुवान राव एथ्वीराजकी बेटी महाराणी चहुवान रत्नकुंवर.
११ झाला कर्णसिंहकी बेटी महाराणी झाली पैप कुंवर.
१२ सादड़ीके झाला रायसिंहकी बेटी झाली रत्नकुंवर.
१३ पुंवार दयालदासकी बेटी महाराणी पुंवार आसकुंवर.
१४ खीची राव मानसिंहकी बेटी महाराणी खीचण सूरजकुंवर.
१५ राठौड़ जोधसिंहकी बेटी महाराणी राठौड़ हरकुंवर.

---

(१) यह महाराणा आप भी कविता करते थे, जिन्होंने एक छप्पय अपना कहा हुआ राज समुद्र तालाबकी पालपर महलके गोखड़ेकी पूर्वी फेटमें खुदाया था, महाराणा श्री सज्जनसिंहके समयमें जब कि मरम्मत कीगई, तो कारीगरोंने भूलसे उन अक्षरोंपर क़लई फेरदी, जिससे वह अब साफ़ नहीं पढ़े जा सके,

छप्पय.

कहां राम कहां लखण । नाम रहिया रामायण ।
कहां कृष्ण बलदेव । प्रगट भागोत पुरायण ॥
बालमीक सुक व्यास । कथा कविता न करंता ।
कुण सरूप सेवता । ध्यान मन कवण धरंता ॥
जग अमर नाम चाहो जिके । सुणो सजीवण आखरां ।
राजसी कहै जग राणरो । पूजो पांव कवीसरां ॥ १ ॥

१६ कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी बेटी महाराणी राठौड़ चारुमती बाई.
१७ पुंवार जुझारसिंहकी बेटी महाराणी पुंवार रामरसदेकुंवर, जिनके पुत्र महाराणा जयसिंह हुए.
१८ जैसलमेरके भाटी रावल सबलसिंहकी बेटी महाराणी भटियाणी चन्द्रमती बाई, जिनके पुत्र इन्द्रसिंह, गजसिंह, सुल्तानसिंह, सर्दारसिंह, बहादुरसिंह, और कन्या अजबकुंवर बाई थी.

ये १८ महाराणियां और आठ कुंवर थे, जिनमें से कुंवर सूरतसिंहकी माता का नाम मालूम नहीं कि कौनसी महाराणीसे थे.

महाराणी राठौड़ चारुमती बाई कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी बेटीने एक बावड़ी राजनगरमें पश्चिमकी तरफ़ बनवाई, और उसकी प्रतिष्ठा विक्रमी १७३२ [हि० १०८६ = ई० १६७५] में हुई थी, देबारीके भीतर झरणाकी सरायके पास त्रिमुखी बावड़ी महाराणी पुंवार रामरसदे बाईने बनवाई थी, जिसकी विक्रमी १७३३ [हि० १०८७ = ई० १६७६] में प्रतिष्ठा हुई, चौबीस हज़ार रुपये इस बावड़ीके बनवानेमें लगे थे- (शेषसंग्रह नम्बर ९).

महाराणा राजसिंहने कुंवरपदेमें "सर्वऋतु विलास" बाग़, और महल बनवाया, और फिर देबारी (देवड़ाबारी- देवबारी मश्हूर) के घाटेका कोट, दर्वाज़ा, बावड़ी और छोटा तालाब बनवाया.

इस घाटेका कोट और छोटा दर्वाज़ा पहिले महाराणा उदयसिंहका बनवाया हुआ, विक्रमी १६७१ [हि० १०२३ = ई० १६१४] में शाहज़ादह खुर्रमने गिरवा दिया था, उसी छोटे घाटेका नाम "देवबारी" इस तरह पड़ा होगा, कि या तो वहां किसी देवताका मन्दिर बनाया हो, या देवड़ा लोगोंके नामसे रक्खा गया हो.

इन महाराणाके छोटे भाई अरिसिंहकी धायने जगन्नाथरायजीके मन्दिरसे उत्तरी तरफ़ बाज़ारमें एक मन्दिर बनवाया था, जिसकी प्रतिष्ठा विक्रमी १७०० माघ शुक्ल १२ [हि० १०५३ ता० १० ज़िल्क़ाद = ई० १६४४ ता० २१ जैन्युअरी] को हुई- (शेषसंग्रह नम्बर १०).

बीकानेरका इतिहास.

जुग्राफ़ियः

[महाराणा राजसिंहने गद्दीपर बैठतेही अपनी बहिनका विवाह बीकानेरके महाराजा कर्णसिंहके कुंवर अनूपसिंहके साथ किया था, इस लिये वहांका तारीख़ी हाल यहां लिखाजाता है.]

बीकानेरका राज्य २७ अंश १२ कला और ३० अंश १२ कला दक्षिणोत्तर, और ७२ अंश १५ कला और ७५ अंश ५० कला पश्चिम पूर्व है; रक़्बा २२३४० मील मुरब्बा है. सालाना आमदनी राजपूताना गज़ेटियर में दस लाख पांच हज़ार रुपये लिखी है, जिसमें ज़मीनी महसूलके चार लाख पचासी हज़ार नौ सो सत्तानवे रुपये हैं, बाक़ी दाण दण्ड वग़ैरहसे लिया जाता है; आबादी ५०९०२१ आदमीकी है. मुल्कमें पानी बहुत कम और रेता कस्रतसे है.

३५० वा ४०० फुटतक खोदनेसे कुओंमें पानी निकलता है, लेकिन् किसी २ कुएका पानी ऐसा ज़हरीला होता है, कि आदमी या जानवर पेट भरके पीवे, तो मर जावे, इसको वहां वाले "बिराहिया" पानी बोलते हैं. बाज़े मालदार आदमी पक्के हौज़ बनवाकर बर्साती पानी भररखते हैं. इस मुल्कमें कोई नदी नहीं है, एक छोटासा नाला शैखावाटीकी तरफ़से आकर रेतमें ग़ायब होजाता है.

यहांपर खेजड़ी, कैर, फोग, और बेरके पेड़ अक्सर होते हैं. ग़ल्ला ज़ियादहतर बाजरी और मोठ होता है, इसके सिवाय तिल, मूंग भी पैदा होते हैं, और नमककी एक झील सुजानगढ़की तरफ़ छः मील लंबी और दो मील चौड़ी है, पर थोड़े दिनोंमें ही सूख जाती है; दूसरी बीकानेरसे ४० मील पूर्वोत्तरको है, लेकिन् इन दोनों झीलोंका नमक ख़राब होता है, जिसको ग़रीब लोग ही काममें लाते हैं.

यहांकी आब हवा देसियोंके लिये किसी क़द्र अच्छी, और यूरोपियन वग़ैरह लोगों के लिये ख़राब है. मौसम गर्म और सर्द दोनों सख़्त होते हैं, यानी सर्दीके दिनों में पालेसे दरख़्त जलजाते हैं, और गर्मीमें लूसे अक्सर आदमी मरजाते हैं, बर्सात बहुत कम होती है, यहांतक कि एक मेह पड़नेको कम दरजा, और दो होनेको मामूली बात, और तीन मेह पड़जानेको बहुत अच्छा समय मानते हैं.

इस मुल्कका उम्दह मेवा तर्बूज़ है, मवेशी सब क़िस्मके होते हैं, परन्तु ऊंट और बकरी इस मुल्कके निहायत उम्दह होते हैं.

आदमी मिहनती होते हैं, उनका खाना और पहन्ना थोड़े ख़र्चमें होसक्ता है, पानीकी कमीसे ग़िलाज़त इस दरजेपर है, कि नहाना तो दर किनार बल्कि हाथ मुंह धोनेमें भी किफ़ायत कीजाती है.

तवारीख़.

जोधपुरके राव रणमल्लके बेटे राव जोधाका छोटा बेटा बीका, जिसका जन्म विक्रमी १४९५ श्रावण शुक्ल १५ (१) [हि० ८४२ ता० १४ सफ़र = ई० १४३८ ता० ७ जुलाई] को हुआ था, विक्रमी १५२२ आश्विन शुक्ल १० [हि० ८७० ता० ८ सफ़र = ई० १४६५ ता० १ ऑक्टोबर] को अपने पिता जोधासे विदा होकर नई ज़मीनपर क़ब्ज़ा करनेके लिये जांगलूकी तरफ़ रवाना हुआ; उस वक़ उसके हमराह नीचे लिखे हुए आदमी थे-

काका कांधल, काका रूपा, काका मांडण, काका मंडला, काका नाथू, भाई जोगायत, भाई बीदा, सांखला नापा, परिहार बेला साहणी; और काम्दारोंमें से वैद्य लाला, लाखणसी, कोठारी चौथमल्ल, बछावत बरसिंह, पुरोहित विक्रमसी, साहूकार राठी साला वग़ैरह १०० सवार और ५०० पैदलकी भीड़भाड़ थी.

जब बीका देष्णोकमें पहुंचा, तो वहां उसको चारण ख़ान्दानकी करणी नामी एक स्त्री, जिसे कि चारण लोग अपनी कुल देवीका अवतार मानते हैं, मिली; और बीकाको वरदान दिया कि तुम्हारा राज्य इस देशमें बहुत बढ़ेगा.

फिर बीका श्री करणी देवीकी इजाज़तसे तीन वर्षतक चूंडासरमें, छः वर्ष तक देष्णोक में, इसके बाद तीन वर्ष कोड़मदेशरमें, और दस वर्ष जांगलूमें रहा. फिर भाटियों वग़ैरह वहांके रहने वालोंसे लड़ाइयां कीं; एक लड़ाईमें भाटी कलकर्ण तीन सौ भाटी राजपूतों समेत मारागया, और पूंगलके भाटी शैख़ाने श्री करणीदेवीके समझानेसे अपनी बेटी बीकाको ब्याहदी. इसके बाद बीकाको अपनी राजधानी और क़िला बनानेकी फ़िक्र हुई, तब सांखला नापा वग़ैरह राजपूतोंकी सलाहसे विक्रमी १५४२ [हि० ८९० = ई० १४८५] में

---

(१) हमको एक जन्मपत्री राव बीकाकी मिली, जिसमें विक्रमी १४९७ प्रथम श्रावण शुक्ल १५ [हि० ८४४ ता० १४ सफ़र = ई० १४४० ता० १६ जुलाई] लिखा है, लेकिन् बीकानेरकी तवारीख़में विक्रमी १४९५ है, इस लिये मूलमें वही लिखा गया.

राती घाटीपर क़िला बनानेकी नीव डाली, और विक्रमी १५४५ वैशाख शुक्ल २ [हि० ८९३ ता० १ जमादियुल्‌अव्वल = ई० १४८८ ता० १५ एप्रिल] शनिवारको वहां शहर बसाकर उसका नाम बीकानेर रक्खा, और उसे अपनी राजधानी बनाया; उस वक़्तका एक दोहा मारवाड़ी भाषामें बनाहुआ इस तरहपर है-

दोहा.

पनरे से पैंतालवे । सुद वैशाख सुमेर ॥
थावर बीज थरप्पियो । बीके बीकानेर ॥ १ ॥

इस देशपर शुरूमें जाट लोग हुकूमत करते थे, राव बीकाने उन्हें दबाकर अपने मातह्त बनाया.

बीकानेरका हिन्दी इतिहास, जो कर्नेल् पाउलेट् साहिब रेज़िडेण्ट मारवाड़की मारिफ़त हमारे पास आया है, उसमें राव बीकाका तीन हज़ार ग्रामोंपर क़ब्ज़ा करना लिखा है; और कर्नेल् टॉड दो हज़ार छः सौ सत्तर गांवोंपर इख़्तियार होना बयान करते हैं. बीकाने भाटी, बिलोच और जाटोंसे छीनकर इस देशको अपने क़ब्ज़ेमें किया; रावको उसी चारण वंशकी श्री करणीदेवीपर ज़ियादह विश्वास था, जिससे सारे काम उसीकी हिदायतसे करते थे.

बीकाका काका कांधल तिहत्तर वर्ष की उम्र में हिसारके सूबेदार सारंगख़ां (शायद इसका सहीह नाम शाहरुख़ होगा) से लड़कर मारागया, जिसके बदलेमें बीकाने चढ़ाई करके उस मुसल्मानको मारा.

इसी तरह अजमेरके सूबेदार मलिकख़ान्‌ने मेड़ताके मालिक राव जोधाके बेटे बरसिंहको अजमेरमें क़ैद कर दिया था, उसके भाई दूदाको बीकाने मदद पहुंचाकर बरसिंहको छुड़ाया. बीकानेर वाले मलिकख़ान्‌को मांडूके बादशाहका सूबेदार बतलाते हैं, लेकिन् यह लोहानी ख़ान्दानका पठान था, और गुजरात राजस्थानमें इसका नाम मलिक यूसुफ़ लिखा है, जो पश्चिमी अफ़ग़ानोंमेंसे हिन्दुस्तानमें आया था.

जब विक्रमी १५४५ [हि० ८९३ = ई० १४८८] में राव जोधाका देहान्त हुआ, और राव सांतल मारवाड़की गद्दीपर बैठा. विक्रमी १५४८ [हि० ८९६ = ई० १४९१] में यह भी मुसल्मानोंसे लड़कर मारागया; जिसपर उसका भाई सूजा जोधपुरका मालिक बना, इस वक़्त राव बीकाने जंगी फ़ौजके साथ जोधपुरपर चढ़ाई की, क्योंकि सांतलके बाद जोधाके बेटोंमें यही सबसे बड़ा था, इसलिये जोधपुरको दबाना चाहा. वहां तो सांतलकी गद्दीपर सूजा बैठ चुका था; उसने जोधपुरके

क़िलेको मज़्बूत किया. बीकाने शहर और क़िलेपर घेरा डाला, आख़िर इस शर्तपर फ़ैसला हुआ, कि जो चीज़ें इज़्ज़त और करामातकी समझी जाती थीं, और जो नीचे लिखी हैं, राव बीकाने लेलीं, और जोधपुरका राज मारवाड़ समेत सूजाके क़ब्ज़ेमें रहा.

राव जोधाकी ढाल, तलवार, तख़्त, छत्र, चंवर, और सांखला हरबूकी दीहुई ढाल, तलवार, कटार, लक्ष्मी नारायण हिरण्यगर्भ और नागणेची कुलदेवीकी मूर्ति, करंडभंवर ढोल, वैरीशाल नक़ारा, दलशृंगार घोड़ा, वग़ैरह. यह चीज़ें लेने बाद राव बीका देश्णोकमें श्री करणी देवीका दर्शन करके बीकानेर आया. जोधपुरके इतिहासमें इस हालको बहुत कम लिखा है.

राव बीकाने अपने काका और भाइयोंको नीचे लिखी जागीरें दीं-

कांधलका बड़ा बेटा बाघ तो लड़ाइयोंमें मारागया था, दूसरे राजसिंहको राजासर, और बनीर बाघावतको चाचाबाद और गांघूकी जागीर मिली. अरड़कमल्ल कांधलोतको साहिवा जीविकामें मिला, और रूपसिंहको चाखूका परगना दियागया. काका मंडलाको सारूंडा मिला, नाथूने चानी जागीरमें पाया.

विक्रमी १५६१ आश्विन शुक्ल ३ [हि० ९१० ता० १ रबीउस्सानी = ई० १५०४ ता० १४ सेप्टेम्बर] में बीकाका परलोक वास हुआ. उनके दस पुत्र थे- नरा, लूणकर्ण, घड़सी, राजसी, मेघराज, केलण, देवसी, विजयसिंह, अमरसिंह, और बीसा.

२ नराका गादीपर बैठना.

बड़ा कुंवर नरा गद्दीपर बैठा, जिसका जन्म विक्रमी १५२५ कार्तिक कृष्ण ४ [हि० ८७३ ता० १८ रबीउल्अव्वल = ई० १४६८ ता० ७ ऑक्टोबर] को हुआ था, इनका देहान्त गद्दीपर बैठनेके चार महीने बाद विक्रमी १५६१ माघ शुक्ल ८ [हि० ९१० ता० ६ शअ्बान = ई० १५०५ ता० १५ जैन्युअरी] को हुआ.

३ लूणकर्ण.

नराके कोई बेटा न होनेके कारण उनका दूसरा भाई लूणकर्ण गद्दीपर बैठा, जिसका जन्म विक्रमी १५२६ माघ शुक्ल १० [हि० ८७४ ता० ८ रजब = ई० १४७० ता० १३ जैन्युअरी] को हुआ था.

विक्रमी १५६१ फाल्गुण कृष्ण ४ [हि० ९१० ता० १८ शऋबान = ई० १५०५ ता० २४ जैन्युअरी] को गद्दी उत्सव हुआ. विक्रमी १५६६ [हि० ९१५ = ई० १५०९] में ददरेवाके चहुवान बदलगये थे, जिनपर यह फ़ौज लेकर गये. ददरेवाका मानसिंह चहुवान तीन सौ आदमियोंके साथ मारागया; और राव लूणकर्णके एक सौ सैंतीस आदमी कामआये. ददरेवा क़ब्ज़े करके राव बीकानेर आये, और विक्रमी १५६९ [हि० ९१८ = ई० १५१२] में फ़तहपुरके क़ायमखानी दौलत-खांपर फ़तह पाकर १२० ग्राम फ़ौज खर्चमें लिये. विक्रमी १५७० फाल्गुण कृष्ण ३ [हि० ९१९ ता० १७ ज़िल्हिज = ई० १५१४ ता० १२ फ़ेब्रुअरी] को महाराणा रायमल्लकी बेटी (१) से विवाहकरनेको राव लूणकर्ण चित्तौड़ आये, इस शादीमें लूणकर्णने इनआम इक्रामसें बहुत धन लुटाया.

फिर जैसलमेरके रावल देवीदास चाचावतसे विक्रमी १५८३ [हि० ९३२ = ई० १५२६] में राव लूणकर्णने लड़ाई की, देवीदास क़ैद हुआ, लूणकर्णने जैसलमेरके क़िलेको घेरलिया. इसके बाद सुलह करके राव लूणकर्ण बीकानेरको आता था, कि जैसलमेरकी मददके लिये सिंधका नव्वाब (२) आपहुंचा, लड़ाईके वक़ बीकानेरके भाटी और बीदावत राजपूत भाग निकले, जिससे राव लूणकर्ण विक्रमी १५८३ श्रावण कृष्ण ४ [हि० ९३२ ता० १८ रमज़ान = ई० १५२६ ता० २९ जून] को अपने बेटे प्रतापसिंह, नेतसी, बैरसी, और पुरोहित देवीदास समेत मारे गये; इनके साथ तीन राणियां सती हुईं.

राव लूणकर्णके १२ बेटे थे १ जैतसी जो गद्दीपर बैठा, २ प्रतापसी से प्रतापसिं-होत बीका कहलाये, ३ बैरसीके बेटे नारायणसी से नारायणोत बीका कहलाये, चौथे रत्नसीकी औलाद महाजनके ठाकुर रत्नसिंहोत बीका हैं, ५ तेजसीके तेजसिंहोत बीका, ६ नेतसी, ७ कर्मसी, ८ कृष्णसी, ९ सूरजमल्ल, १० रामसी, ११ कुशलसिंह, और बारहवां रूपसिंह था.

इनमेंसे कर्मसीने नीचे लिखेहुए दोहेपर सिरोहीके चारण बारहठ आसाको

---

(१) इस शादी में रायमल्लका ज़िन्दा होना पाउलेट साहिबके गज़ेटियर और बीकानेरकी तवारीख़से साबित होता है, और उन्होंने लिखा है कि महाराणा रायमल्लका कुंवर सांगा पेशवाईको आया; परन्तु ऐसा नहीं है, रायमल्लका देहान्त तो विक्रमी १५६५ में होगया था; यह विवाह महाराणा सांगाने अपनी बहिनका लूणकर्णके साथ किया होगा.

(२) इस नव्वाबका नाम बीकानेरकी तवारीख़ व पाउलेट साहिबके गज़ेटियरमें भी कुछ नहीं लिखा.

एक किरोड़का दान दिया बतलाते हैं, लेकिन् किरोड़ रुपये पास नहीं थे; इसलिये अपने बेटे कीर्तिसिंहको रुपयोंके एवज़में दे दिया, जिनकी औलादके सिरोहीमें कर्मसिंहोत बीका कहलाते हैं.

दोहा.

सह दूजो संसार । माटी सूं घड़ियो महण ॥
तो घड़ियो करतार । काया हूंता कर्मसी ॥ १ ॥

४ राव जैतसी.

राव लूणकर्णकी गद्दीपर राव जैतसिंह बैठे; इनका जन्म विक्रमी १५४६ कार्तिक शुक्ल ८ [हि० ८९४ ता० ६ ज़िल्हिज = ई० १४८९ ता० २ नोवेम्बर] को हुआ था. जब राव लूणकर्ण मारेगये, तो बीदावत उदयकर्ण द्रोणपुरका ठाकुर बीकानेर लेनेके इरादहपर आया, परन्तु जैतसिंहने उसे शहरमें न आने दिया, और गादीपर बैठनेके बाद द्रोणपुर छीन लिया.

विक्रमी १५८५ [हि० ९३५ = ई० १५२८] में जोधपुरके राव गांगा बाघावत और उनके काका शेखा सूजावतके लड़ाई हुई. इस लड़ाईमें नागोरका खान दौलतखां शेखाकी मददपर था, और राव जैतसी राव गांगाकी मददपर बीकानेरसे गया; इस लड़ाईमें शेखा मारागया. नागोरका खान भागगया, और राव गांगाकी फ़तह हुई, राव जैतसी देष्णोकमें करणी देवीका दर्शन करके बीकानेर आया, इसके बाद विक्रमी १५९५ चैत्र शुक्ल ९ [हि० ९४४ ता० ७ शव्वाल = ई० १५३८ ता० ९ मार्च] को करणीजीका देहान्त हुआ. यह देवी जैसलमेरके रावल जैतसीको अच्छा करने गई थी, जब कि उनका बदन खूनकी खराबीसे बिगड़गया था; जैसलमेर से लौटते वक्त गड़ियाला ग्राममें खराद्या तालाबपर इस देवीका देहान्त हुआ. लोग बयान करते हैं कि उन्होंने शरीरसे अग्नि उत्पन्न करके योगशास्त्रकी रीतिसे अपनी देह को भस्म किया था. इनका मन्दिर देष्णोकमें बनवायागया, जिसको अबतक बीकानेरकी रियासतमें बहुत बड़ा मानते हैं; जैसे उदयपुरमें श्री एकलिङ्गजीका मन्दिर है, वैसे ही बीकानेरमें करणी देवीका स्थान मानाजाता है. राजपूतानहमें भी कई जगह इस देवीके मन्दिर बनेहुए हैं. पहिले उदयपुरमें करणीजीका मन्दिर नहीं था, इसलिये श्री वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंहने एक मन्दिर हाथी पोल दर्वाज़हके बाहर मेरे (कविराज श्यामलदासके) बाग़में, और दूसरा चित्तौड़ गढ़की तलहटीमें मेरी (उक्त कविराजकी) बावड़ीके पास रेलकी सड़कपर बनवाया.

विक्रमी १५९५ [हि० ९४५ = ई० १५३८] में बाबर बादशाहका बेटा और हुमायूंका भाई कामरां जंगी फ़ौजके साथ बीकानेरपर चढ़ा, परन्तु राव जैतसीसे हारकर भागा. इस फ़त्हका होना भी करणी देवीकी करामातसे बयान कियाजाता है; उस वक्तके मारवाड़ी भाषामें कहे हुए ये दोहे हैं-

दोहा.

कांटा करना देवरा कांटां ऊपर बट्ट ॥
राव हकारै जैतसी भागे काबुल थट्ट॥१॥
करनांदे आछी करी राखी बीकानेर ॥
काढ ख़ज़ाना गैबका फ़ौजां दीधी फेर॥ २ ॥

इसमें काबुलका थट्ट (गिरोह) इस वास्ते कहा है कि इन दिनों कामरां काबुलका जागीरदार था.

फिर जोधपुरके राव मालदेवने बीकानेरपर चढ़ाई की, और राव जैतसी भी बीकानेरसे चढ़कर सोवा ग्राममें पहुंचा, लेकिन् रातके वक्त राव जैतसी किसी ज़रूरी कामके लिये छिपकर बीकानेर चला आया. यह हाल देखकर फ़ौजके राजपूतोंने जाना कि राव भागगये, जिससे फ़ौजके सर्दार भी निकल भागे, प्रातः कालके समय राव जैतसी पीछे आये, तो मालदेवकी फ़ौजने उनको घेरलिया, इसमें राव जैतसी बड़ी बहादुरीके साथ विक्रमी १५९८ चैत्र कृष्ण ११ [हि० ९४८ ता० २५ ज़िल्क़ाद = ई० १५४२ ता० १२ मार्च] को लड़कर मारेगये, जिनके साथ नीचे लिखेहुए आदमी काम आये-

सोनगरा सारंगदेव जयमलोत, साहणीराम बेलासरका, दर्वारी माधव जैतमालोत, पुरोहित लक्ष्मीदास देवीदासका.

इसके बाद राव मालदेवने बीकानेर आ घेरा, जैतसीकी राणी और बेटी तो निकलकर सरसामें चलीगई, और बीकानेरका क़िलेदार रूपावत भोजराज व सांखला महेशदास अच्छी तरह लड़कर १५०० आदमियों समेत मारेगये, बीकानेर मालदेवके क़ब्ज़ेमें आगया.

राव जैतसीके १३ बेटे थे- कल्याणसिंह, भीमराज, ठाकुरसी, मालदे, कान्ह, शृंग, सुर्जन, कर्मसेन, पूर्णमल्ल, अचलदास, मान, भोजराज, और तिलोकसी.

५ कल्याणसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १५७५ माघ शुक्ल ६ [हि० ९२५ ता० ४ मुहर्रम = ई० १५१९ ता० ७ जैन्युअरी] को हुआ था; इन्होंने सरसा ग्राममें गादी बैठनेका दस्तूर अदा किया, क्योंकि बीकानेर राव मालदेवके कृब्जेमें था. थोड़ासा इलाका इनके पास रहा, जिससे गुज़ारा करते थे, लेकिन् उसी अर्सेमें शेरशाह सूर दिल्लीका बादशाह होगया, इससे कल्याणसिंहने अपने छोटे भाई भीमराज को दिल्ली भेजदिया. इधर मेड़तियोंसे भी मालदेवने मेड़ता छीन लिया, जिससे वे लोग भी शेरशाहके पास पहुंचे, तब शेरशाह मालदेव पर चढ़ा, जिसका हाल जोधपुरके इतिहासमें लिखाजायगा.

मालदेव तो शेरशाहसे लड़नेकी फ़िक्रमें लगे, और बीकावतोंने राव कल्याणसिंह को कुछ फ़ौज देकर शेरशाहके पास भेजदिया. बाक़ी राजपूत एकट्ठे होकर हम्ला करने लगे, जिनमें राव लूणकर्णके बेटे कृष्णसिंहने, जो उनमें मुखिया था, जोधपुरके कुल थाने उठादिये, जहां सामना हुआ वहां बहुतसे आदमी मारेगये. कृष्णसिंहने बीकानेरको आघेरा, तब राव मालदेवने कूंपा महराजोतको लिखभेजा कि बीकानेर छोड़कर चले आओ, उसने वैसा ही किया.

कल्याणसिंहके राजपूतोंने विक्रमी १६०१ पौष शुक्ल १५ [हि० ९५१ ता० १४ शव्वाल = ई० १५४४ ता० २९ डिसेम्बर] को बीकानेर छीन लिया; और शेरशाहसे विदा होकर राव कल्याणसिंह भी बीकानेर आया. कुछ दिनोंके बाद बरिमदेवके पुत्र जयमल्लपर राव मालदेवने चढ़ाई की. यह ख़बर सुनकर बीकानेरसे राव कल्याणसिंहने मददके लिये फ़ौज भेजी. राव मालदेव जयमल्लके मुक़ाबलेसे भागकर जोधपुर गये. यह लड़ाई विक्रमी १६१० [हि० ९६० = ई० १५५३] में हुई थी.

विक्रमी १६१३ [हि० ९६४ = ई० १५५६] में दिल्लीके अगले बादशाह शेरशाह सूरका पठान सर्दार हाजीखां बादशाह अक्बरकी फ़ौजसे ख़ौफ़ खाकर अजमेर आया, और राव मालदेवने उसका माल अस्बाब छीनना चाहा, तब महाराणा उदयसिंहने मदद करके हाजीखां को बचाया; और महाराणा उदयसिंह व हाजीखांसे बिगाड़ होनेपर राव मालदेव हाजीखांके मददगार बनगये, और महाराणा के शामिल बीकानेरके राव कल्याणसिंह थे- (इसका मुफ़स्सल हाल महाराणा उदयसिंहके बयान पृष्ठ ७१ में दर्ज है).

अक्बर नामहमें लिखा है, कि-" अक्बर बादशाह अजमेर होताहुआ विक्रमी १६२७ मार्गशीर्ष कृष्ण २ [हि० ९७८ ता० १६ जमादियुल्आख़र = ई० १५७० ता० १५ नोवेम्बर] को नागौर पहुंचा, वहांके हाकिम ख़ानेकलां वगैरह ने पेश्वाई की; और थोड़े अर्से बाद गिर्द व नवाहके जागीरदार व सर्दार बादशाही ख़िझतमें हाज़िर हुए. इनमें एक राव मालदेवका बेटा चन्द्रसेन था, जो हिन्दुस्तान के बड़े जागीरदारोंमें से है; दूसरा राव कल्याणमल्ल बीकानेरका अपने बेटे रायसिंह समेत हाज़रीसे सर्बलन्द हुआ, बादशाही मिहर्बानीसे उसने इज़्ज़त पाई. उसने हुज़ूरी मुसाहिबोंकी मारिफ़त अपने भाई कान्हकी बेटीके वास्ते अर्ज़ किया कि बादशाही महलमें दाख़िल कीजावे. हज़रत बादशाहने उसकी दर्ख़्वास्त अवामकी तसल्लीकी नज़रसे मन्ज़ूर फ़र्माई; और पाक दामन लड़की महलकी पर्दहदारोंमें दाख़िल हुई" (१).

बीकानेर वाले लिखते हैं कि हाजीख़ांकी लड़ाईमें राव कल्याणसिंह भी महाराणाके शामिल था.

विक्रमी १६२८ वैशाख कृष्ण ५ [हि० ९७८ ता० १९ ज़िल्क़ाद = ई० १५७१ ता० १४ एप्रिल] को राव कल्याणसिंहका परलोकवास हुआ. इन के दस बेटे - रायसिंह, रामसिंह, पृथ्वीराज, अमरसिंह, भाण, सुर्तान, सारंगदे, भाखरसी, गोपालसिंह, और राघवदास थे.

६ राव रायसिंह.

राव रायसिंहका जन्म विक्रमी १५९८ श्रावण कृष्ण १२ [हि० ९४८ ता० २६ रबीउल्अव्वल = ई० १५४१ ता० २० जुलाई] को हुआ था. इन की शादी चित्तौड़के महाराणा उदयसिंहकी बेटी जसमांदेके साथ हुई थी. बीका-नेरकी तवारीख़में लिखा है, कि इस शादीमें रायसिंहने दस लाख रुपये त्यागके और ५० हाथी व ५०० घोड़े दिये थे; उनमें से जिन कवि लोगोंको बहुतसा माल और हाथी दिये, उनके नाम तवारीख़ी यादके वास्ते यहां लिखेजाते हैं- १ दूदा

---

(१) अक्बर बादशाहको राजाओंकी बेटियोंके साथ शादी करनेकी कमाल आर्ज़ू थी, और वह इस ख़्वाहिशको पूरा करनेके लिये दिबागत, नसीहत् और बख़्शिश वगैरह बड़ी बड़ी कोशिशें करता था. मूलमें जो अक्बरनामहका तरजमा लिखागया वह खुशामदी लफ़्ज़ोंसे भराहुआ है.

आसिया, २ देवराज रत्नू, ३ बारहठ लक्खा, ४ मैंपा संडायच, ५ सांइयां झूला, ६ भाट खेतसी वगैरह- लिखा है कि यह विवाह बड़ी धूम धामसे हुआ.

इन्होंने राजपर बैठते ही कर्मचन्द बछावतको अपना प्रधान बनाया. फिर उसकी सलाहसे जब विक्रमी १६३३ [हि॰ ९८४ = ई॰ १५७६] में अक्बर बादशाह अजमेर और उदयपुरकी तरफ़ आया, तब राव रायसिंह बादशाही हुक्मसे अजमेरमें हाज़िर होगये. अक्बरनामहमें लिखा है, कि- इनका बाप पहिले ही से इताअ़त कुबूल करचुका था, और यह भी उसके साथ हाज़िर हुए थे; कुछ दिनके बाद जब पंजाबकी तरफ़ पठानोंने सिर उठाया, तब उनपर बादशाहने आंवेरके कुंवर मानसिंह और राव रायसिंहको भेजा. इन्होंने फ़सादियोंको सज़ा देकर बादशाहको खुश किया. बादशाह अक्बरने राव रायसिंहको राजाका ख़िताब (१) और चार हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया.

विक्रमी १६३७ [हि॰ ९८८ = ई॰ १५८०] में जब कि बादशाह अक्बरकी गुजरातपर चढ़ाई हुई, उस वक़ राव रायसिंह भी उस फ़ौजमें शामिल थे, जिसमें इन्होंने बड़ी बहादुरी दिखलाई, और इनके बहुतसे राजपूत काम आये, इससे बादशाह इनपर बहुत राज़ी हुआ. जब राव रायसिंह गिरनार और अहमदाबाद की तरफ़ जारहे थे, उस वक़ राव सुल्तानने अपना आधा राज सिरोहीका बादशाहको देना कुबूल किया, और रायसिंहको अपना मददगार बनाया. बादशाहने सिरोहीका आधा राज उदयपुर वाले महाराणा उदयसिंहके बेटे जगमालको दिया, लेकिन् जगमाल सुल्तानसे लड़कर मारा गया. यह बयान पूरे तौरपर महाराणा प्रतापसिंहके हालमें लिखा गया है. लेकिन् बीकानेरकी तारीख़में यह सिवाय लिखा है कि, "जगमालके सिरोहीमें मारेजानेके कुसूरपर अक्बर बादशाहने राव रायसिंहको फ़ौज देकर सिरोही भेजा. उन्होंने चार दिन तक लड़ाई की, और पांचवें दिन सिरोहीके रावको पकड़लिया, जिसपर सिरोहीके रावके चारण दूदा आसियाने राव रायसिंहको शाइरी सुनाकर खुश किया, तब रायसिंहने उससे शाइरीके इनआ़ममें राव सुल्तानको बादशाह से सिरोही दिलानेका वादा किया, और बादशाहके पास पहुंचकर इस इक़ारको पूरा किया". इस विषयकी कविता भी बीकानेरकी तवारीख़में लिखी है.

---

(१) फ़ार्सी तारीख़ोंसे बीकानेरवालोंको शाहजहांके अ़हद तक राजाका ख़िताब मिलना साबित नहीं होता, लेकिन् यह बीकानेरकी तवारीख़से लिखागया है.

(१) राव रायसिंहने जोधपुर मालदेवके बेटे राव चन्द्रसेनसे छीन लिया; फिर चन्द्रसेनके भाई उदयसिंहको बादशाहसे वापस दिलादिया, परन्तु जोधपुरका इतिहास जो तिथि वार लिखा हुआ हमारे पास है, उसमें इन बातोंका कुछ ज़िक्र नहीं मिलता; न मालूम ये बातें ग़लत हैं या सहीह हैं.

विक्रमी १६४५ [हि० ९९६ = ई० १५८८] में एक नया क़िला राजधानीमें बनवाना शुरू किया, जो विक्रमी १६५० [हि० १००१ = ई० १५९३] में बनकर तय्यार होगया. रायसिंह तो बादशाही नौकरीपर दक्षिणकी तरफ़ गये थे, और उनके हुक्मसे प्रधान महता कर्मचन्द बछावतने तय्यार करवाया, जिसकी पूर्वी दीवार ४०१ गज़, दक्षिणी ४०३ गज़, पश्चिमी ४०७ गज़, और उत्तरी दीवार ४०६ गज़ की है; दीवारकी उंचाई १९ गज़ और पड़कोटेके बाहर खन्दक़की चौड़ाई २० गज़की है.

विक्रमी १६५२ [हि० १००३ = ई० १५९५] में राव रायसिंहको दग़ासे मारकर उनके कुंवर दलपतको गद्दीपर बिठा देनेका विचार नीचे लिखे आदमियोंने किया:-

प्रधान महता कर्मचन्द बछावत सांगाका बेटा, खुड़िया ग्रामका बारहठ चौथदान, तोलीसर ग्रामका पुरोहित मान महेश, सूजा नगराजोत, राजासरका जाट भरथा सारण, और ईसर वगैरह कई सर्दार इस सलाहमें शामिल थे.

इस भेदकी ख़बर रायसिंहको होगई, जिसपर उन्होंने कर्मचन्दको मरवाडालना चाहा, लेकिन् वह भागकर बादशाह अक्बरके पास चलागया, और बादशाही मुलाज़िम होकर राव रायसिंहकी शिकायतें पेश करने लगा. जिससे बादशाहने भरथनेर वगैरह परगने ख़ालिसे करके उन (रायसिंह) के कुंवर दलपतको जागीर में दिये. इस वक़्से बाप बेटोंमें बराबर फ़साद बना रहा. दलपतने गुज़रके लायक़ बादशाहसे जागीर न पाई, इस कारण बीकानेरके कई परगनोंमें अपना इख़्तियार जमा लिया. बादशाह भी कर्मचन्दकी शिकायतोंके सबब राव रायसिंहसे नाराज़ होगया था. जब राव रायसिंह दिल्ली गये, और विक्रमी १६६४ [हि० १०१६ = ई० १६०७] में महता कर्मचन्द बीमार होकर मरने लगा, तो राव रायसिंह उसका आराम पूछनेको गये,

---

(१) फ़ार्सी तवारीख़ोंमें लिखा है-कि जोधपुर हुसैनकुलीख़ां वगैरहने फ़तह किया था, जो अक्बर बादशाहने राजा उदयसिंहको उनकी कारगुज़ारीसे खुश होकर वापस दिया.

और ज़ाहिरा बहुत रंज किया और आंखोंमें आंसू भर लाये. रायसिंहके चले जाने बाद कर्मचन्दने अपने बेटोंसे कहा, कि महाराजाके आंसू आनेका सबब मेरी तक्लीफ़ नहीं है, बल्कि यह सबब है कि मैं उनके हाथसे सज़ा न पासका; तुम लोग उनके धोखेमें आकर बीकानेर मत जाना. यह कहकर कर्मचन्दने ६८ वर्षकी उम्रमें देह त्याग किया.

इसके बाद रायसिंहने कर्मचन्दके बेटोंकी बहुत ख़ातिर की. अक्बरके बाद बादशाह जहांगीर राव रायसिंहसे बिल्कुल नाराज़ होगया, इसलिये यह दिल्लीसे बीकानेर चलेआये. थोड़े ही दिनोंके बाद बादशाहने इन्हें दक्षिण की तरफ़ भेजदिया. यह बुर्हानपुरमें रहते थे, वहां बीमारी बढ़गई, तब उन्होंने अपने छोटे बेटे सूरसिंहसे कहा कि कर्मचन्द तो मरगया, परन्तु उसके बेटोंको मारकर तोलेश्वरके पुरोहित और खुड़ियाके बारहठ वगैरहको सज़ा देना, क्योंकि वे लोग मुझे मारकर दलपतको राज्य दिलाना चाहते थे. इसपर सूरसिंहने अर्ज़ किया कि अगर मुझे इख्तियार मिला तो आपके हुक्मके मुवाफ़िक़ उन लोगोंको ज़रूर सज़ा दूंगा.

विक्रमी १६६८ [हि० १०२० = ई० १६११] में राव रायसिंहका देहान्त होगया.

---

७ दलपतसिंह.

दलपतसिंहको राज्य मिलने की बाबत जहांगीर बादशाह तुज़क जहांगीरीमें लिखता है, कि—

"दलीप दक्षिणसे हाज़िर हुआ, उसका बाप रायसिंह मरगया था, इसलिये मैंने उसको रावका ख़िताब देकर ख़िलअ़त पहनवाया. रायसिंहके एक दूसरा बेटा सूरजसिंह भी था, जिसकी माके साथ ज़ियादह मुहब्बत होनेके सबब बड़े दलीप के एवज वह उसका गद्दीनशीन होना चाहता था. जिस वक़्त कि रायसिंहकी मौतका हाल मेरे साम्हने बयान किया जाता था, सूरजसिंह कम अ़क्ली और कम उम्रीसे अर्ज़ करनेलगा, कि बापने मुझको वलीअ़ह्द बनाकर टीका दिया है. यह बात मुझको पसन्द न आई, और फ़र्माया कि अगर बापने तुझको टीका दिया है, तो हम दलीपको सर्बलन्द करके देते हैं. मैंने अपने हाथसे उसके टीका लगाकर उसके बापकी जागीर वगैरह इनायत की."

लेकिन् बीकानेरकी तवारीख़में दलपतका बीकानेरमें और सूरसिंहका रायसिंहके पास होना लिखा है.

दलपत गादीपर बैठा, और सूरसिंहको फलौदीका पट्टा मिला. प्रधान महता राजसी वैद्य और पुरोहित मानमहेश दलपतके मुसाहिब बने. जब पुरोहित मानमहेशकी अर्ज़से दलपतने फलौदीके पट्टेके सारे ग्राम ज़ब्त किये, तो सूरसिंह के पास सिर्फ़ फलौदी रहगई, तब वह नीचे लिखे आदमियोंको साथ लेकर बीकानेर आया—

कृष्णसिंह मनोहरदासोत श्रंगोत, कर्मसेन मनोहरदासोत श्रंगसरके जिनकी औलाद अब भूकरकेमें है, जयमल्लसरकी भायपके भाटी, पुरोहित लक्ष्मीदास हरदासोत, गाडणचोला, संडायच कृष्ण, राठी कल्याणदास केसरीदासोत, कोचर ओसवाल ऊजा, पोखरणा व्यास जीवराज विट्ठलदासोत वग़ैरह.

इन सबकी सलाहसे सूरसिंहने पुरोहित मानमहेशको बहुत कुछ कहा, परन्तु फ़ायदा न हुआ, फिर किसी बहानेसे दिल्ली जानेकी निश्चय ठहराई, और इसी सलाहके मुवाफ़िक़ सूरसिंह अपनी माताको गंगा स्नान करानेका बहाना करके सोरम घाट जापहुंचा, और वहींसे दिल्ली जाठहरा. राजा दलपत गद्दीपर बैठनेके बाद एकही बार बादशाहके पास गये थे, और वहांसे आनेके पीछे बादशाही तलबीके फ़र्मान आनेपर टाला टूली करके नहीं गये. जब दलपत बादशाहके बुलानेपर नहीं गया, तब वह नाराज़ हुआ, और अपने मुलाज़िम ज़ियाउद्दीनख़ांके साथ फ़ौज देकर सूरसिंहको बीकानेरका मालिक बनानेके लिये दलपतपर भेजदिया. जब बीकानेरकी सरहद्दपर शाही फ़ौज पहुंची, तब दलपत भी तय्यार होकर सामना करनेको आ मौजूद हुआ. पहिले तो बादशाही फ़ौजने शिकस्त पाई, फिर सूरसिंह और ज़ियाउद्दीनने अपने मुसाहिबोंसे सलाह करके दलपतके सर्दारोंको अपनेमें मिलालेनेका विचार किया, और नीचे लिखे राजपूतोंको मिला लिया—

महाजनके ठाकुर देवीदास जशवन्तोतका भाई तेजसी, ठाकुर कृष्णसिंह रायसिंहोत, जिसकी सन्तानके क़ब्ज़ेमें सांखूका ठिकाना है, ददरेवाका ठाकुर सुन्दर-सेन पृथ्वीराजोत, भूकरकाके ठाकुर मनोहरदास भगवानदासोत, हरदेसरका ठाकुर कृष्णसिंह अमरसिंहोत, गारबदेसरका ठाकुर कृष्णसिंह रायसिंहोत, बाणूदेका ठाकुर बीका केशवदास साहुलोत, सासरका ठाकुर राजसिंह गोवर्धनसिंहोत, बीदासरका ठाकुर बीरमदेव बलभद्रोत नारायणोत, गोपालपुरका ठाकुर तेजसिंह गोपालदासोत, फोगांका ठाकुर बीकासावन्तसी गोपालोत, घड्सीसरका ठाकुर भाण अमरसिंहोत, खारबेका ठाकुर मथुरादास सुरताणोत, रावतसरका ठाकुर उदयसिंह, जैतपुरका ठाकुर गोपीनाथ

उदयसिंहोत, साहिबाका ठाकुर जयमल्ल साईंदासोत, चूरूका ठाकुर भीमसिंह बलभद्रोत, मगरासरका ठाकुर भोपत नारायणोत, सारूंडेका ठाकुर महेश इन्द्रभाणोत, सिरकालीका ठाकुर लखधीर भारमल्लोत मांडणोत, तिहांणदेसरका ठाकुर सांवलदास जयमल्लोत, जैतासरका बीका ठाकुर लाखणसी रायमल्लोत जैतसोत, सांडवेका ठाकुर जशवन्तसिंह गोपालोत, हरासरका ठाकुर पृथ्वीराज जशवन्तोत, सोभागदेसरका ठाकुर गिर्धर मानसिंहोत बीदावत, पूंगलके भाटी आसकरण कान्हावत, जयमल्लसरका ठाकुर साहुल अमरसिंहोत, बीठिणोकका भाटी सिरंग खेतसीयोत.

इन सबको मिलाकर खारवाके ठाकुर तेजमालसे भी कहलाया, तो उसने कहा, कि मेरी बेटीसे सूरसिंह शादी करे तो मुझे विश्वास हो; तब उसकी ख्वाहिशके मुवाफ़िक़ सूरसिंहने डोला मंगाकर उसी दिन शादी करली. यह भाटी ५०० राजपूतोंका मालिक था; इसके बाद महता ठाकरसी वैद्य को भी कहलाया, परन्तु उसने इन्कार करके कहा, कि बीकानेरकी गद्दीपर जो बैठेगा उसीका मैं नौकर हूं. आख़िरकार दूसरे दिन दोनों फ़ौजें लड़ाईके लिये तय्यार हुईं. दलपत भी अपनी फ़ौजको दुरुस्त करके हाथीपर चढ़ा, ख़वासीमें चूरूका ठाकुर भीमसिंह था, और दोनों फ़ौजोंके लोग हुक्मके मुन्तज़िर थे, पर इशारा होते ही ख़वासीसे चूरूके ठाकुर भीमसिंहने पीछेसे दलपतके दोनों हाथ बांधलिये, और लोगोंने सूरसिंहसे जाकर सलाम किया; दलपतको घोड़ेपर चढ़ाकर ५० पचास सवारोंके साथ हिसारके क़िलेके सूबहदारके पास भेजदिया, और सूबहदारने पैरोंमें बेड़ी, हाथोंमें हथकड़ी डालकर बादशाहकी ख़िद्मतमें अजमेर भेजदिया.

८ राव सूरसिंह.

इन दिनोंमें बादशाह जहांगीर उदयपुरकी चढ़ाईके लिये अजमेरमें ठहरा हुआ था, दलपतको एक जगह क़ैद करके उसके चारों तरफ़ सिपाहियोंके पहरे खड़े करवादिये. इन्हीं दिनोंमें हाथीसिंह चांपावत गोपालदासोत अपनी औरत को साथ लिये ससुराल जाता हुआ अजमेरकी तरफ़ आनिकला, और दलपत को सलाम कहलाया; दलपतने कहा मुझसे मिलते जाओ, तब हाथीसिंह मिलने को गया; बादशाही सिपाहियोंके रोकनेपर उन्हें मारकर भीतर जाघुसा, और दलपतकी बेड़ियां वग़ैरह काटदीं. इसपर अजमेरके सूबहदारने चार हज़ार सिपाही हाथीसिंहको सज़ा देनेके लिये भेजे, जिन्होंने इसे घेरलिया. हाथीसिंह अपनी

औरतोंको मारकर बादशाही सिपाहियोंसे लड़ मरा, और दलपत भी अपने दो सौ राजपूतों (१) समेत लड़कर मारागया. यह बात बीकानेरकी तवारीख़से लिखी है, और इसका यह सुबूत है, कि बीकानेरमें चांपावत राठौड़ घोड़े सवार हाथी-पोल तक चढ़ा जासक्ता है, औरोंको वहां सवारीपर नहीं जानेदेते; चांपावत राठौड़ोंकी यह इज़्ज़त हाथीसिंहके मारेजानेसे बढ़ाईगई, परन्तु बादशाह जहांगीर अपनी तुज़क जहांगीरी किताबमें थोड़ेसे लफ़्ज़ोंमें इस बातको इस तरह लिखता है कि--

"हि० १०२२ ता० ११ रजब [विक्रमी १६७० भाद्रपद शुक्ल १३ = ई० १६१३ ता० २९ ऑगस्ट] को ख़बर मिली कि रायसिंहका बेटा दलीप जो बड़ा फ़सादी और बाग़ी है, अपने छोटे भाई राव सूरजसिंहसे, जो उसपर तईनात कियागया था, बड़ी शिकस्त खाकर ज़िले हिसारके किसी इलाकेमें क़ैद है, इसके साथ ही हाशिम खोस्ती फ़ौज्दार और दूसरे उस तरफ़के जागीरदारोंने दलीपको क़ैद करके हुज़ूरमें भेजदिया, उससे बहुतसे क़ुसूर ज़ुहूरमें आये थे, इस लिये क़त्ल कियागया".

ऊपर लिखेहुए बयान और बादशाही तहरीरसे इतना फ़र्क़ नज़र आता है, कि उसने सज़ामें किसी जल्लादसे क़त्ल करवादिया हो, या बादशाहके लिखने का यह मत्लब हो कि मैंने उसके क़त्ल करनेका हुक्म दे दिया; परन्तु मुर्दोंके क़ौलसे कोई शुब्ह तहक़ीक़ करना बड़ी मुश्किल बात है, क्यों कि उनकी तबीअ़तका हाल मालूम नहीं होसक्ता.

जब दलपतके मारेजानेकी ख़बर भटनेर में राणियोंके पास पहुंची, तो नीचे लिखी हुई राणियां आगमें जलकर सतीहोगई-

भटियाणी जादमदे, भटियाणी नौरंगदे, सोनगरी सन्तोषदे, भटियाणी कनकदे, भटियाणी सदाकुंवर, निरवाण मदनकुंवर.

सूरसिंह इसी वर्षमें गादीनशीन होकर अजमेरमें बादशाह जहांगीरके पास आये; बादशाहने पहिले मन्सबके सिवाय पांच सौ ज़ात और दो सौ सवार बढ़ाये. जब सूरसिंह बादशाह जहांगीरसे रुख़्सत होने लगा, तब कर्मचन्दके दोनों बेटों लक्ष्मीचन्द और भागचन्दको अपने पास बुलाकर पूरी तसल्ली दी; वे दोनों भी सूरसिंह के दममें आकर बीकानेर चलनेको तय्यार हुए, और दिल्लीसे अपने बालबच्चों व औरतोंको लेकर बीकानेर पहुंचे. सूरसिंह भी बादशाहसे विदा होकर बीकानेर

(१) यह बात ख़याल तो नहीं कीजासक्ती, कि क़ैदकी हालतमें भी उसके पास दो सौ राजपूत हों, लेकिन् शायद कि यह लोग अजमेर शहरमें किसी जगह मौक़ेके मुन्तज़िर रहे हों,

आये. लक्ष्मीचन्द और भागचन्द दोनों शहरके पास अपने पुराने मकानमें रहने लगे, सूरसिंहने महता राजसी वैद्यसे दीवानीका काम छीनकर उन दोनोंको दिया; और दो महीने तक ऐसी मिहर्बानी रक्खी, कि ये लोग पुरानी दुश्मनीको भूलकर बिल्कुल ग़ाफ़िल होगये. लेकिन् पांच सौ अच्छे राजपूत हमेशह इनके पास हाज़िर रहते थे, आख़िर एक दिन सूरसिंहने चार हज़ार राजपूतोंको रातके वक़् लक्ष्मीचन्द, भागचन्द पर भेजदिया (१). इन्होंने भी सूरसिंह की दग़ाबाज़ीको पहचानलिया, और जीनेसे नाउम्मेद होकर फ़ौरन् अपने बालबच्चों व औरतोंको मारनेके बाद ५०० राजपूतों समेत बड़ी दिलेरीके साथ लड़कर क़त्ल हुए; और राव सूरसिंहके भी बहुतसे राजपूत इनके मुक़ाबलेपर मारेगये. बाक़ी रहे सहे उनके बालबच्चोंको सूरसिंहने क़त्ल करवाडाला, एक अकेली कर्मचन्दकी दूसरी औरत भामाशाहकी बेटी जगीसा बची, जिसके पेटका एक लड़का भाणा (२) उदयपुरमें बाक़ी रहा, जिसकी औलादमें बछावत महताओंकी हवेलियां उदयपुर में अबतक मौजूद हैं.

इसके बाद राव सूरसिंहने पुरोहित मानमहेश और बारहठ चौथदानकी जागीरें ज़ब्त कीं, जिसपर यह लोग धरणा और जौहर करके मरे, लेकिन् उसी दिनसे तोलियासरके पुरोहितोंसे पुरोहिताई और बारहठोंसे बारहठपन निकलगया. फिर सारण भरथा जाटको भी गोपालदास सांगावतके हाथसे मरवाडाला, इस तरह सूरसिंहने अपने बापकी हिदायतको पूरा किया.

विक्रमी १६७२ [हि० १०२४ = ई० १६१५] में चारण चोला गाडणने एक "बेल" नामी ग्रन्थ सूरसिंहकी तारीफ़में कहा, जिसके इनआममें उसको लाख पसाव मिला, और बारहठपनके नेगचार चांदासरके बारहठ भादरेसा दीतावतने पाये. सूरसिंह उस वक़् जब कि बाग़ी शाहज़ादह ख़ुर्रम और उसके भाई पर्वेज़का मुक़ाबला नर्मदा नदीपर हुआ, बादशाही फ़ौजमें था. फिर शाहजहानी फ़ौजके साथ विक्रमी १६८६ चैत्र कृष्ण ६ [हि० १०३९ ता० २० रजब = ई० १६३०

---

(१) उदयपुरमें जो कर्मचन्द बछावतके वंशके बछावत महता हैं, उनकी तवारीख़में कर्मचन्दका एक ही बेटा भोजराज लिखा है, और बीकानेरकी तवारीख़में लक्ष्मीचन्द, भागचन्द दो हैं; इससे मालूम होता है, कि कर्मचन्दके तीन बेटे होंगे. भोजराज, लक्ष्मीचन्द और भागचन्द. शायद एक भोजराजकी औलाद बाक़ी रही होगी.

(२) उदयपुरके महताओंकी तवारीख़में भोजराजका बेटा भाणा लिखा है.

ता० ४ मार्च] को सूरसिंह दक्षिणकी लड़ाइयोंमें चार हज़ारी ज़ात व तीन हज़ार सवारका मन्सब पाकर भेजागया; जिसके मरनेकी बाबत बादशाह नामहमें इस तरह लिखा है-

"हिज्री १०४१ (१) ता० ५ रबीउल्अव्वल [वि० १६८८ आश्विन शुक्ल ७ = ई० १६३१ ता० ३ ऑक्टोबर] को अर्ज़ हुआ- कि राव सूरकी ज़िन्दगीके दिन पूरे हुए, इस लिये उसके बेटे कर्णको दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब और रावका ख़िताब इनायत करके उसका वतन बीकानेर जागीर में बहाल रक्खा. राव सूरके दूसरे बेटे शत्रुशालको पांच सौ ज़ात और दो सौ सवारके मन्सब पर इज़्ज़त बख़्शी".

राव सूरसिंहके साथ चार स्त्रियां (भटियाणी प्राणकुंवर खारबाके ठाकुर तेजमालकी बेटी, भटियाणी रानादे, रंगरेखा पातर, और बडारण (२) गुणकली) सती हुईं.

---

९ राव कर्णसिंह.

सूरसिंहके बाद उनके बड़े कुंवर कर्णसिंह विक्रमी १६८८ कार्तिक कृष्ण १३ [हि० १०४१ ता० २७ रबीउल्अव्वल = ई० १६३१ ता० २४ ऑक्टोबर] को गादीपर बैठे. इनका जन्म विक्रमी १६७३ श्रावण शुक्ल ६ [हि० १०२५ ता० ४ रजब = ई० १६१६ ता० २१ जुलाई] को हुआ था.

इन्होंने अपने शुरू वक़्में खारबेके फ़सादी ठाकुर तेजमाल कृष्णावतको उसके बेटे खंगार समेत मरवाडाला, और पीछे बादशाह शाहजहांके पास दिल्ली गये, जहांपर इनको अपने बाप सूरसिंहकी बराबर मन्सब हासिल हुआ, यह बादशाही फ़ौजके साथ दक्षिणकी लड़ाइयोंपर भेजदियेगये, जिसका हाल इस

---

(१) सूरसिंहके इन्तिक़ालकी ठीक तारीख़ किसी जगह नहीं मिली, बीकानेरकी तवारीख़में सिर्फ़ वि० १६८८ ही लिखा है. शाहजहांके साम्हने अर्ज़ होनेसे महीना बीस दिन पहिले उनका इन्तिक़ाल समझना चाहिये.

(२) लौंडीको बडारण कहते हैं.

तरहपर है- कि वज़ीरखांको पांच हज़ारी ज़ातका मन्सब देकर उसके साथ अजमेर का राजा विठ्ठलदास गौड़, माधवसिंह, जांनिसारखां बीकानेरके राव कर्णसिंह और एथ्वीराज राठौड़ वग़ैरहको घोड़े, ख़िलअ़त देदेकर दक्षिणकी तरफ़ दौलताबाद भेजा. इन लोगोंने वहां जाकर फ़ौजके हरावल अफ्सर ख़ानेज़मांकी मातह्ती की, और राव कर्णसिंह, राव शत्रुशाल और तिलोकचन्द वग़ैरहने बीजापुरकी लड़ाइयोंमें बड़ी बड़ी कारगुज़ारियां दिखलाईं.

बीकानेरकी तवारीख़में जवारीका परगना कर्णसिंहकी बहादुरीसे फ़त्ह होना लिखा है; राजा कर्णसिंह बहुत वर्षों तक दक्षिणकी लड़ाइयोंमें नौकरी देते रहे. विक्रमी १६९२ फाल्गुन शुक्ल १० [हि० १०४५ ता० ८ शव्वाल = ई० १६३६ ता० १७ मार्च] को आदिलखां बीजापुरीकी फ़ौज और दक्षिणी मरहटे साहूने मिलकर बादशाही अर्थात् शाहजहां बादशाहकी अमल्दारीमें फ़साद करना शुरू किया, जिनको दबानेके लिये सय्यद ख़ानेजहां, सिपहदारखां, शाहनवाज़खां सफ़वी, सफ़शिकनखां रज़वी, बीकानेरका राजा कर्णसिंह, तोपख़ानहका अफ्सर हरीसिंह राठौड़, राजा रोज़अफ़्ज़ूंका बेटा राजा बिहरोज़, राजा अनूपसिंहका बेटा जयराम, इन्द्रशाल हाड़ा बूंदीके राव रत्नका पोता वग़ैरह, दस हज़ार आदमियोंकी फ़ौज मुक़र्रर की गई.

जब विक्रमी १६९३ चैत्र शुक्ल १ [हि० १०४५ आख़िर शव्वाल = ई० १६३६ ता० ६ एप्रिल] को शाहगढ़की तरफ़से धारोर पहुंचे, और वहां सब अस्बाब व खटला छोड़कर सय्यद ख़ानेजहां सिपहसालार हुआ, तो हरावलका अफ़्सर शाहनवाज़खां सफ़वीको बनाया, उसके साथ बीकानेरके राजा कर्णसिंह, मुरादखां, राठौड़ हरीसिंह, क़िलेदारखां, राजा अनूपसिंहके बेटे जयराम वग़ैरह भेजेगये, और मुर्तज़ाख़ांको फ़ौजके एक हिस्सेका अफ़्सर बनाकर राजा रामदास व राजा देवीसिंहको साथ दिया. फिर ये लोग बीजापुरकी तरफ़से सराधोनमें पहुंचे, जहां अंबर हबशी निगहबानीके लिये आमके बाग़में बैठा था. इन लोगोंको देखकर क़िलेकी तरफ़ भागा, उसके कुछ आदमी मारेगये, और बाक़ी ज़ख़्मियों समेत क़िलेमें जाघुसा. बादशाही फ़ौजने तीन दिनके मुहासरेमें क़िला जीतलिया. सय्यद ख़ानेजहां वहांका माल अस्बाब अपने क़ब्ज़ेमें लाकर फ़ौज समेत धारासेवनकी तरफ़ रवाना हुआ, और अंबर हबशी, जो गिरिफ़्तार हुआ था, उसको मरहटोंका साथ न देनेका इक़ार लेकर छोड़दिया, और सराधौनके क़िलेको कृष्णाजी शिर्ज़ा रावकी हिफ़ाज़तमें छोड़ा.

आगे बढ़ने बाद तेवल, रैहान, और शोलापुरके परगनोंको लूटकर बर्बाद और वहांके लोगोंको माल अस्बाब समेत गिरिफ्तार किया. फिर धारसेवनमें पहुंचकर माल अस्बाब नाज वगैरह जो हाथ लगा सब लूट लिया, और अब्दुल्लाखां बहादुर फ़ीरोज़जंगके भतीजे अबुलबक़ाको धारासेवनका थानेदार मए जमइयतके बनाया. इसके बाद कान्तिके क़िले और क़स्बेको जा घेरा, जो शोलापुरसे छः कोसपर है; वहांके क़िले वालोंने लड़ाई की, लेकिन् आख़िरमें बादशाही फ़ौजने फ़तह पाई. क़िलेके लोगोंको क़त्ल करके गोला बारूद वगैरह सामान जो पाया उसे अपने तहतमें किया. वहांसे चलकर इसी तरह देव गांव को लूटता हुआ साहुरा क़स्बेकी तरफ़ रवाना हुआ. इस मौक़ेपर आदिलखांकी फ़ौज उसके फ़ौजी अफ़्सर रनूदौला हबशीके मातह्त मुक़ाबलेको आई, परन्तु बीजापुरी फ़ौजवाले मुक़ाबला होनेके थोड़ी देर बाद भागगये.

विक्रमी चैत्र शुक्ल ७ [हि० ता० ५ ज़िल्क़ाद = ई० ता० १२ एप्रिल] को बीजापुरी फ़ौजने आकर बादशाही फ़ौजपर हम्ला किया, दो कोसतक लड़ाई हुई, इसमें रनूदौला हबशी घायल होकर घोड़ेसे गिरा; लेकिन् अपने दोस्तोंकी मददसे दुश्मनोंके क़ाबूसे निकलगया, दोनों तरफ़के बहुतसे लोग मारेगये, और बीजापुरी फ़ौज थककर वहीं ठहरी, और बादशाही फ़ौजने धारासेवनमें आकर विक्रमी चैत्र शुक्ल १४ [हि० ता० १३ ज़िल्क़ाद = ई० ता० १९ एप्रिल] तक आराम लिया. विक्रमी चैत्र शुक्ल १५ [हि० ता० १४ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २० एप्रिल] को बीजापुरी फ़ौजका आना सुनकर ये लोग भी मुक़ाबले को तय्यार हुए, सात कोसपर तुलजापुरके परगनेमें दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबला हुआ. अगर्चि रनूदौला हबशी घायल हुआ था, फिर भी ख़ानेजहां और उसके बाद सिपहदारख़ांसे ख़ूब मुक़ाबला करतारहा. सिपहदारख़ांने बड़ी बहादुरी के साथ एक कोसतक बीजापुरी फ़ौजको पीछे हटाया, पहर दिन चढ़ेसे दो पहरतक ख़ूब लड़ाई हुई, आख़िरमें बीजापुरी फ़ौज भागनिकली, दोनों तरफ़के बहुतसे आदमी काम आये.

सय्यद ख़ानेजहांने सराधौनमें आकर खटला व अस्बाब वहीं छोड़ा, और फ़ौज समेत ओसा और नलदरक (नलदुर्ग) की तरफ़ गुलबर्गेको जानेका इरादह किया.

विक्रमी वैशाख कृष्ण ८ [हि० ता० २२ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २८ एप्रिल] को रवाना होकर रास्तेके गांवोंको बर्बाद करताहुआ चला, तो विक्रमी वैशाख शुक्ल ३ [हि० ता० १ ज़िल्हिज = ई० ता० ८ मई] को ओसासे तीन कोसपर बीजापुरी

लश्करने एक पहर रात बाक़ी रहे हम्ला किया, लेकिन् बादशाही फ़ौजके मुक़ाबला करनेसे वे लोग भागकर छिपगये; दूसरे दिन शाहजहानी फ़ौजका कूच हुआ, तब फिर बीजापुरी फ़ौजने सिपहदारखां और राजा देवीसिंहसे टक्कर ली. उस समय अपने मातह्त अफ्सरोंकी मददके लिये सय्यद ख़ानेजहांने भी एक फ़ौज भेजी, और ख़लीलुल्लाख़ां दूसरी तरफ़से सिपहदारख़ांके पास जापहुंचा, दो कोसतक दोनों फ़ौजोंने खूब मुक़ाबला किया. आख़िरमें बीजापुरी फ़ौजभाग निकली- फिर बर्सातका मौसम आजानेसे सय्यद ख़ानेजहां अपनी फ़ौज लेकर काम्बेरकी तरफ़ चला, जब यह फ़ौज सराधौनसे आठ कोसपर पहुंची, तब विक्रमी वैशाख शुक्ल १३ [हि० ता० ११ ज़िल्हिज = ई० ता० १८ मई] को फिर बीजापुरी फ़ौज हम्ला करनेको आजमी. इस समय भी दोनों तरफ़के बहुतसे आदमी काम आये, परन्तु बीजापुरी फ़ौज तो वहीं ठहरी, और सय्यद ख़ानेजहांकी शाही फ़ौज सराधौनमें आई, वहां से धारोर पहुंची.

इस लड़ाईका हाल बीकानेरकी तवारीख़में कर्णसिंहके नामपर क़ियासी तौरसे लिखा है; और हमने यह पूरा हाल बादशाहनामह शाहजहानी तवारीख़से लिखा है. अगर्चि इस तवारीख़में भी बादशाही फ़ौजकी बड़ाई और सारा हाल तारीफ़के साथ लिखा है, परन्तु बीकानेरकी तवारीख़से बादशाहनामहका यह हाल ठीक मालूम होता है.

अपने मालिकोंकी ग़ैर मौजूदगीमें नागौरके राव अमरसिंह और बीकानेरके राजा कर्णसिंहके राजपूत फ़ौजें लेकर लाखाणिया ग्रामपर लड़ बैठे, अमरसिंह इस सरहद्दी तक्रारके रंजसे आगरे में सलाबतख़ांको मारकर मारागया, जिसका पूरा ज़िक्र जोधपुरके हाल में लिखा जायगा.

इसके बाद कर्णसिंह दक्षिणी लड़ाइयोंसे फ़ुर्सतके साथ रुख़्सत लेकर बीका-नेर आये, और उन्हीं दिनोंमें पुंगलके भाटियोंने फ़साद उठाया. भाटी राव सुन्दर-सेनने बीकानेरके मुल्कको बर्बाद करनेपर कमर बांधी, तब कर्णसिंहने फ़ौज लेकर पुंगलको जा घेरा; एक महीनेतक लड़ाई रही, आख़िर सुन्दरसेन क़िलेसे निकलकर भागगया. कर्णसिंहने पुंगलके गढ़को गिरवादिया, और परिहार लूणा, कोठारी जीवनदासको वहांका थानेदार मुक़र्रर किया. सुन्दरसेन भागता हुआ लखबेरे पहुंचा, कर्णसिंह भी पीछा करता चला गया, वहांपर जोइया राजपूत, जो वहांके जागीरदार थे, हाज़िर हुए, और कुछ नज़्राना देकर मिलाप करलिया; वहां हासिलपुरके पास राजा कर्णसिंहका टीबा अबतक मशहूर है. इसके

बाद् कर्णसिंह बीकानेर लौट आये, और पुंगलके ५६१ ग्राम भाटी राजपूतोंको बांटदिये.

पहिले विक्रमी ९१५ [हि० २४४ = ई० ८५८] में जब कि पंवारोंसे पुंगल भाटी देवराज विजयराजोतने ली थी, उस वक्त् पुंगलके दो सौ ग्राम थे, फिर भाटी हमीर, और उसका बेटा जैतसी, इसका राणकदे और इसका बेटा सादा था, जिसको जोधपुरके राव चूंडाके भाई गोगादेवने मारा था, जिसका बयान इस तरहपर है कि- लखबेराके जोइया राजपूत मुसल्मान होकर दिल्लीमें चाकरी करते थे. जब दल्ला जोइयाने मौक़ा पाया, तो चार लाख मुहर, और एक मश्हूर 'समाध' नामी घोड़ी लेकर वहांसे चलदिया. मारवाड़के इलाके महेवामें राठौड़ मल्लीनाथ तथा उसके भाई बीरमदे राज करते थे, दल्लाने उनके पास आकर पनाह ली. मल्लीनाथके बड़े बेटे जगमालकी तक्रारसे दल्लाको लेकर बीरमदे लखबेरे चला आया, वहां बहुत दिन रहनेके बाद जोइयोंसे फ़साद हुआ, जिसमें बीरमदे मारागया. बीरमदे के बड़े बेटे चूंडाने तो मंडोवरमें राज्य जमाया, और गोगादेव ननिहालमें था, वहांसे जवान उम्रमें अपने बाप बीरमदेका बैर लेनेको लखबेरे गया, और रातके वक्त् दल्ला जोइयाको मारडाला, परन्तु प्रभात होते ही खूब लड़ाई हुई, जिसमें पुंगलका राणकदे और सादा भाटी बहुतसे जोइये राजपूतों समेत मारागया, और गोगादेवको भी जोइयोंने मार लिया (१).

जब राणकदे अपने बेटे सादा समेत मारागया, तब केहर केलणने पुंगलपर क़ब्ज़ा किया, और तीन पुश्ततक यही लोग इसके मालिक रहे. इसके बाद बीरमदेके बेटे राव चूंडा हुए, जिनके राव रड़माल, इनके राव जोधा इनके राव बीका थे, जिनकी ताबेदारी पुंगलके भाटियोंने इख्तियार की थी; राव शेखा भाटी पुंगल का राव बीकाकी ताबेदारीमें आया. इस शेखाके तीन बेटे थे- हरिसिंह जिसको पुंगल मिला, इससे छोटा खेमसी जिसे बीकमपुर जागीरमें मिला, और बरसलपुर भी इसीके क़ब्ज़ेमें रहा. यह दोनों ठिकाने अबतक खेमसीकी औलाद के क़ब्ज़ेमें हैं, तीसरा बेटा बाघा जिसके रायमल्ल वाली है; इन चारों ठिकानोंके पुंगलिया शेखावत भाटी कहलाते हैं, और इन चारों ठिकाने वालोंको राजा कर्णसिंहने राव बीकाके अह्दके मुवाफ़िक़ गांव बंटवादिये. २५२ गांव तो पुंगलके साथ और १८४ गांव रायमल्ल वालीके साथ, तथा ४१ गांव बरसलपुरके साथ, और ८४ गांव बीकमपुरके साथ तक़्सीम करदिये; इसके बाद भाटियोंने फ़साद मचाना छोड़दिया.

(१) इस लड़ाईका हाल सविस्तर चारण पहाड़खानने "गोगादेवका रूपक" नामी ग्रन्थमें लिखा है, जो मारवाड़ी भाषाकी कवितामें है.

राजा कर्णसिंहके बड़े बेटे अनोपसिंह रुक्माङ्गद चन्द्रावतकी बेटी राणी कमलादे से पैदा हुए. दूसरे केसरीसिंह खंडेलाके राजा द्वारिकादासकी बेटी राणी करणादेसे, तीसरे पद्मसिंह हाड़ा वैरीशालकी बेटी राणी स्वरूपदेसे, और चौथे कुंवर मोहनसिंह श्रीनगरके राजाकी बेटी राणी अजबकुंवरसे पैदा हुए; इनके सिवाय एक बनमालीदास पासवान औरतसे था.

जब बादशाह शाहजहांकी बीमारीके सबब उसके चारों बेटे आपसमें लड़नेको तय्यार हुए, उस वक्त महाराजा कर्णसिंह औरंगाबादमें औरंगज़ेबके पास मौजूद थे, जब औरंगज़ेब आगरेकी तरफ़ रवाना हुआ, तब बहुतसे मन्सबदार उक्त शाहज़ादहको छोड़कर बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ आगरे चलेगये, लेकिन् महाराजा कर्णसिंह न तो आगरे गये और न औरंगजेबके पास रहे. शाहज़ादहके पास अपने कुंवर केसरीसिंह व पद्मसिंहको छोड़कर आप बीकानेर चले आये. इसी सबबसे आलमगीर बादशाह की कर्णसिंहपर नाराज़गी रही, जिसके सबब बीकानेरपर फ़ौजका जाना मआसिरे आलमगीरी वगैरह किताबोंमें लिखा है, लेकिन् बीकानेरकी मुल्की तवारीखमें आलमगीरकी नाराज़गीका कारण यह लिखा है, कि-

"आलमगीरने सब हिन्दू राजाओंको मुसल्मान करना चाहा, तब सब राजा लोगोंने एक होकर, इन्कार किया, जिन्में कर्णसिंह सबसे अव्वल थे." यह बात भी आलमगीरके ढंगसे मिलती हुई है.

फिर कर्णसिंहकी पासवानके बेटे बनमालीदासने मुसल्मानी मज़्हबमें आना इस शर्तपर कुबूल किया कि, बीकानेरका राज्य उसे मिले, लेकिन् सब राजाओंकी एक सलाह देखकर औरंगज़ेबने महाराजा कर्णसिंहको तो औरंगाबाद भेजा, और बीकानेरका राज्य और मन्सब इनके बड़े बेटे अनोपसिंहको लिखदिया. महाराज कर्णसिंहने औरंगाबादमें अपने नामसे कर्णपुरा महल्ला बसाया, और उसमें श्री करणी माताजीका मन्दिर बनवाया. इन महाराजाका एक विवाह महाराणा जगत्-सिंहकी बहिनके साथ हुआ था- (पृष्ठ ३२१ देखो).

विक्रमी १७२६ आषाढ़ शुक्ल ४ [हि० १०८० ता० २ सफ़र = ई० १६६९ ता० २ जुलाई] को महाराजा कर्णसिंहका देहान्त हुआ. और उनके साथ ९ राणियां और ११ ख़वासें सती हुईं. इनके बड़े कुंवर अनोपसिंह, दूसरे केसरीसिंह थे, जिनमेंसे पिछलेका जन्म विक्रमी १६९८ [हि० १०५१ = ई० १६४१] को, तीसरे कुंवर पद्मसिंहका जन्म विक्रमी १७०२ वैशाख शुक्ल ८ [हि० १०५५ ता० ६ रबीउल्अव्वल = ई० १६४५ ता० ४ मई] को,

चौथे कुंवर मोहनसिंहका जन्म विक्रमी १७०६ चैत्र शुक्ल १४ [हि० १०५९ ता० १३ रबीउल्अव्वल = ई० १६४९ ता० २७ मार्च] को हुआ था.

---

१० महाराजा अनोपसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १६९५ चैत्र शुक्ल ६ [हि० १०४७ ता० ४ ज़िल्क़ाद = ई० १६३८ ता० २१ मार्च] को हुआ था. यह महाराजा दक्षिणकी लड़ाइयोंमें बादशाही फ़ौजोंके साथ पहिलेसे मुक़र्रर कियेगये थे, इन्होंने आलमगीरके दक्षिणमें जाने बाद भी बीजापुर व गोलकुंडेकी लड़ाइयोंमें बड़ी दिलेरी दिखाई. विक्रमी १७३५ [हि० १०८९ = ई० १६७८] में महाराजा अनोपसिंहने अनोपगढ़का क़िला भाटी राजपूतोंको ज़ेर करनेके लिये बनवाया.

इनको अपने जागीरदारोंसे नाइत्तिफ़ाक़ी और बे एतिबारी होगई थी, जिससे इन्होंने ग़ैर इलाक़ेसे तनख़्वाहदार आदमी नौकर रक्खे. बनमालीदास को बादशाह आलमगीरने बीकानेरका आधा राज और मन्सब देकर बादशाही फ़ौज समेत बीकानेरपर भेजदिया. महाराजा अनोपसिंहने बादशाहके डरसे बन मालीदासको धोखा देकर आधा राज बांटदेनेका इक़ार किया. बनमालीने चंगोई में क़िला तय्यार करके राजधानी बनाना चाहा, लेकिन् महाराजा अनोपसिंहने अपने श्वशुर सोनगरा लक्ष्मीदासको अपनेसे बख़िलाफ़ जताकर धोखा देनेके लिये निकाल दिया. सोनगराने अपनी बेटीके बहानेसे किसी लौंडीको बनमालीसे ब्याहकर उसी रातको शराबमें ज़हर देदिया, जिससे वह मरगया. बादशाही अफ़्सरको, जो बनमालीदासके साथ था, एक लाख रुपया रिश्वत देकर अपने साथ मिला लिया.

महाराजा अनोपसिंहका पहिला विवाह विक्रमी १७०९ [हि० १०६२ = ई० १६५२] को कुंवर पदेकी हालतमें महाराणा राजसिंहकी बहिनके साथ हुआ था (देखो पृष्ठ ४०१). इसके बाद विक्रमी १७५५ [हि० १११० = ई० १६९८] में महाराजा अनोपसिंहका देहान्त हुआ, इनके साथ राणी व ख़वास वग़ैरह १८ औरतें सती हुईं. इनके चार बेटे स्वरूपसिंह, सुजानसिंह, रुद्रसिंह और आनन्दसिंह थे.

अनोपसिंहके छोटे भाई मोहनसिंहका एक हरिन बादशाही कोतवालने पकड़ लिया था, जिसपर बादशाही दर्बारमें तक़ार होकर मोहनसिंह मारागया, और कोत-वाल व उसके सालेको पद्मसिंहने उसी जगह क़त्ल किया. पद्मसिंह बड़ा नाम-

वर और उदार था, जिसके कई बनावटी क़िस्से और कहानियां मशहूर हैं. यह विक्रमी १७३९ [हि० १०९३ = ई० १६८२] में तापी नदीके कनारे जादूराय दक्षिणीसे लड़कर बड़ी बहादुरीके साथ मारागया, और दूसरा भाई केसरीसिंह भी विक्रमी १७२७ [हि० १०८१ = ई० १६७०] को किसी लड़ाईमें काम आया था.

११ महाराजा स्वरूपसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १७४६ भाद्रपद कृष्ण ७ [हि० ११०० ता० १५ शव्वाल = ई० १६८९ ता० २ ऑगस्ट] में देवलिया प्रतापगढ़के सीसोदिया रावत हरीसिंहकी बेटीसे हुआ. यह बचपनसे आलमगीर बाद्शाहके पास दक्षिणमें रहते थे, इनकी मा महाराणी सीसोदणी बीकानेरमें रियासती काम करती थी; उन्होंने नाज़िर ललित और सर्दारोंके बहकानेसे अपने चार मुसाहिबोंको गिरिफ्तार कराकर मरवा डाला, इससे रियासती आदमियोंमें नाराज़गी फैली, और स्वरूपसिंहके छोटे भाई सुजानसिंहको कई सर्दार आलमगीरके पास लेजानेको तय्यार हुए, लेकिन् शीतलाके निकलनेसे स्वरूपसिंहका दक्षिणमें विक्रमी १७५७ [हि० ११११ = ई० १७००] को देहान्त होनेके सबब बीकानेरमें पीछे लेआये, और सुजानसिंह गद्दीपर बिठाये गये.

१२ महाराजा सुजानसिंह.

सुजानसिंहका जन्म विक्रमी १७४७ श्रावण शुक्ल ३ [हि० ११०१ ता० १ ज़िल्क़ाद = ई० १६९० ता० ९ ऑगस्ट] को हुआ था. इनके गद्दी बैठने बाद आलमगीर गुज़रचुका था, जिसपर महाराजा अजीतसिंहने जोधपुर लेनेके बाद बीकानेर भी लेनेका इरादह किया, लेकिन् पूरा न हुआ. फिर सुजानसिंह विक्रमी १७७६ आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० ११३१ ता० २२ रजब = ई० १७१९ ता० १० जून] को डूंगरपुर के रावल रामसिंह शिवसिंहोतकी बेटीसे शादी करने गये, और लौटते वक्त सलूंबर होतेहुए उदयपुर आये. महाराणा संग्रामसिंहने इनको एक महीनेतक बहुत अच्छी तरह मिहमान रक्खा, फिर नाथद्वारे होकर बीकानेर पहुंचे. विक्रमी १७९० भाद्रपद [हि० ११४६ रबीउस्सानी = ई० १७३३ सेप्टेम्बर] में जोधपुरके महाराजा अभयसिंहने अपने भाई बख़्तसिंहको फ़ौज देकर बीकानेरपर भेजदिया, जो वि० आश्विन शुक्ल ११ [हि० ता० ९ जमादियुलअव्वल = ई० ता० २० ऑक्टोबर] को बीकानेर

पहुंचे, और नाज़िरसर तालाबपर लड़ाई हुई, इसमें बख़्तसिंहकी फ़ौजने शिकस्त खाई, तब विक्रमी आश्विन [हि० जमादियुल्अव्वल = ई० ऑक्टोबर] में महाराजा अभयसिंह फ़ौज लेकर अपने भाईकी मददको पहुंचे, लेकिन् बीकानेरके महाराजा सुजानसिंहके कुंवर ज़ोरावरसिंह नोरसे फ़ौज समेत पहले ही आपहुंचे थे, क़िलेकी लड़ाई जोधपुरकी फ़ौजसे होनेलगी. महाराजा अभयसिंहके इशारेसे उदयपुरके महाराणा संग्रामसिंहने चूंडावत जगत्सिंह, मोहीके भाटी सुरतानसिंह और पंचोली कान्हको समझानेके लिये भेजा, क्यों कि महाराजा अभयसिंह पानी और रसदके न मिलनेसे घबरागये थे.

उदयपुरके मोतमदोंने बीच बिचाव करके बीकानेर वालोंको पीछा करनेसे मना किया; महाराजा अभयसिंह फ़ौज लेकर नागोर पहुंचे. इस बारेमें मारवाड़ी भाषाकी शाइरीका मिस्रा मश्हूर है कि-"होलिका कोस पैंतीस हाली"- यानी जोधपुरकी फ़ौजने जो होलीका डांडा बीकानेरमें गाड़ा था, वह नागोरमें पैंतीस कोसपर लेजाकर जलाया, फिर उदयपुरके मोतमद वापस चलेगये.

इसके बाद महाराजा सुजानसिंह और उनके बेटे ज़ोरावरसिंहमें नाइत्तिफ़ाक़ी हुई, परन्तु महाराजाने इस झगड़ेको दूर करके सब रियासती काम अपने बेटे ज़ोरावरसिंहके सुपुर्द करदिये. उन्हीं दिनोंमें जोधपुरके महाराजा अभयसिंहके भाई बख़्तसिंह, जो नागोरके मालिक थे, बीकानेर लेनेकी कोशिशमें लगे, और बीकानेरके क़िलेदार सांखला दौलतसिंह और जयमलसरके भाटी उदयसिंह वगैरह कई आदमियोंको लालच देकर अपनी तरफ़ मिलालिया, लेकिन् यह बात महाराजा सुजानसिंहके कानतक पहुंच गई, जिससे फ़ौरन् बन्दोबस्त हुआ. सांखला दौलतसिंह मारागया, और क़िलेदारी धायभाईको मिली. महाराज बख़्तसिंहके आदमी नागोरकी तरफ़ भागगये.

विक्रमी १७९२ पौष शुक्ल १३ [हि० ११४८ ता० ११ शअ्बान = ई० १७३५ ता० २८ डिसेम्बर] को रायसिंहपुरेमें महाराजा सुजानसिंहका देहान्त हुआ. पांच पातर (ख़वास) जो इनके साथ थीं सती हुईं, और बीकानेर ख़बर आनेपर पांच राणियां महाराजाकी पगड़ीके साथ सती हुईं. इनके दो कुंवर बड़े ज़ोरावरसिंह और छोटे अभयसिंह थे, जिनमेंसे पिछलेका जन्म विक्रमी १७७३ [हि० ११२८ = ई० १७१६] में हुआ.

१३ महाराजा ज़ोरावरसिंह.

महाराजा ज़ोरावरसिंहका जन्म विक्रमी १७६९ माघ कृष्ण १४ [हि० ११२४ ता० २८ ज़िल्हिज = ई० १७१३ ता० २६ जैन्युअरी] को हुआ था. इन्होंने गद्दीपर बैठते ही अपने इलाक़ेसे जोधपुरके थाने उठादिये, जो महाराजा अभयसिंहने बीकानेरके दक्षिणी हिस्सेमें बिठाये थे. विक्रमी १७९६ [हि० ११५२ = ई० १७३९] में महाराजा अभयसिंहने बीकानेरपर चढ़ाई की, लेकिन् नागोरके महाराज बरूतसिंह और बीकानेरके महाराजा ज़ोरावरसिंहके एक होजानेसे महाराजा अभयसिंहने अपनी फ़ौजको लौटाकर उन दोनोंसे पीछा छुड़ाया. फिर महाराजा अभयसिंह इस बातकी शर्मिन्दगीसे बड़ी फ़ौज लेकर विक्रमी १७९६ वैशाख [हि० ११५२ मुहर्रम = ई० १७३९ एप्रिल] में बीकानेरकी तरफ़ रवाना हुए, और विक्रमी वैशाख कृष्ण ११ [हि० ता० २५ मुहर्रम = ई० ता० ४ मई] को देश्णोकमें आकर श्री करणी मातासे दुआ और मदद मांगी, लेकिन् वहांके चारणोंने इस चढ़ाईका होना देवीकी मर्ज़ीके बख़िलाफ़ बतलाया. तब अभयसिंहने कुछ पर्वा न करके अपनी ताक़तके भरोसेपर बीकानेरको घेरलिया; बीकानेरके उमराव, भादराके ठाकुर लालसिंह, चूरूके ठाकुर संग्रामसिंह और महाजनके ठाकुर भीमसिंह- तीनों महाराजा अभयसिंहकी फ़ौजमें जामिले, क़िलेपर लड़ाई होती रही. महाराजा ज़ोरावरसिंह व नागोरके महाराज बरूतसिंहने लिखावटके ज़रीएसे मिलाप किया, और महता आनन्दरूपको भेजकर जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहसे मदद चाही. महाराजा जयसिंहने अपना काग़ज़ इस मज़्मूनसे भेजदिया, कि मज़्बूत रहना चाहिये. नागोरके महाराज बरूतसिंहने मेड़तापर क़ब्ज़ा करलिया, और जयपुरके महाराजा जयसिंहने अपने दीवान राजामल्ल खत्रीको मए बीस हज़ार फ़ौजके जोधपुरकी तरफ़ रवाना किया. उस वक्त महाराजा जयसिंहने हँसीके तौरपर बीकानेरके महता आनन्दरूपसे कहा, कि इस वक्त तुम्हारी मददगार करणी देवी कहां गई? उसने जवाब दिया, कि आपके दिलपर बैठी मदद कररही है; तब महाराजा खुश हुए, और जोधपुरकी तरफ़ कूचकी तय्यारी की. उस वक्त कूंभाणी राजावत मुहारके ठाकुरने कहा, कि महाराजा अजीतसिंहसे आपकी दोस्ती थी, और अभयसिंह आपके जमाई हैं, फिर बीकानेरके वास्ते जोधपुरसे बिगाड़ करना अच्छा नहीं. तब नाथावत मोहनसिंह और शैखावत शिवसिंहने कहा, कि रिश्तेदारी तो बीकानेर और जोधपुर दोनों जगहसे होती रही है, लेकिन् बीकानेर

लेकर महाराजा अभयसिंह आपको भी आराम न लेने देगा. इस बातको महाराजाने पसंद किया, और बड़ी जर्रार फ़ौजके साथ जोधपुरकी तरफ़ रवाना हुए. यह सुनकर महाराजा अभयसिंहने बीकानेरसे जोधपुरकी तरफ़ कूच किया, और बीकानेरके राजपूतोंने पीछा करके उनकी फ़ौजका माल अस्बाब लूट लिया, और महाराजा अभयसिंहने भागकर जोधपुरके क़िलेमें पनाह ली.

मेड़तेसे महाराज बख़्तसिंह, और राजामल्ल खत्री भी महाराजा जयसिंहके शामिल होगये, और बीकानेरसे महाराजा ज़ोरावरसिंह भी बड़ी फ़ौजके साथ रवाना हुए, जयसिंहने क़िले जोधपुरको घेरलिया- महाराजा जयसिंहके शामिल इस मुहिममें नीचे लिखे सर्दार अपनी २ जमइयत समेत थे :-

नागोरके महाराज बख़्तसिंह, करौलीके राजा गोपालपाल, बूंदीके राव राजा दलेलसिंह, शाहपुरेके राजा उम्मेदसिंह, कृष्णगढ़के महाराजा राजसिंहके दूसरे बेटे बहादुरसिंह, उदयपुरकी तरफ़से सलूंबरके रावत केसरीसिंह, शिवपुरके राजा इन्द्रसिंह गौड़, भरतपुरका राजा सूरजमल्ल जाट. इन सबसे एक दर्बारमें सलाह करके महाराजा जयसिंहने महाराजा अभयसिंहसे इक्कीस लाख रुपया फ़ौज ख़र्चका लेकर कूच किया, बनार ग्राममें महाराजा ज़ोरावरसिंह भी आमिले, और इस इह्सानको दिलसे माना. कुछ दिनों बाद जयपुरसे ज़ोरावरसिंह रुख़्सत लेकर बीकानेरकी तरफ़ लौटे. रास्तेमें सानूके मक़ाम पर चूरूके ठाकुर संग्रामसिंह, और उनके भाई भूपालसिंहको बुलाकर विक्रमी १७९८ आषाढ़ कृष्ण ४ [हि० ११५४ ता० १८ रबीउल्अव्वल = ई० १७४१ ता० ३ जून] को दग़ासे मरवा डाला.

महाराजा ज़ोरावरसिंह हिसारकी तरफ़ गये थे, वापस आते हुए विक्रमी १८०२ ज्येष्ठ शुक्ल ६ [हि० ११५८ ता० ४ जमादियुल्अव्वल = ई० १७४५ ता० ७ जून] को ग्राम अनूपपुरे पहुंचकर परलोक सिधारे, इनको कामदारोंने ज़हर दिया बतलाते हैं- इन महाराजाके साथ दो राणी और चौबीस ख़वास, पातर तथा दासियां सती हुईं.

इन महाराजाके लावलद मरनेपर भूकरकाके ठाकुर कुशलसिंहने रियासतका बन्दोबस्त किया, महाराजा अनूपसिंहके छोटे बेटे आनन्दसिंहके चार बेटे थे, अमरसिंह, गजसिंह, तारासिंह, गूदड़सिंह; इनमेंसे अमरसिंह गद्दीका हक़दार था, लेकिन् कुशलसिंहने गजसिंहको गद्दीपर बिठादिया.

१४ महाराजा गजसिंह.

महाराजा गजसिंहका जन्म विक्रमी १७८० चैत्र शुक्ल ४ शुक्रवार [हि० ११३५ ता० २ रजब = ई० १७२३ ता० ९ एप्रिल] को हुआ था.

जब गजसिंह गादी बैठगये, तो उनके भाई अमरसिंह अजमेरके मक़ामपर जोधपुरके महाराजा अभयसिंहके पास पहुंचे, और महाजनका ठाकुर भीमसिंह, व भादराका ठाकुर लालसिंह उनका मददगार बना, महाराजा अभयसिंहको थोड़ासा मुल्क देना कुबूल करके मददके लिये फ़ौज लेने बाद बीकानेरकी तरफ़ चले; कुछ दिनोंतक जोधपुरकी फ़ौजने लड़ाइयां कीं. फिर महाराजा गजसिंह फ़ौज तय्यार करके बीकानेरसे आगे बढ़े, और सुजानदेसर नामी कुएके पास लड़ाई हुई- जोधपुरकी फ़ौजका मुसाहिब भंडारी रत्नचन्द मारागया, और तीन सौ आदमी बीकानेरके और पांच सौ जोधपुरके बड़ी बहादुरीके साथ काम आये. विक्रमी १८०४ [हि० ११६० = ई० १७४७] में नागोरके महाराज बख़्तसिंह अपने भाई महाराजा अभयसिंहसे नाराज़ होकर दिल्लीमें अहमदशाह बादशाहके पास गये, और वहांसे फ़ौजी मदद लेकर मारवाड़में आये- महाराज बख़्तसिंहकी मददपर महाराजा गजसिंह भी पहुंचे.

महाराजा अभयसिंहने मल्हार राव हुल्करको मददपर बुलाया, और आप भी जोधपुरसे तय्यार हुए. हुल्करने दोनों भाइयोंको समझाकर आपसमें मिलादिया; अभयसिंह जोधपुर, बख़्तसिंह नागोर, और गजसिंह बीकानेरको लौटआये.

विक्रमी १८०५ फाल्गुण शुक्ल १३ [हि० ११६२ ता० ११ रबीउल्अव्वल = ई० १७४९ ता० १ मार्च] को महाराजा गजसिंहके पिता आनन्दसिंहका इन्तिक़ाल हुआ.

जब विक्रमी १८०७ [हि० ११६३ = ई० १७५०] में दूदासर तालाबपर महाराज बख़्तसिंह और जोधपुरके महाराजा रामसिंहकी लड़ाई हुई, उस वक़्त महाराजा गजसिंह भी बख़्तसिंहके मददगार थे, इस लड़ाईमें कुशलसिंह चांपावत आउवेका, और शेरसिंह मेड़तिया रियांका वग़ैरह बहुतसे राजपूत बहादुरीके साथ मारेगये, जिनका हाल तफ़्सीलवार जोधपुरकी तवारीख़में लिखा जायगा.

महाराजा बख़्तसिंह और गजसिंह दोनों फ़त्हयाब होकर मारवाड़में फिरते हुए सर्दारोंको अपना तरफ़्दार करते जाते थे. आख़िरमें दो तीन जगह रामसिंहसे लड़ाइयां हुईं; और विक्रमी १८०८ आषाढ़ [हि० ११६४ शअ़्बान = ई०

१७५१ जून] में महाराजा बख़्तसिंहने जोधपुरका क़िला छीन लिया. रामसिंह जयपुर, और मरहटोंके पास मददकी उम्मेदपर फिरता रहा.

इस कार्रवाईके बाद महाराजा गजसिंह बीकानेरको लौट आये. इसी संवत्के माघ [हि० ११६५ रबीउल्अव्वल = ई० १७५२ जैन्युअरी] में महाराजा गजसिंहने जैसलमेर जाकर रावल अक्षयसिंहकी बेटीके साथ विवाह किया; इस बरातमें जोधपुरके महाराजा बख़्तसिंहके कुंवर विजयसिंह भी शामिल थे.

विक्रमी १८०९ [हि० ११६५ = ई० १७५२] में मरहटोंकी मदद लेकर महाराजा रामसिंह मारवाड़पर चढ़ आये; तब महाराजा गजसिंह भी बख़्तसिंहकी मददके लिये चला, दोनों शामिल होकर पुष्करराज और अजमेरतक पहुंचे; जब मरहटे लौटगये, तो गजसिंह भी रुख़्सत होकर बीकानेर आये.

इसी संवत्में महाराजा बख़्तसिंहका इन्तिक़ाल होगया, और उनके बेटे विजयसिंह जोधपुरकी गादीपर बैठे.

विक्रमी १८१० [हि० ११६६ = ई० १७५३] में दिल्लीके बादशाह अहमदशाहने हिसारका परगना और सात हज़ारी मन्सब महाराजा गजसिंहके लिये लिख भेजा, क्यों कि महाराजाने ज़रूरतके वक़ एक बड़ी फ़ौज महता अभयराम और कई सर्दारोंके साथ शाही मददके लिये भेज दी थी. इसी संवत्में जोधपुरके माज़ूल राजा रामसिंहकी, जोधपुरके महाराजा विजयसिंहपर मरहटोंकी मदद लेकर, चढ़ आनेकी ख़बर मिली; तब महाराजा गजसिंह भी विजयसिंहकी मददके लिये मेड़तेके मक़ामपर जा शामिल हुए.

विक्रमी १८११ आश्विन [हि० ११६७ ज़िल्हिज = ई० १७५४ सेप्टेम्बर] में मरहटोंसे राठौड़ोंकी बड़ी भारी लड़ाई हुई. इस लड़ाईमें महाराजा विजयसिंह, महाराजा गजसिंह और कृष्णगढ़के महाराजा बहादुरसिंह मेंसे शिकस्त खाकर पहिले दो तो नागौर पहुंचे, और तीसरे कृष्णगढ़को चलेगये, फिर महाराजा गजसिंहको भी नागौरसे बीकानेर आना पड़ा. दक्षिणियोंने विजयसिंहको नागौरमें घेर लिया, लेकिन् मारवाड़के एक मोकल नामी खोखर राजपूतने एक दूसरे राजपूतको साथ लेकर मरहटोंके सर्दार जयाआपा सेंधियाको दग़ासे मारडाला, जिसमें सलूंबर रावत जैतसिंह, चहुवान राजसिंह, गोसाईं विजय भारती- तीनों मरहटी फ़ौजसे लड़कर बहादुरीके साथ मारेगये. ये लोग रामसिंह, और विजयसिंहके बीच बिचाव करानेको महाराणा राजसिंह दूसरेकी तरफ़से गये थे, जिनपर मरहटोंने सेंधियाके मरवानेवाले ख़याल करके हल्ला करदिया; फिर

भी दक्षिणियोंका घेरा नहीं उठा. तब महाराजा विजयसिंह नागौरका क़िला अपने सर्दारोंके भरोसे छोड़कर आप बीकानेरको चलेगये, वहांसे दोनों महाराजा रवाना होकर जयपुर गये, कि वहांके महाराजा माधवसिंहको अपना मददगार बनावें; परन्तु महाराजा माधवसिंह तो महाराजा रामसिंहके मददगार थे. उन्होंने विजयसिंहको दग़ासे गिरिफ़्तार करना चाहा, लेकिन् वह दावमें न आये, और गजसिंह व विजयसिंह जयपुरसे चलकर रिणी ग्रामके मक़ामपर पहुंचे थे, वहां ख़बर आई, कि बीस लाख रुपया लेकर दक्षिणियोंने घेरा उठालिया. तब महाराजा विजयसिंह तो जोधपुरको गये, और महाराजा गजसिंहने जयपुरमें वापस आकर विक्रमी १८१२ [हि० ११६९ = ई० १७५६] को महाराजा सवाई जयसिंहकी बेटीसे, और विक्रमी १८१३ ज्येष्ठ [हि० ११६९ रमज़ान = ई० १७५६ मई] में झलायके ठाकुर रायसिंहकी बहिनके साथ विवाह किये, और बीकानेरको चलेगये.

महाराजा विजयसिंहने जोधपुरसे जोधा सर्दारसिंह और सिंगवी श्रीचन्दको भेजकर मदद करनेके लिये कहलाया, तब महाराजा गजसिंहने पचास हज़ार रुपये भेजदिये. फिर बीकानेरके मुल्क में कई बार सर्दारोंके बखेड़े पैदा हुए, परन्तु महाराजाने ख़ुद जाकर उनको अपनी होश्यारी या फ़ौजी ताक़तसे मिटादिया; सरहदी मुसल्मान जोइया अथवा दाऊद पोत्रोंने भी कईबार फ़साद किया, परन्तु उनको भी पीछे हटाया, और विक्रमी १८२४ [हि० ११८१ = ई० १७६७] में जब जयपुरके महाराजा माधवसिंहकी भरतपुरके जाट जवाहिरमल्लसे लड़ाई हुई, तब महाराजा गजसिंहने भी पेश्तर अपनी फ़ौज जयपुरकी मददके लिये भेजदी, और ख़ुदने भी कूच किया, लेकिन् लड़ाईका ख़ातिमा सुनकर पीछे बीकानेरको लौटआये. विक्रमी १८२७ चैत्र कृष्ण ४ [हि० ११८४ ता० १८ ज़िल्क़ाद = ई० १७७१ ता० ६ मार्च] के लग्नपर जयपुरके महाराजा पृथ्वीसिंहके साथ महाराजा गजसिंहकी पोती और कुंवर राजसिंहकी बेटीका विवाह बड़ी धूमधामके साथ हुआ; दोनों तरफ़से सरबराह और त्याग में (१) लाखों रुपये ख़र्च हुए.

विक्रमी १८२८ माघ [हि० ११८५ ज़िल्क़ाद = ई० १७७२ फ़ेब्रुअरी] में मेवाड़का बखेड़ा मिटानेके लिये महाराणा अरिसिंहने गजसिंहको बुलाया, लेकिन् महाराजा विजयसिंहको भी ज़िले गोड़वाड़का लोभ था, इसलिये गजसिंहको कहलाया,

(१) जयपुरकी तवारीख़में तो त्याग जयपुरकी तरफ़से बांटाजाना लिखा है, और बीकानेरवाले अपनी तवारीख़में लिखते हैं, कि जयपुरवालोंने तीस हज़ार रुपये त्यागके दिये, परन्तु महाराजा गजसिंहने एक लाख अपनी तरफ़से बांटे.

कि दोनों साथ चलकर श्री नाथद्वारेके दर्शन और महाराणा अरिसिंहसे मिलकर बातचीत करेंगे. ये दोनों शामिल होकर नाथद्वारे आये, और चार महीनेतक वहीं रहे, फिर महाराणा अरिसिंह भी उदयपुरसे नाथद्वारे पहुंचे. कृष्णगढ़के महाराज बहादुरसिंह भी इस बातचीतमें शामिल हुए, लेकिन् महाराजा विजयसिंह दिलसे मेवाड़का बखेड़ा मिटना नहीं चाहते थे, क्यों कि ज़िला गोड़वाड़ चन्द शर्तोंसे हिक्मत अमलीके तौरपर महाराणा अरिसिंहने उनको दिया था, अगर बखेड़ा मिटजाता तो वह परगना भी मारवाड़के शामिल रहना मुश्किल होता.

महाराणा अरिसिंह तो उदयपुर चलेआये, और ये तीनों राजा अपनी अपनी राजधानियोंको चलेगये.

विक्रमी १८३२ [हि० ११८९ = ई० १७७५] में महाराजा गजसिंह और उनके कुंवर राजसिंहमें नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा हुई, कुंवरको बीकानेरसे निकालकर कई आदमी शामिल होगये, फिर कुंवर देश्णोकमें जारहा, जो करणी माताका शरणाई स्थान है. विक्रमी १८३८ [हि० ११९५ = ई० १७८१] में वहांसे निकलकर जोधपुरके महाराजा विजयसिंहके पास पहुंचा, और उनकी ज़मानतसे विक्रमी १८४२ [हि० ११९९ = ई० १७८५] में पीछा बीकानेर अपने बापके पास आया. महाराजाने कुंवरको नज़र क़ैद किया. विक्रमी १८४४ चैत्र शुक्ल ६ [हि० १२०१ ता० ४ जमादियुस्सानी = ई० १७८७ ता० २५ मार्च] को महाराजा गजसिंह का इन्तिक़ाल होगया, और कुंवर राजसिंह गादी बैठे. महाराजा गजसिंहके कुंवर १ राजसिंह, २ सूरतसिंह, ३ छत्रसिंह, ४ श्यामसिंह, ५ अजबसिंह, ६ मुहकमसिंह, ७ रामसिंह, ८ गुमानसिंह, ९ सबलसिंह, १० भोपालसिंह, ११ जगत्सिंह, १२ खुमाणसिंह, १३ मूणसिंह, १४ उदयसिंह, १५ ज़ालिमसिंह, १६ सुल्तानसिंह, १७ देवीसिंह, १८ खुशहालसिंह; और खवासके १ दौलतराम, २ पृथ्वीराज, ३ धीरतसिंह, ४ जैतसिंह, ५ चन्द्रभाण, ६ सवाईसिंह, ७ तिलोकसिंह, और ८ उदयकरण थे.

१५ महाराजा राजसिंह.

महाराजा राजसिंहका जन्म विक्रमी १८०१ कार्तिक कृष्ण २ [हि० ११५७ ता० १६ रमज़ान = ई० १७४४ ता० २५ ऑक्टोबर] को हुआ, और विक्रमी १८४४ वैशाख कृष्ण २ [हि० १२०१ ता० १६ जमादियुस्सानी =

ई० १७८७ ता० ५ एप्रिल] को गादी बैठे, लेकिन् थोड़े दिनों बाद इसी संवत्के वैशाख शुक्क ८ [हि० ता० ६ रजब = ई० ता० २६ एप्रिल] को क्षयी (सिल) की बीमारीसे इन्तिक़ाल होगया; तब इनके छोटे भाई सूरतसिंह गादी बैठे.

१६ महाराजा सूरतसिंह.

इन महाराजाका जन्म विक्रमी १८२२ पौष शुक्क ६ [हि० ११७९ ता० ४ रजब = ई० १७६५ ता० १८ डिसेम्बर] को हुआ था, इन्होंने गादीपर बैठनेके बाद देशी जागीरदारोंका झगड़ा विक्रमी १८४७ [हि० १२०४ = ई० १७९०] में खुद जाकर मिटाया.

विक्रमी १८५६ [हि० १२१४ = ई० १७९९] में सोढ़ल ग्रामकी जगह सूरतगढ़ बसाया. विक्रमी १८६३ और ६४ (१) [हि० १२२१ तथा २२ = ई० १८०६ तथा ७] में उदयपुरके महाराणा भीमसिंहकी बाई कृष्णकुंवर के संवन्धकी बाबत जयपुर और जोधपुरके राजाओंमें जो बखेड़ा उठा, तो उस वक़ महाराजा सूरतसिंह जयपुरके महाराजा जगत्सिंहके शामिल थे; लड़ाईके वक़ जोधपुरके सर्दार जयपुरवालोंसे मिलगये, तब महाराजा मानसिंहने भागकर जोधपुरके क़िलेमें पनाह ली, और महाराजा जगत्सिंह व सूरतसिंहने क़िलेको घेरलिया.

इसके बाद महाराजा सूरतसिंह तो मोतीजुराकी बीमारीके सबब बीकानेर चलेआये, और नव्वाब मीरख़ां कई हज़ार फ़ौजके साथ महाराजा मानसिंहकी मिलावटसे जयपुरकी तरफ़ रवाना हुआ. तब महाराजा जगत्सिंह भी भागकर जयपुर पहुंचे, और मीरख़ांकी कोशिशसे बेगुनाह कृष्णकुंवर बाई ज़हरसे क़त्ल कीगई. इसी अदावतसे महाराजा मानसिंहने बड़ी फ़ौज देकर विक्रमी १८६५ [हि० १२२३ = ई० १८०८] में सिंगवी इन्द्रराजको बीकानेरपर भेजा, और दूसरी तरफ़ दाऊद पोत्रा व जोइया वग़ैरह सिन्धके मुसल्मानोंने भी चढ़ाई की, तब महाराजा सूरतसिंहने फलौदीका परगना व तीन लाख रुपया देकर जोधपुरकी फ़ौजको लौटाया, और पहिले फ़त्ह किये हुए छः क़िले देकर सिन्धके मुसल्मानों (२) से पीछा छुड़ाया.

---

(१) यह मारिका संवत् १८६३ में शुरू हुआ और १८६४ तक जारी रहा- इस लिये दोनों संवत् लिखे गये हैं.

(२) सिन्धके मुसल्मान, नव्वाब बहावलपुरकी फ़ौजसे मुराद है, क्यौं कि वही दाऊद पोत्रे कहलाते हैं, और उन्होंनेही बीकानेर और जैसलमेरका इलाक़ा दबाकर अपनी रियासत क़ायम की है.

विक्रमी १८७० [हि॰ १२२८ = ई॰ १८१३] में महाराजा मानसिंहके गुरु आयस देवनाथने बीचमें पड़कर बीकानेर और जोधपुरके महाराजोंकी सफ़ाई करवादी, और महाराजा सूरतसिंहने जोधपुर जाकर मुलाक़ात की. महाराजा मानसिंहने बड़े स्नेहके साथ मान सन्मान किया, और महाराजा सूरतसिंह पीछे बीकानेर आये. विक्रमी १८७१ [हि॰ १२२९ = ई॰ १८१४] में चूरूका ठाकुर बदलगया, जिसपर फ़ौज समेत अमरचन्द कामदारको भेजकर चूरू ख़ालिसेमें किया, और महाराजाने अमरचन्दको रावका ख़िताब देकर बहुतसा इनआम दिया, परन्तु थोड़े दिनों बाद लोगोंके बहकानेसे उसे मरवा डाला. विक्रमी १८७२ [हि॰ १२३१ = ई॰ १८१६] में जागीरदारोंने बहुत फ़साद मचाया, और मीरख़ां व जमशेदख़ां भी लूटनेके लिये गश्त करते रहे. विक्रमी १८७३ [हि॰ १२३१ = ई॰ १८१६] में चूरूके ठाकुरने अपना क़िला लेलिया, जिसमें महाराजाका थानेदार महता मेघराज मारा गया.

विक्रमी १८७४ [हि॰ १२३३ = ई॰ १८१८] में बहुतसे मुल्की फ़साद होनेके सबब ओझा काशीनाथको दिल्ली भेजकर सर्कार अंग्रेज़ीसे पहिला अह्दनामह किया. विक्रमी १८७५ [हि॰ १२३४ = ई॰ १८१९] में नीचे लिखेहुए गढ़, और इलाक़े अंग्रेज़ी फ़ौजकी मददके साथ सर्दारोंसे छुड़ायेः–

(१) चूरूका गढ़, पृथ्वीसिंह शिवसिंहोतसे.
(२) सिद्धमुख, पृथ्वीसिंह शृंगोतसे.
(३) सिरसलाकी गढ़ी, रणजीतसिंह बणीरोतसे.
(४) नीबांकी और सुलखनियांकी गढ़ी दोनों, शेरसिंह कृष्णसिंहोतसे.
(५) ददरेवेका गढ़, बीका सूरजमल्ल कुंभकर्णोतसे.
(६) देपालसरकी गढ़ी, बणीरोत रोड़सिंह अमरसिंहोतसे.
(७) जाहरियाकी गढ़ी, बणीरोत मानसिंह हरीसिंहोतसे.
(८) गंधेलीकी गढ़ी, शृंगोत अनूपसिंह संग्रामसिंहोतसे.
(९) विरकालीकी गढ़ी, शृंगोत दलपतसिंह कृष्णसिंहोतसे.
(१०) भादराका गढ़, जो प्रतापसिंह पहाड़सिंहोतसे सिक्खोंने लिया था, वह अंग्रेज़ोंने सिक्खोंसे लेकर महाराजाको दिया.

विक्रमी १८७७ आषाढ़ कृष्ण ८ [हि॰ १२३५ ता॰ २२ रमज़ान = ई॰ १८२० ता॰ ४ जुलाई] के लग्नपर महाराजाके बड़े कुंवर रत्नसिंह उदयपुर आये, और महाराणा भीमसिंहकी राजकन्या अजबकुंवरके साथ विवाह किया, जो

महाराणी बाघेलीके गर्भसे पैदा हुई थी; और छोटे कुंवर मोतीसिंहका विवाह बागोर के महाराज शिवदानसिंहकी बेटीके साथ हुआ. इसी लग्नपर महाराणाकी कन्या रूपकुंवरका विवाह जैसलमेरके रावल गजसिंहसे, और महाराणाकी पोती कीका-बाईकी शादी कृष्णगढ़ महाराजाके कुंवर मुहकमसिंहके साथ हुई. इन विवाहोंका पूरा हाल महाराणा भीमसिंहके बयानमें लिखाजायगा.

शादीके बाद कुंवर रत्नसिंह बीकानेर आये. विक्रमी १८८५ चैत्र शुक्ल ९ [हि० १२४३ ता० ७ रमज़ान = ई० १८२८ ता० २४ मार्च] को महाराजा सूरतसिंहका इन्तिक़ाल हुआ. इनके तीन बेटे- रत्नसिंह, मोतीसिंह और लखमसिंह थे, जिनमेंसे मोतीसिंहका देहान्त तो विक्रमी १८८२ [हि० १२४१ = ई० १८२५] में बापके सामने ही होगया था, जिनके साथ बागोरके महाराज शिवदानसिंहकी बेटी दीपकुंवर सती हुई.

---

१७ महाराजा रत्नसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १८४७ पौष कृष्ण ९ [हि० १२०५ ता० २३ रबीउस्सानी = ई० १७९० ता० ३० डिसेम्बर] को हुआ. इन महाराजाके गादी बैठते ही जैसलमेरके भाटियोंने सरहदपर फ़साद किया, जिसपर बीकानेरसे फ़ौज भेजीगई, लेकिन् उसने शिकस्त पाई, और भाटियोंने एक नक़ारा छीनलिया, इसलिये जॉर्ज क्लार्क साहिबने मौक़ेपर जाकर फ़ैसला करदिया. बीकानेरकी तरफ़से हिन्दूमल्ल और हुक्मीचन्द मोतमद थे.

इसी वर्षमें महाजन गांवको फ़ौज भेजकर ख़ालिसेमें दाख़िल किया, और ठाकुर वैरीशाल भागा, व इसका बेटा अमरसिंह क़ैदी बनकर बीकानेर आया. फिर वैरीशाल भी साठ हज़ार रुपया पेशकश देकर हाज़िर होगया, और देश्णोक श्री करणी देवीके मन्दिरमें महाराजाने इक़ार किया, कि हमारी तरफ़से कुछ दग़ाबाज़ी न होगी, वैरीशाल भी अपने नौकर अमरावतोंसे दग़ा न करे. लेकिन् वैरीशालने विक्रमी १८८६ [हि० १२४५ = ई० १८२९] में दग़ासे २४ अमरावतों को मारडाला, तब महाराजाने फ़ौज भेजकर महाजनको अपने क़ब्ज़ेमें लिया. इसपर ठाकुर वैरीशालने जैसलमेर और पुंगलके भाटियोंसे मदद लेकर फ़साद उठाया. सर्कार अंग्रेज़ीने नसीराबादसे फ़ौज भेजना चाहा, लेकिन् वह इस सबबसे रुकगई, कि महाराजाने आप जाकर हम्ला किया, जिससे वैरीशाल भागगया, पुंगलका ज़िला भाटी शार्दूलसिंहको देदिया. विक्रमी १८८८ [हि० १२४७

= ई० १८३१] में दिल्लीके बादशाहकी तरफ़से एक ख़िलअ़त, हाथी, घोड़े, नक़ारा और नरेन्द्र सवाईका ख़िताब फ़र्मानके साथ महाराजा रत्नसिंहके लिये आया, जिसको महाराजाने अदबके साथ लिया. फिर महाराजाने अपने वकील हिन्दूमल्लको महारावका ख़िताब दिया.

इसी संवत्में महाजन, बीदासर और चारवासके ठाकुर हाज़िर हुए, महाराजाने उनकी जागीरें बहाल कीं, लेकिन् महाजनवालोंने साठ हज़ार, बीदासरवालोंने पचास हज़ार, और चारवासवालोंने चालीस हज़ार रुपये पेशकशीके दिये. इन्हीं दिनोंमें महाराजा हरिद्वारका तीर्थ करने गये; लौटते वक्त हिसारके क़िलेसे भाद्राके ठाकुर प्रतापसिंह को छुड़ाया, जोकि डकैतीके कुसूरमें क़ैद हुआ था; परन्तु प्रतापसिंहने फिर फ़साद करके छाणी ग्राममें क़ब्ज़ा करलिया. इसपर महाराजाने छाणी छीनलिया, और प्रतापसिंह देष्णोकमें श्री करणी देवीके शरणे जा बैठा. विक्रमी १८९१ [हि० १२५० = ई० १८३४] में डकैती बन्द करनेके लिये महाराजाने रत्नगढ़में एजेन्ट गवर्नर जेनरल कर्नेल् आल्व्ज़से मुलाक़ात करके एक फ़ौज भरती करनेका इक़ार किया, उसमें सौ बीदावत राजपूत भी शामिल कियेगये; इस फ़ौज ख़र्चके लिये महाराजाने बाईस हज़ार रुपया देना मंजूर किया. फिर महाराजा विक्रमी १८९३ [हि० १२५२ = ई०१८३६] में गयाश्राद्ध करनेको छः हज़ार फ़ौज साथ लेकर गये, और लौटतेहुए अपने कुंवर सर्दारसिंहकी शादी रीवां कराकर बीकानेर आये.

विक्रमी १८९६ [हि० १२५५ = ई० १८३९] में पुष्कर तीर्थकी यात्राको गये, और वहांसे महाराणा सर्दारसिंहके बुलानेपर उदयपुर पहुंचे; और विक्रमी पौष शुक्ल १२ [हि० ता० १० ज़िल्क़ाद = ई० १८४० ता० १७ जैन्युअरी] को महाराजाके कुंवर सर्दारसिंहका विवाह महाराणाकी राजकन्या महतावकुंवरके साथ हुआ, इसके बाद बीकानेर चलेआये.

उदयपुरके महाराणा सर्दारसिंह, जो तीर्थ यात्राके लिये गये थे, लौटते वक्त बीकानेर आये, और महाराजाकी कन्याके साथ विक्रमी १८९७ आश्विन शुक्ल ९ [हि० १२५६ ता० ७ शअ़्बान = ई० १८४० ता० ७ ऑक्टोबर] को शादी की.

विक्रमी १८९९ [हि० १२५८ = ई० १८४२] में महाराजा गवर्नर जेनरलकी मुलाक़ातके लिये दिल्ली गये. विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] में बीकानेरके महाराजाको दो तोपें सर्कार अंग्रेज़ीने दीं; फिर विक्रमी १९०८

श्रावण शुक्ल ११ [हि० १२६७ ता० ९ शव्वाल = ई० १८५१ ता० ९ ऑगस्ट] को महाराजा रत्नसिंहका देहान्त हुआ, और कुंवर सर्दारसिंह गद्दीपर बैठे.

---

१८ महाराजा सर्दारसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १८७५ भाद्रपद शुक्ल १४ [हि० १२३३ ता० १३ ज़िल्क़ाद = ई० १८१८ ता० १४ सेप्टेम्बर] को हुआ था, इनके राज्यमें बीस प्रधान बदले गये- गुमानसिंह वैद्य और लच्छीराम रखेचा एक वर्ष, फिर अकेला लच्छीराम एक वर्ष, गुमानसिंह एक वर्ष, दाजी अनन्त पंडित ग्वालियरी एक वर्ष, रामलाल द्वारिकानी सात वर्ष, फिर गुमानसिंह वैद्य एक वर्ष, रामलाल एक वर्ष, लच्छीरामका बेटा मानमल्ल रखेचा नौ महीने, शिवलाल नायटा तीन महीने, फ़त्हचन्द सूराणा १५ दिन, पुरोहित गंगाराम खेतड़ीका साढ़े तीन महीने, शाहमल्ल कोचर आठ महीने, मानमल्ल आठ महीने, शिवलाल महता १५ दिन, लक्ष्मीचन्द नायटा आठ महीने, इसके बाद मुन्शी विलायत हुसैन एक सालके क़रीब, और पण्डित मन्फूल सी, एस, आई, कुछ मुद्दततक रहे; इन लोगोंकी अदलाबदली कर्नेल् पाउलेटने दण्डका एक दूसरेसे ज़ियादह रुपया देनेके सबब लिखी है.

इनमेंसे प्रधान रामलालकी तारीफ़ राज्यके लोग ज़ियादह करते हैं. विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में एक अंग्रेज़ी अफ्सर असिस्टेण्ट गवर्नर जेनरलके नामसे सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से डकैती रोकनेके लिये सुजान-गढ़में रक्खागया, जिसको पोलिटिकल एजेण्ट बीकानेरका भी इख्तियार हासिल था. इस उहदेपर पहिले आने वाले अफ्सर कप्तान पाउलेट थे, जो कि अब कर्नेल् और मुल्क मारवाड़के रेज़िडेण्ट हैं.

महाराजा सर्दारसिंह विक्रमी १९२९ वैशाख शुक्ल ८ [हि० १२८९ ता० ६ रबीउल्अव्वल = ई० १८७२ ता० १६ मई] में इस दुन्याको छोड़गये; इनके कोई औलाद नहीं थी, इस लिये डूंगरसिंह गोद लिये जाकर गद्दीपर बिठायेगये, जो ठाकुर लालसिंहके कुंवर और महाराजा गजसिंहसे सातवीं पीढ़ीमें हैं.

---

१९ महाराजा डूंगरसिंह.

इनके गद्दी बैठनेकी बाबत रियासतके सर्दारों, राणियों और अहल्कारोंमें, जो कि अपने मत्लबके लिये रियासतके फ़ायदोंपर कुछ खयाल नहीं करते, बहुत झगड़ा फैला.

कुछ लोग खड्गसिंहके तरफ़दार और अक्सर डूंगरसिंहके मददगार थे, एक हफ़्तेतक कोई मुआमला तै न पाया. कप्तान ब्राडफ़ोर्ड असिस्टेएट एजेएट गवर्नर जेनरल सुजानगढ़से गर्म मौसममें बहुत तक्लीफ़ उठाकर बीकानेर पहुंचे, और राज्यके लोगोंके बेजा मन्शाओंको दूर करके पाट राणी वगैरहकी सलाहसे डूंगरसिंहके राजा होनेकी मनादी कराई.

विक्रमी १९२९ माघ कृष्ण ९ [हि० १२८९ ता० २३ ज़िल्क़ाद = ई० १८७३ ता० २२ जैन्युअरी] को कर्नेल् पेली साहिब एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से महाराजा डूंगरसिंहको बीकानेर जाकर ख़िल्अ़त, रियासती मुहरें और मुल्की इख़्तियार, जो थोड़े दिनोंसे पोलिटिकल असिस्टेएटके सुपुर्द था, दिया. इख़्तियार मिलनेके एक वर्ष बाद ठाकुरों और रअ़य्यतकी अर्ज़ियां ख़राब इन्तिज़ामकी बाबत अंग्रेज़ी सर्कारमें पहुंचीं, जिसपर एजेएट गवर्नर जेनरलने ख़रीतेके ज़रीएसे महाराजाको रियासती कामपर तवज्जुह दिलाई, और पोलिटिकल असिस्टेएटको ख़ानगी बातोंमें ज़ियादह दख़्ल देनेसे मना किया.

विक्रमी १९३१ आश्विन कृष्ण ८ [हि० १२९१ ता० २२ शअ़्बान = ई० १८७४ ता० ५ ऑक्टोबर] को महाराजाने कर्नेल् सर लेविस पेली साहिब एजेएट गवर्नर जेनरलसे सांभर मक़ामपर मुलाक़ात की; इसके बाद मुल्की दौरेका इरादह था, लेकिन् इत्तिफ़ाक़से उन दिनोंमें महाराणा साहिब उदयपुरके गुज़रने से, जो महाराजाके भानजे होते थे, और महाराव राजा अलवरके इन्तिक़ालसे, जो रिश्तेमें मामूं थे, बीकानेरको लौटना पड़ा; तमाम रियासतके अन्दर शादी और त्यौहारोंकी रस्में एक महीना तक बन्द और गोश्त व शराबके खाने पीनेकी एक वर्ष तक बिल्कुल मनाई रही.

विक्रमी १९३२ माघ कृष्ण १३ [हि० १२९२ ता० २७ ज़िल्हिज = ई० १८७६ ता० २५ जैन्युअरी] को महाराजा साहिब आगरा मक़ामपर इंग्लिस्तान व हिन्दुस्तानके वलीअ़हद शाहज़ादह साहिब वेल्ज़की पेश्वाई और मुलाक़ातमें दूसरे रईसोंकी तरह शरीक हुए. इसके बाद महाराव राजा बूंदी और महाराजा कृष्णगढ़से मुलाक़ात करके बीकानेरको वापस आये. इस सफ़रमें सर्कारी कारख़ाने देखनेसे महाराजाको बहुत ख़ुशी हासिल हुई, और उनको अपने इलाक़ेके बर्ख़िलाफ़, जो ज़ियादह ग़ैर आबाद और रेगिस्तान है, सर्कारी मुल्ककी सर्सब्ज़ी और रौनक़पर निहायत तअ़ज्जुब हुआ.

विक्रमी १९३३ फाल्गुण कृष्ण ३ [हि० १२९४ ता० १७ मुहर्रम = ई० १८७७ ता० २ फ़ेब्रुअरी] को महाराजाने मक़ाम भुज राजधानी कच्छमें

पहुंचकर वहांके राव साहिबकी बेटीसे शादी की. इस सफ़रमें महाराजा किश्तीके ज़रीएसे द्वारिकाको गये, जहां कि बहुत मुद्दत पहिले विक्रमी १६५० [हि० १००१ = ई० १५९३] में बादशाही मन्सब्दार और उनके बुज़ुर्ग राव रायसिंहके सिवाय बीकानेरसे कोई नहीं गया था.

विक्रमी १९४१ [हि० १३०१ = ई० १८८४] में बीकानेरके सर्दारोंने महाराजाके लालच और उनके मुसाहिब अहल्कारोंकी कार्रवाईसे नाराज़ होकर बग़ावत की, जिससे रिआया और मुल्ककी तबाहीका अन्देशा था, रियासतमें फ़साद दूर करने और संभलनेकी बिल्कुल ताक़त न थी; इस लिये कर्नेल् सर एडवर्ड ब्राडफ़ोर्ड एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह, जिनको इस मुल्ककी ख़राबियोंका बहुत तजरिबा है, सर्कारी फ़ौज लेकर बीकानेर गये; उन्होंने कई फ़सादी ठाकुरोंको नज़र बन्द किया, और रियासतकी निगरानी और वहांके कामकी दुरुस्तीपर एक सर्कारी अफ़्सर पोलिटिकल एजेएट और सुपेरिन्टेन्डेंटको रखदिया.

तरजमा.

पहिला अह्दनामह नम्बर ८३.

अह्दनामह जो अंग्रेज़ी ईस्टइण्डिया कम्पनी और बीकानेरके महाराजा सूरतसिंहके दर्मियान मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेटकाफ़ साहिब (गवर्नर जेनरलके दिये हुए इख़्तियारोंके मुवाफ़िक़) और ओझा काशीनाथकी मारिफ़त (राज राजेश्वर महाराजा सूरतसिंह बहादुरके दिये हुए इख़्तियारके मुवाफ़िक़) हुआ.

(१) शर्त- दोस्ती और ऐकता और ख़ैरख़्वाही, इज़्ज़तदार कम्पनी और महाराजा सूरतसिंह व उनके वारिसों और जानशीनोंके आपसमें होगी, और एक सर्कारके दोस्त और दुश्मन दूसरी सर्कारके भी दोस्त और दुश्मन समझे जावेंगे.

(२) शर्त- गवर्मेएट अंग्रेज़ी ख़ास राजस्थान और इलाके बीकानेरकी हिफ़ाज़त करनेका वादा करती है.

(३) शर्त- महाराजा सूरतसिंह और उनके जानशीन सर्कार अंग्रेज़ीकी ताबेदारी करेंगे, और उसको बड़ा समझेंगे, और किसी रईस या दूसरे सर्दारसे वास्ता नहीं रक्खेंगे.

(४) शर्त- महाराजा और उनके वारिस और जानशीन किसी रईस या

सर्दारसे सुलहके पैग़ाम गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी इत्तिला और मंज़ूरीके बग़ैर नहीं करेंगे, परन्तु मामूली दोस्तानह तहरीर अपने दोस्तों और रिश्तेदारोंके साथ जारी रक्खेंगे.

(५) शर्त- महाराजा और उनके वारिस या जानशीन किसीपर ज़ियादती नहीं करेंगे, और शायद किसी से तक़ार होजायगी, तो उसका फ़ैसला गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी मारिफ़त कियाजायगा.

(६) शर्त- जो कि बीकानेरके बाज़े रहने वालोंने चोरी धाड़ा वग़ैरह करना इख्तियार किया है, और अक्सर लोगोंका माल लूटा है, इससे दोनों सर्कारकी ताबेदार रअय्यतका बहुत नुक्सान हुआ है, इस वास्ते महाराजा वादा करते हैं, कि आजतक अंग्रेज़ी रअय्यतका, जो अस्बाब लूटागया होगा, वह महाराजा वापस दिलावेंगे; और आगेको चोर धाड़ेतियोंको अपनी रियासतमें क़ैद और ग़ारत करदेंगे; और अगर इस कामका बन्दोबस्त महाराजासे न होसकेगा, तो उनके मांगनेपर सर्कार अंग्रेज़ी इस कामके वास्ते फ़ौजी मदद देगी; उस मददके फ़ौज ख़र्च देनेका इक़ार महाराजा करते हैं; और फ़ौज ख़र्च नहीं देसकेंगे, तो उसके एवज़ कुछ इलाक़ा अपना सर्कार अंग्रेज़ीके सुपुर्द करदेंगे, जो सर्कारी रुपया अदा होने बाद महाराजाको वापस मिलजायगा.

(७) शर्त- सर्कार अंग्रेज़ी महाराजाकी दर्ख्वास्तके मुवाफ़िक़ ठाकुरों और दूसरे बाशिन्दोंको, जो सर्कश हैं, महाराजाका ताबेदार करदेगी, लेकिन् इस सूरतमें भी महाराजा कुल फ़ौज ख़र्च देंगे, और अगर नहीं दे सकेंगे, तो कुछ इलाक़ा सर्कार अंग्रेज़ीके सुपुर्द करदेंगे, जो रुपया जमा होने पीछे वापस महाराजाको मिल जावेगा.

(८) शर्त- महाराजा बीकानेर सर्कार अंग्रेज़ीको मांगनेके वक़ अपने मक़्दूरके मुवाफ़िक़ फ़ौज देंगे.

(९) शर्त- महाराजा और उनके वारिस और जानशीन अपने कुल मुल्कके मालिक और हाकिम हैं, इस रियासतमें अंग्रेज़ी हुकूमत नहीं होगी.

(१०) शर्त- सर्कार अंग्रेज़ीकी यह तज्वीज़ है कि बीकानेर और भटनेरके रास्तों में अम्न व आराम रहे, और वह काबुल व खुरासान जानेवाले सौदागरोंके लायक़ दुरुस्त हों; इस वास्ते महाराजा इक़ार करते हैं कि उन रास्तोंका ऐसा वन्दोबस्त करदेंगे कि मुसाफ़िर लोग आरामके साथ उनके इलाक़ेसे गुज़रें- और मामूली राहदारीके सिवाय किसी तरहकी रोक टोक नहीं कीजावेगी.

(११) शर्त- यह ग्यारह शर्तोंका अह्दनामह तय्यार होकर उसपर मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेटकाफ़ और ओझा काशीनाथकी मुहर और दस्तख़त हुए. इसकी नक़्लें गवर्नर जेनरल और राजराजेश्वर महाराजा सूरतसिंह बहादुरकी तस्दीक़ कीहुई बीस दिन पीछे नीचे लिखी तारीख़को आपसमें एक दूसरेको दी जावेंगी.

तारीख़ ९ मार्च सन् १८१८ ईसवी मक़ाम दिहली.

दस्तख़त सी० टी० मेटकाफ़, [मुहर]

दस्तख़त ओझा काशीनाथ, [मुहर]

[गवर्नर जेनरलकी छोटी मुहर.] दस्तख़त हेस्टिंग्ज़,

इस अह्दनामहको गवर्नर जेनरल बहादुरने कैम्पमें घाघरा नदीके किनारे पतरस घाटके पास २१ मार्च सन् १८१८ को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त जे. ऐडम, सेक्रेटरी गवर्नर जेनरल.

नम्बर ८४.

उस सनदका तरजमा, जिसके मुवाफ़िक़ बाज़े गांव महाराजा सर्दारसिंह बहादुर राजा बीकानेरको मिले.

मुवर्रख़े ता० ११ एप्रिल सन् १८६१ ई०.

जो कि साहिब एजेंट गवर्नर जेनरल बहादुर राजस्थानकी रिपोर्टसे मालूम हुआ कि ग़द्रके दिनोंमें महाराजा सर्दारसिंह बहादुर राजा बीकानेरने सर्कार अंग्रेज़ीकी ख़ैरख़्वाही और ताबेदारीके ख़यालसे आप हाज़िर रहकर और बहुत रुपया ख़र्च करके बाज़े यूरोपियन लोगोंकी जान बचाई, और दूसरी ख़िद्मतें भी गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी पसन्दके लायक़ कीं; इस लिये उन ख़िद्मतोंसे सर्कार अंग्रेज़ीने ख़ुश होकर महाराजाको ख़ुशीका ख़रीता और क़ीमती ख़िल्अ़त (सरोपाव) बख़्शा. सर्कारने ख़ुशीके साथ एक अ़लहदा फ़िहरिस्तके मुवाफ़िक़ ज़िले सिरसामेंसे चौदह हज़ार दो सौ इक्कानवे रुपये की आमदनीके गांव महाराजा को हमेशहके लिये निकालदिये, इस लिये ये गांव इस सनदके ज़रीएसे उनके क़दीमी इलाक़ेके शामिल किये गये; और तारीख़ १ मई सन् १८६१ ईसवीसे उन्हीं शर्तोंपर, जिनपर कि उनका क़दीम इलाक़ाह मिला है, इस सनदका भी अमल दरामद होगा.

उन गांवोंके नाम मए सालाना जमाबन्दीके, जो महाराजा बीकानेरको ख़ैरख़्वाहीके एवज़ सर्कार अंग्रेज़ीसे मिले, एचिसनके अह्दनामोंकी किताबकी तीसरी जिल्दके पृष्ठ २३२ से नीचे लिखेजाते हैं:-

नम्बर	नाम ग्राम.	सालाना जमा, सन् १८६१-६२ ई०	कैफ़ियत.
१	साबोरा	३०० रु०	
२	नानकपट्टी	१७७ रु०	
३	खाराकुवा	४९० रु०	इस गावकी जमा तरक्की पर है, सन् १८६५-६६ में ५९० रुपयेतक पहुंचेगी.
४	गोदयाखार	४०६ रु०	
५	कामपुरा	१३७ रु०	२३५ रु०
६	सोलावाली	२३४ रु०	
७	मलरखारा	४५१ रु०	
८	बासेहर	५०० रु०	
९	गलवाला	४१० रु०	
१०	सहारन	३५० रु०	
११	कुलचन्द्र	२५० रु०	
१२	सुरावली	९४८ रु०	
१३	चंदरूवाली	२०० रु०	
१४	नीरकामरया	७४० रु०	
१५	पन्नीवाली उर्फ़ चगरानी	२०७ रु०	
१६	कनाली	४५१ रु०	
१७	गलरावती	५३४ रु०	
१८	मसानी	३४६ रु०	
१९	पट्टी बरजीका	८८९ रु०	
२०	रता खारा	१९९ रु०	

२१	रतीखारा	१६ रु०	२३५ रु०
२२	किशनपुरा	१२० रु०	सन् १८७०-७१ में ३०० रु०
२३	सलीमगढ़	१७ रु०	१३० रु०
२४	घारी	२१० रु०	सन् १८६५-६६ में ३४० रु०
२५	सलवाला खुर्द	१९४ रु०	२६६ रु०
२६	बेरवाला कलां	२८० रु०	
२७	सलवाला कलां	२४१ रु०	३६६ रु०
२८	तलवाड़ा कलां	७५७ रु०	
२९	जलालाबाद	१७६ रु०	२७६ रु०
३०	मुहारवाला	४८२ रु०	५५४ रु०
३१	सीतावाली	२२३ रु०	२६१ रु०
३२	रामसर	२५८ रु०	३०८ रु०
३३	देहली खुर्द	३९४ रु०	४५४ रु०
३४	रामनगर	२०० रु०	
३५	देहली कलां	७३० रु०	७८० रु०
३६	मरजावाई	३६१ रु०	४२३ रु०
३७	जाववाली	३१० रु०	३६० रु०
३८	भोरांपुरा	१७४ रु०	२२५ रु०
३९	खैरावाली	१८१ रु०	२३१ रु०
४०	शरवांपुरा	४७३ रु०	
४१	कंदाहा	२८५ रु०	

१४२९१ रुपया.

अह्दनामह नम्बर ८५.

सर्कार अंग्रेज़ी और श्रीमान् सर्दारसिंह महाराजा बीकानेर व उनके वारिसों और जानशीनोंके बीचका अह्दनामह, जो एक तरफ़ लेफ्टिनेंट कर्नेल् रिचर्ड हार्ट किटिंग सी० एस० आई० राजपूतानहके एजेंट गवर्नर जेनरलने श्रीमान् राइट आनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेअर लॅरिन्स बैरोनेट वाइसराय और गवर्नर जेनरल हिन्दुस्तानसे पूरा इख्तियार पाकर खुद महाराजा सर्दारसिंहके साथ किया.

पहिली शर्त- कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाक़ेमें बड़ा जुर्म करे, और बीकानेरकी राज्यसीमामें पनाह लेना चाहे, तो बीकानेर की सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी, और दस्तूरके मुताबिक़ उसके मांगेजाने पर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

दूसरी शर्त- कोई आदमी बीकानेरके राज्यका बाशिन्दह वहांके राज्यकी सीमामें कोई बड़ा जुर्म करे, और अंग्रेज़ी मुल्कमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम बीकानेरके राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ सुपुर्द कर देवेगी.

तीसरी शर्त- कोई आदमी, जो बीकानेरके राज्यकी रअय्यत न हो, और बीकानेरके राज्यकी सीमामें कोई बड़ा जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ्तार करेगी, और उसके मुक़द्दमेकी रूबकारी सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अदालतमें होगी. अक्सर क़ाइदह यह है कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसला उस पोलिटिकल अफ्सरके इजलासमें होता है, जिसके तहतमें वारिदात होनेके वक़्पर बीकानेर की मुल्की निगहबानी रहे.

चौथी शर्त- किसी हालमें कोई सर्कार किसी आदमी को, जो बड़ा मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जबतक कि दस्तूरके मुताबिक़ खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाक़ेमें कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर जैसा कि उस इलाक़ेके क़ानूनके मुताबिक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम पाया जावे, उसका गिरिफ्तार करना दुरुस्त ठहरेगा, और वह मुज्रिम क़रार दिया जायगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

पांचवीं शर्त- नीचे लिखेहुए काम बड़े जुर्म समझे जावेंगे.

१ ख़ून- २ ख़ून करनेकी कोशिश- ३ वहशियाना क़त्ल- ४ ठगी- ५ ज़हरदेना- ६ सख़्तगीरी (ज़बर्दस्ती व्यभिचार)- ७ ज़ियादह ज़ख़्मी करना- ८ लड़काबाला चुरा लेजाना- ९ औरतोंका बेचना- १० डकैती- ११ लूट- १२ सेंध (नक़्ब) लगाना- १३ चौपाये चुराना- १४ मकान जलादेना- १५ जालसाज़ी करना- १६ झूठा सिक्का चलाना- १७ धोखा देकर जुर्म करना- १८ माल अस्बाब चुरालेना- १९ ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना या वर्ग़लाना (बहकाना).

छटी शर्त- ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमको गिरिफ्तार करने, रोकरखने, या सुपुर्द करनेमें, जो ख़र्च लगे, वह उसी सर्कारको देनापड़ेगा, जिसके कहनेके मुताबिक़ ये बातें कीजावें.

सातवीं शर्त- ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक़्तक बरक़रार रहेगा, जब

तक कि अह्दनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई उसके तब्दील करनेकी ख़्वाहिश दूसरेको ज़ाहिर न करे.

आठवीं शर्त- इस अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो कि दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवाय ऐसे अह्दनामहके, जो कि इस अह्दनामहकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हो.

मक़ाम बीकानेर ता० ३ फ़ेब्रुअरी सन् १८६९ ईसवी.

दस्तख़त परसी, डब्ल्यू० पाउलेट,
नायब एजेंट गवर्नर जेनरल.

दस्तख़त और मुहर महाराजा
बीकानेर की.

दस्तख़त आर० एच० कीटिंग,
दस्तख़त मेओ.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसराय गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम शिमलेपर ता० १५ जून सन् १८६९ ई० को की.

दस्तख़त डब्ल्यू० एस० सेटनूकार.
सर्कार हिन्दकी फ़ॉरेन् डिपार्ट-
मेन्टका सेक्रेटरी.

कृष्णगढ़की तवारीख़.

जुग्राफ़ियः

इस राज्यके वायव्य कोण और उत्तरमें जोधपुर; पूर्वमें जयपुर और अजमेर का अंग्रेज़ी ज़िला; दक्षिण, नैर्ऋत्य कोण व पश्चिममें अजमेर है. इस राज्यकी ख़ास हदें क़ायम करना मुश्किल है, क्यों कि यह ज़ियादहतर ज़िले अजमेर और जयपुरके गाओंसे खिचड़ीकी तरह मिलाहुआ है. इसकी लम्बाई दक्षिणसे उत्तर

को २६ अंश और १७ कलासे २६ अंश और ५९ कलातक, और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिमको ७४ अंश और ४३ कलासे ७५ अंश और १३ कलातक है; इसका रक्बा ७२४ मील मुरब्बा, और आबादी ११२६३३ है; रियासतकी आमदनी किताब विक़ाया राजपूतानहमें २२५००० रुपया लिखी है, लेकिन् इस वक़ इससे ज़ियादह मालूम होती है. इस रियासतके दक्षिणसे वायव्य कोणको पहाड़ है, और इसमें ४ क़िले व क़स्बे मश्हूर हैं-

१ राजधानी कृष्णगढ़, जो अजमेर व आगरेकी रेलवे सड़कपर वाक़े है; क़िलेके उत्तरी तरफ़ गूंदोला नामी एक भील है, जिसका नाम बादशाहनामह वग़ैरह फ़ार्सी तवारीख़ोंमें जोगी तालाब लिखा है; इसके बीच टापूमें महाराजा मुहकमसिंहने अपने नामपर 'मुहकमबिलास' नामका एक महल तय्यार करवाया; जब तालाब भरजाता है तो किश्तीमें बैठकर उस महलमें जाना पड़ता है, और तालाबके दक्षिणी किनारेपर क़िलेसे मिलाहुआ महाराजा पृथ्वीसिंहने फूल महल नामी एक मकान अंग्रेज़ी और हिन्दुस्तानी तर्ज़पर बनवाया है. क़िलेके गिर्दकी ख़न्दक़ हमेशह पानीसे भरी रहती है, मज़्बूत दीवार के अन्दर महाराजाके महल और घोड़ोंकी पायगाह वग़ैरह रियासती कारख़ाने हैं; इस क़िलेमें एक क़िलेदार, जो भीतर दर्वाज़ेपर रहता है उसका बड़ा इख़्तियार है. महाराजा बहादुरसिंहका तज्वीज़ कियाहुआ बन्दोबस्त अबतक जारी है, जिससे क़िले ख़र्चके लिये जागीर मुक़र्रर है; उसमेंसे नाज, बारूद, सीसा वग़ैरह सामान हमेशह दुरुस्त और मौजूद रहता है; जब कभी राज्यमें काम पड़े, तो क़िलेदार सूद लेकर रुपया देता है, और इक़ारपर उस ख़ज़ानहमें जमा करालेता है. क़िलेके अलावह शहरके गिर्द भी शहरपनाह बनीहुई है. इस शहरमें ८००० आदमियोंकी आबादी समझी जाती है.

२ दूसरा रूपनगरका क़िला, जो महाराजा रूपसिंहने बनवाया था, इसको दुबारा महाराजा बहादुरसिंहने मज़्बूत किया था, वह बहुत अच्छा लड़ाईके काम का है; और इस क़िलेमें भी क़िलेदारके तअल्लुक़ कृष्णगढ़के मुवाफ़िक़ इन्तिज़ाम कियागया है.

३ तीसरा क़िला सरवाड़, इस क़िलेका मैदानमें सिल्सिलेवार इहातेके अन्दर इहाता बनाहुआ है, इस तरहपर तेहरी दीवार और ख़न्दक़ोंसे आगरा क़िलेकी तरह मज़्बूत कियागया है; यहां भी क़िलेदारके मातहत कृष्णगढ़के मुवाफ़िक़ सब सामान दुरुस्त रहता है, और क़िलेदारकी इजाज़तके बग़ैर भीतर कोई आदमी नहीं जासक्ता

है, और इजाज़त भी मुश्किलसे मिलती है; क़िलेके पास शहरपनाह भी मज़्बूत बनी हुई है, लेकिन् क़िलेके अन्दर कोई इमारत रहनेके लायक़ नहीं है, महाराजा पृथ्वीसिंहने एक छोटासा मकान बनवादिया है, जिसमें चन्द आदमी एक दो रोज़ गुज़रान करसक्ते हैं.

४ चौथा फ़तहगढ़, जो महाराजा बहादुरसिंहने अपने छोटे बेटे बाघसिंहको जागीरमें दिया था, और वह अबतक उसकी औलादके क़ब्ज़ेमें है, इसका ज़िक्र आगे लिखाजावेगा.

तवारीख़.

इनका पहिला हाल जोधपुरकी तवारीख़के शामिल समझना चाहिये, क्यौं कि ये उसी ख़ान्दानमें से निकले हैं; अलहदा रियासत क़ायम होनेका हाल इस तरहपर है कि जोधपुरके राव मालदेवके बेटे उदयसिंहको बादशाह अक्बरने राजाका ख़िताब और जोधपुर मए इलाक़हके जागीरमें दिया. विक्रमी १६४९ [हि॰ १००० = ई॰ १५९२] में राजा उदयसिंहकी बेटी मानमतीकी शादी शाहज़ादह सलीमके साथ हुई. उदयसिंहका इन्तिक़ाल होनेके बाद उनकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ सूरसिंहको तो जोधपुरकी गद्दी मिली, और किशनसिंह (कृष्णसिंह) को शाहज़ादह सलीमके पास रक्खा; जब अक्बर बादशाहका इन्तिक़ाल होगया, और जहांगीर तख़्तपर बैठा, तो उसने १ कृष्णसिंहका मन्सब बढ़ाकर सेठोलाव, जो जोगी तालाबके क़रीब था, जागीर में दिया, जिसके खंडहर वगैरहके निशानात अबतक कृष्णगढ़के क़रीब पश्चिमकी तरफ़ बाक़ी हैं.

कृष्णसिंहने जागीरपाने बाद सेठोलावके एवज़ विक्रमी १६६६ (१) [हि॰ १०१८ = ई॰ १६०९] में अपने नामपर कृष्णगढ़ बसाया, आख़िरकार बादशाहने कृष्णसिंहको तीन हज़ारी ज़ात और डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब इनायत किया था, जब विक्रमी १६७० या ७१ [हि॰ १०२३ = ई॰ १६१४] में बादशाह जहांगीर मेवाड़की मुहिमके लिये अजमेर आया, तब महाराजा कृष्णसिंह भी शाहज़ादह ख़ुर्रमके साथ मेवाड़की लड़ाइयोंमें शामिल थे; और उन्होंने बड़ी २ बहादुरियां दिखलाईं. कहते हैं कि कृष्णसिंहने मेवाड़ी राजपूतोंके हाथसे एक पैर में बर्छेकी चोट भी खाई थी, आख़िरकार मेवाड़की लड़ाई ख़त्म होने बाद ईश्वरकी क़ुद्रतसे इस राजाका इन्तिक़ाल आपसकी लड़ाईमें विक्रमी १६७२ ज्येष्ठ कृष्ण ८ [हि॰ १०२४ ता॰ २२ रबीउस्सानी = ई॰ १६१५

---

(१) महाराजा रूपसिंहकी वार्तामें वृन्द कविने विक्रमी १६६८ लिखा है, और मारवाड़की तवारीख़में विक्रमी १६६६ है.

ता० २१ मई] को हुआ. इस मारिकेका हाल जोधपुर और कृष्णगढ़की तवारीख़में जुदे २ तौरसे लिखा है, लेकिन् हम ख़ास जहांगीर बादशाहकी तुज़क ज़हांगीरी किताबसे उसे नक़्ल करते हैं.

तुज़क जहांगीरीके पृष्ठ १३७ में हिज्री १०२४ [विक्रमी १६७२ = ई० १६१५] में बादशाह लिखता है कि-

"१५ खुरदाद (१) जुमुएकी रातको एक अजीब मुआमला ज़ाहिर हुआ; मैं इस रातको इत्तिफ़ाक़से पुष्करमें था; मुख़्तसर बात यह है, कि किशनसिंह, राजा सूरजसिंह (२) का सगा भाई, राजाके वकील गोविन्ददाससे अपने एक भतीजे गोपालदास नामके मारे जानेके बाइस, जो कुछ मुद्दत पहिले जवानीमें गोविन्ददासके हाथसे क़त्ल हुआ था, सख़्त रंजीदा था. इस झगड़ेके तूल तवील सबब हैं. ग़रज़ कि कृष्णसिंहको यह उम्मेद थी, कि गोपालदास अस्लमें राजा (सूरसिंह) का भी भतीजा था, इस लिये वह उसके एवज़में गोविन्ददासको मारडालेगा. राजाने गोविन्ददासकी कारगुज़ारी और होश्यारीके सबब भतीजेके ख़ूनका एवज़ लेनेसे दरगुज़र करके ग़फ़्लत बरती. किशनसिंह ने जब इस क़िस्मकी बेपरवाई राजाकी तरफ़से देखी, तो अपने दिलमें इरादह किया, कि मैं भतीजेका एवज़ ज़ुरूर लूंगा, और इस कार्रवाईपर कभी कमी न करूंगा. वह यह बात मुद्दतसे अपने दिलमें ठाने हुए था, यहांतक कि ज़िक्र की हुई रातमें अपने भाइयों, मददगारों और नौकरोंको जमा करके यह बात जतलाने लगा, कि आजकी रात मैं गोविन्ददासके मारनेको चलता हूं, चाहे जो कुछ होजावे; उसकी तबीअतमें यह ख़याल नथा, कि राजाको कुछ नुक़्सान पहुंचे. राजा भी ख़ुद इस मुआमलेसे बेख़बर था. किशनसिंह सुबह होनेके क़रीब अपने भतीजे कर्ण और दूसरे हमराहियों समेत रवाना हुआ. जब राजाकी हवेलीके दर्वाज़ेपर पहुंचा, तो अपने कई कारगुज़ार आदमियोंको पियादह करके गोविन्ददासके घरपर, जो राजाकी हवेलीसे मिला हुआ था, भेजा; और आप सवारीकी हालतमें दर्वाज़ेपर ठहर गया. पैदल लोगोंने गोविन्ददासके घरमें बड़कर उसके कई आदमियोंको, जो हिफ़ाज़त और पहरेके तौरपर होश्यार थे, तलवारसे तमाम किया. इस मार पीटकी फ़र्यादमें गोविन्ददास जागगया, और घबराहटसे अपनी तलवार लेकर घरके एक कोनेसे होकर निकलने लगा, ता कि अपने बाहरवाले चौकीदारोंके पास पहुंचजावे.

(१) खुरदाद तुर्की महीनेका नाम है.

(२) सूरसिंह जोधपुरका राजा था.

किशनसिंहके पैदल चौकीदारोंको मारचुके थे, और गोविन्ददासकी फ़िक्रमें बढ़ते आते थे. इस मौक़ेपर गोविन्ददास उनके साम्हने पड़कर मारागया. इससे पहिले कि गोविन्ददासके मारेजाने की ख़बर किशनसिंहको तह्क़ीक़ हो, वह बेसब्रीके साथ घोड़ेसे उतरकर हवेलीमें जानेलगा, उसके आदमियोंने बहुतसा इन्कार और तक्रार की, कि पैदल होना मुनासिब नहीं है, लेकिन् उसने किसी बातपर ध्यान न दिया. अगर वह थोड़ी देर ठहरकर अपने ग़नीमके तबाह होनेकी ख़बर पालेता, तो यक़ीन था कि अपना मत्लब पूरा करनेपर सहीह व सलामत लौट आता; लेकिन् तक्दीरी हुक्म दूसरी तरहपर जारी होचुका था. किशनसिंहके पियादह होने और मकानमें क़दम रखनेके वक़ राजा, जो अपनी हवेलीमें बे ख़बर सोरहा था, आदमियोंके शोर व फ़साद मचानेसे जागगया; और अपने दर्वाज़ेपर नंगी तलवार हाथमें लेकर आखड़ा हुआ. उसके आदमी यह हाल देखकर दौड़ पड़े, और उन लोगोंपर, जो पैदल होकर गोविन्ददासके घरमें बड़गये थे, रुजूअ़ हुए. पियादोंकी क्या हक़ीक़त थी ? राजाके आदमी बेशुमार थे, किशनसिंहके एक आदमीके वास्ते दस आदमी मुक़ाबलेपर पहुंच गये. आख़िरमें किशनसिंह और उसका भतीजा कर्ण जब राजाके मकानकी तरफ़ आये, तो राजाके आदमियोंने हम्ला करके दोनोंको मार डाला. किशनसिंहके ७ और कर्णके ९ ज़ख़्म लगे. इस लड़ाईमें राजाकी तरफ़से ३० और किशनसिंहकी तरफ़से ३८ याने कुल्ल ६८ आदमी क़त्ल हुए. जब सूरज निकलनेपर रौशनी फैली, तो सब हाल ज़ाहिर हुआ. राजाने भाई, भतीजे और ऐसे नौकरको, कि जो जानसे ज़ियादह अज़ीज़ था, मराहुआ पाया; बाक़ी आदमी अलहदा अलहदा बिखरगये. यह ख़बर पुष्करमें मुझको मिली, मैंने हुक्म दिया कि मरेहुओंको, जिस तरहपर उनका दस्तूर है, जलादिया जावे, और इस झगड़ेका सबब अच्छी तरह तह्क़ीक़ कियाजावे. आख़िरमें ज़ाहिर हुआ, कि हक़ीक़त वही थी, जो लिखीगई, और किसी एवज़के लायक़ नहीं है."

मआसिरुल् उमरामें इतना ज़ियादह लिखा है कि- "कृष्णसिंह और उसके भतीजेके मारेजाने बाद उनके आदमी निकल गये, जिनके पीछे सूरसिंहके आदमी लगे, बादशाही झरोखेके साम्हने इनका मुक़ाबला हुआ. इनकी तलवारें ऐसी चलीं कि जिसके सिरमें लगी कमरतक उतरगई, और जो कमरमें लगी, उसके दो टुकड़े करदिये. कहते हैं कि उस दिनसे सिरोहीकी तलवारकी इज़्ज़त बढ़गई, और लोग

उसे चाहने लगे. बादशाहने कृष्णसिंहका मन्सब उसके बेटोंमें तक़्सीम करादिया".

मआसिरुल् उमरामें इस मारिकेमें तर्फ़ैनके ६८ आदमी मारे जाने लिखे हैं, और मारवाड़की तवारीख़में, जो लोग मारेगये, उनके नाम नीचे लिखे हैं:-

महाराजा सूरसिंहके आदमियोंकी तफ़्सील-

१ केशवदास.
२ हुल पत्ता भदावत.
३ चहुवान नरहर.
४ भाटी पृथ्वीराज.
५ भाटी रायसिंह.
६ भाटी भादा.
७ भाटी गोविन्द.
८ भाटी मनोहरदास गोविन्ददासोत.
९ भोपत कलावत.
१० सोनगरा केशवदास.
११ धायभाई सामा.
१२ चहुवान साजण.
१३ भाटी सूजा.
१४ भाटी कल्ला.
१५ भाटी कूंपा.
१६ पंवार केशवदास.

सिवाय ऊपर लिखेहुए आदमियोंके और भी कई लोग मारेगये.

महाराजा कृष्णसिंहकी तरफ़के, जो आदमी मारेगये, उनकी तफ़्सील यह है-

१ राव कर्णसिंह शक्तिसिंहोत.
२ राठौड़ खेतसी गोपालदासोत चांपावत.
३ राठौड़ बाघा खेतसिंहोत.
४ भाटी जोधा.
५ चाकर कान्हा.
६ राव किशोरदास कल्याणदासोत.
७ राठौड़ सांवलदास सूरावत.
८ माला लखमणोत.
९ मेड़तिया माधव रामदासोत.
१० गोपालदास भगवतोत जैतावत.
११ भाटी धन्ना.
१२ मानसिंह कल्याणदासोत.
१३ सीसोदिया भारमल्ल.
१४ सूरा कर्मसोत नारायणोत.
१५ कर्मसोत रुद्र चन्द्रावत.
१६ भग्गा.
१७ राठौड़ प्रयागदास सुरताणोत.
१८ गहलोत राधा.
१९ हींगोला सेखा.
२० धीरा.
२१ गाम बेड़वासियाके ऊदावत ३.
२२ मकवाणा कृष्णा.
२३ कछवाहा भोपत ३.
२४ हुल ३ आदमी.
२५ दहिया नापा.
२६ महेश.
२७ कछवाहा दूदा.
२८ लाड खानी.

इन आदमियोंकी तादादमें इख़्तिलाफ़ है, लेकिन् मालूम होता है कि बादशाह जहांगीरका लिखना दुरुस्त होगा.

महाराजा कृष्णसिंहके चार बेटे थे— सहसमल्ल, जगमाल, भारमल्ल और हरीसिंह. महाराजा रूपसिंहकी "वचनिका" में इस तरह लिखा है, कि कृष्णसिंहके मारेजानेपर उसका बड़ा बेटा (१) सहसमल्ल गद्दीपर बैठा. वह जहांगीर बादशाह की ख़िद्मतमें रहा, और विक्रमी १६८५ ज्येष्ठ [हि॰ १०३७ शव्वाल = ई॰ १६२८ जून] में मरगया; तब इसका छोटा भाई (२) जगमाल गद्दीपर बैठा. यह जगमाल बड़ा बहादुर और अपने छोटे भाई भारमल्लके साथ बहुत मुहब्बतसे रहता था; पहिले जब शाहज़ादह खुर्रम और पर्वेज़की टोस नदीपर लड़ाई हुई, उस वक्त ये दोनों भाई खुर्रमकी फ़ौजमें थे, और जोताजोत हाथीपर इन दोनोंने हम्ला किया था, उस वक्त राजा भीम सीसोदिया तो मारागया, और ये दोनों ज़िन्दा बाक़ी रहगये थे.

जगमाल अपने भाईकी गद्दीपर बैठनेके बाद थोड़े ही अर्सेतक कृष्णगढ़का राजा कहलाया, याने विक्रमी १६८५ माघ शुक्ल १२ [हि॰ १०३८ ता॰ १० जमादियुस्सानी = ई॰ १६२९ ता॰ ६ फ़ेब्रुअरी] को महाबतख़ांके बेटे अमानुल्लाख़ां ने किसी एक राजपूतको मारडालना चाहा, तब जगमाल और भारमल्ल दोनों भाई उस राजपूतके मददगार बनकर बड़ी बहादुरीके साथ मारेगये. वृन्द कविने इस लड़ाईका होना जाफ़राबादमें लिखा है. इसके बाद शाहजहां बादशाहने कृष्णसिंहके चौथे बेटे (४) हरीसिंहको जगमालका मन्सब देकर कृष्णगढ़का राजा बनाया.

हरीसिंह शाहजहांकी ख़िद्मतमें रहता था, विक्रमी १७०० वैशाख शुक्ल ८ [हि॰ १०५३ ता॰ ६ सफ़र = ई॰ १६४३ ता॰ २६ एप्रिल] को उस का इन्तिक़ाल होगया, तब शाहजहां बादशाहने इसी वर्षके ज्येष्ठ शुक्ल ५ [हि॰ ता॰ ३ रबीउल्अव्वल = ई॰ ता॰ २३ मई] को भारमल्लके बेटे (५) रूपसिंहको हरीसिंहकी जगह कृष्णगढ़का राजा बनाया.

५ रूपसिंह.

रूपसिंहका जन्म विक्रमी १६८५ वैशाख शुक्ल ११ [हि॰ १०३७ ता॰ ९ रमज़ान = ई॰ १६२८ ता॰ १५ मई] को हुआ था, इस राजाका हाल वृन्द कविने "रूपसिंहकी वार्ता" नामी ग्रन्थमें कविताके ढंगपर बहुत बढ़ावेके साथ लिखा है, लेकिन् अस्ल मत्लब वही है, जो उस ज़मानेकी फ़ार्सी तवारीख़ोंमें दर्ज है, इस वास्ते हम मआसिरुल् उमराका तरजमा लिखते हैं, जिसमें शाहजहांके ज़मानेकी किताबोंसे चुना हुआ हाल दर्ज है.

"रूपसिंह राठौड़, जोधपुरके राजा सूरजसिंहके छोटे भाई कृष्णसिंहका पोता.

हरीसिंह बे औलाद मरगया, तो बादशाहने उसके भतीजे रूपसिंहको ख़िल्अ़त और मन्सबकी तरक़्क़ी व चांदीके ज़ीन समेत घोड़ा देकर कृष्णगढ़ उसकी जागीरमें बहाल रक्खा. विक्रमी १७०१ मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [हि० १०५४ ता० ५ शव्वाल = ई० १६४४ ता० ८ नोवेम्बर] को जब शाहजहांकी बेटी बेगम साहिबा नाम, जो चरागकी लपटसे जलगई थी, उसके अच्छे होनेपर बादशाहने खुशीका जल्सा किया, तो उस मौक़ेपर बादशाहने रूपसिंहका अस्ल मन्सब इज़ाफ़े सहित एक हज़ारी ज़ात व सात सौ सवार किया. फिर विक्रमी १७०२ पौष कृ० ४ [हि० १०५५ ता० १८ शव्वाल = ई० १६४५ ता० ७ डिसेम्बर] को इन्हें एक हज़ारी ज़ात और एक हज़ार सवारका मन्सब मिला.

विक्रमी १७०२ [हि० १०५५ = ई० १६४५] में शाहज़ादह मुराद-बख़्शके साथ बल्ख़, बदख़्शांकी मुहिमपर तईनात हुआ, जब बल्ख़ पहुंचे, तो वहां का मालिक नज़र मुहम्मद ख़ां शाहज़ादहसे बग़ैर मुक़ाबलेके भागगया. फिर बहादुरख़ां और असालतख़ां शाहज़ादहके हुक्मसे नज़र मुहम्मदख़ांके पीछे लगे, और यह राजा शाहज़ादहके बिना हुक्म अपनी मर्दानगीसे उनके साथ हो लिया, और ग़नीमसे बहुत लड़ा, जिसके एवज़ उसने विक्रमी १७०३ प्रथम श्रावण शुक्ल १० [हि० १०५६ ता० ८ जमादियुस्सानी = ई० १६४६ ता० २४ जुलाई] में डेढ़ हज़ारी ज़ात और एक हज़ार सवारका मन्सब पाया, जिसके बाद विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ११ [हि० ता० ९ शअ़्बान = ई० ता० २२ सेप्टेम्बर] को बल्ख़की कारगुज़ारीसे दो हज़ारी ज़ात व एक हज़ार सवारका मन्सब मिला, और विक्रमी १७०४ वैशाख कृष्ण ७ [हि० १०५७ ता० २१ रबीउल्अव्वल = ई० १६४७ ता० २९ एप्रिल] को उसके वास्ते बल्ख़में घोड़ा भेजागया, उसके दूसरे वर्ष निशान हासिल हुआ; और विक्रमी १७०५ [हि० १०५८ = ई० १६४८] में अस्ल व इज़ाफ़ा मिलके ढ़ाई हज़ारी ज़ात और बारह सौ सवारका मन्सब पाकर शाहज़ादह औरंगज़ेबके साथ कन्धारकी मुहिमपर भेजागया, वहां रुस्तमख़ांके साथ ईरानियोंके मुक़ाबलेपर बहुत अच्छा काम दिया. विक्रमी १७०६ [हि० १०५९ = ई० १६४९] में तीन हज़ारी ज़ात डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब मिला, और विक्रमी १७०८ [हि० १०६१ = ई० १६५१] में एक हज़ारी ज़ात व पांच सौ सवारका इज़ाफ़ा हुआ, और नक़ारा पाकर उसी शाहज़ादहके साथ दुबारा कन्धारपर भेजागया.

विक्रमी १७१० [हि० १०६३ = ई० १६५३] में तीसरी दफ़ा शाहज़ादहके साथ उसी मुहिमपर तईनात हुआ, और अस्ल वे इज़ाफ़ा समेत चार हज़ारी ज़ात और ढाई हज़ार सवारका मन्सब पाया.

विक्रमी १७११ [हि० १०६४ = ई० १६५४] में सादुल्लाखां वज़ीरके साथ क़िले चित्तौड़के गिरानेको तईनात हुआ, और अस्ल व इज़ाफ़ा समेत चार हज़ारी ज़ात व तीन हज़ार सवारका मन्सब पाया; और मांडलगढ़का क़िला मेवाड़के इलाक़ेका महाराणासे अलहदा करके बादशाहने इसकी तन्ख़्वाहमें अस्सी लाख दाम (दो लाख रुपये) की जमापर देदिया.

विक्रमी १७१५ ज्येष्ठ [हि० १०६८ रमज़ान = ई० १६५८ जून] को रूपसिंह समूनगरकी लड़ाईमें शाहज़ादह दाराशिकोहकी तरफ़से हरावल फ़ौजमें तईनात हुआ, और वहांपर निहायत बहादुरीके साथ आलमगीरके तोपख़ानह और हरावल वग़ैरह फ़ौजसे बढ़गया, और ख़ास आलमगीरके हाथीके साम्हने हम्ला करने लगा; आख़िरकार आलमगीरकी ख़ास सवारीके हाथीके पास जाकर पियादह होना चाहता था, कि अम्मारीकी रस्सी काटडाले. यह जुरअत उसकी आलमगीर ने देखकर अपने आदमियोंको ताकीद की, कि यह मारा न जावे, ज़िन्दह पकड़ लियाजावे, लेकिन् उस हंगामहमें कौन सुनता था, फ़ौरन् मारडालागया."

रूपसिंहके मारेजानेका हाल, शाहज़ादोंकी लड़ाई, और आलमगीरकी कामयाबीकी तफ़्सीलके साथ आलमगीरनामह वग़ैरहसे लिखा है- (३४९ एष्ठ से ३५७ तक देखो).

६ महाराजा मानसिंह.

जब महाराजा रूपसिंह विक्रमी १७१५ ज्येष्ठ शुक्ल ८ [हि० १०६८ ता० ६ रमज़ान = ई० १६५८ ता० ९ जून] को समूनगरकी लड़ाईमें दाराशिकोहकी तरफ़से बड़ी बहादुरीके साथ मारागया, तब यह ख़बर कृष्णगढ़ पहुंची. रूपसिंहका बेटा मानसिंह, जो बिल्कुल बालक रहगया था, इसी वर्षके आषाढ़ कृष्ण १० [हि० ता० २४ रमज़ान = ई० ता २६ जून] को कृष्णगढ़में गद्दीपर बिठायागया. इनका जन्म विक्रमी १७१२ भाद्रपद शुक्ल ३ [हि० १०६५ ता० १ ज़िल्क़ाद = ई० १६५५ ता० ४ सेप्टेम्बर] को हुआ था. मांडलगढ़का क़िला, जो मेवाड़से अलहदा करके शाहजहांने महाराजा रूपसिंहको दिया था, वह समूनगरकी लड़ाई झगड़ोंके मौक़ेपर महाराणा राजसिंहने मेवाड़में मिलालिया था, जिसका हाल एष्ठ ४१४ में लिखागया है.

आलमगीरने तरूत नशीन होकर महाराजा रूपसिंहकी बड़ी बेटी चारुमतीके साथ शादी करना चाहा, परन्तु उस राजकुमारीने मज़्हबी तअस्सुबके सबब मुसल्मान बादशाहकी स्त्री बनना न चाहा, और महाराणा राजसिंहके पास एक अर्ज़ी लिखभेजी; जिसपर महाराणा इस राजकुमारीको विवाहकर लेगये, जिसका मुफ़स्सल हाल पहिले लिखागया है- (देखो पृष्ठ ४३७ -३९ तक).

जब बादशाह आलमगीरने नाराज़गी ज़ाहिर की, तब राजा मानसिंहने अपनी दूसरी बहिनकी शादी आलमगीरके शाहज़ादह मुअज़्ज़मके साथ करदी. आलमगीरने मानसिंहका मन्सब तीन हज़ारी तक बढ़ादिया था. विक्रमी १७४८ ज्येष्ठ शुक्ल ११ [हि० ११०२ ता० ९ रमज़ान = ई० १६९१ ता० ८ जून] को जब शाहज़ादह कामबख़्श जंजीका क़िला लेनेको गया, तो यह राजा भी उसके साथ था, और इसने दक्षिणकी और भी लड़ाइयोंमें अच्छे अच्छे काम दिये. आख़िरकार विक्रमी १७६३ कार्तिक कृष्ण १० [हि० १११८ ता० २२ रजब = ई० १७०६ ता० १ नोवेम्बर] को पाटणमें इनका इन्तिक़ाल होगया. उन दिनों आलमगीर बादशाह दक्षिणमें बहुत बीमार था, और मानसिंहके पुत्र राजसिंह, जो अपने बापके पास मौजूद थे, राजा हुए. उसी अर्सेमें आलमगीरका भी इन्तिक़ाल होगया. शाहज़ादोंकी लड़ाइयां ख़त्म होनेपर शाहआलम बहादुरशाहने तरूत पाकर राजसिंहको तीन हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब देकर कृष्णगढ़का राजा बनाया.

७ राजसिंह.

राजसिंहका जन्म विक्रमी १७३१ कार्तिक शुक्ल ११ [हि० १०८५ ता० ९ शअ्बान = ई० १६७४ ता० १० नोवेम्बर] को हुआ था. राजसिंह सल्तनत हिन्दकी ख़राबीके दिनोंमें सय्यद अब्दुल्लाख़ां और हुसैनअलीकी हिमायतमें रहे थे, और मुहम्मदशाहके वक़्में भी कई बार हाज़िर हुए, लेकिन् फ़र्रुख़सियरके मारेजानेका इल्ज़ाम, जिसतरह दूसरे राजाओंपर था, इनपर भी लगायागया, क्यों कि यह भी महाराजा अजीतसिंहके शरीक और सय्यदोंके तरफ़दार थे; इसलिये इनका दिल्ली जाना कम होगया. मुहम्मदशाहने जब अहमदशाह अब्दालीके मुक़ाबलेपर शाहज़ादह अहमदको पानीपतकी तरफ़ रवाना किया, उस वक़ राजा लोग भी बुलायेगये थे, तब जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंह तो शाहज़ादहके साथ भेजेगये, और नागौरके महाराज बख़्तसिंह और कृष्णगढ़के महाराजा राजसिंहके बेटे सामन्तसिंह मए अपने बेटे सर्दारसिंहके पीछेसे पहुंचे, तब मुहम्मद शाहने इनको दिल्लीमें ही अपने पास रखलिया. ईश्वरकी कुद्रतसे अहमदशाह अब्दालीकी शिकस्त हुई,

लेकिन् मुहम्मदशाह बादशाह इसी अर्सेमें मरगया, और अहमदशाह दिल्लीमें आगया; महाराजा राजसिंहका देहान्त रूपनगरमें विक्रमी १८०५ वैशाख कृष्ण [हि० ११६१ ता० २१ रबीउस्सानी = ई० १७४८ ता० २० एप्रिल] ७ को होगया. राजसिंहके पांच पुत्र थे- बड़े सुखसिंह, २ फ़त्हसिंह, ३ सामन्तसिंह, ४ बहादुरसिंह, ५ वीरसिंह; जिनमेंसे सुखसिंह और फ़त्हसिंह तो महाराजा राजसिंहके साम्हने ही फ़ौत होगये थे, महाराजाके इन्तिक़ालकी ख़बर सुनकर सामन्तसिंह दिल्लीमें गद्दीके वारिस मानेगये.

८ सामन्तसिंह.

अहमदशाहने इनकी बहुत तसल्ली की, लेकिन् उस वक्त बादशाहोंका ख़ौफ़ घटगया था, बहादुरसिंहने कृष्णगढ़ और रूपनगरपर क़ब्ज़ा करलिया, सामन्तसिंह यह ख़बर सुनकर घबराये. बहादुरसिंह बड़े बहादुर और बुद्धिमान थे, जिन्होंने महाराजा अभयसिंहको चारण कविया करणीदानकी मारिफ़त अपना मददगार बनालिया था. इससे बहादुरसिंहकी ताक़त बढ़गई, लेकिन् अहमदशाहने सूबहदार अजमेरको सामन्तसिंहका मददगार बनाकर भेजदिया, और महाराजा बख़्तसिंह भी इनके तरफ़दार थे; लेकिन् अपने अपने मत्लबकी सबको फ़िक्र थी, क्यों कि महाराजा अभयसिंह गुज़रगये थे, और उनकी जगह रामसिंह, जो बहुत कम अक़्ल माने जाते थे, जोधपुरकी गद्दीपर बैठे, और बख़्तसिंहको तंग करने लगे. तब बख़्तसिंह ने भी सूबहदारको अपना मददगार बनाकर साम्हना किया. इधर सामन्तसिंह ने अपनी ताक़तसे रूपनगर और कृष्णगढ़के ज़िलेमें थाने बिठादिये. बहादुरसिंहके राजपूतोंसे बहुतसी लड़ाइयां हुईं, यहांतक कि सामन्तसिंहने रूपनगर जाघेरा, लेकिन् कुछ कामयाबी न हुई. महाराजा रामसिंहकी मददपर सामन्तसिंहने अपने कुंवर सर्दारसिंहको भेजदिया, जबकि वह बख़्तसिंहके बख़िलाफ़ लड़ रहा था. इस बातसे बख़्तसिंह भी सामन्तसिंहसे नाराज़ होगये, और रामसिंहको निकालकर बख़्तसिंह जोधपुरके राजा बनगये, तब लाचार सामन्तसिंह मए अपने बेटे सर्दारसिंहके कमाऊंकी तरफ़ चलेगये, और वहांसे मथुरा वृन्दावन आये, कुछ दिन वहां रहकर अपना नाम नागरीदास रक्खा, और उनके पुत्र सर्दारसिंह मल्हार राव हुल्करके पास पहुंचे. हुल्करने जया आपा सेंधियाको उसका मददगार बनाकर सर्दारसिंह के साथ भेजा; इन दिनोंमें महाराजा बख़्तसिंहका भी इन्तिक़ाल होगया, और महाराजा रामसिंहका मददगार बनकर जया आपा मारवाड़पर चला, और

महाराजा विजयसिंहकी फ़ौजसे मुक़ाबला हुआ. बहादुरसिंह भी विजयसिंहके मदद्गार होकर मरहटोंसे लड़े, और शिकस्त होनेपर भागकर कृष्णगढ़ चलेआये, विजयसिंह शिकस्त खाकर नागोरमें जा छिपे, जया आपाने भी उस क़िलेको घेरलिया, और कुंवर सर्दारसिंहसे यह इक़ार किया कि नागोर फ़त्ह करने बाद तुमको रूपनगर व कृष्णगढ़ दिलादिया जावेगा.

ईश्वरकी कुद्रतसे जया आपा मारवाड़ी राजपूतोंके हाथसे मारागया, और उसका बेटा जनकू महाराजा विजयसिंहसे कुछ फ़ौज ख़र्च लेकर अजमेर चला आया, तब कुंवर सर्दारसिंहने रूपनगर लेनेको कहा, तो जनकूने जवाब दिया कि मारवाड़की लड़ाइयोंमें हमारी फ़ौज टूट गई है, और इस मज़बूत क़िलेके लेनेमें ज़ियादह ताक़त चाहिये, लेकिन् कुंवर सर्दारसिंहने उसको कहा कि आप हिम्मत न हारिये, थोड़ीसी फ़ौज भेज दीजिये, हम क़िला फ़त्ह करलेंगे; इस कहनेपर जनकूने कुछ फ़ौज भेजकर क़िले रूपनगरपर घेरा डाला, और महाराजा बहादुरसिंहके राजपूत भी ख़ूब लड़े, आख़िरकार बहादुरसिंह और सर्दारसिंहने सुलह करली. मरहटोंने कृष्णगढ़ भी घेरलिया था, सो यह लोग तो कुछ फ़ौज ख़र्च लेकर चले गये, रूपनगर सर्दारसिंहको दिया, और कृष्णगढ़ बहादुरसिंहने रक्खा; वीरसिंहको करकेड़ी मिली.

९ सर्दारसिंह,

सर्दारसिंहका जन्म विक्रमी १७८७ प्रथम भाद्रपद शुक्ल २ [हि० ११४३ ता० १ सफ़र = ई० १७३० ता० १५ ऑगस्ट] को हुआ था.

सामन्तसिंह विक्रमी १८२१ भाद्रपद शुक्ल ३ [हि० ११७८ ता० १ रबीउल्अव्वल = ई० १७६४ ता० ३० ऑगस्ट] को वृन्दावनमें गुज़र गया. रूपनगरमें राज तो सर्दारसिंह ही करते थे, परन्तु इतने दिन कुंवर कहलाते थे, अब राजा बने; यह राजापन बहुत दिनोंतक नहीं रहा. विक्रमी १८२३ वैशाख कृष्ण ३० [हि० ११७९ ता० २८ ज़िल्क़ाद = ई० १७६६ ता० १० एप्रिल] को रूपनगरमें इनका देहान्त होगया.

१० बहादुरसिंह.

सर्दारसिंहके कोई औलाद न थी, इसलिये बहादुरसिंहने पहिले तो अपने बड़े कुंवर बिड़दसिंहको इनके गोद रक्खा, फिर कुछ अर्से बाद कृष्णगढ़ और रूपनगरकी हुकूमतको शामिल करलिया- इस ख़यालसे कि दो टुकड़े होने

से रियासत कमज़ोर होजावेगी; राजसिंहके पांचवें पुत्र वीरसिंहको करकेड़ी जागीरमें मिली थी, जिनकी औलाद रलावता व अजमेरमें है, उनका बयान है कि सर्दारसिंहने वीरसिंहके बेटे अमरसिंहको गोद रखनेका इरादह किया था, जिसका हाल आगे लिखाजायगा. महाराजा राजसिंहसे लेकर सर्दारसिंह तकका हाल "सर्दार-सुजस" नाम ग्रन्थमें लाल कविने तफ्सीलवार लिखा है, लेकिन् हमने फैलावके सबब उसका खुलासा दर्ज किया है.

महाराजा बहादुरसिंह, महाराजा विजयसिंहके बड़े दोस्त होगये थे, क्यों कि सर्दारसिंह महाराजा रामसिंहका मददगार बनकर मरहटोंकी फ़ौजके शामिल जोधपुर और नागौरसे लड़ा, और बहादुरसिंह विजयसिंहके शरीक थे; इस बातसे बहादुरसिंह जोधपुरके ख़ैरख़्वाह रहे. इधर उदयपुर और जयपुरके भी हर एक मुआमलेमें शरीक होजाते; इस सबबसे महाराजा बहादुरसिंहने बड़ा नाम पाया. खुद तो दूसरी रियासतोंके मुआमलों में मश्गूल रहते, और अपनी रियासतका इन्तिज़ाम बड़े कुंवर बिड़दसिंहके सपुर्द करदिया था, जो अपने इख्ति-यारसे काम करते थे. महाराजाके छोटे कुंवर बाघसिंहको रियासतसे दसवां हिस्सह जायदाद देकर महाराजा बहादुरसिंहने फ़त्हगढ़का जागीरदार बनाया; यह हाल आगे लिखाजायगा.

विक्रमी १८३८ फाल्गुन शुक्ल ३ [हि० ११९६ ता० १ रबीउल्अव्वल = ई० १७८२ ता० १५ फ़ेब्रुअरी] को महाराजा बहादुरसिंहका इन्तिक़ाल हुआ. यह बड़े बुद्धिमान और बहादुर राजा थे, लेकिन् अपनी रियासत बढ़ानेके लिये इनको मौक़ा न मिला, क्यों कि जोधपुर और जयपुर दोनों बड़ी रियासतोंका पड़ौस इनके लिये एक दीवार होगया था. तो भी अपनी रियासतपर उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में ज़वाल न आनेदिया, और रियासतमें कई तरीक़े ऐसे बनाये, जो अबतक जारी हैं. कृष्णगढ़, रूपनगर और सनवाड़में अच्छे मज़बूत क़िले बनवाये, और इन क़िलोंमें सामानका तरीक़ा ऐसा उम्दह किया, कि अचानक लड़ाईका काम आपड़े, तो क़िले, सामान और लड़नेवाले आदमियोंसे ख़ाली न मिलेंगे- और जागीरका तरीक़ा, और उन जागिरदारोंकी नौकरीका प्रबन्ध उम्दह तरहसे बांधदिया, जागीरदारोंके छोटे लड़के क़िलेमें उम्मेदवारोंके नामसे भरती कियेजाते हैं, और उनके गुज़ारेके लिये हमेशहका भत्ता (खुराक) और जन्म, मरण व शादीके लिये एक रक़म मुक़र्रर करदी है, जिससे उन लोगोंको किसी ज़रूरी कामकी फ़िक्र न रहे. रिया-सतके बर्ताव और अदब आदाबका तरीक़ा ऐसा उम्दह बांधा कि कोई दूसरी

रियासतका आदमी जाकर देखे, तो उसको बड़ा ही तअ़ज्जुब मालूम हो– कि ऐसी थोड़ी आमदनीसे इस तरहके शाहाना तरीक़े किस तरह चलसक्ते हैं? लेकिन् महाराजा बहादुरसिंहने किफ़ायतके साथ ऐसा तरीक़ा बांधा है कि छोटेसे बड़े आदमीतक हरएक शख़्स बहुत थोड़ी आमदनीमें अपना गुज़र करसक्ता है; और अपनी २ हैसियतके मुताबिक़ छोटे बड़े सब मालदार भी हैं, इस समय भी रियासती तरीक़ोंके देखनेसे महाराजा बहादुरसिंहकी अ़क्लमन्दी ज़ाहिर होती है.

११ महाराजा बिड़दसिंह.

महाराजा बिड़दसिंहका जन्म विक्रमी १७९६ फाल्गुण शुक्क ८ [हि॰ ११५२ ता॰ ६ ज़िल्हिज = ई॰ १७४० ता॰ ६ मार्च] को हुआ. यह अपने बापके साम्हने भी कुल राजके मुख़्तार थे, इनको मज़्हबी ख़याल ज़ियादह था– यह ख़याल इन्हींको नहीं था, बल्कि इस रियासतमें महाराजा रूपसिंहसे लेकर वर्तमान महाराजा शार्दूलसिंहतक 'पुष्टिमार्ग' याने श्रीनाथजीकी उपासनाका बड़ा ख़याल चला आता है. महाराजा बिड़दसिंह बड़े फ़य्याज़, और विद्वानोंके क़द्रदान व बहादुर थे; इनको अपने बापके मरने बाद रियासतकी तरफ़से नफ़रत रही. आख़िरकार विक्रमी १८४५ कार्तिक कृष्ण १० [हि॰ १२०३ ता॰ २४ मुहर्रम = ई॰ १७८८ ता॰ २६ ऑक्टोबर] को वृन्दावनमें देहान्त हुआ, तब इनके पुत्र प्रतापसिंह गद्दी बैठे.

१२ महाराजा प्रतापसिंह.

इन्का जन्म विक्रमी १८१९ भाद्रपद शुक्क ११ [हि॰ ११७६ ता॰ ९ सफ़र = ई॰ १७६२ ता॰ २१ ऑगस्ट] को हुआ था. यह महाराजा भी बड़े फ़य्याज़, बहादुर व दिलेर थे, न जाने किस कारणसे इनके दिलमें जोधपुरके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करनेकी बात जम गई थी. हमारे ख़यालसे इसका यह सबब मालूम होता है कि करकेड़ीका अमरसिंह महाराजा विजयसिंहके पास जारहा था, जिसकी तरक़्क़ी उनको नागवार थी, इसलिये प्रतापसिंहने नाराज़ होकर मरहटोंसे मिलावट करली. जब जयपुर और जोधपुरके दोनों महाराजा मरहटोंको राजपूतानहसे निकाल देना चाहते थे, महाराजा प्रतापसिंहने मरहटोंका मददगार बनकर चाहा कि मारवाड़पर हम्ला करें, लेकिन् अजमेरके इलाक़ेमें जोधपुरकी फ़ौजसे मरहटोंने शिकस्त खाई, और मरहटे सर्दार आंबाजी ऐंगलियाने

ज़रूमी होकर सनवाड़के क़िलेमें पनाह ली. इस बातसे नाराज़ होकर जोधपुरके महाराजा विजयसिंहने फ़ौज भेजकर रूपनगर व कृष्णगढ़पर घेरा डाला, सात महीने तक लड़ाई रही, आख़िरकार रूपनगर तो अमरसिंहको दिलाया, और महाराजा प्रतापसिंहने ३०००० तीन लाख रुपया दण्डका देना कुबूल किया; जिसमेंसे डेढ़ लाख तो नक्द, पचास हज़ारका भरणा (१) और एक लाख रुपया दो क़िस्त में देना क़रार पाया, और महाराजा प्रतापसिंहको लाचार होकर जोधपुर जाना पड़ा. वहांसे बहुत कुछ लाचारी करके (२) पीछे आये; यह मुआमला विक्रमी १८४५ [हि० १२०३ = ई० १७८८] में हुआ. फिर कुछ अर्से बाद प्रतापसिंहने अमरसिंहसे रूपनगर छीन लिया, उसने जोधपुरसे मदद चाही, लेकिन् उन दिनों महाराजा विजयसिंह भी अपने सर्दारों व मरहटोंसे तंग होरहे थे, इसलिये कुछ मदद न करसके.

विक्रमी १८५४ फाल्गुन कृष्ण ४ [हि० १२१२ ता० १८ शअ्बान = ई० १७९८ ता० ५ फ़ेब्रुअरी] को महाराजा प्रतापसिंहका इन्तिक़ाल होगया, और उनके बालक बेटे कल्याणसिंह गद्दीपर बिठायेगये.

१३ महाराजा कल्याणसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १८५१ कार्तिक कृष्ण १२ [हि० १२०९ ता० २६ रबीउल्अव्वल = ई० १७९४ ता० २१ ऑक्टोबर] को हुआ था. इस समय महाराजा के कम उम्र होनेसे रियासत में नुक्सान पहुंचनेका अन्देशा था, परन्तु महाराजा बहादुर-सिंहके बनाये हुए आदमी अच्छे २ मौजूद थे, जिससे ऐसे बग़ावतके वक्तमें भी बालक राजा होनेपर रियासत में नुक्सान न आसका.

विक्रमी १८७० भाद्रपद शुक्ल ८ [हि० १२२८ ता० ६ रमज़ान = ई० १८१३ ता० ४ सेप्टेम्बर] को जोधपुरके महाराजा मानसिंहने रूपनगरमें ठहरकर जयपुरके गांव मरवामें महाराजा जगत्सिंहके यहां विवाह किया, और महाराजा जगत्सिंहने मरवासे रूपनगरमें आकर शादी की. इन दोनों राजाओंके बीचमें उदयपुरके संबन्धकी बाबत पहिले, जो नाइत्तिफ़ाक़ी हुई थी, वह मिटाईगई; इस मुआ-मलेमें महाराजा कल्याणसिंह भी शरीक थे, और जो बात चीत सलाहकी इन्होंने

---

(१) भरणा— याने हाथी घोड़ा वगैरह दूसरी चीजें मिलाकर पूरा करना.

(२) महाराजाने यह नविश्त भी लिखदी थी, कि हम मारवाड़ी सर्दारोंके सरिश्तेके मुवाफ़िक़ जोधपुरमें हवेली बनवाकर नौकरी करेंगे, यह नविश्त कृष्णगढ़के मूणोत महता हमीरसिंहने महाराजा विजयसिंहसे वापस ली. हमीरसिंह बड़ा मुतसद्दी और हिम्मतवाला आदमी था.

कही, वह दोनों राजाओंको पसन्द आई. इसी तारीफ़के नशेसे महाराजा कृष्ण-गढ़को जुनून होगया.

विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = ई० १८१७] में कृष्णगढ़का अह्दनामह गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे हुआ; और ख़िराज वगैरह कुछ नहीं देना पड़ा; इस बातसे उनका जुनून ज़ियादह हो गया, कि यह सब मेरी बुद्धिमानीका नतीजा है. जुनूनको तरक्की देनेवाली तीसरी बात यह हुई, कि गोध्याणाके बारहठ रामदान की तन्दिही और कोशिशसे महाराणा भीमसिंहकी पोती और कुंवर अमरसिंहकी बेटी कीकाबाईका विवाह कृष्णगढ़के कुंवर मुह्कमसिंहके साथ विक्रमी १८७७ आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० १२३५ ता० २२ रमज़ान = ई० १८२० ता० ५ जुलाई] को हुआ, जिससे महाराजाको यह ख़याल होगया- कि जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, और कृष्णगढ़ चारों रियासतें हिन्दुस्तानमें अव्वल दरजेकी हैं; क्यों कि विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] में जयपुर और जोधपुरके महाराजाओंने उदयपुरसे संबन्ध होनेके लिये कितनी कोशिशें की थीं, तब संबन्ध हुआ था; वही मौक़ा कृष्णगढ़को भी मिलगया. इस विवाहका बाक़ी हाल महाराणा भीमसिंहके बयानमें लिखा जायगा. महाराजा कल्याणसिंह अपनी रियासतके अलावा कुल हिन्दुस्तानका प्रबन्ध करनेमें ख़याली पुलाव पकाने लगे, पास रहने वाले खुशामदी लोगोंने उनके बेहूदा जुनूनको ज़ियादह तरक्की दी.

अब हम यहांसे एचिसन साहिबके अह्दनामहकी किताब चौथी जिल्दके उर्दू तर्जमेसे बाक़ी हाल लिखते हैं-

" महाराजा कल्याणसिंह, जो दीवानह मश्हूर था, पहिले सर्दारोंके फ़सादमें फंसा, और अस्ल वजह झगड़ेकी यह थी, कि उसने ठाकुर फ़त्हगढ़को तबाह करना चाहा, क्यों कि फ़त्हगढ़ वालोंने कृष्णगढ़ वालोंकी ताबेदारीसे निकलनेका दावा पेश किया था. गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने वह दावा ख़ारिज करके उसको कृष्णगढ़के मातह्त रक्खा, दूसरी वजह यह थी, कि जमइयत सवार वगैरह, जो और मातह्त सर्दारोंकी तरह यह देते रहे, उसके एवज़ कुछ रुपया मुक़र्रर होजाय.

महाराजा कल्याणसिंह दिल्ली चलागया, और वहां बादशाहके हुज़ूरसे नज़ानह और दूसरा ख़र्च जमा करानेपर यह हुक्म लिया, कि वह जुर्राब पहनकर बादशाहके हुज़ूरमें हाज़िर हुआकरे, इस अर्सेमें कृष्णगढ़में ज़ियादह फ़साद उठा, और फ़सा-दियोंने कोटेसे और महाराजाने बूंदीसे मदद चाही, इस तक़ारमें कई दफ़ा अंग्रेज़ी इलाक़ोंमें दोनों फ़रीक़ोंसे झगड़ा पैदा हुआ, इसलिये गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे

यह लिखावट हुई, कि आपसकी तक्रार मौकूफ़ होकर मुक़द्दमह फ़ैसलेके लिये गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके सुपुर्द कियाजाय, और महाराजाको लिखागया कि, जो वह बहुत जल्दी कृष्णगढ़में आकर राज्यके कामोंको न संभालेगा, तो उसके साथ जो अह्दनामह हुआ है, वह रद्द समझा जायगा, और कृष्णगढ़के ठाकुरों (सर्दारों) के साथ मुआमला कियाजावेगा. इस तंबीहसे महाराजा कृष्णगढ़में लौट आये, परन्तु उनसे मुल्कका इन्तिज़ाम न होसका. तब उन्होंने दर्ख्वास्त की, कि कृष्णगढ़की ठेकेदारी (यानी माली मुल्की इन्तिज़ाम) गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी मंजूर करे, और वह दिहली चलाजायगा. गवर्मेण्टने ठेका मंजूर नहीं किया; लेकिन् यह बात मंजूर हुई कि महाराजा दिहली जाकर जबतक कृष्णगढ़में वापस न आवे, तबतक कृष्णगढ़में एजेन्टी रहेगी. महाराजा और ठाकुरोंके आपसमें सुलह भी होगई, परन्तु जो शर्तें पेश हुई थीं, वे मंजूर न हुईं. महाराजाने अजमेर रहना मंजूर किया, और सर्दारोंने उसके पास जाकर इक्रार किया कि उनका फ़ैसला जोधपुरके महाराजा करदें- इस शर्तपर कि उस फ़ैसलेको गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी भी मंजूर करले. गवर्मेण्टने यह बात मंजूर नहीं की; तब सर्दारोंने कुंवर मुह्कमसिंहको राजा बनाकर कृष्णगढ़पर चढ़ाई की, कृष्णगढ़ फ़तह होनेवाला था, कि महाराजाने यह बात मंजूर करली, कि साहिब पोलिटिकल एजेन्ट, जो फ़ैसला करदेंगे, वह कुबूल और मंजूर होगा. सर्दारोंके साथ, जो यह सुलह हुई, क़ायम न रही; इसके बाद कल्याणसिंह अपने बेटे मुह्कमसिंहको राज्य देकर कृष्णगढ़से चलागया, और अपने ख़र्चके लिये छत्तीस हज़ार रुपया सालियाना कृष्णगढ़से लेनेका बन्दोबस्त करलिया."

विक्रमी १८८९ [हि० १२४८ = ई० १८३२] में महाराजा का वलीअह्द मुह्कमसिंह कुल रियासतका मुरुतार होगया, और महाराजा दिल्लीसे लौटकर फिर न आये; विक्रमी १८९५ ज्येष्ठ शुक्ल १० [हि० १२५४ ता० ८ रबीउल्अव्वल = ई० १८३८ ता० ३ जून] को दिल्लीमें गुज़र गये. महाराजा मुह्कमसिंह कृष्णगढ़में गद्दीपर बैठे.

१४ महाराजा मुह्कमसिंह.

मुह्कमसिंहका जन्म विक्रमी १८७३ भाद्रपद शुक्ल ५ [हि० १२३१ ता० ३ शव्वाल = ई० १८१६ ता० २९ ऑगस्ट] को हुआ था. यह कुछ मुद्दत तक राज्य करके विक्रमी १८९७ ज्येष्ठ कृष्ण १२ [हि० १२५६ ता० २६ रबीउल्अव्वल

= ई० १८४० ता० ३० मई] को इन्तिक़ाल करगये. इनके जवान उम्रमें गुज़र जानेसे रियासतमें बड़ा भारी रंज फैला, लेकिन् रियासतका काम पोलिटिकल एजेन्ट व माजीकी सलाहसे होने लगा, और गद्दीपर बिठायेजानेकी बाबत खूब विचार हुआ, आख़िरकार यह सलाह ठहरी, कि फ़त्हगढ़के महाराज बाघसिंहके तीसरे बेटे भीमसिंह जागीरदार कचौलियाके छोटे बेटे पृथ्वीसिंहको लाकर गद्दीपर बिठाया जावे, और इसी तरह अमलमें आया.

१५ महाराजा पृथ्वीसिंह.

यह महाराजा विक्रमी १८९८ वैशाख कृष्ण १३ [हि० १२५७ ता० २७ सफ़र = ई० १८४१ ता० १९ एप्रिल] को गद्दी नशीन हुए. इनका जन्म विक्रमी १८९४ वैशाख कृष्ण ५ [हि० १२५३ ता० १९ मुहर्रम = ई० १८३७ ता० २५ एप्रिल] को हुआ था. रियासतका काम काज कुल माजी और मुसाहिबोंके इख़्तियारमें रहा. मुसाहिबोंमें महाराजा प्रतापसिंहके ख़वासका बेटा अभयसिंह ज़ीइख़्तियार था. दीवानीका काम पहिले तो ख़राब रहा, परन्तु विक्रमी १९०३ भाद्रपद [हि० १२६२ रमज़ान = ई० १८४६ ऑगस्ट] में महता कृष्णसिंहको दिया, लेकिन् रियासतके चन्द मुसाहिबोंने विक्रमी १९०६ पौष कृष्ण ६ [हि० १२६६ ता० २० मुहर्रम = ई० १८४९ ता० ६ डिसेम्बर] को इस ख़ैरख़्वाह दीवानसे काम छीन लिया; लेकिन् विक्रमी १९०८ माघ शुक्ल ५ [हि० १२६८ ता० ३ रबीउस्सानी = ई० १८५२ ता० २७ जैन्युअरी] को दीवानीका काम फिर इसीको मिला; एक दूसरा मुसाहिब राठौड़ गोपालसिंह था, जो महाराजाको कस्रत वग़ैरह करानेके लिये मुक़र्रर हुआ था, और महाराजा उसको उस्ताद कहते थे. इन दोनों आदमियोंके ज़रीएसे महाराजा पृथ्वीसिंहने बड़ा नाम हासिल किया. यह बात सच है कि रियासतके अंग (हाथ पैर वग़ैरह) मुसाहिब होते हैं, जब मुसाहिब अच्छे हों, तो राजाकी नामवरी, और बुरे हों, तो बदनामी होती है; लेकिन् राजाकी बुद्धिमानी यही समझीजाती है कि अच्छे आदमियोंको ढूंढकर अपने ख़ास कामोंपर नियत करे, और मत्लबी लोगोंके चुग़ली करनेपर उनको नुक्सान न पहुंचावे.

राठौड़ गोपालसिंहने बड़े बड़े ३० तालाब इस छोटीसी रियासतमें नये बनवाये, और दीवानने मुल्की व माली इन्तिज़ाम बहुत उम्दह किया; इन दोनों आदमियोंने रियासती नफ़े नुक्सानको अपना घरू ख़याल करलिया था, और महाराजा भी बड़े बुद्धिमान, पढ़े लिखे, नेक तबीअ़त और दूर अन्देश थे. कृष्णसिंह

और गोपालसिंह दोनों मुसाहिब भी उनको अच्छे मिले, महाराजाने भी मुसाहिबोंको ख़ैरख़्वाहीका एवज़ अच्छी तरह दे दिया.

हम यहां महता कृष्णसिंहका तवारीख़ी हाल, जो उनके बेटे सौभाग्यसिंहने हमारे पास भेजा है, लिखते हैं-

महता कृष्णसिंहका तारीख़ी हाल.

कृष्णसिंहका बुज़ुर्ग जग्गा नामी बीकानेरसे आया था, उसकी औलादमें महता चन्द्रभान हुआ, जो महाराजा राजसिंहके कारगुज़ार नौकरोंमें था, और महाराजाके बेटोंकी ख़ानगी लड़ाइयोंमें महाराजा बहादुरसिंहकी नौकरीमें रहा; इसका बेटा सवाईसिंह, जिसका बेटा बख़्तसिंह, जिसके तीन बेटे- १ हिन्दूसिंह, २ दलेलसिंह, ३ नाहरसिंह थे. दलेलसिंहका बेटा भगवन्तसिंह जो उदयपुरमें महाराणा स्वरूपसिंहके पास चलाआया था, उसको महाराणाने एक गांव जागीरमें देकर ख़ातिरीसे रक्खा, जिसका बेटा बलवन्तसिंह और उसका बेटा मनोहरसिंह, जो अब उदयपुरमें मौजूद है. बख़्तसिंहके तीसरे बेटे नाहरसिंहके दो बेटे हुए, बड़ा कृष्णसिंह और छोटा केसरीसिंह; कृष्णसिंहने महाराजा पृथ्वीसिंहके वक़्में जो जो काम किये, उनकी तफ़्सील नीचे लिखी जाती है- कृष्णसिंह महाराजा मुह्कमसिंहके वक़्में सनवाड़का हाकिम रहा, जब महाराजा पृथ्वीसिंह गद्दी बैठे, तो माजी राणावतजीने कृष्णसिंहको सनवाड़से बुलाकर अपना ख़ानगी कामदार बनाया, और विक्रमी १९०३ [हि० १२६२ = ई० १८४६] में रियासतका दीवान किया, और राखी बांधकर अपना भाई बनाया.

विक्रमी १९०६ [हि० १२६६ = ई० १८४९] में यह दीवानीके कामसे अलहदा हुआ, लेकिन् महाराजा पृथ्वीसिंहने विक्रमी १९०८ [हि० १२६८ = ई० १८५२] में दुबारा उसे दीवानीका काम दिया; तब इस ख़ैरख़्वाह दीवानने तन्ख़्वाहदारोंकी चढ़ीहुई दो वर्षकी तन्ख़्वाह व राजका क़र्ज़ चुकादिया; और महाराजाकी शादी शाहपुरेमें बड़ी धूमधामसे हुई, लेकिन् वह ख़र्च उसने अपनी होश्यारीसे वसूल करलिया, और रियासतको ज़ेरबारीसे बचाया.

विक्रमी १९११ [हि० १२७० = ई० १८५४] में जोधपुरके महाराजा तख़्तसिंह मए ज़नानेके तीर्थ यात्राको गये थे, लौटतेहुए कृष्णगढ़ आये, और आठ दिन यहां रहे; इनकी मिहमानी भी अच्छी तरह हुई.

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] में गवर्मेंटके बख़िलाफ़ ग़द्र हुआ, तो महाराजा पृथ्वीसिंह और उनके मुसाहिबोंने बड़ी तन्दिहीके साथ

गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी ख़ैरख़्वाही व रियासतका इन्तिज़ाम अच्छा किया. विक्रमी १९१६ [हि० १२७६ = ई० १८५९] में महाराजा प्रतापसिंहकी पासबानके बेटे ज़ोरावरसिंहके बेटे मोतीसिंहने चन्द सर्दारोंसे मिलकर बग़ावत की. महाराजा और इस ख़ैरख़्वाह दीवानने बड़ी अक़्मन्दीके साथ उमराव सर्दारोंकी जागीरें ज़ब्त करके उनको निकाल दिया, और ठाकुर नराणा वग़ैरहके क़िले गिरवादिये, और कुछ अर्से बाद फिर उनकी जागीरें बहाल करके मोतीसिंहको रियासतसे निकाल दिया. यह कार्रवाई ऐसी उम्दह हुई, कि महाराजा कल्याणसिंहके ज़मानेसे, जो सर्दार उमरावोंपर रोब बिल्कुल न रहा था, अब ख़ूब जमगया.

विक्रमी १९१९ श्रावण कृष्ण ११ [हि० १२७९ ता० २५ मुहर्रम = ई० १८६२ ता० २३ जुलाई] को दीवान कृष्णसिंहका इन्तिक़ाल होगया, लेकिन् महाराजाने अपनी क़द्रदानी और दीवानकी ख़ैरख़्वाहीसे उसके बेटे सौभाग्यसिंहको अपना दीवान बनाया, और जिस तरह अपनी औलादको होश्यार करनेका तरीक़ा है, उसी तरह सौभाग्यसिंहसे दीवानीका काम लिया. यह दीवान भी अपने बापकी तरह होश्यार, ख़ैरख़्वाह व नेक दिल है; इसने अपने बापके तरीक़ेपर चलकर महाराजाको खुश रक्खा.

विक्रमी १९२० [हि० १२८० = ई० १८६३] में महाराजा नाथद्वारे दर्शनको मए ज़नानेके तश्रीफ़ लाये, और इसी सालमें जयपुरके महाराजा रामसिंह, जोधपुर शादी करके लौटतेहुए कृष्णगढ़में एक दिन ठहरे, जिनकी मिहमानीका इन्तिज़ाम महाराजाने अपने दीवानके ज़रीएसे अच्छा किया.

विक्रमी १९२१ [हि० १२८१ = ई० १८६४] में जोधपुरके महाराजा तख़्तसिंह रीवां विवाह करके लौटे, तब कृष्णगढ़में आठ दिन रहे. विक्रमी १९२३ [हि० १८६६ = ई० १२८३] में लॉर्ड लॉरेन्सने आगरेमें दर्बार किया, तब महाराजा पृथ्वीसिंह वहां गये, और विक्रमी १९२५- २६ [हि० १२८५ या ८६ = ई० १८६८ या ६९] के क़हत में महाराजाने अपने दीवान सौभाग्यसिंहकी कारगुज़ारीके ज़रीएसे बहुत अच्छा इन्तिज़ाम किया, और रियासतमें किसी तरहका ख़लल न आने दिया.

विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] को अजमेरमें लॉर्ड मेओने एक बड़ा दर्बार किया, जिसमें राजपूतानहके अक्सर मश्हूर रईस एकठे हुए, तब यह महाराजा भी वहां मौजूद थे. विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] में लॉर्ड नार्थब्रुकने आगरेमें दर्बार किया, तब भी यह महाराजा वहां गये थे;

फिर प्रयाग वग़ैरह तीर्थ यात्रा करके वापस कृष्णगढ़ आये, और इसी वर्षमें महाराजाकी बुद्धिमानी व दीवानकी कारगुज़ारीसे बहुत बड़ा काम यह हुआ, कि फ़त्हगढ़का जागीरदार, जो महाराजा प्रतापसिंहके ज़मानेसे अपनेको खुद मुरूतार ख़याल करता था, और जिसने महाराजा कल्याणसिंहकी सरिूतयोंसे भी सिर न झुकाया, महाराजा पृथ्वीसिंहने उसको ताबेदार बनालिया. फ़त्हगढ़का जागीरदार महाराजाको नज़ करने बाद गद्दीके नीचे बिठायागया- इसी हतकके सदमेसे रणजीतसिंह बीमार होकर चन्द महीने बाद मरगया, क्योंकि महाराजा बाघसिंह, चांदसिंह और भोपालसिंह कृष्णगढ़की गद्दीके नीचे नहीं बैठे थे, जहांपर इसे बैठना पड़ा. फिर विक्रमी १९३२ [हि॰ १२९२ = ई॰ १८७६] में शाहज़ादह प्रिन्स ऑव वेल्सकी मुलाक़ातको आगरे गये. विक्रमी १९३३ [हि॰ १२९३ = ई॰ १८७६] में महाराजाने बड़ी राजकुमारीका विवाह उदयपुरके महाराणा सज्जनसिंहसे बड़ी धूम धामके साथ किया; फिर लॉर्ड लिटनने दिल्लीमें जब कैसरी दर्बार किया, तब यह महाराजा भी वहां गये. उन पन्द्रह तोपोंके सिवाय, जो रियासतकी अस्ली सलामी है, महाराजाकी दो तोपें सलामी हीन हयात बढ़ाई गईं, और एक निशान भी मिला.

इसी साल में महाराजाने अपनी दूसरी राजकुमारीका विवाह अलवरके महाराव राजा मंगलसिंहके साथ किया. विक्रमी १९३६ मृगशिर शुक्क १२ [हि॰ १२९७ ता॰ १० मुहर्रम = ई॰ १८७९ ता॰ २६ डिसेम्बर] को इन महाराजाका इन्तिक़ाल होगया. उदयपुरसे महाराणा सज्जनसिंह भी कृष्णगढ़ जानेके लिये नसीराबाद पहुंचे, वहांसे महाराजाकी तबीअ़त ज़ियादह अलील सुनकर सिहत पुर्सीके लिये रेलपर सवार होकर कृष्णगढ़ गये, लेकिन् थोड़ी देर पहिले महाराजाका इन्तिक़ाल होगया था. महाराणा उनकी दग्ध क्रियामें शामिल हुए, उस समय यह तवारीख़ लिखनेवाला (कविराज श्यामलदास) भी मौजूद था.

महाराजा पृथ्वीसिंह बड़े मिलनसार, नेक तबीअ़त, खुशमिज़ाज और मिहनती थे. वह गेहुवां रंग, मंझोला क़द, बड़ी आंख होनेके सिवाय ख़ूबसूरत भी थे; लेकिन् अफ़्सोस है कि ऐसे नेक राजाके मरजानेका रंज रियासती आदमियोंके चिहरेपर नहीं दीखा, सिवाय उनके फ़र्ज़न्द और एक दो ख़ैरख़्वाह नौकरोंके और सब बड़ी लंबी चौड़ी बातें बनारहे थे. महाराणा साहिबको भी इस बातके कारण उन लोगों से बड़ी नफ़रत हुई. इन महाराजाके तीन पुत्रोंमें से बड़े शार्दूलसिंहका जन्म विक्रमी १९१४ पौष कृष्ण ९ [हि॰ १२७४ ता॰ २३ रबीउ़स्सानी = ई॰ १८५७ ता॰ १० डिसेम्बर] को हुआ. दूसरे जवानसिंहका जन्म विक्रमी १९१५ चैत्र शुक्क ४ [हि॰ १२७४ ता॰ २ शअ़्बान = ई॰ १८५८

ता० १९ मार्च] का है, और तीसरे रघुनाथसिंह, जिनका जन्म विक्रमी १९२९ पौष कृष्ण पक्ष [हि० १२८९ शव्वाल = ई० १८७२ डिसेम्बर] में हुआ है.

१६ महाराजा शार्दूलसिंह.

इनका राज्याभिषेक विक्रमी १९३६ पौष कृष्ण ९ [हि० १२९७ ता० २३ मुहर्रम = ई० १८८० ता० ६ जैन्युअरी] को हुआ. विक्रमी १९३७ आषाढ़ कृष्ण ९ [हि० १२९७ ता० २३ रजब = ई० १८८० ता० २ जुलाई को महाराजा शार्दूलसिंहकी तीसरी बहिनका विवाह जयपुरके महाराज दूसरे सवाई माधवसिंहसे हुआ. यह शादी बड़ी धूमधामसे कीगई; मिहमानी वगैरहका बन्दोबस्त महाराजाके हुक्मसे महता सौभाग्यसिंहने अच्छी तरह किया. (१)

विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में महाराजा अपने पिताका गयाश्राद्ध करने और तीर्थ यात्राके लिये काशी, प्रयाग, वगैरह होतेहुए जगन्नाथजीकी तरफ़ गये. विक्रमी १९३९ [हि० १३०० = ई० १८८३] में महाराजा शार्दूलसिंह जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंहकी बहिनकी शादीमें जोधपुर गये. विक्रमी १९४१ चैत्र शुक्ल पक्ष [हि० १३०१ जमादियुस्सानी = ई० १८८४ मार्च] में कृष्णगढ़से नीबाहेड़ेतक रेलमें और वहांसे डाकके ज़रीए उदयपुर गये, जब कि महाराजा जोधपुर भी वहां मौजूद थे. महाराणाके साथ इन दोनों राजाओंकी बे तकल्लुफ़ीसे मुलाक़ातें हुई, और विक्रमी चैत्र शुक्ल १४ [हि० ता० १३ जमादियुस्सानी = ई० ता० ११ एप्रिल] को इस लिखने वाले (कविराज श्यामलदास) ने अपने बाग़ीचे में तीनों राजाओंकी मिहमानी की; शामके वक़ महाराणा सज्जनसिंह व महाराजा जशवन्तसिंह मए अपने भाई महाराज प्रतापसिंह और महाराजा शार्दूलसिंहके बग्गी सवार होकर श्यामलबाग़में तश्रीफ़ लाये, और राग रंग, व खाना वगैरह, जो प्रीतिके साथ अर्पण किया गया, तीनों राजाओंको उनकी क़द्रदानी और मिहर्बानीसे अंगीकार हुआ.

वैशाख शुक्ल ७ [हि० ता० ५ रजब = ई० ता० ४ मई] को दीवान महता सौभाग्यसिंहको महाराणा साहिबने पैरमें सोनेके तोड़े, बैठक और जीकारा इनायत किया. फिर महाराजा नाथद्वारे और कांकड़ौली होतेहुए कृष्णगढ़ पहुंचे. विक्रमी १९४१ कार्तिक शुक्ल १४ [हि० १३०२ ता० १३

---

(१) महाराजाकी चौथी बहिन झालरापाटनके महाराज राणा ज़ालिमसिंहको विक्रमी १९४३ [हि० १३०४ = ई० १८८७] में ब्याही गई.

मुहर्रम = ई० १८८४ ता० ४ नोवेम्बर] को महाराजाके पुत्रका जन्म हुआ, जिस का बहुत अच्छा जल्सा कियागया.

अब महाराजा पृथ्वीसिंहके दूसरे मुसाहिब राठौड़ गोपालसिंहकी तवारीख़ी हालत लिखीजाती है, जो उनके पुत्र भारथसिंहने हमारे पास भेजी है-

जोधपुरके महाराजा उदयसिंहके छोटे पुत्र शक्तिसिंहके, जिनको सोजत वग़ैरह जागीर मिली, छः पुत्र थे- १ कर्णसिंह, २ प्रतापसिंह, ३ गिरिधरदास, ४ हरीसिंह, ५ कान्हसिंह और ६ मानसिंह. कर्णसिंह विक्रमी १६७१ [हि० १०२३ = ई० १६१४] में महाराजा कृष्णसिंहके साथ गोइन्ददास भाटीकी लड़ाई में अजमेर मक़ामपर मारागया, और उसकी औलादमें खरवाके जागीरदार हैं. छठे मानसिंहको पीपाड़ जागीरमें मिला; जिसके चार बेटे हुए- १ रेवतसिंह, २ बहादुरसिंह, ३ सामन्तसिंह, और ४ रणछोड़दास. रणछोड़दास महाराजा रूपसिंहके साथ औरंगज़ेब की फ़ौजसे लड़कर समूनगरमें मारागया, इसके दो बेटे- १ ज़ोरावरसिंह और २ सबलसिंह थे. ज़ोरावरसिंहके चार बेटे हुए- १ अनोपसिंह, २ उदयनाथ, ३ बीजनाथ और ४ कृष्णसिंह.

कृष्णसिंहको जोधपुरसे भैरोंदा जागीरमें मिला था, लेकिन् छिनगया. इसका बेटा प्रतापसिंह, जिसको महाराजा बहादुरसिंहने एक घोड़ेकी जागीर (एक घोड़ेकी तन्ख्वाहके लायक़) दी. प्रतापसिंहके तीन बेटे थे- १ सूरसिंह, २ भैरोंसिंह, और ३ फ़ौजसिंह. सूरसिंहके दो बेटे- बड़ा मंगलसिंह, दूसरा गोपालसिंह. गोपालसिंहको महाराजा मुह्कमसिंहने आधे घोड़ेकी जागीर दी, और आधेकी पहिलेसे उसे हासिल थी, जुम्ला एक घोड़ेकी जागीर हुई. इसके बाद महाराजा पृथ्वीसिंहने उसको एक घोड़ेकी जागीर और देकर दो घोड़ोंकी जागीरमें विक्रमी १९०९ [हि० १२६८ = ई० १८५२] को परगने रूपनगरका गांव रघुनाथपुरा लिखदिया, और अपना मुसाहिब बनाया; जिन ख़िद्मतोंमें ऊपर महता कृष्णसिंहका ज़िक्र लिखागया है, उनमें गोपालसिंह को भी शरीक जानना चाहिये; और सौभाग्यसिंहकी दीवानीके ज़मानेमें महाराजा पृथ्वीसिंहने गोपालसिंहके बेटे भारथसिंहको मुसाहिब बनाया. इन दोनों ख़ैरख़्वाह मुसाहिबोंके बेटे उसी तरह काममें शरीक रहे, और अबतक ख़ैरख़्वाहीसे नौकरी देते हैं. भारथसिंहकी जागीरमें ३५००, रुपया सालानाकी रेख सात घोड़ेकी जागीर रघुनाथपुरा मौजूद है, और महाराजाने अपने आठ अव्वल दरजेके सर्दारोंके बराबर भारथसिंहका भी दरजा बढ़ाया, बल्कि उदयपुर, जयपुर, जोधपुर वग़ैरहसे भी महाराजाने ताज़ीम दिलाकर भारथसिंहकी इज़्ज़त बढ़ादी. अब महाराजाके भाई

बेटोंका कुछ हाल लिखाजाता है- महाराजा राजसिंहके पांच बेटे थे, जिनमेंसे चारका बयान तो ऊपर होचुका, और पांचवें वीरसिंहकी औलाद रलावता व अजमेरमें है, उन्होंने अपनी तवारीख़ हमारे पास भेजी, जिसका मुस्तसर हाल नीचे लिखाजाता है:-

महाराजा राजसिंहके पांचवां पुत्र, वीरसिंह था, जिसको करकेड़ी जागीरमें मिली, उसके दो बेटे बड़ा अमरसिंह और छोटा सूरजसिंह था. अमरसिंहके दलपतसिंह, सूरजसिंहके तीन बेटे- १ जशवन्तसिंह, २ अर्जुनसिंह, ३ शेरसिंह, हुए. जशवन्तसिंह का दुर्जनशाल, दुर्जनशालके सर्दारसिंह और समर्थसिंह हुए जिनमेंसे पहिला तो अपने बापके साम्हने ही गुज़रगया, और दूसरा रलावतेका जागीरदार मौजूद है, जिसके दो बेटे नवनीतसिंह और दूसरा बालक है.

सूरजसिंहका दूसरा बेटा अर्जुनसिंह, इसका जैतसिंह व बलवन्तसिंह; जैतसिंह का ज़ोरावरसिंह, जिसका शिवसिंह; और बलवन्तसिंहका विजयसिंह. सूरजसिंहका तीसरा बेटा शेरसिंह उसका शार्दूलसिंह, उसका शिवनाथसिंह जिसके बेटे सामन्तसिंह व गुलाबसिंह; शार्दूलसिंहके दूसरे बेटे बख़्तावरसिंह, जिनके जयसिंह, फ़त्हसिंह, और तीसरा बालक है. शार्दूलसिंहके तीसरे बेटे गुमानसिंह, जिनके रघुनाथसिंह; शार्दूलसिंह के चौथे बेटे अमानसिंह उनके रघुनाथसिंह; शार्दूलसिंहके तीन बेटियां थीं, जिनमेंसे एक तो बावलास के महाराज गोपालसिंहको व्याही, और दोकी शादी बागोरके महाराज शक्तिसिंह से हुई, जिनमें से एकके गर्भसे महाराणा सज्जनसिंह पैदा हुए.

इनका हाल अजमेर वाले इस तरह बयान करते हैं, कि वीरसिंहके बाद अमरसिंह करकेड़ीका जागीरदार जोधपुरके महाराजा विजयसिंहके पास रहता था; जब विक्रमी १८२३ [हि० ११७९ = ई० १७६६] में महाराजा सर्दारसिंहका रूपनगरमें देहान्त होगया, और महाराजा बहादुरसिंहने अपने बेटे बिड़दसिंहको उनकी जगह बिठाकर रूपनगर और कृष्णगढ़को एक करलिया, इन लोगोंका बयान है कि सर्दारसिंहने अमरसिंहको गोद लेनेके लिये कहलाया, लेकिन् बहादुरसिंहने दग़ा और मत्लबसे उनके क़ौलको पूरा न किया; इस बातसे नाराज़ होकर अमरसिंह जोधपुरके महाराजा विजयसिंहके पास जारहा; लेकिन् महाराजा बहादुरसिंहकी ज़िन्दगीतक तो कुछ न हुआ, और बिड़दसिंहने भी थोड़ीसी हुकूमत की, लेकिन् जोधपुरसे मिलावट रखता था; इसके बाद महाराजा प्रतापसिंह कृष्णगढ़की गद्दीपर बैठे, तब यह महाराजा जवानीके नशेमें अमरसिंहके जोधपुर रहनेसे नाराज़ होकर मरहटोंके मददगार बनगये, और मारवाड़को बर्बाद करना चाहा.

विक्रमी १८४५ [हि० १२०२ = ई० १७८८] में मारवाड़की फ़ौजसे अजमेरके इलाक़हमें लड़ाई हुई, जिसमें मरहटा और कृष्णगढ़की फ़ौजने शिकस्त खाई, और महाराजा विजयसिंहने फ़ौज भेजकर कृष्णगढ़को घेरलिया, रूपनगर छीनकर अमरसिंहको दिलादिया; महाराजा प्रतापसिंह तीन लाख रुपये फ़ौज ख़र्चके देकर बचे, लेकिन् थोड़े ही अर्सेके बाद अमरसिंहसे रूपनगर छीनलिया. उस वक्त महाराजा विजयसिंहने चश्मपोशी करली, क्योंकि मारवाड़में सर्दारोंकी बग़ावत होरही थी; तब अमरसिंह मरहटोंके पास गये, उन्होंने अजमेरके ज़िलेमें गगवाणा, ऊंटड़ा, मगरा, मगरी, अरड़का, सिराणा वग़ैरह गांव गुज़ारेके लिये जागीर में निकालदिये, लेकिन् ख़र्चके लायक़ आमदनी न हुई, तब अमरसिंह जयपुरके महाराजा जगत्सिंहके पास चलेगये, और उन्होंने चोड़का, मलारणा वग़ैरह जागीर देकर बहुत ख़ातिर की, जब महाराजा जगत्सिंहने जोधपुरके महाराजा मानसिंहपर चढ़ाई की, उस वक्त पोहकरणके ठाकुर सवाईसिंहसे अमरसिंहकी नाइत्तिफ़ाक़ी होगई. उसने महाराजाके दिलमें शक डालदिया, कि अमरसिंह जोधपुरसे मिला हुआ है. यह शुब्हा बढ़ाकर अमरसिंहको मरवाडाला; और इसी अर्सेमें अमरसिंहके बेटे दलपतसिंहको भी ज़हर देकर मारडालना बयान करते हैं. सूरजसिंहके बेटोंने बहुतसी लूट खसोट की, परन्तु कुछ पेश न गई, और जो गांव क़ब्ज़ेमें थे, वे ही बहाल रहे; यानी कृष्णगढ़के इलाक़हमें रलावता व गूंदली, और अजमेरके इलाक़हमें गगवाणा, ऊंटड़ा व मगरा बाक़ी रहे. इसी अर्सेमें अंग्रेज़ी अमल्दारी होगई, जिससे, जो जायदाद थी, उसीपर क़ाबिज़ रहना पड़ा.

फ़तूहगढ़का हाल.

महाराजा बहादुरसिंहके दो बेटोंमेंसे बड़े बिड़दसिंह तो कृष्णगढ़ और रूपनगरके राजा रहे, और छोटे बाघसिंह थे, जिनको जागीरमें फ़तूहगढ़ मिला. फ़तूहगढ़ वालोंने अपनी तवारीख़ हमारे पास भेजी, जिसका ख़ुलासा नीचे लिखा जाता है-

महाराजा बहादुरसिंहने अपने बड़े बेटे बिड़दसिंहको रूपनगरमें सर्दारसिंहकी गोद रखदिया, लेकिन् पीछे रियासत कम ताक़त होनेके सबब दोनों ठिकाने एक करलिये; इसमें बाघसिंहका हक़ मारागया, क्योंकि बिड़दसिंह रूपनगर गोद चलेगये, तो कृष्णगढ़के राजपर बहादुरसिंहके बाद बाघसिंहका हक़ था. महाराजा बहादुरसिंह ने अपनी औलादका फ़साद मिटानेको दसवां हिस्सा रियासतकी जायदादसे निकालकर बारह गांव समेत फ़तूहगढ़ बाघसिंहको दिया. यह फ़तूहगढ़ पहिले गौड़

राजपूतोंके क़ब्जेमें था, जो महाराजा राजसिंहके बेटे फ़त्हसिंहने उनसे छीना था; इस बारेमें मारवाड़ी भाषाका एक दोहा मश्हूर है-

दोहा.

गौड़ां सूं धरती गई गया धरा सूं गौड़ ॥
फ़तो फ़तेगढ़ आवियो राजकुंवर राठौड़ ॥ १ ॥

इस फ़त्हगढ़में क़िला बनाकर महाराजा बहादुरसिंहने विक्रमी १८३० [हि० ११८७ = ई० १७७३] में अपने छोटे बेटे बाघसिंहको वहां रखदिया. बाघसिंहका जन्म विक्रमी १८१८ माघ कृष्ण ११ [हि० ११७५ ता० २५ जमादियुस्सानी = ई० १७६२ ता० २२ जैन्युअरी] को हुआ था. फ़त्हगढ़ वालोंका बयान है कि कृष्णगढ़ और फ़त्हगढ़ दोनोंका महाराजा बहादुरसिंहने इज़्ज़त वग़ैरहमें बराबर क़ाइदह रक्खा था, और सर्दार, अहल्कार व जायदाद वग़ैरहमें से रियासतका दसवां हिस्सा उनको दिया. जब महाराज फ़त्हगढ़ कृष्णगढ़ जाते, तो गद्दीपर बैठना वग़ैरह सब तरह से बराबरीका बर्ताव होता. और कृष्णगढ़ वालोंका बयान है कि, महाराज बाघसिंह का बर्ताव हक़ीक़तमें बराबर बरता गया था, लेकिन् वह रिश्तेदारीकी बुज़ुर्गीसे कियागया, दावेदारीसे नहीं था.

महाराजा बिड़दसिंह और प्रतापसिंहके अह्दमें तो बाघसिंहसे अच्छी तरह इत्तिफ़ाक़ रहा, परन्तु महाराजा कल्याणसिंहसे कुछ नाइत्तिफ़ाक़ी होगई थी. विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में बाघसिंहका इन्तिक़ाल होगया. इनके चार बेटे थे- पहिला चांदसिंह जिसका जन्म विक्रमी १८३६ [हि० ११९३ = ई० १७७९] का है; दूसरा बलदेवसिंह, जिसको ग्रास में गांव ढोस व सदापुरकी भौम मिली; तीसरा किशोरसिंह, जिसको गांव ज़ोरावरपुरा व चांदोलाईकी भौम दीगई. और चौथा भीमसिंह, जिसको गांव कचौलिया जागीरमें मिला.

महाराज बाघसिंहके बाद चांदसिंह गद्दीपर बैठा; इसने ठिकानेका क़र्ज़ा चुकाया, और क़िलेमें मेगज़िन व कुछ ख़ज़ानह भी एकट्ठा किया, उसके शुरू अह्दमें महाराजा कल्याणसिंहने पहिले मरहटा बंकटराव और दूसरी दफ़ा अमीरख़ांका हम्ला फ़त्हगढ़पर करवाया; लेकिन् चांदसिंह और उसके आदमियोंकी अक़्लमन्दीसे कल्याणसिंहकी ख़्वाहिश पूरी न होसकी. अंग्रेज़ी अमल्दारी होनेके बाद भी कल्याणसिंहने फ़त्हगढ़को मातह्त करनेका इरादह

न छोड़ा. ज़ोरावरपुरेका किशोरसिंह, जो बाघसिंहका तीसरा बेटा था, बे औलाद मरगया, इसलिये चांदसिंहने उसकी जागीरका मालिक अपने बेटे गोपालसिंहको बनादिया, तब बलदेवसिंह और भीमसिंहने बहुत फ़साद किया, लेकिन् कोटाके दीवान झाला ज़ालिमसिंह ने इन दोनों भाइयोंको कुछ जागीर कोटासे देकर समझादिया; मगर बलदेवसिंहकी बद चलनी और भीमसिंहकी सुस्तीसे वह जागीर कुछ अर्से बाद जाती रही. महाराजा कल्याणसिंहने फ़तहगढ़को मातहत करनेके लिये ज़ोर डाला, और कुछ परदेसी सिपाहियोंको नौकर रखकर हम्ला किया, परन्तु कृष्णगढ़के कुल जागीरदार एक होकर बाग़ी होगये, जिससे महाराजाकी ख़्वाहिश पूरी न हुई; आख़िरकार गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीको फ़ैसला करना पड़ा. फ़तहगढ़का आज़ाद होना, जो अह्दनामहके बर्ख़िलाफ़ था, अंग्रेज़ी अफ़्सरोंने मंज़ूर नहीं किया, लेकिन् क़तई फ़ैसला होकर तामील नहीं करवाई गई.

विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४०] में महाराज चांदसिंहका इन्तिक़ाल होगया. उसका बड़ा बेटा भोपालसिंह था, जिसका जन्म विक्रमी १८५६ [हि० १२१४ = ई० १७९९] का था; दूसरा गोपालसिंह, और तीसरा इन्द्र-सिंह. महाराज भोपालसिंह फ़तहगढ़का रईस हुआ, इसके समयमें भी कृष्णगढ़की अदावत बनीरही. विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ = ई० १८४७] में इसका इन्तिक़ाल होगया, और उसका पुत्र महाराज रणजीतसिंह गद्दीपर बैठा, जो बहुत लायक़ और बुद्धिमान था. इसने ठिकानेको ज़मीनकी आबादी, तालाब, इमारत वग़ैरहसे ख़ूब दुरुस्त किया, कृष्णगढ़का ख़रख़शा तै नहीं हुआ, आख़िरकार गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने फ़ैसला तै करके महाराज रणजीतसिंहको कृष्णगढ़में तलब करनेके बाद अपने अफ़्सरोंके साम्हने महाराजा पृथ्वीसिंहकी गद्दीके नीचे बिठाकर नज़ करवादी, और वलीअह्द रियासतकी इज़्ज़तके मुवाफ़िक़ इनके साथ बर्ताव रहना क़रार पाया. लेकिन् इस शर्मिन्दगीके सदमेसे चार महीने बाद, याने विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] में महाराज रणजीतसिंहका इन्तिक़ाल होगया, जिसके बाद उसका पुत्र गोवर्धनसिंह फ़तहगढ़का मुख़्तार बना, जिसका जन्म विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] में हुआ था, शुरू अह्दसे इसकी ख़्वाहिश शराब पीनेपर बढ़तीजाती थी; कृष्णगढ़की तरफ़से इसे बहुतसी सख़्तियां झेलनी पड़ीं, आख़िरकार विक्रमी १९३८ श्रावण कृष्ण ३० [हि० १२९८ ता० २९ शअ्बान = ई० १८८१ ता० २६ जुलाई] को इसका इन्तिक़ाल होगया; तब
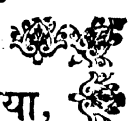
इन्द्रसिंहके पोते और रायसिंहके बेटे मानसिंहको उदयपुरसे बुलाकर गद्दीपर बिठाया, क्यों कि गोवर्धनसिंहके कोई औलाद न थी.

अब यहांपर बाघसिंहकी औलादका कुर्सीनामह लिखाजाता है- पाटवी चांदसिंह, जिसके तीन बेटे- बड़ा भोपालसिंह, दूसरा गोपालसिंह, और तीसरा इन्द्रसिंह. भोपालसिंहका रणजीतसिंह, उसका गोवर्धनसिंह, और उसके मानसिंह, जो फ़तहगढ़के वर्तमान जागीरदार हैं. चांदसिंहका दूसरा बेटा गोपालसिंह, जिसको बाघसिंहके तीसरे बेटे किशोरसिंहके गोद रक्खा, और चांदसिंहका तीसरा बेटा इन्द्रसिंह, जिसका रायसिंह (१), जिसके मानसिंह जो फ़तहगढ़वाले गोवर्धनसिंहके गोद गये.

बाघसिंहका दूसरा बेटा बलदेवसिंह ढोसका जागीरदार जिसका बेटा भौमसिंह, भौमसिंहके तीन बेटे- बड़ा हिम्मतसिंह, दूसरा ज़ालिमसिंह, और तीसरा धनपतसिंह. विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] में हिम्मतसिंहके हाथसे ज़ालिमसिंह मारागया, और ढोसकी जागीर धनपतसिंहको मिली; उसका बेटा तेजसिंह, जो अब मौजूद है. बाघसिंहका तीसरा बेटा किशोरसिंह, ज़ोरावरपुराका जागीरदार, जिसका गोपालसिंह, इसका वैरीशाल, जिसके तीन बेटे- बड़ा केसरीसिंह, दूसरा रामसिंह, और तीसरा श्यामसिंह.

बाघसिंहका चौथा पुत्र भीमसिंह कचोलियाका जागीरदार जिसके छः पुत्र हुए- १ छत्रसिंह, २ मंगलसिंह, ३ विजयसिंह, ४ फ़ौजसिंह, ५ पृथ्वीसिंह, जो कृष्णगढ़के महाराजा हुए, और ६ फ़तहसिंह. बड़े छत्रसिंहका बेटा हरनाथसिंह.

नम्बर ३३

कृष्णगढ़का अह्दनामह.

अह्दनामह ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इन्डिया कम्पनी और कृष्णगढ़के महाराजा कल्याणसिंह बहादुरके दर्मियान, जो मारिफ़त मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेटकाफ़की

---

(१) इनका मुफ़स्सल हाल उदयपुरके सर्दारोंके साथ लिखाजावेगा.

(मोस्ट नोबल मार्कुइस आफ़ हेस्टिंग्ज़, के. जी. गवर्नर जेनरलके दियेहुए पूरे इख्तियारसे) और मारिफ़त क़ाज़ी फ़तहमुहम्मदख़ांकी (महाराजा कल्याणसिंह बहादुरके दियेहुए पूरे इख्तियारसे) हुआ.

पहली शर्त- दोस्ती और इत्तिफ़ाक़ और ख़ैरख़्वाही ऑनरेबल कम्पनी और महाराजा कल्याणसिंह और उनके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान हमेशह बरती जायगी, और एक फ़रीक़के दोस्त व दुश्मन दूसरे फ़रीक़के दोस्त और दुश्मन समझे जायेंगे.

दूसरी शर्त- गवर्मेंएट अंग्रेज़ी वादा करती है कि वह कृष्णगढ़की रियासत और मुल्ककी हिफ़ाज़त करेगी.

तीसरी शर्त- महाराजा कल्याणसिंह और उसके वारिस और जानशीन, गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी तावेदारी करेंगे, और उसकी बुज़ुर्गीका इक़ार करेंगे, और किसी दूसरे रईससे इत्तिफ़ाक़ और मिलावट नहीं करेंगे.

चौथी शर्त- महाराजा कल्याणसिंह और उसके वारिस और जानशीन किसी ग़ैर रईसके साथ सुलह और इत्तिफ़ाक़का पैग़ाम गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी इत्तिला और मन्ज़ूरीके बग़ैर नहीं करेंगे, परन्तु मामूली दोस्ताना ख़त किताबत अपने दोस्त और रिश्तेदारोंके साथ जारी रक्खेंगे.

पांचवीं शर्त- महाराजा और उसके वारिस और जानशीन किसीपर ज़ियादती नहीं करेंगे, और अगर इत्तिफ़ाक़न् आपसमें किसीसे तक़ार पैदा होगी, तो वह सफ़ाईके लिये गवर्मेंएट अंग्रेज़ीके सुपुर्द कीजायगी कि वह उसका फ़ैसला करदे.

छठी शर्त- महाराजा कृष्णगढ़ गवर्मेंएट अंग्रेज़ीको मांगनेपर अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ फ़ौज देंगे.

सातवीं शर्त- महाराजा और उसके वारिस और जानशीन अपने मुल्कके हर तरह हाकिम रहेंगे, और अंग्रेज़ी हुकूमत उस रियासतमें दाख़िल न होगी.

आठवीं शर्त- यह अह्दनामह आठ शर्तोंका तै होकर उसपर मुहर और दस्त-ख़त मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेटकाफ़ और क़ाज़ी फ़तहमुहम्मदख़ांके हुए, और नक़ उसकी हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल और महाराजा कल्याणसिंह बहादुरकी तस्दीक़ कीहुई इस तारीख़से २० दिन पीछे आपसमें तक़्सीम होजायगी.

मक़ाम दिहली, ता० २६ मार्च, सन् १८१८ ई०

दस्तख़त सी. टी. मेटकाफ़. | मुहर |

| मुहर | कल्याणसिंह बहादुर.

| मुहर | फ़त्ह मुहम्मद ख़ां.

| मुहर गवर्नरजेनरल | दस्तख़त हेस्टिंग्ज़.

इस अह्दनामहको हिज़ एक्सेलेन्सी गवर्नर जेनरल बहादुरने कैम्प बांसबरेली में ता० ७ एप्रिल सन् १८१८ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त जे. ऐडम, सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल.

नम्बर ३४.

सर्कार अंग्रेज़ी और श्रीमान पृथ्वीसिंह महाराजा कृष्णगढ़ व उनके वारिसों और जानशीनोंके बीचका अह्दनामह, जो एक तरफ़ लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल् रिचर्ड हार्ट कीटिंग, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने हुक्मके मुताबिक़ किया, जिनको पूरा इख़्तियार हिज़ एक्सेलेन्सी सर जॉन लेयर्ड मेअर लॉरेन्स, वाइसराय, गवर्नर जेनरल हिन्दुस्तानसे मिला था, और दूसरी तरफ़ खुद महाराजा पृथ्वीसिंह थे-

पहिली शर्त- कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी राज्यमें कोई बड़ा जुर्म करे, और कृष्णगढ़की राज्य सीमामें पनाह लेना चाहे, तो कृष्णगढ़की सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी, और दस्तूरके मुताबिक़ उसके मांगेजानेपर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

दूसरी शर्त- कोई आदमी कृष्णगढ़के राज्यका बाशिन्दह वहांके राज्यकी सीमा में कोई बड़ा जुर्म करे, और अंग्रेज़ी इलाक़हमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुजिम कृष्णगढ़के राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ सुपुर्द करदेवेगी.

तीसरी शर्त- कोई आदमी, जो कृष्णगढ़के राज्यकी रअय्यत न हो, और कृष्णगढ़के राज्यकी सीमामें कोई बड़ा जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें पनाह लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ्तार करेगी, और उसके मुक़द्दमेकी रूबकारी सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अदालतमें होगी. अक्सर क़ाइदह यह है कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसला उस पोलिटिकल अफ्सरके इजलासमें होता है, जिसके तह्तमें वारदात होनेके वक्तपर कृष्णगढ़की मुल्की निगहबानी रहे.

चौथी शर्त– किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो बड़ा मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जबतक कि दस्तूरके मुताबिक़ ख़ुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ़्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाक़हमें कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाक़हके क़ानूनके मुताबिक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम पायाजावे, उसका गिरिफ़्तार करना दुरुस्त ठहरेगा, और वह मुज्रिम क़रार दियाजावेगा, गोया जुर्म वहींपर हुआ है.

पांचवीं शर्त– नीचे लिखे हुए काम बड़े जुर्म समझे जावेंगे– १ ख़ून– २ ख़ून करनेकी कोशिश– ३ वहशियाना क़त्ल– ४ ठगी– ५ ज़हर देना– ६ सख़्तगीरी– ७ ज़ियादह ज़ख़्मी करना– ८ लड़का बाला चुरालेजाना– ९ औरतोंका बेचना– १० डकैती– ११ लूट– १२ सेंध (नक़्ब) लगाना– १३ चौपाये चुराना– १४ मकान जलादेना– १५ जालसाज़ी करना– १६ झूठा सिक्का चलाना– १७ धोखा देकर जुर्म करना– १८ माल अस्बाब चुरालेना– १९ ऊपर लिखेहुए जुर्मोंमें मदद देना या वरग़लाना (बहकाना).

छठी शर्त– ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमको गिरिफ़्तार करने, रोकरखने, या सुपुर्द करने में, जो ख़र्च लगे, वह उसी सर्कारको देना पड़ेगा, जिसके कहनेके मुताबिक़ यह बातें कीजावें.

सातवीं शर्त– ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक़्तक बरक़रार रहेगा, जबतक कि अह्दनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई उसके तब्दील करने की ख़्वाहिश एक दूसरेको ज़ाहिर न करे.

आठवीं शर्त– इस अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो कि दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा; सिवाय ऐसे अह्दनामहके, जो कि इस अह्दनामहकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हो.

मक़ाम अजमेर, ता० २७ नोवेम्बर सन् १८६८ ईसवी.

दस्तख़त महाराजा कृष्णगढ़ (हिन्दी हर्फ़ोंमें).
दस्तख़त आर. एच. कीटिंग, एजेएट गवर्नर जेनरल.
दस्तख़त जॉन लॉरेन्स, वाइसरॉय, गवर्नर जेनरल हिन्द.

इस अह्दनामहको मक़ाम फ़ोर्ट विलिअममें गवर्नर जेनरलने ता० १२ डिसेम्बर सन् १८६८ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त डब्ल्यू. एस. सेटन कार, सेक्रेटरी, गवर्मेंट इन्डिया, फ़ॉरेन डिपार्टमेन्ट.

नम्बर ३५.

कृष्णगढ़ महाराजाकी तरफ़से एजेएट गवर्नर जेनरल बहादुर राजपूतानहके नाम, ज़ो ख़रीता ता० ८ जुलाई सन १८६७ ई० को लिखागया, उसका खुलासा–

गुज़रेहुए महीनेकी २६ ता० को आपके ख़रीतेके आनेसे मेरी इज़्ज़त हुई, जिसमें यह मत्लब है कि गवर्मेंट इन्डिया मुझे बीस हज़ार रुपया सालाना उस नुक्सान के बदलेमें देनेको राज़ी है, जोकि मेरी रियासतकी आमदनीमें मेरे इलाक़हमें रेल्वेके गुज़रनेसे होगा, और बतलब जवाब जल्द.

इसका मत्लब मैंने अच्छी तरह समझ लिया, और मैं ख़्वाहिश रखता हूं कि श्री मान वाइसरॉय गवर्नर जेनरल को मेरा इह्सानमन्दीके साथ शुक्रिया मेरे और मेरी रियासत की तरफ़ इस मिहर्बानी के लिहाज़के वास्ते अदा कियाजावे.

मैं शुक्रगुज़ारीके साथ इस नुक्सानके बदले को, जो सर्कार देनेको राज़ी है, याने बीस हज़ार रुपया सालाना मंज़ूर करता हूं, और आपसे अर्ज़ करता हूं कि गवर्मेएटको इसकी इत्तिला देवें; उसीके साथ यह भी अर्ज़ है कि श्री मान वाइसराय को मेरा शुक्रिया और यह उम्मेद ज़ाहिर करें कि वह मेरी रियासतपर मिहर्बानी की निगाह रखते रहें.

मुझे उम्मेद है कि जबतक मैं आपसे रूबरू मिलनेकी ख़ुशी हासिल न करूं, तबतक कभी कभी आपकी चिठ्ठियों से इज़्ज़त पाता रहूंगा.

रीवां (बांधूगढ़) की तवारीख़.

महाराणा राजसिंहके वृत्तान्तमें लिखागया है, कि महाराणाकी कन्या अजब-कुंवर बाईका विवाह बांधूगढ़के राजा अनूपसिंह बाघेलाके साथ हुआ था, इस तअ़ल्लुक़के सबब बांधूगढ़ अर्थात् रीवांका तारीख़ी हाल यहां लिखते हैं.

बयान है, कि त्रेता युगमें जब परशुरामने क्षत्रियोंका नाश किया, तब बे ख़ौफ़ होकर म्लेच्छ (जंगली लोग) ब्राह्मणोंके आचार विचार और यज्ञादिकमें नुक्सान पहुंचाने लगे, इसपर मुनियोंने आबू पहाड़ (अर्बुदाचल) पर चार जातिके क्षत्री

अग्नि कुण्डसे निकाले- प्रमार, परिहार, और चहुवानके सिवाय एक पानी सींचनेके लिये चौथा चुलुक्य, जिसको चालुक्य अथवा सोलंखी भी कहते हैं, पैदा किया; और पांचवां शख़्स केलेके डोडे (फूल) से पैदा किया, जिससे डोडिया क्षत्री हुए.

हमारे विचारसे ब्राह्मणोंने इन पांचों क्षत्रियोंको प्रायश्चित्त करवाकर शुद्ध किया होगा, तबसे सूर्य चन्द्र वंशियोंके सिवाय अग्निवंशी क्षत्री जुदे कहलाये. यदि चालुक्यसे लेकर वर्तमान समयतक वंशावलीको सिल्सिलेवार मिलाया जावे, तो पुरानी वंशावलीके ग़लत होनेमें कुछ शक नहीं, क्योंकि बड़वा और भाटोंने अपनी पुस्तकोंका सिल्सिला मिलानेके लिये अक्सर बनावटी नाम रख लिये हैं. हमने एशियाटिक सोसाइटी बंगाल, तथा बम्बई ब्रैंच रॉयल एशियाटिक सोसाइटी और इंडियन ऐन्टीक्वेरी व फ़ॉर्ब्स साहिबकी रासमाला गुजरात हिस्टरी के द्वारा शिला लेख, ताम्रपत्र, सिक्के, बड़वा भाटोंकी पुस्तकों, रत्नमाला, कुमारपाल चरित्र, द्वाश्रय वग़ैरहके आशयको देखा, और ख़ान बहादुर मौलवी हकीम रह्मानअ़लीकी तहरीरसे, जो रीवांका इ़ज़्ज़तदार अहल्कार है, और रीवांका इतिहास लिखता है, और जिसकी किताबका पहिला भाग राजवंश वर्णन क़लमी लिखा हुआ एक मित्र द्वारा हमारे पास आया है; उसमें जो साल संवत् लिखे हैं, वे हमारी नज़र में तो शुद्ध हैं ही नहीं, बल्कि उक्त मौलवीको भी उनके सहीह होनेमें शक है. इस लिये हम पुराने संवत् वही लिखेंगे, जो कि ताम्र पत्र वा पाषाण लेखोंसे शुद्ध होचुके हैं, और बीचके संवत्, जो अशुद्ध मालूम होते हैं, उन्हें छोड़कर पिछले वहांसे शुरू करेंगे, जहांसे कि कम फ़र्क़ मालूम पड़ता है.

वंशावलीके नामोंमें चालुक्यसे कल्याणीके राजा भुवनदेव तकका हमें विश्वास नहीं है, अगर्चि ऐन्टीक्वेरी और सोसाइटियोंके जर्नलोंमें दक्षिणी, पूर्वी व पश्चिमी चालुक्य राजाओंके नाम प्रशस्तियों और ताम्रपत्रोंसे लिखे गये हैं, लेकिन् यह तह्क़ीक़ नहीं होता कि यह भुवनदेवसे पहिले, चालुक्य वंशी राजा थे, इस लिये भुवनदेवसे वंशावली शुरू की जाती हैः-

चालुक्य भुवनादित्यके तीन पुत्र हुए- १ राज, २ बीज, ३ दंडक; अनहिलवाड़ा पट्टनके राजा सामन्तदेव चावड़ाकी बहिन लीलादेवीका विवाह १ राजके साथ हुआ था, जिसके गर्भसे मूलराज पैदा हुआ. राजा सामन्तदेव चावड़ाने अपनी बहिनके पुत्र मूलराजको गोद लिया, और वह सामन्तदेव चावड़ाके मरने बाद विक्रमी ९९८ [हि० ३३० = ई० ९४२] में अनहिलवाड़ा पट्टनकी गद्दीपर बैठा. यह राजा गुजरात (सौराष्ट्र) में सोलंखियोंका बड़ा राज क़ायम करनेवाला हुआ.

इसने चहुवान, प्रमार, जाड़ेचा, चूड़ाप्मा इत्यादि वंशके अनेक राजाओंपर फ़त्ह पाई, और विक्रमी १०५३ [हि० ३८७ = ई० ९९७] तक ५५ वर्ष राज्य किया.

इसके बाद २ चामुंडराज गद्दीपर बैठा, और १३ वर्षतक, यानी विक्रमी १०६७ [हि० ४०० = ई० १०१०] तक राज्य करके परलोकको सिधारा.

इसके तीन बेटे हुए- बल्लभराज, दुर्लभराज और नागराज; इनमें से बड़ा पुत्र बल्लभराज तो चामुंडराजके सामने ही मरगया, जिसपर चामुंडराजने अपने दूसरे पुत्र ३ दुर्लभराजको राज देकर आप तपस्या करनेकी मर्ज़ीसे नर्मदा किनारे निवास किया.

दुर्लभराजके छोटे भाई नागराजके पुत्र ४ भीमको विक्रमी १०७९ [हि० ४१३ = ई० १०२२] में दोनों भाई राज्य देकर तपस्या करनेको काशी चलेगये, और वहीं मरे. इसी भीमदेवको विक्रमी १०८१ [हि० ४१५ = ई० १०२४] में महमूद ग़ज़नवीने शिकस्त देकर सोमनाथ महादेवके लिङ्ग और मन्दिरको तोड़ा था. फिर महमूद तो ग़ज़नीको चलागया, और भीमदेवने अपनी ताक़तसे गुजरातका राज्य अपने क़ब्ज़ेमें करके सिन्धु और चंदेरीके राजासे भी दंड लिया. इसीके वक़्में उज्जैन और धारमें मालवा देशका प्रसिद्ध राजा भोज हुआ, जिससे भीमदेवकी बड़ी मुवाफ़क़त थी. भीमदेवके क्षेमराज, मूलराज और कर्ण तीन पुत्र थे.

भीमदेवने ५ क्षेमराजको अनहिलवाड़ेका राज्य देकर तपस्या करनेका विचार किया, लेकिन् क्षेमराजने हुकूमतसे अपने पिताकी सेवा ही ठीक जानकर छोटे भाई ६ कर्णको विक्रमी ११२९ [हि० ४६४ = ई० १०७२] में राज्य देने बाद तीर्थ वास किया, और वह इसी हालतमें गुज़रगया.

कर्ण राजाका देहान्त विक्रमी ११५१ [हि० ४८७ = ई० १०९४] में हुआ. इसकी गद्दीपर सिद्धराज जयसिंहदेव कम उम्रीमें गादी बैठा था; इस हालतमें राज्यका काम सिद्धराजकी मा मैनालदेवी चलाती थी. सिद्धराज गुजरातके सोलंखी राजाओंमें बड़ा नामी हुआ, लेकिन् इसके पीछेके साल संवत् और पीढ़ियोंमें बहुत ग़लती है.

ऊपर लिखे हुए संवत् और राजाओंके नाम तहक़ीक़ करके लिखे हैं, परन्तु सिद्धराजके बेटोंसे बाघेलोंके वंशका जुदा होना बड़वा भाटोंकी पोथियों और रीवां के मैजिस्ट्रेट हकीम रहमानअलीख़ांकी तहक़ीक़ातसे अथवा एक तवारीख़की हिन्दी किताबसे, जो महाराणा भीमसिंहके कुंवर जवानसिंहकी पहिली शादी राजा जयसिंहदेवकी बेटी और बाबू विश्वनाथसिंहकी बहिन सुभद्रकुमारीके साथ होनेके सबब रीवांके राज्यकी तरफ़से विक्रमी १८८० [हि० १२३९ = ई० १८२३]

में उदयपुरके दर्बारमें आई थी, शक होता है. उक्त हकीम तो अपनी तहक़ीक़ातमें चालुक्यसे लेकर हालतक कुल ११२१ पीढ़ियां लिखते हैं; और सोलंखियोंका बड़वा देवीदान चालुक्यसे मूलराजके पिता राज तक ९०० पीढ़ी होना बयान करता है; इसमें तअ़ज्जुब यह है, कि मूलराजसे सिद्धराजतककी पीढ़ियोंके नामोंमें भी बहुत फ़र्क़ है, लेकिन् ऊपरकी पीढ़ियां और साल संवत् हम तहक़ीक़ करके लिख चुके हैं. तवारीख़में यह अंधेर भाटोंका किया हुआ ही मालूम होता है.

पृथ्वीराजरासाके लेखसे दूसरे भीमदेवका मेवाड़में बनास नदीपर राजा पृथ्वीराज चहुवान और रावल समर्सीसे लड़कर माराजाना प्रसिद्ध है. भीमदेवका ताम्रपत्र विक्रमी १२५६ [हि० ५९५ = ई० ११९९] का मिला है, और राजा पृथ्वीराज चहुवान विक्रमी १२४९ [हि० ५८९ = ई० ११९३] में शिहाबुद्दीनसे लड़कर मारागया था; चित्तौड़के रावल समर्सीके समयके जो पाषाण लेख मिले हैं, उनसे समर्सीका संवत् विक्रमी १३३१ [हि० ६७२ = ई० १२७४] से विक्रमी १३४४ [हि० ६८६ = ई० १२८७] तक चित्तौड़में राज्य करना ज़ाहिर है. अब ऐसी ग़लतियोंमेंसे अस्ली हाल निकालना कठिन है.

फ़ॉर्ब्स साहिबकी 'रासमाला' और ऊपर लिखी हुई सोसाइटियों व किताबोंके लेखसे तो सिद्धराजका दूसरा बेटा अर्णोराज था, जिसको उसके बड़े भाई कर्णराजने वाघेला ग्राम जागीरमें दिया था, जो अनहिलवाड़ा पट्टनके पास अबतक मश्हूर है, और उसमें पुरानी इमारतें भी अबतक मिलती हैं. इसी वाघेला ग्रामके नामसे अर्णोराजकी सन्तान वाघेला कहलाई.

अर्णोराजका पुत्र कर्णराज, इसका वीसलदेव, जिसके बेटे अर्जुनदेवके वक्त तक गुजरात देशमें वाघेलोंका राज्य करना फ़ॉर्ब्स साहिबकी रासमालासे पतेवार मिलता है, लेकिन् कुर्सीनामहको आगे बढ़ानेके लिये कोई सुबूत नहीं नज़र आता. इस कारण रीवांके मैजिस्ट्रेट हकीम रहमानअ़लीख़ांके तहक़ीक़ाती कुर्सीनामह और तवारीख़से यहां लिखाजाता है, जो नहीं मालूम किस जगहसे कहांतक ग़लत, और कबसे सहीह है- यही ख़याल उक्त हकीमको भी है.

७ वें राजा सिद्धराज (जयसिंहदेव) के पुत्र ८ सिंहराज, इनके ९ नागराज, इनके १० कर्णदेव, इनके ११ वीरध्वज (शायद शुद्धनाम वीसलदेव होगा), इनके १२ व्याघदेव, इनसे वाघेला सोलंखी कहलाये; इन्होंने पूर्वमें जाकर वघेलखंडका राज्य जमाया. इनके पांच पुत्र हुए, जिनमेंसे १३ कर्णदेव अपने बापकी जगह वघेलखंडके ज़िले मंडफ़ामें गादी बैठे; दूसरा कन्धरदेव, इसका लक़ब 'राव' हुआ,

और कसोटा जागीरमें पाया. तीसरा कीर्तिदेव (१) जिसकी औलाद पेथापुरमें राज करती है. चौथा सूरतदेव, जो गुजरातमें चलागया, और जिसकी औलाद पालनपुर एजेन्सीकी हुकूमतके तावे ठाकरां इलाक़ह नहराब, मोरवाड़ा और देवदा ग्रामोंमें है.

पांचवां श्यामदेव पूर्व देशको चलागया, जिसकी औलादमें शायद बनारस, भदोई, और फ़र्रुख़ाबाद ज़िले के बघेले हैं.

१३ कर्णदेवका विवाह हयहय वंशी क्षत्री राजा सोमदत्तकी बेटीसे हुआ, और दहेज़में बांधूगढ़ मिला जो आजतक रीवांके तअल्लुक़में है, इन्होंने बांधूगढ़में कर्णबनेवा दर्वाज़ा बनवाया, जो अबतक मौजूद है.

---

(१) गुजरात राजस्थानके पृष्ठ १२३ में पेथापुरकी तवारीख़ इस तरह पर लिखी है–

विक्रमी १३०१ [हि० ६४२ = ई० १२४४] से विक्रमी १३६१ [हि० ७०४ = ई० १३०४] तक अनहिलवाड़ा पट्टनकी गद्दीपर बाघेला राजपूतोंने राज्य किया; पिछले राजा कर्ण बाघेलाके वक़्में दिल्लीके बादशाह सुल्तान अलाउद्दीन खिल्जीने इस राज्यको बर्बाद किया. कर्ण बाघेलाके वारिस जैता और बरसिंह दो भाई थे, जिन्होंने गुजरात देशसे बाहर निकलकर लूट मार शुरू की. थोड़े दिनोंके बाद फिर बादशाहने खुश होकर इन्हें ५०० ग्राम दिये.

जागीर के दो हिस्से होकर जैताको कलोल ग्रामके साथ २५० गांव, और बरसिंहकी पांतीमें साणंदके साथ २५० गांव आये. जैताके वंशमें कलोलका राजा आनन्ददेव हुआ, इसके कुंवर राणकदेवकी जागीरमें रूपाल गांव था; इसके देहान्तके बाद दूसरी या तीसरी पीढ़ीमें सामन्तसिंह हुए, जिनके कुंवरोंने रूपालके हिस्से करलिये.

इनमें पाटवी विजयकर्ण था, इसलिये ख़ास रूपाल इसीके क़ब्ज़ेमें रही; और छोटे कुंवर सोमेश्वरको कोलवाड़ा वग़ैरह १४ गांव मिले. सोमेश्वरके पुत्र चांदा और हिमाला हुए, इस वक़् पेथू गोहिलके क़ब्ज़ेमें साबरमती नदीके पास सोखड़ा ग्राम था, यह हिमाला के मामा थे. हिमाला किसी क़द्र राजपूतोंको लेकर सोखड़ा गया, और अपने मामाको मारकर राज्य छीन लिया, पेथूकी राणी सती हुई; इस राणीके हुक्मके मुवाफ़िक़ 'पेथापुर' बसाया गया, जहांका राज्य आजतक उन्हींके वंशमें है.

पेथापुरका तअल्लुक़ा मिलाने वाला जैतासे दसवीं पीढ़ीमें हिमाला लिखा है. हालके ठाकुर गंभीरसिंह बाघेला राजपूत महीकांठाके इलाक़हमें चौथे दरजेके सर्दार हैं. इनको फ़ौज्दारीमें एक वर्ष क़ैद, और ५०० रुपये तक जुर्माना, और दीवानीमें २५०० रु० तकका दावा सुननेका इख़्तियार है.

पेथापुर– महीकांठाके इलाक़ह और साबर कांठाके ज़िलेमें साबरमती नदीके किनारेपर आबाद है, जिसका रक़्बा ४ मीलमुरब्बा है; इसमें तीन गांव, और ७००० आदमियोंकी आबादी है. इसकी सालाना आमदनी १५००० रुपयेके क़रीब है.

कर्णदेवके पुत्र १४ सुहागदेव, इनके १५ सारंगदेव, जिनका बसायाहुआ सारंगपुर प्रयाग (इलाहाबाद) के पास अबतक आबाद है. इनके १६ बिलासदेव थे, जिन्होंने बिलासपुर आबाद किया. इनके १७ भमलदेव, इनके १८ आनकदेव, इनके १९ दलगीरदेव, इनके २० मलगीरदेव, इनके २१ ब्रियारदेव, इनके २२ बुलारदेव, इनके २३ सिंहदेव, जो अपने बेटे २४ भैरवदेवको राज्य सौंपकर गंगा किनारे चलेगये, और वहीं समाधि ली (ज़िन्दा दफ्न हुए).

भैरवदेवके पुत्र २५ नरहरदेव, इनके २६ भेददेव, इनके २७ शालिवाहन, जिनके बारेमें कहाजाता है कि यह चित्तौड़के महाराणा लाखाकी बेटीसे पैदा हुए थे; इनके २८ त्रिसिंहदेव, इनके २९ वीरभानुदेव, और दूसरे जयमनभानु हुए. बड़े बेटे वीरभानुदेव गद्दीपर बैठे, और छोटेको मेहड़ और सुहागपुर जागीरमें मिला.

हकीम रहमानअलीखां लिखते हैं कि वीरभानुदेवसे संवत् सहीह मिलते हैं, लेकिन् हमारा ख़याल है कि शायद इनमें भी ग़लती हो. वह लिखते हैं कि-

वीरभानुदेवका जन्म विक्रमी १५३९ [हि० ८८७ = ई० १४८२] को, राज्याभिषेक विक्रमी १५५८ [हि० ९०७ = ई० १५०१] को और देहान्त विक्रमी १६२१ [हि० ९७२ = ई० १५६४] में हुआ.

यह भी लिखते हैं, कि दिल्लीका हुमायूं बादशाह जब शेरखां अफ़्ग़ानसे शिकस्त खाकर भागा, और शेरशाह दिल्लीके तरूत्पर बैठगया, तो हुमायूं तक्लीफ़की हालतमें भागता फिरता था; उसी वक्तमें हुमायूंकी हमीदा बानू बेगमको वीरभानुदेव ने कुछ अर्सेतक बांधूगढ़में रखकर हिफ़ाज़तके साथ हुमायूंके पास मारवाड़में पहुंचाया था; और इसी बेगमके गर्भसे अमरकोटमें अक्बरका जन्म हुआ, इसी सबब अक्बर बादशाह बांधूगढ़के बघेलोंपर ज़ियादह मिहर्बान था. (लेकिन् अक्बर नामह में इसका कुछ पता नहीं, बल्कि उसकी फ़ौजने बांधूगढ़ छीन लिया लिखा है).

वीरभानुदेवका पुत्र ३० रामदेव विक्रमी १५८५ [हि० ९३४ = ई० १५२८] में जन्मा, जिसका राज्याभिषेक विक्रमी १६२१ [हि० ९७२ = ई० १५६४] में, और देहान्त विक्रमी १६७५ [हि० १०२७ = ई० १६१८] में हुआ. रीवांवाले लिखते हैं कि इन्हीं महाराजा रामदेवको अक्बर बादशाहने "भैया" का पद दिया था; और अपनी मा हमीदाबानूकी चाकरीके बदले बादशाह इनसे बहुत खुश रहा; यह भी मश्हूर है कि बांधूगढ़के राजाओंने कभी दिल्लीके बादशाहों

को बेटी नहीं दी. इनके ३१ वीरभद्र हुआ, जिसका जन्म विक्रमी १६०४ [हि० ९५४ = ई० १५४७] में, राज्याभिषेक विक्रमी १६५४ [हि० १००६ = ई० १५९७] में, और देहान्त परोधा गांवमें विक्रमी १६७५ [हि० १०२७ = ई० १६१८] में हुआ; इनकी छत्री वहां मौजूद है. इनके विषयमें एक भूतकी (१) कहानी मश्हूर है. इनके पुत्र ३२ विक्रमादित्य हुए, इनका जन्म विक्रमी १६२१ [हि० ९७२ = ई० १५६४] में, राज्याभिषेक विक्रमी १६७५ [हि० १०२७ = ई० १६१८] में और देहान्त विक्रमी १६८७ [हि० १०४० = ई० १६३०] में हुआ था. इस राजाने बिछिया और बेहड़ नदीके संगमपर रीवां शहर बसाकर उसे अपनी राजधानी ठहराया, जहांपर उसकी औलाद अबतक हुकूमत करती है.

विक्रमादित्यके तीन पुत्र हुए, ३३ बड़ा अमरसिंह, दूसरा इन्द्रसिंह, जिसकी औलाद पथरहट, कछीयाटोला और परदाढ़ा वगैरह में मौजूद है; और तीसरा स्वरूपसिंह, जिसकी सन्तान पनालसीमें है. महाराजा अमरसिंहका जन्म विक्रमी १६४१ [हि० ९९२ = ई० १५८४] में, राज्याभिषेक विक्रमी १६८७ [हि० १०४० = ई० १६३०] में और परलोकवास विक्रमी १७०० [हि० १०५३ = ई० १६४३] में हुआ. इसके दो पुत्र हुए- ३४ अनूपसिंह और दूसरा फ़त्हसिंह, जिसकी औलादके क़ब्ज़ेमें सुहावलका ठिकाना है. अनूपसिंहका जन्म विक्रमी १६६० [हि० १०१२ = ई० १६०३] में, राज्यगद्दी विक्रमी १७०० [हि० १०५३ = ई० १६४३] में, और मृत्यु विक्रमी १७१७ [हि० १०७० = ई० १६६०] में हुआ. इनके ३५ भावसिंह, दूसरा वसुमतसिंह, जिसके वंशमें गुढ़ाके जागिरदार हैं; तीसरा जुझारसिंह, इसकी औलादमें रामनगरके हिस्सेदार हैं.

भावसिंहका जन्म विक्रमी १६८१ [हि० १०३३ = ई० १६२४] में, और राज्याभिषेक विक्रमी १७१७ [हि० १०७० = ई० १६६०] में, और मृत्यु विक्रमी १७६१ [हि० १११६ = ई० १७०४] में हुआ. इनको महाराणा राजसिंहकी बेटी अजबकुंवर बाई व्याही गई थी, जो उनके मरनेपर सती हुई.

---

(१) वीरभद्रदेवने एक ब्राह्मण (रघुपत दुब्बे) की एक लकड़ी उससे विना मांगे मंगवाकर किसी मकानमें लगवादी थी, इस बातपर ब्राह्मणने खुद कुशी करली; और मरनेके बाद ब्रह्मराक्षस (भूत) होकर अपने एक मित्र दुलई नाम ब्राह्मणकी मददसे, जो ओरछेके राजापर खुद कुशी करके ब्रह्मराक्षस (भूत) होचुका था, राजाको बहुत तंग किया; राजाने उसके दुःखसे बांधूगढ़ छोड़कर परोंधा में रहना तज्वीज़ किया, परन्तु वहां भी उन भूतोंने पीछा न छोड़ा, यहां तक कि राजाको उसी ग्राममें जानसे मारडाला.

भावसिंहके कोई पुत्र नहीं था, इस लिये गिरासियोंमेंसे गढ़ीके जागीरदार वसुमतसिंह के छोटे बेटे ३६ अनिरुद्धसिंहको गोद लिया; जिसका जन्म विक्रमी १७१८ [हि० १०७२ = ई० १६६१] में, राज्याभिषेक विक्रमी १७६१ [हि० १११६ = ई० १७०४] में; और देहान्त विक्रमी १७६६ [हि० ११२१ = ई० १७०९] में (१) हुआ. इसी संवत्में इनके एक पुत्र ३७ अवधूतसिंह पैदा हुआ, जो छः महीनेकी उम्रमें गादीपर बिठायागया. इसके लड़कपनके सबब पन्नालाके राजा हरदेईशाह बुंदेलाने मौका पाकर रीवांपर चढ़ाई की, बघेलोंने उसका अच्छा मुक़ाबला किया, लेकिन् आख़िरमें वे हार गये, और उनके सर्दार काम आये; जिससे अवधूतसिंहको लेकर उनकी मा अपने पीहर प्रतापगढ़ चली आई; वहांसे वकील भेजकर बादशाह मुहम्मद मुअ़ज़्ज़म बहादुर शाहसे हक़ीक़त अ़र्ज़ कराई. बादशाहने अ़र्ज़के मुवाफ़िक़ फ़ौज रवाना की, जिसके डरसे बुंदेले लोग रीवां छोड़कर चलेगये, और महाराणी व अवधूतसिंहका दुबारा क़ब्ज़ा होगया. इनका देहान्त विक्रमी १८१५ [हि० ११७२ = ई० १७५८] में हुआ.

इनके पुत्र ३८ अजीतसिंह विक्रमी १७८८ [हि० ११४४ = ई० १७३१] में जन्मे; विक्रमी १८१५ [हि० ११७२ = ई० १७५८] में राज्यगद्दी पाई; और विक्रमी १८६५ [हि० १२२३ = ई० १८०८] में देहान्त हुआ. इनके वक्तमें शाहज़ादह आ़ली गौहर (शाहआ़लम सानी) बनारससे रीवां आया; महाराजाने मगवान मक़ामतक पेश्वाई की, फिर शाहआ़लम अपनी गर्भवती बेगम लालबाईको छोड़कर आप बक्सरको चलागया, और महाराजा अजीतसिंहने बेगमको बड़े मान सन्मानके साथ मुकुन्दपुरके क़िलेमें रक्खा, जहांपर विक्रमी १८१७ वैशाख शुक्ल ९ [हि० ११७३ ता० ७ रमज़ान = ई० १७६० ता० २६ एप्रिल] को शाहज़ादह मुहम्मद अक्बर सानी पैदा हुआ. जब शाहआ़लम बक्सरसे लौटकर प्रयागराज (इलाहाबाद) पहुंचा, तब वहां महाराजा अजीतसिंह बेगम व शाहज़ादहको लेकर हाज़िर हुए, जिसपर शाहआ़लमने खुश होकर महाराजाको इलाक़ह चौखंडी बारह पर्गनों समेत जागीरमें लिख दिया; परन्तु उनमें महाराजाका क़ब्ज़ा न होने पाया. जब प्रयागतक अंग्रेज़ोंका राज्य जमगया, तब इन्होंने चौखंड़ीका दावा पेश किया, जो मंज़ूर नहीं हुआ.

---

(१) यह रघुनाथसिंह सेंगर ज़मींदारकी बन्दूक़से मरे थे, उसके बाद यह आप राणीके पास चले आये, राणीने सब कुसूर मुआ़फ़ करके मगवानकी ज़मींदारीके दो हिस्से ज़ब्त करलिये, और एक हिस्सा उनके क़ब्ज़ेमें रहने दिया.

विक्रमी १८५२ मार्गशीर्ष कृष्ण ९ [हि० १२१० ता० २३ जमादियुल्-अव्वल = ई० १७९५ ता० ६ डिसेम्बर] को बाजीराव पेशवाकी मुसल्मानी ख़वासके बेटे शम्शेर बहादुरके बेटे अ़लीबहादुरकी फ़ौजसे बड़ी भारी लड़ाई हुई, जिसमें सैकड़ों बघेले सर्दार व अ़ली बहादुरकी फ़ौजका फ़ौजी अफ़्सर नानक मारागया, और आख़िरमें बघेले जीतगये. तीसरी बार विक्रमी १८५९ [हि० १२१७ = ई० १८०२] में मांडाके राजासे लड़ाई करनी पड़ी. इन लड़ाइयोंमें बघेले और कर्चलोंने बड़ी दिलेरी दिखाई थी. महाराजा अजीतसिंह बड़े अय्याश थे, जिससे मुल्क बिल्कुल अब्तर हालतको पहुंचा.

इनके पुत्र ३९ जयसिंहदेव हुए, जिनका जन्म विक्रमी १८२१ [हि० ११७८ = ई० १७६४] में, राज्याभिषेक विक्रमी १८६५ [हि० १२२३ = ई० १८०८] में, और देहान्त विक्रमी १८९१ [हि० १२५० = ई० १८३४] में हुआ.

इनके राज्यमें विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में पहिला अह्दनामह ११ शर्तोंका अंग्रेज़ी सर्कारसे मारिफ़त मिस्टर जॉन रिचर्डसन् साहिबके क़रार पाया, और दूसरा मिस्टर जॉन वाचोप साहिबके ज़रीएसे विक्रमी १८७० [हि० १२२८ = ई० १८१३] में दस शर्तोंका हुआ. तीसरा विक्रमी १८७१ [हि० १२२९ = ई० १८१४] में इसी साहिबकी मारिफ़त लिखागया.

विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में विश्वनाथसिंहको राज्यका कुल इख़्तियार मिला. इन्होंने भौंदूलालको अपना दीवान बनाया, इस ईमान्दार दीवानने रियासतको सरसब्ज़ किया.

विक्रमी १८७३ [हि० १२३१ = ई० १८१६] में रामनगरपर क़ब्ज़ा करके दलगंजनसिंहको गुज़रके लिये कई गावों समेत अटेवा देदिया.

विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = ई० १८१७] में जयसिंहदेवके दूसरे कुंवर बलभद्रसिंहको अमरपाटनका इलाक़ह गढ़ी समेत मिला.

विक्रमी १८७८ [हि० १२३६ = ई० १८२१] में ख़रीता गवर्मेण्ट ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी तरफ़से इस शर्तका मिला, कि रीवांके इलाक़हके सर्दारोंकी नालिश अपने तौरपर न सुनी जावेगी.

विक्रमी १८८० कार्तिक कृष्ण ४ [हि० १२३९ ता० १८ सफ़र = ई० १८२३ ता० २३ सेप्टेम्बर] बृहस्पतिवारके दिन कुंवर विश्वनाथसिंहके पुत्र रघुराजसिंहका जन्म हुआ. इस खुशीमें महाराज जयसिंहदेवने बहुतसा सामान और धन इनआम इक्राममें लुटाया. इसी वक्तमें विश्वनाथसिंहकी छोटी बहिन

सुभद्रकुमारीका विवाह महाराणा भीमसिंहके कुंवर जवानसिंहके साथ हुआ.

विक्रमी १८८४ [हि० १२४३ = ई० १८२७] में एक धर्मसभा क़ायम हुई, जिसका नाम "मिताक्षरा कचहरी" रक्खागया; इस कचहरीका पहिला हाकिम पांडे रामनाथ हुआ, थोड़े दिन बाद जगन्नाथ शास्त्री मुक़र्रर कियागया, जिसने बहुत अच्छा प्रबन्ध किया, यहांतक कि किसीके नालिश करनेपर खुद बाबू विश्वनाथसिंहको मुद्दआ़अ़लैहकी तरह सभामें बुलाकर इज्हार लिया था.

इसी वर्षमें भौंदूलालका देहान्त हुआ, और उसके बाद उसका बेटा अजोध्याप्रसाद प्रधान बनाया गया, परन्तु दो वर्षके बाद यह भी मरगया; तब दीवानीका काम भौंदूलालके छोटे भाई शिवलालको सौंपागया.

पहिले महाराजा अजीतसिंहने अपनी ख़वासके बेटे भवानीसिंहको १५० ग्राम जागीरमें देदिये थे. बाबू विश्वनाथसिंहने ७५ गांव ज़ब्त करके ७५ उनके तहतमें रखने बाद चौथ लेना शुरू किया. विक्रमी १८८८ [हि० १२४७ = ई० १८३१] में ऊमरीके इलाक़ह के १० ग्राम छोड़कर सालाना मालगुज़ारी के बदलेमें सब ज़ब्त करलिये. विक्रमी १८८९ [हि० १२४८ = ई० १८३२] में ईस्ट इन्डिया कम्पनीकी तरफ़से बर्दह फ़रोशी (दास विक्रय) की मनाईका ख़रीता आया; और विक्रमी १८९० [हि० १२४९ = ई० १८३३] में विश्वनाथ-सिंहके छोटे भाई लक्ष्मणसिंहकी बेटी ऐश्वर्यकुंवरका विवाह उदयपुरके महाराणा जवानसिंहके साथ हुआ, जो महाराणाके साथ सती हुई.

इसी वर्षमें प्रधान शिवलालके मरनेपर उसका बेटा पांडे रामनाथ दीवान कियागया. इन्हीं दिनोंमें अंगदराय नामी एक आदमी महाराजा जयसिंहदेवका कर्तबी फ़र्ज़न्द बनकर बांधूगढ़में क़ब्ज़ा करबैठा. तब महाराजा और बाबू विश्वनाथसिंहने उसे गिरिफ़्तार करके देशसे निकाल दिया, और दूसरे क़िलेदारोंको भी सज़ा दी. विक्रमी १८९१ आश्विन शुक्ल १४ [हि० १२५० ता० १३ जमादियुस्सानी = ई० १८३४ ता० १८ ऑक्टोबर] को प्रयागराजमें (१) महाराजा जयसिंहदेवका देहान्त हुआ. इनका पहिला विवाह मांडाके राजा उद्योत्सिंह गहरवारकी बेटी शंभूकुंवरीके साथ हुआ था, जिसके पेटसे विश्वनाथसिंह, लक्ष्मणसिंह, बलभद्रसिंह, तीन पुत्र और सुभद्रकुंवरी बेटी (जिसका हाल ऊपर लिखआये हैं) पैदा हुई.

---

(१) धर्मके क़ाइदहसे महाराजा जयसिंहको हुक्मके मुवाफ़िक़ मरनेके वक़्त प्रयागराज लेगये थे.

४० विश्वनाथसिंहका जन्म विक्रमी १८४६ [हि० १२०३ = ई० १७८९] में, राज्याभिषेक विक्रमी १८९१ फाल्गुन् शुक्ल २ [हि० १२५० ता० १ ज़िल्क़ाद = ई० १८३५ ता० १ मार्च] को, और देहान्त विक्रमी १९११ [हि० १२७० = ई० १८५४] में हुआ. विक्रमी १८९२ [हि० १२५१ = ई० १८३५] में प्रधान रामनाथ मरगया, और उसके छोटे भाई वंशीधर पांडेको दीवान किया. लॉर्ड बेन्टिंकने महाराजा साहिबकी दर्स्वास्तके मूजिब पंडित नवकृष्ण भट्टाचार्य को युवराज बाबू रघुराजसिंहके पढ़ानेके लिये भेजा, जिससे बाबू साहिब अंग्रेज़ी पढ़े. इन्हीं दिनोंमें वंशीधर प्रधानसे बाबू रघुराजसिंहको मत्लबी लोगोंने नाराज़ करवाया, और महाराजा साहिबसे भी युवराजको लड़ाकर बखेड़ा उठाना चाहा, जिसका हाल इस तरहपर है-

भगवन्तराय कर्चले रायपुर वालेका एक रुक़ा ७०००० का रियासती भंडारमें था; जिसके लेनेकी भगवन्तरायने बहुतसी तद्बीरें कीं, परन्तु महाराजाने नहीं दिया; तब कर्चले सर्दारने बाबू रघुराजसिंहको बहकाकर महाराजासे सिफ़ारिश करवाई. महाराजा इस बातको टालकर विन्ध्याचल पहाड़की तरफ़ चलेगये, पीछेसे बाबू साहिबको बहकाकर दीवान वंशीधरसे नाराज़गीके साथ वह रुक़ा भगवन्तरायको दिलवादिया. तब दीवानने भगवन्तरायसे कहा कि अपनी जागीरको चला जा; परन्तु वह तो बाबू रघुराजसिंहको अपने क़ाबूमें लाकर कुछ और ही घात सोचता था, इस लिये न गया. यह सब हाल वंशीधरने महाराजाको लिखा; महाराजाने भगवन्त-रायको वंशीधरके मन्शाके मुवाफ़िक़ अपनी जागीरमें चले जानेको लिखा, तब उसने बाबू साहिबको ज़ियादह बहकाया. उधर महाराजाने विन्ध्याचल से आकर गोंडामें मक़ाम किया, वहांपर बाबू साहिब मिलने गये, जिनको साथ लेकर जगन्नाथकी यात्राको रवाना हुए. बरखोड़ीके मक़ामसे बाबू साहिब शिकारका बहाना करके रीवां चले आये, और ख़ज़ानह दबाकर वंशीधरको क़ैद करनेका इरादह किया. मत्लबी लोगोंकी बहकावटसे हिमायत करनेकी हालतमें महाराजासे भी मुक़ाबला करना चाहा, परन्तु प्रधान होश्यार था, उसने अपने घर व ख़ज़ानहका बन्दोबस्त करके महाराजाको ख़बर दी. इसके सुन्ते ही महाराजा रीवां चले आये, और महन्त गोविन्ददासको ख़बर देकर बाबू साहिबको मन्दिरमें बुलवाया, और आप भी वहां चले गये; फिर रघुराज-सिंहको अपने पास हाथीपर बिठाकर महलोंमें ले आये, और ख़ुदमत्लबी लोगों के गिरोहको बखेर दिया.

४१ महाराजा रघुराजसिंहका विवाह विक्रमी १९०८ वैशाख कृष्ण १२ [हि० १२६७ ता० २६ जमादियुस्सानी = ई० १८५१ ता० २८ एप्रिल] को महाराणा सर्दार-सिंहकी कन्या सौभाग्यकुंवर बाईके साथ हुआ था. इनका जन्म विक्रमी १८८० कार्तिक कृष्ण ४ [हि० १२३९ ता० १८ सफ़र = ई० १८२३ ता० २४ सेप्टेम्बर] को, राज्या-भिषेक विक्रमी १९११ [हि० १२७० = ई० १८५४] में और देहान्त विक्रमी १९३६ माघ कृष्ण ९ [हि० १२९७ ता० २३ सफ़र = ई० १८८० ता० ५ फ़ेब्रुअरी] को होनेपर इनके पुत्र ४२ वंकटरमन प्रसादसिंह गद्दीपर बिठाये गये, जो अब विद्यमान हैं, जिनका जन्म विक्रमी १९३३ श्रावण कृष्ण ३ [हि० १२९३ ता० १७ जमादि-युस्सानी = ई० १८७६ ता० ११ जुलाई] को हुआ.

हालमें कई मेम्बरोंकी एक कौन्सिल पोलिटिकल एजेएटकी सलाहसे सब काम अंजाम देती है. जवान होनेपर इनको रियासतके पूरे इख्तियार मिलेंगे.

इस राज्यका क्षेत्रफल १३००० मीलमुरब्बा, आबादी २०३५००० मनुष्य, और आमदनी २५००००० रु० सालाना है. फ़ौजमें कुल ९०० सवार, १२६०० पैदल, ५६ तोप और १०० गोलन्दाज़ हैं. अंग्रेज़ी इलाक़हमें इस रियासतके राजा को १७ तोपकी सलामी मिलती है.

अह्दनामह राज्य रीवां.

नम्बर १२३.

अह्दनामह जो सर्कार अंग्रेज़ी और रीवां व मुकुन्दपुरके
राजा जयसिंहदेवके दर्मियान हुआ.

पहिली शर्त- गवर्नर जेनरल कौन्सिलमें राजा जयसिंहदेवको क़ाबिज़ हक्दार हाल मुल्क रीवांका, जो उनके पास है और उनके बुज़ुर्गोंके क़ब्ज़ेमें मुद्दतसे और पुश्तहा पुश्तसे चलाआता है, मंजूर करते हैं, और हस्ब दर्ख्वास्त राजाके और राजाकी तसल्लीके लिये भी इन्साफ़के तरीक़े और सर्कार अंग्रेज़ीकी नेकनियतीसे इत्मीनान करते हैं, कि जबतक राजा और उनके वारिस व जानशीन ख़िद्मत व वफ़ादारीके तरीक़ेको हस्ब मन्शा अह्दनामहके अदा करेंगे, सर्कार अंग्रेज़ी हर्गिज़ कोई काम बर्ख़िलाफ़ी या दुश्मनीका राजाके मुक़ाबलेपर नहीं करेगी, और न उनके किसी मुल्की हिस्सहपर क़ब्ज़ा या किसी तौरसे दस्तअन्दाज़ी करेगी;

बल्कि बरअक्स उसके सर्कार अंग्रेज़ी वादा करती है कि वह हिफ़ाज़त उनके मुल्ककी, जो अब उनके क़ब्ज़ेमें है, ब मुक़ाबले ज़बर्दस्ती व ज़ियादती किसी रईस ग़ैरके, उसी तरह करेगी, जिस तरह इलाक़ह ऑनरेबल् कम्पनीकी हिफ़ाज़त होती है.

दूसरी शर्त- सर्कार अंग्रेज़ीने जो ऊपर लिखी शर्तके मुवाफ़िक़ वादा किया है, कि वह हिफ़ाज़त मुल्ककी, जो अब राजा रीवांके क़ब्ज़ेमें है, ब मुक़ाबले ज़ियादती किसी रईस ग़ैरके करेगी, इसवास्ते यह इक़ार अलग अलग दोनों तरफ़से होता है- कि जब कभी राजा रीवांको अन्देशह हम्लाआवरीका किसी ग़ैर रईसकी निस्बत होगा, तो वह कैफ़ियत उसकी सर्कार अंग्रेज़ीमें रवाना करेंगे, और सर्कार हुज्जत और कोशिश उसके दूर करनेमें करेगी; अगर यह कोशिश उनकी कारआमद न होगी, तो सर्कार अंग्रेज़ी हस्ब दर्ख़्वास्त राजाके अपनी फ़ौज भेजनेको वास्ते हिफ़ाज़त मुल्क रीवांके मुस्तइद होगी, इस हालतमें फ़ौजका ख़र्च उस रोज़से जिस रोज़ कि वह मुल्क रीवांमें दाख़िल होगी, और जिस रोज़तक वह वापस मुल्क मज़्कूरसे बाहर जायगी, राजाको अदा करना होगा, और अगर यह अन्देशह किसी दावे या झगड़े के सबबसे दोनों तरफ़ राजा और किसी ग़ैर रईसको होगा, तो राजा उसकी कैफ़ियत मुफ़स्सल सर्कार अंग्रेज़ीको ज़ाहिर करेंगे, और सर्कार अंग्रेज़ी दर्मियानमें आकर फ़ैसला उसका करदेगी, और राजा सर्कार अंग्रेज़ीके इन्साफ़ करने और सच्चा होनेके एतिबारसे इक़ार करते हैं कि ऐसे मौक़ेपर जो फ़ैसला सर्कार अंग्रेज़ी करदेगी, उसको वे मंज़ूर करेंगे, अगर फ़ैसलेको बावजूद राजाके मंज़ूर करनेके फ़रीक़ सानी दुश्मनीकी कार्रवाईसे बाज़ न रहेगा, तो सर्कार अंग्रेज़ी मदद देनेको ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ तय्यार होगी, और अगर किसी मौक़ेपर राजाकी फ़ौजकी ज़रूरत मुल्क अंग्रेज़ीमें होगी, तो राजा इक़ार करते हैं, कि वह फ़ौजसे मदद देंगे. और इस हालतमें फ़ौजका ख़र्च बीस रुपये फ़ी सवार और छः रुपये फ़ी पियादह सिपाहीके हिसाबसे, जो राजा देते हैं, सर्कार अंग्रेज़ी उस तारीख़से देगी, जिस तारीख़से फ़ौज मज़्कूर इलाक़ह अंग्रेज़ीमें दाख़िल होगी, और उस तारीख़तक देगी, जबतक वह वापस होकर इलाक़ह अंग्रेज़ीसे बाहर न जायगी, और जब फ़ौज राजाकी और फ़ौज अंग्रेज़ी इत्तिफ़ाक़के साथ किसी काममें मस्रूफ़ होगी तो राजाकी फ़ौजका हाकिम मुवाफ़िक़ सलाह और हिदायत फ़ौजी अफ़्सर अंग्रेज़ीके कार्रवाई करेगा.

तीसरी शर्त- जोकि राजा रीवांकी हुकूमत कुल उनके इलाक़हमें मन्ज़ूर होचुकी है, इसलिये सर्कार अंग्रेज़ी अपने तईं नालिशें सुन्नेका मुस्तार, जो उसके

रूबरू कोई रिश्तेदार, रिआया या मुलाज़िम राजाका पेश करे, ख़याल नहीं करेगी, और राजा सर्कारसे अपनी हुकूमत क़ाइम करनेको अपने इलाक़हके अन्दर फ़ौजी मदद पानेके हक्दार नहीं होंगे.

चौथी शर्त– अगर राजा रीवांका कोई दावा या नालिशकी वजह निस्बत किसी राजा या रईस, दोस्त या मातहत सर्कार अंग्रेज़ीके होगी, तो राजा इक़ार करते हैं, कि वह दावे मज़्कूरको सरपंची व फ़ैसलेके लिये सर्कारके सुपुर्द करेंगे, और जो फ़ैसला सर्कार करदेगी, उसको मन्ज़ूर करेंगे, और किसी तरहकी वह खुद ज़ियादती निस्बत फ़रीक़ मुक़ाबिलके न करेंगे, और न बज़रीए अपनी फ़ौजके बदला दावेका या एवज़ नालिशका, जो उनको दाइर करनी है, लेंगे; और सर्कारअंग्रेज़ी अपनी तरफ़से वादह करती है कि वह अपने दोस्त और मातहतको मना करेगी, कि वह राजा रीवांपर ज़ियादती न करे, और मुज्रिमको सज़ादेगी, और राजा रीवांपर किसीका कुछ दावा वाजबी होगा तो उसका फ़ैसला इन्साफ़की रू से सरपंच बनकर करेगी, और राजा वादह करते हैं कि वह उस फ़ैसलेको मन्ज़ूर करेंगे, जो सर्कार ऐसे मौक़ेपर करदेगी.

पांचवीं शर्त– राजा रीवां इक़ार करते हैं, कि वे अपने मुल्कमें सर्कार अंग्रेज़ीके किसी दुश्मनको या फ़साद उठाने वालेको पनाह न देंगे, बल्कि उसके बर्ख़िलाफ़ उन लोगोंको गिरिफ़्तार करनेके लिये पूरी कोशिश करेंगे, और अगर वे गिरिफ़्तार होजावेंगे, तो उनको सर्कार अंग्रेज़ीके अफ़्सरोंको सौंप देंगे; और राजा यह भी वादह करते हैं कि वे ऐसे लोगोंके बाल बच्चोंको भी अपने मुल्कमें न रहने देंगे, और अगर राजाका कोई दुश्मन, या राजाकी हुकूमतका सर्कश, अंग्रेज़ी इलाक़हमें पनाह लेगा, तो राजासे इत्तिला पानेपर सर्कार अंग्रेज़ी पूरी २ तहक़ीक़ात करनेके बाद उसकी निस्बत वे तरीक़े जारी रक्खेगी, जो इन्साफ़ और बेतरफ़दारीके मुताबिक़ होंगे, और यह भी तद्बीर अमलमें लावेगी कि वे आगेको कोई बुरा काम मुल्क और राजाकी हुकूमतकी निस्बत न करें.

छठी शर्त– जो कि लुटेरे लोग अक्सर राजा रीवांके मुल्कसे जाकर अंग्रेज़ी इलाक़ोंमें चोरी वग़ैरह करते हैं, इसलिये राजा इक़ार करते हैं कि अगर गवर्मेएट अंग्रेज़ीका कोई अफ़्सर उनके पास इत्तिलाई तहरीर भेजेगा, तो वे ऐसे मुज्रिमोंके गिरिफ़्तार करनेमें कोशिश करेंगे, और जब गिरिफ़्तार होंगे, तो उनको उक्त सर्कारी अफ़्सरके सुपुर्द करदेंगे.

सातवीं शर्त– अगर रीवांके राजाका कोई भाई या नौकर गवर्मेएट अंग्रेज़ीके साम्हने राजाकी बुराई करेगा, या उनपर तुह्मत या इल्ज़ाम लगावेगा, तो

गवर्मेण्ट बग़ैर तह्क़ीक़ात और सुबूतके ऐसे शख़्सके बयानका एतिबार न करेगी.

आठवीं शर्त- राजा रीवांकी इज़्ज़त और रुत्बे और शानका सर्कार अंग्रेज़ी वैसा ही लिहाज़ रक्खेगी, जैसा कि हिन्दुस्तानके बादशाह रखते थे.

नवीं शर्त- जब कभी सर्कार अंग्रेज़ी राजा रीवांके मुल्कमें फ़ौजके भेजनेकी ज़रूरत या उक्त राजाके इलाक़हके किसी मक़ाममें मुल्ककी हिफ़ाज़तके लिये अपनी फ़ौजकी छावनी, किसी दुश्मनके हम्ला करनेसे या किसी दुश्मनके रास्ता रोकनेकी नज़रसे या पिंडारोंकी या दूसरी लुटेरी क़ौमोंकी वापसीके वक्त, डालना मुनासिब समझे, तो वह ऐसी फ़ौजके भेजनेका इख़्तियार रखती है, और रीवांके राजा इस बारेमें रज़ामन्दी ज़ाहिर करेंगे, और ऐसे मौक़ेपर गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके अफ़्सरोंकी सलाहके मुवाफ़िक़ मक़ाम चन्दिया घाटा, कोरिया और दूसरे घाटोंके लिये, जो अंग्रेज़ी कमाण्डिंग अफ़्सर बतायेंगे, मुक़र्रर करेंगे, जो अंग्रेज़ी कमाण्डिंग अफ़्सर इस तरह राजाके मुल्कमें रहेगा, वह राजाकी हुकूमतके बन्दोबस्तमें किसी तरह दख़्ल न देगा. जो कुछ अस्बाब या रसद वग़ैरह अंग्रेज़ी छावनी या अंग्रेज़ी फ़ौजके वास्ते, जबतक कि वह राजाके मुल्कमें रहे दर्कार होगी, फ़ौरन् राजाके अह्लकार और रअ़य्यत मौजूद करदेंगे, और उनकी क़ीमत बाज़ारके भावके मुवाफ़िक़ अदा होगी; अगर कोई चीज़ बहुत ज़रूरी हो, और बाज़ारमें ख़रीदनेपर नहीं मिलती हो, तो ज़रूर होगा कि वह राजाके इलाक़हमें जहां मिले वहांसे लीजायगी, और उसकी क़ीमत मुवाफ़िक़ तज्वीज़ पंचोंके जो सर्कार अंग्रेज़ी और उक्त राजाकी तरफ़से मुक़र्रर होंगे, दीजायगी.

दसवीं शर्त- रीवांके राजा, अब सर्कार अंग्रेज़ीके दोस्तोंमें गिनेगये हैं, इस लिये इक़ार करते हैं, कि जो सलाह और काम मुल्कके फ़ायदों और बिहतरीके मुतअ़ल्लिक़ सर्कार अंग्रेज़ी कहेगी, उसकी तामील करेंगे, और जहांतक होसकेगा, सर्कार अंग्रेज़ीकी दोस्ती और एकताके तरीक़ोंके पूरा करनेमें कोशिश करेंगे.

ग्यारहवीं शर्त- यह अह्दनामह, जिसमें ग्यारह शर्तें दर्ज हैं, आजकी तारीख़ सर्कार अंग्रेज़ी और रीवांके राजा जयसिंहदेवके दर्मियान एक तरफ़ मिस्टर जॉन रिचर्डसन् साहिबकी मारिफ़त राइट ऑनरेबल् लार्ड मिन्टो गवर्नर जेनरलके दियेहुए इख़्तियारोंसे, और दूसरी तरफ़ उक्त राजाके वकील बख़्शी भगवानदत्तकी मारिफ़त क़रार पाया; और मिस्टर रिचर्डसन् साहिबने एक नक़्ल इस अह्दनामहकी अंग्रेज़ी, फ़ार्सी, और हिन्दीमें अपनी मुहर और दस्तख़त करके वकील मज़्कूरको दी, और उक्त वकीलने मिस्टर रिचर्डसन् साहिबको

एक नक्ल राजाकी तस्दीक़ कीहुई दी. मिस्टर रिचर्डसन् साहिबने वादा किया, कि ३० तीस रोज़के अर्सेमें एक नक्ल कम्पनीकी मुहर और गवर्नर जेनरल इन कौन्सिलके दस्तख़त कीहुई मंगादेंगे, उस वक्त यह नक्ल, जो रिचर्डसन् साहिबने अपनी दस्तख़ती दी है, वापस होगी, और अह्दनामह उस वक्तसे जाइज़ (दुरुस्त) और पूरा समझा जावेगा.

यह अह्दनामह दस्तख़त और मुहर होकर मक़ाम बांदामें तारीख़ ५ माह ऑक्टोबर सन् १८१२ ई० को आपसमें तक़्सीम हुआ.

नम्बर १२४.

अह्दनामह, जो दर्मियान सर्कार अंग्रेज़ी और राजा जयसिंहदेवके क़रार पाया.

जोकि तारीख़ ५ माह ऑक्टोबर सन् १८१२ ई० मुताबिक़ आश्विन कृष्ण ऽऽ संवत् १८६९ को एक अह्दनामह आपसकी दोस्ती और एकताका दर्मियान सर्कार अंग्रेज़ी और राजा रीवांके क़रार पाया था, और चूंकि राजा रीवांने उन शर्तोंके पूरा करनेमें, जो अह्दनामह मज़्कूरके रूसे उनके ऊपर फ़र्ज़ थीं, कमी की, इसलिये सर्कार अंग्रेज़ीको लाज़िम आया कि अपने हक़ और इज़्ज़तका बदला ले; इसवास्ते रीवांमें फ़ौज भेजीगई, कि उन शर्तोंकी तामील उनसे करावे; और आगेके वास्ते तामील करनेका इत्मीनान करे. और चूंकि अब राजा होशमें आया, तो समझा कि उसको सर्कार अंग्रेज़ीके निस्बत क्या करना था, गुज़श्तहकी मुआफ़ी मांगी, उसने नीचे लिखीहुई शर्तोंको अपनी तरफ़से और अपने वारिसों और जानशीनकी तरफ़ से मन्ज़ूर कियाः-

पहिली शर्त- तमाम शर्तें उस अह्दनामहकी जो ५ माह ऑक्टोबर सन् १८१२ ई० मुताबिक़ आश्विन कृष्ण ऽऽ संवत् १८६९ को क़रार पाया था, इस तहरीर के ज़रीएसे जाइज़ (दुरुस्त) और तामीलके लायक़ समझी जावेंगी, जिस क़द्र इस अह्दनामहकी शर्तोंके रूसे तब्दील न हुई होंगी, या घटी बढ़ी न होंगी.

दूसरी शर्त- राजा रीवां अह्द करते हैं, कि वह मुल्की मुआमलातमें किसी ग़ैर राजा या रईससे गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी या उनके साहिब एजेण्टकी इत्तिला और रज़ा-मन्दीके बग़ैर, जो बुंदेलखण्डमें मुक़ीम हो, ख़त किताबत नहीं करेंगे.

तीसरी शर्त- राजा वादा करते हैं, कि अपने रहनेके मक़ाममें एक अख़्बार-नवीस या एजेण्टको गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी या बुंदेलखण्डके साहिब एजेण्टकी तरफ़से रहनेदेंगे, और एक अपना वकील या मुख़्तार साहिब एजेण्ट या अंग्रेज़ी फ़ौजके कमानूडिंग अफ़्सरके साथ, जो उनके मुल्कमें रहेगा, दोस्तीकी रस्में क़ायम रखने, रसद पहुंचाने और कमान्डिंग अफ़्सर मज़्कूरके वाजबी हुक्मोंकी तामील करनेके वास्ते रक्खेंगे.

चौथी शर्त- राजा रीवां इक़ार करते हैं कि वह अपने मुल्कमें सर्कारी डाक, जहां गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके अफ्सर ज़रूरी और मुनासिब समझेंगे, क़ायम करवादेंगे, और अपने मातहत रईसोंको भी ऐसा ही करने की इजाज़त देंगे; अगर कोई ऐसा न करेगा, तो उसको सज़ा देंगे, और मातहत रईसोंके ऐसे इन्कारकी बाबत राजा मंजूर करते हैं कि गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी उनको राजाका क़ाबू न होनेकी सूरतमें हक़ सज़ा देनेका रक्खेगी.

पांचवीं शर्त- चौरहटके जागीरदार लालज़बर्दस्तसिंहने बहुत बुरी तरह और गुस्ताख़ीसे इन्कार किया, कि ऑनरेबल् कम्पनीकी डाक उसकी जागीरमें क़ायम न हो, इस सबबसे उसकी निस्बत सख़्त सज़ा ज़रूर हुई; इसलिये गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीका इरादह है कि उसको सख़्त सज़ा दे. और राजा रीवांने उसका सिर्फ़ सज़ा देनेका हक़ ही मन्ज़ूर नहीं किया, बल्कि इक़ार किया, कि वह जागीरदार मज़्कूरके सज़ा देनेमें उस (सर्कार अंग्रेज़ी) को मदद देंगे, और शामिल रहेंगे.

राजा यह भी वादा करते हैं, कि अगर गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी सलाह होगी, तो वह ख़ुद लालज़बर्दस्तसिंहके सज़ादेनेकी तज्वीज़में कोशिश करेंगे.

छठी शर्त- अक्सर वार्दात चोरी और दूसरे जुर्मोंकी अंग्रेज़ी इलाक़ोंमें हुई हैं, और मुज्रिमोंने मुल्क रीवांसे निकलकर यह जुर्म किये हैं, और उन्होंने मुल्क रीवांमें पनाह ली है, जिसके सबब वे सिर्फ़ सज़ासे ही नहीं बचे रहते, बल्कि हमेशह ऑनरेबल् कम्पनीके पासवाले मुल्कमें लूट मार करते हैं, और सज़ासे बचेरहते हैं, और बाशिन्दोंको हमेशह डराये रखते हैं; इसका बन्दोबस्त होनेकी नज़रसे राजा वादा करते हैं कि वह सर्कार अंग्रेज़ीकी फ़ौज और उसकी पुलिसके अफ्सरोंको इजाज़त देंगे कि वे मुल्क रीवांमें होकर तलाश करके उनको गिरिफ़्तार करें, और ख़ुद भी इस काममें मदद देंगे, और अपने अहल्कारों और जागीरदारोंको हुक्म देंगे, कि मदद करके ऐसे मुज्रिमोंका, जिनकी तलाशमें वे आये हों, पता लगाकर उनको गिरिफ़्तार करादें.

सातवीं शर्त- राजा रीवां वादा करते हैं, कि वे उन जागीरदारों वगैरहको, और दूसरे लोगोंको जो उनके मुल्कमें रहते हैं, और जो ऐसे मौक़ेपर सर्कार अंग्रेज़ीके ख़ैरख़्वाह रहे हैं, अपना दोस्त समझेंगे, और उनसे इस ख़ैरख़्वाहीकी बाबत बाज़पुर्स न करेंगे; और सर्कार अंग्रेज़ीके दोस्त, उनके भी दोस्त, और सर्कारके दुश्मन, उनके भी दुश्मन समझे जावेंगे.

आठवीं शर्त- तारीख़ २ माह मई सन् १८१३ ई० मुताबिक़ वैशाख शुक्ल २ संवत् १८७० को एक अह्दनामह राजा रीवांकी तरफ़से लाला प्रतापसिंह और फ़ौज अंग्रेज़ीके कमान्डिंग कर्नेल् मार्टिन्डल् साहिबके दर्मियान इस मज़्मूनका क़रार पाया था, कि आइन्दहको कोई हरकत मुख़ालफ़तकी दोनों तरफ़से न होगी; परन्तु सिपाहियोंके एक गिरोहपर, जो लड़ाईके सामानके छकड़ेके साथ, सिंगरौनाके रास्ते होकर जानेवाली फ़ौजके मुतअल्लिक़ था, तारीख़ ७ मई सन् १८१३ ई० मुताबिक़ वैशाख शुक्ल ७ संवत् १८७० को अह्दनामहके ख़िलाफ़ और फ़रेबके साथ सवारों और पैदलोंके एक बड़े गिरोहने गांव सतनीके पास हम्ला किया, और अक्सर सिपाहियोंको क़त्ल और ज़ख़्मी करके सामान लूट लिया. राजा रीवां इस बातसे बहुत इन्कार करते हैं, और क़सम खाकर अपनी ना वाक़िफ़ियत ज़ाहिर करते हैं, और अपनी शामिलात और वाक़िफ़ीसे पूरा इन्कार करके वादा करते और मन्ज़ूर करते हैं, कि सर्कार अंग्रेज़ीको इख़्तियार है, कि इस जुर्मके करनेवालोंको, जिस तरह चाहे, और जब मन्ज़ूर हो, सख़्त सज़ा देवे; और राजा यह भी वादा करते हैं, कि वह इस कामकी सज़ा देनेमें, जिस तरह और जिस तौरपर, सर्कार अंग्रेज़ीको मन्ज़ूर होगा, हर तरहकी मदद देंगे, और शरीक रहेंगे.

नवीं शर्त- यह अम्र मुनासिब और दुरुस्त मालूम होता है, कि राजा रीवां सर्कार अंग्रेज़ीको उस फ़ौजके ख़र्चकी बाबत, जो रीवांमें राजाके अह्दनामह के ख़िलाफ़ कार्रवाई करनेके सबब तय्यार होकर आई थी, बदला और एवज़ देवें, और कमसे कम तख़मीनहसे इस ख़र्चका ३३८०८ रुपया माहवारी होता है, और सामान इस मुहिमका पहिली एप्रिल सन् १८१३ ई० मुताबिक़ चैत्र कृष्ण ऽऽ संवत् १८७० से शुरू हुआ था, सो उस तारीख़से हिसाब होना चाहिये. इसलिये राजा रीवां अपनेको इस माहवारी ख़र्चके अदा करनेका ज़िम्महवार, जो पहिली एप्रिल सन् १८१३ ई० मुताबिक़ चैत्र कृष्ण ऽऽ संवत् १८७० से मुहिमके ख़त्म होने तक हुआ, मन्ज़ूर करते हैं. इस नज़रसे कि राजाने बदला

देनेके हुक्मोंकी ताबेदारी करके खुद कर्नेल् मार्टिन्डल् साहिबके मक़ाममें आकर सर्कारी फ़र्मांबर्दारी क़ुबूल की, और इस लिहाज़से कि राजाको मुक़र्रर वक्तपर कोई उज्र रुपया मज़्कूर अदा करनेमें न हो, सर्कार अंग्रेज़ी रज़ामन्दी ज़ाहिर करती है, कि जिस रोज़से उक्त राजा कर्नेल् साहिबके मक़ाममें आये, याने तारीख़ १० माह मई सन् १८१३ ई० मुताबिक़ वैशाख शुक्ल १० संवत् १८७० तक, हिसाब ख़त्म हुआ; इस हिसाबसे राजाको ४५१७३ रुपये देने चाहियें. और राजा मन्ज़ूर करके वादा करते हैं कि ये रुपये नीचे लिखी हुई क़िस्तोंके मुवाफ़िक़ जमा करावेंगे, और अगर इसमें फ़र्क़ होगा, तो उनपर वादा पूरा न करनेका इल्ज़ाम लगेगा-

तारीख़ ८ जून सन् १८१३ ई० मुताबिक़ ज्येष्ठ शुक्ल १०
वि० १८७० को .... ५००० रुपया.

[illegible]रीख़ १० ऑगस्ट सन् १८१३ ई० मुताबिक़ श्रावण कृष्ण ऽऽ
वि० १८७० को .... १३४०० रुपया.

तारीख़ ६ डिसेम्बर सन् १८१३ ई० मुताबिक़ मार्गशीर्ष कृष्ण ऽऽ
वि० १८७० को .... १३४०० रुपया.

तारीख़ २३ जून सन् १८१४ ई० मुताबिक़ ज्येष्ठ कृष्ण ३
वि० १८७१ को .... १३३७३ रुपया.

मीज़ान- ४५१७३ रुपया.

दसवीं शर्त- यह अह्दनामह, जिसमें दस शर्तें दर्ज हैं, आजकी तारीख़को सर्कार अंग्रेज़ी और रीवांके राजा जयसिंहदेवके दर्मियान, एक तरफ़ मारिफ़त मिस्टर जॉन वाचोप साहिबके, राइट ऑनरेबल् लॉर्ड मिन्टो, गवर्नर जेनरल इन् कौन्सिलके दियेहुए इख्तियारोंसे, और दूसरी तरफ़ खुद राजाके क़रार पाकर मिस्टर वाचोप साहिबने राजाको एक नक्ल इस अह्दनामहकी अंग्रेज़ी, फ़ार्सी और हिन्दीमें अपने मुहर और दस्तख़त करके दी, और राजाने मिस्टर वाचोप साहिब को एक नक्ल अपने मुहर और दस्तख़त कीहुई दी; और वाचोप साहिबने वादा किया, कि वह राजाके मोतबर वकीलको तीस दिनके अर्सेमें एक नक्ल गवर्नर जेनरल बहादुरके मुहर और दस्तख़त कीहुई मंगादेंगे, और जब वह नक्ल उनको दीजायगी, तो अह्दनामहकी वह नक्ल, जो साहिबने उनको अपने मुहर और दस्तख़तकी दी है, वापस कीजायगी, और उस वक्तसे अह्दनामह दुरुस्त और तामीलके क़ाबिल समझा जावेगा.

दस्तख़त और मुहर होकर उसकी नक्लें टोंस नदीके किनारेपर मक़ाम बदीरामें २ जून सन् १८१३ ई० मुताबिक़ ज्येष्ठ शुक्ल ४ संवत् १८७० को आपसमें तक़्सीम हुई.

उस अ़हृदनामहकी शर्तोंका ततिम्मह (बाक़ी हिस्सह) जो दूसरी जून १८१३ ई० मुताबिक़ ज्येष्ठ शुक्ल ४ संवत् १८७० को दर्मियान ऑनरेबल् ईस्ट इन्डिया कम्पनी और रीवांके राजा जयसिंहदेवके हुआ था.

जो कि तारीख़ २ जून सन् १८१३ ई० मुताबिक़ ज्येष्ठ शुक्ल ४ संवत् १८७० को ऑनरेबल् कम्पनी और राजा रीवांके दर्मियान क़रार पायेहुए अ़हृदनामहकी तीसरी शर्तके रूसे राजा रीवांने वादा किया है, कि वह एक अख़्बार नवीसको सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से या बुन्देलखण्डके एजेन्टकी तरफ़से अपने दर्बारमें रहनेकी इजाज़त देंगे, और जो कि राजाने उक्त अ़हृदनामहकी चौथी शर्तके मुताबिक़ यह वादा किया है, कि वह अपने इलाक़हमें सर्कारी डाक, जिस तरफ़ और जहां, अंग्रेज़ी अफ़्सरोंकी मर्ज़ी होगी, क़ायम करेंगे; इस वास्ते राजा उक्त शर्तोंके मन्शाके मुताबिक़ वादा करते हैं, कि वह सर्कार अंग्रेज़ी या बुन्देलखण्डके साहिब एजेन्टके अख़्बारनवीस या वकीलकी हर तरहसे इज़्ज़त और ताज़ीम अपनी शानके मुवाफ़िक़ करेंगे; और अपने इलाक़हमें हर्कारों और क़ासिदों वग़ैरहको, जिस वक़्त और जिस मौक़ेपर, अंग्रेज़ी अफ़्सर उनको रवाना करना मुनासिब और ज़रूरी समझेंगे, बग़ैर रोक टोकके इलाक़हमेंसे गुज़रने देंगे; और अपने मातहत रईसोंको भी इसी तरहकी कार्रवाई का हुक्म देंगे, और उनको हिदायत करदेंगे कि अगर कोई ऐसा न करेगा, तो वह उस सज़ाके लायक़ होगा, जो कि डाकके हुक्मोंकी हुक्म उदूलीके बाबत मुक़र्रर कीगई है. और राजा यह भी वादा करते हैं कि वह हर वक़्त ऐसे काम करते रहेंगे, जो दोस्तीके लायक़ होंगे, और जो हमेशह दोनों रियासतोंमें दोस्तीके चाहनेवाले रहें, और वह काम भी, जो उक्त अ़हृदनामहकी शर्तोंके पूरा करनेके लिये ज़रूरी हों, अमलमें आयेंगे.

दस्तख़त मिन्टो.

दस्तख़त- ऐन. बी. एडमन्स्टन्.

दस्तख़त- ए. सेटन्.

मक़ाम फ़ोर्ट विलिअम् वाके़ बंगालामें तारीख़ २५ जून सन् १८१३ ई० को लिखागया.

दस्तख़त जे. मौंक्टन्,
फ़ार्सी सेक्रेटरी गवर्मेंएट.

नम्बर १२५.

चौरहटके जागीरदार लालज़बर्दस्तसिंहका
इक़ारनामह.

जो कि मैंने ऑनरेबल् कम्पनीकी डाक अपनी जागीरके इलाक़ह्में मुक़र्रर किये जानेकी बाबत बर्ख़िलाफ़ी की थी, इस सबबसे तारीख़ २ जून सन् १८१३ ई० को सर्कार अंग्रेज़ी और सर्कार रीवांके दर्मियान क़रार पाये हुए दूसरे अ़ह्दनामहकी पांचवीं शर्तके मुवाफ़िक़ यह शर्त हुई कि सर्कार अंग्रेज़ीको इख़्तियार है, कि मुझे पूरी पूरी सज़ा देवे; और जो कि अंग्रेज़ी मक़ाममें, सर्कार अंग्रेज़ीकी फ़र्मांबर्दारी करनेकी नियतसे, मेरे हाज़िर होनेके सबब, और साहिब पोलिटिकल सुपरिण्टेन्डेन्ट बहादुरकी ख़िद्मतमें एक इक़ारनामह दाख़िल करनेके सबब, कि जब कभी सर्कार अंग्रेज़ीको मन्ज़ूर हो, मेरा इलाक़ह और क़िला हाज़िर है, सर्कार अंग्रेज़ीने रहम करके मेरे क़ुसूरोंको मुआफ़ फ़र्माया, और मुझको अपने इलाक़ह्में दुबारा इस हुक्मसे क़ाइम किया, कि जो दोस्तीके तरीक़े सर्कार अंग्रेज़ी और सर्कार रीवांके दर्मियान क़रार पाये हैं, उनके पूरा करनेमें जहांतक होसके कोशिश करूंगा, इस वास्ते मैं इस तह्रीरके ज़रीए़से इक़ार करता हूं, कि मैं पिंडारों और दूसरी लुटेरी क़ौमोंको, जो मेरे इलाक़ह्मेंसे होकर गुज़रेंगी, रोकूंगा, और सब हुक्मोंकी तामील बग़ैर तअ़म्मुलके किया करूंगा, जो अंग्रेज़ी अफ़्सर लुटेरोंके गिरोहका, या डाकका बन्दोबस्त करनेकी बाबत, या छावनी तय्यार करानेका सामान एकट्ठा करने, या अंग्रेज़ी फ़ौजकी रसद वग़ैरहके, या हर क़िस्मके हर्कारों, क़ासिदों और ख़बर पहुंचानेवालोंकी निस्बत, या मुज्रिमोंके गिरिफ़्तार और सुपुर्द करनेके बारेमें हुक्म जारी करेंगे; चाहे वे हुक्म मेरे नाम या राजा रीवांकी मारिफ़त जारी हों.

दस्तख़त जे. वाचोप,
पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेन्ट.
मुतअ़ल्लिक़ बुंदेलखण्ड.

नम्बर १२६.

तीसरा अह्दनामह, जो सर्कार अंग्रेज़ी और सर्कार रीवांके दर्मियान क़रार पाया.

जो कि सर्कार अंग्रेज़ी और सर्कार रीवांके दर्मियान २ जून सन् १८१३ ई० मुताबिक़ ज्येष्ठ शुक्ल ४ संवत् १८७० को क़रार पाये हुए दूसरे अह्दनामह की पांचवीं और आठवीं शर्तोंके रूसे सर्कार अंग्रेज़ीको चौरहटके जागीरदार लाल-ज़बर्दस्तसिंह और ज़िले सिंगरौनाके दूसरे ज़मींदारोंको उन बाज़े जुर्मोंकी बाबत, जो उनसे सर्कार अंग्रेज़ीके ख़िलाफ़ हुए हैं, सज़ा देनेका हक़ हासिल हुआ; और ज़रूरी नतीजा इस हक़का यह हुआ, कि सर्कार अंग्रेज़ीको उन लोगोंको उनके इलाक़ोंसे ख़ारिज करने और उनकी ज़मींदारीके हक़ दूसरे शख़्सको देनेका इख़्तियार हासिल हुआ (उन इलाक़ोंकी पूरी मिल्कियतके हक़ पहिलेके मुवाफ़िक़ बग़ैर मुज़ाहमत सर्कार रीवांके रहेंगे); यानी सर्कार अंग्रेज़ीको, उन लोगोंके हक़, जिनके हक़ उक्त अह्दना-महकी पांचवीं और आठवीं शर्तोंके रूसे ज़ब्त होने क़ाबिल हैं, छीनकर उन लोगोंको, जिनको वह पसन्द करे, इस शर्तपर देनेका हासिल हुआ है, कि हालके क़ब्ज़ा रखनेवाले सर्कार रीवांकी निस्बत दोस्तीके वे तरीक़े जारी रक्खें, जो अव्वलके ख़ारिज किये हुए ज़मींदार रखते थे; और जो कि सर्कार रीवांको अपना पूरा हक़ उन ज़ब्त किये हुए इलाक़ोंका, ऊपर लिखे हुए शख़्सोंपर हासिल है रक्खें, और यह ख़्वाहिश सर्कार अंग्रेज़ीकी बग़ैर ख़ुदग़रज़ है, कि उन लोगोंके फ़ाइदहकी तरक़्क़ी रहे, जिन्होंने अंग्रेज़ी फ़ौजके साथ ब कि वह रीवांकी मुहिममें मस्रूफ़ थी, दोस्ती और एकता ज़ाहिर की है; ये नीचे लिखी हुई तज्वीज़ दोनों तरफ़की रज़ामन्दीसे सर्कारोंके आरामके ा मन्ज़ूर हुई-

पहिली शर्त- अह्दनामों और इक़ारनामोंकी तमाम ३. जो अबतक सर्कार अंग्रेज़ी और सर्कार रीवांके दर्मियान क़रार पाई हैं, इस त े रूसे क़ाइम और बहाल रहेंगी, जहां तक कि उनमें कोई तब्दीली इस अ महकी शर्तोंके रूसे न हुई होगी.

दूसरी शर्त- सर्कार अंग्रेज़ी इस तहरीरके रूसे आजकी तारीख़से ज़िले सिंगरौनाके तमाम मालिकाना हक़, जो उनको तारीख़ २ जून सन् १८१३ ई० मुताबिक़ ज्येष्ठ शुक्ल ४ संवत् १८७० के क़रार पायेहुए दूसरे अह्दनामहकी आठवीं

शर्तकी कार्रवाईके रूसे हासिल हुए हैं, इस अम्रके सिवाय बख़्शती है, कि महाराजा रीवां रघुपालसिंहको सतनीके इलाक़हमें, जो उसके पास पहिले था, दुबारा क़ाइम न करेंगे, और यह भी कि सर्कार रीवां उन लोगोंकी नेक चलनीकी ज़िम्महदार रहेगी, जो अब ज़ब्त कियेहुए इलाक़ोंमें क़ाइम होंगे.

तीसरी शर्त- ता० २ जून सन् १८१३ ई० मुताबिक़ संवत् १८७० ज्येष्ठ शुक्ल ४ के अ़हदनामहकी नवीं शर्तके मुताबिक़ जो जुर्मानह सर्कार रीवांने समेरियाके जागीरदार लालजगमोहनसिंहपर किया था उसका कोई हिस्सह वसूल करनेका बिल्कुल हक़ इस तहरीरके ज़रीएसे सर्कार रीवां छोड़देती है.

चौथी शर्त- सर्कार अंग्रेज़ी यह चाहती है कि समेरिया वाला लालजगमोहनसिंह अपनी हालकी जागीरपर बहाल रहे; इस वास्ते सर्कार रीवां इस तहरीरके ज़रीएसे वादा करती है, कि लालजगमोहनसिंह अपने इलाक़हमें, जो अब उसके पास है, बग़ैर मुज़ाहमतके बहाल और बरक़रार रहेगा, परन्तु जो बर्ताव उसकी निस्बत सर्कार रीवांके हैं वे बदस्तूर रहेंगे.

पांचवीं शर्त- दूसरे अ़हदनामहकी सातवीं शर्तके रूसे सर्कार रीवांने वादा किया है कि वह किसी जागीरदार या किसी और से, जो रीवांका रहनेवाला होगा, और जिसने सर्कार अंग्रेज़ीकी ख़ैरख़्वाही की होगी, मुज़ाहिम न होंगे. वे लोग, जिन्होंने आदमियतके तरीक़ेसे उन अंग्रेज़ी सिपाहियोंकी रिआ़यत की है, जो संवत् १८७० के वैशाख महीने में सतनी मक़ामपर ज़ख़्मी हुए थे, और वे लोग जिन्होंने उन लोगोंकी इत्तिला दी थी, जो इस फ़सादमें शामिल थे, या जो दूसरे रोज़ उस सिपाहीके क़त्ल करनेमें शरीक हुए थे, जो शहर रायपुरकी हिफ़ाज़तके वास्ते मुक़र्रर था, उन लोगोंके नज़्दीक मुज्रिम समझेगये थे, जो किसी तरह इस फ़सादमें शामिल थे; इसवास्ते सर्कार रीवां इस तहरीरके ज़रीएसे पक्का वादा करती है कि वह उन लोगोंकी हिफ़ाज़त करेंगे, व उनकी निस्बत किसी तरहकी तक्लीफ़ या मुज़ाहमत ज़िक्र कीहुई मददकी बाबत, जो सर्कार अंग्रेज़ीके काममें उन्होंने ज़ाहिर की है, न होने देंगे.

छठी शर्त- चौरहटका जागीरदार लालज़बर्दस्तसिंह, जो ख़ुशीसे हाज़िर हुआ, और उसने बग़ैर शर्तके सर्कार अंग्रेज़ीकी ताबेदारी मन्ज़ूर की, इस लिये गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने ख़ुश होकर उसके अगले क़ुसूर मुआ़फ़ फ़र्माये, और उसको दुबारा उसके इलाक़हपर, जो अगली बद चलनीके सबब ज़ब्त होगया था, इस शर्तपर

क़ाइम किया कि, वह इक़ारनामह दाख़िल करे कि दुबारा क़ुसूर किसी नाजाइज़ कामका सर्कार अंग्रेज़ीके निस्बत न होगा; और इस इक़ारनामहकी तस्दीक़ की हुई नक़्ल सर्कार रीवांको दीगई. जो कि इस इक़ारनामहमें कोई बात हक़ोंके ख़िलाफ़ दर्ज नहीं है, जो सर्कार अंग्रेज़ीको रीवांके अ़ह्दनामोंके मुताबिक़ हासिल हुई है; इसलिये सर्कार रीवां सर्कार अंग्रेज़ीसे उसी तरह ज़िम्मह्दार होती है कि इस इक़ारनामहकी शर्तें पूरी कीजावेंगी, जिस तरह कि वह क़रार पाये हुए अ़ह्दनामों और अपने मातह्तों और दोस्तोंकी निस्बत हुए हैं.

सातवीं शर्त– यह अ़ह्दनामह, जिसमें सात शर्तें दर्ज हैं, आजके रोज़ सर्कार अंग्रेज़ी और सर्कार रीवांके दर्मियान, एक तरफ़ मिस्टर जॉन वाचोप साहिबकी मारिफ़त राइट ऑनरेबल् अर्ल ऑव मिन्टो, गवर्नर जेनरलके दियेहुए इख़्तियारोंसे, और दूसरी तरफ़ रीवां व मुकुन्दपुरके राजा जयसिंहदेव और उनके बड़े बेटे बाबू विश्वनाथसिंहके जो मुल्क रीवांके इन्तिज़ाममें उनके शरीक हैं, क़रार पाया; और मिस्टर वाचोप साहिबने इस अ़ह्दनामहकी एक नक़्ल अंग्रेज़ी, फ़ार्सी और हिन्दीमें अपनी मुहर और दस्तख़त करके उक्त राजा और बाबूको दी; और राजा व बाबूने एक नक़्ल अपनी मुहर व दस्तख़तसे मिस्टर वाचोप साहिबको दी; और साहिब मौसूफ़ने वादा किया, कि एक नक़्ल तस्दीक़ कीहुई, कम्पनीकी मुहर और गवर्नर जेनरल इन् कौन्सिलके दस्तख़तोंसे, सर्कार रीवांके मुख़्तार मोतबरको तीस दिनके अ़र्सेमें मंगादेंगे, उस नक़्लके आने बाद मिस्टर वाचोप साहिबकी दीहुई नक़्ल वापस होगी, और उस रोज़से अ़ह्दनामह दुरुस्त और तामीलके लायक़ समझा जावेगा.

इस अ़ह्दनामहकी नक़्लें दस्तख़त और मुहर होकर तारीख़ ११ मार्च सन् १८१४ ई० मुताबिक़ ५ माह चैत्र सन् १२२१ फ़स्लीको मक़ाम करवाईपर आपसमें तक़्सीम हुईं.

नम्बर १२७.

रीवांके महाराजा रघुराजसिंहके नाम
गोद लेनेकी सनद.

जनाब मलिका मुअज़्ज़महकी यह ख्वाहिश है कि हिन्दुस्तानके अक्सर राजाओं और रईसोंकी हुकूमत, जो अब अपने अपने मुल्कमें राज्य करते हैं, हमेशह रहे, और उनके ख़ान्दानकी शान व शौकत क़ायम रहे; इसलिये मैं इस तहरीरके ज़रीएसे उस शहन्शाही ख्वाहिशको ज़ाहिर करता हूं, और तुमको दुबारा इत्मीनान देता हूं, जो मैंने एक मर्तबह मक़ाम कानपुरके दर्बारमें माह नोवेम्बर सन् १८५९ ई० को दिया था, कि अगर तुम्हारा कोई वारिस अस्ली न होगा, तो जिसको तुम या तुम्हारे बाद तुम्हारे मुल्कके हाकिम ख़ान्दानी रिवाजके मुवाफ़िक़ गोद रक्खेंगे, वह सर्कारको मन्ज़ूर और क़ुबूल होगा.

इत्मीनान रक्खो, कि इस वादहमें, जो तुमसे कियाजाता है, कोई फ़र्क़ न आवेगा, उस वक़्तक जबतक कि तुम्हारा ख़ान्दान बादशाही ताजका नमक हलाल रहेगा, और जबतक अह्दनामों, बख़्शिशनामों, और इक़ारनामोंकी तामील, जिनकी रिआयत सर्कार अंग्रेज़ी अपने ऊपर फ़र्ज़ समझती है, होगी.

दस्तख़त केनिंग.

ता० ११ मार्च सन् १८६२ ई०

नम्बर १२८.

उस ख़रीतेका तर्जमा, जो महाराजा रीवांने दूसरे पोलिटिकल
असिस्टेण्ट बुंदेलखंडके नाम संवत् १९२० द्वितीय
श्रावण शु० १ को लिखा.

(ता० ३१ जुलाई सन् १८६३ ई० के ख़रीतेकी रसीद लिखकर).

आपके लिखनेके मुताबिक़ ज़रूरी शर्तें इक़ारनामहमें दर्ज कीजाती हैं :-

पहिली शर्त- जो कुछ ज़मीन कि सर्कारको रेलके कारख़ानहके वास्ते दर्कार हो, वह मए पूरे इख़्तियारातके हमेशहके वास्ते दीजाती है.

रेलवेकी हद्दमें, जो लोग रहते हैं, ख्वाह देशी रईसों या सर्कार अंग्रेज़की रिआया होवे रेलवेके अफ्सरों और सर्कारी हाकिमोंके मातहत समझे जायेंगे.

दूसरी शर्त- रेलवेके अफ्सरों व मुहाफ़िज़ों और रेलवेकी हदके बाहरकी देशी रियासतोंकी रअय्यतके दर्मियानके झगड़ोंका फैसला पोलिटिकल अफ्सर करेंगे.

इस रियासतके मुजिमोंके मुक़द्दमे जो रेलवेकी हद्दके भीतर चलेजावें, उन क़ाइदोंके मुताबिक़ फैसल कियेजावेंगे, जो कि एजेन्टीके हाकिमोंकी तरफ़से मुद्दतसे जारी हैं.

नम्बर १२९.

महाराजा रीवांने अपने मुख्य प्रधान लालरणदमनसिंहके साथ ता० ३० जैन्युअरी सन् १८७५ ई० को गवर्नर जेनरलके एजेण्ट व पोलिटिकल एजेन्टसे रीवांमें मुलाक़ातके वक्त यह बातें कहीं :-

मेरे ठिकानेका बन्दोबस्त मुझे बहुत दिनोंसे मुश्किल मालूम होता है. सर्कार हिन्दने मेरी अर्ज़के मुताबिक़ मेरी मददके लिये एक पोलिटिकल एजेण्ट मुक़र्रर किया, और दस लाख १०००००० रुपया क़र्ज़ दिया. मैंने ख़याल किया था कि पोलिटिकल एजेण्टकी सलाहसे मैं अच्छा प्रबन्ध जारी करने व आमदनी पहिलेके मुताबिक़ करलेनेके लायक़ हूंगा, जो बहुत दिनोंसे घट रही है, लेकिन् मेरी उम्मेद के मुताबिक़ नतीजा न हुआ.

वह ख़िराज जो कि रिआयासे लियाजाता है, मेरे ख़ज़ानहमें नहीं पहुंचता, इस लिये मुलाज़िमोंकी तन्ख्वाह चुकाने व दस लाखका क़र्ज़ अदा करनेके बारेमें सर्कारकी शर्तें पूरी करनेके लिये रुपया नहीं है.

पहिली शर्त- श्रीमान् वाइसरॉयकी मन्जूरीसे क़र्ज़ अदा होने व अच्छा प्रबन्ध जारी करदियेजाने तकके लिये अपनी रियासत पोलिटिकल एजेण्टकी सुपुर्दगीमें रखनेकी ख्वाहिश करता हूं.

दूसरी शर्त- पोलिटिकल एजेण्ट साहिब मेरे ख़ास प्रधान रणदमनसिंहके चाल चलनसे वाक़िफ़ और उसके ज़रीएसे मुझे सब तौर मदद पहुंचानेको राज़ी हैं.

तीसरी शर्त- जबसे पोलिटिकल एजेण्ट प्रबन्ध अपने हाथमें लेवेंगे, तबसे मैं हर तौर दख्ल देनेसे बाज़ रहूंगा.

चौथी शर्त- रियासती मुआमलातमें कोई हुक्म जारी नहीं करूंगा.

पांचवीं शर्त- पोलिटिकल एजेण्टको रियासती अह्लकार मुक़र्रर और बर्ख़ास्त करनेका इख़्तियार रहेगा, और मैं उनके इख़्तियारको मदद पहुंचानेमें हत्तल-मक़्दूर कोशिश करूंगा.

छठी शर्त- मुझे आराम और अपने रुत्बेके मुताबिक़ गुज़र करलेनेके लायक़ मुक़र्रर वक़्पर ख़र्च मिलजाया करेगा.

सातवीं शर्त- मैं गोविन्दगढ़, रीवां और सत्तनामें रहूंगा जैसे, कि रहताआया हूं.

दस्तख़त- महाराजा बहादुर रघुराजसिंह,
रीवां वाले (जी. सी. एस. आई.).

मक़ाम महल गोविन्दगढ़ तारीख़ १ फ़ेब्रुअरी सन् १८७५ ई०

शेषसंग्रह नम्बर १.

(रंगीली ग्रामका ताम्र पत्र.)

श्री रामोजयति

श्री गणेस प्रसादातु — श्री एकलिंग प्रसादातु

महाराजा धिराज महाराणा श्री राजसिंहजी आदेशातु गंध्रव मोहण कस्य, ग्राम १ रगीली भरख तीरली उदक आघाट करे श्री रामार्पण कीधी, खड़ लाकड़ गाम टको मया केर छोड्यो, दुऐ श्री मुख प्रत दुऐ पवासण सुंदर. लीषतं पंचोली राघोदास गोरावत स्वदतां परदतां वाजेहरंति वसुंधरा षष्ट वर्ष सहस्त्राणि विष्टायां जायते कृमी संवत १७१३ वरषे जेठ वदी १० सोमे.

शेष संग्रह नम्बर २.

सन्तूके मगरेमें राणा देवली मकामपर यह प्रशस्ति सांभरके शिकारकी यादगारमें है.

सिध श्री महाराजाधराज महाराणा श्री राजसिंहजी आदेसातु, संवत १७१६ वर्षे वेसाष सुदी १० भोमे सीकार पदार्‌या था, सो सामरी अठाथी हात ५० उपर बेठी थी, सो अठा थी सर लागो हातरो, सो इणी जायगा थंभ रोप्यो; दीन घड़ी १ चढ़्या पाला उबा थका.

शेष संग्रह नम्बर ३.

एकालिङ्गजीकी सड़कके पूर्वी किनारेपर भवाणा ग्रामसे दक्षिण दिशा वाली बावड़ीपरकी प्रशस्ति.

स्वस्ति श्री मन्महाराजाधिराज महाराणाजी श्री राजसिंहजी गाम पारडारी सुंदरबावड़ी करावी त्यारे भुवाणा मांह धरती बीगा ७५ पचोतर नागर बिसलनगरा ब्यास गोविन्दराम ब्यास बलभद्र गोपाल सुतजी संवत् १७१७ श्री रामार्पण कीधी, वांरे मां बावड़ी करावी श्री लालीरी सराय पण करावी राजा श्री जगत्सिंहात्मज राजसिंहजी.

शेष संग्रह नम्बर ४.

राजसमुद्र तालाबकी प्रशस्ति नौ चौकियां ऊपरकी.

॥ ॐनमः ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ यशोहेतुंसेतुंसुकृतिकृतिसेतुंजल — — सुबद्धं यश्चक्रे धरणिधरचक्रेण रुचिरं ॥ रुचा कामः कामं जनकतनया वामनयना सुविश्रामः कामं कलयतु सरामः कृतजयः ॥ १ ॥ स्मित ज्योत्स्ना लेपोज्वल ललित कण्ठः कच चय शिखिस्फुर्जत्पद्मेक्षणगलितनागो विभसितः ॥ मुदेचेलादोलांशुगत इति भूषाप्रतिकृते धृते गौर्याः शम्भुः स्फटिक रुचि देहेऽतिरुचिरः ॥ २ ॥ पुरा राणेन्द्रस्त्वच्चरणशरणः सेतुविलसत् प्रवन्धं कृत्वाऽब्धिन्नवमिहतडागं रचितवान्॥ प्रतिष्ठा मस्याद्या तव विवर राज्ये भगवति प्रभावो निर्विघ्नं सगिरि

वर मात जेय जय ॥ ३ ॥ वरा भीत्यो दीत्रीं पृथुतम कुचां कामवशगां महा कालोरःस्थां ससुख मजचक्रीन्द्रविनुतां ॥ प्रसन्नाक्षीं श्यामां स्मितमयमुखीं दक्षिणतमां स्तुवन्कालीं विद्यां क्षितिसुतधनानीह लभते ॥ ४ ॥ चतुर्भिः कैलास स्फुरितकरिभि र्हैम ससुधै र्घटैः शुण्डोत्क्षिप्तैः स्मरति सुखसिक्तां कनक भाम् ॥ वराम्भोजद्वन्द्वाभययुतकरां त्वां ऽबुजगतां रमे श्रीमत्ते यो मुखमपि समत्तेभधनवान् ॥ ५ ॥ रुचैन्दव्याभासत्स्फटिक हिम कुन्दाब्ज जयक द्दधाना वासो वा मुकुररुचिपद्मासनगता ॥ नवीनावीणाभृद्विधिहरिहरेन्द्रादिकनुता सरस्वत्या स्तान्नः सुमतिकृतये जाड्यहृतये ॥ ६ ॥ मृदुं वाणीं लज्जां श्रियमपि दधानां मणिलस त्किरीटेन्दुद्योतां मणिघटलसत्सव्यचरणाम् ॥ त्रिनेत्रां स्मेरास्यां समणिचषकाब्जोद्यतकरां जपा रक्तां भक्ता भजत भुवनेशीं पृथुकु-चाम् ॥ ७ ॥ रुचैंगालः खड्गो ललित कमलोह्रीमयमुखः क एष द्रागीदृक् लघुकलितशक्ति र्हंसकरः ॥ हलांसो हल्लेखी धृतसकलमायोऽनलवधू स्तुतिर्मंत्रं जप्त्वा जयति धरणीशो मनु रिव ॥ ८ ॥ कपोलप्रोल्लोलत्कनकविलसत्कुण्डल युगां मुखेंदुं बिभ्राणां कनकविकसच्चंपकरुचिं ॥ गदादीर्णारातिं करगरिपु जिव्हां च बगलामुखीं ध्याये यस्तद्विमुखमुखसंस्तम्भनविधिम् ॥ ९ ॥ शतायुः सिद्धिं वा सदसि बहुबुद्धिं विदधतीं प्रसिद्धिं लोके वा सततमृणवृद्धिं च विगतां ॥ गुणानामृद्धिं वा सुभगसुतवृद्धिं धनगिरां समृद्धिं भक्तानां सपदि हरसिद्धिं भज मनः ॥ १० ॥ शिवे राजन्यानां जयसि समरादौ जयकरी शतायुष्यं राणं कलय जयसिंहं सतनयम् ॥ स्थिरं राणाराज्यं जगति रचया चन्द्रतपनं प्रशस्तेः स्थैर्यं त्वं मम सुतगिरायुर्धनसुखम् ॥ ११ ॥ चतुर्वारं तेन्तर्ज्जनकलकलालंकृततनुं गिरिं श्रुत्वा लोके तव विवरराज्यं त्वनुमितम् ॥ ध्रुवं निःसन्देहं रचय नृपदेहं मम वपुः स्थिरं गेहं स्नेहं तनयमपि तेह न्निजजनः ॥ १२ ॥ इदं स्तोत्रं स्तुत्य स्पठति मनुजो मंगलकरं सुकार्यादौ यस्तद्भवति सफलं विघ्नरहितं ॥ प्रपूर्णं वातूर्णं जननि रणछोडेन रचितं पठित्वा श्रुत्वादौ जगदखिलमास्तां सुखमयम् ॥ १३ ॥ इति भवानीस्तोत्रम् ॥ सरोलंबैस्तंबेरममुखसदं-बेक्षितमुखे सुहेरंबेत्वंबेदवति गुणलंबे त्वयिविभो ॥ समालंबे कंबे रितवति भृशं वेदित विपत्कदंबेऽ नालंबे सुकविनिकुरंबे कुरुकृपां ॥ १४ ॥ नद्यः क्षुद्राः समुद्राः सलवणसलिलं कूपवाप्योथ भद्रा दारिद्र्यं वीक्ष्यवारां किल-सुरसरितो वारिग्रह्णाति लग्नं ॥ शैवालंकेशपंक्तिं शिरसिचशकुलं चंद्रकं रत्नसेतोः सिंदूरं बालुकौघं दधदिति गुणिभिः पातुगीतो गणेशः ॥ १५ ॥

कर्णौ शूर्पद्वयंवा प्यलिवलयमिषा च्चालनींदंतदर्वी चद्ररौप्यं कटाहं विधुकर निकरं पिष्टकं स्निग्धकुंभौ ॥ दानंमिष्टं जलं यत्पवतिदधदलं धूमकेतुंच सर्वैर्लेड कालिं तदुक्तो ह्यसुरसुरनरालंबलंबोदरोव्यात् ॥ १६ ॥ शुंडादंडं प्रचंडं मदल सदसितं रंध्रवद्वान्हिशस्त्रं विभ्राणो धूमकेतुं मधुकरगुटिकादंतमुद्दंडदंडं ॥ तन्नूनं वन्हिशस्त्रीदितिजहतिकृते स्थापितं शंभुनासौ भ्रांत्या लोकैर्गजास्यः कथित इति मुदे श्रीगणेशः सुवेषः ॥ १७ ॥ पूज्यो भूद्वक्रतुंडः सुरदितिजनरैः सर्वकार्येषु कस्मात्तन्मन्येक्रीडनेयं जलनिधि मधिकं शुंडया पीतवान्वै ॥ लंकास्थं द्वारकास्थाऽ सुरसुरमनुजाहींद्रलक्ष्मीस्वयंभूविश्नुस्तोत्रैस्तु मुंचन्सकल मिदमतः सर्ववंद्यो मुदेसः ॥ १८ ॥ प्रातर्भानुं रसालोत्तमफलततितो निर्मलो द्यत्सिता-भिर्भ्राजल्लडूकबुद्ध्या निशि मधुरविधुं चंडया शुंडयायत् ॥ धृत्वास्वास्ये दधेतद्ग्रहण मिति जनैः स्नायिभिः श्रांतमस्मात् पार्वत्या मोचितौतौ सहसित मवतात्क्लेशहर्ता गणेशः ॥ १९ ॥ भ्रातः किंवाहनस्य प्रगटयसि नवा लालनं स्कंदवाक्या देवंप्रोद्दंडशुंडामुखकलितमहामूषकस्पर्शलेशः ॥ भोक्तुं भोगी किमित्थं द्रवति कृतमतौ मूषके स्मादकस्मा त्स्कंधात्तस्य स्खलन्तस्खलितमति वचश्चारुदद्याद्गणेशः ॥ २० ॥ सत्कुंभौ दुंदुभीद्वौ भुजगसुखकरं वाद्यमुद्दंड शुंडा तालौवा कर्णतालौ त्रिपुरहरमहातांडवाडंबरेयत् ॥ चंडाद्या वादयंति द्विपवदनविभो रेषतुष्टो विशिष्ट स्वाविष्टंसाष्टनृत्यं प्रविदधदधिकं पातुमामिष्टशिष्टं ॥ २१ ॥ श्रीवक्रतुंडस्तवएषतुंडस्थितः सतां मंडितसूक्तिकुंडः ॥ उद्दंडवेतंड घटाप्रचंडं विद्यामणीकुंडलदः सदास्यात् ॥ २२ ॥ इति गणेशस्तोत्रं ॥

स्वनामस्त्रजंगायतः स्त्रस्तरोगानजस्त्रं जनानुदस्त्रवद्वै वितन्वन् ॥ जय-न्नस्त्रपान्भूषयन् घस्त्रमुच्चैः सहस्त्रद्युतिस्त्वं मुदेस्ता दुदुस्तः ॥ २३ ॥ सत्पीतं चामरं किंकलयति तपनो धार्यमाणं दिगीशैः सूताभावाह भाभिः कृत पट घट नायापि सूचीसहस्त्रं ॥ वेद्धुंतद्वातदंतावलसवलवलं स्वर्णबाणव्रजंवा तर्क्यंते तर्क्यलोके रितिरविकिरणा येत्रते पुत्रदाःस्युः ॥ २४ ॥ जातेयस्योदये सावुदयगिरिवरः सूर्यवाहारुणाभा रूपैः शुद्धैर्हिरण्यैर्मरकतमणिभिः पद्मरागैः कलंद्राक् ॥ शृंगस्तोमेसमस्ते रचयति निचयं भूषणानांयथेच्छं यादृग्यत्रोपयुक्तं सभवतु भगवान् भूतये भानुमाली ॥ २५ ॥ प्राच्यां मूर्द्धनाधृतोसौ मरकतकनको द्भासितोत्तंसउच्चैर्वृत्तोद्यत्स्वर्णपत्रं हरिदरुणपटं छत्रकं मूर्द्धिनमेरोः ॥ वर्षाशं स्यद्भुतंवा हरिधनुरधुना कुंडलीभूत मित्थं सूतस्वाश्वप्रभाभृत्सुमुनिभिरुदितं मंडलं पातुपूष्णः ॥ २६ ॥ मुक्तागुच्छं विवस्वद्वपुररुपमणिं विद्रुमं सूतरूपं

च्छत्रं सत्पुष्परागं हरिहरितमणीन्दीर्घवैदूर्यदंडान् ॥ विभ्रद्वज्रस्य चक्रं लसितमणिधुरं धन्यगो मंदमंचं श्रीभानोस्यंदनस्ते मनसि खलुधृतो हंतुसर्व ग्रहार्तिं ॥ २७ ॥ विश्रामच्छद्मनाये लघु गमनकरा मूर्द्धनिमेरो दर्द्युनद्याः कल्लोलोल्लासितेस्मि न्मयुवरयुवतीसंचये चंचलाक्षाः ॥ हेषासंकेतशब्दैर्विदधाति भृशमासक्ति मन्हां गुरुत्वं ग्रीष्मे कुर्वंतियुक्तं हरिहरय इतस्ते श्रियंतेदिशंतु ॥ २८ ॥ चक्राग्रं शक्रसम्यक्धुरियमसमतामक्षमाधेहि रक्षस्त्वंवीतीन्वीतिहोत्रा रुणमिह वरुण स्थापयत्वं रथेशं ॥ वायोवा ऽऽ योजयत्वं रथमथ धनदाराधनत्वं हरीणां शंभोत्वं भोप्रियंमे वदति तदरुणो दिक्पती न्शास्ति सोव्यात् ॥ २९ ॥ आश्लेषे पश्चिमाशा कुचयुग विलसत्कुंकुमा लेपसक्तः ॥ किंवावालैः प्रवालैर्जलनिधि जठरे स्पर्शनैर्घर्षणैश्च ॥ प्रेम्णा चच्छादितः किं हरिहरिदवला पाणिना सत्कु-सुंभा रक्ते नैवां बरेणा - - - - - - - - - - - - ॥ ३० ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ मुनिनृपमनुजेभ्यो दर्शनं संप्रदातुं परमकरुणयैवा गत्य कैलासशैलात् ॥ तटभुवि कुटिलाया एकलिङ्गस्त्रिकूटे स्थितइह विवरेह्यौ राजसिंहेशमव्यात् ॥ १ ॥ तुहिन किरणहीरक्षीरकर्पूरगोरं वपुरपि जलदाभं कालिकापांगवल्याः ॥ प्रतिकृति घटनाभि र्बिभ्रदभ्रांतभक्तः कलयतु तव राजन् मंगला न्येकलिङ्गः ॥ २ ॥ चतुर्मितपुमर्थ सद्वितरणाय सद्भ्यः सदा चतुर्भुजधरो मुदा किल चतुर्युगोद्यद्यशाः ॥ चतुर्भुज हरिश्चिरं निज चतुर्भुजाभिः शुभं चतुः श्रुति समीरितं दिशतु राजसिंह प्रभो ॥ ३ ॥ जगदखिलजनानां पालना दस्तिया वा निगमवचसि या वालांबिकांवाकिलोक्ता ॥ सुखयतु सहितंत्वां पुत्र पौत्रप्रपौत्रै रवतु तवतुगोत्रं सांबिका राजसिंह ॥ ४ ॥ ऐंदिरं विभवं दद्यात् शौक्लीतांत्रे दधत्पदं ॥ बुधेप्रसन्नासौः स्फूर्जद्बालाभूपप्रवालभाः ॥ ५ ॥ दधदतुलकरेद्राङ्मोदकं यस्यभक्तः कलयति सफलार्थं मोदकं राजसिंह ॥ नृपवर सतुविघ्नं विघ्नराजो विनिघ्नन् रचयतु तनयस्ते मंगलं मंगलायाः ॥ ६ ॥ प्रथमनृपमनो यः सिद्धिदाता विवस्वानपरमनुमिवत्वां वीक्ष्य सिद्धिं प्रदातुं ॥ दशशतकरयुक्तो· युक्तमेवेत्यहोत्वा मवतु सतु नितांतं भूपते राजसिंह ॥ ७ ॥ धीरः कविः स्फुट पुराण वरो नुशास्ता धाता स्फुरद्गुणगणस्य तमः सपत्नः ॥ आदित्य वर्ण इहमां मधुसूदनो व्यात् कार्येति दुस्तरतरे प्रविशंतमद्वा ॥ ८ ॥ इति मंगलाष्टकं ॥ यस्या सीन्मधुसूदनस्तु जनको जातः कठोंडीकुले तैलंगः कविपंडितः सुजननी वेणी च गोस्वामिजा ॥ कुर्वे राजसमुद्रनामकजलाधारप्रशस्तिं

त्वहं सोदर्यं रणछोड़ एप भरथाद्यंलक्ष्मणं शिक्षयत् ॥ ९ ॥ पूर्णे सप्तदशे शते समतनो त्स्वष्टादशाख्ये ब्दके माघे श्यामलपक्षके नरपतिः सत्सप्तमी वासरे ॥ घोघुंदावसति जलाशयमहारंभं च तस्याज्ञया प्रारंभं रणछोड़ एष कृतवां स्तस्य प्रशस्ते स्तथा ॥ १० ॥ वर्ण्ये त्ववर्ण्य मपि वे त्तिनवालकोवा दृष्टार्थसंकथक एव गलद्वयश्च ॥ सोहं तथैव गुणवृद्धसभोपविष्टः किंचिद्व-दामि ममधार्ष्ट्यमिदं क्षमध्वं ॥ ११ ॥ जिव्हासु सत्फणिपति र्लिखनेपु कार्त्त वीर्यार्जुनो वचसि वाक्यति रेव वाहं ॥ ज्ञातुंगुणां स्तव तदा निपुणो भवामि कांश्चित्ततो नृप वदाम्यतिसाहसेन ॥ १२ ॥ पुण्या जनार्दनहरेस्तु कथास्ति पुण्यश्लोकस्य वा नलनृपस्य युधिष्ठिरस्य ॥ तादृक्कथा जयति बाप्पनृपस्य वक्ष्ये श्रीराजसिंहनृपते रपि सत्कथा तत् ॥ १३ ॥ रामायणे भारते ऽस्ति प्रोक्तानां भूभुजां यशः ॥ यथा राज्ञामिहोक्तानां स्या त्तथाऽऽ चन्द्रतारकम् ॥ १४ ॥ खण्डप्रशस्ति र्भुवने रामचन्द्रस्य शोभते ॥ श्री अखण्डप्रशस्ति स्ते राजसिंह विराजते ॥ १५ ॥ मर्त्यायुष्ये स्तुल्यमायु स्तु भापाग्रन्थानां स्याद्देववाक्भारतादेः ॥ देवायुष्यै स्तुल्यमायु स्ततो ऽहं ग्रन्थं कुर्वे राणगीर्वाण वाण्या ॥ १६ ॥ व्यासवाल्मीकिवद्वन्धो वाणश्रीहर्पवन्नृपैः ॥ सत्संस्कृतं कवीराज्ञां यशोंगस्थापक श्चिरम् ॥ १७ ॥ श्री राणाराजसिंहस्य वर्णनं कर्तुमुद्यतः ॥ भूपान्वाप्पा दिकान् वक्तुं वक्ष्ये ऽहं मुनिसम्मतिम् ॥ १८ ॥ वक्ष्येवायुपुराणस्य मेदपाटीयखण्डके ॥ पष्ठेध्यायेत्वेकलिंगमहात्म्ये वाक्यमीरितं ॥ १९ ॥ अथ शैलात्मजा ब्रह्मन् शोकव्याकुललोचना ॥ नंदिनं प्रथमं वाप्पंसृजंतीतमुवाचह ॥ २० ॥ यस्माद्वाप्पंसृजाम्यद्य वियो गाच्छंकरस्य च ॥ पूर्वदत्ताद्यमच्छापा द्वाप्पोराजा भविप्यसि ॥ २१ ॥ आराध्य तं जगन्नाथं तीर्थे नागहृदे शुभे ॥ राज्यं शक्रइव प्राप्य पुनः स्वर्ग मवाप्स्यसि ॥ २२ ॥ पुनश्चंडगणं प्राह पार्वती व्याकुलेक्षणा ॥ मर्यादां हृतवानद्य द्वाररक्षे ऽप्यरक्षणात् ॥ २३ ॥ हारीत इति नाम्नात्वं मेदपाटे मुनिर्भव ॥ तत्रा राध्य शिवंदेवं ततः स्वर्ग मवाप्स्यसि ॥ २४ ॥ इतिवायु पुराणस्य सम्मतिस्तत्रविस्तरः ॥ द्रष्टव्या वाप्पवंशे स्मिन् कार्यः शिष्टैस्तदा दरः ॥ २५ ॥ नमेविज्ञानतरणी राजसिंहगुणांबुधेः ॥ पाराप्त्यै वक्रमुडुप मस्याज्ञा करमाश्रये ॥ २६ ॥ सालंकारमणिः सूक्तिमौक्तिकः सद्रसामृत ः ॥ राजप्रशस्तिग्रंथोस्ति समुद्रोन्यसुवर्णभूः ॥ २७ ॥ सेतिहासो भारत वत्प्रोक्तः सूर्यान्वयः समः ॥ रामायणेन पठनाद्ग्रंथ स्तादृक् फलाय नः ॥ २८ ॥ श्रीराणा राजसिंहस्य महावीरस्य वर्णने ॥ वाप्पः सूर्यान्वयी सर्गे सूर्यवंशं

वदे ग्रिमे ॥ २९ ॥ आसी द्भास्करतस्तु माधवबुधो स्माद्रामचंद्र स्ततः सत्सर्वेश्वरकः कठोडिकुलजो लक्ष्म्यादिनाथ स्सुतः ॥ तैलंगोस्यतु रामचंद्र इतिवा कृष्णोस्य सन्माधवः पुत्रोभून्मधुसूदन स्त्रय इमे ब्रह्मेशविश्नूपमाः ॥ ३० ॥ यस्यासी न्मधुसूदनस्तु जनको वेणीच गोस्वामिजा मातावा रणछोड् एप कृतवान् राजप्रशस्त्या व्हयं ॥ काव्यं सान्वय राजसिंह नृपति श्रीवर्णनाढ्यं महद्वीराकं प्रथमोत्र पूर्ति मगम त्सर्गोथ वर्गोत्तमः ॥ ३१ ॥ इति श्रीमधुसूदनभट्टपुत्ररणछोड्कृते श्री राजप्रशस्तिमहाकाव्ये प्रथमः सर्गः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ गुंजापुंजाभरणनिचयं चंद्रकालीकिरीटं गोत्रं वेत्रं करकमलयोः पूजितं चित्रवस्त्रं ॥ मध्ये पीतं वसन मपरं किंकिणीं वक्रवेणीं नासा-मुक्तां दधदतिमुदे तेस्तु गोवर्द्धनेंद्रः ॥ १ ॥ आदौ जलमयं विश्वंतत्र नारायण-स्थितः ॥ हिरण्यहारीतन्नाभौ पद्मकोप इहाभवत् ॥ २ ॥ ब्रह्मा चतुर्मुखस्तस्य मरीचिः कश्यपोस्यतु ॥ सुतोविवस्वां स्तस्यासी न्मनुरिक्ष्वाकु रस्यसः ॥ ३ ॥ विकुक्षिः सशशादा न्यनामा तस्य पुरंजयः ॥ ककुत्स्था परनामाय मस्याने नास्ततः पृथुः ॥ ४ ॥ ततोभूद्विश्वरंधिस्तु ततश्चंद्र स्ततोभवत् ॥ युवना-श्वोस्य शावस्तो वृहदश्वोस्य चात्मजः ॥ ५ ॥ ततः कुवलयाश्वोभूद्धुंधुमारा पराभिधः ॥ दृढाश्वो स्यास्य हर्यश्वो निकुंभ स्तस्यवाततः ॥ ६ ॥ वर्हणाश्वः कृशाश्वोस्य सेनाजित्तस्यवाततः ॥ युवनाश्वोस्य मांधाता तस्यदस्युपराभिधः ॥ ७ ॥ चक्रवर्त्यस्यतनयः पुरुकुत्सोस्यवासुतः ॥ त्रसदस्युर्द्वितीयो स्मादनरंण्यस्ततो भवत् ॥ ८ ॥ हर्य्यश्वो स्यारुणस्तस्य त्रिबंधन नृपस्ततः ॥ सत्यव्रत स्त्रिशंकुस्तु तस्यनामांतरं ततः ॥ ९ ॥ हरिश्चन्द्रो रोहितोस्य तस्य वा हरितस्ततः ॥ चंपस्तस्य सुदेवोस्मा द्विजयो भरुकोस्यवा ॥ १० ॥ तस्माद्वृको बाहुकोस्य तत्पुत्रः सगरः सच ॥ चक्रवर्ती सुमत्यांतु पत्न्यांतस्या भवन्सुताः ॥ ११ ॥ श्रेष्ठाःषष्टि सहस्त्रोद्य त्संख्याः सागरकारकाः ॥ सगरस्यान्य पत्न्यांतु केशिन्या मसमंजसः ॥ १२ ॥ ततोंशुमा न्दिलीपोस्मा त्तस्माजातो भगीरथः ॥ ततः श्रुतस्ततोनाभः सिंधुद्वीपोस्य तत्सुतः ॥ १३ ॥ अयुतायु स्तस्य जात ऋतुपर्णस्तु तत्सुतः ॥ सर्वकाम सुदासोद्य तस्मान्मित्र सहन्मतिः ॥ १४ ॥ पादपंत्या सकल्माष पादान्याख्यो स्य चाश्मकः ॥ मूलकोस्मा दशरथ स्ततऐडविडस्ततः ॥ १५ ॥ जातोविश्वसह स्तस्मा त्खट्वांग श्चक्रवर्त्यतः ॥ दीर्घबाहु दिलीपोस्य रघुरस्याज इत्यतः ॥ १६ ॥ जातो दशरथ-स्तस्य कौशल्यायां सुतो भवत् ॥ श्रीरामचन्द्रः कैकेय्यां भरतो रामभक्तिमान् ॥ १७ ॥ सुमित्रायां लक्ष्मणश्च शत्रुघ्नश्चेति नामतः ॥ श्रीसीतायां कुशो जातो

लवश्चेति कुशादभूत् ॥ १८ ॥ कुमुद्वत्यामतिथिको निषधोस्य ततो नलः ॥ नभोथ पुण्डरीकोस्य क्षेमधन्वा ततो भवत् ॥ १९ ॥ देवानीक स्ततो हीनः पारियात्रोस्य तत्सुतः ॥ बल स्तस्य स्थल स्तस्मा द्वज्रनाभ स्ततो भवत् ॥ २० ॥ सगण स्तस्य विधृतिः पुत्र स्तस्य सुतो भवत् ॥ हिरण्यनाभः पुष्यो स्माद् ध्रुवसिद्धि स्ततो भवत् ॥ २१ ॥ सुदर्शनो स्याग्निवर्ण स्तस्य शीघ्र स्ततो मरुत् ॥ ततः प्रसुश्रुत स्तस्मात् संधि स्तस्यतु मर्षणः ॥ २२ ॥ ततो महस्वां तस्या भू द्विश्वसाह्वः प्रसेनजित् ॥ तत स्तत स्तक्षकोस्माद् वृह द्वल इति त्रयम् ॥ २३ ॥ महाभारतसंग्रामे निहतस्त्वभिमन्युना ॥ एतेत्वतीता व्यासेनसंप्रोक्ता भारते नृपाः ॥ २४ ॥ अनागतान्जगादेवं व्यासस्तत्र वदामि तान् ॥ वृहद्वला द्वहद्रण स्तस्यो रुक्रिय इत्यतः ॥ २५ ॥ वत्सवृद्धः प्रति व्योम स्तस्या स्माद्भानुरस्यवा ॥ दिव्यकस्तस्य पदवी वाहिनी पतिरित्यभूत् ॥ २६ ॥ तस्यासीत् सहदेवोस्य वृहदश्व स्ततोभवत् ॥ भानुमान् वा प्रतीकाश्वोस्य तस्मात्तु प्रतकिकः ॥ २७ ॥ ततोभून्मरुदेवोस्मात्तु नक्षत्रोस्य पुष्करः ॥ ततों तरिक्षः सुतपास्तस्मान्मित्रजिदस्यतु ॥ २८ ॥ वृहद्राजस्ततो वर्हिस्तस्मात्तस्य कृतंजयः ॥ तस्माद्रणंजयस्तस्य संजयः शाक्यइत्यतः ॥ २९ ॥ शुद्धोदोस्माल्लांगलोस्य प्रसेनजिदथतत्वतः ॥ क्षुद्रकस्तस्य रुणकस्तस्या सीत् सुरथस्ततः ॥ ३० ॥ सुमित्रस्तु सुमित्रांत इक्ष्वाको रन्वयो भवत् ॥ उक्ता भागवते स्कंधे नवमे ते मयोदिताः ॥ ३१ ॥ द्वाविंशत्यग्रशतक मेषां संख्या कृतावदे ॥ प्रसिद्धा त्सूर्यवंशस्था द्वज्रनाभो भवत्ततः ॥ ३२ ॥ महारथीति राजेंद्र स्तस्मादतिरथीन्नृपः ॥ तस्मादचलसेनस्तु सेनास्यत्वचलारणे ॥ ३३ ॥ तस्मात्कनकसेनोस्य नहसीनोंगरत्यतः ॥ तस्माद्विजयसेनोस्या जयसेन स्ततोभवत् ॥ ३४ अभंगसेनस्तस्मात्तु मद्रसेनस्ततोऽभवत् ॥ भूपः सिंहरथस्त्वेते अयोध्या वासिनो नृपाः॥ ३५ ॥ तस्माद्विजय भूपोयं मुक्त्वाऽयोध्यांरणागतान्॥ जित्वान्नृपान्दक्षिणस्था नवसद्दक्षिणक्षितौ ॥ ३६ ॥ तत्रास्याकाशवाण्यासी न्मुक्त्वाराजाभिधामथ ॥ आदित्याख्यातुधर्त्तव्या भवताभवदन्वये ॥ ३७ ॥ जाताविजयभूपांता राजानोमनुपूर्वकाः ॥ वीराः संख्येरितातेषां पंचत्रिंशद्युतंशतं ॥ ३८ ॥ आसीदित्यादि ॥ द्वितीयः सर्गः संवत् १७१८ वर्षे माघ मासे कृष्णपक्षे सप्तम्यां तिथौ राजसमुद्र मुहूर्त राणे राजसिंहजी किधो ॥ संवत् १७३२ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे १५ तिथौ राजसमुद्र प्रतिष्ठा कीधी गजधर मुकुंद, गजधर कल्याण ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ उल्लोलीभवदुन्नताच्छसुरभी पुच्छच्छटा चामरः ॥

सद्वोवर्द्धन धन्यगोत्र विलसच्छत्रोजितेंद्रोबली ॥ गोपालैः कलितश्चगोपतनया सक्तोनिजप्रेमवा न्पायाद्वोधन भक्त रक्षणपरः सच्चक्रवर्ती हरिः ॥ १ ॥ ततोविजयभूपस्य पद्मादित्यो भवत् सुतः ॥ शिवादित्योस्यपुत्रोभूद्धरदत्तोस्यवा सुतः ॥ २ ॥ सुजसादित्यनामा स्मात् सुमुखादित्यकस्ततः ॥ सोमदत्तस्तस्य पुत्रः शिलादित्योस्य चात्मजः ॥ ३ ॥ केशवादित्य एतस्मा न्नागादित्यो स्य चात्मजः ॥ भोगादित्यो स्य पुत्रोभू द्देवादित्य स्ततो भवत् ॥ ४ ॥ आशादित्यः कालभोजा दित्यो स्मात्तनयो स्य तु ॥ ग्रहादित्य इहादित्या श्चतुर्दश मिता स्ततः ॥ ५ ॥ ग्रहा दित्यसुताः सर्वे गहिलोताभिधायुताः ॥ जाता युक्तं तेषु पुत्रो ज्येष्ठो वाप्पाभिधो भवत् ॥ ६ ॥ यं दृष्ट्वा नंदिनं गौरी दृशो र्वाप्पं पुराऽसृजत् ॥ नंदीगणो सौ वाप्पोरि प्रियादृक् वाप्पदोऽभवत् ॥ ७ ॥ हारीतराशिः सुमुनि श्चंडः शंभो र्गणो भवत् ॥ तस्यशिष्यो भवद्वाप्प स्तस्याज्ञातः प्रसादतः ॥ ८ ॥ नागहृदे पुरे तिष्ठ न्नेकलिंगशिव प्रभोः ॥ चक्रे वाप्पोऽर्चनं चास्मै वरान्त्रुद्रो ददौ ततः ॥ ९ ॥ चित्रकूटपति स्त्वं स्या स्त्व द्वंश्यचरणा ध्रुवं ॥ मागच्छताच्चित्रकूटः संततिः स्यादखंडिता ॥ १० ॥ प्राप्येत्यादि वरान्वाप्प एकस्मिन् शतके गते ॥ एकाग्रनवतिस्वब्दे माघे पक्षे वलक्षके ॥ ११ ॥ सप्तमीदिवसे वाप्पः सपंचदशवत्सरः ॥ एकलिंगेशहारीतप्रसादा द्भाग्यवा नभूत् ॥ १२ ॥ नागहृदाख्ये नगरे विराजी नरेश्वरः खड्गधरेषु धन्यः ॥ बलेन देहेन च भोजनेन भीमो रणे भीमतमो रिपूणां ॥ १३ ॥ पंचाधिकत्रिंशदमंदहस्त प्रमाणयुक्पट्टपटं दधानः ॥ बभौ निचोलं किलशोड्षोद्यत्करप्रमाणं विमलं वसानः ॥ १४ ॥ श्रीएकलिंगेन मुदा प्रदत्तंहारीतनाम्ने मुनये थ तेन ॥ दत्तं दधानः कटकं च हैमं पंचाशदुद्यत्पलमान मास्ते ॥ १५ ॥ द्वात्रिंश दुद्यत्तम ढब्बुकाद्यैः प्रस्था भिधैः शेर वरैः कृतस्य ॥ मणस्य चैकस्य भरं हि चत्वारिंशन्मिते र्विभ्रदसिं दधानः ॥ १६ ॥ एकप्रहारा न्महिषौ महासे-र्दुर्गार्चनायां जवतो विनिघ्नन् ॥ भुंज न्महाच्छागचतुष्टयं स अगस्त्य शस्त्यः प्रबभूव वाप्पः ॥ १७ ॥ ततः स निर्जित्य नृपं तु मोरीजातीयभूपं मनुराजसंज्ञं ॥ ग्रहीतवां श्चित्रितचित्रकूटं चक्रे त्रराज्यं नृपचक्रवर्ती ॥ १८ ॥ राज्यातिपूर्णल वरत्नलक्ष्मीमयलशब्दादिमवर्णयुक्तां ॥ तां रावलाख्यां पदवीं दधानो वाप्पाभिधानः स रराज राजा ॥ १९ ॥ ततः खुमानाभिधरावलो स्मा द्गोविंदनामा थ महेन्द्र नामा ॥ आंलूनृपो स्मा दथसिंहवर्मा तस्यात्मजः शक्तिकुमारनामा ॥ २० ॥ जातस्ततो रावल शालिवाहन स्तस्यात्मजो भून्नरवाहन स्ततः ॥ अंबाप्रसादो स्य च कीर्तिवर्मक स्तत्पुत्र आसी न्नरवर्मनामकः ॥ २१ ॥ ततो नृपालो नरपत्यभिख्य स्त्वथोत्तमो स्मान्नृपभैरवो स्मात् ॥ श्रीपुंजराजो भवदस्यकर्णादित्यः सुतो स्यापि च भावसिंहः

॥ २२ ॥ श्री गोत्रसिंहो थ स हंस राजसुतो स्य सूनुः शुभ योगराजः॥ सवैरडाख्यो थ सवैरिसिंह स्ततो स्य वा रावल तेजसिंहः ॥ २३ ॥ ततः समरसिंहाख्यः पृथ्वी राजस्य भूपतेः॥ पृथाख्याया भगिन्या स्तु पति रित्यतिहार्दतः ॥ २४ ॥ गोरी साहिबदीनेन गज्जनीशेन संगरं ॥ कुर्वतो ऽखर्वगर्वस्य महासामन्तशोभिनः ॥ २५ ॥ दिल्लीश्वरस्य चोहाननाथस्या स्य सहायकृत् ॥ स द्वादश सहस्त्रैः स्ववीराणां सहितो रणे ॥ २६ ॥ बध्वा गोरीपतिं दैवात्स्वर्यात : सूर्य बिंबभित् ॥ भापारासापुस्तके स्य युद्धस्योक्तो स्ति विस्तरः ॥ २७ ॥ तस्यात्मजोभू न्नृप- कर्णरावलः प्रोक्तास्तुषड्विंशति रावला इमे ॥ कर्णात्मजो माहपरावलो भव त्सडूगराद्ये तु पुरे नृपो बभौ ॥ २८ ॥ कर्णस्य जात स्तनयो द्वितीयः श्री राहपः कर्णनृपाज्ञयोग्रः ॥ वाक्येन वा शाकुनिकस्य गत्वा मंडोवरे मोकलसीं स जित्वा ॥ २९ ॥ तातांतिके त्वा नयति स्म बद्धं कर्णोस्य राणाविरुदं गृहीत्वा ॥ मुमो च तं चारु ददौ तदीयं रानाभिधानं प्रियराहपाय ॥ ३० ॥ भव्याशिषा ब्राह्मण पल्लिवालज्ञातीय विद्वच्छर शल्यनाम्नः॥ श्री चित्रकूटे वलभच्चराज्यं चक्रे ततो राहप एप वीरः ॥ ३१ ॥ ततो बभौ चित्रकूटे राहपावाहपोपकः ॥ पूर्वं सीसोदनगरे वासा त्सीसोदिया स्मृतः ॥ ३२ ॥ रानाविरुदलाभेन राने त्युक्तो खिले बैभौ ॥ वंशस्याग्रे भविष्यंति रानाविरुदिनो नृपाः ॥ ३३ ॥ राजेंद्र राजीपूज्योयं नारायणपरायणः॥ विशेषणादिवर्णाढ्यां वीरो रानाभिधां दधौ ॥ ३४ ॥ आसी द्भास्करत स्तु माधवबुधो ऽस्माद्रामचंद्र स्ततः सत्सर्वेश्वरकः कठोंड़ि कुलजो लक्ष्म्यादिनाथ स्ततः ॥ तैलिंगो स्य तु रामचंद्र इति वा कृष्णोस्य वा माधवः पुत्रो भून्मधुसूदन स्त्रय इमे ब्रह्मेशविश्नूपमाः ॥ ३५ ॥ यस्यासी न्मधुसूदन स्तु जनको वेणी च गोस्वामिजा ऽभून्माता रणछोड़ एप कृतवान् राज प्रशस्त्याव्हयं ॥ काव्यं सान्वयराजसिंहसुगुणश्रीवर्णनाढ्यं महद्वीराकं समभू त्तृतीय इह सत्सर्गः सुसर्गः स्फुटं ॥ ३६ ॥ इतिश्रीतैलंगज्ञातीय कठोड़िकवि पण्डितोपनाममधुसूदनभट्ट पुत्ररणछोड़कृते राजप्रशस्त्याव्हये महाकाव्ये तृतीयः सर्गः सम्वत् १७३२ वर्षे माघी १५ राजसमुद्र प्रतिष्ठा.

श्रीगणेशायनमः ॥ कलितहलिनिचोलो नीललोलोतिकेसौ तरुरिति धृत- वस्त्रा वेगतो यत्र गोप्यः ॥ विदधति जलकेली यंच सिंचंति सोस्मा न्सुंखयतु यमुनाया स्तीरवर्ती तमालः ॥ १ ॥ तस्य पुत्रो नरपती रानास्य जसकर्णकः ॥ तत्सुतो नागपालोस्य पुण्यपालः सुतोस्यतु ॥ २ ॥ पृथ्वीमल्लः सुतस्तस्य पुत्रो भुवनसिंहकः ॥ तस्य पुत्रो भीमसिंहो जयसिंहो स्य तत्सुतः ॥ ३ ॥ लक्ष्मसिंह स्त्वेप गढमंडलीकाभिधो स्य तु ॥ कनिष्ठो रत्नसी भ्राता पद्मिनी तत्प्रिया भवत्

॥ ४ ॥ तत्कृते ह्लावदीनेन रुद्धे श्रीचित्रकूटके ॥ लक्ष्मसिंहो द्वादशस्वभ्रातृभिः सप्तभिः सुतैः ॥ ५ ॥ सहितः शस्त्रपूतोसौ दिवं यातो ऽस्यचात्मजः ॥ एक-उर्वरितो जेसी राज्यं चक्रे ततोरसी ॥ ६ ॥ जेष्टः सुतः पितुः संगे योहतो तत्सुतोदधे ॥ राज्यंहमीरोदानींद्रो मुर्द्धगंगाप्रदर्शकः ॥ ७ ॥ विग्रहे लिंद्रसरसि श्रीमूर्तिं स्फाटिकीं धृतां ॥ नप्राप्तां सुस्थसमये एकलिंगस्य तद्यधात् ॥ ८ ॥ मूर्तिं चतुर्मुखीमेतां श्यामां श्यामायुतां ततः ॥ क्षेत्रसिंहस्ततोलाखा लक्षदो मोकल स्ततः ॥ ९ ॥ भ्रातृरावतवाघस्या ऽनपत्यस्य फलाप्तये ॥ वाघेलाख्यं तडागं तन्नाम्ना नागहृदे करोत् ॥ १० ॥ त्रिद्वारं स्फटिकाभाश्म जुष्टं कैलासवन्नृपः ॥ प्राकारमुत्तमाकार मेकलिंगप्रभोर्व्यधात् ॥ ११ ॥ कृत्वायं द्वारिकायात्रां शंखोद्धारं गतस्ततः ॥ सिद्ध एकोस्य पत्न्यास्तु गर्भे राज्याप्तये विशत् ॥ १२ ॥ सकुंभकर्णो भूत्पुत्रो मोकलस्या स्य मस्तकात् ॥ स्रवतिस्म जलं गांगं प्रसिद्धमिति निश्यभूत् ॥ १३ ॥ कुंभकर्णोथभूपोभूद् दुर्गकुंभलमेरकृत् ॥ स शोडपशतस्त्रीयुक् रायमल्लोथ राज्यकृत् ॥ १४ ॥ संग्रामसिंहस्तत्पुत्रः सद्विलक्षमितैर्भटैः ॥ युक्तो बाबरदिल्लीशदेशे फत्तेपुरावधिः ॥ १५ ॥ गत्वात्रपीलियाखाल परिधिं पर्यकल्पयत् ॥ स्वदेशसीमानमयं रत्नसिंहो थ राज्यकृत् ॥ १६ ॥ तद्भ्राता विक्रमादित्यो भूपो भूत्तस्य सोदरः ॥ राना उदयसिंहोथ स दिव्योदयसागरं ॥ १७ ॥ तथोदयपुरं चक्रे तडागोत्सर्गकर्मणि ॥ छीत्रभट्टाय सोदर्यलक्ष्मीनाथयुताय च ॥ १८ ॥ भूरवाडाग्राममदाद्यधाद्दानं तुलादिकं ॥ चित्रकूटे थयोद्धास्य राठोड़ो जैमलो रणं ॥ १९ ॥ पत्तासीसोदिया चक्रे दिल्लीशेन महा-यशाः ॥ अकब्बरेण भटयुग्वीर ईश्वरदासकः ॥ २० ॥ कुलकं ॥ प्रतापसिंहो थ नृपः कच्छवाहेन मानिना ॥ मानसिंहेन तस्यासी द्वैमनस्यं भुजे विधौ ॥ २१ ॥ अकब्बरप्रभोः पार्श्वे मानसिंहस्ततोगतः ॥ गृहीत्वा तद्बलं ग्रामे खंभनोरे समागमः ॥ २२ ॥ तयोर्युद्ध मभूद्घोरं लोहकोष्टगतस्य सः ॥ मानसिंहस्य कुंभींद्रकुंभेशुंभपराक्रमः ॥ २३ ॥ ज्येष्टः प्रतापसिंहस्य अमरेशाभिधः सुतः ॥ कुंतं शकुंतवेगोयं मुमोचा रुणलोचनः ॥ २४ ॥ राणाप्रतापसिंहो थ मानसिंहस्य हस्तिनः ॥ कुंभे कुंतं मुमोचा शु पश्चाद्दंती पलायितः ॥ २५ ॥ समये त्र प्रतापेशं शक्तसिंहो स्य सोदरः ॥ मानसिंहस्य संगस्थो दृष्ट्वैवं स्नेहतो वदत् ॥ २६ ॥ नीलाश्वस्याश्ववारत्वं पश्चा त्पश्य प्रभो ततः ॥ प्रतापसिंहो ददृशे श्वमे-कमथनिर्ययौ ॥ २७ ॥ ततो द्वौमुगलौ वीरौ मानसिंहेनत्वेगतः ॥ प्रेपितौ शक्तिसिंहो पि गृहीत्वाज्ञां महाबलः ॥ २८ ॥ मानसिंहस्यमुगलौ प्रतापेंद्रेणसंगरं ॥ चक्रतुः श्रीप्रता-पेन शक्तिसिंहेन तौ ततः ॥ २९ ॥ निहतौ हितकारीति शक्तिसिंहः सहोदरः ॥ राणेनोक्तं शक्तिसिंह वंश्यास्तद्राणवल्लभाः ॥ ३० ॥ अकब्बर इहायात स्तत श्चक्रे स संगरं

प्रतापसिंहं वलिनं मत्वा शेरब्बुनामकम् ॥ ३१ ॥ संस्थाप्यात्र सुतं ज्येष्ठ मागरां प्रति निर्ययौ ॥ अमरेशः खानखाना दाराणां हरणं व्यधात् ॥ ३२ ॥ सुवासिनीव त्सं तोष्य प्रेषयामास ताः पुनः ॥ खानखानस्या द्भुतं तज्जातं शेखूमनस्यपि ॥ ३३ ॥ ततः शेखूजहांगीर नामा दिल्लीश्वरो भवत् ॥ पुनरत्रागतो युद्धं कृत्वा खुर्रमनामकं ॥ ३४ ॥ संस्थाप्यात्र सुतं स्वीयं रुद्धं कृत्वा प्रतापिनं ॥ प्रतापसिंहं चतुरा शीतिसैन्यै र्वृतंगतः ॥ ३५ ॥ दिल्लीं प्रति प्रतापेशो घट्टे देवेरनामके ॥ सुलतानं सेरिमाख्यं च कुंताख्यं गजस्थितं ॥ ३६ ॥ दिल्ली शस्य पितृव्यं तं वीक्ष्याभू त्संमुख स्ततः ॥ सोलंकिभृत्य श्चिच्छेद गजांघ्रिं पडिहारकः ॥ ३७ ॥ प्रतापसिंहो राणेंद्रो रणेरवणविक्रमः ॥ शकुंतवेगः कुंतेन कुंभिकुंभं बभंज सः ॥ ३८ ॥ पपात कुंभी तुरग मारुरोहाथ सेरिमा ॥ अमरेशः स्वकुंतेन न्यहनत्सेरिमाभिधं ॥ ३९ ॥ स कुंतः सशिरस्त्राणवर्माश्वं त मखंडयत् ॥ अमरेश कराकृष्टः स कुंतो न विनिःसृतः ॥ ४० ॥ तदा प्रतापेंद्राज्ञातो दत्वा लत्तां पदेन सः ॥ कुंतं चकर्षा मर्षेण कुंताप्त्या हर्षमादधे ॥ ४१ ॥ दर्शनीयः स येनाहं निहतः सेरिमा वदत् ॥ प्रतापसिंह स्तच्छ्रुत्वा ऽ प्रेषय त्कंचिदुद्भटं ॥ ४२ ॥ भटं तं वीक्ष्य तेनोक्तं नायं प्रेष्यः सएव तु ॥ राणेंद्रः प्रेशयामास अमरेशं रणोत्कटं ॥ ४३ ॥ तं दृष्ट्वा सेरिमोवाच सोयमस्ति मयेक्षितः ॥ युद्धकाले नभोभूमि व्यापिशीर्ष शरीरवान् ॥ ४४ ॥ दैवेन नहतोहं हि यास्ये स्थानं शुभं ततः ॥ कोसीथलाद्येषुचतुरशीति प्रमितागताः ॥ ४५ ॥ स्थानपालाः प्रतापेंद्रो महोदयपुरे वसत् ॥ दानं ददौ कोपि भाटः प्राप्यो ष्णीपादिकं धनं ॥ ४६ ॥ प्रतापसिंहा द्दिल्लीशं द्रष्टुं यात स्तदंतिके ॥ यदाप्राप्त स्तदाबद्धं तदुष्णीषं करे दधत् ॥ ४७ ॥ गत्वा सलामं कृतवान् दिल्लीशेन तदेरितः ॥ किमिदं सो वदद्राणा प्रतापोष्णीषमित्यतः ॥ ४८ ॥ नधृतं मूर्द्धनि दिल्लीश स्तुतोष ज्ञापिताशयः ॥ तदा समस्ते जगति सर्वै हिंदू तुरुष्ककैः ॥ ४९ ॥ अनम्रः श्री प्रतापेंद्रो वीर इत्थं ददाविति ॥ इतिराणाप्रतापस्य प्रतापः कथितो मया ॥ ५० ॥ इति श्री राजप्रशस्त्या ह्वये महाकाव्ये वीरांके चतुर्थः सर्गः

श्री गणेशायनमः ॥ राना अमरसिंहाख्यो ऽकरोद्राज्यं ततः परं ॥ मानसिंहस्य संग्रामे खानखानावधू हते ॥ १ ॥ सेरिमा सुलतानस्य बधे प्रोक्तो स्य विक्रमः ॥ जहांगीरस्थापितेन खुर्रमेणाथयुद्धकृत् ॥ २ ॥ अबदुल्लहखानेन वक्र श्चक्रे रणं ततः ॥ चतुर्विंशति संख्यै स्तै रुद्धः स्थानेश्वरै रलं ॥ ३ ॥ दिल्लीपते र्भृत्यवरं जघ्ने कायम खानकं ॥ ऊंटालायां मालपुरभंगं चक्रे त्र दंडकृत् ॥ ४ ॥ पुत्रोस्य कर्णसिंहाख्यः सिरोजं मालवाभुवं ॥ घंघेराख्यं बभंजा त्रदंडं चक्रे तिलुंटनं ॥ ५ ॥ ततोजहांगीरा

ज्ञातः खुर्रमोमिलनंव्यधात् ॥ गोघूंदायांसमायातः अमरेशोनिजस्थलात् ॥ ६ ॥ महोदयपुरात्तत्र खुर्रमोपि समागतः ॥ श्लाघ्यरीत्यासादरंतौ सस्नेहौमिलितौततः ॥ ७ ॥ राना अमरसिंहेंद्रो महोदयपुरे ऽवसत् ॥ महादानानि विदधे चक्रे राज्यं सुखान्वितं ॥ ८ ॥ लक्ष्मीनाथास्य भट्टाय गुरवेमंत्रदायिने ॥ राना अमरसिंहेंद्रो होलीग्रामं ददौमुदा ॥ ९ ॥ अथरानाकर्णसिंह श्चक्रे राज्यंपुराकरोत् ॥ सत्कौमार पदेगंगातीरेरूप्य तुलांददौ ॥ १० ॥ शूकरक्षेत्रविप्रेभ्यो ग्रामंपूर्वंतुविद्वरे ॥ धंधेरा मालवा देश सिरोजपुर भंगकृत् ॥ ११ ॥ अखेराजं सिरोहीशं चक्रे शत्रुजितं बलात् ॥ पद्मलक्ष्मांघ्रिकमलः कर्णदानपराक्रमः ॥ १२ ॥ दिल्लीश्वराजहांगीरा त्तस्य खुर्रमनामकं ॥ पुत्रं विमुखतांप्राप्तं स्थापयित्वा निजक्षितौ ॥ १३ ॥ जहांगीरेदिवंयाते संगेभ्रातरमर्जुनं ॥ दत्वादिल्लीश्वरंचक्रे सोभूत्साहिजहांभिधः ॥ १४ ॥ युग्मं ॥ शतेषोड्शकेतीते चतुःषष्ट्यभिधेब्दके ॥ भाद्रशुक्लद्वितीयायां कर्णसिंहनृपादभूत् ॥ १५ ॥ जगत्सिंहोमहेचास्या राठोडजसवंतजा ॥ श्री मज्जांबुवतीतस्याः कुक्षेर्ज्जातोबलीमहान् ॥ १६ ॥ शतेषोडशकेतीते पंचाशीत्यभिधेब्दके ॥ राधशुक्लतृतीयायां राज्यंप्राप जगत्पतिः ॥ १७ ॥ जगत्सिंहाज्ञयामंत्री अखेराजोबलान्वितः ॥ सडूंगरपुरंप्राप्तः पुंजानामाथरावलः ॥ १८ ॥ पलायितः पातितंत च्चंदनस्यगवाक्षकं ॥ लुंटनंडूंगरपुरे कृतंलोकैरलंततः ॥ १९ ॥ जगत्सिंहाज्ञयायातो राठोडोरामसिंहकः ॥ प्रतिदेवलियां सेनायुक्तोरावतमुद्भटं ॥ २० ॥ जसवंतं मानसिंह पुत्रयुक्तंजघानसः ॥ पुर्यांदेवलियायांच लुंटनंरचितंजनैः ॥ २१ ॥ शतेषोडशकेतीते षडशीत्यभिधेब्दके ॥ ऊर्जे कृष्णद्वितीयायां जगत्सिंहमहीपतेः ॥ २२ ॥ पुत्रःश्री राजसिंहोभू द्वर्षांतेअरसीतथा ॥ मेडताधिपराठोड राजसिंहमहीभृतः ॥ २३ ॥ पुत्रीजनादेनाम्नीत त्कुक्षिजाताविमौसुतौ ॥ अभून्मोहनदासाख्यो ऽपारिणीता प्रियाभंवः ॥ २४ ॥ अखेराजंसिरोहीशं वश्यंचक्रे ऽग्रहीद्भुवं ॥ तोगाख्यबालीसा भूपा दखेराजेनखंडितात् ॥ २५ ॥ प्रासादंस्वग्रहेचक्रे मेरुमंदिरनामकं ॥ पीछोलाख्य तटाकस्य तटे मोहनमंदिरं ॥ २६ ॥ जगत्सिंहनृपाज्ञातो बांसवालापुरेगतः ॥ प्रधानोभागचंदाख्यो रावलः सावलोगिरौ ॥ २७ ॥ गतः समरसीनामा ततोलक्षद्वयंददौ ॥ दंडंरजतमुद्राणां भृत्यभावंसदादधे ॥ २८ ॥ बुंदीश शत्रुशल्यस्य भावसिंहाख्यसूनवे ॥ स्वकन्यांविधिनाभूपो दत्वात्रैवददौपुनः ॥ २९ ॥ सप्तविंशतिसंख्यास्तु राजन्येभ्योन्यकन्यकाः ॥ एकलिंगालयेचक्रे हेम कुंभध्वजादिकान् ॥ ३० ॥ वत्सरेष्टनवत्याख्ये शतेषोडशकेगते ॥ दीपावल्युत्सवेबाई राजजांबुवतीव्यधात् ॥ ३१ ॥ द्वारिकातीर्थयात्रां श्री रणछोडस्यसेवनं ॥ तथारूप्यतुलांचक्रे दानान्यन्यानिसादरं ॥ ३२ ॥ गोस्वामिधन्यपदुनाथ सुता

सुवेएये भूमिंहलद्वयमितांपुरआहडाख्ये ॥ तद्भर्तृधीरमधुसूदनभट्टनाम्ना पत्रं विधायचददौ जगतीशमाता ॥ ३३ ॥ राज्यप्राप्तेःसमारभ्य तुलांरूप्यमयीं व्यधात् ॥ प्रतिवर्षंजगत्सिंहो दानान्यन्यानिचातनोत् ॥ ३४ ॥ शतेसप्तदशे पूर्णे चतुराख्येब्दकेशुचौ ॥ सर्वग्रहेजगत्सिंहः संपूज्यामरकंटके ॥ ३५ ॥ ज्योतिर्लिंगंतुमांधात्रृ सेव्यमोंकारमीश्वरं ॥ सुवर्णस्यतुलांचक्रे अथप्रत्यब्दमातनोत् ॥ ३६ ॥ स्वजन्मदिवसेमोदा न्महादानंपुराव्यधात् ॥ कल्पवृक्षंस्वर्णपृथ्वींसप्तसागरनामकं ॥ ३७ ॥ विश्वचक्रं क्रमादस्मिन्वर्षेमाता जगत्पतेः ॥ श्रीमज्जांबुवतीबाई प्रतस्थेतीर्थदृष्टये ॥ ३८ ॥ कार्तिकेमथुरायात्रां चक्रेगोकुलदर्शनं ॥ श्रीगोवर्द्धननाथस्य दीपावल्यन्नकूटयोः ॥ ३९ ॥ अपश्यदुत्सवंतूर्जपौर्णमास्यांतुशौकरे ॥ क्षेत्रेगंगातटेचक्रे तुलांरूप्यस्यचातनोत् ॥ ४० ॥ वीकानेरेश्वकर्णस्य सुतारामपुराप्रभोः ॥ हठीसिंहस्यसत्पत्नी उदारानंदकुंवरिः ॥ ४१ ॥ मातामह्याजांबुवत्याः संगेरूप्यांतुलांव्यधात् ॥ पूर्ववर्षेजांबुवत्या आज्ञयानंदकुंवरिः ॥ ४२ ॥ श्रीजांबुवत्याअग्रेमां स्थापयित्वामुदाददौ ॥ रणछोडायमह्यंसा दानंसोमामहेश्वरं ॥ ४३ ॥ प्रयागेराजततुलां काश्ययोध्यादिदर्शनं ॥ कृत्वाग्रहेसमायाता चक्रेरूप्यतुलागणं ॥ ४४ ॥ वेणिमाकार्यगोस्वामि तनयांमधुसूदनं ॥ तत्पतिंश्रीजगत्सिंह स्त्रियासोमामहेश्वरं ॥ ४५ ॥ अदापयत्कृतंदानं श्रीमज्जांबुवतीयथा ॥ राणाअमरसिंहस्य राज्ञीभिर्दत्तमादितः ॥ ४६ ॥ इदंदानंयथैवाभ्या मद्यावधिमितिंवदे ॥ विंशत्संमितदानानि आभ्यांलब्धानितत्स्फुटं ॥ ४७ ॥ अस्मिन्वर्षे पूर्णिमायां वैशाखेश्रीजगत्पतिः ॥ श्रीजगन्नाथरायंस त्प्रासादेस्थापयन्त्रभौ ४८ गोसहस्त्रमहादानं दानंकल्पलताभिधं ॥ हिरण्याश्वमहादानं ग्रामपंचकमप्यदात् ॥ ४९ ॥ मधुसूदनभट्टाय महागोदानमप्यदात् ॥ कृष्णभट्टायसुग्रामभैसडारत्नधेनुदं ॥ ५० ॥ श्रीराणोदयसिंहसुनुरभत् श्रीमत्प्रतापः सुत स्तस्य श्रीअमरेश्वरोस्यतनयः श्रीकर्णसिंहोस्यवा ॥ पुत्रोरानजगत्पतिश्चतनयो स्माराजसिंहोस्यवा पुत्रःश्रीजयसिंह एषकृतवान्सत्प्रस्तराऽऽलेखितं ॥ ५१ ॥ वीराकंरणछोडभट्टरचितं द्वात्रिंशदाख्येब्दके पूर्णेसप्तदशेशततपसिवा सत्पूर्णिमायांतिथौ ॥ काव्यंराजसमुद्रमिष्टजलधेः श्रीराजसिंहेनवा सृष्टोत्सर्गविधेः सुवर्णनमयं राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ ५२ ॥ इति पंचमःसर्गः

श्रीगणेशायनमः ॥ शतेसप्तदशेपूर्णे नवाख्येब्देकरोत्तुलां ॥ रूप्यस्यसांगं चक्रेऽथा फाल्गुनेकृष्णपक्षके ॥ १ ॥ द्वितीयादिवसेराज्यं राजसिंहोनरेश्वरः ॥ राज्ञोभूरटियाकर्ण नाम्नोज्येष्ठायसूनवे ॥ २ ॥ अनूपसिंहायददौ स्वसारंविधिना

नृपः ॥ क्षत्रेभ्यो ऽदाद्बंधुकन्या एकसप्ततिसंमिताः ॥ ३ ॥ कुलकं ॥ शतेसप्त दशेपूर्णे दशास्ब्येब्देतुपौपके ॥ कृष्णैकादशिकायांतु राजसिंहनरेश्वरात् ॥ ४ ॥ पवारइन्द्रभानाख्य रावस्यतनयातुया ॥ सदाकुंवरिनाम्नीतत् कुक्षेर्जातोजगत् प्रियः ॥ ५ ॥ जयसिंहाभिधः पुत्रः पवित्रश्चित्रकेलिकृत् ॥ संजातो जगदाल्हाद चन्द्रमाः कीर्तिचन्द्रवान् ॥ ६ ॥ भीमसिंहः पुत्रश्चास्ते गजसिंहः सुतस्तथा ॥ सूर्यसिंहाभिधः पुत्र इन्द्रसिंहः सुतस्तथा ॥ ७ ॥ सबहादुर-सिंहः श्री राजसिंहात्मजास्तथा ॥ सनरायणदासोवा ऽपरिणीताप्रियाभव ॥ ॥ ८ ॥ आरम्य कौमारपदात्सर्वर्त्तु सुखलब्धये ॥ श्रीसर्वर्त्तुविलासाख्यं स्वारामंकृत-वान्नृपः ॥ ९ ॥ वाप्यांक्षीरनिधौधन्यो लक्ष्मीयुक्तोविराजते ॥ नारायण गुणोराणा नौकाशेपफणाश्रयः ॥ १० ॥ शतेसप्तदशेपूर्णे वर्षेएकादशेत्विषे ॥ अजमेरौसाहिजहां दिल्लीशंतंसमागतं ॥ ११ ॥ श्रुत्वाथराजसिंहेन्द्रं श्चित्र-कूटेसमागतं ॥ नसादुल्लहखानाख्यं दिल्लीश वरमन्त्रिणं ॥ १२ ॥ प्रेपया मासतत्पार्श्वे भट्टंतुमधुसूदनं ॥ व्यंठोडीवंशतैलंगं सगतः खानसन्निधौ ॥ १३ ॥ खानः पंडितसंबुद्ध्या भट्टंप्रत्युक्तवान्कथं ॥ गरीबदासोराणेन कथमाकारितोतथा ॥ १४ ॥ झालाख्यरायसिंहश्च भट्टेनोक्तंसदादितः ॥ जातमेवं प्रतापाख्य रानाभ्रातारणोत्कटः ॥ १५ ॥ शक्तसिंहोमेघनामा रावतोमेदपाटतः ॥ आयातः स्थापितोदिल्ली नाथेनकिलतोपुनः ॥ १६ ॥ मेदपाटेसमायातो चकार परमेश्वरः ॥ इतिस्वामिप्रमुक्तानां राजन्यानांस्थलद्वयं ॥ १७ ॥ खानेनोक्तंसत्य मेतत् पुनः खानस्ततोवदत् ॥ रानेशस्याश्ववाराणां संख्यांकथयपंडित ॥ १८ ॥ पड्विंशतिसहस्त्राणि भट्टेनोक्तंसउक्तवान् ॥ दिल्लीशस्याश्ववाराणां लक्षसंख्यास्ति तत्कथं ॥ १९ ॥ कार्यं – – नभट्टेन प्रोक्तंखानशृणुस्फुटं ॥ दिल्लीशस्याश्व वाराणां लक्षंराणामहीपतेः ॥ २० ॥ सद्विंशतिसहस्त्राणि साम्यंस्टटिकृताकृतं ॥ खानोतः कोपवान्खानो जयसिंहस्तदोचतुः ॥ २१ ॥ खानसंगेसाहिजहां दर्शनंचेत्करोत्यहो ॥ राणाकुमारस्तुतदा चतुर्दशमितामया ॥ २२ ॥ देशाद्दिल्ली श्वराद्वाप्या विह्वरेमधुसूदनः ॥ राणसेवांव्यधादेवं स्वामिधर्मामहोक्तिकृत् ॥ २३ ॥ दिल्लीश्वरकुमारस्य संगे ऽस्मत्पूर्वजन्मनां ॥ कुमारामिलनंचक्रू राजसिंहो विचार्यतत् ॥ २४ ॥ सुल्तानसिंहनामकमहाकुमारंतुठकुरैः सहितं ॥ साहिजहां सुतदाराः सकोहसंगेथसंप्रेष्य ॥ २५ ॥ एवंसाहिजहांनेन मिलनंकृतवान्नृपः ॥ राजसिंहोभाग्यदान विक्रमैर्विक्रमार्कवत् ॥ २६ ॥ जनादेनामजननीं चक्रेरूप्य तुलांस्थितां ॥ तथाकारितवान्मंत्र गजदानस्यनिष्क्रयं ॥ २७ ॥ द्रव्यंसंकल्पितंरूप्य

मुद्रापंचशतैर्मितं ॥ मधुसूदनभट्टाय रानेंद्रस्तद्ददौधनं ॥ २८ ॥ युग्मं ॥ राठोडरूप सिंहाख्यं स्वमंडलगढाद्दलं ॥ वैश्यंराघवदासाख्यं प्रेषयन्विद्रुतंव्यधात् ॥ २९ ॥ शतेसप्तदशेपूर्णे त्रयोदशमितेब्दके ॥ हेम्नः स्तौर्द्वद्विशतकं पलैर्ब्रह्मांडकंकृतं ॥ ३० ॥ कार्तिक्यां पूर्णिमायांश्री एकलिंगशिवांतिके ॥ दत्वावेदोक्तविधिना राज सिंहोविराजते ॥ ३१ ॥ पंचमहाभूतमयं ब्रह्मांडंमृज्जलीढयलघुमूल्यं ॥ मत्वासुवर्णपूर्णं कृत्वाब्रह्मांडकंत्वयादत्तं ॥ ३२ ॥ हेमब्रह्मांडदानेन ब्रह्मांडस्थाः क्षितीश्वराः ॥ ब्राह्मणास्तोषितादानं त्वयाब्रह्मार्पणीकृतं ॥ ३३ ॥ हेमब्रह्मांडदानेन ब्रह्मांडस्थां- श्रियंभवान् ॥ स्थापयन्ब्राह्मणगृहे दारिद्र्यंहृतवांस्ततः ॥ ३४ ॥ ब्रह्मांडेराजसिंह प्रभुवरभवता दत्तएवंद्विजेभ्य स्तद्देवास्तद्गृहेवा परनिजतनुभि र्भुंजतेभाबुकंयत् ॥ शंभुर्भूतैर्वि ऽहीनो विधिरपिबहुधा स्टष्टिकार्यानधीनो भानुर्वाशीतभानु र्धरणिध- रमणे भ्रांतिदुःखाद्विमुक्तः ॥ ३५ ॥ ब्रह्मांडेराजसिंहः प्रभुवरभवता दत्तएवद्विजेभ्यः क्रीडार्थंतत्सुतानां भवतइनविधू कंदुकौलोलगोलौ ॥ आरोहार्थंचनंदी द्रुहिण- सितमहा हंसकौपंचवक्त्र श्चित्रायानेकनेत्रोभ – – सुरपति स्तर्जनार्थंगजस्य ॥ ३६ ॥ श्रीराजसिंहनृपतिः कलिकालमध्ये कर्तुंनयोग्यमतुलं हयमेधकर्म ॥ प्राप्तुंसम- स्तमधुना हयमेधधर्मं पूर्णेतुसप्तदशके शतकेसुवर्षे ॥ ३७ ॥ एकोनविंशतिसुना म्निचपौषमासे एकादशीशुभदिने किलशुक्लपक्षे ॥ मन्वादिदिव्यदिवसे मधुसूद- नाय तैलंगसद्गुरु कुलस्थकठोडिकाय ॥ ३८ ॥ श्वेताश्वमुच्चतममुच्च गुणातिगेय मुच्चैश्रवः सममहो विधिनैवदत्वा ॥ पल्याणहेमगणमेरु समंचभाति प्रायोहरि र्गुरुगुरो र्गुरुरर्चनेन ॥ ३९ ॥ संस्थाप्यतत्रनवला दितुरंगधन्य स्कंधेसदुक्तिमधुरं मधुसूदनाख्यं ॥ सत्सप्तविंशतिपदानिहयस्यगछ न्नग्रस्थएवधृतवा न्हयमेधधर्मं ॥ ४० ॥ सिंहासनेस्फुरित चामरवीज्यमाता छत्रोपिशोभितइवा रचिताश्वमेधं ॥ श्रीरामचंद्रइवभाति सुलक्ष्मणाढ्यः श्रीराजसिंहनृपति र्नृपसिंहएषः ॥ ४१ ॥ नवलाख्यतुरंगाय हेमपल्याणमेरुगं ॥ कृतवानुचितंभूपो विबुधंमधुसूदनं ॥ ४२ ॥ राणाश्रीराजसिंहादि सुखापाठकमुख्यकैः ॥ अग्रेसरैर्जनैर्युक्तो विभातिमधुसूदनः ॥ ४३ ॥ श्वेताश्वेदत्तमत्ते त्वतिहयमवस त्पुण्यतोभास्वरोदा त्लोकश्रीमेदपाटो भवदतिललिता तेसभासौसुधर्मा ॥ जिष्णुस्त्वंसत्सहस्त्रेक्षणइहविबुधव्रातकारु- ण्यदृष्टौ तुष्टोजेतासुराणां गुरुगुणगुरुता स्थापकोयुक्तमेतत् ॥ ४४ ॥ दानस्य- चास्यनव दित्यसहस्त्रसंख्या दत्वागुणज्ञगुरुरेष सुरूप्यमुद्राः ॥ काशीनिवास- मथका रितवान्नरेंद्रः स्वस्यापिपुण्यकृतये मधुसूदनस्य ॥ ४५ ॥ विश्वेशदर्शन- विधौ मणिकर्णिकाया स्ता – – तार्थ कृतिपत्तनदेवतानां ॥ पूजासदाशि – महो नृपराजसिंहः वीरो – – – – – – मधुसूदनाख्यं ॥ ४६ ॥ इतिषष्टमसर्गः ॥

॥ श्रीगणेशायनम : ॥ शतेसप्तदशेपूर्णे चतुर्दशमितेब्द्के ॥ राधशुक्लदशम्यांतु जैत्रयात्रांनृपोव्यधात् ॥ १ ॥ मध्योद्यद्भानुबिंबा द्विजपतिविनुता मंगलाद्याबुधाति स्तुत्वाजीवातितंद्या: कविकृतनुतयो ऽ मंदरूपप्रकाशा: ॥ विस्फूर्जत्सैंहिकेया विद्धतिचलनं केतव: किंग्रहास्ते अग्रेसोग्रप्रतापा स्तवविजयकृते राजसिंहेतिजाने ॥ २ ॥ पार्श्वस्थगोलकच्छद्म मुंडमालाअनास्थिता: ॥ भांतिस्वच्छा: शत्रुभक्षा: कालिका: किलनालिका ॥ ३ ॥ किंमृत्युदंष्ट्रा: किंशत्रुप्राणसंस्थानकंदरा: ॥ किंवारिलोकभुग्नक्र चक्रास्यानीहनालिका: ॥ ४ ॥ किंवावीररसाब्धिरेवविलसत् कल्लोलमालोन्नत: किंवादिक्करुणी कटाक्षपटले नालंबित: सीत्कृत: ॥ किंवारै: स्फुटमेकलिंगमतितो नीलाब्जपत्रांचितो रानेंद्र: कवचंदधत्सुकचिरं लोकैरिति प्रोच्यते ॥ ५ ॥ ततोदुंदुभीनां निनादप्रताने र्महाकाहलानां च कोलाहलैश्च ॥ तथासैंधवैश्चापि वादित्रशब्दै र्हयानांचचीत्कारवीरैरपारै: ॥ ६ ॥ त्रिलोकीमहा मंडलंयत्वखंडं जना:खंडखंडं बभूवेत्यथोचु: ॥ धरित्रीविचित्रीभवत्कंपनार्त्ता स्फुरद्दिग्गजा: कंदुकी भावमापु: ॥ ७ ॥ सभूलोकमुख्याखिला ऊर्द्ध्वलोका स्तलाद्या स्तथा सप्तलोकाअध: स्था: ॥ सकंपा:समुद्राप्तभंपा: सशंपा स्तदा ऽ भ्रेबभूवु स्तथाभ्राअशुभ्रा: ॥ ८ ॥ जवेनोच्छलंतिस्म सर्वेसमुद्रा स्तथा ऽ क्षुद्ररूपाश्च भद्रास्तटिन्य: ॥ महीध्रास्तथा उच्छिलींध्रानुकारा: पतंतिस्मवृक्षा: सदृक्षा: क्षतांगै: ॥ ९ ॥ अलंम्लेच्छसीमस्थिता: सर्ववीरा स्तथामानुपा मंक्षुदिक्षुस्थिताश्च ॥ विदीर्णीकृतोद्यक्षसो ऽ नच्छकर्णा वमंतिस्मरक्तं सुरक्तंमुखेभ्य: ॥ १० ॥ हयालीखुरोद्धूतधूलीमधूलीं गजेभ्योमदार्द्रांच कर्णाशुगोत्थं ॥ पिबंतिस्फुटं शत्रुपक्षावलानां गुडारूपलोलालकालिंद्विरेफा: ॥ ११ ॥ महोदयपुरादग्रे भांतिनाखर्वपर्वता: ॥ तन्मन्ये त्वत्तुरंगाली खुरैश्चूर्णीकृताश्चिरं ॥ १२ ॥ रिंगत्तुरंगखुरराजिरज: समूहै र्नद्यो जलाशयगणा: स्थलभावमापु: ॥ दृष्ट्वाजगद्गतजलं सभयोमहेंद्रो ज्येष्ठेपिवर्षणमहो सहसाचकार ॥ १३ ॥ युष्मज्जैत्र प्रयाणश्रवण विगलित प्राणनि: प्राणकानां म्लेच्छानांच्छादनार्थं भवतिहयखुरो त्खातधूलीसमूह: ॥ माद्यन्मातंगगल्लस्थलगलदतुलोद्दामदानांबुवृंदैर्हिंदूकानां निवापांजलिसलिलकृते म्लेच्छपक्षस्थितानां ॥ १४ ॥ रिंगद्दंतावलानां पद भरविगल द्भूमिसंभूतगर्ता: प्रोल्लोलत्कर्णवातै: प्रचलितविलस त्पर्वतानामखर्वा: ॥ ग्रावाण: प्राणहीन प्रतिभटकुटिल म्लेच्छकानांतनूनां प्रक्षेपाच्छादनार्थं स्वत इहनृपते जैत्रयात्रासुजाता ॥ १५ ॥ अंगोजातप्रभंगो भवतिभयभृतोत्संगरंग: कलिंगो बंग: पूर्णार्तिसंग: कलकलकलितोप्युत्कलोनि: कलश्च ॥ शैथिल्यं

मैथिलेपि स्फुरतिभयमय क्रोडकोगौडलोको देशः पूर्वोविगर्वस्तव विजयकृते प्रासपाणेः प्रयाणे ॥ १६ ॥ लंकातंकाकुलाभूत्करगलदवला कंकणाकुंकणाशा कर्णाटः सत्कपाटश्चलइहमलयो द्राविडोद्रावितेशः ॥ देशश्चोलश्चलोलश्चपलइह भयात्केतुवत्सेतुबन्धः श्रीराना राजसिंह प्रभुवरभवतो जैत्रयात्रोत्सवेषु ॥ १७ ॥ सौराष्ट्रो हीनराष्ट्रः प्रभवति सकलो वाच्छदेशोप्यनच्छं ठट्ठाहट्टाविहीना विगलतिवलको रोमधर्त्ता – – – ॥ खंधारः साधकारो धनददिगधुनानिर्धना धावतेद्धा श्रीराणा राजसिंह क्षितिधवभवतो जैत्रयात्रोत्सवेस्मिन् ॥ १८ ॥ दरीबाजनास्ते दरीबासभाजो जनामांडिलस्था स्तथास्थंडिलस्थाः ॥ जनाः फूलियायां शिरोधूलियासा स्त्वदीयप्रयाणे खुमानेशरत्न ः ॥ १९ ॥ राहेलायाश्री वहेलाश्रीनचेलासुयोपितः ॥ सर्व्ववेलासुचीवेला भर्त्तृहल्लाकृनोभवत् ॥ २० ॥ एषासाहिपुराप्रवाहितसुखा साकेकरीकिंकरीभावं वा विदधातिमंक्षुसमयाऽकुक्षिंभरिः सांभरिः ॥ भ्राजज्जाजपुराधिभाजनमहो दुःखावरः सावरः श्रीराणामणि राजसिंह भवतिलजैत्रयात्रोत्सवे ॥ २१ ॥ गौडजातीयभूपानां देशः क्लेश विशेषवान् ॥ अनच्छः कच्छवाहानांजैत्रयात्रासुतेभवत् ॥ २२ ॥ रणस्तंभ संस्थारणस्थंभयुक्ताः प्रमत्तेतरास्तेपिफत्तेपुरस्थाः ॥ वयानाजनादूरसंसृष्टयाना जयार्थप्रयाणेखुमानेशतेस्युः ॥ २३ ॥ मेरौलक्ष्म्याजमेरौ विषयउरुभयं जायते स्फीतफेरौक्रोडाद्याभंतितोडाद्यवनिपुगलितत्राणमानावयाना ॥ धत्तेफत्तेपुरंनक्षणमपिनसुखं दक्षयुद्धेतवाद्धा श्रीराणाराजसिंह क्षितिपजयकृतेऽमानमानेप्रयाणे ॥ २४ ॥ पूर्वमेवाखर्बगर्वलुंटितं भवतोभटैः ॥ दरीबानगरंशून्यं दरीभावंसमादधे ॥ २५ ॥ मंडपास्तेमांडिलस्य श्रितायोधैस्तुतद्भटाः ॥ द्विविंशतिसहस्राणि रूप्य मुद्रावले ददुः ॥ २६ ॥ बनहेडास्थितावीरा रानेंद्रभवते ददुः ॥ षड्विंशति सहस्रोद्य द्रूप्यमुद्रा करंपरं ॥ २७ ॥ धीरा शाहपुरावीरा रानेंद्रभवते ददुः ॥ द्वाविंशति सहस्रोद्य द्रूप्यमुद्राकरेवरं ॥ २८ ॥ तोडायां प्रेषयित्वा भटपटलभृतौ रायसिंहस्य राज्ञः फत्तेचंदं सहस्र त्रयमितसुभट भ्राजमानं प्रधानं ॥ षष्टिस्फूर्जत्सहस्रप्रमितरजतसन् मुद्रिका संख्यदंडं तन्मात्रा संप्रणीतं प्रहरदशकत स्त्वं गृहीत्वा विभासि ॥ २९ ॥ अहो वीरमदेवस्य पुरं महिरवं परं ॥ राजन्वन्हौ जुहोति स्मकोपिकोपोद्भटोभटः ॥ ३० ॥ भवान् मालपुरे रान लक्ष्मीमालाति लुंटनं ॥ शौर्या लोके रचितवा ल्लोकै नेवदिना वधि ॥ ३१ ॥ युष्मद्रिंगत्तुरंगप्रचुरखुरपुटैश्चूर्णितानां पुरेस्मिन् पूर्णानां शर्कराणां पटुकरटिघटा कर्णतालप्रवातैः ॥ उड्डीतानां समूहै र्जलनिधयइमे पूरिता क्षारभावं मुक्त्वामिष्टत्वभाजः कृतइति भवता भूप विश्वोपकारः ॥ ३२ ॥ जातेमालपुरस्य लुंटनविधौ सच्छर्कराणांपुरः

कर्पूरप्रकरस्य वाहयखुरप्रोद्भूतशुभ्रंरजः ॥ उड्डीनं गगनेविभातिभवतो भूयोमया तर्कितं श्री रानामणिराजसिंहनृपतेः कीर्तेः प्रकाशः परः ॥ ३३ ॥ गुच्छवद्गुच्छ हारास्ते कनकं कनकोपमम्॥ प्रवालवत् प्रवाला श्च प्राचुर्याल्लुंटने भवत् ॥ ३४ ॥ सुकर्बुराः सुदुर्वर्णाः सद्वरिष्ठाः प्रवालकाः॥ हट्टेभ्य श्च गृहेभ्य श्च संप्राप्ता लुंटने जनैः ॥ ३५ ॥ सुजातरूपकं तीक्ष्ण श्वेतशोभं जनै र्मुहुः॥ नानाम्लेच्छमुखं दृष्टं पतितं पथिलुंटने ॥ ३६ ॥ लुंटने लुंटनकरै र्लुंटितं येन यत्वया॥ तस्मै प्रदत्तं तद्दृष्ट्वा तवो दारं चरित्रता॥ ३७॥ प्राप्ता भूपालतां रंका निःशंका धनलाभतः॥ लुंटने पुरभूपा स्तु निर्धना रंकतां गताः ॥ ३८ ॥ लक्ष्मीसन्मणिकल्पवृक्षसुरभी हालाधनुर्वाजिनः शंख श्चंद्रसुधागजेन्द्रसुमनः स्त्रीवैद्यविद्याधराः ॥ लोके मौल पुरोल्लसज्जलनिधे र्मंथेषु रत्नान्यलं लब्धानीतिविचित्र मत्र न विषं केनापि लब्धं क्वचित् ॥ ३९ ॥ सुवर्णमूल्यस्यतु रूप्यमुद्रिकासद्वस्तुनो मूल्य मभूद्विलुंटने ॥ सद्रूप्य मुद्रा मितवस्तुनः पुनः कर्षोपि कर्षस्य वराटकं तथा ॥ ४० ॥ स्वीय ब्राह्मण मंडली कृतमहा होमाग्नि होत्रोष्टभिर्यज्ञैर्भूरि घृतादि वस्तु रचिता जीर्णस्य शांत्यैमुखे ॥ वन्हेर्मौल पुरस्थ भौप धमयं होमीकृतं सृष्ट्वा न्मन्ये खांडवमेष पांडव इव श्रीराजसिंहोन्नृपः॥ ४१ ॥ टोंकंच सांभरि ग्रामाल्लालसोटिंच चाटसूं ॥ रानेंद्र सुभटा जित्वा दंडयित्वा बभुर्भृशं ॥ ४२ ॥ राना अमरसिंहोत्र वलीया मद्वयं स्थितः॥ राजसिंहः स्थितस्तत्र चित्रं नवदिना वधि ॥ ४३ ॥ घनांबु-युक् छाइनि निम्नगा ऽगता नदीभवत्ये वहिनीच गामिनी॥ विघ्नकृतो नीच तया तया ततः श्रीराजसिंहः स्वपुरे समागतः॥ ४४ ॥ मनोज्ञ तरुणी गणाश्रितग वाक्षपक्षद्वये विचित्र पटघट्ट – – – – – – – – – – – – ॥ समुद्भट भटै र्युते करटि सद्घटा टोपकं महोदयपुरे नृपः प्रविशतिस्म वीरोन्नतः॥ ४५ ॥ इति राज प्रशस्ति महाकाव्ये सप्तमः सर्गः

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ सते सप्तदशे तीते चतुर्दश मितेब्दके ॥ शिविरेच्छा इनि नदी तीरस्थे ज्येष्ठमासके ॥ १ ॥ औरंगज़ेबं दिल्लीशं जातं श्रुत्वा थ तन्मुदे॥ अरिसिंहं प्रेपितवान् भ्रातरं नृपति स्ततः॥ २ ॥ अरिसिंहं सिंहनद प्रयांतं गत-वान् ददौ॥ अरिसिंहाय दिल्लीशः सडूंगर पुरादिकान् ॥ ३ ॥ देशान् गजादि तत्सर्वं अरिसिंहः समर्पयत्॥ श्रीराजसिंह चरणे सोस्मै योग्यं ददौ मुदा ॥ ४ ॥ गते शते सप्तदशे तु वर्षे चतुर्दशाख्ये चहुवाण वर्य्ये ॥ सूजाख्य सोदर्य वरेण युद्धं औरंगज़ेबस्य वितन्वतोस्य ॥ ५ ॥ मुदे कुमारं सिरदारसिंहं संप्रेपयामास नृपः पुरैवः ॥ औरंगज़ेबस्य पुरःस्थितोसौ रणे कुमारो जयवान्स जातः ॥ ६ ॥

ऑरंगज़ेब: सिरदारसिंह वीराय देशाश्च गजाद्य दात्स: ॥ राणांघ्रि पद्मेर्पयदेव सर्वं योग्यं स चास्मै प्रददे नृपेन्द्र: ॥ ७ ॥ पूर्णे सप्तदशे शते नरपति: सत्षोडशाख्ये ब्दके आकार्योत्त मठक्कुरैर्गिरिधरं तं डूंगराद्ये पुरे ॥ सद्राज्यं किल रावलं विदधता कृत्वात्मन: सेवकं प्रेम्णा स्मै प्रददौ सु योग्य मखिलं सेवां व्यधाद्रावल: ॥ ८ ॥ शते सप्तदशे पूर्णे वर्षे शोडष नामके ॥ श्रावणे तु बसाडाख्य देशं दृष्टुं नृपो ययौ ॥ ९ ॥ भटै रुद्भटै रावलाद्यै र्बलाढ्यै: प्रचंडश्च वेतंडवर्यै रुपेता ॥ गृहीत्वा महावाहिनी राजसिंह: प्रतस्थे वसाड प्रदेशे क्षणाय ॥ १० ॥ ततो दुंदुभि: प्रोच्चशब्दै र्जिताब्दारवै: पार्श्वदेशस्थितानां जनानां ॥ विदीर्णानि वक्षांसि वक्षो बिभिन्नं महारावतस्यापि नश्यद्दलस्य ॥ ११ ॥ झालोद्यत्सुलतानाख्यचौहाणं तं महाबलं ॥ रावं सबलसिंहाख्यं रघुनाथाख्यरावतं ॥ १२ ॥ चोंडावत्मुहकम्सिंह शक्तावत्तोत्तमंतथा ॥ एता न्पुरोगमा न्कृत्वा एतेषां बाहु माश्रयन् ॥ १३ ॥ सरावतो हरीसिंहो ययौ देवलियापुरात् ॥ आगत्य राजसिंहस्य राजेंद्रस्य पदेपतत् ॥ १४ ॥ रूप्यमुद्रा सुपंचा शत्सहस्त्राणि न्यवेदयत् ॥ मनरावत नामानं करिणं करेणी मपि ॥ १५ ॥ शते सप्तदशे पूर्णे वर्षे पंचदशाभिधे ॥ वैशाखे कृष्णनवमी दिवसे भौमवासरे ॥ १६ ॥ महाराजसिंहाज्ञया वाँसवाले क्षणार्थं फतेचन्द मंत्री प्रतस्थे ॥ चमूं पंचराजत्सहस्त्राश्ववारै र्महाठक्कुरै र्गुंठितां तां गृहीत्वा ॥ १७ ॥ तत: समरसिंह स्य रावलस्या बलस्य वै लक्षसंख्यारूप्यमुद्रा देश दानं च हस्तिनीं ॥ १८ ॥ गजं दंडं दशग्रामान् कृत्वा ऽ पातयदंघ्रिपु ॥ राणेंद्रस्य फतेचंदो भृत्यंकृत्वैवरावलं ॥ १९ ॥ दशग्रामान् देशदानं रूप्यमुद्रावले र्नृप: ॥ सद्विंशतिसहस्त्राणि रावलाय ददौमुदा ॥ २० ॥ श्रीराजसिंह वचनात् फतेचंद: सठक्कुर: ॥ चक्रे देवलियाभंगं हरिसिंह: पलायित: ॥ २१ ॥ हरिसिंहस्य मातातु गृहीत्वा पौत्रमागता ॥ प्रतापसिंहं विदधे प्रसन्नं राणमंत्रिणं ॥ २२ ॥ रूप्यमुद्रासहस्त्राणि विंशत्याख्यानि हस्तिनी ॥ दंडंप्रकल्प्यस्वल्पंस फतेचंदोदयामय: ॥ २३ ॥ राणेंद्र चरणाभ्यर्णे आनयामास तंबलात् ॥ प्रतापसिंहं जातस्तत् फतेचंद: प्रभो: प्रिय: ॥ २४ ॥ अखेराजं सिरोहीशं रावं भक्ततमं स्फुटं ॥ प्रेम्णैव वश्यं कृतवान् राजसिंहो महीपति: ॥ २५ ॥ शते सप्तदशे पूर्णे षोडशेब्दे थ फाल्गुने ॥ दहवारी महाघट्टे शैलश्लिष्टे नृपो व्यधात् ॥ २६ ॥ द्विधाक्त कर पत्राभ लोहपत्रोच्च कीलयुक् ॥ वैरिधी पाटनप्रोच्च कपाट युगलं दधत् ॥ २७ ॥ अनर्गल द्विपच्चिंता र्गलरूपा र्गलायुता ॥ सिंह प्रकोष्ट: सत्कोष्टं द्वारं द्विड्वार वारणं ॥ २८ ॥ कुलकं ॥ शते सप्तदशे पूर्णे वर्षे सप्तदशे तत: ॥ गत्वा कृष्णगढे दिव्य महत्या सेनया युत: ॥ २९ ॥

दिल्ली शार्थं रक्षिता या राजसिंह नरेश्वरः ॥ राठोड रूपसिंह स्य पुत्र्याः पाणिग्रहं व्यधात् ॥ ३० ॥ एकोनविंशति स्वब्दे शते सप्तदशे गते ॥ मेवलं देशमतनोत् स्वकीयं तं वलं नृपः ॥ ३१ ॥ मीनान्निर्जल मीना भान् रुध्वा बध्वातिदः करान् ॥ खंडयामासु रधिकं मीना सैन्यं महाभटाः ॥ ३२ ॥ श्रीराणा राजसिंहेन्द्रो मेवलं त्वखिलं ददौ ॥ स्वीय राजन्य धन्येभ्यो वासोह पधनानिच ॥ ३३ ॥ शते सप्त दशे तीते विंशत्या क्षय वत्सरे ॥ श्रीराजसिंह स्याज्ञातः सिरोही नगरेगतः ॥ ३४ ॥ रानावतोरामसिंहः ससैन्यो रावमाकुलं ॥ पुत्रेणोदयभानेन रुद्धंकुलानयद्बलात् ॥ ३५ ॥ अखेराजं तस्यराज्ये स्थापयामास तत्स्फुटं ॥ राणामित्रारि राज्यानां स्थापकोत्थापकाइति ॥ ३६ ॥ शतेसप्तदशे पूर्णे एकविंशतिनामके ॥ वर्षेमार्गेऽसिताष्टम्यां राजसिंहो महीपतिः ॥ ३७ ॥ अनूपसिंह भूपस्य वाघेला बांधवप्रभोः ॥ भावसिंहकुमाराय कन्यामजबकूंवरीं ॥ ३८ ॥ संकल्प्य विधिना दत्वा महाराज न्यपंक्तये ॥ गोत्रजाद्यन्यकन्याना मष्टाग्रां नवतिं ददौ ॥ ३९ ॥ अथायं पाकशालायां राजसिंहो नरेश्वरः ॥ भावसिंहकुमाराद्यै र्बांधवीयैस्तुबाहुजैः ॥ ४० ॥ अस्पर्शभोजिभिः साक मुपविष्टो विशिष्टभाः ॥ कुर्वाणोभोजनं भाति बांधवाये स्तदेरितः ॥ ४१ ॥ श्रीराणा राजसिंहस्य यदन्नमतिपावनं ॥ तज्जगन्नाथ रायस्य प्रसादान्नंनसंशयः ॥ ४२ ॥ तदन्नभोजिनोह्यद्य वयंप्राप्ताः पवित्रतां ॥ हयान्गजान्भूषणानि वरेभ्यो दान् महीपतिः ॥ ४३ ॥ पूर्णेशतेसप्तदशेसुवर्षे तथैकविंशत्य भिधेतुमाघे ॥ सुरूप्यमुद्रा द्विसहस्र हेम कृतांशुभो पस्करपूरितांच ॥ ४४ ॥ सूर्योपरागेतु हिरण्य कामधेनुं महादान मदात्सरूप्यां ॥ व्यधात्तुलां वा गजमौक्तिकाख्यां गजंददौ वीरवरो नरेंद्रः ॥ ४५ ॥ शतेसप्तदशे पूर्णे पंचविंशति नामके ॥ वर्षेमाघे राजसिंहो दशम्यां शुक्लपक्षके ॥ ४६ ॥ बडी ग्रामे तडागस्योत्सर्गे रूप्यतुलां व्यधात् ॥ नामाकरोत्तडागस्य जना सागर इत्ययं ॥ ४७ ॥ ददौ गरीबदासाख्य पुरोहितवरायसः ॥ ग्रामंतु गुणहंडाख्यं तथादेवपुराभिधं ॥ ४८ ॥ षट्लक्षाणि सहस्राणि अष्टाशीति मितान्यहो ॥ लग्नानिरूप्य मुद्राणां तडागेभद्रदायके ॥ ४९ ॥ जनादेनामयुक्तायाः स्वमातुः स्वर्ग संस्थितेः ॥ अर्पयामास सुकृतं राजसिंह इदंनृपः ॥ ५० ॥ तथो दयपुरेत्वस्मि न्दिनेराण नृपोक्तितः ॥ महाराज कुमारश्री जयसिंहो महाश्रिया ॥ ५१ ॥ उत्सर्गं रंगसरस स्तडागस्या करोन्मुदा ॥ महादानानि कृतवा न्वीरो बाल्येति पुण्यकृत् ॥ ५२ ॥ श्रीराणोदयसिंह सूनु रभवत् श्रीमत्प्रतापः सुतस्तस्य श्रीअमरेश्वरो स्यतनयः श्रीकर्णसिंहोपिवा ॥ पुत्रोराण जगत्पतिश्च तनयो स्माद्राजसिंहोस्यवा

पुत्रः श्री जयसिंह एवकृतवान्वीरः शिला लेखितं ॥ ५३ ॥ पूर्णे सप्तदशे शते तपसिवा सत्पूर्णिमाख्ये दिने द्वात्रिंशन्मितवत्सरे नरपतेः श्रीराजसिंह प्रभोः ॥ काव्यं राजसमुद्र मिष्ट जलधे रुत्सर्ग सद्वर्णना संपूर्णं रणछोड भट्ट रचितं राजप्रशस्त्या ह्ययं ॥ ५४ ॥ इतिश्री अष्टमः सर्गः ॥ संवत् १७१८ अषरे संवत् सतरेसे अठारे होतरा वरषे माघमासे कृष्णपक्षे सप्तमी दीवसे बुधवासरे श्री राजसमुद्ररो आरंभरो महोरत कीधो संवत् १७३२ अषरे संवत् सतरेसे बतीसा वरषे माघमासे सुकलपक्षे पूर्णमासी दिवसे वृहसपतिवारे श्री राजसमुद्ररी प्रतिष्टा कीधी श्रीजीराजसमुद्र डोरो दिन ६ माहे फेरयो ने पाछा पधारने तुला सोनारी बेसेने समस्त ब्राह्मण भाट चारणाने दान दीधोजी भट रणछोड़जी पुत्र सुत लषमीनाथ गजधर कल्याण गजधर मोहणजी उरजण केसोजी सुंदरलाल जात सोमपुरा वास उदयपुर ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ वृत्तास्योडुपशोभितः प्रविलसल्लावण्यकल्लोलवान् प्रोल्लोल न्मकराच्छकुंडलधरो राजीव राजीक्षणः ॥ माणिक्योज्वलहीरकोत्तममहा भूपः प्रबा- लै र्लसन् शृंगारामृतसागर स्तव मुदे गोवर्द्धनोद्धारकः ॥ १ ॥ महाराजाधिराजश्री जगत्सिंहे विराजति ॥ वत्सरेष्टनवत्याख्ये शते षोडशके गते ॥ २ ॥ श्रीकुमारपदे पूर्वे राजसिंहो ययौ प्रति ॥ दुर्गं जैसलमेराख्यं पाणिग्रहकृते तदा ॥ ३ ॥ द्वाद- शाब्दवया एव प्रवया इव बुद्धिमान् ॥ द्वादशात्मस्फुरत्तेजा ईदृशीं मति मादधे ॥ ४ ॥ धोयंदासनवाडश्च सिवाली च भिगावदा ॥ मोर्चना चपसुंदश्च खेडी छापर खेडिका ॥ ५ ॥ तासोल मंडावरको भानोग्रामो लुहानकः ॥ वांसोल गुढलीएषां काकरोली मढाइति ॥ ६ ॥ ग्रामाणां सीम्निदृष्ट्वाक्ष्मां तडाग करणोचितां ॥ स्वमनः स्थापयामास वद्धुमत्रजलाशयं ॥ ७ ॥ धर्मकार्ये मतेर्धर्त्ता शत्रोर्हर्त्ता सदारणे ॥ यदाराज्यस्य कर्त्तायं भुवोभर्त्ता भवत्तदा ॥ ८ ॥ शतेसप्तदशेपूर्णे अष्टादशमितेब्दके ॥ मासेमार्गे ययौ द्रष्टुं रूपनारायणं हरिं ॥ ९ ॥ तदैनां वीक्ष्यवसुधां तडागंवद्धु मुद्यतः ॥ पुरोधसा करोन्मंत्रं कार्यस्यादितिसो वदत् ॥ १० ॥ श्रद्धा पूर्णाऽविरोधित्वदिल्लीशेन व्ययोबहुः ॥ द्रव्यस्येति भवेच्चेत्स्या द्राज्ञोकंस्यात्त्रयं ततः ॥ ११ ॥ पुरोहित करश्रीमत् पुरोहितपुरः सरः ॥ पुरोहित जयीराजा कार्यकर्त्तु मथोद्यतः ॥ १२ ॥ अखर्वयोः पर्वतयो रंतरेगो मतीनदीं ॥ रोद्धुंबद्धुं महासेतुं रानेन्द्रो यत्नमादधे ॥ १३ ॥ पूर्णेसप्त दशाभिधे तु शतके स्वष्टादशाख्येब्दके माघेकृष्ण सुपक्षके किलबुधे सत्सप्तमीवासरे ॥ इदक्संख्य इहे दृशाङ्कयुते कालेतुकार्येकृते सख्यातः खलुनामतो पिचसमो

मे वांछितोर्थो भवेत् ॥ १४ ॥ पूर्णोत्रेतिच सप्तसागर दशा साष्टादश द्वीपक श्रेएयास्वीययशः प्रकाश कृतये माऽघोमम स्यात्कचित् ॥ कृष्णः पक्षकरो बुधाः स्तुति कराः सत्सप्तमी दिग्ध्रुव ध्रौव्यार्थं तु जलाशयस्य कृतवान्भूपो मुहूर्त्तग्रहं ॥ १५ ॥ सेतुं बद्धुं बद्धपणे धृतचित्रखनित्रकैः ॥ जनैः खनन मारब्धं लुब्धै श्च धनलब्धये ॥ १६ ॥ तदोद्भटैः षष्ठिसहस्रसंमितैः समुद्रसर्गे सगरात्मजै र्यथा ॥ अकारि भूमेः खननं तथांबुधिं कर्तुं द्वितीयं रचितं नृकोटिभिः ॥ १७ ॥ असंख्ये खनने तत्र जायमाने जनैः कृते ॥ पृथिव्यां पृथवोजाता मृत्तिकौघेन पर्वताः ॥ १८ ॥ महत्कार्यं महाराणा मत्वा साधारणै र्जनैः ॥ नभवेत्तत्स्वयंस्थित्वा कारयन् भातियुक्तता ॥ १९ ॥ मत्वा रानो महत्कार्यं सेतुबंधं नृबंधहृत् ॥ स्वस्याग्रे कारयामास तथैव कृतवान्प्रभुः ॥ २० ॥ कार्यस्य महतोह्यस्य कृत्वाभागा ननेकशः ॥ राजंन्यादिक धन्येभ्यो दत्तवांस्ता न्धरापतिः ॥ २१ ॥ सेतोर्दार्ढ्यं कृतेपृथ्व्याः पृष्टेस्थापयितुं शिलाः ॥ जलनिःसारणं कर्तुं प्रयत्नं कृतवान्नृपः ॥ २२ ॥ शक्रं पराक्रमैः कालमायुषा धनदंधनैः ॥ जित्वां बुकर्षणे राणा वरुणं जेतु मुद्यतः ॥ २३ ॥ तदा चक्रभृता तत्र घटीयंत्रण यत्कृतं ॥ नृपयुक्तेन कार्यस्य सहाय्यमुचितं हितत् ॥ २४ ॥ क्रियमाणे घटीयंत्रै र्जलनिः सारणे जनैः ॥ तेषां तत्कार्यकरणे सार्थकः सघटीगणः ॥ २५ ॥ स्वतंत्रैश्च घटीयंत्रै रस्वतंत्रैः स्फुरद्रूपैः ॥ घटीमात्रेण घटितै भूरि निःसारितं जलं ॥ २६ ॥ जलयंत्रै र्बहुविधै रुपर्युपरिकल्पितैः ॥ लोके भूपृष्ठगं नीरं सर्वं दूरीकृतं द्रुतं ॥ २७ ॥ अस्मिन् भरतखंडेतु यावंतः संतिसांप्रतं ॥ जलनिःसारणो पाया स्तावंतः कल्पिता इह ॥ २८ ॥ गुणिभिः सूत्रधारैश्च पामरैरपियैः पुनः ॥ जलनिःसारणो पायाः प्रोक्तास्ते निर्मिता इह ॥ २९ ॥ इतो निःसारितं नीरं सारणी प्रसरैः परैः ॥ ग्रामेग्रामे जनैर्नीतं ग्रामा नगरतां गताः ॥ ३० ॥ यथा ज्योतिष सारण्यावासर श्रेष्ठ साधनं ॥ कृतंतथांबुसारण्या वत्सरः श्रेष्ठसाधनं ॥ ३१ ॥ एवं नाना प्रकारेण जलंनिःसार्य सर्वतः ॥ सेतुबंध कृतेलोके भूपृष्टं प्रकटीकृतं ॥ ३२ ॥ प्रत्यरुनीरवर्षो जितइंद्रो गिरिधरेण कृष्णेन ॥ वरुणः परोक्ष पूरितजलो जितोराण तत्त्वयाचित्रं ॥ ३३ ॥ पूर्णे सप्तदशे शतेब्द उदिते दिव्यैक विंशत्यभि व्याप्ताख्ये दिवसे त्रयो दशिकया शस्याख्य याक्केशुभे ॥ वैशाखे सितपक्षके खलुविधो र्वारेकिलै तादृशे कालेभावि सुकार्य सूचक समानार्थ व्रजाख्या युते ॥ ३४ ॥ जंबुद्वीप वदन्य सप्त दशासु द्वीपेषु कीर्त्याप्तये निंद्योद्य न्निरयैक विंशतिमहा दुःखस्थला दृष्टये ॥ घस्रेशद्युति लब्धये कुलमहा शाखा विवृद्ध्यै सदा लाभार्थं सितपक्ष कस्यचविधु स्वाल्हादकत्वाप्तये ॥ ३५ ॥ श्रीराणा राजसिंहोयं सेतोः सत्पद पूरणं ॥ कर्तुं मुहूर्तं कृतवा

न्नवग्रह बलान्वितः ॥ ३६ ॥ कुलकं ॥ गरीबदासस्य पुरोहितस्य ज्येष्ठः कुमारो रणछोडरायः ॥ महाशिलां पंच सुरत्नपूर्णा मादौ दधे तत्र पदस्य पूर्त्यै ॥ ३७ ॥ दृढोपलप्रदानेन सुधापानेन यत्नतः ॥ सेतोःपदस्याजरत्व ममरत्वं कृतंजनैः ॥ ३८ ॥ महासेतोः प्रबंधेस्मि न्महाकार्ये महागजैः ॥ सुधा चूर्णं समानीतं परिपूर्णं नचाद्भुतं ॥ ३९ ॥ सर्वतो मुख रूपस्य जलस्य मुख मुद्रणं ॥ धीरादर कृतायुक्तं राजसिंह त्वयाकृतं ॥ ४० ॥ छिद्रान्वेषी जलगण इहक्ष्माप सर्वसहोद्य न्मूर्द्धनिस्वीयं दध दति पदं दृष्ट मात्रं त्वयातु ॥ यत्रै वात्रो चित मिति शिलाश्रेणिभिः क्षारचूर्णा ऽऽ पूर्णाभि र्द्राक्ति दतुल मुखो न्मुद्रणं स्पष्टमेव ॥ ४१ ॥ नूनं कामो सिराणेंद्र यत्र तत्रो दितच्छलात् ॥ शंबरं मुद्रितं तन्वन् युक्तंसेतु प्रबंधकृत् ॥ ४२ ॥ कबंध विक्रमजयी वानर व्रज पोशकः ॥ रामक्रमाभिरामोसि सेतुंबध्नासि युक्तता ॥ ४३ ॥ गोत्रैणैकेनचक्रे हरिरमित जलं दूरतःशुक्रमुक्तं सप्ताहं श्रीमतातद्वरुण समुदितं वारिदूरीकृतंहि ॥ आसप्ताब्दं सुगोत्रा तुलितभरभृता तांत्रिलोकप्रपूर्तिं स्त्वत्कीर्तिः कृष्णकीर्तेः रपिभवति परा कृष्णभक्तस्यवीर ॥ ४४ ॥ श्रीराजसिंहः प्रथमं शरीबंधमकारयत् ॥ महा सेतोस्ततः पश्चात्सेंभरो बंधनंदृढं ॥ ४५ ॥ मत्स्याः पांडररक्तपीत रुचयः सेतो स्तभागेपुरे पातालात्किल निर्गताः शुभतरं गर्भोदकं निसृतं ॥ तेनोक्तंविहसूत्रधार निपुणे रंभोत्यगाधंभवे द्भूपालाय निवेदितं नरपतिः श्रुत्वास्मितास्यो भवत् ॥ ४६ ॥ रामोनांभोपसार्यक्षितिशिरसिनवा कारयामाससेतुं गोत्रैर्द्राग्वानरैर्वा ऽ दृढइतिधनुषा वानरामुंबभंज ॥ दूरीकृत्यांबुपृष्ठे भुवनइहनरैः सृष्टवान्सूपलैस्त्वं सच्चूर्णैरामवंश्याधिक दृढइतिते तत्कपातोस्तिसेतुः ॥ ४७ ॥ स्थलेजलाशयः सृष्टो जलेसेतोस्थलं त्वया ॥ कांतारे नगरं सृष्टं वीरते दैवपूर्णता ॥ ४८ ॥ इतिभट्टरणछोडकृते श्री राजप्रशस्ति काव्ये ॥ इति नवमः सर्गः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ सुवर्ण सत्पूरित भासमानः श्री द्वारिकायां घन भासमानः ॥ चतुर्भुजो राजसमुद्र तीरे श्री द्वारिकानाथ हरिः सु तीरे ॥ १ ॥ आनीत मंभः किल राज मन्दिरो द्भव दृपौघै र्महिषै र्जनव्रजैः ॥ सत्कार्य वर्ये बहु शस्तदानीं व्याघ्रेण वा नीतमिदं तदद्भुतं ॥ २ ॥ सुवर्ण शैले किल जिष्णु रूपः श्री राजसिंह कृतवान् मनस्वी ॥ जेतुं जगत्या मसुरान् सु दुर्गं स्वमंदिरं सुन्दरम द्वितीयं ॥ ३ ॥ पूर्णे शते सप्तदशे तु मार्गे वर्षेत्र षड्विंशति नाम्नि भूपः ॥ पांडोर्दशम्यां क्षिति मन्दिरेंद्रः प्रासाद मध्ये कृतवान् प्रवेशं ॥ ४ ॥ शते सप्तदशे तीते षड्विंशति मिते ब्दके ॥ ऊर्जे कृष्ण द्वितीयायां राजसिंहो महीपतिः ॥ ५ ॥ हेम्नः पल शतैः सृष्टं पंच कल्प द्रुमै र्युतं ॥ हेम्नः पल शतैः सृष्टं महाभूत घटाभिधं ॥ ६ ॥ हिरण्याश्व

रथं रूप्य मुद्रा दशशतैः कृतं ॥ दत्ता महादान युग मेतद्विप्रा न तोषयत् ॥ ७ ॥ विप्रेभ्यो राजसिंहः प्रभुमुकुट घटः श्री महाभूत पूर्वो दत्वा देव द्रुमाक्तः सकल सुरमयो मेरु रेवत्र यायं ॥ तद्देवाः स्थान हीनाः कृतमतय इतो ब्राह्मणेपु प्रविष्टा स्तेजाता भूमिदेवा दधति गृहगणे मेरुभोगं तदीये ॥ ८ ॥ एकादश सहस्राणि षट्शतानिच सप्ततिः ॥ लग्नानि लग्न रूप्यस्य मुद्राणां दान योरिह ॥ ९ ॥ पूर्णे शते सप्त दशे थ वर्षे चकार षड्विंशति नाम्नि राधे ॥ सित त्रयोदश्य भिधेन्हि सेतोर्नृपो मुहूर्तं पुरि कांकरोल्यां ॥ १० ॥ ततोत्र खातो रचितः पृथिव्यां जनैर्विचित्रैः पृथुभिः खनित्रैः ॥ महाशिलाभिः ससुधा भराभिः सेतोः पदं पूरित मेव तुंगं ॥ ११ ॥ पूर्णे शते सप्तदशे थ वर्षे आषाढ मासादिक एव जाता ॥ ज्येष्ठेत्र षड्विंशति नाम्नि नव्या जलस्थिति र्दृष्टि भवात्तडागे ॥ १२ ॥ पूर्वत्राषाढ बहुल पक्षे स्मर तिथौ रवौ ॥ द्विषष्टिके नवा पंच मासैः षड्भि र्दिनैः कृतं ॥ १३ ॥ मुखसेतोस्तु भू पृष्ठंसुधा पूर्ण शिलागणैः ॥ पूरितं भित्ति रूपोर्ध्वं सूत्रधारैर्ध्रुवंकृतं ॥ १४ ॥ इदृकाल कृतस्या स्य दृष्ट्वा सिद्ध्य ष्टकं नृणां ॥ पंचेन्द्रियाणां पापांतः षड्र्मि हरणं भवत् ॥ १५ ॥ अस्मिन्महावत्सर एवनव्यं संस्थापितं यत्तुजलं तडागे ॥ दूरीकृतं तत्तु समस्तमेवं जनैश्चतुष्की करणे प्रवीणैः ॥ १६ ॥ आशा चतुष्का गतमानवैर्नवै र्नानाचतुष्क्यः खनिता जलाशये ॥ दृष्ट्वा चतुष्की युत एवसोद्भुतं नृणां पुमर्थो ग्वचतुष्कदो भवत् ॥ १७ ॥ ततश्चतुष्की गणनिःसृतानां मृदां समूहा मनुजै र्नृपाद्यैः ॥ सहस्रसंख्यैः सुखतः प्रणीता मध्यस्य सेतोः परिपूरणाय ॥ १८ ॥ मृदांगणैः कल्पित पर्वतौघाः सेतौनिलीनाः क्वचनैव दृश्याः ॥ यथा पुरा राघव सेतुबंधे याता विलीनत्व महोगिरींद्राः ॥ १९ ॥ शतेसप्तदशे पूर्णे सप्तविंशतिनामके ॥ वर्षे स्वजन्मदिवसे हेम हस्ति रथं शुभं ॥ २० ॥ हेम्नो विंशत्यग्रदशशततोलकनिर्मितं ॥ महादानविधानेन राजसिंह नृपोददौ ॥ २१ ॥ पूर्णेशते सप्तदशेसुवर्षे सत्सप्तविंशत्यभिधे मुहूर्तः ॥ आषाढ मासे ऽ सितसच्चतुर्थ्यां नृपेणनौः स्थापन कस्यसृष्ठः ॥ २२ ॥ जनैस्तृतीया दिवसेतुनौका योग्यं जलं नेति कृते विचारे ॥ आगामिवर्षेतु बृहस्पतिः स्यात् सिंहस्थितस्तत्सुमुहूर्त एषः ॥ २३ ॥ नान्योत्र वर्षेस्ति तडागकार्ये मुख्य स्तुराणावत रामसिंहः ॥ तदोक्तवानस्तिहि चोकडीन मध्ये जलं क्षेप्य मिहान्य दंभः ॥ २४ ॥ नौका मुहूर्तोस्तु महापुरोधा गरीबदासा भिध उक्तवान्यः ॥ अग्रेप्रभोरेष जनाविचारं कुर्वंति राजन्नितिवामहान्तः ॥ २५ ॥ आश्चर्य मेषा मम भाति चित्ते स्यात्कार्य मासीत्सुखवा न्नृपस्तत् ॥ श्रुत्वा द्विजान्वा रुणसूक्त मंत्रं

जप्वास विद्वान दिशत्पुरोधा: ॥ २६ ॥ शृंगार पूर्णां प्रविधाय नौकां मुहूर्त्तमा गामिसु वासरेतु ॥ नौकाधि रोहस्य मुदा विधातुं कृतप्रतिज्ञं नृपराजसिंहं ॥ २७ ॥ समीक्ष्य शक्रोपि सचिंतएवा भवत्तदास्मि न्समये मयाचेत् ॥ क्रियेतवृष्टि र्नतदा- ममैव दोषंवदिष्यंति जना: समस्ता: ॥ २८ ॥ इंद्रात्प्रभुत्वं क्षितिपद्यपाठ चित्ते- वधार्ये तिममांशएष: ॥ पूर्णास्यकार्ये तिमया प्रतिज्ञा रक्ष्याद्विजाना मपिसु प्रतिष्ठा ॥ २९ ॥ ततस्तृतीया दिवसे द्वितीये यामे ववर्षुर्जलदा मुहूर्ते ॥ नौकाधिरोहस्य चकारभूपो मंदाकिनी नौ: स्थित शक्र तुल्य: ॥ ३० ॥ उक्तं जनै: कर्त्तुमयं यदेव समुद्य तस्त त्परमेश्वरोत्र ॥ करोति चाग्रे सफलं सुकार्यं भविष्यती त्यस्य तथो भवत्तत् ॥ ३१ ॥ पूर्णेशते सप्तदशे सुवर्षे ऽ ष्टाविंशतिभ्रा जितनामधेये ॥ राकातिथौ नालविमुद्रणंद्राक् ज्येष्ठे कृतं सूत्र धरै र्नृपोक्त्या ॥ ३२ ॥ शते सप्त- दशे पूर्णे एकोनत्रिंशदाह्वये ॥ वर्षे विधुग्रहे माघे दानं कल्पलतात्मकं ॥ ३३ ॥ हेम्न: सार्द्धशतद्वंद्व पलै: स्पष्टं ददौ तथा ॥ हेम्न: स्त्व शीत्य ग्रशत तोलकै:परि- कल्पितै: ॥ ३४ ॥ हलैस्तु पंचभि र्युक्तं पंचलां गलनामकं ॥ भावलीग्रामसंयुक्त महादानं ददौ नृप: ॥ ३५ ॥ अष्टाविंशत्यग्र दश शततोलक संमिति: ॥ हेम्न: समभव द्दिव्य दानयो रनयोरिह ॥ ३६ ॥ पूर्णे शते सप्तदशे सदेकोनत्रिंश दाख्या- ब्दसु फाल्गुनेत्र ॥ कृष्णात्तमेका दशिकादिनेवा शुभे भवानीगिरि पार्श्वदेशे ॥ ३७ ॥ सत्संगि कार्यस्यतु मुख्यसेतौ नृपो मुहूर्त्तं कृतवा न्कृतींद्र: ॥ श्लक्ष्णीकृतै: पांडर- वर्णसाधु सुधाधिसिक्तै र्दृढसंधिबंधै: ॥ ३८ ॥ महो पलै: पेशल सूत्र धारै र्वितन्य मानं किल संगिकार्यै ॥ धृते दृढे संगिनि कार्य वर्ये नृपस्य चित्तं सुख संगि जातं ॥ ३९ ॥ शते सप्तदशे तीते एकोन त्रिंशदाह्वये ॥ ज्येष्ठस्य शुक्ल सप्तम्यां राजसिंहो महीपति: ॥ ४० ॥ एकलिंगालये लिंद्र सरश्राख्ये जलाशये ॥ ससोपाने जीर्ण सेतौ प्रतोलीनां चतुष्टयं ॥ ४१ ॥ व्यधात्सुव प्रंसत्कार्यं सुशिला गणराजितं ॥ अष्टादश सहस्राणि रूप्यमुद्रा वले रिह ॥ ४२ ॥ लग्नानि राणवीरोक्त्या प्रश- स्तिर्निर्मिता मया ॥ श्रुत्वा तां स ददा वाज्ञां शिलायां लिखनायमे ॥ ४३ ॥ इति श्री राजप्रशस्ति नाम महाकाव्ये रणछोड भट्ट रचिते दशम: सर्ग: ॥

श्रीगणेशायनम: ॥ सेतो र्मिति: पंच शतानिदैर्घ्ये मुख्यस्य वैपंच दशोत्तराणि ॥ तलेगजानां च शतानि पंच सैका न्यशीति प्रमितानि मूर्द्धनि ॥ १ ॥ विस्तरे पंच पंचाशन्मिता निम्नक्षितौगजा: ॥ दशोपर्युदये संति द्वाविंशतिमिता: क्षितौ ॥ २ ॥ निम्नायां पंचयुक्त्रिंश दूर्द्धं तत्र क्रमं वदे ॥ भूम्यूर्द्ध माष्टगजकं पीठ मेकोर्द्धयुग्गज: ॥ ३ ॥ मेखलात्रयमानं त्वासार्द्धद्वादशसद्गजं ॥ तिलकत्रय मग्रे

थ त्रयोदश गजावधि ॥ ४ ॥ चत्वारः संगिकार्यस्य स्थरा एकस्थरं प्रति ॥ सोपान नवकं त्वेवं षट्त्रिंश त्प्रमितिः स्फुटा ॥ ५ ॥ सोपानाना मित्युदये पंचत्रिंश-द्गजैर्मितिः ॥ सप्त पंचाशदित्येवं गजाः सर्वोदयस्थितौ ॥ ६ ॥ त्रयं बुरिज कोष्ठानां कोष्टे प्रासाद दिक्स्थिते ॥ दैर्घ्ये गजा स्तु पंचाश न्निर्गमे पंचविंशतिः ॥ ७ ॥ सत्पंच सप्तति र्वृत्ते त्रिंशदेवो दयेगजाः ॥ गर्भे कोष्टं लंबतायां पंच सप्तति कागजाः ॥ ८ ॥ सार्द्ध सप्ताग्र कत्रिंश न्निर्गमे वृत्त रूपके ॥ शतं सार्द्ध द्वादशकं गजानां च तथोदये ॥ ९ ॥ पंचत्रिंशद्गजाः कोष्टं तृतीयं पूर्व कोष्टवत् ॥ पंच चत्वारिंशदग्र शतमानं गजा मृदः ॥ १० ॥ भृतौ सेतो स्तु पाश्चात्य भागे प्रोक्ता स्ति लंबता ॥ गज सप्तशती माना विस्तारे निम्न भूतले ॥ ११ ॥ गजा अष्टा दशैवोर्द्ध पंचैव मुदये तथा ॥ अष्टाविंशति संख्या स्तु सर्वा सेतो रियं स्थितिः ॥ १२ ॥ षड्त्रिंश दुद्यन्मिति शोभमाना सोपान माला महतो हि सेतोः ॥ विभाति कोष्टत्रितयं तदेतद्भूपाल पालं वनकारि नूनं ॥ १३ ॥ धर्मो बुधावत्र महास्मृतीना मुपस्मृतानां विदधत्सु संगं ॥ देवत्रयं वात्र करोति वासं कलिप्लुतांम्लेच्छ भुवं विमुच्य ॥ १४ ॥ राजमन्दिर दिश्यस्ति स्थानंतु चतुरस्त्रकं ॥ सेतौ तत्राथर्वणाख्यो वेदस्तिष्टतिं मंत्रवान् ॥ १५ ॥ जलहट्ट मयं तत्र शोभतेत्रार हट्टकं ॥ तद्राजमन्दिराख्ये स्मिन्दुर्गे वाप्यां जलार्थकं ॥ १६ ॥ आस्ते नव चतुष्कीयुङ्मंडपं त्वत्र सुन्दरं ॥ जल दर्शि गवाक्षाक्त मतिचित्रकरंनृणां ॥ १७ ॥ महासेतौसंगिकार्य वर्येविजयतेपरं ॥ युक्तं नवचतुष्कीभीराजमंडप युग्मकं ॥ १८ ॥ नवखंडस्थ लोकानां दर्शना च्चित्रकारकं ॥ षट्चतुष्की विलसित मेकंवाभातिमंडपं ॥ १९ ॥ पश्चाद्भागे महासेतो मंडपं त्रितयं तथा ॥ सभामंडप मेकंहि महासेतोरियं स्थितिः ॥ २० ॥ निंबसेतु प्रमाणंतु वक्ष्यामि क्षितिपालते ॥ दैर्घ्ये गजानां द्वात्रिंशदग्रंशत चतुष्टयं ॥ २१ ॥ विस्तारे पंचदशवे निम्न भूमौ गजास्तथा ॥ पंचोर्द्ध मुदयेचैव दशाथो भद्रसेतुके ॥ २२ ॥ चतुश्चत्वारिंशदग्रं गजानां दैर्घ्यतः शतं ॥ विस्तारे द्वादशगजा स्तलेपंचैव मस्तके ॥ २३ ॥ त्रयोदशोदये भद्रं सुभद्रं चतुरस्त्रकं ॥ कोष्टकं विंशतिगजा मृद्भृताविति संस्थितिः ॥ २४ ॥ कांकरोलि ग्रामसेतौ दैर्घ्ये निम्न धरातले ॥ पंचाशद्युक् पंचशती गजानां मूर्द्धनि सप्तवे ॥ २५ ॥ शतानिवा षट्पंचाशत्पंचत्रिंशच्चविस्तरे ॥ निम्नभूमौ सप्तगजा मस्तकेतूदये तथा ॥ २६ ॥ निम्न भूमौ सप्तदश गजा उपरिवाभुवः ॥ गजा अष्टत्रिंशदेव कोष्टक त्रितयंत्विह ॥ २७ ॥ सभामंडप दिक्संस्था कोष्टेऽष्टा विंशतिर्गजाः ॥ विस्तारे निर्गमेमाने चतुर्दश तथोदये ॥ २८ ॥ सार्द्धषड्त्रिंशदेवाथ सुभद्रे मध्य कोष्टके ॥ षड्विंशद्विस्तरे पंच दश निर्गम

ने गजाः ॥ २९ ॥ उदयेष्टत्रिंशदेव तृतीयेपूर्वदिक् स्थिते ॥ कोष्टेऽष्टा विंशति मांने विस्तारे निर्गमे गजाः ॥ द्वादशैवो दयेसप्त त्रिंशदेव मृदाभृतौ ॥ पंच चत्वारिं-शदग्रं गजानां शतकं ततः ॥ ३० ॥ पाश्चात्यभागे सेतोस्तु गजानां चतुरस्त्रकं ॥ दैर्घ्येविस्तारतः पंचदश निम्न क्षितौ गजाः ॥ ३१ ॥ दशमूर्द्धन्यु दयेत्वच द्वाविंशति मिता गजाः ॥ अत्रोदयस्तु भवति अष्टत्रिंशद्गजावधिः ॥ ३२ ॥ अयोध्या रेणुका क्षेत्रव्रजेभ्यो म्लेछ भीतितः ॥ भांत्या गत्या ध्यात्म रूपै स्त्रिरामा कोष्टकत्रये ॥ ३३ ॥ भृतौजीर्णेशनि लयमागते स्थापितं हितत् ॥ मार्गोस्य स्थापित स्तस्य-दर्शनं जायतेसदा ॥ ३४ ॥ रामसेतौ यथाभाति श्रीरामेश्वर मंदिरं ॥ तत्तुल्यं कांकरोलीस्थ सेतौभाति शिवालयं ॥ ३५ ॥ कांकरोलीस्थ सेत्वग्रभागे वामंड पात्त्रयः ॥ चतुः स्तं भाविशोभंते सभामंडप एककः ॥ ३६ ॥ कांकरोली स्फुरत्से तोरग्रेतू परिभूभृतः ॥ शिलाकार्यं कृतंतत्र दैर्घ्ये गजशतत्रयं ॥ ३७ ॥ विस्तारो दययोः पंचगजाः पंचाथ नाशकं ॥ गोघट्ट पार्श्वे दैर्घ्येत्र चतुः पंचाश दुत्तमाः ॥ ३८ ॥ गजा दशैव विस्तारे उदुयेतु त्र — — — — — — गोवु — — — दैर्घ्ये — — चतुः पंचाश देवतु ॥ चतुः पंचाशद्देवात्र विस्तारे घट्ट भूतले ॥ उदयेतु गजाः पंच भात्यं कामह — प ॥ ३९ ॥ — — पा ग्राम पार्श्वेतु सेतोर्दैर्घ्ये गजावले ॥ द्वेसहस्त्रे ऽष्ट पष्टिश्च विस्तारेष्टा दशस्फुटं ॥ ४० ॥ तलेमूर्द्धनि गजाः सप्त चतुर्विंशति सद्गजाः ॥ उदये कोष्टक द्वंद्व मत्राष्टा समथैककं ॥ ४१ ॥ गजा अष्टाविंशति स्तुतत्र दैर्घ्येथ निर्गमे ॥ चतुर्दशो दयेसंति चतुर्विंशति सद्गजाः ॥ ४२ ॥ सप्तांगस्यापि राज्यस्य धर्मस्या त्रास्तिसुस्थितिः ॥ राणराज्ये ज्ञापकोष्ट रेखाऽं किमुकोष्टकं ॥ ४३ ॥ द्वितीय मर्द्ध चंद्रास्यं दैर्घ्ये विंशति सद्गजाः ॥ विस्तारे दशसंत्यत्र द्वादशैवो दये-गजाः ॥ ४४ ॥ अर्द्धचंद्र धर श्रीमद्रुद्र क्रीडा स्थलं हितत् ॥ पंचचत्वारिंश दग्र शतमाना मृदोभृतौ ॥ गजाः पाश्चात्य भागेतु सेतो दैर्घ्ये त्रयोदश ॥ शतान्येव गजानांतु निम्न भूमौ तथोपरि ॥ ४५ ॥ गजादशैव विस्तार उदये पंचवागजाः ॥ वांसोलग्राम पार्श्वस्थ सेतौदैर्घ्ये गजावले: ॥ चतुर्विंशति संयुक्त सुद्वादश शता-निहि ॥ ४६ ॥ विस्तारे ऽष्टादशगजा स्तलेपंचैव मस्तके ॥ त्रयोदशो दयेकोष्ट त्रयमाद्ये त्रकोणगे ॥ ४७ ॥ गजाविंशति रेवात्र दैर्घ्य विस्तारयोः समाः ॥ द्वाद-शैवो दयेत्वेत च्चतुरस्त्रं सुभद्रकं ॥ ४८ ॥ सुभद्रदंसाऽरहट्टं सारहट्ट तदौचिती ॥ मध्य-कोष्टे द्वादशैव दैर्घ्य निर्गमयोर्गजाः ॥ ४९ ॥ उदये सप्तदशवा अर्द्धचंद्रा कृति-त्विदं ॥ यद्दर्शनादर्द्ध चंद्रप्राप्ति दुःखं द्वि — गले ॥ ५० ॥ अष्टास्त्रकोष्टं कमल बुरिजा ह्वय मत्रतु ॥ दैर्घ्य विस्तारयो स्त्रिंशद्गजा नवतथोदये ॥ ५१ ॥ अत्रोज्वलो

पललसन्मंडपं सेतुमंडनं ॥ इष्टाष्ट पुत्रिका स्टष्ट क्रीडा दृष्टि मनोहरं ॥ ५२ ॥ जनाराज समुद्रं हिरत्वा करमिहांबुनि ॥ स्थित्वाष्टपट्ट राज्ञीस्ता: पश्यन्किं शेरतेहरि: ॥ ५३ ॥ अत्रसेतो रग्रभागे राजते मंडपत्रयं ॥ इति राजसमुद्रस्य वीरेंद्रोक्त मया स्थिति: ॥ ५४ ॥ इति श्री राजप्रशस्तौ भट्ट रणछोड़ विरचिते एकादश: सर्ग: ॥ ११ ॥ आसोटियास्त सेत्वग्र भागे सन्मंडप त्रयं ॥ ६ ॥

श्रीगणेशायनम: ॥ ओटालेका त्रलंबत्वे सार्द्ध द्विशत संमिता: ॥ गजादश च विस्तारे सार्द्धैक सुगजो दया: ॥ १ ॥ ओटाद्वितीय विस्तारे दैर्घ्ये पूर्व समोदये ॥ सार्द्धद्विगजमानास्ति तृतीयोटातु दैर्घ्यत: ॥ २ ॥ गजत्रिंशत मानास्ति विस्तरे त्रगजादश ॥ उदये सगजद्वंद्वा मंडपत्रय मत्रहि ॥ ३ ॥ ओटात्रय मिदं भाति यावद्गज सुविस्तरं ॥ तावद्ग्राम गणं नीरे पूर्णं वितनुते ध्रुवं ॥ ४ ॥ मोर्चणा ग्राम सीम्न्यस्ति तटाकें तर्लघुर्गिरि: ॥ शृंगेस्य मंडपो दृष्ट्वा पश्चिमेर्थ दमण्पते: ॥ ५ ॥ पड्स्थंभो मंडपोस्त्यत्र गोष्टीं पल्यंक सेवका: ॥ कुर्वंति मंडपास्तत्रे त्येकविंशति मंडपा: ॥ ६ ॥ ग्रामास्तड़ागे त्रायाता: सिवालीच भिगावदो ॥ भाणो लुहाणो वासोल गुढली त्यखिला इमे ॥ ७ ॥ मोर्चना च पसोंदश्च खेडि छापर खेडिका ॥ तासोल एषां ग्रामाणां सीमा मंडा वरस्यच ॥ ८ ॥ तडागे त्रागता नद्यो गोमती ताल नाम युक् ॥ केलवास्त नदीसिंधो गंगाद्या विविशुर्यथा ॥ ९ ॥ काकरोली लोहाणाख्या सिवालीनां जलाशया: ॥ निपान वापी कूपाश्च त्रिंशत्संख्या इहागता: ॥ १० ॥ सर्वसेतु मितिर्दैर्घ्ये चतु: षष्टि शतानिच ॥ त्रयोदशा ग्राणि तथा गजानाम परंवदे ॥ ११ ॥ श्रीराजसिंह नृपते रग्रे गजधरै: कृता ॥ गाला योगेन दैर्घ्येष्ट सहस्राणि गजावले: ॥ १२ ॥ विश्वकर्मोक्त वानेवं तडागानां तुलंवता ॥ कर्त्तव्या पड्सहस्त्रोद्य द्गजमाना वधि: परा ॥ १३ ॥ तावत्संख्या मितंकोपि तडागंकृतवान्नवं ॥ त्वया सप्त सहस्त्रोद्य द्गजलंवो जलाशय: ॥ १४ ॥ सेतुंकृत्वाविरचितो धर्मसेतु र्धरापते ॥ श्रीरामसेतुप्रतिम: कीर्त्तिसेतु: प्रभातिते ॥ १५ ॥ कोष्टानिद्वादशात्रैत दृष्ट्वान्दृणां फलंभवेत् ॥ पाठस्य द्वादशस्कंध युक्तभागवतस्यसत् ॥ १६ ॥ एकविंशति संख्यानि मंडपानि तदीक्षणात् ॥ एकविंशतिदु:खानामभावो भाविनांभवेत् ॥ १७ ॥ चत्वारिंशदथाष्ट युक्समभवन्सेतौमहा मंडपा स्तेष्वादौवहुमूल्य वस्त्र रचिता: सद्दारुसृष्टास्तत: ॥ पाषाणै: ससुधाभरै र्विरचिता: केचित्तुतेपुस्थित: स्वाज्ञां कार्यकृते दिशन्विजयते श्रीराजसिंहो नृप: ॥ १८ ॥ वस्त्रकोष्टाश्मसृष्टाष्ट चत्वारिंशन्मितेपुहि ॥ मंडपेष्व वशिष्टौद्वौ शिलाकल्पित मंडपौ ॥ १९ ॥ तद्दर्शन कराणांस्या द्धनधान्य सुखं ध्रुवं ॥ इतिराजसमुद्रस्य प्रोक्तासर्वा स्थितिर्मया

॥ २० ॥ श्रीराणोदयसिंहेद्रः स्थानेस्मि न्कृतवान्पुरा ॥ सेतुंबद्धुंमहायत्नं निष्फलं तदभूदिह ॥ २१ ॥ ततोजलाशयं चक्रे श्रीमानुदयसागरं ॥ तत्राकरो त्सेतुबंधं संबंधं धर्मपद्धतेः ॥ २२ ॥ अस्मिन्स्थले राजसिंहो राणेंद्रो राजराजवत् ॥ धन व्ययं वितन्वानः सेतुंचक्रे तदद्भुतं ॥ २३ ॥ सेतोस्तु कर्त्ता रघुवंशकेतू रामश्चराणो दयसिंहदेवः ॥ श्रीराजसिंहो नृपतिस्तथैव मन्योनभूतो भविता न चास्ति ॥ २४ ॥ पूर्णेशतेसप्तदशे सुवर्षे त्रिंशन्मिते भाद्रइहागताद्राक् ॥ वेताल सूत्ताल जवाथताल नाम्नी नदीताल गभीर नीरा ॥ २५ ॥ संप्लावितं नीर भरैःपुरंद्राक् तया गृहान्यत्र विनाशितानि ॥ चकारबंधं नृपति स्तद स्या न्यायेन युक्तं भूविनीचगेयं ॥ २६ ॥ तथात्र वर्षे त्विष आगताद्राक् निशीथकाले भिनवे तडागे ॥ श्रीगोमती धन्य नदी जलंवा वभूव हस्ताष्टक मात्रमुच्चं ॥ २७ ॥ तद्रक्षितं राण नृपेण गंगा स्पर्द्धा करीयं भुविवर्द्ध माना ॥ श्री गंगया सार्द्ध महो तुला-र्थं भंपाग्रहा ब्धौन्य पतत्तडागे ॥ २८ ॥ शते सप्त दशे तीते त्रिंशदाख्याब्द् माघके ॥ पूर्णिमायां हिरण्यस्य पल पंच शतैः कृतं ॥ २९ ॥ ददौ सुवर्ण पृथिवीं महादान विधानतः ॥ श्री राणा राजसिंहाख्यः पृथ्वीनाथो महामनाः ॥ ३० ॥ अष्टाविंशति संख्यानि रूप्य मुद्रा वलेरिह ॥ सहस्राणि विलग्नानि महादानस्य भूपतेः ॥ ३१ ॥ दत्तायां कनक क्षितौ तुभवता विप्रेभ्य एवग्रहे रुद्रंभिक्षु मवेक्ष्यभिक्षक गणो दिग्दंति नामष्टकं ॥ हिंस्रोजंतु चयश्च विष्णु गरुडं नागव्रजो वेधसं भूतौघो मघवान मेच महितो दूरं प्रयाति द्रुतं ॥ ३२ ॥ दत्तायां कनक क्षितौ तुभवता विप्रेभ्य एषांग्रहे श्रीराणामणि राजसिंह सकलं दुःखं प्रनष्टं ध्रुवं ॥ वन्हेः शीतभवं तमो भवमिना न्मालिन्यजं चाथते चंद्राद्ग्रीष्मभवं रजो जमनिला च्चेंद्राच्च दुर्भिक्षजं ॥ ३३ ॥ दत्तायां हेमपृथ्व्यां प्रभुवर भवता सद्द्विजेभ्यस्तु सर्वे कार्यं कुर्वंत्य गर्वं निखिल सुखकृते तद्गृहे राजसिंह ॥ गो-विंदो दुग्ध दोग्धा पशुपति रपिवा रक्षकः सत्पशूनां जीवोबाल प्रपाठी रिपु गण विजये षण्मुखः संमुखो भूत् ॥ ३४ ॥ पूर्णे शते सप्तदशेब्द एक त्रिंशन्मिते श्रावण शुक्ल पक्षे ॥ सुपंचमी दिव्य दिने तडागे जहाज संज्ञा विदधुः सुनौकाः ॥ ३५ ॥ लाहोर सद्गुर्जर सूरतिस्थाः सत्सूत्रधारा वरुणस्य मन्ये ॥ सभा द्वितीये जलधौतु सेतुं द्रष्टुं सुहार्देन समागतस्य ॥ ३६ ॥ शते सप्तदशे तीते एकत्रिंशन्मितेब्द्के ॥ स्वजन्म दिवसे हेम पलपंच शतैः कृतं ॥ ३७ ॥ विश्वचक्रं महादानं विधिना दाच्चशक्रवत् ॥ भूचक्रे राजसिंहोस्ति विश्वचक्रेस्य तद्यशः ॥ ३८ ॥ दत्तेहाटक विश्वचक्र उचितं विप्रेभ्य एषांग्रहे उच्चैर्यांति

तदर्भका निशि रविं धृत्वा विधुं वादिने ॥ तद्रात्रौ दिन मन्हिरात्रि रधुना कर्माणि कुर्युः कुतो विप्राधर्मं कृतालया कथमथ स्थाप्योत्र धर्मः प्रभो ॥ ३९ ॥ सौवर्णे विश्वचक्रे क्षितिधव भवता दत्तएषां द्विजेभ्यो गेहेष्वेकत्रवासं विदधति विवुधा स्तत्-स्थिता वाहनानि ॥ देवानां तत्स्थितानि स्फुटमिभ वदनो धेनवो राहु रिंदुः सूर्यो वा शेषत्र्याखुः सुरगज इतिवा शंभुनंदी विचित्रं ॥ ४० ॥ दत्ते हाटक विश्वचक्र मुचितं विप्रेभ्य एषांगृहे दारिद्र्यं खलुसर्व थैव विगतं श्रीराण वीरत्वया ॥ यल्लक्ष्मीः किलकल्प वृक्ष धनदौ चिंतामणिः कामगो मेरुः स्पर्शमणिः खनिश्च निधयो रत्ना करो यत्ततः ॥ ४१ ॥ इतिश्री राजप्रशस्ति काव्ये द्वादशः सर्गः॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ एवंप्रतिष्ठा विधियोग्यरूपे कृते तडागे क्रियमाण कार्ये ॥ उत्साहपूर्णो नृपराजसिंहो निमंत्रणे प्रेशितवा न्नृपेभ्यः ॥ १ ॥ पूर्णादरं दुर्गगणे इश्वरेभ्यः स्वगोत्र भूपेभ्य उतापरेभ्यः ॥ अथो यथायोग्य महोमहाश्वान् रथास्तथा सारथि वर्य युक्तान् ॥ २ ॥ शिवोपधानाः शिविका वलीस्ताः संप्रेपया मासमुहस्ति नीश्च ॥ विश्वासयोग्यान्मनुजान्द्विजा दीन्विशेषवेत्ता नयनायतेषां ॥ ३ ॥ ॥ कुलकं ॥ अथोविशालेषु महागृहेषु राणामणेः कार्यकरैर्नरैस्तैः ॥ पट्टांबराणां च पट व्रजानां सुवर्ण सूत्रोत्तमवाससांवा ॥ ४ ॥ अलंकृतीनां विलसत्कृतीनां प्रयत्ननीता तुलरत्नकानां ॥ मनोज्ञमुक्ता वलिपुष्पराग प्रवालगारुत्मतहीरकाणां ॥ ५ ॥ गोमेद वैडूर्यक नीलकानां रूप्यस्य हेम्नश्च महासमूहः ॥ सुवर्ण मुद्रा रजताच्छ मुद्रा गिरिर्गुरुश्चित्र सुपात्रसंघः ॥ ६ ॥ कस्तूरिका शस्तचयोग रूणां कर्पूर पूरश्चगणो ऽ गुरूणां ॥ काश्मीरजानां निकरः सुगंध द्रव्यस्य नव्यो विविधः प्रवंधः ॥ ७ ॥ संस्थापितः स्थापित पुण्यकीर्त्ते रुपर्युपर्ये वधनप्रपूर्त्तेः ॥ धान्यादिहट्टाः शिबि राणिशालाः कृताः पुनस्ते विविधा विशालाः ॥ ८ ॥ कुलकं ॥ अमुष्य वस्तु प्रसरस्य लोकैः पूर्वैकदाप्या नयनं नदृष्टं ॥ प्रथक्तयातेनवितर्कि एष प्रकल्पितः कर्कशतार्किकौघैः ॥ ९ ॥ रघोः सकाशा त्किलकौत्सनाम्ना प्रदातु मद्धा गुरु दक्षिणांतां ॥ द्रव्यं सुभव्यं बहुयाचितंत न्निभालितं सन्ननिभूभृतान ॥ १० ॥ लब्धुं विजेतुं धनदं प्रतस्थे तनुः सशीघ्रं धनदस्तदैव ॥ रात्रौधनं भूरिरघो र्गृहौघे संस्थापया मास महाभयाढ्यः ॥ १२ ॥ युग्मं ॥ तथारघोरुत्तम वंशजस्य श्रीराज-सिंहस्य वसुप्रदातुं ॥ कृतप्रतिज्ञस्य गृहेकुबेरः संस्थापया मास धनंतु युक्तं ॥ १३ ॥ गोधूम गोत्राश्चणको च्चशैलाः सत्तं दुलानां पृथु पर्वताश्च ॥ क्षमा भृतोमुद्ग गण-स्य तुंगा गोधूम पिष्टस्य विशिष्ट शैलाः ॥ १४ ॥ घृतस्य तैलस्य तुवापिकास्तु महाद्रयोवा गुड मंडलस्य ॥ अखंड खंडस्य महा महीध्रा धराधराः प्रोज्वल शर्कराणां ॥ १५ ॥ घृतौघ पक्वान्न महा गिरींद्राः शिलोच्चया मौक्तिक मोद

कानां ॥ दुग्धोल सन्मोदकभूधराश्च फलावले वोदक तुंग संघाः ॥ १६ ॥ कृता मुदाकार्य करे नरेंद्रोक् जयंति चैते नृप राजसिंह ॥ पाषाण शैलान्व हवोद्र यस्तु देशे श्रुतं दृष्ट मिहाद्य चित्रं ॥ १७ ॥ शैलैरमीभिः पटशैवलैश्च रत्नै स्तुरंगैः करिभिश्च गोभिः ॥ युक्तश्च दानाय घृत प्रवाहे राजं स्तवायं नगरः समुद्रः ॥ १८ ॥ अश्वाजनैः श्वासजितः स्वगत्या प्रचंड वेतंड गणाः सुशुंडाः ॥ रथा स्तथा धन्य वृषैः सनाथाः संस्थापितादान कृते नृपस्य ॥ १९ ॥ हेला रवेणा पिगजा महांतो महामदा विंशति संख्ययाक्ताः ॥ आनीय राज्ञे विनिवेदितास्तान् गृहीतवा न्सप्त दश क्षितीशः ॥ २० ॥ तथा परेणापि गजद्वयंसदानीत मीशेन गृहीत मेतत् ॥ जलाशयो त्सर्ग विधौ मयंते देया विचार्येति गजाः सयुक्तं ॥ २१ ॥ निमंत्रितास्ते नरनाथ संघाः समागताः सर्व कुटुंब युक्ताः ॥ अश्वैस्तथैषां करिभिर्गजैर्वा रथैः पुरे दुर्गम एव मार्गः ॥ २२ ॥ तपेव सर्वे मनुजा द्विजातयः प्रचंड विद्याः खलु पंडितो त्तमाः ॥ कवीश्वराणां निवहास्तु चारणाः सुवंदिनो ऽमंदगुणाः समाययुः ॥ २३ ॥ पुरंतदामर्त्त्य मयंच गोमयं स्वनोमयं वापि हया वलीमयं ॥ करेणुपूर्ण करिसद्घटामयं दृष्टं महाश्चर्यमयं जनव्रजैः ॥ २४ ॥ अन्नस्य पक्वान्नगणस्य भूयः समस्त भोज्यस्य समागतेभ्यः ॥ अनंतसंख्ये भ्यइहादरेण कृत प्रदानं प्रभुणा समानं ॥ २५ ॥ स्वीयैः परैर्वापिनिमंत्रणार्थ मश्वादि हस्त्यादि विभूषणादि ॥ वस्त्राद्य मानीतमथो गृहीत्वा योग्यं परावृत्य ददौ तदन्यत् ॥ २६ ॥ एवंबहुष्वे वदिनेषु लोके निवेद्यमाने हिनिमंत्रणस्य ॥ वस्तुव्रजं योग्यमहो गृहीत्वा अन्यत्परावृत्त्य ददौ वदान्यः ॥ २७ ॥ शते सप्तदशे पूर्णे वर्षे द्वात्रिंश दाब्दये ॥ माघ शुक्ल द्वितीयायां राजसिंहस्य भूपतेः ॥ २८ ॥ परमार कुलोत्पन्ना श्रीराम रसदेवधूः ॥ राजसिंह नृपाज्ञातो वाप्या उत्सर्ग मातनोत् ॥ २९ ॥ दहबारी घट्ट मध्ये लग्ना रजत मुद्रिकाः ॥ चतुर्विंशति संख्यायुक्सहस्त्र प्रमिता इह ॥ ३० ॥ ततस्तु सेतौ धरणी धवोत्तमो जलाशयो त्सर्ग कृते तुलाकृते ॥ हेम्नस्तथा हाटक सप्तसागर त्यागाय वैत्रीणि सुमंडपान्ययं ॥ ३१ ॥ कर्तुसमाज्ञापयदत्रराणा श्रीराजसिंहो बुधसूत्र धारान् ॥ कृतानि कुंडानि नवैवतत्र वेदी चतुर्हस्त मिताकृतावा ॥ ३२ ॥ सुमंडपः पोडश हस्तमान इदक्सु संख्या मितकार्य सिद्धै ॥ वदाम्यहं तन्नवखंडयुक्तं क्षितौ प्रसिद्धै नृपतेः सुनाम्नः ॥ ३३ ॥ अस्यासुदृष्ट्यै वचतुः पुमर्थ प्राप्तिस्तु योग्ये समये नराणां ॥ यशोस्तु वैषोडश सत्कलेंदु प्रभं प्रभोर्वैतिकृतः प्रकारः ॥ ३४ ॥ स्तंभाकृता पोडश संमितास्ते दानानि

किंषोडश वामहांति ॥ कृतानि कर्त्तुंच कृताः प्रतिज्ञा लेषाहि दिग्भित्तिषु भूमिभर्त्रा ॥ ३५ ॥ द्वाराणि चत्वारि कृतानि तेषां संदर्शनान्मुक्ति चतुष्टयं स्यात् ॥ एतादृशो मंडपराज एवं कृतस्तु यूपो पिचसूत्रधारैः ॥ ३६ ॥ तुला विधानस्यच सप्तसागर दानस्य वा मंडप युग्म मुत्तमं ॥ तुलाक्रमोद्भासित मेवमद्भुतं श्रीराजसिंहेन कृतं मनोहरं ॥ ३७ ॥ एवं त्रयं मंडित मंडपानां त्वयाकृतं हेतुरयं महींद्राः ॥ तापत्रयं दर्शन तोस्य न्टणां हर्त्तुं त्रिनेत्र प्रियतांच लब्धुं ॥ ३८ ॥ गते शते सप्तदशे सुवर्षे द्वात्रिंश दाख्ये तपसी तिराज्ञा ॥ पांडौ दशम्यां च शनौगृहीतो जलाशयो त्सर्ग विधे मुहूर्त्तः ॥ ३९ ॥ आदौ तुमाघे सित पंचमी तिथौ मही महेंद्रेण पुरो धसा सह ॥ जलाशयो त्सर्ग कृतेधिवासनतद् र्त्विजां सद्वरणं कृतं मुदा ॥ ४० ॥ होतारौ जापकौ द्वार पाला वेकां श्रुतिं प्रति ॥ षट् चतु र्विंशतिः संख्या ऋत्विजा मिति कीर्त्तिता ॥ ४१ ॥ एको ब्रह्मा तथा चार्य षड्विं शति रतो ऽखिलाः ॥ तेमीमत्स्य पुराणोक्ता स्तत्र प्रोक्त फल प्रदाः ॥ ४२ ॥ चतुर्विंशति तत्वानां पुंसस्पा दान मात्मनः ॥ तद्राणावरणं वीरः षड्विंश दृत्विजा निति ॥ ४३ ॥ इति त्रयोदशः सर्गः ॥ १३ ॥

श्री गणेशायनमः ॥ श्री पट्टराज्ञ्या परमार वंश्या श्री इंद्रभाना भिधरावपुत्र्याः ॥ आज्ञा सदाकूंवरिनाम भाजा कृतामुदा रूप्य तुला कृतेद्राक् ॥ १ ॥ अकारि रात्रा विहमंडपंजनै रखंड कुंडै रभिमंडितं जवात् ॥ नृणां महाश्चर्य महोभवत्ततो ऽधिवासनं तत्रकृतं विधानतः ॥ २ ॥ गरीबदासाख्यपुरोहितेन वै पुत्रप्रयु-क्तेन तु हेमरूप्ययोः ॥ कर्त्तुं तुलामंडप युग्मकं कृतं पुरोधसाकारि ततोधि वासनं ॥ ३ ॥ राणामणि श्री अमरेशसूनो र्भीमस्य राज्ञस्तुवधूः पवित्रा ॥ तोडा स्थितेर्भूपति रायसिंह मातातुलां रूप्यमयीं विधातुं ॥ ४ ॥ आज्ञापयामास तदैव सृष्टं रानेंद्र लोकै र्निशिमंडपंसत् ॥ समस्तवस्तु स्फुरितं कृतंवा धिवासनं तत्र तथोक्तरीत्या ॥ ५ ॥ चौहानवंशो त्तमबेदलापुर स्थितेर्बलूराव वरस्यसत्सुनः ॥ सरामचंद्रः किलतस्य चात्मजः सत्केसरीसिंह इतिद्वितीयकः ॥ ६ ॥ रावोद्वितीयः कृतएषराणा श्रीराजसिंहेन सलूंवरस्थः ॥ कर्त्तुंतुलां रूप्यमयीं विचारं भ्रात्रा करोद्वै सबलादिसिंहः ॥ ७ ॥ उवाचरावोथ महान्महामतिः रावोभवानेष कृतोसि भूभुजा ॥ तुलां करोत्वेवतदा तुलाकृते सकेसरीसिंह इहोद्यतो भवत् ॥ ८ ॥ सकेसरीसिंह महामनामुदा विधायवस्तु प्रसरं सविस्तरं ॥ सकुंडसन्मंडल वेदि मंडपं कलाकरोद्वा गधिवासनं ततः ॥ ९ ॥ सुमंडपं चारणवार्हटोवा सत्के सरीसिंह इतीह सेतोः ॥ तटे तनोद्रूप्य तुलांविधातुं तथांतिके खादर वाटि

काया: ॥ १० ॥ माघेत्र शुक्ल सप्तम्यां राजसिंह नृपप्रिया ॥ राठौड रूपसिंहस्य पुत्रीजोधपुरी व्यधात् ॥ ११ ॥ त्रिंशत्सहस्र रजत मुद्रासृष्टां प्रतिष्ठितां ॥ वापिकां राजनगरे राजसिंह नृपाज्ञया ॥ १२ ॥ ततो नवम्यां नवदुंदुभीनां नाना विधानां नवकाहलानां ॥ विचित्र वादित्र वरप्रजानां सुरंजिता: सर्व जना निनादैः ॥ १३ ॥ ततोमहा मंडपमध्य ऊर्द्ध स्तंभेषुवेद्या विदधे वितानं ॥ नृपोमहा सत्व-मय: सुयुक्तं रजोनिवृत्त्यै तदिहार्थयुग्मं ॥ १४ ॥ पट्टांबराणां रचिता: पताका विचित्ररुपा: शुभमंडपस्य ॥ सर्वासुदिक्षू र्द्धमहो नृपेण जगज्जयस्येति कृतस्यनूनं ॥ १५ ॥ सुगंधिभि र्माल्यगणैः प्रसूनैः सत्पल्लवैश्चंदन मालिकाभि: ॥ माघेप्य-वद्गा एवमंडपेषु वसंतएव प्रविभातिचित्रं ॥ १६ ॥ प्रकल्पितं तत्रचरंग वल्लिभि: सत्पद्मगर्भं भृतसप्त मंडलं ॥ सषोडशारं शुभवृत्त मद्भुतं चक्रं चतुर्वक्र विराजितं पुन: ॥ १७ ॥ समंततोवा चतुरस्त्र मद्भुतं सद्वारुणं मंडलमत्र कारणं ॥ श्रीपद्मनाभस्य सुखायसप्त द्वीपप्रभो: षोडश सत्प्रमाणकैः ॥ १८ ॥ ज्ञेयस्य भूपेन सुवृत्त लब्धये चक्रश्रियेवा चतुरास्य तुष्टये ॥ वीरेणसृष्टं चतुरस्त्र वेदिका सद्रंगवल्ली निभरत्नपूर्तये ॥ १९ ॥ राजाधिराज: स्व पुरोहितेन युक्त: समेतो गुरुणायथेंद्र: ॥ यथावसिष्ठेन चरामचंद्रो विराजते मंडप मध्यदेशे ॥ २० ॥ सहोदराद्यै स्तनयैश्च पौत्रै र्नानाक्षितीशै रपिदुर्गनाथैः ॥ निमंत्रणायातनरेश संघे विशोभितो देवगणे र्यथेंद्र: ॥ २१ ॥ महीमहेंद्रो नृपराजसिंहो धर्मैकमूर्त्ति र्धरणी धवेड्य: ॥ कृतैकभुक्त: प्रथमेदिनेद्य कृतोपवासो नियमी नवम्यां ॥ २२ ॥ देहस्य शुद्धिं प्रविधायप्राय श्चित्तंच कृत्वातिविशुद्ध चित्त: ॥ श्रुतिस्मृति प्रेरित कर्मवृंदे श्रद्धामयो ब्राह्मणमावदान: ॥ २३ ॥ श्री राजसिंह: कृतवान् प्रायश्चितं यदा तदा ॥ प्रायश्चित्तं शुद्धमस्या तिशुद्धमभव-त्पुन: ॥ २४ ॥ ततो नृप: स्वस्ति सुवाचनंच पुरोधसा विप्रवरै: समेत: ॥ स्वस्ति प्रदंवै कृतवान्धरित्र्या: पूजांच पृथ्वीश्वर भावदायीं ॥ २५ ॥ गणेश पूजां पृथिवी श्वरस्फुर द्गणेशताप्रातिमहासुखप्रदां ॥ श्रीगोत्रदेव्या अपिगोत्रवृद्धिदां गोविंदपूजां बहुगोधनप्रदां ॥ २६ ॥ कृत्वा कृतार्थं विलसत्पुमर्थं स्वमन्यमान: क्षितिपेषुधन्यं ॥ रामोवसिष्टस्य यथाश्वमेधे चकार पूजां वरणं तथैव ॥ २७ ॥ गरीबदासाख्यपुरोहितस्य कृत्वातु पूर्वं वरणं परेषां ॥ निजाश्रिताना मखिल द्विजानां सदृत्विजां वावरणंशुचीनां ॥ २८ ॥ मुदाकरो दत्रतु पीठदानं स्वराज्य पीठाचल भावकारि ॥ प्राग्जन्म पापा धिकधावनार्थं श्री विप्रपंक्तेः पदधावनंच ॥ २९ ॥ कलापकं ॥ प्ररोचना कृज्जगतोहि धर्मे सुरोचनाभि स्तिलकं द्विजानां ॥ श्रियोऽक्षतलाय सदक्षतार्वा प्रसूनपूजा मपिसूनुदात्रीं ॥ ३० ॥ कृत्वाव तादं मधुपर्कदानं कुसुंभ सूत्रं धृतधर्म सूत्रं ॥ आकल्प कीर्त्तिस्थितयेत्वनल्पं संकल्प

नारं प्रददौ द्विजेभ्यः ॥ ३१ ॥ अनर्घ्यता कारक मर्घ्यदानं कृत्वाददौ वा द्विज पुंगवेभ्यः ॥ सुदक्षिणाः संगर कर्मधर्म त्यागेषु वा दक्षिण भावदात्रीः ॥ ३२ ॥ गरीबदासाख्य पुरोहितस्य पुत्रप्रयुक्तस्य महार्चनायां ॥ वासः समूहं शुभवासनादं ताभ्यां ददौ भूपति राजसिंहः ॥ ३३ ॥ मुक्तामणि भ्राजितकुंडलेच श्रीमंडलाप्त्यैमणि मुद्रिकाश्च ॥ स्वकीयमुद्रा चलनायजंबू द्वीपे खिलेस्वो त्कटकं गदाढ्यं ॥ ३४ ॥ प्रांशुंस रत्नान्कटकांगदांश्च यज्ञोपवीतानि सुवर्णवंति ॥ जलाशयोत्सर्ग सुयज्ञ सिध्यै ददौ नरेंद्रोन्नत राजसिंहः ॥ ३५ ॥ युग्मं ॥ नाना विधान्याभरणानि नूनं स्वस्य क्षितीशाभरणत्वसिद्ध्यै ॥ जलाशयोत्सर्गविधिप्रसिद्ध्यै जलाच्छपात्राणि-सुवर्णवंति ॥ ३६ ॥ श्री भोजनाम्नाधिकदान जातपुण्याप्तये भोजनपात्रपंक्तिं ॥ निवेद्य पूज्यं तम पूजय त्सत्पुत्र प्रयुक्तं स्वपुरोहितंसः ॥ ३७ ॥ युग्मं ॥ ततोऽपरेभ्यश्च सुवर्ण भूषण संघान्सुवर्णस्थितये तदालये ॥ ददन्महींद्रो मणिमुद्रिकागणा-न्स्थित्यै मणीनांच तदीयमंदिरे ॥ ३८ ॥ सुरूप रूप्योत्तमपात्रपंक्तिं रूप्याति पूर्त्यै च तदालयेषु ॥ वासः समूहा नतिनूतनांश्च मनस्सुतेषां सुखवास सृष्ट्यै ॥ ३९ ॥ एवंससर्वर्चिन मंत्र कृत्वा नानान्नपै रर्चितपादपद्मः ॥ सुभाग्यभाजं कृतकार्यवर्यं स्वंमन्यमानोत्र विभातिवारः ॥ ४० ॥ ॥ कुलकं ॥ इतिश्री चतुर्दशः सर्गः ॥ १४ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ततः सवादित्र विचित्र नादं कुरंग वेगो च्चतुरंग संगं ॥ उत्तुंग मातंग घटासमेतं नानाजनस्तोमसमाकुलंच ॥ १ ॥ चलत्पताका वलि शोभिताश्वं संस्थाप्य विप्रान्स्फुरदृलि जश्च ॥ अलंकृता नल्प गजा वलीनां स्कंध प्रदेशेषु सुबंधुरेषु ॥ २ ॥ तान्लोकपालानि वभूरिभूपान् पश्यन्नवश्यं वशगः क्षितीशः ॥ अग्रे सरांस्तान्प्र विधायसर्वा न्विचित्र वादित्र धरान्नरांश्च ॥ ३ ॥ अखंड सौभाग्य भृतोतिभव्या नारीर्विचित्राभरणाश्चनव्याः ॥ जलाहृतिप्रोद्धृतधन्यकुंभाः कृत्वा पुरस्ता जितदिव्यरंभाः ॥ ४ ॥ धीरंपुरस्कृत्य पुरोहितंजलयात्रां विचित्रां कृतवा-न्नरेश्वरः ॥ युधिष्ठिरस्या पिचराजसूयके शोभानवै तादृशरीति रीरिता ॥ ५ ॥ ॥ कुलकं ॥ प्रोक्तं जनैर्लोक वृतोय मुद्यतो जलार्थ मर्थो प्यपरो स्तितंवदे ॥ दानाय तच्छत्र गलत्सुहाटक ग्रहं प्रसन्ना द्वरुणा करिष्यति ॥ ६ ॥ तथात्र कृत्वा वरुणस्यपूजां विधान पूर्वं सकलांगयुक्तां ॥ आनाय्यनीरं कलशेपुकृत्वा नारीः पुरः सत्कलशाः कलोक्तीः ॥ ७ ॥ महामहोत्सा हमयः स्फुरज्जयो लसद्दयः स्पष्ट-नयः सविस्मयः ॥ द्विजावली मंडित मंडपे शुभे ऽ भवत्प्र विष्टोति विशिष्टतुष्टि-मान् ॥ ८ ॥ संस्थाप्यवेद्यां कलशान् जलाढ्या न्वस्त्रावृता न्दिक्षु चतुर्मितासु ॥

मध्येजगद्येय मुखो मखेस्मिन्विराजते भूपतिराजसिंहः ॥ ९ ॥ चतुर्पुकोणेपुसु-मंडपस्या करोन्नृपः स्थापित देवपूजां ॥ सवास्तुपूजां शुभवस्तु पूर्णां वेदोक्त वेदी स्थित देवतानां ॥ १० ॥ नवग्रहांस्ता नधिदेवताश्च संस्थापय न्प्रत्यधि देवताश्च ॥ नवग्रहंसा ग्रहमेपशत्रुश्रिय प्रियोक्षणां प्रकरिष्यतीशः ॥ ११ ॥ संस्थापय न्सत्कलशंच रौद्रं रुद्रंप्रसन्नं क्षितिपो करोद्राक् ॥ रौद्रंभयं शत्रुकृतं नदेशे स्यादस्य भद्रं भवतात्सुदेशे ॥ १२ ॥ ततोमहा मंडप मध्यदेशे विप्रैः समेतो विलसत्पुरोधाः ॥ धराधवो जागरणं वितन्वन्वेदोक्त कार्यं कृतवा न्समस्तं ॥ १३ ॥ ततोनिशांते प्रविधाय नित्यं स्नानादिराणा मणिराजसिंहः ॥ जातः प्रविष्टः शुभ मंडपेवै सहोदरा-दींश्च तदाकुमारान् ॥ १४ ॥ पत्नीः समस्ताश्च पितृव्यजायाः स्नुपाश्च वंशोद्भव सर्वपुत्रीः ॥ पुरोधसां धन्यवधू र्नृपाणां वधूः समाहूय मुदोपविश्य ॥ १५ ॥ सुकर्मणो स्याद्भुत दर्शनार्थं श्री पट्टराज्ञी सहितो हिताढ्यः ॥ कृत्वा मुदाश्री वरुणस्य पूजां समस्तदेवा तुलपूजनंच ॥ १६ ॥ रत्नाकरं कर्त्तु मिहद्वितीयं तडागमेनं नव रत्नराजिं ॥ निक्षिप्तवान् मध्यइहास्य शस्यं मत्स्यं पुनः कच्छप मच्छमेव ॥ १७ ॥ श्रेयस्करं वामकरं ततोत्र निधिद्वयं स्थापितमेव मन्ये ॥ ततोत्रसर्वे निधयोजवेन समा गमिष्यंति ततो जलस्य ॥ १८ ॥ नूनं समृद्धिर्भविता सदास्मिन्समुद्र रूपत्व मथास्य भावि ॥ मयास्य वैराजसमुद्र नामो त्पत्तौतु हेतुः कथितोयमेव ॥ १९ ॥ क्षिप्ता निरत्नान्य परेसमुद्रे त्वया तडागेत्र नृपेन्द्रजातं ॥ रत्नाकरत्वं त्वथवाडवाग्नि सिद्धिं कुरुस्या दिति पुण्यपूर्त्तिः ॥ २० ॥ गोः पूजनं वत्स युजो विधान पूर्वंनृपालः कृतवान्कृतींद्रः ॥ हिंकृण्वतीं गांप्रसमीक्ष्य भूपः पुरोहितं प्रत्यवदत्किमेतत् ॥ २१ ॥ शुभं भवेत्प्रत्य वदत्पुरोहितो वेदोक्त मेतच्छकुनं यतः प्रभो ॥ गोतारणारं भणमातनोत्पुनः सत्विक् सहायो धरणी पुरंदरः ॥ २२ ॥ तडागमध्ये कृतवान् सुखेन गोतारणारंभ महोमहींद्रः ॥ गोशब्दमात्रस्यतु येसदप्य स्मिन्नाम तुल्यार्थक कर्म लब्ध्यै ॥ २३ ॥ ब्रुवेतदर्था न्भुविनाक सौख्य लाभाय युद्धे शरसत्यतार्थं ॥ गवांच लाभाय सुवागवाप्त्यै करस्थ वज्रेण रिपुक्षयाय ॥ २४ ॥ दिक्षुस्फुरत्कीर्त्ति कृतेजनाली नेत्रातितोपाय विभाप्तयेच ॥ समस्त भूराज्य कृते नृपस्य तडागनीरस्यतु पूर्णतार्थं ॥ २५ ॥ लक्ष्येष्ट लाभायच दृष्टि तुष्ट्ये श्री राजसिंहास्य महीपतेः सदा ॥ ऋत्विग्गणे रीदृशसत्फलाप्तये कृतंहि गोतारणकं सुशर्मदं ॥ २६ ॥ गोतारणादुस्तरमत्र कर्त्तुं तडागमुख्यस्य तुनामनव्यं ॥ प्रश्नंकृतीत्थं कृतवान्महींद्रः पुरोहितं प्रत्यथ राजसिंहः ॥ २७ ॥ तदा वदत्तत्र पुरोहितोयं वदत्यवश्यं त्वरिसिंह नामा ॥ तदोक्त मेवं वदतात्पुरोधा आज्ञाकृता भूमि भुजात्र भूयः ॥ २८ ॥ नामास्य

वाच्यं त्विति तत्पुरोध सानामोक्तमेकं त्वितिराजसागरः ॥ नामापरं राजसमुद्र इत्यतो नृपस्तडागस्यतु जन्मनामवै ॥ २९ ॥ इत्युक्तवाने वहि राजसागर स्तदुत्तरं राजसमुद्र इत्यपि ॥ नामास्य चक्रे दिनपंचकोत्तरं दिव्येमुहूर्त्ते त्विति भूमिनायकः ॥ ३० ॥ महोत्सवं द्रष्टु मिमंपुरंदरः समागतो ह्यत्र विनिश्चितं बुधैः ॥ यतस्तदग्रे सरवारिदव्रजः प्रवर्षतिस्मां बुकणं शनैः शनैः ॥ ३१ ॥ ततोमहा मंडप मध्य उत्तमा होमक्रियाया मभवन्परायणाः ॥ श्रीवेदपाठेषु जपेषु तत्पराः क्रियासु सर्वासु तथैव मृत्विज ॥ ३२ ॥ नवेषु कुंडेषु नवस्वथाग्नयः श्रीगार्ह पत्या ह्वनीय सन्निभाः ॥ प्रजज्वलु स्तत्र वितान मंडलं धूमेन धूम्रं सकलं तदा भवत् ॥ ३३ ॥ धूमावलीभि र्गगने तदा भवन् महावितानानि पराणि भूपते ॥ रजस्सुरक्षो कृतये जगत्कृता कृतानि किं धूसरवर्णवाससा ॥ ३४ ॥ महा वितानेष्वथ धूममालया कृतं तुमालिन्यमिदं तदा भवत् ॥ अनेक मालिन्य हरंहि मंडपस्थितस्यलोक प्रसरस्य पश्यतः ॥ ३५ ॥ अनंत धूमालि मनंत संस्थित ज्योतींषि वन्हेः शुभगंध वाहकान् ॥ सुगंध वाहान्नृपकल्प यस्वहो संक ल्पनीराणि सदाब्दपूर्त्तये ॥ ३६ ॥ ततः कृतार्थः समरे समर्थ श्चापश्च – कस्य पुमर्थकांक्षी ॥ मनो दधे राजसमुद्र भद्र प्रदक्षिणार्थं सकलार्थसिध्यै ॥ ३७ ॥ यस्या क्षितौ पूर्व महोऽभवन् शिला निम्नो न्नतत्वं पटु कंटका जनैः ॥ साम्यंच संमार्जन मत्र निर्मितं भाग्यं भुवस्त न्नृपतेः समागमे ॥ ३७ ॥ अरण्य वऽल्या वलि रज्जवो भवत् यस्यां क्षितौ वीर नृपा ज्ञया पुरा ॥ क्रोशा-दि कक्षानकृते जनै र्जवात् धृतो द्वतादौ कुशसूत्र रज्जवः ॥ ३९ ॥ इति राज प्रशस्तौ भट्ट रणछोड कृते पंचदशः सर्गः

श्री गणेशायनमः पूर्णेतु षोडश शते शुभ कारि वर्षे द्वाविंशति प्रमितके किल माधवेच ॥ पक्षे सिते उदयसिंह नृप स्तृतीया मध्ये करो दुदय सागर सु प्रतिष्ठां ॥ १ ॥ उदयसागर नाम जलाशयो त्तमपरि क्रमणे रमणी युतः ॥ उदयसिंहनृपः शिबिका स्थितः समतनो दिति सूत्रनिवेशनं ॥ २ ॥ जसवंतसिंह रावल इति जल्पित वान्प्रभोःपार्श्वेः ॥ एवं कार्यं भवता अथवा श्वारोहणं कृत्वा ॥ ३ ॥ कार्या प्रदक्षिणार्थे द्विजायसो श्वस्ततो देयः ॥ श्रुत्वाति पक्ष युगलं तूष्णीं स्थितवा न्महाशयो भूपः ॥ ४ ॥ ततो नृपः सामगवेद पाठिभि र्युक्तः पुरः स्थापित ऋत्विगा दिकः ॥ नाना प्रतीहार करस्थ यष्टिका रवौघ दूर स्थित सर्व मानुषः ॥ ५ ॥ विचित्र वादित्र महा रवश्रवाः पुरः स्थित प्रोन्नतदंति पंक्तिकः ॥ विराजि वाजि व्रजराजिता

ग्रकः शिवां शुक श्री शिबिका पुरः सरः ॥ ६ ॥ पुरस्थ पूर्णो न्नतकुंभ सत्फलो महामहोत्साह मयो महोत्सवः ॥ समस्त जीयां बसना चल स्वकां शुकांचल ग्रंथि विधान सुंदरः ॥ ७ ॥ वेदो दितं राजसमुद्र राज त्सुसूत्रसंवेष्टन कर्म कर्त्तुं ॥ स्वपाणि संस्थापित नव्य भव्य सत्कुंकुमोद्य न्नवतंतु पंक्तिः ॥ ८ ॥ सुखपरिक्रमणाय महीभुजो धरणिमूर्द्धनि सुचेलकतूलिकाः ॥ अथधृताः स्वजनेन पदा स्पृशन्स सुकुमारपदोऽत्यजदद्भुतं ॥ ९ ॥ वसनोपानद्युगलं पदयो र्धृत्वापि भूभुजा त्यक्ता ॥ सुकुमार पदेनापिच धर्माद्भुतपद्धतिं प्रकल्पयता ॥ १० ॥ अपाद चारी मृदुलां घ्रिपद्मो विपादुकः संप्रतिपाद चारी ॥ लवन्भरा भाति महा प्रभावो राजाधिराजः प्रभु राजसिंहः ॥ ११ ॥ प्रदक्षिणा दक्षिणतो वितन्वन् सदक्षिणो दक्षिण मार्ग गामी ॥ प्राची दिशा दक्षिण दिक् प्रतीची सौम्या गतान्ददन् बहु दक्षिणाभिः ॥ १२ ॥ द्विजा दिकान् धन्य धनैश्च धान्यै रतोषय त्सर्व जना स्तथैव ॥ सद श्वमेधो त्तम राजसूया दिकं फलप्राप्तु मिहप्रवृत्तः ॥ १३ ॥ युग्मं ॥ तडागं वेष्टयन् राना अखंड नवतंतुभिः ॥ नवखंड धरा मध्ये कीर्त्ति स्थापितवां श्चिरं ॥ १४ ॥ शुक्लांबरं चंद्र मिव क्षितीश राज्ञां सुतारा इव तार हाराः ॥ सेवंत एवत्युचितं हि गौर्यः सहीर मुक्ता भरणाति रम्या ॥ १५ ॥ इममुत्सवमद्भुतं महेंद्रो रुचिरं द्रष्टु मुपागतो मुदात्र ॥ जलदास्तु पुरः सरा स्तदीया इति वर्षति जलानि हर्षपूर्णाः ॥ १६ ॥ प्रथमं रुचि शैत्य शोभितानां प्रमदानां प्रमदाति भूपितनां ॥ अथ वर्षण नीर पूरितानां सकलांगेष्वभव त्सुशीतलत्वं ॥ १७ ॥ जलधारा वलिपु स्थिताः स्त्रियः कृतकंपासु तडागसत्तटस्थाः ॥ द्रुतजांबूनदकांतकांतयः क्षणदारुत्सव दर्शना गताः किं ॥ १८ ॥ वनिता अनि मेखलोचना स्ताश्चकिता उत्सव दर्शना गताः किं ॥ जलधारा वलिमार्ग गामिनोसुरकन्या इतिवक्ति धन्यधन्याः ॥ १९ ॥ तनुलग्ना र्द्रपटातिदृष्टदेह घटनानां घटसन्निभस्तनीनां ॥ घनधारा वलिपूरितांगिकाना मिव कौतूहलदं जलांगनानां ॥ २० ॥ पदचंक्रमणेषु सोद्य मेतत् अरिसिंहस्य सहोदरं समीक्ष्य ॥ सुकुमारतरं सुखिन्नचित्तः शिबिका रोहण मादि शन्महींद्रः ॥ २१ ॥ पदचंक्रमणे कृतोद्यमां निजराज्ञीं परमारवंशजां ॥ महतीं समवेक्ष्य सुश्रमां शिबिकारोहण मादिशत्प्रभुः ॥ २२ ॥ अथ राज समुद्र मंडलेस्मिन्परितः सूत्रसुवेष्टनं वितन्वन् ॥ निजभूवलये सु धर्मसूत्रं सततं रक्षति राजसिंह राणा ॥ २३ ॥ अथ परिक्रमणेषु समागता विविधपुष्प विराजित मालिकाः ॥ सपदि राजसमुद्र वरेर्पिता वरुणदेव मुदे करुणाभृता ॥ २४ ॥

वसनग्रंथिविधानभूषिताभि र्युवतिभिः परिवेष्टितो नरेंद्रः ॥ भुविनाना विध दिव्य सुन्दरीभिः परितो वेष्टित इन्द्र एवनूनं ॥ २५ ॥ वसन ग्रंथि विधान भूषिताभि र्वनिताभि र्नृपमावृतं समीक्ष्य ॥ जनता वीक्ष्य हि रासमंडले श्री हरि रेवं कृतवान्ध्रुवं विहारः ॥ २६ ॥ चतुर्दशोद्घापित लोकवासि प्राणीस्फुर तृप्ति विवर्द्धनाय ॥ चतुर्दश क्रोश मितस्तडागो जलेनपूर्णो भवदेवतूर्णं ॥ २७ ॥ प्रदक्षिणायां शिबिराणि पंच श्रीराजसिंहः कृतवानि हेति ॥ हेतुस्तुपंचेंद्रियजान्विका रान्हर्त्तुं प्रवृत्तोय महोसुवृत्तः ॥ २८ ॥ ईपत्फलाधार धरोधरेंद्रो महाफल प्राप्तियुतोहि जातः ॥ धृत्वासमस्ता न्नियमांन्यमांश्च तनोसिपुण्यं यमयातनाहृत् ॥ २९ ॥ कमल बुरिजस्यपार्श्वे तटाकतोये त्रयोदश्यां ॥ एकोगजोनिमग्नो झटितिप्रकटो भवद्गभीरेपि ॥ ३० ॥ यत्तद्वरुणेनाय मुपायनाधी धरेंद्रपुण्यस्य ॥ राज्ञोस्य प्रेपितइति विशेष विद्भिस्तदा प्रोक्तं ॥ ३१ ॥ आम प्रदाने घृतपक्वदानैः पक्वान्नदाने र्वसनप्रदानैः ॥ द्रव्यप्रदाने र्नृपआगतांस्ता नतोपयन्तोप युतोमनुष्यान् ॥ ३२ ॥ एवंफलाधार धरोधरेंद्रः षट्कैदिनानाम भवन्ततोयं ॥ पडर्तुनीरोग तनुः पडूर्मि विवर्जितो वाच्यमतः किमन्यत् ॥ ३३ ॥ ततोनरेंद्रेण चतुर्दशीदिने सुशर्मणा भर्मतुलाख्य-कर्मणः ॥ प्रकल्पितं सुंदररूप सागरं दानस्यवादा वधिवासनंमुदा ॥ ३४ ॥ चित्रंवितानं चपलाः पताकाः सुपल्लवा श्चंदन मालिकाश्च ॥ सत्सर्वतो भद्रकरीच पल्ल्यो विनिर्मिता मंडप युग्ममध्ये ॥ ३५ ॥ कृत्वार्चनं मंडप युग्ममध्ये भूतेहरे र्विघ्रप - श्चवास्तोः ॥ पुरोहिता देर्वरणंनरेंद्र ऋत्विग्गणस्या प्यकरोत्क्रमेण ॥ ३६ ॥ ततश्चतुर्दिक्षुच मंडपद्वये कोणेपुपीठेषु समस्तदैत्यः ॥ अभ्यर्च्यवास्तु प्रभृतीन् ग्रहादिका न्वेद्यांचदेवा न्प्रविभाति भूपतिः ॥ ३७ ॥ ततोभवत् मंडप युग्मनध्ये होमेवरान्सर्त्विज उत्तमास्ते ॥ श्रीवेदपाठेपु जपेपु सर्वक्रियासु सक्ता नृपतेः सुखाय ॥ ३८ ॥ ततः शिवाढ्यः शिविकांतरस्थितः शिवप्रसादा च्छिविरं प्रतिप्रभुः ॥ अकल्पयन् हयगतिं गतक्रमः सचामरच्छत्र धरादिकैर्वृतः ॥ ३९ ॥ श्रीराणवीरः शिविरं प्रविश्य शश्वत् फलाधार विधिं प्रकल्प्यच ॥ जलाशयोत्सर्ग विधेरुपस्करं कर्त्तुंसमाज्ञा पयदेप मानुपान् ॥ ४१ ॥ इतिश्री षोडषसर्गः संपूर्णः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ सप्तदश सर्गो लिख्यते ॥ आनंदपूर्णः किल पूर्णि मायां पूर्णेंदुवक्त्रो नृपराजसिंहः ॥ राज्ञीसमेतः सपुरोहितोवा भवत्प्रविष्टः शुभमंडपेस्मिन् ॥ १ ॥ भ्रात्रा विशोभी अरिसिंह नाम्ना पुत्रेण युक्तो जयसिंह नाम्ना ॥ सद्भीमसिंहेन सुतेन सक्तः पुत्रेण राजा गजसिंह नाम्ना ॥ २ ॥

सुतेन वा सूरजसिंहनाम्ना तथेंद्रसिंहाभिधसूनुना च ॥ सुतेन युक्त श्च महा बहादुर सिंहेन राजन्यगणै रुपेतः ॥ ३ ॥ अमरसिंहशुभाभिधपौत्रवान जयसिंहमुखोत्तमपौत्रयुक् ॥ प्रियमनोहरसिंहसमन्वितः प्रविलसद्दलसिंहविशोभितः ॥ ४ ॥ सुतेन युक्तोपि नरायणादिदासेन योग्यैः कुलठक्कुरै श्च ॥ महा पुरोधो रणछोड़ राया दिकैश्च भीपू वरमंत्रिमुख्यैः ॥ ५ ॥ विराजितो मंडप मध्य देशे पूर्णाहुतिं पूर्णमनाः प्रकल्प्य ॥ जलाशयो त्सर्ग विधिं च तूर्णं संपूर्ण मेवं कृतवा न्नरेंद्रः ॥ ६ ॥ समस्त जीवा वलि तृप्तयेवै जलाशयो त्सर्ग मयं विधाय ॥ मत्वा जगज्जीवन मे तदस्य सुजीवनं राणमणि र्विभाति ॥ ७ ॥ यथा दिलीपो हयमेधकर्त्ता सत्सेतुकर्त्ता भुवि रामचंद्रः ॥ युधिष्ठिरो वा कृत् राजसूय तथैव राणा मणि रेव भाति ॥ ८ ॥ ततः सुवर्णा द्भुतसप्तसागरदानोल्लसन्मंडपमध्य उत्तमे ॥ श्री राजसिंहः परिवार संयुतः प्रविष्ट एवाति विशिष्ट दिष्ट युक् ॥ ९ ॥ शास्त्रेरितं कांचनसप्तसागर दानस्य सर्वा हुति पूर्व कानिवै ॥ कर्माणि कृत्वा किल निर्मलोत्तम स्वतः सुधर्माधिप धन्य वैभवः ॥ १० ॥ सप्तैव कुंडानि च कांचनेन विनिर्मितान्यंबुधि रूप कानि ॥ संस्थापि तान्यग्रत एव तानि सोपस्कराणि क्रमतो वदामि ॥ ११ ॥ ब्रह्मप्रयुक्तं लवणेनपूर्णं कुंडंतथैकं सपयः सकृष्णं ॥ परंघृताद्यंश महेशमन्यत् तथापरं सूर्ययुतंगडाद्यं ॥ १२ ॥ दध्नातिधन्यः समहेंद्रमन्यत् परंरमायुक् धृतशर्करंच ॥ गौरीयुतं वा परमंबयुक्तं सप्तेति कुंडानि मयेरितानि ॥ १३ ॥ एतानि सर्वाणि सवस्तुकानि दलेवराज्ञी सहितो गृहीत्वा ॥ धन्या शिषोधीर पुरोहितोक्ता त्सुर्लिग् प्रयुक्ता जयतिक्षितीशः ॥ १४ ॥ महादानं सदत्वायं राज सिंहो महीपतिः ॥ सप्तसागर पर्यंतं भातिकीर्त्ति प्रकाशयन् ॥ १५ ॥ जलाशय त्याग विधौ समस्त सज्जला वलित्यागविधिर्मये त्यलं ॥ कार्या हिमत्वा शुभसप्त सागर दानंकृतं दानिवरेणयुक्तता ॥ १६ ॥ ग्रंथेषु दृष्टं किलसप्तसागर दानं तदाधिक्य कृतोस्फुरत्पणः ॥ स्वकल्पिताद्यन्वित सप्तसागर दानंनचाष्टांबुधिदो भवन्नृपः ॥ १७ ॥ गांभीर्याद्राज सिंहोयं जित्वात्र सप्तसागरान् ॥ तान्महादान विधिना द्विजेभ्यः प्रददौ मुदा ॥ १८ ॥ ज्योतिर्विन्मतमेकतो जलधयः षट्भाग केंतर्भुव क्षाराब्धि र्ममवामते जलधयः सप्तैकतोवावनेः ॥ मध्येराजसमुद्र एष तदिदं स्पष्टीकृतं तत्रत द्दानोत्सर्ग विधानयो र्मममतं तत्सत्यमेव ध्रुवं ॥ १९ ॥

रत्नाकरेणैव विधिस्तुवाडवा नलस्यपोषं तनुतेयथाप्रभुः ॥ तथाकरोत्कांचन सप्त सागर दानंनवैवाडव वह्निपोषणा ॥ २० ॥ ततस्तुलामंडप संप्रविष्टः श्री

राजसिंहः परिवारयुक्तः ॥ तुलाप्रयुक्तं सकलंविधानं प्रकल्प्यपूर्णाहुति मत्रकृत्वा ॥ २१ ॥ तुलाकदंडस्थ हरौसुशालग्रामंकरेदृष्टि मयंनिधाय ॥ स्पृष्टायुधः शुक्लपटः सितस्रक् श्रुतस्फुरन्योत्र विचित्रवाक्यः ॥ २२ ॥ श्रुतश्रुतिर्ब्रह्म परायणश्च ततोतुलांहेमतुला मनल्पां ॥ मुदासमारुह्य नृपोवदद्वा दिव्याः सुदासीः प्रतिदानशौंडः ॥ २३ ॥ सुवर्णमुद्रा परिपूरिताः शुभाः समानयंत्वे वजवेन कोथलाः ॥ ताभिर्धृतास्ता बहुशस्तुलापुटे परासमानेतु मिमास्ततोगताः ॥ २४ ॥ अत्रांतरेचाप्य वदद्धराधवो न्यूनंसुवर्णं यदिवाभवेत्तदा ॥ सप्तस्वथोसागर एक उत्तम आनीयतामाशु सुवर्णनिर्मितं ॥ २५ ॥ गरीवदासाख्य पुरोहितेन तदोक्त मेवं नृपतिंप्रतीति ॥ अपेक्षितैवा त्रहिसागरस्य युक्तान्नृपेंदोः समतातुलायाः ॥ २६ ॥ एतादृशंकाव्य महोसुनव्यं पुरोधसोक्तं किलभव्यभव्यं ॥ श्रुत्वानृपालो भवदेव तुष्टः स्मेराननो दानि गणेविशिष्टः ॥ २७ ॥ त्रियुक्नवसहस्रकं प्रमिततोलकप्रोल्लस त्सुवर्ण परिपूरितां किलतुलां सुवर्णोद्भवां ॥ विधायपुरुहूतव क्षितितले महादानसद्विधान कृतिपूर्वकं जयति राजसिंहोन्नृपः ॥ २८ ॥ समस्तदेवा वलिशोभतेयं दिक्पालमाला कलिताति दृश्या ॥ अलंसुवर्णाच्छ सुवर्णपूर्णा हैमीतुलामेरु निभावभाति ॥ २९ ॥ सुवर्णमतुलंप्राप्य यशस्त्यागीसउच्यतां ॥ धत्तेतन्नमनंसृष्टं सुवर्णतुलयोचितं ॥ ३० ॥ ऊर्ध्वस्थितंनृपवीक्ष्य जातासर्वांगसुन्दरी ॥ सुवर्णपूर्णाविनता कुलस्त्रीवत्तुलोचितं ॥ ३१ ॥ अमरसिंहशुभा भिधमद्भुतं सुभगपौत्रवरं मधुरोधिकं ॥ कनककांत तुलास्थितमादरा त्समतनोन्नृपतिः प्रियतामयः ॥ ३२ ॥ एवंतुलादान विधिं प्रकल्प्या भवत्कृतार्थो नृपराजसिंहः ॥ पूर्णतुला सर्वविधोसुसक्तो विचित्रमत्रास्ति बुधोक्तिमध्ये ॥ ३३ ॥ नममेतित्यागवान् वा दानेज्ञानेतथेरितान् ॥ कर्मज्ञानोद्भव सुखं राजसिंहत्वयार्जितं ॥ ३४ ॥ जलाशयोत्सर्ग सुसप्तसागर दानस्फुरत् स्वर्णतुला भिधानकं ॥ कर्मत्रयं निर्मितवान्नरेश्वरः पापत्रयं हर्तुमिहेति कारणात् ॥ ३५ ॥ त्रयी महत्तर्कसदर्थकल्प कृते तुलोकत्रय तुष्टि सृष्ट्यै ॥ गुणत्रयोद्भूत विकार शान्त्यै त्रिमूर्त्ति मद्वेद समर्पणाय ॥ ३६ ॥ युग्मं ॥ त्रिभिर्मखै रेभि रथास्य जातं शताश्वमेधाय फलंहि मन्ये ॥ तदिंद्रता कृद्धरणींद्रता तत् श्रीराज सिंहस्य विभाति भव्या ॥ ३७ ॥ ग्रामौघ दानं गज राजिदानं हयालि दानं घटतोप्रदा नं ॥ गोवृंद दानं नृपतिः प्रकल्प्य नानाविधं दानमथो तनिष्ट ॥ ३८ ॥ तुलाकृते मेरु रहोगृहीत स्त्वया यदादेव तदैव जातः ॥ सशंकरः श्रीधर ईश्वरेंद्रो हिरण्य गर्भश्च कविः स्वरूपं ॥ ३९ ॥ द्विजपति गुरुभास्वन्मोददास्वर्ण पूर्णा विविधविबुध सेवा मंडपा डंबराभा ॥ दिगधिपकृत शोभा सिद्धगंधर्व गीता ऽ भवदतुल तुलाते

मेरुरेव द्वितीयः ॥ ४० ॥ आसीद्भास्कर तस्तुमाधववुधो ऽ स्माद्रामचंद्रस्ततः सत्सर्वेश्वर कः कठोडि कुलजो लक्ष्म्यादि नाथस्सुतः ॥ तैलंगोस्यतु रामचंद्र इतिवा कृष्णोस्यवा माधवः पुत्रोभून्मधुसूदन स्त्रय इमेब्रह्मेश विश्नूपमा ॥ ४२ ॥ यस्यासीन्मधुसूदन स्तु जनको वेणीच गोस्वामिजा ऽ भून्माता रणछोड एप कृतवान् राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ काव्यंराणगुणौघ वर्णन मयंवीराकं – – – पूर्णः सप्तदशोत्रसर्ग उदगाद्वागर्थ सर्गः स्फुटः ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ घांसो दिव्यगुढो तथासिरथलः सालोल आलोदको मज्झेरोपिधने रियोधनमयो झाडीदिका सादडी ॥ अंवेरी शुभ ऊसरोल उदित श्रीमानसानो पुनर्भावो द्वादशसंख्यया परिमितान् ग्रामानि मानेकदा ॥ १ ॥ श्रीमद्राजसमुद्र सुंदरतरोत्सर्गे ग्रहारी कृतान् श्रीराणामणि राजसिंह नृपति र्धन्यः पुरोधोविधिं ॥ विभ्राणायगरीबदास विलसन्नाम्ने मुदादत्तवान् सर्वाध्यक्ष वराय सर्व विषये चित्तानुसंधानिने ॥ २ ॥ गरीबदासाख्य पुरोहिताय ग्रामानि मान्द्वादशसं मितांस्तान् ॥ दत्वाददौ ब्राह्मणमंडलाय ग्रामान्धरां भूरिहल प्रमाणाः ॥ ३ ॥ ब्रह्मार्पणं कर्मसमस्त मेतत् ब्रह्मण्यदेवः परिकल्प्य नूनं ॥ गृह्णन् द्विजेभ्यः श्रुति निर्मिताशीः सतंजयत्येप महीमहेंद्रः ॥ ४ ॥ वर्षंतिमेघा वहवोमुहुः शनैर्दिनत्र याणानुमितं यदग्रतः ॥ दृष्ट्वोत्सवंते हरिरेष सार्थकं कर्त्तुंसहस्त्रं स्वदृशां समागतः ॥ ५ ॥ यत्पौर्णमास्यां कृतवान्नरेंद्रः कर्मत्रयंते नतुपूर्णिमायां ॥ यथैवचंद्रः परिपूर्णकांति स्तथाप्रपूर्णा तिरुचिर्नृपः स्यात् ॥ ६ ॥ मनोरथः पूर्णतमोस्य भूयात्फलं तथास्या त्परिपूर्णमेव ॥ पूर्णपरं ब्रह्म तथातितुष्टं प्रमोदसंपूर्ण तमोनृपोस्तु ॥ ७ ॥ निवर्त्त्यसर्वं स्वतुला विधानं पूर्णाहुतिंयात मनन्यचेताः ॥ तुलाधिरूढा तुलपट्टराज्ञी जातैवसौ भाग्यसु पुण्यपूर्णा ॥ ८ ॥ सुवर्णवर्णा जितवत्पलंरुचा यशोविशेषेण चराजतींरुचिं ॥ श्रीपट्टराज्ञी किलजेतु मुद्यता तुलाकरोद्रूप्य मयींतुलांततः ॥ ९ ॥ निवर्त्त्य ऽ सांगं सकलंतुलाविधिं पूर्णाहुतिं प्राप्तमनंत मोदयुक् ॥ गरीबदासाख्य पुरोहितस्तदा सुवर्णपूर्णां कृतवा न्महातुलां ॥ १० ॥ ततः प्रसन्नो रणछोडराय नामानमाह प्रियमात्मजंसः ॥ आरोप्यरूप्या तिलसत्तुलायां प्रमोदपूर्णो भवदेवतूर्णं ॥ ११ ॥ सर्वेषुवर्णेषुयतः सुवर्णवान् तुलांसुवर्णं प्रचुरां ततोतनोत् ॥ रूप्याभकीर्तिं स्फुरितेनराज तुलांतथाकार यदेषसूनुना ॥ १२ ॥ तोडास्थितेः श्रीयुतरायसिंह भूपस्यमाता रजतेनपूर्णां ॥ तुलामतुल्या मकरोदुदारो ल्लसन्मनाधर्म धुरंधराभूत् ॥ १३ ॥ चौहानवंश्य स्तुसलूंवरस्थः सकेसरीसिंह इतिप्रसिद्धः ॥ रावस्तुलां रूप्यमयीं विधायधन्यो भवद्धर्म मयोविशुद्धः ॥ १४ ॥

सचारणो वारहट प्रसिद्धः सत्केसरीसिंह इतिप्रपूर्णं ॥ रूप्येणरूप्या भयशः प्रकाशं कुर्वस्तुलां तामकरो दुदारः ॥ १५ ॥ अस्मिन्दिने राजसमुद्र नामकः प्रोक्तस्तडागो गिरिमंदिरंमहत् ॥ प्रोक्तंनरेंद्रेण चराजमंदिरं राजादिशब्दं नगरं पुरंतथा ॥ १६ ॥ अथात्र घस्रेतु सहस्रनेत्र समानसंपत्ति विराजमानः ॥ श्रीराजसिंहो वलिकर्णभोज श्रीविक्रमार्को पमदानवीरः ॥ १७ ॥ पूर्वैरितान्धान्य धराधरांस्ता न्पक्वान्नशैला नपिशर्कराद्रीन् ॥ गुडादिखंडादिक पर्वतांश्च ददौद्विजादि भ्यइहागतेभ्यः ॥ १८ ॥ ततोगिरीणाम भवद्विलक्ष्यता चित्रंहितेषा मभवज्जनुः पुनः ॥ आनीयधान्यादि सुकार्यकृज्जनैः कृतंकृतार्थै रिहसेवयाप्रभोः ॥ १९ ॥ नैतादृशंजन्म नवाप्यलक्ष्यता ईदृग्गिरीणा मभवज्जनुः पुनः ॥ एतेस्थिता एवतु यावकावले गृहव्रजोमित्र नचित्रमत्रतत् ॥ २० ॥ अत्रोत्सवे सद्घृतवापिकाः पुनर्मुहुः कृताकार्य करैर्महाजनैः ॥ मुहुर्मुहुस्तारि रिचुर्नाचित्रता पानीयवाप्योरि रिचुस्तदद्भुतं ॥ २१ ॥ अस्यश्रियं प्रेक्ष्यलोके दिक्पालांश युतोह्ययं ॥ इंद्रप्रचेतो धनदश्रीशानां शाधिकलवान् ॥ २२ ॥ ततोबहुतरं भव्यं द्रव्यंदत्तं पुरोधसे ॥ ऋत्विग्भ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च प्रभुणा सादरंमुदा ॥ २३ ॥ प्रभोराज समुद्रस्य रिंगत्तुंग तरंगकैः ॥ तटस्थद्विजदारिद्र्य द्रुमादूरीकृताध्रुवं ॥ २४ ॥ मन्येराज समुद्रस्य लोलैः कल्लोल संचयैः ॥ याचकाले र्दरिद्राख्य पंकप्रक्षालनंकृतं ॥ २५ ॥ वसन् राजसमुद्रस्य तटेसद्वार्वतीपुरी ॥ द्रागदरिद्र सुदाम्नोमे श्रीदः स्याः श्री पतेन्नृप ॥ २६ ॥ तटेराज समुद्रस्य वसन् श्रीशन्नृपश्रियं ॥ द्राक्दरिद्र सुदाम्नोमे देहि तातं तुलार्पणात् ॥ २७ ॥ सप्तसागर दानेन तत्सप्त पुरुपार्जितं ॥ द्विजानांदीर्घ दारिद्र्यं प्रभोदूरी कृतंत्वया ॥ २७ ॥ सप्तसागर दानस्य सुवर्णौघ प्रवाहतः दूरी कृतस्त्वया राज न्द्विजदारिद्र्यसद्द्रुमः ॥ २८ ॥ दत्तैर्हेम तुलास्वर्णैः सुवर्ण गिरि सन्निभान् ॥ कुर्वन्सतां गृहंत्वंत दारिद्र दमनो ध्रुवं ॥ २९ ॥ तुला सुवर्ण दानेन राजसिंह प्रभोत्वया ॥ दूरीकृता द्राग्विदुषा मतुलासा धमर्णता ॥ ३० ॥ खंशेते राजसमुद्र रूपमपरं रूपं दधानोंबुधिः ॥ मध्ये प्रोल्लोलकल्लोलः फेनाः स्फटिककूटभाः ॥ सारसाः सरसास्तीरे भांत्यस्यनवकाबकाः ॥ ३१ ॥ मुक्तास्वीयं कुलंवैव मति किलतटे यस्यसद्वारकांतां कृत्वारम्यां पुराद्रींग्यवनभयमयः केशवोद्वारि केशः ॥ गोमत्युत्तुंग संगान्दलति विगदसच्छंख चक्रोच्छपद्मः श्रीराणाराजसिंह प्रभुवरभवतः श्रीतडागः समुद्रः ॥ ३२ ॥ विभ्राणः सेतुबंधं गिरिवर रुचिरः पूरितोजीवनौघै र्नानानद्यात्रसंगं शिवसदनयुतः पोतपङ्क्त्याप्रसक्तः ॥ नैता वत्या समुद्रस्तदधिक इतितेभूपते श्रीतडागो मर्यादांवाडवाग्निं कलयति नचवा

क्षारनीरं कदाचित् ॥ ३३ ॥ प्रियतम मथुराया मंडलाच्चंड कालयवन कलितभीत्या गत्यगोवर्द्धनेशः ॥ वसतितवतडाग स्यांतिकेत्वन्मुदेत जलधिमपरमेनं राजसिंहे तिजाने ॥ ३४ ॥ अमावास्यां विनानैव स्पृश्यः सिंधुः सगर्जनः ॥ तडागस्ते तदधिकः सदास्त्यस्य विगर्जनं ॥ ३५ ॥ समुद्रयातुः स्वीकारो नकलौयातु रत्रतु ॥ त्वयाकृते यत्स्वीकारे वीरायं सिंधुतोधिकः ॥ ३६ ॥ श्रीराणोदयसिंह सूनुरभवत् श्रीमत्प्रतापः सुतस्तस्य श्रीअमरेश्वरोस्य तनयः श्रीकर्णसिंहोस्यवा ॥ पुत्रो राण जगत्पतिश्च तनयो स्माद्राजसिंहोस्यवा पुत्रः श्रीजयसिंह एषकृतवा न्वीरः शिलालेखितं ॥ ३७ ॥ पूर्णेसप्तदशे शतेतपसिवा सत्पूर्णिमास्येदिने द्वात्रिंशन्मित वत्सरेनरपतेः श्रीराजसिंहप्रभोः ॥ काव्यंराजसमुद्र मिष्टजलधेः स्टष्टप्रतिष्ठाविधे स्त्येत्राक्तं रणछोडभट्टरचितं राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ इति अष्टादशसर्गः ॥ १८ ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ लक्ष्मी सत्कांतिचंद्रा मृतशुभ विषसत्कामधुक् शार्ङ्ग धन्व प्राक्वैद्यो ऽ पारिजातामरयुवति मणी सत्सुराद्यो दयश्च ॥ शंखाच्छोच्चैः श्रवो युक त्रिदश गजमहा भंगभृद् भूतिरद्धा धन्वंतर्युद्भवो वांबुभिरिति भवतः क्षीर सिंधु स्तडागः ॥ १ ॥ कुंभोद्भव प्रकर कृष्टजलोविशुष्को जात स्ततो लवण नीरमयः समुद्रः ॥ कुंभोद्भव प्रकर कृष्टजलोतिवृद्धा मिष्टस्तवक्षितिप राजसमुद्र एषः ॥ २ ॥ श्रीद्वारिकोद्भव कृते परिमुक्तभूमिर्न्यूनः क्वचित्तदुदधिः किलकृष्ण वाक्यात् ॥ यत्तीर भिन्नधरणी पुरवासि कृष्णोनूनंसुपूर्ण इतिते ऽ ब्धिवरस्तडागः ॥ ३ ॥ खातेपष्टिसहस्त्र भूपतनयाः पूर्त्तौसहस्त्रास्ययुग्गांगाद्या भवणीकृतावपि परो ऽ न्यः सेतुबंधेंबुधेः ॥ खाते पूर्त्तिपुमिष्टसृष्टि शुभवा न्यत्सेतुबंधस्यतत् सिंधो रेककृतेरवि ध्नसमयान्मन्यामहे धन्यतां ॥ ४ ॥ अल्पस्य साम्यं नददातिकश्चित् समस्यसाम्यं नचदृष्ट मस्य ॥ ततोमहत्वेन जलाशयोयं प्रोक्तः समुद्रः कविभि र्नचित्रं ॥ ५ ॥ जलेनिमग्ना येग्रामा नतेमग्ना महीपते ॥ तेलग्ना वरुणद्वारे भग्ना स्तत्पाप पंक्तयः ॥ ६ ॥ येषांविशिष्ट ग्रामाणां क्षेत्राण्यत्र जलाशये ॥ मग्नानि तीर्थ क्षेत्राणि तानिजातानि भूपते ॥ ७ ॥ येजन्मिनां जीवनदाः स्थले तेजीवन प्रदाः ॥ यादसांच नृणांग्रामा गुणग्राम भृतांबुगाः ॥ ८ ॥ भूस्थावृक्षा जलेमग्ना स्तेषां वीजां कुरैर्द्रुमाः ॥ जलेभवन्वाटिकातो वरुणस्यत्वयाकृता ॥ ९ ॥ वोधिद्रुमोजल स्थायी तपस्तपति दुःकरं ॥ प्रवाल मालयाशाखां गुलाभिः सार्थकाह्वयः ॥ १० ॥ वटवृक्षास्थिता स्तोये तपंति प्रचुरं तपः ॥ क्षालयंति जटाजालं नूनमत्ते त्रयोगिनः ॥ ११ ॥ त्वत्कीर्त्ति स्वर्णदी भृद्यदुपति सहित प्राप्तकालिंदिका युग्नी त्वच्छायानुमाना त्स्नपनकर गजोत्कुंभ सिंदूर संगात् ॥ भ्राजत्सारस्वतौ घस्तदिति नरपते तेतडागः

प्रयागो न्यग्रोधा अक्षयाख्या: प्रविदधाति पदं युक्त मस्मिन्निकामं ॥ १२ ॥ यथा स्थले तथा जले बुधावदंति जंतवः ॥ विचित्रमत्र शाखिनस्तथा जयंति भूपते ॥ वनस्थितादुमा: सर्वे वनस्थाएवतेभवन् ॥ युक्तंविशेषोधर्मोऽत्र वरुणस्योपयोगत: ॥ १३ ॥ पूर्वंयत्रवनेसिंहगर्जनानि जलाशये ॥ जातेत्रजलकल्लोल गर्जनानि जयन्त्यलं ॥ १४ ॥ वरुणालयतस्तोया नयनात्सजितस्त्वया ॥ प्रेक्षंतेतन्मृगाक्ष्यस्त्वां पद्मछद्मकटाक्षकै: ॥ १५ ॥ कमलौघस्त्वयानीत स्तडागेवरुणालयात् ॥ कमलाद्य स्थापितोत्र कमलादानतत्परः ॥ १६ ॥ प्रदक्षिणा स्वागतायामाला भूपालतां स्त्वया ॥ तडागे वरुण प्रीत्यै प्रेषिता: करुणानिधे ॥ १७ ॥ वटानां जलमग्नानां जटा राजंति तत्रते ॥ मीना गृहाणि कुर्वंति नीडानि पतगा इव ॥ १८ ॥ निर्मलो जीवरक्षा कृद्विऽव तर्पण कृत्वया ॥ नव सूत्रार्पणे नायं तडागो द्विजता मितः ॥ १९ ॥ पूर्व पश्चिम सुदक्षिणोत्तर देश भूमिपु न दृष्टिगोचरः ॥ ईदृशः खलु जलाशयो बुधैः सिंधु रुक्त इतिनात्र चित्रता ॥ २० ॥ श्रीराजनगर स्यास्य – – रद्भुत भूतले ॥ विराजते राज सिंहो गोडा मंडल मातनोत् ॥ २१ ॥ तत्र द्विजातयो नाना देशात्प्राप्ता: सुवेपिणः ॥ पट् चत्वारिंश दाख्या युक् सहस्र मितयः स्थिता: ॥ २२ ॥ एतावंतो ग्राम नाम सहिता अधिका: पुन: ॥ ब्राह्मणास्तु असंख्याता आगता नात्रसंशयः ॥ २३ ॥ ततो गरीबदासाख्य: पुरोहित वरो हिसः ॥ तत्रस्थित्वा स्वयं स्वाज्ञा कारिण:कार्य कारिणः ॥ २३ ॥ स्थापयित्वा स्वहस्ताभ्यां तद्धस्ते रप्य हर्निशं ॥ सप्तसागर दानस्य तुलादानस्य वाप्रभो: ॥ २४ ॥ धन श्रीपट्ट राज्याश्च तुलाद्रव्यं तथा बहु ॥ स्वकल्पितं स्वर्ण तुलादानस्य बहुहाटकं ॥ रणछोड राय कृतं तुला द्रव्यं दामितं दत्वा पूर्वोक्ते-भ्यः सदापूर्व मुदान्वितः ॥ २५ ॥ विवेकादर पूर्व स तान् व्यधात्तुष्टमान सान् ॥ अन्नदानं बहुविधं कृतवां स्तत्र भूपतिः ॥ २६ ॥ ततः सभा मंड पस्थो राजसिंहो महीपतिः ॥ द्विजेभ्यो याचके भ्यश्च चारणेभ्यो दिवा निशं ॥ २६ ॥ वंदिभ्यः सर्व लोकेभ्यः सुवर्णं दिव्य वर्णकं ॥ रूप्य मुद्रा स्तथाऽक्षुद्रा अलं कारां (– – – –)॥ २७ ॥ वासांसि हेमहृद्यानि-वाजिनो जितवाजिनः॥ उत्तुंग मातंग गणा न्दत्वा संमोद मादधे ॥ २८ ॥ हलानां वहलानांच ताम्रपत्राणि भूपतिः ॥ ग्रामाणां विलसद्धान्य ग्रामाणां दत्तवां स्तथा ॥ २९ ॥ याचकैः कनक विक्रयं परं कर्तुमत्र कनकं प्रसारितं ॥ वीक्ष्यराज नगरं महाजनाः सत्सुवर्ण मयमेव मूचिरे ॥ ३० ॥ याचकै स्तुरग विक्रया यताक्ष्या – – न्विपणिषूच्चवाजिनः ॥ बीक्ष्य राजनगरं जनोवदत्सिंधु देश

मिति सिंधु सुंदरं ॥ ३१ ॥ याचकैर्भवतएव भूपते याचनान्निजगणो पिचस्मृत: ॥ स्थापितंतु धनरक्षणे मनस्तैर्यतो विगुण तास्तितेषुच ॥ ३२ ॥ तुलाकर्त्तुर्द्रव्यं क्षितिपभवत: प्राप्य गुणिनस्तुलाकर्त्ता रोल्पाधिक मितिकृते विक्रयविधौ ॥ स्ववि-श्वासार्थं तद्वहुलकनकस्या प्रतिपलं तुलाकर्त्तु (– –) जयसिरचयन् याचकगुणान् ॥ ३३ ॥ निमंत्रणायात धराधवेभ्य: स्वेभ्य: परेभ्य: सकलद्विजेभ्य: ॥ वैश्यादि-केभ्यो ऽखिलमानुषेभ्यो वासांसिगांगेय गुणोत्तमानि ॥ ३४ ॥ अश्वाँस्तथा वातगतीन् गजेंद्रान् गिरिप्रमाणान् मणिभूषणानि ॥ दत्वाविवेकाद्गमनायतेभ्य आज्ञां ददानो जयति क्षितींद्र: ॥ ३५ ॥ युग्मं ॥ निमंत्रितेभ्यो खिल भूमि पेभ्यो दुर्गा धिपेभ्यो निज बांधवेभ्य: ॥ स्वेभ्य: परेभ्य: कनको त्तमानि वासांसि चाश्वान् पृशदश्व वेगान् ॥ ३६ ॥ तुंगाँश्च मातंग गणा न्मदाढ्या न्विभूषणा ल्लीगत दू षणांश्च ॥ संप्रेषयित्वा प्रविभाति भूपो महा महोदार चरित्र (– –) ॥ ३७ ॥ आसीद्भास्करतस्तु माधवबुधो ऽस्माद्रामचंद्रस्तत: सत्सर्वेश्वरक: कठोडि कुलजो लक्ष्म्यादिनाथस्सुत: ॥ तैलंगोस्यतुरामचंद्रइतिवा कृष्णोस्यवामाधव: पुत्रोभून्मधु-सूदनस्त्रयइमे ब्रह्मेशविष्णूपमा: ॥ यस्यासीन्मधुसूदनस्तुजनको वेणीचगोस्वामिजा ऽभून्मातारणछोडएवकृतवान् राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ काव्यंराणगुणौघवर्णनमयं वीरांकयुक्तमहत् द्वाविंशोद्भवदत्रसर्ग उदितो वागर्थसर्ग: स्फुट: ॥ चतुर्विंशत्याख्य इहा भवद्भवमुदे सर्गोर्थसर्गोन्नत: ॥ ३८ ॥ इति एकोनविंशतितम: सर्ग: ॥ १९ ॥

श्रीगणेशायनम: ॥ जसवंतसिंहनाम्ने राज्ञेराठोडनाथाय ॥ सार्द्ध नवसत्सहस्त्र प्रमितरजत मुद्रिकामूल्यं ॥ १ ॥ परमेश्वर प्रसादाभिधं गजंपंचविंशति प्रमितै: ॥ राजतमुद्राशतकै र्गृहीतमति नूतनं तुरगवरं ॥ २ ॥ फत्तेतुरंग संज्ञं पट्शत मित रजतमुद्रिका क्रीतं ॥ कनक कलश हयमपरं हेमपूर्ण वसनानि ॥ ३ ॥ नानाविधानि बहुतर संख्यानि महादरेण जोधपुरे ॥ राणेंद्र: प्रेपितवान् हस्ते रणछोड भट्टस्य ॥ ४ ॥ अथ रामसिंहनाम्ने राज्ञे किलकच्छवाह भूपाय ॥ राजतमुद्रा सार्द्धद्विशता ग्रायुतरचित मूल्यं ॥ ५ ॥ सुंदरगजनामानं गजोत्तमं रजतमुद्राणां ॥ पंचदशशतै: कल्पित मूल्यंछवि सुन्दरास्यहयं ॥ ६ ॥ अथ सार्द्धसप्तशत मित राजतमुद्रा प्रमित मूल्यं ॥ हयहद्दनाम तुरगं कनक कलित बहुलवसनानि ॥ ७ ॥ आंबेरि नगर मध्ये प्रेशितवान् राणपूर्णेंदु: ॥ हस्ते प्रशस्त कीर्ति: स्वपुरोहित रामचंद्रस्य ॥ ८ ॥ बीकानेर प्रभवे अनूपसिंहाय रावाय ॥ सार्द्ध सुसप्तसहस्त्रं राजतमुद्रा प्रमित मूल्यं ॥ ९ ॥ मनमुक्तिनाम करिणं सार्द्ध सहस्त्रा च्छरजतमुद्राभि: ॥ कृतमूल्यं तुरगवरं साहण सिंगारसंज्ञ मन्यहयं ॥ १० ॥ शतसार्द्ध सप्तशतमित राजतमुद्रा रचित मूल्यं ॥ तेजनि

धानाभिध मपिहेममयान्यं वराणि बहुलानि ॥ ११ ॥ प्रेमादर पूर्वकिल बीकानेर स्फुटाभिधे नगरे ॥ प्रेषितवान् राणेंद्रो माधवजोसीहस्तेहि ॥ १२ ॥ रावाय भावसिंहा भिधायहाडा नृपालाय ॥ षड्सप्ततियुक् त्रिशताग्रे दशसहस्रैस्तु ॥ राजतमुद्राणां कृतमूल्यं द्विरदतु होणहाराख्यं ॥ १४ ॥ सार्द्धसहस्रप्रमितिक राजतमुद्रा रचितमूल्यं ॥ तुरगंनर्त्तन चतुरं तुंगतरं सर्वशोभाख्यं ॥ १५ ॥ सत्सार्द्धसप्तशतमित राजतमुद्रा प्रमितमूल्यं ॥ शिरताजाभिधमपरं हयंसहे माम्बराणि राणमणिः ॥ बूंदीनगरे भास्कर भट्टकरेप्रेषयामास ॥ १६ ॥ चंद्रावत चंद्राय मुहुकमसिंहाभिधाय रावाय ॥ सार्द्ध द्विशताग्रलसत्सप्त सहस्राच्छ रूप्य मुद्राभिः ॥ १७ ॥ कृतमूल्यं गजराजं फत्तेदौलत शुभाभिधं तुरगं ॥ सार्द्ध सहस्र प्रमित राजतमुद्रारचित मूल्यं ॥ १८ ॥ मोहसंज्ञसार्द्धे सप्तशते रूप्यमुद्राणां ॥ कृतमूल्यं हयसरसं हयमन्यं हेमपूर्ण वसनाढ्यं ॥ १९ ॥ राजाज्ञया गृहीत्वा भट्टोगा द्वारिकानाथं ॥ रामपुरानगरेत्वथ सर्वमिदंतु सोर्पयामास ॥ २० ॥ भाटी भूपालाय रावलवर अमरसिंहाय ॥ राजसमुद्रैकादशसहस्र मूल्यं प्रतापशृंगारं ॥ २१ ॥ करिणं राजतमुद्रा सार्द्धसहस्र प्रमित मूल्यं ॥ हयमुकुटाख्यंसार्द्ध सप्तशत प्रमित रूप्यमुद्राभिः ॥ २२ ॥ कृतमूल्य मपरमश्वं सूरति मूर्त्तिंचहेम वसनौघं ॥ एतत्सर्वं जोसीदेवानंदस्य किलहस्ते ॥ २३ ॥ दत्वा जेसलमेरौमहापुरे प्रेमपूर्वमपि ॥ संप्रेषितवानेतं सराणवीरोनृपति धीरः ॥ २४ ॥ जसवंतसिंहनाम्ने रावलवर्याय पट्सहस्रैस्तु ॥ पंचशताग्रे राजतमुद्राणां रचितमूल्य मिभंहेम ॥ २५ ॥ शुभसारधारसंज्ञं द्विवेदि हरिजीकहस्तेतु ॥ डूंगरपुरेनरपतिः प्रेषितवान् हेमयुक्त वसनानि ॥ प्रथमं राजसमुद्रोत्सर्गेस्मै रजतमुद्राणां ॥ तत्रसहस्रेण कृतमूल्यं जसतुरगनामहयं ॥ २६ ॥ पंचशत रूप्यमुद्राकृतमूल्य तुरगमपरंच ॥ कनकमयांवर वृंदंदत्तवान् राजसिंहनृपः ॥ २७ ॥ राजत मुद्रैकादश सहस्रमूल्यं प्रतापशृंगारं ॥ द्विपमंबराणि च ददौ दोसी-भीषू प्रधानाय ॥ २८ ॥ सिरनागं कृतमूल्यं सप्त सहस्रै स्तुरूप्य मुद्राणां ॥ द्विपमंबराणि सददौ राणावत रामसिंहाय ॥ २९ ॥ राजसमुद्र जलाशय कार्यकृता मग्र गण्याय ॥ राजत मुद्राणांवा कृत मूल्यान् पंचविंशति सहस्रैः ॥ एकाधिक पंचाश द्युत पंचशताग्र कैस्तुरगान् ॥ सुखदैक षष्ठि संख्यान् कुरराज त्पराजयेसददौ ॥ ३० ॥ कुलकं ॥ एकाग्र सप्तति लसत्पंच शताग्रेतु सप्तविंशतिकैः ॥ दिव्य सहस्रै राजत मुद्राणां रचित सन्मूल्यान् ॥ ३१ ॥ षडधिक शतंद्वयमितास्तुरंगमाश्चा-रणेभ्य इहादात् ॥ प्रवाहमध्ये भाटेभ्यो भूपतिः प्रददौ सप्त सहस्रैः ॥

विरचित मूल्यं रजतमुद्राणां द्विरदन मनूपरूपं द्विरदवरं सार्द्धनव शतकैः ॥ ३२ ॥ राजत मुद्राणां च कृतमूल्यं विनय सुंदरकं ॥ हयमन्यं दिलसारं राजत मुद्राचतुःशतगृहीतं ॥ ३३ ॥ कनकमयांवर वृंदं सुलब्ध राज्या यवांधवेशाय ॥ नृपभावसिंह नाम्ने राशेसं प्रेषयामास ॥ ३३ ॥ लाधूम सानिहस्ते लाधूकं तीर्थयात्रार्थं ॥ दत्वा बहुलं द्रव्यं प्रेषितवा न्प्रेमकृद्भूपः ॥ ३४ ॥ राजत मुद्राणांवा त्रिंशत्य ग्रचतुः सहस्र कृतमूल्यान् ॥ सददेष्टा दश तुरगान्निमंत्रणायात नृपतिभ्यः ॥ ३५ ॥ त्रिसहस्र रजतमुद्रा मूल्या-करिणी सहेलीति ॥ तोडेश रायसिंह नृपस्यमात्रे ददौ कुमारेभ्यः ॥ ३६ ॥ सार्द्धचतुः शतयुक् त्रिसहस्र सुरूप्य मुद्रिका मूल्यान् ॥ तुरगांस्त्रयोदश ददौ निमंत्रणायात नृपतिभ्यः ॥ ३७ ॥ एकाग्रपष्टि संयुत पंचशत प्रमित रूप्यमुद्राणां ॥ सप्त ददौ भूपोश्वान् निमंत्रणायात नृपतिभ्यः ॥ ३८ ॥ पट्त्रिंशदधिक शतयुक् त्रिसहस्र त्रयंतुरूप्यमुद्राणां ॥ द्विशत तुरंगान् सददौ शासनयुत चारणौघ भाटेभ्यः ॥ ३९ ॥ तत्र विवेकस्त्रिसहित विंशति तुरगान् स्वशासनिभ्योदात् ॥ पूर्वोक्तसंख्य तुरगान् राणा जगत्सिंह शासनिभ्योपि ॥ ४० ॥ श्रीकर्णसिंह शासनिकेभ्योश्वानां चतुष्टयं सददौ ॥ अमरेशशासनिभ्यः सप्ततु-रंगान् प्रतापसिंहस्य ॥ ४१ ॥ शासनिकेभ्यो ष्टादशहयानुदयसिंह शासनिभ्यस्तु ॥ अष्टत्रिंशत्तुरगान् हयमेकंविक्रमार्क शासनिने ॥ ४२ ॥ युग्मं ॥ हयमेकंतु रतन सीशासनिने राणवीरोदात् ॥ शुभसप्त विंशति हयान् संग्राम नृपस्य शासनिभ्योदात् ॥ ४३ ॥ श्रीरायमल्ल शासनिके भ्योश्वानेक विंशति प्रमितान् ॥ कुंभाशासनि काया श्वमेकमेकोनविंशति प्रमितान् ॥ ४४ ॥ मोकलशासनिकेभ्य स्तुरगान्हम्मीर शासनिभ्योदात् ॥ पंचहयान् लाखान्नृपशासनिकेभ्यो हयान्सप्त ॥ ४५ ॥ युग्मं ॥ खेताऽजेसीशासनिकाभ्यां हयमेकमेकमदात् ॥ रावलसुशालिवाहन महासमरसीक शासनिभ्यांतु ॥ ४६ ॥ हयमेक मेकमेकं रावत वाघस्य शासनिने ॥ मोकलसहोदरस्य द्विशत हयान् भूपएवमत्र ददौ ॥ ४७ ॥ लक्षैक द्वाविंशति सहस्रशत युग्म साष्टषष्टिमितैः ॥ राजतमुद्रा वृंदैः क्रीताः शतपंचकं द्विपंचाशत ॥ ४८ ॥ तुरगान् लक्षक द्विसहस्र शतकाष्ठके रितिक्रीताः ॥ करिणीगजा स्त्रयोदश दत्तावीरेंद्र राजसिंहेन ॥ ४९ ॥ पंडितेभ्यः कविभ्यश्च वंदि चारण पंक्तये ॥ अश्वान्धनानि वासांसि ददौ (- - - - - - -) ॥ ५० ॥ जलाशयोत्सर्ग विधानमेवं कृत्वा महादान समूहमेवं ॥ तथैवनानाविध दानराजी विराजते राजित राजवीरः ॥ ५१ ॥ इति श्री राजसमुद्र प्रशस्त्या भट्टरणछोड़ विरचिते विंशति सर्गः ॥ २० ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ पूर्णे सप्तदशे शते शुभकरे लष्टा दशा स्येब्दके माघे सद्बुध कृष्ण सप्तमितिथा वारभ्य कालादितः ॥ पंच त्रिंशदभिख्य वर्ष उदिता पाढावधीत्थंवदे लग्नं राजसमुद्र नामकमहा नव्ये तडागे धनं ॥ १ ॥ पञ्च-त्वारिंशदाख्यानथ रजत महा मुद्रिकाणां शुभानां लक्षाणीत्थं सहस्राण्यपि रुचिर चतुः षष्ठि संख्या मितानि ॥ षट्संख्या युक् शतानि प्रकटितपदयुक् पंचविंशत्युपात्त स्वग्राण्येवं विलग्नान्युत गणनमिदं लेकपक्षे मयोक्तं ॥ २ ॥ विवेकमत्र वक्ष्यामि रूप्यमुद्रा बलेहितत् ॥ सप्त विंशति लक्षाणि षट्त्रिंश त्प्रमितानिच ॥ ३ ॥ सहस्राणि चतुः संख्या शतानि नवति स्तथा ॥ सार्द्ध सप्ताग्र कान्यत्र रामसिंहस्य वैतफे ॥ ४ ॥ पंचलक्ष चतुः संख्यसहस्राष्टशतानिच ॥ सपादाशीतिका भाद्र पितृव्यस्यतफे तथा ॥ ५ ॥ पुत्र मोहमसिंहास्य सीशोद्या संग शोभितः ॥ लक्षद्वयं सहस्राणि द्वादशैव शतानिच ॥ ६ ॥ पंचाष्टत्रिंशदधिक पदपा गणनाभवत् ॥ एषा सांव ऊदासस्य पंचोलीकुलशालिनः ॥ ७ ॥ चतुर्लक्षाण्यष्टयुक्त सप्तति प्रमितानिच ॥ सहस्राण्येकशतकं सप्ताग्रं भरणे मृदां ॥ ८ ॥ चतुष्कीनिः सृतानां तु लेखने गणना भवत् ॥ द्वात्रिंशत्सुसहस्राणि षट्शतानि सपादकं ॥ ९ ॥ एकमत्रा न्यदायातं द्रव्यं वा प्रभुपार्श्वतः ॥ तथा प्रसाद दानादि तल्लेखे गणना त्वियं ॥ १० ॥ सप्त लक्षाणि सैकानि प्रतिष्ठा करणे मितिः ॥ एतद्राज समुद्र-स्य पूर्व संख्या प्रमेलनं ॥ ११ ॥ पूर्वोक्त द्रव्य गणना विवेकः क्रियते पुनः ॥ द्वात्रिंशत् संख्य लक्षाणि सहस्र द्वितयं तथा ॥ १२ ॥ गणनाष्ट शतान्यासी त्सपादा शीति र-प्युत ॥ एपाराजसमुद्रस्य कार्यार्थैच भृतेः कृते ॥ १३ ॥ सप्तलक्षाण्येक षष्टि सहस्राणि ससप्तवै ॥ चतुश्चत्वारिंशदग्र युक्तानि शतकानिच ॥ १४ ॥ श्रीमद्राजसमुद्रस्य कार्येये ठकुराः स्थिताः ॥ तेषांग्रामोत्पत्ति रूप्य मुद्राणां गणनाभवत् ॥ १५ ॥ एवंपूर्वोक्त संख्याया मेलनं भवतिस्फुटं ॥ एकपक्षे लग्नरूप्य मुद्रासंख्येयमीरिता ॥ १६ ॥ देशग्रामभुजां मुख्य क्षत्रादीनां महोधनं ॥ चतुष्की खनने लग्नं वक्तुं शक्तश्चतुर्मुखः ॥ १७ ॥ गृहाच्चतुर्गुणं लग्नं तडागे वासतोधनं ॥ तद्विपक्ष त्रिपादोनां षोडशांशंतदिष्यते ॥ १८ ॥ गोभूहिरण्य रूप्याणां दत्तानामन्नवाससां ॥ वराह मिहिरश्चेत्स्याद्गणको गणनाभवेत् ॥ १९ ॥ श्वासानां गणनां कुर्य्याद्यश्वानां सदातदा ॥ श्वसना ऽऽवेगजयिनां गणनाकृद्भवेद्गुणी ॥ २० ॥ मत्तानां राणदत्तानां तुंगानां गणनामुचां ॥ मतंगानां गणेशश्चेद्गणना जायते तदा ॥ २१ ॥ एकाकोटिः पंचलक्षाणि रूप्यमुद्राणां वासत्सहस्राणि सप्त ॥ लग्नान्यस्मि

न्षट्शता न्यष्टकंवैकार्ये प्रोक्तं पक्षएव द्वितीये ॥ २२ ॥ सहस्र लक्ष कोटीनां संख्या ज्ञातातुयाबहुः ॥ तैरत्र लग्नद्रव्यस्य संख्योक्ता मंतुरस्तुमा ॥ २३ ॥ लग्नं राजसमुद्रेतु यावत्तावद्धनं बुधः ॥ तरंगगणनांकुर्याद्यस्यैव तदाचरेत् ॥ २४ ॥ स्पर्द्धा लक्ष्म्या सरस्वत्या लग्नालक्ष्मीस्तुयावती ॥ नवक्ति तावतीयुक्तं तडागेत्र सरस्वती ॥ २५ ॥ सप्तदशेतीते पंचत्रिंशन्मिताब्द जन्मदिने ॥ द्विशतपलमिताच्छहाटक कल्पद्रुम नामकं महादानं ॥ २६ ॥ षडशीतितोलमितियुत सुहिरण्याश्वाभिधं महादानं ॥ श्रीराजसिंहनामा पृथ्वी नाथो रचितवान्सः ॥ २७ ॥ युग्मं ॥ शतेसप्तदशे पूर्णे चतुस्त्रिंशन्मितेब्दके ॥ श्री राणा राजसिंहेंद्रो जीलवाडावधि ब्रजन् ॥ २८ ॥ वैरीसालं सिरोहिस्थं शत्रु संघेन पीडितं ॥ रावं सिरोहिनृपतिं चक्रेनिज पराक्रमैः ॥ २९ ॥ एकलक्ष प्रमितिका रूप्य मुद्रास्ततो ग्रहीत् ॥ पंचग्रामान्कोरटा दीन् जग्राहोग्राहवोनृपः ॥ ३० ॥ राणासुवर्णकलश चौर्ये तद्देश आगतं ॥ तद्रूप्यमुद्राः पंचाशत् सहस्राण्यग्रहीत्ततः ॥ ३१ ॥ शते सप्तदशे तीते चतुस्त्रिंशन्मितेब्दके ॥ श्री राणेंद्रोद्यत्संख्याः (— — —) रजगृहेगजं ॥ ३२ ॥ त्रिविक्रमाश्रय कृतो विक्रमार्कस्य दानतः ॥ वक्रुंकः सुक्रमाच्छक्तो राजसिंह पराक्रमान् ॥ ३३ ॥ राजसिंह विचित्रोयं प्रताप तपनस्तव ॥ वने संस्थानपिरिपूं स्तापयत्यद्भुतं महत् ॥ ३४ ॥ राजन्भवत्प्रतापाग्निः शत्रु स्त्रीवाष्प सिंचनैः ॥ ज्वलत्यत्र नचित्रंतद्द्विट्कीर्त्ति नव — — पः ॥ ३५ ॥ शत्रुस्त्रीनेत्रपद्मानि संतापयाति संततं ॥ श्री राजसिंह भवतः प्रताप तपनोद्भुतः ॥ ३६ ॥ प्रतापोदीपस्ते क्षितिप जगदालोक किरणः शिखाभिः शत्रूणांवदन निकुरंबंमलिनयन् ॥ दिशां दिव्यांस्नेहं कवलयतिवा प्राणपटली पतंगालीं दग्धां कलयति तनूपात्र वसतिः ॥ ३७ ॥ यशश्चंद्रेसांद्रं किरति कर वृंदं रिपुगणाः शिवोजातः कर्णस्फटिक विलसत्कुंडलधरः ॥ विधुंभाले गंगांशिरसि भुजयोः शुभ्र भुजगान्दधानो भस्मांगो वसति धवले शैलशिखरे ॥ ३८ ॥ भूभार मेषभुजयो र्विदधातिपाणौ खड्गोरगं मुखरुचौ प्रचुरंप्रतापं ॥ कर्णेपिभाति विमलां विधुशीतलायत् कीर्तिस्तवात्र भुवनं लथबभ्रमीति ॥ ३९ ॥ राजेंद्रो भवतादयं जयकरो वैरिव्रजानां जवात् ॥ गांभीर्यात्किल सिंधुरेव हयसद्दंति प्रदस्तत्किल ॥ चक्रेसर्वविशेषणा दिविलसद्वर्णैर्युतं नामते श्रीराणामणि राजसिंह नृपते विभ्यत्सुमेधाधरः ॥ ४० ॥ राष्ट्रप्रदो जलधिजाप्रदउत्तमेभ्यो भाव्यष्टसिंह तुलनो हरिसेवनोयत् ॥ आख्याविशेषणगवादिमवर्णयुक्ता चक्रेविधि स्तदुचितं

तवराणवीर ॥ ४१ ॥ श्रीराणोदयसिंह सूनु रभवत् श्रीमत्प्रताप:सुत स्तस्य श्रीअमरेश्वरोस्य तनय: श्रीकर्णसिंहोस्यवा ॥ पुत्रोराणजगत्पतिश्च तनयोस्मा-द्राजसिंहोस्यवा पुत्रश्रीजयसिंह एष कृतवान् वीर: शिलालेखितं ॥ ४२ ॥ पूर्णेसप्तदशेशते तपसिवा सत्पूर्णिमाख्ये दिने द्वात्रिंशन्मितवत्सरे नरपते: श्रीराजसिंहप्रभो: ॥ काव्यं राजसमुद्रमिष्ट जलधे: सृष्टप्रतिष्टाविधे स्तोत्राक्तं रणछोडभट्टरचितं राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ ४३ ॥ आसीद्भास्कर तस्तुमाधवबुधो ऽस्माद्रामचंद्रस्तत: सत्सर्वेश्वरक: कठोडिकुलजो लक्ष्म्यादिनाथस्सुत: ॥ तैलंगो-स्यतुरामचंद्रइतिवा कृष्णोस्यवा माधव: पूत्रोभून्मधुसूदनस्त्रयइमे ब्रह्मेशविष्णूपमा: ॥ ४४ ॥ यस्यासीन्मधुसूदन स्तुजनको वेणीच गोस्वामिजा भून्माता रणछोड एषकृतवान् राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ काव्यं राण गुणोघ वर्णनमयं वीरांक युक्तं महत् सर्गो भूदधुनैक विंशति शुभाभिख्योर्थ वर्गोत्तम: ॥ इति एकविंशति तम: सर्ग: ॥

श्रीगणेशायनम: ॥ शते सप्त दशे तीते पंचत्रिंशन्मिते ऽब्दके ॥ शुक्ले कादशिकायांतु चैत्रे प्रस्थान मातनोत् ॥ १ ॥ श्रीराजसिंहस्या ज्ञातो जयसिंहा भिधोबली ॥ महाराज कुमारोयं अजमेरौ समागत: ॥ २ ॥ औरंगज़ेबं म्ले च्छेशं द्रष्टुं दिल्लीपतिं ययौ ॥ पश्चाद्राज कुमारोयं ययौसेना समावृत: ॥ ३ ॥ दिल्लीत: क्रोश युग्मस्थे अर्वाकिं शिबि रोत्तमे ॥ दिल्लीश्वरं ददर्शायं सोस्यादर मथा करोत् ॥ ४ ॥ मुक्तामाला उरोभूषा अस्मै हेमांबराण्य दात् ॥ महा गजेंद्र भूषाक्तं तादृक् तुंगतुरंगमान् ॥ ५ ॥ झालाख्य चंद्रसेनाय पुरोहित वरायच ॥ गरीबदाससन्नाम्ने हैमवासां सिवा हयान् ॥ ६ ॥ महद्भ्यष्ठकुरे-भ्योदादन्येभ्योपि यथोचितं ॥ ततोयं जयसिंहा ख्यो गण युक्तेश्वरंशिवं ॥ ७ ॥ दृष्ट्वा गंगा तटे स्नात्वा महा रूप्य तुलां व्यधात् ॥ करिणींच हयं दत्वा यातो वृंदावनं प्रति ॥ ८ ॥ मथुरांच ततोदृष्ट्वा ज्येष्टेराण पुरंदरं ॥ ददर्श दर्शनीयोयं राणेंद्रो मोद मादधे ॥ ९ ॥ शते सप्त दशे तीते वर्षे षट्त्रिंश दाह्वये ॥ पौषस्य कृष्णैका दश्यां मेवाडे दिल्लिकापति: ॥ १० ॥ आया तस्तस्य पुत्रस्य आदौ अकबरा भिध: ॥ तथा तह वर:खान: प्राप्त: सेना समा वृत: ॥ ११ ॥ सुंदरे राजनगरे राज मंदिर मंहव: ॥ तल्लो कै: कल्पिता तत्र शक्त: शक्ता वतो त्तम: ॥ १२ ॥ पुत्र: सबलसिंहस्य पूरावत वरस्यस: ॥ भ्रातरं मुह्कमसिंहस्य घोरं रणमिहा करोत् ॥ १३ ॥ वीरश्चोंडावत:कोपि तथा विंशति सद्भटा: ॥ कृत्वा युद्धं दिवं याता भित्वा भास्वत्सुमंडलं ॥ १४ ॥ विधे: कलेर्बला दाज्ञां ददौ राणा पुरंदर: ॥

दहवारं महाघट्टे दन्यघट्टाच बाहुजाः॥ १५ ॥ आयांतु कृतसंकल्पा अपि योद्धुमदुक्तितः॥ नालिकोलकसंस्तोमाः सौरसंघामहोन्नताः॥ १६ ॥ राणोक्तितस्तथाजातं ततो दिल्लीश आगतः॥ दहवारी महाघट्टे कृत्वातद्वार पातनं ॥ १७॥ एकविंशति तिथ्यंतं स्थितोत्र निशिचैकदा ॥ दिव्योदयपुरं प्राप्तो गुप्त एपास्त्युपश्रुतिः ॥ १८ ॥ तदा अकबरः प्राप्तो महोदयपुरेततः ॥ तथा तहवरः खान स्तत्कृत्यंतद्वटैः कृतं ॥ १९ ॥ एकलिंगं द्रष्टुमगाद्दैवादकबरस्ततः ॥ अंबेरी चीरवाघट्टौ दृष्ट्वा शिबिरमागतः॥ २०॥ झाला प्रतापः कर्कट पुर वासी गजद्वयं ॥ दिल्लीश सैन्यादानीय राणेंद्रायन्यवेदयत् ॥ २१ ॥ भदेसर स्थावल्लाख्या हयौघान्हस्तिनांगजो ॥ न्यवेदय न्नृपव्रंदे नैनवारास्थित प्रभोः ॥ २२ ॥ पंचाशत्क सहस्राणि नृणानष्टानि तद्विधेः ॥ दिल्लीश्वरस्ततः प्राप्त श्चित्रकूटेन्यथा पृथां ॥ २३॥ ज्ञापयित्वा अकबर स्थितस्तत्र समागतः ॥ तथा हसनअलीखां छप्यन्नादत्र नागतः ॥ २४ ॥ नाहींप्रतितदायातो राणेंद्रो रोप पोपितः ॥ कोटडी ग्रामतः शीघ्रं ततः सेनासमावृतः ॥ २५ ॥ संप्रेपितो भीमसिंहः कुमारो राण भूभुजा ॥ ईडरध्वंस मतनोत्सैदहसाततोगतः ॥ २६ ॥ बडनगरं लूटित मथचत्वारिंशत्सहस्र मिताः॥ राजतमुद्राजग्रहे दंडविधौ भीमसिंह इह ॥ २७॥ अहमदनगरे लक्षद्वयं प्रमित रूप्यमुद्राणां ॥ वस्तूनांलुंटनमिह कारितवान् भीमसिंहोबली॥ २८॥ एकामहा मसीदिर्विखंडिता लघुमसीदिसुत्रिंशत् ॥ देवालयपातनरुषः प्रकाशिता भीमसिंह वीरेण ॥ २९॥ राणा महीमहेंद्रस्य आज्ञयाविज्ञ उत्सुकः॥ महाराजकुमार श्री जयसिंहो (– –) नाम ॥ ३० ॥ झालाख्यचंद्रसेनेन चोहानेनचमूभृता ॥ तथा सबलसिंहेन रावेण रणसूरिणा ॥ ३१ ॥ केसरीसिंहनाम्नातद्भ्रात्रारावेण शोभितः ॥ राठोड गोपीनाथेन अरिसिंहस्य सूनुना ॥ ३२ ॥ भगवंतादिसिंहेन धन्यराजन्य राजिभिः ॥ सहितः स्वाहितजयं जयंकर्त्तुंसमीहिते ॥ ३३ ॥ त्रयोदशसहस्राणि अश्ववार वरावलेः ॥ सद्विंशतिसहस्राणि पदातीनां महात्मनां ॥ ३४ ॥ संगेगृहीत्वाप्रययौ चित्रकूटतटिंप्रति ॥ ततस्तेठकुरारात्रौ संगरं चक्रुसन्मदाः॥ ३५॥ सहस्रसंख्या न्दिल्लीश लोकान् जघ्नुर्गजत्रयं ॥ येनागतास्तां स्तुरगा न्निःसृतस्तदकब्बरः ॥ ३६ ॥ पंचाशत्तुरगान्वीरा गृहीत्वा तान्यवे- दयन् ॥ कुमार जयसिंहाय जयसिंहोमुदं दधे ॥ ३७ ॥ जयसिंहः कुमारोथ श्री राणेंद्रस्य दर्शनं ॥ कृतवान्कृतकृत्यावा महाराणकृतौ कृतिः ॥ ३८ ॥ शक्तावतस्यशक्तस्य केसरीसिंह वर्म्मणः॥ गंग कूंवर इत्येष कुमार पदवींदधत्॥ ३९॥

अष्टादश द्विपान्मत्ता न्हयौघानुष्ट्रसंचयान् ॥ दिल्लीश सैन्या दानीय राणेंद्राग्रे न्यवेदयत् ॥ ४० ॥ राणेंद्रेण कुमारोथ भीमसिंहो बलान्वितः ॥ प्रेषितोऽकबरास्येन तथा तद्दवरेणच ॥ ४१ ॥ खानेन संगरंचक्रे शक्र-रक्षो रणोपमं ॥ उल्लंघ्य देवसूरींता महानालिं नलोपमः ॥ ४२ ॥ घानो-रानगरे चक्रे नियुद्धंयोधविक्रमः ॥ वीकासोलंकि वीरोथ युद्धरक्षां रणंव्यधात् ॥ ४३ ॥ राणेंद्रेण कुमारोथ गजसिंहो बलान्वित ः ॥ प्रस्थापितो बभंजायं तद्देगमपुरंमहत् ॥ ४४ ॥ राष्ट्र त्रयं रूप्यमुद्रा लक्षत्रय मथापिवा ॥ दत्वैव मिलनंकार्यं मयाराणेन निश्चितं ॥ ४५ ॥ औरंगजेबो दिल्लीश उक्तवा-न्सतदुत्तरं ॥ विधेः कलेर्वलाज्जातं यत्तदत्र वदाम्यहं ॥ ४६ ॥ श्री राणो दयसिंह सूनुरभवत् श्रीमत्प्रतापः सुत स्तस्यश्री अमरेश्वरो स्यतनयः श्री कर्णसिंहोस्यवा ॥ पुत्रोराण जगत्पतिश्च तनयो स्माद्राजसिंहोस्यवा पुत्रः श्री जयसिंह एषकृतवा न्वीरः शिलालेखितं ॥ ४७ ॥ पूर्णे सप्तदशेशते तपसि-वा सत्पूर्णिमास्येदिने द्वात्रिंशन्मित वत्सरे नरपतेः श्री राजसिंह प्रभोः ॥ काव्यं राजसमुद्र मिष्ट जलधेः सृष्टप्रतिष्ठाविधेः स्तोत्रात्कं रणछोड भट्टरचितं राज प्रशस्त्याह्वयं ॥ ४८ ॥ युग्मं ॥ आसीद्भास्कर तस्तुमाधवबुधोऽस्मा द्रामचंद्रस्ततः सत्सर्वेश्वरकः कठोडिकुलजो लक्ष्म्यादिनाथस्ततः ॥ तैलंगो-स्यतु रामचंद्र इतिवा कृष्णोस्य वा माधवः पुत्रो भून्मधुसूदनस्त्रयइमे ब्रह्मेशविश्नू पमाः ॥ ४९ ॥ यस्यासीन्मधुसूदन स्तुजनको वेणीच गोस्वामिजाऽभून्माता रणछोड एषकृतवा न्राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ काव्यं राणगुणौघ वर्णनमयं वीरांक युक्तंमह द्वाविंशोभवदत्र सर्ग उदितो वागर्थ सर्गः स्फुटः ॥ ५० ॥ इति श्री राजप्रशस्ति श्रीराजसर्ग द्विविंशतिः सर्गः ॥ २२ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ शतेसप्तदशेतीते सप्तत्रिंशन्मितेब्दके ॥ कार्तिके शुक्लदशमी दिने राणापुरंदरः ॥ १ ॥ नानाविधानि दानानि द्रव्यंदत्वा त्वनंतकं ॥ द्विजादि-भ्योहरिंध्यात्वा जपमालांकरे दधत् ॥ २ ॥ हृदिसंस्थाप्यचजपन् रामनाम स्वनामच ॥ सयशः स्थापयन्लोके भूलोकंत्यक्तवान्नृपः ॥ ३ ॥ ददानोमहादान वृंदंद्विजेभ्य स्तथागाः सवत्साः सुवर्णादिपूर्णाः ॥ तदुत्थंफलंशंवलंसंदधानो नृपो दुर्गमस्वर्गमार्गायनातः ॥ ४ ॥ महादान सन्मंडपस्तंभसंघाः कृतादारुणाले भवन्स्वर्णरूपाः ॥ तदायोगनिःश्रेणिकाश्रेणिकाभिः क्षितिस्पर्शहीनं विमानंसमानं ॥ ५ ॥ महेंद्रेणसंप्रेषितंमेदिनींद्रः समारुह्यादिव्यैर्गणैः संवृतश्च ॥ सनाकं सुखंप्रापधर्मेणसाकं महाराजसिंहो नरेंद्रेषुसिंहः ॥ ६ ॥ महेंद्रेणसंमानितस्तेन

दिव्यासने स्थापितो मानितस्तोषितंयत् ॥ महादानमाला तडागप्रतिष्ठा करोविछु नामग्रही धर्मपूर्णः ॥ ७ ॥ ततः स्वीयवैकुंठ लोकेत्वकुंठ प्रभावो हरिः प्रेषयित्वा विमानं ॥ मुदा कार्य संस्थापयामासयुक्तं स्वपूर्वोद्भवैः संयुतं राजसिंहं ॥ ८ ॥ ततः कडेजे नगरे शिविरंव्यतनोद्बली ॥ जयसिंहो जयमयः सत्पंचदशवासरान् ॥ ९ ॥ उल्लंघ्यकृतवान्वीरो राणसिंहासनस्थितः॥ ररक्षरणदक्षोयं क्षोणीमक्षौहिणीपतिः ॥ १० ॥ शतेसप्तदशेपूर्णे सप्तत्रिंशन्मिते ब्दके ॥ मार्गशीर्षेशौर्यमार्ग प्रकाशीमार्गणार्थदः ॥ ११ ॥ वसत्कडंजेनगरे जयसिंहो महामनाः ॥ श्रुत्वातहवरंखानं देवसूरी विलंघ्यच ॥ १२ ॥ आयांतं घट्ट मर्यादा लोपिनं कोपपूरितः ॥ स्वभ्रातरं भीमसिंहं भीमंवा प्रेषयत्सतु ॥ १३ ॥ बीका सोलंकिनं दृष्ट्वा तंसमाश्वास्यतत्परं ॥ महाभीमो भीमसिंहो बीकासोलंकि नांबरः ॥ १४ ॥ जघ्नतुर्म्लेच्छसत्यानि रुद्धस्तहवरो भवत् ॥ दिनाष्टकांत मुक्तोप्य राहु नुक्तेंदु विच्छविः ॥ घानोरा पार्श्व आयातो जयसिंहो दलेलखां ॥ छपन्नदेशशैलेष्वा यातोह्यागवतोस्यतु ॥ १६ ॥ मार्गो दत्तो राणलोके र्गोगूंदा घट्ट आगतः ॥ रुद्धाघट्टा स्ततोराणा लोकैर्लोकेषु विश्रुतैः ॥ १७ ॥ रत्नसी रावतेनापि स्थितं घट्टे शिलोत्कटे ॥ दलेलखां न शक्तोभूत्तदागंतु कथंचन ॥ १८ ॥ अथश्री जयसिंहेन झालाख्यो वरसाभिधः ॥ प्रेषितो मिलनं कर्तुं तेनोक्तं मार्गगामिना ॥ १९ ॥ दलेलखांनं प्रत्येवं भवान्दिल्लीश मानितः ॥ सहस्राण्यश्ववाराणां संगेयच्च दशात्रते ॥ २० ॥ राणेंद्रस्यैक राजन्यो घट्टं रुद्ध्वास्थितो भवान् ॥ निःसरत्वे वनिश्चिंत्तो राणेंद्रस्य तवस्फुटं ॥ २१ ॥ स्नेहस्तदत्र पर्यंत मायातस्त्व मतः परं ॥ नवाबे नोच्यतेचत्तं घाटा न्निः सारयाम्यहं ॥ २२ ॥ उच्यते चेत्स्थापयामि नवाबेन तदेरितं ॥ पश्चात्सैन्यं ममायाति मास्तुतेनापि वारणं ॥ २३ ॥ घट्टत्रयस्य मार्गस्य दृष्ट्यर्थं प्रेषिताभटाः ॥ तैः सनवाबेनतू — — कंदृष्टाघट्टास्त्रयो दृढं ॥ २४ ॥ ततोननिः सतस्तत्र नवाबस्तदनं तरं ॥ सहस्र रूप्यमुद्रास्तु दत्वैकस्मै द्विजातये ॥ २५ ॥ अग्रेसकृत्यचतं नवाबो रणकेसरी ॥ निःसृतो न्येनमार्गेण रात्रौ तत्रापि सैन्यवान् ॥ २६ ॥ रत्नसी रावतोरत्नं योधाना मार्गतोजवात् ॥ रणंचक्रेनिः सरणं नवाबः कष्टतोव्यधात् ॥ २७ ॥ इत्थं दलेलखानस्तु निःसृतो घट्टतश्छलात् ॥ दिल्लीशांतिक मायातः पृष्टोदिल्लीश्वरेणसः ॥ २८ ॥ त्वंनिःसृ- त्यकिमायातो सणाकस्यानुयोगतः ॥ दलेलखांतदोवाच रानंलब्धंमयाप्रभो ॥ २९ ॥ राणेंद्रो ममपश्चात्तु हंतुंमां समुप्रागतः ॥ योधामे मारितास्तेन नानाहंतेन निमृतः ॥ अन्नाभावा न्नित्यमेव लोकानांतु चतुः शतं ॥ मृताहं तन्निःसृतस्त

च्छ्रुत्वादिल्लीश आकुलः ॥ ३० ॥ अथाकवर आयातो मिलनंकर्त्तु मुद्यतः ॥ राणा श्री कर्णसिंहस्य द्वितीयस्तनयोबली ॥ ३१ ॥ गरीबदासस्तत्पुत्रः श्यामसिंह इहागतः ॥ कृतामिलन वार्त्तातं परावृत्यगतौद्दढां ॥ ३२ ॥ ततो ऽदलेलखानस्तु मिलने दार्ढ्यमातनोत् ॥ तथा हसन अल्लीखां मिलनस्य विधिं व्यधात् ॥ ३३ ॥ जयसिंहोथ मिलनं कर्त्तुमुद्योग मातनोत् ॥ श्री मद्राजसमुद्रस्य अग्रभागेस्थितस्ततः ॥ ३४ ॥ सहस्राण्यश्व वाराणां सप्तसंसप्तकत्विषां ॥ मध्येस्थितः सप्त सप्ति समतेजाः समावभौ ॥ ३५ ॥ जयसिंहः स्थितः सप्तनाम सप्तिसमेहये ॥ तत्प्रेक्ष-कजनैःप्रोक्तं अश्ववारमयं जगत् ॥ ३६ ॥ पदातीनामयुतकं संगेस्थापितवान्प्रभुः ॥ तदापत्तिमयं प्रोक्तं जगदृष्ट्वाजनैर्ध्रुवं ॥ ३७ ॥ महाशौर्यो महाधैर्यो जयसिंह स्ततोवली ॥ झालेंद्रं चंद्रसेनाख्यं चोहानं स्थापयन्पुरः ॥ ३८ ॥ रावं सबलसिंहाख्यं परमार शिरोमणिं ॥ वैरीसालं महारावं राठोरान्वीर ठक्कुरान् ॥ ३९ ॥ चौंडावता न्रणेचंडान् शक्तान् शक्तावतांस्तथा ॥ राणावतान् रणाजेयान् राजन्याजन्य दुर्जयान् ॥ ४० ॥ सचातिखर्व राढ्यान्स संगे संस्थाप्य सत्सवः ॥ राणेंद्रो रण दुर्धर्षो मिलनार्थं मुदा ऽ चलत् ॥ ४१ ॥ रक्तध्वजैः शोभमाना भांतिनाना पदातयः ॥ सपल्लवद्रुमा गोत्रा एकत्र स्थापिताः किमु ॥ ४२ ॥ वैरिग्राह गणैर्मही धरकुलैः सद्रत्न वृंदैरहो राजच्चक्र चयैश्च वाडव शिखि स्फुर्ज त्प्रतापै र्वृतः ॥ उद्यद्भोगिवरै र्महोर्मिनिवहै र्मर्यादया पूर्वया गांभीर्येण युतो विराजति जयीराणा ऽर्णवः किंपरः ॥ ४३ ॥ औरंगजेब वीरस्य दिल्लीशस्य सुतस्यसः ॥ जगत्राण सुरत्राण आजमस्य प्रतापिनः ॥ ४४ ॥ आज्ञयाति-ज्ञता सिंधु गांभीर्य गुणसागरः ॥ दलेलखां महावीरो हसन्ना जदपूरितः ॥ ४५ ॥ तथाहसन अल्लीखां अन्येपि म्लेच्छ भूभुजे ॥ राठोडो रामसिंहाख्यो रतलाम पुर स्थितः ॥ ४६ ॥ हाडा किशोर सिंहाख्यो गौड़ भूपा स्तथा पुरे ॥ हिंदू म्लेच्छ महावीरा आयाताः संमुखं सुखात् ॥ ४७ ॥ दिल्लीपतीयैः स्वीयैश्च देश पालैः समावृतः ॥ जयसिंहो विभाजाव दिव्याले मघवा वृतः ॥ ४८ ॥ ततः श्री जयसिंहाख्यः पूर्वोक्तै ष्ठक्कुरैर्वृतः ॥ गरीवदास नाम्नास्वपुरोहित वरेणवा ॥ भीषू प्रधान वैश्येन युक्ते सुयोनिते जसाः ॥ महा भाग्यो महा शौर्यो महोत्साहो महामनाः ॥ ४९ ॥ हिंदू म्लेच्छ महा वीर देशनाथ विशोभिनः ॥ वमाख्य सुरत्राण मणे दर्शन मातनोत् ॥ ५० ॥ आजमाख्य भुस्वाणो राणेंद्रस्या दरं भृशं ॥ अकरो द्विनयो पेतः सुस्नेह मनु दर्शयन् ॥ ५१ ॥ एकादश गजानश्वां श्च-त्वारिंशन्मितान् शुभान् ॥ आजमाख्याय रानेंद्रो प्रेषया मास दर्पवान् ॥ ५२ ॥

आजमाख्यः सुरत्राण एकमदल द्विप ॥ अष्टाविंशति संख्याश्वान् सहेम वसन त्रयी ॥ ५३ ॥ पंचाश त्प्रमिता भूपा समूहं रान भूभुजे ॥ ददौ महानं हेम मय मिलनं त्वनयोरभूत् ॥ ५४ ॥ दलेलखां तदो वाच सुलतान शृणु प्रभो ॥ अयं-वीर श्चंद्रसेनो राना झाला शिरोमणिः ॥ रावः सबलसिंहोयं रत्नसी नाम रावतः ॥ चोंडावता रणे चंडाः शक्ताः शक्तावता स्तथा ॥ ५५ ॥ परमाराश्च राठोडा स्तथा राणावतोत्तमाः ॥ रणेसिंहाः पर्वतेषु मार्ग मद दुरुत्तमाः ॥ ५६ ॥ युयुधुर्नमहायोधा ज्ञातव्यंविज्ञतांबुधे ॥ दिल्लीशेन परारानोक्त्या रक्षितुं ध्रुवं ॥ आजमाप्युक्त वानेवं सत्यमेव नसंशयः ॥ संतुष्टो जयसिंहाय ददावाज्ञां कृतादरः ॥ ५७ ॥ जयसिंहोमहाभाग्यो वीरः शिबिरमागतः ॥ अस्यासीद्भाग्यतः शीघ्रं मिलनंतुजितावदत् ॥ ५८ ॥ पूर्णः सर्गः ॥ इति त्रयोविंशति नाम सर्गः ॥ २३ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ प्रेम्णाअमरसिंहाख्य पौत्रयुक्तस्यधर्मणः ॥ राणेन्द्र राजसिंहस्य राजराजस्यसंपदा ॥ १ ॥ हेम्नोदशसहस्रौघ तोलकैः पूर्णतोभृतः ॥ शुद्धात्मनेवसृष्टाया स्तुलायाअतुलाजुषः ॥ २ ॥ महासेतौहस्तिनीसत् स्कंधेबंधुर सुंदरं ॥ तोरणंभातिगौरोच्चा धोरणंतुलयाद्धुवं ॥ ३ ॥ महोज्वलतयाकिंवा ऐरावतकुलास्थितिः ॥ हस्तिन्येषामुर्द्धनिधत्ते चित्ररूप्योच्चभूषणं ॥ ४ ॥ दत्तां कुशद्वयंप्येषा अचलैवाभवत्ततः ॥ दर्शितंतून्नतीकृत्य हस्तिपेनांकुशद्वयं ॥ ५ ॥ महातोरणमेतत्तु गौरकीर्त्योन्नतीकृतं ॥ प्रांजलिसांजलियुगं भुजयोर्भातिभूपतेः ॥ ६ ॥ द्वितीयंतोरणंतत्र पार्श्वेस्तिलघुसुन्दरं ॥ तथाअमरसिंहाख्य पुत्रस्यातिविचित्र कृत् ॥ ७ ॥ राणेन्द्रराजसिंहस्य पट्टराज्ञ्यातिविज्ञया ॥ श्रीराणाजयसिंहस्य मात्रामित्रप्रतापया ॥ ८ ॥ सदाकुंवरिनाम्न्याया तुलारूप्यमयीकृता ॥ आस्ते तत्तोरणंचित्रं हस्तिन्यांहस्तयुग्मवत् ॥ ९ ॥ आस्तेगरीबदासस्य पुरोहित शिरोमणेः ॥ कृतायाः स्वर्णपूर्णाया स्तुलायास्तोरणंमहत् ॥ १० ॥ गरीबदासस्य पुरोहितस्य ज्येष्टः कुमारो रणछोडरायः ॥ आस्तेकृतायाः किलतेनरूप्यः आजतुलायाः शुभतोरणंसत् ॥ ११ ॥ श्रीराणोदयसिंहसूनुरभवत् श्रीमत्प्रतापः सुत स्तस्य श्री अमरेश्वरोस्य तनयः श्री कर्णसिंहोस्यवा ॥ पुत्रो राणजगत्प-निश्चतनयो स्माद्राजसिंहो स्यवा पुत्रः श्री जयसिंहएष कृतवान्वीरः शिला ऽ लेखितं ॥ १२ ॥ पूर्णे सप्तदशे शते तपसिवा सत्पूर्णिमाख्ये दिने द्वात्रिंशन्मित वत्सरे नरपतेः श्री राजसिंहप्रभोः ॥ काव्यंराजसमुद्र मिष्टजलधेः सृष्टप्र-तिष्ठाविधेः स्तोत्राढ्यं रणछोड भट्टरचितं राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ १३ ॥ युग्मं ॥

आसीद्भास्कर तस्तु माधवबुधो ऽस्माद्रामचंद्रस्ततः सत्सर्वे श्वरकः कठोडि कुलजो लक्ष्म्यादिनाथस्सुतः ॥ तैलंगोस्यतु रामचंद्र इतिवा कृष्णोस्यवा माधवः पुत्रोभून्मधुसूदन स्त्रयइमे ब्रह्मेश विष्णूपमाः ॥ १४ ॥ यस्यासीन् मधुसूदनस्तु जनको वेणीच गोस्वामिजाऽभून्माता रणछोड एषकृतवान् राजप्रशस्त्या ह्वयं ॥ काव्यं राण गुणौघ वर्णनमयं (– – – – –) चतुर्विंशत्यास्व्य इहा भवद्भवमुदे सर्गोर्थ सर्गोन्नतः ॥ १५ ॥ राजप्रशस्ति ग्रंथोयं प्रसिद्धः स्याज्जगत्यलं ॥ लक्ष्मीनाथादि बालानां पाठार्थं जायतां ध्रुवं ॥ १६ ॥ नारायणादि पुण्यात्म राणेंद्रान्वय वर्णनं ॥ कर्णस्थितं स्या (–) णौन्नं पुत्रपौत्र सुखप्रदं ॥ १७ ॥ रामादि राजस्तुति युक्काव्यं रामायणोपमं ॥ श्रुत्वा धनं धनेशः स्यात्काव्ये काव्यो गरुर्गिरं ॥ १८ ॥ नानाराजेतिहासाक्तं ग्रंथः स्याद्भारतोपमं ॥ भारत्यां भारती तुल्यः पठन् भारत खंडके ॥ १९ ॥ ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चस्वी बाहुजो बाहुवीर्यवान् ॥ वैश्योलभेद्धनं श्रुत्वा शूद्रो भद्रं तथाखिलं ॥ २० ॥ संस्तभ्य चित्तमन्येभ्य पठन्सभ्यत्व माप्नुयात् ॥ इभ्यताभुवने मर्त्येनालभ्यं तस्य किंचन ॥ २१ ॥ विप्रोग्नि होत्रग्रामेभ्यः क्षत्रियो ऽखिलभूमिपः ॥ वैश्योधनीस्यात्कायस्थः श्रियासुस्थो भवेद्ध्रुवं ॥ २२ ॥ राजाश्रुत्वा चक्रवर्ती शौर्य गांभीर्य धैर्यवान् ॥ देश स्वास्थ्यं लभेद्वैरि विजयं कुरुते सदा ॥ २३ ॥ पठन्स्फुरद्भागवते नवमस्कंध सत्कथा ॥ आकंठं सुखभुग्भूत्वा वैकुंठं प्राप्नुयादिदं ॥ २४ ॥ दयालसाह कृतवान् खेराबादस्य मारणं ॥ तत्केतु दुंदुभिग्राहं वनहेडाख्य लुंटनं ॥ २५ ॥ धारापुरा मारणंच मसीदितति पातनं ॥ ध्वस्त्वं चक्रे अहमद नगरं लुंटनं कृतं ॥ २६ ॥ महामसीदि पतनं कृतवान् समरे कृती ॥ इत्युक्तः प्रभुवीराणां पराक्रम विनिर्णयः ॥ २७ ॥ जगदीशमिश्रतनयो माथुरहीरामणि महामिश्रः ॥ राजसमुद्र जलाशय सूत्रनिवेशे परिक्रमणे ॥ २८ ॥ द्वादशशतमण मितिकं धान्यमहीध्रमहासेतौ ॥ द्वादशशतमणमितिकं धान्याद्रिकांकरोलीस्थे ॥ २९ ॥ सेतौस – – प्यतथासार्ध सहस्राच्छ रूप्यमुद्राणां ॥ कृत्वा ढब्बूकगणं सरूप्यमुद्रादिकं तदार्थिभ्यः ॥ ३० ॥ षड्दिनपर्यंतमयं – – तदाराजसिंह देवेन ॥ उक्तं जनसमदमिश्रो ऽस्मन्निकटतः पुरः कुरुते ॥ ३१ ॥ इत्युत्साहेनतदा भक्त्या मिश्रः पुरः स्थितो नृपतेः ॥ धान्यादि धनंसार्थि व्रजायदत्वा प्रियोनृपस्यासीत् ॥ ३२ ॥ श्रीराणोदयसिंह सूनुरभवत् श्रीमत्प्रतापः सुतस्तस्य श्री अमरेश्वरोस्य तनयः श्रीकर्णसिंहोस्यवा ॥ पुत्रोराणजगत्पतिश्च तनयो स्माद्राजसिंहोस्यवा पुत्रः श्रीजयसिंह एषकृतवान्वीरः शिलाऽऽलेखितं ॥ ३३ ॥ पूर्णेसप्तदशेशते तपसिवा सत्पूर्णिमास्येदिने द्वात्रिंशन्मितवत्सरे नरपतेः श्री राजसिंह प्रभोः ॥ काव्यं राजसमुद्र मिष्टजलधे सृष्टप्रतिष्ठाविधेः स्तोत्रार्कं रणछोड़भट्टरचितं राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ ३४ ॥ युग्मं ॥

आसीद्भास्कर तस्तुमाधवबुधोः ऽस्माद्रामचंद्रस्ततः सत्सर्वेश्वरकः कठोड़िकुलजो लक्ष्म्यादिनाथस्सुतः ॥ तैलंगोस्यतुरामचंद्र इतिवा कृष्णोस्यवा माधवः पुत्रोभून्मधुसूदन स्त्रयइमे ब्रह्मेशविष्णूपमाः ॥ ३५ ॥ यस्यासीन्मधुसूदनस्तु जनको वेणीच गोस्वामिजाऽभून्माता रणछोड़एप कृतवान् राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ काव्यं राणगुणौघ वर्णनमयं (- - - - -) चतुर्विंशत्याख्य इहा भवद्भवमुदे सर्गोर्थ सर्गोन्नतः ॥ ३६ ॥ दुहा ॥ राणा कोइ रजपूत जेवडता जायो नहर ॥ समुद्रफेरणसूत राणातुहीज राजसी ॥ १ ॥ ऐजो ओरंगकाह मेंगलमुगल मारिजे ॥ राणो रापेराह रजवट भरीया राजसी ॥ २ ॥ संवत् १७१८ माहा वदि ७ नीमषोदवारो मुहुर्त हुओ जद अतरा ठाकुर मिल कांमकरावे राणावत माहसिंघजी रामासिंघजी, राणावत भाउसिंहजी चूंडावत दलपतजी, मोहणसिंघजी, रावत लुणकरणजी, चूंडावत केशरीसिंघजी, चूंडावत मोकमसिंहजी, मांजावत नरसिंघदासजी, मांजावत गरीबदासजी, राठोड़सिंघजी, राठोड़ रामचंदजी, राठोड़ हेमजी, राठोड़ मोकमसिंघजी, वितगरा साह रामचंद चेचांणी, साह कलु पंचोली राम जगमालोत, साह मुकुंददास पंचोली, हरराम सिघवी, लपुपंचोली, वाघो गजधर, मुकुंद गजधर, किल्याण सुत जगनाथ उरजण सुतलालो लपो जसो हरजी जगनाथ सुत मेघो मनो ॥ संवत् १७३२ प्रतिष्ठा हुई शुभं भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥

शेषसंग्रह नम्बर ५.

उदयपुर - अंबामाताकी चरणचौकी की प्रशस्ति.

संवत् १७२१ वरषे जेठ शुदि १० रवौ वरखसंन्यास्यापन्न विरषसितातः बिरे श्रीराणा राजसिंहजी राज वृतमान नगररोंवे परमध्रंध्ये धरती मुरतमी अंबाजीरि सुतार सुरजानहरट ८८८१ करा परती ताँबापत्र दियो सुतार मषवजी धरतपबडा सुरजपथमान श्रीसेवगनाम रावतखाटनाम श्रीमाताजी सेवतरुमापत् सुभकारजसीधइ संतारस्तान हैं धरती दिद्धि तरत घर नोरा दिया घरहर चालबधरो वोटाहे तांबापत्र दिधो नदेजनीरो माहे गधेगाल छे

शेषसंग्रह नम्बर ६.

बड़ीके तालाबकी प्रशस्ति.

सिद्धश्रीएकलिंगजी प्रसादात् महाराजाधिराज महाराणाजी श्री राजसिंहजी विजयराज्ये तलाव जानसागररो काम करायो कुँवरजी श्री जेसिंहजी भीमसिंहजी कुँवर पदभुक्तव्यं गजधर सूत्रधार किशना सुत जसा संवत् १७२१ मार्गशीर बदी १० गुरे नीमरो मुहूर्त हुवो सं० १७२५ वर्षे काम पूरोहुवो प्रशस्ति प्रतिष्ठितं शुभंभवतु बैशाख शुद ३ गुरे.

श्रीगणेशायनमः ॥ कलयतुकमलायाः कामदः कर्मरूप स्तुहिनकिरणबिंब द्योतितानंदवक्रः ॥ विकचकमलचक्षुः क्षीरधौवद्धनिद्र स्सजलजलदनित्यं भावनी यस्सभव्यं ॥ १ ॥ गुणगणगुरुगीत्या गंगयागीतगात्रः कनककदनकांत्या कांतयाकांतकायः ॥ धुतघनधृतिधाम धैर्यधारीधरण्यां भवतुभविकभूमिर्भूतये भूतभर्त्ता ॥ २ ॥ बंदेलंबोदरंवंद्यं जगदंबोदरोद्भवं ॥ विंबोदरद्युतिर्देहे विंबोदर मिवद्विपं ॥ ३ ॥ तैलंगज्ञातितिलकं कठौडीकुलमंडनं ॥ श्रीमंतंमिसरंकृष्ण भट्टं बंदेप्रतिक्षणं ॥ ४ ॥ महाराजाधिराजश्री राजसिंहनिदेशतः ॥ लक्ष्मीनाथकविः कुर्वे जनासागरवर्णनं ॥ ५ ॥ अस्तिसर्वत्रविख्यातो रामवंशः सुपुण्यवान् ॥ यस्यसाम्यंनयातीह वंशः कोपिमहीतले ॥ ६ ॥ तत्रान्ववायेशिवदत्तराज्यो बापाभिधानोजनिमेदपाटे ॥ संग्रामभूमौपटुसिंहरावं लातीत्यतोरावलइत्यभाणि ॥ ७ ॥ राहप्पराणाजनितस्यवंशे राणेतिशब्दंप्रथयन्प्रथिव्यां ॥ रणोहिधातुः खलुशब्दवाची तंकारयत्त्येपरिपूनद्रुतार्तान् ॥ ८ ॥ तस्मान्नरपतिराणा दिनकर राणाबभूवाथ ॥ अजनिजसकर्णराणा तस्मादभूच्च नागपालाख्यः ॥ ९ ॥ श्री पूर्णपालनामा पृथ्वीमल्लस्ततोजातः ॥ अथभुवनसिंहउदित स्तत्पुत्रोभीमसिंहो भूत् ॥ १० ॥ अजनिजयसिंहराणा तस्माज्जज्ञेचलखमसीराणा ॥ अरसीततो हमीरस्ततोप्यभूत्क्षेत्रसिंहोस्मात् ॥ ११ ॥ तस्माल्लाखाभिख्यो राणाश्रीमोकल स्तस्मात् ॥ श्रीकुंभकर्णउदभूद्राणा श्री रायमल्लोस्मात् ॥ १२ ॥ संग्रामसिंह राणाभूपालमणिस्ततोजातः ॥ श्रीराणोदयसिंहः प्रतापसिंहस्ततोजातः ॥ १३ ॥ अमरसमोमरसिंह स्ततोनृपः कर्णसिंहोभूत् गुणगणनिधि स्ततोभूद्राणा श्रीमज्जगत्सिंहः ॥ १४ ॥ जगत्सिंहमहीभर्त्ता कल्पवृक्षः कथंसमः ॥ चिंतनावधि दःसोयं चिंतितादधिकप्रदः ॥ १५ ॥ भास्वान्श्रीमज्जगत्सिंह स्तुलामारुह्य यद्दयधात् ॥ स्वातिवृष्टिंततोमुक्ता नस्याज्जन्मोत्सवः कथं ॥ १६ ॥ तस्यधर्मात्मजस्साक्षा द्विष्णुरूपस्यचाभवत् ॥ राज्ञीसमगुणाचारा जनादेवीतिनामतः ॥

१७ ॥ पुत्रीराठौडनाथस्य राजसिंहमहीभृतः ॥ मेडताधिपतेर्नित्यं विष्णुपूजा रतस्यच ॥ १८ ॥ शंभोर्गौरीहरेः श्रीः कलशभवमुने राजपुत्रीगुणाढ्या लोपा मुद्रायथास्ते नृपमनुजननी स्याद्यसंज्ञोष्णरश्मेः ॥ रामस्यासीद्यथावै जनक नृपसुता साशचींद्रस्य पत्नी तद्वद्रेजे विराजद्गुण कलित जगत्सिंहपत्नी जनादे ॥ १९ ॥ दात्री दानव्रजस्या प्रियरिपु निधने पार्वती वोग्रभावा दीनेनित्यं दयालुर्नृपमुकटजगत्सिंह राणा प्रियासीत् ॥ कर्मेती नामधेया जनक गृह वरे साप्रसूतेस्म पुत्रं राणा श्री राजसिंहं गुणगणनिलयं चारिसिंहंद्वितीयं ॥ २० ॥ राणा श्रीराजसिंहे कलयति मुकुटे राजलक्ष्माणि चाथो मातासेयं जनादे लभत बहुसुखान्युत्सवंतं विलोक्य ॥ तस्याभव्याथ धीमान् प्रियवचन निधी राजसिंहो नृपेंद्रो नाम्नामातु स्तडागं सदुदयपुरतः पश्चिमस्यां व्यधात्तं ॥ २१ ॥ बडी ग्रामस्य निकटे तत्कासारस्य राजतः ॥ जनासागर इत्येवं प्रसिद्धि स्समजायत ॥ २२ ॥ किंदुग्धं दधिवाघृतं मधुसुरा चेदिक्षुवार्द्धे रस स्साम्यंनो लभतो जलस्य लसतः श्रीमज्जनासागरे ॥ क्षारोमत्सर भावतो ज्वलितहृत्तद्वाडवो दुःखभाग्लंकां प्राप्य विमुक्त लोकवसती रत्नाकरो प्यंबुधिः ॥ २३ ॥ पांडव लोचनमुनिभूपरिमित (१७२९) वर्षे तपो मासे ॥ शुक्लदशम्यां जननी बहुपुण्य प्राप्तयेनूनं ॥ २४ ॥ मही महेन्द्रः किल राजसिंह श्चकार पद्माकरवासवस्य ॥ उत्सर्गमुत्साह विलासि चित्त स्सद्वित्तविस्तार विराजमानं ॥ २५ ॥ युग्मं ॥ उत्सर्गे पूर्णतांयाते तास्मिन्सेतौ सुखास्थितः ॥ सुश्राव श्री राजसिंहो द्विजराजो दिताशिषः ॥ २६ ॥ वीराधीशोधिनीरास्ति तितमरुचिमान् वीरगीरार्त्तबंधुः क्षीराब्धिस्यानहीरा धिकवि- मलयशः पुंजधीराब्जनेत्रः ॥ साराक्तस्वीयदारा लयहृदयलसत् कौस्तुभारा धितांघ्रि स्ताराधीशास्यहारा धिकलसिततनुः पातुनारायणोवः ॥ २७ ॥ भक्तप्रत्यक्षलक्ष्मी मृदुलजनुलता संगमानूमोदमानः काममाद्यन्मिलिंदी भवद- खिलजग द्वंद्यमानांघ्रिपद्मः ॥ भक्तंयद्भुक्तशेषं सपदिसुखमया भुंजमानाबभूवु र्द्द्यात्सद्यो ऽनवद्यं फलमिहसुजगन्नाथदेवः प्रसादात् ॥ २९ ॥ भक्तानंदातिसक्ता खिलकलितननि स्साधुवक्ताहितस्या लक्तादिप्राज्यरक्ता नलबहुलल्स न्मंत्रशक्ता- तितेजाः ॥ कामाऽश्यामाभिरामा लिकरुचिरविधुः कांतिधामाननेंदु र्वामारिव्रातहामा रुचिरपशुपतिः पुण्यनामावताद्वः ॥ ३० ॥ दक्षाधीशस्सुवक्षा विमलसुरधुनी जीवनक्षालितांगो यक्षाधीशातिपक्षा चलपतितनुजा नेत्रलक्षार्कतेजाः ॥ साक्षाद्या यत्सुहाक्षामरिपुवरगणो मल्लिकाक्षारकामो लाक्षावल्लोहिताक्षा दितिजकृतनतिः पातुदाक्षायणीशः ॥ ३१ ॥ सार्वदिक्शूलधारी मृत्युंजयइति जगद्गीतः ॥ श्रीविश्वेश्वरदेव श्चित्रचरित्रं करोतुशिवः ॥ ३२ ॥ श्रीवैद्यनाथइतिय: प्रथितः

पृथिव्यां संताप संतति हृति व्यसनेविदग्धः ॥ सोयंपुरत्रयविनाश विकाशबुद्धि र्निश्शंकमं कुरुयता दिहशंकरश्शं ॥ ३३ ॥ योगीन्द्रध्यान रूपो धरणिधर सुता स्वांतधैर्या पकर्षी कंजाक्षो जन्हुपुत्री जलजनित जटा द्वैतकांति प्रतानः ॥ नंदीयत्पादपंकेरुहयुगल रज स्थापनापूत पृष्टो वीराविर्भूतकंपं कलयतु कुशलं बीरभद्रे श्वरोवः ॥ ३४ ॥ मंगलकदंबकंवः करोतु शंभोर्जटा जूटः॥ कुरुते सुरस्त्रवंती यत्रेंदुगलत्सुधा भ्रांतिः ॥ ३५ ॥ क्षीरांभोधि प्रसुप्त द्विजपति विलसत् केतनांगाब्ज राजन् माल्ये – – भ्रमंतोमधुरमधु करीवृंदशोभां वहंतः॥ चित्रंभक्त्युल्लसन्तो नरहृदयसरः कंजपुंजायमाना रक्षातुक्षीण दुःखाः क्षपितरिपुचल ल्लक्षलक्ष्मी कटाक्षाः ॥ ३६ ॥ घनसारगौर घनसारभवस्त्रो बहुभूषण प्रभुमदारुण नेत्रः॥ वनमालि मित्र मतिचित्र चरित्रो मुशला युध – – – – – स्सशांतिः॥ नवनीपककाम संगकामा नवनीशाच्युत देहि कामधामा ॥ ३८ ॥ ब्रह्मरुद्रलसदिंदु चंद्रकस्सांद्र देवनिवहोस्ति यद्यपि ॥ अस्तुनंदनिलयां गणेलस द्वस्तुनः किमपिधाम तन्मुदे ॥ ३९ ॥ उत्सर्गे पूर्णतांयाते तस्मिन् सेतौ सुखस्थितः ॥ सुश्राव श्रीराजसिंह इतिविप्रोदिताशिषः ॥ ४० ॥ येन सर्वे कृताभूमौ जना पूर्ण मनोरथाः ॥ श्रीराजसिंह भूमींद्र श्चिरंजीवतु भूतले ॥ ४१ ॥ इतिश्री मन्महाराजाधिराज महाराणा श्रीराजसिंह निदेशा त्तैलंग तिलक कठोडी ग्रामाधिप श्रीमत् कृष्णभट्ट तनयाभ्यां श्रीलक्ष्मीनाथ भट्ट भास्कर भट्टाभ्यां विरचिता श्रीमज्जनासागर प्रशस्तिः संपूर्णतां प्राप संवत् १७३४ वैशाख कृष्ण १३ लिखित मिदं कठोडी श्रीमत्कृष्णभट्टात्मज भास्करभट्टेन लिखितं सूत्रधार सगराम सुत नाथू ज्ञाति भगोरा ॥ एक षष्ठि सहस्राग्र लक्ष युग्मं सुपुण्यदं ॥ कार्येस्मिन् रूप्यमुद्राणां लग्नं भद्र पदंसदा २६१००० दोयलाख इगसठ हजार रूपिया तलावरी प्रतिष्ठा हुई जदी रूपारी तुला कीधी गामगलूंड चित्तौड तिरा गाम देवपुर थामलातीरा प्रोहित श्री गरीबदासजीहे आघाट करे मया किधो तलावरी पालरो पांवलेने खाडाखोद्या सीसोफेरेने नींम सोधेन गज १५ आसार कीधा कमठाणारा गजधर सुतार सगराम सुत नाथू तेन कोठारी १७३५ वर्षे.

शेषसंग्रह नम्बर ७.

देबारीके दरवाजेकी उत्तरीय शाखकी प्रशस्ति.

महाराजधिराज महाराणाजी श्रीराजसिंहजी आदेशात सावण सुद ५ सोमे संवत् १७२१ विषे पोलरा कमाड़ चढाव्या लिखतु जोसी गोरखदास साह पंचोली नाथू पंचोली.

शेषसंग्रह नम्बर ८ - ९.

देबारीके भीतर त्रमुखी बावड़ीकी प्रशस्ति.

॥ श्रीगणेशायनमः॥ तुहिन किरण हीरक्षीर कर्पूरगौरं वपुरपजलदाभं कालिका पांगवल्ल्याः प्रति कृति घटना ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ कलयतु कुशलंवो राजसिंह क्षितींद्र ॥ १ ॥ चतुर्मित पुमर्थ सद्धि तरणाय सद्भ्यः सदा चतुर्भुजधर श्चतुर्युग विराजि राज यशाः॥ चतुर्भुज हरिः शिवं दिशतु राजसिंहप्रभो श्चतुः श्रुति समीरितं निज चतुर्भुजा भिर्भृतं ॥ २ ॥ श्री रामरसदे सृष्ट वापी वर्णन सुंदरी ॥ कुर्वे प्रशस्तिः शस्ता श्री राजसिंह नृपाज्ञया ॥ ३ ॥ आदौ वाप्पो रावलोभू द्वैरिस्ताडन तापदः ॥ तद्वंशे राहपः पूर्व राणा नाम धरो भवत् ॥ ४ ॥ ततस्तु हरसू राणा नरूराणा ततो भवत् ॥ जसकर्ण स्ततो राणा नागपाल स्ततो नृपः ॥ ५ ॥ भूणपाल स्ततः पीथा ततो भुवनसिंहकः ॥ ततस्तु भीमसिंहो भूजयसिंह स्ततो भवत् ॥ ६ ॥ लक्ष्मीसिंह स्ततो राणा अरिसिंह स्ततो भवत् ॥ ततो हमीर राणेंद्रो खेता राणा स्ततो भवत् ॥ ७ ॥ ततोलाखा भिधोराणा ततो मोकल नामकः ॥ ततः श्री कुंभकर्णो भूद्रायमल्लस्ततो भवत् ॥ ८ ॥ ततः सांगा भिधोराणा रत्नसिंह स्ततो भवत् ॥ तद्भ्राता विक्रमादित्यो विक्रमादित्य विक्रमः ॥ ९ ॥ तद्भ्रातोदयसिंहेंद्रो राज्योदयमयः सदा ॥ ततः प्रतापसिंहोभू त्प्रतापपरिपूरितः ॥ १० ॥ श्री मानमरसिंहोभू त्ततो ऽमरवरप्रभः ॥ ततः श्री कर्णसिंहेंद्रः कर्ण राजपराक्रमः ॥ ११ ॥ ततः श्री मज्जगत्सिंहो जगत्पालनतत्परः ॥ प्रत्यक्ष राजततुलां कुर्वत्सर्वप्रदोभवत् ॥ १२ ॥ कृतवान्मोहनंलोके श्रीमन्मोहनमंदिरं ॥ मरुप्रथमजगृहे तथाश्रीमेरुमंदिरं ॥ १३ ॥ ॐकारेश्वरमीशानं समीक्ष्याऽमर कंटके ॥ सुवर्णस्यतुलांकृत्वा वर्षन्स्वर्णैरराजसः॥ १४ ॥ श्वेताश्वदानंव्यतनो द्धैमंकल्पतरुंददौ ॥ सुवर्णपृथिवींदत्वा सौवर्णान्सप्तसागरान् ॥ १५ ॥ विश्वचक्रं सुवर्णस्य दत्वासुंदरमंदिरे ॥ श्री जगन्नाथरायंश्री युक्तंसंस्थापयन्बभौ ॥ १६ ॥ दानीरायंशिवंशक्तिं गणेशंभास्करंतथा ॥ प्रतिष्ठाप्यतदेवाऽदा द्गोसहस्रविधानतः ॥ १७ ॥ हैमीकल्पलतावापी हिरण्याश्वंददौतथा ॥ पंचग्रामान्जगत्सिंहो रत्न धेनुंचदत्तवान् ॥ १८ ॥ ततः श्री राजसिंहेंद्रो राज्यसिंहासनेस्थितः ॥ आखंड लोपमः श्रीमान् जयतिक्षितिमंडले ॥ १९ ॥ श्री सर्वर्तुविलासाख्यं स्वारामंकृतवां स्तथा ॥ दहबारीमहाघट्टे द्वारंकाष्टकपाटयुक् ॥ २० ॥ स्वसुर्विवाहसमये — एकप्रतिकन्यका ॥ ददौमहाक्षत्रियेभ्यो गजवाहांबराणिच ॥ २१ ॥ दाराशिको षसहित सतादुल्लहखानत ॥ राठोडकच्छवाहेश युक्तः शाहिजहांभिधं ॥ २२ ॥

दिल्लीश्वरंसमायांतं श्रुत्वैवाभिमुखोभवत् ॥ निःसार्यशौर्यसंपन्नो राजसिंहोविराजते ॥ २३ ॥ दग्धंमालपुराभिख्यं नगरंव्यतनोदिह ॥ दिनानांनवकंस्थित्वा लुंटनं समकारयत् ॥ २४ ॥ रूपसिंहोमंडलाच्च गढस्थोम्लेच्छपाज्ञया ॥ यस्यराघव दासस्य वैश्यस्याग्रेपलायितः ॥ २५ ॥ सोयंतद्रूपसिंहस्य दिल्लीशार्थंसुरक्षितां ॥ पुत्रींपाणिग्रहाणोद्यत् सौभाग्यांकृतवान्प्रभुः ॥ २६ ॥ जशवंतसिंहरावलमिह डुंगरपुरगतंनिजं कृतवान् ॥ दंडंचवासवालास्थिते रुपरिकुशलसिंहस्य ॥ २७ ॥ देवलियापतिमनिशं कृतवान्निस्तेजसंहरीसिंहं ॥ मीनाक्षयीकृत्य मेवलदेशंगृहीत वान्नृपतिः ॥ २८ ॥ पुत्र्याविवाहसमये नवतिलघ्वाधिकांसुकन्यां ॥ सुक्षत्रेभ्यो दत्वागजवाजि सुवस्त्रभोजनानिददौ ॥ २९ ॥ जननींरूपतुलायां स्थितांविधायविष्णु लोकगते ॥ तस्यानाम्नारचितो महान्जनासागरोनरेंद्रेण ॥ ३० ॥ तस्योत्सर्गेराज्ञा रूपतुलाकल्पितार्पितौग्रामौ ॥ गुणहंडदेवपुराख्यौ पुरोहितश्रीगरीबदासाय ॥ ३१ ॥ ब्रह्मांडमहादानं श्वेताश्वाख्यन्नृपोकरोद्दानं ॥ रूप्यतुलायांस्थित्वा गजंददौ वाहिरण्यकामदुघां ॥ ३२ ॥ ददौमहाभूतघटं हिरण्याश्वरथंनृपः ॥ हेमहस्ति रथंदिव्यं पंचलांगलकंतथा ॥ ३३ ॥ भावलीग्रामसहितं हैमींकल्पलतांददौ ॥ स्वर्णपृथ्वींनृपोविश्वचक्रं रूप्यतुलादिकृत् ॥ ३४ ॥ नाम्नाराजसमुद्रं जलाशयं सुप्रतिष्ठितंकृतवान् ॥ सौवर्णसप्तसागरदानं हैमींतुलांमहीपालः ॥ ३५ ॥ सत्पौ त्रममरसिंहंहैमतुलास्थंविधायतत्रददौ ॥ एकादशसुग्रामान् पुरोहितोद्यद्गरीबदासाय ॥ ३६ ॥ श्रीराजमंदिरवरं शालाग्रकल्पराजनगरंच ॥ कृत्वादेशपतिभ्यो गजाश्व वस्त्राणि दत्तवान्भूपः ॥ ३७ ॥ भूकल्पवृक्षोराणेंद्रः कल्पपादपनामकं ॥ महा दानंप्रकल्प्याय माकल्पंकीर्त्तिमादधे ॥ ३८ ॥ राधाकृष्णचरित्रस्य राजसिंहमही पतेः ॥ श्रीरामरसदेनाम्नी राज्ञीजगतिराजते ॥ ३९ ॥ श्रीपुष्करेतदजमेरि महाप्रदेशे शार्दूलवीरइतिकल्पतभूमिभोगः ॥ राठोडराजमदखंडनएवजातो दाना द्यनेकसुकृतीपरमारवंश्यः ॥ ४० ॥ तस्यात्मजोजगतिरायसलः प्रसिद्धो जात प्रतापतपनद्युति तापितारिः ॥ शौर्याभिमानमयएवमुदारदानं दानंददन्ससततं कनकप्रधानं ॥ ४१ ॥ जातस्तदीयतनुजस्तुजुझारसिंहः सत्सिंहसंघजयकारि सरीरसाक्षात् ॥ खड्गप्रहाररणखंडितवैरिवारो क्ष्मासिंहरत्नगुणभारसमोत्युदारः ॥ ४२ ॥ तनयाथतस्यविनयान्विता भवत्सनयासमापिरमयातथोमया ॥ सदया ऽभयादिधनदा थयाधिकाऽभिरामरामरसदे शुभाभिधा ॥ ४३ ॥ सोलंकिनोदिव्य सुजानकुंवरिनाम्न्याः सुपुत्रीच विचित्रसद्गुणा ॥ स्वजन्मनाया चितमातृतात वंश द्वयासत्कविसृष्टशंसना ॥ ४४ ॥ रानामंडनराजसिंहसुखदा भूयोमहादानकृद्रत्नां

तंक्रातियुक्तसमस्तगुणभृ देवप्रबोधोद्भवा ॥ स्यादेशेतिविषेशणादिद्विजव द्वर्णैर्युतं नामते सत्तेनेविधिरत्ररामरसदे नाम्नीतिराज्ञीमणे ॥ ४५ ॥ सेयंश्रीराजसिंह स्य राज्ञीसौभाग्यसुंदरी ॥ श्रीरामरसदेनाम्नी जयतिक्षितिमंडले ॥ ४६ ॥ वैदर्भी नल भूभुजो दशरथस्यासीत्सुमित्रा विधो रोहिणीवसु दाक्षिणा किल यथा पत्नी दिलीपस्यसा ॥ देवक्या नक दुंदुभेरपिहरेः श्रीसत्यभामा तथा नाम्नेयं रमणीति रामरसदे श्रीराजसिंह प्रभोः॥ ४७ ॥ पातिव्रत्य पवित्र पुण्य सरणि श्चिंतामणि र्विद्वतां चित्तस्थापित कंठ कौस्तुभमणि श्रीशागुणीनां पतिः ॥ बुद्धिस्तोम जरणि शिरोमणि रियं स्त्रीणां गणे सुन्दरं श्रीचूडामणि रेव राम रसदे राजा चिरं जीवतु ॥ ४८ ॥ दहबारी महाघट्टे शाला श्लष्टे विशंकटे ॥ जया वहा जयानाम्नी वापी पाप प्रणाशिनी ॥ ४९ ॥ विदधे राजसिंहस्य प्राणाधिक महाप्रिया ॥ अभिराम गुणै र्युक्ता श्रीरामरसदेवधूः ॥ ५० ॥ शतेसप्तदशे पूर्णे १७३२ वर्षे द्वात्रिंशदा ह्वये ॥ माघे धवल पक्षेच द्वितीयायां बृहस्पतौ ॥ ५१ ॥ श्रीमान् गरीबदासाख्य पुरोहित शिरोमणिः॥ प्रतिष्ठित प्रतिष्ठायां वाप्या रचित वान् विधिः॥ ५२ ॥ श्रीराजसिंह देवेन साधिता हितकारिणी ॥ वापि प्रतिष्ठा विदधे श्रीरामरसदे बधूः ॥ ५३ ॥ अत्र दानं कृतवती बहुगोदान पंचकं ॥ हलद्वय मितां भूमिं हरिराम त्रिपाठिने ॥ ५४ ॥ व्यासाय जयदेवाय क्ष्मामेक हलसंमितां ॥ कन्हाख्य ब्राह्मणा यापि तथैव हलसंमितां ॥ ५५ ॥ भानाभट्टाय वसुधा तथैव हलसंमिता ॥ कृष्णाख्यं ब्राह्मणा यापि क्ष्मामेक हल संमितां ॥ ५६ ॥ हल षट्कमितां भूमिमेवं राज्ञी मुदाददौ ॥ निष्क्रयं गोशतस्यापि रूप्यमुद्रा शतद्वयं ॥ ५७ ॥ राना श्रीराजसिंहस्य श्रीरामरसदे वधूः ॥ महोत्साहं कृतवती वापि उत्सर्ग उत्सवे ॥ ५८ ॥ वर्षे पुष्कर वेद शैलधरणी संख्येसमे माधवे पक्षे शुक्ल तमे तथा बुधमहा वारे द्वितीया दिने ॥ श्री बप्पा रणछोड सत्कविवरःसंसृष्ठवान्स्वो --- ॥ ५९ ॥ सहस्रै रूप्यमुद्राणां चतुर्विंशति संमितः॥ एकाग्रैः पूर्णतां प्राप्तं वापीकार्यमहाद्भुतं ॥ ६० ॥ श्री इतिश्री महाराजाधिराज महाराणाजी श्रीराजसिंहजी महीपति पत्नी श्रीरामरसदे विरचितं वापीप्रशस्ति भट्ट रणछोड़ कृता संपूर्ण लाल चेचाणी वापी महे चहुवाण धाभाई शतीदाशस्य वधु चंद्रकुंवर तत्पुत्र रामचंद वीर साह लाला पोरवाड़ गजधर नाथू गोड भूधररो नाथू सुगरारो

शेषसंग्रह नम्बर १०.

श्रीगणेशायनमः जलधरसमकांतिः कांतकंदर्पमूर्तिः कलिजनितमलौघ ध्वंसकोभक्तिभाजां ॥ निजकरधृतचक्र क्रंदितारातिवृन्दः जनकजनिपतिर्यः पातुरामेश्वरोवः॥ १ ॥ भास्वद्वंशावतंसा जयंतिबाणौघ सादितारिकुलाः॥ दिल्लीशमानहनने प्रतापपटवोगिरीशलब्धवराः॥ २ ॥ उदयादुदयनरेशात्प्रतापभूपो धराजानिः॥ श्रीमोकलेशसमता मकबरभूपे करोद्वेषम् ॥ ३ ॥ तस्मात् प्रताप भूपा द्बभूव वसुधा पतिर्वीरः ॥ अमरसमोऽमरसिंहः प्रतापवित्रस्तशत्रुकुलः ॥ ४ ॥ भूमीश्वराणांनिवहान्विजित्वा बालोपिवातप्रसमप्रतापः ॥ दत्वामहींविप्रजनेपुभूयः स्वर्गेययौदेवरिपून्निहन्तुम् ॥ ५ ॥ तस्मादभूद् भोजसमान दानी श्रीकर्णसिंहो धरणीसतेजः॥ भीमादिभिःक्षत्रिभि रुग्रधन्वा दिल्लीश्वरं यः समरेजुहाव ॥ ६ ॥ तस्य श्री कर्णसिंहस्य बभूवतनयोनृपः ॥ श्रीजगत्सिंह राणोति विदितो धरणीतले ॥ ७ ॥ अभिनवहम्मीरेण स्वबलवित्रासविद्रुतारिकुलेन ॥ स्मरसुंदरेणजगति धुरंधरेणेहपालिताधरिणी ॥ ८ ॥ कर्णसमान चरित्रेकर्णतनूजे द्रुतंप्रथितं ॥ यशसा धरणीतल मिदमर्जुन रूपत्व माकलितं ॥ ९ ॥ लक्षं हयान् सप्तशतं गजानां ग्रामान् शतंषोडश दानयुक्तम् ॥ योदत्तवानर्थि जनाय भूपतिः कस्तं नृपं स्तोतु मिहप्रसज्येत् ॥ १० ॥ यूपंनिखाय प्रासादं यज्ञैरिष्वासदक्षिणैः ॥ मांधातृ दर्शने वर्षत्स्वर्णकोटिं धराधरः ॥ ११ ॥ यश्शाहजादान्नगराणि जित्वाकौमारके मोदयतिस्मतातं ॥ श्रीराजसिंहा दवरं सलेभे ऽरसीकुमारं वसुधाहिमांशुः॥ १२ ॥ वदंतुविदुषोभीम मरिसीभूपजन्मिनं ॥ द्विपोदूयतवेजज्ञे कर्णसूनु सुखावहं ॥ १३ ॥ सराजसिंहस्य सदानुयायी बाल्येपि बालेंदुसमः कलाभृत् ॥ हयान् हिरण्यं धरिणीं द्विजेभ्यो वर्षन्भुवां भोजसमो बभूव ॥१४॥ अयंजीव हरोरीणा - - - मपिकामदः॥ भूतेषु तोषदोनित्यं भूतेश तनुजोनृपः ॥ १५ ॥ अरिसिंहस्य जननी जवादि तनया शुभा ॥ रामीजी वसुता माता भगवद्भक्ति तत्परा ॥ १६ ॥ तया स्वकुल माणिक्य भूषया राधितो हरिः॥ तेनै वनोदिता स्वप्ने प्रासाद मकरोदसौ ॥ १७ ॥ यद्वेदशास्त्रसर्वस्वं

रूपं वैकुंठ वासिनः ॥ रामेश्वरस्य तद्रूपं बभूव निजमंदिरे ॥ १८ ॥ यावद्धरा द्वीपवती भानुर्भाति प्रतापवान् ॥ तावद्वसतु गोविंदः प्रासादे शुभशंसिनि ॥ १९ ॥ काशीं गत्वा तुसारामी गोविंदः प्रीतये ददौ ॥ वसुधां हरिनाथाय सेवांयः कुरुते प्रभोः ॥ २० ॥ हयशत चंद्रमितेब्दे तपसिच मासे तथासिते पक्षे ॥ रविमित दिवसे सगुरौ संपूर्णो देवालयासीत् ॥ २१ ॥ वसुंधराधीश निदेशनाद्यो रामेश्वरस्यो दयराजधान्यां ॥ बाजूतनूजः किलजोधनामा प्रासाद मभ्रं लिहमाततान ॥ २२ ॥ अरसीभूप निदेशा दुदयपुरे लेखिता कविना ॥ मथुरानाथेनेयं प्रशस्ति निर्माणपटु मतिना ॥ २३ ॥ इतिरामेश्वर प्रासाद प्रशस्तिः संवत् १७०० वर्षे माघ शुद्ध १२ गुरौ अरसीजीरी धाय देवरो करायो धरमसिंहजी लिखितं.
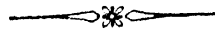
छप्पय.

त्रिदिव गौन जगतेश राजहरि राज छत्रधर ।
जाहर शाह जहान क्रमिय अजमेर क्रुद्धकर ॥
लै दल दुल्लहखान धकिय चित्तौर ढहावन ।
चन्द्रभान हित चाह यवन प्रेषित इत आवन ॥
दाराशिकोह प्रेरित सुदल जान रान हितठान जब ।
सुल्तान सिंह जुवराजकों लर पठाय ढिग साह तब ॥ १ ॥
साहजहांके सुतन लरत जब राजसिंह लखि ।
लैभल दल बल लार देश मिस मार साह दखि ॥
रचि सनेह अवरंग काल लखि दहुन जाल कर ।
रूपनगर रट्ठोर स्वसा ताकी महीप बर ॥
अवरंग मान यह क्रत असह उपालंभ अति चंड दिय ।
नृप राजसिंह उत्तर निरख कारण चुप अवरंग किय ॥ २ ॥

बग्गड़ देश बखेरजेर समसेर जोरकर ।
देवदुर्ग भय देर देर दल साह सदुत्तर ॥
दृढ़सर राजसमुद्र रान किन्नो निज कारण ।
ताको उच्छव तुमुल हुवो बिध बिध मनु हारन ॥
अवरंग कोप व्रजतें उठन नाथ उदय गिरि रक्खलिय ।
दिल्लीश रचित जिजिया दुसहमान रानदल मुक्कलिय ॥ ३ ॥
जिजिया दल जशवन्त पुत्त पच्छन प्रति पच्छिय ।
अग्गरूप अवरंग लैन राना धर लच्छिय ॥
कर प्रकोप कूपार निखिल मेवार निमज्जन ।
अखिल छत्रि इसलाम लरे निज निज मत लज्जन ॥
परलोक गमन राजर नृपत कहि सुभाव संतत कथा ।
दिल्लीश घोर आहव दलन ज्वलन फैल फुल्लिय जथा ॥ ४ ॥
कुल रठोर कबंध वंश बिकमपुर बिक्कह ।
अखिल सार इतिहास जहां जैसो जुर जिक्कह ॥
कृष्णवंश गढ कृष्ण ख्यात जैसी कह दिन्नी ।
रीवां नगर बघेल निखिल तारीख सुलिन्नी ॥
सज्जन नृपाल आशय समुझ सासन फतमल रानतें ।
कविराज दास श्यामल कियो पूरन खंड प्रमानतें ॥ ५ ॥

महाराणा राजसिंह—अव्वल.

आठवां प्रकरण समाप्त.

नवां प्रकरण.

महाराणा जयसिंह.

इन महाराणाका जन्म विक्रमी १७१० पौष कृष्ण ११ [हिज्री १०६४ ता० २५ मुहर्रम = ई० १६५३ ता० १५ डिसेम्बर] को और राज्याभिषेक विक्रमी १७३७ कार्तिक शुक्ल १० [हिज्री १०९१ ता० ८ शव्वाल = ई० १६८० ता० ३ नोवेम्बर] को हुआ था.

जब ओड़ा ग्राममें महाराणा राजसिंहका देहान्त हुआ, उस वक्त कुंवर जयसिंह कुरज (जिसको राजसमुद्रकी प्रशस्तिमें कडंज लिखा है) गांवके मोर्चेपर बादशाही फ़ौजको हटानेकी कोशिशमें थे, जो कि उदयपुरसे २५ कोस ईशान कोणमें उत्तरकी तरफ़ झुकता हुआ है. वहां पन्द्रह दिन गुज़रने पर सोलहवें रोज़ गद्दीनशीनीका दस्तूर किया, और सुना कि तहव्वुरख़ां फ़ौज लेकर देसूरीकी तरफ़ आया है; तब अपने भाई भीमसिंहको फ़ौज समेत उधर भेजा; देसूरीके जागीरदार सोलंखी विक्रमादित्य उससे आमिले, और तहव्वुरख़ांको घाटेपर न चढ़ने दिया; आठ दिन बाद वह मारवाड़की तरफ़ चलागया. महाराणा जयसिंह घाटेके नीचे घाणेराव तक आगये थे, और दिलेरख़ां मारवाड़की तरफ़ पहाड़ोंमें था, महाराणाके हुक्मसे रावत् रत्नसिंह चूंडावत कृष्णावतने फ़ौज समेत गोगूंदेका घाटा रोका; यह सुनकर दिलेरख़ांने रातके वक्त दूसरी राहसे वापस जानेका इरादा किया, रावत् रत्नसिंहने घाटियोंमें जाकर कुछ लड़ाई की, परन्तु दिलेरख़ां वापस चलागया.

राजसमुद्रकी प्रशस्तिमें लिखा है कि मेवाड़के सर्दारोंने उसे जान बूझकर जानेदिया. दिलेरख़ांके ४०० आदमी मारेगये. इन्हीं दिनोंमें आलमगीरके शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरको राजपूतोंने बहकाकर बाग़ी बनाया, जिसका बयान इस तरहपर है:-

जब महाराणा राजसिंह व उनके मुसाहिब और मारवाड़के राठौड़ोंने सलाह की, कि हम बादशाहको बहादुरीसे नहीं दबा सक्के, और जो बादशाह अजमेरमें सुस्त बैठा रहे, तो भी अपना ही नुक़्सान है; इसलिये कुछ भेदोपाय (तद्बीर) करना चाहिये. पहिले तो राव केसरीसिंह चहुवान, रावत् रत्नसिंह चूंडावत कृष्णावत, राठौड़ दुर्गदास और सोनंग वग़ैरह बड़े शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मसे मेल करनेकी फ़िक्रमें लगे; उस वक़्त शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़म देबारीके बाहर उदयसागरकी पालके पास ठहरा हुआ था; राजपूतोंके वकीलोंके आने जानेका चर्चा अजमेरमें पहुंचा. तब मुअ़ज़्ज़मकी मा नव्वाब बाईने अपने बेटेको लिखा, कि तुम मक्कार राजपूतोंके जालमें हर्गिज़ मत आना, वर्ना बर्बाद हो जाओगे. शाहज़ादह फ़िक्रमें था, लेकिन् अपनी माकी नसीहतसे मज्बूत होगया, और राजपूत वकीलोंको अपने पास न आने दिया. दुर्गदास और राव केसरीसिंह बड़े चालाक थे, मुअ़ज़्ज़मसे ना उम्मेद होकर सोजत जैतारणकी तरफ़ गये, और शाहज़ादह अक्बरको अपना मददगार बनाना चाहा. जब वकीलों व राजपूतोंका आना जाना शुरू हुआ, तो मुअ़ज़्ज़मने एक ख़त अपने भाई अक्बरको लिखा, कि तुम इन राजपूतोंके बहकानेमें न आना, और इसी मत्लबकी एक अर्ज़ी बादशाहकी ख़िद्मतमें भेजी, कि मेरे नौजवान भाई अक्बरको राजपूत लोग बहकाकर अपना मददगार बनाना चाहते हैं. आलमगीरको अक्बरकी तरफ़से इत्मीनान था. मुअ़ज़्ज़मको एक फ़र्मान लिख भेजा- जिसमें कुरआनकी एक आयत लिखी हुई थी, कि (هذا بهتان عظیم हाज़ा बुहतानुन् अ़ज़ीम.) अर्थ "यह बड़ा झूठ है" और यह भी लिखा कि ख़ुदा हमेशह तुम्हें सीधे रास्तेपर क़ायम रक्खे, और बदख़्वाह लोगोंकी बातोंसे बचावे.

इस काग़ज़का मत्लब यह था, कि अक्बरको तुम झूठी तुहमत लगाते हो; (क्योंकि राजपूतोंने पहिले मुअ़ज़्ज़मसे साज़िश करनी चाही थी, जिसको उसकी माने रोका.) यह सब बातें बादशाहके कानतक पहुंच चुकी थीं. इसलिये बादशाहने जाना, कि यह अपनी बात अक्बरकी तरफ़ टालता है. ग़रज़ मुअ़ज़्ज़मके लिखनेका कुछ असर न हुआ, और अक्बर, दुर्गदास राठौड़की चिकनी चुपड़ी बातोंमें आगया; इसके पास एक बड़ी बादशाही जंगी फ़ौज थी. और उसने फ़ौजके सब सर्दार व

अफ्सरोंको इनआम, इक्राम, और ख़िताब देकर राज़ी करलिया. तहव्वुरख़ांको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब देकर अमीरुल्उमरा बनाया; और जो लोग शाहज़ादहसे बर्ख़िलाफ़ थे, उन्हें कैद किया.

विक्रमी १७३७ माघ कृष्ण १२ [हि० १०९१ ता० २६ ज़िल्हिज = ई० १६८१ ता० १७ जैन्युअरी] को वकाये निगारोंकी अर्ज़ियोंसे आलमगीरने अक्बरका सारा हाल सुना, इस अचानक और भयानक फ़सादके उठने व अपने प्यारे बेटेके बाग़ी होनेसे बादशाहके दिलपर रंज और ख़ौफ़ छागया; क्योंकि तीस हज़ार सवार राठौड़ और कई हज़ार सीसोदिये व बादशाही नौकर मिलाकर ७०००० फ़ौजसे ज़ियादह उसके पास होगई थी. अक्बरने तख़्तनशीन होकर ख़ुत्बा और सिक्का अपने नामका जारी करदिया; क़ाज़ी ख़ूबुल्ला और मुहम्मद आक़िल व शैख़ तय्यब, अमरोहेके मीर गुलाम मुहम्मद, चारों आदमियोंने इस कामके करनेको मज़्हबी फ़त्वा दिया. आलमगीरने अपने प्यारे बेटेका, मुक़ाबलेके लिये आना सुनकर बहरामन्दख़ां तोपख़ानहके दारोग़ाको बुलाकर हुक्म दिया, कि लश्करके चारों तरफ़ तोपख़ानहके मोर्चे जमादो.

ख़फ़ीख़ां लिखता है, कि उस वक्त बादशाहके पास क़रीबन् आठ सौ सवारोंकी फ़ौज होगी, घाटोंकी हिफ़ाज़तके लिये आदमी तईनात किये, और महलोंके पासकी घाटियोंपर भी मोर्चे जमादिये. हाफ़िज़ मुहम्मद अमीनख़ां अहमदाबादके सूबहदार और दूसरे सूबेदारोंके नाम फ़र्मान भेजेगये, कि अपने अपने इलाक़ेका बन्दोबस्त रक्खें. विक्रमी माघ शुक्ल १ [हि० ता० २९ ज़िल्हिज = ई० ता० २० जैन्युअरी] को बादशाहने शिकारके लिये सवारी की, लौटते वक्त तमाम मोर्चोंको मुलाहज़ह किया; और वज़ीर असदख़ांको हुक्म हुआ, कि हमेशह मोर्चोंकी निगरानी रक्खे. मआसिरेआलमगीरीमें ख़फ़ीख़ांके बर्ख़िलाफ़ बादशाहके पास दस हज़ार सवार मौजूद होना लिखा है. हमारे विचारसे गिर्दनवाहके थानोंपरके आदमी एकट्ठे होगये होंगे.

शाहज़ादह अक्बरके वकीलोंको शजाअतख़ां और बादशाह कुलीख़ांके वकीलों समेत बीटलीके क़िलेपर क़ैद किया. शिहाबुद्दीनख़ांको बादशाहने पहिलेसे ही राजपूतोंको सज़ा देनेके लिये सिरोहीकी तरफ़ भेजा था, शाहज़ादह अक्बरने उसे भी अपनेमें मिलानेके लिये मीरख़ांको भेजकर बुलवाया; लेकिन् वह नहीं आया, क्योंकि उसने सोचा होगा, कि शाहज़ादह अक्बर आसानीसे नहीं जीत सक्ता, इस सबबसे कि– अव्वल तो बादशाहका सामना, दूसरे तीनों शाहज़ादे मौजूद हैं, उनकी

लड़ाई. यह सोचने बाद मीरख़ांको भी समझाकर अपने साथ लिया, और दो दिनमें अजमेर पहुंचा, जिसके एवज़ ख़िलअत वग़ैरह इज़्ज़त मिली. उस वक़ हामिदख़ां भी बादशाहके पास आया, जब कि बादशाहको एक एक आदमी फ़िरिश्ता सा मालूम होता था. बादशाह दिलसे बड़ा मज़्बूत था, हरदम शाहज़ादहके लिये यही कहता, कि बहादुरने अच्छा मौक़ा पाया है; अब जल्दी क्यों नहीं आता?

असदख़ां और मुहम्मद अमीनख़ां गिर्दनवाहकी गिर्दावरी और संभाल रखते थे. हिम्मतख़ां बीमार होजानेसे अजमेरकी हिफ़ाज़तके लिये रक्खागया. शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़म उदयपुरके पास उदयसागर तालाबसे तीन दिनमें ८० कोस ज़मीन तैकरके विक्रमी १७३७ माघ शुक्ल ६ [हि० १०९२ ता० ४ मुहर्रम = ई० १६८१ ता० २५ जैन्युअरी] को अजमेर पहुंचा. ख़फ़ीख़ांने लिखा है, कि बादशाहको मुअ़ज़्ज़मकी तरफ़से भी अन्देशा होगया था, इसलिये हुक्म दिया, कि तोपख़ानहका मुंह मुअ़ज़्ज़मके लश्करकी तरफ़ फेरदो. शाहज़ादहको भी कहला दिया कि नेकनियतीसे आया है, तो अपने दोनों बेटोंको लेकर अकेला चलाआवे. मुअ़ज़्ज़म ख़ैरख़्वाह ही था, मगर अपने बेटे मुइज़्ज़ुद्दीन और अ़ज़ीमुश्शानके हाथोंपर रूमाल लपेटकर बापकी ख़िझतमें हाज़िर होगया. ख़फ़ीख़ां शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मके साथ दस हज़ार सवार लिखता है, और मुस्तइदख़ां मआसिरेआलमगीरीमें एक हज़ार सवार होना बताता है, लेकिन् हमारी रायमें मआसिरेआलमगीरीका लिखना ठीक मालूम होता है, क्योंकि तीन दिनमें अस्सी कोस दस हज़ार सवार नहीं पहुंच सक्के. अगर कोई कहे, कि जैसे एक हज़ार सवार गये, वैसे ही दस हज़ार सवार गये, तो यह जवाब है- कि अव्वल तो दस हज़ार घोड़े एकसे नहीं होसक्के, कि तीन दिन तक बराबर एकसा धावा करें; दूसरे एक हज़ार सवार मांडल वग़ैरह थानोंसे बदलते हुए भी पहुंच सक्के हैं, और दस हज़ारका इस तरह पहुंचना आसान नहीं; तीसरे उदयसागरसे दस हज़ार सवार शाहज़ादहके साथ गये हों, तो भी थकते थकाते अजमेर पहुंचने तक उनमेंसे एक हज़ार सवार पहुंचे होंगे. शिहाबुद्दीनख़ां गिर्दावरने बादशाहके पास ख़बर भेजी, कि अक्बरकी फ़ौज कुड़कीमें ठहरी हुई है, इसके सुन्तेही आलमगीरने अपने बख़्शियोंको हुक्म दिया, कि फ़ौज तय्यार हो; उस वक़ हरावल, गिर्दावर और अस्ल फ़ौज सब सोलह हज़ार सवार थे. बादशाहको फिर मुख़्बिरोंने ख़बर दी, कि शाहज़ादह अक्बर लड़ाईके लिये आगे बढ़ा है, लेकिन् उसकी फ़ौजके सर्दार भागते जाते हैं.

विक्रमी माघ शुक्ल ७ [हि० ता० ५ मुहर्रम = ई० ता० २६ जैन्युअरी] को कमालुद्दीनख़ां वग़ैरह सर्दार बादशाही फ़ौजमें आमिले. इसी दिन बादशाही

फ़ौज आगे बढ़ी, और देवराई गांवमें ठहरी; उधरसे शाहज़ादह अक्बरकी फ़ौज भी सरकती आती थी, बादशाही फ़ौज वहीं ठहरी रही. इसी दिन डेढ़ पहर रात गये बादशाह इशा (रात) की नमाज़ पढ़कर शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़म समेत बैठे थे, उस वक्त अ़र्ज़ हुई, कि शाहज़ादह अक्बरकी फ़ौजसे तहव्वुरख़ां हुजूरकी ख़िद्मतमें हाज़िर हुआ है, हुक्म दिया, कि उसे हथियार बगैर यहां हाज़िर किया जावे. तहव्वुरख़ांने हथियार खोलनेसे इन्कार किया, यह सुन्ते ही आलमगीरने तलवार मियानसे निकाली, और झुंभलाकर कहा, कि "उस नालायक़को हथियार समेत आने दो." शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मने अर्दलीके लोगोंको इशारा कर दिया, कि उसे आते ही मार डालना. लुत्फ़ुल्लाने हुक्मके मुवाफ़िक़ तहव्वुरख़ांसे कहा; वह घबरा कर वापस जाने लगा, और डेरोंकी रस्सीमें पैर उलझनेसे गिरा; गिरते ही गुर्ज़बर्दारोंने चारों तरफ़से आकर टुकड़े टुकड़े कर डाला. यह ख़बर शाहज़ादह अक्बरके लश्करमें पहुंची, जिससे फ़ौज डरकर बिखरी. विक्रमी माघ शुक्ल ८ [हि० ता० ६ मुहर्रम = ई० ता० २८ जैन्युअरी] को शाहज़ादह अक्बर, जो फ़ौज समेत बादशाही फ़ौजसे डेढ़ कोसपर ठहरा हुआ था, औरत बच्चोंको वहीं छोड़कर भाग गया.

ख़फ़ीख़ांने मुन्तख़बुल्लुबाबमें लिखा है, कि बादशाहने चालाकीसे एक जअ़्ली फ़र्मान शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरके नाम इस ढंगसे लिख भेजा, जो राजपूतोंके हाथ लग गया, उसमें यह लिखा था- कि "ऐ मेरे प्यारे शाहज़ादह तू मेरी हिदायत के मुवाफ़िक़ इन नालायक़ राजपूतोंको खूब धोखा देकर लाया है, लेकिन् अब इनको अपनी हरावलमें करना चाहिये, जो दोनों तरफ़से क़त्ल किये जावें." इस फ़र्मानके देखनेसे राजपूतोंको शक् पैदा होगया, और वे शाहज़ादहका साथ छोड़कर चलदिये. हमारे क़ियाससे भी आलमगीरने ऐसा किया हो, तो तअ़ज्जुब नहीं, क्योंकि वह चालाक और फ़रेबी था. शाहज़ादहके भाग जानेकी ख़बर पाकर फ़र्राशख़ानहके दारोग़ा मुहम्मद अ़लीख़ांने उसके कुल कारख़ानह व सामानपर क़ब्ज़ा करलिया, और दर्बारख़ां नाज़िर, शाहज़ादह अक्बरके बेटे नीकोसियर व मुहम्मद असग़र और सफ़िय्यतुन्निसा व ज़किय्यतुन्निसा और नजीबतुन्निसा लड़कियां और सलीमहबानू बेगम वगैरहको बादशाहके पास लेआया. शिहाबुद्दीनख़ां, जो शाहज़ादहका पीछा करनेको गया था, उसके सलाहकारोंको मारकर लौट आया. बादशाहने अक्बरका पीछा करनेके लिये शाहज़ादह शाहआलम, क़िलीचख़ां, ख़ानेजमां, नागौरके राव इन्द्रसिंह, आंबेरके महाराजा रामसिंह और राजा सुजानसिंह वगैरहको भेजा; शाहज़ादह शाहआलम बहादुरको पचास

हज़ार अशर्फ़ी, उसके दूसरे बेटे मुइज़्ज़ुद्दीनको दो लाख रुपया, अज़ीमुद्दीनको तीन हज़ार अशर्फ़ी, और दूसरे साथियोंको पचास हज़ार अशर्फ़ी देकर विदा किया.

विक्रमी माघ शुक्ल ९ [हिज्री ता० ७ मुहर्रम = ई० ता० २९ जैन्युअरी] को बादशाह वापस अजमेर आये, और विक्रमी माघ शुक्ल ११ [हिज्री ता० ९ मुहर्रम = ई० ता० ३१ जैन्युअरी] को सुना, कि राजपूतोंने थानेदारको मारकर मांडलगढ़का क़िला लेलिया. शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरके सलाहकार, जो बादशाही दर्बारमें क़ैद होकर आये, उन्हें नीचे लिखे मुवाफ़िक़ सज़ा मिली :-

क़ाज़ी ख़ूबुल्ला, मुहम्मद आक़िल, शैख़ तय्यब, और मीर गुलाम मुहम्मद अमरोहे वालेको, जिन्होंने कि बादशाहपर चढ़ाई करनेका मज़्हबी हुक्म दिया था, बीटलीगढ़के क़िलेमें भेजदिया; इनके सिवाय औरोंको भी क़ैद वग़ैरहकी सज़ा हुई, और आलमगीरकी बड़ी शाहज़ादी ज़ेबुन्निसा बेगमकी लिखावटें मुहम्मद अक्बरके नामपर ज़ाहिर होनेसे उसका सारा माल अस्बाब छीनने बाद चार लाख रुपये सालाना, जो मिलता था, ज़ब्त करके उसको सलीम गढ़में भेजदिया.

विक्रमी माघ शुक्ल १५ [हिज्री ता० १३ मुहर्रम = ई० ता० ४ फ़ेब्रुअरी] को बादशाहसे अर्ज़ हुआ, कि शाहज़ादह मुहम्मद अक्बर तो सांचोर पहुंचगया, और शाहज़ादह मुअज़्ज़म उसका पीछा करता हुआ जालोरको गया है. फिर उसी दिन ख़बर मिली, कि महाराणा जयसिंहके प्रधान साह दयालदासने शाहज़ादह आज़मकी फ़ौजपर रातके वक्त छापा मारना चाहा. शाहज़ादहने यह ख़बर मिलने पर फ़ौरन् दिलावरख़ांको उसके मुक़ाबलेके लिये भेजा, और दयालदास भी लड़नेको तय्यार होगया, बहुतसे आदमी मारेगये; आख़िर दयालदास अपनी औरत को मारकर चलदिया, और उसका सब सामान बादशाही मुलाज़िमोंके हाथ आया क़िलीचख़ां शाहज़ादह मुअज़्ज़मसे बग़ैर पूछे बादशाहकी ख़िद्मतमें चलाआया; इसलिये उसकी ड्योढ़ी बन्द कीगई.

इन्हीं दिनोंमें शाहज़ादह आज़मने महाराणा जयसिंहके पास महाराणा कर्णसिंहके पोते और ग़रीबदासके बेटे महाराज श्यामसिंहको मेल करादेनेके मन्शासे भेजा. श्यामसिंह, बादशाही मुलाज़िम, जो दिलेरख़ांकी फ़ौजमें था, महाराणासे आमिला, और अर्ज़ की, कि दिलेरख़ांकी मारिफ़त सुलहका पैग़ाम भेजा जावे, तो यक़ीन है कि सुलह हो जायगी; क्योंकि शाहज़ादह अक्बरके बखेड़े और बर्सातके आजानेसे इस वक्त बादशाह भी मुलाइम है. महाराणाके दिलपर श्यामसिंहके कहनेका असर होगया; इसलिये कि यह भी तक्लीफ़की हालतोंमें थे; इस तौरपर दोनों

तरफ़से लड़ाई बन्द हुई.

महाराणा जयसिंहने अपने मुसाहिब कोठारियाके रावत् रुक्माङ्गद, सलूंबर व पारसौलीके चहुवान राव केसरीसिंह, बावलके रावत् घासीराम शक्तावत वग़ैरह को शाहज़ादह मुहम्मद आज़म, दिलेरख़ां, हसनअ़लीख़ां वग़ैरहकी सलाहके मुवाफ़िक़ अजमेरमें बादशाहके पास भेजा. इन्होंने वहां पहुंचकर सुलहके बारेमें बातचीत की. बादशाहको भी सुलह मंजूर थी, उसने एक फ़र्मान भेजा; जिसका तर्जमा यह है :-

आ़लमगीरके फ़र्मानका तर्जमा.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम.

ब फ़र्मान आ़लीशान,
मुहयुद्दीन मुहम्मद
औरंगज़ेब बहादुर,
आ़लमगीर, बादशाह
ग़ाज़ी.

निशान आ़लीशान,
बादशाहज़ादह,
मुहम्मद मुअ़ज़्ज़म.

जो अ़र्ज़ी कि राव केसरीसिंह, रुक्माङ्गद और घासीरामके हाथ भेजी थी, बुज़ुर्ग दर्गाहमें पहुंची; उससे ताबेदारी, ख़िद्मतगारी और नेकनियती और मज़्बूत इक़ारके इरादे मालूम हुए. जो वह वफ़ादार ख़ान्दानके सर्दार निहायत ख़ैरख़्वाही

نشان شاهزادۀ محمد معظم شاه عالم از طرف شهنشاه عالمگیر
بنام راناجے سنگه *

بسم الله الرحمن الرحيم *

به فرمان عالي شان
ابوالمظفر محي الدين
محمد اورنگ زيب
بهادر عالمگير بادشاه
* غازي *

نشان عالی شان
بادشاهزادۀ شاه عالم
* محمد معظم *

زبدۀ دولت خواهان عقيدت کيش - خلاصۀ مخلصان خير انديش - نتيجۀ دودمان وفا خوئي - نخبۀ خاندان رضا جوئی - سلالۀ فدويت منشان -
مورد عنايات بيکران بادشاهی - ومهبط تفقدات بے پايان حضرت ظل (الهی) راناجے سنگه -

ओर सफ़ाई ज़ाहिर करके बड़े हुक्मोंके मुवाफ़िक़ कार्रवाई क़ुबूल करेंगे, तो हम भी उस ख़्यालके साथ, जो उस ख़ान्दानके मर्ज़ी ढूंढनेवालेकी बाबत हमारे दिलमें है, और उसके क़ुसूरोंकी मुआफ़ीकी तरफ़ इरादह पैदा करता है, निहायत मिह्रबानीसे फ़र्मान मए पंजे मुबारकके निशानके, और मन्सब व टीका इनायत होनेकी दर्ख़्वास्त करेंगे.

और उस उम्दा ख़ैरख़्वाहकी दूसरी अ़र्ज़ोंपर भी ख़्याल किया जावेगा. जिस वक़्त् वह नेक इरादहवाला ख़ैरख़्वाह शाहज़ादहकी ख़िद्मतमें हाज़िर होकर सलामके दस्तूर अदा करेगा, जो हज़रत शाहजहांकी शाहज़ादगीके दिनोंमें गोगूंदा मक़ामपर ज़ाहिर हुए थे, तब उस मिह्रबानियोंकी लायक़के साथ वही इनायत बरती जायगी, जो पहिले राणा अमरसिंहके साथ कीगई थी. उस ख़ैरख़्वाहके लिये उसकी अ़र्ज़के मुवाफ़िक़ तसल्ली और इत्मीनानकी नज़रसे फ़र्मान आ़लीशान भिजवाया गया. ता० १४ सफ़र सन् २४ जुलूस. हिज्री १०९२ ता० १४ सफ़र [वि० १७३७ फाल्गुन शुक्ल १५ = ई० १६८१ ता० ५ मार्च.]

مستمال بافضال روزافزون عالی متعالی شاهي بوده معلوم نمایند - عرضه داشتی که مصحوب تهور شعاران راوکیسری سنگه و رکهمنگد وگهاسي رام ارسال داشته بودند - بجناب عالمیان مآب رسید - اطاعت وانقیاد وخدمتگاري وخلوص عبودیت ورسوخ عهد وپیمان موکد بوضوح انجامید - چون آن نتیجهٔ دودمان وفاخوئی اظهار کمال عقیدت وخلوص ارادت نموده - انچه بفرمائیم بتقدیم برسانند وازروے اخلاص در اتمام وانصرام آن کار کوشش نمایند - از امر عالی متعالی تجاوز ننمایند لهذا ما هم ازروے عنایتے که باآن نخبهٔ خاندان رضاجوئی داریم درباب استعفاے تقصیرات آن مورد عنایات بیکران بادشاهی وعطاے فرمان والاشان مزین بنقش پنجهٔ مبارک مقدّس معلےٰ ومرحمت منصب وتیکه وعنایات بادشاهی به آن سزاوار الطاف نمایان چنانکه سابق شده ودیگر ملتمسات معروضهٔ آن زبدهٔ دولتخواهان عقیدت کیش التماس نمائیم - وهرگاه آن خلاصهٔ مخلصان خیراندیش بملازمت عالی شرف اندوز گردند - وآداب - که بخدمت حضرت فردوس آشیانی درایام بادشاهزادگي درگوگنده بتقدیم رسانده بود - ومراعات که فردوس آشیانی نسبت برانا امرسنگه فرموده بودند - شامل حال آن زبدهٔ دولتخواهان عقیدت کیش باشد - فرمان عالیشان را بموجب التماس آنمورد مراحم بیکران بجهت مزید اطمینان آنسزاوار الطاف نمایان درخواست نموده‌ایم * چهاردهم شهر صفر ختم بالخیر والظفر - سنه بیست وچهار جلوس والا زینت نگارش یافت *

(مطابق سنه ۱۰۹۲ هجري)

यह सब लोग अजमेरसे उदयपुर आये, इन दिनों शाहज़ादह अक्बर राठौड़ोंके साथ मारवाड़में फिरता था; शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़म भी उसकी गिरिफ्तारी व मुक़ाबलेको दिलसे टालता था. शाहज़ादह आज़मने एक निशान महाराणा जयसिंहको विक्रमी १७३८ वैशाख कृष्ण १० [हि० १०९२ ता० २४ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १६८१ ता० १४ एप्रिल] को इस मत्लबसे लिख भेजा, कि शाहज़ादह अक्बर गुजरातसे पहाड़ोंमें होकर देसूरीके घाटेकी तरफ़ आता है, उसे पकड़ लेना, और मौक़ा हो, तो मारडालना; लेकिन् अक्बरके साथ महाराणाके सर्दार रावत् रत्नसिंह चूंडावत कृष्णावत और मारवाड़के राठौड़ दुर्गदास, सोनंग मए जमइयतके थे. अक्बरका इरादह महाराणासे मिलनेका था, लेकिन् महाराणाने सर्दारोंको कहला भेजा, कि बाग़ी शाहज़ादहको किसी हीलेसे मत लाओ, और ज़ाबितेके साथ दक्षिणकी तरफ़ पहुंचा दो, क्योंकि सुलहका पैग़ाम होरहा था.

ऊपर लिखे हुए सर्दारोंने शाहज़ादह अक्बरसे कहा, कि आप बादशाह होगये, इस लिये मुलाक़ात नहीं होसक्ती; तब जमइयत समेत भोमटके पहाड़ोंमें होते हुए डूंगरपुर पहुंचे, वहांके रावल जशवन्तसिंहने बड़े शिष्टाचारसे मिहमानी करके महाराणाकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ सर्वन व राज पीपलांके रास्तेसे शाहज़ादहको दक्षिण पहुंचाया. वहां राजा शिवाके बेटे शम्भा घोंसलाने बड़ी ख़ातिरके साथ राहेड़ीके क़िलेमें शाहज़ादहको ठहराया.

महाराणा जयसिंहने शाहज़ादह आज़मके पास सुलहका संदेसा भेजा था, आलमगीर बादशाहको शम्भा और अक्बरके एक होजानेसे बड़ा डर पैदा हुआ, ख़ासकर इसी सबबसे बादशाहने जल्द सुलह मंजूर करली. शाहज़ादह आज़म चित्तौड़के क़िलेमें ठहरा हुआ था, राजसमुद्र तालाबके उत्तरी किनारेपर मोरचणा और पशूंधकी चौरस ज़मीनमें मुलाक़ात करना क़रार पाया. तब एक ख़रीता दिलेरख़ांने महाराणाके नाम लिख भेजा, जिसका तर्जमा यह है:-

दिलेरख़ांके ख़तका तर्जमा. (फ़ार्सी नक्ल नोटमें देखो.)

ब़ाद मामूली अल्क़ाबके,

शौक़ और दोस्तीकी बातें ज़ाहिर करनेके बाद लिखा जाता है, कि इन

दिनोंमें बहादुर ज़ात गोपीनाथ परिहार और सांवलदास पंचोलीके निशान करने पर बहादुरी की निशानी चन्द्रसेन झाला (१), जैत झाला (२), सांवलदास राठौड़ (३), रावत केसरीसिंह शक्तावत (४), केसरीसिंह चहुवान (५), और उन दोनों (६) पहिले ज़िक्र किये हुओंको फ़त्हमन्द दर्गाहमें भेजा था. जहां तक हो सका, उस बलन्द ख़ान्दानकी भलाई और बिहतरीके वास्ते अ़र्ज़ किया गया. ज़िक्र किये हुए लोगोंने इक़ार कीहुई बातें और बुज़ुर्ग ख़िद्मतमें उस दोस्तके आनेका वक़ लिख दिया.

उस लिखावटकी नक़्ल उन लोगोंने आपके पास भेजदी है, जिससे पूरी कैफ़ियत मालूम होगी. इन इक़ारोंके मुवाफ़िक़ ख़ास दस्तख़तसे एक मिहर्बानीका निशान और अमीरीके दरजे हसनअ़लीख़ां बहादुर आ़लमगीरशाहीकी लिखावटें पीछेसे पहुंचेंगी. मुलाक़ातके लिये सिर्फ़ चारही दिन बाक़ी हैं, इस दोस्तके काग़ज़

---

(१) सादड़ीका. (२) देलवाड़ेका. (३) बदनोरका. (४) बान्सीका. (५) सलूंबर व पारसोलीका.

(६) परिहार पासवान (१), सांवलदास पंचोली अहल्कार (२).

نقل خط نواب دليرخان همراهی اعظم شاه بنام راناجے سنگه
سنه ۲٦ جلوس عالمگيري *

—»«—

امارت پناه - شوکت وحشمت دستگاه - ابهت وشهامت
منزلت - رفيع الشان سمو المکان مشمول عنايات

والاي اعلى حضرت خاقان خديوگيهان باشند - بعد از شرح مراسم شوق واختصاص مشهود گردانيده مے آيد - که درينولا که بعد نشان نمودن عزّت وتهور دستگاهان گوپي ناتهه پرهار وسانولداس پنچولي - رفعت وشجاعت دستگاهين چندرسين جهاله وجيت جهاله وسانولداس راتهوز وراوت کيسري سنگه سکتاوت وراوکيسري سنگه چوهان - ونام بردهارا بجناب نصرت انتساب

पहुंचनेपर, जो जल्दीमें लिखा गया है, वह बलन्द खान्दान कूच ब कूच रवानह हों, एक घड़ीकी देर न करें; जिस तरहपर कि क़रार पाया है, बलन्द ख़िद्मतमें हाज़िर होकर खैर और खूबीके साथ रुख़्सत हों. इस दोस्तको, जो आपके देखनेके लिये शौक़मन्द है, आपके मिलनेसे खुशी हासिल होगी; ज़ियादह कैफ़ियत चन्द्रसेन वगैरहके लिखनेसे मालूम होगी. ज़ियादह शौक़के सिवा क्या लिखा जावे. खुशीके दिन हमेशह रहें.

———◇✻◇———

महाराणा जयसिंहको बादशाह आलमगीरकी दग़ाबाज़ीका डर था, इस लिये दिलेरख़ांसे बात चीत करके तसल्ली की, कि मेरे जाहिल राजपूत बिल्कुल नहीं मानते, और बादशाही लश्करसे दग़ा होना बतलाकर मुझे भी शाहज़ादहसे मिलनेमें रोकते हैं; इसलिये इनकी भी तसल्ली होना ज़ुरूर है. महाराज श्यामसिंहने दिलेरख़ांसे कहा, कि आपके दोनों बेटे महाराणाके लश्करमें भेज दिये जावें, और जब महाराणा मुलाक़ात करके वापस जावेंगे, उन दोनोंको लौटा देंगे; दिलेरख़ांने खुशीसे दोनों बेटोंको थोड़े आदमियों समेत महाराज श्यामसिंहके साथ भेज दिया.

महाराणा जयसिंह दिलेरख़ांके दोनों बेटोंको कई सर्दारोंकी निगरानीमें रख-कर विक्रमी १७३८ आषाढ़ शुक्ल ९ [हि० १०९२ ता० ७ जमादियुस्सानी = ई० १६८१ ता० २५ जून] को शाहज़ादह आज़मकी मुलाक़ातके लिये पहाड़ोंसे निकले,

---

عالي فرستاده بودند- درانچه خيروخوبي آن رفيع منزلت بوده بعرض عالي رسانيده مقرر نموده- مومی اليهم که از قرار مقدمات وسامت رسيدن ايشان بشرف ملازمت فيض منقبت عالي نوشته دادند- نقل آن مشار اليهم ابلاغ داشته اند- کيفيت ازان معلوم خواهد گرديد- ونشان مرحمت عنوان مزيّن بدستخط عالي مطابق قرارداد حال ونوشتجات بنده درگاه وامارت پناه حسن عليخان بهادر عالمگيرشاهي متعاقب ميرسد- چون درسامت همين چارروز باقيست بمجرد رسيدن اين رقيمة الوداد که عجالتاً نوشته شد- آن علوشان کوچ بکوچ درنزديکي بيايند- وتوقف يکساعت نکنند- که به نحوے که قرار يافته بملازمت عالی مستفيض شده بمبارکي وخوبي رخصت گردند- دوستان را که مشتاق ايشان اَم بديدن آن شوکت منزلت خورسندي حاصل گردد- ديگر کيفيت از نوشتهٔ چندرسين وغيره معلوم خواهد شد* زياده بجز شوق چه نگارد- ايام شادماني دايماباد فقط *

—✻(✻)✻—

उनके साथ सादड़ीका झाला राज चन्द्रसेन, बेदलाका राव सबलसिंह चहुवान, बीझोलियांका पंवार राव वैरीशाल, महाराणा जगत्सिंहके पोते अरिसिंहका बेटा भगवन्तसिंह, चहुवान केसरीसिंह, बड़ापल्लीवाल ब्राह्मण पुरोहित ग़रीबदास, मेड़तिया राठौड़ ठाकुर सांवलदास वग़ैरह सर्दार थे; और राजसमुद्रकी प्रशस्तिके अनुसार सात हज़ार सवार, दस हज़ार पैदल; और कर्नेल् टॉड व दूसरी राजपूतानहकी ख्यातिकी पोथियोंमें सोलह हज़ार सवार, चालीस हज़ार पैदल, हज़ारों भील, मीने, मेर वग़ैरह हथियारबन्द पहाड़ियोंपर और हज़ारों रअ़य्यतके लोग भी जल्सा देखनेके लिये होना लिखा है. आस पासकी पहाड़ियोंपर एक लाख आदमियोंकी भीड़ भाड़ थी. महाराणा शाही लश्करके नज़्दीक पहुंचे, उस वक़ शाहज़ादहकी तरफ़से दिलेरखां और हसनअ़लीखां व रतलामका राजा भीमसिंह राठौड़, हाड़ा किशोरसिंह पेश्वाई करके डेरोंमें ले गये. मुस्तइदखां मआसिरे आलमगीरीमें लिखता है - कि "महाराणा को बाईं तरफ़ बिठाकर खिल्अ़त, जड़ाऊ तलवार, जम्धर, फूलकटारा, घोड़ा, हाथी, सोने, चांदीके सामान समेत, और उनके सर्दारोंको सौ खिल्अ़त, चालीस घोड़े, दस जड़ाऊ जम्धर देकर रुख़्सत दी."

राजसमुद्रकी प्रशस्तिके २३ सर्गके ५३ वें श्लोकमें लिखा है, कि शाहज़ादह आज़मने एक मस्त हाथी, अठाईस घोड़े, सोने चांदीके सामान समेत, और ५० अ़दद ज़ेवर देकर विदा किया.

हमको पुराने दफ़्तरमेंसे शाहज़ादह आज़मके निशानका हिन्दी खुलासह उसी वक़का लिखाहुआ मिला है, जिसकी नक़ यहां लिखीजाती है :-

काग़ज़की नक़्ल.

"निशान १ एक शाहज़ादह आज़मजीका महाराणा जयसिंहजीके नाम विक्रमी १७३८ श्रावण कृष्ण ६ गांव घाटीके मक़ाम आया- तीनों परगनोंकी बाबत तुमने लिखा, दिलेरखां और हसनअ़लीखांकी मारिफ़त अ़र्ज़ हुज़ूरमें गुज़रानी; जिसपर यह बात क़ुबूल हुई, कि तुम तालाबपर आय हाज़िर होना; दाम ४० लाख छूट हुआ, ३ तीन किरोड़ दाममेंसे. असवार हज़ारकी चाकरी मुआ़फ़, दीवार (क़िला) नहीं बनवाना, और बादशाही चोर राठौड़ वग़ैरह अपनी हद्दमें नहीं राखना."

इस काग़ज़का यह मत्लब होगा, कि गांव घाटीमें महाराणाके डेरे थे, मुलाक़ातकी तारीख़से १२ दिन बाद फ़र्मान आनेकी तारीख़ लिखी है; शायद रियासत के दफ़्तरमें यह काग़ज़ उस दिन सौंपा गया होगा, और तीन किरोड़ दाम, जो लिखे-

गये हैं, फ़ौज ख़र्च, या नज़ानह होगा; उसमें से चालीस लाख दाम मुआफ़ किये हैं. दीवार नहीं बनानेसे, चित्तौड़ वग़ैरह क़िलोंकी मरम्मत नहीं करानेका मत्लब होगा; हज़ार सवारकी नौकरी, जो बादशाह जहांगीरके वक़्से दक्षिणकी तरफ़ मुक़र्रर हुई थी, शायद वह मुआफ़ हुई हो; राठौड़ोंपर बादशाही नाराज़गी थी, इस से उनको न रखनेका हुक्म है.

अफ़्सोस है, कि अस्ल फ़र्मान नहीं मिला, वर्ना सारा मत्लब खुल जाता. मालूम होता है, कि मांडलगढ़, मांडल, पुर और बदनौरके पर्गने दिलाने और जिज़्या मुआफ़ करवानेका वादा शाहज़ादहने किया होगा; जो गद्दीनशीनीके वक़्त बादशाही फ़र्मान आया है, उसका खुलासह आगे लिखेंगे, जिससे ज़ाहिर होगा. इस लड़ाईके बारेमें कर्नेल टॉडने लिखा है, कि सूरसिंह सीसोदिया और नरहर भट्ट बादशाहकी ख़िद्मतमें गये, और नीचे लिखीहुई दर्ख़्वास्त पेश की :-

अर्ज़ी.

हुज़ूरकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ रानाने हम फ़िद्वियोंको हुज़ूरकी ख़िद्मतमें वह तहरीर पेश करनेके लिये, जो नीचे दर्ज है, भेजा है. उम्मेद है, कि हुज़ूर इन दर्ख़्वास्तोंको मंज़ूर फ़र्मावेंगे; और जो कुछ इसके बाद पद्मसिंह दर्ख़्वास्त करेगा, उसको भी क़ुबूल होनेका दरजा बख़्शा जावे-

१ चित्तौड़ मए तमाम उन ज़िलोंके, जो पहिले उसकी आबादीके वक़्में उसके शामिल थे, वापस करें.

२ मन्दिर और हिन्दुओंके इबादतख़ानोंकी जगह, जो मस्जिदें बनाई गई हैं, आगेको इस तरह न बनवाई जावें.

३ मदद, जो राना बादशाहतको देता आया है, हमेशह देता रहेगा, उसमें कोई नई बात, या नया हुक्म न बढ़ाया जावे.

राजा जशवन्तके बेटे या रिश्तहदार, जब अपने कामोंके लायक़ हों, उनका मुल्क वापस दिया जावे; और छोटी छोटी दर्ख़्वास्तोंको अदब रोकता है.

आपकी बादशाहत और नसीबका सितारा हमेशह चमकता रहे (१).

अर्ज़ी
फ़िद्वियान सूरसिंह व
नरहर भट्ट.

यह अर्ज़ी कर्नेल टॉडकी किताबसे नक़्ल कीगई है, परन्तु कर्नेल टॉडने श्यामसिंहको, जो बीकानेर वाला लिखा है, वह ग़लत है; क्योंकि मआसिरेआलमगीरी और आलमगीरनामह वग़ैरह फ़ार्सी तवारीख़ोंमें भी दूसरी लड़ाइयोंके मौक़ेपर श्यामसिंहको सीसोदिया लिखा है; और राजसमुद्रकी प्रशस्तिमें, जो कि उसी समयकी खुदी हुई है, २३ वें सर्गके ३२ वें श्लोकमें यह दर्ज है, कि कर्णसिंह के दूसरे पुत्र ग़रीबदास थे, जिनके बेटे श्यामसिंहने बादशाही लश्करसे आकर सुलहकी बात चीत की.

शाहज़ादहकी मुलाक़ात होनेके बाद महाराणा, दिलेरख़ांके डेरेमें मिलनेको गये; वहां दिलेरख़ांने महाराणासे कहा, कि आपके राजपूत जाहिल और बेवकूफ़ हैं, कि मेरे दो लड़कोंको बे एतिबारीके सबब आपके एवज़ अपने पास रक्खा; अगर आपसे दग़ा कीजाती, और मेरे बेटे मारे जाते, तो हम लोगोंकी ज़िन्दगी बादशाही बन्दगीके लिये ही है; लेकिन् आपके मारे जानेसे, जो आपकी रियासतको नुक्सान पहुंचता, उसका हर्गिज़ बदला न होता; इस लिये बादशाही ख़ान्दान और नौकरोंकी ज़बानका एतिबार रखना चाहिये. महाराणाने जवाब दिया, कि वैकुंठवासी महाराणा राजसिंहजी काकाजीके (२) याने आप के भरोसे छोड़ गये हैं. इस तरह दोस्तानह बातें होनेके बाद दिलेरख़ांने अपनी तरफ़से रईसानह दस्तूरके मुवाफ़िक़ महाराणाको कपड़ेके ९ थान, जड़ाऊ तलवार, ढाल, बर्छी, ९ घोड़े, एक हाथी; और महाराणाके कुंवरके लिये कपड़ेके तीन थान, जड़ाऊ खंजर, जड़ाऊ उर्बसी, जड़ाऊ बाजूबन्द, और दो घोड़े देकर विदा किया.

---

(१) कर्नेल टॉड इस दर्ख़्वास्तको महाराणा राजसिंहकी तरफ़से बादशाह आलमगीरके पास अजमेरमें पेश करना लिखते हैं, शायद शाहज़ादहकी सलाहके मूजिब अजमेरमें पेश हुई हो, तो तअज्जुब नहीं; लेकिन् हमारे क़ियाससे महाराणा राजसिंहके वक़्तमें सुलहका पैग़ाम भेजना बिल्कुल ग़लत है; यह दर्ख़्वास्त महाराणा जयसिंहके समयमें ही गई होगी.

(२) काकाजी, यानी बापका भाई, इससे यह मुराद है, कि दिलेरख़ांको महाराणा राजसिंह का दोस्त क़रार देकर यह शब्द कहा.

महाराणाके कुंवरके लिये मश्रासिरेश्रालमगीरीमें ऊपर लिखी चीज़ोंका देना लिखा है, लेकिन् जब कभी महाराणा और शाहज़ादोंकी मुलाक़ात हुई है, उस वक्त महाराणाके पाटवी महाराजकुमार साथ नहीं गये, और यह दिलेरखांकी मुलाक़ात उसी वक्त हुई मालूम होती है, जब महाराणा शाहज़ादहसे मुलाक़ात करके लौटे, तो शाहज़ादहकी मुलाक़ातमें कुंवरका कुछ भी ज़िक्र नहीं है; इससे मालूम होता है, कि दोस्तीके तरीक़ेसे दिलेरखांने महाराजकुमारके वास्ते ऊपर लिखी हुई चीज़ें भेजदी होंगी.

महाराणा उदयपुर आये, और शाहज़ादह आज़म अपने बेटे बेदारबख़्त और दिलेरखां वगैरह समेत रवानह होकर विक्रमी १७३८ श्रावण शुक्ल ६ [हि० १०९२ ता० ४ रजब = ई० १६८१ ता० २३ जुलाई] को बादशाह आलमगीरकी ख़िद्मत में अजमेर हाज़िर हुआ.

हमको एक अस्ल ख़ानगी काग़ज़ उसी सुलहके वक़्का मिला है, जिस की हरएक क़लमपर शाहज़ादह मुहम्मद आज़मकी सहीहका स्वाद ص ख़ास दस्तख़ती मौजूद है. इस काग़ज़के देखनेसे सब लोग समझलेंगे, कि उक्त शाहज़ादहने बादशाहत मिलनेकी उम्मेदपर महाराणासे कैसे कैसे इक़ार किये थे; उस अस्ल काग़ज़का तर्जमा नीचे लिखाजाता है:-

याद्दाश्त.

जिस वक्त ख़ैरख़्वाहोंके मन्शाकी मुवाफ़िक़ शाहज़ादह आलीजाह आज़मशाह तख़्तपर जुलूस फ़र्मावें, तो राना, नीचे लिखी हुई इनायतोंका उम्मेदवार है-

स्वाद-

(१) जो पर्गने पांच हज़ारी ज़ात और पांच हज़ार सवारकी बाबत बरतरफ़ होगये हैं, फिर बहाल किये जावें; तफ़्सील- फूलिया, मांडलगढ़, बदनौर, बसार, ग़यासपुर, परधां, डूंगरपुर.

स्वाद-

(२) जिस वक्त हज़रत ख़ुदाके साये मुबारक तख़्तपर जुलूस करें, तो सिवाय पांच हज़ारी ज़ात पांच हज़ार सवारके, हज़ारी ज़ात और हज़ार सवार दो अस्पा सिह अस्पाकी तरक़ी फ़ौरन् दी जावे.

स्वाद-

(३) सिन्सिनी (जाटोंकी एक गढ़ीका नाम है) फ़त्ह होनेमें कोशिश करनेकी बाबत हज़ारी ज़ातकी तरक़ी हो.

स्वाद्–

(४) तीन किरोड़ दाम इनआमकी बाबत हमको कहीं जागीर नहीं मिली, उनमेंसे फ़र्मानके मुवाफ़िक़ दो किरोड़ दाम दक्षिणमें बतलाये गये हैं, और एक किरोड़ दामके एवज़में पर्गनह सिरोही इनायत हो.

स्वाद्–

(५) ख़ुदाकी मिहर्बानियोंसे उम्मेद कीजाती है, कि जिस वक्त हज़रत शाहज़ादह, ख़ैरख़्वाहोंकी ख़्वाहिशके मुवाफ़िक़ तख़्तपर जुलूस करें, और इस ताबे-दारसे उम्दह ख़ैरख़्वाही ज़ाहिर हो, तो सिवाय ऊपर ज़िक्र किये हुए मन्सबके नीचे लिखेहुए पर्गने इनायत किये जावें; तफ़्सील– ईडर, खेड़ी, मांडल, जहाज़पुर, मसऊदा इलाक़ह मन्दसौर, ख़ैराबाद, टौंक, सावर, टोड़ा, मसऊदा, मालपुरा, वग़ैरह.

स्वाद्–

(६) यह ताबेदार उम्मेदवार है, कि सात हज़ारी ज़ात व सात हज़ार सवारका फ़र्मान इनायत हो.

स्वाद्–

(७) इक़ारी फ़र्मान मए पंजेके निशानके ख़ास मुहर और दस्तख़तसे इस मज़्मूनका इनायत हो, कि जिज़्यह तमाम हिन्दुस्तानसे मुआफ़ न हो, तो हमारे मुल्कसे न लिया जावे; दक्षिणमें हमारी तरफ़से हज़ार सवारकी नौकरी मौकूफ़ कीजावे.

स्वाद्

(८) चचा और भाई और इज़्ज़तदार नौकर, जो यहांसे रंजीदह होकर हुज़ूरमें जायें, तो उनपर कुछ तवज्जुह न की जावे.

स्वाद्–

(९) **देवलिया**, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, सिरोही, वग़ैरहके ज़मींदार, जो अपने इलाक़ोंपर मौजूद हैं, हुज़ूरमें हाज़िर होनेपर कुछ दरजा न पावें.

स्वाद्–

(१०) हमारी जमइयत कामको तय्यार है, इसके सिवाय दूसरे राज-पूत और ज़मींदारोंकी जमइयत भी मेरे बुलानेपर आजावे, और उनके लिये मुनासिब अर्ज़ मंजूर कीजावे.

स्वाद—
(११) जो मन्सबदार और ज़मींदार शाहज़ादह आलीजाहके ताबेदार हों, उनके नाम लिखकर मुझे इनायत होवें; उनके सिवाय जो ताबेदारी न करें, मैं उनसे कुबूल कराऊंगा; इस ख़ैरख़्वाहीमें किसी इलाक़ेका नुक़्सान हो, तो मुआ़फ़ फ़र्मावें.

इस फ़ार्सी काग़ज़की एक एक क़लमके ऊपर शाहज़ादहके हाथका " स्वाद ص " लिखा हुआ है, जिससे सहीहका मत्लब है; यानी मंज़ूर किया गया.

ईश्वरकी कुद्रत देखना चाहिये ! कि जिस बादशाहतकी उम्मेदमें एक शाहज़ादह मारा फिरता है, उसीपर दूसरा इरादह रखता है. यह इक़ार ख़ानगीमें महाराणा और शाहज़ादहके हुए थे. उसने अपने बापके पास जानेके बाद इस रियासतकी हिमायतके लिये कोशिश करनेमें कमी न रक्खी होगी, लेकिन् बादशाह आलमगीर पूरा मत्लबी, शक्की और चालाक था, जिसके सामने मुश्किलसे पैंठ होती थी. शाहज़ादह आज़मका इस ख़ानगी इक़ारसे यह मत्लब होगा, कि शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरके बाग़ी होते वक्त बड़ा शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़म अजमेरमें अपने बापके पास पहुंच गया था, जिससे बादशाहकी मिहर्बानी उसपर ज़ियादह हुई. आज़मने विचारा, कि मैं भी अपना मत्लब बनाऊं; क्यों कि आलमगीरके मरने बाद बहादुरशाह बादशाह बननेका सामान कर रहा है.

आज़मने अपने बापसे लड़ाई और सुलहका सारा हाल अ़र्ज़ किया, जिसपर बादशाहने फ़ौज ख़र्चमेंसे एक लाख रुपया छोड़कर महाराणाको चार पर्गने देदिये, और जिज़्यह मुआ़फ़ किया; और हज़ार सवारों की नौकरीके बारेमें कुछ ज़िक्र नहीं है. बादशाहने शाहज़ादह कामबख़्शके बख़्शी मुहम्मद नईमको मस्नद नशीनीका दस्तूर और फ़र्मान देकर उदयपुरकी तरफ़ रवानह किया; उस फ़र्मानका मज़्मून उसी वक्तका लिखा हुआ हमें मिला है, जिसकी नक्ल यह है:—

फ़र्मानके मज़्मूनकी नक्ल.

फ़र्मान एक, राणाजी जयसिंहजी टीले बिराज्या, जब बादशाह औरंगज़ेब जीकी तरफ़से टीला आया— हाथी १, कटारी जड़ाऊ १, घोड़ा आया; और राणाजीका ख़िताब पंज हज़ारी मन्सब, एक किरोड़ बीस लाख दामकी जगह

मुबारकपुर, मांडल, मांडलगढ़, बदनौरके पर्गने इनायत किये; जिसके रुपये साल एकके तो एक लाख देने, दूसरे सालके लाख २ देने; दाम जगह तीनके एक किरोड़ बीस लाख, १ मांडलगढ़, २ पुरमांडल, ३ बदनौर, तीनों महाल तुम्हारेमें ज़ियादह थे, सो सर्कारसे तुमको बख़्शे.

बरस दोमें लाख तीन लेना, जिस पीछे लेना नहीं. सन् २४ जुलूस (१) १२ रजब.

इस फ़र्मानके खुलासहसे जो बातें टपकती हैं, ये हैं:- शाहज़ादह मुहम्मद आज़मने तीन किरोड़ दाम फ़ौज खर्चके लेने ठहराकर चालीस लाख दाम छूट किये, और दो किरोड़ साठ लाख दाम बाक़ी रहे, जिनमेंसे बादशाहने बाक़ी छोड़कर एक किरोड़ बीस लाख दाम लेने रक्खे, और ऊपर लिखेहुए पर्गने इनायत किये; लेकिन् एक हज़ार सवारोंकी नौकरी और जिज़्यहका मुआफ़ करना शाहज़ादहके इक़ार मूजिब फ़र्मानमें नहीं लिखा, जिससे साबित होता है, कि बादशाहको यह दोनों बातें नागुवार थीं; उदयपुरके वकीलोंने शाहज़ादह मुहम्मद आज़मको अपना इक़ार पूरा करने को कहा होगा, तब शाहज़ादहके अर्ज़ करनेपर बादशाहने हज़ार सवारकी नौकरी बहाल रखकर जिज़्यह छोड़नेके लिये इजाज़त देने बाद शाहज़ादहसे निशान लिखवाया होगा, जिसका खुलासह यह है:-

निशान शाहज़ादह आज़मशाहजीका
महाराणाजी श्रीजयसिंहजीके
नाम.

अर्ज़ी तुम्हारी आई, सो पर्गनह तुमको बख़्शा, सो तुमको मालूम रहे. असवार हज़ार एक, चाकरीमें भेजना; और जिज़्यह तुमको छूट है. ता० २४ शहर शअ़्बान.

आलमगीरका फ़र्मान विक्रमी १७३८ श्रावण शुक्ल १४ [हि० १०९१, २४ जुलूस ता० १२ रजब = ई० १६८१ ता० २९ जुलाई] का लिखा, और निशान शाहज़ादह मुहम्मद आज़मका विक्रमी १७३८ प्रथम आश्विन कृष्ण १० [हि० १०९२ ता० २४ शअ़्बान = ई० १६८१ ता० ८ सेप्टेम्बर] का है, इनके खुलासहसे

---

(१) वि० १७३८ श्रावण शुक्ल १४ [हि० १०९१ ता० १२ रजब = ई० १६८१ ता० २९ जुलाई].

समझ सक्ते हैं, कि बादशाह आलमगीरने किस रोब दाबके साथ उदयपुरपर चढ़ाई की थी, और सुलह किस तरह दबकर की; दबनेका सबब हम नहीं लिख सक्ते, ज़ाहिरा मालूम होता है, कि शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरकी बग़ावत और उसके मरहटोंसे मिलनेका दबाव हुआ होगा, क्योंकि ख़ुद आलमगीरने उदयपुरकी सुलहके बाद जल्द दक्षिणकी तरफ़ कूच किया था. इस सुलहका दूसरा सबब यह होगा, कि ढाई वर्ष तक बादशाहने आप आकर लड़ाई की, तोभी राजपूतोंकी ताक़त न घटी, और इस लड़ाईमें ख़र्चके सिवाय कुछ भी फ़ायदह नहीं हुआ.

महाराणा जयसिंह और उनके भाई भीमसिंहका हाल.

महाराणा राजसिंहके बेटोंका ज़िक्र तो हम ऊपर लिख आये हैं, लेकिन् जानना चाहिये कि विक्रमी १७१० [हि० १०६३ = ई० १६५३] में जब महाराणी पुंवारके गर्भसे महाराणा जयसिंहका जन्म हुआ, उसी वक़् महाराणी चहुवानके गर्भसे महाराज भीमसिंह भी जन्मे. इन दोनों कुंवरोंकी बधाई यानी खुशख़बरी देनेवाले लोग महाराणा राजसिंहके पास पहुंचे; महाराणा सो रहे थे, कुंवर जयसिंहके जन्मकी ख़बर देनेवाला महाराणाके पैरोंकी तरफ़, और भीमसिंहकी खुशख़बरी सुनानेवाला सिरानेकी तरफ़ बैठ गया. जब महाराणा उठे, तो पहिले पैरकी तरफ़ नज़र गई; उस आदमीने उठकर अ़र्ज़ की, कि महाराणी पुंवारके गर्भसे महाराज कुमारका जन्म हुआ है; फिर सिरानेकी तरफ़से दूसरेने आकर अ़र्ज़ की, कि महाराणी चहुवानके गर्भसे महाराज कुमारका जन्म पहिले हुआ है. तब महाराणाने फ़र्माया, कि हमको जिसकी पहिले ख़बर मिली, वह बड़ा, और जिसकी पीछे मिली, वह छोटा है.

उस वक़् इस बातपर ज़ियादह विचार नहीं किया गया, क्योंकि इनसे बड़े दो राजकुमार, सुल्तानसिंह और सर्दारसिंह मौजूद थे. महाराज कुमार जयसिंहको बड़ा और भीमसिंहको छोटा समझते रहे. जब सुल्तानसिंह और सर्दारसिंह दोनों बड़े राजकुमार गुज़र गये, तब महाराणाने अपनी ज़बानके लिहाज़से कहा, कि जयसिंह पाटवी रहे, इसपर भीमसिंहने कुछ उज़्र न किया, परन्तु जब महाराणाका देहान्त होगया, और जयसिंह गद्दीपर बैठे, तो वह मौक़ा लड़ाईका था, पर भीमसिंह महाराणाके हुक्मके मुवाफ़िक़ लड़ाई झगड़ोंमें बहादुरी दिखाते रहे. भीमसिंहको अपने बड़प्पनका ख़याल ज़ुरूर था, इस लिये सुलह होनेके बाद वह बादशाह आलमगीरके पास विक्रमी १७३८ भाद्रपद शुक्ल १४ [हि० १०९२ ता० १३ शअ़्बान = ई० १६८१ ता० २९ ऑगस्ट] को अजमेर पहुंचे. बादशाहने राजाका पद और कुछ मन्सब दिया, जो उनके मरनेके वक़् पांच हज़ारी तक पहुंचा था. आलमगीर बड़ा चालाक था, उसने

आपसमें बखेड़ा डालनेका ज़रीआ समझा होगा. उसी दिन भीमसिंहके साथ शाहज़ादह कामबख़्शका बख़्शी मुहम्मद नईम, जो महाराणा जयसिंहकी गद्दी नशीनीका दस्तूर लेकर गया था, बादशाही हुज़ूरमें पहुंचा. महाराणाने उसको ४००० रुपये, और १९ थान कपड़ेके, दो घोड़े और चार ऊंट दिये थे; वे उसने बादशाहको पेश किये; बादशाहने उसीको बख़्श दिये. इन दिनों दक्षिणमें मरहटोंने बड़ा फ़साद मचाया, और अक्बर भी उनके शामिल होगया; इस सबबसे बादशाहने अपना ही जाना ज़रूर समझकर विक्रमी १७३८ आश्विन शुक्ल ७ [हि० १०९२ ता० ५ रमज़ान = ई० १६८१ ता० २० सेप्टेम्बर] को जंगी फ़ौज समेत अजमेरसे चलकर देवराई गांवमें मक़ाम किया, और वहांसे आश्विन शुक्ल ८ [हि० ता० ६ रमज़ान = ई० ता० २१ सेप्टेम्बर] को बड़े शाहज़ादह मुअज़्ज़मके बेटे अज़ीमुश्शानको जुम्दतुल्मुल्क असदख़ां वज़ीरके साथ अजमेरको भेजा, कि वहांका बन्दोबस्त रक्खे; और उनके मातहत एतिक़ादख़ां, कमालुद्दीनख़ां, राजा भीमसिंह राजसिंहोत, कुंवर समेत और महमतख़ां वग़ैरहको ख़िल्अ़त, जवाहिर, घोड़े और हाथी देकर मुक़र्रर किया. इनायतख़ां अजमेरके फ़ौज्दार और सय्यद यूसुफ़ बुख़ारी बीटलीगढ़के क़िलेदारको भी ख़िल्अ़त देकर अजमेर भेजा.

विक्रमी आश्विन शुक्ल ९ [हिज्री ता० ७ रमज़ान = ई० ता० २२ सेप्टेम्बर] को बादशाहने ख़बर पाई, कि प्रथम आश्विन शुक्ल ५ [हिज्री ता० ३ रमज़ान = ई० ता० १८ सेप्टेम्बर] को दिल्लीमें उसकी बहिन जहांआरा बानू बेगम ने इन्तिक़ाल किया.

विक्रमी कार्तिक शुक्ल १४ [हिज्री ता० १२ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २६ नोवेम्बर] को बादशाह बुर्हानपुर पहुंचा. दूसरे ही दिन ख़बर मिली, कि मेड़तेमें तीन हज़ार राठौड़ लड़ाईके लिये तय्यार थे, उनपर एतिक़ादख़ांने हम्ला किया, और दोनों तरफ़के बहादुरोंने बड़ी दिलेरी दिखलाई; ५०० राठौड़ोंके साथ सोनंग (१) और उसका भाई अजबसिंह, सांवलदास, बिहारीदास और

---

(१) जोधपुरके इतिहासमें सोनंगकी बाबत इस तरह लिखा है, कि थोड़ी लड़ाई होने बाद भीमसिंह राजसिंहोतकी मारिफ़त बीच बिचाव होनेपर सोनंग अजमेर जाते वक्त पूंजलोते गांवमें मौतसे मरगया, और उसका भाई अजबसिंह, रामसिंह करणबलुवोत, सबलसिंह खानावत, नाहरख़ां, हरीसिंह महेशदासोत, गोपीनाथ, सादूल, कुशलसिंह, अर्जुन गोपीनाथोत, घासीराम, अनोपसिंह राठौड़, तीन चारणों समेत १४ आदमी एतिबारख़ां (एतिक़ादख़ां) से लड़कर मारे गये.

गोकुलदास वगैरह अच्छी तरह लड़कर मारे गये; बाक़ी सब भाग गये. इस लड़ाईमें सर्दार तरीन् शेर अफ़्गन वगैरह घायल हुए; और बहुतसे सर्दार व सिपाही मारे गये.

विक्रमी १७३८ माघ शुक्ल १२ [हिज्री १०९३ ता० १० सफ़र = ई० १६८२ ता० २० फ़ेब्रुअरी] को बादशाहने सुना, कि पुर, मांडल वगैरह पर्गनों से मारवाड़ी राठौड़ माल अस्बाब लूट लेगये. विक्रमी १७३८ फाल्गुन शुक्ल ३ [हिज्री १०९३ ता० १ रबीउल् अव्वल = ई० १६८२ ता० १३ मार्च] को बुर्हानपुर से बादशाह औरंगाबादकी तरफ़ चला, और विक्रमी चैत्र कृष्ण १० [हिज्री ता० २३ रबीउल् अव्वल = ई० ता० ३ एप्रिल] को वहां पहुंचा.

विक्रमी १७३९ चैत्र कृष्ण ८ [हिज्री १०९४ ता० २२ रबीउल् अव्वल = ई० १६८३ ता० २१ मार्च] को पुर, मांडलके पर्गनहके फ़ौज्दार, कृष्णगढ़के राजा मानसिंह रूपसिंहोतको बादशाहने बदनौरके पर्गनहकी फ़ौज्दारी राजा दलपत बुंदेलेसे उतारकर दी. इससे मालूम होता है, कि ऊपर लिखी हुई हज़ार सवारोंकी नौकरी और जिज़्यहका मुआफ़ होना शाहज़ादह आज़मसे ठहरा था; बादशाहने टालाटूली की; और उक्त शाहज़ादहने जिज़्यह मुआफ़ करके हज़ार सवार तलब किये; इसपर महाराणा जयसिंहने सवारोंके भेजनेमें देर की; जिससे पुर, मांडल, और बदनौरके पर्गने महाराणाके क़ब्ज़ेमें नहीं आये. इन्हीं दिनोंमें शाहज़ादह आज़म का निशान महाराणाके नाम आया, उससे भी यही साबित होता है, कि हज़ार सवार नहीं भेजनेके सबब तीनों पर्गने ख़ालिसेमें मिलालिये गये थे.

शाहज़ादह मुहम्मद आज़मका निशान, जो सूबे दक्षिण औरंगाबादसे आया था, उसका तर्जमा मए फ़ार्सी नक्लके नीचे लिखाजाता है. मालूम होता है, कि उस वक़ बादशाहको फ़ौजी सिपाहियोंकी बहुत ज़ुरूरत थी.

शाहज़ादह आज़मके निशानका तर्जमा.

बाद मामूली अल्क़ाबके,

बादशाही मिहर्बानियोंमें शामिल होकर जाने, कि इन दिनोंमें हुक्म दिया गया है, कि उस उम्दह सर्दारको लिखा जावे, कि हमेशह एक हज़ार सवार उस सर्दारके, दक्षिणमें नौकरी करते रहे हैं- इस ख़यालसे, कि बाज़े पर्गने जिज़्यहके तौरपर उससे लेलिये थे, एक हज़ार सवारकी हाज़िरी मुआफ़ फ़र्मादी गई थी. अब ज़ब्त की- हुई जागीरें मिहर्बानीके साथ वापस इनायत की जाती हैं. लिखी हुई जमइयत पुराने

दस्तूरके मुवाफ़िक़ नौकरीपर हाज़िर रहे. इस वास्ते लिखाजाता है, कि वह तावेदारीका ख़याल रखनेवाला इस बुज़ुर्ग मिहर्बानीकी क़द्र जानकर बड़े शुक्रके साथ एक हज़ार उम्दह सवार अपने किसी रिश्तहदार या एतिबारी नौकरके साथ इस वक़्में, जब कि बुज़ुर्ग फ़तहमन्द लश्कर फ़सादी नालायक़ोंके सज़ा देने और क़त्ल करनेमें उनके बद कामोंके एवज़ मश्ग़ूल है, जहां तक होसके, जल्द भेजे; इस मुआमलेमें बिल्कुल सुस्ती, ग़फ़लत, काहिली, देर रवा न रक्खे; इस कार्रवाईको बड़ी तारीफ़के लायक़ तावेदारी जतलानेका मौक़ा समझे, जिसके एवज़में बड़े फ़ायदे हैं. २४ शअ्बानकी रात, सन् २७ जुलूस आलमगीरी - मुताबिक़ विक्रमी १७४१ द्वितीय श्रावण कृष्ण १० [हिज्री १०९५ ता० २४ शअ्बान = ई० १६८४ ता० ७ ऑगस्ट].

* سمت ۱۷۴۱ نشانِ اعظم شاہ - بنام رانا جے سنگھ

باسمہٖ سبحانہ

پادشاہے

زبدۂ نیکخواہان عقیدت کیش - خلاصۂ ہواخواہان ارادت اندیش - نتیجۂ دودمان وفاخوئی - نخبۂ خاندان رضاجوئی - سلالۂ فدویت منشان عبودیت اطوار - نقاوۂ اخلاصمندان اطاعت شعار - شایستۂ الطاف واحسان بیکران - سزاوار نوازش واعطاف نمایان - مطیع الاسلام راناجے سنگھ - مشمول مواطف بودہ بدانند - کہ درینولا حکم مقدس معلّٰی صادر شد کہ بہ آن زبدۃ الامثال نگارش بزیر گردد کہ ہمیشہ جمعیت یکہزار سوار آن خلاصۃ الاشباہ در دکن خدمت میکرد - نظر بر برگنہائی کہ بعنوان جزیہ ازو گرفتہ بودیم قید بودن یکہزار سوار مذکور را موقوف فرمودہ بودیم - چون محال ماخوذہ بمقتضاے مراحم معلی باز باو مرحمت شدہ - باید جمعیت مرقومہ بدستور قدیم بخدمت مامورہ قیام نماید - لہذا مرقوم میگردد کہ باید آن انقیاد اندیش قدر این عنایت والا شناختہ دراداے شکر این موہبت کبری یکہزار سوار خوش اسپہ بسرکردگی یکے از اقربا یا نوکر معتمد خود درینوقت کہ رایات جاہ وجلال بتادیب وگوشمال وقتل واستیصال مفسدۂ اینطرف کہ من قریب بسزاے اعمال نکوہیدہ وافعال ناپسندیدۂ خویش رسیدہ نیست و نابود مطلق خواہند شد متوجہ است - بسرعت ہرچہ تمامتر وتعجیل ہرچہ شتابتر بحضور ساطع النور مقدس

महाराणा जयसिंह अपनी नाम्वरीके वास्ते एक बड़ा भारी तालाब बनवाना विचारकर मौक़ेकी तालाश करने लगे; और इसी वर्षमें दो तालाबोंकी नींव डाली; एक तो उदयपुरसे उत्तर डेढ़ मीलकी दूरीपर, जिसे 'देवाली' का तालाब कहते हैं, मोतीमहलसे नीमच माताके पहाड़ तक लम्बा बनवाया; और दूसरा उदयपुरसे पांच मील उत्तरको वायु कोणकी तरफ़ झुकता हुआ थूर गांवमें, जिनमेंसे पहिला तो मौजूद है, और दूसरा फूटगया; लेकिन् इन तालाबोंके बनवानेसे महाराणाका दिल खुश नहीं हुआ, क्योंकि इनके पिता महाराणा राजसिंहने बड़ा भारी 'राजसमुद्र' नाम तालाब बनवाया था, और यह उससे भी बड़ा बनवानेका इरादह रखते थे. इसलिये विक्रमी १७४४ [हिज्री १०९८ = ई० १६८७] को ऊपर लिखे दोनों तालाबोंकी प्रतिष्ठा की, और इसी संवत् में उदयपुरसे १८ कोस दक्षिण अग्नि कोणको झुकते हुए 'जयसमुद्र' तालाबकी नींव डाली.

इस तालाबका बन्द दो पहाड़ोंके बीच अग्नि और वायु कोणको झुकता हुआ १२५४ फुट लंबा, १०५ फुट ऊपरसे चौड़ा बांधा गया है, जिसकी पिछली दीवार ९८ फुट ऊंची और उससे भीतरकी दीवार १२ फुट ज़ियादह ऊंची है; दोनों तरफ़की दीवारें और सीढ़ियां बनवाकर पानी रोका गया था; लेकिन् दोनों दीवारोंका बीच, ख़ानगी झगड़ोंके सबब ख़ाली रह गया था, जिसे महाराजाधिराज महाराणा श्रीसज्जनसिंहने लाखों रुपये लगवाकर मिट्टीसे भरवाया, इसका ज़िक्र हम आगे करेंगे. इस तालाबमें छोटे नदी नाले तो बहुत गिरते हैं, लेकिन् बड़ी नदियां गोमती, झामरी, रूपारेल, और बगार जिनको रोककर बन्द बांधा गया था, दूर दूरसे पानी लाकर तालाबको भरती हैं. बन्दकी सीढ़ियोंपर सिफ़ेद पत्थरके हाथी बने हैं, और बन्दके दोनों तरफ़ दो बारहदरी हैं. पूर्वके पहाड़पर तिः मन्ज़िले गुम्बज़दार महल हैं, और महलोंकी ड्योढ़ीके साम्हने बड़ी बारहदरी है. इन सबकी मरम्मत महाराणा सज्जनसिंहने करवाई. इन्हीं महलों के दक्षिणी बाजू बहुतसे मकानोंके खंडहर पड़े हैं, जिन्हें ज़नानह महल बतलाते हैं. इस तालाबका बन्द सिफ़ेद पत्थरका बनाहुआ है; जो राजनगरके पत्थर से दूसरे दरजेका है. इस बन्दके पीछे और पूर्वी पहाड़के नीचे महाराणा जयसिंहने एक शहर बसाकर उसका नाम 'जयनगर' रक्खा था, लेकिन् वह अब नहीं रहा; सिर्फ़ दो महलोंके गुम्बज़ और एक सिफ़ेद पत्थरकी बावड़ी बे मरम्मत पड़ी है. इस तालाबके पानीमें दस गांव- चीबोड़ा, नामला, भटवाड़ा गामड़ी, सेमाल, पाटण, कोटड़ा, घाटी, संगावली और सलाव डूबे हैं; पानी कम होनेपर बाज़े गावोंके खंडहर नज़र आते हैं. जब यह गांव डूब गये, तो किनारेपर आबादी हुई. तालाबसे दक्षिणमें छोटासा गांव सौ घरकी बस्तीका 'वीरपुरा' आबाद है, यह गांव

कुरावड़ रावत रत्नसिंहकी जागीरमें था, जिसके बदलेमें महाराजाधिराज महाराणा श्री सज्जनसिंहने दूसरे गांव देकर उसे खालिसेमें मिलालिया; और पहिले जो इस ज़िले का हाकिम सराड़े गांवकी पालमें रहता था, उसको यहां रखकर सद्र मकाम बनाया.

बन्दके ऊपरसे यह तालाब एक बड़ी नदीकी तरह भराहुआ मालूम होता है, और महलोंसे भी सारा तालाब नहीं दीखता; इसीसे महाराणा जयसिंहने तालाब के भीतर निकले हुए पहाड़पर महल बनवाये थे, जो अबतक मौजूद हैं, जिन्हें लोग रूठी राणीके महल बतलाते हैं. यह बात लोगोंने झूठ मश्हूर करदी है, कि एक महाराणी नाराज़ होगई थी, जिसके लिये यह महल बनवाये गये थे.

कर्नेल टॉडने भी ऐसे क़िस्से सुनकर अपनी किताबमें ज़ियादह दर्ज करदिये हैं. उन महलोंसे कुल तालाबकी सैर अच्छी तरह नज़र आती है; और इसीलिये वे महाराणाने बनवाये मालूम होते हैं. इस तालाबके बीचमें दो पहाड़ भी आगये हैं, जिनमें किसानोंके दो चार घर मवेशी समेत रहते और वहीं खेती बाड़ी करते हैं. जब उन लोगोंको बाहर आनेकी ज़ुरूरत होती है, तो भेला (१) पर बैठकर चले आते हैं.

विक्रमी १७४८ ज्येष्ठ शुक्ल ५ [हिज्री ११०२ ता० ३ रमज़ान = ई० १६९१ ता० २ जून] को 'जयसमुद्र' तालाबकी प्रतिष्ठा हुई, और महाराणा सोनेकी तुला विराजे. इस तालाबके बन्दपर महाराणा जयसिंहने एक बहुत अच्छे खुदवां काम (नक़ाशी) का मन्दिर बनवाना शुरू किया था, लेकिन् वह अधूरा रहगया. इस तालाबमें पूर्वकी पहाड़ियोंको काटकर दो तीन पानीके निकास बनाये गये हैं, वर्षाऋतुके लिये यह बड़ी बहारका मक़ाम है. यह तालाब, जो बड़े पहाड़ों और भीलोंके देशसे दूर, और शहरके पास होता, तो हर एक आदमी आसानीसे देख सक्ता; लेकिन् जिस ज़मानहमें यह बना है, हर एकका जाना बड़ा कठिन था, जिसमें अब पहिलीसी दिक़्क़तें नहीं रहीं, फिर भी तय्यारीके साथ सफ़र करना पड़ता है. इसकी बराबरीका दूसरा तालाब हिन्दुस्तान भरमें नहीं है; बल्कि दुन्यामें भी कुद्रती झीलोंके सिवाय किसी आदमीका बनवाया हुआ न होगा; क्योंकि होता, तो मश्हूर होता. यूरोपिअन मुसाफ़िरोंकी ज़बानी भी यही सुनागया है, कि दुन्यामें आदमीका बनाया हुआ इससे बढ़कर कोई तालाब नहीं है. इस तालाबका हाल उस ज़िलेके जोगी लोग, जो गीत गाने और भीख मांगनेमें बयान करते हैं, इस तरह पर है:-

---

(१) भेला बहुतसी लकड़ियोंको बराबर बांधकर बनाया जाता है, जो नावका काम देता है.

गीतोंका मुख्तसर मत्लब.

"महाराणा जयसिंहके वक्में अलीगढ़का पूर्या चहुवान राजपूत लालसिंहका बेटा गुलालसिंह जीविकाकी तलाशमें चित्तौड़ आया, महाराणाने मगराके ज़िलेमें १ बम्बोरा, २ सियाड़, ३ मांडकला, ४ बोरी, चार गांव उसको जागीरमें दिये.

कुछ दिनों बाद महाराणाने नाहर मगरेमें शिकारके वक्त एक सूअरका पीछा किया, परन्तु वह केवड़ेके दरख़्तोंमेंसे निकलकर चांद घाटीमें नज़रसे छिपगया, थोड़े दिन बाद बीरपुराके पटैल डांगी अमराने उसी सूअरकी ख़बर दर्बारमें मालूम कराई, महाराणा जयसिंह अपने सर्दारों समेत बीरपुरे आये, और सर्दारोंने पहाड़ोंके ढालमें सूअरको मारकर महाराणाके नज़ किया. इस शिकारकी गोट (खुशीका खाना) खाते वक्त रत्न और लाल पंचोलियोंने अर्ज़ किया, कि छप्पन और मेवलकी आबादीके वास्ते ढेबरका बांधना मुनासिब है, इसपर महाराणाने कहा, कि यह बात नहीं हो सक्ती, क्योंकि वह कई बार टूट चुका है; तब गुलालसिंह चहुवानने राय दी, कि बरवाड़ाकी खानसे मज़बूत पत्थर और लुहारियाकी खानसे लोहा निकाला जावे, और कारीगर मज्दूर मालवेसे बुलाये जावें. यह बात मन्जूर होकर काम जारी हुआ, और प्रमार राजपूत संभालपर मुक़र्रर हुए.

इस जगह गोमती नदी बहती थी, जिसमें जांबेरी वगैरह भी रूपारेल समेत मिलगई, और इस नाकेका नाम ढेबर था, यह बात इस तरह मश्हूर है– कि एक ढेबा पटैल नाम कोई शख़्स ग़बनकी इल्लतमें मारा गया, जिससे इस जगहका नाम ढेबर हुआ. गुलालसिंह चहुवानने प्रमार राजपूतोंके (जो तालाबके कामकी संभालपर मुक़र्रर थे) ग़बनकी बाबत शिकायत की, महाराणाने प्रमारोंको मौकूफ़ करके गुलालसिंहको मुक़र्रर करदिया. इसने मज़्दूरोंसे एक एक रुपया मांगा, इस सबबसे वह लोग फ़र्यादी हुए, और गुलालसिंह जिला-वतन (देश बाहर) कियागया. वह, डूंगरपुरके रावलके पास चला गया, जो उसका बहनोई था, कुछ दिनों पीछे कदूनीके प्रमारोंके हाथसे मुक़ाबलेमें मारा गया."

विक्रमी १७४२ पोष शुक्ल १५ [हि० १०९७ ता० १४ सफ़र = ई० १६८६ ता० ९ जैन्युअरी] में हातिम नाम एक शख़्सको, जो पहिले उदयपुरके महाराणाका नौकर था, बादशाहने भीमके टोडेका फ़ौज्दार बनाकर वहां भेजा; हमें यह पता नहीं लगा, कि हातिम कौन था, और क्यों बादशाहके पास चला गया. यह अहवाल मआसिरेआलमगीरीसे नक्ल किया गया है.

शाहज़ादह आज़म और दिलेरखांके इक़ार मूजिब पुर मांडल, बदनौर वगैरह पर्गने क़ब्ज़ेमें नहीं आये, और न हज़ार सवारकी नौकरी मुआफ़ हुई; महाराणाने भी सवारोंको नौकरीपर नहीं भेजा; और बादशाहने, जो जिज़्यह

छोड़ा, और सुलह की, वह शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरकी बग़ावत, और दक्षिण के फ़सादोंकी बदौलत थी. दूसरे राजपूतोंका फ़साद, जिसमें कि ढाई वर्ष तक खुद बादशाह लड़ा, तिसपर भी नहीं मिटा; और बिना मिटाये छोड़कर जाना भी ठीक न था; इससे और सब शर्तें मन्जूर करके एक हज़ार सवार नौकरीमें भेज देना मुहम्मद आज़मसे लिखवा दिया; पर महाराणाने इसपर अमल नहीं किया, जिससे तीनों पर्गनोंपर क़ब्ज़ा नहीं हुआ. क़ब्ज़ा न होनेके सबब एक किरोड़ बीस लाख दाम यानी तीन लाख रुपये फ़ौज ख़र्चके महाराणाने नहीं दिये; और इसको एक अर्सा भी गुज़र गया था. बादशाह आलमगीर दक्षिणकी लड़ाइयों में ऐसे फंसे, कि निकलना कठिन हुआ. महाराणा जयसिंहने विचारा, कि एक हज़ार सवारोंकी जमइयत दक्षिणमें भेजी जाय, तो २५ रु० माहवारी फ़ी सवारके हिसाबसे एक हज़ार सवारके तीन लाख रुपये होते हैं, और पुर मांडल, बदनौर के पर्गनोंके क़ब्ज़ेमें न आनेसे भी रियासतका नुक्सान है; इसलिये जिज़्यहके एक लाख रुपये दे देने ठीक हैं, लेकिन् तीनों पर्गने अपने क़ब्ज़ेमें करलेना चाहिये, जिज़्यह आगे पीछे भी मुआफ़ हो सक्ता है, वर्ना कुल हिन्दुस्तानके शामिल हम भी हैं. इस तरह सोच विचारकर लिख भेजा, उसके जवाबमें विक्रमी १७४७ आषाढ़ शुक्ल ११ [हिज्री ११०१ ता० ९ शव्वाल = ई० १६९० ता० १८ जुलाई] को एक फ़र्मान आया, जिसका तर्जमा मए नक़्ल यह है :-

फ़र्मानका तर्जमा.

पाक और बुज़ुर्ग खुदाके नामसे शुरू किया जाता है-

मुहरकी नक़्ल-

अबुज़्ज़फ़र, मुहयुद्दीन, मुहम्मद औरंगज़ेब बहादुर, आलमगीर बादशाह ग़ाज़ी.

अमीर तीमूरका बेटा.
मीरां शाहका बेटा.
मुहम्मद शाहका बेटा.
अबूसईद शाहका बेटा.
उमर शेख़ शाहका बेटा.
बाबर बादशाहका बेटा.
हुमायूं बादशाहका बेटा.
अक्बर बादशाहका बेटा.
जहांगीर बादशाहका बेटा.
शाहजहां बादशाहका बेटा.
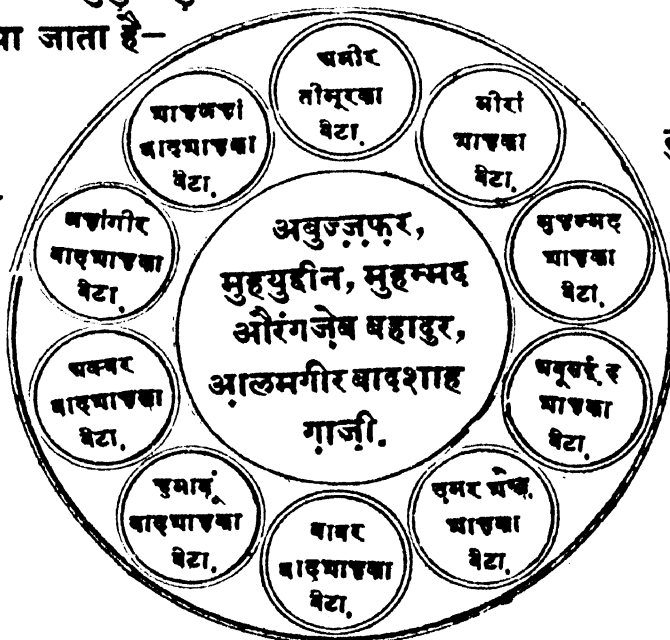
तुग़्राकी नक़्ल-

फ़र्मान, अबुज़्ज़फ़र, मुहयुद्दीन, मुहम्मद औरंगज़ेब बहादुर, आलमगीर बादशाह ग़ाज़ी.

बाद मामूली अल्क़ाबके-

बादशाही मिहर्बानियोंसे इज़्ज़तदार और खुश होकर मालूम करे, कि जो अ़र्ज़ी इन दिनोंमें बलन्द दर्गाहमें भेजी थी, फ़ायदह बख़्शनेवाली, पाक, साफ़ निगाहमें गुज़री; मालूम हुआ, कि वह उ़म्दह राजा इक़ार करता है, कि अगर बुज़ुर्ग दर्गाहसे पर्गने पुर और बदनौर उसको बख़्श दिये जावें, तो इन दोनों जागीरोंके एवज़ हर बरस लाख रुपया नक़्द जिज़्यहकी बाबत चार क़िस्तमें सूबह अजमेरके सर्कारी ख़ज़ानहमें दाख़िल करता रहे; और माल ज़ामिनी पेश करे.

इस वास्ते निहायत बुज़ुर्गी और पर्वरिशके रास्तहसे उस उ़म्दह सर्दारको एक हज़ार सवारकी तरक़्क़ी और अस्सी लाख दाम इन्आ़म इनायत करनेसे, जिसके अस्ल और तरक़्क़ीके पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवार, और हज़ार सवार दो अस्पा, और दो किरोड़ दाम इन्आ़म होते हैं, सर्बलन्दी बख़्शकर दोनों जागीरें तरक़्क़ीकी
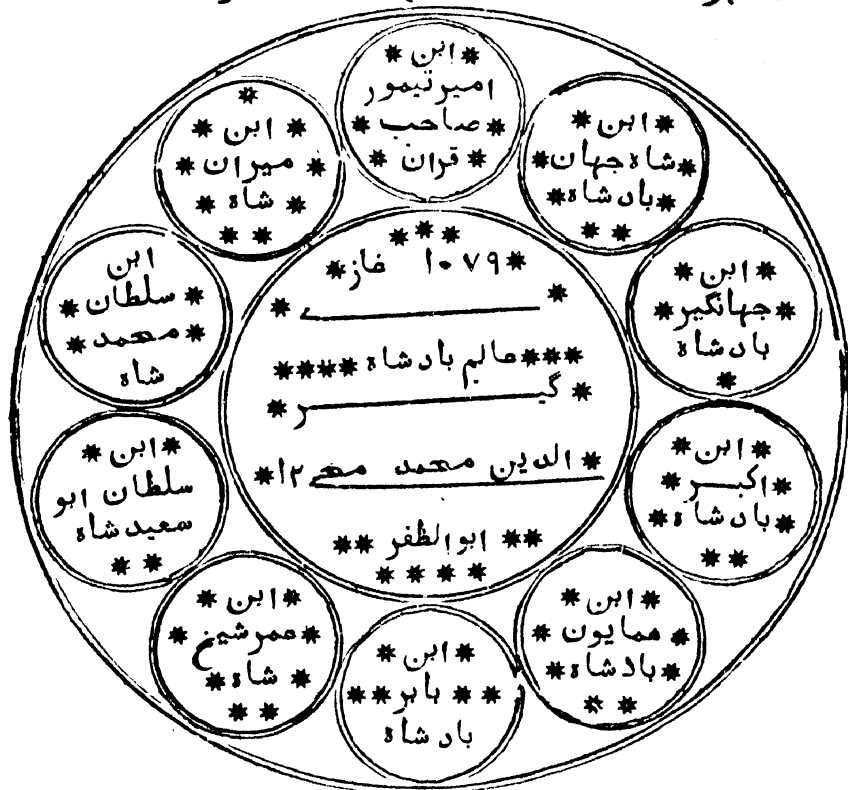
عمدة راجهاے دولتخواه - زبدهٔ متهوران بلا اشتباه - خلاصة الاماثل والاقران - نقاوة النظائر والاخوان - مورد مراحم بیکران - سزاوار عنایت واحسان - مطیع الاسلام راناجے سنگه بنوازش بادشاهی مفتخر و مباهی بوده بداند - که عرضه داشتے که درین ایام فیروزی انجام بعتبهٔ سپهر احتشام ارسال داشته بود از نظر انور اطهر فیض گستر گذشت - ودر پیشگاه خلافت وجهانبانی بظهور پیوست که آن زبدة الاماثل تعهد نموده که اگر از درگاه ارفع فضل وکرم پرگنهٔ پور و بدنور باو مرحمت شود - عوض این دو محل مرسال

तन्खाह और इनआममें दीजाती हैं; खिल्अत और हाथी इनायत किये जानेसे इज़्ज़त बख़्शी जाती है. मुनासिब है, कि हमारी बड़ी उम्दह मिहर्बानियोंका शुक्र अदा करके अपने इक़ारके मुवाफ़िक़ माल ज़ामिनी अजमेरके दीवानके पास पेश करे, और हर बरस जिज़्यहका एक लाख रुपया मुक़र्रर कीहुई क़िस्तोंसे सूबेके सर्कारी ख़ज़ानहमें अदा करता रहे; इस मुआमलेमें सख़्त ताकीद जाने; हमारी बुज़ुर्ग ज़बर्दस्त दर्गाहमें ख़ैरख़्वाही और ताबेदारीको हमारी मिहर्बानियोंकी ज़ियादती और अपनी उम्मेदोंकी बिहतरीका सबब समझे. ९ शव्वाल सन् ३४ जुलूस को लिखा गया. [हिज्री ११०१ = ता० ९ शव्वाल वि० १७४७ आषाढ़ शुक्ल ११ = ई० १६९० ता० १८ जुलाई].

मारिफ़त उम्दह वज़ीर, बलन्द ख़ान्दान, जुम्दतुलमुल्क मदारुल महाम, असदख़ांकी.

असदख़ां
बन्दए बादशाह
आलमगीर
ग़ाज़ी.

مبلغ یک لک روپیه بابت جزیه بچهار قسط مائد خزانهٔ عامرهٔ صوبهٔ دار الخیر اجمیر کند - ومالضامن بدهد - بنابرین از راه ذرّه پروری و بنده نوازی آنعمدة الاشباه را بموهبت اضافهٔ هزار سوار و عنایت مشتاد لک دام انعام که اصل و اضافه پنجهزاری ذات و پنجهزار سوار هزار سوار دو اسپه و دوکرور دام انعام باشد سربلندی بخشیده - دو محل مسطور در تنخواه اضافه و انعام مرحمت فرموده - بعنایت خلعت و فیل بین الاقران سرمایهٔ امتیاز عطا فرمودیم - باید که شکر و سپاس مواطف و مراحم فراوان اشرف اعلی بتقدیم رسانیده مطابق تعهد خویش مالضامن در اجمیر بدیوان آنجا داده هرسال مبلغ یک لک روپیه جزیه باقساط مقرّره بخزانهٔ عامرهٔ صوبهٔ مذکوره واصل مینموده باشد - درین باب قدغن شدید دانند - و رسوخ ارادت و بندگی را در بارگاه عظمت و جلال ثمر مزید احسان و افضال و سود و بهبود حال و مآل خویشتن شناسد * نهم شوال سال سی و چهارم از جلوس والا نگارش یافت *

به رسالهٔ سیادت و نقابت پناه - شرافت و نجابت دستگاه - عمدهٔ وزراء رفیع الشان - زبدهٔ امراء بلند مکان - ناظم مناظم ملک و مال - فاتح مناهج دولت و اقبال - خان شجاعت نشان - عمدة الملک مدار المهام اسد خان *

हमको इस बातका पुरूतह पता नहीं मिला- कि बदनौरका पर्गनह कब मेवाड़से निकलकर बादशाही क़ब्ज़ेमें चला गया, जो महाराणा उदयसिंह और प्रतापसिंहके वक़्से जयमल्ल मेड़तिया और उसकी औलादकी जागीरमें आज तक बहाल है; और इस पर्गनेके छूटनेके बाद ठाकुर सांवलदास मेड़तिया वगैरह बदनौरके जागीरदारोंको उसके एवज़ मेवाड़से कौनसा पर्गनह मिला; अलबत्ता लड़ाइयोंके वक़् मेवाड़के कुल जागीरदार पहाड़ोंमें रहते थे, लेकिन् सुलह होनेके बाद फिर अपनी जागीरें पाते रहे. अलबत्ता पट्टेके गांव ज़ुरूर बदलते रहते थे, तो भी बाज़ बड़े बड़े जागीरदारोंके ख़ास ठिकाने कम बदले गये हैं. कई लोगोंकी ज़बानी सुना, कि विजयपुरका पर्गनह बदनौर वालोंकी जागीरमें रहा है, जो कि अब शक्तावतोंकी जागीरमें है.

अब हम वह हाल लिखते हैं, जिससे महाराणा जयसिंह व उनके वलीअह्द अमरसिंहके बीचमें नाइत्तिफ़ाक़ी हुई-

महाराणा जयसिंहने अमरसिंहका विवाह, और शादियोंके सिवाय, जयसलमेरके रावल सबलसिंहकी पोतीके साथ करवाया था. कुंवर अमरसिंह भटियानीपर ज़ियादह मिहर्बान थे; कुंवर कुंवरपदेके महलमें रहते थे, जहां कि अब शंभूनिवास बना हुआ है; और उन्होंने भटियानीजीके लिये अपने महलोंके पास ही जुदा महल बनवाया; जहां कि अब रूपनगरकी व महासहानीकी हवेली है. यह बात महाराणाको नागुवार हुई; क्योंकि क़दीमसे दस्तूर है- कि राजकुमारका ज़नानह भी महाराणाके ज़नानख़ानहमें ही रहता है, जुदा नहीं रह सक्ता. महाराणाने मना किया, लेकिन् कुंवरने कुछ ख़याल नहीं किया. भटियानीजीको शराबका शौक़ था, इससे कुंवर अमरसिंहको भी उसकी चाट लगाई; उस वक़् सीसोदियोंमें शराब पीनेकी क़सम और मनाई थी, यहां तक कि एक बात ऐसे मश्हूर है जिसको बाज़े लोग कहते हैं- कि यह बात महाराणा राहपकी है, बाज़े इनसे भी पहिलेकी बतलाते हैं, वह इस तरहपर है:-

" किसी गोहिलोत वंशके राजाको सस्त बीमारी हुई, तब हकीमोंने कहा, कि शराब पीनेसे यह बीमारी दूर हो सक्ती है; महाराजाने साफ़ इन्कार किया. (१) हकीमोंने किसी दवाके शामिल शराब मिलाकर पिलादी. जब महाराजा तन्दुरुस्त हुए, तो तबीबोंने अर्ज़ की, कि देखिये, शराब भी क्या उम्दह चीज़ है!

---

(१) इस पर्हेज़का यह सबब था, कि कुल राजपूत क़ौमें शुरूसे शराब नहीं पीती थीं, और पिछले ज़मानहमें वाम मार्ग फैल जानेसे राजपूतानहके राजपूत लोगोंने इसका पीना शुरू किया, लेकिन् चित्तौड़के राजाओंने वही दस्तूर जारी रक्खा, जो वंश परंपरासे चला आता था.

जिससे आपकी बीमारी जाती रही. महाराजाने हैरतमें आकर कहा- कि मैंने कभी शराब नहीं पी, तुम यह कैसे कहते हो! हकीमोंने अ़र्ज़ किया, कि हमारा क़ुसूर मुआफ़ हो, हमने दवाईमें मिलाकर दी थी; तब महाराजाने हकीमोंको तो रुख़्सत किया, और सीसा मंगवाकर आगपर रखवाया; लोगोंने जाना- कि किसी कामके वास्ते रखाया है, जब वह गलगया, तब महाराजाने मुहमें डाल लिया, जिससे उनका देहान्त होगया. इसी वक़्से मेवाड़के राजा सीसोदिये कहलाये. सीसा नाम सीसा और व्याकरण की रीतिसे (उद) धातुका अर्थ पीना है, दोनोंके मिलनेसे सीसोद शब्द हुआ."

आख़िरकार महाराणा जयसिंह और कुंवरमें नाइत्तिफ़ाक़ी बढ़ी, महाराजकुमार के मुंह तो शराब लग गई, जिसके मुंह यह लग जाती है, उसको इसकी जुदाई जानकी जुदाईसे भी ज़ियादह सख़्त हो जाती है. इन्हीं दिनोंमें महाराणाका जयसमुद्रकी तरफ़ जाना हो गया, और दोनों तरफ़से आपसमें रंज बढ़ता गया. राजपूतानहमें आम रिवाज है, कि बापके जीते बेटा सिफ़ेद पगड़ी सिरपर नहीं बांधता, इन्हों (कुंवर अमरसिंह) ने आप सिफ़ेद पगड़ी बांधी, और अपने बेटे संग्रामसिंह को भी बंधवाकर महाराणाके पास जयसमुद्र पहुंचे, महाराणाने नाराज़ होकर हुक्म दिया, कि तुम अभी उदयपुर चले जाओ. कुंवर उदयपुर आये, आपसमें विरोधकी आग भड़क ही रही थी, कि ईंधनके समान और एक बात हुई, कि उदयपुरमें एक कायस्थ कंकजीकी औरतसे महाराणाकी दोस्ती थी; इससे कंकजीका दरजा बढ़ाया गया. कुंवरने शहरमें एक मस्त हाथी छुड़वा दिया, जिसने दो आदमी जानसे मारडाले, और दो चार घर गिरा दिये. यह ख़बर बड़े तूलके साथ कायस्थ कंकजीने जयसमुद्र महाराणाके पास लिख भेजी. महाराणाने राजकुमारको बहुतसी ल़ानत मलामतके साथ लिखा, कि तुम हमारी रअ़य्यतको मारते व तक्लीफ़ देते हो, निकाले जाओगे. राजकुमार आधी रातके वक़्त घोड़ेपर सवार होकर कंकजीके मकान पर आये; नीचे खड़े होकर आवाज़ दी, कंकजीने झरोखेसे सलामकरके जवाब दिया. राजकुमारने गुस्सेमें कहा, कि मैं ग़रीब राजपूत हूं, इस शहरमें रहने दोगे, या नहीं? और ख़बर नहीं रक्खोगे तो ठीक नहीं होगा. कंकजीने कहा, कि हमारे मालिक महाराणा जयसिंह मौजूद हैं, हम इन टेढ़ी बातोंसे नहीं डरते. तब वह बोले, कि भला, तुम होश्यार रहना, तुमको तो सज़ा देदूंगा. यह कहकर राजकुमार महलों आये, और कंकजीकी औरतने तुहमत और शिकायत आमेज़ एक अ़र्ज़ी

महाराणाके पास लिख भेजी. वे उस अर्ज़ीको देखते ही आग बबूला होगये, और फ़ौज लेकर उदयपुरकी तरफ़ रवानह हुए. यह ख़बर पाकर राजकुमार भाग निकले, महाराणाने पीछा किया, वे क़िले चित्तौड़पर जा चढ़े. उनके साथ सलूंबर व पारसौलीका राव केसरीसिंह चहुवान, महाराज सूरतसिंह, बान्सीका रावत् गंगदास शक्तावत, कोठारियेका रावत् उदयभान चहुवान, देलवाड़ेका राज सज्जा झाला, बाठर्डेका रावत् महासिंह सारंगदेवोत और रावत् अनोपसिंह वग़ैरह बहुतसे थे. जब महाराणा चित्तौड़की तलहटीमें पहुंचे, तो राजकुमार क़िले चित्तौड़से सूर्य पोलके रास्ते निकल भागे, उस वक्त सूर्यपोलके खुरेसे उतरते वक्त पत्थरकी चिकनावटके सबब महाराज सूरतसिंह घोड़ेसे गिरा, और जबड़ी टूट जानेसे बेहोश होगया; तब चहुवान राव केसरीसिंह पट्टी बांधकर उस तक्लीफ़के वक्तमें भी उसको राजकुमारके साथ लेगया. राजकुमार बूंदी पहुंचे, और महाराणा उदयपुर वापस आये; राजकुमारके बूंदी जानेका यह सबब था, कि बूंदीके राव राजा शत्रुसालकी छोटी बेटी गंगाकुंवरीका विवाह शत्रुसालके बेटे राव राजा भावसिंहने महाराणा जयसिंहसे किया था, और महाराणी हाड़ी गंगाकुंवरीके गर्भसे राजकुमार अमरसिंह जन्मे थे; इसीसे उक्त राजकुमार अपनी ननिहाल (बूंदी) मददके लिये गये, लेकिन् वहांके राव राजा अनिरुद्धसिंह तो बादशाही नौकरीमें थे; और उनके पुत्र बुद्धसिंह बालक थे, तो भी रावराजाकी रानी (बुद्धसिंहकी मा नाथावत) ने एक लाख रुपया और हज़ार सवार मददको दिये. राजकुमार अमरसिंहने बूंदीके नागर रघुरामसे पचास हज़ार रुपये उधार लिये. उनके पास सब मिलकर बीस हज़ार सवार होगये थे. बूंदीसे कूच करके मेवाड़में अमल जमाते हुए उदयपुरसे पूर्वकी तरफ़ आठ कोसके फ़ासिलेपर नाहरमगरेके क़रीब कर्णपुर गांवमें आठहरे.

यह ख़बर सुनकर महाराणाको बड़ी फ़िक्र हुई; क्योंकि मेवाड़के अक्सर सर्दार राजकुमारसे जामिले थे, और फ़ौज भी मुक़ाबला करनेके लायक़ न रही सात घड़ी रात गये खाना खाकर महाराणा उदयपुरसे भागे, और पहाड़ोंमें कठाड़ गांव पहुंचे. महाराणाके आनेकी ख़बर सुनकर वहांका जागीरदार ग़रीबदास मांजावत गांव छोड़ भागा, दूसरे दिन महाराणा कुंभलगढ़के पास केलवाड़ेमें पहुंचे; वहांका क़िलेदार साह रूपचन्द देपुरा ज़रूरतके मुवाफ़िक़ सब सामान लेकर महाराणासे आमिला, फिर घाणेरावमें पहुंचे, वहांका जागीरदार ठाकुर गोपीनाथ भी राजकुमारके पास जानेको तय्यार हो रहा था; उसकी मा महाराणा उदयसिंहके बेटे शक्तिसिंहकी औलादमेंसे थी, शक्तिसिंहका बेटा बल्लू, जो महाराणा अमरसिंहके साम्हने

ऊंटालेके क़िलेके दर्वाज़ेपर मारा गया था; उसके पुत्र कम्माके बेटे सुजानसिंह शक्तावतकी बेटी थी. इस संबन्धसे महाराणा उसके पास चलेगये, और राजकुमारका व अपना सब हाल कह सुनाया. उन्होंने गोपीनाथको भी भीतर बुलाया; उसने पहिले अपने अरमान और महाराणाकी तरफ़से बेफ़ायदह नाराज़गी रहनेके झगड़े कहे, लेकिन् उसकी माने समझाकर कहा, कि अपने मालिकसे जुदा होना दोनों लोकसे अलग होनेके समान है, और खैरख्वाह नौकरोंका मालिकके कामपर मर मिटना भी जीते रहनेके बराबर है. तुम्हारे बुज़ुर्गोंने मालिककी कभी बदख्वाही नहीं की, अगर महाराणाका बड़ा प्रताप है, तो राजकुमारकी बग़ावत जल्दी दूर होगी, और तुम्हारी बड़ी इज़त बढ़ेगी; और जो मारे भी गये, तो सामधर्मियोंकी गिन्तीमें रहोगे. यह दुन्या नापायदार है, इसमें पायदार नाम रखना चाहिये.

इस तरह माताकी नसीहत सुनकर महाराणासे अर्ज़ की, कि अब हुज़ूर बेफ़िक्र रहें, और नौकरोंकी नौकरी देखें; उस वक्त किसी शाइरने कहा है- "राण जतन कर राखिया गाढै गोपीनाथ". गोपीनाथने बाप बेटोंकी लड़ाईका हाल और महाराणाकी मददको आनेके लिये महाराजा अजीतसिंह और राठौड़ दुर्गदासको लिख भेजा; और महाराणाने साह रूपचन्दको कुंभलगढ़से ख़ज़ानह लानेको वापस भेजा, रूपचन्द ख़ज़ानह लेकर क़िलेसे निकला ही था, कि राजकुमारकी फ़ौज आपहुंची, तब उसने यह तद्बीर की, कि ख़ज़ानहकी देगें तो आस पास छिपा दीं, और लकड़ियां इकठ्ठी कराकर जानवरोंकी हड्डियां जलाईं, आप अपने तमाम आदमियों समेत भेष बदलकर एक तरफ़ जा बैठा, राजकुमारकी फ़ौज चितासी जलती देखकर मुर्देको जलाना ख़याल करनेसे किनारा करगई; रूपचन्द ख़ज़ानह लेकर घाणेराव आया; महाराणाने उसकी बड़ी ख़ातिर की.

महाराणाके साथ उदयपुरसे ही उनका मामा राव वैरीशाल पंवार बीझोलियांवाला और बीरू महासहाणी मौजूद थे; पर रास्तह भूलकर केवड़ेकी नालमें होते हुए छप्पन बागड़की तरफ़ जा निकले, और साह रूपचन्दके बेटे सिंहाने डूंगरपुरकी राह ली. महाराणाको यह भी शक था, कि राजकुमारसे सिंहा जा मिला; इस सबबसे सद्दा कोतवालको उसके पीछे कुछ फ़ौज देकर भेज दिया, और यह भी कह दिया, कि अगर सिंहा इधर आवे, तो ले आना, और राज कुमारके पास जानेका इरादह रखता हो, तो मार डालना. सद्दा कोतवालने डूंगरपुरके पास ही सिंहाको जा घेरा, वह साथ हो लिया, और राव वैरीशाल पंवार, बीरू महासहाणी, सिंहा और सद्दा कोतवाल चारों घाणेरावमें

महाराणाके पास हाज़िर हुए. महाराणाने फ़र्माया, कि देपुरा महाजन क़दीमी खैरख्वाह हैं, इनके बड़े हमेशह खैरख्वाह रहे हैं. इतने ही में दुर्गदास कुल मारवाड़के राठौड़ोंको लेकर हाज़िर हुआ, जिसके साथ तीस हज़ार सवार थे. भोमटके भोमिया, मेरवाड़ाके मेर, और मेवाड़की लड़ाकू क़ौमोंके हज़ारों लोग घाणेरावमें इकट्ठे होगये. लिखाहै- कि उस वक्त महाराणाके पास पचास हज़ार आदमियोंकी भीड़भाड़ थी, और सवार, पैदल, सबको मदद खर्चमें तेतीस हज़ार रुपये रोज़ दिये जाते थे.

आठ दिन बाद महाराणाने नाडोलके जंगलमें फ़ौजकी हाज़िरी ली, और देवसूरी घाटेके नीचे आकर मक़ाम किया. मेवाड़के बड़े उमरावोंमेंसे बीझोलियांका राव वैरीशाल पंवार, चावंडका रावत् कांधल रत्नसिंहोत कृष्णावत चूंडावत, घाणेरावका ठाकुर गोपीनाथ मेड़तिया और डोडिया ठाकुर हटीसिंह (१) के अलावह दूसरे या तीसरे दरजेके राजपूत जागीरदार दस हज़ार सवार थे.

राजकुमार अमरसिंहने अपनी बीस हज़ार हाड़ा और सीसोदियोंकी फ़ौज समेत उदयपुरमें जा क़ब्ज़ा किया, गद्दीपर बैठनेके बाद सब सर्दारोंने नज़्रें दीं; लेकिन् घाणेरावमें महाराणाके पास फ़ौज इकट्ठी होना सुनकर राजकुमार भी अपनी जमइयत समेत उदयपुरसे चले, और राजनगर होते हुए जीलवाड़े पहुंचे. उस वक्त महाराणाके साथी सर्दारोंमेंसे राठौड़ ठाकुर गोपीनाथ व डोडिया ठाकुर हटीसिंह वगैरहने अर्ज़की, कि अगर हुक्म हो, तो एक बार फिर राजकुमारको समझावें; क्योंकि आपसमें कट मरनेसे मेवाड़ और मारवाड़की बहादुरीमें फ़र्क़ आजायगा, जिससे मुसल्मानोंको फ़ायदह पहुंचेगा. दूसरे- अपने पुत्रको आप मारडालें, तो भी अफ़्सोस आपहीको होगा; तीसरे- हम राजपूतोंका आपसमें मारा जाना एक हाथसे दूसरे हाथको काटना है. आख़िर इस तरहकी बातें सुनकर महाराणाने फ़र्माया- कि जो तुम लोगोंकी सलाह हो, वह मुझे भी मंजूर है. तब इन्हीं सब सलाहकारोंने जैसी, कि बातें महाराणासे अर्ज़की थीं, वही सब राजकुमारको जीलवाड़ेमें लिख भेजीं, राजकुमारके सर्दारोंने भी उसी लिखावटके मुवाफ़िक़ सलाहदी, जैसी कि सलाहकारोंने महाराणाको दी थी. राजकुमारने भी इस सुलहको मंजूर किया, और यह इक़ार हुआ, कि राजकुमार तीन लाख रुपयेकी जागीर लेकर राजनगरमें रहें, इनके पट्टेमें रियासती दस्तन्दाज़ी न हो; और इसी तरह राजकुमार रियासती, माली व मुल्की काममें दख़्ल न दें.

---

(१) यह कुंवारियाका जागीरदार था, इसी खान्दानमें अब सर्दारगढ़के ठाकुर मनोहरसिंह हैं.

ठाकुर गोपीनाथ और डोडिया ठाकुर हटीसिंह, राव केसरीसिंह वगैरह तरफ़ैनके सर्दारोंने राजकुमारको महाराणा जयसिंहके पास लाकर हाज़िर किया, राजकुमारने कुसूरकी मुआफ़ी चाही, और नज़ दी. महाराणाने उनका कुसूर मुआफ़ किया, फिर कुंवरने अपने कुल सर्दारोंकी नज़ें करवाई; उनका कुसूर भी मुआफ़ किया गया. राजकुमार राजनगरमें रहे, और महाराणा जयसिंह उदयपुर पधारे; लेकिन् दोनोंके दिलोंमें गुबार भरा रहा. महाराणाके पास ठाकुर गोपीनाथ मुसाहिब, दामोदरदास भटनागर कायस्थ प्रधान, और राजकुमारके पास राजनगरमें चहुवान राव केसरीसिंह मुसाहिब और गोवर्धनदास भटनागर कायस्थ सहीहके कामवाला (१) प्रधान था.

महाराणाके पास चावंडका चूंडावत कृष्णावत रावत् कांधल भी रहता था, जिसके दादा रघुनाथसिंहसे महाराणा राजसिंहने सलूंबर छीनकर राव केसरीसिंह चहुवानको जागीरमें दे दिया था; इसी सबबसे रावत् रघुनाथसिंह उदयपुरकी हाज़िरी छोड़कर लाहौरमें बादशाह आलमगीरके पास पहुंचा, और उसको बादशाहने मन्सब दिया, जिसका हाल महाराणा राजसिंहके बयानमें पूरा पूरा लिखा गया है.

रावत् रघुनाथसिंहका बेटा रत्नसिंह, जो अपने बापके मरने बाद बादशाही नौकरी छोड़कर वापस चलाआया, उसे महाराणा राजसिंहने सलूंबरके एवज़ चावंडका पट्टा दिया, जो उदयपुरसे दक्षिण तरफ़ जयसमुद्रके पास है. रावत् रत्नसिंहने महाराणा राजसिंह व बादशाह आलमगीरकी लड़ाइयोंमें बड़ी बड़ी कारगुज़ारी दिखलाई थी; लेकिन् सलूंबर उसको नहीं मिला, और उसके देहान्त होनेके बाद रावत् कांधलने बाप बेटोंकी लड़ाईके वक़ महाराणा जयसिंहकी ख़ैरख्वाही की, और ठाकुर गोपीनाथ व राव वैरीशाल कांधलके मददगार थे; इस मौक़ेपर महाराणासे अर्ज़ हुई- कि राव केसरीसिंह चहुवानको मारडाला जावे, तो राजकुमार की ताक़त टूटे. तब कांधलने कहा, कि मेरी क़दीमी जागीर सलूंबर मुझे मिले, तो मैं उसको मार सक्ता हूं. महाराणाने सलूंबर देनेका इक़ार किया, और ख़ास रुक्क़ा लिखकर केसरीसिंहको राजनगरसे उदयपुर बुलाया. केसरीसिंह राजकुमार से रुख़्सत लेकर बे खटके चला आया, दो एक दिन तो गोपीनाथ, कांधल वगैरह के साथ महाराणासे सलाह मशवरा करता रहा, एक दिन महाराणाने फ़र्माया, कि बादशाह आलमगीरने पेश्तर जिज़्यह मुआफ़ करके पुर, मांडल, बदनौरके

---

(१) सहीहके काम वाला उदयपुरकी रियासतमें, वह कहाता है, जो पट्टे पर्वाने वगैरह ख़ास कागज़ात महाराणाकी तरफ़के लिखता है; और जिनकी पेशानीपर महाराणा ख़ास दस्तख़तोंसे "सही صحيح" के दो अक्षर लिखते हैं.

पर्गने भी देदेनेका इक़ार किया था, लेकिन् पर्गने नहीं दिये; और मुआफ़ कीहुई हज़ार सवारकी चाकरी भी लेना चाहा, तब लाचार पर्गने लेनेके वास्ते जिज़्यह कुबूल किया. अब इस बारेमें क्या करना चाहिये ? इस बातको रावत् कांधल, केसरीसिंह और गोपीनाथ विचारकर अर्ज़ करें.

तब उन दोनोंने केसरीसिंहसे कहा, कि थूरके तालाबपर बड़ी बहारकी जगह है, कल दिनभर वहीं ठहरकर सलाह करेंगे; इस बात चीतके लिये कांधल और केसरीसिंह तो वहां पहुंचे, पर गोपीनाथ नहीं गया. कांधलने केसरीसिंहसे कहा, कि आओ ! हम आपसमें सलाह करें, थोड़ी देरमें गोपीनाथ भी आजायगा. दोनों सर्दारोंने राजपूतोंको दूर करदिया, केसरीसिंह अफ़ीम खाता था, इससे बाज़ वक़ पीनक और बाज़ वक़ होश्यारीमें बातें करने लगा, उस वक़ कांधलने कमरसे कटार निकालकर केसरीसिंहकी छातीमें मारा, और कहा, कि महाराणा तुमसे नाराज़ हैं ! केसरीसिंहने उसी जांकन्दनीकी हालतमें एक हाथसे कांधलकी कमर पकड़कर दूसरेसे कटार निकाला, और अपने क़ातिलकी छातीमें मारकर कहा, कि महाराणा खुश आपसे भी नहीं हैं ! आख़िरकार दोनों सर्दार जहानको छोड़गये. दोनों तरफ़के राजपूत लड़नेको तय्यार हुए, लेकिन् महाराणाके आदमी जा पहुंचे, और हर एकके मालिककी लाश तरफ़ैनके सुपुर्द कीगई.

उस वक़ किसी चारण शाइरने मारवाड़ी भाषामें, ये दोहे कहे थे:-

दोहा.

पंथी जाय संदेसड़ा राण अगा कहिया ।
चूंडो ने चंदवारियो रण भेळा रहिया ॥ १ ॥
केहर कांधल मारवे रही सदा लग रीत ।
कांधल केहर मारियो रीत किना विपरीत ॥ २ ॥
कांधल केहर मारने दियो मुछारां हथ्थ ।
चूंडा चहुवाणा चली सतियां हेकण सथ्थ ॥ ३ ॥

१ - दोहेमें शाइरीका तर्ज़ है, कि किसी मुसाफ़िरने महाराणासे जाकर कहा, कि चूंडावत और चन्दवारिया चहुवान, दोनों एक जगह मारे गये.

२ - केहर नाम शेरका और कांधल नाम बैलका है, जो इन दोनों सर्दारोंके नाम थे; एक तर्ज़से शाइरका क़ौल है, जिससे राव केसरीसिंहकी बहादुरी ज़ियादह

और कांधलकी कम निकलती है. इससे इस दोहेका यह मत्लब है- कि शेरका बैलको मारना क़दीमी रिवाज है, लेकिन् बैलने जो शेरको मारा, यह बात क़दीमके बर्खिलाफ़ हुई.

३- कांधलने केसरीसिंहको मारकर मूछोंपर हाथ तो पेश्तर फेरा, लेकिन् सती होनेको दोनोंकी औरतें साथ गईं.

इन दोनों सर्दारोंके मारे जाने बाद रावत् कांधल चूंडावतके बेटे केसरीसिंहको बुलाकर महाराणाने अपने क़ौलके मुवाफ़िक़ सलूंबरका पट्टा दिया, और चहुवान राव केसरीसिंहके बेटे नाहरसिंहके क़ब्ज़ेमें पारसोली रही, जो अबतक उसकी औलाद की जागीरमें चली आती है. यह ख़बर राजनगरमें राजकुमारको मिली, केसरीसिंहका मारा जाना निहायत नागुवार गुज़रा, लेकिन् लाचारीके सबब सब्र करना पड़ा, क्योंकि उनकी फ़ौजी ताक़त कम होगई थी; बूंदीकी फ़ौज तो बूंदी गई, और मेवाड़के सर्दारोंने महाराणासे जाकर कुसूरकी मुआफ़ी मांग ली थी. हमको दो मुसव्वदे उसी ज़मानेके लिखेहुए, बादशाह आलमगीरके वज़ीर असदख़ांके नाम, राजकुमार अमरसिंहकी तरफ़से मिले; जिनका तर्जमा नीचे लिखते हैं:-

पहिला ख़त.

सर्दारी और वज़ीरीकी मस्नद आपकी मुबारक ज़ातसे हमेशह रौनक़दार रहे- मुलाक़ातका शौक़ ज़ाहिर करनेके बाद, जो बड़ी ख़ुशियोंका सबब है, आपकी पाक तबीअ़तपर ज़ाहिर किया जाता है, कि इन दिनोंमें बहादुरीकी निशानी कुशलसिंह सीसोदिया कुछ कामोंके वास्ते आपकी ख़िद्मतमें भेजा गया. आपकी बड़ी नेक-नियतीसे यह उम्मेद है- कि जो कुछ ज़िक्र कियाहुआ आदमी मेरे कामोंके वास्ते ज़बानी अ़र्ज़ करे, उसके पूरा होनेमें आप पूरी तवज्जुह फ़र्मावें; और जो काम व मुआमला मेरे तअ़ल्लुक़का हो, बिला शुब्हा लिख भेजें. ख़ुदाकी मिहर्बानीसे अच्छी तरहपर तै किया जावेगा; और सिवाय शौक़के क्या लिखा जावे. पिछले काम अच्छी तरह तमाम हों.

दूसरा ख़त.

सर्दारी और बलन्द दरजेके लाइक़, हमेशह बुज़ुर्ग मिहर्बानियोंके शामिल रहें; मुलाक़ातका शौक़ ज़ाहिर करनेके बाद बुज़ुर्ग तबीअ़तपर मालूम हो, कि बहादुर

ज़ात कुशलसिंह सीसोदियाको हुज़ूर शहनशाहकी दर्गाह और नव्वाब कुद्सियह बेगम की ड्योढ़ीकी तरफ़ बाज़े कामोंकी अ़र्ज़ करनेको भेजा गया है, यक़ीन है, कि ज़िक्र किया हुआ बहादुर कुल अहवालको मुफ़स्सल ज़बानी बयान करेगा, आपकी बुज़ुर्ग दोस्ती और नेकदिलीसे उम्मेद है, कि उन हक़ीक़तोंको, जो लिखा हुआ आदमी आपकी ख़िद्मतमें ज़ाहिर करे, जनाब नव्वाब कुद्सियह बेगमकी बुज़ुर्ग ख़िद्मतमें अ़र्ज़ करदें, और मेरी अ़र्ज़ीको पाक नज़रसे गुज़ारें; हर तरहपर मेरे काममें ऐसी कोशिश करें, कि नव्वाब कुद्सियह बेगम पूरी तवज्जुह फ़र्मावें. जो काम कि यहांके तअ़ल्लुक़के हों, वह लिख भेजें, ज़ियादह शौक़के सिवा क्या लिखा जावे.

इन दोनों काग़ज़ोंका मत्लब व कुशलसिंहके भेजनेका सबब मालूम नहीं है, लेकिन् महाराणा और राजकुमारके आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ीके सिवाय और कोई अम्र नहीं जाना जाता, जो राजकुमार और बादशाही दर्बारसे सम्बन्ध रखता हो; कुशलसिंह सीसोदिया, जिसको राजकुमारने वज़ीरि आज़मकी मारिफ़त बादशाही दर्बारमें भेजा, उसकी यह कैफ़ियत है, कि महाराणा उदयसिंहका छोटा बेटा शक्तिसिंह, उसका अचलदास, उसका नरहरदास, उसका विजयसिंह और इसका कुशलसिंह शक्तावत था, जिसकी औलादमें अब विजयपुरका ठाकुर है; इसी कुशलसिंहको राजकुमारने शाही दर्बारमें भेजा था. ऐसा मालूम होता है, कि कुंवरके लिखनेपर बादशाही मुलाज़िमोंने कुछ ध्यान नहीं दिया, और वह मौक़ा भी ऐसा ही था; अगर दक्षिणी लड़ाइयोंमें बादशाह न फंसा होता, तो ज़रूर इस आपसकी फूटसे वह अपना मत्लब निकालता.

इन दोनों बाप बेटोंकी लड़ाईका ख़ातिमह विक्रमी १७४९ [हिज्री ११०३ = ई० १६९२] में हुआ, और उसी वक़्से राजकुमार राजनगर, और महाराणा उदयपुरमें रहते थे. महाराणा जयसिंहका भाई भीमसिंह अजमेरमें बादशाह के पास चलागया था, जहां उसे राजाका ख़िताब मिला- यह सब हाल ऊंपर लिख आये हैं. उसने बादशाहकी तरफ़से लड़ाइयोंमें बड़ी बड़ी बहादुरी दिखलाई, और इज़्ज़त भी बहुत पाई, लेकिन् विक्रमी १७५२ श्रावण कृष्ण १४ [हिज्री ११०६ ता० २८ ज़िल्हिज = ई० १६९५ ता० ९ ऑगस्ट] को उसका देहान्त होगया. इस भीमसिंहके बारह बेटे थे, १ अ़जबसिंह, २ सूरजमल्ल, ३ सौभाग्यसिंह, ४ खुमान-सिंह, ५ पृथ्वीसिंह, ६ अर्जुनसिंह, ७ विजयसिंह, ८ ज़ोरावरसिंह, ९ कीर्तिसिंह,

१० रत्नसिंह, ११ कृष्णसिंह, और १२ भगवानसिंह. बादशाहने बनेड़ेका पर्गनह कई दूसरे पर्गनों समेत भीमसिंहको जागीरमें दिया था; दूसरे पर्गने तो और मुल्कों में से मिले थे, सो इनकी औलादके कब्ज़ेमें नहीं रहे; लेकिन् मेवाड़के मातहत बनेड़ा अबतक उनकी औलादकी जागीरमें है. भीमसिंहके मरने बाद बड़ा बेटा अजबसिंह बापकी गादीपर बैठा.

महाराणा जयसिंहने अपनी राजकुमारी उम्मेदकुंवर बाईकी शादी बूंदीके राव राजा बुद्धसिंहसे करनेके लिये पुरोहित संतोषराम व श्रीकृष्ण योतिषीको भेजा; इन दोनोंने बूंदी पहुंचकर राव राजा बुद्धसिंहको नारियल झेलाया. फिर वहांसे कोटाके महाराव रामसिंहके पास गये, और उनके कुंवर भीमसिंह को महाराणाकी छोटी बाईकी सगाईका नारियल दिया. इसके बाद दोनों उदयपुर को लौटे, और बूंदी व कोटासे बरात सजकर आई. विक्रमी १७५२ फाल्गुण कृष्ण ९ [हिज्री ११०७ ता० २३ रजब = ई० १६९६ ता० २६ फ़ेब्रुअरी] को दोनों राजाओंका विवाह बड़ी धूम धामसे हुआ. इसके बाद राजकुमार और महाराणा जयसिंहमें दोबारह नाइत्तिफ़ाक़ी हुई; इस लिये महाराजा अजीतसिंह को महाराणाने बुलाया; वे उस वक्त कोटकोलरकी तरफ़ चढ़ाईमें थे. जोधपुरकी तवारीख़में लिखा है- कि बादशाही मुलाज़िम लश्करीखांसे अजीतसिंहका मुक़ाबला हुआ, ८० आदमी खान्के काम आये, और वह भाग गया. तब अजीतसिंह उदयपुर आये.

विक्रमी १७५३ आषाढ़ कृष्ण ८ [हिज्री ११०७ ता० २२ ज़िल्क़ाद = ई० १६९६ ता० २२ जून] को महाराणा जयसिंहने अपने छोटे भाई, गजसिंहकी बेटीकी शादी महाराजा अजीतसिंहके साथ करदी; और ९ हाथी, १५० घोड़े वगैरह बहुतसा दहेज़ दिया. इसके बाद आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ी मिटाकर महाराजा मारवाड़को चले गये; और राजकुमार राजनगर व महाराणा उदयपुरमें रहे. इसके सिवा इन महाराणाका लिखने लायक़ तारीख़ी हाल नहीं मिला.

इनका छोटा क़द, गोरा रंग, बड़ी आंखें, और चौड़ी पेशानी थी. जवानीमें इन्होंने महाराणा राजसिंहके साम्हने तो बड़ी बड़ी बीरताके काम किये थे, लेकिन् राज्य मिलने बाद पूरे अय्याश होगये; और राजकुमारके बखेड़ेके सबब मुल्की इन्तिज़ाम भी ढीला पड़गया था; दोनों तरफ़के आदमी रअय्यतको लूटते थे. इस वक्त आलमगीर बादशाह दक्षिणी लड़ाईयोंमें फंसा हुआ था, वर्नह मेवाड़की हालत और भी बिगड़ती.

इन महाराणाके बड़े राजकुमार अमरसिंह, बूंदीके हाड़ा राव शत्रुसालके दोहिते; दूसरे प्रतापसिंह, जिनकी औलाद बावलासके जागीरदार हैं; तीसरे उम्मेदसिंह, जिनकी सन्तानमें कारोईके मालिक हैं; चौथे तख़्तसिंह; और दो बेटियां थीं- अनूपकुंवर, दूसरी कृष्णकुंवर; और एक ख़वासके बेटे नारायणदास, व दो बेटियां सूरजकुंवर और उम्मेदकुंवर नामकी थीं.

महाराणा जयसिंहका जन्म विक्रमी १७११० पौष कृष्ण ११ [हिज्री १०६४ ता० २५ मुहर्रम = ई० १६५३ ता० १६ डिसेम्बर] को, और देहान्त विक्रमी १७५५ आश्विन कृष्ण १४ [हिज्री ११११० ता० २८ रबीउल् अव्वल = ई० १६९८ ता० ५ ऑक्टोबर] को हुआ.

बादशाह आलमगीरकी मृत्यु तो महाराणा २-अमरसिंहके समयमें हुई, परन्तु उसके राज्य करनेका अहद बहुतसा इन महाराणाके अख़ीर समय तक गुज़र चुका; इसलिये उसका हाल इसी जगह लिखा जाता है-

यह बादशाह हिज्री १०२७ ता० १५ ज़िल्क़ाद [विक्रमी १६७५ मार्गशीर्ष कृष्ण १ = ई० १६१८ ता० ४ नोवेम्बर] रविवार को हमीदहबानू मुम्ताज़ महल बेगमके पेटसे पैदा हुआ, इस बेगमकी चौदह औलादमेंसे वह छठा था, इसकी शाहज़ादगीका हाल, तो बादशाह शाहजहांकी तवारीख़में लिखा गया है, अब दाराशिकोहपर समूनगरकी लड़ाईमें फ़त्ह पाकर आगरेमें पहुंचनेसे पिछला हाल बयान किया जाता है-

जब जहांआरा बेगमने आगरा क़िलेके बाहर आकर औरंगज़ेब और मुरादको समझाया, और कुछ असर न हुआ; शाहजहां भी औरंगज़ेबको बुलाता रहा, लेकिन् वह मारडालनेके ख़ौफ़से भीतर नहीं गया, और अपने बेटे मुहम्मद सुल्तानको भेजकर हिज्री १०६८ ता० ११ रमज़ान [विक्रमी १७१५ ज्येष्ठ शुक्ल १३ = ई० १६५८ ता० १४ जून] को शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया, और ता० १७ रमज़ान [विक्रमी आशाढ़ कृष्ण ३ = ई० ता० २० जून] को क़िलेमें भी अपना बन्दोबस्त करके बादशाह शाहजहां को नज़र क़ैदी बनाया. उस वक्त शाहजहांने अपने पोते मुहम्मद सुल्तानको कहलाया, कि मैं कुरआनकी क़सम खाकर कहता हूं, कि अगर तू ईमान्दारीसे मेरी फ़र्मांबर्दारी करे, तो मैं तुझको हिन्दुस्तानका बादशाह बनादूं, लेकिन् उसने इस बातको क़ुबूल न किया.

मिस्टर बर्नियर फ़रांसीसीकी राय है, कि वह ऐसा करता, तो ज़ुरूर हिन्दुस्तानका बादशाह होजाता, क्योंकि शाहजहांसे कुल शाही मुलाज़िम मुहब्बत रखते थे, औरंगज़ेबको छोड़कर शाहजहांके शरीक होजाते, लेकिन् हमारी राय बर्नियरके बर्ख़िलाफ़ है, अव्वल तो औरंगज़ेब फ़त्हयाब, और दारा ख़राब होगया था; जिससे औरंगज़ेबके दबाव व ख़ौफ़से कोई मुलाज़िम शाहजहांका साथ न देता; अगर साथ भी देता, और औरंगज़ेब व मुराद बर्बाद होते, तो भी शाहजहांकी मुहब्बत दारापर ज़ियादह थी; इसके सिवाय उसकी मददगार जहांआरा थी, कि जिसने बादशाहको मोमकी पुतली बना रक्खा था; कभी दाराशिकोहके बर्ख़िलाफ़ मुहम्मद सुल्तानको वलीअहद न होने देती; मुहम्मद सुल्तान ज़लील होकर माराजाता, या क़ैद होता.

हिज्री ता० २२ रमज़ान [वि० आषाढ़ कृष्ण ८ = ई० ता० २५ जून] को शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तान और फ़ाज़िलख़ां ख़ानसामांको आगरे में शाहजहांकी निगरानीपर छोड़कर औरंगज़ेबने दाराशिकोहका पीछा किया, और अपने भाई मुरादको ज़ाहिर तौरपर बादशाह कहकर छब्बीस लाख रुपये, २३० घोड़े मुबारकबादीके साथ नज़्र किये. हि० ता० आख़िर रमज़ान [वि० आषाढ़ शुक्ल १ = ई० ता० ३ जुलाई] को महाराणा राजसिंहके कुंवर सुल्तानसिंह व भाई अरिसिंह, इस फ़त्हकी मुबारकबाद देनेको सलीमपुर मक़ामपर पहुंचे, जिनको उम्दह ख़िल्अ़त, मोतियोंकी कंठी, सर्पेच और जड़ाऊ छोगा इनायत किया; और महाराणा राजसिंहके लिये बेश क़ीमत सर्पेच दिया.

हिज्री ता० ४ शव्वाल [वि० आषाढ़ शुक्ल ५ = ई० ता० ७ जुलाई] को मक़ाम मथुरामें औरंगज़ेबने अपने भाई शाहज़ादह मुरादको अपने डेरेमें

बुलाकर शराब पिलाने बाद गिरिफ़्तार करलिया; और उसके साथियोंको धमकी, इन्आम व इक्रामसे ताबेदार बनाया, और मुरादको हाथीपर डालकर सलीमगढ़में भेजदिया. आंबेरका मिर्ज़ा राजा जयसिंह अव्वल कछवाहा और दिलेरखां भी शाहज़ादह सुलैमां शिकोहसे अलहदह होकर औरंगज़ेबसे आमिले. बर्नियर लिखता है, कि " औरंगज़ेबने राजा जयसिंहको बड़ी खुशामदसे राज़ी किया, और उसको बाबाजी कहकर पुकारने लगा ".

हिज्री ता० १९ शव्वाल [वि० श्रावण कृष्ण ५ = ई० ता० २० जुलाई] को औरंगज़ेब दिल्लीके बाहर शालामार बाग़में पहुंचा, और दाराशिकोह मए दस हज़ार सवारोंके लाहौरकी तरफ़ चला गया; औरंगज़ेबने पीछा किया, दाराशिकोह लाहौरमें भी न ठहरकर ठठ्ठेहकी तरफ़ रवानह हुआ; औरंगज़ेबने उसके पीछे सफ़शिकनखां और उदयभान राठौड़ वग़ैरहको भेजा. दाराशिकोह भक्खरसे सक्खर होकर ठठ्ठे पहुंचा, पर वहां भी न रहसका. हिज्री १०६९ ता० २६ सफ़र [वि० १७१५ मार्गशीर्ष कृष्ण १२ = ई० १६५८ ता० २२ नोवेम्बर] को गुजरातकी तरफ़ रवानह हुआ. वहांसे कच्छके इलाकेमें गया, जहांके राजाने अपनी बेटी सिपिहरशिकोहको ब्याहदी; उसकी मददसे दारा अहमदाबाद पहुंचा, जहांके हाकिम शहबाज़खांने दस कोस तक पेशवाई करके शहरकी हुकूमत, और दस लाख रुपया नक़्द पेश किया. इस मक़ामपर दाराशिकोहके पास बाईस हज़ार सवार और कुछ तोपखानह एकठ्ठा होगया था.

औरंगज़ेबने ठठ्ठेसे अपने सर्दारोंको पीछा बुला लिया, और आप लाहौरसे दिल्लीकी तरफ़ रवानह हुआ; क्योंकि उसको बंगालेकी तरफ़से शुजाअके आनेका खटका था. लाहौरके रास्तेमें जिन सर्दारोंको इन्आम और मन्सब दिये, उनकी फ़िहरिस्त नीचे लिखी जाती है :—

१ — जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंहको, (जिसे राजा जयसिंह आंबेरवालेने तसल्ली देकर बुला लिया था), १ हाथी, १ हथनी मए सामानके, और जड़ाऊ तलवार, मोतियोंकी कंठी, जड़ाऊ जम्धर और दो लाख पचास हज़ारकी जागीर दी.

२ — महेशदास राठौड़को (जिसकी औलादमें रतलामके राजा हैं) १ घोड़ा.

३ — बीकानेरके राव कर्णसिंहके बेटे केसरीसिंहको, मीनाकारीके साज़की तलवार.

४ — शुभकरण बुंदेलेको हाथी.

५ — राजा टोडरमल्लको ख़िल्अत.

६ — भगवन्तसिंह हाड़ा, बूंदीके राव शत्रुशालके बेटेको ढाई हज़ारी ज़ात मन्सब.

७- राठौड़ रामसिंह रोटलाके बेटे शेरसिंहको एक हज़ारी ज़ात, हज़ार सवारका मन्सब.

८-राजा शिवराम गौड़के बेटे सूरजमल्लको सात सौ ज़ात सात सौ सवारकी तरक़ीसे एक हज़ारी ज़ात और आठ सौ सवारका मन्सब दिया.

हिज्री ता० १० ज़िल्हिज [वि० १७१६ भाद्रपद शुक्ल १२ = ई० १६५९ ता० २९ ऑगस्ट] को ईदके जश्नपर बहुतसे उमराव सर्दारोंको ख़िल्अ़त और इन्आम दिये.

९- महाराणा राजसिंहको एक हज़ारी ज़ात, हज़ार सवार और दो अस्पह सिह अस्पहकी तरक़ीसे छः हज़ारी ज़ात, छः हज़ार सवार, और एक हज़ार सवार दो अस्पह सिह अस्पहका मन्सब देकर पांच लाख रुपयेकी जागीर इन्आममें लिख भेजी.

१०- आंबेरवाले राजा जयसिंहके कुंवर रामसिंहको जड़ाऊ धुकधुकी.

११- जम्बूके राजा सारंगधरको उसके पहाड़ी मुल्ककी ज़मींदारी, झन्डा और निशान दिया.

१२- राठौड़ रघुनाथसिंहको डेढ़ हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवारका मन्सब दिया.

१३- राजा राजरूपको जम्धर, घोड़ा.

१४- राजा मानसिंह ग्वालियर वालेको ख़िल्अ़त, हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवारका मन्सब और जड़ाऊ धुकधुकी.

१५- बीरमदेव सीसोदियाको ख़िल्अ़त.

१६- अमरसिंह कछवाहे नरवरीको डेढ़ हज़ारी ज़ात, हज़ार सवारका मन्सब.

१७- बांधूके राजा कल्यानसिंहको हज़ारी ज़ात पांच सौ सवारका मन्सब दिया.

हिज्री १०७० ता० २३ सफ़र [विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ९ = ई० ता० ८ नोवेम्बर] को शालामार बाग़में पहुंचकर औरंगज़ेबने नीचे लिखे सर्दारों को इन्आम दिया.

महाराजा जशवन्तसिंहको, जिसे बादशाह दिल्लीकी हिफ़ाज़तपर छोड़ गया था, ख़िल्अ़त दिया. इस्लामख़ां, भावसिंह हाड़ा, राजा जयसिंहके बेटे कीर्तिसिंह, गिरधरदास गौड़, सबलसिंह सीसोदिया, नरबद हाड़ाके बेटे जगत्सिंह, सूरजमल्ल मनोहरदास गौड़ वग़ैरह, जो हाज़िर हुए, उनको ख़िल्अ़त दिये; और बूंदीके राव भावसिंह हाड़ाने पांच हाथी नज़्र किये. समोरके राजा सौभाग्यप्रकाशको ख़िल्अ़त, मोतियोंका चौकड़ा, घोड़ा, जड़ाऊ ख़ंजर और मोतियोंकी कंठी देकर रुख़्सत दी.

ग्वालियरके राजा मानसिंहको सर्पेच बख़्शा. उस वक्त शाहज़ादह शुजाअ़के पटने से इलाहाबादकी तरफ़ बढ़नेकी ख़बर सुनकर औरंगज़ेबने शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तान और ज़ुल्फ़िक़ारख़ांको फ़र्मान भेजा, और आगरेसे बढ़नेका हुक्म दिया; फिर अपने पास से भी नीचे लिखे सर्दारोंको रवानह कियाः–

राजा अनिरुद्धसिंह गोड़, बूंदीका राव भावसिंह हाड़ा, गिरधरदास गोड़, जगत्सिंह हाड़ा, बीरमदेव सीसोदिया, अलीक़ुलीख़ां वगैरह–

पीछेसे ख़ुद आलमगीर भी रवानह होकर मक़ाम कोड़ामें अपने शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तानकी फ़ौजमें जा मिला, मीरजुम्ला इसी मक़ामपर दक्षिणसे आ गया; हिज्री ता० १९ रबीउ़स्सानी [वि० माघ कृष्ण ५ = ई० १६६० ता० २ जैन्युअरी] को शाहज़ादह शुजाअ़से लड़ाईके लिये फ़ौजकी तर्तीब की गई, जो क़रीब ९०००० नव्वे हज़ारके थी; शुजाअ़की फ़ौजसे मुक़ाबला किया गया, लेकिन् रात पड़जानेके सबब दोनों तरफ़के बहादुर अपने अपने डेरोंमें लौट गये.

इसी रातको जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंहने, जो औरंगज़ेबकी दहिनी फ़ौजका अफ़्सर था, बादशाही आदमियोंपर हम्ला कर दिया, जिसकी इत्तिला शुजाअ़को भी देदी थी, लेकिन् वह शर्तके मुवाफ़िक़ नहीं आया. औरंगज़ेबने अपनी बिगड़ी हुई फ़ौजको बड़ी दिलेरीके साथ दुरुस्त किया, और महाराजा जशवन्तसिंहका पीछा न करके फ़ज्रको शुजाअ़से लड़नेके लिये तय्यारी की; मुक़ाबला होनेपर शुजाअ़ भाग गया, और औरंगज़ेबने फ़त्ह पाई.

औरंगज़ेब अपने शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तान और मीर जुम्लाको वहां छोड़कर आप आगरेकी तरफ़ रवानह हुआ; महाराजा जशवन्तसिंह जोधपुर पहुंच गया, और दाराशिकोहसे मिलावट करके औरंगज़ेबसे लड़नेकी फ़िक्रमें लगा; तब आंबेरके राजा जयसिंहने महाराजा जशवन्तसिंहको लिख भेजा, कि हुआ सो हुआ, अब चुप रहना चाहिये. दाराशिकोह महाराजा जशवन्तसिंहके भरोसे पर अजमेर आया, लेकिन् महाराजा किनारा कर गया, और औरंगज़ेब आ पहुंचा.

इसी सालके हि० ता० २७ जमादियुस्सानी [वि० चैत्र कृष्ण १३ = ई० १६६० ता० ९ मार्च] को अजमेरमें औरंगज़ेब और दाराशिकोहसे मुक़ाबला हुआ, बिचारा दारा हारकर भागा; उसकी मुसीबतका हाल बर्नियर ने अपनी किताबमें लिखा है, जो उस वक्त अजमेरसे अहमदाबाद तक उसके साथ था.

औरंगज़ेबने महाराजा जशवन्तसिंहको ख़िल्अ़त भेजकर सात हज़ारी मन्सब और अहमदाबादकी सूबहदारी देने बाद लिखा, कि यह वहां जाकर खुद बन्दोबस्त करे, और अपने बेटेको यहां भेज दे; फिर बादशाह दिल्ली चला आया.

हिज्री १०६९ ता० २४ रमज़ान [वि० १७१६ आषाढ़ कृष्ण १० = ई० १६५९ ता० १४ जून] को औरंगज़ेबने तख़्तनशीनीका पहिला जश्न करके अपना लक़ब "अबुज़्ज़फ़र मुहयुद्दीन मुहम्मद औरंगज़ेब बहादुर, आ़लमगीर बादशाह ग़ाज़ी", रक्खा; और सिक्कह व खुत्बह अपने नामका जारी करके सिक्कहमें यह शिअ़्र खुदवायाः-

सिक्कः ज़द दर जहां चु बद्रि मुनीर,
शाह औरंगज़ेब आ़लमगीर.

* سکه زد در جهان چو بدر منیر *
* شاه اورنگ زیب عالمگیر *

यानी औरंगज़ेब आ़लमगीर बादशाहने दुन्यामें रौशन चांदकी तरह अपना सिक्कह जमाया.

शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तान और मीर जुम्लाने शुजाअ़को बंगालेकी तरफ़ निकालकर बहुतसा इलाक़ा दबा लिया, लेकिन् मुहम्मद सुल्तान और मीर जुम्लामें बिगाड़ होनेसे आ़लमगीरने कुछ ताना लिख भेजा, जिससे शाहज़ादह नाराज़ होकर अपने चचा शुजाअ़से जामिला, और शुजाअ़ने अपनी बेटी उसको ब्याह दी; लेकिन् उसको आ़लमगीरका भेजा हुआ जानकर शुजाअ़ हमेशह होश्यार रहता था. इससे रंजीदह होकर मुहम्मद सुल्तान फिर मीर जुम्लाके पास भाग आया, और आ़लमगीरने उसे क़ैदी बनाकर सलीमगढ़के क़िलेमें भेज दिया. दूसरी तरफ़ बिचारा दारा मुसीबतका मारा अहमदाबाद पहुंचा, जो शहरमें नहीं घुसने पाया; इससे लाचार भागकर कच्छके इलाक़ेमें आया, जहांका राजा कुछ सहारा देना चहाता था, पर आंबेरके राजा जयसिंहके लिखनेसे किनारा कर गया. फिर वह सिंधके जंगलोंमें आफ़तें उठाता हुआ एक लुटेरे पठान सर्दार मलिक जीवनके पास दादरमें पहुंचा; क्यौंकि मलिक जीवनको जब शाहजहांने हाथीके पैरसे मारडालनेका हुक्म दिया था, तो दाराशिकोहने ही बचाया था; परंतु उस नालाइक़ पठानने उसका उलटा एवज़ दिया, कि वह दाराको सिपिहरशिकोह समेत गिरिफ़्तार करके दिल्लीमें आ़लमगीरके पास लेगया; जब लाहौरी दर्वाज़ेसे चांदनी चौकके रास्तह दाराशिकोह शहरमें घुमाया गया, तो उस वक़्का हाल मिस्टर बर्नियर लिखता है, कि मैं एक अच्छे घोड़ेपर

सवार था, और दो ख़िद्मतगारों समेत देखता था, कि दाराशिकोहकी मुहब्बतसे तमाम रअ्य्यत मलिक जीवनको गालियां देती थी, दाराकी मुसीबतपर कमाल रंजके साथ सब लोग चिल्लाते थे, जिनकी गालियों और शोरसे एक दूसरेकी बात नहीं सुन सक्ता था.

बर्नियर और ख़फ़ीख़ां दोनों लिखते हैं, कि उस वक्त मलिक जीवनपर लोग पत्थर और नालोंका कीचड़ व पाख़ानह, पेशाब वग़ैरह फेंकते थे; लेकिन् उस शाहज़ादहको क़ैदसे छुड़ानेकी कोशिशके एवज़ यह शोर और फ़साद दाराकी मौतका जल्दी सबब हुआ, कि उसे ख़िज़्राबाद बाग़में क़ैद किये जानेबाद नज़रबेग चेलेके हाथसे मरवाडाला. आलमगीरने उसका सिर मंगवाकर देखा, और दिखावेके लिये रोया; इसके बाद सिपिहर शिकोहको क़ैद करके ग्वालियरके क़िलेमें भेज दिया, और मलिक जीवनको इन्आम देकर घरकी रुख़्सत दी; लेकिन् लुटेरोंने उसका माल अस्बाब लूटकर रास्तेमें ही मारडाला. दाराशिकोहका बड़ा बेटा सुलैमांशिकोह श्रीनगरके राजा पृथ्वीसिंहके पास जारहा, जहां हिमालयकी सख़्त झाड़ियोंमें आलमगीरकी फ़ौजका कुछ क़ाबू न चला, लेकिन् आंबेरके राजा जयसिंहके लिखनेसे राजा पृथ्वीसिंहने उसे पकड़वा दिया. इस शाहज़ादहको भी बादशाहने क़ैद करके ग्वालियरके क़िलेमें भेजा. शुजाअ्के पीछे मीर जुम्ला लगा हुआ था, वह शाहज़ादह अपने कुटम्ब समेत अराकानके राजा त्सान्डाथो धम्मा (१) के पास किश्तियोंमें सवार होकर जा पहुंचा. लफ्टिनेण्ट कर्नेल अलेकज़ेण्डर डऊ अपनी किताबकी तीसरी जिल्दके ३४८ वें पृष्ठमें लिखते हैं, कि शाहज़ादह शुजाअ् १५०० सवारोंके साथ ढाकेसे ब्रह्मपुत्रको उतरकर आसाम और त्रिपुराके जंगल छानता हुआ अराकानमें पहुंचा; लेकिन् बर्नियर, जार्ज फ़ार्स्टर और फ़ाइचकी रायसे किश्तियोंके रास्ते जाना सहीह मालूम होता है; अराकानके राजाने शुजाअ्की बेटीसे शादी करना चाहा, जिससे नाराज़ होकर शाहज़ादहने उस ज़िलेके बहुतसे मुसल्मानोंको मिलाकर राजापर हम्ला करनेका इरादह किया, लेकिन् इस भेदके खुलजानेसे शुजाअ् मारा गया, और अराकानके राजाने ज़बर्दस्तीसे शाहज़ादीके साथ विवाह करलिया, जिसपर शुजाअ्के शाहज़ादोंने दोबारा फ़साद उठाना चाहा, इन सबके सिर कुल्हाड़ोंसे काटेगये; लेकिन् दिल्ली और आगरेमें

---

(१) इस राजाका नाम ब्रिटिश ब्रह्माके चीफ़ कमिश्नर लेफ्टिनेण्ट कर्नेल एलबर्ट फ़ाइचने अपनी ब्रह्माके मुल्ककी तवारीख़की पहिली जिल्दके ६३ वें पृष्ठके नोटमें लिखा है. फ़ाइच साहिबने भी दूसरा बयान तो बर्नियरकी किताबसे ही लिया है, लेकिन् इस राजाका नाम बर्नियरको नहीं मिला था; उन्होंने दर्याफ़्त करके लिखा है.

इस बातकी ख़बर न मिलनसे शुजाऋके हिन्दुस्तानमें आनेकी झूठी अफ़्वाहें वर्षोंतक उड़ती रहीं.

हिज्री १०७० ता० २५ जमादियुल अव्वल [विक्रमी १७१६ फाल्गुण कृष्ण ११ = ई० १६६० ता० ६ फ़ैब्रुअरी] को शायस्तहख़ां, अमीरुल उमरा, बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ शिवा भोंसलाको दबानेके लिये औरंगाबादसे चढ़ा, क्योंकि शिवा ने अह्मदनगरके कई ज़िलोंमें क़ब्ज़ा करलिया था, क़िला सूपा घेरागया; लेकिन् शिवा पहिलेसे निकल गया था, शायस्तहख़ांने क़ब्ज़ा करके जादवरावको क़िलेदार बनाया. फिर बारामतीके क़िलेको जा दबाया, और नीरा नदीके तीरपर राजगढ़के ज़िलोंको बर्बाद करता हुआ शेवापुरके पास पहुंचा, जहां महाराजा रायसिंह भीमसिंहोतसे रसद लानेपर मरहटी फ़ौजका मुक़ाबला हुआ, सर्फ़राज़ख़ां फ़ौज लेकर मददको पहुंच गया, जिससे महाराजाने फ़त्ह पाई.

जब कि औरंगज़ेब दक्षिणसे फ़ौज लेकर महाराजा जशवन्तसिंहके मुक़ाबलेपर नर्मदाकी तरफ़ चला, उस वक्त बीकानेरका राव कर्णसिंह अलहदह होकर अपने वतन चला गया था, और शाहज़ादोंकी लड़ाईमें किसीका शरीक नहीं हुआ; उसपर फ़ुर्सत पाकर आलमगीरने अपने सर्दार अमीरख़ांको फ़ौज समेत भेजा, जो उसको हिज्री १०७१ ता० ४ रबीउस्सानी [वि० १७१७ मार्गशीर्ष शुक्ल ६ = ई० १६६० ता० ९ डिसेम्बर] को बादशाही दर्गाहमें ले आया, और उसके क़ुसूर मुआफ़ होकर कुछ अर्से बाद तीन हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब दिया गया, और दक्षिण जानेका हुक्म हुआ. इसी वर्षमें आंबेरके राजा जयसिंह कछवाहेको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और पांच लाखकी जागीर दी; उसने उन्नीस घोड़े और कुछ जड़ाऊ हथियार नज़ किये. इन्हीं दिनोंमें चंपत बुंदेलेने लूट मार शुरू की, जिसको राजा सुजानसिंह बुंदेलेके राजपूतोंने मार डाला, और उसका सिर बादशाहके पास भेजदिया.

इसी वर्षमें शाहज़ादह मुहम्मद मुअज़्ज़मकी शादी कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी दूसरी बेटीके साथ हुई, और दक्षिणमें एक घाटीसे निकलती हुई बादशाही फ़ौजपर तीन हज़ार सवार मरहटोंने हम्ला किया, लेकिन् बूंदीके राव भावसिंह हाड़ाने बड़ी बहादुरीके साथ रोका. फिर तलकोकनपर क़ब्ज़ा करके लड़ता भिड़ता हिज्री ता० २२ शव्वाल [वि० १७१८ आषाढ़ कृष्ण ८ = ई० १६६१ ता० २० जून] को क़िले चाकनाके पास जा पहुंचा; इस क़िलेको ५६ दिनकी लड़ाईके

बाद हिज्री ता० १७ ज़िल्हिज [वि० भाद्रपद कृष्ण ३ = ई० ता० १३ ऑगस्ट] को फ़त्ह किया. बादशाही फ़ौजके २६८ अफ्सर व सिपाही मारे गये, और ६०० ज़ख्मी हुए. इस लड़ाईमें बूंदीके राव भावसिंह हाड़ा, टोडाके राजा रायसिंह सीसोदिया, विजयसिंह (१) सीसोदिया, जो उदयपुरकी फ़ौजका अफ्सर था, वीरमदेव (२) सीसोदियाने बड़ी बहादुरी दिखलाई. क़िला परिन्दा भी लेलिया गया.

हिज्री १०७२ ता० ५ जमादियुल अव्वल [वि० १७१८ पौष शुक्ल ७ = ई० १६६१ ता० २८ डिसेम्बर] को बादशाही फ़र्मान पाकर महाराजा जशवन्तसिंह अहमदाबादसे, दक्षिणमें शायस्तहख़ांके पास पहुंचा, और उसीके साथ शहर पूनामें आगया. बादशाह सख़्त बीमार होगया था, बड़ी मुश्किलसे आराम हुआ. बादशाही हुक्मसे जूनागढ़के फ़ौज्दार कुतुबुद्दीनख़ांने जामनगरके रायसिंहपर चढ़ाई की, जो कि अपने भतीजे शत्रुशालको क़ैद करके राजका मालिक बनगया था. मुक़ाबला होनेपर रायसिंह अपने बेटों और राजपूतों समेत बहादुरीसे लड़कर मारा गया, और शत्रुशालको जामनगरकी हुकूमत मिली. इसी वर्षमें बादशाह पंजाब होकर कश्मीरकी सैरको गये.

हिज्री १०७३ ता० शुरू रमज़ान [वि० १७२० चैत्र शुक्ल ३ = ई० १६६३ ता० १० एप्रिल] को शिवा मरहटा एक आदमीको दुल्हा बनाकर बरातके बहानेसे शहर पूनामें आगया, और रातके वक्त शायस्तहख़ांके मकानमें पहुंचकर कई आदमियोंको जानसे मारा, और शायस्तहख़ांको ज़ख़्मी किया; उसका बेटा अबुलफ़त्हख़ां भी क़त्ल हुआ. और शिवा जीता जागता निकल गया. ख़फ़ीख़ां अपनी किताबमें लिखता है, कि मेरा बाप उस वक्त शायस्तहख़ांके पास मौजूद था. इस फ़सादके होनेसे आलमगीरने नाराज़ होकर शायस्तहख़ांको बंगालेकी सूबेदारीपर भेजदिया, और दक्षिणकी सूबेदारी शाहज़ादह मुअज़्ज़मको देकर उस तरफ़ भेजा, शिवाने दक्षिणमें बड़ा ग़द्र मचाकर सूरतको लूट लिया. इन्हीं दिनोंमें मीर जुम्ला अमीरुल उमराका इन्तिक़ाल होगया, जिससे आलमगीर ज़ाहिरा रंजीदह और दिलमें ख़ुश हुआ, क्योंकि उसको ज़ियादह बढ़ा

---

(१) इसकी औलादमें अब धरियावदके रावत् मेवाड़के दूसरे दरजेके सर्दारोंमें हैं.

(२) महाराणा अव्वल अमरसिंहका पोता, सूरजमल्लका बेटा शाहपुरा वाले सुजानसिंह का भाई, बादशाही तीन हज़ारी मन्सबदार जागीरदार था.

हुआ नौकर पसन्द नहीं था. इस बहादुर मीर जुम्लाने आसामके बड़े बिकट मुल्कको बहुत होश्यारी और बहादुरीके साथ फ़त्ह किया था. इस देशमें मुहम्मद तुग़्लक़ दिल्लीके अगले बादशाहने बड़ी भारी फ़ौज भेजी थी; लेकिन् एक भी आदमी जीता वापस नहीं आया. आलमगीर नामह किताबमें आसामका जुग्राफ़ियह उस ज़मानेका लिखा हुआ अच्छा जानकर पाठक लोगोंके देखनेको इस जगह दर्ज किया जाता है.

आसामकी फ़त्ह और वहांकी कैफ़ियत.

जब कि शाहजहांकी बीमारीके सबब शाहज़ादोंमें लड़ाइयां हुईं, और मुल्कमें अब्तरी फैली, तो कूचबिहारके राजा पेमनारायण और आसामके राजा जयध्वजसिंहने बंगालेका सरहदी बादशाही इलाक़ह लूट लिया. इसलिये मुअ़ज़्ज़मखां, ख़ान ख़ानां (मीर जुम्ला) को शाहज़ादह शुजाअ़के अराकानमें भागजाने बाद बादशाह आलमगीरने हुक्म दिया, कि इन दोनोंको आगे बढ़कर पूरी सज़ा दे; ख़ानख़ानां हिज्री १०७२ ता० १८ रबीउ़ल्अव्वल [वि० १७१८ मार्गशीर्ष कृष्ण ४ = ई० १६६१ ता० ११ नोवेम्बर] को कूच करके बहुत जल्द कूचबिहारमें दाख़िल हुआ, और शहरको फ़त्ह करके उसका आलमगीरनगर नाम रक्खा. हिज्री ता० २८ रबीउ़ल्अव्वल [वि० मार्गशीर्ष कृष्ण १४ = ई० ता० २१ नोवेम्बर] को घोड़ा घाटसे चलकर पांच महीनेके अ़र्सेमें दुश्मनोंसे लड़ता तक्लीफ़ें उठाता हुआ, हि० ता० ६ शअ़्बान [वि० १७१९ चैत्र शुक्ल ८ = ई० १६६२ ता० २८ मार्च] को आसामकी राजधानी कड़ गांवमें जा पहुंचा.

राजा भागकर उत्तरी पहाड़ोंमें जा छिपा, और वहांसे सुल्हकी दर्ख्वास्त की, जो मन्ज़ूर न हुई. ख़ान ख़ानांकी तरफ़से हर जगह इन्तिज़ामके वास्ते थाने बिठा दिये गये, लेकिन् बर्सात आनेपर बड़ी तक्लीफ़ हुई; आसामियोंने हम्ला करके कई बादशाही थानोंको उठा दिया. लाचार ख़ान ख़ानांने तीन चार मज़्बूत मक़ामों

पर फ़ौज रखकर बर्सातके दिन पूरे किये. मौसमके दुरुस्त होनेपर बादशाही फ़ौज ने आसामियोंको हर तरफ़ मार भगाया. ख़ानख़ानांका इरादह था, कि बहुत दिनों तक वहां रहकर तमाम इलाक़ह ज़ब्त करले, लेकिन् फ़ौजवालोंने तक्लीफ़ोंके सबब ख़ानख़ानांको वहां छोड़कर बंगालेकी तरफ़ लौट आना चाहा, इस लिये ख़ानख़ानांने मुनासिब समझकर आसामियोंकी तरफ़से सुलहकी दर्ख़्वास्त हिज्री १०७३ ता० ५ जमादियुल आख़र [विक्रमी १७१९ पौष शुक्ल ७ = ई० १६६३ ता० १७ जैन्युअरी] को मन्ज़ूर करली; दो पर्गने बादशाही ख़ालिसेमें रक्खे गये, दो हज़ार २००० तोले सोना, एक लाख अठाईस हज़ार रुपया नक्द, एक सौ बीस हाथी और राजाकी लड़की लेकर ख़ानख़ानांने बंगालेकी तरफ़ कूच किया; लक्खूगढ़, कजली वग़ैरह मक़ामातकी तरफ़से होता हुआ; हिज्री १०७३ ता० २ रमज़ान [विक्रमी १७२० चैत्र शुक्ल ४ = ई० १६६३ ता० ११ एप्रिल] को खिज़्रपुर मक़ामपर वापस आया, जहां सिल (क्षई रोग) की बीमारीसे सख़्त तक्लीफ़ उठाकर मरगया.

इस फ़त्हका हाल बहुत मुख़्तसर यहां लिखागया है, अगर आलमगीरनामह से कुल तर्जमा किया जाता, तो बेफ़ायदह न होता; लेकिन् हमको इतना लिखना कुछ ज़रूर नहीं था, इसलिये थोड़ासा नोट लिखकर ख़ाली जुग्राफ़ियह दर्ज किया है, जिसको पढ़कर सय्याह लोग फ़ायदह उठावें.

मुल्क आसामका जुग्राफ़ियह.
(सन् १०७३ हिज्री.)

मुल्क आसाम बंगालेसे उत्तर और पूर्वकी तरफ़ आबाद है, और ब्रह्मपुत्र नदी, जो हिमालयके पहाड़ोंकी उत्तर तरफ़से निकलकर चीनके मुल्कमें होती हुई आसामके बीच बहकर सुन्दरबनके पास गंगामें मिलती है, उसके उत्तर तरफ़ आसामका जितना देश आबाद है, वह 'उत्तरगोल' कहा जाता है; और दक्षिणी तरफ़का मुल्क 'दक्षिणगोल' के नामसे मश्हूर है. उत्तर गोलकी आख़िरी हद चीनकी तरफ़ 'मरीम ज़मी' क़ौमके पहाड़ों तक, और शुरू हिन्दुस्तानकी तरफ़ गोहाटीसे है. दक्षिणगोलकी पूर्वी आख़िरी हद सदिया गांव तक, और इसका शुरू श्रीनगरके पहाड़ोंसे मिला हुआ है; उत्तरगोलके उत्तरी पहाड़ 'दोला' व 'लामा' नामसे

बोले जाते हैं, और दक्षिणगोलके दक्षिणी पहाड़ 'नामरूप' के नामसे जाने जाते हैं, जो कड़गांवसे ४ मंज़िलकी दूरीपर है.

नामरूपके (१) पहाड़ोंके लोग 'नांग' कहलाते हैं, जो कड़गांवके राजाके मातहत नहीं हैं; और एक दूसरी 'दफ़्ला' कौम है, जो राजा जयध्वजसिंहको बिल्कुल नहीं मानती. वे बाज़े वक्त नज़्दीकी इलाक़ोंको लूट भी लेते हैं.

यह मुल्क दो सौ कोस जरीबी लम्बा गिना जाता है, और चौड़ाई पचास कोसके क़रीब होगी. गोहाटीसे कड़गांवका बीच ७५ कोस, और कड़गांवसे 'ख़ता' का शहर 'आवा' १५ मन्ज़िलपर है, जिसमें पांच मन्ज़िल सख़्त पहाड़ी, और जंगल दस मंज़िलसे कुछ कम है. उत्तरीय हिस्सह बिल्कुल पहाड़ी है. बहुतसी नदियां दक्षिण गोलसे निकलकर ब्रह्मपुत्रमें गिरती हैं. इन सब नदियोंमें से बड़ी नदीका नाम 'धनक' है, वह 'लक्खूगढ़' के पास ब्रह्मपुत्रसे मिलती है. इन दोनों नदियोंके बीचकी ज़मीन क़रीब पचास कोसके सर्सब्ज़ और आबाद है. वहांकी आब व हवा भी अच्छी है, और इस अच्छे ज़िलेकी आख़िरी हदपर बड़ाभारी जंगल हाथियोंके चरनेका है, जहांसे हाथी पकड़े जाते हैं. हाथियोंके चरनेको और भी कई जंगल हैं, और वहांसे भी हाथी गिरिफ़्तार किये जाते हैं. तख़्मीनन ५०० सौ, या छः सौ हाथी साल भरमें पकड़े जासक्ते हैं.

कड़गांवकी तरफ़ 'धनक' नदीके किनारेकी ज़मीन बहुत आबाद और फल फूल वाली है. यह उम्दह ज़मीन 'सेमलगढ़' से कड़गांव तक पचास कोस होगी. इस इलाक़ेमें किसानी घरोंके आसपास फल फूल और मेवेदार दरख़्त बाग़की तरह नज़र आते हैं. इस तरफ़ बर्सातके दिनोंमें पानी बहुत फैलजानेसे एक बन्दके तौर सेमलगढ़से कड़गांव तक एक ऊंचा रास्तह बनाया गया है, जिसके दोनों तरफ़ बांस वग़ैरहके दरख़्त लगा दिये हैं. वहांके ख़ास मेवे आम, नारंगी, कटहल, तुरंज, नींबू, केला, अनन्नास और एक मेवा 'पनियाला' आंवलेकी क़िस्मसे है, जिसका मज़ा आलूचेके मुवाफ़िक़ होता है; नारियल व कालीमिर्च वग़ैरह मुसालहके दरख़्त भी बहुत हैं. वहांके सुर्ख़ सियाह और सिफ़ेद रंगके गन्ने बहुत मीठे और मज़ेदार होते हैं. सोंठमें रेशे नहीं होते, नागरबेलके पान भी बहुत होते हैं. घास वग़ैरह व नाजकी क़िस्म उस मुल्कमें बहुत अच्छी होती है, वहांकी ज़मीन इन चीज़ोंको ज़ियादह ताक़त देती है, और कड़गांवके आस पास जंगली अनार व ज़र्द आलू भी होते हैं. इस देशकी उम्दह पैदावारकी चीजें चांवल और उड़द हैं, और

---

(१) शायद इसका सहीह नाम कामरूप होगा, जो हिन्दुस्तानमें जादू वग़ैरहके बाबत ख़ास जगह मश्हूर है,

मसूर, गेहूं, जौ नहीं होता; रेशम अव्वल दरजेका तय्यार होता है; लेकिन् वे लोग अपनी ज़रूरतके सिवाय नहीं बनाते. मख़मल और 'टाटबन्द' कपड़े (१) वहां अच्छे होते हैं.

नमकको यह लोग ज़ियादह चाहते हैं, लेकिन् वहां इसकी पैदाइश बहुत कम है, थोड़ासा पहाड़ोंकी जड़ोंमें बनता है, जो कड़वा और ख़राब होता है; ज़ियादह कड़वा और ख़राब नमक केलोंके दरख़्तोंसे बनाते हैं; और जहां 'नांग' क़ौम आबाद है, वहां 'अगर' की लकड़ी बहुत होती है. वे लोग इस लकड़ीको नमकके बदलेमें आसामियोंको देते हैं, यह नांग लोग आदमियतसे ख़ारिज नंगे धड़ंगे रहते हैं, कुत्ता, बिल्ली, सांप, चूहा, चींटी, टिड्डी वग़ैरह, जो मिले, खालेते हैं. 'नामरूप' 'सदिया' और लक्खूगढ़के पहाड़ोंमें भी पानीमें डूबनेवाला 'अगर' पैदा होता है, और कस्तूरी वाले हिरन भी उन पहाड़ोंमें बहुत होते हैं. इस मुल्कमें उत्तरगोलकी ज़मीन अच्छी आबाद है, जिसमें काली मिर्च और खाने पीनेकी चीज़ें दक्षिण गोलसे ज़ियादह होती हैं. दक्षिण गोलकी तरफ़ दुश्वार गुज़ार पहाड़ व जंगल ज़ियादह हैं; इस लिये वहांके राजा लोगोंने दक्षिण गोलमें अपनी राजधानी मुक़र्रर की है; उत्तर गोलमें ब्रह्मपुत्र और उत्तरी पहाड़ोंके बीचकी चौड़ी ज़मीन कमसे कम पन्द्रह कोस, ज़ियादहसे ज़ियादह पैंतालीस कोस अर्ज़में सर्द और बर्फ़दार है.

उत्तरगोलके पहाड़ी आदमी तन्दुरुस्त और बदनके मज़्बूत व शक्लके रोब्दार होते हैं, और सर्द मुल्कके निवासियोंकी तरह उनके भी रंग सुर्ख़ी माइल सिफ़ेद होते हैं; क़िले जमधर और गोहाटीकी तरफ़ भी पहाड़ी इलाक़ा है, जिसको टूंगका ज़िला कहते हैं. इन कई पहाड़ोंके रहने वाले शक्ल सूरतमें एकसे होते हैं, बाज़ोंकी पहिचान ख़ान्दानी लफ़्ज़ोंसे होती है. इन पहाड़ोंमें कस्तूरी वाले हिरन और छोटे घोड़े यानी टांगन भी पाये जाते हैं. वहांकी नदियोंका बालू धोनेसे सोना, चांदी निकलता है. बाज़ोंके क़ौलसे बारह हज़ार, और बाज़ोंके कलामसे २०००० आसामी रेता धोकर सोना, चांदी, निकालनेमें लगे रहते हैं; और फ़ी आदमी एक तोलह सोना सालानह राजाको देना पड़ता है.

उमूमन आसामके लोग ख़राब तरीक़े वाले और बे मज़्हब हैं, तबीअ़तकी ख़्वाहिशके मुवाफ़िक़ खाने पीनेमें रोक टोक नहीं, और किसीके हाथकी चीज़ खानेमें पर्हेज़

---

(१) 'टाटबन्द' एक क़िस्मका रेशमी कपड़ा है, जिससे ख़ेमे और क़नातें बनाई जाती हैं.

नहीं रखते; सिवाय आदमीके मांसके और किसी जानदारका गोश्त नहीं छोड़ते; मरे हुए जानवरोंको भी खा लेते हैं; घी उनको बिल्कुल नहीं मिलता, और उसके देखनेसे भी नफ़्रत करते हैं; बल्कि उसकी खुशबूसे घबराते हैं. औरतोंमें पर्देकी रस्म राजासे ग़रीब तक किसीमें नहीं, और वहांके लोग चार या पांच औरतोंसे शादी करते हैं; औरतोंको बेचना, मोल लेना, बदलना, उनका आम रिवाज है. सिर, डाढ़ी, और मूंछ मुंड़वाते और नहीं मुंड़वाने वालेसे नफ़्रत व हिक़ारत करते हैं, ज़बान उनकी बंगालीसे जुदी है. मज़बूती, ज़बर्दस्ती, दिलेरी व बेख़ौफ़ी उनकी सूरतसे टपकती है; बहुतसी आदतें चौपाये और जंगली जानवरोंसे मिलती हैं, लड़ाई करने वाले और बड़े मिहनती, व मक्कार और फ़सादी होते हैं; रहमदिली, सचाई, मुहब्बत, शर्म और नेक चलनी उस क़ौममें नहीं होती. एक टाट सिरपर और लुंगी कमरमें लपेटते हैं; और एक चादर कंधेपर भी रखते हैं. सिवाय इसके जूता वग़ैरह हिफ़ाज़तकी चीज़ कुछ भी नहीं रखते. चूने पत्थरका काम सिवाय कड़गांवके दर्वाज़े व मन्दिरोंके किसी जगह नहीं है.

अमीर ग़रीब कुल अपने घरोंको लकड़ी, बांस और घाससे बनाते हैं. राजा और अमीर लोग आदमियोंके कंधेपर तख़्तसवार चलते हैं; और दूसरे आदमी डोलियोंमें. चौपाये जानवरोंमें घोड़ा, ऊंट, गधा वहां बिल्कुल नहीं होता; बाहरसे लेजानेमें गधेको ज़ियादह पसन्द करते हैं; और ऊंटको देखकर बड़ा तअ़ज्जुब करते हैं. घोड़ेसे बहुत डरते हैं, अगर एक सवार १०० हथियारबन्द आसामियोंपर हम्ला करे, तो जान बचाकर भागें, या हथियार डालकर क़ैद होनेको तय्यार हों. पैदल सिपाही उनसे दो चन्द हों, तो भी ख़ौफ़ नहीं रखते; उस देशमें सबसे पुरानी दो क़ौमें हैं— एक 'आसामी' दूसरी 'कलतानी', कलतानी ज़ियादह इज़्ज़तदार समझे जाते हैं, लेकिन् लड़ाई, सख़्ती और मज़्बूतीमें आसामी ज़ियादह मश्हूर हैं. छः सात हज़ार आसामी सिपाही हथियार बांधे राजाके महलोंकी चौकीदारीपर हमेशह तय्यार रहते हैं, और राजाका भी आसामियोंपर भरोसा ज़ियादह है.

इस मुल्कके आदमियोंके शस्त्र ढाल, तलवार, बन्दूक़, तीर, बर्छा और बांस हैं. क़िले और किश्तियोंमें तोपें व राम चंगियें भी बहुत हैं; इस फ़नमें वह होश्यार हैं. राजा, उसके सर्दार व हाकिम लोग मरते हैं, तो उनको एक तहख़ानह खोदकर उसके अन्दर रखते हैं; लेकिन् उसी तहख़ानहमें उस अमीरके साथ

शादी कीहुई औरतें, और घरमें डाली हुई पासबानें, नौकर, हाथी और खाने पीने व सोने बैठने और खुशीकी चीज़ें सोने चांदी वगैरहकी, और रौशनी व बहुतसा तेल उसी गड्ढेमें रखकर उस तहखानहकी छतको मज्बूत लकड़ियोंसे पाट देते हैं; वे लोग समझते हैं, कि यह सब सामान उस मुर्देको दूसरी दुन्यामें मिलेगा. कई तहखानों को मीर जुम्लाकी फ़ौजके सिपाहियोंने खोद डाला, जिसमेंसे ९०००० रु० का सोना चांदी मिला था. शहर 'कड़गांव' के चार दर्वाज़े पत्थर और चूनेसे बने हैं, हरएक दर्वाज़ेसे राजाके महल तीन कोसके फ़ासिलेपर हैं; शहरके गिर्द बांस और लकड़ियोंसे दीवार बनाई गई है; शहरके अन्दर भी बर्सातमें चलनेके लिये ऊंची सड़कें बनी हुई हैं; हर एक घरके बाहर एक बगीचा और खेत होता है; इसीसे इस शहरका घेरा बहुत बड़ा है. राजाके महल 'दीखू' नदीके किनारेपर हैं, जो शहरके अन्दर बहती है; हर एक जगह छोटे छोटे बाज़ार हैं, जिनमें पान बेचने वाले बैठते हैं, दूसरे व्यापारियोंकी दूकानें वहां नहीं होतीं; क्योंकि वहांके अमीर ग़रीब खाने पीनेका सामान साल भरके लिये एक दम इकट्ठा करलेते हैं, और राजाके महलों के गिर्द एक ऊंची सड़क बनाकर किनारोंपर बांस लगाये गये हैं, जिसके गिर्द खन्दक़ है, जो हमेशह पानीसे भरी रहती है; इस सड़कका घेरा एक कोस और चौदह जरीबका है. राजाके रहनेके मकान लकड़ी, बांस और घाससे बहुत ऊंचे बनाये गये हैं; एक दीवानखानह, जिसकी लंबाई १५० गज़, और चौड़ाई ४० गज़ है, उसमें ६८ थम्बे लगे हैं; हर एक थम्बेका घेरा चार गज़का है; बाज़ जगह इस मकान में चूनेकी घुटाई भी बहुत साफ़ कीगई है- लिखा है, कि बारह हज़ार मज्दूर और ३००० खातियोंने इस दीवानखानहको दो वर्षमें तय्यार किया था.

राजाकी सवारीके वक्त ढोल और झांज बजाया जाता है; इस बादशाहका लक़ब 'स्वर्गी' (बिहिश्ती) वहां वाले बोलते हैं, जिसका यह मत्लब है, कि उनके खयालके मुवाफ़िक़ उस राजाके बुज़ुर्ग स्वर्गवासियोंपर हुकूमत करते थे, उनमेंसे एक सोनेकी सीढ़ी लगाकर सैर करनेको इस ज़मीनपर उतरा, और उसको यहां रहना पसन्द आया, जिसकी औलाद यहांपर राज करने लगी; उसी वंशमें यह राजा 'जयध्वजसिंह' है. ऐसे ऐसे मग़रूर करनेके लिये खयाली क़िस्से वहां बहुत जारी हैं. हमने यह अजीब हाल दो सौ बीस वर्ष पेश्तरका पाठकोंके पढ़नेको लिखा है.

हिज्री १०७४ मुहर्रम [वि० १७२० श्रावण = ई० १६६३ ऑगस्ट] में बादशाह कश्मीरकी सैरसे दिल्लीकी तरफ़ वापस लौटा, और ईरानके शाह अब्बास के नाम खत और सात लाख रुपयेका सामान तर्बियतखांके हाथ भेजा; क्योंकि ईरानकी

तरफ़से भी एक एलची बहुतसे तुहफ़े लाया था. इसीतरह मुस्तफ़ाख़ां एलची बनाकर तूरानको भेजा गया. दक्षिणके मुल्कमें महाराजा जशवन्तसिंहसे बादशाहकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ काम न हुए; इसलिये उसे वापस बुलाकर आंबेरके राजा जयसिंहको दिलेरख़ां, दाऊदख़ां, राजा रायसिंह सीसोदिया, कुबादख़ां, राजा सुजानसिंह बुंदेला वग़ैरह समेत चौदह हज़ार फ़ौज देकर दक्षिणकी तरफ़ रवानह किया. कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी बेटी से मुहम्मद मुअज़्ज़मके एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम मुहम्मद अज़ीम रक्खा गया.

हिज्री १०७५ शव्वाल [विक्रमी १७२२ वैशाख = ई० १६६५ एप्रिल] को दक्षिणमें राजा जयसिंह और दिलेरख़ांने शिवा मरहटेपर चढ़ाई करके बहुतसे क़िले, पूरन्धर और रुद्रमाल वग़ैरह दबा लिये. शिवाने लाचार होकर ताबेदारी इख़्तियारकी; तेईस क़िले बादशाही आदमियोंको हवाले करके बे हथियार राजासे मिलनेको चला आया; राजाने दिलेरख़ांके पास भेज दिया, और सब हाल बादशाहके हुज़ूरमें लिखकर उसके नाम मिहर्बानीका फ़र्मान मंगा लिया. फिर राजा जयसिंहने बीजापुरका इलाक़ह लूटना शुरू किया; इस सबबसे कि आदिलशाहने आलमगीरके हुज़ूरमें मामूली तुहफ़े नहीं भेजे थे, और कुछ शिवाको मदद दी थी. बर्सात आजानेके सबब बादशाही फ़ौजोंने अपने इलाक़हमें आकर आराम लिया.

हिज्री १०७६ [विक्रमी १७२२ = ई० १६६५] में कश्मीरके सूबेदार सैफ़ख़ांने छोटे तिब्बतके रईस मुरादख़ांकी मददसे बड़े तिब्बतके जागीरदार 'दलदल नमजल' पर फ़त्ह पाकर उस मुल्कमें बादशाहके नामका ख़ुत्बह और सिक्कह जारी किया.

हिज्री ता० ७ रजब [विक्रमी पौष शुक्ल ९ = ई० १६६६ ता० २५ जैन्युअरी] को शाहज़ादह मुहम्मद मुअज़्ज़म दक्षिणसे हाज़िर हुआ. हिज्री ता० २६ रजब [विक्रमी माघ कृष्ण १३ = ई० ता० १४ फ़ैब्रुअरी] को शाहजहां, जो आगरेके क़िलेमें अपने दिन काटता था, पेशाब बन्द होनेकी बीमारीसे गुज़र (१) गया; उसको उसकी बेटी जहांआरा बेगमके कहनेसे रअ़्द अन्दाज़ख़ां वग़ैरह लोगोंने मुम्ताज़ महलके मक़्बरहमें दफ़्न कर दिया. इस मौक़ेपर आलमगीर दिल्लीकी तरफ़ था, अपने बापके जीते जी शर्मके मारे उसके साम्हने नहीं गया. इन्हीं दिनोंमें बंगालेके सूबेदारने चाटगांवका क़िला अराकानके इलाक़हमेंसे फ़त्ह करलिया, इस लड़ाईमें कप्तान मूर वग़ैरह फ़रंगियोंने, जो सौदागरी सामान जहाज़ोंपर लाये थे, बादशाही फ़ौजको मदद दी; और इन्आम पाया.

---

(१) शाहजहांने इकत्तीस वर्ष बादशाहत की थी, और आठ वर्ष नज़रबन्द रहकर ७५ वर्षसे ज़ियादह उम्रमें इन्तिक़ाल किया.

हिज्री १०७६ ता० १ शव्वाल [विक्रमी १७२३ चैत्र शुक्ल ३ = ई० १६६६ ता० ७ एप्रिल] को मिर्ज़ा राजा जयसिंहने शिवा मरहटेको दक्षिणसे आगरे भेज दिया, लेकिन् बादशाही दर्बारमें उसको पांच हज़ारी मन्सबदारोंकी लैनमें खड़ा करदिया, जिससे वह रंजीदह होकर चालाकीके साथ बादशाही पहरेमें से निकल भागा. आलमगीरनामह और मआसिरेआलमगीरी किताबोंमें लिखा है, कि उसपर बिल्कुल पहरा न था, बादशाही खौफ़से भेष बदलकर अपने बेटे शम्भा समेत निकल गया.

हिज्री १०७७ सफ़र [विक्रमी १७२३ श्रावण शुक्ल = ई० १६६६ ऑगस्ट] में तर्बियतखांकी अर्ज़ीसे, जो एलचीगरीपर ईरान भेजा गया था, मालूम हुआ, कि ईरानका बादशाह अब्बास काबुलपर चढ़ाई करना चाहता है; इसलिये शाहज़ादह मुहम्मद मुअज़्ज़मको महाराजा जशवन्तसिंह वगैरह समेत बीस हज़ार फ़ौज और तोपखानह देकर उस तरफ़ रवानह किया. तर्बियतखांको ईरानसे वापस आनेपर एलचीगरीमें नालायक़ समझकर नज़र बन्द करदिया. इन दिनोंमें राजा जयसिंहने शिवाके दामाद नेतूको कैद करके बादशाही दर्गाहमें भेज दिया, जो मुसल्मान होकर कई वर्ष बाद फिर दक्षिणको भाग गया. हिज्री १०७७ ता० १० रमज़ान [विक्रमी १७२३ फाल्गुण शुक्ल १२ = ई० १६६७ ता० ७ मार्च] को शाहज़ादह कामबख़्श पैदा हुआ. इन दिनोंमें शाहज़ादह मुअज़्ज़म दक्षिणकी सूबेदारीपर भेजा गया, जिसके साथ महाराजा जशवन्तसिंह, राजा रायसिंह सीसोदिया और सफ़शिकनखां तईनात किये गये, और राजा जयसिंहको दक्षिणसे वापस आनेका हुक्म भेजा गया. इस वर्षमें यूसुफ़ज़ई क़ौमके पठान लोगोंने पेशावरकी तरफ़ लूट मार शुरू की, अटकके फ़ौज्दार कामिलखांने हम्ला करके उनको पहाड़ोंमें भगा दिया.

हिज्री १०७८ ता० २८ मुहर्रम [विक्रमी १७२४ श्रावण कृष्ण १४ = ई० १६६७ ता० २० जुलाई] को आंबेरका मिर्ज़ा राजा जयसिंह दिल्लीको आता हुआ बुर्हानपुरमें मरगया. उसके बेटे रामसिंहको राजाका खिताब और चार हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया गया. इन्हीं दिनोंमें बीकानेरके राव करणपर, जो दक्षिणमें तईनात था, बादशाहने नाराज़ होकर बीकानेरकी रियासत उसके बेटे अनूपसिंहको दे दी. काश्ग़रका बादशाह अब्दुल्लाहखां अपने बेटे बुलबरसखांसे शिकस्त खाकर हिन्दुस्तानमें चला आया, जिसका आलमगीर बादशाहने खातिरदारीके साथ रोज़ीना मुक़र्रर कर दिया. इन दिनोंमें अर्ज़ हुआ, कि आसामी लोगोंने बंगालेकी सर्हद गोहाटी मक़ामपर आकर लूट मार शुरू की है. इसपर आंबेरका

राजा रामसिंह, नुस्रतख़ां, केसरीसिंह भुरटिया, रघुनाथसिंह मेड़तिया, बीरमदेव सीसोदिया सहित उस तरफ़ भेजा गया.

हिज्री १०७८ शव्वाल [विक्रमी १७२५ चैत्र शुक्ल = ई० १६६८ मार्च] को महाबतख़ां अहमदाबादसे बदलकर काबुलकी सूबेदारीपर भेजा गया. इन दिनोंमें हुक्म दिया गया, कि नाचने गाने वाले सलामीके सिवाय अपना काम छोड़दें. हिज्री ८ शव्वाल [विक्रमी चैत्र शुक्ल १० = ई० २२ मार्च] को काश्गरका ख़ारिज बादशाह, जाफ़रख़ां वज़ीरके साथ दर्बारमें आया, तख़्तवाले कटहरेके पास आकर बैठ गया, थोड़ी देर बाद आलमगीर बादशाह महलसरासे निकले; अब्दुल्लाह शाह उनकी तरफ़ चला, थोड़ी दूरसे झुककर सलाम किया; आलमगीर बादशाहने सीने तक हाथ उठाया, और पास पहुंचनेपर हाथ मिलाया; मामूली मिज़ाजपुर्सीकी बातें होकर रुख़्सत दी गई. हिज्री पहिली ज़िल्हिज [विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल ३ = ई० ता० १५ मई] को आसामके राजाकी बेटी दो लाख रुपये मिहरके साथ शाहज़ादह आज़मको व्याह दी गई.

हिज्री १०७९ [विक्रमी १७२५ = ई० १६६८] में इलाहाबाद और अवधके सूबेदारोंको हुक्म भेजा गया, कि जो लोग लावारिस बच्चोंको हीजड़ा बनाकर बेचते हैं, वे गिरिफ़्तार कर जन्म क़ैद रक्खे जावें. इसी वर्षसे सालगिरहका वज़्न याने तुलादानकी रस्म मौकूफ़ कीगई. हि० ता० १० शअ्बान [वि० पौष शुक्ल १२ = ई० १६६९ ता० १५ जैन्युअरी] को मुहम्मद आज़मकी शादी दाराशिकोहकी बेटी जहांज़ेब बानूके साथ कीगई. इसी वर्षमें हुक्म दिया गया, कि मुसल्मान लोग ज़र्दोज़ीका लिबास न पहनें– बनारस ठट्ठा और मुल्तानमें ब्राह्मण लोग अपनी किताबें, जो हिन्दू और मुसल्मानोंको पढ़ाते थे, उनकी कार्रवाई रोक दी गई. गवय्ये लोगोंका सलामको आना मौकूफ़ हुआ.

हिज्री १०७९ ता० २१ ज़िल्हिज [विक्रमी १७२६ ज्येष्ठ कृष्ण ७ = ई० १६६९ ता० २२ मई] को मथुराका फ़ौज्दार अब्दुन्नबीख़ां फ़सादियोंके मुक़ाबलेपर गोलीसे मारा गया; मथुरामें मन्दिरकी जगह बड़ी मस्जिद इसीकी बनवाई हुई है. इसके एवज़ सफ़्शिकनख़ांको वहां भेजा, और बीरमदेव सीसोदियाको उसका मददगार बनाया. मुल्क माचीनका एलची अब्दुलवह्हाब हाज़िर हुआ, उसे ख़िल्अ़त दिया गया. हिज्री १०८० मुहर्रम [विक्रमी १७२६ ज्येष्ठ शुक्ल = ई० १६६९ जून] में रघुनाथसिंह सीसोदियाको, जो महाराणासे जुदा होकर हुजूरमें आया, एक

हज़ारी ज़ात और तीन सौ सवारका मन्सब दिया गया. आंबेरका राजा रामसिंह पांच हज़ारी किया गया. काशी विश्वनाथका मन्दिर तोड़ दिया गया. इस वर्षमें अनाजका भाव यह थाः- सूखदास चांवल १४ सेर, गेहूं ३५ सेर, चना एक मन दो सेर, घी ४ सेर. इसी सन् हिज्री ता० २ जमादियुल् अव्वल [विक्रमी आश्विन शुक्ल ४ = ई० ता० २९ सेप्टेम्बर] को गिरधरदास सीसोदिया (१) दिल्लीमें लाहोरी दर्वाज़ेके पास यक्काताज़खांसे लड़कर मारा गया, और उसका पोता घासीराम ज़ख़्मी हुआ. यक्काताज़खांके भी पांच ज़ख़्म लगे, और भी कई आदमी घायल हुए. हिज्री ता० १ शअ्बान [विक्रमी पौष शुक्ल ३ = ई० ता० २५ डिसेम्बर] को बादशाहसे अर्ज़ हुआ, कि कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी बेटीसे मुहम्मद मुअज़्ज़म के लड़का पैदा हुआ; हुक्म दिया, कि उसका नाम 'दौलतअफ़्ज़ा' रक्खा जावे. हिज्री रमज़ान [विक्रमी माघ शुक्ल = ई० १६७० जैन्युअरी] में केशवरायका मन्दिर, जो राजा नरसिंहदेव बुंदेलेने जहांगीरके वक़ मथुरामें छत्तीस लाख रुपयेकी लागतसे बनवाया था, बादशाहके हुक्मसे तोड़ दिया गया. हिज्री ता० २८ ज़िल्हिज [विक्रमी १७२७ ज्येष्ठ कृष्ण १४ = ई० १६७० ता० १९ मई] को शाहज़ादी बद्रुन्निसा बेगमके मरनेकी ख़बर मिली, जो शाहज़ादह मुअज़्ज़मकी सगी बहिन थी. हिज्री ता० २५ ज़िल्हिज [विक्रमी १७२७ ज्येष्ठ कृष्ण ११ = ई० १६७० ता० १६ मई] को जाफ़रखां वज़ीर मर गया.

हिज्री १०८१ ता० २७ रबीउ़लअव्वल [विक्रमी १७२७ भाद्रपद कृष्ण १३ = ई० १६७० ता० १४ ऑगस्ट] को शाहज़ादह मुहम्मद आज़मकी बीबी जहांज़ेबबानू बेगमके पेटसे शाहज़ादह पैदा हुआ, जिसका नाम बेदारबख़्त रक्खा गया. हिज्री ता० २७ जमादियुस्सानी [वि० मार्गशीर्ष कृष्ण १३ = ई० ता० ११ नोवेम्बर] को शाहज़ादह मुअज़्ज़मकी बीबी नूरुन्निसा बेगमके पेटसे एक शाहज़ादह पैदा होनेकी ख़बर मिली, उसका नाम रफ़ीउ़श्शान रक्खा गया. हिज्री ता० २५ रजब [विक्रमी पौष कृष्ण ११ = ई० ता० ८ डिसेम्बर] को काबुलके सूबेदार महाबतखां व बीकानेरके राजा अनोपसिंह वगैरहको खिल्अ़त, घोड़े देकर दक्षिणकी तरफ़ भेजा. हिज्री १०८२ ता० २२ मुहर्रम [विक्रमी १७२८ ज्येष्ठ कृष्ण ८ = ई० १६७१ ता० १ जून] को जोधपुरका महाराजा जशवन्तसिंह

---

(१) यह शक्तावत वंशका सर्दार था, जिसकी औलादमें बावलके रावत् जावदके पर्गने और सेंधियाके इलाक़ेमें टांकेदार हैं.

जम्रोदकी थानेदारीपर भेजा गया, इसी सन् और संवत्के हिज्री ता० १७ जमादियुल अव्वल [विक्रमी आश्विन कृष्ण ३ = ई० ता० २२ सेप्टेम्बर] को बादशाहकी सगी बहिन 'रौशन आरा' मर गई; बादशाहको यह बहुत प्यारी थी. इसी वर्षकी ता० २६ शअ्बान [विक्रमी पौष कृष्ण १२ = ई० ता० २८ डिसेम्बर] को शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मके बेटा हुआ, और जवांबख़्त नाम रक्खा गया. हिज्री ता० २६ ज़ीक़ाद [विक्रमी चैत्र कृष्ण १२ = ई० १६७२ ता० २५ मार्च] को "सत्य नामी" मज़्हबको मानने वाले लोगोंने बग़ावत की, जिसके दूर करनेके लिये रअ़्दअन्दाज़की फ़ौज और तोपख़ानह समेत नारनौलकी तरफ़ भेजकर फ़साद मिटाया गया; इस झगड़ेमें दोनों तरफ़के बहुतसे आदमी मारे गये.

हिज्री १०८३ [विक्रमी १७२९ = ई० १६७२] में ख़ैबरके पठानोंने बल्वा किया, सूबेदार मुहम्मद अमीनख़ां शिकस्त खाकर पिशावरको भागा, बहादुरख़ां कूका दक्षिणकी सूबहदारीपर भेजा गया, और उसको ख़ानेजहां बहादुर ख़िताब दिया गया. हिज्री ता० १० ज़िल्हिज [विक्रमी १७३० चैत्र शुक्ल १२ = ई० १६७३ ता० ३१ मार्च] को बादशाह ईदकी नमाज़ पढ़कर वापस आते थे, कि एक दीवाने आदमीने लकड़ी फेंकमारी, जो तख़्तमें लगकर बादशाहके पांवोंमें गिरी; गुर्ज़बर्दारों ने उसे पकड़कर हाज़िर किया; बादशाहने हुक्म दिया, कि छोड़ दिया जावे.

राजा रायसिंह, सीसोदियाके मरनेपर उसके बेटे मानसिंह, महासिंह, अनो-पसिंह, हाज़िर हुए; तीनोंको ख़िल्अ़त दियेगये. हिज्री १०८४ [विक्रमी १७३० = ई० १६७३] में कीर्तिसिंह कछवाहा दक्षिणमें मरगया. हिज्री १०८५ ता० ११ मुहर्रम [विक्रमी १७३१ चैत्र शुक्ल १३ = ई० १६७४ ता० १९ एप्रिल] को बादशाहने हसन अब्दालके पठानोंका फ़साद मिटानेके लिये कूच किया. हिज्री ता० १ शव्वाल [विक्रमी पौष शुक्ल २ = ई० ता० ३० डिसेम्बर] को बादशाहने अपने १८ वें जुलूसपर शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तानको, जो क़ैदसे छूटगया था, बीस हज़ारी ज़ात और दस हज़ार सवारका मन्सब व कंठी और ख़िल्अ़त दिया. राणा राजसिंहको ख़िल्अ़त और फ़र्मान भेजा गया.

हिज्री १०८६ ता० ९ जमादियुल अव्वल [विक्रमी १७३२ श्रावण शुक्ल ११ = ई० १६७५ ता० ३ ऑगस्ट] को मुहम्मद आज़मके एक बेटा पैदा हुआ, जिसका नाम 'सिकन्दर शान' रक्खा गया. इन दिनोंमें मक्कहसे अब्दुल्लाहख़ां काश्ग़रीके मर जानेकी ख़बर आई. बादशाही सर्कार और शाहज़ादोंके ज्योतिषियोंसे मुचल्का लिया गया, कि नये वर्षकी यंत्री (ज़ायचह) न बनावें. फिर बादशाह हसन

अब्दालका फ़साद मिटाकर दिल्लीको रवानह हुआ. हिज्री १०८७ ता० २२ रबीउस्सानी [विक्रमी १७३३ प्रथम श्रावण कृष्ण ८ = ई० १६७६ ता० ४ जुलाई] को राजा रामसिंह कछवाहा आसामसे आया. हिज्री ता० १२ जमादियुल अव्वल [विक्रमी प्रथम श्रावण शुक्ल १३ = ई० ता० २४ जुलाई] को मुहम्मद सुल्तानके शाहज़ादह मसऊदबख़्श पैदा हुआ. हिज्री ता० १० शअ़्बान [विक्रमी आश्विन शुक्ल १२ = ई० ता० २० ऑक्टोबर] को जाफ़रखां वज़ीरके मरजानेपर असदखां मीर बख़्शीको विज़ारतका उ़हदह दिया गया- हिज्री ता० १७ शअ़्बान [विक्रमी कार्तिक कृष्ण ३ = ई० ता० २७ ऑक्टोबर] को बादशाहज़ादह मुहम्मद मुअ़ज़्ज़म ख़ज़ानह, तोपख़ानह और सर्दारों समेत काबुलको भेजा गया; उस वक़् बादशाहने इन्आ़म इक्रामके सिवाय उसको 'शाहआ़लम बहादुर' का ख़िताब भी दिया, जो उसके बादशाह होनेपर जारी रहा. हि० ता० २१ शअ़्बान [विक्रमी कार्तिक कृष्ण ७ = ई० ता० ३१ ऑक्टोबर] को बादशाह जामिअ़् मस्जिदसे घोड़ेपर सवार होकर वापस आते थे, रास्तेमें एक आदमी तलवार निकालकर पास आगया, गुर्ज़बर्दारोंने मारना चाहा, पर बादशाहने रोका, और उसे रणथम्भोरके क़िले में आठ आने रोज़ मुक़र्रर करके भिजवा दिया. हि० ता० २७ शअ़्बान [विक्रमी कार्तिक कृष्ण १३ = ई० ता० ६ नोवेम्बर] को एक पानी भरने वालेने मस्जिद की सीढ़ियोंपर बादशाहके बराबर आकर सलाम कहा, बादशाहके हुक्मसे कोतवालीमें क़ैद हुआ. हिज्री ता० ७ शव्वाल [विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ९ = ई० ता० १५ डिसेम्बर] को बड़ा शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तान मरगया, जिसकी उ़म्र अड़तीस वर्ष और दो महीनेकी थी. हिज्री ता० २४ ज़िल्हिज [विक्रमी फाल्गुण कृष्ण १० = ई० १६७७ ता० २७ फ़ेब्रुअरी] को शाहज़ादह शाहआ़लम बहादुरके बेटा पैदा हुआ, जिसका नाम 'मुहम्मद हुमायूं' रक्खा गया.

हिज्री १०८८ ता० २१ रबीउ़ल् अव्वल [विक्रमी १७३४ ज्येष्ठ कृष्ण ७ = ई० १६७७ ता० २४ मई] को दक्षिणके सूबेदार ख़ानेजहां बहादुरने क़िला नलदुर्ग फ़त्ह कर लिया; और इस वर्षमें हुक्म हुआ, कि जुलूसका जश्न मौक़ूफ़ किया जावे, और किसीकी नज़्र न ली जावे; चांदीकी दावातके एवज़ चीनी और पत्थरकी दवातें काममें लाई जावें. हिज्री १०८९ [विक्रमी १७३५ = ई० १६७८] में कीर्तिसिंहकी बेटी शाहज़ादह मुहम्मद अ़ज़ीमको ब्याही गई. मुहम्मद शफ़ीअ़्खां दीवान बंगालेके लिखनेसे मालूम हुआ, कि शायस्तहखां अमीरुल उमराने सर्कारी एक किरोड़ बत्तीस लाख रुपया ग़बन कर लिया; उसके लिये हुक्म दिया, कि अमीरुल उमराके नाम बाक़ी लिखकर वुसूल किये जायं. हिज्री ता० ६ ज़िल्क़ाद

[विक्रमी पौष शुक्ल ८ = ई० ता० २१ डिसेम्बर] को जम्रोदका थानेदार महाराजा जशवन्तसिंह मरगया. जोधपुरपर ख़ालिसा भेजा गया. हिज्री १०९० ता० १८ मुहर्रम [विक्रमी १७३५ चैत्र कृष्ण ४ = ई० १६७९ ता० १ मार्च] को बादशाह अजमेर आये, और बीस दिन बाद लौट गये. इसी वक्त तमाम मुल्कसे जिज़्यह लेनेका हुक्म जारी किया गया, जिससे आम हिन्दुओंमें नाराज़गी फैली. हिज्री ता० ७ शअ्बान [विक्रमी १७३६ भाद्रपद शुक्ल ९ = ई० १६७९ ता० १५ सेप्टेम्बर] को बादशाह दोबारह अजमेर आया, और हिज्री ता० ७ ज़िल्क़ाद [विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ९ = ई० ता० १३ डिसेम्बर] को उदयपुरकी तरफ़ रवानह हुआ. हिज्री ता० ७ रमजान विक्रमी १७३६ आश्विन शुक्ल ९ = ई० १६७९ ता० १५ ऑक्टोबर] को शाहज़ादह आज़मके कीर्तिसिंह (१) की बेटीसे एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम 'सुल्तान मुहम्मद करीम' रक्खा गया. हिज्री १०९१ ता० ७ जमादियुल आख़र [विक्रमी १७३७ आषाढ़ शुक्ल ९ = ई० १६८० ता० ७ जुलाई] को बादशाहसे अर्ज़ हुआ, कि शिवा घोंसला हिज्री ता० २४ रबीउ़स्सानी [विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण १० = ई० ता० २५ मई] को मरगया. हिज्री १०९२ ता० २४ रजब [विक्रमी १७३८ श्रावण कृष्ण १० = ई० १६८१ ता० १० ऑगस्ट] को मुहम्मद कामबख़्शकी शादी मनोहरपुरके राव अमरसिंहकी बेटी कल्याणकुंवरके साथ हुई.

हमने इस मक़ामपर उस हालको छोड़ दिया है, कि "जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंहके जम्रोदपर मरने बाद उनके दोनों पुत्र अजीतसिंह और दलथम्भन लाहौरमें पैदा हुए, फिर दिल्लीमें जाकर सोनंग व दुर्गदास वग़ैरह अजीतसिंहको ले निकले, और जशवन्तसिंहकी रानियां कई सर्दारों समेत दिल्लीमें मारी गई; मारवाड़में राठौड़ोंका फ़साद उठा, और उसके दबानेको बादशाही फ़ौजें आईं; यह सब अह्वाल जोधपुरकी तवारीख़में लिखा जायगा. इसके सिवाय हिन्दुस्तानपर बादशाहका जिज़्यह लगाना, महाराणा राजसिंहका कठोर पत्र पहुंचनेपर उदयपुर की तरफ़ चढ़ाई करना, महाराणा राजसिंहसे लड़ाइयोंका होना, व महाराणाके देहान्त बाद जयसिंहका गद्दीनशीन होना, बादशाहके शाहज़ादह अक्बरका बाग़ी होना, और मेवाड़की लड़ाइयोंका सुलहके साथ ख़ातिमह करना वग़ैरह" जो महाराणा राजसिंह और जयसिंहके इतिहासमें लिखा गया है. इस लिये अब दक्षिणकी चढ़ाइयोंका ज़िक्र लिखा जाता है.

---

(१) कीर्तिसिंह आंबेरके महाराजा जयसिंह कछवाहेका छोटा बेटा था.

बादशाह आलमगीर हिज्री १०९२ ता० ५ रमज़ान [विक्रमी १७३८ भाद्रपद शुक्ल ७ = ई० १६८१ ता० २० सेप्टेम्बर] को अजमेरसे कूच करके हिज्री १०९३ ता० २३ रबीउल अव्वल [विक्रमी चैत्र कृष्ण ९ = ई० १६८२ ता० ३ मार्च] को औरंगाबाद पहुंचे. हिज्री ता० १८ जमादियुल आख़र [विक्रमी १७३९ आषाढ़ कृष्ण ४ = ई० १६८२ ता० २६ मई] को बादशाहने शाहज़ादह आज़मको उसके बेटे बेदारबख़्त समेत बीजापुरकी तरफ़ रवानह किया. शाहज़ादह अक्बर शम्भासे बिगाड़ होजानेके सबब किश्तियोंमें सवार होकर ईरानकी तरफ़ रवानह हुआ. इमाम मस्क़तने उसे गिरिफ्तार करके अपना मत्लब निकालनेके लिये आलमगीरके हवाले करना चाहा; लेकिन् ईरानके बादशाहका हुक्म पहुंचनेसे शाहज़ादहको उसने ईरान भेज दिया. ईरानके सुलैमान् शाह सफ़वीने शाहज़ादहकी बहुत ख़ातिर की, और कई वर्षों तक उसी देशमें रहने बाद हिरातके इलाक़हमें उसका देहान्त होगया.

इन्हीं दिनोंमें बादशाहने जशवन्तराव दक्षिणीको मरहटी फ़ौजका अफ्सर बनाकर चार हज़ारी ज़ात और सवारके मन्सबसे लड़ाईके लिये तय्यार किया. हिज्री ता० २० जमादियुल आख़र [विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ६ = ई० ता० २८ मई] को कान्हू दक्षिणी आलमगीरके पास चला आया, उसे बादशाहने पांच हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब देकर अपना मुलाज़िम बना लिया. हि० ता० ५ रमज़ान [विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ७ = ई० ता० ११ ऑगस्ट] को बादशाहने मरहटोंपर ज़ियादह ग़ालिब करनेके लिये दन्दाराजपुर व जर्ज़ीरेके हबशी याकूतख़ां और ख़ैरियतख़ांके लिये ख़िल्अ़त भेजा. हिज्री ता० ६ शव्वाल [वि० आश्विन शुक्ल ८ = ई० ता० ११ सेप्टेम्बर] को शाहज़ादह बहादुरशाहके बेटे मुइज़्ज़ुद्दीनको ख़िल्अ़त मोतियोंकी कंठी, घोड़ा और आठ हज़ारी ज़ात व छः हज़ार सवारका मन्सब देकर अहमदनगर भेजा.

हि० १०९४ ता० ११ शअ़्बान [विक्रमी १७४० श्रावण शुक्ल १२ = ई० १६८३ ता० ६ ऑगस्ट] को शिवा घोंसलाका मुन्शी क़ाज़ी हैदर बादशाहके पास हाज़िर हो गया, जिसको दो हज़ारी मन्सब, ख़िल्अ़त और दस हज़ार रुपया नक़्द दिया गया. इन्हीं दिनोंमें दिलेरख़ां अफ़्ग़ान ज़ियादह बीमार होकर मर गया. हि० ता० ३ शव्वाल [विक्रमी आश्विन शुक्ल ५ = ई० ता० २७ सेप्टेम्बर] को बादशाहने बड़े शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मको सांप गांवकी तरफ़ भेजा, और क़िला फ़त्ह हुआ, शाहज़ादह रामदरेकी घाटियोंमें जा घुसा; रसदकी यहांतक कमी

हुई, कि आदमियोंकी आंखोंमें प्राण और जानवरोंके हड्डियां बाक़ी थीं. बादशाही हुक्मसे सूरतके हाकिमने कुछ सामान पहुंचाया, लेकिन् गुज़ारा न होनेसे शाहज़ादह घबराकर अहमदनगरकी तरफ़ वापस चला आया. हि० ता० ३ ज़िल्हिज [वि० मार्गशीर्ष शुक्ल ५ = ई० २५ नोवेम्बर] को बादशाह अहमदनगर दाख़िल हुए. त्रिपुरा नदी और आश्तीकी तरफ़ हिज्री १०९५ ता० ९ मुहर्रम [विक्रमी १७४० पौष शुक्ल ११ = ई० १६८३ ता० ३० डिसेम्बर] को रूहुल्लाहख़ां और बहरामन्दख़ांको दक्षिणियोंपर भेजा, शिहाबुद्दीनख़ांने भी दक्षिणियोंपर कई हम्ले किये, और फ़त्ह पाई, जिससे बादशाहने उसको हिज्री ता० १५ मुहर्रम [वि० माघ कृष्ण १ = ई० १६८४ ता० ५ जैन्युअरी] को मुहम्मद ग़ाज़ियुद्दीनख़ां बहादुरका ख़िताब और उसके साथियोंमेंसे मुहम्मद आरिफ़को, मुजाहिदख़ां, मुहम्मद सादिक़ ख़ोस्तीको, सादिक़ख़ांका ख़िताब दिया. दतियाके राजा दलपत बुंदेले और उद्योतसिंह भदौरियाको ख़िल्अ़त, घोड़ा और हाथी बख़्शा गया.

गोलकुंडेके बादशाह अबुल हसनने जाफ़रख़ांको अपना एलची बनाकर बादशाहके पास भेजा, जो कि पहिले शाहज़ादह अक्बरका नौकर था, और जिसको अबुल हसनने ऐनुल्मुल्कका ख़िताब दिया था; आलमगीरने नाराज़ होकर उसे क़ैद करदिया, और कहा, कि अबुल हसन हमारी मस्ख़री करता है ! शम्भाकी दो औरतें, एक लड़की, तीन लौंडियां गिरिफ्तार होकर बहादुरगढ़में रक्खी गईं. हिज्री १०९६ ता० २६ सफ़र [विक्रमी १७४१ माघ कृष्ण १२ = ई० १६८५ ता० ३ फ़ेब्रुअरी] को बादशाहने सुना, कि मरहटोंका नामी क़िला 'राहेड़ी' ग़ाज़ियुद्दीनख़ांने फ़त्ह करलिया, जिसपर ग़ाज़ियुद्दीनख़ांको फ़ीरोज़जंगका ख़िताब और नेज़ा, नक़्क़ारह दिया गया; उसके साथियों मेंसे १५० आदमियोंको ख़िल्अ़त बख़्शे गये. इसी सनकी हिज्री ता० १५ रबीउ़ल अव्वल [वि० फाल्गुण कृष्ण १ = ई० ता० २१ फ़ेब्रुअरी] को ख़वासोंका दारोग़ा बख़्तावरख़ां, जो एक आलिम आदमी था, मरगया. हिज्री १०९६ ता० २ जमादियुल अव्वल [विक्रमी १७४२ चैत्र शुक्ल ४ = ई० १६८५ ता० ७ एप्रिल] को बादशाही फ़ौजने बीजापुरको जा घेरा.

इन्हीं दिनोंमें हैदराबादके बादशाह अबुल हसनका फ़र्मान उसके वकीलोंके पास इस मज़्मूनका पकड़ा गया, कि "तुमको जो कोतवालीमें क़ैद कर रक्खा है, इसकी कुछ फ़िक्र मत करो, जल्दी बदला लिया जायगा; और आज तक हज़रत आलमगीरकी बुज़ुर्गीका ख़याल रक्खा गया, लेकिन् हज़रतने मुझको भी बीजापुरके सिकन्दरकी तरह लावारिस बच्चा समझकर दबाया है, तो लाचार हिम्मत करनी पड़ी; अब

शम्भा राजा भी बहुतसी फ़ौज लेकर फैल जायगा, और ख़लीलुल्लाहख़ांको चालीस हज़ार सवार देकर मुक़ाबलेको भेजताहूं, देखें! हज़रत कहां कहां मुक़ाबला करते फिरेंगे". यह काग़ज़ बादशाहके पास पेश हुआ, जिसपर उसने अपने बड़े शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मको जंगी फ़ौजके साथ हैदराबाद गोलकुंडेके मुहासरेको रवानह किया.

ख़फ़ीख़ां अपनी तवारीख़ 'मुन्तख़बुल्लुबाब' में लिखता है, कि पेश्तर राजा रामसिंह कछवाहे और ख़ानेजहां बहादुरको उसके बेटों समेत रवानह किया था, और शाहज़ादहको पीछे, लेकिन् सबसे पहिले आलमगीरने हैदराबादपर चढ़ाईका बहाना ढूंढ़नेके लिये जेलख़ानहके दारोग़ा मिर्ज़ा मुहम्मदको, जो बड़ा बोलने वाला था, अबुल हसन कुतुबुलमुल्कके पास इस मत्लबसे भेजा, कि उसके पास, जो बहुत बड़े क़ीमती हीरे हैं, वे बादशाही हुज़ूरमें भेज देवे; मिर्ज़ा मुहम्मदको आलमगीरने ख़ानगी हिदायत करदी थी, कि हम तुमको पत्थरके टुकड़ोंके लिये नहीं भेजते हैं, मुल्कगीरीके मत्लबसे भेजे जातेहो. जब यह शख़्स हैदराबादमें पहुंचा, तो अबुल हसन बहुत ख़ातिरके साथ पेश आया, कुल जवाहिर उसके साम्हने रख दिये, और कहा, कि हमने अच्छे अच्छे जवाहिर पेश्तर बड़े हज़रत (शाहजहां) के वक्तमें भेज दिये थे; अब इनके सिवाय और नहीं हैं. आख़िरकार मिर्ज़ा मुहम्मद बहुत सख़्त कलामीसे पेश आया; तब अबुल हसनने कहा, कि हम भी एक इलाक़ेके बादशाह हैं, इस तरहकी सख़्त कलामीका बर्ताव न होना चाहिये. तब मिर्ज़ा मुहम्मदने कहा, कि बादशाहका ख़िताब अपने नामपर आपको रखना ज़ेबा नहीं है; जिसपर अबुल हसनने कहा कि अगर हम 'बादशाह' न कहलावें, तो हज़रत 'शाहन्शाह' किस तरह होसक्ते हैं. इस कलामसे मिर्ज़ा मज़्कूर ला जवाब होगया. ख़फ़ीख़ां लिखता है, कि यह सब बातें मैंने मिर्ज़ासे सुनकर लिखी हैं. दूसरा- आलमगीरने यह क़ुसूर क़ाइम किया, कि मादनापंत पंडितको विज़ारत देकर मुसलमानोंपर ज़ुल्म रवा रक्खा है.

इस तरह अबुल हसनने आलमगीरकी चढ़ाई रोकनेका कुछ और इलाज न देखा, तो लाचार इब्राहीमख़ांको ख़लीलुल्लाहख़ांका ख़िताब देकर शैख़ मिन्हाज और रुस्तम राव समेत चालीस हज़ार सवारके साथ शाहज़ादह शाहआलमसे मुक़ाबला करनेको भेजा. इस मुक़ाबलेमें आलमगीरकी फ़ौज घिर गई थी, लेकिन् आंबेरके राजा रामसिंहका मस्त हाथी मुक़ाबिल किया गया, जिससे दक्षिणी फ़ौजको लाचार होकर हटना पडा; और ख़्वाजह अबुलमकारिमने क़िला सीरम फ़त्ह कर लिया; परंतु

अबुल हसनके वज़ीर मादनापंतने दस हज़ार सवार अपनी फ़ौजकी मददके लिये और भेज दिये, जिससे दोबारह लड़ाई शुरू होकर तीन दिन तक सख़्त हम्ले हुए; आलमगीरकी फ़ौजके हिम्मतखां बहादुर, सय्यद अब्दुल्लाखां, कृष्णगढ़का राजा मानसिंह राठौड़ और सआदतखां ज़स्मी हुए, आखिरमें दक्षिणी भाग निकले; लेकिन् ख़बरनवीसोंने बादशाहको लिख भेजा, कि दुश्मनोंका पीछा नहीं किया गया; जिसपर आलमगीरने इन्आमके बदले उलहना लिख भेजा, जिससे फ़ौजी अफ्सरोंके दिल टूट गये. शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मने सुलह करना चाहा, और ख़ली-लुल्लाहखां भी मंजूर करता था, लेकिन् रुस्तम राव वग़ैरहने नहीं माना, और लड़ने लगे; आख़िरकार दक्षिणी फ़ौज भागकर हैदराबाद गई, शाहज़ादहने पीछा किया; इस शिकस्तकी तुहमत रुस्तम रावने ख़लीलुल्लाहखांपर रक्खी, जिससे वह तीस चालीस हज़ार फ़ौज समेत शाहज़ादहसे आमिला. अबुल हसन हैदराबाद छोड़कर गोलकुंडेके क़िलेमें जा छिपा, और शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मने उस शहरपर क़ब्ज़ा करलिया.

शाहज़ादहने अपनी नेक आदतके मुवाफ़िक़ इस बातपर अबुल हसनके पास सुलहका पैग़ाम भेजा, कि मादनापंत और आकना पंडित वज़ीरोंको क़ैद करके हमारे पास भेज दो, सीरम व रामगीरका इलाक़ह बादशाही क़ब्ज़ेमें दे दो, और मामूली नज़ानेके सिवाय एक किरोड़ बीस लाख रुपया देकर अपने क़ुसूरोंकी मुआफ़ी चाहो; जिसपर अबुल हसनने सब बातें मंजूर करके दोनों वज़ीरोंको देना नहीं चाहा; लेकिन् पहिले बादशाह अब्दुल्लाह कुतुबुलमुल्ककी औरतोंने उन दोनों पंडितोंको मरवा डाला. इससे फ़साद दूर हुआ. यह सुनकर आलमगीरने शाहज़ादहको बुला लिया. यह सुलह आलमगीरकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ नहीं थी, क्यों कि वह हैदराबादकी रियासतको ज़ब्त करना चाहता था.

इन्हीं दिनोंमें बीजापुरको शाहज़ादह आज़म घेरे हुए था, परंतु क़िले वालोंके हम्ले और रसदकी कमी व बीमारी वग़ैरह होनेसे निहायत तक्लीफ़ थी, जिससे सब सर्दारोंने मुक़ाबला छोड़ देनेकी सलाह दी; लेकिन् शाहज़ादहने अपनी जवां-मर्दीसे क़बूल नहीं किया. यह सुनकर आलमगीरने रसदकी मदद देकर शाहज़ादहके पास ग़ाज़ियुद्दीनको भेजा, और शिवाके दामाद अचलाको हिज्री १०९७ ता० १६ रबीउ़लअव्वल [विक्रमी १७४२ फाल्गुण कृष्ण २ = ई० १६८६ ता० ९ फेब्रुअरी] को पांच हज़ारी ज़ात और दो हज़ार सवारका मन्सब, नेज़ा, नक़ारह और हाथी दिया; क्यों कि यह शम्भासे लड़कर आया था. इसके बाद बादशाह ख़ुद

बड़ी फ़ौजके साथ हि० ता० १४ शअ़्बान [विक्रमी १७४३ आषाढ़ शुक्ल १५ = ई० १६८६ ता० ६ जुलाई] को बीजापुर जा पहुंचे, और बीकानेरके राव अनोपसिंहने भी हाज़िर होकर ख़िल्अ़त पाया. हि० ता० ११ शव्वाल [विक्रमी भाद्रपद शुक्ल १३ = ई० ता० १ सेप्टेम्बर] को महाराणा जयसिंहका छोटा भाई भीमसिंह बादशाहके पास पहुंचा.

अचानक हादिसह.

अब हम कुछ बयान उस सख़्त हादिसहका करते हैं, जो कि इस तवारीख़के यहां तक पहुंचनेपर विक्रमी १९४१ मार्गशीर्ष कृष्ण १३ [हि० १३०२ ता० २७ मुहर्रम = ई० १८८४ ता० १५ नोवेम्बर] को हमारे ऊपर पड़ा. महाराजाधिराज महाराणा श्री सज्जनसिंहकी बीमारीके सबब, जो जोधपुर तशरीफ़ ले गये थे, उनके ज़ियादह बीमार होनेकी ख़बर सुनकर कर्नेल चार्ल्स वाल्टर साहिब रेज़िडेण्ट बहादुर मेवाड़की सलाहके मुवाफ़िक़ उक्त तारीख़के दिन मुझको भी जोधपुर जाना पड़ा. इसी दिनसे तवारीख़का काम बन्द रहा, और मैं जल्द श्री महाराजाधिराजको लेकर उदयपुर आया. हाय! सद अफ़्सोस, कि विक्रमी १९४१ पौष शुक्ल ६ [हिज्री १३०२ ता० ४ रबीउ़लअव्वल = ई० १८८४ ता० २३ डिसेम्बर] को रातके बारह बजे इस तवारीख़के क़द्रदान उक्त महाराजाधिराजका देहान्त हो गया, और मेरे ख़याल व उनकी क़द्रदानीके औजका चिराग़ एक दम गुल हो गया. आजकी तारीख़ यानी विक्रमी माघ कृष्ण ९ [हिज्री ता० २३ रबीउ़ल-अव्वल = ई० १८८५ ता० १० जैन्युअरी] तक, इस किताबका मुसव्वदा अंधेरेमें पड़ा रहा. आज फिर उनके जा नशीन महाराजाधिराज महाराणा फ़त्हसिंहकी आज्ञाके अनुसार इसको शुरू करता हूं; अगर ज़िन्दगी रही, तो मैं इस नागहानी बलाका हाल महाराजाधिराज महाराणा श्री सज्जनसिंहके वृत्तान्तमें मुफ़स्सल लिखूंगा.

अभी तक इस हालके लिखनेकी ताक़त मेरी ज़बानमें नहीं है, ज़ियादह अफ़्सोस इस बातका है, कि उन क़द्रदानने इस कामको किस ज़ोर शोरके साथ शुरू करवाया था, इसे पूरा न देख सके, और उनकी ज़िन्दगी पूरी होगई.

अब जहां तक दममें दम है, मैं उनके इरादेको पूरा करूंगा, क्योंकि हमारे वर्तमान स्वामी भी उनके इरादेको पूरा करनेमें दिली मददके साथ हुक्म देते हैं.

अब फिर आलमगीर बादशाहका बाक़ी हाल लिखा जाता है–

हिज्री १०९७ ता० ४ ज़िल्क़ाद [विक्रमी १७४३ आश्विन शुक्ल ६ = ई० १६८६ ता० २४ सेप्टेम्बर] को बीजापुरका क़िला फ़त्ह हुआ, और सिकन्दर-अली आदिलशाह, आलमगीरके पास लाया गया; वह ख़ास ख़िल्अत, जड़ाऊ ख़न्जर, फूलकटारा, मोतियोंकी कंठी, 'सिकन्दरअलीख़ां' का ख़िताब और एक लाख रुपया सालाना गुज़ारेके लिये पाकर नज़र क़ैदके तौर शाही डेरोंके पास रक्खा गया. सिकन्दरअलीके सर्दार अब्दुर्रऊफ़ख़ां व शिर्ज़हख़ां बादशाहके पास लाये गये, और ख़िल्अत, तलवार, जड़ाऊ ख़न्जर, मोतियोंकी कंठी, घोड़ा, हाथी, छः हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और दिलेरख़ां व रुस्तमख़ांका ख़िताब दिया गया; इसके सिवाय अपने वज़ीर और सर्दारोंको भी बहुतसा इन्आम इक्राम दिया. हिज्री ता० १७ ज़िल्क़ाद [विक्रमी कार्तिक कृष्ण ३ = ई० ता० ७ ऑक्टोबर] को बादशाहने सिकन्दरअली बीजापुरीको बुलाकर हीरेका सिर्पेच और बैठनेकी इजाज़त दी; रूहुल्लाहख़ांको बीजापुरकी सूबेदारी और बीकानेरके राजा अनोपसिंहको सक्खरकी फ़ौज्दारी दी, और आप हि० ता० २२ ज़िल्हिज [विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ८ = ई० ता० ९ नोवेम्बर] को बीजापुरसे चला, ४ दिन बाद शिवाके बेटे शम्भाकी फ़ौज, जो मंगलबेड़ेकी तरफ़ फिरती थी, उसकी सज़ाके लिये एतिक़ादख़ांको भेजा.

बादशाह हिज्री ता० २५ ज़िल्हिज [विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ११ = ई० ता० १२ नोवेम्बर] को शोलापुर दाख़िल हुए. अब आलमगीरको हैदराबाद छीननेकी फ़िक्र हुई. बीजापुरकी लड़ाईमें शिहाबुद्दीनख़ांको "ग़ाज़ियुद्दीनख़ां बहादुर, फ़ीरोज़जंग, फ़र्ज़न्द औरंग," का ख़िताब दिया गया, जो उदयपुरकी लड़ाईमें हसनअलीख़ांकी ख़बर लेनेके वास्ते पहाड़ोंमें भेजा गया था, और उसी वक़्से इसकी तरक़्क़ी शुरू हुई, होते होते इस दरजेको पहुंचा, कि उसीकी औलादमें अब निज़ाम हैदराबाद हैं, जो हिन्दुस्तानी रईसोंमें बड़े रईस गिने जाते हैं. उसको बादशाहने हैदराबादका मातहत क़िला इब्राहीमगढ़ लेनेके लिये फ़ौज समेत नीचे लिखे सर्दार साथ देकर रवानह किया. दिलेरख़ां, शिर्ज़हख़ां बीजापुरी,

जमशेदखां, मालूजी घोरपड़ा मरहटा, रामपुरेका राव गोपालसिंह चंद्रावत, कोटेका हाड़ा किशोरसिंह, कमालुद्दीनखां, शिवसिंह, सफ़्शिकनखां, दतियाका राव दलपत बुंदेला, आक़ा अलीखां, अब्दुलक़ादिरखां, जहांगीरकुलीखां, उद्योतसिंह भदौरिया, सर्बराहखां चेला वग़ैरह. इन सबको इन्ऋाम, इक्राम, खिल्अ़त वग़ैरह मिले थे.

बादशाहने कुतुबुल मुल्कपर चढ़ाई करनेका यह बहानह निकाला, कि उसने हिन्दुओंके हाथसे ग़रीबोंको तक्लीफ़ पहुंचाई, और एक लाख होन (यानी पांच लाख रुपये) शम्भाके पास इस मत्लबसे भेजे, कि अपनी फ़ौजकी दुरुस्ती करके बादशाही लोगोंसे छेड़ छाड़ करे. हमारी समझ और मआसिरे आलमगीरी व मुन्तख़बुल्लुबाब वग़ैरह किताबोंसे भी यही पाया जाता है, कि कोई तुहमत रखकर रियासत छीन लेनी चाही.

हिज्री १०९८ ता० २९ मुहर्रम [विक्रमी १७४३ पौष कृष्ण ३० = ई० १६८६ ता० १५ डिसेम्बर] को बादशाह गुलबर्गाकी तरफ़ चला, बिचारे अबुल-हसनने बहुतसे नज़ाने और तुहफ़े वग़ैरह भेजकर हर तरह लाचारियां कीं, लेकिन् आलमगीरने एक न सुनी. ग़ाज़ियुद्दीनखां फ़ीरोज़जंगने इब्राहीमगढ़का क़िला फ़त्ह कर लिया. हिज्री ता० २४ रबीउ़लअव्वल [विक्रमी फाल्गुण कृष्ण १० = ई० १६८७ ता० ७ फेब्रुअरी] को बादशाहने गोलकुंडेसे एक कोसके फ़ासिले-पर क़ियाम किया. ग़ाज़ियुद्दीनखांका बाप क़िलीचखां गोलकुंडेके दर्वाज़े तक पहुंचा, वहां कन्धेमें गोली लगी, जिससे तीन रोज़ बाद मरगया; (उसने अपने खूनसे उस ज़मीनको सींचा, जिसकी औलाद अब वहां राज्य करती है) आलमगीर लड़ाईमें मशगूल था, और अकाल, मरी व हथियारोंसे हज़ारों आदमी मरते थे, क़िले वालोंसे मिलावटके शुब्हेपर शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मको बादशाहने क़ैद कर दिया. शाहज़ादह का कोई क़ुसूर नहीं था, सिर्फ़ अपनी नेक आदतके मुवाफ़िक़ वह सुलह चाहता था.

शाहज़ादह आज़म बादशाहके पास आगया, जिसकी तद्बीरसे क़िलेके लोगोंने मिलकर बादशाही मुलाज़िमोंको क़िलेमें बुलाया, और अबुल हसनको गिरिफ्तार करा दिया. उसी दिनसे दक्षिणी बादशाहतका नाम व निशान दूर हुआ; इस बातसे आलमगीर बहुत खुश हुआ होगा; कि हिमालयसे रामेश्वर तक और बल्ख़ व बदख़्शांसे कड़गांव (आसाम) तक हिन्दुस्तानमें मुग़लियह खान्दानकी हुकूमतका डंका बजने लगा; लेकिन् इन ताक़तों (रियासतों) के टूट जानेसे मरहटोंने ग़लबह करके मुग़ल बादशाहोंको बेपरका परिन्दा बना दिया, और लूट खसोट

व छीना झपटीसे कुल हिन्दुस्तानियोंका नाकमें दम करदिया. बादशाह आलमगीरने शाहज़ादह मुहम्मद आज़मको बिलगांव, और गाज़ियुद्दीनख़ां फ़ीरोज़जंगको आदूनीकी तरफ़ रवानह किया. यह दोनों क़िले, जो हबशी और मरहटोंके क़ब्ज़ेमें थे, फ़त्ह कर लियेगये; आदूनीके मस्ऊद हबशीको सात हज़ारी मन्सब देना चाहा, परन्तु उसने नौकरी करनेसे इन्कार किया.

हिज्री ११०० ता० १ जमादियुलअव्वल [विक्रमी १७४५ फाल्गुण शुक्ल ३ = ई० १६८८ ता० २२ फ़ेब्रुअरी] को शैख़ निज़ाम हैदराबादी, जिसे आलमगीरने मुक़र्रबख़ांका ख़िताब दिया था, बड़ी जमइयतके साथ पर्नालेकी तरफ़ भेजा गया; उसको मुख़बिरोंने ख़बर दी, कि शम्भा पर्नालेसे खेलनाके क़िलेकी तरफ़ बैरागियोंका फ़साद मिटानेको गया है, और वहांसे संगमेश्वरको, जहां बान गंगाका तीर्थ समुद्रसे एक मंज़िल पर है, और जहां शम्भाके दीवान कलूशाने (जिसका नाम ख़फ़ीख़ां कवि कलश लिखता है, और हमको वही सहीह मालूम होता है) मकान और बाग़ बनवाये थे, गया; और मज़्हबी रस्में अदा करनेके बाद ऐश, इश्रत व शराब पीनेमें मश्गूल है. यह सुनकर फ़ौजी क़ाफ़िलेको मुक़र्रबख़ांने कोलापुरके पास छोड़ा, और चुनेहुए सिपाहियोंको साथ लेकर ४५ कोसकी कठिन पहाड़ियोंमें बड़ी मुश्किलोंसे उस मकानके पास पहुंचा, जहां शम्भा था; उस वक़्त दो हज़ार सवार और एक हज़ार पैदल उसके साथ थे.

शम्भाके नौकरोंने उसे ग़फ़्लतकी नींदसे जागने और होश्यार होनेको कहा, कि बादशाही फ़ौज आ पहुंची ! पर वह अय्याश शराबके नशेमें चूर था, जवाब दिया, कि यहां बादशाही फ़ौज नहीं आसक्ती, इन बद कलाम लोगोंसे कहदो, कि इस तरहकी झूठी ख़बर लायेंगे, तो ज़बान काटली जावेगी; वे बिचारे चुप हो रहे. मुक़र्रबख़ां चुने हुए सिपाहियों समेत आ पहुंचा; शम्भा और उसके वज़ीरके होश ख़ता हुए, लेकिन् तीन चार हज़ार सवार, जो वहां मौजूद थे, उन्हें लेकर मुक़ाबला किया, मुक़ाबलेके वक़्त वज़ीर कवि कलशके तीर लगा, जिससे वह गिर पड़ा; बादशाही फ़ौजके हाथसे बहुतसे मरहटे मारे गये, मरहटी फ़ौज भागने लगी; आख़िर कवि कलश और शम्भा भी एक मकानमें जा छिपे. मुक़र्रबख़ांका बेटा इख़्लासख़ां दर्वाज़ेके भीतर घुस गया, शम्भाके दो तीन आदमी मुक़ाबलेसे पेश आये, वह मारे गये. इख़्लासख़ां मकानमें अपने साथियोंको लेकर, जहां शम्भा था, जा पहुंचा; और शम्भा व कवि कलशको पकड़ लिया. फिर शम्भाकी स्त्री व उसके बेटे साहू को २५ रिश्तेदारों समेत गिरिफ़्तार किया;

और मुक़र्रबखांके पास शम्भाके बाल पकड़े हुए लाया. मुक़र्रबखांने हाथीपर डाल कर वहांसे कूच किया, बहुतसे मरहटे सर्दार गिरिफ्तार हुए. किसी मरहटे क़ौमके सर्दारने उसके छुड़ानेकी कोशिश नहीं की, क्योंकि शम्भाकी तेज़ मिज़ाजी से सब लोगोंका नाकमें दम था, और ज़ियादह इसका सबब कविकलश वज़ीर था.

मुक़र्रबखां बे खौफ़ शम्भाको लिये हुए सहीह सलामत हिज्री ११०० ता० ५ जमादियुल अव्वल [विक्रमी १७४५ फाल्गुण शुक्ल ७ = ई० १६८९ ता० २६ फ़ेब्रुअरी] को बादशाही लश्करके पास, जो बहादुरगढ़में था, आ पहुंचा. बादशाह आलमगीरको शम्भाकी गिरिफ्तारीसे जितनी खुशी हुई, उतनी बीजापुर और गोलकुंडेकी फ़त्हसे नहीं हुई थी. बादशाहने हुक्म दिया, कि हमीदुद्दीनखां लश्करका कोतवाल मुक़र्रबखांकी पेश्वाईको जावे, और शम्भा लुटेरेको बेड़ियां और हंसीका लिबास पहिनाकर ऊंटकी (१) सवारी पर फ़ौजमें लावे. लाखों आदमियोंकी भीड़ भाड़ शम्भाको देखनेके लिये इकट्ठी हुई थी. शम्भाके आगे आगे नक़ारे और नफ़ीरी बतौर हंसीके बजती थी.

बादशाह आलमगीरने आम दर्बार करके उसको अपने साम्हने बुलाया, जब वह आया, बादशाहने नमाज़ अदा की, और खुदाका शुक्र बजा लाया; शम्भाके प्रधान कविकलशने अपने मालिकको एक श्लोक सुनाया, जिसका यह मत्लब था, कि ऐ राजा देख ! तेरे प्रतापको, कि बादशाह तेरे साम्हने तख़्तसे उतर गया. शम्भा और कविकलश दोनों मुसल्मानोंके पैग़म्बर व बादशाहको गाली देने लगे; बादशाहने मुसल्मान होजानेपर जान बख़्शीका वादह किया, शम्भा बोला, कि अपनी बेटीके साथ शादी करदो, तो ऐसा होसक्ता है. (सच है मरता क्या नहीं करता) शम्भा चाहता था, कि किसी तरह मुझे जल्दी मरवा डालें. बादशाहने ज़बानें कटवाकर गर्म लोहेकी सलाखोंसे अन्धा करवा दिया. हिज्री ता० २९ जमादियुल अव्वल [विक्रमी चैत्र कृष्ण ३० = ई० ता० २१ मार्च] को उन दोनोंके सिर कटवाए गये, और शम्भाकी मा, औरतें और उसके बेटों साहू, मदनसिंह, उद्योतसिंहको इज़्ज़तसे असदखां वज़ीरके पास डेरोंमें रहनेकी इजाज़त मिली; सबको तसल्ली देकर मुनासिब तन्ख़ाहें करदीं; कुछ दिनोंके बाद साहूको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया, उस समय साहू नौ वर्षका था. शम्भाके छोटे भाई

(१) दक्षिणी लोग ऊंट और गधेकी सवारीको एकसा समझते हैं.

रामराजा व सन्ता वग़ैरह मरहटोंने बड़ा फ़साद मचाया, यहां तक कि आलमगीरको आख़िर वक्त तक लड़ाईके लिये तय्यार रहना पड़ा.

हिज्री ११०१ ता० १५ मुहर्रम [विक्रमी १७४६ मार्गशीर्ष कृष्ण १ = ई० १६८९ ता० ३० ऑक्टोबर] को एतिक़ादख़ांने राहेड़ीके क़िलेको फ़त्ह किया, शम्भाका भाई रामराजा वहांसे भागा, उसके कुटम्बको बादशाही नौकरोंने क़ैद कर लिया, फिर एतिक़ादख़ांके आनेपर हिज्री ता० २० सफ़र [विक्रमी पौष कृष्ण ६ = ई० ता० ३ डिसेम्बर] को इस कारगुज़ारीके एवज़में एक हज़ारी ज़ात और सवारकी तरक़ीसे तीन हज़ारी ज़ात और दो हज़ार सवारका मन्सब, ज़ुल्फ़िक़ारख़ांका ख़िताब, और इन्आम वग़ैरह दिया. हिज्री ११०२ शव्वाल [विक्रमी १७४८ आषाढ़ = ई० १६९१ जुलाई] में शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मकी मा 'नव्वाब बाई' के गुज़रनेकी ख़बर आई, इसी वर्षमें शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मको क़ैदसे छोड़ा. हिज्री ११०३ ता० ७ रबीउ़ल आख़र [विक्रमी १७४८ पौष शुक्ल ९ = ई० १६९१ ता० २९ डिसेम्बर] को मस्जिदमें एक आदमी तल्वार निकालकर बादशाहकी तरफ़ दौड़ा, सिपाहियोंने गिरिफ़्तार करके कोतवालके हवाले किया. हिज्री ता० १ ज़िल्क़ाद [विक्रमी १७४९ श्रावण शुक्ल ३ = ई० १६९२ ता० १७ जुलाई] को बख़्शियुल मुल्क रूहुल्लाहख़ांका देहान्त हुआ, उसके एवज़ बहरहमन्दख़ां मीरबख़्शी, और मुख़्लिसख़ां दूसरा बख़्शी किया गया.

शाहज़ादह कामबख़्शको आलमगीरने क़ैद किया था, जिसका हाल इस तरहपर है :- हिज्री ११०४ ता० १ रमज़ान [विक्रमी १७५० वैशाख शुक्ल ३ = ई० १६९३ ता० ८ मई] को जुम्दतुलमुल्क असदख़ां वज़ीरको हुक्म हुआ, कि बहरहमन्दख़ां समेत शाहज़ादह कामबख़्शके साथ 'वाकनखेड़ा' का मुहासरह करे, लेकिन् फिर ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके पास पहुंचनेका हुक्म होगया. रास्तह ही मेंसे शाहज़ादह और सर्दारोंमें नाइत्तिफ़ाक़ी होने लगी, 'जंजी' पहुंचनेपर लश्करख़ां वग़ैरहसे भी शाहज़ादहकी ज़ियादह नाराज़गी हुई, कई बादशाही नौकर मरहटे रामराजासे मेल करने लगे. यह ख़बर बादशाहके पास पहुंची, वहांसे हुक्म आया, कि वज़ीर असदख़ां शाहज़ादहको नज़रबन्द रक्खे, और दलपत बुंदेला उसका निगहबान रहे. शाहज़ादहने रामराजाके पास भाग जाना चाहा, परंतु ख़बर होजानेसे वज़ीरने पक्का बन्दोबस्त कर दिया. इस आपसकी फूटसे मरहटोंने भी बड़े ज़ोर शोरके साथ हम्ले किये; इस्माईलख़ां घायल होनेसे मरहटोंका क़ैदी बना, और नुस्रतजंगने अपने थोड़े ही सवारोंसे बड़ी बहादुरीके साथ दुश्मनोंको रोका; उनकी एक हज़ार

घोड़ियां छीन लीं; नुस्त्रतजंग अपने बाप असदखांके पास पहुंचा, और शाहज़ादहको हिरासतके साथ बादशाहके पास लाये.

हिज्री ११०५ ता० २१ रजब [विक्रमी १७५० चैत्र कृष्ण ७ = ई० १६९४ ता० १७ मार्च] को शाहज़ादह आज़मके एक नौकर और बारहके एक सय्यदसे लड़ाई होगई, सय्यद मारा गया. कुल सय्यदोंने इत्तिफ़ाक़के साथ शाहज़ादहके लश्करमें जाकर उनके नौकर अमानुल्लाको घेर लिया, दोनों तरफ़से फ़सादकी सूरत हुई. अर्ज़ होनेपर बादशाहने हुक्म दिया, कि तोपखानहका दारोगा मुख्तारखां मौक़ेपर जाकर सुलह करादे; लेकिन् उसकी कोशिशसे कुछ फ़ायदह न हुआ, दूसरे दिन तमाम सय्यद बादशाही कचहरीके दर्वाज़ेपर आ खड़े हुए; हुक्म दिया गया, क़ाज़ीके पास चले जायें, शर्अके मुवाफ़िक़ फ़ैसलह हो जायगा. इन लोगोंने जवाब दिया, कि हम क़ाज़ीको नहीं जानते, आप फ़ैसलह कर लेंगे. यह बात सुन्ते ही बादशाहको गुस्सह आया, और हुक्म दिया, कि जितने सय्यद ख़ास चौकी और अर्दलीमें नौकर हैं, सब मौक़ूफ़ किये जायें, और कभी दर्बारके आस पास न बैठने पायें; बहुतसोंने बादशाही सर्दारोंकी सिफ़ारिशसे कुसूर मुआफ़ कराये, और जिन्होंने फ़साद करना चाहा, वह तोपखानहसे उड़ा दिये गये. इससे मालूम होता है, कि आलमगीरको किसी क़ौमकी रिआयत न थी. हिज्री ता० १ शव्वाल [विक्रमी १७५१ ज्येष्ठ शुक्ल ३ = ई० १६९४ ता० २७ मई] को शायस्तहखां मर गया, उसके एवज़ ग्वालियरका फ़ौज्दार स्वालिहखां, फ़िदाईखांका ख़िताब पाकर आगरेका सूबेदार बनाया गया. हिज्री ११०६ ता० २७ सफ़र [विक्रमी १७५१ कार्तिक कृष्ण १३ = ई० १६९४ ता० १६ ऑक्टोबर] को बड़े शाहज़ादह मुअज़्ज़मका मन्सब चालीस हज़ारी ज़ात और चालीस हज़ार सवार किया गया. इसी दिन महाराणा राजसिंहका छोटा बेटा राजा भीम, जो पांच हज़ारी मन्सबदार था, बादशाही लश्करमें मरगया. हिज्री ११०७ ता० १ मुहर्रम [विक्रमी १७५२ श्रावण शुक्ल ३ = ई० १६९५ ता० १३ ऑगस्ट] को रूहुल्लाहखांकी बेटीसे मुहम्मद अज़ीमके एक बेटा रूहुलकुद्स पैदा हुआ; दूसरा- हि० ता० २२ मुहर्रम [विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ८ = ई० ता० २ सेप्टेम्बर] को शाहज़ादह बेदारबख़्त बहादुरके मुख्तारखांकी बेटीके पेटसे एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम फ़ीरोज़बख़्त रक्खा गया. इसी सन्में सन्ता मरहटे से साम्हना करनेके लिये क़ासिमखां, ख़ानहज़ादखां, सफ़्शिकनखां, असालतखां,

मुरादखां वगैरह को भेजा, और कुछ मुक़ाबला होनेके बाद बादशाही सर्दार शिकस्त खाकर एक गढ़ीमें जा छिपे, गढ़ीकी रसद ख़त्म होनेपर क़ासिमख़ां, तो अफ़ीम न मिलनेसे मरगया, बाक़ियोंने बीस लाख रुपया और कुल माल अस्बाब देकर छुटकारा पाया. फिर बिसवापट्टनसे हिम्मतख़ांने सन्ताको आ दबाया, लेकिन् वह भी मारा गया, और उसका माल अस्बाब मरहटोंके क़ब्ज़ेमें आया.

हिज्री ११०९ ता० १९ जमादियुल अव्वल [विक्रमी १७५४ पौष कृष्ण ५ = ई० १६९७ ता० ३ डिसेम्बर] को ख़ानेजहां बहादुर मर गया. हिज्री जमादियुल आख़र [विक्रमी माघ = ई० १६९८ जैन्युअरी] में रामराजाका क़िला 'जंजी' जो कर्नाटक देशमें बड़ा मज्बूत और मशहूर था, बादशाही फ़ौजने फ़त्ह कर लिया; रामराजा और सन्ता भाग गये, उनकी चार औरतें, तीन लड़के, दो लड़कियां और कई रिश्तेदार क़ैद किये गये. इसी सन्के हि० ता० २७ शव्वाल [विक्रमी १७५५ प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण १३ = ई० १६९८ ता० ९ मई] को अमीरख़ां काबुलका सूबेदार दुन्यासे उठ गया, और उसके एवज़ बड़ा शाहज़ादह "शाह आलम" काबुलकी सूबेदारीपर भेजा गया. इसी सन्की हि० ता० २० ज़िल्क़ाद [विक्रमी द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ६ = ई० ता० १ जून] को दुर्गदास राठौड़ मुहम्मद अक्बरके बेटे बलन्दअख़्तर और एक बेटीको, जो अक्बरकी बग़ावतके वक़्से राठौड़ोंके पास थे, और जिन्हें उन्होंने बड़ी इज़्ज़तसे पाला था, अपने क़ुसूरकी मुआफ़ीका ज़रीआ समझकर साथ ले आया; गुजरातके सूबेदार शजाअ़तख़ांकी सिफ़ारिशसे बादशाही दर्बारमें हाज़िर हुआ. हाज़िरीके वक़ हाथ बंधे हुए थे, हुक्मके मुवाफ़िक़ खोल दिये गये, उसे तीन हज़ारी ज़ात और ढाई हज़ार सवारका मन्सब बख़्शा गया; और बलन्दअख़्तरको ख़िल्अ़त और सर्पेच वग़ैरह इनायत हुआ.

हिज्री १११० ता० १८ जमादियुल्आख़र [विक्रमी १७५५ पौष कृष्ण ४ = ई० १६९८ ता० २२ डिसेम्बर] को शाहज़ादह कामबख़्शका दिली ख़ैरख़्वाह नौकर, ख़्वाजह याक़ूत जो हमेशह नेक नसीहत दिया करता था, उसके एक दिन शाहज़ादहके बदमआश नौकरोंमेंसे किसीने एक तीर मारा, याक़ूतने हुज़ूरमें फ़र्याद की; बादशाहके हुक्मसे शाहज़ादहके पांच मोतबर आदमी क़ैद किये गये; उनमें से शाहज़ादहका धायभाई गुस्ताख़ीसे पेश आया, शाहज़ादहको हुक्म पहुंचा, कि धायभाईको लश्करसे निकाल दे, शाहज़ादहने मन्ज़ूर नहीं किया, और धायभाईकी व अपनी कमर एक दोपट्टेसे बांध ली, जब ज़बर्दस्ती छुड़ाने लगे, तो हमीदुद्दीनख़ांके हाथमें शाहज़ादहने एक कटार मारा, लेकिन् कटार छीन लिया गया.

आख़िरकार धायभाई कोतवालके पास क़ैद किया गया, और शाहज़ादहको भी ख़ैमहमें नज़र बन्द रक्खा; मन्सब, अस्बाब, कारख़ानह ज़ब्त हुआ. इन्हीं दिनोंमें सन्ता मरहटा भी मारा गया. हिज्री १११० ता० २९ ज़िल्हिज [विक्रमी १७५६ आषाढ़ कृष्ण ऽऽ = ई० १६९९ ता० २८ जून] को शाहज़ादह मुहम्मद कामबख़्श बीस हज़ारी मन्सबपर बहाल किया गया. उदयपुरसे महाराणा अमरसिंहके वकील एक हाथी, दो घोड़े, नौ तलवार, नौ चमड़ेके पाजामे (१) लेकर बादशाहके दर्बारमें पहुंचे, और सारा सामान नज़्र किया.

हिज्री ११११ ता० २२ मुहर्रम [विक्रमी श्रावण कृष्ण ८ = ई० ता० २० जुलाई] को महाराणा राजसिंहके छोटे बेटे इन्द्रसिंह और बहादुरसिंह बादशाहके पास गये, पहिलेको दो हज़ारी ज़ात, हज़ार सवार, दूसरेको हज़ारी ज़ात, पांच सौ सवारका मन्सब बख़्शा गया. इन्हीं दिनोंमें बीकानेरका राजा स्वरूपसिंह अनोपसिंहोत बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ रामराजाके उन बाल बच्चोंको बादशाही लश्करमें ले आया, जो ज़ुल्फ़िक़ारख़ांकी गिरिफ़्तारीमें थे. इसके बाद मरहटोंका क़िला 'बसन्तगढ़' बादशाही फ़ौजके क़ब्ज़ेमें हिज्री ता० १२ जमादियुल आख़र [विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १३ = ई० ता० ६ डिसेम्बर] को आया. और हिज्री ता० आख़िर जमादियुल आख़र [विक्रमी पौष शुक्ल २ = ई० ता० २५ डिसेम्बर] को शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरके दो नौकर कंधारसे अर्ज़ी लेकर आये, बादशाह आलमगीरने इन्आम इक्राम समेत लिख भेजा, कि तुम्हारे हिन्दुस्तानमें आजाने बाद क़ुसूरोंकी मुआफ़ीका हुक्म होसक्ता है. इस वक्त बादशाह आलमगीरको मरहटोंने दिक़ कर रक्खा था, फ़ार्सी तवारीख़ोंमें बादशाही फ़ौजकी ख़राबी व तक्लीफ़ोंका हाल नहीं लिखा और कहीं लिखा भी है, तो बहुत थोड़ा, इस वास्ते हम एक अस्ल काग़ज़की नक्ल लिखते हैं, जो महाराणा अमरसिंहके वकीलोंने हिज्री ११११ ता० ८ रजब [विक्रमी पौष शुक्ल १० = ई० १७०० ता० २ जैन्युअरी] को बादशाही लश्कर मेंसे भेजा था.

---

(१) इस क़िस्मके पाजामे उसी ज़मानेके उदयपुरके तोशहख़ानहमें मौजूद हैं, जिनका ऊपर की तरफ़का घेरा इतना बड़ा है, कि पहिननेके बाद अच्छे जामेका नीचला हिस्सह उसमें समा-जाय.

श्रीरामोजयति.

स्वस्तिश्री मन्मही मंडल मंडलीक अनीक पूजित चरण कमल अमल जशवितान विराजमान दिक चक्र बक्र शत्रु श्रेणी सरलकर प्रतापवर श्री ७ जी सलामति.

हुजूर थी पर्वानो अगहन सुदी १० (१) भोमेरो मोकल्यो वाइदे दिन १८ हसबुल हुक्मरा जावरो हस्ते तुकजमल्यो, जाट रामो पोस सुदी ६ रवौ दिन २६ में पहुंच्यो, तस्लीम ३ करे माथे चढ़ावे लियो, हुक्म थो, उणीज दिन उमराव सब व भाई बेटा पुरोहित अमात्य समस्त थी चौकी चलाबारी समस्त करे ताकीदरा पर्वानो मुहसल सुधा मोकलाणा; सो फ़ौज बेगी चलेगी, अर तीन ही परगणा (२) में थी काम्दार, थानादार हुजूर बुलावे, जागीरदाररो (३) अमल करायो, ने वां छुद्रां दरबार चाकरां थी अबिधी कीवी, सो गई करे अजमेर उज्जैनरा सूबेदारां थी सांची सिपारस लिखावारो जतन कियो है. जाब लिख्यो, सो ये जतन राजनीति रीति तो हुजूर ही थी जु होई, राज धर्म, मर्म, इशाहीज चाहिजे राज. अब इहांके समाचार या प्रकार हैः- तलायांकी (४) चौकी नौसेरीखां साथ आरे करे, दोइ तीन बार गनीमां थी बाथां परे, चोपोबंद छुडावे मुजरे दिखाया, सो नबाबजी तथा और ही सब लोग राजी व्हैने हुजूर हैं सब ब्यौरो लिख्यो, सो कितरांकी तो नक़ल हुजूर मोकली है. यूं जानी थी, दिन दोइ चारमें काम सिद्ध हो आवै (५) इसामें दैव जोग थी धना जादो घोड़ी हज़ार दस थी पोस सुदी ३

---

(१) [हि० ११११ ता० ९ जमादियुलआख़र = ई० १६९९ ता० ३ डिसेम्बर].

(२) पुरमांडल, मांडलगढ़ और बदनौर.

(३) अजमेर इलाक़े जूनियांके राठौड़ सुजानसिंहके बेटे कृष्णसिंह, कर्णसिंह और जुझारसिंह का पूरा हाल महाराणा अमरसिंहके ज़िक्रमें लिखा जायगा.

(४) तलायाके मानी रातवाली चोर गारदके हैं.

(५) ऊपर लिखे तीनों पर्गने जो बादशाहने ख़ालिसेमें कर लिये थे, उनके पीछे मिलनेका उपाय.

गुरे हैं दिन पहर एक चढ़तां आवे बुनगाह (डेरे) घेरी, प्रातही श्रीजीरा सेवकां बुनगाह थी उत्तर दिसा सोलापुररी चौकी तीरे था, सो चोबदार मोकले कहावी, जो गनीमरी फ़ौज उणी आड़ी आवे है, थें उठे ही फ़ौजबंदी करे जतन राखजो, ने मिरज़ा मुहम्मद बकसी पण म्हारी फ़ौज थी थारा ऊपर सारू असवार २०० थी मोकलां हां; सो इणी आड़ी फ़ौज असवार सै पांच पांचरी बार ३ तीन आवी, पण श्रीजीरा तेज अदब चूरे न सक्या; जदी यो मुंहड़ो छोड़े पछि दिसा थी पातसाही नक़्दी तोबखाने में धस्या, ने तोबखानों बालेने खासरा बज़ार, करणाटी बज़ार, रूहलाखां, तर्बियत-ख़ांरो बज़ार लूटे हवेली उमरावांरी बाले पातसाही कोटने बेगमजीरी मिसल दिसी चाल्या, जैतसिंह कछवाहो, कीरतसिंहजी (१) रो पोतो असवार ५ थी आवे गंज तथा कोटरी वाट आवे आछो लरे मूंडो गनीमांरो फेर्‌यो, नबावजी (२) असवार ५० साठ थी बेगमजीरा दबाव थी निकस्या, दो पहर सुधी घणी खरी बुनगाह लूटे बाले, घणाखरा आछा लोग डावरा डावरी बंद करे तीजे पहर घणा खरा ऊंट घोड़ा, कपड़ो रुपैया ले कोस तीनपर जाय डेरो कियो; दादू मल्हार ग़नीम उमेदो उमरावहें खबर दीवी, जो सवारां ही दोनूं आड़ी थी धसे सराफो कसै हें डेरो बज़ार लूटे, कोट ऊपर चलावणी करां, इसामें जुलफ़िक़ार-ख़ां बहादर, दलेलख़ां, दाऊदख़ां, रामसिंह हाड़ो, राव दलपत बुंदेलो असवार हज़ार चार पांच थी कोस बीसरो दोड़्या आवे पहुंच्या; तदी गनीमरी फ़ौज़ अहटे कोस १० पर जाइ डेरा कीधा. लूट तो लाख पच्चीस तीसरी हुई लोगांरी, पर कोट बच्यो, इसी आज पहिली इणीरी पातसाहीमें कदी न हुई, एक तो श्रीजी रा चाकरांरी, एक कछवाहा ठाकुरांरी भलाई बेगमजी आदि मांडे, सगला उमरावां में हुई; ने पातसा हुज़ूर हें लिखानी है, पण या बात घणी सबली हुई, सो नजाणजे इणी पर नवाबजी थी कोई दिन उच मनाई व्हेने दर्बाररा कामरी कोई दिन बले खेंच व्हे; पण श्री जीरी आड़ी थी तो भांति भांति अब घणी सूध जनानी; पछे इतनी भांति दौड़तां, उपाइ करतां, टको खरचतां ही श्री प्रभूजीरी आज्ञा है, ज्यूं होसी; अर पातसाहजी तो डीलां पधारे सितारोगढ़ घेर्‌यो है, रारि व्हे है, अर रामराजारी फ़ौज तो चारों आड़ी इसी धूम मांड़ी है, जो लिखतां वणे न है; बुरहाणपुर थी मांडे भागनगर सुधी सुचैन ताई घटी देखिजे प्रणाम काई व्हे जाइगा, दो तीन पहिली मोकल्यो थो, तहांतो काम उसा उसा ही हुआ है; यो पण उसो ही होतो दीसे है,

(१) कीर्तिसिंह आंबेरके महाराजा पहिले जयसिंहका छोटा बेटा था.

(२) जुम्दतुल मुल्क नव्वाब असदख़ां, वज़ीर.

पगे लागतां हासघटिया पण अरज हुई है, अर श्री एकलिंगजी उणी राज्यरो सदा सहाइ करे ही है, और नवाबजी दर्बाररा कामरी ताकीदरो कागल बक्सी बहरामंदखांजी हैं बले. (फिर) लिखायो है, जणीरी नकल मोकली है, और ब्यौरो होइ है, सो बांसा थी अरज व्हेगो. राज और वकील जगरूप रात दिन सेवा रहे हैं, बाघमल लसकरमें चाकरी करें हैं, यांरी रियायत वास्ते बार बार अरज काई करे, सगला काम सकैकतो बेगा सिद्ध होसी; राज राठौड़ांरो ब्योरो लिख्यो, सो नवाबजी थी भली तरह अरज़ कियो, राजी हुवा है, हजूर हें भली तरह लिखसी. राज संवत् १७५६ पोस सुदी १० गुरे तीजा पहर सुधी लिखे तयार कियो जी.

यह बुनगाहपर हम्ला इस्लामपुरीमें हुआ होगा, और 'बेगमजी' से मुराद आलमगीरकी बेटी ज़ीनतुन्निसा बेगमसे है. इस सब खटलेको वहां छोड़कर आप बादशाह मुरच वगैरह क़िलोंको फ़त्ह करता हुआ, इन दिनोंमें सितारागढ़को घेरे हुए था.

मआसिरे आलमगीरीके पृष्ठ ४०७ में जो हाल लिखा है, उसका तर्जमह नीचे लिखते हैं:-

"हिज्री ११११ ता० ५ जमादियुल अव्वल [विक्रमी १७५६ कार्तिक शुक्ल ७ = ई० १६९९ ता० ३१ ऑक्टोबर] को हज़रत शाहनशाह इस्लामपुरी मक़ामपर चार वर्ष ठहरकर आप भी बादशाही फ़ौजोंकी मददके वास्ते, जो हर तरफ़ दुश्मनों को क़ैद और क़त्ल करनेके लिये भेजी गई थीं, रवानह हुए. हुक्म दिया गया, कि मज़बूत क़िलेके गिर्द, जो पत्थर और चूनेसे ख़ास रहनेके वास्ते बनाया गया था, एक दूसरा कच्चा कोट ढाई कोस घेरेका बनाया जावे. यह वर्ष भरका काम पन्द्रह दिनमें पूरा करदिया गया. नव्वाब ज़ीनतुन्निसा बेगम और दूसरी महलकी ख़िझतगार औरतें व बहुतसा कारख़ानह वहां रख दिया गया. जुम्दतुलमुल्क मदारुल महाम असदखां मए मुनासिब फ़ौजके वहांकी हिफ़ाज़तके वास्ते मुक़र्रर किया गया. हज़रत यहांसे रवानह होकर बीस रोज़में मुर्तज़ाबाद उर्फ़ 'मुर्च' दाख़िल हुए". इस मक़ामपर धन्ना जादोंका जो बड़ा हम्ला हुआ, उसका किसी फ़ार्सी किताबमें ज़िक्र नहीं है. यह काग़ज़ लिखनेवाला श्री नाथद्वारा या कांकरोलीका रहनेवाला मालूम होता है, जिसने मेवाड़ी भाषामें अर्ज़ी लिखी है, परन्तु कहीं कहीं अपनी बोली व्रज भाषा और संस्कृतके शब्द लिखे हैं.

हिज्री ता० २० शअ्बान [विक्रमी १७५६ फाल्गुण कृष्ण ६ = ई० १७०० ता० १० फ़ेब्रुअरी] को लाहौरकी सूबेदारी इब्राहीमखांसे उतारकर बड़े शाहज़ादह शाहआलमके नाम कीगई; और कश्मीरका सूबेदार फ़ाज़िलखां शाहज़ादहका नायब बनाया गया.

हिज्री ता० २५ रमज़ान [विक्रमी चैत्र कृष्ण ११ = ई० ता० १६ मार्च] को शम्भाके भाई और शिवाके दूसरे बेटे रामराजाके मरनेकी ख़बर आई; यह सुनकर बादशाह खुश हुआ. थोड़े दिनों बाद रामराजाका पांच वर्षका बेटा, जो राजा बना था, मर गया; और इसीसे मरहटोंकी ताक़त कम हुई. हिज्री ता० ११ शव्वाल [विक्रमी १७५७ चैत्र शुक्ल १३ = ई० ता० २ एप्रिल] को आंबेरके राजा बिशनसिंहके इन्तिक़ाल होनेपर उसके बड़े बेटे विजयसिंहको (१) जयसिंह नाम देकर बापकी जागीरका मालिक बनाया; और उसके छोटे भाईका नाम विजयसिंह रखकर पांच सौ ज़ात, दो सौ सवारकी तरक़्क़ीसे डेढ़ हज़ारी ज़ात, हज़ार सवारका मन्सब दिया. सितारेका क़िला बादशाह आलमगीर घेरे हुए था, चार महीने अठारह दिनमें हिज्री ता० १४ ज़िल्क़ाद [विक्रमी वैशाख शुक्ल १५ = ई० ता० ४ मई] को फ़त्ह हुआ; और दूसरे दिन शाहज़ादह आज़मशाहने क़िलेके सर्दार सोभानको हाथ गर्दन बांधे बादशाहके साम्हने हाज़िर किया, उसके कुसूर मुआफ़ होकर पांच हज़ारी ज़ात दो हज़ार सवारका मन्सब, ख़िल्अत, कटार, घोड़ा, हाथी, नक़ारा, निशान और बीस हज़ार रुपया नक़्द बख़्शा गया. हिज्री १११२ ता० ३ मुहर्रम [विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ५ = ई० ता० २२ जून] को परलीगढ़का क़िला फ़त्ह कर लिया. इस क़िलेको इब्राहीम आदिलशाहने हिज्री १०३५ [विक्रमी १६८३ = ई० १६२६] में बनवाया था, जो शिवा घोंसलाके क़ब्ज़ेमें आगया था. इसके कुछ दिनों पीछे ज़ुल्फ़िक़ारखां (२) जो धन्ना जादवका पीछा करनेको गया था, दाऊदखां, राव दलपत बुंदेला और राव रामसिंह हाड़ा समेत बादशाहके पास हाज़िर हुआ. हिज्री १११२ ता० १० शव्वाल [विक्रमी १७५७ फाल्गुण शुक्ल १२ = ई० १७०१ ता० २२ मार्च] को परनालेके क़िले और पवनगढ़को जा घेरा, बहुत दिनों

---

(१) यह वही जयसिंह है, जिसने जयपुर बसाया, और सवाई जयसिंहके नामसे मश्हूर है.

(२) यह ज़ुल्फ़िक़ारखां धन्ना जादवके हम्लेकरनेपर (जिसका हाल ऊपर लिखे काग़ज़से ज़ाहिर होता है) इस्लामपुरसे हिज्री ११११ रजब [विक्रमी १७५६ पौष = ई० १७०० जैन्युअरी] से पीछे लगा हुआ था.

तक मुहासरा रहनेके बाद हिज्री १११३ [विक्रमी १७५८ = ई० १७०१] में यह दोनों क़िले बादशाही क़ब्ज़ेमें आये. इसी तरहपर वरदांगढ़, नांदगीर, मन्दन, चंदन, वग़ैरह क़िलोंपर भी बादशाही दरूल होगया. हिज्री ता० ३ शश्र्बान [विक्रमी पौष शुक्ल ५ = ई० ता० ५ डिसेम्बर] को असदख़ां वज़ीर 'अमीरुल-उमरा' का ख़िताब और चार हज़ार अशर्फ़ी पाकर खेलनाके क़िलेको घेरनेके लिये मुक़र्रर हुआ, जिसके साथ आंबेरका राजा जयसिंह कछवाहा, हमीदुद्दीनख़ां बहादुर, मुनइमख़ां व इख़्लासख़ां वग़ैरह किये गये; और बादशाह भी जा पहुंचे. बड़ी कोशिशोंके साथ मुक़ाबला करनेके बाद हिज्री १११४ ता० २२ मुहर्रम [विक्रमी १७५९ आषाढ़ कृष्ण ८ = ई० १७०२ ता० १८ जून] को यह क़िला फ़त्ह हुआ, और परशुराम मरहटा निकल गया. बादशाहने इस क़िलेका नाम "सख़्ख़रलना" (سخرلنا) (१) रक्खा, शाहज़ादह बेदारबख़्तकी कोशिशसे यह क़िला फ़त्ह हुआ, इस लिये उसको एक लाख रुपया इन्आम व फ़त्हुल्लाहख़ांको बहादुर आलमगीर शाहीका ख़िताब दिया.

हिज्री ता० २५ जमादियुल आख़र [विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ११ = ई० ता० १६ नोवेम्बर] को बहरहमन्दख़ां मीर बख़्शी गुज़र गया, उसकी जगह ज़ुल्फ़िक़ारख़ां नुस्रतजंगको मुक़र्रर किया. बादशाहकी बड़ी बेटी नव्वाब ज़ेबुन्निसाबेगमके मरनेकी ख़बर आई. इसके बाद शाहज़ादह आज़मशाहको, जो अहमदाबादका सूबेदार था, अजमेरकी सूबेदारी दी, और दस हज़ारकी तरक़्क़ीसे चालीस हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब दिया. हिज्री ता० १८ शश्र्बान [विक्रमी माघ कृष्ण ४ = ई० १७०३ ता० ७ जैन्युअरी] को क़िला कंदाना जा घेरा, और हिज्री ता० २ ज़िल्हिज [विक्रमी १७६० वैशाख शुक्ल ४ = ई० ता० २० एप्रिल] को फ़त्ह कर लिया. बादशाह वहांसे पूना पहुंचकर साढ़े छः महीनेके क़रीब ठहरे.

हिज्री १११५ शश्र्बान [विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल = ई० डिसेम्बर] में शाहज़ादह मुहम्मद अक्बर, जिसका हाल ऊपर लिख आये हैं, ईरानकी सर्हदमें मर गया. हिज्री ता० २१ शव्वाल [विक्रमी फाल्गुण कृष्ण ७ = ई० १७०४ ता० २७

---

(१) यह शब्द अरबी भाषाका है, इस क़िलेके फ़त्हकी ख़बर आनेके वक़ बादशाह कुर्आन का यही लफ़्ज़ पढ़ रहे थे, जिसका मत्लब यह है, "हमारे क़ब्ज़ेमें आया" इससे क़िलेका भी यही नाम रक्खा.

फ़ेब्रुअरी] को मरहटोंका क़िला राजगढ़, जो राज धानी और मज्बूत था, फ़त्ह हुआ; इसके बाद 'तोरना' का क़िला, जो राजगढ़से चार कोसके फ़ासिलेपर बड़ा मश्हूर था, बादशाही क़ब्ज़ेमें आया. शाहज़ादह मुहम्मद आज़मको अपने पास बादशाहने बुला लिया, अहमदाबादकी सूबेदारी इब्राहीमख़ांको और अजमेरकी ज़बर्दस्तख़ांको दी. राठौड़ दुर्गदास जो शाहज़ादह आज़मकी फ़ौजमेंसे भाग गया था, हाज़िर हुआ; उसे तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवारके मन्सबकी बहालीका हुक्म हुआ. ग़ाज़ियुद्दीन बहादुर फ़ीरोज़जंगको 'सिपहसालारी' का उह्दा, सात हज़ारी ज़ात और दस हज़ार सवारका मन्सब दिया गया. शम्भाकी बेटी सिकन्दरशाहके बेटे मुहयुद्दीनको ब्याही गई; राजा साहूका ब्याह बहादुरजी मरहटेकी बेटीसे किया गया.

हिज्री १११७ ता० १४ मुहर्रम [विक्रमी १७६२ वैशाख शुक्ल १५ = ई० १७०५ ता० ८ मई] को बादशाहने बड़ी लड़ाईके बाद क़िला 'वाकनखेड़ा' पेदिया नायकसे ज़ब्त किया. हिज्री ता० १६ शव्वाल [विक्रमी फाल्गुण कृष्ण २ = ई० १७०६ ता० ३० जैन्युअरी] को बादशाह अहमदनगर पहुंचे; इसके बाद शाहजहांकी बेटी 'गौहरआरा' के मरनेकी ख़बर दिल्लीसे हिज्री ज़िल्हिज [विक्रमी १७६३ चैत्र शुक्ल = ई० १७०६ मार्च] में बादशाहको मिली. ज़ुल्फ़िक़ारख़ां नुस्रतजंगकी अर्ज़से मऊमेदानाका पर्गनह बूंदीके राव बुद्धसिंहसे छीनकर कोटाके राव रामसिंहको दिया गया. हिज्री १११८ ता० २८ ज़िल्क़ाद जुमेकी सुबह [विक्रमी फाल्गुण कृष्ण १४ = ई० १७०७ ता० ३ मार्च] को अहमदनगरमें बादशाह आलमगीरने इस दुन्यासे कूच किया, उसकी उम्र चांदके हिसाबसे ९१ वर्ष, तेरह दिनकी, और सूर्यके हिसाबसे ८८ वर्ष, ३ महीने, १४ दिनकी थी. ५० वर्ष, दो महीने, २७ दिन और सूर्यके हिसाबसे ४८ वर्ष ८ महीने २९ दिन बादशाहत की. औरंगाबादसे आठ कोस और दौलताबादसे तीन कोसपर दफ़्न हुआ, जिसका नाम 'ख़ुल्दाबाद' रक्खा गया.

इस बादशाहकी आदतमें दग़ा और ख़ुद मत्लबी ज़ियादह थी, जैसा कि बरनियर लिखता है, कि शाहज़ादह मुरादको धोका देकर बादशाह बनानेका लालच दिया, और उसीको क़ैद करके मरवाया; बापको क़ैद किया, दाराशिकोहको मारा, शिवा घोंसलाको पहिले वचन देकर बुलाया, और क़ैद किया; अपने बड़े बेटे मुहम्मद सुल्तानको, जिसकी बहादुरीके सबब बादशाहत मिली, क़ैद किया; ग़ैर मज़्हबी लोगोंपर जिज़्यह (लागत-कर) जारी किया. हिन्दुओंके मन्दिरोंको

तुड़वाकर उसी मुसालहसे मस्जिदें बनवाई; और मुसल्मानोंपर भी ज़कात (लागत) ढाई रुपया सैकड़ा लगाई. अक्बर बादशाहने फ़ौजके तीन हिस्से बनाये थे- सुन्नी, शीआ और राजपूत; इसने शीआ और राजपूतोंको कम्ज़ोर किया, लेकिन् सुन्नी भी दिलसे खुश न थे. तख़्तनशीनीके दस वर्ष बाद अपनी तवारीख़ लिखनेकी मनाई की, इस लिये कि कोई उसके ऐबोंको किताबोंमें न लिख देवे. गोलकुंडेकी बादशाहत लेनेके लिये हर तरहके बहाने ढूंढ़ता था, जैसा कि ख़फ़ीख़ां जाफ़रख़ां एलचीके भेजनेकी बाबत लिखता है, और जिसका बयान हम ऊपर कर आये हैं. यह सब बातें ख़फ़ीख़ांने उसी मिर्ज़ासे सुनकर लिखी हैं. इस बादशाहने हिज्री १०६९ ता० १५ जमादियुस्सानी [विक्रमी १७१५ चैत्र कृष्ण १ = ई० १६५९ ता० ८ मार्च] को अबुलहसन सूबेदार बनारसके नाम शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तानकी मारिफ़त जो फ़र्मान लिखा, उस अस्ल फ़र्मानकी नक्ल बाबू हरिश्चन्द्रने बादशाहदर्पणके २३ वें पृष्ठमें लिखी है, जिसका आशय यहां लिखा जाता है.

फ़र्मानका आशय.

कुरआनमें लिखा है, कि पुराने मन्दिरको नहीं गिराना, और नये नहीं बनाने देना. ऐसा सुना गया है, कि बनारसके ब्राह्मणोंको लोग दुःख देते हैं; इस हेतु यह आज्ञा दी जाती है, कि आगेसे कोई हिन्दुओंके स्थानोंको न छेड़े, और ब्राह्मणोंको निर्विघ्न पाठ पूजा करने दे, इत्यादि- १५ जमादियुस्सानी हिज्री १०६९.

इसके बाद हिज्री १०७७ [विक्रमी १७२३ = ई० १६६६] को बनारसमें काशी विश्वेश्वरका मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनवाई, उसमेंके लेखकी नक्ल भी बाबू हरिश्चन्द्रने उक्त पुस्तकमें लिखी है, जो कि ऊपरके फ़र्मानके विरुद्ध है; उसका आशय यह है:-

आशय.

मुसल्मानी धर्मके स्वामी (इत्यादि) औरंगज़ेब बादशाहकी आज्ञासे देव मन्दिरके देवताओंके सिर तोड़कर यह मस्जिद बनवाई गई, इत्यादि; १०७७ हिज्री.

इस लिखनेसे यह मत्लब है, कि यह बादशाह खुद मत्लबी और बड़ा चालाक था. इन बुराइयोंके सिवाय वह बहुत लिखा पढ़ा, आलिम और होश्यार था; चाल चलनमें पर्हेज़गार था. अपने इरादे और एतिक़ादमें बहुत पक्का था, तअ़ास्सुब रखनेपर भी मज़्हबी लोगोंको बेफ़ायदह इन्आम और जागीरें नहीं देता था; ज़ाती बहादुरी भी रखता था, मरते दम तक लड़ाइयोंमें मस्रूफ़ रहा. अपनी ज़ातके सिवाय दूसरोंपर उसे कुछ भरोसह न था, ऐसेही शुब्हेके सबब मुहम्मद मुअ़ज़्ज़मको अ़र्से तक क़ैद रक्खा. रअ़य्यतके इन्साफ़में किसी क़ौम और अफ़्सरकी रिआयत नहीं करता था; खफ़ीखां वग़ैरहने लिखा है, कि "एक दक्षिणी बुढ़ियाने बादशाहसे फ़र्याद की, कि आपका फ़ौज्दार, जो टैक्स मांगता है, मुझको उसके देनेकी ताक़त नहीं है; इसपर बादशाहने फ़ौज्दारकी बदली करदी, बुढ़ियाने दोबारह आकर शिकायत की, कि नया फ़ौज्दार पहिलेसे भी ज़ियादह महसूल मांगता है; बादशाहने इस दफ़ा सूबेदार तकको मौक़ूफ़ कर दिया; लेकिन् बुढ़ियाने फिर तीसरी बार भी ज़ियादती महसूलकी शिकायत की; तब बादशाहने तंग होकर फ़र्माया, कि मेरे पास जो आदमी थे, उनको बदल दिया, नये आदमी कहांसे लाऊं? अब तू खुदासे दुआ कर, कि वह कोई नया बादशाह बदल दे, जिससे रअ़य्यतको आराम मिले".

आलमगीर बादशाहकी औलाद.

१- बादशाह ज़ादह मुहम्मद सुल्तान हिज्री १०४९ ता० ४ रमज़ान [विक्रमी १६९६ पौष शुक्ल ६ = ई० १६३९ ता० ३१ डिसेम्बर] को पैदा हुआ. यह कुर्आनका हाफ़िज़ और अ़रबी, फ़ार्सी, तुर्की, किताबोंके लिखने पढ़नेमें होश्यार था; अपने बापके हम्राह रहकर अक्सर लड़ाइयोंमें बहादुरीके साथ लड़ा था. बादशाहके सन् २१ जुलूस = हि० १०८८ शव्वाल [वि० १७३४ मार्गशीर्ष शुक्ल = ई० १६७७ डिसेम्बर] में गुज़र गया.

२- बादशाह ज़ादह मुहम्मद मुअ़ज़्ज़म 'शाहआलम बहादुर शाह' हिज्री १०५३ आख़िर रजब [विक्रमी १७०० आश्विन शुक्ल २ = ई० १६४३ ता० १५ ऑक्टोबर] को पैदा हुआ. इसने छोटी उम्रमें कुर्आन हिफ़्ज़ किया, और कई तरहसे उसको पढ़ना सीखा. अक्सर जवानीके दिनोंमें इल्मी किताबें पढ़ीं- अ़रबी, फ़ार्सी,

तुर्की अच्छी तरह जानता था; कई तरहका ख़त जल्दी और उम्दा लिख सक्ता था, नमाज़, रोज़ेका पाबन्द था, फ़र्यादियोंके फ़ैसले बड़ी नर्मीके साथ सुनता था.

३– बादशाह ज़ादह मुहम्मद आज़मशाह, शाहनवाज़खां सफ़वीकी बेटीसे हिज्री १०६३ ता० १२ शअ्बान [विक्रमी १७१० आषाढ़ शुक्ल १३ = ई० १६५३ ता० ८ जुलाई] को पैदा हुआ. निहायत तेज़ तबीअ़त और नेक आदत था, बादशाह इससे बड़े खुश थे. हिज्री १११९ ता० १८ रबीउ़ल अव्वल [विक्रमी १७६४ आषाढ़ कृष्ण ४ = ई० १७०७ ता० १९ जून] को आलमगीर बादशाहके तीन महीने, बीस दिन बाद बहादुरशाहकी लड़ाईमें बहादुरीके साथ मारा गया.

४– बादशाह ज़ादह मुहम्मद अक्बर हिज्री १०६७ ता० १२ ज़िल्हिज [विक्रमी १७१४ भाद्रपद शुक्ल १३ = ई० १६५७ ता० २१ सेप्टेम्बर] को पैदा हुआ. यह बादशाहतका उम्मेदवार ईरानके मुल्कमें सन् ४८ जुलूस = हिज्री १११५ [वि० १७६० = ई० १७०३] में गुज़र गया.

५– बादशाह ज़ादह मुहम्मद कामबख़्श हिज्री १०७७ ता० १० रमज़ान [विक्रमी १७२३ फाल्गुण शुक्ल १२ = ई० १६६७ ता० ६ मार्च] को पैदा हुआ. यह भी कुरआनका हाफ़िज़ था, और दूसरे भाइयोंकी निस्बत इल्मी किताबें ज़ियादह पढ़ा हुआ था; तुर्की ज़बान बहुत अच्छी जानता था. हिज्री १११९ ता० ३ ज़िल्क़ाद [विक्रमी १७६४ माघ शुक्ल ५ = ई० १७०८ ता० २७ जैन्युअरी] को बहादुरशाहसे लड़कर बड़ी बहादुरीके साथ मारा गया.

लड़कियें.

६– नव्वाब ज़ेबुन्निसाबेगम हिज्री १०४८ ता० १० शव्वाल [विक्रमी १६९५ माघ शुक्ल १२ = ई० १६३९ ता० १६ फेब्रुअरी] को पैदा हुई, इसने कुरआन हिफ्ज़ करनेके एवज़में अपने बापसे तीस हज़ार अशर्फ़ी इन्आम पाई थी. यह अरबी, फ़ार्सी खूब जानती थी; हर तरहका ख़त लिख सक्ती थी, इसने बड़ा कुतुबख़ानह जमा किया था; बहुतसे आलिम, फ़ाज़िल इसके यहां नौकर थे. कई किताबें इसके नामपर बनाई गई हैं; यह बापके जीते जी हिज्री १११३ [विक्रमी १७५८ = ई० १७०१] में मर गई.

७– नव्वाब ज़ीनतुन्निसाबेगम हिज्री १०५३ ता० १ शअ्बान [विक्रमी १७००

आश्विन शुक्ल ३ = ई० १६४३ ता० १६ ऑक्टोबर] को पैदा हुई; यह मज़्हबी किताबें पढ़ी हुई थी, और बहुतोंको इससे फ़ायदह पहुंचता था.

८– नव्वाब बद्रुन्निसाबेगम हि० १०५७ ता० २९ शव्वाल [विक्रमी १७०४ मार्गशीर्ष कृष्ण ३० = ई० १६४७ ता० २८ नोवेम्बर] को पैदा हुई; यह भी कुरआनकी हाफ़िज़ और मज़्हबी किताबें पढ़ी हुई थी; हि० १०८१ ता० २८ ज़िल्क़ाद [विक्रमी १७२८ प्रथम वैशाख कृष्ण १४ = ई० १६७१ ता० ८ एप्रिल] को मर गई.

९– नव्वाब ज़ुब्दतुन्निसाबेगम हि० १०६१ ता० २६ रमज़ान [विक्रमी १७०८ आश्विन कृष्ण १२ = ई० १६५१ ता० १२ सेप्टेम्बर] को पैदा हुई थी; यह भी नेक आदत, सुल्तान सिपिहरशिकोहकी बीबी थी; बापके मरनेके क़रीब ही मर गई, और इसके मरनेकी ख़बर बापको नहीं मिली.

१०– नव्वाब मिह्रुन्निसाबेगम हिज्री १०७२ ता० ३ सफ़र [विक्रमी १७१८ आश्विन शुक्ल ५ = ई० १६६१ ता० २९ सेप्टेम्बर] को पैदा हुई; मुरादबख़्शके बेटे एज़द बख़्शकी बीबी थी, जो हिज्री ११६ [विक्रमी १७६१ = ई० १७०४] में इस दुन्यासे उठ गई.

बादशाह आलमगीरके वक़्में मुल्की मालगुज़ारीकी सालानह आमदनी २४०५६११४० से लेकर ३५६४१४३१० रु० तक थी (एडवर्ड टॉमसकी किताबके पृष्ठ ५४).

छन्द गीतिका.

दिल्लीश लै दल ईश कोप समान तोपन जालिका ॥
मेवार देश उजारकै बहुबार धप्पिय कालिका ॥
वह मेछ जुद्ध विरुद्धमें नृप राजसिंह प्रपात भो ॥
उदयाद्रिपैं जयसिंह रान विकाश कारक आत भो ॥ १ ॥
भट रानके मिल भेद भाव प्रकाश शाह कुमारतें ॥
अरु ताहि दिल्लिय ईशकैन मिलाय सेन शुमारतें ॥
औरंग मस्तरु अस्त अक्बर दिग्घ दुज्जन रानव्है ॥
करयुद्ध दिल्लिय ईशतें फिर संधि नीति समानव्है ॥ २ ॥
सुल्तान आजम रानकी भइ भेट खुर्रम रीति पैं ॥
दल गुप्त लेखनतें लग्यो सुल्तान दाग प्रतीतपैं ॥
नृपबंधु भीम असीम बिक्रम शाह सेवक होनकों ॥
अजमेधपत्तन गो तबैं दिल्लीश दक्खिन गोन कों ॥ ३ ॥
जयसिंह ताल बिशाल को सबहाल विस्तरतें कह्यो ॥
जुवराज रान विरुद्ध कै नुकसान गेहन मैं लह्यो ॥
चहुवान केहर चुंड कांधल शूर युग्म कटारतें ॥
लर प्रान त्यागिय बैर भागिय कित्ति जागिय सारतें ॥ ४ ॥
जयसिंहको तन त्यागहोन बयान आलमगीर को ॥
इतिहास बीरबिनोद खंड अखंड बीरन नीरको ॥
कविराज आशय रानसज्जन जान पूरण कैन को ॥
फतमाल शाशन को प्रकाशन हर्ष दासन कैन को ॥ ५ ॥

महाराणा जयसिंह – नवां

प्रकरण समाप्त.